जगदाधार, जगदात्मा जगदीशको लाख-लाख धन्यवाद हैं, कि उनकी कृपा और अनुग्रहसे, हज़ारों विघ्नबाधाओं और अविद्याग्नियोंके सामने आने पर भी, "चिकित्सा-चन्द्रोदय"के छठे और सातवे भाग छपकर प्रकाशित हो गये।

"चिकित्साचन्द्रोदय"के सम्बन्धमें हमें आज कोई नई बात नहीं कहनी ; जो पहले कह चुके हैं, वही आज भी कहना है। पर कही हुई बातको बारम्बार कहनेमे आनन्द नही, इसलिये हम दो चार ज़रूरी बातें कह कर ही अपना निवेदन समाप्त करना चाहते हैं।

पाठक जानते हैं कि, "चिकित्साचन्द्रोदय" किसी अन्य भाषाके ग्रन्थका अविकल या छाया अनुवाद नही ; किन्तु चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, बंगसेन, शार्ङ्गधर, चक्रदत्त, वृन्दविनोद, वैद्यजीवन, वैद्यविनोद, वैद्यरत्न, तिब्बे अकबरी, मुजर्रबात अकबरी, इलाजुलगुर्बा प्रभृति कोई एक सौ से ऊपर वैद्यक और हिकमतकी किताबों तथा डाक्टर गन्ज़ फैमिली फ़ीज़ीशियन, डिज़ीज़ेज़ आव् दी नरवस सिष्टम और स्ट्रैलवैगनज़ डिज़ीज़ेज़ आव् दी स्किन प्रभृति कितनी ही अँगरेज़ी पुस्तकोंका नवनीत है। उपरोक्त छोटे बड़े ग्रन्थ हमें कई बार आद्योपान्त देखने और समझने पड़े हैं, तब यह वृहत्काय ग्रन्थ तैयार हुआ है। इस ग्रन्थके तैयार करनेमें हमे कितना परिश्रम करना पड़ा है, इसे वे ही जान सकते हैं, जिन्हे ऐसे कामोंका अनुभव है। जिनको इस कामका अनुभव नही, उनकी रायमें तो यह एक संग्रह मात्र है।

रोगपीड़ित होनेके कारण, अनेक वार प्रूफ दूसरोंसे दिखाने पड़े हैं। जो प्रूफ-रीडर मिले, वह वैद्य न थे और जो वैद्य थे वे हिन्दी लिखना न जानते थे। इससे हमें इन दो भागोंमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। फिर भी हमने पं० गुरुदयालजी शर्म्मा वैद्यशास्त्री, अलवरनिवासी, से इस ग्रन्थका रिवीज़न करा लिया है। वैद्यशास्त्रीजीने जो भूलें निकालीं, उनको शुद्धाशुद्ध पत्रके रूपमें छपवा कर हमने पुस्तकके अन्तमें लगवा दिया है। यों तो हमने आज-तक ऐसी एक भी पुस्तक न देखी जिसमें कमोवेश भूलें न हों, फिर भी हमें अपने ग्रन्थकी भूलोंके लिये दुःख है। इतना ही अच्छा है, कि जो भूलें वैद्यशास्त्रीजीने निकाली हैं, उनसे पाठकोंकी कोई विशेष हानि नहीं। क्योंकि उनमेंसे चौदह आने भूलें एकार ऊकार प्रभृति मात्राओंके टूट जानेसे हुई हैं। वास्तविक भूलें बहुत ही कम नज़र आई हैं। फिर भी ; जिन ग़लतियोंको हम और वैद्यशास्त्रीजी दोनों ही न समझे हों उनके लिए विद्वान् पाठक हमें क्षमा प्रदान करें और उन्हें कृपया हमारे पास लिख भेजें। हम विना किसी तरहके पशोपेश और हठके आगामी संस्करणमें उन्हें सुधार देंगे और भूल वतानेवाले सज्जनोंके यावज्जीवन आभारी रहेंगे।

पाँचवें भागके निवेदनमें हमने अपने प्रेमी पाठकोंसे कहा था, कि हम समय पाकर उनकी सेवामें एक ऐसी पुस्तक भेजेंगे, जिसमें इस ग्रन्थकी त्रुटियों और भूलोंका सुधार या संशोधन होगा और जो बातें अच्छी तरह समझाने पर भी खूब खोलकर न समझाई गई होंगी, उनको उसमें औरभी अच्छी तरह समझा देंगे। उस पुस्तकके लिए हमें अनेक ग्राहक तंग करते हैं। उनसे विनीत प्रार्थना है कि, वे धैर्य्य धारण करें। पुस्तक ऐसी चीज़ नहीं, जो जिसतिससे लिखवाकर भेज दी जाय। जब हमारा स्वास्थ्य ठीक होगा, हमे समय मिलेगा, हम स्वयं अपना वादा पूरा करनेकी कोशिश करेंगे। विना आरोग्य लाभ किये,

वास्तवमें यह संग्रह ही है भी, पर निरा संग्रह नहीं। इस संग्रहमें हमने अपने तन और मनको बेकाम कर दिया है आँखोंसे कम दीखने लगा है, दिमाग़ बेकामसा हो गया है और उदर रोगोंने हमें अपना शिकार बना लिया है। पर हमें इतनेसे ही प्रसन्नता है कि, हिन्दी-भाषा-भाषी जनताने इस ग्रन्थकी आशातीत क़दरकी है। भिषकश्रेष्ठ आयुर्वेद-केशरी श्रीमान् पण्डित रामेश्वरजी मिश्री-वैद्य शास्त्री महोदय प्रभृति कतिपय विद्वानोंने कई पत्र-पत्रिकाओंमें इसकी प्रशंसा करके हमारा उत्साह बढ़ाया है। उनके सिवा भारतके औरभी अनेकानेक आयुर्वेद आचार्य, वैद्यशास्त्री और वैद्यरत्न प्रभृति पदवीधारी वैद्यवरोंने प्रशंसात्मक और उत्साहवर्द्धक पत्र लिख-लिख कर हमें अपना आभारी बनाया है। वर्तमान, विश्वमित्र, माधुरी, सरस्वती, मनोरञ्जन, वैद्य, धन्वन्तरि, स्त्रीदर्पण, ब्राह्मण सर्वस्व और कर्त्तव्य प्रभृति पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादक महोदयोंने इस ग्रन्थकी भूरि-भूरि प्रशंसाकी है और साधारण जनता भी इस ग्रन्थको हिन्दीमें, वैद्यक विषय पर, पहला और लाजवाब कहती और उसी तरह धड़ा-धड़ खरीदती है, इसीसे हम अपने सब कष्ट और क्लेशोंको भूल कर दिलोजानसे काम करते रहे। जिसका यह नतीजा है, कि दो तीन सालके अर्सेमें ही कोई चार हज़ार पृष्ठोंका बड़ा पोथा तैयार हो गया है। पाँच भाग पहले निकल चुके हैं, जिनमे से कइयोंके तो नवीन संस्करण भी हो गये। आज छठा और सातवाँ भाग तैयार है। पहलेके पाँच भागोंकी तरह अगर ये दो भाग भी हमारे क़दरदान और सहृदय पाठकोंके पसन्द आजायगे और जनता इनसे लाभान्वित होगी, तो हमारा सारा परिश्रम सफल होगा और हमारी प्रसन्नताकी सीमा न रहेगी।

हम लिख आये हैं, कि आजकल हमारी दृष्टि अत्यन्त कमज़ोर हो गई है, अतः यदि इन दोनों भागोंमे प्रूफ-संशोधन-सम्बन्धी भूलें रह गई हों, तो पाठक हमें दयाकर क्षमा करें, क्योंकि हमें

रोगपीड़ित होनेके कारण, अनेक वार प्रूफ दूसरोंसे दिखाने पड़े हैं। जो प्रूफ-रीडर मिले, वह वैद्य न थे और जो वैद्य थे वे हिन्दी लिखना न जानते थे। इससे हमें इन दो भागोंमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। फिर भी हमने पं० गुरुदयालजी शर्म्मा वैद्यशास्त्री, अलवरनिवासी, से इस ग्रन्थका रिवीज़न करा लिया है। वैद्यशास्त्रीजीने जो भूलें निकालीं, उनको शुद्धाशुद्ध पत्रके रूपमें छपवा कर हमने पुस्तकके अन्तमे लगवा दिया है। यों तो हमने आज-तक ऐसी एक भी पुस्तक न देखी जिसमें कमोवेश भूलें न हों, फिर भी हमें अपने ग्रन्थकी भूलोंके लिये दुःख है। इतना ही अच्छा है, कि जो भूलें वैद्यशास्त्रीजीने निकाली हैं, उनसे पाठकोंकी कोई विशेष हानि नही। क्योंकि उनमेंसे चौदह आने भूलें एकार ऊकार प्रभृति मात्राओंके टूट जानेसे हुई हैं। वास्तविक भूलें बहुत ही कम नज़र आई हैं। फिर भी ; जिन ग़लतियोंको हम और वैद्यशास्त्रीजी दोनों ही न समझे हों उनके लिए विद्वान् पाठक हमें क्षमा प्रदान करें और उन्हें कृपया हमारे पास लिख भेजें। हम विना किसी तरहके पशोपेश और हठके आगामी संस्करणमे उन्हें सुधार देंगे और भूल बतानेवाले सज्जनोंके यावज्जीवन आभारी रहेंगे।

पाँचवें भागके निवेदनमें हमने अपने प्रेमी पाठकोंसे कहा था, कि हम समय पाकर उनकी सेवामें एक ऐसी पुस्तक भेजेंगे, जिसमें इस ग्रन्थकी त्रुटियो और भूलोंका सुधार या संशोधन होगा और जो बातें अच्छी तरह समझाने पर भी खूब खोलकर न समझाई गई होंगी, उनको उसमे औरभी अच्छी तरह समझा देंगे। उस पुस्तकके लिए हमें अनेक ग्राहक तंग करते हैं। उनसे विनीत प्रार्थना है कि, वे धैर्य्य धारण करें। पुस्तक ऐसी चीज़ नहीं, जो जिसतिससे लिखवाकर भेज दी जाय। जब हमारा स्वास्थ्य ठीक होगा, हमें समय मिलेगा, हम स्वयं अपना वादा पूरा करनेकी कोशिश करेंगे। विना आरोग्य लाभ किये,

अब इस काममें लगना मौतको बुलाना है। अतः मेहरबान लोग अब कार्ड और चिट्ठियाँ लिख-लिखकर हमें और तंग न करें। ऐसी फालतू बातोंमें दोनों तरफका समय वृथा नष्ट होता है।

इन दोनों भागोंमें, हमने मौक़े-मौकेसे सादा और रंगीन हाफटोन चित्र भी लगा दिये हैं। यों तो और भी वैद्यक-ग्रन्थोंमें चित्र हैं, पर इतने और ऐसे क़ीमती चित्र अँगरेजी पुस्तकोंके सिवा भारतीय भाषाओंकी वैद्यक-पुस्तकोंमें नहीं के समान हैं। इन चित्रोंके लिए हमें बड़ी तकलीफें उठानी पड़ी हैं और रुपया भी खूब ख़र्च हुआ है। इन्हीं वजूहातों से गत सितम्बरमें निकलनेवाला ग्रन्थ जनवरीमें निकला है। आशा है, इन चित्रोंसे वैद्यक-विद्या सीखने वालोंको बहुत कुछ मदद मिलेगी।

छठे भागमें हमने खाँसी, जुकाम, श्वास और रक्तपित्त प्रभृति आठ-दस रोगोंकी ही चिकित्सा लिखी है, पर जो लिखी है वह अपनी भरसक विस्तारसे लिखी है। एक खाँसीकी चिकित्सा ही प्रायः १००।१२५ सफोंमें शेष हुई है। सातवें भागमें बाक़ी रहे हुए प्रायः सभी रोगोंकी चिकित्सा लिख दी है। उम्मीद है, अब सज्जनोंको शिकायत न करनी पड़ेगी। क्योंकि कोई साहब लिखते थे, इस भागमें अमुक रोगकी चिकित्सा नहीं है ; कोई लिखते थे,अगले भागमें वातव्याधियों पर अवश्य लिखिये। सिन्ध-मीरपुर ख़ासके एक ऐसिस्टैण्ट इञ्जीनियर साहबने हमें लिखा था कि, आपका ग्रन्थ मैं आद्योपान्त पढ़ गया। ग्रन्थ हर तरहसे उत्तम और उपादेय है। ऐसा ग्रन्थ हिन्दीमें अबतक और नहीं देखा, पर आपके ग्रन्थमें नेत्र-रोग चिकित्साका न होना भारी त्रुटि है। इञ्जीनियर साहबकी बातका हमारे दिलपर बड़ा असर हुआ। सच तो यह है, उनकी बात हमारे दिलमें चुभ गई, इसीसे हमने इस भागमें आँख, कान, नाक और मुँह प्रभृति सभी अंगोंसे सम्बन्ध रखनेवाले रोगोंपर विस्तारसे लिखा है। फिर भी प्लेग प्रभृति कई जनपदविध्वंसकारी रोगोंपर हम न लिख सके, इसका हमें सख्त अफसोस है। यदि परमात्माकी

इच्छा हुई, तो आठवें भागमें हम प्लेग और क्षय वग़ैरः पर विस्तारसे लिखेंगे।

बहुतसे पाठक हमारा ध्यान निघण्टु की ओर खींचते हैं। हमें स्वयं मालूम है, कि हिन्दीमें जैसा चाहिये वैसा एक भी निघण्टु नहीं। जो निघण्टु अबतक निकले हैं, उनमें बड़ी भारी कमी है। निघण्टु ऐसा होना चाहिये, जिसमें प्रत्येक वनौषधिका सादा या रंगीन चित्र हो, जिसके देखने मात्रसे अनजान भी जड़ी-बूटी या रूखड़ियोंको पहचान ले। साथ ही औषधियोंके ज़ियादा-से-ज़ियादा विवरण और उनके अनेकानेक प्रयोग हों। पर ऐसे निघण्टुका तैयार करना और छपाना खेल नहीं है। इसमें घोर परिश्रम और प्रायः पचास हज़ार रुपयोंके ख़र्च की दरकार है। यदि हमारी जिन्दगी रही, तो हम ऐसा निघण्टु ज़रूर निकालेंगे, क्योंकि ऐसे निघण्टु बिना आयुर्वेदकी सच्ची उन्नति हो ही नहीं सकती। आजकलके नामी-नामी आयुर्वेद-आचार्य्य भी सभी वनौषधियोंको नहीं पहचानते। पहचानते हैं उन्हें ही, जिनका रोज़मर्रह काम पड़ता रहता है। इससे आयुर्वेदकी भारी क्षति हो रही है। पर ऐसे सर्व्वाङ्ग-सुन्दर निघण्टुकी तैयारीमें सबसे बड़ा काम धनका है, किन्तु हम धनकी भिक्षा माँगना नहीं चाहते, चन्दा कराना नहीं चाहते ; सिर्फ इतनी ही कृपा चाहते हैं कि, हमारे क़द्रदान और प्रेमी पाठक जब इस ग्रन्थको स्वयं ख़रीद-ख़रीदकर हमारा उत्साह बढ़ा रहे हैं, तब अपने मित्रों और रिश्तेदारोंको भी इस ग्रन्थकी एक-एक सेट ख़रीदनेपर आमादः करें। बस, इतनेसे ही रुपयोंका सवाल हल हो जायगा और वह निघण्टु, जिसकी भारतको सबसे अधिक ज़रूरत है, जिसके बिना आयुर्वेदकी उन्नति हो नहीं सकती और जो अबतकके निघण्टुओंमें सबसे बढ़-चढ़कर होगा, तैयार होकर पाठकोंकी सेवामें पहुँच जायगा।

हमने इस ग्रन्थके पहले भाग और पीछेके भागोंमें दवाएँ बनाने

और सेवन करने वग़ैरःके नियम अच्छी तरह समझा-समझाकर लिख दिये हैं, पर अनेक पाठक उन नियमोंको नहीं देखते और हमें लिखते हैं, आपने अमुक नुसख़ेमें दवाओंकी तोल नहीं लिखी, फलाँ नुसख़ेमें मात्रा नहीं लिखी इत्यादि। पाठकोंको चाहिये, कि उन नियमोंको कण्ठस्थ करलें, हर नुसख़ेमे तोल और मात्रा लिखना बड़ा कठिन काम है। इसीसे पहलेके ग्रन्थकार भी ऐसा नहीं कर सके। फिर भी हमने तो, जहाँतक बन पड़ा है, हरेक बात खोल-खोल कर हर जगह स्पष्ट लिख दी है। पाठकोंके विशेष सुभीतेके लिए, छठे भागके अन्तमें भी ऐसे नियम फिरसे रूप बदल कर लिख दिये हैं। उनमें कितनी ही नई बातें भी आ गई हैं। आशा है, पाठकोंको अब उतना कष्ट न होगा।

हमने इस ग्रन्थमें परीक्षित, सुपरीक्षित, पराये परीक्षित और अपरीक्षित चार तरहके नुसखे लिखे हैं। पहलेके पाँच भागोंमें तीन ही तरहके नुसखे लिखे हैं, पर इन दो भागोमे "पराये परीक्षित" और अधिक लिखे हैं। पराये परीक्षित नुसखे भी हमारे परीक्षित और सुपरीक्षित नुसख़ोंकी तरह ही विश्वासयोग्य हैं। इन दस पाँच सालोंमें जो नुसखे वैद्य-हकीमोंने आजमा-आजमा कर कहीं छपाये हैं, वे ही पराये परीक्षित हैं। हमारे लिखे अपरीक्षित नुसख़े भी बेकाम नहीं हैं; वे ग्रन्थका कलेवर मात्र बढानेके लिए ही नहीं लिखे गये हैं। जिन्हें हमने उपयोगी और तत्काल फलप्रद समझा है, उन्हे ही अपने ग्रन्थमे स्थान दिया है, अत. समय पड़े पर पाठक उनसे भी काम लें। बड़ी खुशीकी बात है, कि अनेक पाठकोंने हमारे परीक्षित नुसख़े आजमा-आजमा कर हमे लिखा है,—"आपके परीक्षित नुसखे वास्तवमें रामबाण हैं।" लेकिन बहुत बार ऐसा होता है कि, परीक्षित नुसखा काम नहीं करता और अपरीक्षित तीरे हदफका काम कर जाता है। क्योंकि कोई एक नुसखा सभी रोगियोंको आराम नहीं कर सकता। अगर ऐसा होता तो

ऋषि-मुनि एक-एक रोग पर हज़ार-हजार नुसख़े न लिखते। अनेक बार देखते हैं, जो दवा दस मरीज़ोंको फायदा करती है, ग्यारहवें को उससे कुछ भी लाभ नहीं होता। बाज़-बाज ओक़ात वही मुजर्रब नुसख़ा, मिज़ाजके खिलाफ़ होनेसे, उल्टा नुक़सान करता है। यही वजह है, कि जो लोग आजकलके विज्ञापन-दाताओंकी सौ-सौ रोगोंको एक-एक दवा खरीद कर सेवन करते हैं, वे अपना धन और स्वास्थ्य दोनो नष्ट करते हैं। ऐसी दवाओंसे कदाचित एक रोग आराम हो भी जाता है, तो और चार भयङ्कर रोग तत्काल या देरसे पैदा हो जाते हैं।

देशके धनी सज्जनोंसे भी हमारी प्रार्थना है कि, वे अपने दानमे इस "चिकित्साचन्द्रोदय"को अवश्य रखे, क्योंकि और दानोंसे उतना लाभ नहीं, जितना इससे है। इस ग्रन्थकी एक-एक प्रति भी यदि एक-एक गांवमे पहुँच जायगी, तो जिन गंवई-गाँवोंमें अच्छे-अच्छे वैद्य-हकीम गूलरके फूलके समान हैं, वहाँ कितने प्राणी असमयकी मृत्युसे बचेंगे, कितने निराधार जीविकाविहीन प्राणियोंके कुटुम्बोंकी गुजर होने लगेगी, यह हम लिखकर नहीं बता सकते; ज़रासी भी अक़्ल रखनेवाला इस बातको समझ सकता है। यह ग्रन्थ अतीव सरल हिन्दीमें है। थोड़ीसी हिन्दी मात्र जाननेवाला भी इसे समझ कर काम कर सकता है। जो लोग संस्कृत नहीं जानते, वे इसे पढ़कर निश्चय ही अच्छी चिकित्सा कर सकेंगे। जिन लोगोंका ख़याल है कि, संस्कृत जाने बिना कोई अच्छा चिकित्सक नहीं हो सकता, वे भूल करते हैं। जो अरबी, फ़ारसी, जापानी, अँगरेज़ी, फ्रेञ्च और जर्मन प्रभृति भाषाएँ सीखकर चिकित्सा कर्म करते हैं, क्या वे संस्कृतज्ञ पण्डितों से कम दर्जेके हैं? चिकित्सा-विद्या किसी भी भाषामें सीखी जाय, बराबर काम देगी, पर सीखनी चाहिये अच्छी तरहसे।

शेषमें हम कानपुरके भिषक्चूड़ामणि आयुर्वेद-केसरी पण्डित-वर रामेश्वरजी मिश्र वैद्यशास्त्री, इटावेके पण्डितवर ब्रह्मदेवजी शर्मा

शास्त्री,वर्त्तमान सम्पादक पण्डित रमाशंकरजी अवस्थी, वैद्य-सम्पादक बाबू शंकरलालजी, धन्वन्तरि सम्पादक बाबू बाँकेलालजी और विश्वमित्र सम्पादक बाबू मूलचन्द्जी बी० ए० को हार्दिक धन्यवाद देतेहैं, जिन्होंने हमारा उत्साह खूब बढ़ाया है। इन सज्जनोंके सिवाय, हम उन सभी पत्रसम्पादकोंको भी धन्यवाद देते हैं,जिन्होंने इस ग्रन्थकी प्रसिद्धिमें हमें दिल खोलकर सहायता दी है। हम अपने उन भाइयोंको भी हृदयसे धन्यवाद देते हैं, जिनको स्वभावसे ही परछिद्रान्वेषणका मर्ज है। क्योंकि उन्होंने, हमारी पुस्तकके त्रुटियोंका ख़ज़ाना होने पर भी, कदाचित हमारा दिल टूट जानेके ख़यालसे ही, हमारे मामलेमें अपने स्वभावका परिचय नहीं दिया है। उन्होंने चुप्पी साधकर भी हम पर कम कृपा नहीं की है। दोष निकालने वाले तो रामचन्द्र और कृष्ण भगवान्में भी दोष निकालते हैं, फिर हम तो चीज ही क्या हैं? ऐसी कौनसी पुस्तक है,जिसमें कमोवेश दोष नहीं हैं और ऐसा कौनसा काम है जिसमे ऐवजोई करनेवाले ऐब नहीं निकाल सकते? अन्तमें हम अपने ग्रन्थके ख़रीदारोंको भी तहेदिलसे शुक्रिया अदा करते हैं, क्योंकि उनकी कृपा और कदरदानीके बिना तो हम एक क़दम भी आगे चल नहीं सकते। अब तक हमारे मिहरबान सज्जनोंने इस ग्रन्थको ख़रीदकर हमारा उत्साह खूब बढ़ाया है, आशा है, भविष्यमें वे अपनी कृपाकी मात्रा औरभी जियादा बढ़ायेंगे।

विनीत—

हरिदास।

प्रत्येक मनुष्यको आयुर्वेद पढ़ना परमावश्यक है।

आयुर्वेद न पढ़ना पाप है।

इस जगतमें ऐसा कोई विरला ही प्राणी होगा, जो दीर्घायु और आरोग्यता न चाहता हो। इन्हें चाहते सब हैं, पर ये दोनों अमूल्य पदार्थ कैसे मिल सकते हैं, इसे बहुत कम लोग जानते और जाननेकी चेष्टा करते हैं। एक ज़माना था, जब भारतवासी "धर्मार्थ काममोक्षाणा आरोग्यं मूल कारणं" इस महामंत्रको सब मंत्रोंसे अधिक समझते थे; जिस विद्याके पढ़नेसे शरीर सदा निरोग रह सकता है, रोग हमले कर नहीं सकते और अकाल मृत्यु हज़ारों कोस दूर भागती है, उसे पढ़ना और उसपर अमल करना अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। इसीसे वे हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ट रहते थे, सौ सवासौ बरसकी पूर्णायु भोगते थे और आधिव्याधि उन्हें बहुत ही कम सताती थीं। पर आजकल उस समयके विपरीत हो रहा है। इस समयके लोग उस विद्याको जो कल्पवृक्षके समान मन-चाहे फल देनेवाली, लोक-परलोक बनानेवाली और परम-पद या मोक्ष दिलानेवाली है नहीं पढ़ते। वे ही पढ़ते हैं, जो उससे अपनी रोज़ी चलाते हैं। इसीका नतीजा है कि, लोग आजकल सदा रोगग्रस्त, मन मलीन और तनक्षीण रहते हैं। २०।२५ सालकी उम्रमें ही उनके बाल सफेद होने लगते, दाँत गिरने लगते, आँखोंकी ज्योति मारी जाती और शरीरकी आधारस्तम्भ धातुएँ क्षय होने लगती हैं। अन्तमें वे उस उम्रमें ही जो उनके फलने-फूलने और अपने-पराये लिए कुछ कर गुज़रनेकी होती है, अपने प्यारोंको रोता-बिलपता छोड़कर यमसदनके राही होते हैं।

जो शख्स इस बातको जानता है कि मैं कूएँमें गिरनेसे मर

जाऊँगा, अगाध जलमें घुसनेसे डूब जाऊँगा और जलती आगमें पैठनेसे जल जाऊँगा, वह नदी, कूप और अग्निमें अपने प्राण हरगिज न गँवायेगा, पर जो इस बातको न जानता होगा, वह इनमे अपने प्राण गँवा सकता है। बालक सपको खिलौना समझ कर पकड ले सकता है, पर जानकार सयाना आदमी साँपके फनपर हरगिज हाथ न डालेगा। जो इस बातको जानता है, कि दूध और मछली संयोग-विरुद्ध पदार्थ हैं, इनको एक साथ खानेसे कोढ़ आदि भयकर रोग हो जायँगे, वह इन्हें एक साथ कभी न खायेगा, पर जो इस बातको जानता ही न होगा, वह इन्हें एक साथ खायेगा और कोढ़ जैसे घृणित रोगका शिकार होगा। जो इस बातको जानता है कि, मल मूत्रादिके वेगोंके रोकने और अपने बल-बूतेसे अधिक परिश्रम करने अथवा अतीव स्त्री-प्रसंग करनेसे राजयक्ष्मा या क्षय रोग हो जाता है, वह इन कामोंसे अवश्य बचेगा; पर जो इन बातोंको जानता ही न होगा, वह इन सबको करेगा और क्षय जैसे मूजी रोगके पञ्जेमें फँसेगा। मतलब यह है, कि अज्ञानतासे ही मनुष्य मिथ्या आहार-विहार सेवन करता और रोगोंको न्योता देकर जल्दी ही—विना समय आये इस दुनियासे कूच कर जाता है। अतः इन बातोंका जानना प्रत्येक मनुष्यका पहला कर्त्तव्य है।

आजकलके लोग समझते हैं, कि हमें इन बातोंके जाननेकी क्या जरूरत है? हम धनी हैं, यदि कोई रोग हमें हो भी जायगा, तो वैद्य-डाक्टर हमारे रुपयेके बलसे हमें अच्छा कर देंगे। पर यह बड़ी भारी भूल और नादानी है। इस तरह हरेक आदमी अपने तईं परतन्त्रताकी बेडियोंमें जकड़ता है। गोस्वामी तुलसी दासजीने बहुत ही ठीक कहा है—"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।" अर्थात् पराधीनको सपनेमें भी सुख नहीं। संसारके सभी दुःख पराधीनताके सामने तुच्छ हैं। पराधीनता सब दुःख और क्लेशोंकी जननी है। पशु-पक्षी भी

आज़ादीकी क़ीमत समझते हैं। वे भी पराधीन रहना पसन्द नहीं करते। फिर मनुष्य होकर परतन्त्र रहना कैसी भद्दी बात है! जिनका शरीर परतन्त्र है वे अगर सुखी हैं तो दुखिया कौन है? आजकल सौमें नब्वे आदमियोंके शरीर वैद्य-डाक्टरोंके अधीन हैं। बहुत कम लोग ऐसे होंगे, जो नित्य प्रति चिकित्सकोंकी तावेदारी न बजाते हों। दिन निकलते ही वैद्य या डाक्टरोंके घर पहुँचना, उनके मुँहकी तरफ ताकना, तरह-तरहकी लल्लोचप्पो और खुशामदें करना, बड़ी ही दीनता और आज़िज़ीसे कहना—आप दूसरे परमेश्वर हैं, आप प्राणदाता हैं, आपने हज़ारोंकी जानें बचाई हैं, आपके हाथमें अमृत है, आप इस युगके लुकमान या धन्वन्तरि हैं, आशा है, आप इस सेवकको भी प्राणदान देकर चिरकृतज्ञ बना लेंगे; वगैरः वगैरः बातें कह-कह-कर खुशामद करना आजकलके आदमियोंका नित्य कर्म है। पहले ज़मानेके लोग सदा निरोग रहते थे। उन्हें जीवनमें कभी ही चिकित्सकोंका मुँह देखना पड़ता था। वे सवेरे उठते ही परमात्माकी स्तुति करते और उससे फ़ारिग़ होकर कुछ पौष्टिक पदार्थ खाते थे; पर आजकलके लोग सवेरे ही वैद्य-डाक्टरोंकी स्तुति करते और कड़वी कषैली यहाँतक कि धर्म-ईमान खोनेवाली मदिरा-मिश्रित दवाएँ तक गटकते हैं। कितने ही जन्मरोगी तो दवा खाने और चिकित्सकोंकी गुलामी करनेमें ही सारी उम्र व्यतीत कर देते हैं। बहुतसे अमीरोंकी ज़िन्दगीकी नाव दवाओंके बलसे ही चलती है। वैद्य-डाक्टर उनकी जीवनरूपी नौकाके केवट हैं। क्या ऐसे लोगोंको कोई स्वतन्त्र कहनेका साहस कर सकता है? ऐसे लोगोंकी हालत पर तरस आता है।

भाइयो! जिस शरीरके तुम खुद मालिक हो, जो तुम्हारा अपना शरीर है जिस शरीर पर तुम्हारा पूरा आधिपत्य है, दुःखकी बात है कि, वही तुम्हारा शरीर आज तुम्हारा नहीं। आज उस शरीरपर रोगोंने, दवाओंने और चिकित्सकोंने अपना पूरा आधिपत्य जमा

रखा है। उस शरीरको अपना कहना महज नादानी और हँसीकी बात है। जिस शरीरपर रोग, दवा और चिकित्सक हावी हैं, वह निश्चय ही परतन्त्र है।

आजकल बहुत कम लोग होंगे, जिन्हें मन्दाग्नि, धातुरोग और प्रमेह प्रभृतिमें से किसी न किसी रोगकी शिकायत न हो। देखना चाहिये, कि ये रोग क्यों होते हैं; क्योंकि बिना किसी कारणके तो कोई काम होता ही नहीं। मालूम होता है, इन सब रोगोंकी जड़ रोगीकी अज्ञानता है। जो आयुर्वेदको न जाननेसे अज्ञानी हैं, वे ही बारम्बार रोगोंके चङ्गुलोंमें फँसते हैं। रोग-पीड़ित होते ही दान-दक्षिणा लेकर वैद्यजीकी शरणमें जाते हैं। वैद्यजी दवादारु खिलाकर उनके रोगको समूल नाश कर सकते हैं, पर उसके पुनःपुनः आक्रमण करनेको नहीं रोक सकते। क्योंकि वे अज्ञानतावश फिर मिथ्या आहार-विहार सेवन करेंगे और रोग फिर होगा ही। रोगको रोकना उनका अपना काम है—वैद्यजीका नहीं। वैद्य शब्द "विद्" धातुसे बना है, उसका अर्थ 'जानना' है। जो जाननेवाला है वही वैद्य है। मतलब यह है, कि जो आयु और आरोग्यताके तत्त्वोंको जानता है, वही वैद्य है। प्रत्येक मनुष्यको अपनी आयु और शरीरकी रक्षा एवं निरोग रहनेके लिए वैद्य बनना जरूरी है। क्योंकि यह काम वैद्यका नहीं—प्रत्येक मनुष्यका है। यह ज़रूरी नहीं है, कि हरेक आदमी दवाखाना, औषधालय या फारमेसी खोले; चूर्ण, गोली, अवलेह, आसव और रसोंको तैयार रखे खुद दवाएं सेवन करे और लोगोंको सेवन करावे। हमारा मतलब यह है, कि हर शख्स वैद्य या आयु-सम्बन्धी विद्याका जानकार बने और वैद्य या जानकार होनेके कारण ऐसे उपाय करे, जिनसे रोग पैदा ही न हो, क्योंकि दवा सेवन करनेसे रोगकी उत्पत्तिको रोकना अच्छा है। किसीने कहा है:—"एक औन्स रोगकी रुकावट एक पौण्ड इलाजसे बेहतर है।"

मगर जो रोगके रोकनेकी विधियाँ जानता होगा, वही रोगको रोक सकेगा, अतः प्रत्येक मनुष्यको आयुर्वेद पढ़ना और वैद्य बनना ज़रूरी है। डाक्टर गन महोदयने बहुत ही ठीक कहा है—"Obedience to the Laws of Health should be made a matter of individual and personal duty It is therefore, every individual's duty to study the laws of his being, and to conform to them Ignorance, or inattention on this subject, is sin" तन्दुरुस्तीके उसूल-ए-क़वानीनकी इताअत या फरमाँबर्दारी करना—स्वास्थ्यरक्षासम्बन्धी नियमों और विधानों-के अधीन रहना, हरेक मनुष्यका अपना निजी धर्म, कर्त्तव्य और फ़र्ज़ होना चाहिये; अर्थात् प्रत्येक मनुष्यका कर्त्तव्य-धर्म है, कि वह स्वास्थ्यरक्षा-सम्बन्धी विधानोंके अनुसार चले। अतः प्रत्येक मनुष्यको कर्त्तव्य है, कि वह अपनी सत्ता या हस्तीके नियम और क़ानूनोंको अध्ययन और मनन करे, उनका पाबन्द रहे; क़दम-क़दम पर पर उनके मुताबिक़ चले; उनके खिलाफ कोई काम न करे। इस विषयसे अनजान रहना या इस पर ध्यान न देना "गुनाह और पाप" है। मतलब यह है कि, हर मनुष्यको चाहे वह पुरुष हो या स्त्री स्वास्थ्यरक्षा-सम्बन्धी नियमोंका पाबन्द रहना चाहिये। उन नियमोंके विरुद्ध कोई भी काम न करना चाहिये। पर जो स्वास्थ्यरक्षाके नियमोंको जानेगा, वही उनका पाबन्द रहेगा, उनके अनुसार चलेगा। जो उन्हें जानता ही नहीं, वह उनके अनुसार कैसे चल सकेगा? इसीसे डाक्टर साहब मज़कूर फरमाते हैं, कि जिस तरह उन नियमोंका मानना प्रत्येक मनुष्यका धर्म या फ़र्ज़ है; उसी तरह जिस शास्त्रमें वे लिखे हैं उसको पढ़ना, समझना और तदनुसार चलना भी प्रत्येक मनुष्यका कर्त्तव्य है। उस शास्त्रको न पढ़ना या उस तरफ ध्यान न देना पाप है।" कहिये पाठक, अब तो आँखें खुलीं। हमारे ऋषि-मुनि ही आयुर्वेदका अध्ययन करना
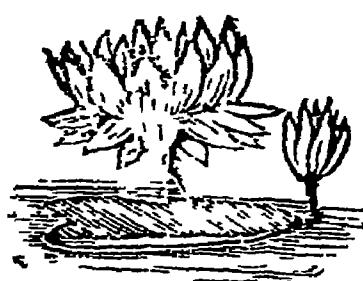
मनुष्य-मात्रका धर्म नहीं ठहराते ; बल्कि वे पाश्चात्य विद्वान भी, जिनकी मति गतिका अनुकरण करना आजकलके अधिकांश भारत-वासी अपना कर्त्तव्य समझते हैं, आयुर्वेदके अध्ययनकी इस ओरसे राय देते हैं और इस शास्त्रसे कोरे रहनेको घोर पातक कहते हैं।

हमारे ऋषि-मुनियोंने यद्यपि वेदके मंत्र-भागको शूद्रोंको पढ़ानेकी आज्ञा नहीं दी है, तथापि आयुर्वेदके पढ़ानेकी खुली आज्ञा दी है। क्योंकि यह ही शास्त्र ऐसा है, जिससे मनुष्यमात्रका सम्बन्ध है। इस शास्त्रके जाने बिना, मनुष्यका इस जगत्में अस्तित्व ही दुःख-पूर्ण है, उसे क्षण-भर भी सुख नहीं। प्रत्येक मनुष्य इसे पढ़े समझे, इसी लिए महात्माओंने इसकी तारीफ भी खूब की है। उनका कहना है—"जो आयुर्वेदकी युक्तियोंके अनुसार चलते हैं, उनको रोग नहीं होते ; बल्कि आयुकी वृद्धि होती है। इस विद्यासे कहीं धन मिलता है, कहीं दोस्ती होती है, कहीं धर्म होता है, कहीं यश मिलता है और कहीं काम करनेसे अभ्यास ही बढ़ता है। और विद्याएँ कदाचित फल न दें, उनसे कोई लाभ न हो, पर इससे तो हर मनुष्यको कोई न कोई लाभ हुए बिना नहीं रहता। और कुछ भी नहीं, तो पढ़नेवालेका स्वास्थ्य तो सदा अच्छा रहता ही है।" यह क्या कम लाभ है? हमारे शास्त्रोंमें जितने सुख कहे हैं उनमें "निरोगता"को प्रधान सुख माना है। धनसे सुख और दुःख दोनों मिलते हैं। सच पूछो तो धनमें दुःख ही अधिक है। धनके अर्जन, रक्षण और नाश तीनों अवस्थाओंमें ही घोर क्लेश और चिन्ता है। जिसमें सुखकी अपेक्षा दुःखकी मात्रा अधिक है, उसके लिए तो लोग जान देते और सारी उम्र पागल बने रहते हैं, पर जिस शरीरके सुखी करनेके लिए धन कमाया जाता है, उस शरीरके सुखी और निरोग रखनेवाली विद्याकी ओर लोग कतई ध्यान नहीं देते, यह कैसी अज्ञानता, मूर्खता और नादानी है!

आजके पाँच-सात साल पहले लोग शिकायत किया करते थे,

कि हिन्दीमें आयुर्वेद-ग्रन्थ नहीं हैं। हम लोग संस्कृत जानते नहीं, फिर उसे पढ़ें कैसे? अनेक संस्कृत-ग्रन्थोंका हिन्दी अनुवाद भी हो गया है, पर उसका होना न होना समान है, क्योंकि उस अनुवादके समझने-योग्य बुद्धि हममें नहीं। उसके समझनेके लिए खासे पाण्डित्यकी ज़रूरत है। इसके सिवा, उन ग्रन्थोंके पढ़नेमें आनन्द नहीं आता, दिल घबरा और ऊब उठता है। पबलिककी यह शिकायत बारम्बार हमारे कानों तक पहुँचनेसे ही, उतनी योग्यता और विद्वत्ता न होने पर भी, हमने बौनेके चाँद छूनेके प्रयास की तरह, साहस किया। परमात्माकी दयासे, हमें सफलता भी मिली जान पड़ती है। क्योंकि देशके अनेक विद्वान् और साधारण जनता कहती है, कि "चिकित्साचन्द्रोदय" की भाषा उपन्यासोंकी सी है, अतः उसके पढ़नेमें खूब मन लगता और जी नहीं ऊबता वग़ैरः वग़ैरः। जब जनताके मनलायक़ चीज तैयार हो गई है, तब प्रत्येक हिन्दी-भाषाभाषीका कर्त्तव्य है, कि अब वह इस ग्रन्थको आद्योपान्त पढ़े-समझे और अपना-पराया भला करे। इतना ही नहीं, प्रत्येक जानकारको चाहिये, कि वह अपने मित्रों और रिश्तेदारोंसे इसके पढ़नेकी जोरोंसे सिफ़ारिश करे। अमीर-उमराओं, सेठ-साहूकारों एवं राजा-महाराजा और ज़मीन्दारोंसे मिलनेवालों, उनको सलाह-सूत देनेवालों और उनके प्राइवेट सेक्रेटरियोंको—यदि उन्हें देश और देशकी विद्यासे कुछ भी प्रेम है तो—चाहिये कि, उन्हें समझा-बुझाकर इस ग्रन्थकी दस-दस, पाँच-पाँच और सौ-सौ प्रतियाँ ग़रीब और निस्सहाय विद्यार्थियोंको मुफ़्त बँटवावें। सोचिये तो सही, जब प्रत्येक मनुष्य इस ग्रन्थका पाठ नियम-पूर्व्वक करेगा, तब हमारे देशकी क्या हालत हो जायगी। आजकलकी तरह रोगोंकी भरमार न रहेगी, लोग हृष्टपुष्ट और बलिष्ठ होंगे, छोटी उम्रमें ही मौतके निवाले या कालके कौर न होंगे, डाक्टरी दवाओंके लिए धन नष्ट न करना होगा और करोड़ों रुपया इस

देशसे सात समन्दर चौदह नदियों पार जानेसे बचेगा, यहाँका धन यही रहेगा। हमने इस ग्रन्थकी रचना यही सब समझ कर की है। खास कर इसी ग़रज़से, आँखोंकी ज्योति मारी जाने और शरीरमें बल न होने पर भी, बुढ़ापेमें घोर कष्ट उठाया है। लोग इसमें हमारा स्वार्थ समझेंगे और हमारी बातों पर हँसेंगे भी। हम उनकी बातको झूठी नहीं कहते, निस्सन्देह इस ग्रन्थकी आयके एक अंशसे हमारी और हमारे आश्रितोंकी गुजर होती है। हम जब रात-दिन इसी काममें लगे रहते हैं और किसी तरहकी आजीविकाका उपाय नहीं करते, गुज़रका और ज़रिया नहीं है, तब हम इस ग्रन्थकी आयसे अपना और अपने आश्रितोंका पेट पालते हैं, इसमें क्या बुराई करते हैं? पर इसमें जरा भी झूठ नहीं, कि हमारा असल उद्देश देशमें फिरसे आयुर्वेदकी तूती बुलवाना, देशका धन देशमें रखवाना और लोगोंको रोग-रहित देखना है। अगर यह उद्देश न होता, तो हम भगवानकी दी हुई काफी दाल रोटी पर सन्तोष करके आनन्दसे हर भजन करते और इस तरह जल्दी ही मरनेका सामान न करते। खैर, जो हमसे बना हमने किया और करेंगे, अगर जनता इस ग्रन्थसे कुछ भी लाभ उठायेगी, फाल्तू उपन्यासोंके बजाय इस ग्रन्थको मन लगाकर पढ़े-समझेगी, तो वह निस्सन्देह निरोग, सुखी और दीर्घजीवी होगी और साथ ही अपनी कड़ी कमाईका पैसा बचानेमें भी समर्थ होगी। आशा है, मनोरथदाता भक्तवत्सल दीनबन्धु कृष्ण हमारी मनोकामना सफल करेंगे।

पहला अध्याय।

पाँचवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क

छठा अध्याय ।

सातवाँ अध्याय ।

आठवाँ अध्याय

नवाँ अध्याय ।

दसवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क

ग्यारहवाँ अध्याय

बारहवाँ अध्याय

तेरहवाँ अध्याय

चौदहवाँ अध्याय।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

सोलहवाँ अध्याय।

सत्रहवाँ अध्याय।

अठारहवाँ अध्याय।

उन्नीसवाँ अध्याय

बीसवाँ अध्याय

इक्कीसवाँ अध्याय

बाईसवाँ अध्याय ।

तेईसवाँ अध्याय ।

चौबीसवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क

पच्चीसवाँ अध्याय ।

छब्बीसवाँ अध्याय ।

सत्ताईसवाँ अध्याय ।

अट्ठाईसवाँ अध्याय ।

उन्तीसवाँ अध्याय ।

तेतीसवां अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क

चौंतीसवाँ अध्याय ।

पैंतीसवाँ अध्याय ।

छत्तीसवाँ अध्याय ।

सैंतीसवाँ अध्याय ।

अड़तीसवाँ अध्याय ।

उन्तालीसवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क

चालीसवाँ अध्याय।

इकतालीसवां अध्याय।

चित्र-सूची

चिकित्साचन्द्रोदय

सातवाँ भाग

पहला अध्याय

मूर्च्छा रोगका वर्णन।

मूर्च्छा का स्वरूप।

जब मनुष्यमें सुख-दुःख आदिके अनुभव करनेकी सामर्थ्य नहीं रहती—जब उसे सुख-दुःख आदिका ज्ञान नहीं रहता और वह काठ की तरह, बेहोश होकर, जमीन पर गिर पड़ता है, तब कहते हैं कि इसे "मूर्च्छा" या "मोह" रोग हो गया है। साधारण बोलचालकी भाषामें मूर्च्छाको बेहोश होना, ग़श आना या ज़ोफ़ आना कहते हैं।

नोट—थोड़ीसी बेहोशीको "मोह" और एकदम बेहोश हो जानेको "मूर्च्छा" कहते हैं।

मूर्च्छाके निदान-कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे मूर्च्छा रोग होता है :

(१) क्षीणता होना ।

(२) पित्त-दोषका बहुत ही बढ़ जाना ।

(३) विरुद्ध भोजन करना ।

(४) मल-मूत्रादिके वेगोंको रोकना ।

(५) लकड़ी वग़ैरः की चोट लगना ।

(६) सत्वगुण की कमी होना ।

निदान पूर्व्वक सम्प्राप्ति ।

जो मनुष्य क्षीण हो जाता है, जिसके पित्त-दोष बहुत ही बढ़ जाता है, जो विरुद्ध आहार सेवन करता है, जो मल-मूत्र आदि वेगोंको रोकता है, जिसके किसी तरह की चोट लग जाती है और जो हीन-सत्व हो जाता है, उस मनुष्यकी इन्द्रियोंके बाहरी और भीतरी स्थानोंमें जब उग्र दोष जम जाते हैं, तब मनुष्य मूर्च्छित या बेहोश हो जाता है ।

खुलासा—जो आदमी क्षीण हो जाते हैं, जो दूध-मछली प्रभृति को एक साथ खाते हैं, जो दिशा पेशाब वग़ैरः को रोकते हैं, जिनके लट्ठ वग़ैरः की भारी चोट लग जाती है, जिनमें सतोगुणकी कमी और तमोगुणकी अधिकता होती है, उनके बाहरी और भीतरी—नेत्र प्रभृति इन्द्रियवाही और मनोवाही स्रोतोंमें जब दोष कुपित होकर ठहर जाते हैं, तब उन्हें "मूर्च्छा" होती है ।

नोट (१)—कोई ज्ञानेन्द्रियोंका स्थान हृदयको मानते हैं और कोई दिमागको ।

नोट (२)—एक-एक दोषसे मूर्च्छा होती है । तीनों दोषोंके समुदायसे मूर्च्छा होती है, ऐसा नहीं समझना चाहिये ।

नोट (३)—"अल्प सत्वगुणवालेको मूर्च्छा होती है", इसका अर्थ यह है कि, अधिक तमोगुणवालेको मूर्च्छा होती है, क्योंकि मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण की अधिकता होती है।

नोट (४)—"हारीत संहिता"में लिखा है—मनुष्यकी पाँचों इन्द्रियोंसे बारह-बारह नाड़ियोंका सम्बन्ध है; यानी कुल मिलाकर १२×५=६० नाड़ियाँ हैं, जिनका इन्द्रियोंसे लगाव है। जब कुपित हुए दोष इन नाड़ियोंके द्वारोंको रोकते हैं, तब मनुष्य मूर्च्छित होता है।

मूर्च्छाके सामान्य लक्षण।

संज्ञाको वहानेवाली नाड़ियोंके, वायु आदि दोषोंसे, पीड़ित होने पर, यकायक, सुख और दुःखका ज्ञान नाश करनेवाला 'तमोगुण' प्राप्त होता है। जब तमोगुणका दौरदौरा हो जाता है, तब मनुष्यको सुख-दुःखका ज्ञान नहीं रहता और वह काठ या लकड़ीकी तरह ज़मीन पर गिर पड़ता है। इस रोगको 'मूर्च्छा' या 'मोह' कहते हैं।

मूर्च्छाके पर्याय शब्द—संज्ञोपघात, मूर्च्छाय, मूर्च्छा, मूर्च्छन, कश्मल, प्रलय और मोह हैं।

जिस मोहसे मनुष्य मुर्देके समान हो जाता है, उसे "संन्यास" कहते हैं।

मूर्च्छाके भेद।

मूर्च्छा रोग छः प्रकारका होता है। "सुश्रुत"में लिखा है :—

वातादिभिः शोणितेन मद्येन च विषेण च।
षट्स्वपि तासु पित्तं हि प्रभुत्वेनावतिष्ठते॥

वातसे, पित्तसे, कफसे, खूनसे, शराबसे और विषसे—इस तरह छे प्रकारकी मूर्च्छा होती है। इन सभी तरहकी मूर्च्छाओंमें ही "पित्त" की प्रधानता होती है। कहा है—"मूर्च्छा पित्ततमः प्रायेति"। अर्थात् मूर्च्छामें पित्त और तमोगुणकी अधिकता होती है।

खुलासा यह है, कि यों तो वातसे, पित्तसे, कफसे, खूनसे, शराब से और विषसे मूर्च्छा होती है ; पर सभी तरहकी मूर्च्छाओंमें पित्तका ज़ोर ज़ियादा होता है। ख़ाली पित्तसे ही मूर्च्छा नहीं होती ; वातसे भी होती है और कफसे भी होती है, पर इनमें राजा पित्त ही रहता है। पित्त तो सभी मूर्च्छाओंमें रहता है, पर जिसमें वातका ज़ोर ज़ियादा होता है, वह वातज मूर्च्छा कहलाती है। इसी तरह जिसमें कफ ज़ियादा होता है, वह कफज मूर्च्छा कहलाती है। मूर्च्छाके छै भेद ये हैं,—

(१) वातज,	(२) पित्तज,
(३) कफज,	(४) रक्तज,
(५) मद्यज,	(६) विषज।

नोट—यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, पित्त तो सत्वगुण-प्रधान और चैतन्यताका कारण है, फिर उससे मूर्च्छा क्यों होती है ? इसका जवाब यह है कि, अपने स्थान पर रहा हुआ शुद्ध पित्त सत्वगुण-प्रधान और चैतन्यताका हेतु होता है, पर दूषित और उद्रिक्त पित्त अज्ञानकारक हो जाता है।

मूर्च्छाके पूर्वरूप।

मूर्च्छा रोग होनेसे पहले नीचे लिखे हुए लक्षण या रूप देखनेमें आते हैं :—

(१) हृदयमें पीड़ा या कलमलाहटसा होना,
(२) जँभाइयाँ आना,
(३) ग्लानि होना,
(४) संज्ञाका नाश होना या होशहवास बिगड़ना,
(५) बलका नाश होना या कमज़ोरी आना।

वातज मूर्च्छाके लक्षण।

जिसे वातकी मूर्च्छा होती है, वह मनुष्य आकाशको नीला, काला या लाल देखता-देखता बेहोश हो जाता है और फिर तत्काल

हो होशमें आ जाता है। ऐसे रोगीके शरीरमें कँप-कँपी आती है, अँगोंमें तोड़नेकी पीड़ा होती है, हृदयमें वेदना होती है, शरीर दुबला हो जाता है और उसका रंग स्याही-माइल-लाल हो जाता है।

पित्तज मूर्च्छाके लक्षण ।

अगर रोगी आकाशको लाल, हरा अथवा पीले रंगका देखता-देखता बेहोश हो जाय और पसीने आकर फिर होशमें आ जाय, प्यास लगे, सन्ताप हो, आँखें लाल और पित्तसे व्याकुल हो जाय, दस्त पतला होने लगे और शरीरका रंग पीला हो जाय, तो समझो कि पित्तकी मूर्च्छा है।

कफज मूर्च्छाके लक्षण ।

अगर आदमी आकाशको सफेद बादलोंसे ढका हुआ देखकर अथवा घोर अन्धकारसे घिरा हुआ देखकर बेहोश हो जाय और फिर बहुत देर बाद होशमें आवे, शरीर गीले चमड़ेसे ढके हुए की तरह भारी जान पड़े, मुंहमें पानी भर-भर आवे और उबकाइयाँ आवें, तो समझो कि कफज मूर्च्छा है।

त्रिदोषकी मूर्च्छाके लक्षण ।

जो मूर्च्छा सन्निपात या वात, पित्त, और कफ तीनों दोषोंसे होती है, उसमें तीनों ही दोषों के लक्षण देखनेमें आते हैं। इस मूर्च्छावाला, अपस्मार या मृगीवालेकी तरह, बड़े जोरसे गिर जाता और गिर कर बहुत समय बाद होशमें आता है। कहा है :—

> सर्वाकृतिः सन्निपातादपस्मारइवाऽपरः ।
> शीघ्रं सा नाशयेत्प्राणान्तस्माद्यत्नेनसाधयेत् ॥

सन्निपातकी मूर्च्छामें तीनो दोषोंके लक्षण होते हैं। यह रोग

दूसरा अपस्मार या मृगी है। यह मूर्च्छा तत्काल प्राण नाश करती है, अतः इसका इलाज होशियारीसे करना चाहिये।

नोट—यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, जब मृगी और सन्निपातकी मूर्च्छाके लक्षण एकही से हैं, तब इन दोनोंमें फर्क कैसे समझा जाय? इसका जवाब चरक मुनि इस तरह देते हैं कि, मृगी रोगमें रोगी झागदार वमन करता है, दाँत चबाता है और उसके नेत्रोंका ढंग और ही तरहका हो जाता है वगैर-वगैर, पर सन्निपातकी मूर्च्छामें ये लक्षण और चेष्टायें नहीं होतीं।

खूनकी मूर्च्छाके कारण।
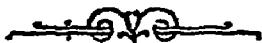
पृथ्वी और पानीमें तमोगुणके अंश बहुत ज़ियादा हैं और गन्ध तथा खून—पृथ्वी और पानीके पदार्थरूप हैं, यानी गन्ध और खून पृथ्वी और पानीके अंशोंसे बने हैं—तन्मय हैं, इसलिये सतोगुणी और रजोगुणी नहीं, किन्तु तमोगुणी मनुष्य खून की बू या रुधिरकी गन्ध सूँघने या सुँघानेसे बेहोश हो जाते हैं।

इस विषयमें बहुतसे मत हैं। कोई-कोई कहते हैं, कि यह युक्ति ठीक नहीं है, क्योंकि चम्पाकी गन्ध भी तो पृथ्वी-सम्बन्धी है, अतः उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा होनी चाहिये, पर उसकी गन्धसे मूर्च्छा नहीं होती।

कोई-कोई कहते हैं, कि खूनकी गन्धसे नहीं, किन्तु उसके देखनेसे मूर्च्छा होती है। यह मूर्च्छा रुधिर या खूनके ऐसा स्वभाव होनेसे होती है। किन्तु भोज कहता है कि, खूनके देखनेसे भी मूर्च्छा होती है और उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा होती है।
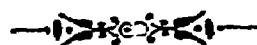
खूनकी मूर्च्छाके लक्षण।

अगर रुधिर या खूनकी गन्ध या देखनेसे मूर्च्छा होती है, तो शरीर स्तब्ध या जकड़ासा हो जाता है, शरीर और दृष्टि ज्योंके त्यों रह जाते हैं तथा गूढ़ या गम्भीर श्वास आते हैं।

मद्यकी मूर्च्छाके लक्षण ।

शराब पीनेसे जो मूर्च्छा होती है, उसमें मन सर्वथा स्मृतिहीन हो जाता है, याद्दाश्त एकदम मारी जाती है। यहाँ तक होता है, कि ऐसा आदमी रस्सीको साँप समझने लगता है। जब तक पीयी हुई शराब जीर्ण नहीं हो जाती, तब तक वह अपने अङ्गोंको ज़मीन पर पटका करता है। असल मतलब यह है कि, इस मूर्च्छावाला विलाप करता है और उसका अन्तःकरण नष्ट या विभ्रान्त सा हो जाता है।

विषकी मूर्च्छाके लक्षण ।

विषकी मूर्च्छा होनेसे कम्प, प्यास, लार गिरना, निद्रा, अँधेरी आना और ग्लानि ये लक्षण होते हैं। विषकी मूर्च्छा शराबकी मूर्च्छासे तेज़ होती है। किन्तु सञ्ज्ञा या होश-हवास नाश करनेके लक्षण विष और मद्य दोनोंमें समान हैं।

संन्यासके लक्षण ।
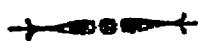
अत्यन्त कुपित हुए बलवान वातादिक दोष—वाणीकी, देहकी और मनकी यानी शरीर-सम्बन्धी सब क्रियाओंको नाश करके—बलहीन आदमीको मूर्च्छित या बेहोश कर देते हैं। इस रोगको "संन्यास" कहते हैं। इस रोगमें मनुष्य प्राणोंसे रहित, काठ की तरह, मुर्देके जैसा हो जाता है, इसलिये, इस रोगमें, वैद्यको तत्काल फल देनेवाली क्रिया शीघ्र ही करनी चाहियें। अगर तत्काल फलदायक क्रियाएँ जल्दी ही नहीं की जातीं; तो मनुष्य शीघ्र ही मर जाता है।

नोट—सन्यास रोगीके शरीरमें सूई चुभोना, नेत्रोंमें तेज़ अञ्जन लगाना, कौंचकी फली घिसकर लगाना और बिच्छू आदिसे कटवाना हित है। ये क्रियाएं तत्काल फल देती हैं।

जिसके दोष बहुत ही बढ़ जाते हैं, तमोगुणकी बहुत ही अधिकता होती है, वह मूर्च्छित चैतन्य नहीं होता। ऐसे रोगीको "सांन्यास" रोगवाला कहते हैं। संन्यास-रोगीको दुश्चिकित्स्य समझना चाहिए।

जिस तरह कच्ची मिट्टीकी डली पानीमें गिरते ही—भीगनेसे पहले ही—निकाल ली जाय तो रह सकती है; उसी तरह सुख-दुःखकी वेदनासे रहित—मृत्युपाशमें फँसे हुए—सांन्यास-रोगीकी जल्दी ही चिकित्सा की जाय, तो वह बच सकता है अन्यथा नहीं।

जो संन्यास रोगी तेज़ अञ्जन लगाने, धूनी देने, नाकमें नस्य निचोड़ने या फूँकनीसे सूखी नस्य फूँकने, सूई चुभोने, नाखूनोंमें आग से दाग देने, बाल और रोएँ उखाड़ने, दाँतोंसे काटने, शरीर पर कौंच की फ़ली घिसने और बिच्छूसे कटवाने तथा मारने पीटने या अंगोंको दबानेसे भी होशमें न आवे, जिसका पेट फूल रहा हो, मूँह से लार या पानी बहता हो, श्वास चलता हो या बन्द हो गया हो, उसे वैद्य त्याग दे, उसका इलाज न करे; क्योंकि मिहनत व्यर्थ जायगी; अगर उपरोक्त उपायोंसे रोगीको होश हो जाय, तो उसे तेज़ वमन और विरेचन देकर शुद्ध करे और हल्का पथ्य भोजन दे। ऐसे रोगीको पुराना घी पिलाना सर्वोत्तम उपाय है।

मूर्च्छा और संन्यासमें फ़र्क़।

दोषों के वेग बीतनेपर मूर्च्छा और न बढ़ा हुआ उन्माद, बिना दवाके, आप-से-आप शान्त हो जाते हैं परन्तु संन्यास रोग बिना दवाओंके शान्त नहीं होता। यही मूर्च्छा और संन्यास रोगमें फ़र्क़ है।

खुलासा—मूर्च्छा रोगी देर अबेरसे, बिना दवाके भी, होशमें आ

जाता है ; पर संन्यास-रोगी बेहोश होकर, विना दवाके होशमें नहीं आता ।

मूर्च्छा, संन्यास और भ्रममें भेद ।

मूर्च्छा—पित्त और तमोगुणकी अधिकतासे होती है ; पर भ्रम—रजोगुण, पित्त और वायुसे होता है ।

मूर्च्छा होनेसे प्राणीको सुख-दुःखादि किसी बातका ज्ञान नहीं रहता और वह काठकी तरह गिर पड़ता है ; पर भ्रम होनेसे मनुष्य अपने शरीर और सामनेकी सब चीज़ोंको घूमती हुई देखता है ।

मूर्च्छा होनेसे मनुष्य, दोषोंके वेग शान्त होने पर, विना दवा-दारुके भी, होशमें आकर उठ बैठता है ; पर संन्यास होनेसे वह विना दवाके होशमें नहीं आता ।

तन्द्रा और निद्रामें भेद ।

तन्द्रा होनेसे मनुष्यको, नींदसे घिरे हुएकी तरह, विषयोंका ज्ञान रहता है, शरीरमें भारीपन जान पड़ता है, जँभाइयाँ आती हैं और क्लम* या ग्लानि होती है ।

नींद आनेसे मन ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंके विषयोंके ग्रहण करनेसे रुक जाता है । उस समय मनुष्य सो जाता है ।

खुलासा—तन्द्रावाले आदमीके शरीरमें, नींदवालेकी तरह, घोर आलस्य रहता है, उसे जम्हाइयाँ आती हैं, आँखोंके पलक कुछ खुले और कुछ बन्द रहते हैं, ज़ोरसे पुकारने पर वह आँख खोलकर देखने लगता है, पर आलस्यके मारे उन्हें फिर बन्द कर लेता है ।

निद्रावालेको अगर पुकारो तो वह होशमें आ जाता है और

* विना मिहनत किये ही, श्वासके साथ जो ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंके विषयोंको अत्यन्त रोकनेवाला श्रम होता है, उसे "क्लम" कहते हैं ।

उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ अपने-अपने काम करने लगती हैं ; परन्तु तन्द्रावालेको बहुत पुकारने पर भी, उसकी इन्द्रियाँ चैतन्य नहीं होतीं। बहुत हल्ला मचानेसे तन्द्रावाला आँखें खोल देता है, पर उसे शीघ्र ही फिर बेहोशी आ जाती है ; निद्रामें यह बात नहीं होती। तन्द्रा और निद्रामें यही भेद है।

मूर्च्छा-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर किसी पर मूर्च्छाका आक्रमण हो, तो पहले साधारण उपायोंसे रोगीको होश कराना चाहिये। जैसे, पहले मुँह और आँखों पर जलके छींटे मारने चाहियें। इसके बाद रोगीको नम बिछौने पर सुलाकर, ताड़के पंखेसे हवा करनी चाहिये। अगर पानीके छींटे वगैर से रोगी होशमें न आवे, तो "एमोनिया" सुँघाना चाहिये। अथवा आगे लिखी हुई नस्य और अञ्जनोंमेंसे किसीसे काम लेना चाहिये।

(२) भ्रम रोगमें, दस सालका पुराना घी शरीरमें मालिश करना चाहिये। यह रोग वात और पित्तसे होता है ; अत: वातपित्त शामक चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) संन्यास रोगमें, मृगी रोगमें लिखे हुए तेज़ अञ्जन और नस्य आदिका प्रयोग करना चाहिये। सुई चुभाना, गरम लोहेसे दागना, दाँतोंसे काटना, कौंचकी फली शरीरमें घिसना, बाल खींचना आदि उपायोंसे संन्यास-रोगीको होशमें लाना चाहिये। जब रोगीको होश हो जाय, उसे "मूर्च्छा-रोगनाशक दवा" सेवन करानी चाहिये।

(४) अगर बालकको या बड़े आदमीको कृमिरोगकी वजहसे संन्यास रोग हो जाय, तो "कृमिरोग नाशक दवा"से उसे नाश करना

चाहिये। कृमि रोगकी चिकित्सा, "चिकित्साचन्द्रोदय" तीसरे भागमें लिखी है।

(५) रुधिरजन्य मूर्च्छामें, शीतल इलाज करना चाहिये।

(६) शराब पीनेसे हुई मूर्च्छामें, दुबारा फिर शराब ही पिलानी चाहिये। अथवा रोगीको शान्तिसे सुला देना चाहिये।

नोट—शराब पीनेसे हुई मूर्च्छामें ही शराब पिलानी चाहिये। और तरहकी मूर्च्छाओंमें शराब पिलाना मना है।

(७) विषके कारणसे हुई मूर्च्छामें अथवा सर्प आदि ज़हरीले जानवरोंके काटनेसे हुई मूर्च्छामें, "विष-नाशक औषधियाँ" सेवन करानी चाहियें। विष-चिकित्सा "चिकित्साचन्द्रोदय" पाँचवें भागमें लिखी है।

(८) मूर्च्छा रोगीके लिए जो काम मना हैं या अपथ्य हैं, उनसे उसे खूब रोकना चाहिये।

(९) शिरोविरेचन करने यानी नस्य देकर नाक-द्वारा दिमाग़ी मलामत निकाल देनेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाती है। बहुधा नस्य देनेसे मूर्च्छा टूट जाती है; इसलिये मूर्च्छामे नस्यका प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

(१०) जिस तरह नस्य देनेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है; उसी तरह तेज़ वमनकारक दवा देनेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाती है। जैसी ज़रूरत हो वैसा ही काम वैद्यको विचार कर करना चाहिये। मद्यसे हुई मूर्च्छामें बहुधा वमन करा देनेसे मूर्च्छा तत्काल जाती रहती है।

(११) मूर्च्छा पित्तसे होती है, भ्रम वात-पित्तसे होता है; तन्द्रा वात-कफसे होती है और निद्रा कफसे होती है,—इस बातको सदा याद रखकर, वैद्यको मूर्च्छा और भ्रमादिका इलाज करना चाहिये।

मूर्च्छा रोगमें पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

शीतल जलके छींटे देना, मणि अथवा हार पहनना, शीतल पदार्थोंका लेप करना, तिलका तेल मलवाना, बहती हुई नदी या तालावमें स्नान करना, पंखेकी हवा, शीतल सुगन्धित द्रव्य मिले हुए पीनेके पदार्थ, फव्वारेवाला मकान, चन्द्रमाकी शीतल किरणें, धूमपान—धूआँ पीना, अञ्जन आँजना, नस्य लेना, फस्त खोलना, दागना, सूई चुभोना, रोएँ और बड़े-बड़े बाल उखाड़ना, नाखून दवाना, दाँतोंसे काटना, नाक और मुँहसे निकलनेवाली हवा रोकना, जुलाव देना, लङ्घन कराना, क्रोध कराना, डराना, दुःखदायी बात पर सुलाना, रोगीका मन बहलानेवाली विचित्र-विचित्र कहानियाँ कहना, ऊँची आवाज़से बोलना, मनोहर बाजे ज़ोरसे बजाना, रोगीका भूली हुई बातोंको याद करना, आत्मज्ञानमें लगना और धीरज धरना—ये सब मूर्च्छा रोगमें पथ्य हैं ।

छाया, वर्षाका पानी, सौ बारका धोया घी, कोमल और तीखे रस, खीलोंका मांड, पुराने जौ, लाल चाँवल, हाँडीका घी, मूँग और मटरका यूष, जंगली जीवोंका मांसरस, राग-खांडव, गायका दूध, मिश्री, पुराना पेठा, परवल, केलेकी गहर, अनार, नारियल, चौलाई, हलके अन्न, नदीतटके कुएँका पानी, सफेद चन्दन, कपूरका जल, नेत्रबाला और शीतल बालू—ये सब मूर्च्छा रोगमें पथ्य हैं ।

दिनके समय पुराने चाँवलोंका भात, मूँग, मसूर, चना और उड़द की दाल, परवल, पका कुम्हड़ा, बैंगन और गूलर आदिका साग, दही,

मक्खन, दाख, अनार, पके आम, पका पपीता, शरीफा और कच्चा नारियल वग़ैरः मूर्च्छा-रोगीको पथ्य हैं।

रातके समय, पूरी, रोटी, हलवा, महनभोग, दूध, घी, मैदा या सूजीके पदार्थ और मिठाई देना पथ्य है।

सवेरेके समय, गायका धारोष्ण दूध और शर्बत पीना पथ्य है। अन्य समय, मिश्री-मिला और कपूरसे सुवासित किया हुआ आमले आदिका पना, मधुर औषधियोंके द्वारा पका हुआ दूध, अनारका रस मिला हुआ जंगली जानवरोंका मांस-रस ये सब भी पथ्य और रोगनाशक हैं।

अपथ्य।

ताम्बूल—पान, मेथी आदि पत्तोंके साग, दाँत घिसना, धूपमें फिरना, विरुद्ध अन्न-पान, स्त्रीप्रसङ्ग, पसीने निकालना, चरपरे रस सेवन करना; प्यास, नींद और मल-मूत्र आदिके वेग रोकना और माठा या छाछ पीना,—ये सब मूर्च्छा रोगमें अपथ्य हैं।

देरमें हज़म होनेवाले, तीक्ष्ण-वीर्य, रूखे और खट्टे पदार्थ खाना; मिहनत करना, चिन्ता करना, डरना, क्रोध या शोक करना, शराब पीना, रातदिन बैठा रहना, आग तापना, इच्छा-विरुद्ध काम करना, घोड़े आदिकी सवारी करना, रातको जागना और दाँतुन करना—ये सब भी मूर्च्छा रोगमें अपथ्य हैं।

मूर्च्छा नाशक नुसखे।

(१) शीतल जलके छींटे मारना, शीतल जलमें स्नान कराना, चन्द्रकान्त मणि या मोतियोंके हार पहनाना, कपूर और चन्दनका लेपन करना, पंखेसे हवा करना, शर्बत चन्दन या और शर्बत

पिलाना, गुलाब-जल छिड़कना, गुलाबका अर्क और केवड़ेका अर्क पिलाना ; मिश्री मिलाकर और कपूरसे सुवासित करके आमले वग़ैरः के रसका पना पिलाना ; मिश्री, चिरौंजी, दाख और महुएका रस मिलाकर पिलाना ; मधुर औषधियों के साथ पकाया हुआ दूध पिलाना , जंगली जानवरोंके मास-रसमें अनारका रस मिलाकर पिलाना, जौ, लाल चाँवल, मटर और मूँगके भोजन देना—ये सब आहार विहार सब तरहकी मूर्च्छाओंमें पथ्य या हितकारी हैं ।

नोट—शीतल जलके छींटे और शीतल जलका स्नान प्रभृति शीतल उपाय पित्त की मूर्च्छामें तो हितकारी है ही, पर वातज और कफज मूर्च्छामें कैसे हितकारी हो सकते है, यह सवाल मनुष्यके मनमें उठता है । उसका जवाब यही है, कि सभी मूर्च्छाओंमें "पित्त"की प्रधानता रहती है, अत. ये शीतल उपाय सभी तरहकी मूर्च्छाओंमें हितकारी हैं । वाग्भट्टने कहा है :—

मदेषु वातपित्तघ्नं प्रायो मूर्च्छासु चेष्टतं ।
सर्वत्रापि विशेषेण पित्तमेवोपलक्षयेत् ॥

प्राय मद और मूर्च्छा रोगोंमें वात-पित्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये और सब तरहके मद और मूर्च्छा रोगोंमें, विशेष करके, पित्तकी अधिकता समझनी चाहिये ।

(२) एक माशे कपूर और छै माशे सफेद चन्दनको गुलाबके अर्क़में घिसकर, सारे शरीर, दिमाग़ और छातीपर लेप करनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है ।

(३) कुछ देरतक, हाथसे नाक और मुँहको बन्द रखनेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है । कहा है :—

नासावदनरोधेन नस्यैर्मरिचनिर्मितैः ।
नर जागरयेद्भूमौ मूर्च्छितं मन्दमारुतैः ॥

मुँह और नाक बन्द करनेसे, काली मिर्चकी नस्य देनेसे और हल्की-हल्की हवा करनेसे ज़मीनमें पड़े हुए बेहोश आदमीको होशमें लाना चाहिये ।

(४) लोबानकी धूनी नाकमें देनेसे मूर्च्छा जाती रहती है ।

(५) खीरा काटकर सुँघानेसे मूर्च्छा जाती रहती है ।

(६) कौंचकी सूखी फली शरीरमें रगड़नेसे मूर्च्छा जाती रहती है ; पर रोगीके होशमें आनेपर, जहाँ कौंचकी फली रगड़ी हो वहाँ, "गायका घी" लगाना चाहिये, ताकि फलीका विष नाश हो जावे ।

(७) बेरोंका गूदा, काली मिर्च, ख़स और नागकेशरको बराबर-बराबर लेकर, सिल पर ठण्डे पानीके साथ महीन पीसलो और फिर ठण्डे पानीमें घोलकर पिला दो। इस नुसख़े से मूर्च्छित होशमें आ जाता है। सुपरीक्षित और सर्वोत्तम नुसख़ा है।

(८) छोटी पीपरोंका महीन चूर्ण "शहतमें" मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा रोग नष्ट हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(९) पञ्च मूलका कषाय—काढ़ा "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) कमलका कन्द या जड़, कमलकी नाल, पीपर और हरड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीस-छानकर "शहद"के साथ चटानेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है।

(११) स्त्रीका दूध पिलानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है। वाग्भट्टने स्त्रीका दूध पिलानेके साथ ही, उसीके दूधकी नस्य देनेकी भी राय दी है। कहा है :—

"पिबेद्वा मानुषी क्षीर तेन दद्याच्च नावनम्"

स्त्रीका दूध पीना चाहिये और उसीके दूधको नास देनी चाहिये।

(१२) दाख, चीनी, अनार, धानकी खीलें, दहीका तोड़ या दहीका पानी, नीले कमल और सफेद कमल—इन सबका हिम या शीत-कषाय पीनेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है।

नोट—हिमकी विधि "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ ५५५ और पृष्ठ १८३ के नम्बर १५ में देखो।

(१३) "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १८०—१८४में लिखे हुए "पित्तज्वर नाशक काढ़े" पिलानेसे मूर्च्छा रोग चला जाता है।

(१४) आमलों के स्वरसके साथ पकाया हुआ घी पिलानेसे मूर्च्छा रोग आराम हो जाता है।

(१५) सिरसके बीज, पीपर, कालीमिर्च, सैंधानमक, लहसन, मैनसिल और बच,—इनको बराबर-बराबर लेकर, गोमूत्रमें महीन पीस लो और अञ्जन सा बनाकर आँखोंमें आँजो। इस अञ्जनसे मूर्च्छित होशमे आ जाता है।

(१६) शहद, सैंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर, काजलके समान महीन पीस लो और आँखोंमें आँजो। इस अञ्जनसे भी मूर्च्छा जाती रहती है।

(१७) महुएका सार, सैंधानोन, बच, कालीमिर्च और छोटी पीपर—समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर जलमें पीस कर नस्य दो। इस नस्यसे मूर्च्छा जाती रहेगी—रोगीको होश हो जायगा।

(१८) छोटी कटेरी, गिलोय, सोंठ और पीपरामूल—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बना लो। इस काढ़ेके पीनेसे दारुण मूर्च्छा नष्ट हो जाती है। अगर इस काढ़ेके पक जाने पर, इसमें छोटी पीपरोंका २ माशे चूर्ण भी मिला लिया जाय, तब तो कहना ही क्या ? सुपरीक्षित है।

(१९) अगर मूर्च्छाका दौरा होता हो, तो शिरोविरेचन नस्य दे कर अथवा तेज़ वमन करानेवाली दवा देकर अथवा ऐसे ही और उपाय करके मूर्च्छाको नाश करना चाहिये।

(२०) मूर्च्छा रोगका हमला होते ही मुँह वगैरः पर शीतल जल या गुलाब-जलके छींटे मारने, फिर नर्मानर्म साफ बिछौनोंपर सुलाकर ताड़के पंखेकी हवा करनेसे मूर्च्छित होशमें आ जाता है।

(२१) अगर पानीके छींटे वगैरः से रोगी होशमें न आवे, तो उसे "ऐमोनिया" सुंघाना चाहिये। अगर विलायती ऐमोनिया न हो, तो नौसादर ६ माशे और सूखा चूना ३ माशे,—एक शीशीमें रखकर

सुँघाओ अथवा इन दोनोंको हथेली पर रखकर और जरासा पानी डाल कर दूसरी हथेलीसे रगड़ो और सुँघाओ । यही "ऐमोनिया" है ।

(२२) ताम्बेकी भस्म, खसका छना हुआ चूर्ण और नागकेशरका छना हुआ चूर्ण एक-एक माशे लेकर मिला लो । इसमेंसे तीन-तीन रत्ती चूर्ण, शीतल जलके साथ, लेनेसे मूर्च्छा इस तरह नष्ट हो जाती है, जिस तरह बिजलीसे वृक्ष ।

(२३) पारेकी भस्म यानी रस-सिन्दूरको पीपलके चूर्ण और शहदके साथ चटानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है । पर इसके साथ रोगीके ऊपर शीतल जलके छींटे मारने चाहियें और उसे शीतल जलमें डुबकी लगवानी चाहिये तथा ज़बर्दस्तीसे उसके अंग दबाने चाहिय ।

नोट—रस सिन्दूर और छोटी पीपरोंके पिसे-छने चूर्णको बराबर-बराबर लेकर और एकत्र मिलाकर रख लो । इसमेंसे चार-चार रत्ती चूर्ण ४ या ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छा, भ्रम और संन्यासमें अवश्य लाभ होता है । इसका नाम "सुधानिधि रस" है ।

(२४) हारीत-संहितामें लिखा है, जिस मनुष्यकी संज्ञा जाती रहे, होशहवास न रहें, उसका अँगूठा मरोड़ो और इसके बाद नाक मरोड़ो, पर इस तरह नहीं कि वे टूट जायँ, बल्कि इस तरह कि उनमें पीड़ा हो । अगर इतने पर भी होश न हो, तो दाँत और नाखूनोंसे शरीरको पीड़ित करो और मस्तक तथा पीठमें आगमें तपाई हुई लोहेकी शलाका वगैरः से दाह कर दो यानी दाग दो । अगर इन उपायोंसे भी बेहोश होश न करे, तो उसे हिंडोलेमें पटक कर झुलाओ । उन्होंने कहा है :—

> मूर्च्छातुरं सकल शीतल जलेन सिञ्चेत
> संवीजयेच्च शिखिपिच्छकवीजनैस्तु ।
> दोलायनं हि विहितं मनुजस्य,
> मूर्च्छामोहभ्रमञ्च हरते च मदात्ययवा ॥

मूर्च्छा रोगीपर पानीके छींटे मारने चाहियें, मोरपंखके बने हुए पंखेकी हवा

करनी चाहिये और दोने या हिंडोलेमें रोगीको झुलाना चाहिये। इन उपायोंसे मूर्च्छा, मोह, भ्रम और मदात्यय रोग नाश हो जाते हैं।

वृन्द महाशय लिखते हैं :—

लुञ्चन केशलोम्नाञ्च दन्तर्दशनमेवच।
आत्मगुप्ता च हर्षश्च हितस्तस्याऽवबोधने॥

मूर्च्छितको होशमें लानेके लिए, उसके सिरके बाल और शरीरके रोम नोचने चाहियें, उसे दाँतोंसे काटना चाहिये और उसके शरीरमें कौंचकी फली घिसनी चाहिये तथा खुशी पैदा करनेवाली बातें कहनी चाहियें।

(२५) हारीत महाराज लिखते हैं, कि मूर्च्छा और मोहकी शान्तिके लिए, चतुर वैद्य शरीरके खूनको घटाते हैं। यह फस्त खोलने या रक्तमोक्षण करनेका इशारा है। हिकमतवाले भी ऐसी ही राय देते हैं। पर यह काम बड़ी सावधानी और समझ-बूझके साथ करना चाहिये। जिसे फस्त खोलनेका अनुभव हो, वही इस कामको करे।

(२६) मुलहटीके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "घी" भी मूर्च्छा रोगमें फ़ायदा करता है।

(२७) आमलोंके स्वरसमें "धानकी खीलोंका चूर्ण और मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी मूर्च्छामें लाभ होता है।

(२८) सूखे हुए आमलोंकी गुठलियाँ निकालकर छिलकोंको महीन पीसलो, फिर उन्हें ईखके रसमें ४८ घण्टे तक खरल करो। जितना ही ईखका रस पिलाया जा सके, पिलाओ। अन्तमें सुखाकर फिर पीसो और कपड़ेमें छानकर रखलो। इस चूर्णको दो-दो या तीन तीन माशेकी मात्रासे, दिनमें दो बार, ताजा पानीके साथ, फँकानेसे मूर्च्छा, प्यास, प्रमेह, दाह और पित्तके विकार शान्त हो जाते हैं। अनेक बारका परीक्षित है।

(२९) केवड़ेका अर्क़ और सफेद चन्दन घिसकर शीशीमें रख लो। शीशीके मुँहपर महीन कपड़ा बाँध दो और हिला-हिलाकर

रोगीको सुँघाओ। इससे मूर्च्छा और गरमीका सिरदर्द आराम हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(३०) ब्राह्मीके पत्तोंके रसके साथ "घी" पकाकर सेवन करनेसे पित्तजन्य मृगी और मूर्च्छामें लाभ होता है।

(३१) ब्राह्मीके पत्तोंका रस १ तोले, कुलींजन ३ माशे और शहद ३ माशे मिलाकर, सवेरे-शाम, चाटनेसे उन्माद, चित्तभ्रम, मूर्च्छा और मृगी रोगमें अवश्य लाभ होता है। इन रोगोंपर "ब्राह्मी" अक्सीर दवा है।

(३२) सफेद कमलकी पंखड़ी, मुलहटी और मिश्री—इनका काढ़ा, शीतल होनेपर, पीनेसे पित्तज्वर और पित्तकी मूर्च्छा नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) बाँझ-ककोड़ेकी जड़को "घी"में घिसकर और शकर मिलाकर नास लेनेसे मृगी और मूर्च्छा नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३४) केवड़ेको बालका चूरा तम्बाकूकी तरह बारम्बार सूँघनेसे मृगी और मूर्च्छामें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३५) सिरका, गुलाबजल और धनिया—इन तीनोंको एक शीशीमें भर कर सुँघानेसे ग़श या मूर्च्छा रोगसे आदमी उठ बैठता है। पर इसे, होश न हो तबतक, बारम्बार सुँघाना चाहिये। साथ ही गुलाबका अर्क़ मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाना चाहिये और पाँवके तलवोंमें मक्खनकी मालिश करनी चाहिये। इससे दिलमें ताक़त आती है। याद रखो, मूर्च्छा रोग दिलसे सम्बन्ध रखता है।

अश्वगन्धारिष्ट ।

—००:०:००—

(३६) नागौरी असगन्ध २०० तोले, तालमूली ८० तोले, मँजीठ ४० तोले, बड़ी हरड़ ४० तोले, हल्दी ४० तोले, दारुहल्दी ४० तोले,

मुलेठी ४० तोले, रास्ना ४० तोले विदारीकन्द ४० तोले, अर्जुन की छाल ४० तोले, नागरमोथा ४० तोले और निवड़ी ४० तोले, अनन्तमूल ३२ तोले, श्यामलता ३२ तोले, सफेद चन्दन ३२ तोले, लाल चन्दन ३२ तोले, वच ३२ तोले और चीतेकी छाल ३२ तोले, सबको जौकुट करके १२ मन ३२ सेर जलमें पकाओ। जब ६४ सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर कपड़ेमें छान लो और चीनी या मिट्टीके चिकने और मज़बूत घड़ेमें भर दो।

इसके बाद धायके सूखे फूल ८ सेर, उत्तम शहद बत्तीस सेर, सोंठ ८ तोले, कालीमिर्च ८ तोले, छोटी पीपर ८ तोले, दालचीनी १६ तोले, तेजपात १६ तोले इलायची १६ तोले, फूलप्रियंगु १६ तोले और नागकेशर ८ तोले—इन सब दवाओंको पीस-छान कर उसी घड़ेमें भर दो और मुहको बन्द करके मुद्रा दे दो और १ महीने तक मत छेड़ो। महीने भर बाद, छान कर बोतलोंमें भर लो। यही "अश्वगन्धारिष्ट" है।

सेवन-विधि—१ महीनेसे ६ महीनेके बालकको ५ से १२ बूँद तक; ३ महीनेसे २ साल तकके बालकको १५ से ३० बूँद; दो से ५ वर्ष तकके बालकको ३० से ६० बूँद, ५ से १२ वर्ष तक की उम्रवालेको १ तोले तक; इसके बाद जवान आदमीको बलानुसार १॥ तोलेसे ४ तोले तक की मात्रा है।

रोग नाश—इसके सेवन करनेसे २० तरहके प्रमेह, ध्वजभङ्गता, नामर्दी, दिमागकी कमज़ोरी, नज़रकी कमजोरी, याद्दाश्त कम होना, आँखोंके आगे अँधेरा आना, मूर्च्छा, भ्रम, संन्यास, मानसिक विशृङ्खलता, उत्साहकी कमी, किसी काममें दिल न लगना, ज़रूरतसे ज़ियादा डरना, सिर घूमना, छातीका दर्द, थोड़े परिश्रमसे थकावट आना प्रभृति तकलीफें निश्चय ही आराम हो जाती हैं।

यह "अश्वगन्धारिष्ट" उम्र बढ़ानेवाला, पुष्टि करनेवाला, पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला, धातुओंको शुद्ध करनेवाला, दुबले शरीरको पुष्ट

करनेवाला, सदा एक समान आरोग्य रखनेवाला; खूनके लाल कणोंको बढ़ानेवाला, इन्द्रियोंको बलवान करनेवाला, स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाला, मेधाशक्तिकी वृद्धि करनेवाला, नष्ट शुक्र या वीर्यको बढ़ानेवाला और स्वप्नदोषको नाश करनेवाला है। इतना ही नहीं, इस अमोघशक्तिशाली महाकल्याणदायिनी महौषधिको यथाविधि पीनेसे स्नायु-तन्तु सबल होकर शरीरके यन्त्र बलवान होते हैं। इससे स्त्री-पुरुषोंके रज-वीर्य शुद्ध होकर गर्भोत्पादक कीटाणु सजीव होते हैं और निस्सन्तानके सन्तान होती है।

विशेष-चिकित्सा ।

रक्तजादि मूर्च्छानाशक नुसखे ।

(३७) खूनी मूर्च्छामें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। पंखेकी हवा और शीतल जलके छींटे आदि नं० १ में लिखे उपाय करने चाहियें।

(३८) शराबकी मूर्च्छामें फिर दुबारा शराब पीनी चाहिये अथवा सुखसे सोना चाहिये। किन्तु वृन्द लिखता है—

"मद्यजायां वमेत्सद्यो निद्रां सेवेत वा सुखम् ।"

मद्यसे हुई मूर्च्छामें तत्काल वमन या कय करनी चाहिये अथवा सुखपूर्वक सोना चाहिये।

(३९) विष की मूर्च्छामें विषनाशक दवाओंसे काम लेना चाहिये।

(४०) अगर बालकको कृमियोंकी वजहसे मूर्च्छा होती हो, तो केशर और कपूर दूधके साथ घिस-घिसकर पिलानेसे अवश्य लाभ होता है। कृमिनाश करनेमें यह नुसखा रामबाण है।

(४१) बालकको कृमियोंकी वजहसे मूर्च्छा आती हो, तो सफेद

प्याज़ काटकर सुंघाओ ; चन्दन और कपूर पीसकर सिर पर लेप करो ; सफेद प्याज़का रस आँजो और सफेद प्याज़का रस पिलाओ। सफेद प्याज़का रस नाकमें डालनेसे भी मूर्च्छा और उन्मादमें लाभ होते देखा है। यह प्याज़का नुसखा बड़े और बालक दोनों को लाभदायक है। सफेद प्याज़ काटकर मीठे दहीमें मिलाने और मिश्री डालकर खानेसे भी पित्तविकार और मूर्च्छामें लाभ होता है।

चोट लगने या गिरने पड़नेसे हुई मूर्च्छाकी चिकित्सा।

(४२) शुद्ध शिलाजीत २ तोले और पीपर की लाख ८ तोले लेकर पीस लो और शीशीमें रख दो। इसकी मात्रा दो या तीन माशेकी है। दिनमें तीन-चार बार, एक-एक मात्रा खाकर, गरम दूध पीनेसे रक्तपित्त—नाक-कान आदिसे खून गिरना, दिमाग़ या छातीमे टक्कर लगने या ऊँचेसे गिरने पर मूर्च्छा आना आदि रोगोंमें इस नुसखे से बड़ा लाभ होता है। जो आदमी चोट लगनेसे बेहोश हो गये थे, उनको हमने यही नुसखा सेवन कराया और अच्छा लाभ उठाया।

हिस्टीरियाकी मूर्च्छाकी चिकित्सा।

(४३) अगर हिस्टीरिया रोगीकी मूर्च्छा दूर करनी हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिये :—

(१) अगर रोगीकी दाँती भिंच जाय तो घबराना न चाहिये। अगर रोगीको बेहोश हुए देर जाय, तो भी चिन्ताकी बात नहीं है। पहले रोगीके मुँह पर तीन-चार बार जलके छींटे दो। अगर इससे भी होश न हो, तो एक लोटा पानी धीरे-धीरे धाराके रूपमे रोगीके सिर पर डालो। अगर इससे भी लाभ न हो तो सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—एक-एक रत्ती पीस-छान कर, काग़जकी फूंकनीमें रखकर नाकमें फूंको। अगर इस उपायसे भी मूर्च्छा न खुले तो नीचेका उपाय करो :—

(२) नौसादर और चूना-बराबर-बराबर लेकर एक शीशीमें भर दो और कुछ देर तक काग बन्द करके रखी रहने दो । फिर उसका मुह खोलकर रोगीकी नाकके सामने लगा दो, जिससे उसकी तेज़ गन्ध नाकमें जावे । इसको रोगीकी नाकके सामने लगा कर झट हटा लो, बहुत देर तक नाकके सामने मत रखो । हिष्टीरिया-रोगी जो मुर्देकी तरह बेहोश पड़ा होगा, फौरन उठ आवेगा । परीक्षित है ।

(३) कालीमिर्चोंका चूर्ण तुलसीके पत्तोंके रसमें पीस कर नास देनेसे बेहोश रोगी तत्काल होशमें आ जाता है ।

(४) लौंगको दूध या घीमें घिसकर आँखोंमें आँजनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है ।

(५) लौंग, सोंठ, मिर्च और पीपरोंको महीन पीस कर दाँतों या मसूड़ोंपर मलनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है ।

(६) मोरपंखकी धूनी देनेसे अथवा मोरपंखके चदोवेको जलाकर, उसकी राख शहदमें मिलाकर, रोगीके दाँतों पर घिसनेसे दाँत खुल जाते हैं और मूर्च्छा नाश हो जाती है ।

(७) सफेद प्याज़ कूट कर नाकके सामने रखनेसे हिष्टीरियाकी मूर्च्छा दूर हो जाती है ।

(८) महुएके बीज, सहँजनेके बीज, बायबिडंग और कालीमिर्च—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और हिस्टीरियावालेको सुँघाओ, फौरन होश होगा ।

नोट—इन उपायोंमेंसे किसी न किसी उपायसे हिष्टीरियावालेको होश आ जायगा । यदि इनसे लाभ न हो, तो रोगीको पड़ा रहने दो, कुछ समय बाद आप ही होश हो जायगा । ये सब हिष्टीरियाकी मूर्च्छा नाश करनेके परीक्षित उपाय हैं । इस रोगके लक्षण और चिकित्सा हम आगे अपस्मार प्रकरणमें लिखेंगे । आजकल यह रोग औरतोंको बहुत होता है ।

संन्यास रोगकी चिकित्सा।

—::०::—

हृदयमे ठहरे हुए वात, पित्त और कफ—हृदयको दूषितकरके "संन्यास" रोग पैदा करते हैं। उससे मनुष्य मुर्देके समान हो जाता हैं। अगर संन्यासवालेका इलाज जल्दी ही नहीं किया जाता, तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह रोग बहुत ही भयानक है।

संन्यास-रोगी मुर्देके समान तो हो ही जाते हैं। उस समय वे जीते हैं या मर गये, इसकी पहचान करना कठिन हो जाता है, अतः बहुतसे अनाडी रोगियोंको मरा हुआ कह देते हैं और घरवाले "रामनाम सत्य है" चिल्लाते हुए बेचारोंको मरघटपर लेजाकर फूँक आते हैं, अतः बिना परीक्षा किये संन्यास रोगीको जलाना या गाड़ना भयानक भूल है।

संन्यास रोगी या मूर्च्छा रोगी वास्तवमें मरा है या नहीं, इसकी परीक्षा करनेकी उत्तमोत्तम पाँच तरकीबें हमने "चिकित्सा चन्द्रोदय", पाँचवें भागके पृष्ठ १६०-१६१ में लिखी हैं। वैद्य ही नहीं प्रत्येक आदमी को, चाहे वह वैद्यका धन्धा करता हो और चाहे न करता हो, उन तरकीबोंको जरूर याद कर लेना चाहिये।

संन्यास रोग होते ही, बिना जरासी भी देर दिये, वैद्यको शीघ्र-फलदायिनी क्रियाएँ करनी चाहियें। वाग्भट्ट आदि सभी आचार्य्योंने नीचे लिखी चिकित्सा करनेकी राय दी है :—

(१) रोगीकी आँखोंमें तेज अंजन आँजो और नाकमें अति तीव्र नस्य दो।

(२) नाकमें धूनी दो और फूँकनीसे प्रधमन नस्य नाकमें फूँको।

(३) नाखूनोंके बीचमें सूई चुभाओ या गरम लोहेकी सलाईसे नखोंके भीतर दागो।

(४) बाल उखाड़ो और रोएँ खींचो।

(५) दाहकर्म करो। हारीतने मस्तक और पीठमें दागनेकी राय दी है।

(६) दाँतोंसे काटो।

(७) विच्छुओंसे कटाओ।

(८) काली मिर्च और विजौरा नीबू आदिका रस मुँहमें डालो।

(९) शरीरपर कौंचकी फलियाँ घिसो। जव रोगी होशमें आ जाय; जहाँ फलियाँ घिसो वहाँ, गायका ताज़ा मक्खन लगाओ।

(१०) होशमें आये हुए रोगीको "लहसनका रस" पिलाओ अथवा सोंठ, काली मिर्च, पीपर और सेंधानोन मिलाकर विजौरे नीबूकी केशर खिलाओ। स्रोतोंकी सफाईके लिए हल्का, कड़वा, तीक्ष्ण और गरम अन्न खिलाओ।

(११) वालकोंको संन्यास रोग हो, तो कास्टर आयल या रेंडी का विशुद्ध तेल, अवस्था और वलानुसार, पिलाकर दस्त करा दो और पेटमें स्वेद करो। अगर कृमिरोगकी वजहसे संन्यास रोग हो, तो कृमिनाशक दवा खिलाओ-पिलाओ। कृमिरोगका इलाज "चिकित्सा-चन्द्रोदय" तीसरे भागमें लिखा है।

भ्रमकी चिकित्सा।

(१) लाल रंगका दो तोले जवासा लाकर, पाव-भर पानीमें औटाओ। जव चौथाई पानी रह जाय, उतारकर मल-छानलो और गायका आधी छटाँक "घी" मिलाकर पिला दो। इसका नाम "दुरालभा क्काथ" है। इसके पीनेसे ३।४ दिनमें ही "भ्रम" नाश हो जाता है। सुपरीक्षित है। वैद्यजीवनमें लिखा है:—

> दुरालभाकषायस्य घृतयुक्तस्य सेवनात।
> भ्रमः शाम्यति गोविन्दचरणस्मरणादिव॥

जवासेके काढ़ेमें घी डालकर पीनेसे भ्रम इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह गोविन्दके याद करनेसे संसारका भ्रम नाश हो जाता है। और भी कहा है :—

पिबेद्दुरालभाक्वाथं सघृतं भ्रमशान्तये ।

जवासेका काढ़ा घी मिलाकर पीनेसे भ्रमादि रोग नष्ट हो जाते हैं ।

नोट—जवासा १ तोले, छिली मुलेठी १ तोले, छोटी इलायचीके दाने २ रत्ती और मिश्री २ तोले—इन सबको कूट-पीसकर डेढ़ पाव पानीमें औटाओ ; जब चौथाई पानी बाकी रह जाय, मलकर छानलो और चार माशे "घी" मिलाकर पीलो । यह १ खुराक है । इसी तरह सवेरे-शाम इस काढ़ेके पीनेसे भ्रम रोग, घुमरी आना, चक्कर आना, शरीर भ्रमना और दिल घबराना प्रभृति शिकायतें नाश हो जाती हैं । अनेकों बारका परीक्षित नुसखा है । इसी तरह केवल दो तोले जवासेका काढ़ा भी बनता है ।

(२) बरियारेके बीज ६ माशे और मिश्री १ तोले मिलाकर खानेसे भ्रम निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है ।

(३) त्रिफलेके तीनों फलोंके छिलके तीन-तीन माशे लेकर, महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो और तोले भर "शहदमें" मिलाकर रातको चाटो और सवेरे ही ३ माशे अदरख और ६ माशे गुड़ मिलाकर खाओ । इन उपायोंसे "भ्रम" नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(४) आमलोंके रसके साथ पकाया हुआ "कल्याण घृत" पिलानेसे भ्रम नाश हो जाता है। परीक्षित है ।

(५) हरड़ोंके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "घी" पिलानेसे भ्रम नाश हो जाता है ।

(६) सोंठ, पीपर, शतावर और हरड़ चार-चार तोले और गुड़ २४ तोले,—इन सबको मिलाकर बेर-समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके खानेसे भ्रम नाश हो जाता है ।

(७) ताम्बेकी भस्मको, जवासेके काढ़ेमें घी मिलाकर, उसके साथ खानेसे भ्रम तुरन्त ही भाग जाता है ।

नोट—जवासेका काढ़ा १ छटाँक तैयार करो, उसमें आधी छटाँक घी मिला दो । फिर उसमें दो रत्ती ताम्बा भस्म मिलाकर पीलो । यह नुसख़ा बहुत उत्तम है । कई बार परीक्षा की है ।

(८) "दस सालका पुराना घी" भी भ्रम रोगमें बहुत फायदा करता है। कहा है :—

व्यजनांजन शीताद्यो मूर्च्छासु भ्रमके घृतम्।

मूर्च्छा रोगमें ताड़ आदिके पत्तोंकी शीतल हवा, अञ्जन और अत्यन्त शीतल उपचार करने चाहिएँ तथा भ्रम रोगमें घीका सेवन करना चाहिये।

हिकमतका मत।

जिस रोगमें हरेक चीज़ घूमती हुई जान पड़ती है, उसे "द्वार" कहते हैं और जिस रोगमें आँखोंके सामने अँधेरी आती है, उसे "सदर" कहते हैं। यह रोग दोषोंकी भाफके हिलने और उसके ब्रह्माण्डमें भरनेसे होता है।

(९) धनिया ६ माशे और आमले ६ माशे कुचलकर, रातको जलमें भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर और २ तोला मिश्री मिलाकर पी लो। इससे पित्तके कारणसे हुआ भ्रम रोग आराम हो जाता है।

(१०) सरफोंका, पिसा हुआ धनिया और हरड़की जड़—कुल मिलाकर साढ़े तीन तोले लेलो और काढ़ा करके ७ दिन तक पीओ। इसके पीनेसे "द्वार" रोग नाश हो जाता है।

(११) पटसनके बीज पीसकर और गेहूंके आटेमें मिलाकर रोटी पका खानेसे "द्वार" या भ्रम रोग जाता रहता है।

(१२) सफेद खशखाश, धनिया और बिनौलोंकी मींगी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर कुल चूर्णके वज़नसे दूनी मिश्री पीसकर मिला दो और हर दिन १ से ३ माशे तक अर्क़ गुलाब या पानीके साथ फाँको। इस चूर्णसे "द्वार" और "सदर" यानी घुमरी आना और अँधेरी आना दोनों आराम हो जाते हैं।

तन्द्रा-निद्रानाशक नुसख़े।

(१) घोड़ेके मुंहके भागोमे कालीमिर्च घिसकर, दोनों आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा जाती रहती है। परीक्षित है।

(२) सेंधानोन, सहँजनेके वीज, सरसों और कूट—इनको ३।३ माशे लेकर महीन पीस लो। फिर वकरीके पेशावमें घोटकर, नाकमें नस्य देनेसे घोर तन्द्रावाला भी चैतन्य हो जाता है। परीक्षित है।

(३) घोड़ेकी लारमें सेंधानोन, कपूर, मैनसिल, पीपर और शहतको महीन पीस कर आँखोमें आँजनेसे निद्रा और तन्द्रा नाश हो जाती है।

(४) सोंठ, पीपर, वच और सेंधानोन—वरावर-वरावर लेकर और महीन पीस-छान कर नस्य देनेसे घोर तन्द्रा भी नष्ट हो जाती है।

(५) कटेहरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ, भारंगी और हरड़—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा वनाने और पीनेसे तन्द्रा और निद्रा दोनों नाश हो जाती हैं।

(६) करंजुएके वीज, सधानोन, लहसनके पत्तोंका रस, भाँगरा, हरड़ और वच—इनको वरावर-वरावर लेकर, पानीके साथ खूब महीन पीसलो और आँखोंमें आँजो। इस अञ्जनसे तन्द्रा नाश हो जाती है।

(७) वचको महीन पीसकर, उसका अञ्जन नेत्रोंमें लगाने तथा नस्य देने और रुधिरस्राव करानेसे तन्द्रा रोग नाश हो जाता है। कहा है :—

वचाञ्जनं स्यात्तन्द्रायां नस्यासृक्स्रावणौ तथा।

(८) सिरका सूँघनेसे नींदका जियादा आना मिट जाता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, सिर या भेजेमें अधिक मलके जमा होनेसे यह रोग होता है। इस रोग और द्वार तथा सदर रोगमें "इत्रीफल" वहुत फायदा करता है। "इत्रीफल"की तरकीव नीचे लिखते हैं :—

काबुली हरड़की छाल, पीली हरड़की छाल, आमलेकी छाल, वहेड़ेका वक्कल और काली हरड़—ये सव पाँच-पाँच तोले लो। गुलावके फल २० माशे, सनाय २० माशे, तुरवुदकी छाल २० माशे और सौंठ २ माशे इनको कूटपीस कर छान लो और वादामके तेलमें भून लो। इसके वाद, इसमें तिगुना शहद या मिश्री मिला दो। इसीको "इत्रीफल मुलय्यन" कहते हैं। इससे स्वभाव नरम होता और हानिकारक दोष दिमाग और पकाशयसे निकल जाते हैं। इससे कानके शब्द, भिनभिनाहट और नेत्रोंकी स्याही दूर होती है। इसके सिवा चक्कर आना, शरीर घमना, नेत्रोंके सामने अँधेरी आना और वहुत नींद आना आराम होता है।

सकते पर हकीमी नुसखे।

(१) स्त्रीका दूध नाकमें टपकाने और सिरपर दुहनेसे मूर्च्छामें लाभ होता है। अगर स्त्रीका दूध न मिले, तो बकरीके दूधसे काम लेना चाहिये।

(२) खीरे-ककड़ीके बीजोंका पानी थोड़ेसे सिरके में मिलाकर शीशीमें रख लो। इसके सूँघनेसे मूर्च्छामें लाभ होता है।

(३) हरी कासनीके रस और तरबूज़के पानीमे सफेद चन्दनको घिसो और ज़रासा कपूर भी मिला लो। इसके सूँघनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(४) चन्दन और कपूर घिसकर और काहूके पत्तोंके रसमें मिलाकर नाकमें टपकानेसे गरमीकी मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(५) कुन्दश, पपड़िया कत्था और एलुवा, इनको चुकन्दरके रसमें घोटकर कजली कर लो और छान लो। इसमे से कुछ बूँदे नाकमें टपकानेसे होश हो जाता है।

(६) ज़रासी हींग अर्क़ सौंफमे पीसकर कण्ठमें टपकानेसे मूर्च्छा या सकतेमें लाभ होता है।

(७) हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है कि, सकतेकी बीमारीमें हाथ पाँव मलना और और बाँधना अच्छा है। अगर यह रोग खूनसे हो, तो सरेरुकी फस्त खोलनी चाहिये। अगर कफकी अधिकतासे हो, तो वस्ति कर्म और शाफेके ज़रियेसे मल निकालना चाहिये। कानमें दवा टपकाना, नाकमें सुंघाना और वमन कराना भी अच्छा है।

नोट—अगर सकतेवालेका साँस चलता हो, तो आराम होनेकी उम्मीद है। अगर साँस न चलता हो, तो आराम होनेकी आशा नहीं। सकता वह रोग है, जिसमें आदमी हिलजुल भी नहीं सकता—रोगी ठीक मुर्दासा मालूम होता है। इसका मुख्य कारण मेजेमें मलकी गाँठ पड़ना है।

मदात्यय-वर्णन।

जिस चीजको आजकल शराब कहते हैं, उसे ही संस्कृत भाषामें मद्य या मदिरा कहते हैं। मदिरा पीनेकी चाल आजकलकी या सौ दो सौ बरसकी नहीं है। आयुर्वेद-ग्रन्थ और पुराणादि पढ़नेसे मालूम होता है, कि मदिरा-पानकी चाल उस समयसे है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। लाखों-करोड़ों बरस पहले रामचन्द्रजीके ज़मानेमें इसे पीनेवाले पीते थे और रामचन्द्रजीके बाद कृष्णचन्द्रजीके समयमें, जिसे पाँच हज़ार बरससे ज़ियादा नहीं हुए, लोग इसे पीते थे। पुराणोंसे मालूम होता है, कि यह क्षत्रियोंके पीनेकी चीज़ थी। और लोग क्यों नहीं पीते थे, यह हमारी समझमें नहीं आता। अगर इससे धर्महानि होती है, तो इसे चारों वर्णोंमेंसे किसी को भी न पीना चाहिये। क्या क्षत्रियोंपर शराबके दुर्गुणोंका प्रभाव नहीं होता? यह असम्भव है। क्योंकि जैसे शरीर क्षत्रियोंके हैं, वैसे ही ब्राह्मण और वैश्यादिकों के हैं। अगर इससे स्वास्थ्यलाभ होता है, रोगोंका नाश होता है, तो इसका पीना सभीके लिए ज़रूरी है। आयुर्वेदमें ऐसा कहीं नहीं लिखा कि, इसको क्षत्रिय ही पीवें; और वर्णके लोग न पीवें। हाँ, साधु, संन्यासी या वैरागियोंको यह न पीनी चाहिये, क्योंकि इससे स्त्रीगमन की इच्छा प्रबल हो उठती है। संसारत्यागियों और स्त्रियोंका क्या मेल? असल बात यह है, कि शराब पीना बुरा नहीं, पर उसका बेक़ायदे पीना बुरा है।

अन्न खाना अच्छा है, पर उसको नियमविरुद्ध या नाक तक ठूंस-ठूंस कर खाना बुरा है। विष खानेसे मृत्यु हो जाती है, पर नियमानुसार अल्प मात्रामें खानेसे वही प्राणनाशक विष अमृतका काम करता है। आयुर्वेदमे लिखा है :—

> मद्यं स्वभावतः प्राज्ञैर्यथैवान्नं तथा स्मृतम्।
> अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं रसायनम्॥
> विधिना मात्राया काले हितैरन्नैर्यथावलम्।
> प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतं यथा॥

विद्वानोंने कहा है, कि मद्य स्वभावसे ही अन्नके समान है। अगर वह युक्तिके साथ सेवन नहीं किया जाता, तो अनेक रोग पैदा करता है, पर अगर युक्तिके साथ पिया जाता है, तो रसायनका काम करता है।

जो मनुष्य आनन्दके साथ, विधिपूर्वक, यथायोग्य समय पर, मात्रानुसार, बलाबल-अनुसार, हितकारी अन्नोंके साथ, मद्य पीता है, उसे मद्य अमृतके समान गुण करता है।

मतलब यह है कि, जिस तरह अन्न शरीररक्षक होनेपर भी, बेक़ायदे खानेसे प्राणनाशक होता है, पानी प्राणरक्षक और प्राणी-का जीवन होनेपर भी, बेक़ायदे या बहुत ज़ियादा पीनेसे अनेक रोग पैदा करनेवाला है; कसरत शरीरको हृष्टपुष्ट बलिष्ट और सुन्दर सुडौल करनेवाली होनेपर भी, बेक़ायदे की जाने या बहुत ही जियादा की जानेसे भ्रम, श्वास, खाँसी और शोषादि रोग पैदा कर देती है; उसी तरह शराब बल, तेज, पुरुषार्थ और फुरती आदि बढ़ानेवाली होनेपर भी, बहुत ही ज़ियादा या बेकायदे पीयी जानेसे नाना प्रकारके रोग कर देती है। जो दोष शराबमें हैं, वही अन्नमें भी हैं। अगर अन्नमें गुण हैं, तो शराबमें भी गुण हैं। हाँ, फ़र्क़ भी ज़रूर है। अन्न बिना मनुष्य जी नहीं सकता, पर शराब बिना जी सकता है। अन्न-की ज़रूरत पहली है, पर शराबकी ज़रूरत उसके बाद की है। खैर, हम अब शराबके गुण-दोष, उसकी सेवन-विधि आदि शास्त्रोंसे लिखते

हैं, क्योंकि शराब त्याज्य और घृणित होनेपर भी पीयी जाती है और पीयी जायगी। अगर संसारमें इसका नाम भी न रहे, तो सबसे अच्छा। पर यह असम्भव है, इसलिये लोगोंको इसके सम्बन्धकी सभी बात जाननी चाहिये।

शराबकी तारीफ।

मनुष्य-शरीरमें ओजका प्रधान स्थान हृदय है। मद्य या शराब उस हृदयमें घुसकर, अपने दश गुणोंसे ओजके दश गुणोंको क्षुभित करके, चित्तमें विकार उत्पन्न करती है। हृदयमें शराबके पहुँचनेसे हर्ष, प्यास, रतिसुख और प्रकृतिके अनुसार नींदतक—रजोगुण और तमोगुणके विचित्र विकार उत्पन्न होते हैं। ये मद्यके स्वरूप या लक्षण हैं।

जो लोग मद्यसे मदका सुख चाहें, वही मद्यको युक्तिपूर्व्वक पीवें। क्योंकि युक्तिके साथ पीनेसे मद्य तत्काल हर्ष, ओज, बल, पुष्टि, आरोग्यता और पुरुषार्थ उत्पन्न करता है। युक्तिसे पीयी हुई मदिरा या शराब अग्निको दीप्त करती, स्वर और वर्णको शुद्ध करती, तृप्ति करती, धातुओंको पुष्ट करती, बल बढ़ाती, भय-शोक और थकानको हरती, नींद न आनेवालोंको नींद लाती, गूंगोंकी बोलीको ठीक करती, अत्यन्त नींद आनेको नाश करती, मलबन्ध वालोंका मलबन्ध तोडती—यानी क़ब्ज नाश करती, बध-बन्धन और क्लेशादि दुःखोंके ज्ञानको हरती, युक्तिसे पीयी हुई शराब बूढ़े आदमियोंको भी स्वाभाविक रीतिसे परमानन्द उत्पन्न करती है। अनेक प्रकारके दुःखोंसे दुःखी, ज़ख़्मी, तरह तरहके क्लेश और मुसीबतोंमें फँसे हुए और शोक-चिन्तासे घबराये हुए पुरुषोंके लिए शराब जगत्‌में विश्राम रूप है। "चरकमें" ही लिखा है कि, शराबके समान शोक हरनेवाली दूसरी चीज़ जगत्‌में नहीं है। कैसा ही दुखिया क्यों न हो, इसके पीते ही मस्त हो जाता है, उसके सारे रंजोग़म हवा हो जाते हैं।

कहते हैं, शराब पीनेसे मनुष्य निर्लज्ज और बेहया हो जाता है,

अगम्या स्त्रियोंमें गमन करने लगता है और वहन बेटी तकसे नहीं बचता, यह बात ठीक है ; पर सभी शराब पीनेवाले ऐसा नहीं करते। एक ही शराब तीन तरहके आदमियोंमे तीन तरहका मद पैदा करती है। अधिक सतोगुणवाले पुरुष अगर शराब पीते हैं, तो उन्हें और ही तरहका मद आता है। अधिक रजोगुणवाले अगर शराब पीते हैं, तो उन्हें और ही तरहका मद आता है ; इसी तरह तमोगुणी पुरुषोंको और ही तरहका मद आता है। जिस तरह आग पर तपानेसे सोनेकी उत्तमता, मध्यमता और अधमता मालूम हो जाती है ; उसी तरह शराबसे पुरुषकी उत्तम, मध्यम और अधम प्रकृतिकी परीक्षा हो जाती है।

त्रिगुण मदके लक्षण ।

मद तीन तरहके होते हैं :—

(१) सात्त्विक मद ।
(२) राजस मद ।
(३) तामस मद ।

नोट—सुश्रुतने चौथा मद और माना है, उसका नाम "अतितामस मद" है।

पहले मदके लक्षण ।

पहला मद स्मरणशक्ति, प्रीति, सुख, भूख, प्यास, निद्रा और कामदेवको बढ़ाता है ; पढ़ने और गानेकी रुचि करता और स्वरको सुन्दर करता है। यह मद, मनको विकृत करने पर भी, दुःखदायी नहीं होता। यही "सात्त्विक मद है।"

दूसरे मदके लक्षण ।

दूसरा मद बुद्धि, स्मरणशक्ति और बोलनेकी शक्तिको कम करता है। इस मदवाला आदमी विरुद्ध चेष्टायें करता है। अत्यन्त प्रचण्ड होकर मतवालेके से काम करता और बारम्बार आलस्य तथा नींदसे पीडित होता है। इसीको "राजस मद" कहते हैं।

तीसरे मदके लक्षण ।

तीसरे या तमोगुणके मदसे मनवाला मनुष्य मदके परवश हो जाता है। वह स्वतन्त्र होकर अगम्या स्त्रियोंसे भोग करता है, अभक्ष्य भक्षण करता है, माता-पिता आदि बड़ोंका अपमान करता है, उसका ज्ञान नष्ट हो जाता है, उसे होश नहीं रहता और वह दिलमें छिपी हुई बातोंको प्रकाशित करता है।

सुश्रुतोक्त चौथे मदके लक्षण ।

चौथे मदवाला आदमी वेहोश हो जाता है, टूटे हुए वृक्षकी तरह क्रिया-रहित होकर पृथ्वीपर गिर पड़ता है, मृतकसे भी अधिक मृतक हो जाता है और उसे कार्य-अकार्यकी सुध-बुध नहीं रहती। इसीको "सुश्रुत"ने "अति तामस मद" लिखा है।

खुलासा यह है कि, शराब पीनेसे जिनकी बुद्धि, स्मरणशक्ति और प्रीति आदि बढ़ती हैं, वे अधिक सतोगुणी हैं। जो पागलोंकी सी सूरत बना लेते हैं और पागलोंकेसे ही काम करते हैं, वे अधिक रजोगुणी हैं। जो शराब पीकर इतने वेहोश हो जाते हैं कि, अगम्या स्त्रियों तक से भोग कर बैठते हैं, न खाने योग्य गोमांस आदिक खा लेते हैं और गुरुजनोंका अनादर करते हैं तथा ज्ञान-रहित होकर छिपी बातोंको बकते हैं, वे तमोगुणी हैं। हमने फौजमें रहते समय देखा था, कि बड़े-बड़े ख़ान्दानी अँगरेज़ शराब पीकर पढ़ते-लिखते रहते थे, मिलनेवालोंसे होशहवासमें सभ्यतापूर्व्वक बातें करते थे, समय पर परेड देखते और आफिसके काम करते थे ; पर गोरे सिपाही शराब पीकर ठीक मतवाले हो जाते थे, गालियाँ बकते थे और अपने अफसरों तक का लिहाज़ न करके अनापशनाप अश्लील बातें कहते और जिस स्त्रीको देखते उसी पर झपटते थे। अपने यहांके चमार कोली और मोची वगैर: शराब पीकर मतवाले हो जाते हैं और घर जाकर माँ-बहिनतकके सामने भद्दी-से-भद्दी अश्लील बातें मुँहसे

निकालते हैं, पर राजा महाराजा और ठाकुर लोग शराब पीकर, एक तरहके मदसे झूमते हुए, अपना काम करते रहते हैं।

शराब पीनेकी विधि ।

मलमूत्र आदि त्याग कर—पाखाने-पेशाबसे फारिग़ होकर, दाँतन कुल्ले और स्नान करके, शरीरमे इत्र फुलेल लगा कर, उत्तम सुवासित नर्म या महीन कपड़े पहन कर, फूलोंकी माला गलेमें डाल कर, खूब आनन्दमे मग्न होकर, सावधानीके साथ, धीरे-धीरे, ठहर-ठहर कर, थोड़ी-थोडी शराब पीनी चाहिये।

शराब पीनेकी जगह ।

जहाँ तरह-तरहके उत्तमोत्तम फूल खिल रहे हों, उन पर मधुर ध्वनिसे भौंरे गूँज रहे हों, जहाँ कोयल कुहू कुहू करती हों, जहाँ शीतल मन्द सुगन्ध पवन चल रही हो,—ऐसे बाग़में बने हुए, सफेद क़लईसे पुते हुए बँगलेमे उत्तम पलँग पर लेट कर, बैठ कर या तिरछे लेट कर, रूप यौवनसे मदमाती, गहनों और फूलोंसे सजी हुई कामिनियोंके हाथोंसे शराब पीनी चाहिये।

शराबकी मात्रा ।

टिशा फराग़तसे निपटकर, सवेरे ही, दाल, सेव आदि नमकीन चाटके साथ, आठ तोले शराब पीनी चाहिये। दो पहरके समय सोलह रुपये भर शराब पीनी चाहिये और उसके बाद खूब चिकने घीके पदार्थ खाने चाहियें। सन्ध्या समय, ३२ रुपये भर शराब पीनी चाहिये। यह मात्रा रसायन-रूप है। शराब पीनेवालेको मात्रामें भूल न करनी चाहिये। अधिक मात्रा रोग पैदा करती है। यह शास्त्रोक्त मात्रा है। आजकलके लोगोको इतनी भी ज़ियादा है; आदीकी बात और है।

ऋतु-अनुसार मदिरा ।

गरमीके मौसममें शीतल और मधुर "माधवी" नामक मदिरा

पीनी चाहिये। जाड़ेमें गरम और तीक्ष्ण "गौड़िक और पैष्टिक" मदिरा पीनी चाहिये।

मदिराके साथ हितकारी अन्न।

शराब पीनेवालेको शराबके अनुकूल फल, सुगन्धित और प्यारे नमकीन पदार्थ, तरह-तरहके मांस, पापड़, भात, लड्डू और फेनी वगैरः चिकने पदार्थोंके साथ शराब पीनी चाहिये।

वात प्रकृतिवालेको गरम तेल आदिकी मालिश कराकर, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ शरीरमें लगवाकर यानी स्नान और अनुलेपन आदिसे निपटकर, पहले कही विधिसे, अन्नके साथ, शराब पीनी चाहिये। वात प्रकृतिवालेको भोजनके बीचमें शराब पीनी चाहिये; यानी कुछ खावे, फिर थोड़ीसी शराब पीवे, फिर कुछ खावे और थोड़ी शराब पीवे। भोजनके पहले ही और भोजनके अन्तमें शराब न पीनी चाहिये। वात प्रकृतिवालेको गुड़की और जौके आटेकी शराब पीनी चाहिये।

पित्त प्रकृतिवालेको कपूर और चन्दनका लेप करके, शीतल फूलोंकी माला पहनकर, मीठे-चिकने एवं शीतल फल और अन्नोंके साथ शराब पीनी चाहिये। इस प्रकृतिवालेको भोजन कर लेनेके बाद शराब पीनी चाहिये। पित्त प्रकृतिवालेको चीनी वगैरः मीठे पदार्थोंकी शराब हितकारी होती है।

कफ प्रकृतिवालेको जांगलदेशके जानवरोंके मांस और मिर्चोंके साथ, भोजनसे पहले, शराब पीनी चाहिये। इस प्रकृतिवालेको भी चीनी आदि मीठे पदार्थोंकी मदिरा हित है।

चरक आदि ऋषि कहते हैं, यह विधि केवल धनी लोगोंके लिए है, ग़रीबोंको नहीं। गरीब लोगोंको जैसी शराब मिल जाय, वैसी ही पी लेनी चाहिये।

शराब पीनेसे किनको रोग होते हैं?

जो बिना अन्नके शराब पीते हैं, जो लगातार बारम्बार शराब पीते

हैं, उन्हें महादुःखदायक "मदात्यय" आदि रोग हो जाते हैं । क्रोधित, भयभीत, प्यासे, शोकयुक्त, भूखे, बोझा ढोने और कसरत करनेसे थके हुए, दिशा-पेशावको हाजत रोके हुए, लाठी आदिकी चोट खाये हुए, ज़ियादा खटाई खाये हुए, अजीर्णमें खानेवाले, कमज़ोर और गरमीसे सन्तप्त मनुष्य अगर शराब पीते हैं, तो उनको अनेक रोग हो जाते हैं ।

मदात्ययका निदान ।

तीनों दोषोंको कुपित करनेवाले जो गुण विषमें हैं, वही गुण मद्य या शराबमें भी होते हैं । फ़र्क़ इतना ही है, कि विषके गुण बलवान होते हैं, पर शराबके गुण उतने बलवान नहीं होते ।

बेक़ायदे पीयी हुई, जियादा पीयी हुई, अहितकारी या नुक़सान-मन्द अन्नोंके साथ पीयी हुई और ठीक समयमे न पीयी हुई शराब या मदिरा "मदात्यय" आदि रोग पैदा करती है ।

ये सब मदात्यय रोगके निदान-कारण हैं, पर इनके सिवा ऊपर लिखे हुए कारण भी मदात्ययके हैं । अब आगे हम यह लिखते हैं, कि मद्य या शराबसे कौन-कौनसे रोग पैदा होते हैं ।

मद्य या शराबसे होनेवाले विकार ।

मद्य या शराबसे चार तरहके विकार होते हैं :—

(१) मदात्यय, (२) परमद ।
(३) पानाजीर्ण, (४) पानविभ्रम ।

मदात्ययके सामान्य लक्षण।

जिसको मदात्यय रोग होता है, उसके शरीरमें अत्यन्त दुःख होता है, बड़े ज़ोरका मोह या बेहोशी होती है; हृदयमें पीड़ा होती है; अन्नपर रुचि नहीं होती; प्यासकी ज़ियादती लग जाती है; ठण्डा और गरम ज्वर होता है, सिर, पसली और हड्डियोंकी सन्धियोंमें पके हुए फोड़ेके समान वेदना होती है; जँभाइयाँ बहुत आती हैं; अंग फड़कते और काँपते हैं, थकान होती है, छाती जकड़ जाती है; खाँसी, हिचकी और श्वास रोग होते हैं; कान, आँख और मुंहमें रोग होते हैं; त्रिकस्थान या पीठके बाँसेमें दर्द होता है; वमन होती है; दस्त लगते हैं; वात, पित्त और कफका उत्क्लेद होता है; भ्रम होता है; रोगी आन-तान बकता है; बुरे-बुरे रूप दीखते हैं। भ्रमके कारण रोगीको अपने शरीरपर तिनके, राख, बेल और पत्ते उड़-उड़कर गिरते दीखते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो चारों ओरसे पक्षी उड़े चले आ रहे हैं। अशुभ सुपने दीखते हैं। जिसमें ये लक्षण हों, उसे मदात्यय रोगसे पीड़ित समझना चाहिये।

मदात्ययके भेद।
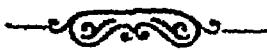
मदात्यय रोग चार तरहका होता है:—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) सन्निपातज।

वातज मदात्ययके निदान।

जो मनुष्य, मैथुन करने, रंज करने, डरने, बोझ उठाने, राह चलने और थकने आदि कारणोंसे दुबले हो जाते हैं और जो रूखा तथा बहुत थोड़ा खाना खाते हैं, अगर ऐसे लोग रूखी शराब बहुत ज़ियादा

पीते हैं, तो वह शराब पेटमें जाकर नींदको नाश कर देती और तत्काल वायु-सम्बन्धी मदात्यय रोग पैदा करती है।

वातज मदात्ययके लक्षण ।

हिचकी, श्वास, सिर काँपना, पसलियोंकी पीड़ा, जागना—नींद न आना और बकवाद करना—ये सब वातज मदात्ययके लक्षण हैं।

पित्तज मदात्ययके निदान ।

खट्टे, गरम और तीक्ष्ण पदार्थ खानेवाला, क्रोधी और अज्ञानी मनुष्य अगर तेज़, गरम और खट्टी शराब बहुत ज़ियादा पीता है, तो उसे पित्तज मदात्यय हो जाता है।

पित्तज मदात्ययके लक्षण ।

प्यास, दाह—जलन, ज्वर, पसीना, मोह—बेहोशी, अतिसार—पतले दस्त, विभ्रम—भौंर आना और शरीरका रंग हरा हो जाना,—ये सब पित्तज मदात्ययके लक्षण हैं।

कफज मदात्ययके निदान ।

कसरत या मिहनत न करनेवाला, दिनमें सोनेवाला, हर समय पलँगपर बैठा रहनेवाला अथवा गद्दे तकियोंके सहारे पड़ा रहनेवाला, मीठे और चिकने पदार्थ खानेवाला मनुष्य अगर बहुत ज़ियादा शराब पीता है, तो उसे कफका मदात्यय हो जाता है।

कफज मदात्ययके लक्षण ।

वमन, अरुचि, उबकाई, तन्द्रा, शरीरका भीगे हुए कपड़ेसे ढका रहना मालूम होना, शरीरका भारी रहना और ठण्ड लगना—ये कफज मदात्ययके लक्षण हैं।

सान्निपातज मदात्ययके निदान और लक्षण ।

ऊपर लिखे हुए सारे कारणोंसे पैदा हुआ और ऊपरके सारे लक्षणोंवाला मदात्यय "सन्निपातज मदात्यय" कहलाता है।

परमदके लक्षण ।

परमद रोगमे रोगीकी नाकसे कफ गिरता है, शरीर भारी रहता

है, मुहका स्वाद बुरा रहता है, पाखाना-पेशाब रुक जाते हैं, तन्द्रा आती है, अरुचि होती है, सिरमें दर्द होता और सब-सन्धियों या जोड़ोंमें तोड़नेकी सी पीड़ा होती है।

पानाजीर्णके लक्षण ।

पानाजीर्णमें पेट बहुत फूलता है, दाह या जलन होती है, डकारें आती हैं, कय होती हैं तथा पित्तकोपके और भी लक्षण नज़र आते हैं।

पान-विभ्रमके लक्षण ।

पान-विभ्रममें हृदय और शरीरमें तोड़ने या सुई चुभोनेकी सी पीड़ा होती है, नाक और मुँहसे कफ निकलता है, कंठमेंसे धूआँसा निकलता मालूम होता है, कय होती हैं, मद और सिरदर्द होता है, मुँह कफसे लिहसासा रहता है एवं सब तरहकी शराबों और सब तरहके भोजनोंसे द्वेष हो जाता है।

असाध्य मदात्ययादिके लक्षण ।

बहुत ही जियादा शराब पीनेसे जिस मनुष्यका ऊपरका होठ ऊपरको सुकड़ गया हो, सर्दी बहुत लगती हो, मुँहका रंग तेलके रंग जैसा हो गया हो—वैद्यको ऐसे रोगीका इलाज नहीं करना चाहिये।

शराब पीनेसे बेहोश हुए आदमीके जीभ, होठ और दाँत काले या नीले हो गये हो, आँखे पीली या लाल हो गई हों, हिचकी, ज्वर, वमन, कम्प, पसलियोंमें दर्द, खाँसी और भ्रम ये उपद्रव हों—तो वैद्यको उसका इलाज न करना चाहिये।

ध्वंसक और विक्षेपकके निदान ।

जिसने कभी शराब नहीं पीयी है, अगर वह बहुतसी शराब बेक़ायदे—शास्त्रनियमके विरुद्ध पीता है, तो उसे "ध्वंसक" और "विक्षेपक" रोग हो जाते हैं।

ध्वंसकके लक्षण ।

ध्वंसक रोगमें कफ गिरता है तथा हृदय, कंठ और मुँह ये सूखते हैं। असहनशीलता, अत्यन्त बेकली, अत्यन्त तन्द्रा और निद्रा—ये सब भी होते हैं।

विक्षेपकके लक्षण ।

विक्षेपक रोगमें हृदय और गलेमें दर्द होता है ; मोह, वमन, सारे शरीरमें पीड़ा, ज्वर, प्यास, खाँसी और सिरमें दर्द—ये सब होते हैं।

वातज मदात्ययकी चिकित्सा ।

(१) कालानोन, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर, थोड़ेसे जलमें पीसकर, शराबके साथ, जीर्ण मद्यवालेको देनेसे वातज पानात्यय आराम हो जाता है।

नोट—यह नुसख़ा पहला पीया हुआ मद्य जीर्ण होने पर देना चाहिये। मतलब यह है, कि इस दवाके साथ शराब पिलाने या पानीके साथ शराब पिलानेसे वातज मदात्यय नाश हो जाता है।

(२) बिजौरा नीबू, इमली और अनारका पना बनाकर पिलाने, तथा चिकने खट्टे और नमकीन पदार्थोंके साथ जंगली जानवरोंका मांसरस देनेसे वातज मदात्यय नाश हो जाता है।

(३) सिरका, कालानोन, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, अदरख और अजवायन—इनको समान-समान लेकर पीस लो और मिला लो। इस दवाके साथ शराब पीनेसे वातज मदात्यय नाश हो जाता है।

(४) पुरानी शराबमें नमक डाल कर अथवा बिजौरा नीबू,

अम्लवेत, बेर, अनार, अजवायन, हाऊबेर, सफेद ज़ीरा और सोंठ—इनका चूर्ण डाल कर पिलाने और चिकनी चीज़ घी वगैरः मिला हुआ सत्तू मय मसालोंके खिलानेसे वातज मदात्यय नाश होता है।

(५) चव्य, कालानोन, भुनी हींग, बिजौरा नीबू, सोंठ और अजवायन—समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णके साथ शराब पीनेसे वातज मदत्यय नाश होता है।

नोट—अनेक पाठक इस बातसे चकित होंगे, कि जिस शराब या मद्यसे मदात्यय रोग पैदा होता है, उसमें फिर शराब पिलानेकी आज्ञा क्यों दी गई है। पाठक! असल बात यह है कि जिस तरह विषकी दवा विष है, उसी तरह मद्यकी दवा मद्य है। कहा है—

> मद्योत्थानाञ्च रोगाणां मद्यमेव हि भेषजम्।
> यथा दहनदग्धानां दहन स्वेदन हितम्॥

जिस तरह आगसे जले हुए के लिए दाहन और स्वेदन हित हैं, उसी तरह मद्य से पैदा हुए रोगोंकी दवा मद्य ही है। खुलासा यह है कि, किसी अङ्गके आगसे जलनेपर लोग उस अङ्गको आग से ही तपाना अच्छा समझते हैं; उसी तरह विद्वान् वैद्य मद्यके रोगीको मद्य पिलाकर ही अच्छा करना उचित समझते हैं। मद्यके मिथ्या योग, अतियोग और हीन योगसे जो रोग होते हैं, वे मद्यके समयोग से या समयोगमें मद्य पीनेसे शान्त हो जाते हैं।

(६) जिन युवतियोंके शरीरोंमें जीवनकी छटाएँ छिटक रही हैं, जो जवानीकी गरमीसे गरम हो रही हैं, उनके निर्दय आलिङ्गन करने या ज़ोरसे छातीके लगानेसे; उनके नितम्बों, उनकी जाँघों और स्तनोंके बोझसे तथा प्यार करने और दबानेसे; गद्दे-तकियोंपर लेटने, गरम लिहाफ ओढ़ने और सुखदायी भीतरी मकानोंमें रहनेसे प्रबल वातज मदात्यय शान्त हो जाता है।

पित्तज मदात्ययकी चिकित्सा।

नोट—पित्तके मदात्ययमें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। भूलकर भी गरम क्रियाएँ न करनी चाहियें।

(१) शराबमें आधा पानी मिलाकर और थोड़ीसी मिश्री और शहद डालकर पीनेसे पित्तका मदात्यय आराम हो जाता है।

(२) खजूर, दाख, फालसे और अनारके रसके साथ, मिश्री और सत्तू मिलाकर, शीतल गुणवाली माध्वीक मदिरा—शराब पीनेसे पित्तका मदात्यय नष्ट हो जाता है।

(३) मधुरवर्गकी दवाओंके काढ़ेमें उत्तम गन्धवाली शराब और मिश्री तथा शहद मिलाकर पीनेसे पित्तका मदात्यय नाश हो जाता है।

(४) पित्तके मदात्यय वालेको ख़रगोश, तीतर, लवा और काली पूँछका हिरन—इनका मांस देना चाहिये। मीठे और खट्टे पदार्थ, शालि और साँठी चाँवलोंका भात, परवलके यूष तथा मटर और मूंगके यूषके साथ अथवा अनार और आमलोंके रसके साथ बकरेका मांसरस देना चाहिये। इस रोगमें तृप्तिकारक यूष, शीतल अन्न, शीतल पीनेकी चीज़ें, शीतल पलंग, शीतल आसन, शीतल हवा और शीतल जलका स्पर्श, बाग़ बग़ीचे और चन्द्रमाकी किरणें—हितकारी हैं।

(५) शराब और गाढ़ा ईखका रस मिलाकर पीने और थोड़ी देर बाद कय कर देनेसे भी पित्तका मदात्यय नाश हो जाता है।

कफज मदात्ययकी चिकित्सा।

(१) कफके मदात्ययमें वमनकारक या कय लानेवाली दवाएँ शराबमें मिलाकर पिलाने और कय कराकर कफ निकाल देनेसे लाभ होता है। इस रोगमें लङ्घन कराना भी हित है।

(२) कफके मदात्ययमे रूखे पदार्थोंके साथ बकरेका मांसरस

पिलाना चाहिये। अथवा कुछ खटाई डालकर सोंठ, काली मिर्च और पापरका यूष देना चाहिये।

(३) मांसको हाँडी या ठीकरेमें सूखा ही भूनकर और उसमें चरपरे, खट्टे और खारी पदार्थ मिलाकर खानेसे कफका मदात्यय आराम हो जाता है।

(४) कुल्थी और सूखी मूलीके रसके साथ जौंका भोजन करनेसे कफज मदात्ययमें लाभ होता है।

(५) त्रिफलेके रसमें त्रिकुटेका चूर्ण डाल कर पीनेसे अथवा सूखी मूलीका यूष या कुल्थीका यूष तेज शराबमें मिलाकर पीनेसे अथवा जौकी शराब और जंगली जीवोंका मांसरस पीनेसे कफज मदात्यय नाश हो जाता है।

(६) कालानोन १ तोले, मिश्री १ तोले ; जीरा, विषाँबिल यानी डांसरिया, अम्लवेत, दालचीनी, छोटी इलायची और कालीमिर्च प्रत्येक छै-छै माशे लेकर कूट-पीस-छान लो। इसका नाम "अष्टांग लवण" है। यह नमक अग्निको दीप्त करता और स्रोतो या शरीरके छेदोंको साफ करता है। कफज मदात्ययमें अग्निदीपक दवाएँ लाभ करती हैं, अतः यह चूर्ण भी कफज मदात्ययमें बहुत ही उत्तम है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई इस नुसख़ेमें कालानोन, जीरा, डांसरिया और अम्लवेत एक एक तोला, दालचीनी, छोटी इलायची और काली मिर्च छै-छै माशे और मिश्री ४ तोले लेते हैं।

सान्निपात-मदात्यय की चिकित्सा।

वातज, पित्तज और कफज मदात्ययकी जो चिकित्सा लिखी है, वही सब सन्निपातज मदात्ययमें करनी चाहिये।

नोट—अगर ऊपर लिखे हुए उपायोंसे मदात्यय रोग शान्त न हो, पर कफ क्षीण हो गया हो, कमजोरीके कारण शरीरमें हल्कापन आ गया हो—तो मद्य पीनेसे विदग्ध और वातपित्तकी अधिकतावाले मदात्यय-रोगीको एक मात्र दूध उसी तरह हितकारी है, जिस तरह गरमीसे तपे हुए वृक्षको पानी, क्योंकि दूध गुणोंमें ओजके समान और मद्यके विपरीत है। पर इस रोगके जीतने पर, क्रमशः दूध और शराब अलग-अलग और थोड़े-थोड़े सेवन करने चाहियें—एक साथ और बहुत नहीं।

और भी कहा है—हे मदात्यय रोगी! अगर तू अपने इस मदात्यय रोगको नाश करना चाहता है, तो जलमें गोते मार कर चन्दनको शरीर पर लेपन करा और घरमें बैठ कर सुन्दरी मृगनयनी कामिनियोंका नाच-गाना देख-सुन और उपचार समेत उत्तम शराब कायदेसे पी।

पानात्यय-चिकित्सा।
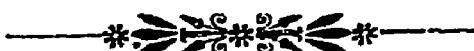
(१) चव्य, काला नोन, हींग, सफेद ज़ीरा, सोंठ और अजमोद—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको शराबके साथ खानेसे पानात्यय रोग नाश हो जाता है।

(२) रातके समय त्रिफलेका चूर्ण शहदके साथ और सवेरेही गुड़के साथ अदरख खाने और पथ्यसे रहनेसे पानात्यय, मद, मूर्च्छा, कामला और उन्माद रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—पानात्यय रोग सात या आठ दिनों तक रहता है, फिर जीर्ण होकर और गतिको प्राप्त हो जाता है।

और कई तरहके मदोंकी चिकित्सा।

(१) एक तोले पेठेके रसमें ६ माशे गुड़ मिलाकर खानेसे कोदो और मैनफल का मद नाश हो जाता है।

(२) कच्चे दूधमे मिश्री मिलाकर पीनेसे धतूरेका मद नाश हो जाता है। * कोई-कोई मेढीके दूधमें मिश्री मिलाकर पीना अच्छा कहते हैं।

(३) खूब पेटभर शीतल जल पीनेसे वमन, बेहोशी और अतिसार समेत सुपारीका मद नाश हो जाता है।

(४) आरने उपले सूंघनेसे, कंठतक पानी पीनेसे अथवा नमक या नमक-मिश्री मिलाकर खानेसे सुपारीका मद दूर हो जाता है। विना जल पीये, पाव-भर शक्कर खानेसे भी सुपारीका मद नाश हो जाता है।

(५) बकरीका मांस और परवल दोनों पकाकर खानेसे चरसका मद दूर हो जाता है।

(६) मदिराके मदात्ययमें वारम्वार एक-एक तोले मदिरा पीने और साँठी चाँवलोंका भात चीनीके साथ रोज़ खानेसे मदात्यय अवश्य नाश हो जाता है।

(७) दिनमें, हर डेढ़-डेढ़ घण्टे पर, चार-चार लौंग चबानेसे तमाखूका मद दूर हो जाता है।

(८) गरम घी अथवा कटहरके पत्तोंका रस अथवा इमलीका पानी अथवा कच्चे नारियेलका पानी पीनेसे भाँगका नशा उतर जाता है। थोड़ीसी शराव पीनेसे भी भाँगका नशा उतार जाता और शराबका नशा नही वढ़ता।

(९) चूनेको हाथोंसे मलकर वारम्वार सूँघनेसे पानका मद उतर जाता है।

(१०) बड़ी हरड़ ६ मासे खानेसे अथवा जलमे घुसनेसे अथवा दही-चीनी मिलाकर खानेसे जायफलका मद नाश हो जाता है।

* धतूरेका मद या विष नाश करनेके उपाय "चिकित्साचन्द्रोदय पांचवें भाग"में विस्तारसे लिखे हैं।

(११) दहीमें बूरा मिलाकर खाने या दही-भात-बूरा मिलाकर खानेसे बहेड़ेका मद नाश हो जाता है ।

(१२) अगर चूना ज़ियादा खानेसे जीभ फट जाय, तो मिश्री का 'कवल' मुखमें रखना चाहिये ।

शराब पीनेवालोंके लिये हितकारी शिक्षा ।

(१) कायफल १ माशे, नागरमोथा २ माशे और गिलोय ३ माशे—इनको मिलाकर रखलो । शराब पीकर इनको चबानेसे मुंहकी बदबू नाश हो जाती है ।

(२) अगर आदमी शराब पीकर, तत्काल, घीमें बूरा मिलाकर चाट ले, तो तेज़-से-तेज़ शराबका नशा न चढ़े ।

(३) जो जलमें ग़ोता मारकर स्नान करते हैं, चन्दनादि पदार्थ शरीरपर लगाते हैं और भात, मांस तथा चाटके साथ शराब पीते हैं, उनको मनके नष्ट करनेवाला मद नहीं होता ।

(४) मद्यसे क्षीण देहवालोंको तेलकी मालिश, स्नान और घी-दूध पीना हितकारी है ।

(५) क्रम-क्रमसे शराब त्यागकर पानी पीने और रातमें त्रिफला शहदके साथ खाने तथा सवेरे ही गुड़ और अदरख खानेसे शराबकी आदत छूट जाती है ।

(६) शोक, क्रोध, भूख, प्यास और गरमीकी हालतमें तथा कसरत करके और राह चलनेसे थके हुए मनुष्योंको शराब न पीनी चाहिये, क्योंकि अनेक रोग हो जाते हैं ।

(७) मिश्री और घी मिलाकर खानेसे भी मद्यकी दुर्गन्ध दूर हो जाती है ।

(८) अन्नके बिना शराब कभी न पीनी चाहिये, क्योंकि ऐसा मद्य और रोग पैदा करता है ।

मदात्ययकी सामान्य चिकित्सा।

(१) चव्य, काला नोन, हींग, बड़े नीबूका छिलका, सोंठ और अजवायनका चूर्ण सब तरहके मदात्ययको नाश करता है।

(२) केवल मोथेका काढ़ा पिलानेसे सब तरहके मदात्ययके दोष परिपाक हो जाते हैं।

(३) जवासा, मोथा और पित्तपापड़ेका काढ़ा सब तरहके मदात्यय-दोषोंको परिपाक करता है।

(४) खजूर, किशमिश, दाख, इमली, अनार और आमलेके रसमें धानकी खीलोंका चूर्ण मिला दो। फिर इन सबको पानीमें मिलाकर पी लो। इस उपायसे मद्यसे पैदा हुए सब रोग शान्त हो जाते हैं।

(५) शंखका चूर्ण सूंघनेसे थोड़ेसे मद्यका विकार नष्ट हो जाता है।

त्रिफलादि चूर्ण।

(६) त्रिफला, सफेद निशोथ, श्यामालता, देवदारु, सोंठ, अजवायन, अजमोद, दारुहल्दी, पाँचों नमक, सोया, वच, कूट दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची और एलुआ—सबको समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। मात्रा १ माशेसे ६ माशेतक। अनुपान—शीतल जल। इस चूर्णसे सब तरहके मद्यविकार शान्त हो जाते हैं।

एलाद्य मोदक।

(७) छोटे इलायची, मुलेठी, चीतेकी छाल, हल्दी, दारुहल्दी, त्रिफला, रक्तशालि, पीपर, दाख, छुहारे, तिल, जौ, बिदारीकन्द, गोखरूके बीज, निशोथ और शतावर—समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर जितना चूर्ण हो उससे दूनी चीनी लेकर चाशनी करो और चूर्ण

मिलाकर छै-छै माशेके लड्डू बना लो। एक-एक लड्डू खाकर ऊपरसे धारोष्ण दूध या मूँगका जूस पीनेसे मदात्यय नाश हो जाता है।

नोट—विहारके दाऊदखानी चाँवल ही "रक्तशालि" कहाते हैं।

श्रीखण्डासव।

सफेदचन्दन, कालीमिर्च, जटामासी, हलदी, दारुहलदी, चीतेकी छाल, मोथा, खसकी जड़, तगरचंडो, दाख, लालचन्दन, नागकेशर अम्बष्टा—मोइया, आमले, छोटी पीपर, चव्य, लौंग, एलुआ और लोध—इन उन्नीस चीज़ोंको दो-दो तोले लेकर कुचल लो और १ मन २४ सेर पानीमें भिगो दो। फिर उसमें मुनक्के डेढ़ सेर, गुड़ १८॥ सेर और धायके फूल पाँच छटाँक डाल दो। फिर वर्तन पर ढकना रखकर कपड़-मिट्टी से सन्ध बन्द कर दो। १ महीने तक इसको न छेडो। इसके बाद, इसे छानकर बोतलोंमें भर दो और फोकको फेंक दो। इसकी मात्रा १ से ३ तोले तक है। इसके पीनेसे मदात्यय रोग चला जाता है।

बृहत् धात्री तैल।

जीवनीयगण, जटामासी, मँजीठ, इन्द्रायणकी जड़, श्यामालता, अनन्तमूल, पत्थर-फूल, सोया, पुनर्नवा, सफेद चन्दन, लालचन्दन, छोटी इलायची, दालचीनी, पद्ममूल, केलेका फूल, बच, अगर, हरड़ और आमले—इन सबको चार-चार तोले लेकर, सिल पर पीस कर, लुगदी कर लो। फिर आमलोंका रस चार सेर, शतावरका रस चार सेर, विदारीकन्दका रस चार सेर, बकरीका दूध चार सेर, बरियारेका काढ़ा चार सेर, असगन्धका काढ़ा चार सेर, कुल्थीका काढ़ा चार सेर, जौका काढ़ा चार सेर, उड़दोंका काढ़ा चार सेर और कालीतिलीका तेल चार सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिला कर मन्दाग्निसे पकाओ। तेलमात्र रहने पर, उतार कर छान लो। यही "बृहत् धात्री तैल" है। यह तेल मदात्यय-रोगीके लिए बहुत उत्तम है।

शुद्ध शराब।

मुनक्के १ सेर, बबूरकी छाल आध सेर, आमले आधपाव, मुण्डी आधपाव, जटामासी २॥ तोले, छरीला २॥ तोले, अजवायन २॥ तोले, खसकी जड़ २॥ तोले, तज २॥ तोले, तेजपात २॥ तोले, नागरमोथा २॥ तोले, नरकचूर २॥ तोले, सफेद चन्दन २॥ तोले, महँदीके बीज २॥ तोले, सफेद मूसली १। तोले, स्याह मूसली १। तोले, बहमन सफेद १। तोले, बहमन सुर्ख १। तोले, बड़ी इलायची १। तोले, इन्द्रजौ १। तोले, तोदरी जर्द १। तोले, तोदरी सफेद १। तोले, किशमिश २० तोले, बादामकी गिरी २० तोले, छुहारे २० तोले, मुनक्के २० तोले—इन सबको जौकुट करके एक घड़ेमें एक मन पानी डालकर भिगो दो और ऊपरसे "दस सेर चीनी" भी डाल दो। जब खमीर उठ आवे, तब "अढ़ाई सेर गायका दूध" और "आधसेर सन्तरोंका रस" डाल कर, भभकेसे शराबकी रीतिसे अर्क़ खींच लो।

यह शराब नशा लानेके सिवाय खूब ताकत भी लाती है और मजा यह, कि धर्म नाश नहीं होता। जिनके मुँह शराब लग रही हो, वे इसे पीवें। इससे लाभ ही लाभ होगा, हानि कुछ नहीं। पर आजकल घरमे शराब खींचना जुर्म है, अत कलक्टर साहबको दरख्वास्त देकर, आज्ञा ले लेनी ठीक है; फिर कोई भय नहीं। जिन्हें शराब बनाना न आता हो, वे कलारको मज़दूरी देकर शराब खिचवाले। यह नुसख़ा हमारा कई बारका परीक्षित है।

मधुयष्ट्यादि घृत।

घी चार सेर, दूध ४ सेर और पुनर्नवेका काढ़ा ३२ सेर तथा मुलेठीका कल्क या लुगदी १ सेर,—सबको मिला कर घी पकालो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इसको "पुनर्नवादि घृत" भी कहते हैं। वृन्दने लिखा है, जो मद्यपान करने वाले कमज़ोर और तेजहीन हो जाते हैं, वे इसके पीनेसे पुष्ट हो जाते हैं।

दाह रोग वर्णन ।

दाहके सामान्य लक्षण ।

विविध कारणोंसे पित्तके कुपित होनेसे, हाथ-पैरोंके तलवे और आँखोंमें अथवा सारे शरीरमें दाह या जलन होती है । उस दाह या जलनको ही "दाह रोग" कहते हैं ।

दाह रोगकी क़िस्में ।

दाह रोग सात तरहका होता है :—

(१) पित्तका दाह । (२) रुधिरका दाह ।
(३) प्यास रोकनेका दाह । (४) रक्तपूर्ण कोष्ठज दाह ।
(५) मद्यका दाह । (६) धातुक्षयज दाह ।
(७) मर्माभिघातज दाह ।

पित्तके दाहके लक्षण ।

दाह गरमीकी व्याधि है । पित्तके दाहमें, पित्त ज्वरके से लक्षण होते हैं ; इसलिये इसकी चिकित्सा भी "पित्त ज्वर"की तरह ही करनी चाहिये ।

पित्तज्वर और दाहमें फ़र्क़।

पित्त ज्वरमें, आमाशयके दूषित होनेसे, ज्वर और दाह दोनों होते हैं; किन्तु दाह रोगमें केवल दाह ही होता है। अथवा पित्त ज्वरमें अग्नि और आमाशय दोनों दुष्ट होते हैं, किन्तु पित्तके दाहमें अग्नि और आमाशय दूषित नहीं होते—केवल जलन होती है,—यही भेद है।

रुधिरके दाहके लक्षण।

शरीरमें खूनके बहुत ही ज़ियादा बढ़ जाने से भी दाह होता है; यानी शरीरका खून भी कुपित होकर दाह रोग पैदा करता है। ऐसा होनेसे, रोगीको सारा संसार आगसे जलता हुआ सा मालूम होता है। अथवा ऐसा जान पड़ता है, मानो आग मेरे पास रखी है और मैं उससे जला जा रहा हूँ। रोगीको प्यास बहुत लगती है। दोनो आँखें और सारा शरीर ताम्बेकेसे रंगका हो जाता है; यानी शरीर और नेत्र लाल हो जाते हैं। शरीर और मुँहसे ऐसी गन्ध निकलती है, जैसी गरम लोहेपर पानी डालनेसे निकलती है। शरीरमें मानो किसीने आग लगादी है, ऐसी वेदना होती है।

प्यास रोकनेके दाहके लक्षण।

जो आदमी मूर्खतासे प्यासको रोकता है, उसकी जल रूप धातु क्षीण हो जाती है और तेज या पित्तकी गरमी शरीरके भीतर और बाहर दाह—जलन पैदा करती है। उस समय उस आदमीके गला, तालू और होठ सूख जाते हैं और वह जीभ को निकाल कर हाँपने लगता है।

मतलब यह है कि, पानी न पीनेसे शरीरकी पतली धातुएं क्रमशः कमती हो जाती हैं और गरमी बढ़ती है। गरमीके बढ़ने से शरीरके भीतर-बाहर आगसी लग जाती है, गला, तालू और होठ

सूखने लगते हैं और रोगी कुत्तेकी तरह हाँपता और जीभको बाहर निकाल देता है।

रक्तपूर्ण कोष्ठज दाह।

तलवार बरछी या भाले वगैरःके लगनेसे आदमीके शरीरमें घाव हो जाते हैं। उन घावोंसे निकले हुए खूनसे जिस आदमीका कोठा भर जाता है, उसके शरीरमें महा दुस्तर दाह पैदा होता है।

मतलब यह है कि, तलवार आदिसे ज़ख्म होने पर, खून से हृदय आदि कोठे भर जाते हैं, तब घोर दुःसह दाह पैदा होता है। इसी से, युद्धक्षेत्रके घायल पानी ही पानीकी रटना लगा देते हैं। ऐसे दाहके लक्षण "सद्योव्रण"के समान होते हैं। अतः ऐसे दाहकी चिकित्सा भी वैसी ही होनी चाहिये।

मद्यके दाहके लक्षण।

मद्यपान करने या शराब पीनेसे पित्त कुपित हो जाता है। उस कुपित पित्तकी गरमी, पित्तरक्तको बढ़ाकर, दाह पैदा कर देती है। इस दाहकी चिकित्सा पित्तके जैसी करनी चाहिये।

धातु क्षयका दाह।

रस रक्त आदि धातुओंके क्षय होनेसे भी दाह रोग होता है। इस दाहवाला रोगी तृषार्त्त, मूर्च्छित, क्षीणस्वर और चेष्टाहीन हो जाता है, अर्थात् धातुओंके क्षय होनेसे जो दाह होता है, उसमे रोगी प्यासके मारे विकल हो उठता है, बेहोश हो जाता है, गला बैठ

जाता है, आवाज़ नहीं निकलती और वह चेष्टा-रहित हो जाता है। इस दाह वाला अच्छा इलाज न होनेसे मर जाता है।

मर्माभिघातज दाहके लक्षण ।

मस्तक या हृदय अथवा मूत्राशय आदि मर्मस्थानोंमें चोट लगने से जो दाह होता है, वह असाध्य होता है।

नोट—पित्तसे ही दाह होता है, इसलिए जिन रोगोंमें दाह हो उनमें "पित्तकी अधिकता" समझनी चाहिये। उनके बढ़ने या कुपित होनेसे, प्यासके रोकनेसे, घाव होनेसे, शराब पीनेसे, रस रक्त आदि धातुओंके कम होनेसे और हृदय आदि मर्मस्थानोंमें चोट लगनेसे दाह होता है। धातुक्षयका दाह दुःसाध्य होता है। अच्छा इलाज न होनेसे रोगी मर जाता है। पर मर्ममें चोट लगनेसे जो दाह होता है, वह तो असाध्य ही होता है।

नोट—वागभट्टने लिखा है, क्षत या घाव होनेसे जो दाह होता है, उसमें भूख बहुत कम हो जाती है। जिसे शोक करनेसे दाह होता है, उसके शरीरके भीतर बड़ी जलन होती है तथा प्यास, मूर्च्छा और प्रलाप ये लक्षण होते हैं।

दाहकी असाध्यता ।

जिस रोगीके शरीरके भीतर दाह हो, पर ऊपरसे शरीर शीतल हो—उसका दाह असाध्य है। उसका इलाज न करना चाहिये। कहा है :—

पित्तज्वरसमा कार्या चिकित्सा तु भिषग्वरैः।
वर्जनीया प्रयत्नेन शीतगात्रस्य देहिनः॥

दाह रोगकी चिकित्सा बुद्धिमान् वैद्यको पित्त ज्वरके समान करनी चाहिये, परन्तु जिसके भीतर दाह हो—भीतरसे शरीर जला जाता हो और ऊपरसे छूनेमें शरीर शीतल हो, उसका इलाज न करना चाहिये।

दाह-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) दूध और दूधवाले वृक्षोंके सुशीतल चन्दन-मिले हुए काढ़े एवं अन्यान्य शीतल प्रयोगोंसे अन्तर्दाह या भीतरका दाह शान्त होता है।

(२) चमड़ेकी गरमी रुकनेसे शरीरका चमड़ा ठण्डा हो जाता है। ऐसा होनेसे, शरीर पर "अगरका लेप" करना चाहिये।

(३) पित्त और खूनसे बढ़ी हुई शरीरकी गरमी, चमड़ेमें घुसकर, घोर दाह पैदा करती है। इसलिए, उस अवस्थामे, पित्तके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(४) शरीरके खूनके चढ़ने या कुपित होनेसे जो दाह होता है, वह घोर दाह होता है। उसमें मनुष्यकी आँखें लाल और शरीरका चमड़ा ताम्बेके रंगका सा हो जाता है तथा देहमें आगके से पतंगे लगते हैं। इस दाहको "अति दाह" भी कहते हैं। चूंकि यह दाह खूनके चढ़नेसे होता है, इसलिये इसमें हाथ या पाँवकी "रोहिणी नामक शिरा—नस"को खोल कर खून निकालना चाहिये। चन्दन और उशीरको बहुतसे पानीमें मिलाकर, रोगीको उसमें स्नान कराना चाहिये। अगर रोगी प्यासके मारे जीभको बाहर निकाल कर हाँपता हो, गला और होठ सूखे जाते हों, तो उसे शीतल पानी अथवा मिश्री, पानी और दूध मिला कर पिलाना चाहिये। ये उपाय इस दाहमें परीक्षित हैं।

खूनके कोपसे हुए दाहमें विधिपूर्व्वक लंघन कराकर, उत्तम चिकना शीतल और हल्का भोजन देना चाहिये। अथवा जङ्गली जीवोंका मांसरस पिलाना चाहिये, क्योंकि रसकी तृप्तिसे दाह शान्त

होता है। ये काम पहले करने चाहियें। अगर इन उपायोंसे दाह शान्त न हो, तो रोहिणी नामक शिरा, जिसका जिक्र ऊपर किया गया है, खोल कर खून निकालना चाहिये।

(५) प्याससे हुए दाहमें, इच्छानुसार, पेट भर करके, जल पीना चाहिये। अथवा मिश्री या चीनीका शर्बत पीना चाहिये। अथवा दूधमें ईखका रस मिला कर पीना चाहिये।

(६) धातु-क्षयसे हुए दाहको अनेक प्रकारके इष्ट विषयोंसे जीतना चाहिये। मित्रोंमें बैठ कर दूध और मांस-रसका भोजन करना चाहिये। इस तरहके दाहमें "रक्तपित्तकी विधि" से इलाज करना और चिकनी वातनाशक दवा या पथ्य देना उचित है।

(७) दाह रोगमें, उपद्रवोंके शान्त होने पर, शोधन करना चाहिये।

(८) प्यास और दाहकी शान्तिके लिए,—स्नान कराने, छींटे मारने और पंखा वगैरः भिगोनेमें शीतल जल ही लेना चाहिये।

(९) सुश्रुतने जो अत्यन्त शोच-फिक्र करनेसे दाहका होना लिखा है, उस दाहका इलाज—रोगीको प्यारे मित्रोंमें बिठाना, दूध और मांसरस पिलाना तथा अन्य शीतल उपचार हैं।

(१०) दाह रोगमें, रोगीके पेटको साफ रखना बहुत जरूरी है।

दाह नाशक नुसखे।

(१) दाह रोगीके शरीर पर "सौ बार धुला हुआ घी" लगानेसे दाह शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(२) काँजीके पानीमें कपड़ा भिगो कर, उससे शरीर ढक देनेसे दाह शान्त हो जाता है। अगर प्यासका दाह हो, तो शीतल पानी पिलाना चाहिये।

(३) जौके सत्तूका शरीर पर लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(४) बेर और आमलोंको एकत्र पीस कर, शरीर पर लगानेसे दाह शान्त हो जाता है।

(५) अनार और इमलीको एकत्र पीस कर, देह पर लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(६) लामज्जक नामकी सुगन्धित घास अथवा चन्दनका लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(७) आमले और अनारके रसमें "जौका सत्तू" मिला कर लेप करनेसे दाह मिट जाता है।

(८) अगर दाह बहुत जोरसे हो, रोगी प्यासके मारे जीभ निकाले देता हो, कंठ और होठ सूख रहे हों, तो दूध-पानी और मिश्री मिलाकर पिलानेसे दाह शान्त हो जाता है।

(१०) दाहवालेको नीचे लिखे हुए पदार्थ हितकारी हैं :—

(१) कमलके पत्तोंका पलंग।

(२) मनोहर बाला स्त्री।

(३) शीतल जलकी बावड़ी।

(४) शीतल जलसे भीगे हुए पंखेकी हवा।

(५) चन्दनसे तर हार।

(६) तोतली बोली बोलनेवाले बच्चे।

(७) सुन्दर फव्वारेवाला घर।

(८) दूध और मांस-रस पीना।

(६) कमल-सहित निर्मल जलके सरोवर।

(१०) चन्दन लगाये हुए सुन्दरियाँ।

(११) घिसे हुए चन्दनसे तर पंखा।

(१२) केलेके पत्तोंका पलंग।

(११) चन्दनको पानीके साथ घिस कर और ताड़के पंखे पर

लगाकर हवा करने और पलँग पर कमलके पत्ते बिछाकर दाहवालेको सुलानेसे अवश्य लाभ होता है ।

(१२) दाहवालेके शरीर पर शीतल पानीके छींटे देना, शीतल जलमें घुसा कर स्नान कराना, पानीसे भींगे हुए कमलके पंखेसे हवा करना—लाभदायक है । इनसे प्यास और दाह अवश्य शान्त होते हैं ।

(१३) चन्दनको पत्थर पर घिस कर, शरीर पर पतला-पतला लेप करनेसे दाह शान्त होता है ।

(१४) सुगन्धवाला, पद्माख, खस, कमल और चन्दन इनको पानीमें पीस कर, एक पानी भरे टबमें घोल दो । फिर उसमें दाह वालेको डुबकी लगा कर स्नान कराओ । दाह अवश्य शान्त हो जायगा ।

(१५) बिजौरे नीबूका रस और शहद—दोनोंको मिला कर दाह वालेके शरीर पर लेप करनेसे दाह शान्त होता है ।

(१६) फूल-प्रियंगू, लोध, पद्माख, लामज्जक घास, सुगन्ध-वाला और केवटी-मोथा—इनको "पीले चन्दनके रसमें" पीसकर शरीर पर लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है ।

(१७) दाहवालेको कमलका जल, चीनीका शर्बत, मिश्री-मिला दूध और ईखका रस पिलाना लाभदायक है । इन चारोंसे पित्त शान्त होता है, अतः दाह नष्ट हो जाता है ।

(१८) गायका मक्खन, १०८ बार धोकर, दाहवालेकी छातीसे कंठसे तक लेप कर दो और हाथ-पैरोंमें फूल-काँसीकी कटोरियोंसे मालिश करो , अवश्य लाभ होगा । परीक्षित है ।

(१९) सफेद चन्दनको गुलाब-जलके साथ घिसकर, उसमें ज़रासा कपूर भी घिस लो । पीछे इसको सारे शरीरमें लगा दो । इस लेपसे दाह ज़रूर मिट जायगा । परीक्षित है ।

नोट—इस लेपको सिर पर लगानेसे गरमीका सिर दर्द फौरन आराम हो जाता है ।

(२०) नीमके पत्तोंको पानीमें सिल पर पीस कर, पानीमें घोल दो और दही की तरह मथो। जो झाग आवें उन्हें पेट और छाती अथवा दाहकी जगह, थोड़ी-थोड़ी देरमें कई वार, लगाओ। दाह अवश्य मिट जायगा ; परीक्षित है ।

नोट—इसी तरह वेरके पत्तोंके झाग लगानेसे भी दाह शान्त हो जाता है ।

(२१) सौ वार धोये हुए घी में जौका सत्तू मिला कर शरीर पर लगानेसे दाह मिट जाता है। परीक्षित है ।

(२२) दो तोले धनिया आध पाव पानीमें रातको भिगो दो। सवेरे ही मल-छान कर, उसमें एक तोले "मिश्री" मिला कर पीलो। इस नुसख़ेसे दाह रोग अवश्य चल जाता है। परीक्षित है।

(२३) गिलोय और पित्तपापड़ेका रस पीनेसे कैसा ही दाह क्यों न हो, आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) फूल-प्रियंगू, खस, पठानी लोध, सुगन्धवाला, सनाय और सोना पाठा,—इनके चूर्णमें "दारुहल्दीका रस" मिला कर लेप करनेसे दाह अवश्य शान्त हो जाता है; पर लेप महीन और गाढ़ा होना चाहिये ।

चन्दनादि क्वाथ ।

(२५) सफेद चन्दन, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, खस, नगरमोथा कमलगट्टेकी गरी, कमलकी डंडी, सौंफ, धनिया, पद्माख और आमले—इनको सबको मिलाकर दो तोले ले लो और डेढ़ पाव जलमें औटाओ, जब आधा पानी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर उसमें "मिश्री और शहत" मिला कर पीलो। इस काढ़ेके पीनेसे तेज़-से-तेज़ दाह भी शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—शहत तब मिलाना, जब काढा शीतल हो जाय।

कांजिक तैल ।

६४ तोले तिलीका तेल और १०२४ तोले काँजी,—दोनोको मन्दी-मन्दी आगसे औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान

लो। इस तेलकी मालिशसे, दाह और ज्वरका सन्ताप दूर हो जाता है।

दाहान्तक क्वाथ।

पित्त-पापड़ा, खस, नागोर मोथा, लाल चन्दन और पद्माख— इनको तीन-तीन माशे लेकर, डेढ पाव जलमें औटाओ। जब छटाँक-भर पानी रह जाय, उतार कर छान लो। शीतल हो जाने पर, काढ़ेमें १ तोले "शहत" मिला कर पीलो। इस काढ़ेसे दाह, ज्वर, प्यास और वमन फौरन शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है। निस्स-न्देह काममें लाइये।

त्रिफलादि क्वाथ।

त्रिफला और अमलताशका गूदा,—कुल दो तोले लेकर, डेढ़ पाव पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, मल छानकर पीलो। इससे दाह, रक्तपित्त और पित्तज शूल अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—दाह रोगमें पेट साफ रखना बहुत जरूरी है।

चौथा अध्याय

उन्माद रोगका वर्णन।

उन्माद शब्दकी निरुक्ति।

जिस बीमारीमें मनुष्यका मन विकृत या मतवाला हो जाता है, उसे "उन्माद" कहते हैं। उन्मादका अर्थ पागलपन, बावलापन, सिड़, दीवानापन या ख़फ़क़ानगी है। जिसे उन्माद रोग होता है, उसे उन्मत्त, सिड़ी, दीवाना या पागल आदि कहते हैं।

उन्माद मानसिक रोग है।

चूंकि उन्माद मनको विकृत कर देता है, इसलिये उसे मानसिक व्याधि या मनका रोग कहते हैं। कहा है :—

उन्मार्गसंस्थिता दोषा कुपिता मदयन्ति यत्।
ज्ञेयो ऽयं मानसो व्याधिरुन्माद इति कीर्त्तितः॥

वात, पित्त और कफ—बढ़ कर, अपनी-अपनी राहोंको छोड़ कर और मनके बहनेवाली धमनी नाड़ियोंमें घुसकर, मनको उन्मत्त करते या मनमें भ्रम उत्पन्न करते हैं। इसे ही "उन्माद" कहते हैं और "उन्माद" मानसिक रोग है। खुलासा यह है कि, उन्माद रोगमें "मन" ख़राब होता है, इसलिये उन्मादको मनकी बीमारी कहते हैं।

उन्माद दिलका रोग है या दिमाग़का ?

उन्माद और अपस्मारादि रोग मन और बुद्धिकी विकृतिसे होते हैं। वैद्यक-शास्त्रवाले इस रोगको प्रायः हृदयके विकारसे मानते हैं; पर हिकमतवाले इसे दिल और दिमाग़की बीमारी मानते

हैं। यद्यपि हमारे शास्त्रोंमे इसकी उत्पत्ति हृदयमें लिखी है, पर महाराजा धन्वन्तरिके "उन्मार्गमाश्रिता उर्द्धगता दोषा मदयन्ति" कहनेसे, यह दिमागी भी सावित होती है। वातादिक दोष कुपित होकर, अपनी अपनी-असली राहोंको छोड देते हैं और उर्द्धगामी होकर या ऊपरकी तरफ जाकर मद या उन्माद रोग करते हैं, धन्वन्तरि महाराजके कथनका यही अभिप्राय है। इसका यह अर्थ तो प्रायः सभी विद्वान् करते हैं, कि वातादिक दोष कुपित होकर और ऊपर जाकर, हृदय और मनको खराब करके, मनोवाही धमनियोंमें जाते और अन्तःकरणको मोहित करते हैं। पर धन्वन्तरिजीने हृदयमे ही दोषोंके प्रवेश करनेकी वात साफ तौरसे नहीं लिखी है, किन्तु उर्द्धगामी होनेकी वात कही है, इससे सावित होता है, कि उन्माद हृदयसे भी हो सकता है और दिमागसे भी। इसके सिवाय एक वात और है, जिससे हमारी वात और भी पक्की हो जाती है। धन्वन्तरिजीने कहा है :—

तीक्ष्णैरुभयतो भागैः शिरश्चापि विशोधयेत्।
पूजां रुद्रस्य कुर्वीत तद्गणानाच नित्यशः॥

वैद्यको चाहिये कि, कय और दस्त करानेवाली दवाएँ देकर रोगीके शरीरको नीचे और ऊपरसे शुद्ध करे और सिरका भी शोधन करे; यानी नस्य वग़ैरःसे सिरकी मलामतको भी निकाले। यह श्लोक तो "अपस्मार" रोगमे कहा है। इसके सिवा—उन्माद रोगकी चिकित्सामें तो शिरोविरेचनकी वात साफ ही लिखी है :—

स्निग्धं स्विन्नं तु मनुजमुन्मादार्त्तं विशोधयेत्।
तीक्ष्णैरुभयतो भागैः शिरश्चविरेचनैः॥

उन्माद रोगीको स्नेहन और स्वेदन करके तथा तीक्ष्ण वमन-विरेचन देकर, नीचे ऊपर दोनों तरफसे खूब शुद्ध करे और शिरोविरेचन नस्यादिसे सिरको भी खूब शुद्ध करे। खुलासा यह कि, कयकी दवा देकर कय करावे और दस्तकी दवा देकर दस्त करावे। इतने हीसे सन्तोष

न करले, किन्तु सिरकी ग़िलाज़त निकालनेवाला जुलाब—नस्य देकर मस्तकको भी खूब साफ करे।

इससे साफ मालूम होता है कि, कुपित हुए दोष हृदय ही नहीं दिमाग़में भी जाते हैं। इसीसे महर्षिने "सिरके जुलाब" या शिरोविरेचनकी बात कही है। अगर यह रोग हृदयसे ही होता, तो वे शिरोविरेचक नस्यादिसे उसके साफ करनेकी बात न कहते, क्योंकि हृदय रोगमें, शिरोविरेचनकी वैसी ज़रूरत नहीं। मतलब यह है कि, पाठकोंको उन्माद रोगको दिल और दिमाग़ दोनोंसे ही मानना चाहिये।

हिकमतमें उन्माद रोग कई तरहका लिखा है। मुख्य "मालीख़ोलिया" है, और उसके रूपान्तर कुतरुप, मानिया, दाउलकल्ब और सुवारा या विशेष जनून लिखे हैं। इनके लक्षण कमोवेश हमारे "उन्माद"से मिलते हैं।

मालीख़ोलियामें लिखा है—इस रोगमें, मनके विचार प्रकृतिके अनुसार नहीं रहते। आजकलके हकीम जिसे "मालीख़ोलिया" कहते हैं, पहलेके हकीम उसे "मैलनकली" कहते थे। दिमाग़ी उन्मादको "जनून" और दिलके फितूरसे होनेवालेको "ख़फ़कान" कहते हैं; इन सबके लक्षण हम आगे विस्तारसे लिखेंगे।

डाक्टर लोग दिमाग़से होनेवाले उन्मादको "इनसैनिटी" और दिलकी धड़कनसे होनेवालेको "पैलपीटेशन आव् हार्ट" और एक तरहके सूक्ष्म उन्मादको "मलनकोलिया" कहते हैं।

हिकमत और डाक्टरीमें, उन्मादके पैदा होनेकी बात दिल और दिमाग़से साफ लिखी है, पर वैद्यकमें गोलमोल लिखी है। वास्तवमें, उन्माद रोग दिलसे भी होता है और दिमाग़से भी।

उन्मादके निदान या कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे उन्माद रोग होता है :—

(१) संयोग-विरुद्ध भोजन करनेसे ।

(२) विष या जहर-मिले पदार्थ खाने-पीनेसे ।

(३) अपवित्र या नापाक खाना खानेसे ।

(४) देवता या गुरु वग़ैरः का अपमान करनेसे ।

(५) अत्यन्त खुश होने या अत्यन्त डरनेसे ।

(६) अपनेसे जबर्दस्तके साथ वैर करनेसे ।

नोट—वैद्यकमें उन्मादके ये ही निदान लिखे हैं, पर यह रोग ज़ियादा नशा खा लेने और काम, क्रोध, मोह, लोभसे भी हो जाता है ।

उन्माद रोगकी क़िस्में ।

उन्माद रोग छै तरहका होता है :—

(१) वातसे, (२) पित्तसे ।

(३) कफसे, (४) सन्निपातसे

(६) मनके दुःखसे, (६) विष खानेसे ।

नोट—इस रोगमें दोषानुसार चिकित्सा करनी चाहिये । जबतक यह रोग बढ़ नहीं जाता, इसे "मद" कहते हैं ।

उन्मादकी सम्प्राप्ति ।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे वात, पित्त और कफ कुपित होते या बढ़ते हैं । बढ़कर, ये अल्पसत्व या हीनशक्ति-कमजोर आदमियोंके बुद्धिके रहनेकी जगह—मन और हृदय—को ख़राब करते हैं । इसके बाद ये मनोवाही धमनी नाड़ियोंमें अपना दख़ल जमाकर, अन्तःकरण में विकार उत्पन्न करते या उसे मोहित करते हैं ।
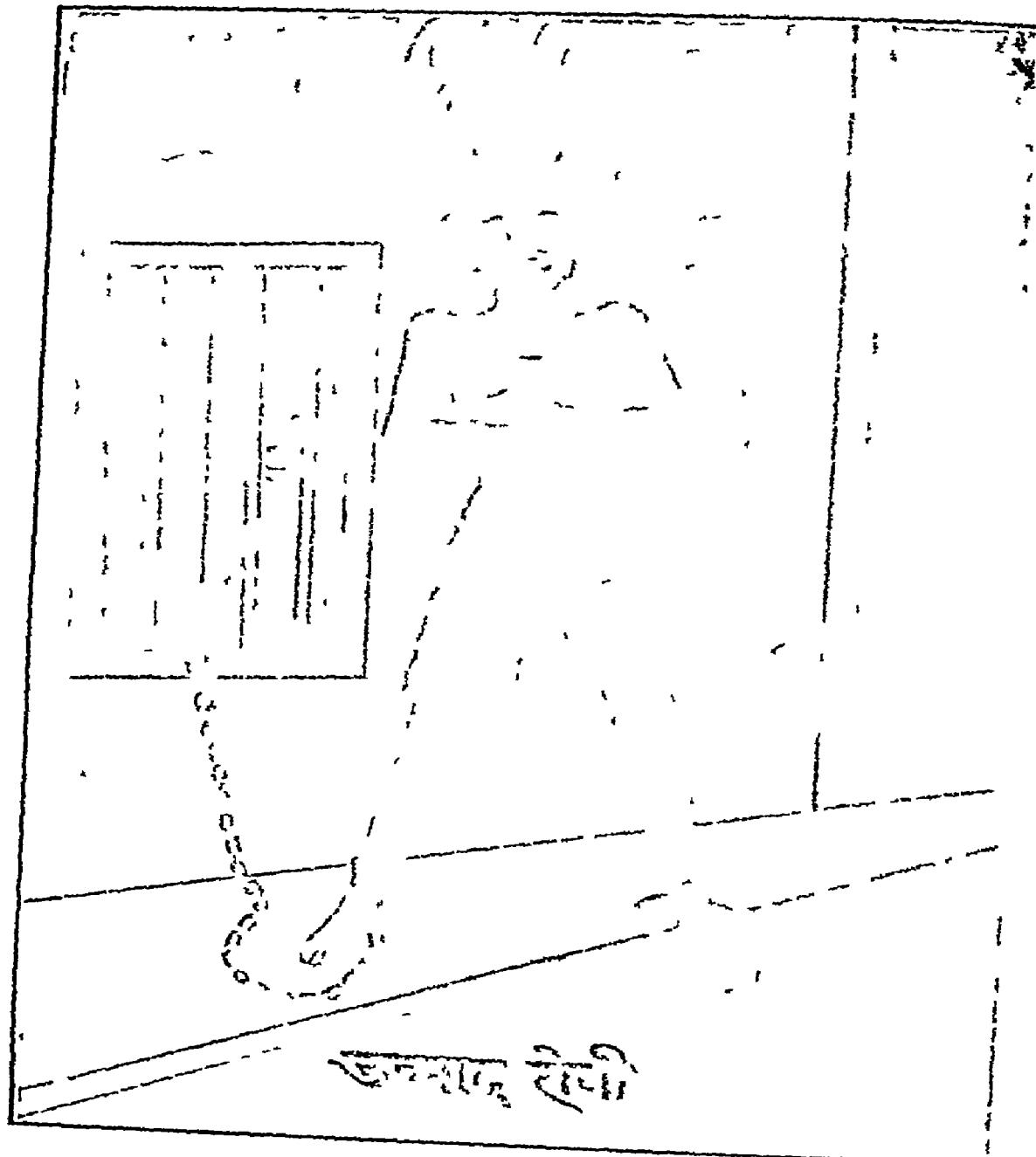
नोट—हिकमतमें लिखा है, जब कोई उपद्रव दिमागमें पहुँच जाता है, तब दिमागी शक्तियोंके कामोंमें कमी आजाती है, वे निकम्मी हो जाती हैं और हेतुके बलवान या निर्बल होनेके अनुसार 'घबराहट' पैदा हो जाती है ।
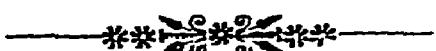
उन्मादके पूर्वरूप या सामान्य लक्षण ।
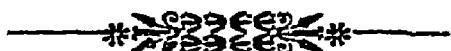
उन्माद रोगके पूरी तरहसे होनेके पहले, नीचे लिखे हुए पूर्वरूप देखनेमें आते हैं । इन्हें उन्मादके 'सामान्य लक्षण' भी कहते हैं :—

(१) बुद्धिमें भ्रम हो जाना है ।
(२) मन चञ्चल हो जाता है ।
(३) रोगी इधर-उधर दृष्टि फेरता है ।
(४) उसे धीरज नहीं रहता ।
(५) कहना चाहिये कुछ और कहता है कुछ ।
(६) उसकी विचारशक्ति मारी जाती है ।

उन्मादके विशेष लक्षण ।

वातज उन्मादके कारण ।
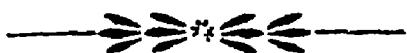
वातज उन्मादके कारण ये हैं :—

(१) रूखा और शीतल भोजन करना ।
(२) भूखसे कम खाना ।
(३) दस्त और कय होना ।
(४) धातुका क्षय होना ।
(५) उपवास करना या निराहार रहना ।

ऊपर लिखे पाँचों कारणोंसे "वायु" कुपित होना या बढ़ना है। अगर इस हालतमें रोगी शोक या चिन्तादि करता है, तो वायु और भी कुपित हो जाता है। बढ़े हुए वायुको चिन्ता और शोकादि मददगार मिल जाते हैं। मददगारोंकी मददसे बलवान होकर, कुपित हुआ "वायु" अन्तःकरणको खराब कर देता है। अन्तःकरणको खराब करके, वायु बुद्धि और स्मृतिका नाश कर देता है और इस तरह "उन्माद रोग" पैदा कर देता है।

वातज उन्मादके लक्षण।

जब वातज उन्माद हो जाता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण नज़र आते हैं :—

(१) रोगी अकारण हँसता है।

(२) मन्द-मन्द मुस्कराता है।

(३) बिना समय या प्रसंगके नाचना-गाना है।

(४) जरूरतसे जियादा बोलता है।

(५) हाथ-पैरोंको इधर-उधर चलाता है।

(६) कर्कश स्वरमें रोता है।

(७) रोगीका शरीर रूखा, दुबला और लाल हो जाता है।

(८) भोजन पचनेपर, इस वातज उन्मादका जोर बढ़ता है।

शास्त्रमें लिखा है :—

> अस्थाने स्मृति हास्य भाष्य गणना वागंग विक्षेपका।
> उन्मादे पवनात्मके बहुविधा भावा प्रनृत्यादय॥

बे-मौके याद करना, हँसना, बोलना, गिनती करना, बातें करना, हाथ पाँव पटकना और नाच-गान आदि नाना प्रकारकी चेष्टाएँ करना—ये सब वातज या वादीके उन्मादके लक्षण हैं।

पित्तज उन्मादके कारण।
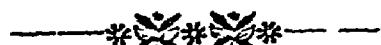
पित्तज उन्मादके कारण ये हैं:—

(१) अधकच्चे या कच्चे पदार्थ खाना।

(२) कड़वे पदार्थ खाना।

(३) खट्टी चीज़ खाना।

(४) दाहकारक और गरम चीज़ खाना।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे पित्त बढ़ता है। बढ़ा हुआ तीव्रवेगी "पित्त" अजितेन्द्रिय मनुष्यके हृदय या मनोवाही धमनी नाड़ियोंमें घुस जाता है। वहाँ पहुँचकर और अन्तःकरणको ख़राब करके, वह बुद्धि और स्मृतिका नाश कर देता और इस तरह उन्माद रोगको पैदा करता है।

पित्तज उन्मादके लक्षण।

जब पित्तज उन्माद हो जाता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) रोगीमें सहनशीलता नहीं रहती।

(२) वह हाथ पैर पटका करता है।

(३) शर्म-लिहाज़ त्यागकर नंगा हो जाता है।

(४) डरकर भागता-दौड़ता है।

(५) उसका शरीर गरम रहता है।

(६) क्रोध या गुस्सा करता है।

(७) छायामें रहना चाहता है।

(८) शीतल जल और शीतल अन्न खाना-पीना चाहता है।

(६) रोगीका चेहरा पीला हो जाता है।

शास्त्रमें लिखा है :—

> दाहस्तर्जन नग्न भाव बहुलालापाश्च कोपोप्मासा।
> कांताशीतजलाशनेषु नितरां तृड़ पीतता पंक्तिके॥

दाह—जलन, तर्जन—ओरमें चिल्लाना, नगा हो जाना, बहुत बकना, क्रोध करना, गरमी लगना, शीतल जल पीनेकी इच्छा, निरन्तर प्यास लगना और पीलापन—ये सब पित्तज उन्मादके चिह्न हैं।

कफज उन्मादके कारण।
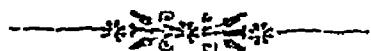
कफज उन्मादके कारण ये हैं :—

(१) कम भूखमें पेट भर खाना।

(२) कुछ भी मिहनत न करना।

इन कारणोंसे, पित्त-सहित कफ अत्यन्त बढ़कर हृदयमें जाता है। वहाँ जाकर, वह बुद्धि स्मृति और चित्तकी शक्तिका नाश करके उन्माद रोग पैदा करता है।

कफज उन्मादके लक्षण।

जब कफज उन्माद होता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमे आते हैं :—

(१) रोगी एकान्तमें रहना पसन्द करता है।

(२) कम बोलता है।

(३) स्त्रियोंको चाहता है।

(४) नींदमे मग्न रहता है।

(५) भोजन पर रुचि नहीं रहती।

(६) कय होती हैं।

(७) मुँहसे लार वहती है।

(८) नाखून, चमड़ा, आँखें और मूत्र सफेद हो जाते हैं।

(९) भोजन करते ही इस उन्मादका ज़ोर बढ़ जाता है।

सन्निपातज उन्मादके लक्षण।

सन्निपातज उन्माद सब तरहके मिले हुए कारणोंसे पैदा होता है, अतः इसमें तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं। यह उन्माद बहुत ही भयङ्कर और दुश्चिकित्स्य होता है। इस असाध्य और विरुद्ध-चिकित्सनीय उन्मादकी चिकित्सा वैद्य नहीं करते।

शास्त्रमे लिखा है :—

नारीविविक्तप्रियता च मांद्य निद्रावमिः श्लेष्मभवे च लाला।
सर्वाणि रूपाणि भवन्ति यत्र स सन्निपातप्रभवोऽस्ति घोरः॥

स्त्री और एकान्तवासका अच्छा लगना, अग्निमान्द्य, निद्रा, वमन, और मुँहसे लार टपकना ये कफोन्मादके लक्षण हैं। जिसमे तीनों दोषोंके लक्षण दीखें, उसे अति भयकर सन्निपातोन्माद समझो।

शोकज उन्मादके कारण।
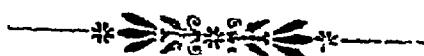
शोकज या मानस उन्मादके कारण ये हैं :—

(१) चोर, शत्रु, राजा या और मनुष्यसे डरना।

(२) सिंह, व्याघ्र या सर्प आदिसे डरना।

(३) धन या सर्वस्व नाश हो जाना।

(४) स्त्री-पुत्रादि नातेदारोंकी मौत हो जाना।

(५) मन-चाही स्त्रीका न मिलना।

इन कारणोंसे मनुष्यके मनमें अत्यन्त दुःख होता है। मनके दु:खी होनेसे, मनमें भयङ्कर विकार उत्पन्न हो जाते हैं। खुलासा यह, कि क्षुभित या दुःखित "अन्तःकरण" मानसिक विकार या शोकज उन्माद पैदा करता है।

देखते हैं, कितने ही कंजूस-धनी चोरों द्वारा धन चुराये जानेके भयसे, कितने ही अपराधी राजदण्डसे डरकर, कितने ही ज़ोरावर दुश्मनके ख़ौफ़से और कितने ही सर्प, हाथी, सिंह आदिसे सताये जानेपर-पागल हो जाते हैं। अनेक आदमी अपने प्यारोंके मरजानेसे, अनेक किसी जगह जमा किया हुआ धन डूब जानेसे और अनेक मन-चाही प्यारी स्त्रीके न मिलनेसे पागल हो जाते हैं। मजनूँ लैलाके न मिलनेसे ही पागल हो गया था; कपड़े फाड़ डालता था और जंगलोंमें मारा-मारा घूमता था। अभी हालकी घटना है, एक मार-वाड़ी सेठको बाजारका बहुत सा रुपया देना हो गया। उसकी स्त्रीके पास कोई २५।३० हजारका ज़र जेवर था। सेठ चाहता था कि, उसे बेचकर लोगोंका देना चुका दूं, पर स्त्रीने साफ इन्कार कर दिया। बस, वह पागल हो गया। रात दिन चिल्ला-चिल्लाकर कहा करता—"वह आये, वह आये, उनका ऋण कैसे चुकाऊं?" कुछ दिन बाद, उसकी हालत और भी खराब हो गई और वह मर गया। अतः मनुष्यको अपने मनको कभी न बिगड़ने देना चाहिये। मनके ख़राब होनेसे बड़े-बड़े भयङ्कर प्राणनाशक रोग हो जाते हैं।

शोकज उन्मादके लक्षण।

जिसे शोकज उन्माद होता है, उसमें ये लक्षण पाये जाते हैं:

(१) शोकज उन्मादवाला गुप्त बातोंको कहता है।

(२) अनेक तरहकी बातें करता है।

(३) हंसता है, गाता है और रोता है ।

(४) उसका ज्ञान विपरीत हो जाता है ।

(५) वह अत्यन्त मूर्ख हो जाता है ।

शास्त्रमें लिखा है :—

ब्रवीति चित्र च मनोगत थ मत्यतो रोदति चाति मूढ ।

विषजन्य उन्मादके लक्षण ।

जिसे विष या जहर खाने-पीनेसे उन्माद होता है, उसमें ये लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) रोगीकी आँख अत्यन्त लाल हो जाता है ।

(२) बल और वर्णका नाश हो जाता है ।

(३) इन्द्रियोंकी शक्ति नष्ट हो जाती है ।

(४) शरीरकी कान्ति मारी जाती है ।

(५) मुंहका रंग काला या श्याम हो जाता है ।

(६) संज्ञा जाती रहती हैं ।

शास्त्रमें लिखा है :—

विषोद्भवे स्याद्बलवाग्विहीनः श्यावाननोरक्ततरेक्षणश्च ।

विषके उन्मादमें बल और वाणीका नाश हो जाता है । मुँहका रग श्याम हो जाता है और नेत्र अत्यन्त लाल हो जाते हैं ।

सब तरहके उन्मादोंकी खास-खास पहचानें ।

१ वातज उन्मादवालेका शरीर रूखा, दुबला और लाल हो जाता है । यह उन्माद भोजन पचनेपर जियादा जोर करता है ।

२ पित्तज उन्मादवालेका चेहरा पीला पड़ जाता है । वह शीतल अन्न, शीतल जल और शीतल छायाको पसन्द करता है ।

३ कफज उन्मादवालेके नाखून, चमड़ा, नेत्र और मूत्र आदि सफेद हो जाते हैं । उसे स्त्री, एकान्तवास और कम बोलना ये अच्छे लगते हैं ।

४ सन्निपातज उन्मादमें ऊपर लिखे हुए तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं।

५। शोकज उन्माद वाला अनेक तरहकी बातें करता और छिपी बातोंको कहता है।

६। विषज उन्माद वालेका चहरा श्यामवर्ण और नेत्र अत्यन्त लाल हो जाते हैं।

असाध्य उन्मादके लक्षण।

असाध्य उन्मादमें ये लक्षण होते हैं :—

(१) रोगीका मुँह सदा नीचेकी ओर या ऊपरकी तरफ रहता है।

(२) मांस और बल क्षीण हो जाते हैं।

(३) नींद कभी नहीं आती—जागता ही रहता है।

शास्त्रमें लिखा है :—

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवा क्षीणमांसबलोनरः।
जागरूकोह्यसन्देहमुन्मादेन विनश्यति॥

जिस उन्माद रोगीका मुँह सदैव नीचेकी ओर या ऊपरकी ओर रहता है, जिसके मांस और बल क्षीण हो जाते हैं और जिसकी नींद जाती रहती है, वह उन्मादी उन्माद रोगसे निश्चय ही मर जाता है।

भूतोन्मादके लक्षण।

देवता आदिके प्रसनेसे जो उन्माद रोग होता है, उस उन्माद-वालेकी बोल-चाल, पराक्रम, शूरता और चेष्टा आदमियोंकी सी नहीं होतीं। उस आदमीमें बुद्धि, विचारशक्ति, धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति, शिल्प आदिका ज्ञान, बल और अभिमान आदि होते हैं। ऐसे उन्माद-का समय या तिथि नियत होती है; यानी ऐसे उन्मादका दौरा किसी मुक़र्रर वक्त या मुक़र्रर तारीखमें होता है। यह भूतोन्मादकी पक्की पहचान है।

देवग्रहजुष्टके लक्षण ।

देवग्रह ग्रसित उन्मादवाला सन्तोषी होता है और पवित्र रहता है। उसके शरीरसे दिव्य फूलोंकी सुगन्ध निकलती है। उसे नींद नहीं आती। वह शुद्ध संस्कृत भाषा बोलता और तेजस्वी होता है। उसके नेत्र स्थिर होते हैं। वह दूसरोंको वरदान देता और ब्राह्मणोंमें भक्ति रखता है।

दैत्याविष्टके लक्षण ।

जिसे दैत्य-ग्रहके ग्रसित करनेसे उन्माद होता है, वह पसीनोंसे तर हो जाता है; ब्राह्मण, गुरु और देवताओंकी निन्दा करता है। उसकी आँखें टेढ़ी हो जाती हैं और वह किसीसे भी नहीं डरता। वह कुमार्गमें रुचि रखता और किसी भी तरहके खाने-पीनेके पदार्थोंसे सन्तुष्ट नहीं होता। उसका स्वभाव दुष्ट हो जाता है।

गन्धर्वाविष्टके लक्षण ।

गन्धर्व-ग्रहसे पीड़ित मनुष्य अन्तःकरणसे खुश रहता है। जलाशय-तट और वन-उपवनोंमें रहता है। उत्तम चालसे चलता है। गाना, खुशबूदार पदार्थ और फूलोंसे प्रेम रखता है और नाचते-नाचते मन्द-मन्द मुस्कराता है।

यक्षाविष्टके लक्षण ।

यक्ष-ग्रहसे ग्रसित मनुष्य गंभीर होता है। उसकी आँखें लाल होती हैं। सुन्दर महीन और रंगीन कपड़े पहनता है। जल्दी-जल्दी चलता और कम बोलता है। सहनशील और तेजस्वी होता है। "किसको क्या दूँ," ऐसा कहता है।

पित्राविष्टके लक्षण ।

पितृ-ग्रहसे पीड़ित मनुष्य कुश आदिसे अपने पित्रोंको पिंड देता है। शान्तचित्त रहता है। दाहने कन्धे पर कपड़ा रख कर अपने पित्रोंको जल भी देता है। मांस, तिल, गुड़ और खीर खानेकी इच्छा करता है। इन सबके सिवाय, वह पित्रोंकी भक्ति करता है।

नागाविष्टके लक्षण

सर्प-ग्रहसे ग्रसित मनुष्य कभी-कभी साँपकी तरह पेट और छातीके बल चलता है, वारम्बार जीभसे गलफुओंको चाटता है, क्रोध करता है तथा शहद, घी, दूध और खीर खाना चाहता है ।

राक्षसाविष्टके लक्षण ।

राक्षस-ग्रहसे ग्रसित मनुष्य मांस, खून और शराबकी बनी चीज़ चाहता है। वह अत्यन्त बेशर्म, अत्यन्त निर्दयी, अत्यन्त शूर और क्रोधी हो जाता है। उसके शरीरमें अनेक तरहके बल आ जाते हैं। वह रातमें घूमा करता और पवित्रतासे नफरत करता है ।

ब्रह्मराक्षसाविष्टके लक्षण ।

ब्रह्मराक्षससे ग्रसित मनुष्य देवता, ब्राह्मण और गुरुसे द्वेष करता करता है। वेद-वेदाङ्गोंकी निन्दा करता है। किसी दूसरेको नहीं मारता, किन्तु अपने ही शरीरको तकलीफ देता है ।

पिशाचाविष्टके लक्षण ।

पिशाच-ग्रहसे पीड़ित आदमी नङ्गा हो जाता तथा दुबला और कमज़ोर रहता है। विरुद्ध बात कहता है। उसके शरीरसे बदबू निकलती है। वह अत्यन्त गन्दा रहता है। रूखा हो जाता है। सब तरहके खाने-पीनेके पदार्थोंमें लम्पट हो जाता है। बहुत खाता है। सुनसान जगहों और वनोंमें रहता है। विरुद्ध चेष्टा करता-करता और रोता-रोता त्रासको प्राप्त हो जाता है ।

हिंसक राक्षसादिक ग्रह ग्रसितका निदान ।

जो मनुष्य अपवित्र रहता है और मर्यादा तोड़ता है, वह मनुष्य घावसहित हो चाहे घावरहित हो, राक्षसादि उसे मारनेके लिये या अपनी पूजा करानेके लिए पकड़ते हैं ।

हिंसार्थ पकड़े हुएके लक्षण ।

पर्वत, हाथी, वृक्ष, दीवार और ऊँचे मकान आदिसे गिरे हुएको

राक्षसादि हिंसक लोग ग्रस लेते हैं। उस समय उस मनुष्यके नेत्र जड़ हो जाते हैं।

साध्यासाध्य लक्षण ।

ज़ोरसे जल्दी-जल्दी चले, कय करे, बहुत सोवे और अत्यन्त काँपे—ऐसे मनुष्यका उन्माद असाध्य है। देवादिक ग्रहोंके कारणसे पैदा हुए उन्माद तेरहवें वर्षमें असाध्य हो जाते हैं।

देवादिक आवेशका समय ।

देवादि ग्रह नीचे लिखी हुई तिथियोंमें मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करते हैं :—

(१) देवग्रह	पूर्णमासीके दिन ।
(२) दैत्य	दोनों सन्ध्या कालमें ।
(३) गन्धर्व	अष्टमीके दिन ।
(४) यक्ष	पड़वाके दिन ।
(५) पितर ग्रह	कृष्ण पक्षमें ।
(६) सर्प-ग्रह	पञ्चमीके दिन ।
(७) राक्षस	रातमें ।
(८) पिशाच	चौदसके दिन ।

नोट—पितृ-ग्रह कृष्ण पक्षकी अमावस्याके दिन आदमियोंके शरीरमें आते हैं। इन तिथियोंसे लक्षण समझनेमें मदद मिलती है और इन्हीं तिथियोंमें बलिदान भी किया जा सकता है।

देवादिक ग्रह मनुष्य-शरीरमें घुसते हुए दीखते क्यों नहीं ?

जिस तरह दर्पण, तेल या पानीमें छाया घुसती हुई नहीं दीखती, जिस तरह सर्दी और गर्मी मनुष्य-देहमें घुसती हुई नहीं देखती, जिस तरह सूर्यकी किरणें सूर्यकान्तमणिमें घुसती हुई नहीं दीखतीं, जिस तरह जीव शरीरमें घुसता हुआ नहीं दीखता , उसी तरह देवादि ग्रह मनुष्य-शरीरमें घुसते हुए नहीं दीखते ।

उन्माद-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) वातज उन्मादमें पहले स्नेहपान कराना चाहिये ; पित्तके उन्मादमें पहले जुलाब देकर दस्त कराने चाहियें और कफके उन्मादमें पहले वमन करानी चाहियें। और-और उन्मादोंमें पिचकारी वग़ैरः लगानी चाहियें।

(२) उन्माद और मृगीके दोष और दूष्य समान होते हैं, अतः उन्मादकी दवाएं मृगीमें और मृगीकी उन्मादमें काम आ सकती हैं।

(३) उन्माद-रोगीकी वृक्ष, अग्नि, जल, पर्वत और विषम स्थानोंसे सदा रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि ये तत्काल प्राण नाश करते हैं।

(४) महर्षि, पितृ और गन्धर्व-बाधाके उन्मादमें तीक्ष्ण अंजन, तीक्ष्ण नस्य और सारे क्रूर कर्म त्याग देने चाहियें। घृत आदि मृदु दवाओंसे आराम करना चाहिये।

(५) ग्रह-ग्रसित उन्मादमे, मृगी रोगमें लिखे हुए काम करने चाहियें तथा शान्ति, दोष-विशोधन और स्नेह-क्रिया ये सब काम करने चाहियें।

(६) विषके उन्मादमें पहले मृदु क्रिया करनी चाहिये और शोकज उन्मादमे शान्ति आदि कर्म करने चाहियें।

(७) उन्माद रोगीको बिना हवाके स्थानमें बिठा कर, चतुराईसे उर, बाहु और ललाटकी फस्द खुलवानी चाहिये।

(८) देवग्रह ग्रसित मनुष्यके आराम करनेके लिए, रौद्र कर्म न करना चाहिये और पिशाचादिसे ग्रसित होने पर उनके प्रतिकूल काम न करने चाहिये।

(९) निज और आगन्तु उन्मादमे देश, अवस्था, सात्म्य, दोष, काल और बलाबलकी परीक्षा करके चिकित्सा करनी चाहिये।

(१०) काम, शोक, भय, क्रोध, हर्ष, ईर्ष्या और लोभसे पैदा हुए उन्मादोंको परस्परके प्रतिद्वन्द्वी या विरोधी उपायोंसे शान्त करना चाहिये। जैसे,—शोक, भय, क्रोध और ईर्ष्यासे हुए उन्मादको काम, हर्ष और लोभ द्वारा जीतना चाहिये।

(११) बलिदान, मंगल, हवन, भूतबाधा दूर करनेवाली दवाओं, सत्य, आचार, तप, ज्ञान, दान, नियम, व्रत, देवता, ब्राह्मण और गुरुकी पूजा, सिद्ध मन्त्र और औषधसे "आगन्तु उन्मादको" शान्त करना चाहिये।

(१२) जो प्राणी मांस और शराबसे बचा रहता है, हितकारी भोजन करता है, यत्नसे चलता और पवित्र रहता है, उसे निज अथवा आगन्तु उन्माद कभी नहीं होता।

(१३) उन्माद रोगमें, बहुधा, नींद नाश हो जाती है और नींद आनेसे उन्माद रोग आराम होता है। उन्माद रोगके साथ होनेवाले "निद्रानाश रोग"को अफीम फौरन नाश कर देती है। उन्मादके शुरु होते ही, अगर अफीमकी उचित मात्रा दीजाय, तो उन्माद रुक सकता है। जब उन्माद रोगमें ज़रा-ज़रा देरमें रोगीको जोश आता और उतरता है, तब अफीमकी रत्ती-रत्ती भर की मात्रा देनेसे बड़ा उपकार होता है। उन्मादमें हर बारमें रत्ती-रत्ती अफीम देनेसे कोई हानि नहीं होती, क्योंकि उन्माद रोगी अफीमकी अधिक मात्रा सह सकता है। पर सभी तरहके उन्मादोंमें, बिना सोचे-समझे अफीम देना भी ठीक नहीं। जब उन्माद रोगीका चेहरा फीका हो, नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती हो और नींद न आनेसे शरीर कमज़ोर हुआ जाता हो, तब अफीम देना लाभदायक है; किन्तु जब उन्माद रोगीका चेहरा सुर्ख हो अथवा मुँह या सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम न देनी चाहिये। इस हालतके सिवा,

उन्मादकी और सब हालतोंमें अफीम देना हितकर है। उन्मादके आरम्भमें, अफीम देनेसे उन्माद रुकते देखा गया है।

(१४) इन्द्रिय, बुद्धि, आत्मा और मनकी प्रसन्नता तथा धातुओंका प्रकृतिस्थ होना—ये उन्मादमुक्तके लक्षण हैं, अर्थात् ये लक्षण होनेसे उन्मादको नष्ट हुआ समझना चाहिये।

उन्माद नाशक नुसखे।

(१) ब्राह्मीके पत्तोका रस ४ तोले, कूटका चूर्ण १२ रत्ती और शहद ४८ रत्ती—इन सबको एकत्र मिला कर पीनेसे उन्माद रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पेठेके बीजोंका चूर्ण ४८ रत्ती और कूटका चूर्ण १२ रत्ती,—इन दोनोंको ४ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे उन्माद रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पेठेके बीजोकी गरी २ तोले लेकर, रातके समय, पत्थर या मिट्टीके बर्तनमें, पाँच तोले पानी डाल कर भिगो दो। सवेरेही उसे सिल पर पीस कर छान लो और ६ माशे "शहद" मिला कर पीलो। इस नुसख़ेके लगातार १५ दिन पीनेसे उन्माद रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) शंखाहूलीका रस ४ तोले, कूटका चूर्ण १२ रत्ती और शहद ४८ रत्ती,—इनको एकत्र मिला कर पीनेसे उन्माद रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५) चम्पाके फूल दो तोले लेकर और एक तोले शहदमें मिलाकर खा जाओ। इस तरह, कई दिन इस दवाके खानेसे उन्माद रोग चला जाता है।

(६) दो तोले खूब पकी हुई इमली लाकर, आधपाव पानीमें, पत्थर या काठके वासनमें, भिगो दो। फिर उसे खूब मसल या पीस कर, उसमें एक तोले "मिश्री" डाल दो और मिला कर पी जाओ। इस तरह कितने ही दिन पीनेसे उन्माद रोग नाश हो जाता है।

नोट—इमली—बीज, छिलके और रेशे अलग करके—दो तोले लेनी चाहिये।

(७) वाट्याल या पीले फूलकी वला की शाखाका रस पीनेसे उन्माद रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(८) तो तोले रेवन्दचीनीको पानीके साथ सिल पर पीस कर, रोगीके दोनों कन्धोंके बीचमें लगा दो। इस उपायसे उन्माद रोग चला जाता है।

(९) उन्मादवालेको, बलाबल देखकर, दस बरसका पुराना घी पिलानेसे उन्माद रोग आराम हो जाता है ; पर इसे कुछ दिन तक नित्य सेवन करना चाहिये।

नोट—चरकके चिकित्सा स्थानमें लिखा है :—विशेषतः पुराणञ्च घृतं त पाययेद्भिषक्। अर्थात् उन्माद रोगमें विशेषकर पुराना घी पिलाना चाहिये। पुराना घी त्रिदोष नाशक, पवित्र और विशेषकर ग्रह नाशक है। जो घी कड़वा, चरपरा, तेज गन्धवाला, दस सालका पुराना, लाखके रसके समान, लाल रंगका और शीतल हो, वही पुराना घी है। दस बरससे ऊपरके पुराने घी को "पुराना घी" कहते हैं। एक सौ वर्षके पुराने घीसे ऐसा कौनसा रोग है, जो नाश न हो? विशेष कर अपस्मार और ग्रहोन्माद रोगीके लिए वह परमोत्तम है।

(१०) सरसोंके तेलकी नस्य देने और सरसोंहीका तेल आँखोंमें आँजनेसे उन्माद रोग चला जाता है। अगर सरसोंका तेल उन्माद वालेके सारे शरीरमें लगा कर उसे धूपमें विठा दें, तो निश्चय ही उन्माद चला जावे। किसी-किसीने सरसोंका तेल लगाये हुए उन्माद-रोगीको बाँधकर, धूपमें, चित्त सुलानेकी बात भी लिखी है। कहा है :—

कटुतैलाक्तमुत्तान बधयित्वातपे न्यसेत।
दर्शयेदद्भुतं किञ्चिदग्र यादिष्टविनाशनम्॥

रोगीके शरीरमें सरसोंका तेल लगा कर और उसे बाँध कर चित्त लगावे अथवा उसे कोई अद्भुत चीज दिखावे अथवा इष्ट पदार्थ या किसी प्यारेके नाशकी खबर सुनावे।

(११) लाल रंगकी कच्ची चिरमिटी दो रत्ती लेकर गायके आधापाव दूधके साथ, कुछ दिन पीनेसे, उन्माद चला जाता है। कहा है:—

अपक्वचटकी क्षीरपीतोन्माद विनाशिनी।

बिना पकी चिरमिटी दूधके साथ पीनेसे उन्मादको नाश करती है।

(१२) भय और शोकसे कामज उन्माद शान्त होता है। भय और क्रोधसे शोकज उन्माद शान्त होता है। काम और शोकसे भयसे पैदा हुआ उन्माद शान्त होता है और इसी तरह कामज उन्माद भी शान्त होता है। मनचाही और अत्यन्त प्यारी चीज़के नाशसे हुआ उन्माद वैसी ही चीजके मिलनेसे शान्त होता है अथवा विद्वानोंके शान्तिदायक उपदेशों और समझाने बुझानेसे शान्त होता है। देवता गंधर्व, यक्ष, भूत, प्रेत, और राक्षस आदिसे पैदा हुआ उन्माद बलिदान करने, हवन करने, जाप करने अथवा पूजा-उपासना करनेसे शान्त होता है।

(१३) उन्मादवालेको उसकी प्यारी चीजका नाश होनेकी खबर सुनाने अथवा अदभुत खेल दिखाने या कोई अपूर्व चीज़ दिखानेसे उसका उन्माद रोग नाश हो जाता है।

(१४) उन्माद रोगीके शरीरमें कौंचकी फली घिसने, अथवा गरम लोहा, गरम तेल या उबलता हुआ पानी उसके शरीरके छुलानेसे उन्माद शान्त हो जाता है।

(१५) उन्माद रोगीको एकान्त स्थानमें ले जाकर बाँध देने और कोड़े मारने अथवा दाँत निकाले हुए साँपसे कटाने या सिंह और हाथी प्रभृतिसे डरानेसे उन्माद आराम हो जाता है।

(१६) उन्माद रोगीको पुलिसके सिपाहियों द्वारा पकड़वा कर नगरके बाहर ले जाकर, किसी वृक्षादिसे बाँध कर मार डालनेकी

धमकी देनेसे भी उन्माद शान्त हो जाता है, क्योंकि प्राणोंका भय बुरा होता है। प्राणनाशके भयसे कदाचित विकृत हुआ चित्त ठिकाने पर आ जाता है और चित्तका ठिकाने आना ही उन्मादका आराम होना है।

(१७) उन्माद रोगीको उसकी खोई हुई या मरी हुई स्त्रीके जैसी ही स्त्री देने और नाश हुई चीज़के समान चीज़ देने अथवा देनेका वादा करने और उसे धीरज बँधानेसे, उसका चित्त शान्त होकर, उन्माद आराम हो जाता है।

नोट—अनेक उन्माद रोगी नं० १३ से नं० १७ तककी तरकीबोंसे आराम हो गये हैं। इस रोगमें प्राणनाशका भय दिखाना अनेक बार काम कर जाता है, क्योंकि प्राणनाशसे पागल भी डरता है। कहा है :—

सर्वतो विप्लुतं चेति तेनेव परिशाम्यति।
सर्वदुःखभयेभ्योऽपि परं प्राणभयम्महत् ॥

समस्त दुःखोंके भयकी अपेक्षा प्राणनाशका भय बहुत बड़ा होता है, इसलिये प्राणनाशके भयसे सर्वथा विषय-शून्य हुआ चित्त भी अपनी असली हालत पर आकर आदमीको होशियार कर देता है।

(१८) ब्राह्मीका स्वरस और शहद, पेठेका स्वरस और शहद, बचका स्वरस और शहद, अथवा शंखाहुलीका स्वरस और शहद, सेवन करनेसे उन्माद रोग चला जाता है।

नोट—ये चार नुसखे हैं। इनमेंसे किसी एकके सेवन करनेसे आरोग्य लाभ होता है।

(१९) उन्माद रोगीको वृक्ष, अग्नि, जल, पहाड़ और विषम या असमान अथवा ऊँचे-नीचे स्थानोंसे सदा दूर रखना चाहिये, क्योंकि ये उन्माद रोगीके प्राणोंको तत्काल नाश करते हैं।

(२०) चाँगेरी या नोनियेका स्वरस, काँजी और गुड़ बराबर-बराबर लेकर एकमें मिला लो और खूब मथो। जब एक दिल हो जायँ, रोगीको पिला दो। तीन दिनमें लाभ होगा।

(२१) मंडूकपर्णी या ब्राह्मीके स्वरसमें धतूरेके पत्तोंका स्वरस मिला कर पीनेसे उन्माद रोग चला जाता है।

(२२) सफेद फूलकी खिरैंटीका चूर्ण १॥ तोले और पुनर्नवाकी जड़का चूर्ण १ तोले—इन दोनोंको, क्षीरपाककी विधिसे, दूधमें पका कर और शीतल करके, नित्य, सवेरे ही पीनेसे घोर उन्माद रोग तत्काल नाश हो जाता है ।

(२३) तिलों और उडदोंका काढ़ा बना कर पीनेसे उन्माद रोग आराम हो जाता है ।

(२४) सफेद धतूरेकी जडको, उत्तर दिशाकी तरफ मुँह करके, उखाड़ लाओ । फिर उसकी खीर बनाओ । उस खीरमें अन्दाज़से "घी और गुड़" मिला कर सेवन करो । इस खीरके खानेसे उन्माद रोग चला जाता है ।

(२५) ब्राह्मी बूटीका रस, बचका रस, कूटका रस और शंख-पुष्पीका रस—इन चारोंको बराबर-बराबर पाव-पाव भर लो और "दस बरसका पुराना घी" पाव भर लो । सबको क़लईदार बर्तनमें डाल कर आग पर पकाओ । जब रस जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो । इस घी को मात्राके साथ सेवन करनेसे उन्माद रोग नष्ट हो जाता है ।

नोट—नं० ११, न० २४ और न० २५के नुसख़े एक और वैद्यके आजमूदा हैं ।

(२६) घी और दूधके साथ "बचका चूर्ण" खानेसे उन्माद रोग चला जाता है । यह योग मृगी और उन्माद दोनोंको आराम करता है । कहा है :—

अपस्मारे तथोन्मादे सक्षीराज्यहिता वचा ।

(२७) "दश मूलका पानी" घीके साथ या मांस-रसके साथ अथवा सरसोंके चूर्णके साथ सेवन करनेसे उन्माद रोग आराम हो जाता है । केवल नया घी अथवा सुगन्धवाला का स्वरस उन्मादको नाश करता है ।

(२८) सरसों, बच, हींग, करञ्ज, देवदारु, मँजीठ, त्रिफला, फिटकरी, मालकाँगनी, दालचीनी, त्रिकुटा, प्रियंगू, सिरस और दोनों

हल्दी—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट और छान लो। फिर एक मात्रा चूर्णको बकरीके मूत्रमें पीस कर पीलो। इससे भी उन्माद रोग चला जाता है।

(२६) त्रिकुटा, हींग, सैंधा नमक, वच, कुटकी, सिरसके बीज, करञ्जके बीज और सफेद सरसों—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन करलो। फिर गोमूत्रके साथ, सिल पर पीस कर बत्ती बनालो। इस बत्तीको आँखोंमें आँजनेसे उन्माद, मृगी और चौथैया ज्वर आराम हो जाते हैं। —वृन्द।

(३०) सिरसके बीज, मुलहटी, हींग, लहसनका रस, तगर, वच और कूट बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस-छान लो। इस चूर्णको "बकरीके मूत्रमें" पीस कर नास देने और आँखोंमे आँजनेसे उन्माद रोग नाश हो जाता है। —चरक।

(३१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हल्दी, दारुहल्दी, मँजीठ, हींग, सरसों और सिरसके बीज—समान-समान लेकर पीस-छान लो। समय पर, इस चूर्णको "बकरीके मूत्र"में पीस कर, नस्य देने और आँखोंमें आँजनेसे उन्माद, ग्रह और मृगी रोग नाश हो जाते हैं। —चरक।

(३२) सफेद सरसों, हींग, कंजा—गोकरंजफल, देवदारु, मँजीठ, त्रिफला, सफेद कोयल, कटभोकी छाल, त्रिकुटा, प्रियंगू, सिरसकी छाल, हल्दी और दारुहल्दी—इन सब चीज़ोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। यह चूर्ण बकरीके मूत्रके साथ पीनेसे "अगद" समझा जाता है। इसके पीने, आँखोंमे आँजने, नाकमें नस्य देने, शरीरपर लेप करने और स्नान उबटनमें व्यवहार करनेसे मृगी, उन्माद, विष और ज्वर नाश हो जाते हैं तथा भूतका भय दूर होता है और आँखोंमें लगाकर राजाके सामने जानेसे जय होती है।—चरक।

(३३) उन्माद रोगमें लार गिरती हो और पीनस रोग हो, तो अपराजिता—कोयल, कटभोकी छाल, त्रिकुटा, प्रियंगू, सिरस, हल्दी और दारुहल्दी—इनको समान-समान लेकर, महीन पीस-छान लो।

फिर "गोमूत्र या बकरीके मूत्र"के साथ खरलकरके बत्तियाँ बना लो। इस बत्ती-द्वारा धूमपान करनेसे ऊपरके उपद्रव सहित उन्माद नाश हो जाता है।

(३४) उन्माद रोगीको सेह, उल्लू, बिल्ली, स्यार, भेड़िया और बकरी—इन जानवरोंके मूत्र, विष्ठा, नाखून, चमड़ा और पित्तकी धूनी देने, आँखोंमें आँजने, नाकमें फूँकने, नस्य देने और सेक करने-से उन्माद रोग नष्ट हो जाता है। —चरक।

(३५) सफेद प्याज़का रस आँखोंमें आँजनेसे उन्माद रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(३६) सफेद प्याजका रस नाकमें डालनेसे उन्माद और मृगी दोनों आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३७) बिनौलेका तेल एक, दो या तीन दिनतक लगानेसे माथा शान्त होता और सिरका दर्द भी जाता रहता है। परीक्षित है।

(३८) उन्माद रोगके शुरु होते ही, अगर अफीमकी उचित मात्रा दी जाय, तो उन्माद रुक सकता है। जब उन्माद रोगमें, रोगीको ज़रा-ज़रा देरमें जोश आता और उतरता है, तब रत्ती-रत्ती-भर अफीम देनेसे बड़ा उपकार होता है। रत्ती-रत्तीकी मात्रा बारम्बार देनेसे भी हानि नहीं होती—ज़हर नहीं चढ़ता। उन्मादमें जो नींद न आनेका दोष होता है, वह इससे जाता रहता है; नींद आने लगती और रोग घटने लगता है। पर जब उन्माद रोगीका चेहरा सुर्ख़ हो या सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम देना हानि-कर है। परीक्षित है।

नोट—जब उन्माद रोगीका चेहरा फीका हो, नाड़ी मन्दी चलती हो, नींद न आती हो, शरीर कमजोर हुआ जाता हो, तब अफीम देना उचित है; किन्तु जब उन्मादवालेका चेहरा लाल हो और मुँह तथा सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम देना ठीक नहीं। याद रखो, उन्मादके आरंभ या पूर्वरूपोंमें अफीम देनेसे लाभ होते देखा गया है।

अमीरी नुसख़े ।

सारस्वत चूर्ण ।

कूट, असगन्ध, सेंधा नमक, अजमोद, सफ़ेद ज़ीरा, कालाज़ीरा, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, पाठा और शंखपुष्पी—इन सबको दो-दो तोले लेकर, कूट-पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णके वज़नके बराबर २२ तोले "बचका चूर्ण" इसी चूर्णमें मिला दो। फिर इस चूर्णको खरलमें डाल कर, ऊपरसे "ब्राह्मीके पत्तोंका स्वरस" डाल-डाल कर, सात दिन तक, हर दिन बारह-बारह घण्टे, खरल करो। ब्राह्मीका रस जितना ही अधिक डाला और सुखाया जाय, उतना ही अच्छा। जब घुटाई हो जाय और चूर्ण सूख जाय, चूर्णको कपड़ेमें छान कर शीशियोंमें रख लो।

इस चूर्णमेंसे १ तोले चूर्ण लेकर, उसे "ना-बराबर घी और शहद" में मिला कर, सात रोज़ तक लगातार खाने और पथ्य पालन करनेसे सब तरहके वात रोग और सब तरहके प्रमेह नाश हो जाते हैं। वंगसेन आदिने लिखा है, इस चूर्णके सेवन करनेसे ऐश्वर्य, धैर्य, मेधा और अवस्थाकी वृद्धि होती है तथा एक दिनमें एक हज़ार श्लोक तक याद करलेनेकी सामर्थ्य हो जाती है एवं इस चूर्णसे उम्र भी दूनी हो जाती है। इस "सारस्वत चूर्ण" को ब्रह्माजीने लोक-हितार्थ, विकल-चित्त प्राणियोंके चित्त ठीक होनेके लिए, निकाला था।

प्रायः सभी ग्रन्थकारोंने लिखा है :—"सप्तदिनं हिताशी" यानी सात दिन खानेसे उपरोक्त लाभ होते हैं, पर वैद्यविनोद कर्त्ताने "षष्ठिदिनं हिताशी" यानी ६० साठ दिन खानेसे उतने लाभ होनेकी बात लिखी है। औरोंने १ तोलेकी मात्रा लिखी है, पर वैद्यविनोदके लेखकने चार टङ्क या १६ माशेकी मात्रा लिखी है और क्रमसे बढ़ा-बढ़ाकर इसकी दूनी मात्रा तक सेवन करानेकी राय दी है।

हमने इस चूर्णकी कितनी ही बार परीक्षाकी ; वास्तवमें, यह क़ाबिल तारीफ़ दवा है। यह निश्चय ही फायदा करता है। धृति, स्मृति और मेधाशक्तिको बढ़ाता है। उन्मादकी सर्वोत्तम दवा है। सात दिनमे लाभ नज़र आने लगता है, पर सात दिनमें ही हजार श्लोक रट लेने या कंठाग्र कर लेने या पाठ करनेकी शक्ति होते हमने नही देखी। हमने एक-एक महीने तक लगातार सेवन कराकर पूरा फायदा उठाया, पर साठ दिन किसीको सेवन नहीं कराया। कदाचित साठ दिनमें वैसी सामर्थ्य हो जाय।

नोट—अगर यह चूर्ण खिलाया जाय और साथ ही थोड़ा-थोड़ा "ब्राह्मी घृत" भी खिलाया जाय, तो बहुत ही जल्दी और निश्चय ही उन्माद और मृगी रोग नष्ट हो जायँ हमने अनेक बार दोनों साथ खिलाकर परीक्षाकी है।

ब्राह्मी घृत।

ब्राह्मीके पत्तोंका रस ४ सेर, उत्तम घी ३ सेर तथा बच, कूट और शंखाहूली तीनोंका चूर्ण आध सेर तैयार करके एकमें मिला दो और क़लईदार कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब रस जलकर, घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ बोतलमें रख दो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है। इसके नित्य खाने या पीनेसे उन्माद, अपस्मार—मृगी, सन्धिवात और विस्फोटक आदि रोग नाश होते और मस्तक शान्त होता है। ऊपर लेप करनेसे भी कोढ़ आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह घी खाया भी जाता है और लगाया भी जाता है। परीक्षित है।

नोट—(१) अगर बच, कूट और शंखाहूलीका चूर्ण या कल्क आध सेर, घी दो सेर और ब्राह्मीका रस ८ सेर लेकर घी पकाया जाय, तो और भी उत्तम घी बने।

नोट—(२) केवल ब्राह्मीके पत्तोंका रस चार सेर और घी एक सेर मिला कर घी पका लेने और सेवन करनेसे पित्तज मृगी नाश हो जाती है। मृगी और उन्मादके दवा, हेतु और दोष-दूष्य एक ही है, अतः मृगीकी दवा उन्मादमें और उन्मादकी मृगीमें काम देती है। इसलिये इस घीसे पित्तज उन्मादभी आराम हो सकता है। हमने इसे पित्तकी मृगी पर ही आज़माया है।

उन्मादान्तक योग ।

ब्राह्मीके पत्तोंका स्वरस १ तोले, कुलींजन या अकरकरा ३ माशे और शहद ३ माशे,—इन तीनोंको मिला कर, नित्य, सवेरे-शाम, २१, ३१ या ४१ दिन खानेसे उन्माद, चित्तभ्रम और अपस्मार या मृगी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—खूब याद रखो, मृगी और उन्माद आदि रोगोंपर "ब्राह्मी" अक्सीरका काम करती है। जिनका चित्त ठिकाने न रहता हो, बातें याद न रहती हों अथवा उन्माद आदि रोग हों, वे ब्राह्मीके मेलसे बने हुए नुसखे अवश्य सेवन करें।

कटुत्रिकाद्यंजन।

त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर,) हींग, वच, सिरसके बीज, सैंधा-नोन और सफेद सरसों—इनको समान-समान लेकर, पीस-छान लो। समय पर, इसमेंसे थोड़ासा चूर्ण गोमूत्रमें काजलके समान महीन पीस कर, आँखोंमें आँजनेसे उन्माद और चौथैया ज्वर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—वंगसेन इसमें कुटकी और करंजके बीज और मिलाने तथा बत्ती बना कर आँजनेको कहते हैं। वह इसका नाम "त्र्यूषणादि वर्त्ति" कहते हैं। देखो ८३ वे सफेका नं० २६ नुसखा।

पानीय घृत।

त्रिफला, पित्तपापड़ा, देवदारु, शालपर्णी, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रायण, सफेद शारिवा, काला शारिवा, चन्दन, पद्माख, कूट, नील कमल, छोटी इलायची, कटेरी, समंगा, तालीसपत्र, निशोथ, वायविड़ंग, रुदन्ती, नागकेशर, मुलहटी, पृष्ठिपर्णी और चमेलीके फूल इन पच्चीस दवाओंको एक-एक तोले लेकर, सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो। फिर इसे चौगुने यानी एक सौ तोले पानीमें घोल दो। फिर एक क़लईदार कड़ाहीमें यह दवाका पानी और बत्तीस तोले उत्तम "गोघृत" डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब पानी जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो और रख दो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इसके पीनेसे उन्माद, मन्दाग्नि, मेद, अपस्मार—मृगी, पेशावके रोग और पांडु रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

भूतोन्मादनाशक धूप।

कपासकी मींगी, मोरका पंख, कटेरी, शिवनिर्माल्य, नज, जटामासी, विलावकी विष्ठा, धानके तुष, वच, मनुष्यके बाल, काले साँपकी काँचली, हाथी दाँत, गायका सींग, हींग और कालीमिर्च—इन पन्द्रह दवाओंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, एकमें मिला लो। जो कुचलने योग्य हों उन्हें जौकुट कर लो और एक शीशीमें रख दो। इस धूपको आगपर डालकर धूनी देनेसे स्कन्दोन्माद, पिशाच, राक्षस, देवताका आवेश और ज्वर नाश होते हैं। यह धूप हमारी परीक्षित है। हर गृहस्थको सदा पास रखनी चाहिये। भूत-पलीतोंको भगानेके लिये भी यह धूप परमोत्तम है। भूत-पिशाच आदिके कारणसे जो उन्माद रोग होता है, उसमें यह अवश्य लाभ दिखाती है।

ऋक्षलोमक धूप।

रीछके बाल, गीदड़के बाल, लहसन, सल्लकी, हींग, बच और बकरेका मूत्र—इनको समान-समान लेकर धूनी देनेसे बड़े-बड़े ज़बर्दस्त ग्रह भी शान्त हो जाते हैं। ग्रह-बाधा नाश करनेमें यह धूनी बहुत ही अच्छी है। गृहस्थोंको यह भी पास रखनी चाहिये। परीक्षित है।

नोट—जिस उन्मादका समय नियत हो या टाइम मुकरर हो, उसे "भूतोन्माद" समझना चाहिये।

हिंग्वाद्य घृत।

हींग ८ तोले, काला नोन ८ तोले और त्रिकुटा ८ तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो। फिर १२८ तोले

घी, ५१२ तोले गोमूत्र और ऊपरकी लुगदीको क़लइदार कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पका लो। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीके नित्य पीनेसे उन्माद रोग नाश हो जाता है।

महा पैशाचिक घृत।

बालछड़, हरड़, भूतकेशी, ब्राह्मीके पत्ते, कौंचके बीज, बच, त्रायमाण, अरणी, क्षीर, काकोली, चोरपुष्पी, कुटकी, सम्हालू, विदारीकन्द, सौंफ, सोया, गूगल, शतावर, गिलोय, रास्ना, गन्ध-रास्ना, मालकांगनी, बिछाटी और सरिवन—इन २३ दवाओंको दो-दो तोले लेकर और सिलपर पानीके साथ महीनकर पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना १८४ तोले घी, ७३६ तोले पानी और लुगदीको क़लईदार कड़ाहीमें रखकर मन्दाग्निसे घी पकालो।

इस घीके सेवन करनेसे चौथैया ज्वर, उन्माद, ग्रहबाधा और अपस्मार या मृगी रोग नष्ट हो जाते हैं। यह घी मेधा, बुद्धि और स्मरणशक्तिको बढ़ाता और बालकोंके अङ्गकी वृद्धि करता है। उन्माद और मृगीपर यह घी मशहूर है। मात्रा ६ माशेकी है। एक या दो बार परीक्षा की है।

नोट—कोई ४६ तोले लुगदी, ५६ तोले घी और २२० तोले पानी लेकर घी पकानेको कहते हैं, पर ऊपरकी विधि ठीक है।

सारस्वत घृत।

हरड, बहेड़ा, आमला, लक्ष्मणाकी जड़, अनन्तमूल, मँजीठ, सारिवा, गिलोय, ब्राह्मीके पत्ते, कटेरी, कटाई, शालपर्णी, पृश्न-पर्णी, सफेद पुनर्नवा, लाल पुननवा, सहदेवी, सूरजमुखी, आमले और गिरिकर्णिका—कोइली—इन २० दवाओंको चार-चार तोले लेकर पीसलो और एक घड़ेमें डालो। ऊपरसे १६ गुना यानी सोलह सेर पानी डालकर, मन्दाग्निसे काढ़ा बना लो। जब चौथाई यानी चार सेर पानी रह:जाय, मल-छान लो।

तगर, रेणुका, वच, कूट, पीपर, सरसों और सैंधानोन—इन सातोंको अढ़ाई-अढ़ाई तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

फिर एक रंगकी गायका दूध १६ सेर, गायका घी एक सेर, ऊपरका छना हुआ काढ़ा और दवाओंकी लुगदी—इन सबको क़लई-दार कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घीको "पुष्य नक्षत्र"में पकाना चाहिये।

इस "सारस्वत घृत" के पीने और नेत्रोंमें आँजनेसे मेधा, स्मरण-शक्ति, आयु और पुष्टि बढ़ती है। राक्षसबाधा और पितृबाधा नाश करनेमें यह घी परमोत्तम है।

पानीय कल्याण घृत।

दशमूलकी दशों दवाएं, रायसन, कौंचके बीज, निशोथ, खिरैंटी, चुरनहार और शतावर—इनमेंसे प्रत्येक दवाको आठ-आठ तोले लेकर जौकुट कर लो और अलग-अलग रखो। फिर हरेक दवामें १२८।१२८ तोले पानी मिलाकर अलग-अलग काढ़ा बनाओ। चौथाई यानी ३२।३२ तोले पानी रहने पर, मल-मल कर छान लो। फिर सातों दवाओंके काढ़ोंको एक में मिला लो।

इन्द्रायण, हरड, बहेड़ा, आमला, रेणुका, देवदारु, ऐलुआ, शालपर्णी, जवासा, हल्दी, दारुहल्दी, शारिवा, अनन्तमूल, फूलप्रियंगू, नीलोफर, छोटी इलायची, मँजीठ, दन्ती, अनारके फलका बक्कल, नागकेशर, वायविडंग, पिठवन, कूठ, सफेद चन्दन, पद्माख, तालीस-पत्र, कटाई और मालतीके ताजा फूल—इन सबको २।२ तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

फिर २२४ तोले पानी, ३२ तोले घी, ऊपर की लुगदी और मिले हुए काढ़ोंके पानी—इन सबको कलईदार कड़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस घी की मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे मृगी, ज्वर, शोष, खाँसी, मन्दाग्नि, वातरक्त, जुकाम, तिजारी ज्वर, चौथैया ज्वर, कमरका दर्द, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, खुजली, पाण्डु-रोग, उन्माद, विष, प्रमेह, भूतोन्माद एवं मनसे सम्बन्ध रखने-वाले रोग और बाँझ औरतोंके बाँझपनका रोग—ये सब अवश्य नाश हो जाते हैं। यह "पानीय कल्याण घृत" पुंसवन कर्ममें भी उत्तम है।

चैतस घृत।

अनन्तमूल, चुरनहार, रास्ना, देवदारु, शतावर, गोखरू और दशमूलकी सब दवाएँ—इनको एक-एक तोले लेकर, १६ गुने यानी ११२ तोले जलमें पकाओ। चौथाई पानी रहने पर मल कर छान लो।

फिर ऊपरकी अनन्तमूल आदि सातों दवाओंके दुबारा तीन-तीन माशे लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

फिर सात तोले घी, इस लुगदी और ऊपरके काढ़ेको एक मे मिलाकर घी पका लो। इस घीसे चित्तके विकार शान्त होते हैं। उन्माद, मद, मूर्च्छा, ज्वर और मृगीकी यह उत्तम दवा है।

दूसरा चैतस घृत।

बेलगिरीकी जड़, पाटलाकी जड़, अरनीकी जड़, सोना पाठाकी जड़, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, सरिवन, पिठवन गोखरु, रास्ना, रेंडीकी जड़, बरियारा, मूर्व्वामूल और शतावर,—हरेक दवा आठ-आठ तोले लेकर जौकुट कर लो और ६४ सेर जलमें पकाओ। जब १६ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

फिर ६४ सेर गायका दूध, १६ सेर काढ़ा, ४ सेर घी और "पानीय कल्याण घृतके कल्ककी दवाओंका कल्क" इन सबको मिलाकर घी पका लो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस घी की मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीसे चित्तके समस्त विकार नाश हो जाते हैं।

नोट—ऊपर पृष्ठ ९०में जो "पानीय कल्याण घृत" लिखा है, उसमें इन्द्रायण, हरड़, बहेड़ा, आमला, रेणुका आदि दवाएं दो दो तोले लिखी हैं, उन सबको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। यही "पानीय कल्याण घृतकी दवाओंका कल्क" है।

चन्दनाद्य तैल।

चन्दन, नेत्रवाला, सुगन्ध द्रव्य, जवाखार, मुलेठी, शिलारस, पद्माख, मंजीठ, धूप सरल, देवदारु, कचूर, छोटी इलायची, जवादि कस्तूरी, नागकेशर, तेजपात, लोध, कपूरकचरी, बालछड़, शीतल-चीनी, फूलप्रियंगू, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, दोनों तरहके सारिवा, कुटकी, सेंधानोन, अगर, केशर, दालचीनी, रेणुका और नली नामकी सुगन्ध द्रव्य—इन ३२ दवाओंको दो-दो तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

फिर काली तिलीका तेल एक सेर, दहीका तोड़ चार सेर, लाखका रस चार सेर और ऊपरकी लुगदी—इन सबको कलईदार कड़ाहीमें डालकर, मन्दाग्निसे तेल पका लो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यह "चन्दनाद्य तैल" ग्रहबाधाको दूर करता और मृगी, उन्माद, सब तरहके ग्रह, कृत्या, अलक्ष्मी और ज्वरको नाश करता है। यह शरीरको पुष्ट करनेवाला और उत्तम वाजीकरण है।

नोट—लाखका रस बनानेकी विधि चिकित्साचन्द्रोदय दूसरे भागमें पृष्ठ ३६४में देखिये।

कृष्णाञ्जन।

छोटी पीपर, सेंधानोन, कालीमिर्च, शहद और गोरोचन—इन सबको कूट-पीस और कपड़ेमें छानकर "शहद"में मिलाकर अञ्जन बना लो। इस "कृष्णाञ्जन"के आँजनेसे उन्माद नाश हो जाता है।

नारायण तैल।

उन्माद रोगमें पानीय कल्याण घृत, महाचौतस घृत, नारायण तेल और महा नारायण तेल परमोत्तम औषधि हैं। नारायण तेल और महानारायण तेल बनानेकी विधि आगे "वात-व्याधिकी चिकित्सामें" लिखी हैं।

विश्वाद्य चूर्ण।

सोंठ, अजमोद, हल्दी, दारूहल्दी, सेंधानोन, वच, मुलेठी, कूट, पीपर और ज़ीरा—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीस कूट कर छान लो। इस चूर्णको घीमें मिला कर, नित्य सवेरे ही, चाटनेसे साक्षात् सरस्वती मुखमें निवास करती है। इसके सेवनसे उन्माद-रोगीका चित्त ठिकाने पर आ जाता है।

उन्माद गजाङ्कुश रस।

शुद्ध पारा २ तोले और शुद्ध गन्धक २ तोले दोनोंको खरल करके स्वल्प गजपुटमें फूँक लो। फिर निकाल कर, उसेमें शुद्ध धतूरेके बीज २ तोले, अभ्रक-भस्म २ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले और शुद्ध मीठा विष २ तोले मिला दो और पानीके साथ ३ दिन तक खरल करो। यही "उन्माद गजाङ्कुश रस" है। इसकी मात्री १ रत्तीकी है और अनुपान वायुनाशक क्काथ है। इस रसके सेवन करनेसे उन्माद-रोग आराम हो जाता है।

नोट—"वात रोग चिकित्सा"मे लिखा हुआ "रास्नादि क्काथ" या "महा रास्नादि क्काथ" अनुपानके लिए उत्तम हैं।

उन्माद भंजन रस।

त्रिकुटा, त्रिफला, गजपीपर, वायविड़ंग, देवदारु, चिरायता, कुटकी, कंटकारी, मुलहटी, इन्द्रजौ, चीतेकी छाल, बरियारा, पीपरामूल, खसकी जड़, सहँजनेकी जड़, तेवड़ीकी जड़ और इन्द्र-वारुणीकी जड़—इन सबको एक-एक तोले लेकर महीन पीस-छान

लो। फिर इस चूर्णमें वंगभस्म १ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले, मूंगाभस्म १ तोले, चाँदी भस्म १ तोले और लोह भस्म २१ तोले मिला दो और पानी डाल-डाल कर खरल करो। जब घुट जाय दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे उन्माद रोग नाश हो जाता है।

कल्याण घृत।

इन्द्रायण, त्रिफला, रेणुका, देवदारु, एलुआ, शालपर्णी, अनन्त-मूल, हल्दी, दारुहल्दी, अनन्तमूल, सारिवा, फूल प्रियंगू, नील कमल, छोटी इलायची, मँजीठ, दन्ती, अनारका वक्कल, नागकेशर, तालीस-पत्र, भटकटैया, मालतीके नये फूल, वायविडंग, पृष्ठपर्णी, कूट, लाल चन्दन और पद्माख—इनको दो-दो तोले लेकर, सिल पर पीस लुगदी कर लो। फिर चार सेर घी और सोलह सेर पानी तथा इस लुगदीको क़लईदार वर्तनमें, आग पर चढ़ा, मन्दाग्निसे "घी" पका लो। घी मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस घीके पीनेसे उन्माद और अपस्मार आदि अनेक रोग नाश हो जाते हैं।

हिस्टीरिया-उन्माद नाशक फल घृत।

शतावरका स्वरस १६ सेर, बछड़ेवाली गायका दूध १६ सेर और उत्तम घी ४ सेर तैयार करके अलग रख दो।

फिर मेदा, मँजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खिरेंटी, सफेद बिलाई-कन्द, काकोली, क्षीरकाकोली, असगन्ध, अजवायन, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी, नीले कमल, दाख, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—इनमेंसे हरेक दो-दो तोले लेकर, हिमामदस्तेमें कूट कर महीन कर लो। फिर सारे चूर्णको सिल पर रख कर, पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो।

अब शतावरका रस, दूध, घी और इस लुगदीको क़लईदार कड़ाहीमें रख कर आग पर चढ़ाओ। जब रस और दूध जल कर

घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ चीनी या काँचके वर्तनमें रख दो। इसकी मात्रा छै माशेसे दो तोले तक है।

इसके सेवन करनेसे स्त्रियोंके योनि रोग, उन्माद, हिष्टीरिया और बाँझपनका रोग—ये सब नाश हो जाते हैं। सच तो यह है कि, ऊपरके सभी रोगों पर यह घी रामवाण है। जो हिष्टीरिया-उन्मादसे तंग आ गये हैं, जिनके सन्तान नही होती, वे इसे अवश्य सेवन कर। परीक्षित है।

महाविष्णु तैल।

शतावरका रस १६ सेर, गायका दूध १६ सेर, पानी ३२ सेर और काले तिलोका तेल १६ सेर—अलग रख दो।

फिर नागरमोथा, असगन्ध, जीवक, ऋषभक, कचूर, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, मुलहटी, देवदारु, पद्माख, सेंधा नोन, जटामासी, छोटी इलायची, दालचीनी, पत्थर-फूल, कूट, वच, लाल-चन्दन, मँजीठ, कस्तूरी, सफेद चन्दन, केशर, सरिवन, पिथवन, मसवन, मुगवन, कौड़िया लोवान, गठौना, नखी और सौंफ—इन ३१ दवाओंमेंसे हरेकको चार-चार तोले लेकर, हिमामदस्तेमें कूट कर, खूब महीन कर लो। फिर इस कुटे हुए चूर्णको सिल पर रख कर, पानीके साथ महीन पीस कर, लुगदी वना लो।

अब ऊपरके शतावरके रस, दूध, पानी, तेल और इस लुगदीको क़लईदार कडाहीमे डाल कर मन्दाग्निसे पकाओ। जब रस, दूध और पानी जल कर तेल मात्र रह जाय, आगसे उतार कर, कपड़ेमें छान लो और बोतलोंमें भर कर रख दो।

इस तेलकी मालिश करनेसे सब तरहके वात रोग निश्चय ही आराम होते हैं। उन्माद पर भी विचारपूर्व्वक देनेसे यह खूब लाभ दिखाता है। हिष्टीरिया-उन्माद या योपापस्मारमें इस तेलकी मालिश करने और पहले पृष्ठ ९४ में लिखा हुआ "फल घृत" खिलानेसे अपूर्व्व चमत्कार नज़र आता है, पर कमसे कम १ महीने दोनों चीज़ें

सेवन करनी चाहिये। वात रोगों पर यह "महाविष्णु तैल" अकसीरका काम करता है। परीक्षित है।

हिकमतके मतसे

उन्मादके निदान लक्षण और चिकित्सा।

मालीखोलिया-वर्णन।

मालीखोलिया एक तरहका "उन्माद" है। इसके बहुतसे भेद हैं। उन सबका वर्णन हम आगे करेंगे। यद्यपि हमारे वैद्यक-शास्त्रमें उन्माद पर बहुत-कुछ लिखा है, पर वह काफी नहीं है। निदानके सम्बन्धमें वैद्यकी जानकारी जितनी ही अधिक हो, उतना ही अच्छा।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, मालीखोलिया वात प्रकृति वालोंके सिवाय औरोंको नहीं होता। इसे आजकलके हकीम"मालीखोलिया" और प्राचीन कालके हकीम "मैलेनकली" कहते थे। डाक्टर लोग इसीको मैलनकोलिया (Meloncholia) कहते हैं।

इस रोगकी पैदायश दिमाग़से है। जब कोई उपद्रव या दूषित दोषके परमाणु दिमाग़में चढ़ जाते हैं, तब दिमाग़की शक्तियाँ निकम्मी या कमज़ोर हो जाती हैं। इस रोगके हेतुकी बलवानता या निर्बलताके अनुसार घबराहट भी पैदा हो जाती है। इस रोगका प्रधान कारण "प्राकृतिक * या अप्राकृतिक वायु" है।

---

* जब किसी दोषकी प्रकृतिमें गरमी आ जाती है, तब कहते हैं, कि दोष जल गया। प्रत्येक दोषके जलनेसे जो चीज पैदा होती है, उसे "अप्राकृतिक वात" या वायु कहते हैं। अगर वादी प्रमाणसे जियादा होती है,तो उसे भी "अप्राकृतिक वात" कहते हैं। जो वात या वायु जली हुई नहीं होती , उसे प्राकृतिक वात कहते हैं। माली-

मालीखोलियाके भेद ।

मालीखोलिया, अपने हेतुओंके जुदे-जुदे स्थानोंके कारण, तीन भेदोंमें बाँटा गया है। क्योंकि मालीखोलिया पैदा करनेवाली वात या वादी सिरको छोड़ कर, बाक़ी सारी देहमें रह कर रोग करती है; केवल सिरमें रह कर रोग करती है और आमाशय, तिल्ली या मिराकमें रह कर रोग करती है। मतलब यह कि मालीखोलिया पैदा करने वाला दोष—सिरके सिवा सारी देहमें, केवल सिरमें और आमाशय वगैरः अङ्गोंमें ठहर कर रोग पैदा करता है। दोषके तीन स्थानोंमें ठहर कर रोग पैदा करनेके कारण, तीन भेद या क़िस्में हो गई हैं।

पहला भेद ।

पहला भेद वह है, जिसमें सदोष या निर्दोष वादी—अप्राकृतिक या प्राकृतिक वायु—सिरको छोड़ कर, सारी देहमें भरी रहती है।

खोलिया रोग दोषोंके जलनेसे पैदा हुई वातसे अथवा अपने प्रमाणसे बढ़ी हुई वायु से होता है। इन दोनों तरहकी वातोंको ही "अप्राकृतिक" कहते हैं। मालीखोलिया रोग जिस तरह अप्राकृतिक वातसे होता है, उसी तरह प्राकृतिक वातसे भी होता है। प्राकृतिक वात उसे कहते है, जो जली हुई न हो। वात, पित्त और कफ तथा खून—ये चार दोष हकीमोंने माने हैं। जब इनमें गरमी आ जाती है, तब कहते हैं, कि दोष जल गया। इन चारोंके ही जलने या इनमें गरमी आजानेसे "अप्राकृतिक वात" पैदा होती है। यह रोग वात, पित्त, कफ और खून इन चारोंके जलने या इनकी प्रकृतिमें गरमी आजानेसे होता है। क्योंकि इन चारोंके जलनेसे "अप्राकृतिक वात" पैदा होती है। इसीसे वातज, पित्तज, कफज और रक्तज, चारों तरहके मालीखोलिया लिखे हैं। इस बीमारीके पैदा होनेके दो मुख्य कारण अप्राकृतिक वात और प्राकृतिक वात इसीलिये लिखे हैं, कि वातादिक चारों दोषोंके जलनेसे अप्राकृतिक वात ही तो पैदा होती है। जो वायु प्रमाणसे अधिक बढ़ जाती है, उसे भी अप्राकृतिक वात कहते हैं। जिस तरह दोषो का जल जाना रोगका कारण है, उसी तरह उनका अपने प्रमाणसे अधिक बढ़ जाना भी रोगका कारण है। सभी जानते हैं, कि जब तक दोष अपने प्रमाणसे अधिक बढ़ नहीं जाता, रोग नहीं करता।

काले-काले भाफके परमाणु सिरके सिवा, देहके अन्यान्य अंगोंसे उठ-उठकर दिमागकी तरफ चढ़ते हैं और वहाँ पहुँच कर एक प्रकारका मालीखोलिया पैदा करते हैं।

दूसरा भेद।

दूसरा भेद वह है, जिसमें सदोष या निर्दोष वादी—अप्राकृतिक या प्राकृतिक वायु—सिरमें ठहर जाती है—सारी देहमें नहीं फैलती।

नोट—पहले भेदमें मालीखोलिया पैदा करने वाला दोष सिरमें नहीं रहता—सिरके सिवाय, सारी देहमें रहता है; पर दूसरे भेदमें मालीखोलिया पैदा करने वाला दोष केवल सिरमें रहता है—सारे शरीरमें नहीं फैलता। पर कभी-कभी दोषका कुछ अंश शरीरके और हिस्सोंमें भी चला जाता है। यह मालीखोलिया बहुत बुरा है।

तीसरा भेद।

तीसरा भेद वह है, जिसमें मालीखोलिया पैदा करनेवाला दोष आमाशय, मासारीका, तिल्ली या मिराकमें जमा हो जाता है। इन अङ्गोंसे ही काले-काले भाफके परमाणु उठ-उठ कर दिमागमें पहुंचते और मालीखोलिया रोग पैदा करते हैं। इस भेदका दोष चाहे जिस अङ्गमें क्यों न रुका रहे, परन्तु वह मिराक * को अवश्य फुला देता है, इसीसे तीसरे भेदके मालीखोलियाको "मालीखोलिया मिराकी" कहते हैं।

इस रोगमें यानी मालीखोलिया मिराकीमें दोषका सम्बन्ध आमाशय, मासारीका, तिल्ली और मिराक—इन चार अङ्गोंसे रहता है, इसीलिये इस मालीखोलिया मिराकीके चार भेद माने गये हैं। दोष अगर आमाशयमें ठहर जाता है, तो काले-काले भाफके परमाणु वहाँसे उठ-उठ कर दिमागकी तरफ चढ़ते और वहाँ पहुंचकर रोग पैदा कर देते हैं। अगर इसीतरह दोष मासारीकामें ठहर जाता है, तो काले-काले भाफके परमाणु वहाँसे उठकर दिमागमें जाते और रोग पैदा करते हैं। इसी तरह और दो के सम्बन्धमें समझ लो।

---

* देखो फुट नोट सफा १०२ का।

मालीखोलियाके पहले भेदके लक्षण ।

याद रखो, इस पहले भेदके मालीखोलियेको पैदा करनेवाला दोष सिरको छोड़ कर—सारी देहमें रहता है ।

सामान्य लक्षण ।

यह रोग बहुधा खारी नमक, नमकीन मछली और बैंगन वग़ैरः वातकारक आहार-विहारोंसे होता है ।

रोगीकी देहके रंगमें किसी क़दर स्याही आ जाती है, शरीर दुबला और कमज़ोर हो जाता है । पेशाब, दोषके पकनेसे पहले, साफ सफेद होता है ; पर दोषके पकने पर काला हो जाता है । यह भेद सब भेदोंकी अपेक्षा सुखसाध्य है, क्योंकि दोष विशेष कर किसी एक अङ्गमें नहीं रहता—सिरको छोड़ कर, सारे शरीरमें रहता है ।

ये तो हुई सामान्य लक्षणोंकी बात ; इस रोगके सूक्ष्म लक्षण इस रोगके हेतुओंके अनुसार होते हैं, उन्हें हम आगे लिखते हैं :—

प्राकृतिक वातसे पैदा होनेवाले मालीखोलियाके लक्षण ।

बहकना या आनतान बकना, हँसना, खुश रहना, आँखोंकी सुर्ख़ी, रगोंमें भारीपन, नाड़ीमें गम्भीरता और तेज़ी, देह और चेहरेका रंग लाली लिये हुए काला होना—ये सब लक्षण "प्राकृतिक वायुसे" उत्पन्न होनेवाले मालीखोलियाके हैं ।

खून जलनेसे हुए मालीखोलियाके लक्षण ।

ऊपर कहे हुए लक्षणोंके होने पर भी, अगर रोगी जवान हो, उसके शरीरसे मामूली खून निकलना बन्द हो गया हो, गरमी और तरी करनेवाले उपाय पहले काममें लाये गये हों—तो समझो कि खून जल गया है, यानी खूनमें गरमी आगई है, उसका हल्का भाग नष्ट हो गया है और गाढ़ा भाग बच रहा है ।

खुलासा यों समझिये कि, बहकना, हँसना, खुश रहना, नेत्रोंमे

सुर्ख़ी रहना, नसोंमें भारीपन, नाड़ीमें गहराई और तेज़ी ये लक्षण हों ; शरीर और चेहरेका रंग सुर्ख़ी-माइल काला हो तथा रोगीके जवान होने पर भी, उसके शरीरसे मामूली ख़ून निकलना बन्द हो गया हो, तो आप समझो कि, यह मालाख़ोलिया "ख़ून-दोषके जलने या उसकी प्रकृतिमें गरमी आजानेसे" हुआ है।

वायु जलनेसे हुए मालीख़ोलियाके लक्षण ।

सोचमें डूबे रहना, चिन्ता-फ़िक्र करना, डरना, बुरे-बुरे विचारोंका पैदा होना और एकान्तमें अकेले बैठे रहना—ये सब प्राकृतिक वादीके जल जानेसे पैदा हुई अप्राकृतिक वायुके लक्षण हैं।

पित्तके जलनेसे पैदा हुए मालीख़ोलियाके लक्षण ।

पित्तके जलनेसे भी "अप्राकृतिक वादी पैदा होती है। जिसे पित्तके जलने या पित्तकी प्रकृतिमें गर्मी आजानेसे मालीख़ोलिया होता है, उसमे नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

अधिक तेज़ी, स्वभावका बिगड़ जाना, बहकना—आनतान बकना, चिल्लाना, घबराना, जागते रहना, किसी भी जगह कम ठहरना, अत्यन्त क्रोध करना, छूनेसे शरीर गरम मालूम होना, शरीरका रंग पीला हो जाना, पशुओंकी तरह देखना और पागल हो जाना।

कफके जलनेसे हुए मालीख़ोलियाके लक्षण ।

कफके जलनेसे भी अप्राकृतिक वात पैदा होती है। जिसे कफके जलने या कफकी प्रकृतिमें गरमी आजानेसे मालीख़ोलिया होता है, उसमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

इधर-उधर उचकना, बारम्बार थूकना, सुस्ती रहना, जहाँ बैठना ठहर जाना और शरीर छूनेसे कम गरम मालूम होना।

किये या निदान किये अच्छा इलाज हो नहीं सकता, अतः यहाँ हम "दोष किस जगह है" यह जाननेकी सरल विधि बतलाये देते हैं :—

अगर दोष खाली दिमागमें ही रुका होगा, तो शरीरके हाथ पाँव आदि अंगों की फस्द खोलनेसे, वहाँसे लाल और साफ़ ख़ून निकलेगा। अगर दोष सारे शरीरमें फैल रहा होगा, तो किसी भी अंगकी फस्द खोलनेसे वहाँसे काला या स्याही लिये ख़ून निकलेगा।

तीसरे भेद या मालीखोलिया मिराकीके लक्षण।

अगर मालीखोलियको पैदा करनेवाला दोष आमाशय, मासारीका, तिल्ली या मिराक * में जमा हो गया होगा, तो नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जायेंगे :—

(१) जली हुई खट्टी-खट्टी डकारें आयेंगी।

(२) रिआहके गाढ़ी होनेसे डकारें बन्द भी हो जायेंगी।

(३) बहुतसा खाने पर भी रस कम बनेगा।

(४) आमाशय और मिराक नामक पेटकी झिल्लीमें जलन और खिंचावट मालूम होगी।

(५) छाती जकड़ी हुई और तंग मालूम होगी।

(६) मुंहसे लार बहुत गिरेगी।

(७) पेट पर बहुत नर्म अफारा होगा।

(८) झूठी भूख ज़ोरसे लगेगी।

(९) रोगीको आमाशय या तिल्ली वग़ैरः से भाफके परमाणुओंका, दिमाग़की तरफ़, ऊपर चढ़ना मालूम होगा।

नोट (१)—अगर रोग तिल्लीसे होगा, तो ऊपर लिखे हुए नौ लक्षणोंके अलावः तिल्ली बढ़ी हुई जान पड़ेगी।

---

* मिराक उस झिल्लीको कहते हैं, जो पेटको घेरे हुए है या जो आमाशय, तिल्ली जिगर, मासारीका और आँतों पर खिंच रही है।

नोट (२)—अगर रोग आमाशयकी सूजनसे होगा, तो, गरम या शीतल सूजनके अनुसार, ज्वर, प्यास, पित्तकी क़यके आने या न आनेसे पहचाना जायगा। यही हाल मासारीकामें गाँठ होनेका है।

नोट (३)—जिस रोगमें ऊपर कहे हुए लक्षण मिले हुए पाये जाते हैं, वह रोग तीन-तीन स्थानोंके संयोगसे होता है।

दीवानापन या उन्माद।

दीवानापन या उन्माद, जो चार तरहका होता है, मालीखोलियाका प्रकारान्तर है। दीवानगीके चार भेद ये हैं :—

(१) कुतरुव। (२) मानिया।

(३) दाउलकल्ब। (४) सुबारा या विशेष जिनू।

नोट—"इलाजुलगुर्बा"में लिखा है—अगर मालीखोलिया या पागलापन बहुत ही जियादा होता है, तो उसे "जनून" कहते हैं। अगर क्रोध और चिन्ता जियादा होते हैं,तो "मानिया" कहते हैं। अगर हँसी-खेल और दुःख देना ये लक्षण जियादा होते हैं, तो "दाउल कलूब" कहते हैं। अगर अशीलता और मनुष्योंसे नफरत ये लक्षण होते हैं, तो "फ़्तिरब" कहते हैं। मालीखोलियाके इलाजमें जल्दी करना आवश्यक है।

कुतरुब का वर्णन।

कुतरुब शब्दका अर्थ।

इस रोगका नाम "कुतरुब" क्यों रखा गया, इस विषयमें हकीमोंके भिन्न-भिन्न मत हैं। शेख़ बू अली सेना कहते हैं, कि "कुतरुब" एक कीड़ेका नाम है, जो पानी पर जल्दी-जल्दी आगे-पीछे, दायें-बायें, व्यर्थ फिरा करता है। कभी पानीमें ग़ोता मार जाता है और फिर झट ही निकल आता है। ठीक इस कीड़ेकीसी हालत कुतरुब-रोगीकी होती है। वह भी इस कीड़ेकी तरह व्यर्थ फिरा करता है, इसीसे इस रोगका नाम "कुतरुब" रक्खा गया है।

"कृतरुव" का दूसरा अर्थ भेडियेके पुराने गिरे हुए बाल हैं। भेड़िया जंगलमें घूमा करता है, आदमियोंको देखकर उन पर झपटता और हू हू शब्द किया करता है। कुतरुव रोगी भी ठीक भेड़िये की तरह वनमें भटकता रहता है, मनुष्योंपर हमले करता और उसीकी तरह हू हू करता है, इसीसे इस रोगका नाम "कुतरुब" रखा गया है।

कुतरुबके लक्षण।

इस रोगका रोगी अत्यन्त क्रोधित रहता है। एक जगह नहीं ठहरता, सदा कुतरुब कीड़े या भेडियेकी तरह बेकाम घूमा करता है। उसे लोगों द्वारा मारे जानेका शक रहता है। वह समझता है कि, लोग मुझे पाते ही मार डालेंगे, अतः अपनी प्राणरक्षाके लिए, दिनके समय, क़ब्रस्तानों या खँडहरोंमें छिपा रहना और रातके समय बाहर निकलता है।

कोई-कोई रोगी भयभीत तो नहीं रहते, पर क्रोधित और चिन्तित रहते हैं। उनके शरीरका रंग पीला, जीभ सूखी हुई और प्रकृति विशेष गर्म होती है। वे लोग, जंगलमें, चारों हाथ-पैरोंके बल पशुओंकी तरह चलते हैं। बहुत फिरनेकी वजहसे, कभी-कभी उनकी पिंडलियोंमें घाव हो जाते हैं और रात-भर फिरनेके कारण, उनके पाँव काँटों और पत्थरोंसे छिल जाते हैं।

मानियाके लक्षण।

इस रोगका रोगी पशुओंकी तरह फिरता रहता है। जिस चीज़को पाता है, उसे ही तोड़-फोड़ कर नष्ट कर देता है। आदमियोंको देखते ही, उन पर झपटना चाहता है। उसको नजर आदमियोंकीसी

नहीं रहती, बल्कि मांसाहारी पशुओं—सिंह व्याघ्रादि—की सी हो जाती है।

यूनानी ज़बानमें "मानिया" शब्दका अर्थ—"पशुओंकी तरह उन्मत्तताके काम" हैं। हकीम राज़ी लिखता है, कि किसी-किसी प्राचीन हकीमने इस शब्दका अर्थ—"भडका हुआ जिनू" किया है।

दाउलकल्बके लक्षण।

इस रोगका नाम "दाउलकल्ब" इस लिये रखा गया है, कि इस रोगके रोगीका काटा हुआ आदमी, पागल कुत्तेके काटे हुए आदमीकी तरह, मर जाता है। यह रोग असलमें "मानिया"का एक भेद मात्र है।

मानिया रोग जले हुए पित्त या जले हुए वायुके भाफके कणोंके दिमाग़में जाकर इकट्ठा हो जानेसे होता है।

जले हुए पित्तसे होनेवाले मानियाके लक्षण।

अगर मानिया रोग पित्तके जलनेसे या पित्तकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे होता है, तो रोगी बहुत ही बेचैन रहता है। जल्दी-जल्दी बदमाशी या मुहब्बत करने लगता है। इधर-उधर घमा करता है और रंज या फिक्रमें डूबा रहता है।
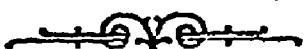
जले हुए वायुसे उत्पन्न मानियाके लक्षण।

अगर यह रोग वायुके जलने या उसकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे होता है, तो रोगी चिन्ताग्रस्त और चुपचाप रहता है; लेकिन जब कभी बोलता और बातें करता है, तो इतना बोलता है कि उसकी बातोंका अन्त नहीं आता और सुननेवालेको अपना पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। अगर इसे क्रोध आता है, तो बड़ी

देरमें शान्त होता है। इस रोगीका शरीर दुबला और रंग स्याही लिये हुए होता है।

नोट—मानिया रोग और दिमागकी सूजनमें यह फ़र्क है, कि दिमागकी सूजनमें ज्वर अवश्य होता है, पर मानियामें ज्वर नहीं होता। वास्तवमें, "सरसाम" शब्द का अर्थ ही "दिमागकी सूजन" है, क्योंकि सर=सिरके और साम=सूजनके है। सरसाम रोग चार तरहका होता है :—(१) खूनी, (२) पित्तज, (३) वातज, और (४) कफज। इन चारों ही सरसामोंमें कमोबेश बुखार रहता है और रोगी बहकी-बहकी बातें करता है।

सुबारा या विशेष जिन्नके लक्षण।

इस रोगमें ऐसा जान पड़ता है, मानों "मानिया" और "करानी-तुस"* दोनों मिल गये हैं। मानियाके लक्षण ऊपर लिखे हो गये

*"करानीतुस" शब्द यूनानी भाषाका है। इसका अर्थ "व्यर्थ बकना या प्रलाप करना" है। लिख आये हैं कि, सरसामका अर्थ "दिमागकी सूजन" है। 'करानीतुस सरसाम' खूनके सरसामको कहते हैं और 'करानीतुस ख़ालिस' पित्तके सरसामको कहते हैं। करानीतुस सरसाम या खूनके सरसाममें ज्वर हर समय चढ़ा रहता है, सिरमें बोझा और घबराहट मालूम होती है। चेहरा लाल और आंखें सुर्ख़ रहती हैं। रोगी हँस-हँस कर बहकी-बहकी बातें करता है, जीभ खरदरी हो जाती है और आंखोंसे आंसू गिरते हैं। आंसुओंका आना बुरा चिह्न है। जिसमें भी, एक आंखसे आंसू गिरना तो बहुत ही बुरा है।

'करानीतुस' ख़ालिस केवल पित्तसे होता है। इसके ज्वरमें बहुत गरमी रहती है, सिर हल्का रहता है, रोगीको नींद नहीं आती, नेत्रों और नथुनेमें खुश्की रहती है, मुँह और जीभ पर पीलापन रहता है। नाड़ीकी चाल चञ्चल होती है। रोगी बहकी-बहकी बातें बहुत करता है। गुस्सा और गाली-गलौजसे पेश आता है। उसकी अक्ल बिगड़ जाती है और वह घबराया रहता है।

वातज सरसाममें रोगी बहकता, गिड़-गिड़ाता, डरता, रोता और जागता रहता है। उसके दिमाग, जीभ और तालू सूखे रहते हैं, अक्ल बिगड़ जाती है, गला घुटतासा जान पड़ता है, नेत्र खुले रहते हैं, पलक लगने नहीं पाते, सिरमें कुछ दर्द और ज्वरकी हरारत रहती है। (शेषके लिए पृष्ठ १०७ देखिये)।

हैं और "करानीतुस"का अर्थ यूनानी भाषामें "व्यर्थ बकवाद करना" है। सारांश यह कि, इस रोगमें मानिया और करानीतुस दोनों ही के लक्षण पाये जाते हैं।

सुबारा या विशेष जिनूँनवाला शुरुमें बहुत जागा करता है, हर समय बेचैन और घबराया हुआ रहता है और नींदमें सोता-सोता डर कर जाग उठता है। उसका साँस चढ़ता है। उससे जो कुछ पूछा जाता है, उसका जवाब नही देता—फालतू बातें बकता है। उसकी आँखोंमें लाली और भारीपन रहते हैं। उसे ऐसा भ्रम होता है, मानो कोई चीज़ उसकी आँखमें गिर पड़ी है। अपने-आप आँसू निकल पड़ते हैं। पेशाब सफेद और पतला होता हैं। कभी-कभी पेशाब उतरता ही नहीं। जब पेशाब नहीं उतरता, उसे तकलीफ होती है। तकलीफके मारे वह पेड़ू पर हाथ मारता और उसे मलता है, पर मूर्खता या अज्ञानके कारण कह नहीं सकता, कि मुझे फलाँ तकलीफ है। कभी-कभी उसका शरीर भी काँपता है।

मालीखोलियाके और भेद।

मालीखोलियाके नीचे लिखे हुए तीन भेद और होते हैं। हमारे यहाँ उनका अलग-अलग ज़िक्र नही है और है तो बराय नाम, इसलिये हम उनको यहाँ लिखना अनुचित नहीं समझते। वे तीन भेद ये हैं:—

कफज सरसाममें रोगी कही हुई बातको भूल जाता है, हल्का ज्वर बना रहता है, ज्ञानेन्द्रियों पर भारीपन और जीभ पर सफेदी रहती है। जँभाइयाँ बहुत आती हैं। बुद्धिमें फर्क़ आ जाता है। रोगी कष्टसे बोलता और उसे पलकोंके खोलने, मूँदने और बातें करनेमें थकान जान पड़ती है, अतः पूछी हुई बातका जवाब कठिनसे देता है। क्षणमें सोता और क्षणमें जागता है, तन्द्रा बहुत रहती है।

यद्यपि यहाँ सरसामके चारों भेदोंके लिखनेकी दरकार न थी, पर हमने वैद्योंकी जानकारीके लिए पूरे लक्षण लिख दिये हैं।

(१) बहकना या वृथा बकवाद करना ।
(२) अहंकार और मूर्खता ।
(३) इश्क या प्रेम ।

बहकनेका वर्णन ।

यह रोग भी मालीखोलियाका एक भेद है। यह चिन्ताके कामोंसे पैदा होता और इसमें ज्वरांश जरूर होता है। इस रोगके पैदा होनेके मुख्य तीन स्थान हैं, अतः स्थानोंके अनुसार इसके तीन भेद माने गये हैं :—

(१) केवल दिमाग़से होनेवाला ।
(२) आमाशय या झिल्ली आदि किसी एक अङ्गसे होनेवाला ।
(३) सारे शरीरसे होनेवाला ।

बहकनेका पहला भेद ।

इसमें रोगका आरम्भ दिमागसे होता है। यह छै तरहका होता है :—

(१) जब दिमाग़का बीचका पर्दा, जो विचारका स्थान है, प्रबल वायुसे भर जाता है, तब यह रोग होता है। उस हालतमें रोगी मालीखोलिया वालेकी तरह उदास और दुःखी रहता है।

(२) जब दिमाग़में पित्त और वात बहुत ही ज़ियादा बढ़ जाते हैं, तब यह रोग होताहै। उस समय बीमारकी प्रकृति और हिम्मत पशुओंकी जैसी हो जाती है

(३) जब दिमाग़में रक्त और वात भर जाते हैं, तब यह रोग होता है। उस हालतमें रोगी हँसता और खुश रहता है तथा रगें फूल जाती हैं।

(४) जब दिमाग़में पित्त बहुत हो जाता है, तब यह रोग होता है। उस समय गरमीका भड़कना, बेचैनी, सिर और गलेमें दर्द, ज्वरांश और देहका पीला पड़ जाना—ये लक्षण होते हैं।

(५) जब दिमाग़में बदबूदार और तेज़ कफ भर जाता है, तब यह रोग होता है। उस हालतमें रोगी बहकता है, हाथसे भौंहोंको ऊपर चढ़ाता है, और उसका सिर भारी हो जाता है।

(६) जब दिमाग़में गरमी और मामूली खुश्की आ जाती है, तब यह रोग होता है। उस समय दिमाग़में खुश्कीका होना, जागना और मलके चिह्नोंका न होना—ये लक्षण होते हैं।

बहकनेका दूसरा भेद।

इसमें रोगके पैदा होनेका स्थान दिमाग़ नहीं होता, किन्तु यह रोग आमाशय, पेट, झिल्ली, गर्भाशय या वीर्यस्थान अथवा और किसी मुख्य अंगसे पैदा होता है। इन अंगोंमेंसे किसी एक अंगसे दिमाग़को हानि पहुंचती है, तब बहकनेका रोग पैदा होता है। जिस अंगसे यह रोग होता है, उस अंगमे तकलीफ होती है। उस तकलीफ वाले अंगके कारण यह रोग होता है या उससे गरम भाफके परमाणु दिमाग़में चढ़ कर यह रोग करते हैं। उस अंगमे कष्ट होना और बहकना,—इस भेदके लक्षण हैं।

बहकनेका तीसरा भेद।

इस भेदमे, भाफके तेज़ अबख़रे या तीक्ष्ण परमाणु सारे शरीरसे उठ कर दिमाग़में पहुचते और बुद्धिको नष्ट कर देते हैं, जैसा कि ज्वरमे होता हैं। इसमें पहले ज्वर आता और पहले ज्वर ही का इलाज किया जाता है, क्योंकि ज्वरके जाते रहनेसे, बहकना आप ही जाता रहता है।

अहंकार और मूर्खताका वर्णन।

यह भी मालीखोलियाका एक भेद है। इसमें विचारशक्तिकी क्रिया प्रायः बिगड़ जाती है। गृहस्थीके काम या मनुष्योंसे व्यवहार-विषयक बातचीत करनेमें विचारशक्ति ठीक नहीं रहती अथवा उसमे कमी आ जाती है, इसलिये इस रोगका रोगी लड़कोंके जैसे बेमतलबके काम करता है। उसका ध्यान सहज कामोंमें ठीक लगता है, परन्तु वह कामोंके फल या नतीजेको सोच-समझ नही सकता। इस रोगके दो कारण हैं :---

(१) अकेली सर्दी या खुश्कीके साथ सर्दीका दिमाग़के बीचके पर्देमें, जो विचारका स्थान है, आजाना।

(२) दिमाग़के बीचके पर्देके पोलदार स्थानमें कफका भर जाना।

अगर सरदी और खुश्की या अकेली सरदीके कारणसे रोग होता है, तो नाकमे खुश्की पायी जाती है, नींद नहीं आती है, नहाने और सिर पर गरम पानी डालनेसे फायदा होता है और सर्दी तथा खुश्कीका हेतु भी पाया जाता है।

इश्क़ या प्रेमका वर्णन।

जिस तरह इश्कपेचा जब किसी वृक्ष पर चढता है, तो उसे सुखा देता है; उसी तरह यह इश्क़ रोग भी बीमारको सुखा देता है। यह ऐसा रोग है, कि लोग इसे अपने-आप लगा लेते हैं। जब यह रोग हो जाता है, तब मनुष्य सदैव शोकसन्तप्त रहता है। उसे अकेले बैठे रहना, चुप रहना और काम न करना अच्छा लगता है; यानी जो-जो लक्षण मालीखोलिया या उन्मादमें होते हैं, वे सब इसमें पाये जाते हैं। किसी रूपवान पदार्थको देखकर मनुष्य उसकी

चिन्ता किया करता है, उसके देखनेके लिये सदैव उत्कंठित रहता है। वह पदार्थ वास्तवमें खूबसूरत हो चाहे न हो, पर दिल जब उस पर लग जाता है, तब ऐसा ही होता है। जब कोई किसी पर आशिक़ हो जाता है, तब वह रात-दिन उससे मिलने या उसे देखनेकी चिन्तामें ग़र्क़ रहता है। सदा चिन्ता-ग्रस्त रहनेसे खून जल जाता है और खूनके जलनेसे मनुष्य पागल हो जाता है।

इश्क़के लक्षण।

जिसे इश्क़ रोग हो जाता है, वह सिर झुकाये हुए चुपचाप बैठा या खड़ा रहता है। जो बात सुनता या देखता है, उसे भूल जाता है, उसकी आँखें भीतर को गड़ जाती हैं। उसके नेत्र बारम्बार चलायमान होते और सूख भी जाते हैं; परन्तु रोनेके समय तर हो जाते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसी खूबसूरत चीजकी ओर टकटकी लगाये देख रहा हो। उसे आदमियोंमें बैठना बुरा लगता और अकेलेमें रहना अच्छा लगता है। उसकी नाड़ीकी चालमें भी फ़र्क़ पड़ जाता है। इस रोगकी एक साफ़ और मुख्य पहचान यह भी है, कि वह अपने प्रेमपात्रको देखकर या उसका नाम सुनकर लम्बे-लम्बे साँस लेने लगता है। इन चिह्नोंकी कमी और कारणकी अधिकता—मनुष्यके पराक्रम या निर्बलता पर निर्भर है।

नोट—इस रोगीके इलाजमें, दवा-दारूके अलावा, इस बातका ध्यान रखना परमावश्यक है, कि उसके शोक और चिन्ता जिस तरह हो सके दूर कर दिये जायँ। शोक और चिन्ता दूर करनेके लिये, उसे अनेक तरहके राग-रागनी और बंशी तथा सारंगी आदि बाजे सुनाये जावें तथा मनोरंजक कहानियाँ, धर्मकी बातें, महापुरुषोंके वाक्य और फ़क़ीरोंके चुटकुले सुनाये जावें। इन्हींमें उसका दिल फँसाये रखा जाय, धीरे-धीरे उसके प्रेमपात्र या माशूक़के दोष और औगुण उसके सामने इस तरह कहे जायँ, कि उसका दिल उससे हट जाय, पर उसे यह न मालूम हो, कि ये सारे काम उसके माशूक़से उसका मन फेरनेके लिये किये जाते हैं। अगर उसे यह भेद मालूम हो जायगा, तो फल उलटा होगा। अगर उसकी शादी न हुई हो, तो शादी करा देनी चाहिये।

मालीखोलियाका इलाज।

पहले भेदके अन्तर्गत—

खूनी मालीखोलियाका इलाज।

(१) खूनी मालिखोलिया हो, तो "हफ्त अन्दाम और बासलीक" की फस्द खोलो। अगर रजोधर्म बन्द होनेसे खूनी मालीखोलिया हुआ हो, तो "रग साफिन"की फस्द खोलो।

नोट—वह रग जो तर्जनी उँगलीसे कोहनीके पास तक गई है, उसे "हफ्त अन्दाम" कहते हैं और वह रग जो मध्यमा उँगलीसे कोहनी तक गई है, उसे 'बासलीक" कहते हैं। पाँवकी रगको "रग साफिन" कहते हैं।

(२) बनफशा १० माशे, नीलोफर १०॥ माशे, गावजुबाँ १०॥ माशे, उन्नाब ७ दाने, लिहसौड़ेके २० दाने और मिश्री ३५ माशे—इनको मिट्टीकी हाँडीमें डाल कर और ऊपरसे आध सेर पानी मिला कर, शर्बतके माफ़िक़ पका लो और छान कर रोगीको पिला दो। इस तरह, सवेरे-शाम, इस शर्बतके पीनेसे जब मल पक जाय और नर्म हो जाय, तब उसे नीचे लिखे हुए "अफतीमून या आकाशबेलके काढ़े"से निकाल दो :—

(३) हरड़ काबुलीके छिलके ३५ माशे, उस्तखद्दूस ३५ माशे, बीज-हीन मुनक्के ३५ माशे, शातिरा १७॥ माशे, बिसफायज १७॥ माशे और सनाय १७॥ माशे—इनमेंसे कूटनेकी दवाओंको कूट कर और बाक़ीको योंही रख कर, सबको मिट्टीकी हाँडीमें, डेढ़ सेर पानी डाल कर औटाओ। जब औटते-औटते आध सेर पानी रह जाय, उसे नीचे उतार लो और उसमें ३५ माशे "अफतीमून" डाल दो। जब काढ़ा

शीतल हो जाये, उसे कपड़ेमें छान लो। फिर उसमें ३॥ माशे गारी-कून और ७ माशे एलुआ महीन पीस कर मिला दो और थोड़ीसी चीनी डाल कर रोगीको पिला दो। इस दवासे मल निकल जायगा। यह "अफ्तीमून या आकाश वेल"का काढ़ा है।

(४) जब ऊपर लिखे हुए अफ्तीमूनके काढ़ेसे मल अच्छी तरह निकल जाय ; तब शर्बत, तर मेवे या अन्य पदार्थ वेखटके सेवन कराओ। सदा शीतल पानीसे स्नान कराओ। बकरीका दूध रोगीके सिर पर दुहो।

(५) वनफ़शा, नीलोफर, काहूके पत्ते, अधकुचले जौ, खशखाशकी छाल, गुलावके फूल और बाबूना औटाकर किसी बड़े टबमें इतना भर दो, कि रोगीकी गर्दन तक आ जाय। फिर उसमें रोगीको बिठा दो। इस तरहके स्नानसे बड़ा लाभ होता है।

अथवा।

वनफ़शाका तेल और नीलोफ़रका तेल वग़ैरः नाकमें टपकाना और शरीर पर मलना भी लाभदायक है।

पथ्यापथ्य।

मुर्ग़ी और बकरीके बच्चोंका मांस, पालक, बादामका तेल, बादामकी मींगी, गायके दूधका दही, तरबूज, ककड़ी, मीठे अंगूर, मीठे सेव, खरबूजा और मैदाकी रोटी ; चिकने, मीठे, फीके और स्वादिष्ट भोजन—ये सब पदार्थ पथ्य या हित हैं। आराम करना भी अच्छा है। मिहनत करना और स्त्री-प्रसङ्ग करना अपथ्य है।

"इलाजुल गुर्वा"में लिखा है :—पहले-पहल फस्त खोलनेकी कोशिश करनी चाहिये, क्योंकि पहले यह काम आसानीसे होता है ; स्थिर होनेके बाद बड़ी मुश्किल होती है। इस रोगके इलाजमें नीचे लिखे काम अवश्य करो :—

(१) फस्त खोलो।

(२) हर हालतमें रोगीको खुश रखो।

(३) रोगीको अच्छी जगह बिठाओ।

(४) घी-मिले भोजन कराओ।

(५) खूब सुलाओ। सुलाना सर्वोत्तम उपाय है।

(६) जुलाब देकर कई बार मल निकालो।

(७) मनको पुष्ट रखो।

(८) मालीखोलिया-रोगीका मन जिधर लगे, उधर ही उसको लगाये रहो।

(६) मालीखोलियावालेको एकान्तमें रखना और डराना हानि-कारक है।

(१०) अगर रोगी काम करना चाहे तो करने दो, पर जियादा नहीं।

(११) फस्त खोलनेके बाद "माउलजुब्न" पिलानी चाहिये। माउलजुब्नके दिनोंमें बलाबल देखकर जुलाब देते रहना चाहिये।

(१२) मालीखोलियामें बहुधा सिरपर मारना अच्छा है। इससे अक्ल आती है। पीडाके कारण इन्द्रियाँ चैतन्य हो जाती हैं।

पहले भेदके अन्तर्गत—

पित्तज मालीखोलियाका इलाज।

(१) पित्तज रोगमें, तरी पहुँचानेके लिए, पहले तरी पहुँचाने-वाले लुआब और शर्बत पिलाने चाहियें। तरी पहुँचानेके बाद, दोषको "माउलजब्न" और नीचे लिखे हरड़ आदिके काढ़ेसे निकाल देना चाहिये। दोष निकाल देनेके बाद फिर शीतल और तर चीजोंसे रोगीकी प्रकृतिको सँभालना चाहिये। उसे मिहनतसे बचाना चाहिये, आराम देना चाहिये और राग रागनी सुनानो चाहिय।

हरड़ आदिका काढ़ा।

पीली हरड़के छिलके ३५ माशे, इमली ३५ माशे, पित्तपापड़ा ३५ माशे, आलू २० दाने, लिहसौड़े ५० दाने, गुलाबके फूल १७॥ माशे और कासनीके बीज १७॥ माशे—इनमेंसे कूटनेकी चीज़ोंको कूटकर और शेषको योंही रखकर, डेढ़ सेर पानीमे औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, नीचे उतार लो और तुरन्त ही ३५ माशे "अफतीमून" मिलाकर छोड़ दो। शीतल होनेपर छान लो। फिर उसमें सकमूनिया ४ जौ भर, धोया हुआ एलुआ ३॥ माशे, निशोथ ३॥ माशे और तुरंजबीन, शीरए खिस्त तथा मिश्री तीनों ७० माशे मिला कर रोगीको पिला दो।

नोट—धोया हुआ एलुवा बिना धोये हुएसे अच्छा होता है। बिना धोया हुआ दस्त जियादा लाता है।

पहले भेदके अन्तर्गत

वातज मालीखोलियाका इलाज।

हर दिन 'माउल उसूल' या 'जड़ोंका काढ़ा' पिलाओ। इस रोगमें यह काढ़ा बहुत काम देता है।

सौंफकी जड़, कासनीकी जड़, मुलहटी, बिसफायज, गावज़ुवाँ, बादरंज बोया और काबुली हरड़का बकला—प्रत्येक आवश्यकतानुसार लेकर, डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, नीचे उतार कर तुरन्त ही उसमे "अफ़तीमून" मिला दो और शीतल होने पर छान लो। फिर उसे "तुरंजबीन"से मीठा करके रोगीको पिला दो।

अथवा।

गावज़ुवाँ १० माशे, नीलोफर १० माशे, बनफ़शा १० माशे,

बालंगो ३५ माशे और गुलकन्द ४५ माशे—इनका जुलाब बना कर, उस समय तक पिलाओ, जब तक कि मल न पक जाय।

मल पकनेके बाद।

अफतीमूनका काढ़ा, जो पृष्ठ ११२ में लिखा है, पिलाकर मलको निकाल दो। अथवा बातज मल निकालनेवाली और दवाएँ देकर मलको निकाल दो, क्योंकि बातज मल सहजमें नहीं निकलता। पहले ही जुलाबकी तेज दवा न देनी चाहिये। पहले 'यारज फैकरा' दो, फिर 'यारज जालीनूस', फिर 'यारज 'रूफिस' और फिर 'यारज लोगाजिया' दो।

(२) मल निकल जानेके बाद तरी पहुँचानेकी कोशिश करो। तर भोजन दो, शीतल जलसे स्नान कराओ, तरड़े दो, प्रकृतिके अनुसार शर्बत और माउलजुब्न अति लाभप्रद हैं।

नोट—मल निकलनेके बाद, दिल और दिमागको ताकत और आराम देने वाली चीजें दो। दिमागमें ताकतकी जरूरत इसलिये है, कि वह काले-काले भाफको परमाणुओं को, जो ऊपर चढ़ें, ग्रहण न करे। दिलकी ताकत बढ़ानेकी जरूरत इसलिये है कि, मालीखोलियाका रोग बिना दिलके संयोगके नहीं होता। शेख बू अली सेना कहते हैं कि, इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि मालीखोलिया रोग दिलसे आरम्भ होता है। यह हो सकता है, कि पहले दिल खराब हो जाय और पीछे दिमाग खराब हो और यह भी हो सकता है कि पहले दिमाग खराब हो जाय और पीछे दिल खराब हो। यह भी हो सकता है, कि दिलकी रूहकी प्रकृति बिगड़ जाय और उस रूहमेंसे वह रूह बिगड़ जाय, जो दिमागकी तरफ चढ़कर जाती है। वह रूह दिमागको भी खराब कर सकती है, क्यो कि दिमागी रूह दिलकी रूहसे मिली हुई है और दिलकी रूहके जौहरसे उसकी पुष्टि होती है। अतः सब तरहके मालीखोलिया-ओंमें और विशेषकर इस प्रकारके मालीखोलियामें, दिल और दिमाग दोनों हीकी पुष्टिकी कोशिश करनी चाहिये। जब तक रोगीका भय, डर या खौफ और सन्देह दूर न हो जाय, तब तक तो इस बातको हरगिज न भूलना चाहिये। अगर रोगीका मिजाज गरम हो, तो गरमीके उन्मादमें जो चीजें दी जाती हैं वही देनी चाहियें। अगर मिजाज सर्द हो या शीतल प्रकृति हो, तो "नोशदारू और दीवाल मुश्क" देना हित है।

नोशदारूकी विधि ।

गुलाबके फूल १६॥ माशे, नागरमोथा कूफी १७॥ माशे, लौंग १०॥ माशे, मस्तगी १०॥ माशे, बालछड़ १०॥ माशे, उसारून १०॥ माशे, सिरफा ७ माशे, इलायचीके दाने ३॥ माशे, बिस्बासा ३॥ माशे, जायफल ३॥ माशे और आमले गुठली निकाले हुए आध सेर—तैयार करो।

पहले आमलोंको साढ़े तीन सेर पानी डाल कर मिट्टीकी हाँड़ीमें औटाओ। जब डेढ़ सेर पानी रह जाय, मल कर छान लो। उस छने हुए रसमें पाव-भर "शहद" मिला कर फिर औटाओ। जब रस गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो और बाकी दवाएँ तथा थोड़ीसी हींग पीस कर उसमें मिला दो और बैतकी लकड़ीके चमचेसे चलाते रहो। जब एक दिल हो जायँ, मुँह बाँधकर रख दो। दो महीने तक न छेड़ो। बाद दो महीनेके खानेसे यह दवा बड़ा आराम देती है। इसके सेवन करनेसे शरीरका रंग साफ होता है, पाचन-शक्ति बढ़ती है। यह बुढ़ापेको भी रोकती है यानी उसे देरमें आने देती है।

गरम दीवाल मुश्क ।

नरकचूर, दरूनज अकरबी, अबीध मोती, कहरवा, मूँगाकी जड़, पैंतीस-पैंतीस माशे, रेशम खाम, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, बालछड़, छोटी इलायचीके बीज साढ़े-सत्तरह सत्तरह माशे ; छरीला, पीपर, सोंठ, चौदह-चौदह माशे और कस्तूरी ७ माशे—इनको पीस छान कर, शहदमें मिला, माजून बना लो।

माउलजुबून ।

बकरीका दूध आध सेर औटाओ, जब एक उफान आ जाय, नीचे उतार लो। फिर उसमें सादा सिकंजबीन या अफ्तीमूनकी सिकंजबीन ३१॥ माशे मिला दो और छान कर पीलो।

पहले भेदके अन्तर्गत—

कफज मालीखोलियाका इलाज।

(१) कफके मालीखोलियामें मलको पकानेवाली मुञ्जिज पहले सेवन कराओ। जब मल पक जाय, नीचे लिखा हुआ काढ़ा पिलाकर मलको निकाल दो।

मल निकालनेका काढ़ा।

काबुली हरड़का बक्कल ३५ माशे, शातरा ३५ माशे, सनाय २४॥ माशे, बिस्फायज १०॥ माशे और बालंगो १०॥ माशे,—इन सबको डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, उतारकर फौरन ही उसमें ३५ माशे "अफ्तीमून" मिला दो। जब शीतल हो जाय, छान लो। फिर उसमें निशोथ ३॥ माशे और गारीकून ३॥ माशे पीसकर मिला दो और जितनी जरूरत हो "चीनी" भी मिला लो। पहले इस्तमखीकूनकी गोली खिला दो और ऊपरसे यह काढ़ा पिला दो।

इस समय बालछड़ रूमीका तेल और चमेलीका तेल शरीरपर मलो और नित्य स्नान कराओ। मुर्गीके बच्चे, बटेर या एक सालके भेड़के बच्चेका मास चनेके पानी और करड़की मींगीके शोरेके साथ खिलाओ। उपरोक्त काढ़े और गोलियोंके खानेसे जब सारा मल निकल जाय, नीचे लिखी माजून रोगीको खिलाओ :—

माजूनकी विधि।

बालंगो, तुरंजके छिलके, लौंग, मस्तंगी, किरफा—तज, दालचीनी, जायफल, इलायचीके दाने, नारमुश्क—नागकेशर, बहमन सुर्ख़, नरकचूर, दरूनज, केशर, तुख़्म-फरंजमुश्क, रामतुलसीके बीज और बादरूजके बीज प्रत्येक ६।६ माशे तथा असली कस्तूरी चार जौ-भर—इन सबको पीस-छान लो।

४० हरड़के छिलकों और ३० आमलोंको अधकचरा करके डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, उतारकर छानलो। फिर इस काढ़ेमें आध सेर या अधिक "शहद" मिलाकर चाशनी कर लो और नीचे उतार लो। उतारते ही, इस चाशनीमें ऊपर लिखी हुई पिसी-छनी दवाओंको मिला दो। इसकी मात्रा ४॥ माशे की है।

नोट—कोई-कोई इसमें हरड़के छिलके १७५ माशे, आमलोंके छिलके ४ छटांक १ तोले और १०॥ माशे लेते हैं और शहदके बदले तुरजबीन डालते हैं।

पहले भेदके या जले हुए दोषोंके

मालीखोलियाकी सामान्य चिकित्सा।

(१) "इलाजुलगुर्बा"में लिखा है, अफीम २ रत्तीसे आरंभ करके और धीरे बढ़ा-बढ़ाकर २ माशेतक पहुँचा देनेसे इस प्रकारके उन्माद में अवश्य लाभ होता है। परन्तु यह दवा उसीको फायदा करती है, जो जवान होता है।

(२) "तिब्बयूसफी" में सर्व्वदा शराब पिलाना और नाच दिखाना—ऐसे उन्मादमें अच्छा लिखा है।

(३) आदमीके बाल जलाकर और उस राखको "गुल रोगन"में महीन खरल करके नाकमें टपकानेसे उन्माद या पागलपन नाश हो जाता है।

मालीखोलियाके दूसरे भेदका इलाज।

यह मालीखोलिया एकान्तवास करनेवालों और किताबी कीड़ों एवं तत्वज्ञानियोंको ज़ियादा होता है।

नोट—अगर खून जियादा हो, तो पहले "रग मेररू"की फस्त खोलो। इस बातको ध्यान देकर देखो कि, निकला हुआ खून बिल्कुल काला है या लाली लिये काला है या बिल्कुल लाल है।

अगर खून काला आवे, तो फस्तको उस समय तक बन्द मत करो, जब तक कि, उसका रंग पलट न जाय अथवा कमजोरीका खौफ न हो। इस खूनसे यह मालूम हो सकता है, कि जला हुआ मवाद दिमागमें ठहरनेके सिवाय सारे शरीरमें भी फैल गया है।

जहाँका खून लाल हो, वहाँसे कम खून निकालो—जियादा मत निकालो। अगर खून साफ लाल ही निकले तो समझ लो कि, दोष दिमागकी नसोंमें रुक रहा है—देहमें नहीं फैला है। अगर ऐसा हो, तो "रग मेररू"को बन्द कर दो और उसके बजाय माथेकी फस्त खोलो। इस फस्तके खोलनेसे उस अङ्ग यानी माथेसे दोष सहजमें निकल जायगा।

मेररूकी फस्तसे "साफिन" यानी पाँवकी फस्त खोलना अच्छा है। विशेषकर उस हालतमें, जब मलको एक जगहसे निकाल कर दूसरी जगह करना हो। ऐसा मौक़ा विशेष कर तब पड़ता है, जब रजोधर्मके बन्द होनेके कारण स्त्रियोंको मालोखोलिया या उन्माद हो जाता है।

फस्त खोलनेके बाद, विशेष दोषको उन काढ़ों और गोलियोंसे निकालो, जो उस दोषके योग्य हों। जैसे—पित्तका दोष हो, तो पित्तनाशक जुलाब या काढ़े वगैर दो। अगर कफका दोष हो, तो कफनाशक काढ़े वगैर. दो। परन्तु जब तक दिमाग और दोषोंमें तरी न पहुँच जाय, दस्तावर दवा मत दो; क्योंकि दोष आसानीसे न निकलेगा।

तरी पहुँचानेके लिये, नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) मोटी मुर्ग़ी, बकरो या हिरनके बच्चोंके मांससे या मोटे और कँकरीले पानीकी मछलीसे बने हुए शोरवे पिलाओ।

(२) निशास्ता, चीनी. खशखाश और बादामके तेलसे बनाया हुआ फालूदा दो।

(३) तरी पहुँचानेवाले तेल गुनगुने करके सिर पर लगाओ।

(४) छिले हुए जौ, बनफ़शा, नीलोफर और काहूके पत्तोंका काढ़ा सिर पर डालो।

(५) कद्दूके बीजोंकी मींगी, काहूके बीज, तरबूज़के बीजोंकी मींगी, नीलोफ़रके फूल और बनफ़शाके फूल—इनको पीसकर स्त्रियोंके दूधमें मिला लो और सिर पर लेप कर दो।

(६) तरी पहुँचाने वाले शर्बत पिलाओ।

(७) गुनगुने मीठे पानीसे स्नान कराओ।

(८) शीतल मकानमें बैठा कर, गुलाब वग़ैरःके शीतल सुगन्धित फूल सुँघाओ।

(९) किसी शुभ हेतुसे अधिक सोना भी लाभदायक है।

(१०) मैथुन, चिन्ता और परिश्रमसे रोगीको बचाओ।

(११) मलके निकालनेके बाद, फिर तरी पहुँचानेकी चेष्टा करो। मल निकालनेसे जो खुश्की दिमाग़में आगई होगी, वह इस उपायसे निकल जायगी।

नोट—नाकके छेदोंको देखा करो। जब उनमें तरी मालूम हो, तब समझलो कि तरी पहुँच गई। याद रखो दस्तावर दवा देनेके पहले भी तरी पहुँचानी होती है और मल निकलनेके बाद भी तरी पहुँचानी होती है।

"इलाजुलगुर्बा"में लिखा है :—एक व्यक्तिको अकेले बैठनेका और उन्मादका रोग हुआ। आदमी गरीब था, इसलिये अच्छा इलाज करा न सकता था। हकीमने पहले "हफ़्त अन्दाम" यानी तर्जनी उँगलीसे कोहनी तक जाने वाली नसकी फस्द खोली। इसके बाद उसे बकरीका दूध खाकशीरके साथ पिलाया। इस इलाजसे उसको आराम हो गया।

मालीखोलियाके तीसरे भेद

मालीखोलिया मिराकीका इलाज।

इस रोगमें खट्टी डकारें बहुत आती हैं। गुदाकी हवा बहुत निकलती है, अफारा होता और पेटमें जलन होती है इत्यादि। इस रोगका इलाज नीचे लिखी रीतिसे करो :—

(१) प्रकृतिके अनुसार हर चालीसवें दिन या आगे-पीछे बास-लीककी रग यानी उस रगकी फस्त खोलो, जो मध्यमा उँगलीसे कोहनी तक गई है। अगर खून ज़ियादा हो और कोई बलवान उपद्रव न हो, तो जरूरत के माफ़िक़ और समयके अनुसार खून निकालो। इस रोगमें नश्तर चौड़ा लगाओ, ताकि गाढ़ा खून निकल जाय। बादीके सभी रोगोंमें ऐसा ही करना चाहिये, बशर्त्ते कि फस्त खोलनी हो।

(२) अगर इस रोगके साथ ज्वरका अंश भी हो, तो नीलोफ़र, कासनीके बीज, तुरंजबीन, मकोय और मिश्रीका जुलाब पिलाओ। शर्बत बनफ़शा और शर्बत ख़शख़ाश पिलाना भी लाभदायक है। पथ्यमें—जौका दलिया या धुली मूँगकी दाल बादामकी मींगियोंके साथ दो।

(३) अगर इस रोगके साथ ज्वरांश न हो, तो केवल गुलक़न्द खिलाओ। जुलाबमें बालंगो, गावजुवाँ और सौंफ ये भो मिला दी जायँ, तो और भी उत्तम हो। मुर्ग़ीकी ज़र्दी और ऐसी ही शीघ्र पचने वाली चीज़ें दो।

(४) अगर दोष आमाशय, मासारीका या मिराकमें हो, तो पेटके भीतरके अंगोंको लाभ पहुँचाने वाली चीजें दो। जैसे, बादरंज-बोया, गावजुवाँ, अफ्तीमून और अफसन्तीनके काढेमें "अमलताशका गूदा" मिला कर पिलाओ। इससे कोठा नर्म होकर दस्त होंगे।

नोट—कहते हैं, मालीखोलिया मिराकीमें अफसन्तीन अधिक लाभदायक है। उसकी शराब और शर्बत भी गुणकारी है।

(५) अगर दोष केवल तिल्लीमें हो, तो दस्त करानेके लिये तेज दवा दो। तेज़ दस्तावर दवा न देनेसे, मल तिल्लीसे निकल कर आमाशय या और अंगोंमे ठहर जाता है और बाहर नहीं निकलता; इसीसे तिल्लीमें तेज जुलाब देना चाहिये; ताकि मल दूसरे अङ्गमें ठहर कर कोई उपद्रव न करे।

(६) अगर दोष आमाशय, मिराक और मासारीकामें हो, तो उसे केवल फस्त द्वारा निकालो—दस्तावर दवा मत दो। परन्तु अगर दोषके ठहरे रहनेसे सड़ जाने या सारी देहमें फैल जानेका भय हो, तो दोषको दस्त कराकर निकाल सकते हो।

(७) इस रोगमें "वमन कराना" सर्वथा हानिकारक है ; क्योंकि 'वमन' दोष और भाफ्के परमाणुओंको उभार देती और उन्हें नीचेसे ऊपरकी तरफ ले जाती है। दूसरी बात यह है कि, वातज दोष शरीरके अवयवोंमें दबा रहता है—वमनसे वह निकल नहीं सकता। हाँ, जिसे सहजमें वमन हो जाय और दोष भी आमाशयकी खोलमें हो, तो वमन करा सकते हो।

(८) अगर दोष, बिना सूजनके, पेटके ऊपरकी झिल्लीमें हो ; तो गुल रोग़न, बालछड़ और मस्तगीको गुनगुनी करके आमाशयपर, विशेषकर आमाशयके मुंहपर मलो और गरम भूसीसे सेक करो।

(९) बाबूना, अकलीलुमलिक और नीबूके पत्ते—इनका क़ाढ़ा बनाकर तरड़ा देनेसे रिआह नाश हो जाती है।

(१०) तर सिकताव खुश्क सिकतावसे अच्छा है, क्योंकि तरसे तरी भी पहुंचती है और रिआह भी नष्ट होती है।

विशेष द्रष्टव्य।

(१) जिस अंगमें दोष हो, उस अंगका दोष निकालने और शक्ति पहुँचानेके लिये, उस अंगके कहे हुए रोगोंके इलाज पर ध्यान दो।

(२) मालीखोलियाकी दशा भी, दोषके भिन्न-भिन्न स्थानों और दूसरे दोषके उसमें मिल जानेके अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। जैसे :—

(क) अगर दोष दिमागके बीचके स्थानमें, जो ज्ञानकी जगह है, आ जाता है, तो रोगीमें बुद्धि और विवेक नहीं रहते। उसके सारे काम बिगड़ जाते हैं।

(ख) अगर दोष दिमागके अगले भागमें, जो विचारका स्थान है, आ जाता है, तो विचारशक्ति जाती रहती है।

(ग) अगर दोष दिमागके सब भागोंमें आ जाता है, तो सोच-विचार और काम सबमें गड़बड़ हो जाते हैं।

(घ) अगर वायु पित्तके साथ मिल जाता है, तो बीमारकी प्रकृतिमें क्रोध और तेजी आजाती है।

(ङ) अगर कफ और वायु मिल जाते हैं, तो बीमार सुस्त रहता है। उसे सोना या लेटना अच्छा लगता है।

(च) बादी जिस दोषके जलनेसे पैदा होती है, उस दोषकी दशा भी उसमें अवश्य होती है। यह बात उसके चिह्नोंसे जानी जाती है।

कुतरुबका इलाज।

इस रोगवाला अधिक क्रोधित रहता है और एक जगह नहीं ठहरता। अपनी जान बचानेके लिये फूटे मकानों या क़ब्रस्तानोंमें छिपा रहता और रातके समय निकलता है। इसका इलाज इस तरह करो :—

(१) ज़रूरत समझो तो फस्त खोल दो।

(२) दोषके पक जानेपर, अफतीमूनके काढ़े या ऐसी ही और किसी दवासे दोषोंको निकालकर, प्रकृतिको तरड़ों और सर्द-तर तेलोंसे सम्हालो।

(३) सर्दी और तरी बढ़ानेवाले उपाय काममें लाओ। तरी पहुँचानेकी ज़ियादा चेष्टा करो।

(४) उत्तमोत्तम भोजन खिलाओ।

(५) सन्देह नाश करनेके लिये, जिस तरह बने रोगीको सुलाओ। चिन्ता दूर करनेके लिए बहानोंसे काम लो। जिस तरह भी चिन्ता दूर हो, वही उपाय करो।

(६) हकीम शेख़ रहमतुल्ला साहब कहते हैं, जिस समय किसी उपायसे काम न हो, रोगीके सिर और मुँहपर थप्पड मारो, तालुए पर दाग दो, क्योंकि दागनेसे दिमाग़ी शक्ति चौंकती और रोगी होशमें आ जाता है।

मानिया और दाउलकल्बका इलाज।

(१) पहले दोषको पकाने और तरी पहुँचानेके उपाय करो। जब दोष अच्छी तरहसे पक जाय और तरी आजाय—नाकके छेदोंमें तरी दीखने लगे—तब हेतुके अनुसार जुलाब देकर दोषको निकाल दो।

(२) दोषके निकल जानेपर, फिर तरी पहुचानेवाली दवाएं और पथ्य दो। ऐसी चीज़ें दो, जिनसे रोगीको होश हो और उसका दिल मज़बूत और ताक़तवर हो। ऐसे उपाय हम पीछे लिख आये हैं।

सुबारा या विशेष जिनूँनका इलाज।

इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) पित्तज सरसामके जैसा इलाज करो। इमली, आलू, बलायती बेर, पीले आलू, ल्हिसौड़े, तुरंजबीन और शीरेख़िश्त—इन सबको पानीमें भिगो दो। पीछे, बिना औटाये ही, मलछानकर रोगीको पिलादो। इस दवासे कोठा नरम हो जायगा और मल फूलकर निकलने लायक़ हो जायगा। इसपर नर्म जुलाब देना लाभदायक है।

(२) तरी पहुँचानेके लिए खट्टे और मीठे अनारका रस पिलाओ। अर्क़ गुलाब, कद्दूका रस और तरबूज़का पानी पिलाओ। बनफ़शाका तेल, कद्दू और नीलोफ़रको बर्फमें शीतल करके सिरपर मलते रहो। अथवा बनफ़शा, कद्दू, नीलोफ़र और ख़तमी—इनको औटाकर छान लो और इसी काढ़ेको सिरपर डालो।

(३) अगर रोगीको नींद न आती हो, तो काहूके बीज, ख़शख़ाशके छिलके और थोड़ासा बाबूना तरहेकी दवामें मिलादो। अथवा शर्बत ख़शख़ाश पीनेकी दवामें मिला दो।

नोट (१)—पित्तज सरसाममें सर्दी और तरीका भय न करना चाहिये, परन्तु यह बात खूनी सरसामके विपरीत है। उसमें अधिक सर्दी और तरी हानिकर हैं।

नोट (२)—तरड़ेकी दवामें "बाबूना" किसी लाभके लिये नहीं मिलाते, केवल ख़शख़ाशके दुरुस्त करनेको डालते हैं। इसीसे उसे कम डालते हैं, कि हानि न करे, किन्तु ख़शख़ाशको ठीक कर देवे। बाबूना गर्म है, पर तरड़ेमें मिलाया जाता है। मतलब यह कि, बाबूना अवश्य मिलाओ, पर कम मिलाओ।

नोट (३)—अनारके दाने मलकर, कपड़ेमें रस निचोड़ लो। ककड़ीको कूटकर रस निचोढ लो। तरबूज़को चाकूसे काटकर, उसकी नोकसे कूँचा देकर पानी निचोड़ लो। मीठे नरम कद्दूको जौके आटेमें लपेटकर चूल्हेमें रख दो। जब आटा पक जाय, उसे निकाल लो और आटा छुड़ाकर रस निचोड़ लो।

(४) रोगीके हाथ-पाँव बाँध दो; क्योंकि रोगीके हाथ-पाँव चलानेसे बीमारी बढ़ती है। दूसरे, हाथ-पाँव चलानेसे दिमाग़से माद्दा खिंच आता है। तीसरे, रोगी स्वयं आपको या किसी दूसरेको मार डालता है। हाथ-पाँव बाँध देनेसे ये उपद्रव नहीं हो सकते। हकीम तिबरी कहते हैं, मैंने देखा कि, दो आदमियोंने अपने तईं मार डाला। बहुतसे स्त्री-पुरुष-रोगी ऐसे देखे, जो अपने तईं दरख्तोंमें लटका रहे थे।

अहङ्कार या मूर्खताका इलाज।
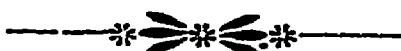
इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) तरी और गरमी पहुँचानेके लिये, मोटी मुर्ग़ियोंका मांस या शोरबा,—दालचीनी और कुलींजनसे सुगन्धित करके रोगीको खिलाओ। मातदिल मीठी चीज़ें खिलाओ। मीठे फालूदेमें बादामका तेल मिला कर दो।

(२) खैराका तेल और बाबूनेका तेल सिरके बीचमें मलो ।

(३) तर और गरम सूखी घासोंको औटाकर, उनका पानी सिर पर डालो ।

इश्क़-उन्मादका इलाज ।

इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) आशिक़की प्रकृति और देहमें उन दवाओं और पथ्योंसे तरी पहुँचाओ, जो मालीखोलियामें लिख आये हैं ।

(२) आशिक़की चिन्ता और शोक दूर करनेकी भर सक चेष्टा करो ।

(३) रोगीको अनेक तरहके राग रागनी तथा वंशी और सारंगी आदि बाजे सुनाओ ।

(४) अनेक तरहकी मन बहलानेवाली कहानियाँ, धर्मकी बातें, महात्माओंके वचन और फ़क़ीरी चुटकुले सुनाओ ।

(५) रोगीको ऐसे कामोंमें लगादो, जिनसे उसे अपनी माशूक़ाका ध्यान ही न रहे ।

(६) रोगीके पास ऐसे आदमी रख दो, जो उसके सामने उसकी माशूक़ाकी निन्दा किया करें ; परन्तु रोगी इस भेदको न समझने पावे, अन्यथा उल्टा काम होगा ।

(७) उसको माशूक़ाके सिवाय, किसी दूसरीसे भोग करा दो ।

(८) अगर रोगी कँवारा हो, तो उसकी शादी करा दो ।

(९) आगमें लोहेको लाल करो और जब उसे पानीमें बुझाने लगो, तब तीन दफ़ा यह कहो—"जिस तरह यह गरम लोहा पानीमें शीतल होता है, उसी तरह अमुक आदमीके लड़केकी मुहब्बत

अमुक आदमीकी लड़कीसे शीतल होजाय", इस तरह तीन दफा कह-कर लोहेको पानीमें बुझादो। फिर उस पानीसे रोगीका मुँह धोओ और उसे उसकी छातीपर छिड़को। तीन दिन यह उपाय करनेसे रोगी अपनी माशूकाको भूल जायगा। यह उपाय "तिब्ब फ़रीदी"में लिखा है।

(१०) "तिब्ब फरीदी" वग़ैरः ग्रन्थोंमें लिखा है, कि संगमरमरका वह टुकडा, जिसपर किसी मरनेवालेकी तारीख-मिती लिखी हो ले आओ। उसे थोडासा घिसलो। फिर आशिक़-माशूककी जुदाईके संकल्पसे, उसमें से थोडा-थोड़ा, बिना कहे, दोनोंको खिला दो। इस उपायसे मुहब्बत टूट जायगी।

(११) बिच्छूका डङ्क, कुत्तेका नाखून और कछुवेका नाखून लाकर, ऊँटके चमड़ेमें मढ़कर यंत्रसा बना लो। इस यन्त्रको प्रेम-पागलके गलेमें लटकानेसे यह रोग नाश हो जाता है।

(१२) कोरे कुल्हड़ेमें औरतके बाल जलाओ। फिर उसी कुल्हड़ेमें आशिक़ रोगीको पानी भर कर पिलाओ। इससे प्रीति कम हो जाती है, पर अरुचि हो जाती है।

(१३) उल्लूका भेजा अढ़ाई रत्ती पिघलाकर उसमें कौड़ीभर कपूर मिला दो और पीसो। जब खूब मिल जावें, उसमें अढ़ाई रत्ती कव्वेका खून भी मिला दो। इसमें से दो जौ भर लेकर, इसमें कई बूँदें तुलसीके रसको मिला दो और ३।४ बूँद यह चीज़ रोगीकी नाकमें टपकाओ। इससे पागलपन जाता रहता है। "इलाजुलगुर्बा"में लिखा है, यह एक फिरंगी डाक्टरका आज़मूदा नुसख़ा है।

ख़फ़क़ान या हौलदिल।

ख़फ़क़ान या हौलदिल अथवा दिलकी घबराहट मानसिक रोग है और उन्माद भी मानसिक रोग है। इलाजुल-गुर्वामें लिखा है, कि ख़फ़क़ानको ही संस्कृतमें "उन्माद" कहते हैं। इस रोगमें दिल फड़कता है और उससे घबराहट होती है।

असल बात यह है कि, हकीम लोग दिमाग़से होनेवाले उन्मादको "जिनूँन" और दिलकी धड़कनसे होनेवालेको "ख़फ़क़ान" कहते हैं डाक्टर लोग दिमाग़से होनेवाले उन्मादको "इन्सैनिटी" और दिलकी धड़कनसे होनेवालेको "पैलपीटेशन्" कहते हैं।

दिलमें किसी तरहसे कष्ट पहुँचनेसे धड़कन पैदा होती है। दिलमें कष्ट पहुँचनेके या इस रोगके पैदा होनेके मुख्य आठ कारण हैं:—

(१) दिलमें गरमी, सर्दी, ख़ुश्की या तरी पहुँचना।

(२) दिलमें ख़ूनका ज़ियादा भर जाना।

(३) दिलकी रगोंमें पित्तका आजाना।

(४) दिलमें कफका आजाना।

(५) दिलकी रगोंमें वायु भर जाना।

(६) ख़ून या वीर्यका बहुत निकलना या निकालना।

(७) दिलकी शक्तिका तेज़ और बलवान हो जाना।

(८) दिमाग़, जिगर, आमाशय, आँत, गर्भाशय, पट्टे और फेंफड़ोंके संयोगसे अथवा सब शरीरके संयोगसे अथवा विषैले जानवरोंके काटनेसे इस रोगका पैदा होना।

खफक़ान रोगके

पहले कारणके लक्षण और चिकित्सा।

पहले कारणमें दिलकी प्रकृतिका दुष्ट हो जाना है। इसके चार भेद हैं:—

(१) दिलमें गरमी होना।

(२) दिलमें सर्दी होना।

(३) दिलमें खुश्की होना।

(४) दिलमें तरी होना।

दिलमें गरमी पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलमें गरमी पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) नाडी बड़ी जल्दी, गहरी और बारम्बार चलती है।

(२) रोगीकी छाती गरम रहती है।

(३) प्यास बहुत लगती है।

(४) चिन्ता और घबराहट रहती है।

(५) हर समय जलन मालूम होती है।

(६) रोगीको शीतल हवासे चैन मिलता है।

(७) शरीर दुबला हो जाता है, क्योंकि दिलकी दूषित गरमी सारे शरीरमें घुस जाती है।

चिकित्सा ।

इस हालतमें नीचे लिखे हुए उपाय हित हैं :—

(१) कपूरकी टिकिया * मीठे अनारके शर्वतके साथ दो ।

(२) सफेद चन्दन और कपूर अर्क़ गुलाबमें घिसकर छातीपर लगाओ ।

(३) शर्वत चन्दन या शर्वत अनार पिलाओ ।

(४) मकानमें शीतल हवा आनेका प्रबन्ध करो ।

(५) रोगीको शीतल और सुगन्धित चीज़ें सुंघाओ ।

(६) रोगीको शीतल पथ्य पदार्थ खिलाओ ।

(७) अगर मवाद भरनेसे रोग हुआ हो, तो आगा-पीछा देखकर फस्त खोलो ।

नोट—दिलकी दुष्ट प्रकृतिके भेदोंमें नीचे लिखी बातोंको याद रखना चाहिये :—

(१) अगर रोगका कारण मवाद भर जाना हो, और अगर मवाद निकालने या दस्त करानेसे हानि न हो, तो पहले मवादको निकाल दो ।

(२) अगर फस्त खोलनेकी ज़रूरत हो, पर किसी वजहसे फस्त खोलना उचित न हो, तो दोनों कन्धोंके बीचमें पछने लगाओ ।

(३) दस्त कराने और फस्त खोलनेमें ज्वरका ख़याल रखो । विचार करो कि, ज्वर की दशामें इन कामोंके करनेसे हानि तो न होगी और ज्वर न होनेपर ज्वर तो न हो जायगा । अगर ज्वर है तो बिगड़ेगा तो नहीं—हकीमको इस मौक़े पर अक़्लमन्दीसे काम करना चाहिये ।

(४) शीतल चीज़ें सेवन कराओ, पर जैसी जरूरत हो, वैसी ही शीतल चीजें दो । जैसे,—गरमी जियादा हो तो कपूरकी टिकिया दो, नहीं तो मत दो । गरमी कम हो, तो दूसरी शीतल चीजोंसे गरमीको शान्त करो ।

---

* कपूरकी टिकियाकी विधि—गुलाबके फूल ७ माशे, वंसलोचन ३॥ माशे, सफेद चन्दन ३॥ माशे, ककड़ी खीरे के बीजोंकी मींगी १७॥ माशे, घीयाके बीजोंकी मींगी १७॥ माशे, काले खुरफेके बीज १७॥ माशे, केशर १७॥ माशे और कपूर ६ रत्ती—सबको महीन पीसकर "ईसबगोलके लुआबमें" खरल करो और चार-चार रत्तीकी टिकियाँ बना लो । यही कपूरकी टिकिया है । अगर "शर्वत अनार" बनाना हो, तो मीठे अनारका रस १ सेर और मिश्री १ सेर शामिल पकाकर शर्वत बना लो ।

(५) ठण्डी चीज़ें काममें लाओ, तो अजीर्ण और नर्मीका ख़्याल रखो। अगर तबियतमें अजीर्ण हो, तो इमली और आलूका निर्मल पानी वग़ैर. वैसी ही चीज़ें दो। अगर तबियत नर्म हो, तो खुरफ़का शोरा, नीबूका शर्बत या नारंगीका शर्बत आदि पिलाओ।

(६) पथ्य-अपथ्यका खूब ख़्याल रक्खो, लाभदायक चीजें खिलाओ-पिलाओ और हानिकारक चीजों से रोगीको बचाओ।

(७) अगर आमाशयमें कमज़ोरी हो, तो उसको न भूलो। इस अवस्थामें गुलाब और अर्क़ बेदमुश्क बहुत मुफीद है।

(८) इस बात पर सबसे जियादा ध्यान दो कि, गरमीकी अधिकतासे 'दिल'में फुन्सी और सूजन न पैदा हो। अगर यह डर न हो, तो गरमीकी शान्तिकी अधिक चेष्टा करो। ठण्ड करनेवाली चीजें लगाओ और दिलपर पुष्टिकारक चीज़ोंका लेप करो।

(९) जरूरतके समय जैसी मात्रा देनी चाहिये, वैसी ही दो। कभी-कभी मात्राकी कमीसे लाभ नहीं होता, तब मूर्ख वैद्य घबरा उठता है, पर इतना विचार नहीं करता कि, जलती आगमें थोड़ेसे पानीसे क्या होगा। इसी तरह उचितसे अधिक मात्रा देकर भी उल्टी हानि न करनी चाहिये। मतलब यह है कि, उपयुक्त मात्रासे ही रोग काबूमें आता है।

दिलमें सर्दी पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलकी दुष्ट प्रकृति ठण्डी होती है या दिलपर सर्दी पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए चिह्न देखे जाते हैं :—

(१) नाड़ी छोटी, सुस्त और विरुद्ध होती है।

(२) साँस निर्मल आता है।

(३) शरीरका बल घट जाता है।

(४) चेहरेका रंग उड़ जाता और चेष्टा जाती रहती है।

(५) भय, डर, कमज़ोरी और आलस्य पैदा होते हैं।

(६) गरम चीजें छूने, सूँघने और चखनेसे लाभ होता है।

चिकित्सा।

इस अवस्थामें नीचे लिखे हुए उपाय हितकारक हैं :—

(१) दीवाल मुश्क गर्म और मुफर्रा नामक नोशदारू, जिनकी विधि मालीखोलियाके इलाजमें, पृष्ठ ११७में लिखी हैं, सेवन कराओ।

(२) दिलके पुष्ट करनेके लिये शर्वत बादरंजबोया—शर्वत बिल्लोलोटन और शर्वत ऊद पिलाओ। इनमें केशर, कस्तूरी, अम्बर, बालछड़ और गुलाबके फूल—विचारपूर्व्वक मिला दो।

(३) बालछड़, नागर मोथा, दालचीनी, लौंग और गुलाबके फूल—इनको समान-समान लेकर पीसलो और फिर "दौना मरुआके स्वरसमें" खरल करके छातीपर लेप कर दो। अथवा तुलसीको "बादरंजबोया"के पानीमें पीसकर छातीपर लेप कर दो।

(४) चकोर, मुर्ग़ी, कबूतर आदि पखेरुओंका मांस—दालचीनी, केशर और ऊदसे सुगन्धित करके खिलाओ।

(५) रोगीको शीतल भोजन और शीतल जल न दो। शहदका पानी पिलाना उत्तम है।

दिलमें खुश्की पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलमें खुष्क दुष्ट प्रकृति पैदा होने या दिलपर खुश्की पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए चिह्न दीखते हैं :—

(१) नाड़ी छोटी रहती और लगातार चलती है।

(२) देह घुल कर दुबली हो जाती है। ऐसा दुबलापन पहलेसे बहुत कम होता है।

(३) इस रोगमें रोगी भय, खुशी, क्रोध और चिन्ताके गुणको जल्दी नहीं मानता। जब इनके असरको मानता है, तब वह गुण बहुत देर तक रहता है।

(४) रोगीको नींद नहीं आती।

(५) सूखी खाँसी चलती है।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस हालतमें लाभदायक हैं :—

(१) जौके पानीमें बादामका तेल और बूरा मिलाकर पिलाओ।

(२) तर और ठण्डे भोजन खिलाओ।

(३) अगर बुखार न हो, तो ताजा दूध पीना सब चीज़ोंसे अच्छा है।

(४) अगर रोगीको ज्वर हो, तो जौका वाट और बादामका तेल सबसे अच्छा है।

(५) सफेद मोमको, कद्दूके तेल और बनफ़शाके तेलमें पिघलाओ। फिर उसे हरे धनिया और काहूके पानीमें मिलाकर हाथसे खूब मलो। इसे "कीरूती अख़ज़र" कहते हैं। इसके छातीपर मलनेसे दिलकी खुश्की दूर हो जाती है।

(६) तपेदिकके इलाजमें लिखी हुई चीजें भी इस रोगमें लाभदायक हैं।

दिलमें तरी पहुँचनेके लक्षण ।

अगर दिलमें तर दुष्ट प्रकृति पैदा होने या दिलपर ज़ियादा तरी पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण दीखते हैं :—

(१) नाडी नर्म, सुस्त और विरुद्ध चलती हैं।

(२) भय, खुशी, क्रोध और चिन्ताका असर जल्दी होता है, पर वे देर तक ठहरते नहीं। तरी जिस तरह प्रवेशका असर जल्दी ग्रहण कर लेती है ; उसी तरह उससे वह असर दूर भी जल्दी हो जाता है। खुश्कीका काम इसके विपरीत है।

चिकित्सा ।

नीचे लिखे हुए उपाय इस दशामें हित हैं :—

(१) खानेके पदार्थ नम, मुलायम, हल्के और कम दो।

(२) लौंग, केशर और बादरंजबोया खिलाओ।

(३) शहदकी बनी सिकंजबीन और "पोदीना मिला हुआ अनारका शर्बत" * पिलाओ ।

(४) मामूली शारीरिक परिश्रम कराओ ।

(५) गर्म हम्माममें स्नान कराओ ।

(६) चनेका पानी और भुना हुआ मांस खिलाओ ।

(७) अगर किसी रोगीके मुंहमें पानी भरभर आवे, तो उसे 'एलुएकी गोली' और 'यारजकी गोली' खिलाकर मवादको निकाल दो ।

ख़फ़क़ान रोगके—

दूसरे कारणके लक्षण और चिकित्सा ।

(ख़ूनके बढ़नेसे दिलमें घबराहट)

लक्षण ।

अगर शरीरमें इतना ख़ून बढ़ गया हो, कि उसकी वजहसे शरीरके अवयव बढ़ गये हों—चाहें उसमें सड़ाँद न पैदा हुई हो—परन्तु ख़ूनके भर जानेसे घबराहट पैदा हो गई हो, तो रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जाते हैं :—

(१) रगें खिंचतीं और फूल जाती हैं ।

(२) नाड़ी बड़ी हो जाती है ।

(३) पेशाब गाढ़ा हो जाता है ।

---

* मीठे अनारका रस ९ माशे, पोदीनेका अर्क़ ४५ माशे और सफेद कन्द २७ माशे—इनको मिलाकर शर्बत पकालो ।

(४) शरीरमें थकान आदि होती हैं।

ये सब खूनके जियादा होनेके लक्षण हैं।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस हालतमें लाभप्रद हैं :—

(१) बायें हाथमें बासलीककी फस्द खोलो। इससे बहुत जल्दी लाभ होता है। *

(२) दही और कपूरकी टिकिया पिलाओ।

(३) भोजनके लिए बिना मांसका शोरबा दो।

(४) अगर किसी वजहसे फस्त खोलना उचित न जंचे, तो पिंडलियोंपर पछने लगाकर, दोनों कन्धोंके बीचमें पछने लगाओ।

(५) वीर्यका निकलना अधिक लाभदायक है, बशर्ते कि वीर्य निकलनेके बाद थकान न हो।

(६) प्रकृतिकी समानताके लिये वही उपाय लाभदायक हैं, जो गर्म दुष्ट प्रकृतिमें या गरमीके लक्षणकी चिकित्सामें लिखे गये हैं। देखो पृष्ठ१३१—१३२

(७) अगर प्रकृतिमें गरमी बहुत हो, तो उन शीतल और ठण्डे उपायोंसे काम लो, जो पित्तकी घबराहटमें, अगले सफोंमें, लिखे जायँगे। पर इस बातको न भूलो कि, अगर रोगी कमज़ोर होता है, तो शीतल शर्बत और शीतल भोजन असली गर्मीको नुक़सान पहुँचाते हैं। इस हालतमें थोडासा कबाबा † लौंग और इलायची महीन पीसकर, शर्बत और भोजनमें मिलाकर देना मुफीद है।

---

* एक आदमी हर साल दिलकी धडकनके रोगमें फँस जाता था। हकीम जालीनूस उसकी फस्त खोल देता था। चौथे वर्ष, धडकन होनेसे पहले ही फस्त खोली गई और फिर यह रोग न हुआ।

† कबाबाका दूसरा नाम कबाबचीनी या शीतल-मिर्च है।

खफ़क़ान रोगके

तीसरे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(पित्तसे दिलमें धड़कन होना)

लक्षण।

अगर पित्त रगोंमें घुसकर धड़कन पैदा करता है, तो रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जाते हैं :—

(१) चिन्ता बहुत रहती है।

(२) नींद नहीं आती।

(३) प्यास बहुत लगती है।

(४) दिलमें घबराहट रहती है।

(५) पित्तके और-और लक्षण भी होते हैं।

चिकित्सा।

अगर पित्तके रगोंमें आनेसे दिल धड़कता हो और ऊपर लिखे पित्तकोपसे होनेवाले लक्षण पाये जाते हों, तो नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) पित्त निकालनेके लिए हरड़का काढ़ा, बनफ़शाका शर्बत और इमलीका नितरा हुआ पानी पिलाओ। जैसे भी हो, गरमीको शान्त करो।

(२) अगर उचित समझो, तो बासलीककी फस्त खोलकर थोड़ासा खून निकालो।

रोगीको "चन्दनकी पोशाक" पहनाओ। चन्दनकी पोशाक पहनाकर,

उस पर थोड़ा-थोड़ा "गुलाब जल" छिड़को। ख़ासकर, दिल और छातीके ऊपरके कपड़ेपर तो बारम्बार छिड़कते रहो। "चन्दनकी पोशाक" बनानेकी तरकीब फुटनोटमें देखिये *।

(४) अगर गरमीकी अधिकतासे दिलमें फुन्सी और सूजन होनेका डर हो, तो अफीम ३ रत्ती, सेबके बीज ६ रत्ती, कपूर २ रत्ती, केशर १ रत्ती और कस्तूरी १ रत्ती—सबको मिलाकर रोगीको दो।

(५) दूसरे कारणके लक्षण और चिकित्सामें यानी ख़ूनके बढ़नेसे होनेवाली दिलकी घबराहटमें (देखो पृष्ठ १३५-३६) जो उपाय लिखे गये हैं, वे भी यहाँ काम आ सकते हैं, क्योंकि ख़ूनी और पित्तकी घबराहट, दोनोंका एक ही इलाज है। सिर्फ इतना ही फ़र्क़ है, कि ख़ून बढ़नेसे होनेवाले रोगमें ख़ून जियादा निकाला जाता है और पित्तसे होनेवाले रोगमें ठण्डक जियादा पहुंचानी होती है।

(६) जिस तरह ख़ून बढ़नेसे होनेवाली दिलकी घबराहटमें "कपूरकी टिकिया" खिलाते हैं; उसी तरह इस पित्तकी दिली घबराहटमें भी कपूरकी टिकिया देते हैं। एक प्रकारकी कपूर टिकिया बनानेकी विधि हम पृष्ठ १३१के फुटनोटमें लिख आये हैं। अब एक दूसरी तरकीब लिखते हैं:—गुलाबके फूल १४ माशे, बंसलोचन १४ माशे, नीलोफ़र १४ माशे, खुरफेके बीज ७ माशे, ककड़ीखीरेके बीजोंकी मींगी ७ माशे, घीयाके बीजोंकी मींगी ७ माशे, नहरके कीकड़े जले हुए ३॥ माशे, मुलहटी ३॥ माशे, केशर २ रत्ती, कपूर २ रत्ती, समगअरबी यानी बबूलका गोंद ५। माशे, कतीरा ५। माशे और तुरंजबीन—ओस खुरासानी ३५ माशे लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस छनी हुई दवाको "बिहीदानेके लुआबमें" गूंद कर टिकिया बना लो।

(७) अगर दिलमें गरमी बहुत हो, तो यह सफूफ या चूर्ण

---

* चन्दनकी पोशाक—सफेद चन्दनको गुलाब-जलमें घिसो और थोड़ासा कपूर भी घिसते समय उसमें मिला दो। फिर उसे पानीमें घोलकर, उसमें साफ सफेद कपड़ेको रंग लो और उसे हवामें सुखा लो। यही "चन्दनकी पोशाक" है।

देना चाहिये :—गुलाबके फूल ३॥ माशे, वंसलोचन ३॥ माशे, सूखा धनिया ७ माशे और कपूर ३ रत्ती—सबको कूट-पीस कर छान लो। इसकी मात्रा ४॥ माशेकी है। अनुपान—सेवका पानी है; यानी दवा खिलाकर ऊपरसे सेवका स्वरस पिलाना चाहिये।

(८) अगर रोगीको प्यास और गरमीकी शिकायत बहुत हो, तो यह शर्बत पिलाओ। इससे प्यास और गरमी फौरन शान्त होती हैं :—खट्टे अनारका रस, खट्टे आलूओंका नितरा हुआ पानी, इमलीका नितरा हुआ पानी, नीबूका रस और खट्टे अँगूरोंका पानी—इन सबको बराबर-बराबर ले लो और वज़नमें जितने ये सब रस या पानी हों, उतना ही बूरा ले लो। फिर सबको पकाकर शर्बत बना लो।

(६) इस रोगमें ताज़ा मछली सिरकेमें पकी हुई बहुत लाभदायक है; और सबसे ज़ियादा लाभदायक उपाय शीतल हवामें रोगीको रखना है।

नोट—हकीम महम्मद ज़करिया कहते हैं कि, अगर गरमीकी धड़कन वाला आदमी गरम शहरमें रहता है, तो उसकी उम्र कम हो जाती है। मैंने गरम धड़कनवालोंको पचास या साठ साल तक जीते नहीं देखा।

ख़फ़क़ान रोगके

चौथे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(कफसे दिलमें धड़कन होना।)

लक्षण।

अगर दिलकी धड़कन कफके कारणसे होती है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) श्वासमें तंगी आ जाती है।

(२) नाड़ी नर्म हो जाती है।
(३) रोगी नामर्द सा हो जाता है।
(४) बेहोशी सी हो जाती है।
(५) रोगी ऐसा समझता है, मानो उसका दिल पानीमें डूबा जाता है।

चिकित्सा।

इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय हितकारक हैं :—

(१) पहले मवाद निकालनेके लिये इस्तमखाकूनकी यह गोली दो, जिसमें "यारज" मिला हो। अथवा हुब्बकोकाया दो। अथवा ३॥ माशे यारज फयकरा और अफ्तीमून महीन पीसकर शहतकी बनी सिकञ्जबीनमें मिलाकर खिलाओ। अगर दिलमें रतूबत जम गई हो, तो यारज लोगाजिया और स्यादरोतूस दो।

(२) जिस रोगीको वमन कराओ, उसे मवाद निकलनेके बाद, दीवालमुश्क कड़वी और मीठी * अथवा माजून गर्म दो।

(३) कूठ, बालछड़ और दालचीनी—इनको महीन पीसकर, मौलसरीके स्वरस और तुलसीकी शराबमें मिलाकर दिलपर लगाओ।

---

* दीवालमुश्क कड़वीकी विधि—अफसन्तीनरूमी २१ माशे, फुलुश्रा २१ माशे, जरावन्द मुदहरिज २१ माशे, अजवायन १४ माशे, केशर १४ माशे, अजमोद १४ माशे, बालछड ७ माशे, तेजपात ७ माशे, जुन्देबेदस्तर ३॥ माशे और कस्तूरी ३॥ माशे—सबको पीस-छान कर साफ "शहदमें" मिला लो। मात्रा ४॥ माशेकी। अनुपान—अर्क गावजुबाँ।

मीठी दीवालमुश्ककी विधि—कचूर ७ माशे, दरूनज ७ माशे, मोती ५। माशे, कहरवा ५। माशे, मूंगेकी जड ५। माशे, रेशम कच्चा कतरा हुआ ५। माशे, बहमन सुर्ख २ माशे, बहमन सफेद २ माशे, तेजपात २ माशे, छोटी इलायची २ माशे, लौंग २ माशे, जुन्देबेदस्तर २ माशे, छरीला २ माशे, सोंठ १ माशे, पीपर १ माशे और कस्तूरी ६ रत्ती—सब दवाओंको पीस-छान कर "कच्चे शहदमें" मिला लो।

(४) कफकी या ठण्डी धड़कनवालेको नीचेका चूर्ण भी अच्छा है :—

कहरवा ३॥ माशे, ज़ुन्देवेदस्तर ३॥ माशे, नीबूका छिलका १॥ माशे और रामतुलसीके बीज ८॥। माशे—इनको महीन पीस-छान कर रखलो और "शहदमें" मिलाकर चटाओ।

अथवा।

पोदीना, कहरवा, विरिया, भुनी फिटकरी, नागरमोथा हरेक १०॥ माशे ; ज़रावन्द मुदहर्रिज १॥। माशे, दरुनज अकरबी १॥। माशे, कस्तूरी ६ रत्ती, वालछड़ ३॥ माशे, मोती ३॥ माशे और बूरा ७० माशे—इन सबको कूट-पीसकर छान लो। मात्रा १०॥ माशे। अनुपान—तुरवुदका काढ़ा।

(५) मालीखोलियाके इलाज (पृष्ठ ११७) में लिखी हुई "नोशदारु" इस रोग पर परीक्षाकी हुई है।

लक्षण।

अगर वायु या वादी दिलकी रगोंमें आकर इकट्ठी हो जाती है, तो दिल तक हवा पहुँचनेमें और भाफके परमाणुओंके निकलनेमें गड़बड़ या ख़राबी हो जाती है। उस समय दिलमें घबराहट होती है। इस दशामें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) हर समय दिल घबराया करता है।

(२) नाड़ी कड़ी हो जाती है।

(३) मालीखोलिया रोगकी तरह चिन्ता, भयङ्कर घबराहट और बुरे-बुरे विचार प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस रोगमें हित हैं :—

(१) मालीखोलिया खूनीमें जो फस्त आदि उपाय लिखे गये हैं, वह सब इस रोगमें करने चाहिये। देखो पृष्ठ १०५—११४।

(२) अगर वादी कफसे पैदा हुई हो, तो पहले नीचे लिखा हुआ जुलाब दो—तुर्बुद सफेद १ तोले, अफ्तीमून १ तोले, गारीकून १ तोले, उस्तखद्दूस १ तोले, क़ाबुली हरड़ १ तोले, अयारज फयकरा १॥ तोले और अगर ६ माशे—इन सातोंको महीन पीस-छान कर गोलियाँ बनालो। मात्रा ७ से १०॥ माशे तक है।

अगर वादी पित्तसे पैदा हुई हो, तो नीचे लिखा हुआ जुलाब देकर मवाद निकालो—तुर्बुद १ तोले, अफ्तीमून १ तोले, सनाय मकी १ तोले, पित्तपापड़ा १ तोले, एलुआ २ तोले, लाज़वर्द मग़मूल ८ माशे, मस्तगी १ तोले और गुलाबके फूल ४ माशे—इन आठों दवाओंको महीन पीस-छान कर "मीठे सेवके रसमें" घोटकर गोलियाँ बना लो। मात्रा १४ माशेकी है।

अगर मवाद वादीका ही हो, तो नीचे लिखा हुआ जुलाब दो—छोटी हरड़ ३॥ माशे, बड़ी हरड़ ३॥ माशे, अफ्तीमून १॥ माशे, लौंग १॥ माशे और दोवाल मुश्क कड़वी १०॥ माशे—इन पाँचोंको मिलाकर ३ दिन तक रखी रहने दो, ताकि मिल जायँ। फिर "शराब रिहानीमें" मिलाकर खिलाओ।

(३) इस रोगमें गुनगुने पानीसे नहाना लाभदायक है।

नोट—शेष उपाय मालीखोलियामें देखिये।

ख़फ़क़ान रोगके

छठे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(खून या वीर्यके निकल जानेसे धड़कन होना।)

लक्षण।

जब शरीरसे बहुतसा खून या वीर्य निकल जाता है या निकालनेका काम पड़ता है अथवा कोई विशेष दोष निकल जाता है या खाने-पीनेसे कोई निकम्मा माद्दा पैदा होता है या खून बहुत कम और पतला बनता है या खून बिगड़ जाता है, तब दिलमें धड़कन होती है। जब शरीरसे कोई विशेष तरी निकल जाती है, तब दिलमें निर्बलता हो जाती है और जब दिल निबल हो जाता है, तब उसपर छोटी-छोटी चीज़ोंका भी असर होता है। यहाँतक कि, वह भोजन की भाफके परमाणुओंसे कष्ट पाता और घबरा जाता है।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय हितकारक हैं :—

(१) जैसा कारण हो, वैसा इलाज करो। हानिकारक पदार्थों से रोगीको रोको। रोगके कारणको नष्ट करो। खून पैदा करनेको अच्छे-अच्छे भोजन दो। दिलको आराम पहुँचानेवाली दवाएं सेवन कराओ।

ख़फ़क़ान रोगके

सातवें कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(दिलकी ज्ञान शक्तिके तेज और बलवान होनेसे धड़कन)

लक्षण ।

जब दिलकी ज्ञानशक्ति तेज और बलवान हो जाती है, तब उसमें थोड़ीसी तक़लीफ़ होनेसे भी उसका असर हो जाता है और वह उसे दूर करनेके लिये घबराता है। कभी-कभी उसकी ज्ञानशक्तिकी तेज़ी यहाँतक बढ़ जाती है, कि दोषों और भाफके परमाणुओं तकसे उसे कष्ट होता है और इसलिये धड़कन पैदा होती है। ज्ञानशक्तिका बढ़ना अच्छा है, पर चूंकि उससे चिन्ता होती है और कभी-कभी रोगी शीतल जल पीनेसे भी घबरा उठता है, अतः इस रोगका इलाज होना जरूरी है।

चिकित्सा ।

नीचे लिखे हुए उपाय इस दशामें लाभदायक हैं :—

(१) चूंकि रूहके सूक्ष्म होनेसे ज्ञानशक्ति तेज़ हो जाती है, अत. उसके गाढा करनेके लिए कल्ला और हरीसा खिलाओ। बलवर्द्धक दवाओं और भोजनोंसे दिलको ताक़तवर बनाओ। गरमी और सर्दीसे रोगीकी रक्षा रखो।

नोट—रोग दिलकी ज्ञानशक्तिके बढनेसे है या दिलकी कमजोरीसे, इसकी पहचान यह है, कि ज्ञानशक्तिके तेज होनेसे शरीर आरोग्य रहता है, नाड़ी बड़ी और बलवान रहती है, पर निर्बलता होनेसे विपरीत लक्षण पाये जाते हैं।

ख़फ़क़ान रोगके

आठवें कारणके लक्षण और चिकित्सा ।

(दूसरे अङ्गोंके संयोगसे धड़कन होना)

लक्षण ।

इसके कई भेद हैं ; यानी नीचे लिखे हुए कारणोंसे भी दिलमें धड़कन पैदा हो सकती है :—

(१) दिमाग़के संयोगसे ।

(२) जिगरके संयोगसे ।

(३) आमाशय, आँतों, गर्भस्थान, पर्दों और फेंफड़ेके सम्बन्धसे ।

(४) सारे शरीरके संयोगसे ।

(५) विषैले जानवरोंके काटनेसे ।

चिकित्सा ।

इस तरहके रोगमें जिस अंगसे तकलीफ हो, उस अङ्गको अपनी असली दशा पर लाओ ; साथ ही दिलको पुष्ट करो । जैसे,—दिमाग़के संयोगसे रोग हो, तो दिमाग़को दुरुस्त करो—उसकी ख़राबीको दूर करो और दिलको मजबूत करो । आमाशयके संयोगसे रोग हो, तो आमाशयको दुरुस्त करो और दिलको पुष्ट करो । इसी तरह औरों के सम्बन्धमें समझलो ।

———

ख़मीरा सन्दल।

सफेद चन्दनका बुरादा ६ तोले ३ माशे लेकर अर्क़ गुलाब या पानीमें भिगो दो। सवेरे ही औटाकर पानीको छान लो। उस पानीमें आध सेर "मिश्री" डाल कर चाशनी करो। अगर शर्बत बनाना हो, तो चाशनी पतली रखो और अगर ख़मीरा बनाना हो तो गाढ़ी रखो। इसके सेवन करनेसे पित्तका उन्माद, ख़फ़कान या हौल-दिल रोग आराम हो जाता है।

शर्बत गाँवज़ुबाँ।

पाव भर गाँवज़ुबाँको रातके वक्त पानीमें भिगो दो। सवेरे ही औटाकर पानी छान लो। फिर उस पानीमें एक सेर "मिश्री" मिलाकर चाशनी कर लो। इस शर्बतके पीनेसे उन्माद नाश होता और मन बलवान होता है।

शर्बत रेशम।

कच्चा रेशम १३-तोले ४ माशे, तीन दिन तक पानीमें भिगोकर औटाओ। जब तीसरा भाग पानी रह जाय, उस समय खौलते हुए पानीमें साजिज ७ माशे ४ रत्ती और बालछड़ ७ माशे ४ रत्ती, चन्दनका बुरादा १५ माशे और इलायचीके बीज १५ माशे—इन सबको एक थैलीमें भर कर और मुख बन्द करके डाल दो। फिर जल्दी ही नीचे उतार कर पानीको मल-छान लो और आध सेर

"मिश्रीमें" शर्वत पका लो । यह "शर्वत रेशम" दिलको वलवान करनेमें वहुत अच्छा है। इससे हौल-दिल और उन्माद अवश्य आराम हो जाते हैं।

रूईके फूलोंका शर्वत ।

रूईके फूल गुलावजल या पानीमें औटा लो। जव आधा पानी रह जाय, छानकर दूने गुड़में चाशनी कर लो। मात्रा ६ तोले ८ माशे। इससे मनमें वल आता है, दिल खुश होता है, उन्माद, दाह और पागलपन नाश होते हैं।

रंगतरेका शर्वत ।

रंगतरेका गूदा फाँकोंसे निकालकर कुचल लो और कपड़ेमें निचोड़कर रस निकाल लो। जितना रस हो, उतनी ही मिश्री मिलाकर चाशनी कर लो और शेषमें थोड़ासा गुलावजल मिलाकर उतार लो और छान लो। इस शर्वतके पीनेसे पित्तका उन्माद नाश होता और मन वलवान होता है। "इलाजुल गुर्वा"के लेखकका आज़मूदा नुसख़ा है।

शर्वत अनन्नास ।

अनन्नासका रस १ भाग और मिश्री २ भाग मिलाकर चाशनी पका लो और छानकर रख लो। अगर चाशनीमें थोड़ा गुलावजल मिला दो तो और भी अच्छा। इससे दिलमें ताक़त आती है।

चाँदनीके फूलोंका गुलक़न्द ।

चाँदनीके फूल १०० और सफेद मिश्री ३३ तोले ४ माशे—इनको खूब मसल कर, थोड़ासा गुलाव मिला दो और चालीस रात चन्द्रमाकी चाँदनीमें रखो। पीछे एक तोलेकी मात्रासे खाओ। इससे पित्तका उन्माद नष्ट हो जाता है।

गुडहलका गुलक़न्द ।

गुड़हलके फूलोंको, उनकी सब्जी निकाल कर, दूनी मिश्रीमें

मसलो और रखलो। यह गुलक़न्द मन, बुद्धि और इन्द्रियोंको बलवान करता, ख़ुशी करता और विशेष कर उन्मादको नाश करता है।

गुलक़न्द हारसिंहार

हारसिंहारके फूलोंकी डंडी दूर करके उनकी सफेदी लेलो और दूने क़न्दमें मिला मसल कर, चालीस रात चाँदनीमें रखो। सवेरे ही १ तोला नित्य खानेसे यह गुलक़न्द पित्तके उन्मादको नाश करता और दिलको ताक़त देता है। पित्तके उन्मादके लिये अद्वितीय दवा है।

अर्क़ ख़स।

ख़सका अर्क़ भभकेसे खींचलो। केवल इसके पीनेसे पित्तका उन्माद चला जाता है। अगर इस अर्क़में मिश्री मिला ली जाय या मिश्री और अर्क़ पकाकर ख़मीरा बना लिया जाय और थोड़ासा "ख़सका इत्र" मिला कर सेवन किया जाय, तो उन्माद और ज्वरकी गरमी नाश हो जाय। पुस्तक-लेखकने कई बार अर्क़-निकाल कर लाभ उठाया है।

फुटकर नुसख़े।

(१) नाजबोंके बीज १ तोले लेकर रातको पानीमें भिगो दो और हवामें रख दो। सवेरे ही ४० माशे मिश्री मिलाकर, चमचेसे निगल जाओ। इससे पित्तकी हौलदिली नाश हो जाती है।

(२) पान खानेसे सर्दीकी हौलदिली आराम हो जाती है।

(३) अफीम खानेसे पित्तका उन्माद नाश हो जाता है।

(४) रेवन्दचीनी पानीमें पीसकर, दोनों कन्धोंके बीचमे लगानेसे उन्माद जाता रहता है।

(५) चनेकी दाल १६ माशे रातको आध पाव पानीमे भिगो दो।

सवेरे ही खूब मल कर और मिश्री मिला कर खाओ। खट्टी और बादी चीज़ोंसे परहेज़ करो। इससे उन्माद नाश हो जाता है।

(६) ईसबगोल १ तोला लेकर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उसका लुआब निकाल कर, उसमें थोड़ीसी मिश्री मिला लो और पीलो। इससे उन्माद जाता रहेगा।

(७) इमली पानीमें भिगो कर मल-छान लो और चीनी मिलाकर नित्य पीओ। इससे पित्तका उन्माद जाता रहता है।

(८) पानी या अर्क़ गुलाबमें कहरुवेका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तजन्य हृदयकी धड़कन बन्द हो जाती है। हृदयमें बल उत्पन्न करनेकी इसमें अजीब ताक़त है। कहरुवेकी माला गलेमें पहननेसे हृदयमें बलकी वृद्धि होती और हृदयकी धक-धकाहट बन्द हो जाती है।

नोट—कहरुवा मगजके लिए नुकसानमन्द है। सिरमे दर्द करता है। बनफशा इसके हानिकारक असरको नाश करता है। कहरुवेकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। इसके बदलेमें चन्दरस, प्रवाल और मोती बरते जाते हैं। गर्भवतीके गलेमें कहरुवेकी माला पहना देनेसे गर्भकी रक्षा होती है। वह गिरता नहीं। कहरुवेको महीन पीसकर घावोंपर छिड़कनेसे घाव भरते और सूख जाते हैं।

(९) हृदयकी धड़कन, खाँसी, जुकाम, आमाशय रोग (अतिसार, रक्तातिसार और प्रवाहिका) प्रमेह और मूत्रनलीके रोगोंमें "तुख़्म बालंगा" पानीमें भिगोकर, ठण्डाईकी तरह, चीनी मिलाकर पीनेसे अवश्य लाभ होता है। मात्रा ६ से ९ माशे तक है।

नोट—दूध और पानीमें तुख्मबालगाकी खीर बनाकर खानेसे वीर्य, स्तम्भन-शक्ति और रतिशक्ति—ये खूब बढ़ते हैं। गरमीके मौसममें इसको भिगोकर, इसमें चीनी या सन्तरेका रस मिलाकर पीना अच्छा है। इसको भिगोकर, कपडे पर मलहमकी तरह लगाकर, फोडे पर रख देनेसे यह चिपक जाता है। इससे कच्चा फोडा बैठ जाता और पका फूट जाता है। जलन, सूजन और लाली नाश हो जाती है।

अपस्मार-वर्णन ।

पाँचवाँ अध्याय

अपस्मार शब्दकी निरुक्ति ।

अपस्मार=अप+स्मार। अपस्मार शब्द 'अप' और 'स्मार'से बना है। अपका अर्थ नाश करने वाला है और स्मारका अर्थ स्मृति या यादुदाश्त है। जो स्मृति या यादुदाश्तको नाश करता है, उसे "अपस्मार" कहते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

> स्मृति भूतार्थ विज्ञानमपस्तत्परिवर्जनं ।
> अपस्मारइति प्रोक्तस्ततोऽय व्याधिरन्तकृत ॥

"स्मृति शब्दका अर्थ प्राणियोंका अर्थज्ञान या भूतार्थ-विज्ञान है और "अप" शब्दका अर्थ नाशक है। अप और स्मृति इन दो शब्दोंसे "अपस्मार" शब्द सिद्ध हुआ है। जिसे अपस्मार रोग होता है, उसे किसी बातकी याद नहीं रहती, क्योंकि उसकी स्मरण-शक्ति या याद रखनेको ताकत नष्ट हो जाती है। इसीसे अपस्मार या मृगी वालेको जलमें घुसने, पहाड़ या वृक्षादि पर चढ़नेकी मनाही है, क्योंकि उसे यह ज्ञान नहीं रहता, कि जलमें घुसे चले जाने या पहाड़ परसे कूदने प्रभृतिसे हमारी क्या हानि होगी।

"चरक"में लिखा है :—

> अपस्मार पुनः स्मृतिबुद्धिसत्त्वस प्रवाद्वीभत्स चेष्टमावस्थिक तमः प्रवेशमाचक्षते ॥
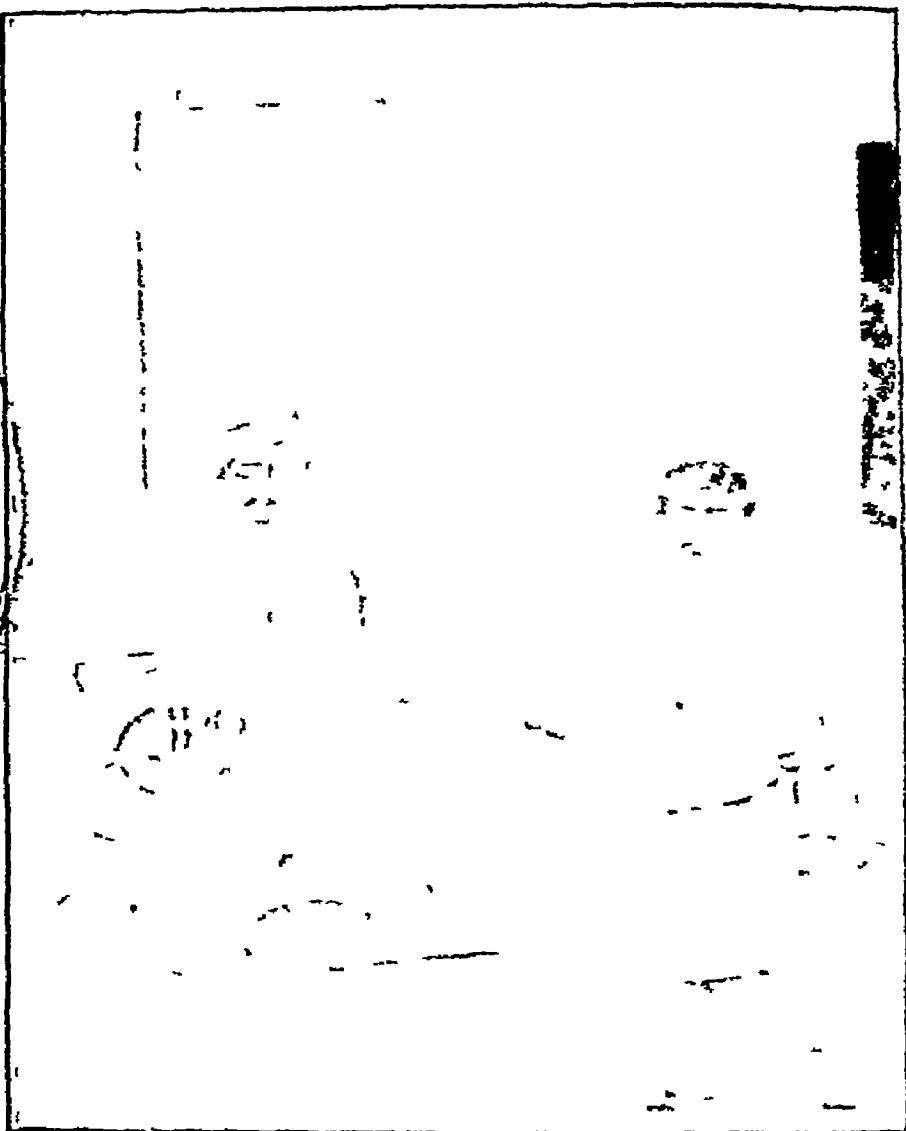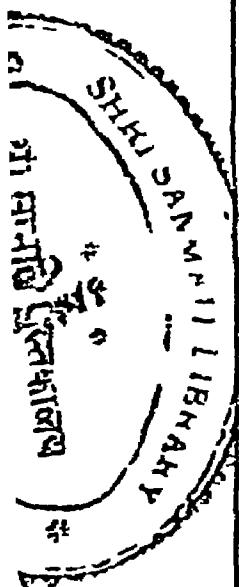
अपस्मार या मृगी रोगी।

ऊपर के चित्र में अपस्मार या मृगी रोगी बेहोश होकर गिर पड़ा है, मुँह से झाग निकल रहे हैं, दो आदमी उसे सम्हाले बैठे हुए हैं। उधर लिखे लक्षणों से मिलान करके लक्षणों को हृदयङ्गम कीजिये। पृष्ठ १५१

स्मरण, बुद्धि और सतोगुणके लोप होनेसे—बीभत्स चेष्टाओंके साथ, बहुत देर तक अँधेरेमें घुसे रहने और अज्ञानसे व्याप्त होनेको "अपस्मार" कहते हैं।

खुलासा यह है, कि मृगी रोग वालेको स्मरण-शक्ति, बुद्धि और सतोगुणका नाश हो जाता है। वह बहुत देरतक रहनेवाले अन्धकारमें प्रवेश करता और उसे अज्ञान घेर लेता है—यानी उसका ज्ञान नष्ट हो जाता है।

अपस्मारके सामान्य लक्षण ।

अपस्मार या मृगी रोगी अपने तईं अँधेरेमे घुसता हुआ देखता है, उसकी स्मृति या याद नाश हो जाती है, आँखोंमें विकार हो जाते हैं और वह हाथ पैरोंको इधर-उधर फेंकता है।

"चरक"में लिखा है, जब अपस्मार या मृगीका दौरा होता है, तब रोगी मिथ्या रूप देखता है, जमीन पर गिर पडता है और फड़कनेकी सी चेष्टा करता है। उसकी आँखें और भौंहें टेढ़ी हो जाती हैं, मुँहसे लार बहती है और वह हाथ-पाँवोंको इधर-उधर पटकता है। इसके बाद जब वातादिक दोषोंका वेग या जोर घट जाता या नष्ट हो जाता है, तब वह स्वस्थ और तन्दुरुस्त आदमीकी तरह होशमें आकर उठ बैठता है। ये अपस्मार या मृगीके साधारण लक्षण हैं।

डाक्टरी मतसे मृगीके सामान्य लक्षण ।

डाक्टर लोग मृगीको "एपिलेप्सी" कहते हैं। उनका कहना है कि, मृगी वाला एक साथ चीख मार कर गिर पड़ता है और उसके मुँहसे झाग आने लगते हैं। और किसी भी मूर्च्छामें रोगी चीख़ मार कर नहीं गिरता और मुँहमे झाग भी नहीं आते। मृगीकी मूर्च्छा और अन्य प्रकारकी मूर्च्छाओंमे यही बड़ा भेद है।

डाक्टरीमें लिखा है,—मृगी रोगमें स्पर्शशक्ति या छूनेकी ताक़त नहीं रहती, आत्मज्ञान-शून्यता हो जाती है ; शरीर ऐंठता है, नेत्र,

मस्तक, हाथ और शरीरको कोई मरोड़े डालता हो ऐसा मालूम होता है, भीतरसे रोनेकी सी आवाज़ आती है, साँस लेनेमें तकलीफ होती है, साँस रुकने लगता है और कभी-कभी तो बन्द ही हो जाता है।

रोगी दाँतोंको घिसता या चबाता है, अपनी जीभको काटता है, बिना इच्छाके पाखाना-पेशाब फिर देता और वीर्य भी निकल जाता है। आँखें घूमने लगती हैं, साँस जल्दी-जल्दी लेता है, मुँहसे झाग निकलते हैं, चेहरे और शरीरका रंग मलीन हो जाता है, नाड़ीकी चाल स्वाभाविक रहती है और पसीने आते हैं। ऐसे लक्षण कुछ सेकन्डोंसे लगाकर १० मिनट तक रहते हैं।

जब मृगी दूर हो जाती है, रोगी कमजोर होकर उठता और सोना चाहता है। इस नींदसे रोगी जल्दी नहीं उठता।

यह रोग माँ बापके किसी रोगमें ग्रस्त रहनेसे, बहुत ज़ियादा शराब पीनेसे, अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे, हस्तमैथुन करनेसे और किसी तरहका विष या ज़हर खानेसे—दिमाग़में खून जमा होकर—होता है। फिर इस रोगके दौरे होने लगते हैं।

होमियोपैथीवाले कहते हैं,—बेहोशी और मुँहसे झाग निकलना, इस रोगके मुख्य लक्षण हैं। यह रोग प्रायः रातके समय अपना हमला या दौरा करता है।

एलोपैथीवाले लिखते हैं कि, मृगीवालेका ज्ञान नष्ट हो जाता है, उसे कुछ भी सुध-बुध नहीं रहती, अतः घरवालोंको चाहिये कि उसे अकेला न छोड़ें। जब मृगी आवे इस बातकी होशियारी रखें कि, रोगी अज्ञानवश अपने किसी अंगमें चोट न लगा ले। ऐसा रोगी प्रायः अपनी जीभ काटा करता है, अतः मुँहमें दाँतोंके नीचे कपड़ेकी गेंद या काठका टुकड़ा अथवा रबड़ दे दें और उसे साफ हवादार मकानमें रखें।

हकीमी मतसे मृगीके सामान्य लक्षण।

हकीमी ग्रन्थोंमें लिखा है, कि मृगी रोगमें ज्ञान और चलने-

फिरनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, प्रकृति बदल जाती है और रोगी ज़मीनपर गिर पड़ता है। अरबीमें इस रोगको "सरा" कहते हैं।

मृगी रोगमें सामान्यतया आठ लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) मृगीवालेकी जीभ पीली होती है, पर उसकी नीचेकी रग हरी होती हैं।

(२) दिल उदास रहने या थोड़ा भी क्रोध आनेसे सिर भारी हो जाता है।

(३) मृगी आनेसे पहले जीभ भारी हो जाती है।

(४) बुरे-बुरे स्वप्न दीखते हैं।

(५) भूलनेकी आदत हो जाती है।

(६) रोगीको हरेक चीज़से भय लगता है।

(७) मुंहसे झाग आते हैं।

(८) मालीखोलिया (एक तरहका उन्माद) रोगीकी तरह बुरे-बुरे विचार दिलमें उठने लगते हैं।

(९) दिलकी तंगीसे असन्तोप पैदा होता है।

(१०) थोड़ेसे काममे रोगी निस्स्वार्थ क्रोध करता है।

नोट—ये सब दिमागी मृगीके लक्षण हैं। यों तो हिकमतके मतसे मृगी रोग दिमाग में गड़बड होनेसे ही होता है ; पर हकीमोंने इसे दिमागके सिवा, शरीरके और अंग—आमाशय, तिल्ली और जिगर प्रभृतिकी ख़राबी और विषैले जन्तुओंके काटनेसे भी माना है। इन हालतोंमें भी मृगोकी पैदायश दिमागसे ही होती है। जैसे,—आमाशय जब दूषित वात, कफ और पित्तसे भर जाता है, तब उनकी भाफके परमाणु ऊँचे उठ कर दिमागकी तरफ जाते हैं। दिमागको इनसे तकलीफ होती है, अतः वह इनसे बचनेके लिए सुकड़ जाता है। दिमागके सुकड़नेसे रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं ; इसलिये दोषोंकी गाँठ पड़ जाती है और फिर मृगी रोग पैदा हो जाता है।

निदान और सम्प्राप्ति।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

चिन्ताशोकादिभिर्दोषाः क्रुद्धाहृत्स्रोतसिस्थिताः।
कृत्वास्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्वते॥

चिन्ता, शोक, क्रोध, मोह, लोभ आदिसे वात, पित्त और कफ कुपित हो जाते हैं। फिर वे हृदय * में रहनेवाली और मनको बहाने वाली नाड़ीमें जाकर स्मृतिका नाश करके, अपस्मार या मृगी रोग पैदा कर देते हैं।

"चरक"में लिखा है, जिसका चित्त रजोगुण और तमोगुणसे घिरा रहता है; जिसके दोष उद्भ्रान्त, विषम और अधिक होते हैं; जो भोजनके नियमोंके विपरीत मैला, ख़राब और अपवित्र खाना खाता है; जो शास्त्रमें लिखे हुए नियमोंके विरुद्ध काम करता है और जिसका शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है,उसके वातादि दोष कुपित होकर

* आयुर्वेदाचार्योंमेंसे अधिकांश तो सञ्ज्ञा और बुद्धिका मूल स्थान "हृदय"को मानते हैं, पर कितने ही मूर्द्धा या दिमागको भी मानते हैं। जो हृदयको सञ्ज्ञा और बुद्धिका मूलस्थान मानते हैं, उनके मतसे मृगी रोगकी उत्पत्ति "हृदय"से होती है, पर जो मूर्द्धा या दिमागको सञ्ज्ञा और बुद्धिका मूलस्थान मानते हैं, उनके मतसे यह रोग दिमागसे होता है। अगर काशिराज धन्वन्तरि मृगी-रोगीके दिमागमें फितूर न समझते, तो शिरोविरेचनकी आज्ञा न देते। उन्होंने कहा है :—

तीक्ष्णैरुभयतो भागे. शिरश्चापि विशोधयेत्।
पूजां रुद्रस्य कुर्वीत तद्गणानां च नित्यश.॥

तेज वमन और विरेचन देकर वैद्य नीचे ऊपरसे रोगीकी सफाई करे और नस्य देकर सिरकी भी शुद्धि करे तथा नित्य शिवजी और उनके गणोंकी पूजा किया करे।

सुश्रुतके "शिरश्चापि विशोधयेत" से साफ मालूम होता है, कि हमारे आयुर्वेदज्ञ महर्षि भी मृगीको दिमागसे मानते थे। हाँ, उन्होंने इसका खुलासा कहीं नहीं किया। जियादा जोर हृदय पर दिया है। हकीम और डाक्टर इसे दिमागी रोग कहते ही हैं। वास्तवमें, मृगी रोग दिल और दिमागकी बीमारी है।

और रजोगुण-तमोगुणके अत्यन्त वशीभूत होकर, अन्तरात्माके निवास-स्थान—हृदयमें डेरा डाल देते हैं। वही आदमी जब काम, क्रोध, मोह, लोभ आदिके वशीभूत होता यानी चिन्ता, शोक या क्रोध आदि करता है, तब हृदयमे ठहरे हुए वे ही दोष उत्तेजित होकर स्मरणशक्तिको नाश कर देते हैं। इस अवस्थाका नाम ही "अपस्मार" या "मृगी" है।

खुलासा यह है, कि जब रजोगुण और तमोगुणके अत्यन्त वशीभूत हुए वात आदि दोष संज्ञावाही स्रोतों—धमनियों या रगोंमें भर जाते हैं, तब मनुष्यको संज्ञा नहीं रहती। चित्त-विभ्रान्त मूढ या बेहोश आदमी हाथ पैर पटकता हुआ ज़मीनपर गिर पड़ता है। उसके जीभ, भौं और नेत्र विकृत हो जाते हैं। वह दाँत कटकटाता और झाग निकालता है। उसकी आँखें फटी हुई सी हो जाती हैं। थोड़ी देर बाद वह मनुष्य फिर होशमें आ जाता है। इस तरह बारम्बार इस रोगका दौरा होने लगता है।

पूर्वरूप।

अपस्मार रोग होनेसे पहले नीचे लिखे हुए लक्षण नज़र आते हैं :—

(१) हृदय काँपना, (२) सूनापन,
(३) पसीने आना, (४) विस्मय या अति चिन्ता
(५) बेहोशी, (६) बुद्धि बिगडना
(७) नींद न आना।

नोट—चरकने अपस्मारके पूर्वरूपोंमें बिना आवाज़के आवाज़ सुनाई देना, अथवा सुननेकी शक्तिका नष्ट हो जाना, मुँहसे लार गिरना, नाकसे मवाद आना, अन्नका न पचना, हृदयमें पीड़ा होना, कूखमें गुड-गुडाहट होना, आँखोंके सामने अँधेरी आना तथा मोह, मूर्च्छा और भ्रम आदिका होना लिखा है।

अपस्मारकी संख्या।

अपस्मार या मृगी चार तरहकी मानी गई हैं :—

(१) वातज, (२) पित्तज
(३) कफज, (४) त्रिदोषज।

नोट—यूनानी चिकित्सावालोंने भी मृगी चार तरहकी मानी हैं :—

(१) कफ़की, (२) वातकी,
(३) खूनकी, (४) पित्तकी।

इन चार भेदोंके सिवा हिकमतवालोंने दिमागके सिवा, शरीरके अन्यान्य अङ्ग—आमाशय, तिल्ली, जिगर और गर्भाशयसे पैदा होनेवाली सात तरहकी और विषैले जन्तुओंसे होनेवाली अलग लिखी हैं।

वातज मृगीके लक्षण।

"भावप्रकाश"में लिखा है, अगर रोगीका शरीर काँपे, रोगी दाँत चबावे, मुँहसे झाग निकाले, ऊँचे साँस ले और उसे आगके समान लाल-लाल रूप अपने चारों तरफ दीखें तो "वातज मृगी" समझो।

"सुश्रुत"में लिखा है, अगर रोगी काँपता हुआ दाँतोंको भींचे, जल्दी-जल्दी साँसले, मुँहसे झाग गेरे और कहे कि कोई काला-काला रूप मेरे पीछे दौड़ता है या सामने दीखता है, तब मुझे बेहोशी होती है—तो "वातज मृगी" समझो।

"चरक"में लिखा है, जिस प्राणीकी स्मरणशक्तिका सदैव नाश हो और क्षण-क्षणमें संज्ञा लाभ हो, जिसके दोनों नेत्रोंकी पुतलियाँ सुकड़ जायँ; जो सदैव बकवाद करे; मुँहसे झाग डाले; जिसकी गर्दन फूलीसी हो, जिसके सिरमें दर्द रहा करे; जिसके हाथ-पैर स्थिर न रहें; जिसके नेत्र, मुख, चमड़ा और नाखून लाल रंगके हों; जिसका चित्त स्थिर न हो; जो चपल, कठोर और रूखे पदार्थ देखे

तथा वादी करनेवाले पदार्थ सेवन करनेसे जिसका रोग बढ़े और वात नाशक पदार्थोंसे रोग शान्त हो, उसे "वातज मृगी" समझो।

खुलासा यह है कि वातज मृगीवाला काँपता और मुंहसे आग गिराता है तथा उसे काली या लाल नाना प्रकारकी मिथ्या मूर्त्तियाँ दीखती हैं।

नोट—हिकमतमें लिखा है, अगर वादीसे मृगी रोग होता है तो ख़फ़क़ानपन होता है, दिल फड़कता है और मुंहके झागोंका जायका खट्टा होता है। अगर झाग ज़मीनपर गिर पड़ते हैं, तो उनकी तेजी या खटाईसे जमीन, सिरकेकी तरह, उबलने लगती है। वातज मृगी कफजसे बुरी है। क्योंकि कफ दिमागकी प्रकृतिके अनुकूल होता है और अनुकूल चीज कम हानि करती है।

पित्तज मृगीके लक्षण।

जिसके शरीर और नेत्रोंमें पीलापन हो, प्यास लगे, जिसे संसारके सभी पदार्थ आगसे घिरे हुए दीखें, उसे "पित्तज मृगी" समझो।

"सुश्रुत"में लिखा है, जो ताप—गरम शरीर, प्यास, पसीने और मूर्च्छासे दुखी हो, जो अंगोंको धुनता हुआ बेहोश हो जाय और कहे कि, कोई पीला भयंकर रूप मेरे आगे या पीछेसे दौड़ा आता है, उसके बाद मैं बेहोश हो जाता हूँ,—उसे "पित्तकी मृगी" समझो।

"चरक"में लिखा है, जो प्राणी भ्रष्टस्मृति हो ; क्षण-क्षणमें होशमें आवे, कंठसे न समझमें आनेवाली आवाज़ निकाले, ज़मीन पर हाथ-पैर पटके ; जिसके नाखून, नेत्र, मुंह और चमड़ा हल्दीके रंगकेसे, हरे या लाल हों और जो खूनसे तर, उग्र, भयानक, प्रकाशित और क्रोधित रूप देखे तथा पित्तकारक पदार्थोंके सेवन करनेसे जिसका रोग बढ़े और पित्त नाशक चीज़ोंसे शान्त हो, उसे "पित्तज मृगी" समझो।

खुलासा—पित्तकी मृगीमें पीले झाग निकलते हैं तथा मुंह, आँख और शरीरका रंग पीला हो जाता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, पित्तज मृगी होनेसे रोगी बहकता है, बेचैनी रहती है, घबराहट होती है, मृगी आनेके समय गरमी बहुत लगती है, क़य होती है, मुँह और नेत्र पीले हो जाते हैं। मृगी जल्दी चली जाती है। पित्तकी वजहसे मृगी बहुत कम होती है, क्योंकि पित्तका मल बहुत हल्का और पतला होता है।

कफज मृगीके लक्षण।

जिस मनुष्यके शरीरका, मुँहके झागोंका और नेत्रोंका रंग सफेद हो; अंगोंमें भारेपन हो, सर्दी लगे, रोएँ खड़े हों, संसारके सभी पदार्थ सफेद-ही-सफेद दीखें और बहुत देरके बाद चित्त शान्त हो या होश हो, उसे "कफज मृगी" रोग है।

"सुश्रुतमें" लिखा है,—जो सर्दी, मुँहमें पानी भर-भर आने और नींदसे पीड़ित हो; जमीन पर गिरता हुआ मुँहसे झाग डाले और कहे कि सफेद रंगका भयंकर रूप मेरे आगे या पीछेसे दौड़ता आता है, उसके बाद मैं बेहोश होता हूँ,—उसे "कफज मृगी" है।

"चरक"में लिखा है, जो देरमें नष्टस्मृति हो और देरमें ही होशमें आवे, जो जमीन पर गिर कर हाथ-पाँव आदिको इधर-उधर न पटके, मुँहसे लार गिरावे, जिसके नाखून, नेत्र चमड़ा और मुँह सफेद रंगके हों, जो सफेद और भारी रूपोंको देखे तथा कफकारी चीज़ोंसे जिसका रोग बढ़े और कफनाशक पदार्थोंसे नाश हो, उसे "कफज मृगी" है।

खुलासा—कफज मृगीमें मुंहसे सफेद झाग निकलते हैं और शरीर शीतल हो जाता है। वातज और पित्तज मृगीकी अपेक्षा इस मृगी वालेको देरमें होश होता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, कफकी मृगी होनेसे बुद्धि बिगड जाती है, इन्द्रियाँ सुस्त हो जाती हैं, सिरमें बोझना मालूम होता है, मृगी आनेके समय मुँहमें झाग बहुत आते है, मुँहसे थूक और नाकसे मवाद बहुत निकलता है, शरीर ढीला रहता है और हिलने चलनेमें कठिनाई होती है।

सन्निपातज मृगीके लक्षण ।

अगर तीनों दोषोंके अपस्मारके लक्षण हों, तो सन्निपातज मृगी समझो। सन्निपातज मृगी असाध्य होती है। क्षीण प्राणीकी एक-दोषज मृगी भी असाध्य होती है। बहुत पुरानी मृगी भी असाध्य होती है।

"सुश्रुत"में लिखा है, सन्निपातकी मृगीमें हृदयमें वेदना, प्यास और उत्क्लेश—ये तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं तथा बकवाद, कूजन और क्लेश, ये भी होते हैं। सब दोषोंके मिले हुए काले, लाल, पीले और सफेद भयंकर रूप दीखते हैं अथवा कभी कैसे और कभी कैसे रूप रोगीको बेहोश होनेसे दीखते हैं।

योषापस्मारका वर्णन ।

(हिस्टीरिया)

निदान—कारण ।

गर्भाशयमें ख़राबी होने, रजःस्राव न होने या कम होने, स्वामी या पतिसे मुहब्बत न होने, पतिके निष्ठुर आचरण करने या कम भोग करने, वैधव्य अवस्थामें रंज या शोक़ करने, दस्तकब्ज़ रहने और अजीर्ण वग़ैरः होनेसे युवती स्त्रीको एक प्रकारका अपस्मार या मृगी रोग होता है, उसे संस्कृतमें "योषापस्मार" और अँगरेज़ीमें" "हिष्टीरिया" कहते हैं।

पूर्वरूप।

हिष्टीरिया रोग होनेसे पहले छातीमें दर्द होता है, जँभाई आती है, शारीरिक और मानसिक ग्लानि होती है तथा संज्ञानाश हो जाती है।

लक्षण।

कोई विना वजहके हँसती है, रोती है, चीख़ती चिल्लाती है, अपने रिश्तेदारोंपर वृथा दोपारोप करती है, अपने तई वृथा अपराधी समझ कर माफी माँगती है—ऐसे-ऐसे लक्षण होते हैं। मूर्ख लोग इन लक्षणोंको देखकर भूतावेश या भूतबाधा समझते हैं। किसी-किसी रोगिणीके पेटके नीचेसे एक गोलासा उठकर ऊपर आता दीखता है तथा शरीरके किसी भागमें दर्द होता है। वह सफेद चीज़ या उजेला देखने और ऊँची आवाज़ सुननेसे चमक उठती है। इस रोगवाली पुरुषसंगकी विशेष चाह रखती है।

नोट—इस रोगका इलाज मूर्च्छा रोगकी तरह करना चाहिये। मूर्च्छा और अपस्मारकी दवाएँ,—घी, तेल आदि इस रोगमें हितकारी हैं। अगर रजोधर्म बन्द हो गया हो या ठीक न होता है, तो पाँचवें भागमें लिखी विधिसे उसे ठीक करना चाहिये।

हिकमतमें भी दिमागके अलावः शरीरके और अंगोंसे होनेवाली मृगीमें लिखा है, कि एक तरह की मृगी वीर्याशय या गर्भाशयके दोषोंसे होती है। रजोधर्मके बन्द हो जाने या मैथुन न करनेके कारण वीर्यके रुकनेसे जब रज और वीर्यकी तलछट वीर्याशय और गर्भाशयमें जमा होकर बिगड़ जाती है, तब उनके परमाणु दिमाग की तरफ चढ़कर मृगी रोग पैदा करते हैं। अगर ऐसी मृगी होती है तो रोजधर्म बन्द रहता है। पेड़ू, चड्ढे, गुर्दे और पेटमें दर्द और बोझ जान पड़ता है। यह रोग गर्भाशयमें विकार होनेसे बहुधा गर्भवती स्त्रियोंको होता है और बालक पैदा होने पर जाता रहता।

हिष्टीरिया सम्बन्धी नयी नयी बातें।

इस रोगका पुराना नाम भूतोन्माद है। अङ्गरेज़ीमें इसे आम तौरसे हिष्टीरिया (Hysteria or Hysterics) कहते हैं। जबतक इस रोगके सच्चे कारणोंका पता न लगा था, तबतक लोग इसको देवता, पितर और भूत-पिशाच आदिकी पीड़ा मानते थे। इसीसे इसका नाम हिष्टीरिया या भूतोन्माद पड़ा। लेकिन चूंकि अब इसके कारणोंका पता लग गया है, इसलिये अब इसे भूतोन्माद न कहकर "गर्भाशयोन्माद" या "योषापस्मार" कहते हैं।

डाक्टर गनकी "फैमिली फ़ीज़ोशियन" नामक पुस्तकमें लिखा है :—Hysteria is an affection peculiar to females and is characterised by a sense of suffocation, stupor, rumbling noise in the bowels, followed by the sensation of a ball rising from the stomach to the throat, sometimes convulsions, laughing or crying without any apparent cause, interrupted sleep, sighing, and more or less flatulence. अर्थात् हिष्टीरिया रोग खासकर औरतोंको होता है। जब यह रोग होता है, गला घुटता जान पड़ता है, शरीरमें सख्त सुस्ती या मजहूली वेहोशीसी होती है, आँतोंमें गड़गड़ाहटकी सी आवाज़ होती है। इसके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला आमाशयसे उठकर गलेमें जा रहा है। कभी-कभी तशन्नुज या वाइँटे आते हैं। रोगिणी बिना किसी ज़ाहिरा वजहके हँसती और रोती है। एक प्रकारकी नींद, आँहें भरना और कमोवेश अफारा—ये लक्षण भी देखे जाते हैं।

हिष्टीरिया रोगका हमला होनेसे पहले बदमिज़ाजी, चिन्ता-फिक्र, आँसुओंकी धारा, साँसकी तंगी या साँस लेनेमें कठिनाई और

दिलकी धड़कन ये लक्षण देखे जाते हैं। पेटकी बाईं तरफ दर्द मालूम होता है, जो पेटसे ऊपरकी ओर गलेमें चला जाता और गोलेके कारणसे पैदा हुआ मालूम होता है। इसके बाद रोगीका दम घुटता है, उसे ग़श आता है, होश-हवास जाते रहते हैं और कदाचित उसे वेहोशी या संज्ञाशून्यता हो जाती है। रोगी कमोवेश हाथ पैरोंको हिलाता चलाता है। कभी हँसता है, कभी रोता है और कभी चीख़ता-चिल्लाता है तथा वाहयात और वेसिर पैरकी ऊलजलूल बातें बकता है। इसके बाद, थोड़ी देरके लिए, सौदाई सा हो जाता है। अन्तमें तशन्नुज आना बन्द हो जाता है और डकारें आने लगती हैं। रोगिणी आहें भरती और सिसकती या टुनुकती है। इसके बाद वह भली चङ्गी हो जाती है और दौरेके वक्तकी कोई बात कदाचित ही उसे याद रहती है। हाँ, उसे सिरमें थोड़े-बहुत दर्द और बदनमें वेदनाका अनुभव अवश्य होता है। हिष्टीरियाके दौरोंमें खतरेकी सम्भावना कभी ही होती है। जबतक यह रोग मृगी—अपस्मार, उन्माद या मानियाका रूप धारण नहीं करता मृत्युकी संभावना नहीं होती।

यह रोग नाज़ुक-बदनों या दुर्बल शरीरवालोंपर चिन्ता-फ़िक्र, शोक-ग़म प्रभृतिका असर पड़नेसे होता है। ख़ासकर जवान औरतें इसकी शिकार होती हैं। डाक्टर गन साहब लिखते हैं:—Females, from puberty to the age of thirty five, are most subject to it अर्थात् विशेष करके उठती जवानीकी युवतियोंसे लेकर पैंतीस सालकी अवस्था तककी स्त्रियोंको यह रोग होता है। यद्यपि यह रोग नाज़ुक-मिजाजों, नाज़ुक-बदनों और कमजोर-तबियतवालोंको जियादा होता है; तथापि उन्हें और भी ज़ियादा होता है, जिनका रजोधर्म या माहवारी ख़ून हैज यकायक बन्द हो जाता है या अकसर रुक जाया करता है।

पण्डित मयारामजी आर्यवैद्य 'वैद्यकल्पतरु'में लिखते हैं:—आज-

कलकी खोजसे मालूम हुआ है, कि यह रोग मग़ज़ और मज्जा-तन्तुओंकी विकृतिसे होता है। इसके लक्षण अपस्मार या मृगी रोगसे मिलते-जुलते हैं। इस रोगवाला एक अजीव चमत्कारक ढंगसे जमीन या विस्तरोंपर गिर पड़ता है और कभी-कभी बैठ जाता है। उसकी छाती उछलने लगती है। उस समय वह एकदमसे बेहोश नहीं हो जाता। वह ठहर-ठहर कर रोता या लोटता है। ऐसा होते-होते वह निश्चेष्ट—स्तब्ध या बेसुध हो जाता है। फिर वह कुछ मिनटों या घण्टों तक उसी हालतमें रहा आता है। कोई-कोई १२, २४, ३६, ४८ या ७२ घण्टों तक उसी हालतमें देखे गये हैं। इस रोगके होनेसे पहले मज्जातन्तुओं या ज्ञानतन्तुओंमे ख़राबी देखी जाती है। प्रधानतया गलेमें गुल्म होनेका भ्रम होता है। इसके साथ-साथ किसी-किसीके पेटमें दर्द भी होता है। इसको "गर्भाशयोन्माद गुल्म" कहते हैं।

आर्त्तवकी प्रवृत्तिके समय इसका बल अधिक होता है। इस रोगसे शरीरके किसी भागमें असह्य वेदना होती है। वहाँ कोई घुस बैठा हो, ऐसा जान पड़ता है; किन्तु उस समय, उस दुःखको सुनाते समय, रोगीकी वाणी स्तम्भित हो जाती है, ज़बान बन्द हो जाती है। कच्चे मनवालेको तो ये सब भूतके ही काम मालूम होते हैं। उसके मनमें जिसका शक होता है, उसीका नाम ले लेकर पुकारता है।

यह रोग किसी दूसरे रोगका रूप धारण नहीं करता, सो बात नहीं है। यह किसी भी रोगका रूप ले लेता है। इसमे प्रधानतया अन्नमार्गका संकोच, पेटका दर्द, सन्धिवात, खूनकी कमी, सन्धियोंके अन्य रोग, आधासीसी और मूत्राशयकी शक्तिका ह्रास इत्यादि लक्षण होते हैं।

इस रोगमें पेट फूल कर डकार आना एक दुःखद लक्षण है। कितनों ही को खाँसी आती है, कितनो ही की आवाज बैठ जाती

है, किसीका साँस चढ़ता है, किसीको पेशाब बहुत होता है और वह निस्तेज दीखता है एवं कितनों ही का पेशाब रुक सा जाता है। कितने ही रोगी प्यासके मारे बहुतसा पानी पीकर और कितने ही बहुतसा पेशाब करके होशमें आ जाते हैं।

इस रोगका मुख्य कारण मनकी कमज़ोरीके सिवाय दूसरा समझमें नहीं आता। मग़ज़के और शरीरके ज्ञानतन्तुओंके अव्यवस्थित रूपसे उत्तेजित होनेसे यह रोग पैदा होता है। जिनका मनोधर्म, अपूर्ण शिक्षाके कारण, यथार्थ रूपसे नहीं बनता अथवा जिनमें धैर्य्यादि सद्गुण नहीं होते उन्हीको यह रोग होता है।

गर्भाशयोन्माद और अपस्मारमें भेद।

—oo%o%oo—

इन दोनो रोगोंमें बहुत कुछ समानता है। गर्भाशयोन्माद या हिष्टीरियामें सर्वथा बुद्धिका ह्रास नहीं होता, पर अपस्मार या मृगीमें एक दमसे बुद्धिका ह्रास हो जाता है। अपस्मार रोगी मृगीका दौरा होनेसे पहले चिल्लाता है, पर हिष्टीरियावाला ऐसा नहीं करता। हिष्टीरियाकी बेहोशीमें गाढ़ीं नीद नही आती और जीभ नही दबती, पर मृगीमें ये दोनों बातें होती हैं। हिष्टीरियावालेको पेटसे ऊपरकी ओर गोलासा चढ़ता मालूम होता है, पर अपस्मारवालेको यह नहीं मालूम होता।

हिष्टीरियावालेका मन अगर कच्चा होता है, तो वह ऐसे-ऐसे तूफान करता है कि, उसकी बातही न पूछिये। उसको भूत पलीतके आवेशका बड़ा शक रहता है। इसीसे वह देवी-देवताओं और भूत-प्रेतोंकी मिन्नत मानता है और उनकी मानतासे आराम होनेकी उम्मीद रखता है। कभी-कभी ऐसे विचारवाले आराम भी हो जाते हैं, क्योंकि मनका प्रभाव शरीरपर अवश्य ही होता है। एक स्त्रीको हिष्टीरियामें खूनकी कय होती थीं। उसने देशी-विदेशी बहुत इलाज किये,

पर किसीसे लाभ न हुआ। अन्तमें उसने देवताकी मानता मानी और वह आराम हो गई।

अपस्मारके अरिष्ट चिह्न।

जिस मृगी रोगीके अंग अधिक फड़कते हों या बारम्बार कँप-कँपी आती हों, शरीर क्षीण हो गया हो, नेत्र विकृत हो गये हों, दोनों भौंहें चलायमान होती हों या फड़कती हों, वह रोगी किसी तरह भी मौतके पञ्जेसे बच नहीं सकता।

सन्निपातकी मृगी, क्षीण पुरुषकी मृगी और पुरानी मृगी असाध्य होती हैं।

अपस्मारके प्रकोपका समय।

वातज मृगीका दौरा १२ दिनमें होता है और इस बीचमें भी ज़रा ज़ोर दिखाता है।

पित्तज मृगीका दौरा १५ दिनोंमें होता है और पखवारेके बीचमें भी ज़रा ज़ोर करता है।

कफज मृगीका दौरा १ महीनेमें होता है और महीनेके बीचमें भी ज़रा ज़ोर होता है।

मृगीका दौरा कभी-कभी महीने-भरसे ज़ियादा दिनोंमें भी होता है। इस रोगका दौरा नित्य नहीं होता।

नोट—किसी तरहकी मृगीका बारह दिनोंमें, किसीका पन्द्रह दिनोंमें और किसीका ३० दिनोंमें दौरा होता है—ऐसा क्यों होता है? अपस्मारके कारणरूप दोष सदा मौजूद रहते हैं, फिर अपस्मार सदा क्यों नहीं होता?

जिस तरह उत्पत्तिके कारणरूप वर्षाके पूरी तरहसे होनेपर भी, बथुए वगैरः के बीज, स्वभावके कारण, शरद ऋतुमें ही पैदा होते हैं; उसी तरह कारणरूप दोषोंके होनेपर भी, अपस्मार स्वभावसे ही १२, १५ और ३० दिनोंमें कोप करता है।

हिकमतके मतसे मृगीका वर्णन ।

मृगी रोगमें ज्ञान और चलने-फिरनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, प्रकृति बदल जाती है और रोगी गिर पड़ता है, इसलिये इस रोगको अरबी जबानमें "सरा", संस्कृतमें "अपस्मार" और बोलचालकी भाषामें "मृगी" कहते हैं।

इस रोगका पूरा कारण मवादकी गाँठ है, जो दिमाग़के पर्दों और पट्ठोंके छेदोंमें पैदा होती है और जिसके कारणसे दिमाग़ी रूह अपने मार्गमें होकर पट्ठोंमें जा नहीं सकती। इस कारणसे पट्ठे खिच जाते हैं।

अगर मृगीका कारण मवादकी गाँठ न होती, तो ज्ञानादि शक्तियोंकी क्रियाओंमें उपद्रव न होता और पट्ठोंमें ऐंठन भी न होती। अगर मवादकी गाँठ पूरी होती है, तो ज्ञानादि शक्तियाँ सर्वथा जाती रहती हैं, जैसा कि सक्तेमें देखा जाता है।

यद्यपि मृगी रोग दिमाग़के अगले हिस्सेसे सम्बन्ध रखता है, परन्तु नजदीक होनेसे दूसरे भागोंमें भी कष्ट पहुँचाता है। अगर दूसरे भागोंमें कष्ट न पहुँचाता, तो ज्ञानशक्ति और स्मरणशक्ति नष्ट न होतीं।

मृगी रोगकी जियादती और कमी—इस रोगके हेतु या कारणकी ज़ियादती और कमीके अनुसार होती है, इसीलिये "ज़ख़ीरे ख़ाज़्मशाही" नामक ग्रन्थका लेखक लिखता है, कि बहुधा ऐसा भी होता है, कि किसी-किसीको मृगी पैदा होकर जाती भी रहती है।

मृगी रोगमें ऐंठन होती है। ऐंठनीके तीन कारण हैं:—

(१) रगोंका भर जाना, (२) पट्ठोंमें खुश्की होना, और (३) पट्ठो और भेजेका खिंचना-सिमटना। परन्तु मृगीकी ऐंठन खुश्कीसे नहीं होती। उसकी ऐंठन रगोंके भर जाने या दिमाग़के सिमटनेसे होती है। दिमाग़के सिमटनेके कारण हैं :—दिमाग़की ज्ञान-शक्तिकी तेज़ी, भाफके परमाणुओंका ऊपर चढ़ना और विषैली दशा या नफ़रत करके भागना।

जब दिमाग़मे बहुतसा मल जगह पकड़लेता है और किसी वजहसे उस मलमेंसे थोड़ासा हिलता या फैलता है अथवा उस मलकी भाफके परमाणु फैलते हैं और छेदोंमें भर जाते हैं, तब सम्पूर्ण या पूरी गाँठके पैदा होनेसे भी मृगी रोग हो जाता है।

जब कभी मल दिमाग़के सिवा किसी दूसरे अंगमें ठहर जाता है और उसकी भाफके परमाणु दिमाग़में चढ़ते हैं, तब निकम्मी दशासे या दिमाग़के सिमटने अथवा भाफके परमाणुओंकी अधिकतासे राहें भर जाती हैं, तब भी गाँठ पैदा हो जाती है और उस गाँठके कारण मृगी आने लगती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मल बिल्कुल न हो, पर कोई ज़हरीला जानवर—बिच्छू या बर्र वग़ैरः—किसी अंगमें इस तरह डंक मारे कि, उसका ज़हर उस अङ्गके पट्ठे में फैल कर, दूसरे अङ्गोंके संयोगसे, दिमाग़मे जा पहुंचे। दिमाग़को उस ज़हरका वहाँ पहुंचना बुरा मालूम हो और वह अपने तईं उससे बचानेके लिये सुकड़ जाय। दिमाग़के इस तरह सुकड़नेसे भी मृगी और ऐंठन पैदा हो जाती है।

यहाँ तक जो लिखा है, उसमें मृगी पैदा होनेके तीन तरीके बताये हैं :—

(१) दिमाग़के पर्दों और पट्ठोंके छेदोंमें मवादकी गाँठ पड़ना और उसके कारणसे पट्ठोंका खिंचना और मृगी होना। यह

बिल्कुल दिमाग़ी मृगी है। इसके कारण दिमाग़में ही पैदा होते हैं।

(२) दिमाग़को छोड़ कर, शरीरके दूसरे अंगों—आमाशय, तिल्ली, गर्भाशय, आँतें और हाथ पैर वग़ैरःमें मवादका ठहरना, वहाँसे उस मलकी भाफका उड़-उड़ कर दिमाग़में आना, दिमाग़का उस भाफसे बचनेके लिए सिमटना और मृगी पैदा होना।

(३) मवाद न होने पर भी, किसी विषैले जानवरका किसी अंगमें डंक मारना। ज़हरका उस अङ्गके पट्ठेमें फैल कर, और अङ्गोंके संयोगसे, दिमाग़में जा पहुंचना। दिमाग़का उस ज़हरसे बचनेके लिए सुकड़ना-सिमटना। दिमाग़के सुकड़नेसे मृगी रोग पैदा होना।

अब साफ मालूम हो गया कि, मृगी रोग असलमें तीन तरहका होता है :—

(१) दिमाग़से होने वाला।

(२) शरीरके आमाशय वग़ैरः अंगोंसे होने वाला।

(३) विषैले जानवरोंके काटनेसे होने वाला।

नोट—असलमें तीनों तरहके मृगी रोग दिमाग या मस्तिष्कके पट्ठो के खिंचने या फड़ने—सिमटनेसे होते हैं; पर मृगी रोगके हेतुओ के पैदा होनेके स्थानोंके अनुसार उसकी तीन किस्में मान ली गई हैं। पहले प्रकारकी मृगीका मवाद दिमागमें ही होता है। दूसरे प्रकारकीका मवाद आमाशयादि अङ्गो में पैदा होता है, पर भाफके रूपमें दिमागमें जा पहुँचता है और तीसरे प्रकारकीका मवाद सर्प बिच्छू वगैरः के काटे हुए स्थानसे दिमागमें जा पहुँचता है। मतलब यह है कि मृगीका कारण रूप मल कहीं भी क्यों न पैदा हो, पर उसके दिमागमें जाये बिना मृगी रोग नहीं होता। इससे यह मालूम हुआ, कि मृगी रोग तो दिमागसे ही पैदा होता है। उसके कारण या हेतु कहीं क्यो न पैदा हों।

दिमाग़से होने वाली मृगी चार तरहकी होती हैं :—

(१) कफकी । (२) वादीकी ।

(३) खूनकी । (४) पित्तकी ।

कफकी मृगीके लक्षण ।

बुद्धिका बिगड़ जाना, इन्द्रियोंका सुस्त हो जाना, सिरमें बोझासा मालूम होना, मृगीके समय मुँहमें झागोंका बहुतायतसे आना, थूक और रहँटका ज़ियादा निकलना, शरीरका ढीला रहना, प्रकृतिका शीतल हो जाना और कठिनतासे हिलना-चलना—ये कफकी मृगीके लक्षण हैं ।

वादीकी मृगीके लक्षण ।

अगर वायुके प्रकोपसे मृगी रोग होता है, तो ख़फ़क़ानपन होता है, दिल फड़कता है, मुँहके झागोंका स्वाद खट्टा होता है और झाग यदि ज़मीनपर गिर जाते हैं, तो उनकी तेज़ी और खटाईसे ज़मीन उबलने लगती है ।

मृगी आनेसे पहले झूठे विचार, चिन्ता, सन्देह और सोच-फिक्र को ज़ियादती होती है । अगर यह रोग दिमाग़से और अंगोंमें भी फैल जाता है, तो भूख बहुत लगती है ।

वादीकी मृगी कफकी मृगीसे बुरी होती है, क्योंकि कफ दिमाग़-के अनुकूल होता है और जो चीज़ अनुकूल होती है, वह कम नुक़सान पहुँचाती है ।

खूनकी मृगीके लक्षण।

अकेले खूनसे मृगी रोग बहुत कम होता है, परन्तु वातरक्त (वादी और खून) और कफरक्त (कफ और खून) से—वादी और कफकी मृगीके समान—मृगी रोग अक्सर होता है।

अगर दिमाग़मे खून जियादा होता है, तो वहाँकी रगें खूनसे भरी रहती हैं, चेहरा लाल सुर्ख़ हो जाता है, मृगीके समय चेहरा भरभरा उठता है और कभी-कभी मृगी आनेके समय नाकसे खून भी गिरने लगता है।

इस प्रकारका मृगी रोग होनेसे पहले, रोगी तरह-तरहके मस्तक-शूल या सिर-दर्दोंमें फँसा रहता है। सदा सिर घूमा करता है। भौंर या चक्कर आया करते हैं। नेत्रोंके सामने अँधेरी सी आती रहती है।

अगर खूनकी मृगी जाती भी रहती है, तोभी सिरमें दर्द हमेशा हुआ करता है और बुद्धि बिगड जाती है। यह बात वातरक्त और वातकफके मलके अनुसार होती है।

पित्तकी मृगीके लक्षण।

पित्तकी वजहसे भी मृगी रोग बहुत कम होता ह, क्योंकि पित्तका मल बहुत हलका और पतला होता है, अतः इससे मृगी रोग कम होता और नहीं भी होता है।

बहकना, आनतान बकना, बेचैनी, घबराहट, मृगीके समय जियादा गरमी, वमन होना, मुख और आँखोंका पीला होना और मृगीका जल्दी ही जाता रहना,—पित्तकी मृगीके लक्षण हैं।

सूचना—हकीम रूफस साहब कहते हैं, जिस समय दिमागी मृगीवालेके सिर और माथेपर सफेद-सफेद दागसे पड़ जायँ, तब समझो कि मृगी रोगका माद्दा नष्ट हो गया।

नोट—वैद्यकमें भी चार तरहकी मृगी लिखी हैं। उसमें खूनकी मृगीका ज़िक्र नहीं है।

(मृगीकी दूसरी क़िस्म)

कंठके नीचेके अंगोंसे होनेवाली मृगी।

सात भेद।

दिमाग़से पैदा होनेवाली मृगी चार तरहकी होती है, उसका वर्णन हम ऊपर कर आये हैं। अब हम कंठसे नीचेके अंग—आमाशय, तिल्ली, जिगर, गर्भाशय और आँतों वग़ैरःसे पैदा होनेवाली मृगीके लक्षण लिखते हैं। यह मृगी सात तरहकी होती है :—

(१) आमाशयसे होनेवाली।

(२) तिल्लीसे होनेवाली।

(३) पेटके ऊपरकी झिल्लीकी जलनसे होनेवाली।

(४) जिगर, यकृत या लिवरके संयोगसे होनेवाली।

(५) वीर्याशय या गर्भाशयके दोषोंसे होनेवाली।

(६) आँतोंमें कीड़े वग़ैरः पड़नेसे होनेवाली।

(७) हाथ पैरोंमें दोष जमा होनेसे होनेवाली।

आमाशयकी मृगीके लक्षण।

जब आमाशय दूषित कफ, वात या पित्तसे भर जाता है, तब भाफके परमाणु वहाँसे उठ-उठकर दिमाग़की तरफ जाते हैं। उनसे दिमाग़ को तकलीफ़ होती है और वह उनसे बचनेके लिए सुकड़ जाता है, तब रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं और दोषोंकी गाँठ पड़नेसे मृगी पैदा हो जाती है। आमाशयसे पैदा होनेवाली मृगीमें नीचे लिखे ६ लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) उन्मत्तकी तरह आमाशय हिलता है।

(२) आमाशयमें, विशेष कर भूखके समय, जलन चुभन और कॅप-कॅपी होती है।

(३) मृगीके दौरेके समय रगें खिंचती हैं, नाकके नथने फूल जाते हैं, गला घुटासा हो जाता है, कभी-कभी रोगी चिल्ला उठता है और कभी-कभी दस्त, पेशाब या वीर्य्य निकल जाते हैं।

(४) वमन या कय होनेके बाद मृगीका ज़ोर घट जाता है।

(५) अजीर्ण होनेसे या मलके भरे रहनेसे मृगी अधिक ज़ोर दिखाती है या अपने समयसे पहलेही आ जाती है और देर तक ठहरती है। ये लक्षण आमाशयके दोषोंकी दुष्टतासे होते हैं; किन्तु दोषोंके बढ़नेसे प्रकट होते हैं। यह रोग जब दोषोंकी ख़राबीसे होता है, तब प्राय. सोते समय होता है।

आमाशय वाली मृगी ख़ाली पेट होने या भूखके समय ज़ियादा होती है, क्योंकि जब आमाशय ख़ाली रहता है, दोष आमाशयसे उठ कर दिमाग़में आसानीसे चले जाते हैं। उनको बीचमें रोकने वाला कोई नहीं होता। इसीसे आमाशयके भरे होने पर भी, बारम्बार खानेसे बहुत कम हानि होती है; क्योंकि आमाशयके भरे रहनेसे बुरा माद्दा दिमाग़ तक मुश्किलसे पहुचता है।

आमाशयकी मृगी बहुधा उचित भोजनसे जाती रहती है, दवा खानेकी दरकार नहीं होती।

दूसरी—तिल्लीकी मृगीके लक्षण।

जिस तरह आमाशयके कारणसे मृगी रोग होता है; उसी तरह "तिल्ली"से भी होता है। ऐसी मृगीमें तिल्लीका फूलना, उसका पत्थरकी तरह कड़ा होना और दर्द होना—ये लक्षण होते हैं।

तीसरी—तिल्लीकी मृगीके लक्षण।

पेटके ऊपरको झिल्लीमें जलन होनेसे भी मृगी रोग होता है। ऐसी मृगी होनेसे खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, पेट फूलता है,

पेटके ऊपरकी झिल्लीमें जलन होती है, बेचैनी रहती है, कय होती हैं और उनमें कच्चा अन्न निकलता है।

चौथी—जिगरसे होनेवाली मृगीके लक्षण।

यह मृगी जिगरसे होती है। इसके लक्षण वही हैं, जो जिगरके रोगोंके हैं।

पाँचवी—गर्भाशय या वीर्याशयकी मृगीके लक्षण।

यह मृगी रोग गर्भाशय या वीर्याशयके दोषोंसे होती है। जब रजोधर्म बन्द हो जाता है या कम होता है तथा मैथुन न करनेसे वीर्य रुका रहता है, तब रज और वीर्यकी तलछट जमा होकर बिगड़ जाती है। उस तलछटके परमाणु दिमाग़में चढ़ कर मृगी पैदा करते हैं।

ऐसी मृगी होनेसे रजोधर्म बन्द रहता है, पेड़, चड्डे, गुर्दे और पेटमें दर्द होता है एवं बोझासा मालूम होता है।

नोट—ऐसी मृगीमें रजोधर्म जारी करने वाली दवाएँ देना या मैथुन करना हित है।

छठी—आँतोंकी मृगीके लक्षण।

आँतोंमें कीड़े पड़नेसे, दूषित भाफके परमाणु वहाँसे उठकर दिमाग़में जाते हैं। उनसे रगोंमें गाँठ पैदा होकर मृगी रोग हो जाता है।

सातवी—हाथ-पाँवोकी मृगीके लक्षण।

यह मृगी हाथ या पैरोंमें दोषोंके जमा हो जानेसे होती है। जब वादीके कण वहाँसे उठकर दिमाग़की तरफ जाते हैं और दिमागको सुकेडते या खींचते हैं, तब मृगी रोग हो जाता है।

जब हाथ-पाँव आदि अंगोमें साफ और चेपदार मल चिपट जाता है और रूह हैवानी आजा नही सकती, तब उस दोष और उस जगहके खूनमें सरदी आ जाती है। उस सरदीसे ठण्डी वायु पैदा हो जाती है। कभी-कभी मलकी सरदी यहाँतक बढ़ जाती है, कि छूनेसे वह जगह मुर्देकी देह-जैसी शीतल मालूम होती है। फिर वही सर्दी वहाँसे निकल कर, पट्ठोके द्वारा, दिमाग़में पहुँचती है और दिमाग़के पट्ठोंकी रतूबतको गाढ़ी कर देती है, इससे दिमाग़ी रूहकी राहें तंग हो जाती हैं। फिर रगोमें गाँठ पैदा होकर मृगी हो जाती है।

बीमारको ऐसा मालूम होता है, मानो शीतल हवा उस जगहसे निकल कर और दूसरे अंगोमे होकर दिमागकी तरफ जाती है। मृगी आनेके समय आँखें खुली रहती हैं, आँसू भरभर आते हैं, मुँहका रंग काला पड़ जाता है और हाथ पैरोकी उँगलियाँ ऐंठने लगती हैं। दूसरे अङ्गोंमें भी खिंचाव होता है। मृगी आनेसे पहले जँभाई और अँगड़ाई बहुत आती हैं और पेशाब जल्दी-जल्दी होता है।

हकीम जालीनूस कहते हैं, कि एक लड़कोको यह रोग उसकी पिंडलीके दर्दसे होता था। उसे मालूम होता था, कि ठण्डे तीरसे दिमाग़की ओर चढ़ते हैं। और एक रोगीको उसके पाँवके अँगूठेसे शीतल चीज ऊपरकी ओर चढ़ती हुई मालूम होती थी।

हकीम रूफस कहते हैं, कि एक मर्दको यह रोग हाथकी पीठसे उठता था। वह कहता था कि, मेरा हाथ ऐसा शीतल हो जाता था, मानो बर्फसे दबा हुआ है।

(मृगीकी तीसरी क़िस्म)

विषैले जानवर वगैरः से होनेवाली ।

विषैले जानवरोंके काटनेसे होनेवाली मृगीके लक्षण ।

विषले जानवरोंके काटनेसे जो मृगी रोग होता है, वह जानवरोंके काटनेके बाद होता है, यही उसकी पहचान है ।

नोट—इस हालतमें विषनाशक अगद या तिर्य्याक देने चाहिये ।

इब्रीलमिओ मृगी ।

इस मृगीमें हाथ पैरोंकी ऐंठनके सिवा और चेष्टा नहीं होती । यह मृगी सबसे बुरी और प्राणनाशक है । इसमें मृगी आनेसे पहले ही शरीर ऐंठने लगता है, परन्तु और मृगियोंमें मृगी आनेके बाद ऐंठन आरम्भ होती है । यह मृगी कफ या वातसे होती है । अतः इसमें कफ-वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और ऐंठनका उपाय ऐंठन रोगमें लिखी विधिसे करना चाहिये ।

बालकोंकी मृगीके लक्षण ।

इसे बहुत लोग "मसानका रोग" कहते हैं । यह मृगी गरमीके ज्वरके साथ पैदा होती है । इसके ज्वरमें खुश्की बहुत होती है, रोम-कूप बन्द हो जाते हैं, पसीना क़तई नहीं आता और पेशाब सफेद होता है ।

छोटे बालकोंको मृगीके अधिकतासे होनेका यह कारण है, कि उनके दिमाग़के भीतर जन्मसे ही रतुवतें हुआ करती हैं । वे कभी गर्भमें ही निकल जाती हैं और कभी सिरमें घाव और सूज़न होकर उस राहसे निकल जाती हैं । अगर वे रतूबते गर्भाशयमें नहीं

निकल जातीं और जन्म लेनेके बाद भी नहीं निकलतीं, तो मृगी रोग अवश्य होता है। इस तरहकी मृगी बहुधा बड़े होने पर, बिना किसी तरहके इलाजके, चली जाती है, बशर्त्ते कि कोई उपद्रव न हो।

दूध पीने वाले बच्चेकी मृगीका भी इलाज करना चाहिये। अगर उचित समझा जाय, तो मुनासिब दवाओंसे उस रुतूबत या मलको वैद्य निकाल दे। बड़े होने तक बालकका इलाजन न करना और उसे बीमार रखना भूल है। हाँ, कुछ देर करना उचित है। अगर यह रुतूबत गर्भमें या जन्म लेने बाद सिरमें घाव या सूजन होनेसे निकल जाय या थोड़ासी बाकी रह जाय, तो मृगी पैदा करती है। ऐसी मृगी, थोड़े समयमें, मलकी कमी-जियादतीके अनुसार, खुद नाश हो जाती है।

"असबाब" और "अलामत" नामक ग्रन्थोंके लेखक कहते हैं, "उम्मुस्सिबिया" नामक बालकोंकी मृगी ज्वर और प्रकृतिकी गरमीके बिना नहीं होती और शीतल दवाओंसे जाती रहती है। ऐसी मृगीको पित्तज कह कर, शीतल इलाज करना लिखा है; पर यह बात ठीक नहीं है। यह समझना, कि पित्तज मृगीके सिवा और दोषोंकी मृगी बच्चोंको नहीं होती—बड़ी गलती है। जो लोग बालकोंकी मृगीको हर हालतमें पित्तज समझ कर शीतल दवा देते हैं, वे बालकोंको मार डालते हैं। बुद्धिसे निदान करके, दोषानुसार इलाज करना ही अक़्लमन्दी है। अगर पित्तके लक्षण मिले तो शीतल दवा देनी चाहिये। इस हालतमें शीतल चीज नाकमें डालना और बालकके सिर पर उसकी माका दूध लगाना अच्छा है। अगर कफके लक्षण हों, तो कफनाशक दवा देनी चाहिये। साथ ही दूध पिलाने वाली धायके दूधका भी इलाज करना चाहिये और उसे मैथुनसे रोकना चाहिये। बालकको भी बादलकी गरज और बन्दूक़ या तोपकी आवाज़ सुननेसे बचाना ज़रूरी है।

अपस्मार-चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें

(१) "चरक"में लिखा है,—हृदय, मनवाही स्रोत और मन—यह सब अपस्मार करनेवाले दोषोंसे ढक जाते हैं, अतः उनके जगानेके लिए पहले तीक्ष्ण वमनादि शोधन कर्मोंसे चिकित्सा करनी चाहिये। वातज अपस्मारमें 'वस्ती' प्रधान है, पित्तजमें 'विरेचन' प्रधान है और कफजमें 'वमन' प्रधान है। जब रोगी सब तरहसे शुद्ध हो जाय, तब उसे धीरज देकर, शमन औषधियाँ देनी चाहियें। अपस्मार रोग-नाशार्थ कल्याण चूर्ण, ब्राह्मी घृत, पञ्चगव्य घृत, महापञ्चगव्य घृत, महाचैतस घृत, वातकुलान्तक रस या चण्डभैरव रस आदि उत्तमोत्तम योगोंसे काम लेना चाहिये।

(२) अपस्मार रोगमें अञ्जन, नस्य और धूनी देनेसे बहुत उपकार होता है, अतः इन्हें अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

(३) हिकमतके मतसे मृगी रोगमें नीचे लिखे हुए आहार-विहार या काम हानिकारक हैं, अतः उनसे मृगी-रोगियोंको बचाना चाहिये :—

(१) जल्दी-जल्दी चलनेवाली चीज़ें देखना।

(२) चमकनेवाली चीज़ें देखना।

(३) चक्कर खानेवाली चीज़ें देखना।

(४) पहाड़, वृक्ष या ऊंची बुर्जपर चढ़ना।

(५) नहानेके स्थानमें ठहरना।

(६) हवादार मकानमें ठहरना।

(७) गन्धक और जले हुए बालोंकी गन्ध लेना।

(८) बहुत ज़ियादा मैथुन करना।

(९) बहुत जियादा लिखना-पढ़ना।

(१०) पैदल दौड़ना या घोड़ा दौडाना।

(११) अत्यन्त मीठे या चिकने पदार्थ खाना।

(१२) पुरानी और नई शराब पीना।

(१३) पैदल चलना।

(१४) बिजलीकी आवाज़ सुनना।

(१५) गरिष्ट और भारी भोजन करना।

(१६) बुरे जानवरोंका मांस खाना।

(१७) शलग़म, गंदना, मूली, प्याज़, लहसन, बाकला, मसूर और पोदीनेके सिवा और साग-दाल खाना; क्योंकि ये मलको हिलाते हैं।

(१८) समस्त तर मेवे, सब जानवरोंका दूध और दूधसे बने पदार्थ खाना।

(१९) पीपर और राई खाना, क्योंकि ये भाफके परमाणुओंको उठाती और दोषोंको दिमाग़में फुला देती हैं।

(२०) जाड़ेमें जियादा सरदी और गरमीमें ज़ियादा गरमी खाना।

(२१) दिनमें बहुत सोना।

(२२) पेट भरे पर सोना और बहुत जागना।

(२३) बिरौज़ेकी धूनी लेना, क्योंकि इससे मृगी आ जाती है।

(२४) बकरीका मांस अधिक खाना।

(२५) बकरीकी खाल ओढ़ कर पानीमें जाना।

(२६) अकस्मात् क्रोध और शोक पैदा होना।

नोट—दालचीनी, अनीसूँ और सफेद ज़ीरा लाभदायक हैं, क्योंकि ये दोषोंको दिमागसे उतारते हैं। किसी-किसीने धनिया और काहू सेवन करनेको आज्ञा दी

है, पर हकीम शेख़ बूअली धनिया और काहूका सेवन करना बुरा कहते हैं। "तिब्बे अकबरी"में एक जगह सेब, शलगम और मूली मृगीवालेको हानिकारक लिखी हैं। चन्द्रमाको चाँदनी और बहते पानीका देखना भी बुरा लिखा है। कदाचित ये कफज मृगीमें अहित हों।

आयुर्वेदके मतसे मृगीवालेको नीचे लिखी हुई चीज़ें अपथ्य या हानिकर हैं :—

(१) चिन्ता-फिक्र करना।
(२) शोक या रंज करना।
(३) डरना और क्रोध करना।
(४) अपवित्र भोजन करना।
(५) शराब पीना।
(६) मछली खाना।
(७) विरुद्ध भोजन करना। जैसे दूध और मछली एक साथ खाना।
(८) तीखे, गरम और भारी भोजन करना।
(९) बहुत मैथुन करना।
(१०) बहुत ज़ियादा मिहनत करना।
(११) पूजनीय गुरु-देवताओंको न पूजना।
(१२) भूत प्रेतादिकी पूजा करना।
(१३) सब तरहके पत्तोंके साग खाना।
(१४) कुंदरू या आषाढ़ी फल खाना।
(१५) प्यास, भूख और नींदको रोकना।

(४) अपस्मार रोगमें नीचे लिखे हुए आहार-विहार पथ्य या हितकारी हैं :—

(१) वातज मृगीमें वस्ति कर्म करना।
(२) पित्तज मृगीमे जुलाब देना।
(३) कफज मृगीमें कय कराना।

(४) धूनी देना और अंजन लगाना।

(५) नाकमें नस्य देना।

(६) फस्त खोलना।

(७) बाँधना, ताड़ना, डराना और खुश करना।

(८) धूमपान कराना।

(९) विस्मयकारक बात कहना।

(१०) बुद्धिको स्थिर रखना।

(११) धीरज रखना।

(१२) आत्माका ज्ञान।

(१३) स्नान करना और उबटन लगाना।

(१४) लाल चाँवल, मूंग, गेहूँ, पुराना घी, कछुएका मांस, जँगली जीवोंका मांस, दूध, ब्राह्मीके पत्ते, परवल, पुराना पेठा, बथुआ, मीठा अनार, सहँजना, नारियलका पानी, दाख, आमले, फालसे, तेल, घोड़े और गधेका पेशाब आकाशका जल और हरड़ ये पथ्य हैं।

नोट—उधर हमने हिकमत और वैद्यक मतसे पथ्य अपथ्य आहार विहार लिखे हैं, पर आज-कलके योग्य पथ्य पदार्थ हम आगे जहाँ सब रोगोंके पथ्यापथ्य लिखेंगे वहाँ लिखेंगे।

(५) मृगीवाला बहुधा अपनी जीभ चबाया करता है, अतः उसकी जीभके कट जानेका भय रहता है; इसलिए नरम कपड़ेमें रूई भर कर गेंद सी बना लेनी चाहिये और मृगी आनेके समय उसके मुँहमें रख देनी चाहिये; जिससे जीभ न कटे और मुँह भी खुला रहे। आजकल रबड़ या लकड़ीका टुकड़ा भी दाँतोंके तले दबा देते हैं।

(६) मृगीके दौरेके समय रोगीको नस्य देकर, अञ्जन लगा कर या धूनी देकर होशमें लाना चाहिये। जब होशमें आ जाय, तब असल रोग नाशक दवा देनी चाहिये। इस रोगमें दौरेके समय और दवाएं दी जाती हैं और मृगी चली जाने पर और दी जाती हैं।

(७) मृगी वालेकी नाकमें अकरकरा महीन पीसकर फूँकना चाहिये, और उसके फूँकनेसे छींक आजाये तो आराम होनेकी आशा समझनी चाहिये। यह उत्तम परीक्षा है।

(८) मृगी रोगका इलाज हाथमें लेनेसे पहले साध्य-असाध्य रोगका विचार अवश्य कर लेना चाहिये। जैसे :—

(१) जिस मृगी-रोगीके दिमाग़की प्रकृति तर होती है और जिसकी उम्र २५ सालसे ऊपर होती है, उसकी मृगी कठिनसे जाती है। यह हकीमी मत है।

(२) अगर मृगीका मल बहुत होता है और कारण बलवान होते हैं, तो मृगी बहुत देर तक रहती है। कभी-कभी मृगी बहुत जल्द चली जाती है और घड़ी-आध-घड़ीका भी अवकाश नहीं मिलता, ऐसी मृगी असाध्य समझी जाती है। यह भी हकीमत है।

(३) अगर मृगीवालेका शरीर क्षीण होगया हो अथवा मृगी रोग पुराना हो, तो आराम होनेकी आशा नही है।

(६) बहुत करके खूनकी मृगीमें फस्त खोलते हैं। बसन्त ऋतुमें मृगीवालेकी फस्त खोलना अच्छा है। रोगीकी शक्ति देखकर खून निकलना चाहिये। फस्त खोलनेके बाद, सात दिन तक रोगीको आराम देना चाहिये। फस्त खोलनेका काम वही करे, जिसे इस कामका अनुभव हो।

(१०) त्रिपाठी विक्रमने निश्चय किया है कि, अपस्मार दुश्चिकित्स्य, बहुत दिनोंतक रहनेवाला और महा रोग है, इस लिये इस रोगमें विशेष करके "रसायन"का सेवन कर चाहिये।

(११) "तिब्बे अकबरी"मे लिखा है, अगर दिमाग़ी मृगी रोगीके सिर और मस्तक पर सफेद-सफेद दाग़ हो जायें, तो समझ लो कि मृगीका कारणरूप द्रव्य या मृगी पैदा करनेवाला दोष नष्ट हो गया। वैद्यको ऐसी-ऐसी बातें अवश्य याद रखनी चाहियें।

अपस्मार नाशक नुसख़े।

नास और धूनी देनेकी दवाएं।

(१) सहँजना, कूट, सुगन्धवाला, जीरा, लहसन, त्रिकुटा और हींग—इनको बराबर-बराबर पाँच-पाँच माशे लेकर, पानीके साथ, सिलपर महीन पीसलो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना बकरेका पेशाब लेकर एक बर्तनमें डालकर पकालो। जब मूत्र जलकर तेलमात्र रह जाय, उतारकर कपड़ेमें छान लो। इस तेलकी नास लेनेसे अपस्मार या मृगी चली जाती है।

(२) सोंठ, काली मिर्च और पीपरोंको बराबर-बराबर लेकर, सेंहुड़के दूधमें, २० दिनतक भिगो रखो। फिर निकालकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो। इसकी नस्य लेनेसे मृगी चली जाती है। परीक्षित है।

(३) निर्गुण्डीके बन्देके रसकी नास लेनेसे महाबलवान मृगी भी चली जाती है।

(४) आककी जड़की छाल बकरीके दूधमें पीसकर एक कपड़ेमे रखलो और मृगी आनेपर ३।४ बूँद उसकी नाकमें टपका दो। इससे मृगी नाश हो जायगी। परीक्षित है।

(५) कड़वी तोरई पानीमें पीसकर, एक महीन कपड़ेमें रखलो और बेहोश मृगीवालेकी नाकमें दो या चार बूँद टपका दो। इसके टपकाते ही मृगीवाला होशमें आ जायगा। इस कामके लिए यह दवा जादू है। परीक्षित है।

(६) अरीठेको पीस-छानकर रखलो। इसकी नास नित्य लेनेसे मृगी रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७) आगवोट नामका कीडा जो उटकता रहता है, उड़ नहीं सकता और अक्सर आकके पेड़पर वैठा करता है, पकड़ लाओ और सुखाकर पीस-छान लो। उसमें थोड़ासी काली मिर्च पीसकर मिला दो और चने-वरावर नाकमें चढ़ाओ। इससे मृगी नाश हो जाती है।

नोट—"खैल्ल तिजारव"में मिर्चके वजाय "घी" लिखा है। घी मिलाकर नाकमें चढ़ानेसे अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(८) ६ माशे नौसादर और १॥ माशे एलुआ लेकर महीन पीसलो और माशे-भर तिलके तेलमें मिलाकर घोट लो। इसकी ३।४ वूँद नाकमे टपकानेसे मृगी आराम हो जाती है।

(९) कटेरीकी जड़ ३ माशे और भाँगके वीज ३ माशे लेकर वालकके मूत्रमें पीस लो। इसकी कई वूँदें नाकमें टपकानेसे मृगी जाती रहती है।

(१०) मृगीके दौरेके समय "राई" पीसकर सूँघनेसे मृगीवालेको होश हो जाता है।

(११) कुन्दशको पीसकर थैलीमें वाँध लो और सूंघो। इससे भी मृगी चली जाती है।

(१२) ग्रूसके पित्तेमें काली मिर्च भरकर छायामें सुखा लो और पीसकर रख लो। इसमेंसे २ चाँवल भर सूँघनेसे मृगी चली जाती है।

(१३) शरीफेके वीजोंकी मींगी पीसकर एक कपड़ेकी वत्तीमें रखलो। इस वत्तीका धूआँ नाकमें पहुँचानेसे मृगी आराम हो जाती है।

(१४) मृगीके समय, कपड़ेकी तनीको खटमलके खूनमें तर करलो और फिर उसकी धूनी नाकमें दो। इससे भी मृगी चली जाती है।

(१५) मृगीके समय, ढाककी जड़ पानीमे घिसकर नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है।

(१६) गीदड़के पित्तेमे कई काली मिर्चे डालकर सुखालो। मृगोके समय उसमेंसे दो काली मिर्च लेकर पानीके साथ पीसलो और उसकी २।३ बूंद नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है।

(१७) महुएकी आधी गुठली और अढ़ाई कालीमिर्चे, पानीमें पीस कर, नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है। यह दवा मृगीके समय खूब काम देती है। परीक्षित है।

(१८) छोटी कटेरीका दूध थोडासा, मृगीके दौरेके समय, नाकमें टपकाओ, इससे मृगी चली जाती है।

(१९) मृगीके समय, मस्त हाथीकी मस्ती या मदमें रुई तर करके नाकमें २।३ बूंद टपकाओ, इससे मृगी फौरन चली जाती है।

(२०) चूहेका भेजा सुखा कर रख लो। इसमेंसे आधे माशेके अन्दाज़ लेकर महीन पीस लो और रोगीकी नाकमें फूंको। इस दवाके लगातार तीन दिन फूंकनेसे या नाकमें चढ़ानेसे मृगी रोग आराम हो जाता है।

(२१) नकछिंकनी, कुटकी, इन्द्रायणका गूदा, करेलेका स्वरस, कालीमिर्च, कलौंजी, सोंठ और जुन्देबेदस्तर—इनमेंसे समय पर जो मिले उसे पीस कर नाकमें मलो या नाकमें फूंको, मृगी वाला फौरन होशमें आ जावेगा।

(२२) हरी या सूखी तुलसीका नाकसे सूँघना—होश और बेहोशी दोनों हालतोंमें अच्छा है।

(२३) अकरकराको पीस-छान कर नाकमें फूंको। अगर इसके नाकमें जानेसे छींक आजाय, तो मृगी रोगी आराम हो जायगा।

(२४) मुलेठी, हींग, वच, तगरपादुका, सिरसके बीज, लहसन और कूट—इनको गोमूत्रमें पीस कर आँखोंमें आँजने या नाकमें नस्य देनेसे मृगी और उन्माद दोनोंमें लाभ होता है।

(२५) जटामासी महीन पीस कर, नाकमें उसकी नास या धूनी देनेसे पुरानी मृगी भी चली जाती है।

(२६) केवड़ेकी बालका चूरा तमाखूकी तरह सूँघनेसे मृगी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) सफेद प्याज़का स्वरस नाकमें डालनेसे मृगी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२८) बाँझ-ककोडेकी जड़को घीमें पीस कर, उसमें ज़रासी चीनी मिला दो और नास लो। इससे मृगी चली जाती है। परीक्षित है।

(६) "चरक"में लिखा है, कपिला गायके मूत्रकी नस्य मृगी रोगमें परम हितकारी है।

(३०) स्यार, बिलाव या सिंहके पेशावकी नस्य भी मृगी रोगमें हितकारी है।

(३१) पीपर, बिछवा-खखड़ी, कूट, पाँचों नमक और भारंगी—सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको कागज़की नलीमें भर कर नाकमें फूंकनेसे मृगी रोगमें परम उपकार होता है। चरक ऋषि कहते हैं, यह नस्य मृगी पर परम उत्कृष्ट है।

(३२) गोय, नौला, साँप, बैल, रीछ और गाय इन सबके पित्तेको लेकर तेलमें पकाओ। इस तेलको नास लेनेसे मृगी आराम हो जाती है।

(३३) कुत्ता, गीदड़, बिलाव, बन्दर और गाय इनके पित्तकी नास लेनेसे मृगी रोग आराम हो जाता है।

(३४) कुत्तेके पित्तको घीमें मिला कर धूनी देनेसे अपस्मार या मृगी रोग जाता रहता है।

(३५) नौला, उल्लू, बिलाव, गीध, कीड़ा, साँप और कव्वा—इनकी चोंच, पंख और बीटकी धूनी देनेसे मृगी आराम हो जाती है।

(३६) कालीमिर्चोंको केंकड़े या मछलीके पेटमें भर कर, गरमीकी ऋतुमें, ज़मीनमें गाड़ दो। फिर उसे खोदकर, मिर्चोंको

निकाल कर, धूपमें सुखा लो और पीस लो। इस चूर्णकी धूनी देनेसे मृगी जाती रहती है।

(३७) नाकमें ऊदेसलीबकी धूनी देनेसे मृगी वाला जल्दी होशमें आ जाता है।

(३८) मृगीके दौरेके समय, बकरेके सींगकी धूआँ नाकमें पहुंचानेसे मृगी चली जाती है।

(३९) कालीमिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थोंकी धूनी देनेसे मृगीमें लाभ होता है—बेहोश होशमें आ जाता है।

(४०) कौआठोड़ीकी जडको पीस कर धूनी देनेसे अपस्मार रोग चला जाता है।

❀❀❀❀ आँजने और लेप करनेकी दवाएँ। ❀❀❀❀

(४१) पुष्य नक्षत्रमें, कुत्तेका पित्ता निकालकर आँखोंमें आँजनेसे मृगी चली जाती है।

(४२) मुलेठी, हींग, वच, तगर, सिरसके बीज, लहसन और कूट—इनको बराबर-बराबर लेकर, बकरीके मूत्रमें महीन पीस लो। इसको आँखोंमें आँजनेसे मृगी रोग जाता रहता है।

(४३) शुद्ध मैनसिल, रसौत, गोबर और कबूतरकी बीट—इनको काजलके समान महीन पीस कर अञ्जन बना लो। इसके आँजनेसे मृगी और उन्माद दोनों नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४४) शुद्ध मैनसिल, रसौत और कबूतरकी बीट—इनको महीन पीस कर आँजनेसे मृगी और उन्माद नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—बेहोशके मुँह पर पहले पानीके छींटे मारो। अगर छींटोंसे होश न हो, तो ऊपरका अंजन आँखोंमें लगा दो, अवश्य होश हो जायगा।

(४५) सफेद प्याज़का रस नाकमें टपकाने और आँखोंमें आँजनेसे मृगी और उन्माद दोनोंमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(४६) "सुश्रुत"में लिखा है, पुराना घी पिलाने और मालिश करनेसे मृगीमें विशेष उपकार होता है।

(४७) चमगीदड़को विष्ठाका शरीर पर लेप करनेसे मृगी जाती रहती है।

(४८) बकरीके जले हुए बालोंको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे ; अथवा गायकी पूँछके जले हुए बालोको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे ; अथवा जले हुए हाथीके नाख़ूनको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे ; अथवा गधेकी जली हुई हड्डीको गोमूत्र पीसकर लेप करनेसे मृगी आराम हो जाती है। ये चारों योग "चरक"के हैं।

(४९) कैथ, शरद् ऋतुकी मूंग, नागर मोथा, खस, जौ और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर लेकर, बकरीके मूत्रमें पीसकर, बत्ती बना लो। बेहोशीकी हालतमें, इस बत्तीको घिस कर आँखोंमें आँजनेसे होश हो जाता है। यह बत्ती अपस्मार, उन्माद, साँपके काटे आदमी, अर्दित रोगी, विष खाने वाले और जलमें डूब कर मुर्देके जैसे हो जाने वालेको अमृत-समान है।

नोट—जिसका मूलद्वार रुक जाय ; नेत्र विकृत हो जायँ, पाँव, हाथ और पेट शीतल हो जायँ तथा पाँव, नाभि और लिंग पर सूजन हो, उसे "जलमृत' समझना चाहिये।

(५०) नागरमोथा, बहेड़ा, त्रिफला, छोटी इलायची, हींग, नई दूब, त्रिकुटा, उड़द और जौ—इनको समान-समान लेकर, बकरी, भेड़ और बैलके मूत्रमें पीस कर बत्ती बना लो। इस बत्तीके नेत्रोंमें आँजनेसे अपस्मार, उन्माद और विषम ज्वर नाश होते हैं तथा लेप करनेसे किलास कोढ़ आराम होता है।

❀❀❀❀ खाने पीनेकी दवाएँ। ❀❀❀❀

(५१) लहसन १ तोले और काले तिल ३ तोले,—इन दोनोंको मिला कर, सवेरे ही २१ दिन तक, खानेसे मृगी चली जाती है। परीक्षित है।

(५२) १ तोले लहसन और २ तोले काली तिलोका तेल मिला-कर खानेसे भी मृगी चली जाती है। कहा है :—

तैलेन लशुनं सेव्यम् पयसा च शतावरी ।

ब्राह्मीरसञ्च मधुना सर्वापस्मार भेषजम् ॥

लहसुनको तेलके साथ, शतावरको दूधके साथ और ब्राह्मीके रसको शहदके साथ सेवन करनेसे सब तरहका अपस्मार नाश हो जाता है ।

ये तीनों नुसखे परमोत्तम हैं, कई बार परीक्षा की है, अवश्य लाभ करते हैं, पर वहमी और जल्दबाजोंको नहीं । धीरजके साथ लगातार सेवन करनेसे मृगी चली जाती है । परीक्षित हैं ।

(५३) गोमूत्रमे सरसों पीसकर मृगीवालेके शरीरपर लेप करने और ६ माशे सरसों पीसकर खानेसे भी लाभ होते देखा है । कहा है :—

गोमूत्रयुक्तं सिद्धार्थं प्रलेपयोद्वर्तने हितं ।

धूम्रतीक्ष्णानि नस्यानि दाहः सूच्या कपोलयोः ॥

गोमूत्रमें सरसो पीसकर शरीर पर लगाना, मिर्च आदि तीक्ष्ण चीजोंकी नस्य या धूनी देना और सूईको आगमें तपाकर गालों पर दागना—मृगी वालेको ये सब हित हैं ।

(५४) ब्राह्मीके पत्तोंका रस १ तोले लेकर १ तोले शहदमें मिला लो । इसके नित्य सेवन करनेसे मृगी निश्चय ही आराम हो जाती है । खूब आजमूदा है ।

(५५) दूधमें शतावर औटा कर पीनेसे मृगी चली जाती है ।

(५६) सरसों, सहँजना, सोनापाठा, अरलू और चिरचिरा—समान-समान लेकर पीस-छान लो । इस चूर्णकी मात्रा १ से ३ माशे तक है । इसके सेवन करनेसे मृगी चली जाती हैं ।

नोट—इसी चूर्णको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे भी मृगी चली जाती है । इसी चूर्णमें चूर्णसे चौगुना गोमूत्र और उतना ही तेल मिलाकर पकालेनेसे उत्तम मृगी नाशक तेल तैयार हो जाता है । इस तेलकी मालिशसे भी मृगी आराम हो जाती है ।

(५७) ब्राह्मीके पत्तोका रस १ तोले, कुलींजन या अकरकराका चूर्ण ३ माशे और शहद ३ माशे—इनको मिला कर नित्य सवेरे-शाम

सेवन करनेसे मृगी चली जाती है। मृगी, उन्माद और चित्तभ्रम-रोगों पर रामवाण नुसख़ा है। ख़ब आज़मूदा है।

(५८) ६ माशे मुलेठीका पिसा-छना चूर्ण पेठेके १ तोले रसमें मिलाकर, तीन दिन, पीनेसे मृगी आराम हो जाती है। उत्तम नुसख़ा है।

(५६) शहदके साथ घोड़ा वचका चूर्ण चाटने और दूध-भात खानेसे पुरानी मृगीभी निश्चयही आराम हो जाती है परीक्षित है। कहा है :—

> य॰ खादेन्क्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजम् ।
> अपस्मारं महाघोर सुचिरोत्थं जयेद्ध्रुवम् ॥
> उग्रमक्षमितं चूर्णं कृतम्च मधुसर्पिषा ।
> भक्षयेत् क्षीरभक्ताशी त्रिदिनेऽपस्मृतिक्षयः ॥

एक तोले वचका पिसा-छना चूर्ण शहद या घीमें मिलाकर खानेसे तीन दिनमे मृगी आराम हो जाती है।

(६०) फाँसी लगाकर मरनेवालेकी रस्सीकी राख शीतल जलके साथ पीनेसे मृगी रोग अवश्य आराम हो जाता है।

(६१) पोहकरमूल, पीपरामूल, ब्राह्मी, सोंठ, हरड, कचूर, चिरायता, कुटकी, सिरसकः छाल, लाल रोहेडा, वच, दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु और कूट—इनको कुल मिला कर २॥ तोले लेलो और आध सेर पानीमें औटा लो। जब आध पाव पानी रह जाय, रोगीको पिला दो। इस काढ़ेसे अपस्मार, उन्माद, ज्वर, विशूचिका और कफका नाश होता है।

(६२) जिस मृगी-रोगीकी छाती काँपती हो, हाथ पैर आदि अङ्ग शीतल हों, नेत्रोंमें पीड़ा हो और शरीरमें पसीने आते हों, उसे "दशमूल"का काढ़ा पिलाओ। परीक्षित है।

(६३) उत्तर दिशामें पैदा हुए नागरमोथेकी जड उखाड कर सुखालो और पीस-छान कर रख लो। इस चूर्णको एक रंगके बछड़े वाली गायके दूधके साथ सेवन करनेसे मृगी चली जाती है।

मृगीपर हकीमी नुसख़े।

(६४) अगर बालकको मृगी आता हो, तो उसकी दोनों भौंहोंके बीचमें मूंगा आगमें तपाकर दाग दो। अथवा बकरीकी जलती हुई मैंगनीसे दाग दो। इन उपायोंसे लड़कोंकी मृगी आराम हो जाती है। "इलाजुलगुर्बाके लेखक, महाशय इन्हें अपने आज़मूदा नुसख़े लिखते हैं।

(६५) सूअरके पेशावकी मिट्टी मृगी वालेके पास रखनेसे मृगी चली जाती है।

(६६) भेडियेके दाँत लड़केके गले या बाँह पर बाँधनेसे मृगी चली जाती है।

(६७) चूहेके होठ, जन्तरमें मढ़वाकर, बालककी गर्दनमें लटका देनेसे मृगी चली चाती है।

(६८) "हरी ऊदे सलीब"को भुजा पर बाँधनेसे मृगो रोग चला जाता है।

नोट—हरी ऊदे सलीब परमोत्तम है, पर यदि हरी न मिले तो सूखी ही बांधो।

(६९) "तिब्ब फरीदी" नामक ग्रन्थमें लिखा है, २१ जायफल लेकर उनमें छेद करो और फिर उन्हें डोरेमें पिरोकर माला बना लो। इस मालाके पहननेवालेके पास मृगी नहीं आती।

(७०) एक तोले असली हींग कपडेमें बाँध कर गलेमें डाले रहनेसे मृगी चली जाती है।

(७१) सूअरके सुमकी अँगूठी बनवाकर, मगलवारके दिन, दाहने हाथकी छोटी उँगलीमें पहन लो; मृगी पास न आयेगी।

(७२) गायके बायें सींगकी अँगूठी बनवाकर, बायें हाथकी छोटी उगलीमें पहन लो, मृगी चली जायगी।

(७३) भेडियाकी विष्ठा और उसकी हड्डी पास रखनेसे मृगी नहीं आती।

(७४) नदी-किनारे, वालूके भीतर, रहने वाले दो 'मृगचना' नामके कीड़े, रविवारके दिन, लाकर मृगी वालेकी भुजा और कंठमें बाँध दो। इस उपायसे महा भयंकर अपस्मार भी चला जाता है।

(७५) कछुएका खून १ तोले, जौका आटा १ तोले और शहद १ तोले—इन तीनोंको मिला कर उड़द-समान गोलियाँ वना कर छायामें सुखा लो। इनमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम खानेसे पन्द्रह दिनमें मृगी चली जाती है।

(७६) अकरकरा ५ तोले, गन्नेके रसका सिरका ५ तोले और शहद ३० तोले—इनको कड़ाहीमें डाल कर आग पर चढ़ाओ और मन्दाग्निसे पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे, उतार कर शीशीमें रख दो। इसमेंसे ६ माशे दवा, हर दिन सवेरे ही, गरम पानीके साथ खानेसे मृगी चली जाती है। यह नुसखा हकीम जालीनूसका परीक्षित है।

(७७) 'जदवार नरीना' लड़केवाली स्त्रीके दूधमें घिस-घिसकर पिलानेसे मृगी आराम हो जाती है।

(७८) हींग और जुन्देवेदस्तर महीन पीसकर और शहदको सिकजंवीनमें मिलाकर, गलेमे टपकानेसे मृगीके दौरेके समय लाभ होता है।

(७९) भैंसका सुम लाकर जला लो। उसकी ४ माशे राख सवेरे ही मृगी वालेको खिलानेसे मृगी जाती रहती है।

(८०) लालेके फूल ८० माशे लेकर पानीमें औटाओ। पीछे पानीको छानलो और उसमें १६० माशे मिश्री मिलाकर शर्वत पकालो। वालकको २ माशे और धायको आठ-आठ माशे शर्वत चटाओ। यह शर्वत वालकको मृगीके समय और मृगीके वाद, दोनों वक्त, दिया जाता है। इसका नाम "शर्वत गुललाला" है। वालकोंकी मृगी पर उत्तम चीज है।

अपस्मार नाशक उत्तमोत्तम योग।

पञ्च गव्य घृत।

पुराना गायका घी १ सेर, गोवरका रस १ सेर, गायका खट्टा दही १ सेर, गायका दूध १ सेर, गोमूत्र १ सेर और पानी ४ सेर—इन सवको क़लईदार कड़ाहीमें डाल कर औटाओ ; जव घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घी की मात्रा ६ माशेकी है। इस घीके पीनेसे मृगी, ज्वर और कामला रोग नाश हो जाते हैं। चरकादि सभी प्राचीन ग्रन्थोंमें इसकी तारीफ लिखी है।

महा पंच गव्य घृत।

दशमूल, त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, कुड़ेकी छाल, सतवनकी छाल, चिरचिरेकी जड़, नील वृक्ष, कुटकी, अमलतासका गूदा, पोह-करमूल और जवासा—प्रत्येक आठ-आठ तोले लेकर, चौंसठ सेर पानीमें पकाओ ; जव चौथाई पानी रह जाय उतार कर छान लो।

फिर भारंगी, पाढ़, त्रिकुटा, निशोथ, हिंजलके वीज, गजपीपर, अरहर, मूर्वाकी जड़, दन्तीकी जड़, चिरायता, चीतेकी जड़, अनन्त-मूल, सारिवा, रोहिष-घास, गन्ध तृण और मोतियाके फूल—इन सवको दो-दो तोले लेकर सिल पर पीस कर लुगदी वनालो।

अव गोवरका रस ४ सेर, गोमूत्र ४ सेर, गायका दूध ४ सेर गायका दही ४ सेर, उत्तम गायका घी ४ सेर, ऊपरकी लुगदी और छने हुए काढ़ेको एकमें मिलाकर, क़लईदार वर्तनमें, मन्दाग्निसे औटाओ। जव घी मात्र रह जाय, छान कर धर लो। इसकी भी मात्रा ६ माशेकी है।

यह घी पीनेसे अपस्मार-मृगी, उन्माद, सूजन, उदर रोग, गुल्म,

ववासीर, कामला और भगन्दर आदिमें अमृतके समान गुण करता है। वंगसेनने इसे पाण्डु रोग, हलीमक और चौथेया ज्वर आदिमें श्रेष्ठ कहा है।

महा चैतस घृत।

सनके बीज, निशोथ, अरण्डकी जड़, दशमूल, शतावर, रास्ना, पीपर और सहँजनेकी जड़ प्रत्येक आठ-आठ तोले लेकर, ६४ सेर पानीमें पकाओ जब १६ सेर पानी बाक़ी रहे, मल कर छान लो।

फिर विदारीकन्द, मुलेठी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर-काकोली, मिश्री, खजूर, शतावर, दाख, छुहारे और गोखरू तथा "चैतस घृतके सब कल्क-द्रव्य" कुल मिला कर एक सेर लो।

फिर चार सेर गायका घी, ऊपरके कल्क या लुगदी और काढ़ेको मिला कर घी पकालो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घीके पीनेसे ज्वर, अपस्मार, उन्माद, प्रतिश्याय, तिजारी और चौथेया ज्वर आदि रोग आराम हो जाते हैं।

पलंकषा तैल।

लाख या गूगल, वच, मुलेठी, बड़ी हरड़, बिछौटीकी जड़, आककी जड़, सरसों, जटामासी, भूतकेशी, ईशलांगला, चोरपुष्पी, लहसन, अतीस, दन्ती, कूट, और गिद्धादि मांसखाने वाले पखेरुओंकी बीट— ये सब एक-एक छटाँक लेकर सिल पर पीस कर लुगदी बनालो।

फिर ४ सेर तिलीका तेल, १६ सेर बकरेका मूत्र और ऊपरकी १ सेर लुगदी सबको कड़ाहीमें डाल कर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छान कर बोतलोंमें भर दो। इस तेलकी मालिश करनेसे अपस्मार या मृगी रोग नाश हो जाता है।

ब्राह्मी घृत।

वच, कूट और शंखपुष्पी—तीनों मिलाकर एक सेर ले लो और सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो।

ब्राह्मीके पत्तोका रस १६ सेर ले लो। गायका उत्तम घी ४ सेर ले लो और उपरकी लुगदी लेलो। सबको मिलाकर क़लईदार बर्तनमें डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छानलो।

"भावप्रकाश" आदि ग्रन्थोंमें लिखा है, इस घीके खानेसे वेगवान अपस्मार भी नाश हो जाता है। वंगसेन कहते हैं, इस घीसे पुराना, पका हुआ भयंकर अपस्मार भी नाश हो जाता है। हमारा भी परीक्षित है। मृगीपर यह सर्वोत्तम घृत है।

कल्याण चूर्ण।

पंचकोल (पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ), काली-मिर्च, वायविडंग, छोटी पीपर, त्रिफला, ज़ीरा, धनिया, करंजुआ, सेंधानोन, विडनोन या कालानोन और अजमोद—इनको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान गरम पानी है। इसके खानेसे मृगी, कफ, वात, श्वास, उन्माद, विष और मन्दाग्नि रोग नाश होते हैं। सुपरीक्षित है।

नोट—हमने कल्याणचूर्ण या ब्राह्मी घृत खिलाकर और गोमूत्रमें पीसी हुई सरसोंका उबटन लगवाकर कई मृगी रोगी आराम किये हैं।

सिद्धार्थक घृत।

देवदारु, बच, कूट, सफेद सरसों, त्रिकुटा, हींग, मँजीठ, हल्दी, दारुहल्दी, लजालू, त्रिफला, नागरमोथा, करंजके बीज, सिरसके बीज, गिरिकर्ण (श्वेतस्यन्द) और चीतेकी छाल—यह सब मिलाकर बराबर-बराबर कुल १ सेर लो और सिलपर पीसकर लुगदी बनालो। गोमूत्र सोलह सेर, और घी ४ सेर और ऊपरकी लुगदीको लेकर कड़ाहीमें डालो और मन्दाग्निसे घी पकालो।

इस घीके पीनेसे कृमि, कोढ़, विष, कफ, विषम ज्वर, भूत, ग्रह,

उन्माद और मृगी रोग आराम हो जाते हैं। यह घी "सुश्रुत"में लिखा है।

कूष्माण्ड घृत।

मुलेठीके आध सेर चूर्णको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर दो सेर घी और ३६ सेर पेठेका रस तथा मुलेठीकी लुगदीको कड़ाहीमें रखकर आगपर पकाओ। जब रस जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे अपस्मार रोग शीघ्र ही नाश होता है। परीक्षित है।

त्रिफला तैल।

त्रिफला, त्रिकुटा, कूट, नागरमोथा, जवाखार और महुआ—इन सबको तीन-तीन तोले लेकर सिलपर पीसो और लुगदी बना लो। फिर एक सेर काली तिलीका तेल और चार सेर हाथीका पेशाब मिलाकर पकाओ। तेल मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तेलको नस्य वग़ैरःके काममें लेनेसे अपस्मार रोग नाश हो जाता है।

शिग्रु तैल।

सहँजना, कूट, मैनसिल, जीरा, त्रिकुटा और हींग—इनको तीन-तीन तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर १ सेर तिली-का तेल और चार सेर गोमूत्र तथा ऊपरकी पिसी लुगदीको कड़ाहीमें रख मन्दाग्निसे पकालो। तेल मात्र रहनेपर उतार लो। इस तेलको नस्यादिके काममें लानेसे मृगी रोग जाता रहता है।

भूत भैरव रस।

रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, लोहा भस्म, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल और रसौत—इनको बराबर-बराबर लेकर मनुष्यके मूत्रमें खरल करो और गोला बना लो। फिर गोलेसे दूनी गन्धक लेकर उसमें मिला दो और लोहेके बासनमें उसे क्षणमात्र पकाओ। बस

यही "भूत भैरव रस" है। इसमेंसे ५ रत्ती रस खानेसे अपस्मार नाश हो जाता है।

त्रिकुटा, कालानोन और भुनी हींग महीन पीसकर चूर्ण कर लो। भूत भैरव रसकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे इस चूर्णको मनुष्यके पेशाब और घीके साथ पी लो। यह नुसख़ा "भावप्रकाश"का है। कभी आज़माया नहीं; फिर भी मात्रा दो रत्तीकी ठीक होगी।

चण्ड भैरव रस।

रस सिन्दूर, ताम्बा भस्म, लोहाभस्म, हरताल भस्म, शुद्ध गंधक, शुद्ध मैनसिल और रसौत—सबको बराबर-बराबर लेकर गोमूत्रमें खरल करो और इस कुल मसालेसे दूनी "शुद्ध गन्धक" इसमें और मिला दो। फिर इस लुगदीको लोहेके बर्तनमें थोड़ी देरतक पकाओ। इसका नाम "चण्डभैरव रस" है। मात्रा२ रत्ती की है।

इसपर हींग, कालानोन और कूटका चूर्ण खाकर, गोमूत्र और घी पीओ।

वात कुलान्तक रस।

कस्तूरी, शुद्ध मैनसिल, नागकेशर, बहेड़ा, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, जायफल, छोटी इलायची और लौंग—सबको समान-समान ले लो।

पहले पारे और गंधककी कज्जली करलो। फिर उसमें बाक़ी दवाओंका पिसा-छना चूर्ण मिला दो। फिर सबको मिलाकर पानी-के साथ खरलमें घोट लो और रख दो। इसकी मात्रा दो रत्ती की है। इसको वातनाशक अनुपान "रास्नादि क्वाथ" वग़ैरः के साथ देनेसे अपस्मार रोग नाश हो जाता है।

जीवनीय यमक।

जीवनीयगणकी सारी दवाओंके कल्क चार-चार तोले, गायका दूध १६ सेर, घी १ सेर और तेल १ सेर—सबको मिलाकर पकालो। घी और तेल मात्र रहनेपर या दूध जल जानेपर उतारकर छानलो। यही यमक है। इसके सेवन करनेसे अपस्मार रोग नाश हो जाता है।

आयुर्वेद-विधिसे—

मृगीकी विशेष चिकित्सा।

पित्तज अपस्मार पर

मधूक घृत।

मुलेठीको पानीके साथ सिलपर पीसकर आठ तोले कल्क तैयार कर लो। फिर गायका उत्तम घी १ सेर और आमलोंका रस १६ सेर—तीनोंको मिलाकर पकाओ। घी मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे पित्तज अपस्मार नाश हो जाता है।

वातपित्तजनित अपस्मारपर

काश्मरी घृत।

काँसका काढ़ा चार सेर, दूध और ईखका रस चार सेर और कुम्भेरका रस आठ सेर, जीवनीयगणकी दवाओंके कल्क एक-एक तोले और एक सेर गायका घी—इन सबको मिलाकर घी पकालो। इस घीसे वातपित्तसे पैदा हुई मृगी नाश हो जाती है।

नोट—काँसकी जड़ और कुंभेर या कभारीकी जड़का काढ़ा बना लेना।

वातकफजन्य अपस्मारपर

वचाद्य घृत।

वच, अमलताशका गूदा, कैरण्ड (एक तरहका करंज), आमले, हींग, चोरक द्रव्य और शुद्ध गूगल—इनको एक-एक तोले लेकर सिल-पर पानीके साथ पीस लो। फिर २८ तोले घी और ११२ तोले दूध लेकर सबको कड़ाहीमें डालकर घी पकालो। इस घीसे वात-कफ-की मृगी आराम होजाती है।

नोट—किसी-किसीने कैरयडकी जगह कायफल और आमलेकी जगह बहेड़ा लिखा है। चोरक-गठोनेका भेद है, पर कोई-कोई राजपलांडु कहते हैं।

वातपित्तज अपस्मार नाशक घृत।

"चरक"में लिखा है, काँसकी जड़, विदारीकन्द, ईखकी जड और कुशाकी जड—इनका चार सेर काढ़ा तैयार करो और घी एक सेर मिलाकर पका लो। इस घीसे वात-पित्तकी मृगी आराम होती है।

नोट—किसीका मत है कि, इस घीमें काढ़ा घीसे चौगुना होना चाहिये और कल्ककी दरकार नहीं। किसीका मत है, कि जीवनीयगणकी सारी दवाओंका कल्क भी मिलाना जरूरी है।

योषापस्मार

हिष्टीरियाकी चिकित्सा।

दौरेके समयके उपाय।

(१) जब रोगका हमला हो, तब रोगीको बिछौने पर सुलाकर उसके कपड़ोंके बन्द ढीले कर दो और मुँह पर शीतल जलके छींटे मारो।

(२) अगर रोगीको होश न हो, तो सफेद प्याज़ कूट कर सुँघाओ। अथवा कारबोनेट आफ एमोनिया सुँघाओ। अथवा नौसादर और चूना समान-समान लेकर, एक बड़े मुँहकी बोतलमें भर कर, उसमें थोडा जल मिला दो और बन्द कर दो। पीछे काग खोलकर रोगीको सुँघाओ। अथवा सोंठ, मिर्च और पीपरको पीसकर मसूड़ोंपर रगडो। अगर इन उपायोंसे होश न हो, तो

एक काग़ज़की भोंगलीमें सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण भरकर रोगी की नाकमें फूंको। सब से अच्छा उपाय—एमोनिया सुंघाना या प्याज कूटकर सुंघाना है। यदि इनमें से किसी दवाके सुँघाने से रोगीको होश हो जाये, तो नीचे नं० ३में लिखी हुई उत्तेजक दवाओंमें से जो समय पर मिले रोगीको फौरन दो, जिससे सच्चा होश होकर रोगी सावधान हो जाय। अगर किसीभी उपाय से रोगी को होश न हो, दाँती न खुले, तो उसे मत छेड़ो—सोने दो। जब रोगी जागे, तब उसे उत्तेजक दवाएं दो। अनेक बार बेहोशीका समय बीतने पर, रोगी बिना दवादारूके अपने-आप होशमें आ जाता है।

❀ ❀ ❀ ❀ दौरा रोकनेके उपाय। ❀ ❀ ❀ ❀

(३) अगर रोगी होशमे हो, तो उसे उत्तेजक दवा दो। जैसे, चार ड्राम "द्राक्षासव" एक औन्स पानीमे मिलाकर दो। अथवा १ ड्राम "ब्राण्डी" एक औन्स पानीमें मिलाकर दो। अथवा "स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक" १ ड्राम एक औन्स पानीमें मिलाकर दो। अथवा एक बाल "हींग" पीसकर और घीमें मिलाकर दो। अथवा असली "कस्तूरी" एक-से-दो रत्ती तक शहदमें मिलाकर दो। अथवा "पिपरमिन्ट आयल" तीनसे चार बूँद तक बताशेमें डालकर या शहदमें मिलाकर अथवा जलमें मिलाकर दो। दाँती बन्द हो, तो इसे ही मसूड़ों पर मलो। अथवा एक प्याज़का रस निचोड़ कर और शहदमें मिलाकर पिला दो। अथवा १ बाल "बरास-कपूर" खिला दो और पेटके ऊपर राईका पलस्तर मार दो। इनमें से जो उपाय हो सके, समय पर करना चाहिये।

(४) रोगका वेग शान्त होनेपर बारम्बार होनेवाले हमले रोकनेको —अगर शरीर कमजोर हो तो,—पौष्टिक दवा और पौष्टिक पथ्य दो। मनको क्षोभ न हो, ऐसा उपाय कर दो। रोगीको नाराज़ न होने दो। रोगीके मनको अति हर्ष, उद्वेग, शोक या दुःख आदिसे

बचाओ। मनमें आवेश उत्पन्न करनेवाले नाटक आदि मत दिखाओ। रोना पीटना भी ठीक नहीं है।
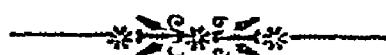
(५) शुद्ध हींग दो चाल भर जमे हुए घीमें मिला कर कुछ समय तक खिलाना हित है

(६) अगर दस्तकब्ज हो, तो हींग और एलुआ समान-समान भाग लेकर मिला लो और चाल-चाल भरकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली रोगीको दो।

(७) अगर रजोदर्शन न होता हो, तो "चिकित्साचन्द्रोदय" पाँचवें भागसे कोई दवा चुन कर दो, जिससे रजोदर्शन हो जावे।

(८) कुछ समय तक, दिनमें तीन बार, गेहूँके जितनी उत्तम "कस्तूरी" सेवन कराओ अथवा सवेरे शाम जुन्देबेदस्तर, जिसे अंगरेजीमें क्यास्टोरियम कहते हैं, एक-एक चाल-भर दो। अथवा उसका अर्क—टिंकचर क्यास्टोरियम एक-एक चाल-भर दो।

डाक्टर गनकी चिकित्सा-विधि।

दौरेके समय बहुतसे उपचारोंकी दरकार नहीं। रोगीकी पोशाक ढीली कर देनी चाहिये; जिससे खूनके चक्कर लगाने और साँसके आने-जानेमें रुकावट न हो। उसके चेहरे पर शीतल जलके छींटे मारने चाहियें और उसे तकियेके सहारे आरामसे लिटा देना चाहिये। सिर ऊंचा रखना चाहिये और हवा आने देनी चाहिये। कनपटी पेड़ और इर्द-गिर्दके अंगोंको मलना चाहिये। रोगीको खाट पर ही कैद न रखना चाहिये। जितना संभव हो उतना, हिलने-डोलने देना चाहिये। एक ग्रेन एपोमोरफाइन (Apomorphine) का बीसवाँ भाग हाइपोडरमिक नीडिल (Hypodermic needle) से देना

अच्छा है। इससे वमन होगी और जी बहुत मितलावेगा ; परन्तु हिस्टीरियाके हमलोंका अन्त हो जायगा।

ज्योंही रोगी अच्छी तरहसे होशमें आजावे, उसके पैर और टाँगोंको गरम जलसे धोओ और उसे लोबेलिया (Lobelia) और इपीकाक (Lobelia & Ipecac) देकर वमन कराओ। इससे पेट और गलेमें जमा हुआ कफ और बल्ग़म निकल जायगा और मस्तिस्क तथा स्नायुओंमें विशेष लाभ होगा।

दौरा ख़तम होनेके बाद, रोगीको, आँतें साफ करनेके लिए, नर्म जुलाब देना चाहिये। अगर स्थायी लाभ चाहो, तो आँतोंको सदा साफ़ रखो। एलोइन (Aloin), बेलेडोना और स्ट्रिकेनियाकी गोली हर रातको या हर दूसरी रातको देनेसे बड़ा लाभ होता है—आँते बलवान, साफ़ और निरोग रहती हैं।

"हींग" इस रोगकी मशहूर दवा है, इसीसे औरतें अक्सर इससे नफ़रत किया करती हैं। मटर-समान हींगकी गोली, दिनमें एक या दो बार, सेवन कराना हितकर है। टिंकचर आफ वेलरियन (Tincture of Valerion) भी इस अजीब हालतमें बहुत मुफीद है।

अगर रोगी कमजोर हो, तो उसे कोई तबियत बहाल करनेवाली मुक़व्वी दवा या पौष्टिक औषधि देनी चाहिये। रोगीसे मिहरबानीका बर्ताव करना चाहिये। उससे कोई कड़ी या दिल बिगाड़ने वाली बात न कहनी चाहिये, जिससे कि उसका दिल बिगड़े। रोगिणीको बहुधा खुली हवामें टहलना या वरजिश वगैरः करना चाहिये। नाक तक ठूँस कर बहुत खाना न खाना चाहिये। हल्का और जल्दी हज़म होने वाला पुष्ट भोजन करना चाहिये।

हिकमतकी विधिसे

मृगीकी विशेष चिकित्सा।

कफकी मृगीकी चिकित्सा।

(१) एलुआ, तुर्बुद, गारीकुन, कालादाना, इन्द्रायणका गूदा और सकमूनिया—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर "शहद"में खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे कफकी मृगी नाश हो जाती है।

(२) जुलाब और झुकनेके बाद, कालीमिर्च और जुन्देबेदस्तर महीन पीस कर रोगीको सुँघाओ। इस उपायसे बाक़ी रहा हुआ मल भी जड़से नष्ट हो जायगा।

(३) सवेरे ही थोड़ी मिहनत भी करनी चाहिये। देहको इस तरह मलना चाहिये, कि हाथ ऊपरसे नीचे आवे। हाथ-पाँवसे मलाई शुरु करनी चाहिये और सिरको भी इसी तरह मलना चाहिये।

(४) अकरकरा, उस्तखुदूस, सियालयुस हरेक ३५।३५ माशे; गारीकून १७॥ माशे, किर्दमाना ताज़ा और तर ८॥ माशे, खुशबूदार हींग ८॥ माशे, जरावन्द ८॥ माशे, मुदहरिज ८॥ माशे, ऊदबिलसाँ ८॥ माशे और बिलसाँ ८॥ माशे—इन सबको कूट-पीसकर जंगली प्याज़की सिकंजबीनमें मिला लो। इसकी मात्रा ४॥ माशेकी है।

(५) पुरानी कफकी मृगी पर यारज हिरमिसी और छोटा भिलावा लाभदायक है।

बादीकी मृगीकी चिकित्सा।

(६) मलको पकाकर, अफ्तीमूनके काढ़े और बादी नाश करने वाली गोलियोंसे मलको साफ करो। जब सिर साफ हो जाय, "अम्बर और गुलाब" घिसकर सुंघाओ। इससे सिरमें ताक़त आवेगी। बकरीके मांस या मुर्ग़ीके बच्चे और मोटी मुर्ग़ियोंके शोरवे पिलाओ।

खूनकी मृगीकी चिकित्सा।

(७) "साफन"की फस्द खोलो, पिंडलियों पर पछने लगाओ और खाना कम खिलाओ।

(८) अगर मल, दिमाग़के सिवा, सारे शरीरमें फैल जाय; तो पहले दोनों हाथोंकी "सरेरुकी फस्द" एक ही बार खोलो या एक हाथकी खोलो। रोगीकी शक्ति और दशाको समझकर खून निकालो। मृगी रोगोकी फस्द वसन्तमें खोलना अच्छा है।

(९) दिमाग़में कमज़ोरी न हो और शीत आनेका भी ख़ौफ़ न हो; तो कई दिन बाद, ज़रूरतके समय, जीभके नीचेकी फस्द खोलो और गुद्दी पर पछने लगाओ। फस्द खोलनेके बाद, सात दिन तक, रोगीको आराम दो। मलकी सफाई करो। अगर फिर ज़रूरत हो, तो "साफिनकी फस्द" फिर खोलो या दोनों पिंडलियोंपर पछने लगाओ। अगर इतना करने पर भी खून भर आनेके लक्षण दीखें, तो मल निकालनेके पीछे, सात दिनतक आराम देकर, फिर सफाई करो और दिल-दिमाग़की ताक़तको क़ायम रखते हुए फिर मलको निकालो, जिससे भाफके परमाणु पैदा करनेवाला मल जड़से ही नष्ट हो जाय।

पित्तकी मृगीकी चिकित्सा।

(१०) पित्तका मल निकालनेके लिए "शर्बत आलू और शर्बत इमली" शीतल पानीमें मिलाकर पिलाओ। प्रकृतिको दुरुस्त करनेके लिए नाकमें दवाएं टपकाओ और सुंघाओ। शीतल और तर तेल लगाओ। अगर कोई अंग ऐंठ जाय, तो तेल और गुनगुना पानी मिलाकर उस जगह मलो। इस उपायसे ऐंठन दूर हो जाती है। यह तेल-पानी मृगीके समय और मृगी जानेके बाद, दोनो समय ही मला जा सकता है।

आमाशयकी मृगीकी चिकित्सा।

(११) अगर मुनासिब समझो, तो "सरेरू या बासलीक"की फस्द खोलो ; क्योंकि फस्दसे सारे दोष निकल जाते हैं। हर प्रकारके मलको निकालनेके लिए वमन और विरेचन कराओ। आमाशयकी मृगीमें कय कराना जियादा अच्छा है। उन दस्तावर गोलियों और काढ़ोंको काममें लाओ, जो इस जगह मुनासिब हों।

(१२) अगर कफके दोषका प्रकोप हो, तो मूली और सोयेके पानीमें शहदको बनी हुई सिकंजबीन मिलाकर पिलाओ और कय करा दो। इस तरह आमाशयके मलको निकालकर, आमाशयको पुष्ट भी करो, जिससे वह मलको फिर ग्रहण न कर सके। इसके लिए गुलाबके फूल, मस्तगी, कुन्दरूके छोटे-छोटे टुकड़े, अगर और बालछड़—इन पाँच दवाओंको बराबर-बराबर लेकर महीन करलो और गुलाब-जलमें मिलाकर आमाशयपर लेप कर दो। इस कामके सिवा, रोगीको तिर्याके अरबा, गरम जवारिश और गुलक़न्द तथा भुना हुआ मांस और पक्षियोंका मांस दालचीनीसे सुगन्धित करके खिलाओ।

(१३) अगर बादीके दोषका कोप हो, तो मूलीको चीरकर उसमें

काली कुटकी भर दो और फिर मुँह बन्द करके सिकञ्जबीनमें भिगो दो। इसके बाद उसे रोगीको खिला दो। ऊपरसे शहदकी सिकंज-बीनमें लोबियेका पानी मिलाकर पिलादो। फिर वमन करानेकी कोशिश करो।

मल निकल जानेके बाद आमाशयके पुष्ट करनेके लिए, आमाशय पर चन्दनको गुलाबजलमें घिसकर लेप करो। कफके दोषकी दवाएं भी, जो उपर नं० १२ मे लिखी हैं, इस मौक़ेपर काममें ले सकते हो।

दूध पीनेवाली बकरीका मांस या मुर्ग़ीके बच्चोंका मांस—मूँग, बादामकी गरी और पालकके साथ पकाकर खिलाओ।

(१४) अगर पित्तका दोष हो, तो सोये, ख़रबूजे और ख़ब्बाजीके बोजोंका काढ़ा करके, उसमें थोड़ासा नमक और सिंकंजबीन मिलाकर रोगीको पिला दो और कय कराओ। अगर इस नुसख़े-में थोड़ासा गरम जल भी मिला दिया जाय, तो और भी अच्छा हो।

पहलेकी तरह, मल निकल जानेके बाद, आमाशयके पुष्ट करनेके लिए, खुरफा, काहूके पत्ते और बेदकी शाखोंको पीसकर और सिरकेमें पकाकर आमाशयपर लेप करो। बिहीका रूब—बंसलोचन और सूखा धनिया मिला कर पिलाओ। बकरीका मास इमली मिलाकर और धनियासे सुगन्धित करके खिलाओ।

(१५) आमाशयकी मृगी जो बुरे दोषोंके कारणसे पैदा होती है और जो पेटके ख़ाली रहनेसे बढ़ जाती है, उसका इलाज खुश्कीके सिरदर्दकी तरह करना चाहिये। जैसे,—

रोगीको उत्तम और तर खाने खिलाओ। जौका दलिया, मोटी मुर्ग़ियोंका शोर्वा, बादामके तेल और निशास्तेका हरीरा खिलाना अच्छा है। बादामका तेल या तिलीका तेल सिर और बदनपर

मलो ; बनफ़शेका तेल, कद्दूका तेल और नीलोफ़रका तेल नाकमें टपकाओ। मुर्ग़ियोंकी चर्बी और तीतरोंकी चर्बी खाने और लगानेके काममें लाओ।

तिल्ली वग़ैरःकी मृग़ियोंकी चिकित्सा।

(१६) तिल्ली वाली मृगीमें तिल्लीका इलाज करो, जिगर वालीमें जिगरका, रजोधर्मकी ख़राबीसे होने वालीमें रजोधर्मका और आँतोंके कीड़ोंसे होने वालीमें कीड़ोंका इलाज करो।

(१७) अगर पेटके ऊपरकी झिल्लीमें जलन होनेकी वजहसे मृगी रोग हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(क) हर चालीसवें दिन या आगे-पीछे बासलीक रगकी फस्द खोलो। अगर ख़ून ज़ियादा हो और कोई बलवान उपद्रव न हो, तो आवश्यकता और समय-अनुसार ख़ून निकालो। इस रोगमें नश्तर चौड़ा लगाओ, ताकि गाढ़ा ख़ून निकल जाय। यह क़ायदा सब बादीके रोगोंके लिये हैं, जिनमें कि फस्द खोलना उचित है।

(ख) शर्बत बनफ़शा और शर्बत ख़शख़ाश लाभदायक हैं।

(ग) जौका दलिया या धुली मूंगकी दाल—बादामकी मींगियोंके साथ दो।

(घ) पेटके भीतरके अंगोंमें ताक़त लानेके लिये "गुलक़न्द" खिलाओ।

(ङ) अगर ज्वरांश हो और जुलाब देना हो, तो नीलोफ़र, कासनीके बीज, मकोय, तुरंजबीन और मिश्रीका जुलाब बनाकर दो।

पाँव या हाथमें दोष जमा होकर होनेवाली मृगीकी चिकित्सा।

(१८) मृगी आनेके समयसे पहले, उस जगहसे कुछ ऊपरकी ओर खूब कस कर पट्टी बाँध दो, ताकि शीतल हवा या ख़राब माद्दा ऊपरकी ओर चढ़ न सके।

उस अंगकी मौजूदा सर्दीको वहाँकी वहीं नष्ट करनेके लिए, आगसे या उन दवाओंसे गरमी पहुँचाओ, जो गरम प्रभाव रखती हैं, पर छूनेमें गरम नहीं लगतीं। जैसे,—अकरकरा, चीता, हींग, फरफ़-यून और बिलसाँका तेल। इनका लेप बना कर उस जगह लगाओ। अगर इस लेपको गरम करके लगाओ तो और भी अच्छा।

गरम पानीमें बाबूनेका तेल मिलाकर, उस अङ्गको उसमें डुबो रखो ; पर उस पानीको शीतल न होने दो। उसे गरम रखनेके लिये, उस पानी और तेलसे भरे बासनके नीचे आग रखो या उसमें गरम जल मिलाते रहो।

मृगीके समयसे पहले कई बार कफको निकालो और दिमाग़में ताक़त और गर्मी पहुँचानेके लिये जंगली प्याज़की सिकंजबीन और शर्बत उस्तखद्दूस पिलाओ। तुतली, कस्तूरी और अम्बर सुँघाओ। पोदीनेका तेल सिर पर मलो।

जब देह मल-रहित और दिमाग़ बलवान हो जाय, तब उस अंगमें गरमी पहुचानेके लिये राई, जुन्देबेदस्तर और कालीमिर्चको, शहदमें मिलाकर उस जगह लेप करो। अथवा जैतूनका तेल, बेद अंजीरका तेल, तुतलीका तेल और कूटका तेल वहाँ पर मलो।

अगर उपरोक्त उपायोंसे लाभ न हो, तो उस अंगको इस तरह दाग दो, कि मिलावेका शहद, कबूतरकी बीट, अंजीरका दूध और कोकनजका लेप करनेसे घाव हो जाय और उस घावको बहुत दिनों

तक अच्छा न होने दो, जिससे ख़राब मल पीप बन-बन कर थोड़ा-थोड़ा निकल जाय ।

घाव करने वाली दवाकी अपेक्षा, पछनो समेत या बिना पछनोंके सींगी लगाना उत्तम है ।

अगर चाहो कि घाव न भरे, तो उस पर एक शीशेका टुकड़ा बाँध दो । (शीशेसे मतलब शीशा धातुसे है । जैसे,—रांगा, शीशा और लोहा इत्यादि ।

डाक्टरी-मतसे

मृगी रोगका वर्णन।

मृगी रोगको अँगरेज़ीमें "एपिलेप्सी" या "फॉलिङ्ग सिकनेस" (Epilepsy or Falling Sickness) कहते हैं। इस रोगका सम्बन्ध नरवस सिष्टम (Nervous System) अर्थात् स्नायु-मण्डलसे है। आक्षेप, कम्पन और मूर्च्छाका यकायक आक्रमण, स्पन्दहीनता, चैतन्यहीनता और निद्राका आवेश प्रभृति इस रोगके चिह्न हैं। मानवजाति जिन भयङ्कर-से-भयङ्कर रोगोंके अधीन है, उनमेंसे मृगी रोग भी एक रोग है।

इस रोगके दौरे यकायक होते हैं। दौरेका असर चन्द मिनिट या आध घण्टे तक रहता है, इसके बाद मनुष्य पहलेकी तरह चङ्गा या अच्छा-भला हो जाता है। हाँ, कोई कम और कोई ज़ियादा कमज़ोर या बलहीन हो जाता है तथा तन्द्रा आया करती है। यह रोग बच्चों और जवानोंको ज़ियादा होता है। उनमें भी लड़कियोंकी अपेक्षा लड़कोंको बहुत होता है। इस रोगके हमले या दौरे अक्सर निरूपित समय या वक्त मुक़र्रर पर, महीनेकी महीने अथवा हर नये या पूरे चाँदके दिन होते हैं। बहुधा यह रोग पैतृक (Hereditary) भी होता है। अगर बापको मृगी रोग होता है, तो उसके पुत्रको भी होता है। एक कुटुम्बके बहुतसे लोग अपस्मार रोगसे ग्रसित होते हैं। यहाँतक कि यह रोग एक कुटुम्बमें पीढ़ियोतक होता रहता है। बुद्धिमानोंको मृगी-रोगियोंकी शादी न होने देनी चाहिये। उनको किसी स्थिर व्यवसायमें लगा देना चाहिये, जिससे कि वे मृगीके हमलेके समय महफ़ूज़ या सुरक्षित रह सकें।

लक्षण ।

यह रोग हमेशा यकायक हमले करता है · यानी इसका आक्र-मण सहसा होता है और आक्रमण होते ही रोगी पृथ्वीपर गिर पड़ता है। चूंकि इस रोगमें रोगी गिर पड़ता है, इसीलिये इस रोगको फोलिङ्ग सिकनेस—गिरनेका रोग—भी कहते हैं। जब यह रोग मुस्तक़िल तौरसे शरीरमें ठहर जाता है और दौरा करनेका आदी हो जाता है, तब बाज़-बाज़ वक्त रोगीको चन्द अलामतों या पूर्व चिह्नोंसे इसके दौरेकी सूचना मिल जाती है, यानी वह जान जाता है कि, अब मृगीका हमला होने ही वाला है। दौरा आनेसे पहले रोगीका सिर घूमने लगता है, आँखोंके सामने अँधेरी आती है, दिल घबराता है, कानोंमे ज़ोरसे आवाज़ सुनाई पड़ती है, आँखोंके सामने आगकी चिनगारियाँ और शोलेसे उड़ते हैं, अंग प्रत्यङ्ग काँपते हैं, चिन्ता हो जाती है, तन्द्रा या ऊँघसी आती है और रोगी नींदमें सोता-सोता चौंक पड़ता है। उसका मिज़ाज चिड़चिड़ा हो जाता है। मृगीके ये पेशख़ीमे या पूर्व्व सम्वादकारी चिह्न बहुधा बहुत ही थोड़ी देर ठहरते हैं। कभी-कभी ये दो चार सेकण्डसे जियादा नहीं रहते। कुछ बीमार डरपोक और कायर हो जाते हैं और कुछ द्वेषी, अपकारी, हिंसक, झगडालू और हानिकारी हो जाते हैं।

किसी-किसीको मृगीके हमलेसे पहले भूत-प्रेत नज़र आते हैं; यानी पहले भूत प्रेतोंकी सी शकलें दीखती हैं और फिर मृगी आ जाती है। उन सूरतोंको देखते ही रोगी समझ लेता है कि, अब मृगी आनेवाली है। कुछ लोगोंको मृगीके हमलेसे पहले विशेष प्रकारकी लहरसी मालूम होती है. जिसे 'औरा एपिलेपटीका' (Aura Epileptica) कहते हैं। वह एक प्रकारकी कॅपकॅपी सी होती है, जो पैरों या टाँगोंसे शुरु होकर, जबतक कि सिरतक पहुँच नहीं जाती, धीरे-धीरे फैलती रहती है। बस, इसके बाद ही रोगी बेहोश सा होकर गिर पड़ता और मूर्च्छित हो जाता

है। बहुतसे लोगोंको मृगी सदा रातके समय नींदमें आया करती है।

ज्योंही रोगका हमला होता है, रोगी बेसुध या हतज्ञान हो जाता है और उसके अंग बड़े ज़ोरोंसे खिंचने लगते हैं। आँखें इधर-उधर घूमती हैं। होठ, पलक और चेहरेके पट्ठे अत्यन्त मुड़ने और खिंचने या एँठने लगते हैं। रोगी दाँतोंसे दाँत घिसता या दाँत पीसता है और उसके मुखसे झाग निकलने लगते हैं। बाज़-बाज़ औक़ात दाँती भिंच जाती है और जाबड़े जुड़ जाते हैं। किसी-किसी वक्त रोगीका चेहरा पीला हो जाता है, लेकिन बहुत बार चेहरेका रंग अरग़वानी या बैंजनी सा देखनेमें आता है। सिर और गर्दनकी रगें खूनसे मचामच भरी हुई सी जान पड़ती हैं। जल्दी या देरसे ये तशन्नुजी अलामतें आहिस्ते आहिस्ते, घटने लगती हैं। होश आने पर रोगी निस्तेज, तेजहीन और थका हुआ सा मालूम देता है और बेहोशीकी हालतमें या दौरेके समय क्या-क्या हुआ, उसे उसकी ज़रा भी याद नहीं रहती।

रोगके कारण।

बहुतसे लोगोंको तो यह रोग माता-पितासे विरासतमें मिलता है; यानी उनमें इसका बीज मौजूद ही रहता है। यह रोग अक्सर उठती जवानीमे होता है, क्योंकि उस समय उनकी आदतें बदल जाती हैं, उनके रोज़ाना कामोंमें बहुतसी तब्दीलियाँ हो जाती हैं। उनके नियम और व्यवस्थाओंमें उलट-फेर हो जाते हैं। इसी उम्रमें लोग अति मैथुन और हस्तमैथुन आदि कर्म करने लगते हैं।

बहुत लोगोंको यह रोग खोपडीकी गठन या बनावट ठीक न होनेसे, खोपड़ीकी हड्डियोंके दबी हुई होनेसे, खोपड़ीकी अन्दरूनी सितहपर स्पञ्ज जसी नर्म या सूराखदार चीज़ पैदा होनेसे और मस्तिष्कमें अत्यन्त खून भर जानेसे होता है। ऐसे पैदा हुए रोगको "आदि कारणिक" (Idiopathic) कहते हैं।

बहुत लोगोंको कृमि प्रभृति द्वारा आँतोंके दूषित होनेसे, दाँत निकलनेसे, खून-हैज़ या मासिक धर्म बन्द हो जाने या रुकनेसे और शरीरके स्नायु-मण्डलमे विपका प्रवेश हो जानेसे यह रोग हो जाता है । हस्त-मैथुन (Masturbation) तो इस रोगके पैदा करनेमें सभी कारणोका अगुआ है, यानी हस्तमैथुन करनेवालोंको तो यह रोग अवश्य ही होता है । बचपनमें तशन्नुज या वाँइटे आया करते हैं । अगर उनका इलाज ठीक तरहसे नहीं किया जाता, तो वे मृगीमें बदल जाते हैं ; यानी वाँइटे आते-आते मृगी आने लगती है । जहाँ रोगका बीज मौजूद होता है, वहाँ मनकी प्रबल उत्तेजना या दिली जोशसे अथवा स्नायुविक उत्तेजनासे, यह रोग हो जाता है ; यानी यकायक भय, उत्कट इच्छा, प्रेम, अनुराग और स्नेह प्रभृतिसे यह रोग हो जाता है । घूँसा, घाव, हड्डीका टूटना और सिरमें चोट लगना भी इसके कारण हैं । अगर हड्डी टूट जाती है और उसका ठीक इलाज नहीं होता ; यानी हड्डीका दबा हुआ भाग जितना ऊँचा होना चाहिये उतना ऊँचा नहीं किया जाता, तो वह मस्तिष्क या ब्रेन (Brain) पर दबाव डालती और मृगी रोग उत्पन्न करनेका यथेष्ट कारण हो जाती है ।

चिकित्सा ।

मृगीके दौरेके समय बहुत ही कम इलाज किया जा सकता है और कम ही करना भी चाहिये । हाँ, जहाँ तक मुमकिन हो, ऐसा उपाय अवश्य कर देना चाहिये, जिससे रोगी अपने ही चोट न लगा ले । उसकी गर्दनके आस-पासकी सभी चीज़ें दूर कर देनी चाहियें ।

आज तक इस रोगकी अनेकों दवाएँ निकलीं और निकल रही हैं ; पर सच तो यह है कि, उनमें से कोई सी ही समय पर काम देती है , यानी कभी-कभी वे सब की सब ही फेल हो जाती हैं—काम नहीं देतीं ।

अगर खोपड़ीकी गठन या बनावट ठीक न होनेकी वजहसे अथवा मस्तिष्क की ऐन्द्रिक गड़बड़ी (organic derangement of the brain) के कारणसे मृगी रोग होता है, तो वह कदाचित ही आराम होता है , खासकर उस हालतमें, जब कि रोगी जवानीकी उम्र पार कर जाता है ; यानी जवानी पार कर जाने पर ऐसे मृगी-वालेके आराम होनेकी आशा नहीं।

अगर रोग उपसर्गज हो, सिष्टममें और कहीं ख़राबी हो, उस ख़राबीका सम्बन्ध सीधा सिरसे न हो, तो वह कारणके नाश करनेसे आराम हो सकता है। पर इस दशामें जनरल सिष्टम पर ठीक तौरसे ध्यान रखना होगा।

इस रोगकी किसी भी हालतमें, गाहे व गाहे, दस्तावर दवा देना हित है। पोडोफिलन या मेएपिल (Podophyllin or Mayapple) कीड़ोंकी उत्तम दवा हैं। ख़ून और उस रतूवतके, जो पर्दाए दिल और पर्दाए शिकमसे ख़ारिज होती है, अत्यन्त भर उठने या फूट कर वह निकलनेमें भी बहुत उत्तम है। पेट या आँतोंको ठीक रखनेके लिए मेएपिल (Mayapple) की जड़ पीसकर देनी चाहिये। इसकी गोलियाँ भी बन सकती हैं। दिनमें दो या तीन गोलियाँ देनी चाहियें। अथवा एक्सट्रैक्ट हायोसियामस और पोडोफिलन (Hyosciamus & Podophyllin) की गोलियाँ बना कर देनी चाहिय। एक गोलीमें दो ग्रेन पहली और एक ग्रेन पिछली दवा मिलानी चाहिये और नित्य एक या दो गोली रोगीको देनी चाहिए।

हमें यह बात माननी पड़ेगी, कि मृगी रोगमें दवादारूसे यथेष्ट या सन्तोषप्रद लाभ नहीं होता। सिर्फ 'ब्रोमाईड' ऐसी चीज़ है, जो काम देती है। जवान रोगीको, हर रोज़, दूध या सोडावाटरमें, भोजनके बाद, एक ड्राम सोडियम ब्रोमाईड (Sodium Bromide) देनेसे अवश्य लाभ होता है। अगर मृगीके हमलेकी उम्मीद हो, तो इसकी एक मात्रा पहलेसे ही दे देनी चाहिये।

इस रोगमें टॉनिक (Tonic) या पौष्टिक पदार्थोंसे बहुत-कुछ लाभ होता है, क्योंकि इस रोगमें रोगीका शरीर और सारा सिष्टम कमज़ोर हो जाता है ; यानी शरीर और स्नायु-मण्डल बलहीन हो जाते हैं और कभी-कभी यह रोग छिपा हुआ शीतज्वर या नक़ाबपोश बुखार (Masked Ague) हो जाता है। ऐसे केसोंमें टॉनिक या पुष्टिकर दवा देना अत्यन्त प्रयोजनीय है। इस रोगमें कुनैन भी दी जा सकती है। एक्सट्रैक्ट हायोसियामस और कुनैनकी गोलियाँ बहुत उत्तम होती हैं। एक गोलीमें कुनैन एक से दो ग्रेन तक होनी चाहिये और हर रोज़ ३ से ६ तक गोली देनी चाहियें।

एक अनुभूत उपाय।

डाक्टर प्यारेलाल साहब एल० एम्० एस० एण्ड एम्० महाशयने एक छोटेसे मृगीवाले बच्चेको जिस उपायसे आराम किया, उसे हम पाठकोंके उपकारार्थ नीचे लिखते हैं। आपने अपना नुसख़ा "वैद्य" मुरादाबादमे छपाया था :—

क्लोरल हाइड्रेट (Cloral Hydrate) दो ग्रेन, एमोनियम ब्रोमाइड (Ammoni Bromide) पाँच ग्रेन और एक्वा (Aquae) छे ड्राम—इन सबको मिलाकर ६ खूराक कर लो और ४।६ महीनेके मृगीवाले बालकको चार चार घन्टे पर सेवन कराओ। इस नुसख़ेके चार छे दिन देनेसे मृगीके दौरे बन्द हो जाते हैं।

इस दवाके पिलानेसे पहले, डाक्टर साहबने रोगी बालकको सवेरे-शाम सुहाते-सुहाते गरम पानीमें, पाँच मिनटतक, बैठा रखने और फिर निकालकर कम्बलमें लपेटनेको कहा। साथ ही ऊपरका नुसख़ा चार-चार घंटेमें देनेकी हिदायत की। दवा आरम्भ करनेके समय उस बालकको १ घंटेमें ३० दौरे होते थे—मुंहमें बार बार झाग आते थे। इस दवासे २४ घंटेमें ८ दौरे हुए ; यानी एकही दिनमें २२ दौरे कम हो गये। दूसरे दिन सिर्फ एक दौरा हुआ और चार दिन दवा देते रहनेसे बालक बिल्कुल आरोग्य हो गया।

निदान कारण ।

रूखे और शीतल पदार्थ खानेसे—कम खानेसे—हल्के अन्न खानेसे—कडवे, कषैले और चरपरे पदार्थ खानेसे—अत्यन्त स्त्रीप्रसङ्ग करनेसे—पूरबकी हवा लगनेसे—बहुत जागनेसे—पानीमे तैरनेसे—चोट वग़ैर: लगनेसे—बहुत मिहनत करनेसे—अत्यन्त सर्दी लगनेसे—व्रत-उपवास करनेसे—मलमूत्र आदि वेग रोकनेसे—कामदेवकी पीड़ासे—शोक या रञ्ज करनेसे—चिन्ता-फ़िक्र करनेसे—डरनेसे—बहुत ख़ून निकलवानेसे—रोगके कारण मांस क्षीण होनेसे—अत्यन्त वमन-विरेचन करनेसे—विषम उपचार करनेसे—अखाड़े वग़ैर:में कलाबाज़ी आदि खेल करनेसे—बहुत राह चलनेसे—अत्यन्त कसरतकुश्ती करनेसे—अत्यन्त विरुद्ध चेष्टा करनेसे—रस और रुधिर आदि धातुओंका क्षय होनेसे—मर्मस्थानोंमें लगनेसे एवं हाथी घोड़ा और ऊँट आदि जल्दी चलनेवाली सवारियोंपर चढ़नेसे—बलवान 'वायु' कुपित हो जाता है ।

वात रोगोंकी संप्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे "वायु" कुपित होकर, देहके ख़ाली स्रोतों या नसोंमें भरकर, अनेक तरहके एकाङ्ग या सर्व्वाङ्गव्यापी रोग पैदा करता है। कहा है:—

रूक्षशीतलघुभिश्चतिक्तकैर्ल घनप्लवन — — मार्गचेष्टितैः।
क्रोधशोकभयवेगधारणैश्चिन्तया च कुपितोऽनिलोवली॥
स्रोतांसि रिक्तानि च पूर्णित्वा करोति देहे विविधान्विकारान्।
एकांगजान्सर्वशरीरजांश्च तत्पूर्वरूप कथित च तेपाम्॥

रूखे, ठण्डे, हल्के और कड़वे पदार्थ सेवन करनेसे, लङ्घन करनेसे, नीचे-ऊँचे मार्गमें चलनेसे; क्रोध, शोक और भय करनेसे; मलमूत्रादि के वेग रोकनेसे और चिन्ता-फ़िक्र करनेसे बलवान वायु कुपित होकर, देहके ख़ाली स्रोतों या छेदोंमें भरकर, एकाङ्ग या सर्व्वाङ्गव्यापी अनेक विकार उत्पन्न करता है। इस रोगके स्पष्ट लक्षण होनेसे पहले जो अस्पष्ट लक्षण होते हैं, उनको "पूर्वरूप" कहते हैं।

वात-कोपके समय।

वर्षा ऋतुमें, दिन और रातके तीसरे भागमें, अन्न पचने पर और शिशिर ऋतुमें वायु कुपित होता है।

कुपित वातसे होनेवाले रोग।

कुपित हुई वात—वर्षा आदि कारणोंसे—नीचे लिखे हुए ८० अस्सी रोग पैदा करती है:—

१ शिरोग्रह	२ अल्पकृशता	३ जँभाई
४ हनुग्रह	५ जिह्वास्तम्भ	६ गदगदता
७ मिनमिनापन	८ गगापन	९ बकवाद

१० वाचालता	११ रसाज्ञान	१२ बहरापन
१३ कर्णनाद	१४ त्वक्शून्यता	१५ अर्दित
१६ मन्यास्तम्भ	१७ बाहुशोष	१८ अपबाहुक
१९ विश्वाची	२० उर्द्ध्वबाहु	२१ आध्मान
२२ प्रत्याध्मान	२३ वातष्ठीला	२४ प्रत्यष्ठीला
२५ तूनी	२६ प्रतितूनी	२७ वह्नि-वैषम्य
२८ आरोप	२९ पसलीका दर्द	३० त्रिकशूल
३१ बारम्बार मूतना	३२ मूत्र रुकना	३३ मल-गाढ़ता
३४ मलाप्रवृत्ति	३५ गृध्रसी	३६ कलायखंजता
३७ खजता-लंगड़ापन	३८ पगुता	३९ क्रोष्टुक शीर्ष
४० खल्ली	४१ वातकंटक	४२ पाद-हर्ष
४३ पाददाह	४४ दण्डकाक्षेप	४५ वातपित्तकृताक्षेप
४६ दण्डापतानक	४७ अभिघाताक्षेप	४८ अन्तरायाम
४९ बाह्यायाम	५० धनुर्वात	५१ कुब्जक
५२ अपतन्त्र	५३ अपतानवात	५४ पक्षाघात
५५ सर्वांङ्गवात	५६ कम्प	५७ स्तम्भ
५८ व्यथा	५९ तोद	६० भेद
६१ स्फुरण	६२ रौक्ष्य	६३ कार्श्य
६४ काष्र्ण्य	६५ शैत्य	६६ अंगमर्द
६७ लोमहर्ष	६८ अंगविभ्रंश	६९ शिरासंकोच
७० अगशोष	७१ भीरुता	७२ मोह
७३ चलचित्तता	७४ निद्रानाश	७५ स्वेदनाश
७६ बलहानि	७७ शुक्रनाश	७८ रजनाश
७९ गर्भनाश	और	८० परिश्रम

नोट—"वातव्याधि" नाम यौगिक भी है और रूढ़ि भी ; क्योंकि शिरोग्रह आदि वातसे उत्पन्न होते हैं, इसलिये वातव्याधि कहलाते हैं। ऊपर लिखे हुए ८० वातरोग ही वातव्याधि कहलाते हैं, पर वातज्वर वातव्याधियोंमें नहीं गिना जाता। अगर वातव्याधि शब्द अकेला यौगिक ही होता, तो वातज्वर आदि व्याधियोंमें भी इस शब्दको प्रवृत्ति हो जाती।

वात कुपित होनेके लक्षण ।

याद रक्खो, वायुके कुपित होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

सन्धि-संकोच, स्तंभ, हडफूटन, पर्व-भेद, लोम-हर्ष, अज्ञान, प्रलाप, पाणिग्रह, पृष्ठग्रह, शिरोग्रह, खंजता, पंगुता, कुबड़ापन, अंगशोष, निद्रानाश, गर्भनाश, शुक्रनाश, रजोनाश, काँपना ; सिर, नाक, मुँह, आँख, हँसिया और गर्दनका भीतरकी तरफ चला जाना ; शरीर सो जाना या सूना हो जाना ; भेद, नोद, शूल, आक्षेप, मोह और श्रम या थकान तथा इसी तरहके और-और लक्षण वायुके कोपसे होते हैं ।

नोट—पीछे जो ८० प्रकारके वातरोग लिख आये हैं, वे सब वायुके कोप करनेसे ही होते हैं । ऊपर जो वायु-कोपके लक्षण लिखे हैं, वे सभी उन ८० वातरोगोंमें मौजूद हैं । उनके यहाँ फिर लिखनेकी जरूरत न थी, पर विद्यार्थीके समझनेके लिये इस तरह भी लिख दिये हैं ।

वातव्याधियोंके

पूर्वरूप, रूप और अपाय ।

वात व्याधियोंके 'पूर्वरूप' ज्वर प्रभृति रोगोंकी तरह साफ नहीं होते । वात रोगोंके अव्यक्त या अप्रकट लक्षणोंको उनके 'पूर्वरूप' और व्यक्त या प्रकट लक्षणोंको 'रूप' कहते हैं । प्रकुपित वायुकी लघुता-न्यूनता या कमीको ही उसका अपाय या नाश मान लेते हैं । मतलब यह, कि वायुका नाश कभी भी नहीं होता । उसका कम हो जाना ही—रोगका नाश होना समझा जाता है ।

हेतु-भेद और स्थान-भेदसे रोगोंकी भिन्नता।
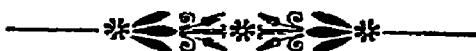
कुपित हुई वायु शिरोग्रह आदि ८० रोग पैदा करती है। हेतुओंके भेदसे और स्थानोंके भेदसे रोगोंकी भिन्नता होती है; यानी कारण और स्थानोंके भेदसे वायु विशिष्ट रोग करती है। "चरक"में कहा है—हेतुस्थान विशेषश्च भवेद्रोग विशेषकृत। जैसे,—कफावृत्त होनेसे "वायु" मन्यास्तंभ रोग उत्पन्न करती है और पक्वाशयमें स्थित होनेसे आँतोंका गूंजना प्रभृति रोग करती है।

हेतुओंके भेदसे वात-व्याधि।

"हारीत संहिता"में लिखा है :—

> प्राणोपानः समानश्च उदानो व्यान एव च।
> एषां दोषाद्भवन्त्येते वातदोषा॰ पृथक पृथक॥

प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान,—इन पाँचों वातोंके दोषसे जुदे-जुदे वात-दोष होते हैं।

हृदयमें रहनेवाली "प्राणवायु" अगर पित्तसे मिली होती है, तो वमन और दाह रोग करती है। यदि वह कफसे मिली होती है, तो दुर्बलता, ग्लानि, तन्द्रा और विरसता करती है।

गुदामें रहनेवाली "अपानवायु" अगर पित्तसे मिली होती है, तो दाह, गरमी और लाल पेशाब करती है। अगर वह कफसे मिली होती है, तो शरीरके नीचेके भागमें भारीपन और शीतलता करती है।

जठराग्निके नीचे रहनेवाली "समान वायु" अगर पित्त-संयुक्त होती है; तो पसीना, दाह, प्यास और मूर्च्छा करती है। अगर कफसे मिली होती है, तो मल-मूत्रकी रुकावट और रोएँ खड़े करती है।

कंठमें रहनेवाली "उदानवायु" यदि पित्तसे मिली होती है ; तो दाह मूर्च्छा, भ्रम और ग्लानि करती है। अगर कफसे मिली होती है, तो पसीनोंका अभाव, रोमाञ्च, अग्निमांद्य और शरीरकी शीतलता करती है।

सारे शरीरमे रहने वाली "व्यान वायु" अगर पित्तसे मिली होती है ; तो दाह, अंग फैंकना और ग्लानि करती है। अगर वह कफसे मिली होती है ; तो जडता, दण्डकाक्षेप, शूल और सूजन करती है।

नोट—अगर "वायु" पित्त-संयुक्त हो यानी वायुके साथ पित्त मिला हो, तो वात और पित्त दोनोंको हरनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये। अगर वायु कफसे मिली हो, तो वायु और कफ दोनोंहीको हरनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये।

स्थान-भेदसे वात-व्याधि ।

सप्तधातुगत वायुके लक्षण ।

रसगत वायुके लक्षण ।

जब वायु 'रस'में स्थित हो जाती है ; तब शरीरका चमड़ा रूखा, फटा हुआ, जड़, पतला, काला, सूई चुभोने-सरीखा, पीड़ायुक्त, खिंचासा और ललाई लिये हुए होता है। सातों चमड़ियोंमें पीड़ा होती है।

नोट—"चरक"में लिखा है, जब वायु चमड़ेमें घर कर लेती है, तब वह चमड़ीको रूखी, फटी, सोई हुई, कृश, काली, पीड़ायुक्त, तनी हुईसी और लाल रगकी कर देती है।

रक्तगत वायुके लक्षण ।

जब वायु 'रुधिर' या खूनमें ठहर जाती है ; तब तेज़ दर्द और सन्ताप होता है, शरीरका रंग बिगड़ जाता है, कमज़ोरी हो जाती है, अरुचि होती है, शरीरमें फोड़े होते हैं और भोजनके बाद शरीरमें स्तब्धता होती है।
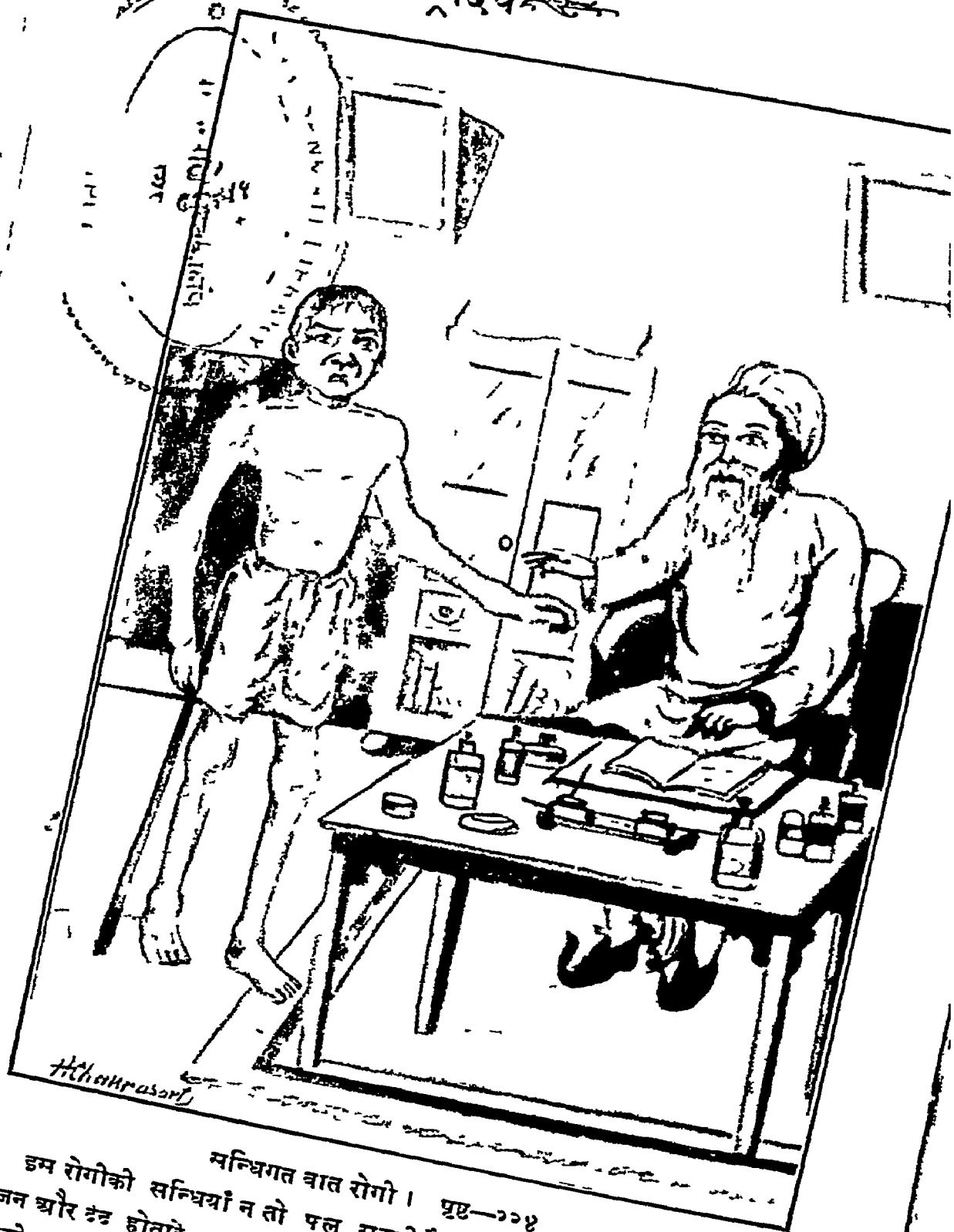
सन्धिगत वात रोगी। पृष्ठ—११४

इस रोगीकी सन्धियां न तो चल सकती हैं न सुकड़ सकती हैं। सन्धियोंमें सूजन और दर्द होताहै, अत इस रोगीको चलने-फिरने और खड़े होनेमें बड़ी तकलीफ होती है।

नोट—"चरक"में लिखा है, कि 'अरु षि' नामक फोड़े होते हैं।

मांसगत वायुके लक्षण ।

जब वायु 'मांसमें' होती है ; तब शरीरके अंग भारी हो जाते हैं, लकड़ी या मुट्ठी मारनेके जैसी पीड़ा होती है तथा स्तब्धता, व्यथा और अत्यन्त निश्चलता होती है।

नोट—"चरक"में लिखा है, मांस-मेदोगत वायुके कुपित होनेसे अगोंमें भारीपन एव दन्तावात और मुट्ठोसे मारनेके समान पीड़ा होती है। अत्यन्त शूल और श्रम या थकान मालूम होती है।

मेदोगत वायुके लक्षण ।

जब वायु 'मेदगत' होती है ; तब सारे लक्षण मांसगत वायुके समान होते हैं। थोड़ी पीड़ावाली गाँठें और फोड़े होते हैं, यही विशेषता होती है।

हड्डीगत वायुके लक्षण ।

जब दुष्ट वायु 'हड्डियोंमें' ठहर जाती है ; तब हड्डियोंकी सन्धियो या जोड़ोंमें तोड़नेकीसी पीड़ा होती है, सन्धियोंमें शूल चलते हैं तथा मांस और बलका क्षय या नाश होता है एवं नींद नहीं आती और प्रबल पीड़ा होती है।

मज्जागत वायुके लक्षण ।

जब दूषित वायु 'मज्जामें' स्थित हो जाती है ; तब सारे लक्षण हड्डियोंमे ठहरी हुई वायुके समान होते हैं। इतनी ही विशेषता होती है कि, मज्जागत वातसे पैदा हुई पीड़ा कभी भी शान्त नहीं होती— निरन्तर बनी रहती है।

शुक्रगत वातके लक्षण ।

जब कुपित हुई वायु वीर्यमें प्रवेश कर जाती है ; तब वह वीर्यको स्खलित नहीं होने देती, कच्चे गर्भको ही गिरा देती है अथवा उसे मूढ़ कर देती है, वीर्यके रंगको बदल देती और उसे ख़राब कर देती

हैं। वात-दूषित वीर्यसे उत्पन्न होनेके कारण, गर्भ कच्चा ही गिर जाता हैं। गर्भका मूढ़ हो जाना भी मुमकिन है।

नोट (१)—"चरक"में लिखा है, शुक्रस्थ वायु कुपित हो जानेसे वीर्य और गर्भ जल्दी-जल्दी निकलते हैं या रुक जाते हैं। यह 'वायु' शुक्र-वीर्य और गर्भ दोनोंको ही विकार करती है।

नोट (२)—रसगत वायु होनेसे स्नेहाभ्यंग और स्वेदन क्रिया करनी चाहिये। रुधिरगत वात होनेसे शीतल लेप करना चाहिये, जुलाब देना चाहिये और फस्तादि खुलवाकर खून निकलवा देना चाहिये। मांस-मेदगत वायु होनेसे जुलाब देना चाहिये और निरूहवस्ति करनी चाहिये, यानी काढ़ेकी पिचकारी गुदामें मारनी चाहिये। हड्डियों और मज्जामें वायु होनेसे, बाहर और भीतर स्नेह यानी घी तेल प्रभृतिकी योजना करनी चाहिये। इसमें "कतस्यादि तेल"का इस्तेमाल करना हित है। वीर्यगत वायु होनेसे, वीर्य बढानेवाले अन्न पान देने चाहिएँ।

स्थान-विशेषसे वात-व्याधि।
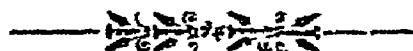
कोष्ठगत वायुके लक्षण।

नोट—कच्चा भोजन रहनेका स्थान, अग्निके रहनेका स्थान, पका हुआ भोजन रहनेका स्थान, मूत्र-स्थान, रुधिरका स्थान एवं हृदय, पीठ और फेफड़ा—इन सबको मिलाकर "कोठा" कहते हैं। यद्यपि "कोठा" शब्द सब आशयोंके लिए इस्तेमाल होता है; तथापि विशेष जाननेके लिये, आमाशय आदिमें रहनेवाली वायुके लक्षण अलग-अलग ही लिखे हैं।

"कोष्ठाश्रित वायु"के कुपित होनेसे मूत्र और विष्ठाका अवरोध होता है; यानी ये सब रुकते हैं और वायुगोला, हृदय-रोग, वद, बवासीर और पसलियोंमें दर्द ये सब लक्षण होते हैं।

नोट—इस हालतमें पाचक रसोंकी योजना करनी चाहिये अथवा अन्यान्य उपायोंसे मलको पकाना और विशेष करके दूध पिलाना चाहिये।

आमाशयगत वायुके लक्षण।

नोट—मनुष्य-शरीरमें नाभि और स्तनके बीचका जो भाग है, उसे "आमाशय" कहते हैं।

जब दुष्ट वायु "आमाशय"में रहती है ; तब हृदय, पसली, पेट और नाभिमें पीड़ा होती है ; प्यास लगती है, डकारें आती हैं तथा हैजा, खाँसी, कंठशोष और श्वास रोग होते हैं ।

नोट—इस दशामें पहले लंघन कराना, दीपन-पाचन औषधि देना, वमन कराना और तेज जुलाब देना हित है । चिकित्सा आगे लिखी है ।

पक्वाशयगत वायुके लक्षण ।

"पक्वाशयकी वायु"के कुपित होनेसे पेटकी आँतें गड़-गड़ करा करती हैं, शूल चलते हैं, वायु कुपित होती है, मूत्र और मल थोड़े उतरते हैं, पेट फूल जाता है और पीठके बाँसे या त्रिकस्थानमें दर्द होता है ।

नोट—इस दशामें, "उदावर्त्त रोग" की सी चिकित्सा करनी चाहिये । जठराग्नि बढ़ानेवाले उपाय करना और स्नेहयुक्त—तैलादि-मिली दस्तावर दवा देना हित है । पेटकी वायु कुपित हो, तो क्षार और चूर्ण आदि दीपन औषधियाँ देनी चाहियें । कोखकी वायु कुपित होनेसे सोंठ, इन्द्रजौ और चीतेका चूर्ण गरमजलके साथ देना चाहिये । इन सबकी चिकित्सा आगे लिखी है ।

गुदागत वायुके लक्षण ।

"गुदाकी वायु"के कुपित होनेसे मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं ; शूल चलता और पेट अफर जाता है , पथरी और शर्करा रोग हो जाते हैं । पिंडली, साथल, कमर, पसली, कन्धे और पीठमें दर्द हो जाता है ।

नोट—इस दशामें भी "उदावर्त्त" रोगकी तरह इलाज करना चाहिये । आगे चिकित्सा लिखी है ।

कान आदि इन्द्रियोंकी वायुके लक्षण ।

इन्द्रियगत वायुके लक्षण ।

कुपित हुई वात जब नाक, कान आदि इन्द्रियोंमे रहती है, तब उनकी शक्तिका नाश कर देती है ।

शिरागत वायुके लक्षण।

"शिराओंकी वायु"के कुपित होनेसे शिराओंमें शूलकी पीड़ा होती है, शिराएँ सुकड़ जातीं और मोटी हो जाती हैं तथा अन्तरायाम, वाह्यायाम, खल्ली और कुबड़ापन ये वातरोग होते हैं*।

नोट (१)—"चरक"में लिखा है, शिरागत वायु कुपित होनेसे शरीरमें थोड़ी वेदनाके साथ सूजन होती है, शरीर सूखता और फड़कता है तथा सारी शिरायें मोटी हुई, पतली या मोटी हो जाती हैं।

नोट (२)—इस दशामें स्नेहाभ्यंग करो। स्नेहसहित बफारा दो। स्नेहकी मालिश करो। स्नेह का लेप करो और खून निकलवाओ। चिकित्सा आगे लिखी है।

स्नायुगत वायुके लक्षण।

"स्नायुगत वात"के कुपित होनेसे शूल, आक्षेपक और स्तंभ होता है†।

नोट—इस हालतमें पसीने निकालो, दाग दो, सख्त बन्धन बाँधो और तेल वगैरः चिकने पदार्थ चुपड़ो।

सन्धिगत वायुके लक्षण।

"सन्धियों या जोड़ोंमें रहने वाली वायु" सन्धियोंको तोड़ देती है और शूल तथा सूजन पैदा करती है।

नोट—"चरक"में लिखा है, सन्धिगत वायुके कुपित होनेसे, सन्धियोंमें हवासे फूली हुई मशकके समान सूजन—छूनेसे—मालूम होती है। सन्धियाँ न तो फैल सकती हैं और न सुकड़ सकती हैं। उनमें पीड़ा होती है।

---

* शिराका अर्थ नस या रग है। अंगरेजीमें शिराको "Vein" कहते हैं। शिराओंसे सन्धियाँ बँधी हुई हैं। वे वातादि दोष और रसरक्त आदि धातुओंको बहाती हैं। शिराएँ स्नायु नामकी नसोंसे छोटी होती हैं।

† स्नायु भी एक प्रकारकी नसें है। ये शिराओंसे बड़ी होती हैं। शरीरका मांस, हड्डी और सन्धियाँ इन्हींसे बँधी हैं। अँगरेजीमें स्नायुको "Nerve" कहते हैं और स्नायु-मण्डलको "Nervous System" कहते हैं।
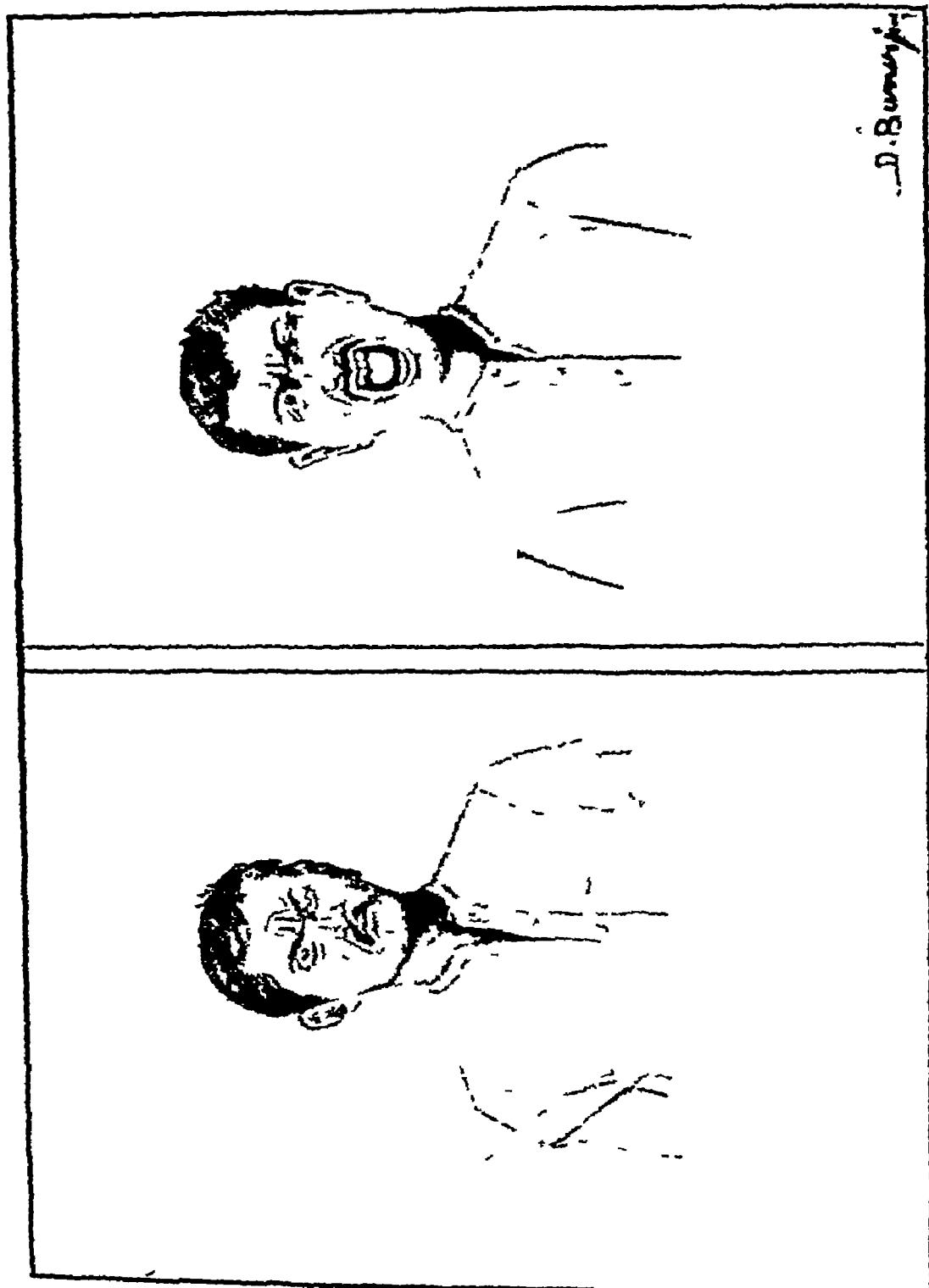
ये दोनों चित्र हनुग्रह रोगियोंके हैं। एकका मुँह खुला रह गया है और दूसरेका बन्द हो गया है। पृष्ठ २२५
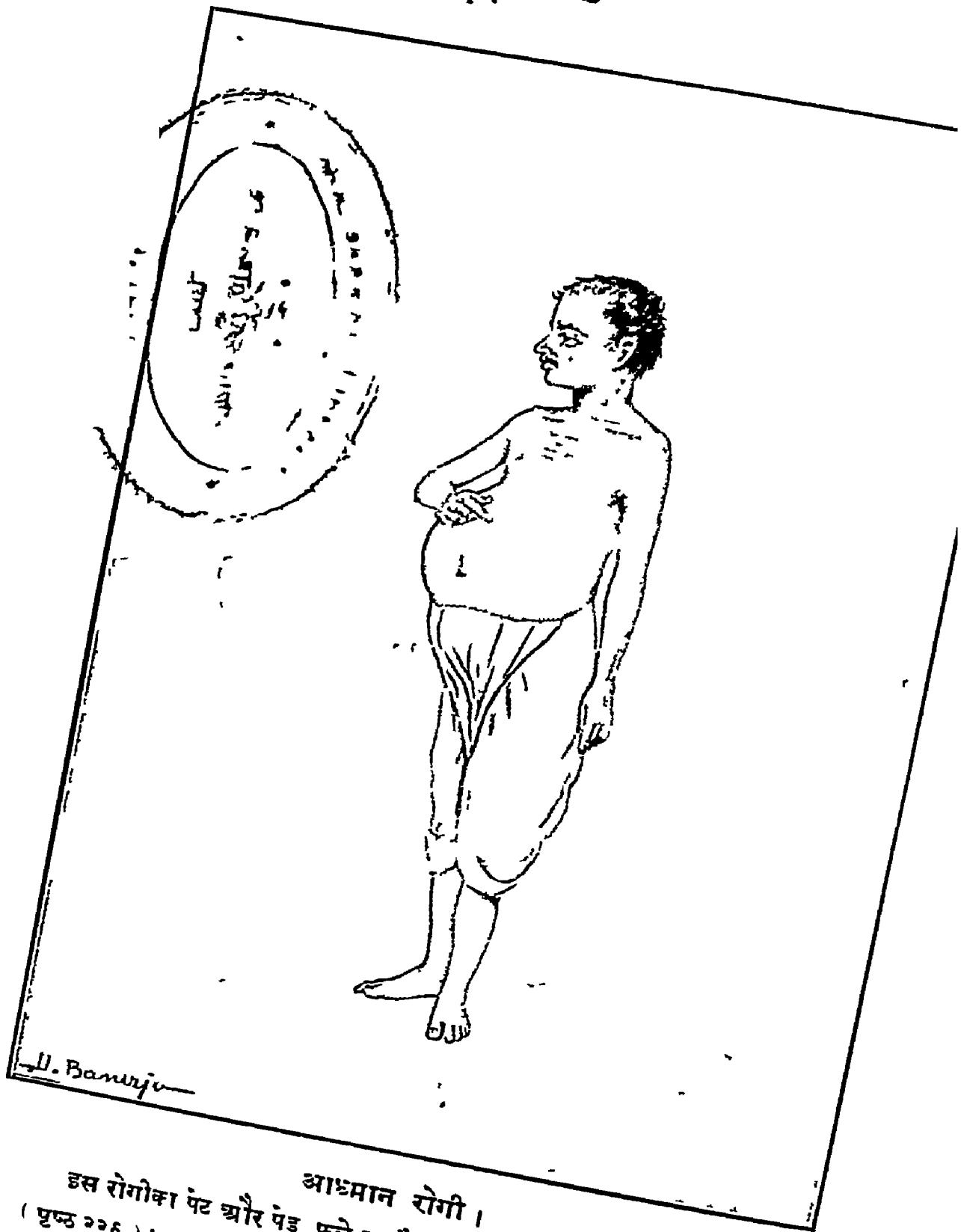
आध्मान रोगी।

इस रोगीका पेट और पेड़ू फूले हुए हैं। पेट मशकके समान हो रहा है।

(पृष्ठ २२६)।

"चरक"में आमवातका उल्लेख स्वतन्त्ररूपसे नहीं है। ऊपर लिखे हुए "सन्धि-वात"*के लक्षण प्राय: आमवातके लक्षणोंसे मिल जाते हैं।

शिरोग्रहके लक्षण ।
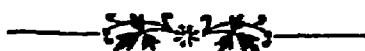
जिस रोगमें, कुपित "वायु" खूनमें घुसकर गर्दनकी शिराओंको रूखी, वेदनायुक्त और काली कर देती है, उसे "शिरोग्रह" कहते हैं। यह शिरोग्रह रोग असाध्य है।

नोट—इस रोगमें, शिराओंमें रहनेवाली वायुका इलाज करना चाहिये। दश-मूलके काढे और बिजौरेके रससे पकाये हुए तेलकी मालिश और शिरोवस्ति करनी चाहिये।

जँभाईके लक्षण ।

वेगवाला पवन एक श्वासको पीकर, फिर उस श्वासको बाहर निकालता है और उसके साथ आलस्य तथा नींदसी मालूम होती है, उसे "जृम्भा या † जँभाई" कहते हैं।

हनुग्रहके लक्षण ।

जीभको घिसनेसे, चने वग़ैरः सूखे पदार्थ चबानेसे और चोट लगनेसे—ठोड़ीकी जड़में रहनेवाली "वायु" कुपित हो जाती है। वह कुपित वायु ठोड़ीको नीची करके, मुँहको बन्द कर देती है अथवा खोल देती है। इस दशामें चबाने और बोलनेमें कठिनाई होती है।

---

* सन्धियाँ शरीरके जोड़ोंको कहते हैं। सन्धिको ग्रन्थि भी कहते हैं। अगरेज़ीमें Joint या Union of bones अर्थात् हड्डियोंके मिलनेका स्थान कहते हैं।

† जँभाईको अगरेज़ीमें "yawn" या "gape" कहते हैं।

इस रोगमें अगर मुँह बन्द रहता है, तो दाँतोंके जावड़े आपसमें मिल जाते हैं। अगर मुँह खुला रहता है, तो दाँतोंके जावड़े आपसमें नहीं मिल सकते ।*

खुलासा—हनुग्रह रोगमें, वायु ठोड़ीको जड़को नीचे करके मुँहको खुला रख देती है या बन्द कर देती है। हनुग्रह-रोगीको खाने और बोलनेमें बड़ी तकलीफ होती है।

जिह्वास्तंभके लक्षण ।

कुपित वायु, वाणीको बहाने वाली शिराओं या नसोंमें घुसकर, जीभको स्तब्ध कर देती है। ऐसा रोगी खा, पी और बोल नहीं सकता ।

नोट—जिह्वा=जीभ। स्तम्भ=शरीरके किसी अगका अपने कर्त्तव्य-कर्मसे हीन हो जाना। जिस रोगमें जीभ अपना कर्त्तव्य-कर्म नहीं कर सकती, उसे "जिह्वा-स्तम्भ" कहते हैं। जिह्वास्तम्भ रोगमें "वायु" जीभके कर्त्तव्य-कर्मकी शक्तिको नष्ट कर देती है। इस रोगके होनेसे रोगी खा, पी और बोल नहीं सकता।

गद्गदत्व, मिन्मिनत्व और मूकताके लक्षण ।

कफ-मिली वायु, शब्दको चलाने वाली धमनी नाड़ियोंको ढक कर, मनुष्योंके वचनको क्रिया-रहित कर देती है।

यही वायु अगर ज़ोरावर होती है, तो आदमीको "मूक या गूँगा" कर देती है; और, जिसमें पदों और व्यञ्जनोंका लोप हो जाय, ऐसा "गद्गदत्व या गिनगिनापन" कर देती है।

* कोई-कोई हनुका अर्थ "जावड़ा" लिखते हैं। हनुग्रहको अँगरेजीमें Lock-jaw कहते हैं। हनुग्रह होनेसे, हनु यानी ठोड़ी या जावड़े अपने कर्त्तव्य-कर्मको नहीं कर सकते।

बोलते समय पदों और व्यञ्जनोंके लोप हो जानेको "गद्गदत्व" या "गिनगिनाना" कहते हैं ।

गूंगेकी तरह नाकमें बोलनेको "मिनमिनाना" कहते हैं और गूंगेपनको "मूकता" कहते हैं ।

यद्यपि इन तीनों रोगोंके पैदा होनेकी एक ही जगह है ; तोभी वातादिक दोषोंकी कमी-बेशीसे अथवा प्रारब्धसे, एक रोगके तीन भेद हो जाते हैं ।

नोट—याद रखो, इन तीनों रोगोंको पैदा करने वाली "कफ-मिली वायु" है । इन रोगोंमें "सारस्वत घृत" और "कल्याणकावलेह" अच्छे हैं ।

प्रलापके लक्षण ।

अपने कारणोंसे कुपित हुई वायुसे, जो मनुष्य असंबद्ध और व्यर्थकी बातें करता है, उसे "प्रलाप" कहते हैं ।

नोट—प्रलापके माइने बे-सिर पैरकी बातें करना, बच्चोंकी सी बातें करना, वाहियात बकवाद करना या व्यर्थ वाक्यव्यय करना है । प्रलाप रोग पित्तसे भी होता है और वातसे भी । पित्तके कारणसे जो प्रलाप होता है, उसमें रोगीको सब ज्ञान रहता है । वह समझता है, कि मैं वृथा बक रहा हूँ । किन्तु वातकफके प्रलापमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता । वह बेहोशीमें बकता है । पित्तके प्रलापको भी मूर्ख वैद्य "वातकफ"का समझकर गरम दवाएँ देता और रोगीको मार डालता है ।

रसाज्ञानके लक्षण ।

भोजन करते समय, जिस मनुष्यकी जीभ खट्टे मीठे चरपरे आदि रसोंको नहीं जान सकती, उसे "रसाज्ञान" रोग है ।

खुलासा—खट्टे मीठे कड़वे कसैले चरपरे और खारी रसोंका ज्ञान जीभसे होता है । जब हम जीभसे इन रसोंको न जान सकें, तब "रसाज्ञान" रोग समझना चाहिये ।

त्वकशून्यताके लक्षण।

छूनेसे चमड़ेको शीतल, गरम, नर्म और सख्तका ज्ञान होता है। जिसको छूनेसे गरम-सर्द आदिका पता न लगे, उसे "त्वकशून्य" रोग है।

नोट—चमड़ेके सूने हो जानेको "त्वकशून्यता" या "सुन्नवहरी" कहते हैं।

मन्यास्तंभके लक्षण।

दिनमें सोनेसे अथवा विपरीत आसन पर बैठनेसे अथवा विपरीत रीतिसे ऊपरको गर्दन करके देखनेसे "वायु" कुपित हो जाती है। कुपित हुई वायु कफसे मिलकर, गर्दनके पिछले हिस्सेमें रहने वाली "मन्या" नामकी शिराको स्तब्ध कर देती है। इसको "मन्यास्तंभ" कहते हैं। मन्यास्तंभ-रोगी गर्दनको फिरा नहीं सकता।

बाहुशोषके लक्षण।

कन्धोंमें रहने वाली "वायु" कुपित होकर, कन्धोंके बन्धनोंको सुखा देती है। कन्धोंके बन्धन सूख जानेसे अत्यन्त वेदना वाला "बाहुशोष" रोग होता है।

अपबाहुकके लक्षण।

बाहुमें रहनेवाली "वायु", बाहुकी शिराओंको सुकेड़ कर, अपबाहुक रोग पैदा करती है।

नोट—कन्धेसे हाथ तकके अंगको "बाहु" कहते हैं। अँगरेज़ीमें "Arm" कहते हैं।

वाहु शोष रोगी।

इस रोगीके कन्धोंमें रहनेवाली वायुने कुपित होकर कन्धोंके बन्धन सुखा दिये हैं। देखिये, इसकी वांह सूख गई है। (पृष्ठ २२८)।

अफ़ीमी रोगी। पृष्ठ—२२६

Popular Press—Calcutta

विश्वाचीके लक्षण ।

बाहुकी पीठसे लेकर हाथके ऊपरी भाग और उँगलियों तक 'कंडरा' नामकी मोटी नसें हैं। "कुपित वायु" जब उन कंडरा नामकी नसोंको दूषित कर देती है; तब मनुष्य न तो बांहोंको फैला सकता है, न सुकेड़ सकता है और न और ही कोई काम कर सकता है। यह रोग दोनों बाहोंमें होता है और कभी-कभी एक बाँहमें भी होता है। इसे "विश्वाची" कहते हैं।

उर्द्ध्वातके लक्षण ।

अपने कारणोंसे कुपित हुई "समान वायु" और कफ-वात, नीचेसे रुक कर, बारम्बार डकार आनेका रोग करते हैं, इस रोगको "उर्द्ध्व-वात" कहते हैं।

आध्मानके लक्षण ।

जब, नीचेकी वायुके रुकनेसे, पेटमें ज़ोरका दर्द और गड़गड़-गड़गड़ शब्द होता है तथा पेट मशककी तरह फूल जाता है, तब "आध्मान" रोग कहते हैं।

प्रत्याध्मानके लक्षण ।

प्रत्याध्मान रोग, पसली और हृदयको छोड कर, आमाशयमें पैदा होता है। उसमें कफके कोपसे वायु रुक जाती है।

वात अष्ठीलाके लक्षण ।

नाभिके नीचे जो गोल, पथरीके समान सख्त और भारी, ऊँची,

ऊपरी भागमें लम्बी और ठहरी हुई अथवा चंचल गाँठ होती है, उसे "वातअष्ठीला" कहते हैं। यह गाँठ लिंग, योनि और गुदाको रोक देती है; इसलिये मल, मूत्र और वायु रुक जाते हैं।

नोट—वात+अष्ठीला=वाताष्ठीला। "वाताष्ठीला" वायु या हवाकी गाँठ होती है। यह नाभिके नीचे होती है। यह लिङ्ग, योनि और गुदा-द्वारको रोक लेती है, इसीसे न पाखाना होता है न पेशाब और न अधोवायु ही खुलती है। "वाताष्ठीला" लिखा देख कर, पित्तको और कफकी अष्ठीला मत समझ लेना। पित्त और कफकी अष्ठीला होती ही नहीं।

प्रत्यष्ठीलाके लक्षण।

पेटमें वायु, विष्ठा और पेशाबको रोकने वाली एक गाँठ होती है। उसके होनेसे दर्द होता है। उसको "प्रत्यष्ठीला" कहते हैं।

नोट—वातष्ठीला नाभिके नीचे होती है, पर प्रत्यष्ठीला नाभिके ऊपर होती है।

तूनीकी लक्षण।

मलाशय और मूत्राशयसे पैदा होकर, गुदा, लिङ्ग और योनिमें भेदनेकीसी पीड़ा करती हुई जो वेदना नीचेकी तरफ जाती है, उसे "तूनी" कहते हैं।

प्रतितूनीके लक्षण।

जो वेदना गुदा और लिङ्ग या योनिसे उठकर, उल्टी दौड़कर, और बारम्बार शान्त होकर, बड़े जोरसे पक्वाशयमें जाती है, उसे "प्रतितूनी" कहते हैं।
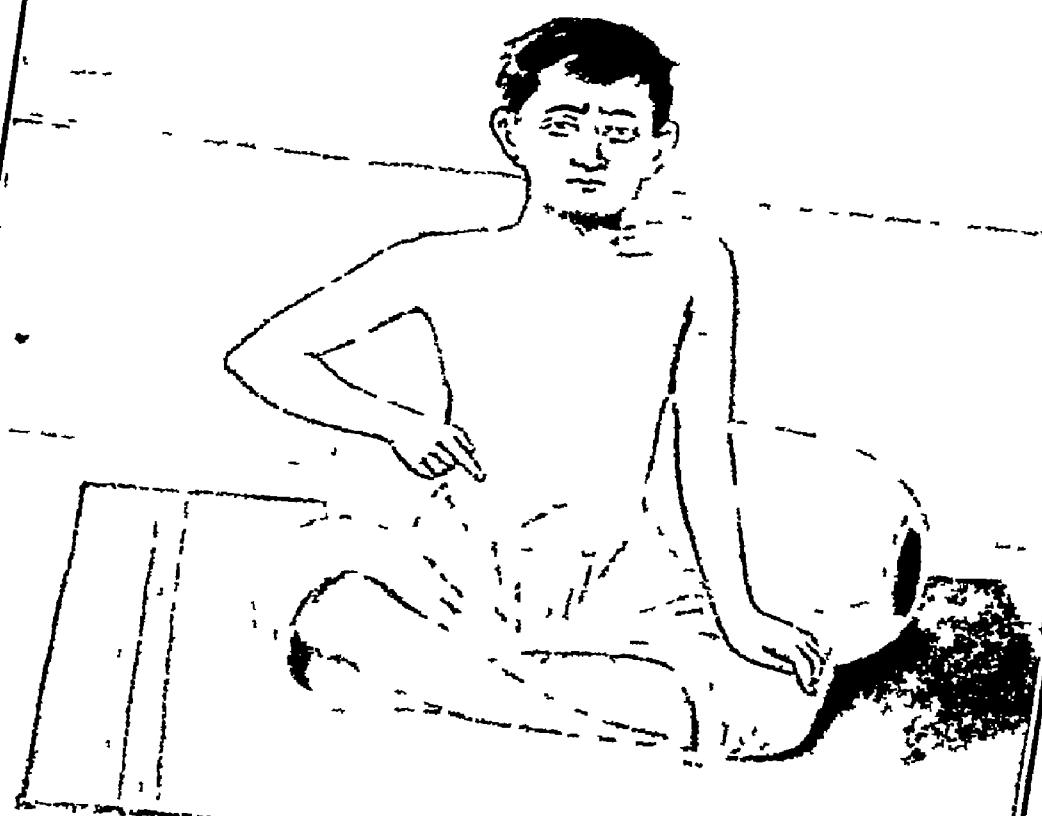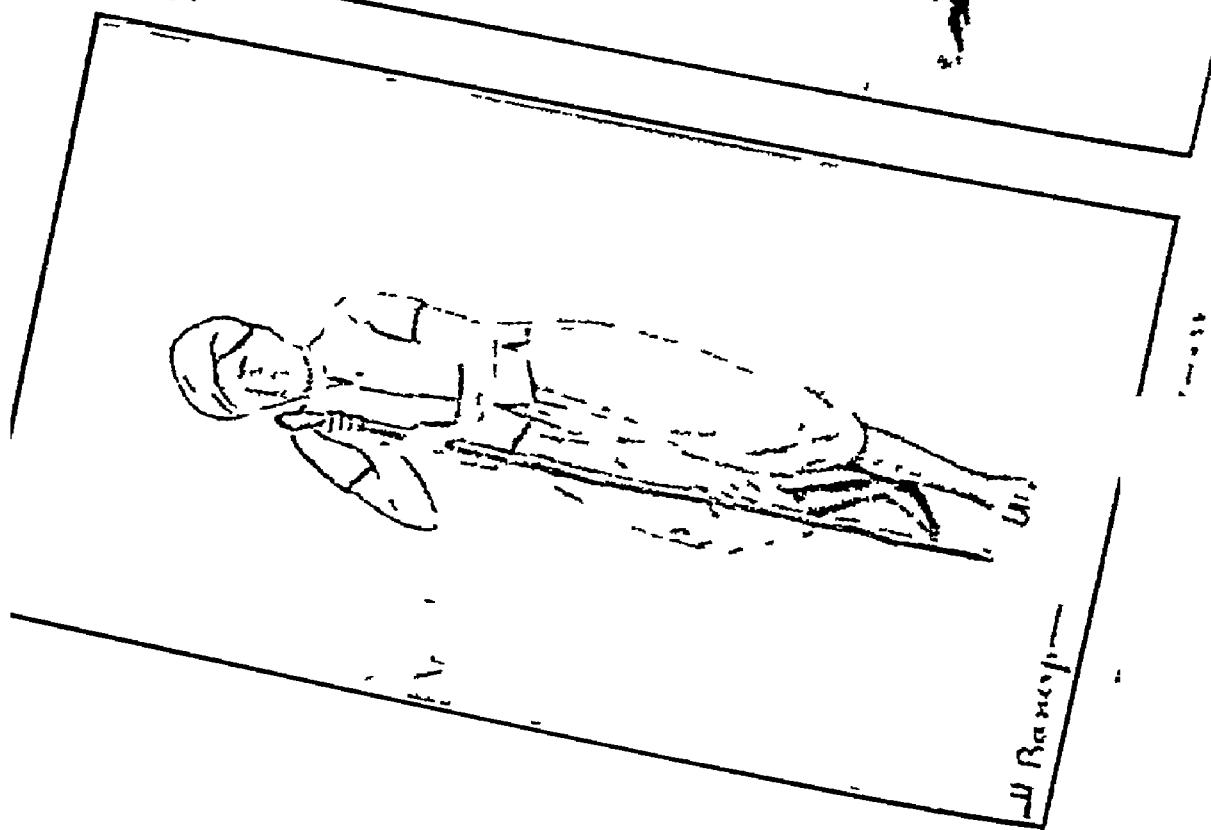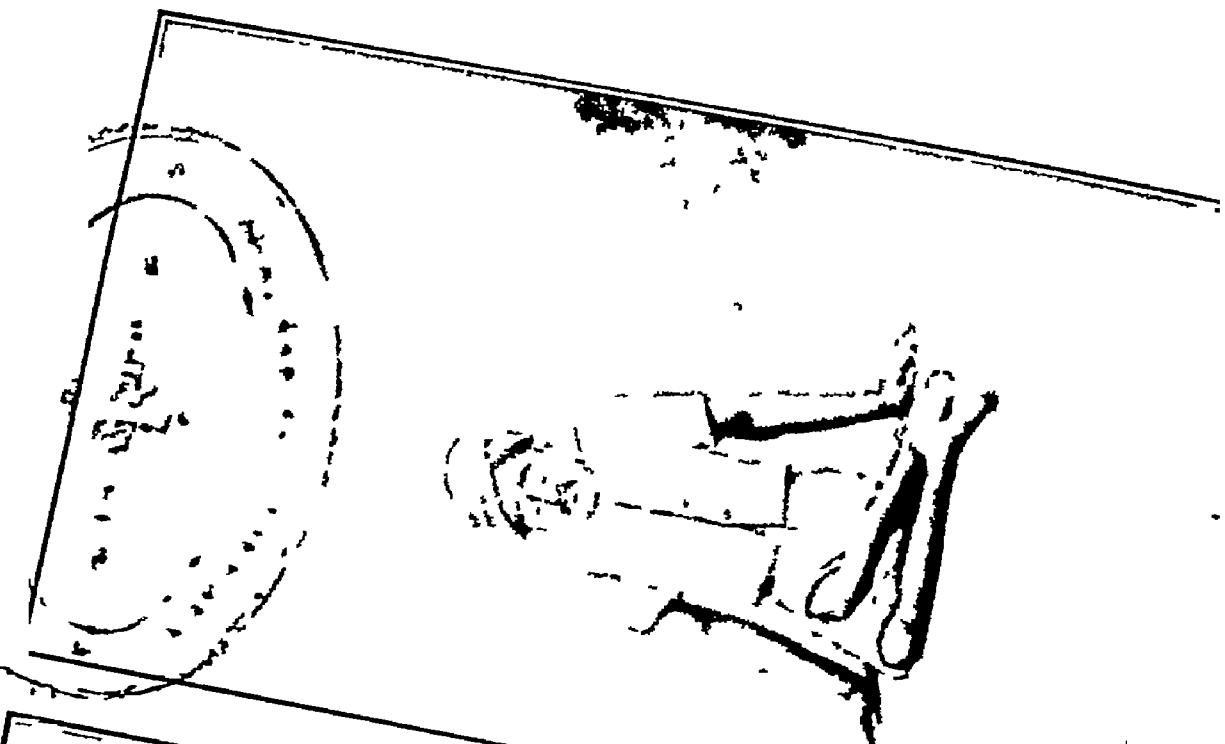
प्रत्यष्ठीला रोगी। पृष्ठ—२३०

मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रहके लक्षण ।

(वारम्वार पेशाव होना और पेशाव रुकना)

जव वायु कुपित नहीं होती है,तव तो वह पेशावको अच्छी तरहसे वाहर निकालती है ; किन्तु जव वह कुपित हो जाती है, तव वह मुहुर्मूत्र—वारम्वार पेशाव होने और मूत्रनिग्रह—पेशाव रुकने वग़ैरः के अनेक विकार पैदा कर देती है ।

खंजता और पंगुताके लक्षण ।
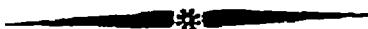
(लँगड़ापन और लूलापन)

कमरमें रहनेवाली वायु, कुपित होकर, कमरसे लेकर पाँवके गुल्फों तककी मोटी नसोंको खींचती या चलते समय कँपाती है; तव मनुष्य "खञ्जा" या "लँगड़ा" हो जाता है ।

जव कमरसे पाँवकी गाँठों तक, दोनों साथलोंकी चलनेकी क्रिया नष्ट हो जाती है, तव मनुष्य "पंगु या लूला" हो जाता है ।

नोट—खंज रोगीका एक पाँव जकड़ जाता है और पंगुके दोनों पाँव जकड़ जाते हैं । लँगड़ेका एक पाँव और लूलेके दोनों पाँव वेकाम हो जाते हैं ।

कलायखंजके लक्षण ।

जो मनुष्य लँगड़ेकी तरह चलता और चलते समय काँखता है तथा जिसके सव सन्धिवन्धन ढीले हो जाते हैं, उसे "कलायखञ्ज" हुआ जानो ।

नोट—(१) कलायखंज वाला ज्योंही चलनेको तैयार होता है या चलना चाहता है, थरथर काँपता और विकल होकर चलता है , पर खंज या लँगड़ेमें ये लक्षण नहीं होते । इन दोनो मे यही भेद है ।

नोट—(२) खंजता, पंगुता और कलायखजका इलाज एक ही है। कलायखंजमें स्नेह क्रिया यानी तैलादि की मालिश वगैरः विशेषकी जाती है, इतना ही भेद है।

क्रोष्टुकशीर्षके लक्षण ।

वात और खूनसे, घुटनोंके बीचमें, गीदड़के माथेके जैसी, बहुत बड़ी, मोटी और अत्यन्त पीड़ावाली सूजन होती है, उसको "क्रोष्टुक शीर्ष" कहते हैं।

नोट—क्रोष्टु स्यार या गीदड़का कहते हैं। घुटनोंके बीचमें स्यारके मस्तकके समान बहुत मोटी सूजन होती है, इसी लिये इस रोगको "क्रोष्टुकशीर्ष" कहते हैं।

खल्लीके लक्षण ।

जिस वायुसे पाँव, जाँघ, साथल और हाथकी जड़—ये सब ठिठरा जाते या काँपते हैं, उसे "खल्ली वात" कहते हैं।

वातकण्टकके लक्षण ।

पाँवके ऊँचा-नीचा पड़ने अथवा मिहनत्से—वातके कारण—जो पीड़ा टखनोंमें होती है, उसे "वातकण्टक" कहते हैं।

नोट—ऊँचा-नीचा पाँव पड़ने अथवा राह चलनेकी थकानसे वायु कुपित होती है और टखनो में पीड़ा करती है।

पाद-दाहके लक्षण ।
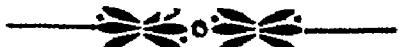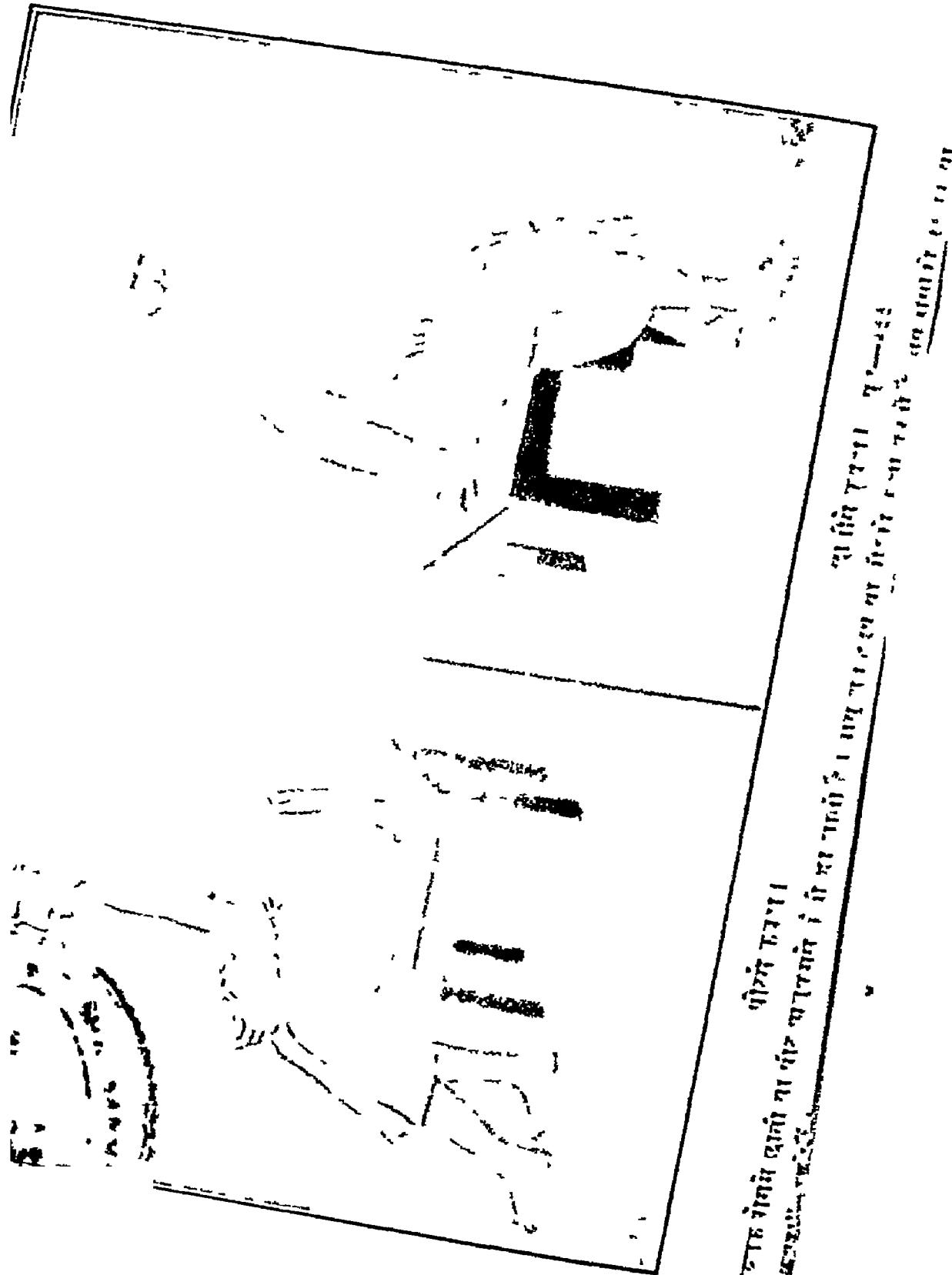
पित्त और खूनसे मिलकर "वायु" पैरोंमें दाह या जलन करती है। चलते समय विशेष जलन होती है। "इस रोगको पाददाह" या "पैरोंकी जलन" कहते हैं।

क्रोष्टुकशीर्ष रोगी—इस रोगीके घुटनोंके बीचमें, वात और रक्तसे, गीदड़के मस्तकके समान बड़ी और मोटी सूजन पैदा हो गई है। रोगी अपना घुटना वैद्य महाशयको दिखा रहा है। (पृष्ठ २३२)

पादहर्षके लक्षण ।

कफ और वायुके कुपित होनेसे—दोनों पाँव रोमाञ्चयुक्त होकर झनझन करने लगते हैं, इसीको "पादहर्ष" या "पैर सोना" कहते हैं ।

नोट—अँगरेजीमें पादहर्षको "Tingling of the feet" यानी पैरोंका झन-झन करना कहते हैं ।

कुब्जकके लक्षण ।

कुपित हुई "वायु" जब हृदय या पीठको ऊँचा करती है, तब रोगीको "कुब्जक" या कुबड़ा कहते हैं ।

नोट—कुब्जक रोगमें छाती या पीठ अनुक्रमसे ऊँची हो जाती हैं । अन्तरायाममें, मनुष्य छातीसे झुक जाता है और बाह्यायाममें पीठसे झुक जाता है । फिर इनमें भेद क्या है ? इसका जवाब यह है कि, अन्तरायाम और बाह्यायाममें शरीर तो जैसाका तैसा रहता है , आदमी छाती या पीठसे झुक जाता है ; पर कुब्जकमें तो छाती या पीठ शरीरके बाहर निकल जाती है । अन्तरायाम और बाह्यायाममें, कुब्जककी तरह, छाती और पीठ शरीरके दायरेसे बाहर नहीं निकल जातीं, जहाँकी तहाँही रहती हैं, केवल आदमी झुक जाता है । अँगरेजीमें कुब्जकको "Hump-backed" कहते हैं ।

तन्द्राके लक्षण ।

वातसे और वात-कफसे "तन्द्रा" पैदा होती है । उसमें भारीपन और अरुचि होती है ।

नोट—तन्द्राको अंगरेजीमें Light Sleep, Slumber और Drowsiness कहते हैं ।

कम्पवायुके लक्षण।
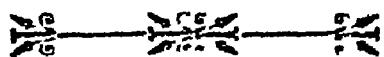
जो सब अंगों और सिरको कँपावे, उसे "कम्प-वायु" कहते हैं।

आक्षेपक वातके सामान्य लक्षण।
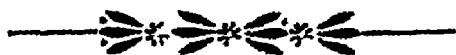
जब वायु कुपित होकर, सब धमनी-नाड़ियोंमें घुस जाती है, तब वह वहाँ वारम्वार संचार करके, देहको वारम्वार आक्षिप्त करती है—हाथी पर बैठे हुए आदमीकी तरह सारी देहको चलायमान करती हैं। देहके वारम्वार चलायमान होनेको ही "आक्षेपक रोग" कहते हैं। कहा है :—

> आक्षेपयत्याशु मुहुः शरीरमागत्य नाड़ीः पवनः प्रदुष्टः।
> ज्ञेयस्तदाक्षेपक सञ्ज्ञकोऽस्यवेगे गते स्वास्थ्यमुपैतिमर्त्य.॥

जब दूषित वायु, सब नाड़ियोंमें घुसकर, शरीरको वारम्वार आक्षिप्त करती है और उसका वेग या ज़ोर कम होने पर रोगी स्वस्थ या तन्दुरुस्त मालूम होता है, तब "आक्षेपक वात" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, हाथी पर बैठने वालेको जैसे झकोले लगते हैं, "आक्षेपक वात रोगी"को भी वैसे ही झकोले लगते हैं। जिस तरह हाथी पर बैठा हुआ फीलवान वारम्वार हिलता है ; उसी तरह "आक्षेपक वात रोगी" भी वारम्वार हिलता है।

अपतन्त्रक और अपतानक—आक्षेप वातके दो भेद या अवस्था-विशेष हैं। आगे हम उनके लक्षण लिखते हैं :—

अपतन्त्रकके लक्षण।

जब रूखे भोजन आदि कारणोंसे कुपित हुई वायु, अपनी जगहको छोड़ कर, ऊपरकी तरफ जाती है ; तब वह हृदय, मस्तक और कन-

पटियोंमे पीड़ा करती है तथा शरीरको धनुषकी तरह झुका या नवा देती है। अगर रोगी चलता है, तो बेहोश कर देती है। रोगी बड़े कष्टसे साँस लेता है। उसके नेत्र स्थिर हो जाते, मिंच जाते या ठहर जाते हैं और वह बेहोश होकर कबूतरकी तरह कूँजता है। इस रोगको "अपतन्त्रक" रोग कहते हैं।

नोट—अपतन्त्रकका अर्थ अंगरेजीमें Spasmodic contraction of the body लिखा है।

अपतानकके लक्षण ।

इस रोगमे दृष्टिका स्तम्भन हो जाता है ; संज्ञा जाती रहती है—सुध-बुध नही रहती ; वायुके कारणसे कूजनेकीसी आवाज़ आती है। जब वायु हृदयको छोड़ देती है, तब रोगी सुखी हो जाता है ; लेकिन जब वह हृदयको फिर पकड़ लेती है, रोगी फिर बेहोश हो जाता है। इस दारुण रोगको "अपतानक" कहते हैं।

दण्डापतानक, अन्तरायाम, बाह्यायाम और अभिघात-आक्षेप—इन भेदोंसे "आक्षेपक" रोग चार तरह का होता है।

दण्डापतानकके लक्षण ।

जिस रोगमें "कफसे मिली हुई वायु", धमनी-नाड़ियोंमें घुस कर, शरीरको दण्डेकी तरह जकड़ देती है अथवा दण्डे या लकड़ीके समान कर देती है, उसे "दण्डापतानक" कहते हैं।

धनुस्तम्भके लक्षण ।

दूषित वायु, नसोंको संकुचित करके या सुकेड़ कर, शरीरको

धनुष या कमानकी तरह नवाय देती है, इस लिये इस रोगको "धनु-स्तम्भ" कहते हैं।

धनुस्तम्भ रोगमें शरीरका रंग बदल जाता है, दाँत जकड़ जाते हैं, अंग ढीले हो जाते हैं, बेहोशी होती और पसीने आते हैं। धनुस्तम्भवाला दस दिन तक नहीं जीता।

नोट (१)—धनुस्तम्भके लक्षण "अन्तरायाम" और "बहिरायाम" के साधारण रूप हैं। शरीर आगेको झुक जाय तो "अन्तरायाम" और पीछेको झुक जाय तो "वाह्यायाम" कहते हैं।

नोट (२)—"भावप्रकाशमें" लिखा है, अन्तरायाम और धनुस्तम्भ रोग एक नहीं हैं। दोनोंमें भेद है। अन्तरायाममें तो अगुली आदिमें आक्षेप होता है और आँखें पथरा जाती हैं; पर धनुस्तम्भमें तो मनुष्य केवल कमानके समान नव जाता है। अंगरेजीमें इस रोगको टेटेनस (Tetanus) कहते हैं।

अन्तरायामके लक्षण।

पाँवकी उँगली, पाँवकी गाँठ, पेट, हृदय, वक्षस्थल—छाती और गलेमें रहनेवाली वायु, वेगवान होकर, वहाँके नस-जालको सुखाकर बाहर निकाल देती है। तब मनुष्यके नेत्र स्थिर हो जाते यानी पथरा जाते हैं, ठोडी जकड़ जाती है, पसलियोंमें दर्द होता है, मुँहसे कफ गिरता है और जब मनुष्य आगेकी तरफ झुक जाता है, तब कहते हैं कि "अन्तरायम" वात रोग हुआ है।

वाह्यायामके लक्षण।

जिस तरह अन्तरायममें, वायु आगेकी नसोंमें रह कर, अन्तरायाम करती है—मनुष्यको आगेकी तरफ झुका देती है; उसी तरह शरीरके पिछले भागकी नसोंमें रहनेवाली वायु, पीछेके भागको नवाकर "वाह्यायाम" करती है; अर्थात् वक्षःस्थल—छाती, कमर और

जाँघोंको पीछेकी तरफ झुका या मोड़ देती है। यह रोग असाध्य होता है।

नोट—अन्तरायाम और वहिरायाम दोनोंमें ही मनुष्य झुकता है। अन्तरायाम-धनुस्तम्भमें आगेकी ओर ; और वहिरायाम धनुस्तम्भमें पीछेकी ओर झुकता है। डाक्टर लोग इस रोगको "टिटनिस" कहते हैं। शुरूमें हाथ-पाँवोंकी नसे खिचती हैं, जावड़े छकड़ जाते हैं, गुद्दी और पीठमें दर्द होता है तथा कोई चीज़ निगली नहीं जाती। रोगके बढ़ावमें, कमर कमानकी तरह आगेकी तरफ या पीछेकी तरफ मुड़ जाती है। यह रोग जौयात्ता, सरदी, सर्द हवा और कुचला वगैरः विष खानेसे होता है। साधारण लोग इस रोगको "धनुषवाय" कहते हैं। क्योंकि इस रोग में शरीर 'धनुषाकार' हो जाता है। वैद्य लोग "धनुर्वात" कहते हैं।

अभिघाताक्षेपक वात।

अभिघातकृताक्षेपको आगन्तुजाक्षेप भी कहते हैं। यह डण्डे वग़ैरः की चोट लगनेसे होता है। इसके लक्षण आक्षेपक वातके सामान्य लक्षणोंके समान समझने चाहियें। (देखो सफा २३४)

नोट—आक्षेपक वातके साथ कफपित्तका अनुवन्ध भी हो जाता है, इसलिये आक्षेपकके चार भेद माने गये हैं—(१) कफान्वित वायुसे, (२) पित्तान्वित वायुसे, (३) केवल वायुसे, और (४) अभिघातज—दण्डे वगैर.की चोटसे। वायुके कुपित होनेसे, गर्भपात होनेसे और वहुतसा खून निकलनेसे जो आक्षेपक रोग होता है, उसे "केवल वातजन्य" समझना चाहिये।

जिस रोगमें वायुसे हाथ-पाँव, माथा, पीठ और श्रोणी ये जकड़ जाते हैं, सारा शरीर लकड़ीके समान हो जाता है, उसे "दण्डापतानक" कहते हैं। जो केवल वायुसे पैदा होता है और जिसमे शरीर हाथी पर वैठे हुए फीलवानकी तरह हिला करता है, उसे "दण्डकाक्षेप" कहते हैं। यह स्वभावसे ही असाध्य होता है।

जिस रोगमें कफसे व्याप्त वायु धमनियोंमें रहती है, धमनिया लकड़ीके समान स्तब्ध हो जाती हैं और शरीर हाथी पर वैठ हुए महावत की तरह हिला करता है, उसे "दण्डापतानकाक्षेप" कहते हैं। यह कष्टसाध्य है।

सर्व्वाङ्ग वातके लक्षण।

सब अंगोंमें वायुका कोप होनेसे शरीरकी शिरायें काँपने लगती हैं, अंग टूटने लगते हैं और वेदनाके मारे सन्धियाँ फटने लगती हैं—जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "सर्व्वाङ्ग वात" कहते हैं।

गृध्रसीके लक्षण।

कूलेकी सन्धि, कमर, पीठ, उरु, जाँघ और पाँवोंमें स्तब्धता, वेदना और सूई चुभानेकीसी पीड़ा होती है तथा कूलेकी सन्धि आदि शिरायें बारम्बार काँपती हैं—जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "गृध्रसी" कहते हैं।

नोट—यह रोग कमरसे पैरके टखनेतक होता और शरीरका इतना हिस्सा बेकाम हो जाता है। अंगरेजोंमें इसे Rheumatism of the Loins कहते हैं। शायद डाक्टर लोग इसे सियाटीका (Sciatica) कहते हैं। सियाटीका का अर्थ—कूलेका दर्द है। डाक्टर गन साहब कहते हैं, सियाटीका न्युरेलजियाकी एक क़िस्म है। यह रोग कूले और जांघोंकी स्नायुओंमें या उनकी अगल-बगलमें हमला करता है।

गृध्रसीके भेद।

वातज और कफज—इस तरह गृध्रसी दो तरहकी होती है। वातज गृध्रसीमें सूई चुभानेकीसी पीड़ा होती है, देह अत्यन्त बाँकी हो जाती है; घुटने, जाँघ और साँथलकी सन्धियोंकी शिरायें काँपती हैं और बहुत स्तम्भ होता है। अगर गृध्रसी रोग वात और कफ दोनोंसे होता है; तो शरीर भारी रहता है, अग्निमन्द होती है, तन्द्रा आती है, मुँहसे पानी गिरता है और अन्न पर रुचि नहीं रहती।

अर्दित वात या लकवेका रोगी। पृष्ठ—२३८-२४५

देखिये, इस रोगीका बायाँ तरफका चेहरा टेढ़ा हो गया है, उसके साथ ही उसके नाक, भौं, ललाट, नेत्र और ठोड़ी आदि भी विकृत या टेढ़े हो गये हैं।

POPULAR PRESS—CALCUTTA

आयुर्वेदीय मतसे

अर्दित वात या लकवेका वर्णन।

सामान्य लक्षण।

जिसे संस्कृतमें अर्दित रोग कहते हैं, उसे हिकमतमें लकवा और अङ्गरेजीमें फेशियल पैरेलिसिस (Facial Paralysis) कहते हैं। इस रोगके होनेसे मनुष्यका आधा चेहरा टेढ़ा हो जाता है।

निदान-कारण।

अर्दित या लकवेके कारण ये हैं :—

(१) ऊँची आवाज़से बोलना।

(२) सुपारी वग़ैरः सख्त चीजें खाना।

(३) अत्यन्त हँसना।

(४) अत्यन्त जँभाई लेना।

(५) जियादा बोझ उठाना।

(६) गर्दनको टेढ़ी बाँकी करके विषम रीतिसे सोना।

(७) विषम रीतिसे बैठना।

नोट—वागभट्टने अर्दितके कारणोंमें "धनुष चढ़ाना या खींचना" अधिक लिखा है।

सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे, सिर, नाक, होठ, ठोड़ी, ललाट और नेत्रोंकी सन्धियोंमें रहने वाला 'वायु' कुपित हो जाता है। कुपित वायु मुँहमें पीड़ा करता है; यानी 'अर्दित या 'लकवा' पैदा करता है।

अर्दित वात या लकवेके रूप।

जब अर्दित या लकवा पैदा होता है, तब मनुष्यका आधा मुँह टेढ़ा पड़ जाता है, गर्दन टेढ़ी हो जाती है, सिर काँपने लगता है, रोगी बोल नहीं सकता, आँख, नाक, भौंह और गालमें वेदना होती है। ये टेढ़े हो जाते और फड़कते हैं। अर्दित रोग चेहरे या मुखकी जिस ओर होता है, उस ओरकी गर्दन ठोढ़ी और दाँतोंमें पीड़ा होती है। वैद्य इस रोगको "अर्दित" या "लकवा" कहते हैं।

"चरक"में लिखा है, जिस समय शरीरके बायें या दाहिने अंगका वायु कुपित होता है, उस समय वह उसी तरफके खून, भुजा, पैर और स्नायु नामकी नसोंको सुखा कर सुकेड़ देता है और उसी तरफके आधे मुँह—चेहरेको टेढ़ा कर देता है। जिस तरफका चेहरा टेढ़ा होता है, उस तरफकी नाक, भौंह, ललाट, नेत्र और ठोढ़ी ये अंग टेढ़े हो जाते हैं। भोजनके समय रोगी टेढ़ा होकर मुँहमें कौर देता है और उस समय ही नाकका टेढ़ापन खूब साफ़ तौरसे दिखाई देता है। बोलते समय रोगीके नेत्र स्तब्ध हो जाते हैं। छींक आनेको होती है, पर बाहर नहीं आती। जीभ कुदेल और बाहर निकली हुई होती है। बोल बन्द हो जाता है, कान बन्द हो जाता है और दाँत सारेके सारे चलायमान रहते हैं। हाथ, पैर, आँख, जाँघ, टक— साथल, कनपटी और गुदामें वेदना होती है। यह रोग आधे शरीरमें अथवा आधे मुख या आधे चेहरेमें होता है। इसे "अर्दित" या "लकवा" रोग कहते हैं।

वाग्भट्टने लिखा है, अर्दित रोगमें रोगीका आधा मुँह एवं हँसना, बोलना और देखना ये टेढ़े हो जाते हैं। रोगीका सिर काँपना या हिलना है, बोली बन्द हो जाती है, नेत्र स्तब्ध हो जाते हैं। दाँत चलते हैं, आवाज़ बिगड़ जाती है, कानसे सुनाई नहीं पड़ता, छींक नहीं आती, याद्में भ्रम हो जाता है, सोते समय तकलीफ होती

है, जोतोंके ऊपर आधे शरीरमें और नीचले होठमें तीव्र पीड़ा होती है इत्यादि।

नोट—किसीने दो लक्षण जियादा और किसीने दो कम लिखे हैं। पर अर्दित रोगमें आधा मुख या चेहरा टेढ़ा हो जाता है, यह बात सभीने एक मतसे लिखी है। कहा है—

> पक्षाभिघातेन भवेत्प्रसुप्तो देहार्द्धभागः शिथिरप्रबन्धः।
> वक्रीभवत्यर्द्धमुखञ्च यस्मिन्तमर्दितं व्याधिमुदाहरति॥

जिस रोगमें, वातकोपसे, शरीरका आधा भाग अत्यन्त शीतल होकर, स्पर्श-ज्ञान और चलनादि क्रिया-रहित हो जाता है, उसे "पक्षाघात" कहते हैं, और जिस रोगमें आधा मुँह—चेहरा—टेढा हो जाता है, उसे "अर्दित" या "लकवा" कहते हैं।

इस रोगमें किसीका बायीं तरफका और किसीका दाहिनी तरफका चेहरा टेढ़ा होता है। जिस तरफका चेहरा टेढ़ा होता है, उस तरफके नाक, भौं, ललाट, नेत्र और ठोड़ी—ये अंग भी टेढ़े हो जाते हैं।

अर्दितके तीन भेद।

वातज, पित्तज और कफज,—इस तरह, संक्षेपमें, अर्दित तीन तरहका होता है।

वातज अर्दित रोगीके मुँहसे लार गिरा करती है, पीड़ा होती है, शिरायें फड़कती हैं, कँपकँपी आती है, ठोड़ी जकड़ जाती है, कम बोला जाता है तथा होठ सूज जाते और शूल चलते हैं।

पित्तज अर्दित वालेका मुँह पीला हो जाता है, ज्वर चढ़ आता है, प्यास बहुत लगती है तथा मोह-बेहोशी और गरमी होती है।

कफज अर्दित वालेके गले, माथे और मन्या नाड़ीमें सूजन और स्तंभ होता है।

नोट—गर्दनके पीछेकी नसोंको मन्यानाड़ी कहते हैं।

मिले हुए अर्दित रोगमें उन्हीं उन दोषोंके लक्षण होते हैं। सूजन और नेत्रोंमें गदलापन भी होता है।

अर्दितके असाध्य लक्षण ।

जो रोगी अत्यन्त क्षीण हो गया हो, जो पलक न मार सकता हो, जो अत्यन्त शुद्ध न बोल सकता हो, जिसके अर्दितको पैदा हुए तीन साल हो गये हों अथवा जिसके नेत्र, नाक, और मुखसे स्राव होता हो—पानी गिरता हो, और जिसका शरीर काँपता हो, वह अर्दित रोगी आराम हो नहीं सकता, उसका अर्दित असाध्य है।

नोट—एक यूनानी ग्रन्थ "हावियेकबीर"में लिखा है, अगर लकवा ६ महीनेतक ठहर जाय, तो उसके आराम होनेकी आशा नहीं। हकीम मुहम्मद जकरिया कहते हैं, कि मैंने देखा, एक आदमीको पहले लकवा हुआ, फिर उसे 'सक्ते'ने घर दबाया। बहुधा लकवेवाले चार दिनमें भी मर जाते हैं। अगर चौथा दिन निकल जाता है, तो फिर 'सक्ते' का डर नहीं रहता। अगर लकवा दो महीने रहेगा, तो रोग बढ़ जायगा। अगर लकवा ६ महीने रहेगा, तो रोगी मुश्किलसे जियेगा।

पूर्व्वरूप ।

हकीम लोग कहते है, कि जिसे अर्दित या लकवा होने वाला होता है, उसके मुखकी हड्डियोंमें दर्द मालूम होता है, मुखके चमड़ेकी छूनेकी ताक़त कम हो जाती है, और मुँहका आधा हिस्सा बहुत फड़कता है। ये लकवेके "पूर्वरूप" हैं। इन लक्षणोंके नज़र आते ही जान लेना चाहिये, कि "लकवा" रोग होगा।

लकवेके लक्षण ।

लकवा रोग मुँहके अदलोंमें पैदा होता है। उस समय आँख, भौं, सिरका चमड़ा और होठ टेढ़े हो जाते हैं। चेहरेकी असली सूरत बदल जाती है। होठ आपसमें अच्छी तरह नहीं मिल सकते।

पक्षाघात और अर्दित रोगी—किसी रोगीका दाहिना आधा अंग, किसीका बायाँ आधा अंग, किसीका नीचेका आधा अंग, किसीका सिरसे पाँव तकका आधा अंग और किसीका आधा चेहरा मारा गया है। जिसका एक तरफका चेहरा मारा गया है, वह अर्दित रोगी या लकवे वाला है, बाकी पक्षाघात या फालिजके रोगी हैं। (देखिये पृष्ठ २३६—२५३)

रोगी न तो किसी चीज़को चूस ही सकता है और न मुँह दबाकर खींच ही सकता है। मुँहकी फूँक सीधी नहीं निकलती, इसलिये वह चिराग़को बुझा नहीं सकता। आँखके पलक भी अच्छी तरह बन्द नही होते। ये सब लक्षण उस समय होते हैं, जब बीमारी चेहरेके एक तरफ होती है और बहुधा एक ही तरफ होती है। कभी-कभी यह रोग चेहरेके दोनों तरफ होते भी देखा गया है। इस हालतमें, रोग चेहरेके दोनों तरफके सारे घेरेको घेर लेता है। दोनो तरफ़ लकवा होनेसे, चेहरमें टेढ़ापन तो नहीं मालूम होता, परन्तु पलकोंके आपसमें मिलनेके समय कष्ट होता है। इस दशामें, एक तरफके लकवेसे अधिक चिह्न नज़र आते हैं। हकीम राज़ी महाशय कहते हैं, कि एक आदमीको लकवा हुआ। उसका मुँह तो टेढ़ा न हुआ, पर एक आँख बड़ी मुश्किलसे बन्द होती थी और दूसरी तो क़तई बन्द न होतो थी ; यानी एक आँख तकलीफके साथ बन्द हो जाती थी और दूसरी खुली ही रहती थी।

लकवेके दो भेद।

हकीमोंने लकवेके दो भेद माने हैं :—(१) तशन्नुजी, (२) इस्तरख़ाई। तशन्नुजीका मतलब है, ऐंठना, खिंचना या सिमटना और इस्तरख़ाईका अर्थ है, ढीला या सुस्त होना। बहुधा तशन्नुजी लकवा ही होता है, इस्तारख़ाई बहुत कम होता है।

तशन्नुजी लकवेके लक्षण।

तशन्नुजी लकवा होनेसे, जिस ओर रोग होता है उस ओरके ललाटका चमड़ा सख्त हो जाता हे, चमड़ा ऊपरकी तरफ इस तरह खिंच जाता है, कि उस तरफकी पेशानीमें सलवटें बिल्कुल नहीं रहतीं ; किन्तु सिरकी खाल या गर्दनकी तरफ सलवटे पड जाती हैं। मुँहसे थूक बहुत कम निकलता है। जिस तरफ रोग नहीं होता, उस तरफकी आँख बन्द करना कठिन हो जाता है। सिरमें दर्द

बहुत होता है। ज्ञानशक्तियाँ ज्योंकी त्यों रहती हैं और इन्द्रियाँ नहीं बिगड़तीं।

इस्तरखाई लकवेके लक्षण।

इस्तरख़ाई लकवेमें, दिमाग़से पतली रतूबत उतर कर एक ओरके अदलों और पट्ठोंको तर कर देती है। उस समय पट्ठे और झिल्लियोंके सुस्त हो जानेसे, रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं; इसलिये वे अंग मुस्त होकर ढीले हो जाते हैं। इस लकवेमें मुँहका अगला हिस्सा ढीला हो जाता है और गमन-शक्ति निर्बल हो जाती है। माथा, मुखकी खाल और अदले उस ओर बहुत नहीं खिंचते, किन्तु नर्म होते हैं। उस तरफकी आँखका नीचे वाला पलक इतना नीचे झुक जाता है, कि ऊपरका पलक उस तक नहीं पहुँचता। उस आँखसे आँसू बहते रहते हैं और जीभकी चखनेकी ताक़त जाती रहती है।

तशन्नुजी और इस्तरखाई लकवेमें फ़र्क़।

हकीम जालीनूस कहता है कि, तालूके बीचों-बीच एक दरार है। सारे मुखकी हड्डियाँ उसकी वजहसे अलग-अलग हैं। मुँहके भीतर एक महीनसी झिल्ली, तालूमें, उस दरारसे मिली हुई लगी है। यह दरार उस झिल्लीसे छिपी हुई है। इस्तरखाई लकवेमें, जिस तरफ इस्तरखा—ढीलापन—होता है, उस तरफकी झिल्ली ढीली होकर लटक पड़ती है। उसका रंग बदल जाता है और वह तर या गीली मालूम होती है; परन्तु दूसरी तरफकी झिल्ली आरोग्य होती है।

जब यह देखना हो कि, लकवा इस्तरख़ाई है या तशन्नुजी, तब रोगीकी जीभ पर उँगली रख कर दबाओ, जिससे जीभ नीची हो जाय। फिर रोगीके तालूको देखो। अगर झिल्लीमें इस्तरख़ा या ढीलापन हो, वह लटक रही हो, रंग बदल गया हो तथा वह तर या गीली हो, तो समझलो कि लकवा इस्तरखाई है। अगर झिल्ली अपनी स्वाभाविक हालतमें हो, सिरकी खाल खिंच गई हो अथवा

तशन्नुजी लकवेके और चिह्न हों ; तो समझलो कि लकवा तशन्नुजी है। एक ख़ास पहचान और है। वह यह कि, इस्तरख़ाई लकवेमें पलक कभी नहीं चलते, किन्तु तशन्नुजीमें चलते रहते हैं ; परन्तु एक पलक दूसरेसे मिल कर बन्द नहीं हो सकता।

डाक्टरी मतसे लकवेका वर्णन।

डाक्टरीमें लकवेको फेशियल पैरेलिसिस (Facial Paralysis) कहते हैं। डाक्टरोंका भी कहना है कि, लकवेमें चेहरेका एक रुख़ या दोनों रुख़ मारे जाते हैं। ठोड़ी या जावड़ा, आँख और कनपटी टेढ़े हो जाते हैं। इस रोगके कारण—सर्दी, कमज़ोरी, एक तरहकी हवा और कानका ज़ख्म हैं।

पक्षाघात-वर्णन।

लक्षण।

जब कुपित वायु शरीरके आधे हिस्सेमें फैल जाती है, तब उस हिस्सेके शिरा और स्नायु सुकड़ या सूख जाते हैं और सन्धि-बन्धन ढीले हो जाते हैं। इस दशामें मनुष्यका आधा शरीर बेकाम हो जाता है। इस हिस्सेसे मनुष्य कुछ भी काम कर नहीं सकता। स्पर्शज्ञान नहीं रहता। रोगीके सारे या आधे अंगोंका हिलना-चलना भी बन्द हो जाता है।

यह रोग किसीके शरीरके दाहने भागमें और किसीके बायें भागमें होता है। किसीको कमरके ऊपर और किसीको कमरके नीचे होता

है। जिस तरह अर्द्ध नारीश्वरका आधा शरीर स्त्रीका सा और आधा मर्द्का सा होता है; उसी तरह इस रोगवालेका आधा शरीर मारा जाता है और आधा कामका रहता है। इस रोगको संस्कृतमें "पक्षाघात, पक्षवध, एकांग वात" और हिकमतमें "फालिज" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, कुपित वायु शरीरके दाहिने या बायें किसी हिस्सेको पकड़कर नसोंको सुखा देती है, तब मनुष्य अर्द्ध नारीश्वर की तरह आधे शरीरसे बेकाम हो जाता है। जिस तरफ रोग होता है, उस तरफका शरीर कुछ काम नहीं देता और छूने आदिका ज्ञान नहीं रहता। सन्धिबन्धनोंके ढीले हो जानेसे, आधा शरीर ढीला हो जाता है। इस रोगको "पक्षाघात" कहते हैं, क्योंकि इसमें शरीरका एक पक्ष बेकाम हो जाता है।

नोट—वैद्यकमें, मनुष्यका दाहिना या बायाँ आधा शरीर निकम्मा हो जाना लिखा है, पर यह स्पष्ट नहीं लिखा कि आधा शरीर कहाँसे कहाँतक मारा जाता है, अतः हम इस रोग पर यूनानी हकीमोंकी राय लिखते हैं। "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है:—फालिज या अर्द्धांङ्ग होनेसे लम्बाईमें आधा शरीर ढीला हो जाता है और चमड़ेमें ज्ञान-शक्ति नहीं रहती। "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, फालिजका अर्थ "आधा" है। जिस रोगमें सिरसे पाँव तक आधा शरीर ढीला हो जाता है, उसे फालिज या अर्द्धांङ्ग रोग कहते हैं। किसी-किसी हकीमने लिखा है, फालिज होनेसे लम्बाईमें आधा शरीर ढीला हो जाता है, पर मुँह बेशक आरोग्य रहता है। कभी-कभी मुँहका चमड़ा भी सुन्न हो जाता है। आगे चलकर हम यूनानी मतसे फालिजके कारण और लक्षण विस्तारसे लिखेंगे।

साध्यासाध्यत्व जाननेके तरीके।

लिख चुके हैं कि पक्षाघात रोग "वातकोप" से होता है; पर और-और रोगोंकी तरह, इस रोगमें भी कहीं-कहीं वायुके साथ पित्त और कफ मिले रहते हैं। अगर वायुके साथ पित्त मिला रहता है, तो शरीरके भीतर दाह, बाहर सन्ताप और मूर्च्छा—ये लक्षण होते हैं।

अगर वायुके साथ कफ मिला रहता है ; तो शीतलता, सूजन और भारीपन ये लक्षण भी होते हैं। मतलब यह है कि, अर्द्धाङ्ग-पीड़ित अङ्गोंमें सूजन, शीतलता और भारीपन ये उपद्रव होते हैं।

अगर पक्षाघात या अर्द्धाङ्ग रोग "केवल वायु"से होता है, तो वह अत्यन्त कष्टसाध्य होता है। अगर पित्त या कफसे मिली हुई वायु से होता है, तो साध्य होता है। अगर रसरक्तादि धातुओंके क्षय होनेके कारण, वायुके कुपित होनेसे होता है, तो असाध्य होता है।

खुलासा—पक्षाघात रोग चार तरहका होता है :—

(१) वातज	...	कष्टसाध्य।
(२) वातपित्तज	...	साध्य।
(३) वातकफज	...	साध्य।
(४) धातुक्षयजन्य—वातज	...	असाध्य।

चारों ही प्रकारके पक्षाघातोंमें "वायु" प्रधान होता है। वातज पक्षाघात होनेसे सिरसे पाँवतक एक तरफका आधा शरीर बेकाम हो जाता है। उस तरफके अंग अपना-अपना काम नहीं कर सकते। पैर चलनेका काम नहीं कर सकता और हाथ कोई चीज पकड़ने या उठानेका और कान सुननेका। इसी तरह औरोंके सम्बन्धमें समझ लो। ये मुख्य लक्षण हैं और चारों ही तरहके पक्षाघातोंमें होते हैं। अगर वायुके साथ पित्त मिल जाता है, तो शरीरके भीतर जलन, बाहर सन्ताप और मूर्च्छा ये लक्षण विशेष होते हैं। इसी तरह अगर वायुके साथ कफ मिल जाता है, तो पक्षाघात-पीड़ित या फालिज मारे हुए अंगोंमें सूजन आजाती है, वे छूनेमें शीतल मालूम होते हैं और उनमें भारीपन होता है।
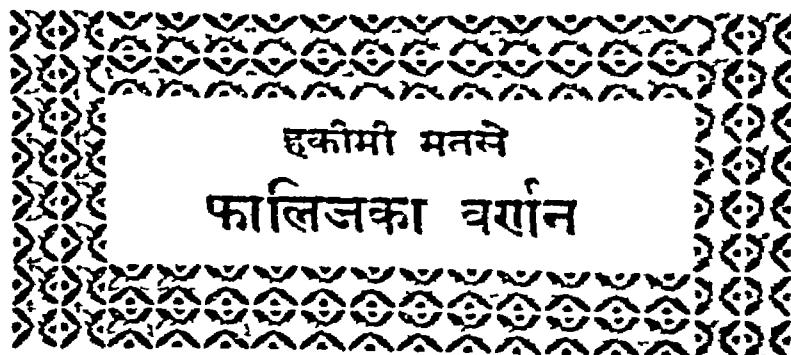
असाध्य लक्षण।

गर्भवती, प्रसूता, बालक, बूढ़े और क्षीण तथा जिसके रुधिरका क्षय हुआ हो, इन मनुष्योंका पक्षाघात असाध्य होता है ; यानी आराम नहीं होता ; अतः ऐसे पक्षाघात-रोगियोंकी चिकित्सा न करनी चाहिये। जिस पक्षाघातमें वेदना नहीं होती, वह भी असाध्य होता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, अगर पक्षाघात पीड़ित अंग ढीले हो जायँ, पर उनका असली रंग ज्योंका त्यों हो तथा पहलेकी अपेक्षा दुबले और छोटे न जान पड़ें तो आराम हो सकता है। अगर पक्षाघात-पीड़ित अंगोंका रंग बदल गया हो और वे मामूलसे बहुत दुबले और छोटे हो गये हों, तो आराम न होगा। हाँ, अगर वे अंग मोटे और शरीरकी रंगतके हों, तो आराम हो सकता है। जो इस्तरखा या फालिज पट्ठेके टूट जानेसे होता है, उसका भी इलाज हो नहीं सकता।

लकवे और फालिजमें फ़र्क़ ।

लकवेमें, जिसे वैद्यकमें अर्दित रोग कहते हैं, एक तरफका चेहरा टेढ़ा हो जाता है; पर फालिज या पक्षाघातमें एक तरफका आधा शरीर लम्बाईमें निकम्मा, ढीला या सुस्त अथवा सूना हो जाता है।

लक्षण ।

इस्तरखा शब्दका अर्थ "ढीला होना" और "फालिजका" अर्थ "आधा" है। हकीमोंने इन दोनोंके एक ही लक्षण लिखे हैं। इस्तरखामें शरीरके अजले और वतर सुस्त और ढीले हो जाते हैं। इसलिये शरीरके वे अवयव जो इन अजलोंके कारणसे चलते-फिरते हैं, अपने अजलोंके ढीले और सुस्त होनेसे निकम्मे और सूने हो जाते हैं। अगर हेतु यानी रोगका कारण बलवान होता है, तो सूनापन या चेष्टाहीनता जियादा होती है और हेतु कमज़ोर होता है, तो सूनापन और चेष्टाहीनता कम होती है। अगर दोष समझेमें

होता है, तो सुनापन होता है और यदि दोष चमड़ेमें नहीं होता—केवल सन्धियों या जोड़ोंमें होता है, तो सूनापन नहीं होता।

कभी-कभी कष्ट एक पट्ठेसे दूसरेमें आता है। जो अङ्ग उस पट्ठेसे सम्बन्ध रखता है, वही ढीला हो जाता है और बाक़ी शरीर आरोग्य रहता है। जैसे, हलक़ या नरखरा, जीभ या फुंकना, सीधी आँत या कोई उंगली अथवा कोई और अवयव ढीला हो जाता है, लेकिन शेष शरीर आरोग्य रहता है।

कभी-कभी शरीरके एक तरफके हराममग़ज़वाले पट्ठो और दिमाग़के पट्ठोंमें दोष हुआ करता है। उस दशामें आधा शरीर—सिरसे पाँवतक—ढीला हो जाता है। इस तरहके इस्तरख़ा या ढीले होनेको अगले हकीम "फालिज" कहते हैं। "फालिज" अरबी शब्द है। उसका अर्थ "आधा" है।

कभी-कभी देहकी एक ओरके उन पट्ठोंमें जो हराम मग़ज़से निकले हैं, दोष हो जाता है। इस हालतमें, लम्बाईमें आधा शरीर ढीला हो जाता है; परन्तु सिरके पट्ठे आरोग्य रहते हैं। लेकिन कभी-कभी सिरकी चमड़ा सुन्न हो जाता है।

कोई-कोई फालिज उसे कहते हैं, जिसमें आधा शरीर लम्बाईमें सुस्त हो जाता है और मुंहके अवयव आरोग्य रहते हैं, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। कभी-कभी आधा सिर भी मिला रहता है। ऐसे रोगको "लकवा सहित फालिज" कहते हैं।

निदान-कारण।

इस रोगके दो कारण हैं :—

(१) जब पट्ठों और अजलोंमें गाँठ पड जाती है या पट्ठे कट जाते हैं, तब ज्ञान-शक्ति और गमन-शक्तिकी रूह उनमें जा नहीं सकती, अतः फालिज रोग हो जाता है।

(२) ज्ञानशक्तिकी और गमनशक्तिकी मदद तो पट्ठों और अजलोंमें जाती है, परन्तु किसी अंगमें सर्दी-गरमी तरी या खुश्कीका ऐसा दोष हो जाता है, कि उसकी वजहसे पट्ठे और अजले उन दोनों शक्तियोंके प्रभावको ग्रहण नहीं करते, तब फालिज मार जाता है।

मतलब यह है कि, पट्ठों और अजलोंमें गाँठ पड़ जाने या पट्ठोंके टूट जाने, कट जाने अथवा किसी अंगमें दोष हो जानेसे देहके एक ओरके हिस्सेमें इस्तरखा या फालिज होता है; क्योंकि उनमें ज्ञान करानेवाली ताक़तकी मदद नहीं पहुँचती।

और भी खुलासा।

(१) अगर कोई अङ्ग इस तरह बाँध दिया जाता है, कि ज्ञानशक्ति और गमन-शक्तिकी रूहका नीचे आना बन्द हो जाता है, तब गाँठ पड़ जाती है। ऐसा होनेसे, उस अंगको फालिज मार जाता है।

(२) गाढ़ी लसदार रतूबतके पट्ठोंमें भर जानेसे, उन शक्तियोंके यानी ज्ञानशक्ति और गमनशक्तिकी रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं। इसलिए उन पट्ठोंसे सम्बन्ध रखनेवाले अंग या अंगोंमें फालिज मार जाता है।

(३) किसी अङ्गमें गरमी या सर्दीसे सूजन आजानेसे, उन दोनों शक्तियोंकी रूहकी राह बन्द हो जाती है। रूहके न पहुँचनेसे फालिज मार जाता है।

(४) किसी पट्ठेकी जड़ पर धमक या चोट लगनेसे, पट्ठा दब कर भिंच जाता है और उन दोनों शक्तियोंकी रूहके घूमनेकी राह बन्द हो जाती है। रूहके न पहुँचनेसे, उस पट्ठेसे सम्बन्ध रखनेवाले अंगमें फालिज मार जाता है।

(५) अगर गर्दनका या पट्ठेका कोई जोड़ अपनी जगहसे फिसल जाता है, तो उन दोनों शक्तियोंकी राह बन्द हो जाती है; इस लिए जिस अंगमें रूह नहीं पहुँचती, उसमें फालिज मार जाता है।

(६) सरदी ज़ियादा होने या पट्ठेके गाढ़े होनेसे पट्ठा सिमट जाता है। पट्ठेके सिमटनेसे, रूहको राह नहीं मिलती और फालिज हो जाता है।

(७) किसी अङ्गके जोड़मेंसे निकल जानेसे भी फालिज मार जाता है। मतलब यह है, कि जब किसी तरहसे रूहकी राहें बन्द हो जाती हैं या जहाँ रूह नहीं पहुँच सकती वहाँ, उसके न पहुंचनेसे, फालिज रोग हो जाता है।

जानने योग्य बात।

कभी-कभी देहका आधा निरोग भाग ऐसा गरम हो जाता है, मानो उसमें आग लग गई हो; लेकिन अर्द्धाङ्ग-पीडित दूसरा आधा भाग बर्फकी तरह शीतल रहता है। इसके दो कारण हैं;—(१) दिमाग़ी रूह फालिज मारे हुए हिस्सेमें घुसना चाहती है, पर वहाँकी राहें बन्द रहनेसे वह उसमें घुस नहीं सकती, तब वह निरोग भागमें घुस जाती है और उसे अत्यन्त गरम कर देती है। (२) फालिज और लकवेके इलाजमें गरम दवाएं दी जाती हैं। वे गरम दवाएं रोगीले अंगोंकी अपेक्षा निरोग अङ्गोंमे अपना प्रभाव ज़ियादा दिखाती हैं; इसीसे निरोग भागमें गरमी बढ़ जाती है। इसके सिवा, खून भी निरोग अङ्गको तरफ ही जाता है और उसके साथ रूह भी जाती है, क्योंकि रोग-पीड़ित अंग खूनको ग्रहण नहीं कर सकता। इन्हीं कारणोंसे, शरीरका आधा निर्दोष या निरोग भाग कभी-कभी आगकी तरह जल उठता है।

याद रखने योग्य हकीमी हिदायतें।

(१) कफज अर्द्धाङ्गके आरम्भमें, निर्बलताके कारणको देखकर, जब तक चौथा, सातवाँ या चौदहवाँ दिन न बीत जाय, किसी तरह

का इलाज मत करो। हकीम साहिबका कहना है, कि अर्द्धाङ्ग-रोगीको चौथे, सातव या चौदहवें दिन तक कोई बलवान औषधि न देनी चाहिये। आरम्भमें, दस्तावर दवाओंके देनेसे बहुधा रोग बढ़ जाता है, परन्तु नर्म हुकने करना उचित है। इस मौके पर, मलको मुलायम करने वाली दवाएं, मुञ्जिस आदि देना अच्छा है। जब चौथा, सातवाँ या चौदहवाँ दिन बीत जाय, मल नर्म हो जाय, तब दस्तावर दवा देनी चाहिये। वमन या कय कराना भी लाभदायक है।

(२) मल नाश होने पर, गुड्डियों और पट्ठों पर गरम, शक्ति-वर्द्धक और मलनाशक तेल मलना चाहिये। जैसे, बेद अंजीरका तेल, सोयेका तेल या नारदैनका तेल। पट्ठोंमें गरमी पहुँचानेको "कूटका तेल" मलना भी अच्छा है। ये उपाय उस हालतमें करने चाहियें, जब कि प्रकृतिमें गरमी न हो।

(३) अगर ऋतु, आयु और बल प्रभृति अनुकूल हों, रोगीके शरीरमें गरमी और रङ्गमें लाली तथा जवानी हो: तो "फस्द"से इलाज शुरु करना चाहिये, क्योंकि खून ही से सब दोष होते हैं।

(४) अगर प्रकृतिमें गरमी हो, तो—फस्द खोलो चाहे न खोलो—पहले गरमीको कम करो। जब गरमी नाश हो जाय, अर्द्धाङ्गका इलाज करो।

(५) हकीम शैख़ बू अली कहते हैं,—अगर फालिज और बुख़ार दोनों साथ-साथ हों, तो फालिजके इलाजकी जल्दी मत करो, पहले ज्वरको शान्त करो। ऐसे मौक़े पर गुलकन्दके साथ सिकंजबीन दो।

(६) अर्द्धाङ्ग-रोगीको शराब कभी मत दो, क्योंकि वह मलको पट्ठोंमें उतार लाती है।

(७) लकवेके या अर्द्धाङ्ग वालेके शरीर पर नदी और गन्धककी खानके पानीके सिवा और पानी मत डालो; क्योंकि गरम किया हुआ मीठा पानी डालनेसे दोष फैलते और पट्ठे नर्म होते हैं।

(८) जब तक सच्ची भूख न लगे खाना मत दो और जब तक तेज़ प्यास न लगो पानी मत पिलाओ। इस रोगमें "शहदका पानी" पीना अच्छा है।

(९) हकीम मासोयाका बेटा कहता है, मैंने देखा है, कि दस्त होनेसे फालिज जाता रहा।

(१०) अगर सूजन गरमीसे होती है तो दर्द बहुत होता है और ज्वर तेज़ रहता है। अगर गरम सूजनसे फालिज हो तो फस्द खोलो; बशर्ते कि कोई उपद्रव न हो।

(११) अगर खूनकी ज़ियादतीसे देह ढीली हो, तो फस्द खोलो।

(१२) अगर चोट लगनेसे रोग हुआ हो, तो खास चोटकी जगह दवा लगाओ। हकीम जालीनूस कहता है, एक आदमी सवारीसे गिर पड़ा। उसके दोनों पाँव ढीले हो गये। और हकीम पैरों पर दवा लगवाने लगे, पर मैंने चोटकी जगह दवा लगवाई। उससे सूजन मिट गई और रोगी आराम हो गया।

(१३) अगर फालिज गुड़ियाके सरकने या उतरनेसे हुआ हो, तो गुड़ियाको अपनी जगह बिठाओ। अगर जोड़ उखड़नेसे फालिज हुआ हो, तो जोड़को ठीक करो और यदि दोषोंके कोपसे रोग हुआ हो, तो उन्हें शान्त करो।

डाक्टरी-मतसे

लकवे और फालिजका वर्णन।

हमारे यहाँ "लकवा या अर्दित वात" उसे कहते हैं, जिसमे मनुष्यका किसी तरफका आधा चेहरा टेढ़ा और बेकाम हो जाता है। "फालिज या पक्षाघात" उसे कहते हैं, जिसमें मनुष्यका किसी

तरफका आधा शरीर बेकाम हो जाता है। अँगरेज़ीमें इन दोनों रोगोंके लिये पेरेलिसिस (Paralysis) शब्द लिखा है। चैम्बर डिक्शनेरीमें (Paralysis) का अर्थ A loss of the power of motion, sensation, or function in any part of the body लिखा है। मतलब यह कि, शरीरके किसी भागकी चलने-फिरने, हिलने-डुलने और स्पर्शज्ञानकी शक्तिके नाशको पैरेलिसिस (Paralysis) कहते हैं। "त्वकशून्यता" रोग होनेसे चमड़ेकी स्पर्शज्ञान-शक्ति मारी जाती है, हिलने-चलनेकी शक्ति नहीं रहती, शरीर यों का यों रह जाता है। हिकमतवालोंके "सुन्नवहरी" रोगके भी यही लक्षण हैं। अतः पैरेलिसिस शब्दका अर्थ वही ठीक है, जो चैम्बर डिक्शनेरीमें लिखा है। इसीसे डाक्टरोंने ऐसे रोगोंके लिए, जिनमें मनुष्यका सारा शरीर, आधा शरीर या शरीरका कोई भाग सूना हो जाता है, चमड़ेकी ज्ञानशक्ति और हिलने-डुलने या जुम्बिश करनेकी ताक़त मारी जाती है, एक मात्र "पैरेलिसिस" शब्द इस्तेमाल करके ठीक ही काम किया है। हाँ, रोगके भेदोंके अनुसार, उसके साथ कहीं विशेषण लगा दिये हैं और कहीं दूसरे नाम दे दिये हैं ; पर ऐसे रोगोंका शीर्षक या हेडिंग पैरेलिसिस (Paralysis) ही लिखा है।

डाक्टर गन साहब कहते हैं पैरेलिसिस रोग नर्वस सिष्टम (Nervous System) यानी स्नायु मण्डलका रोग है और उसीमें उसका स्थान है। शरीरके जिस भागमें यह रोग होता है, उस भागकी हिलने-चलने या स्पर्शज्ञानकी शक्ति जाती रहती है। यह रोग शरीरके एक भागमें होता है और कभी-कभी दोनोंमें ही होता है। अगर एक भाग में रोग होता है, तो एक भागकी यह दशा होती है और अगर दोनों भागोंमें होता है तो दोनों ही भागोंकी यह हालत होती है।

बहुधा यह रोग शरीरकी बाईं तरफ या दाहनी तरफ होता है। इसका शरीरके एक बाजूमें होना—इसका अति सामान्य रूप है। बाज़-बाज़ वक्त यह मनुष्यके पाँवों और पाँवोंकी उँगलियोंको अथवा

कूल्हेके नीचेके समस्त अंगोको पकड़ता है। अगर यह शरीरकी एक तरफ—दाहनी या बांई तरफ—होता है, तो इसे "हेमीप्लेजिया" (Hemiplegia) कहते हैं और अगर कूल्होंसे नीचेके अंगोंमें होता है, तो "पैरेप्लेजिया" (Paraplegia) कहते हैं। मतलब यह कि, जिसे हमलोग "अर्द्धाङ्ग, पक्षाघात या फालिज" कहते हैं, उसे अंगरेज़ लोग 'हेमीप्लेजिया' कहते हैं और जिसे हम लोग "उरुस्तम्भ" कहते हैं, उसे वे लोग "पैरेप्लेजिया" कहते हैं। हाँ, एक बात और याद रखनी चाहिये। वह यह कि, जब यह रोग हाथ पैर आदि ख़ास-ख़ास अङ्गों या कुछ पट्ठों अथवा मांसपेशियोंसे सम्बन्ध रखता है, तब इसे "पारशियल पैरेलिसिस" (Partial Paralysis) अर्थात् "आंशिक त्वकशून्यता" कहते हैं। जो चेहरेके एक रुख़ या दोनों रुख़ोंमें होता है, उसे "फेशियल पैरेलिसिस" (Facial Paralysis) कहते हैं। इसीको हमलोग "अर्दित या लकवा" कहते हैं।

लक्षण।

पैरेलिसिसके लक्षण अच्छी तरहसे अनुभवमें आते हैं। उन्हें मनुष्य आसानीसे भूल नहीं सकता। यह रोग यकायक होता है। जिस भागमें यह रोग होता है, उस भागकी स्पर्शज्ञान-शक्ति और इच्छानुसार हिलने-चलने या स्थान-परिवर्त्तनकी शक्ति इसके होते ही नाश हो जाती है ; यानी रोग होनेकी जगहका चमड़ा सूना हो जाता है। उस जगह चाहे बर्फ़ रखो, चाहे आग और चाहे सूई चुभाओ, कुछ मालूम नहीं देता और वह अङ्ग हिल-चल भी नहीं सकता। कभी-कभी इस रोगके होनेसे पहले, शून्यता-सुन्नता या सर्दी अथवा स्पर्शज्ञानहीनता और अचलता एवं हिला देने वाले इसके झटके तथा सकते (Apoplexy) में होने वाले अन्यान्य लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

बाज़-बाज़ वक्त यह रोग, अतिसार या ज्वरके साथ, अपने-आप चला जाता है। अगर गई हुई गर्मी लौटे, रोग-पीड़ित स्थानमें

चुभोनेका सा दर्द हो, साथ ही स्पर्शज्ञान और हिलने-चलनेकी ताक़त वापस आने लगे—तो भलाई समझो, क्योंकि ये शुभ चिह्न हैं।

कारण।

मनुष्यके मस्तिष्कमें एक ऐसी शै है, जो शरीरके समस्त अंगोंमें पहुँच कर उनको उत्तेजित करती और चलने-फिरने की ताक़त बख्शती है। वह चीज दिमाग़से हरकत पैदा करने वाली इन्द्रियों या यन्त्रोंमें आया करती है। उसीसे स्नायुओंका पोषण होता और उनका बल बढ़ता है। अगर किसी भी वजहसे उस स्नायु-सम्बन्धी ख़ून या अङ्गोंकी हरकतको तेज़ करनेवाली शै का बहना बन्द हो जाता है, तो लकवा या फालिज हो जाता है। जैसे, मेरुदण्ड या स्नायु पर फोड़ेका दबाव पड़नेसे ; हड्डीके टूट जाने या जोड़से हट जानेके कारण दबाव पड़नेसे और स्नायुओंमें घाव या रोग हो जानेसे, उस शै या रूहका दिमाग़से आना बन्द हो जाता है और उसके न आनेसे यह रोग हो जाता है। सफेद सीसा हाथोंसे चलाने और सोना चाँदी प्रभृति धातुओंके धूएँ के सामने रहनेसे भी यह रोग हो जाता है। जिन लोगोंको कृमिरोग (Worms), कण्ठमाला (Scrofula), आतशक—उपदंश (Syphilis) और सकता या मृगी (Apoplexy) रोग होते हैं, उन्हें भी उन रोगोंके पीछे, उनके परिणाम-स्वरूप यह रोग हो जाता है। बहुतों को हेमीप्लेजिया या एक तरफ का पैरेलिसिस—अर्द्धाङ्ग रोग सकते या मृगीसे पैदा होता है। दिमाग़को ख़ून पहुँचानेवाली नलीका फट जाना ही "सकता" है। उस नलीकी दीवारें जब टूट जाती हैं या उनमें दरार हो जाती है, तब ख़ून बहता फिरता है। वही ख़ून पैरेलिसिस या लकवा-फालिज पैदा कर देता है।

इलाज।

हम अनेक बार हेमीप्लेजिया और पैराप्लेजिया—अर्द्धाङ्ग और

उरुस्तम्भका अच्छा इलाज कर नहीं सकते। खासकर उस समय जबकि ये रोग पुराने या बहुत दिनोंके हों और चेतना या हरकत करने की ताकत मारी गई हो। फिर भी; रोगकी पहली अवस्थामें या रोग होते ही, उचित चिकित्सा करनेसे बहुधा सफलता होती है—अनेक रोगी आरोग्य लाभ करते हैं।

पहली अवस्थामें, अगर हमला यकायक और जोरसे हुआ हो तो वही उपचार करने चाहिएं, जो कि "एपोप्लेक्सी" या "सकते"में लिखे गये हैं।

प्रसंगवश एपोप्लेक्सी या सकतेका इलाज।

एपोप्लेक्सी * या सकतेमें पहला काम खूनकी चाल यकसाँ या समान करना है। भेजे पर से खूनका दवाव दूर करो और ऐसे उपाय करो, जिनसे भेजेमें अधिक खून फिर न आवे। इस मौके पर जल्दी और जोरसे काम करना चाहिये।

* एपोप्लेक्सी या सकता रोगका आक्रमण होनेसे रोगी यकायक गिर पड़ता है। उस समय उसमें देखने, सुनने, दुःख-सुखादि अनुभव करने और हिलने-चलनेकी शक्ति नहीं रहती, किन्तु दिल और फेंफड़े, इस दशामें भी, अपना काम करते रहते हैं। चेहरे और गर्दनकी शिरायें खूनसे फूल उठती हैं। दिलसे खूनको बहानेवाली नाड़ियाँ—रगे शिरियान—मामूलसे जियादा तेजीसे चलने या फड़कने लगती हैं। नाड़ी भरी हुई, मजबूत और मन्दी होती है। माँस-कार्य भी मन्दा रहता है। रोगीकी कोई भी चीज निगलनेकी शक्ति बहुत ही कम हो जाती है या कतई नहीं रहती। यह हालत चन्द मिनटों तक ही रहती है। कभी-कभी कई घन्टों तक भी रह जाती है। अगर रोग घातक नहीं होता, तो दवाओंके प्रभावसे या नेचरकी शक्तिसे रोग दब जाता है। रोगी आराम हो जाते हैं। पर अनेक बार आंशिक या यकतरफा पैरेलिसिस होकर रोग स्थायी हो जाता है। बुद्धि, मन या अन्तःकरणको भी इस रोगसे हानि पहुँचती है। मस्तिष्कमें जलन और सूजन भी इस रोगके फल-स्वरूप पैदा हो जाती है।

रोगीको हर तरह सुखी रखो। उसे आरामसे लिटा दो। उसका सिर ऊँचा रखो। गर्दनसे हरेक चीज़ दूर कर दो, जिससे रक्त स्वच्छन्दता-पूर्वक उतर सके। गलेके बटन बन्द रहने या गलेमें और चीजें पड़ी रहनेसे, खूनके आज़ादीसे आनेमें बाधा पड़ती है। सिर, चेहरा और गर्दन पर शीतल जल लगाओ और जितनी जल्दी हो सके, पैरों और टाँगोंको गरम जलमें डुबा दो। रोगीके कपड़े उतार डालो। गरम जलमें थोड़ासा मामूली नमक मिलाकर पैरों और टाँगोंपर मलो और धीरे-धीरे मालिश करते हुए शरीर और बाँहों तक पहुँच जाओ। इस उपायसे हाथ-पाँव प्रभृति अँगोंमें गरमी आ जायगी और बारीक नलियाँ (Capillary Vessels) अपना काम आज़ादीसे करेंगी ; खूनको उन भागोंमें खींच लाकर भेजेसे हटा देंगी।

अगर 'सकता' जोरसे हुआ हो और आपको मुमकिना हो, तो रोगी-को गरम हम्माममें रखनेका उपाय करो। हम्माम काफी बड़ा होना चाहिये। इतना बड़ा हो, जिसमें सारा शरीर आ जाय ; यानी कन्धों तक ऊँचा होना चाहिये। इस उपायसे आध घन्टेमें होश न हो, तो उसे फिर दूसरे आध घन्टे तक हम्माममें रखो अथवा जबतक आराम न हो तब तक रखो ; देर अबेरका ख़याल मत करो। लेकिन सिरको हर समय शीतल रखो ; भूलकर भी सिरमें गरमी न पहुँचाना। ज्योंही रोगीको होश हो जाय, उसे खाट पर सुला दो। उसके सिर और कन्धे ऊँचे रखो। उसकी टाँगों और बदनके इधर-उधर कुछ गरम ईंटें या पत्थर रख दो ; पर वे हद्से ज़ियादा गरम न हों, क्योंकि ऐसा होनेसे फफोले हो जायँगे। रोगी ज्योंही निगल सकने योग्य हो जाय, उसे एक जल्दी काम करनेवाला जुलाब दो। ऐसे मौक़ेपर, एक औन्स इपसम साल्ट्स (Epsom Salts), थोड़ासा टिंचर कारडेमम (Tincture of Cardamom) और एक या दो बूँद सौंफका तेल (Oil of Anise) थोड़ेसे गरम पानीमें मिलाकर

रोगीको पिला दो। अगर इससे एक घण्टेमे दस्त न हो, तो फौरन ही दूसरी मात्रा दे दो।

इस रोगमें बहुधा क़ब्ज रहता है—आँतें बन्द रहती हैं। इसलिये इस मौकेपर, अगर इंजैकशन (Injection) से भी काम लिया जाय यानी गुदामे दवाओंकी पिचकारी भी मारी जाय, तो पहलेके उपायको बड़ी मदद मिल जाय। अगर पिचकारी देनी हो, तो एक चम्मच-भर उसी जुलाबकी तैयार दवाको एक पाइन्ट या डेढ़ पाव गरम जलमें मिला दो और ऊपरसे एक या दो बड़े चम्मच ग्लैसरिन (Glycerine) के भी मिला दो। यही गुदामें पिचकारी मारनेकी दवा है।

एक बड़ा सा राईका पलस्तर पेटपर रख दो। इस उपायसे भेजेकी जलन और सूजन रुक जायगी।

अगर नाड़ी (Pulse) भरी हुई, मजबूत और उछलती हो, तो फौरन ही फस्द खोल दो। इस उपायसे चेतना शीघ्र ही लौट आवेगी ; पर अगर नाडी नर्म और कमजोर हो, तो फस्द न खोलो। अफीमसे हालत सुधरनेके बजाय उल्टी ख़राब ही होगी। सेहत-याबीके दिनों या आरोग्य लाभ करनेकी दशामें, हर दूसरे-तीसरे दिन—दो सप्ताह तक—जुलाब देते रहो।

रोगमुक्त होनेपर भी, पथ्य पालन करो और शराब आदि अपथ्य पदार्थोंसे क़तई बचो। मास वगैरः न खाओ, हल्के और थोड़े भोजन पर सन्तोष रखो। रगड़-रगड़ कर नित्य स्नान करो और खुली हवा में थोड़ा व्यायाम भी करो। शरीर और मनमें थकान आवे, ऐसे कामोंसे सदा बचो।

नोट—यहाँ तक हमने प्रसगवश एपोप्लैक्सी या सक्तेका इलाज लिख दिया है। क्योंकि हमने इसे भूलसे पहले नहीं लिखा। पैरेलिसिस रोगकी पहली अवस्थामें—इसको पहली अवस्थाके उपायोंसे काम लेना चाहिये। अब नीचे हम ख़ास तौर पर, पैरेलिसिस या लकवा-फालिजका इलाज लिखते हैं।

पैरालिसिसका इलाज।

अगर तशन्नुज या वाईटे आते हों—पट्ठोंमें जोरकी ऐंठन हो—कदाचित चेहरेके पट्ठोंमें ; तो आप पीड़ा नाश करनेके लिये, हाइपोडरमिक सुईसे एक ग्रेनका सौवाँ भाग हायोसीन हाईड्रोब्रोमेट (Hyoscine Hydrobromat) का प्रयोग कीजिये।

प्रथम। पहले आँतोंको खाली करो यानी दस्त कराओ। इस मौक़े पर भी इंजेकशनसे काम लेना ज़रूरी है ; यानी गुदामें दवा की पिचकारी लगानी चाहिये। क्योंकि आँतोंमें क़ब्ज बहुत जियादा होता है। बाज़-बाज़ औक़ात,शरीरके नीचेके हिस्से ऐसे मारे जाते या बेकाम हो जाते हैं, कि जुलाब देनेसे कुछ भी लाभ नहीं होता। जुलाबके भरोसे बैठा रहना अच्छा नहीं, क्योंकि संभव है आँतों के बन्द रहने या कब्जियत से ही यह रोग पैदा हुआ हो। हाँ, शीघ्र-फलदायी जुलाबकी एक मात्रा देनेमें हानि नहीं। केलोमल (Calomal), सनाय (Senna) और साल्ट्स (Salts) जुलाबके लिए उत्तम हैं। एक पाइण्ट या डेढ़ पाव पानीमें एक आउन्स ग्लैसरिन (Glycerine) मिलाकर गुदामें पिचकारी लगाओ। जरूरत समझो, तो एक औन्स साल्ट्स (Salts) भी मिला दो। इन उपायोंसे दस्त हो जायगा और आँतें अपना काम करने लगेंगी। अगर जरूरत हो, तो फिर पिचकारी लगा सकते हो।

द्वितीय। जुलाब दूसरे तीसरे दिन देना चाहिये। केलोमल (Calomal) या पोडोफिलन (Podophyllin) और लैपटनड्रिन (Laptandrin) जुलाबके लिए उत्तम चीज हैं। पिछली दोनों दवाएँ तीन-तीन ग्रेन लेकर मिलालो और रोगीको दे दो। यह जवान के लिये एक मात्रा है।

तृतीय। नीचे लिखी नरवस पिल्स भी दी जानी चाहियें :—

Extract Hyosciamus - 10 gr

Extract Aconite 20 gr
Macrotin 20 gr

इन तीनोंको मिलाकर तीस गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम एक-एक गोली दो।

चतुर्थ। कुछ टानिक बिटर्ज़ (पौष्टिक तिक्तसुरा) भी दी जानी चाहिये :—

Compound Tincture of Gentian 1 oz
Elixir Calisaya 1 oz
Tincture of Valerian 1 oz.
Tincture of Nux vomica 3 drachms

इसमें इतना पानी मिला दो, कि सब चार औन्स हो जाय। हर भोजनके पहले, इसमेंसे एक चायका चम्मच-भर दवा पिलाओ।

शरीरके जिन भागोंमें रोग हुआ हो उनको और हाथ पाँव आदि शाखाओंको, दिनमें एक या दो बार, स्पंज और शीतल जलसे साफ करो। हर डेढ़ पाव पानीमें एक ड्राम नमक मिलाकर मालिश करो।

अगर रोगी बहुत बूढ़ा और कमज़ोर न होगा, तो साधारण रोग हमारी ऊपर लिखी चिकित्सा-विधिसे अवश्य नाश हो जायगा।

योगराज गुग्गुल।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, कालीमिर्च, चीतेकी छाल, भुनी हींग, अजमोद, सरसों, सफेद जीरा, स्याह जीरा, सम्हालूके बीज,

इन्द्रजौ, पाढ़, वायविडङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगीकी जड़, बच और मरोड़फली—इन वीस दवाओंको एक-एक तोले लो। त्रिफला इन सबके वजनसे दूना—चालीस तोले—लो। शुद्ध गूगल सबके वजनके बराबर—साठ तोले लो।

पहलेकी वीसो दवाओं और त्रिफलेको कूट-पीसकर छान लो। फिर इस चूर्ण और गूगलको लोहेकी कड़ाहीमें डालकर, लोहेके डण्डेसे, खूब घोटो। जब घुटते-घुटते काजल-जैसा मसाला हो जाय, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना कर साफ काँचके बर्तनमें रख दो। इसीका नाम "योगराज गूगल" है।

इसके सेवन करनेसे समस्त बात रोग, कोढ़, ववासीर, प्रमेह, संग्रहणी, वातरक्त, भगन्दर, नाभिका दर्द, वायुगोला, यक्ष्मा, उन्माद, मृगी, उरग्रह, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, वीर्य-दोष, प्रदर, पाण्डु, मेद-रोग-मुटापा, शूल, चूहेका विष, उग्र नेत्र रोग, सब तरहके उदर रोग —पेटके रोग, कृमि और हृद्रोग नाश हो जाते हैं।

मात्रा—१ से ६ माशे तक है। पर यह ३ माशेसे आरम्भ करके, हर हफ्ते तीन-तीन माशे बढ़ा कर, एक तोले तक ली जा सकती है। इसे सवेरे ही सेवन करना चाहिये।

नोट—योगराज गूगल अनुपान बदल-बदल कर सेवन करनेसे अनेक रोगोंको नाश करती है। अतः हम नीचे चन्द रोगोंके अनुपान लिखते हैं:—

अनुपान।

(१) वातरोगोंमें—रास्नाके काढ़े * या गरम जल अथवा गरम दूधके साथ।
(२) प्रमेह रोगमें ... ... दारुहल्दीके काढ़ेके साथ।
(३) वातरक्तमें ... ... गिलोयके काढ़ेके साथ।
(४) पाण्डुरोगमें ... ... गोमूत्रके साथ।

* रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय और अरण्डकी जड़—इनके काढ़ेको "रास्नादि क्वाथ" कहते हैं। सप्तधातुगत वायु, आमसंयुक्त वायु और सर्व-शरीरस्थ वात विकारोंमें यह काढ़ा उपयोगी है।

(५)	मेदवृद्धिमें	शहदके साथ।
(६)	समस्त कोढ़ोंमें	नीमके काढेके साथ।
(७)	आमवातमें	गिलोयके काढ़ेके साथ।
(८)	चूहेके विषमे	सोनापाठाके काढेके साथ।
(९)	उग्र नेत्र रोगोंमे	त्रिफलाके काढेके साथ।
(१०)	आठों उदर रोगोंमे	पुर्ननवाके काढेके साथ।
(११)	शूलरोगमें	मूलीके काढ़ेके साथ।
(१२)	पित्तके रोगमे	काकोलीके काढेके साथ।
(१३)	कफके रोगोंमें	अमलताशके काढ़ेके साथ।

पथ्यापथ्य—यह गूगल जरा व्याधि नाशक रसायन है। इसमें मैथुन और खाने-पीनेकी कोई कैद या परहेज नहीं। रोगी इच्छानुसार आहार-विहार कर सकता है।

महायोगराज गुग्गुल।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, कालीमिर्च, भुनी हींग, सिरस, अजमोद, सफेद जीरा, स्याह जीरा, रेणुकाके बीज, इन्द्रजौ, पाढ़, वायबिडङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगीको जड़, बच, मरोड-फली, तेजपात. देवदारु, छोटीपीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सेंधा-नोन, छोटी इलायची, गोखरू, हरड, धनिया, वहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार और तिल—इन ३७ दवाओंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लो। इन सबके बराबर ३७ सैंतीस तोले शुद्ध गूगल लो। पहली ३७ दवाओको कूट-पीस कर गूगलमें मिला दो और घी दे-देकर सबको खूब कूटो और घोटो। फिर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनालो।

सेवन विधि और अनुपान वग़ैरः सभी पहले लिखी हुई योगराज गुग्गुलके समान। इसको पहले ३ माशेकी मात्रासे खाओ। फिर कुछ दिन बाद ४ माशे, फिर ६ माशे; इस तरह एक तोले तक बढ़ा लो।

तीसरी योगराज गुग्गुल।

वायविडङ्ग, धनिया, भुनी-हींग, गजपीपर, सफेद ज़ीरा, अतीस, पीपर, पीपरामूल, चीता, सोंठ, अजमोद, पाढ़, चव्य, मरोडफली, वच, रेणुका, कपीला, भारंगीकी जड, इन्द्रजौ, सफेद सिरस और कूट—इन १ चीजोको एक-एक तोले लो। त्रिफला इन सबसे दूना—४२ तोले लो और शुद्ध गूगल सबसे तिगुनी—६३ तोले लो। इन सबको कूट-पीस कर झडबेरीके बेर-समान गोलियाँ बनालो। यह नुसख़ा "वोपदेव शतक"का है।

इस गूगलको "शहद"के साथ खानेसे ग्रहणी, वातरोग, बुढ़ापा, शुक्रदोष, आर्त्तवदोष, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि, हृद्रोग, चमड़ेके रोग, शूल, प्रमेह, व्रण, बवासोर, अरुचि, वातरक्त, खाँसी, मृगी और राजयक्ष्मा नाश हो जाते है। विशेष करके यह "रास्नाके काढ़े"में दी जाती है और "आमवात"में खूब फायदा करती है।

त्रयोदशांग गूगल।

बबूलकी छाल, असगन्ध, हाऊबेर, शतावर, गिलोय, गोखरू, विधारा, रास्ना, सौंफ, कचूर, अजवायन और सोठ,—इन बारह दवाओको एक-एक तोले लो। सबके बराबर—१२ तोले—शुद्ध गूगल लो। सबका आधा—६ तोले—गायका घी लो। सबको कूट-पीस और मिलाकर लोहेके हिमामदस्तेमें, लोहेकी मूसलीसे घोटो। जब काजलके समान हो जाय, एक-एक माशेकी गोलियाँ बनालो। फिर इसे अमृतबान या घीके चिकने बासनमे रख दो।

इसके लगातार कुछ दिन खानेसे ८४ वात रोग, लँगड़ापन, कुबड़ापन रोग आराम होते और टूटी हड्डी जुड़ जाती है। कई बार परीक्षाकी है। यह गूगल सर्व्वश्रेष्ठ गूगल है।

मात्रा—१ माशेसे ६ माशे तक है। बलाबल अनुसार, मात्रा कम-ज़ियादा देनी चाहिये।

अनुपान—गरम दूध, गरम जल, अजवायनका अर्क़, शराब अथवा चोपचीनीका अर्क़।

चौथी योगराज गूगल।

सोंठ, पीपर, चव्य, पीपरामूल, चीता, भुनी हींग, अजमोद, सरसों, ज़ीरा, कालाजीरा, रेणुका, इन्द्रजौ, पाढ़, वायविड़ंग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगी, वच और मूर्वा—मरोड़फली,—इन बीसों दवाओंको एक-एक शाण यानी चार-चार माशे लो। "त्रिफला" इन सबके वज़न से दूना—१४ तोले—लो और शुद्ध गूगल, सबके वज़नके बराबर—२१ तोले—लो।

पहले त्रिफले तककी २१ दवाओंको कूट-पीस कर कपड़ेमें छान लो। फिर साफ गूगलको, ज़रासा घी डालकर, लोहेके हमामदस्तेमे खूब कूटो। जब खूब कुट जाय, उसमें दवाओंका चूर्ण डालकर खूब मिलाओ। इस समय इसमें बंगभस्म, चाँदीकी भस्म, नागेश्वर, कान्तिसार, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, मण्डूरभस्म और रससिन्दूर, दो-दो तोले मिला दो और फिर खूब कूटो। जब सब चीजें एकदिल हो जायँ, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनाकर, चिकने या काँचके बर्तनमें रख दो। यही "शार्ङ्गधरकी योगराज गूगल" है।

इसपर भी मैथुन या खाने-पीनेकी क़ैद नहीं। बिना पथ्यके भी यह लाभ ही करती है। यह त्रिदोषनाशक रसायन है। अनुपान वगैरः वही जो "पहली योगराज गूगल"में लिख आये हैं। यह सबसे उत्तम गूगल है। हम समस्त वातरोगोंमे इसको व्यवहार करके लाभ उठा चुके हैं।

नोट—"शार्ङ्गधर"में वंग आदि भस्म चार चार तोले मिलानेकी बात लिखी है; पर हमने दो-दो तोले मिलाकर ही लाभ और सुभीता देखा है, इसीसे दो-दो तोले

लिखी हैं। श्याम सुन्दर आचार्य रस सिन्दूरकी जगह "चन्द्रोदय" डालते थे और "स्वर्णभस्म" अपनी ओरसे अधिक मिलाते थे। उनका कहना है, कि एक छटाँक अरण्डीके तेलमें ६ माशे योगराज गूगल डालकर गरम करो। फिर उसमें आधसेर गरम दूध और छटाँक भर मिश्री मिलाकर पीलो। इस योगसे हड्डीमें घुसी हुई वात व्याधि भी नष्ट हो जायगी। रेंडीके तेलसे ४।५ दस्त होंगे, पर बल नहीं घटेगा। भोजनके समय हलवा, चूरमा और घी डालकर खिचड़ी गरम-गरम खाओ। नमक, मिर्च, जीरा, भुनी हींग, सोंठ, पीपर, अजवायन, पोदीना और घीमें भुना लहसन इनको नीबूके रसमें घोटकर चटनी बना लो। यह चटनी ज़ायकेदार और गुणकारी है।

अश्वगन्धा घृत।

घी एक भाग और दूध चार भाग लेकर घी पकालो। इस घी में "असगन्धका पिस-छना चूर्ण" मिलाकर खानेसे असाध्य वात रोग भी नाश हो जाता है। साथ ही शुक्र धातुकी दारुण क्षीणता भी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

स्वच्छन्द भैरव रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, शुद्ध सुहागा, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध हरताल, सोनामाखीकी भस्म, त्रिकुटा, अरनी, जंगी हरड़ और मुण्डी—एक-एक तोले ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके, बिना चमककी कज्जली कर लो। फिर उसमें लोहा आदिकी भस्म मिला दो। शेषमें त्रिकुटा, अरनी, हरड़ और मुण्डीको पीस-छान कर मिला दो। इस चूर्णको एक दिन-भर "निर्गुण्डीके रस"के साथ घोटो और एक दिन "गोरखमुण्डीके रस"के साथ घोटो। जब घोटते-घोटते सूखा चूर्ण हो जाय, रख दो। यही "स्वच्छन्द भैरव रस" है। इस रसकी मात्रा १ रत्तीकी है। इस रसके सेवन

करनेसे पक्षाघात और सब तरहकी वातव्याधियाँ आराम हो जाती हैं।

नोट—यह नुसख़ा "वैद्य विनोद"का है। "शार्ङ्गधर"में मुराडीकी जगह "निर्गुराडी" लिखी है। इसकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोंठ और अरराडीकी जड़—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल" मिलाकर, यही काढ़ा पिया जाता है, तो बहुत ज़ियादा फायदा करता है। "स्वच्छन्दभैरवस" वात रोगों पर अकसीरका काम करता है।

विष्णु तैल।

सरिवन, पिथवन, खिरेंटी, गंगेरन, गोखरू, अरण्डीकी जड़, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, करंज, शतावरी और पियावाँसा—ये सब दवाएँ चार-चार तोले लेकर, सिल पर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

काली तिलीका तेल २ सेर, गायका दूध ४ सेर और ऊपरकी लुगदी—इन सबको क़लईदार कड़ाहीमें डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस तेलको विष्णु भगवानने बनाया था, इसलिये इसका नाम "विष्णु तैल" है।

इस तेलकी कुछ दिन मालिश करनेसे आदमी तो आदमी जानवरोंकी वात-व्याधि भी नष्ट हो जाती है। इसके लगानेसे वायु फौरन नष्ट होता, शरीर वज्रवत् मज़बूत होता और टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है। अनेक बारका परीक्षित है। हर वैद्य और गृहस्थको घरमें रखना चाहिये।

महाविष्णु तैल।

नागरमोथा, असगन्ध, जीवक, ऋषभक, कचूर, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, मुलहटी, देवदारु, पद्माख, सेंधानोन, जटामासी,

छोटी इलायची, दालचीनी, पत्थरफूल, कूट, वच, लालचन्दन, मँजीठ, कस्तूरी, सफेद चन्दन, केशर, मरिचन, पिठवन, मसवन, मुगवन, कौड़िया-लोबान, गठौना, नखी और सौंफ—इन ३२ दवाओंको चार-चार तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर सिल पर रख कर, पानीके साथ लुगदी बना लो।

फिर काले तिलोंका तेल १६ सेर, शतावरका रस १६ सेर, गायका दूध १६ सेर और पानी ३२ सेर तथा ऊपरकी लुगदी सबको क़लईदार कड़ाहीमें डाल कर मन्दाग्निसे तेल पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छान कर बोतलोंमें भर दो।

इस तेलकी मालिशसे समस्त वात रोग आननफानन आराम होते हैं। ऊपर लिखा "विष्णु तेल" ही रामबाण है, फिर यह तो उससे १०० गुनी अधिक ताक़त रखता है। जो वात-व्याधियोंकी चिकित्सामें निराश हो गये हों, वे इसे अवश्य लगावें ; तत्काल फल मिलेगा। अनेक बारका परीक्षित है।

नारायण तेल।

बेलगिरी, अरणी, सोनापाठा, पाढ़, महानीम, प्रसारिणी, असगन्ध, दोनो कटाई, बरियारा, गुलसकरी—ककई, गोखरू और पुनर्नवा—इन तेरह दवाओंको आध-आध पाव लेकर कूट लो। फिर इस कूटे हुए चूर्णको सोलह गुने यानी २६ सेर पानीमें औटाओ। जब चौथाई यानी ६॥ सेर पानी रह जाय उतार लो और छानकर अलग रख दो।

फिर सौंफ, देवदारु, बालछड़, छरीला, वच, लाल चन्दन, तगर, कूट, इलाचयी, सरिवन, पिठवन, मुगवन, मसवन, रास्ना, असगन्ध, सेंधानोन और पुनर्नवा—इन सत्रह दवाओंको दो-दो तोले लेकर कूट लो। फिर सिल पर रख कर, पानीके साथ, महीन पीस लो।

अब एक सेर शतावरको १६ सेर पानीमें औटाओ ; जब चार सेर पानी रह जाय, खूब मल कर काढ़ा-काढ़ा निकाल लो।

फिर काली तिलीका तेल २ सेर, गाय या बकरीका दूध ८ सेर, शतावरका काढ़ा ४ सेर, दवाओंका काढ़ा ६॥ सेर और लुगदी—इन पाँचोंको मिलाकर पकाओ। जब दूध और काढ़े जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "नारायण तेल" है।

इस तेलको मन्दाग्निसे पकाओ ; ज़ोरकी आगसे तेल ख़राब हो जाता है। अगर औटानेका बर्तन छोटा हो, तो पहले तेल, लुगदी और काढ़ेको चढ़ा देना। जब काढ़ा जलनेसे बासन कुछ ख़ाली हो, उसमे शतावरका रस पाव-पाव भर डालना। जब शतावरका रस न रहे, इसी तरह थोड़ा-थोड़ा दूध देना। जब कड़ाहीमें तेल और आधा सेर तीन पाव पानी रह जाय, उतार लेना।

यह तेल हमारा हज़ारों बारका आजमाया हुआ है। इसके बदन पर मलने, कानमें डालने, पीने और गुदामे पिचकारी देनेसे उर्ध्ववात, अधोगत वात, मन्यास्तम्भ, शिरोग्रह, हनुस्तम्भ, बहरापन, लूलापन, लँगड़ापन, भुजाशोष, पादशोष, लकवा,फालिज, अर्दितवात,पक्षाघात, एकांगवात और अर्द्धाङ्ग आदि ८० प्रकारके वातरोग नाश हो जाते हैं। यह तेल टूटे हाड़को भी जोड सकता है, तब वात नाश करनेमें क्या शक ? इससे हाथी और घोड़ोंके वातविकार भी नष्ट हो जाते हैं। इसे बिना हवाके स्थानमें लगाना चाहिये। परीक्षित है।

मध्यम नारायण तेल।

बेल, असगन्ध, बृहती, गोखरू, श्योनाक, बरियारा, नीम, कटेरी, पुनर्नवा, गुलसकरी, गनियारी, गंधाली और पाटला—इनकी जड़ें पाँच-पाँच तोले लो। फिर इनको जौकुट करके १ मन, २४ सेर

पानीमें डाल कर काढ़ा पकाओ। जब १६ सेर पानी रह जाय, उतार कर काढ़ा छान लो और अलग रख दो।

शतावर १ सेर लेकर कूट लो और १६ सेर पानीमें डाल कर पकाओ। जब २४ सेर पानी रह जाय, खूब मल कर रस निकाल लो।

गायका दूध ४ सेर और काली तिलीका तेल ४ सेर—इनको भी अलग रख दो।

रास्ना, असगन्ध, सौंफ, देवदारु, कूट, सरिवन, पिठवन, मुगवन, अगर, नागकेशर, सधानोन, जटामांसी, हल्दी, दारुहल्दी, शैलज, लालचन्दन, कूट, इलायची, मंजीठ, मुलेठी, तगर, मोथा, तेजपात, भाँगरा, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर-काकोली, ऋद्धि, वृद्धि मेदा, महामेदा, सुगन्धवाला, वच, ढाककी जड़, गठौना, सफेद पुनर्नवा और चोर काँचकी—इनमेंसे हरेकको एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो।

अब कड़ाहीमें तेल २ सेर, काढ़ा १६ सेर, शतावरका रस ४ सेर, गायका दूध ४ सेर और लुगदी—इन सबको मिलाकर तेलको पका लो। शेषमें, तेलमें सुगन्धि करनेको कपूर, केशर और कस्तूरी ६।६ माशे घोट-पीसकर मिला दो।

तेलके शीतल होनेपर, उसे नितार-छानकर बोतलोंमें भर दो।

महानारायण तेल।

शतावर, सरिवन, पिठवन, कचूर, बरियारा, अरण्डकी जड़, कंटकारी, कंटकरेजाकी जड, गुलसकरी और भाँटीकी जड़—हरेक पाँच-पाँच तोले लेकर कूट लो और आठ सेर पानीमें डालकर काढा बनाओ। जब दो सेर पानी रह जाय, मलकर छानलो।

फिर १ सेर शतावर लेकर कुचल लो और बारह सेर पानीमे

औटाओ ; जब ३ सेर पानी रह जाय, मलकर रस निकाल लो और गाय या बकरीका दूध एक सेर लाकर रखलो ।

फिर पुनर्नवा, वच, देवदारु, सौंफ, लालचन्दन, अगर, शैलज, तगरपादुका, कूट, इलायची, सरिवन, वरियारा, असगन्ध, सैंधानोन और रास्ना—इनको छै-छै माशे लेकर, सिलपर पानीके साथ, महीन पीसलो । यही कल्क या लुगदी है ।

अब २ सेर दवाओंका काढ़ा, ३ सेर शतावरका रस, १ सेर दूध, आध सेर तिलीका तेल और लुगदी—इन सबको कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ । जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो । यही "महानारायण" तेल कलकतिये कविराज बनाते हैं । इसके लगाने, मलने, पीने, पिचकारी लगाने और नास लेनेसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं ।

महामाषादि तेल ।

उड़द १२८ तोले, दशमूल २०० तोले और बकरेका मांस १२० तोले—इन तीनोंको कुचलकर १०२४ तोले पानीमें पकाओ ; जब चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, उतार लो ।

१२८ तोले काली तिलीका तेल और तेलसे चौगुना ५१२ तोले गायका दूध भी तैयार रख लो ।

काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, जीवन्ती, मँजीठ, चव्य, चीता, कायफल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, पीपरामूल, रास्ना, आमले, गोखरू, कौंचके बीज, अरण्ड की जड़, सौंफ, सैंधानोन, संचरनोन, विड़नोन, देवदारु, गिलोय, कूट, असगन्ध, वच और कचूर—इनमेंसे हरेक दवाको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बनालो ।

अब चूल्हेमें आग जलाकर उसपर कड़ाही रखो । कड़ाहीमें

२५६ तोले उड़दादिका काढ़ा, १२८ तोले तेल, ५१२ तोले दूध और ऊपरकी लुगदी—सबको डालकर मन्दाग्निसे पकाओ ; जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छानलो और बोतलोंमें रख दो। यही "महा-मापादि तेल" है ।

इस तेलके पीने, नास लेने, गुदामें पिचकारी देने और कान आदि में भरनेसे समस्त वात रोग नष्ट हो जाते हैं। यह तेल पक्षाघात, एकांगवात, अर्द्धाङ्गवात, हनुग्रह, कानका दर्द, मस्तकका दर्द, त्रिदोषजन्यतिमिर, हाथकी जड़ता, पाँवकी जड़ता ; शिर, गर्दन और कानोंकी मन्दता ; लँगड़ापन, गृध्रसी और अपबाहुक रोगको निश्चय ही नाश करता है। परीक्षित है।

दूसरा महामापादि तेल ।

(१) उड़द, जौ, अलसी, कटेरी, कौंचके बीज, कटसरैया, गोखरू और अरलू—इन आठों दवाओंको अट्ठाईस-अट्ठाईस तोले लेकर जौकुट कर लो और चौगुने यानी ८१६ तोले पानीमें पकाओ। जब चौथाई यानी २०४ तोले पानी रह जाय, उतार कर छान लो और धर दो।

(२) चिनौले, बेरकी गुठली, सनके बीज, और कुलथी—इन चारोंको छप्पन-छप्पन तोले लेकर, चौगुने यानी ८९६ तोले पानीमें पकाओ ; जब चौथाई यानी २२४ तोले पानी रह जाय, उतार कर छानलो और धर दो।

(३) ६४ तोले बकरेका मांस लेकर २५६ तोले पानीमें पकाओ ; जब चौथाई यानी ६४ तोले पानी रह जाय, उतार कर छानलो और धर दो।

(४) गिलोय, कूट, सैंधानोन, रास्ना, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़,

पीपर, सौंफ, खिरैंटी, प्रसारिणी, वालछड़ और कुटकी—इनमेंसे हरेकको एक-एक तोले लेकर, सिल पर पीसकर, लुगदी बनालो।

(५) अब ६४ तोले काली तिलीका तेल कड़ाहीमें डाल कर चूल्हे पर चढ़ाओ। उस तेलमें पहले उड़द वग़ैरःका २०४ तोले काढ़ा मिला दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब यह काढ़ा पक जाय, उसमें बिनौले वग़ैरःका २२४ तोले काढ़ा डालकर पचाओ। जब यह भी पच जाय, तब उसमे बकरेके मांसका ६४ तोले काढ़ा भी डाल दो और पचाओ। जब यह काढ़ा भी पच जाय, उसमें दवाओंकी लुगदी थोड़ी-थोडी डालकर पचा दो। जब तेल मात्र रह जाय उतार कर तेलको छानलो। यही दूसरा "महामाषादि तैल" है।

इस तेलसे आक्षेपक, पक्षाघात, उरुस्तम्भ, अपबाहुक, हाथ काँपना, सिर काँपना, विश्वाची, अर्दित या लकवा तथा समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इसी तेलको शार्ङ्गधर आचार्यने "माषादि तेल" लिखा है। उनका भी कहना है, कि इससे ग्रीवास्तम्भ आदि वात रोग नाश हो जाते हैं। इस तेलकी हमने अनेक बार परीक्षाकी है।

प्रसारिणी तैल।

मूल पत्ते और शाखाओं समेत प्रसारिणीका पञ्चांग ४०० तोले लेकर, १०२४ तोले पानीमें पकाओ। जब चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, मल-छान कर काढेको रख लो।

फिर २५६ तोले काली तिलीका तेल, २५६ तोले दही, २५६ तोले काँजी और १०२४ तोले गायका दूध तैयार रखो।

मुलहठी, पीपरामूल, चीतेकी छाल, सेंधानमक, वच, प्रसारिणी, देवदारु, रास्ना, गजपीपर, भिलावेकी जड़, सौंफ और जटामासी—इन बारह दवाओंको समान-समान दो-दो तोले आठ-आठ माशे

ले लो ; यानी कुल वज़न ३२ तोले लो । फिर इनको सिल पर पानीके साथ पीस कर कल्क या लुगदी बना लो ।

अब कड़ाहीमें तेल, लुगदी और प्रसारिणीका काढ़ा डाल कर, मन्दाग्निसे पकाओ । जब प्रसारिणीका काढ़ा जलने पर आवे, उसमें दही थोड़ा-थोड़ा डाल कर पचा दो और फिर काँजी पचा दो । जब काढा, दही, काँजी और दूध जल जायँ, तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो । यही "शार्ङ्गधर"का प्रसारिणी तेल है ।

इस तेलकी मालिशसे वात-कफके रोग, कुबड़ा करनेवाली वात, पांगला करनेवाली वायु, गृध्रसी वात, अर्दित वात, लकवा, हनुग्रह—ठोड़ी जकड़ना ; पीठ, कमर, सिर और गर्दनकी जकड़न ; कमरकी जकड़न—तथा विषम वात ये सब निश्चय ही आराम हो जाते हैं ।

नोट—हमने एक और प्रसारिणी तेल आगे हनुग्रह-चिकित्सामें "भावप्रकाश" के मतसे भी लिखा है । उसके और इसके बनानेमें थोड़ा फ़र्क़ है । यह "शार्ङ्गधर" का योग है ।

बला तैल ।

(१) खिरटीकी जड़ ८ सेर लेकर ३२ सेर पानीमें औटाओ ; जब चौथाई यानी ८ सेर पानी रह जाय, मल-छान कर काढ़ेको रखदो ।

(२) दशमूलकी दसों दवाएँ कुल मिला कर ८ सेर ले लो और ३२ सेर जलमें डाल कर काढ़ा कर लो । जब चौथाई यानी ८ सेर पानी रह जाय, मल-छान कर काढ़ा रख दो ।

(३) कुलथी आठ सेर लेकर, ३२ सेर पानीमें औटाओ ; जब ८ सेर पानी रह जाय, मल-छान कर रख दो ।

(४) जौ आठ सेर लेकर, ३२ सेर पानीमें औटाओ ; जब ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख दो ।

(५) बेरकी गरी ८ सेर लेकर, ३२ सेर जलमें औटाओ ; जब ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख दो।

(६) काले तिलोंका तेल एक सेर और गायका दूध आठ सेर तयार करके रखलो।

(७) काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, शतावर, देवदारु, मँजीठ, कूट, पत्थरका फूल, तगर, अगर, सेंधानोन, वच, पुनर्नवा, जटामासी, सफेद सारिवा, काला सारिवा, पत्रज, सौंफ, असगन्ध और छोटी इलायची—इन २४ दवाओंको दस-दस माशे लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर, लुगदी या कल्क बना लो।

(८) कड़ाहीमें तेल, लुगदी और खिरटीका काढ़ा डालकर मन्दाग्निसे तेल पकाओ। इसके बाद एक-एक करके सब काढ़े और दूध पचा दो। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छानलो। यही "बला तेल" है। यह नुसखा भी "शार्ङ्गधर"का है।

यह तेल गर्भ चाहनेवाली स्त्रियों, धातुक्षीण पुरुषों, राह चलनेसे थके हुए मनुष्यों और प्रसूता स्त्रियोंके लिए अमृत है। पर शास्त्रमें लिखा है—बलातैलमिति ख्यातं सर्ववातामयापहम् अर्थात् "बला तैल" समस्त वातरोगोंको नाश करता है और वास्तवमें नाश करता भी है, इसीसे हमने यहाँ लिखा है। यह तेल राजा महाराजाओं और अमीरोंके घरोंमें रहने योग्य है।

लशुनादि तैल।

लहसन एक पाव, लालमिर्च १ पाव और अफीम ६ तोले—इन तीनोंको जौ-कुटसा करके २ सेर काली तिलीके तेलमें मिला दो। फिर इन सबको किसी लोहेके लोटे या और बर्तनमें भरकर, ऊपरसे ढकना बन्द कर दो और सन्धियोपर कपड़मिट्टी कर दो। इसके

बाद चूल्हेके नीचे गढ़ा खोदकर, उसमें इस बर्तनको रखकर, मिट्टीसे दबा दो। उस चूल्हेपर रोटियाँ होती रहें। पन्द्रह दिन बाद बर्तन को चूल्हेसे निकाल लो और तेलको छानकर बोतलोंमें भर दो। इस तेलकी लगातार मालिश करनेसे समस्त वातरोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। कई बारका परीक्षित है।

रसोन्कल्क।

लहसुनको पानीके साथ सिलपर पीसकर, उसमें सेंधानोन और तिलीका तेल मिलाकर खानेसे समस्त वात रोग और विषम ज्वर नाश हो जाते हैं। "भावप्रकाश"मे लिखा है :—

युक्तः कल्को रसोनस्य तिल तैलेन सिन्धुना।
वातरोगान्हरेत्सर्वां ज्वरांश्च विषमानपि॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिखा है। "वैद्यजीवन"में भी लिखा है :—

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि,
परन्तु कान्ते! न रसोनकल्कात्।
तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो,
महासमीरे विषमज्वरेऽपि।

हे कान्ते! और दवाएँ क्या मानने योग्य नहीं है? लेकिन महान् वात-व्याधि और विषमज्वरमें तेल मिले हुए लहसनके कल्कसे बढ़कर और नुसखा नहीं है।

दूसरा रसोनकल्क।

दूध, तेल, घी, मांस, भात अथवा साँठी चाँवलोंका भात—इनके साथ, सात दिन तक, क्रमशः, हर दिन, दो-दो तोले लहसनका कल्क यानी सिलपर पिसा हुआ लहसन बढ़ा-चढ़ाकर खानेसे वात-सम्बन्धी रोग, विषमज्वर, शूल, गोला, मन्दाग्नि, तिल्लीका रोग,

हाथका दर्द, पसलियोंकी पीड़ा, सिरकी पीड़ा और वीर्यके समस्त दोष दूर हो जाते हैं।

नोट—दूध, तेल, घी या मांस प्रभृतिमें से किसी एकके साथ लहसनका कल्क खाना चाहिये।

रसोनाष्टक।

लहसनकी पकी हुई गाँठको छीलकर साफ कर लो। फिर उस गाँठको चीर कर उसके बीचके अङ्कुर निकाल दो। फिर उसकी बदबू नाश करनेके लिये, उन कलियोंको रातके समय "दही"में गाड़ दो। सवेरे ही उन्हें पानीसे धोकर सुखा लो। इस लहसनमें बदबू न रहेगी।

कालानोन, अजवायन, भुनी हींग, सैंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और सफेद ज़ीरा—इन आठोंको समान-समान लेकर कूट-पीस और छान लो।

साफ किये हुए लहसनको सिलपर पानीके साथ पीस लो। जितना पिसा हुआ लहसन हो, उसका पाँचवाँ भाग ऊपरका चूर्ण उसमें मिला दो और लहसनका चौथा भाग तिलीका तेल मिला दो। यह खाने योग्य "रसोनाष्टक" या लहसन तैयार हुआ।

इस तैयार किये हुए लहसनमें से एक तोला लेकर, रोगी सवेरे ही खावे और नित्य "अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पीवे। इसकी मात्रा दोषोंके विचारसे कमोबेश भी ली जा सकती है।

इस रसोनाष्टकके सेवन करनेसे सर्वाङ्गवात, एकाङ्गवात, अर्दित—लकवा, अपतन्त्रक, अपस्मार—मृगी, उन्माद, उरुस्तम्भ, गृध्रसी, छाती, पीठ और कमरका दर्द; पसलियोका शूल, कुखका दर्द और कृमि या कीड़े नाश हो जाते हैं।

पथ्य—रसोनाष्टक खानेवालेको शराब, मांस और खट्टे रस खाने-पीने चाहिएँ।

अपथ्य—मिहनत, धूप, क्रोध, बहुत पानी और मैथुनको त्याग देना चाहिये।

निषेध—अतिसार, प्रमेह, पाण्डुरोग, अरुचि, मूर्च्छा, बवासीर, रक्तपित्त, शोष, भयङ्कर क्षयरोग और वमनवाले रोगी और गर्भवती स्त्रियाँ लहसनको न खावें। उनको लहसन खानेसे हानि होगी।

सावधानी—रसोनाष्टक सेवन कर चुकने बाद, "विरेचन या जुलाब" लेना चाहिये। अगर कोई जुलाब न लेगा, तो उसके कोढ़ और पाण्डु आदि रोग पैदा हो जायँगे।
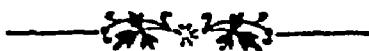
बालक—बालक इसे पसन्द नहीं करते ; पर उन्हें भी रसोनाष्टक उनकी मांके दूधमें मिलाकर देनेसे उनके सारे वात रोग नाश हो जाते हैं।

लशुन योग।

लहसनको सिल पर महीन पीस कर और "घी" मिलाकर खानेसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं।

लशुनादि चूर्ण।

चार तोले लहसनको महीन पीसकर उसमें सेंधानोन, संचरनोन, सफेद जीरा, त्रिकुटा और भुनी हींग चार-चार माशे मिला कर खाने और ऊपरसे "अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पीनेसे सर्व्वाङ्ग वात, अर्दित-वात—लकवा, कमर और पीठका दर्द—ये सब वात रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा १ माशेकी है। परीक्षित है।

इन्द्रबीजादि चूर्ण।

इन्द्रजौ, चीता और सोंठ—इनको समान-समान लेकर और पीस-

छान कर चूर्ण वना लो। इस चूर्णके खानेसे वातविकार नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

रास्नादि चूर्ण ।

रास्ना, पोहकरमूल, सहंजना, वेलगिरी, चीता, सेंधानोन, गोखरू और छोटी पीपर—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस छानलो। इस चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। इसको "घी"में मिला कर खानेसे वात रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

रास्नादि क्वाथ ।

रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ गिलोय और अरण्डकी जड़—इनको छै-छै माशे लेकर और काढ़ा वना कर पीनेसे समधातुगत वात, आम-मिली वात और सारे शरीरकी वात आराम हो जाती है। परीक्षित है।

महारास्नादि क्वाथ ।

रास्ना २ तोले, धमासा, खिरेंटीकी जड़, अरण्डकी जड़, देवदारु, कचूर, वच, अड़ूसेका पञ्चाग, सोंठ, हरडकी छाल, चव्य, नागरमोथा, साँठकी जड़, गिलोय, विधायरा, सौंफ, गोखरू, असगन्ध, अतीस, अमलताशका गूदा, शतावर, छोटी पीपर, पियावाँसा, पुराना धनिया, छोटी कटेरी और वड़ी कटेरी, इन पच्चीसोंको एक-एक तोले लेकर जौ-कुट करके रखलो। इसकी वारह खूराक वना लो। हरेक खूराकको अठगुने जलमें औटाओ, जव आठवाँ भाग पानी रह जाय, मल कर छान लो। यही "महारास्नादि काढ़ा" है।

इस काढ़ेमें सोंठका चूर्ण अथवा पीपरका चूर्ण अथवा योगराज गूगल अथवा अरण्डीका तेल मिलाकर पीनेसे सब शरीरका काँपना, कुबड़ापन, पक्षाघात, अपबाहुक, गृध्रसी, आमवात, श्लीपद या हाथी-पाँव—फीलपांव, अपतानक वायु, अण्डवृद्धि—फोते बढ़ना, अफारा, जाँघकी पीड़ा, घोंटूकी पीडा, शुक्र-दोष—वीर्य-दोष, लिङ्ग-रोग, वन्ध्यायोनि और गर्भाशयके रोग आदि वात रोग आराम होते हैं। यह "महारास्नादि क्वाथ" ब्रह्माजीने गर्भ टरनेके लिये बनाया था। सुपरीक्षित है।

वातगजकेशरी अर्क।

रास्ना २ सेर, अजवायन १ सेर, धनिया १ पाव, नागरमोथा १ छटाँक, अडूसा १ छटाँक, देवदारु १ छटाँक, पियाबाँसा १ छटाँक, सौंफ १ छटाँक, शतावर १ छटाँक, कचूर, १ छटाँक, बड़ा गोखरू १ छटाँक, बादाम १ छटाँक, काला जीरा १ छटाँक, बहेड़ा १ छटाँक, असगन्ध १ छटाँक, अमलतासका गूदा १ छटाँक, छोटा गोखरू १ छटाँक, बड़ी हरड़ १ छटाँक, सोंठ १ छटाँक. विधारा १ छटाँक, धनिया १ छटाँक, वच १ छटाँक, कटेली १ छटाँक, अतीस १ छटाँक, जवासा १ छटाँक, अरण्डकी जड १ छटाँक, चव्य १ छटाँक, पीपर १ छटाँक, साँठी १ छटाँक और खिरेंटी १ छटाँक इन सबको अधकचरा करके, दस सेर पानीमें, मिट्टीकी बड़ी हाँड़ी या नाँदमें भिगो दो। २४ घण्टे भीगनेके बाद, भभकेसे अर्क खींचलो।

इसकी मात्रा १ से २॥ तोले तक है। बलवान ज़ियादा भी पी सकता है। इसके दिनमें तीन बार पीनेसे बदनका दर्द, सूजन और समस्त वात रोग आननफानन आराम हो जाते हैं। आमवात,—

गठिया, लकवा—अर्दित, पक्षाघात—फालिज, श्लीपद—हाथीपाँव, वीर्य-दोष, रजोदोष आदि पर रामवाण है। गठिया वगैरः रोग तो ३।४ दिनमें ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

विषगर्भ तैल।

काली तिलीका तेल ४ सेर, भूसीका जल ४ सेर, कनेरका स्वरस ४ सेर, धतूरेका रस ४ सेर, संभालूका रस ४ सेर, आकका रस ४ सेर और जटामांसीका रस ४ सेर—इन सबको मिलाकर मन्दी-मन्दी आगसे औटाओ। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उसमे धतूरा, कूट, फूलप्रियंगू, वच्छनाभ-विष. स्वर्णक्षीरी—पीले दूधकी कटेरी, रास्ना, सफेद कनेर की जड़, मालकाँगनी, कालीमिर्च, गूगल, मँजीठ, जटामासी, वच, चीता, सरसों, देवदारू, दारुहल्दी, अरण्डकी जड और त्रिफला—इन उन्नीस दवाओंको बराबर-बराबर चार-चार तोले लेकर महीन पीस लो और डाल दो। यही "विषगर्भ तैल" है। "वैद्यरत्न"मे लिखा है—विषगर्भमेतत् तैलं समस्त पवनामय नाशनं स्यात्; अर्थात् यह विषगर्भ तेल सारे वात रोगोंको नाश कर देता है।

वातारि तैल।

बकायन, आक, संभालू, धतूरा, अरण्ड, सेंहुड़, भाँगरा और कनेर—इन आठोंके पत्तोंका आध-आध पाव रस निकाल लो। फिर पाव भर तिलीके तेल और इन पत्तोंके रसको मिलाकर, आग पर चढ़ा दो और औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इसकी मालिशसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

सेंधवादि तैल।

सेंधानोन ८ तोले, सोंठ २० तोले, चीतेकी छाल ८ तोले, पीपरा-मूल ८ तोले, भिलावोंकी मींगी ८० तोले और अम्लाल काँजी १९५ तोले तथा अरण्डीका तेल ३२० तोले—कूटनेकी दवाओंको कूट कर और सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब काँजी जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "सेंधवादि तेल" है। "भाव प्रकाश"में लिखा है, इस तेलकी मालिश करनेसे गृध्रसी, उरुस्तम्भ, मुँहकी पीड़ा और समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। यद्यपि "भाव प्रकाश"में यह तेल "उरुस्तम्भ" रोगमें लिखा है, पर यह आराम करता है समस्त वात रोगोंको, इसीसे हमने इसे यहाँ लिखा है। परीक्षित है।

नोट—"रसराज महार्णवके लेखक महाशय लिखते हैं, जो रोग नारायण तेलसे आराम नहीं होते, वे इस तेलसे आराम होते हैं; पर उनके नुसखेकी तोलमें फर्क है। वे लिखते हैं, सेंधानोन ८ तोले, सोंठ, ५ तोले, पीपरामूल २ तोले, चीता २ तोले, भिलावेकी मींगी ४०० तोले, कांजी २५६ तोले और तेल ६४ तोले। भगवान् जाने लिखनेकी भूल है या उन्होंने इसी तरह परीक्षा की है।

हिमसागर तैल।

(१) काले तिलोंका तेल ४ सेर, शतावरका रस ४ सेर, विदारीकन्द या पाताल कुम्हड़ेका रस ४ सेर, आमलोंका रस ४ सेर, सेमरकी जड़का रस ४ सेर, बड़े गोखरूका रस ४ सेर, नारियलका पानी ४ सेर, केलेके पेड़का रस ४ सेर और गायका दूध १६ सेर,—इन नौ चीज़ोंको पहले तैयार करलो।

(२) कल्कके लिये लाल चन्दन, सफेद चन्दन, तगर, कूट मजीठ, अगर, जटामासी, छरीला, मुलेठी, देवदारु, नख, बड़ी हरड़,

वरियारा, लोध्र, मोथा, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जावित्री, कचूर, पोईका फल और हल्दी—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पानीके साथ, सिल पर महीन पीस लो। यही कल्क या लुगदी है।

(३) कड़ाहीमें तेल और कल्क या लुगदीको डालकर आग पर चढा दो। आग मन्दी रखो। ऊपरसे थोड़ा-थोड़ा शतावरका रस डालते रहो। जब शतावरका रस चीत जाय, विदारीकन्दका रस डालो। इसी तरह आमले आदिके रस और दूधको पचादो। जब सब रस और दूध जल जायें और तेल मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। यही "हिमसागर तैल" है।

इस तेलकी मालिशसे उष्णवात या गरमवादीके समस्त रोग, हाथ-पैरके तलवे जलना, शरीरसे चिनगियाँसी उठना, शरीरका सूखना, लकवा और गठिया आदि वात रोग नाश होते हैं। अनेक बारका परीक्षित है। इससे वात रोग तो नाश होते ही हैं, पर उष्णवात पर तो यह खूब ही काम देता है। हमने जिस तरह आज़माया है, उसी तरह लिख दिया है। परीक्षित है।

नोट—और वैद्योंकी और हमारी कल्ककी दवाओंमें कुछ फ़र्क है। अन्य वैद्य लाल चन्दन, तगर, कूट, मॅजीठ, सरल-काष्ट, अगर, जटामासी, मुरामासी, छारछरीला, मुलेठी, देवदारु, नखी, बड़ी हरड़, खटासो, पिंड़िशाक, कुन्दुरखोटी, तालुका, शतावर, लोध, मोथा, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जावित्री, सौंफ, कचूर, सफेद चन्दन, गॅठेला और कचूर—इनको कल्कके लिये लेते हैं।

पुष्पराज प्रसारिणी तल।
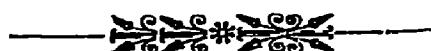
(१) ४०० तोले गन्ध प्रसारिणीको ६४ सेर जलमे औटाओ; जब १६ सेर पानी रह जाय, मल कर छान लो।

(२) तिलका तेल ४ सेर, गायका दूध १६ सेर, पदुमका रस ४ सेर और शतावरका रस ४ सेर तैयार रखो।

(३) सौंफ, देवदारु, रास्ना, गजपीपर, गन्धप्रसारिणीकी जड़, जटामासी और भिलावेका जड़,—इन सातोंको आठ-आठ तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीसलो।

(४) काढ़े, तेल, दूध, रस और लुगदीको एकमें मिलाकर, मन्दाग्निसे औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। इस तेलसे वात रोग नाश हो जाते हैं।

वृहत् छागलाद्यघृत।

(१) खुर और सींग आदि से रहित बिना ब्याई बकरीका मांस १०० तोले लेकर, १६ सेर पानीमें पकाओ। चौथाई पानी रहने पर उतार कर, एक बर्तनमें छान लो।

(२) दशमूलकी दसों दवाएं १०० तोले लेकर १६ सेर पानीमें औटाओ। चौथाई पानी रहने पर मल-छानकर, उसी पहले बर्तनमें डालदो।

(३) वरियाराकी जड १०० तोले लेकर,१६ सेर पानामें औटाओ; जब चौथाई पानी—४ सेर—रह जाय, उतारकर छानलो और उसी पहले बर्तनमें डालदो।

(४) असगन्ध १०० तोले लेकर, १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी रहजाय, मल-छानकर, उसी पहले बर्तनमें डालदो।

(५) शतावर १ सेर लेकर, १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रहजाय, मल-छानकर उसी पहले बर्तनमें डाल दो।

(६) गायका दूध चार सेर लेकर उसी पहले बासनमें डाल दो।

(७) कल्क—जीवन्ती, मुलेठी, मुनक्का, काकोली, क्षीरकाकोली, नीलकमल, मोथा, लालचन्दन, रास्ना, मुगवन, मसवन, श्यामलता,

अनन्तमूल, मेदा, महामेदा, ऋषभक, जीवक, कूट, कचूर, दारुहल्दी, प्रियंगू, त्रिफला, तगर, तालीसपत्र, पद्माख, छोटी इलायची, तेजपात, शतावर, नागकेशर, जातीपुष्प, धनिया, मँजीठ, अनार, देवदारु, सम्हालूके बीज, एलुआ, वायविडङ्ग और सफेद ज़ीरा इन सबको एक-एक तोले लेकर कूट-पीसलो। फिर, सिल पर रखकर पानीके साथ पीस लो और कल्क या लुगदी बनालो।

(८) अब एक बर्त्तनमें पड़े हुए काढ़ों, दूध, लुगदी और चार सेर घी को ताम्बेकी क़लईदार कड़ाहीमें डालकर औटाओ, जब रसादिक जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो और शीतल होने पर उसमें आध सेर "मिश्री" पीसकर मिला दो।

नोट—अगर कहीं जीवक ऋषभक आदि न मिले, तो कल्ककी दवाएँ इस तरह लेना:—जीवन्ती, महुआ, दाख, दूधी, कमल, नागरमोथा, लाल चन्दन, रास्ना, सरिवन, पिठवन, बरियारी, अनन्तमूल, शतावर, असगन्ध, विदारीकन्द, कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, प्रियगू, त्रिफला, तगर, तालीसपत्र, पद्माख, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, चमेलीके फूल, धनिया, मँजीठ, अनार, देवदारु, एलुआ, रेणुका, वायविडङ्ग, सफेद जीरा और केशर। इस कल्कसे हमने छागलाद्य घृत अधिक बार बनाया है और खूब चमत्कार देखा है। परीक्षित है।

सेवन विधि—इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २॥ तोलेतक है। इसके सेवन करनेसे समस्त वात रोग, अर्दित वात—लकवा, कानका दर्द, बहरापन, गूंगापन, मिनमिनापन, जडता, गद्गदवात, पागलपन, खंजवात, कुबड़ापन, गृध्रसीवात, अपतानक और अपतन्त्र रोग आराम होते हैं। बहुता क्या—इस घीसे वे रोगी भी आराम हो गये, जिन्हें वैद्योंने असाध्य कह कर त्याग दिया था। इससे सब तरहके कोढ़, समस्त प्रमेह, सब उदर रोग, औरतोंके सारे रोग, वातरक्त, गर्भस्राव, बाँझपन और यक्ष्मा आराम हो गये। अनुपान विशेषके साथ, यह पित्तके समस्त रोग और कफके समस्त रोगोंको भी नाश करता है।

दूसरा छागलाद्य घृत।

(१) बकरीका मांस २ सेर लेकर ३२ सेर जलमें पकाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय छानलो।

(२) दशमूल २ सेर लेकर, ३२ सेर जलमें औटाओ। जब ८ सेर पानी रह जाय छानलो।

(३) शतावर १ सेर लेकर, १६ सेर जलमें पकाओ; जब ४ सेर पानी रह जाय छानलो।

(४) दूध ४ सेर और घी ४ सेर रखलो।
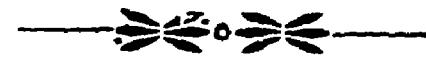
(५) जीवनीय गण और मुलेठी १ सेर लेकर सिल पर पानीके साथ पीसलो। यही कल्क है।

(६) अब घी, कल्क, और काढ़ोंको मिला कर घी पकालो। जब घी मात्र रह जाय, छानलो।

यह नुसख़ा वंगसेनका है। इसके सेवन करनेसे भी समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं।

अश्वगन्धाद्य घृत।

आध सेर असगन्धको सिल पर पानीके साथ पीस लो। यह कल्क है।

दो सेर असगन्धको ३२ सेर पानीमें पकाओ, जब आठ सेर काढ़ा रह जाय छानलो।

अब दो सेर घृत, आठ सेर दूध, आठ सेर काढ़े और कल्कको मिलाकर घी पकालो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। इस "अश्वगन्धादि घृत"के सेवन करनेसे वात रोग नाश होते, वीर्य बढ़ता और मांस भी बढ़ता है।

महानारायण तेल।

(१) बेलगिरी, असगन्ध, कटाई, गोखरू, सोनापाठा, खिरैटी, फरहद, कटेरी, पुनर्नवा, कंघी, अरणी, प्रसारणी और पाढलकी जड़—इन तेरहों दवाओंको एक-एक सेर लेकर जौकुट करलो और २ मन २२॥ सेर पानीमें डालकर औटाओ। जब पकते-पकते चौथाई यानी २५॥ सेर पानी रहजाय, मल-छानकर रखदो।

(२) काले तिलोंका तेल ३ सेर १६ तोले, गाय या बकरीका दूध ३ सेर १६ तोले और शतावरका रस ३ सेर १६ तोले,—तैयार रखो।

(३) रास्ना, असगन्ध, देवदारू, कूट, शालपर्णी, पृश्नपर्णी, मूद्गपर्णी, माषपर्णी, अगर, नागकेशर, सैंधानोन, बालछड़, हल्दी, दारूहल्दी, भूरिछरीला, चन्दन, पोहकरमूल, इलायची, मुलेठी, तगर, नागरमोथा, तेजपात, भांगरा, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, सुगन्धवाला, वच, कचूर, सफेद पुनर्नवा, थुनेर और चोरक—इन ३७ दवाओंको आठ-आठ तोले लेकर पीस-कूट कर, सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो।

(४) अब बेलगिरी आदिके काढ़े, तेल, दूध, शतावर का रस और लुगदीको कड़ाहीमें डाल मन्दाग्निसे तेल पकालो। जब तेल मात्र रहजाय, उतारकर छान लो। यही "महानारायण तेल" है।

कितने ही वैद्य सुगन्धिके लिए और कितने ही पसीना और दुर्गन्ध दूर करनेको इस तेलमे, तैयार होने पर, कपूर, केशर और कस्तूरी मिला देते हैं।

इस तेलसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। इस तेलकी वंगसेनमें बहुत तारीफ लिखी है!

कल्याण लेह।

हल्दी, वच, कूट, पीपर, सोंठ, सफेद जीरा, अजमोद और मुलेठी,—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छानलो। इस चूर्णको घी मिलाकर चाटनेसे वात रोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा ६ माशेकी है।

रसराज रस।

रससिन्दूर ४ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले और सोनाभस्म ६ माशे—इन तीनोंको मिलाकर "ग्वारपाठे"के रसमें ३ घण्टेतक खरल करो।

फिर इसीमें लोहाभस्म ३ माशे, वंगभस्म ३ माशे, चाँदीकी भस्म ३ माशे, असगन्धका पिसा-छना चूर्ण ३ माशे, लौंगका चूर्ण ३ माशे, जावित्रीका चूर्ण ३ माशे और क्षीरकाकोली ३ माशे मिला दो। फिर "काकमाचीका रस" दे-दे कर ६ घन्टे घोटो। घुट जाने पर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "दूध या चीनीके शर्बतके साथ" खानेसे वातरोग नाश हो जाते हैं।

चिन्तामणि रस।

रस सिन्दूर १ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले, लोहाभस्म ६ माशे और सोनाभस्य ६ माशे—इनको "घीग्वारके रस"मे ६ घन्टे तक खरल करके, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बनालो। इस रसके सेवन करनेसे वात रोग तो नाश होते ही हैं; उनके सिवाय प्रमेह, प्रदर और सूतिका आदि रोग भी नाश हो जाते हैं। अनुपान, अवस्था विचार कर, वातनाशक देना चाहिये।

चतुर्मुख रस।

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक, दोनों ६।६ माशे लेकर, खरलमें डाल कर, ३ घन्टे तक घोटो। जब चमक न रहे, उसीमें अभ्रक भस्म ६ माशे, सोनेकी भस्म १ माशे और लोहाभस्म ६ माशे—मिलाकर, "घीग्वारके रस"के साथ खूब घोटो। फिर गोलासा बनाकर, उस पर अरण्डीके पत्ते लपेट कर, डोरोंसे कसदो और धानके ढेरमें दबादो। ३ दिन बाद निकाल लो और काममें लाओ। इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। अनुपान शहद और त्रिफलेका भिगोया पानी। इससे वात रोग नष्ट हो जाते हैं।

योगेन्द्र रस।

रस सिन्दूर ६ माशे, सोना भस्म ३ माशे, लोहाभस्म ३ माशे, बंगभस्म ३ माशे, अभ्रक भस्म ३ माशे और अबींध मोती ३ माशे—इनको मिलाकर, "घीग्वारके रस"में खरल करो। फिर एक गोलासा बनाकर, ऊपरसे अरण्डीके पत्ते लपेट दो और डोरे लपेट दो। इसे ३ दिन तक धानके ढेरमें दबा रखो, चौथे दिन निकाल लो। मात्रा २ रत्ती। अनुपान त्रिफलाका पानी और मिश्री। इससे वात रोग नाश हो जाते हैं।

वात गजांकुश बटी।

शुद्ध गन्धक, शुद्ध कुचला, भुना सुहागा, भुनी हींग, हरड़के छिलके, बहेड़ेके छिलके, गुठली निकाले आमले, कालानोन, सेंधानोन, सोंठ, पीपरामूल, चीतेकी छाल और पुराना गुड़—इन तेरह चीज़ोंको एक-एक तोले लेकर खूब महीन पीसो। फिर खरलमें

डाल कर, ऊपरसे "नीबूका रस" दे-दे कर घोटो। घुट जाने पर, डेढ़-डेढ़ माशेकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। यही "वातगजाङ्कुश वटी" हैं। इन गोलियोंके सेवन करनेसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। इनके सेवन करनेसे दस्त खुलासा होता, भूख बढ़ती और नसोंमें बल आता है। सवेरे ही नित्य एक गोली खानी चाहिये। परीक्षित है।

अश्वगन्धादि मोदक।

असगन्ध, पीपल, सोंठ, वायविड़ङ्ग, अकरकरा, अजवायन, काला-ज़ीरा, पीपलामूल, चव्य और चीता,—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छानलो। फिर इस चूर्णसे दूना "पुराना गुड" लेकर, इसमें मिला दो और डेढ़-डेढ़ तोलेके लड्डू बनालो। इनमेंसे एक-एक लड्डू सवेरेही खानेसे वात रोग नाश हो जाते हैं।

वत्सनाभादि गुटिका।

शुद्ध सींगिया विष १ तोले, भुना सुहागा ३ तोले, कालीमिर्च ४ तोले और सोंठ ४ तोले—इन सबको महीन पीस-छान कर, खरल मे डालो और अदरखका रस डाल-डाल कर घोटो। घुट जाने पर, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखालो। शाम-सवेरे एक-एक गोली खानेसे अनेक तरहके वात-कफके रोग मिटते और भूख तेज़ होती है। परीक्षित है।

धत्तूर तैल।

काले धत्तूरेके पत्तोंका रस १ सेर तैयार करो। सफेद चिरमिटी, वत्सनाभ विष और काले धत्तरेके बीज—तीनोंको मिलाकर कुल १

छटाँक लो या प्रत्येकको बीस-बीस माशे लो। फिर सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो।

लुगदी, धतूरेका रस और पाव भर तिलीका तेल—तीनोंको कड़ाहीमें रख, मन्दाग्निसे तेल पकाओ। तेल मात्र रहने पर, उतार कर छानलो। इस तेलके चुपड़ने या लगाने मात्रसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

निर्गुण्डी-चूर्ण।

संभालू, भाँगरा, धुली भाँग और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और चूर्णके बराबर "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। इस चूर्णको पानीके साथ फाँकनेसे वात रोग नाश हो जाते हैं।

लघुमृगाङ्क।

तुलसीके स्वरसमें घी और काली मिर्च मिलानेसे "लघुमृगाङ्क" बनता है। यह अनेक बलवान वातोंको इस तरह नाश करता है, जिस तरह विष्णु भगवान् अपने भक्तोंके दुश्मनोंको नाश करते हैं।

वातगजकेसरी बटी।

एक मिट्टीकी बड़ी हाँडी लाओ। उसकी पेंदीमें आध सेर "धतूरेके फल" रखो। धतूरेके फलोंके ऊपर आध सेर "सोंठ" धरो। सोंठके ऊपर आध सेर "अजवायन" रखो। अजवायन पर, फिर आध सेर "धतूरेके फल" रखो और हाँडीमें जितनी जगह ख़ाली हो, उतनीमें गलेतक पानी भर दो। हाँडीका मुँह ढकनीसे बन्द कर दो। फिर हाँडीको चूल्हेपर चढ़ाकर, मन्दी-मन्दी आगसे, ६ घण्टों तक, पकाओ।

६ घण्टे आग लग चुकनेपर, हाँडीमेंसे केवल "सोंठ"को निकाल लो; बाक़ी चीज़ोंको फेंक दो। सोंठको छायामें सुखाकर पीस-छान लो। फिर उस चूर्णको खरलमे डालकर, ऊपरसे "सहँजनेका रस" दे-देकर घोटो और रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंको छाया में सुखा लो।

इनमेंसे एक गोली रोज़ सवेरे ही खानेसे समस्त वात रोग इस तरह भागते हैं, जिस तरह सूरजके उदय होनेसे अन्धकार भागता है। अनमोल दवा है। इसके चमत्कार पर हमें अनेक बार मुग्ध होना पड़ा। हर गृहस्थ और वैद्यको यह अपने पास रखनी चाहिये। समय पर यह अँगरेज़ी तेज़-से-तेज दवाओंसे बढ़ जाती है। ख़ूब परीक्षित है।

वात रोगान्तक चूर्ण।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, कालानोन और सफेद जीरा एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, गरम जल पीनेसे सब तरहके वात रोग आराम हो जाते हैं और ख़ूबी यह है कि दस्त साफ होता है। परीक्षित है।

षडधरण योग।

चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, अतीस और हरड़—इनको तीन-तीन माशे लेकर पीस-छान लो। इसमेसे ३ माशे चूर्ण नित्य सवेरे ही, गरम पानीके साथ, छे दिन, खानेसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—आमाशयगत वायु-चिकित्सामें यह और इसकी दूसरी विधि लिखी है।

वातारि रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, त्रिफला ३ तोले, चीतेकी जड़ ४ तोले और रेंडीके तेलमें खरल किया हुआ शुद्ध गूगल ५ तोले—इन सबको मिलाकर "रेंडीके तेल"में खरल करो। फिर इसकी तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। बलाबल-अनुसार एक या दो अथवा चार गोली खिलाकर, ऊपरसे "सोंठ और अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पिलाओ। साथ ही, "अरण्डीका तेल" पीठ पर मालिश करके सेक दो। कदाचित दस्त हों, तो चिकना और गरम अन्न खाओ। इसके नियम-पूर्वक खाने और मैथुन त्याग देनेसे एक महीनेमे सारे वात रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

हरताल रस।

शुद्ध हरताल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, शुद्ध ईंगुर, शुद्ध सुहागा, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर, इन सबको बराबर-बराबर ले लो। पहले पारे और गन्धकको खरल करो, जब निश्चन्द्र कजली हो जाय, उसमे बाक़ी दवाएँ मिला दो और "अदरखका रस" दे-देकर लगातार सात दिन तक घोटो। इसके बाद मूँग-समान गोलियाँ बना-बनाकर छायामें सुखा लो। सवेरे ही एक-एक गोली नित्य खानेसे सब तरहके वात रोग, प्रसूत रोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी और शीत-ज्वर नाश हो जाते हैं।

वात नाशक तैल।

मदारकी जड़, सफेद कनेरकी जड़, बच्छनागकी जड़, अडूसेकी जड, केशुकी जड़, भटकटैयाकी जड, करिहारीकी जड़, लहसनकी जड़

और जमालगोटेकी जड़,—इन सबको एक-एक छटाँक लेकर कुचल लो और सवा सेर सरसोंके तेलमें पकाओ ; जब दवाएँ जलकर तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और शीशियोंमें भर दो। इस तेलके मलनेसे वातसे होनेवाले सभी दर्द मिट जाते हैं। जहाँ दर्द हो वहाँ मला करो और रोज़ अधौटा दूध पीया करो। पथ्य पदार्थ सेवन करो। परीक्षित है।

नोट—इस तेलके लगाने और इस पर कोई रसायन या उत्तम भस्म खानेसे नामर्द भी मर्द हो जाता है। यह तेल ख़राब नसोंको ठीक करके नामर्दको भी मर्द बना सकता है, पर लिङ्गकी सुपारी या अग्र भाग पर इसे न लगाना चाहिये।

विषमुष्टि गुटिका।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध बच्छनाग विष, अजवायन, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, सेंधानोन, चीतेकी जड़, सफेद ज़ीरा, कालानोन, वायविडंग और त्रिकुटा—ये सब एक-एक तोले लो और "शुद्ध कुचलेका चूर्ण" इन सबके बराबर—१३ तोले—लो। इन सबको पीस-कूटकर खरलमें डालो और "नीबूका रस" दे-देकर खूब घोटो। घुट जानेपर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंको, यथोचित अनुपानके साथ, सेवन करनेसे नाना प्रकारके वातरोग, आमविकार, जीर्णज्वर, मन्दाग्नि और अजीर्ण आदि रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

वातनाशन रस।

रस सिन्दूर, सोना-भस्म, हीरा-भस्म, ताम्बाभस्म, लोहाभस्म, सोनामाखीकी भस्म, हरतालकी भस्म, शुद्ध सुरमा, शुद्ध नीलाथोथा और शुद्ध अफीम—इन दशोंको बराबर-बराबर—छे छे माशे ले लो और सेंधानोन, संचर नोन, विड़नोन, खारी नोन तथा समन्दर नोन—पाँचो नोन मिलाकर कुल ६ माशे ले लो।

फिर पन्द्रहों चीज़ोंको मिलाकर खरलमें डालो और "थूहरका दूध" डाल-डालकर, १२ घण्टे तक, खरल करो। फिर इसका गोलासा बनाकर एक सराईमें रख दो और ऊपरसे दूसरी सराई ढककर, कपड़मिट्टी कर दो। जब सूख जाय, तब "भूधर यन्त्र"में रखकर आग लगाओ। जब आग ठण्डी हो जाय, दवाको निकाल लो। इसकी मात्रा "शार्ङ्ग-धर"में १ माशेकी लिखी है, पर आजकलके कमज़ोर आदमियोंको २ रत्तीकी मात्रा ठीक होगी। बलवानके लिये ३।४ "रत्ती" काफी होगी।

"अदरखके स्वरस"में, एक मात्रा मिलाकर रोगीको चटा दो और ऊपरसे तत्काल—दवा चाटते ही—"पोहकरमूलके काढ़ेमें पीपरका चूर्ण" मिलाकर पिला दो। इस "वातनाशन रस"से समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। इस रसके उत्तम होनेमें शक नहीं।

वातान्तक वटी।

शुद्ध सिंगरफ मकसूदाबादी, भुना सुहागा, सोंठ, सेंधानोन, बाय-विडङ्ग, हल्दी, काली मिर्च, भुनी हींग, चीतेकी छाल और शुद्ध जमालगोटा,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर कपड़े-में छानलो। फिर खरल में डालकर, पानीके साथ घोटो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। सवेरे-शाम, एक-एक या दो-दो गोली शीतल पानीके साथ खानेसे समस्त वातरोग और कफ-खाँसी नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

वातारि तैल।

कुचला २ तोले, अफीम ६ माशे, काले धतूरेके पत्तोंका रस ४ तोले, लहसनका रस ४ तोले, चिरायतेका रस ४ तोले, नीबूका रस ४ तोले, तमाखूके पत्तोंका रस ४ तोले, दालचीनी ४ तोले, अजवायन

४ तोले और मेथी ४ तोले—इन सबको एक कड़ाहीमें डाल दो। ऊपरसे कड़वा तेल १ सेर, मीठा तेल १ सेर और अरण्डीका तेल आध सेर डालदो। फिर मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवाएँ जल जायँ, तेलको उतारकर छान लो। इस तेलके मलनेसे सब तरहके वात रोग और सब तरहके दर्द निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

रसोनपाक।

लहसन लाकर उसके छिलके दूर कर लो। जब कलियाँ रह जायँ, उनको चौंसठ तोले तोल लो और रातके समय छाछ या माठे में भिगो दो। सवेरे ही छाछमेंसे लहसनको निकाल कर, सिलपर पीस लो। इस पिसे हुए लहसनको गायके पाँच सेर दूधमें मिलाकर पका लो। जब खोआ हो जाय, उसमें १६ तोले "घी" मिला दो और खूब भूँजकर नीचे उतार लो।

शतावर, रास्ना, अडूसा, गिलोय, कचूर, सोंठ, देवदारु, अजमोद, चीता, सौंफ, सोंठी, हरड़, बहेडा, आमला, पीपर और वायविडंग—इन १६ दवाओंको एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो और "घी"में भूँज लो।

अब १६ तोले शहद, घीमें भुने हुए लहसन-मिले खोए को तथा घीमें भुनी हुई शतावर वगैरः दवाओंको एक में मिला दो और साफ वर्तनमें रख दो। यही "रसोनपाक" है।

इसको बलाबल अनुसार खानेसे अर्द्धांग, हनुग्रह, आक्षेपक वात, भग्नवात, कमरकी वात, उरुस्तम्भ, हृद्रोग, सर्व्वांग वात, सन्धिवात और गठिया आदि ८० तरहके वात रोग नाश हो जाते हैं। हमने इसे गठिया और कमरके दर्द पर आज़माया है। इसमें यह खूबी है कि, इससे वातव्याधियाँ नष्ट होकर शरीर पुष्ट और बलवान हो जाता है। परीक्षित है।

ऐरण्डपाक।

अरण्डीके बीज लाकर छिलके दूर कर दो और ६४ तोले तोल लो। फिर उनको अठगुने यानी ६ सेर साढ़े छै छटाँक भैंसके दूधमें डालकर पकाओ। जब खोया हो जाय, उतार कर बीजोंको पीस लो और खोयेमें मिला दो। इस खोयेको साढ़े छै छटाँक "घी"में भूँज लो; जब लाल हो जाय उतार लो।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, पीपरामूल, चीता, चव्य, सौंफ, कचूर, बेलगिरी, अजमोद, सफेद ज़ीरा, स्याह-ज़ीरा, दारुहल्दी, हल्दी, असगन्ध, खिरैंटी, पाढ़, अरणी, बायविडंग, पोहकरमूल, बड़ा गोखरू, कूट, त्रिफला; देवदारु, बिधारा, ककरोलीके बीज, अरलू और शतावरी—इन सबको एक-एक तोले लेकर पीस लो और कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्णको थोड़ेसे "घी"में भूँज लो।

अब एक सेर साढ़े दस छटाँक सफेद चीनीकी चाशनी बनाओ। उसीमें उस खोए और घीमें भुनी दवाओंको डालकर मिला दो और चलाकर उतार लो। इसके दो-दो तोलेके लड्डू बना लो। इन लड्डुओंको बलाबल-अनुसार खानेसे समस्त वात रोग, पेट फूलना, उरुस्तम्भ, आमवात, गोला, वस्तिवात और पेटके रोग आदि नाश हो जाते हैं। इस पाकसे उपरोक्त रोग इस तरह भागते हैं; जिस तरह सिंहसे वनके पशु भागते हैं। इतना ही नहीं, इससे शरीर भी पुष्ट होता है।

लहसन पाक।

लहसन लाकर, उसके छिलके दूर कर दो और तीन पाव तोल लो। फिर अढ़ाई सेर दूधमें उसे पकाओ। जब खोआ हो जाय, उतार कर तीन छटाँक घी में भूनलो।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, पीपरामूल, चव्य, चीता, वायविडङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, उत्तम विधायरा, पोहकरमूल, अजमोद, लौंग, देवदारु, सोंठी, शतावर, कचूर, बड़ा गोखरू, नीमकी छाल, रास्ना, सौंफ, असगन्ध और कौंचके बीज—इन २७ दवाओंको एक-एक तोले लेकर, पीस-कूट कर कपड़-छन करलो। फिर इस चूर्णको थोड़े घीमें ज़रा देर भूनलो।

अब डेढ़ सेर बूरेकी चाशनी बनाओ। उसमें "घीमें भुना हुआ लहसन" और ऊपरकी "घी"में भुनी दवाएं मिलादो और चलाओ। जब लड्डू-लायक़ चाशनी हो जाय, उतार कर आधी-आधी छटाँकके लड्डू बनालो।

इन लड्डुओंके सवेरे-शाम खानेसे सब तरहके वात रोग, मृगी, शूल, गोला, छाती फटना, कृमिरोग, तिल्ली बढ़ना, दस्तक़ब्ज रहना, पेट फूलना, हिचकी, श्वास, खाँसी, फोते बढ़ना, अपतन्त्र, धनुर्वात, अन्तरायाम, अपतानक, पक्षाघात, आक्षेपकवात, शिरग्रह, विश्वाची, गृध्रसी, खल्ली वात, पंगुवात, सन्धिवात और बहरापन आदि रोग नाश हो जाते हैं।

मेथीपाक।

मेथी दाने ३२ तोले और सोंठ ३२ तोले,—इन दोनोंको कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्णको सवा तीन सेर दूधमें पकाओ। जब खोआ हो जाय, उतार लो।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, पीपरामूल, चीता, अजवायन, धनिया, सफेद जीरा, कलौंजी, सौंफ, जायफल, कचूर, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर और नागरमोथा—इन १६ दवाओंको चार-चार तोले लेकर, पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो और "सात छटाँक घी"में ज़रा भूँजलो।

अब दो सेर बूरेकी चाशनी करो। जब चाशनी होने लगे, उसमें मेथी आदिका खोआ और घीमें भुना हुआ दवाओंका चूर्ण डालकर मिलाओ। जब जमने लायक़ चाशनी हो जाय, उतार कर आधी-आधी छटाँकके लड्डू बना लो।

इस पाकके खानेसे सब तरहके वात रोग, आमवात, विषमज्वर, पाण्डु रोग, मृगी, उन्माद, प्रमेह, रक्तपित्त, अम्लपित्त, सिरदर्द, नाकके रोग और आँखोंके रोग और सूतिका रोग फौरन ही आराम होते हैं। साथ ही शरीरमें बलवीर्य बढ़ता और पुष्टि होती है। परीक्षित है।

असगन्ध पाक।

३२ तोले नागौरी असगन्ध लेकर गायके छै सेर दूधमें पकाओ, जब खोआ हो जाय, उसे एक सेर घीमें भूनलो।

दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर एक-एक तोले लो। जायफल, केशर, वंशलोचन, मोचरस, जटामासी, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, जावित्री, पीपर, पीपरामूल, लौंग, कंकोल, मेढ़ासिंगी, अखरोट, भिलावेके बीज, सिंहाड़ा और बड़ा गोखरू—इनको तीन-तीन माशे लो। इन इक्कीसों दवाओंको पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो। फिर इस छने हुए चूर्णमें रससिन्दूर, अभ्रक भस्म, शीशाभस्म, वंगभस्म और लोहाभस्म तीन-तीन माशे मिला दो। इन सबको थोड़ेसे "घी"में ज़रा झलकार लो यानी ज़रा भूनलो।

अब पाँच सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ। जब चाशनी होने लगे, उसमें भुना हुआ असगन्ध-खोआ और ऊपरकी घीमें झलकारी हुई दवाएं मिला दो और उतार कर दो-दो तोलेके लड्डू बनालो।

इन लड्डुओंके बलाबल अनुसार खानेसे सब तरहके वात रोग, पित्त रोग, प्रमेह, जीर्णज्वर, शोष और गोला आदि रोग नाश हो जाते एवं बल-वीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

नोट—हमने पक्षाघात और लकवा आदि रोग ख़ास ख़ास दवाओंसे आराम करके रोगियोंको ये पाक खिलाये। इनसे उनका बाक़ी रहा हुआ रोग नष्ट हो गया और बल-वीर्य एवं पुरुषार्थ बढ़ गया। पहले वातनाशक सामान्य क्रियाओं और ख़ास दवाओंसे रोगको नाश करके, ये पाक खिलाने चाहियें। नस्य और तेल आदिको छोड़ कर केवल इन्हीं पाकों पर निर्भर रहना ठीक नहीं।

समस्त वातरोगान्तक तेल।

सोंठ १० तोले, उत्तम खुरनी १० तोले, छोटी पीपर ५ तोले, भाँग ५ तोले, हींग १ तोले, अफीम १ तोले, भिलावे १ तोले, कुचला १ तोले, और कालीमिर्च १ तोले—इन सबको पीस कर, एक सेर तिलीके तेल और एक सेर सरसोंके तेलमें मिलादो। फिर आग पर रख कर मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवाएँ जल जायँ, तेलको उतार कर छानलो।

इस तेलके मलनेसे वातज दर्द, कमरका दर्द, पीठका दर्द, छातीका दर्द, पसलीका दर्द, हाथोंका दर्द, पैरोंका दर्द, जाँघोंका दर्द, घुटनेका दर्द, कुबड़ापन, लँगड़ापन, सूजन और शीतांग सन्निपात आदि रोग नाश हो जाते हैं। शीत-सन्निपातमें इसकी मालिश करनेसे सन्निपात ज्वर नष्ट हो जाता है। यह तेल वात और कफके रोगों पर रामबाण है।

यह तेल बहुत तेज़ है, अतः रोगानुसार कम या ज़ियादा मलना चाहिये। हल्के रोगोंमें थोड़ा ही और भारी रोगोंमें ज़ियादा मलना चाहिये। इसके लगानेसे पहले, रोगीके बलाबल और सर्द-गर्म मौसमका विचार अवश्य कर लेना चाहिये। जैसे,—मौसम गरमी का हो, रोगी कमजोर हो, मिजाज गरम हो, तो इसे बहुत थोड़ासा चुपड़ दो; आराम हो जायगा। अगर मौसम जाड़ेका हो, रोगी बलवान हो, रोग भी तेज हो और रोगीकी प्रकृति वात या कफकी हो, तो समझ-बूझ कर खूब मालिश करो। परीक्षित है।

शुंठ्यादि चूर्ण।

सोंठ, सौंफ, असगन्ध, शतावर, विधारा, सफेद ज़ीरा, हाऊबेर, बावची, अजमोद, रास्ना, अजवायन और अरण्डीकी जड़—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण, गरम दूध या गरम पानी अथवा घी, माठा या गोमूत्रके साथ, सवेरे ही, खानेसे समस्त वात रोग नाश हो जाते हैं। यह चूर्ण देर करता है, पर आराम अवश्य करता है। परीक्षित है।

अर्दित-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अर्दित रोगकी चिकित्सा करनेवालेको पहले नीचे लिखे कम करने चाहिय :—

(१) स्नेह पान। (३) वातनाशक भोजन।
(२) नस्य। (४) उपानह स्वेद।
(५) वस्तिकर्म।

(२) वस्तिकर्म और अभ्यंग करने, नस्य और स्वेद देने तथा ऊपरसे घीके साथ भोजन करनेसे अर्दित रोग नाश हो जाता है।

(३) अर्दित-चिकित्सामें वैद्यको समस्त वातनाशक औषधियाँ

काममें लानी चाहिएँ । कहा है :—वातव्याधि-विधानमिह कुर्या-द्विचक्षणः ।

(४) अगर अर्दित रोग वातज हो, तो दशमूलके काढ़ेके साथ पकाया हुआ अथवा पञ्चमूलके काढ़ेके साथ पकाया हुआ अथवा खिरेंटीके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "दूध" पिलाना चाहिये ।

(५) पित्तज अर्दित रोगमें शीतल स्नेह यानी घी वगैरः काममें लाने चाहियें । घीकी पिचकारी लगानी चाहिये और दूधका सिंचन और सेचन कराना चाहिये । पित्तनाशक दवाओंकी शिरो-विरेचन नस्य देनी चाहिये । नाकसे पुराना घी पिलाना चाहिये और तीक्ष्ण नस्य देनी चाहिये ।

(६) अर्दित रोगीका मुँह टेढ़ा हो गया हो, वह गूँगा हो गया हो और दाह या जलन होती हो, तो वातपित्त-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ।

(७) अर्दित रोगमे कफके क्षीण होने पर, पुष्टिकारक उपचार करना चाहिये ।

(८) अर्दित रोगमें सूजन होनेसे वमन करानी चाहिएँ ।

(९) अर्दित रोगमें दाह या जलन होती हो, तो सिरका खून निकलवाना चाहिये ।

(१०) अर्दित रोगमें मुँह खुला रह गया हो, तो दोनों अँगूठोंसे ठोड़ी और दोनों तर्जनी अँगुलियोंसे दाढ़ीको दबाकर, मुँहको बन्द कर दो । अगर ठोड़ी शिथिल या ढीली हो गई हो, तो कुछ मत करो, उसे ज्यों की त्यों रहने दो । दूसरे उपाय करो ।

(११) अर्दित रोगमें नास देना और सिर पर तेल सींचना लाभदायक है ।

अर्दित या लकवा नाशक नुसखे।

नोट—जिस रोगमें मनुष्यका दाहिना या बायाँ एक तरफका चेहरा टेढ़ा हो जाता है, उसे अर्दित रोग या लकवा कहते हैं। (देखो पृष्ठ २३८-२४५)।

(१) उड़द की धोयी हुई दालकी पिट्ठी नौनी घीके साथ खानेसे सब तरहके अर्दित रोग नाश हो जाते हैं।

(२) मांस-रसके साथ दूध पीनेसे सब तरहके अर्दित-लकवा नाश हो जाते हैं।

(३) दशमूलका काढ़ा पीनेसे सब तरहके अर्दित रोग नाश हो जाते हैं।

(४) एक तोले लहसन पानीके साथ सिलपर महीन पीसकर और दो तोले तिलीके तेलमें पकाकर खानेसे अर्दित या लकवा आराम हो जाता है। परीक्षित है। कहा है :—

रसोनकल्कं तिलतैलमिश्रं
खादेन्नरो यो ह्यर्दितरोगयुक्तः।
तस्यार्दितं नाशमुपैति शीघ्रं
वृन्दं घनानामिव वायुवेगात्॥

जो अर्दितवाला तिलके तेलमें लहसनका कल्क मिलाकर खाता है, उसका अर्दित रोग या लकवा तत्काल आराम हो जाता है; यानी उसी तरह भाग जाता है, जिस तरह हवाके जोरसे बादल भाग जाते हैं।

(५) एक तोले लहसनको महीन पीसकर और घीमें मिलाकर खानेसे सब तरहके वात रोग नाश हो जाते हैं। ख़ासकर, अर्दित रोगमें यह नुसख़ा अधिक लाभदायक है। परीक्षित है।

(६) लहसनको गायके दूधमें पकाकर खानेसे वातव्याधि नाश हो जाती हैं। यह अत्यन्त उत्तम नुसखा है। कहा है:—

॥ रसोनो गोपय सिद्धो वातव्याधि हरः पर ॥

(७) चार तोले छिला हुआ लहसन महीन पीसकर, उसमें सेंधानोन, संचरनोन, त्रिकुटा और हींग चार-चार माशे पीस-छान कर मिला लो। इसकी मात्रा १ माशेकी है। एक महीने तक, सवेरे ही, इस चूर्णके खाते रहनेसे अर्दित रोग—लकवा, सर्व्वाङ्ग-वात, कमर और पीठकी वात वगैरः रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) बरियारा, उड़द, कौंचकी जड़, गंधतृण और अरण्डकी जड़,—इनको कुल मिलाकर दो तोले ले लो। फिर काढ़ा बनाकर पीओ। इसीकी नास भी लो। इस काढ़ेके पीने और नास लेनेसे अर्दित, पक्षाघात और विश्वाची रोग नाश हो जाते हैं।

(९) सवेरे ही, अग्निबलानुसार, सञ्जीखारका काढ़ा पीनेसे छाती, कन्धा, कटिप्रान्तमें आया हुआ वायु, अर्दित रोग, अपतन्त्रक रोग, एकाङ्गवात, सर्व्वाङ्गवात, उरुस्तम्भ, गृध्रसी और कृमिदोष आदि रोग नाश हो जाते हैं। कितने ही वैद्य कहते हैं, कि इसे भोजनके बाद पीना चाहिये।

(१०) राई ६ माशे, अकरकरा ६ माशे और शहद ६ माशे— इन सबको मिलाकर, दिनमें चार बार, जीभपर मलनेसे अर्दित रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(११) जीवनीयगणकी औषधियोंको सिलपर पीसकर लुगदी या कल्क बनालो। अगर यह कल्क १ सेर हो, तो काले तिलोंका तेल ४ सेर और दशमूलका काढ़ा १६ सेर तैयार कर लो। फिर सब-को एकत्र कर मन्दाग्निसे पकालो। तेल मात्र रहनेपर, उतारकर छान लो। इसका नाम "दशमूलाद्य तेल" है। इस तेलकी नस्य देने,

मालिश करने, पिचकारी लगाने (अनुवासन वस्ति करने) और पीनेसे अर्दित या लकवा नष्ट हो जाता है।

नोट—काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि—इन आठोंको अष्टवर्ग कहते हैं। इनमें "जीवन्ती" और मिला देनेसे "जीवनीयगण" होता है।

(१२) तृण महापञ्चमूल १० तोले लेकर, २० तोले दूध और २० तोले पानीमें पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, उतारकर छानलो। फिर इस दूधमें ५ तोले तिलका तेल डालकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छानलो। इस तेलके पीने और नास वग़ैरः लेनेसे अर्दित रोग नाश हो जाता है। इसका नाम "क्षीर तैल" है।

(१३) मन्यास्तम्भ रोगमें लिखी हुई "माषादि नस्य" नाक द्वारा पीनेसे, कठिनसे आराम होनेवाला अर्दित रोग भी नाश हो जाता है।

प्रसारिणी तैलकी मालिश करने, पीने और नस्य वग़ैरः देनेसे अर्दित रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। बनानेकी विधि "हनुग्रह-चिकित्सा"में देखिये।

(१५) कौंचके बीज, खिरैटी, अरण्डकी जड, सोंठ और उड़द—इनको कुल २ तोले लेकर ३२ तोले पानीमें पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छान लो और २ माशे "सेंधानोन" मिलाकर नाकके छेदसे पीओ। इस कषायके नाक द्वारा पीनेसे पक्षाघात, शिरोरोग, हनुग्रह, अर्दित, सन्धि वात और दारुण मन्यास्तम्भ रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। इसका नाम "कपिकच्छ्वादि काथ" है।

(१६) त्रिफला, नीमकी छाल, अड़ूसा और परवल इनको कुल मिलाकर २ तोले ले लो और काढ़ा बनालो। फिर उसमे "शुद्ध गूगल" मिलाकर सवेरे ही पीओ। इस काढ़ेसे अर्दित वात या लकवा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) डाक्टरोंकी रायमें, चेहरेका जौनसा रुख मारा गया हो उस तरफके कानमें गरम भाफ पहुँचाना अर्दित या लकवेको अच्छा है।

(१८) सनके बीज सवा तीन तोले पीसकर और "शहदमें" मिलाकर खानेसे, २१ दिनमें, लकवा या अर्दित—रोग नाश हो जाता है।

(१९) बच आधपाव, सोंठ ४ तोले और स्याह ज़ीरा ४ तोले—लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३॥ माशेकी है। एक-एक मात्रा "शहदमें" मिलाकर चाटनेसे अर्दित या लकवा रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) बच ३ तोले, स्याह ज़ीरा १० माशे, कलौंजी १० माशे, पोदीना १० माशे और काली मिर्च १० माशे—पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्णको २० तोले "शहद"में मिला दो। इसमेंसे ६ से ८ माशे तक दवा चाटनेसे लकवा और पक्षाघात—अर्द्धाङ्ग रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) काले धतूरेके पत्ते २८ माशे, सफेद कनेरकी जड़की छाल २८ माशे और सफेद चिरमिटी २८ माशे—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो। इस लुगदीको पावभर तिलीके तेलमें, ३ घण्टे तक, खरल करो। फिर इसे कड़ाहीमें डालकर, आग पर चढ़ा दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवा जल जाय, उतारकर छान लो। इस तेलको मलनेसे लकवा, पक्षाघात, एकांगवात और अर्द्धाङ्गवात रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

पक्षाघात-चिकित्सा ।

पक्षाघात रोगमें वायु शरीरके आधे भागको यानी शरीरके एक ओरके भागको या कमरसे नीचेके भागको बेकाम कर देता है। आधा शरीर बेकाम हो जाता है और स्पर्श-ज्ञान भी कम हो जाता है। इस रोगको पक्षाघात, पक्षवध, अर्द्धाङ्ग या एकाङ्गघात कहते हैं।

हिकमत वाले इस रोगको "फालिज" कहते हैं। उन लोगोंकी रायमें यह रोग "कफके कोप"से होता है, पर वैद्योंकी रायमें "वायु"से होता है।

गर्भवती स्त्री, प्रसूता स्त्री, बालक, बड़े, क्षीण मनुष्य और जिसका खून निकल गया हो,—ऐसा लोगोंका और वेदना रहित पक्षाघात आराम नहीं होता।

पक्षाघात नाशक नुसखे ।

(१) उड़द, कौंचकी जड़, अरण्डकी जड़ और खिरैटीकी जड़—इन सबको कुल २ तोले लेकर, आध सेर या डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा बनाओ ; जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छानलो। पीछे ५ रत्ती हींग और ५ रत्ती सेंधानोन डाल कर रोगीको पिलाओ। इसका नाम "माषादि क्वाथ" है। इसके पीनेसे पक्षाघात रोग नाश हो जाता है।

(२) पीपरामूल, चीता, पीपर, सोंठ, रास्ना और सेंधानोन—इनको बराबर-बराबर कुल आध सेर ले लो और पानीके साथ सिल पर पीस कर लुगदी बनालो।

फिर कल्क—लुगदीसे चौगुना काली तिलीका तेल लो और

तेलसे चौगुना "उड़दोंका काढ़ा" बनालो। तेल, काढ़े और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ ; जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस "ग्रन्थिकादि तैल"की मालिश करनेसे पक्षाघात रोग नाश हो जाता है।

नोट—दो सेर उड़दोंको ३२ सेर पानीमें औटाओ, जब ८ सेर पानी रह जाय, उतार कर छानलो। इस नुसखेमें कल्क आध सेर, तेल २ सेर और उड़दका काढ़ा ८ सेर होना चाहिये।

माषादि तैल।

(३) उड़द, कौंचकी जड़, अतीस, अरण्डकी जड़, रास्ना, सोया और सेंधानोन—इनको बराबर-बराबर कुल आध सेर लेकर सिल पर पीसकर लुगदी बनालो।

फिर उड़द दो सेर लेकर, ३२ सेर पानीमें औटाओ ; जब चौथाई यानी आठ सेर पानी रह जाय, उतार कर छानलो। यही उड़दका काढ़ा है।

फिर दो सेर खिरेंटी लेकर ३२ सेर पानीमें औटाओ, जब ८ सेर पानी रह जाय, उतार कर छानलो। यह खिरेंटीका काढ़ा है।

अब दो सेर काली तिलीका तेल, ऊपरकी लुगदी, उड़द और खिरेंटीके काढ़े—सबको मिलाकर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस तेलकी मालिश करनेसे पक्षाघात रोग नाश हो जाता है। इसका नाम "माषादि तैल" है।

(४) शुद्ध कुचला और कालीमिर्च—दोनों बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर खरलमें डालकर, पानीके साथ खरल करो। खूब घुट जाने पर, आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बनालो और छायामें सुखालो। सवेरे ही एक-एक गोली बँगला पानमें रखकर कुछ दिनोंतक खानेसे पक्षाघात रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(५) शुद्ध कुचला २ तोले लेकर, जलते हुए कोयलों पर रख

दो। जब धूआँ उठना बन्द हो जाय, जले हुए कुचलेको निकाल लो और तोलो। जितना जला हुआ कुचला हो, उतनी ही काली-मिर्च उसमें मिला दो। फिर उन्हें खरलमें डाल कर पानीके साथ घोटो। घुट जाने पर उड़दके दानेके बराबर गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखालो। एक-एक गोली नित्य "पान"में रख कर खानेसे पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग, फालिज, अर्दित या लकवा, कमरका दर्द और दिमाग़की कमज़ोरी ये सब रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) वीरबहुट्टीका सिर और पैर काट कर, जो अङ्ग बाक़ी बचे, उसे पानमें धर कर लगातार कुछ दिन खानेसे पक्षाघात रोग निश्चय ही चला जाता है।

(७) भाँग और कालीमिर्च—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको बलाबल अनुसार खानेसे पक्षाघात रोग नाश हो जाता है। इस चूर्णकी मात्रा १ माशे २ माशेसे तक काफी होगी। इस दवाके खानेवालेको यही "भाँग और मिर्च" कड़वे तेलमें पीसकर शरीरमें घण्टे भर तक मालिश भी करानी चाहिये।

(८) सनके बीज १॥ तोले और शहद १ तोले मिलाकर, नित्य २१ दिन तक, खानेसे पक्षाघात नष्ट हो जाता है। हकीम जाली-नूसने इस नुसख़ेकी बेहद तारीफ की है। उनका कहना है, कि इस नुसख़ेमें हमने अजीब चमत्कार देखा है।

(९) सोंठ और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा चूर्ण नाकमें चढ़ानेसे पक्षाघात और अर्दित रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) सफेद कनेरकी जड़की छाल, सफेद चिरमिटी और काले धतूरेके पत्ते—इन तीनोंको दो-दो तोले लेकर महीन पीस लो। फिर आधापाव कड़वे तेलमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवाएं जल जायँ, उतार कर उसी तेलमें उन्हें खूब घोटो और किसी चीज़में रख दो। इस दवाको शरीरके सभी जोड़ों

पर मलो। कुछ दिनोंमें पक्षाघात नाश होकर कामदेव तेज़ हो जायगा।

नोट—नं० ४ से १० तकके नुसखे यूनानी हैं। इनके सेवन करने वालोंको चनेकी रोटी—कबूतर या तीतरके मांसके साथ खानी चाहिये। "गरम जल" कभी न पीना चाहिये और रोगीको सदा अँधेरी जगहमें रहना चाहिये।

(११) एक रत्ती "स्वच्छन्द भैरव रस" सेवन करनेसे कुछ दिनोंमें समस्त वायु रोग, ख़ासकर "पक्षाघात" रोग अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इस रसके बनानेकी तरकीब इसी भागकी "सामान्य चिकित्सा"में लिखी है।

(१२) अर्दित चिकित्साके नं० १५ में लिखा कपिकच्छ्वादि कषाय पक्षाघातको आराम कर देता है। (देखो पृष्ठ ३०५)।

(१३) कडवी तूम्बीके बीज और नीमके फल—इनका तेल तथा गोमायु कबूतर और मुर्ग़ेका पित्ता—इस सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे वात शान्त होती और पक्षाघात रोग आराम हो जाता है। इस लेपसे कमर, उरु, जाँघ और भुजाका दर्द एवं गृध्रसी रोग आराम हो जाते हैं।

(१४) पीपर, पीपलामूल, सोंठ, चव्य, चीता, पाठा, बायबिडंग, इन्द्रजौ, हींग, वच, विजया, मुलहटी, रेणुकाके बीज, गजपीपर, अतीस, राई, सफेद ज़ीरा, कालाज़ीरा और अजमोद—इन सबको एक-एक तोले लो और "त्रिफला" सबका दूना—अड़तीस तोले—लो। फिर सबको कूट-पीसकर छानलो। इस चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल और घी" लेकर इसीमें मिला दो और कूटकर एक-दिल कर लो। इस "द्वाविंशतिक गूगल"के खानेसे पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग या फालिज आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) पक्षाघात रोगमें—पारे और गन्धककी कज्जली सेवन कराना अत्युत्तम इलाज है। कहा है :—

पक्षाघाते चोत्तमा स्यात् कज्जलीरसगन्धजा।

(१६) उड़द, खिरैंटीकी जड़, शुकशिम्बी, पिठवन, रास्ना, असगन्ध और अरण्डकी जड़,—इनके काढ़ेमें ५।५ रत्ती हींग और सेंधानोन डालकर, गरमागर्म, पीनेसे पक्षाघात, मन्यास्तम्भ, कर्णनाद और अर्दित वात—लकवा आदि रोग, सात दिनमें, आराम हो जाते हैं।

(१७) कुचला आध पाव, आककी जड़ एक पाव, सफेद संखिया १ तोले, पीली सरसों आध पाव और धतूरेके पके हुए सूखे फल चार नग—इन सबको कुचलकर बोतलमें भर दो। फिर 'पाताल यन्त्र'की विधिसे तेल निकाल लो। जहाँ रोग हो, वहाँ इस तेलको लगाओ। इससे पक्षाघात आदि वातरोग नाश हो जाते हैं। अगर रोग तेज़ न हो, तो इस तेलमें तिगुना तिलीका तेल मिला कर लगाना। तेज़ रोगमें तेल मिलानेकी दरकार नहीं। परीक्षित है।

(१८) कुचलेके पत्ते, सोंठ और साँभरका सींग, इनको समान-समान लेकर पानीके साथ पीस लो और लेप करो। इस लेपसे आमवात—गठिया, पक्षाघात—फालिज—अर्द्धाङ्ग और चूहेका विष ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९) दशमूलका काढ़ा हींग और सेंधानोन मिलाकर पीनेसे पक्षाघात रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) कालीमिर्च १ छटाँक लेकर पीस-छान लो। फिर पावभर तेलमें मिलाकर कुछ देर पकाओ। इस तेलका पतला-पतला लेप करनेसे पक्षाघात, एकांगवात या अर्द्धाङ्ग वात रोग नाश हो जाते हैं। यह लेप उसी समय बनाकर और गरम करके लगाया जाता है। पक्षाघातकी रामबाण दवा है। परीक्षित है।

(२१) लौंगड़ीके पत्ते २० माशे और कालीमिर्च १ माशे—इन दोनोंको सिल पर पीसकर और पाव-भर पानीमें छान कर पीनेसे अर्द्धाङ्ग वात, गठिया और पेटका दर्द,—ये रोग नाश हो जाते हैं।

(२२) लौंग, कालीमिर्च, छोटी पीपर और अफीम प्रत्येक ६४

माशे लो । गायका घी ८ तोले, अकरकरा ३२ माशे, कुलींजन ३२ माशे और तिलसी पत्थर ३२ माशे—इन सबमेंसे घीको अलग रख दो । बाक़ी दवाओंको कूट-पीस कर छान लो । इस चूर्णके तीन भाग करो ; और तीसरा भाग घी लेकर गरम करो । फिर उसमें १ भाग दवा मिला दो । इस घीमें मिली हुई दवाको सिरके तालूके ऊपर मालिश करके, अरण्डके ४ या ५ पत्ते बाँध दो । साथ ही रजाई उढ़ाकर नीचे लिखी धूनी दो ।

गन्धक ३२ माशे, नौसादर ३२ माशे और मेथी ६४ माशे—इनको पीसकर, इसके भी तीन भाग कर लो । एक-एक भागकी धूनी दो । साथ ही "हरताल भस्म" सेवन कराओ । मतलब यह, कि ऊपर की दवाके तालू पर मलने, गन्धकादिकी धूनी देने और हरताल भस्म खिलानेसे पक्षाघात या फालिज रोग आराम हो जाता है ।

नोट—हरताल भस्मकी विधि चिकित्साचन्द्रोदय चौथे भागमें लिखी है ।

(२३) फालिज—पक्षाघात और गठिया रोगमें, जहाँ दर्द हो वहाँ, "विषगर्भ तेल" मलकर अरण्डीके पत्ते बाँधनेसे अवश्य लाभ होता है । बनानेकी विधि :—

लघुविषगर्भ तेल ।

धतूरेके बीज और पत्तोंका अर्क़, बकायनके पत्तोंका अर्क़, आकके पत्तोंका अर्क़, नीमके पत्तोंका अर्क़, असगन्धके पत्तोंका अर्क़, सहँजनेके पत्तोंका अर्क़, अरण्डके पत्तोंका अर्क़, मकोयके पत्तोंका अर्क़, सेहुँडके पत्तोंका अर्क़ और सींगिया विष प्रत्येक चीज २१ तोले ४ माशे तैयार करो । सोंठ, पीपर, कालीमिर्च, असगन्ध, रास्ना, कूट, नागरमोथा, देवदारु, वच, इन्द्रजौ, भारङ्गी, कायफल, पोहकरमूल, पाढर, रेणुका, तज, तेजपात, छोटी इलायची, लौंग और नागकेशर—प्रत्येक आठ-आठ माशे ले लो ।

तिलोंका तेल दो सेर लेकर कड़ाहीमें चढ़ाओ और सींगिया
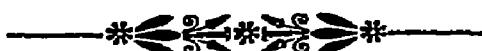
विष तककी सारी चीज़ोंको उसमें मिला दो। जब अर्क़ और विष जल जायँ, तेलको उतार कर छान लो

फिर सोंठ वग़ैरः दवाओंको पीसकर दो सेर पानीमें घोल दो और उस पानीको तेलमें मिलाकर, तेलको फिर आगपर चढ़ा दो। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "लघु विषगर्भतेल" है। यह तेल गरम बहुत है। वात-कफके रोगों पर या सरदी-बादीके रोगोंपर यह ख़ूब फायदा करता है।

लकवा और फालिज पर यूनानी नुसख़े।

फालिज होनेसे एक ओर का आधा शरीर लम्बाईमें ढीला हो जाता है। फालिज शब्दका अर्थ ही ढीला हो जाना है। लकवा होनेसे एक ओर का मुँह टेढ़ा हो जाता है। हिकमतके मतसे ये दोनों रोग "कफसे" होते हैं और इन दोनोंका इलाज भी क़रीब-क़रीब एक ही सा है।

चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

इन रोगोंके शुरूमें २।३ लंघन कराकर, जलकी जगह "माउल असल" पिलाओ। अगर रोग बहुत ही बलवान हो, तो सात दिन तक उपवास या लंघन कराओ।

शहद १ भाग और पानी २ भाग मिलाकर औटाओ; जब तीसरा भाग रह जाय, उतार कर छान लो। यही "माउलअसल" है।

नोट—अगर कहीं शहद न मिले, तो शहदकी जगह "गुड़" ले लो और इसी तरकीबसे औटा लो।

खानेके लिये, चिड़िया या कबूतरके मांसका शोरवा और चनेके पदार्थ दो। ये पथ्य हैं।

चौथे दिनसे, दोषोंके पकानेको, मुंजिज़ दो और नवें या चौदहवें दिन मुसिल या जुलाब दो। इस रोगमें दूसरी बार भी मल निकालना आवश्यक है। जुलाबके बाद, प्रकृतिको समान करनेवाली दवा दो।

रोगनाशक नुसखे।

(१) अकरकरा, कालीमिर्च और छोटी पीपर हरेक तीन-तीन माशे ; पीपरामूल ६ माशे, सोंठ १ तोले और शुद्ध मीठा विष १ तोले—इनको कूट-छान कर "गुड़ और घी"में मिलाकर, मूंग-समान गोलियाँ बनालो। मात्रा १ से २ गोली तक। इन गोलियोंको फालिज या लकवेमें, जुलाब देनेके बाद, प्रकृतिके समान करनेको देना चाहिये।

(२) मालकांगनी १ तोले, रतनजोत १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, मूसली स्याह ५ तोले, सोंठ ५ तोले ४ माशे और शुद्ध जमालगोटेकी गरी—सब्ज़ी दूरकी हुई—१ तोले ४ माशे—इन सबको पानीके साथ खरल करके, कालीमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। मात्रा २ गोलीकी। इनसे लकवे और फालिजमें अवश्य लाभ होता है।

(३) सोंठ और बच बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छानलो और शहदमें मिला कर, सवेरे-शाम, अखरोटके बराबर खाओ। इस दवाके समयमें, पानीके बजाय "माऊल असल" पीना ज़रूरी है। इससे लकवा या अर्दित रोग चला जाता है।

(४) सोंठ जौकुटकी हुई ४ माशे, लहसन ४ माशे, बकायनके पत्ते १ पाव और सम्हालूके पत्ते १ पाव—इन सबको दो सेर पानीमें औटाओ ; जब आधा पानी रह जाय उतार लो और रोगीको लिहाफ़ या रज़ाई उढ़ाकर, उसके भीतर इस दवाके पानीका बफ़ारा दो।

यह बफारा लकवा और फालिज, दोनोंके लिये अच्छा है। बफारा लेकर हवासे खूब बचो।

(५) पन्द्रह दाने कुचलेके लेकर, पन्द्रह दिन तक, पानीमें भिगो रखो। हर तीसरे दिन, ताज़ा पानी बदल दिया करो। जब पन्द्रह दिनमें वे नर्म हो जायँ, उनके छिलके उतार कर, उन्हें सुखालो। सूखने पर, उन्हें आगमें तब तक जलाओ, जब तक कि धूआँ न बन्द हो जाय। कुचलेके कायलोंको आगसे निकाल कर, उनके बराबर काली-मिर्च मिला दो और पानीके साथ पीस कर कालीमिर्चके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही नित्य एक गोली खानेसे लकवा, फालिज, भेजेके रोग और कमरकी पीड़ा,—ये सब नाश हो जाते हैं। यह सबसे उत्तम दवा है।

(६) क़लई यानी राँगा १० माशे, जस्ता १० माशे, शुद्ध पारा १० माशे, वेशसियाह १० माशे और कालीमिर्च २० माशे—ये सब लाकर रख लो।

पहले क़लई और जस्तको गलाओ। गल जाने पर, पारेमें मिला दो। जब गोलासा हो जाय, लगातार १८ घन्टे खरल करो। फिर उसमें थोड़ा-थोड़ा "वेशसियाह" डाल-डाल कर १८ घन्टे तक खरल करो। इसके बाद थोड़ी-थोड़ी कालीमिर्च डाल-डाल कर १८ घन्टे तक घोटो। जब ५४ घन्टे तक घुटाई होले, दवाको रख दो। सवेरे ही नित्य १ चाँवल भर दवा खाने और पक्षियोंका मांस भोजन करनेसे फालिज या अर्द्धाङ्ग—पक्षाघात आराम हो जाता है। हम नहीं, किन्तु ग्रन्थकार महाशय इसे अपना आज़माया हुआ नुसख़ा लिखते हैं।

(७) बच ६ तोले ८ माशे, सोंठ २ तोले ४ माशे और काला ज़ीरा २ तोले ४ माशे, इनको पीसकर ३३ तोले ४ माशे "शहद"में मिला लो। इसकी मात्रा ४ माशे की है। इसके हर दिन सवेरे ही खानेसे लकवा या अर्दित रोग शान्त हो जाता है।

नोट—इस दवाके सेवन-कालमें "माउल ग्रसल" जरूर पीना चाहिये। ग्रन्थ-कार इस नुसख़ेको भी आज़मूदा लिखता है।

(८) वच ३ तोले ४ माशे, कालीमिर्च १ तोले, पोदीना १ तोले, कालाज़ीरा १ तोले और कलौंजी १ तोले—सबको पीस-कूट कर पाव-भर "शहद"में मिला लो। मात्रा ८ माशे। फालिज और समस्त कफके रोगोंपर उत्तम दवा है।

(९) जुलाब लेनेके बाद, मिलावेकी मींगी शकरके साथ खानेसे फालिज, लकवा और मृगी रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) राई और अकरकरा समान-समान लेकर पीस-छान लो और "शहद"में मिला लो। इस दवाको जीभ पर मलनेसे फालिज या अर्द्धाङ्ग वात रोग नाश हो जाता है।

(११) एक वीरबहुट्टीके सिर और पाँव अलग करके, बाक़ी हिस्सा पानमें रखकर खानेसे फालिजके रोगीकी प्रकृति ठीक हो जाती है।

(१२) कालीमिर्च महीन पीस कर छान लो और तेलमें मिला-कर शरीर पर मलो। हकीम जालीनूस कहता है, कि फालिजकी इसके समान और दवा नहीं है।

(१३) सफेद कनेरकी जडकी छाल, सफेद चिरमिटीकी दाल और काले धतूरेके पत्ते—हरेक तीन-तीन तोले चार-चार माशे लेकर कूट-पीस लो और टिकिया बनाकर, पाव-भर मीठे तेलमें तलो। जब टिकिया जल जाय, उसे उसी तेलमें खूब घोटो; फिर छोड़ दो। जब तेल निनर जाय, उसमेंसे कुछ तेल फालिजके रोगीके जोड़ो पर मलो। इस तेलके लगानेसे लकवा और फालिज तो आराम होते ही हैं, पर यह तेल वीर्यमें भी ज़ोर करता है।

(१४) अरण्डके पत्ते, धतूरेके पत्ते, आकके पत्ते, सहदेईके पत्ते, सहंजनेके पत्ते, असगन्धके पत्ते और सम्हालूके पत्तोका आध-आध पाव 'स्वरस' निकाल लो। इस रसमें बराबरका—चौदह छटाँक—मीठा तेल मिला लो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, छान लो

और उसमें २।२ तोले "सोंठ और कडवा कूट" पीसकर मिला दो। इस तेलसे लकवे और फालिजमें अच्छा उपकार होता है।

(१५) तिनलीका तेल मलनेसे वदनके झोलों और पट्ठोंमें लाभ होता है।

(१६) वावूनेके हरे फूल २ तोले, मेथी १ तोले, तिलीका तेल ६ तोले और पानी १० तोले इनको औटाओ, जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यँही "वावूनेका तेल" है। यह भी दिमाग़ी सर्दीके रोगोंमें गुणकारी है।

नोट—वावूनेके फूल, मेथी और तेल तीनोंको वोतलमें भरकर ४० दिन धूपमें रखनेसे भी तेल तैयार हो जाता है। उसी तरह तितलीके हरे पत्ते और तिलीका तेल ४० दिन धूपमें रखकर तितलीका तेल वनाते हैं। इस तरह, एक ही दिनमें तेल वन जाता है।

(१७) वावची आध सेर और लाल अजवायन ४ तोले २ माशे —इनको पानीके साथ पीसकर टिकिया वना लो। धतूरेके पत्तों-फलो आदिके अढाई सेर स्वरस और आध सेर मीठे तेलमें टिकिया रख कर पकाओ। जव टिकिया जल जाय, तेलको छान लो। यह तेल फालिज, पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग या एकाङ्गवात पर वहुत ही अच्छा है।

(१८) सोंठ और लाहौरी नामक पीस-छानकर रखलो। इसकी नास लेनेसे फालिज और लकवेमें अवश्य लाभ होता है। उत्तम सुंघनी है।

(१९) चुकन्दरकी जड और इन्द्रायणकी जड एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ सिल पर पीसो। पीसते समय उसमें थोड़ीसी "कलौंजी और इसपन्द" भी मिलालो। जब दवाएं पिस जायं, पानीमें घोलकर कपड़ेमे छानलो। इसकी २।३ वूंदें नाकमें टपकानेसे लकवे और मृगीमें अवश्य उपकार होता है।

गृध्रसी-चिकित्सा ।

जब कूलेकी ग्रन्थि, कमर, पीठ, उरु, जांघ और पाँव ये रह जाते हैं तथा इनमें वेदना और सूई चुभानेकी सी पीड़ा होती है एवं कूलेकी ग्रन्थि आदि गिराएं बारम्बार काँपती हैं, तब कहते हैं कि, "गृध्रसी" रोग हुआ है।

खुलासा यह है कि जब कमर, चूतड़, गुदा, जांघ, पिंडली और पैरमें ऐसी पीड़ा हो जाती है, कि दर्दके मारे चला भी नहीं जाता और पसीने आते हैं, तब "गृध्रसी" रोग होना कहते हैं। इसे यूनानीमें "इरकुन्निसा" कहते हैं। कोई-कोई इसे रींगन वायु, टंकन वायु या कुलिंग वात भी कहते हैं।

गृध्रसी नाशक नुसखे।

(१) गृध्रसी रोगीको अच्छी तरह विरेचन और वमन देकर यानी दस्त और कय कराकर, जब देखो कि वह आम-रहित हो गया है और उसकी अग्नि भी दीप्त है, तब स्नेहकी पिचकारी लगाओ। जब तक वमनसे ऊपर की सफाई न हो ले, तब तक स्नेह यानी घी तेलकी पिचकारी लगाना राखमें हवन करनेके समान व्यर्थ है।

(२) एक महीने तक, नित्य, सवेरे ही, एक या दो तोले अरण्डीका साफ तेल आध पाव गोमूत्रमें मिलाकर १ मास तक पीनेसे गृध्रसी और उरुग्रह रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) त्रिफलेके काढ़ेमें अरण्डीका एक, दो या तीन तोले तेल मिलाकर पीनेसे गृध्रसी और उरुग्रह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) तेल, घी, अदरखका रस और बिजौरेका रस—इनको

बराबर-बराबर एकत्र मिलाकर, इनमें "चूकेका रस" या "गुड़" डालकर पीनेसे कमरका दर्द, उरुका दर्द, पीठका दर्द, त्रिकशूल, गोला, गृध्रसी और उदावर्त्त रोग नाश हो जाते हैं।

(५) अरण्डीके बीजोंको छीलकर छिलके दूर कर दो। फिर गिरीको दूधमें पीसकर पीओ। इससे कमरका दर्द और गृध्रसी रोग शान्त हो जाता है। यह गृध्रसीकी परमौषधि है। परीक्षित है।

नोट—अरण्डीकी ३ तोले मींगियोंको आध सेर गायके दूधमें पकाओ। जब खीरसी हो जाय, खाओ। इस खीरके खानेसे गृध्रसी रोग २१ दिनमें निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) दशमूल, खिरैंटी, रास्ना, गिलोय और सोंठ—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा पका लो। जब पक जाय, छान कर उसमें एक या दो तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीओ। इसके पीनेसे गृध्रसीका लँगड़ापन, खञ्ज और पङ्गु रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) अगर चूतड़ से पैर तक बेकाम हो जाय, यह अंग काम न दे, 'गृध्रसी वात' रोग हो जाय; तो आप आधसेर "कायफल" लाकर महीन पीस-छानलो। फिर "सरसोंका तेल १ सेर" लेकर एक लोहेकी कड़ाही में चढ़ा दो और नीचे खूबही मन्दी आग लगाओ। जब आग लगने लगे, उसमें थोड़ा-थोड़ा पिसाहुआ "कायफल" डालते रहो और चलाते रहो, इस तरह चार घण्टे में सारा "कायफल" डालदो। इसके बाद तेलको उतारकर कपड़े में छानलो। छानस या फोकको फैंको मत, अलग रखदो।

जब तेल लगवाना हो, एक अँगीठीमें कोयले जला कर पास रखलो। तेल लगानेवाला हाथोंको गरम कर-करके, पीड़ित स्थान पर, दो घण्टे तक तेल मले। तेलकी मालिश खूब हो। दो घण्टे बाद, उस छानस या कीटको तवे पर रखकर गरम कर लो और एक कपड़ेमें रखकर, पोटली सी बनालो। उसी पोटली से पीड़ित स्थान को सेको। इसके बाद, सुहाते-सुहाते गरम कीट को उस जगह

फैलाकर कपड़े से बाँध दो। इस तरह नित्य तेल लगाने और इसी कीटसे सेक करने और बाँधनेसे रोग शान्त हो जायगा। यह उपाय स्वर्गवासी श्यामसुन्दर वैद्याचार्यका परीक्षा किया हुआ है। उन्हें सैकड़ों दवाओंसे लाभ न हुआ। अन्तमें इससे लाभ हुआ।

नोट—अगर तेल पकते समय, उसमें ६ माशे "अफीम" और मिला दी जाय, तो तेल और भी अच्छा बनेगा।

(८) अरण्डीकी जड़, बेलगिरी, बड़ी कटेरी और छोटी कटेरी—इनको कुल दो तोले लेकर, ३२ तोले जलमें औटाओ। जब ४ तोले पानी रह जाय, उसे छान लो और उसमें 'कालानोन' मिलाकर पीलो। इसके पीनेसे वंक्षण-शूल, बस्तिशूल और बहुत पुराना गृध्रसी रोग भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) आधपाव गोमूत्र और २ तोले अरण्डीका तेल एकत्र मिला लो। छोटी पीपरोंका चूर्ण १ माशे खाकर, ऊपरसे गोमूत्र और तेलको पीलो। इस नुसख़ेसे बहुत पुरानी और वात-कफसे पैदा हुई गृध्रसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) अड़ूसा १ तोले, जमालगोटेकी जड़ १ तोले और अमलताशका गूदा १ तोले—इन तीनोंको आध सेर जलमें औटाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, उसे नीचे उतार कर छानलो। फिर उसमें एक तोले "अरण्डीका तेल" मिला कर पीओ। इस नुसख़ेके १५ दिन पीनेसे गृध्रसी रोग शान्त होकर खूब जल्दी-जल्दी चलनेकी सामर्थ्य हो जाती है। परीक्षित है।

(११) बकायनकी भीतरी छाल पानीके साथ सिल पर पीसकर और पानीमें छान कर पीनेसे असाध्य गृध्रसी रोग भी आराम हो जाता है।

(१२) महानीमका १ माशे गोंद पानीके साथ पीनेसे घोर गृध्रसी रोग भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—गोंद न मिले तो महानीमकी जड़का ही काढ़ा पीना चाहिये।

(१२) निर्गुण्डी या सम्हालूके २ तोले पत्तोंको लेकर डेढ़ पाव जलमें खूब मन्दी आग पर औटाओ ; जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर पीलो। इस काढ़ेके ११ दिन पीनेसे असाध्य गृध्रसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—निर्गुण्डीके काढ़ेमें "पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे और भी जल्दी लाभ होता है।

"शार्ङ्गधर"में "भुनी हींग और पोहकरमूलका चूर्ण" मिलानेको लिखा है। इनके मिलानेसे बेशक और भी जल्दी फायदा होता है।

रास्ना गुग्गुल।

(१३) चार तोले रास्ना और पाँच तोले शुद्ध गूगल—इन दोनोंको मिला कर, "घी" दे देकर कूटो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे गृध्रसी रोग जाता रहता है। इस दवाका नाम "रास्ना गुग्गुल" है।

(१४) लहसन १ तोले और शुद्ध गूगल ५ तोले,—दोनोंको घी दे-देकर खूब पीसो और जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंमेंसे एक गोली नित्य खानेसे गृध्रसी रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

रास्ना सप्तक काढ़ा।

(१५) रास्ना, गिलोय, अमलताशका गूदा, देवदारु, गोखरू, अरण्डकी जड़ और पुनर्नवा—इन सातोंको दो तोले लेकर, आध सेर जलमें औटाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, मल कर छान लो। फिर इस काढ़ेमें "सोंठका चूर्ण" डाल कर पीनेसे जंघागत वायु, उरुगत वायु, पीठकी वायु, त्रिकशूल और पसलीका दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं। इसका नाम "रास्ना सप्तक क्वाथ" है।

(१६) केशर १ माशे, सकमूनिया ३॥ माशे, बड़ी हरड़के छिलके १०॥ माशे, बादामकी गरी १। माशे, मीठा सुरंजान ३ तोले, सनाय-

मकी २ तोले और मिश्री ८॥ तोले—इनको पीस-कूट और छान कर रख लो। इसमेंसे २२॥ माशे चूर्ण खाकर, ऊपरसे शीतल जल पीनेसे गृध्रसी या इरकुन्निसा रोग नाश हो जाता है। यह यूनानी नुसख़ा है।

पथ्यादि गूगल।

(१७) बड़ी हरड़ १००, बहेड़े २००, आमले ४०० और शुद्ध गूगल ६४ तोले—इन चारोंको १०२४ तोले या १२ सेर, १३ छटाँक पानीमें एक रात-भर भिगो रखो। सवेरे ही इसको पकाओ; जब आधा पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको लोहेकी कड़ाहीमें डालकर फिर पकाओ। जब खूब गाढ़ा हो जाय, इसमें वायविडङ्ग, शुद्ध जमालगोटा, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, निशोथ, पीपर, सोंठ और कालीमिर्च—इनका दो-दो तोले चूर्ण डाल दो और मिलाकर एक-एक तोलेकी गोलियाँ बना लो। यही "पथ्यादि गूगल" है।

इस गूगलको सेवन करनेवाला अपनी इच्छानुसार विहार कर सकता है। इसके सेवन करने वालेको शीतल जल पीना और शीतल पदार्थ खाने चाहियें।

इसके सेवन करनेसे गृध्रसी, नयी खंजता, अत्यन्त उग्र तिल्ली, गोला, पाण्डु रोग, मन्दाग्नि, खुजली, वमन, वातरक्त और विशेष करके गृध्रसी वात नष्ट होती है। इसके सेवन करनेवाला बलमें हाथीके समान और वेगमें घोड़ेके समान हो जाता है। उसकी उम्र बढ़ती, नेत्र-ज्योति तेज़ होती और शरीर पुष्ट होता है। यह गूगल विषको नष्ट करता, घावको भरता और सम्पूर्ण रोगोंको आराम करता है। मात्रा १ तोलेकी है।

(१८) "प्रसारिणी" तेलके लगाने और नस्य वग़ैरः लेनेसे गृध्रसी रोग नाश हो जाता है। बनानेकी विधि "सामान्य चिकित्सा और हनुग्रह चिकित्सा"में देखिये।

(१६) "त्रयोदशांग गूगल"के सेवन करनेसे भी गृध्रसी वात नष्ट हो जाती है।

(२०) मेढ़ासिंगी, गोखरू, अरण्डकी जड़, वेलकी जड़, वाय-विडङ्ग, ऊँटकटारा और कटेरीकी जड़—इनके काढ़ेमें "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीनेसे भयङ्कर वात-गृध्रसी रोग शान्त हो जाता है।

नोट—वातजन्य गृध्रसीमें शरीर भारी और टेढ़ा हो जाता है, जाँघ, उरु, जानु और सन्धियोंमें फड़कन होती है।

(२१) काले तिलोंका तेल १ सेर, गोखरूका काढ़ा एक सेर, गायका दूध चार सेर, सोंठका चूर्ण १ पाव और पुराना गुड़ एक सेर,—इन सबको कड़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके पीने, नस्य लेने और इसीकी गुदा में पिचकारी देनेसे गृध्रसी, कम्पवाय, कमरकी जकड़न, पीठके रोग और सूजन—ये सब नाश हो जाते हैं। इस तेलके पीनेसे बाँझके भी पुत्र होता है। परीक्षित है।

(२२) नीमकी जडका काढ़ा पीने और उसीका लेप करनेसे "गृध्रसी रोग" चला जाता है।

(२३) दशमूलके काढ़ेमें भुनी हींग और पोहकरमूलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे "गृध्रसी" आराम हो जाती है।

(२४) अजमोद, वायविडंग, सेंधानोन, देवदारू, चीता, पीपरा-मूल, सौंफ, पीपर और काली मिर्च—इनको एक-एक तोले लो। हरड़ ५ तोले, विधायरा १० तोले और सोंठ १ तोले लो। इन सबको कूट-पीस-छान कर चूर्ण करलो। फिर इसमें "गुड़" मिला दो। इस को गरम जलके साथ लेनेसे गृध्रसी, आमवात, गठिया, कमरका दर्द, पीठका दर्द, तूनी, प्रतितूनी, विश्वाची, गुदा और जाँघकी पीड़ा आदि नाश हो जाते हैं।

डाक्तरी मतसे
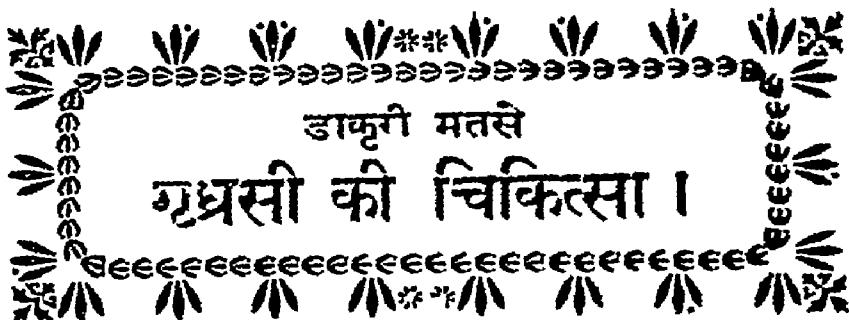
गृध्रसी की चिकित्सा।
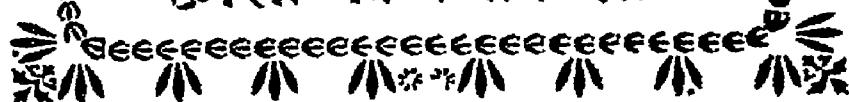
लक्षण।

गृध्रसी रोगके लक्षण हम लिख आये हैं। यह रोग कूले (hip) से पैरके टखने तक होता है। इस रोगको अंगरेज़ीमें 'सियाटीका' (Sciatica) कहते हैं। इस शब्दका अर्थ है--Rheumatism in the hip कूलेकी वात अथवा Neuralgia of the Sciatic nerve अर्थात् कूले या सुरोनकी नसका दर्द। यह रोग भी स्नायु-सम्बन्धी है; क्योंकि यह कूले या जाँघकी स्नायुओंके भीतर या उनके आस-पास होता है। इसीसे डाक्टरोंने इसे न्यूरेलजिया या स्नायुगत वात रोग माना है।

इलाज।

लगानेकी दवा—इस रोगमें शरीरके ऊपर—बाहरकी तरफ, बाईकी कोई माकूल मरहम या मुनासिब तिला इस्तेमाल करना चाहिये। सियाटीकामें नीचे लिखा लेप अच्छा काम देता है :—

अल्काहल (Alcohal)	२ औन्स।
स्पिरिट आव टरपैन्टाइन (Spirits of Turpentine)	२ ,,
क्लोरोफाम (Chloroform)	१ ,,
गम कैम्फर (Gum Camphor)	आधा ,,

इस दवाको मिलाकर, पीड़ित स्थानपर दिनमें दो या तीन दफा

लगाना चाहिये। कमरके दर्द (Lumbago) में भी यह लेप अच्छा काम देता है। इस लेपसे अवश्य लाभ होता है। अगर लाभ न हो, तो स्नायुगत वात, गठिया वात या न्यूरेलजियामें काम आने वाला कोई दूसरा लेप लगाना चाहिये।

खानेकी दवा—सबसे पहले रोगीको कोई जड़ीबूटीका कारगर जुलाब लेना चाहिये। जैसे—पोडोफिलन (Podophyllin) या कोई और दस्तावर गोलियाँ। जब दस्तावर दवा अपना काम कर चुके—दस्त हो जायं, तब कोई प्रकृति बदलने वाली वातनाशक दवा देनी चाहिये। जैसे—Tincture of Guaiac

बफारा—पीड़ित स्थान या सारे शरीरमें बफारा देना सर्वोत्तम उपाय है। इस वात रोगमें ही नहीं—समस्त वात रोगोंमें बफारा देना परम शान्तिदायक है। बफारेसे वात रोगोंमें अवश्य आराम होता है।

इस बातका निश्चय करनेके लिए, कि स्नायुओं पर किसी फोड़े या गूमड़ेका दबाव तो नहीं पड़ता, बड़ी आँतके नीचे के हिस्से से (By the Rectum) पेड़ूकी जाँच कर लेनी चाहिये। अगर रोगीको वात रोग या गठिया हो, तो ५ से १० बूंद तक "सालिसिलेट आव सोडा" चन्द रोज़ तक देना चाहिये। सिफलिस या आतशक रोगसे भी सियाटिका रोग हो जाता है। अगर ऐसा हो तो आतशकका मुनासिब इलाज करना चाहिये।

जाँघकी पीठके बराबर अथवा सुरीनकी नस या कूलेकी स्नायुके बराबर-बराबर पलस्तर लगाकर आबले या फफोले उठानेसे भी लाभ होता है।

कुब्जक-चिकित्सा ।

(कुबड़े का इलाज)

नोट—कुब्जक रोगमें कुपित हुई वायु छाती या पीठको अनुक्रमसे ऊँचा कर देती है और साथ ही वेदना भी होती है। अन्तरायाम और बाह्यायाममें मनुष्यका शरीर तो जैसेका तैसा रहता है, पर वह छातीसे या पीठसे कमानकी तरह नव जाता है ; किन्तु कुब्जक रोगमें छाती या पीठ शरीरके दायरेसे बाहर निकल जाती है।

कुब्जक-नाशक नुसखे ।

(१) कुब्जक रोग या कुबड़ेपनकी चिकित्सामें "वातव्याधिकी सामान्य चिकित्सा"—जो धनुर्वात रोगकी चिकित्सामें लिखी है—करनी चाहिये। "प्रसारिणी तेल"का व्यवहार, हनुग्रह और धनुर्वातकी तरह, इस रोगमें भी हितकारी है।

(२) लहसनको सिल पर महीन पीस कर लेप-जैसा कर लो। फिर उसे कूब निकली जगह पर लगा दो। एक घन्टे बाद, उस लेपको पानीसे धो डालो। उस जगह पर एक फफोला निकलेगा। उस फफोलेको सूईसे छेद दो। छेदनेसे पानीसा निकल जायगा। इसी तरह फिर लेप करो और धोदो। फफोला उठे तो फोड़ दो। ऐसा कई बार करनेसे अवश्य आराम हो जायगा।

(३) कबूतरके मांसके साथ या शोरवेके साथ "लहसन" खाना भी इस रोगमें उत्तम है। अगर ऊपरी दवा-दारूके साथ, यही पथ्य भी दिया जाय, तो बड़ा लाभ हो। इसे भी एक दवा ही समझिये।

जिस रोगमें मुँह खुला रहे या दाँत ही बन्द हो जायँ, उसे "हनुग्रह" कहते हैं। हनुग्रहका अर्थ ठोड़ी जकड़ जाना है।

हनुग्रह नाशक नुसख़े ॥

(१) "प्रसारिणी तेलकी" मालिश करने, मन्दी-मन्दी आगसे सेकने और तेलसे भरी हुई वस्ति सिर पर धारण करनेसे हनुग्रह रोग नाश होता है।

प्रसारिणी तेल।

मूल, पत्ते और शाखाओं समेत प्रसारिणीका पञ्चाङ्ग चार सौ तोले लेकर अच्छी तरहसे कूटलो। फिर उसे एक देगमे डाल कर ऊपरसे १०२४ तोले पानी छोड़ो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको क़लईदार कड़ाहीमे डालकर, उसमें तिलीका तेल ५ सेर, दहीका तोड़ ५ सेर, काँजी ५ सेर और गायका धारोष्ण दूध २० सेर मिलादो और चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दाग्निसे पकाओ। इस समय,—

चीता, पीपरामूल, मुलेठी, सेंधानोन, वच, सोया, देवदारू,

रास्ना, गजपीपर, प्रसारिणीकी जड़, बालछड़—जटामांसी, लाल चन्दन, अरण्डकी जड़, खिरैंटीकी जड़ और सोंठ—इन पन्द्रह दवाओंको तीन-तीन तोले चार-चार माशे लेकर—कुल ५० तोले वज़न करलो। फिर इनको हिमामदस्तेमें कूट कर महीन करलो। महीन होने पर, सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी या कल्क बनालो। इस लुगदीको भी उसी औटते हुए तेलमें डाल दो। जब पकते-पकते तेल मात्र रह जाय—दूध, तोड़ और काँजी जल जायँ—उतार कर छानलो और बोतलोंमें भर दो। यही "प्रसारिणी तैल" है।

इस तेलके पीनेसे, नस्य देनेसे, शिरोवस्ति करनेसे, मालिश करनेसे और स्वेदन करनेसे समस्त वात व्याधि रोग आराम हो जाते हैं। विशेष करके हनुग्रह, जिह्वास्तंभ, अर्दित रोग, गद्गदता, विश्वाची, मन्यास्तम्भ, अपबाहुक, त्रिकशूल, गृध्रसी, खंजता, पंगुता, कलाय-खंजता, खञ्ज, स्तम्भ, संकोच, अन्तरायाम, बाह्यायाम, दण्डापतानक, धनुर्वात और कुबड़ेपनका नाश हो जाता है। जिन मनुष्योंके अङ्ग वायुकी वजहसे सुकड़ जाते हैं, क्षीण हो जाते हैं अथवा बूढ़ोंके अंग संकुचित हो जाते हैं, उनके अंगोंको यह "प्रसारिणी तैल" फैला देता है। यह तेल संकोच नष्ट करनेवाला और सुकड़े हुए अंगोंका प्रसार या फैलाव करनेवाला है। इसीसे इसका नाम "प्रसारिणी तैल" है।

(२) गर्म जलके कुल्ले करो अथवा छोटी पीपर और अदरख—इन दोनोंको चबाओ और बारम्बार थूको। इस उपायसे हनुग्रह रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) ६ माशे लहसन लेकर २ तोले तिलीके तेलमें भूनो और "सेंधा नमक" डाल कर खाओ। परीक्षित है।

(४) उड़दकी दाल भिगोकर छिलके उतार लो और सिल पर पीठी पीसलो। फिर उसमें "लहसन" मिला कर फिर पीसो और अन्दाज़का अदरख, हींग और सेंधानोन भी मिलालो। इस पीठीके

बड़े बनाकर, तिलीके तेलमें पकालो; इन बड़ोंको बल और जठराग्निके अनुसार खानेसे हनुग्रह रोग नाश हो जाता है।

(५) हनुग्रह रोग होनेसे मुँह बन्द हो गया हो, तो स्नेहन और स्वेदन कर्म करके, चिकनाई लगा और पसीने निकाल कर, मुँहको खोलो। अगर मुख खुल गया हो, तो ठोड़ीको नवाकर उचित उपाय करो। खुलासा यह कि, बन्द हुए मुँहको घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंसे मल कर और बफारा देकर खोल दो। अगर मुँह खुला रहा गया हो, तो घी आदिसे चिकना करके और बफारा देकर बन्द कर दो। घी या तेल लगानेसे नसें नर्म हो जाती हैं और बफारा देनेसे पसीने निकलते हैं। पसीनोंसे भी दोष निकल कर नर्मी आती है।

(६) गुड़के साथ पकाई हुई कन्दूरी रोगीके मुँहमें रख कर, ठोड़ी पर घी वग़ैरः चिकनाई लगाओ और बफारा दो। इसके बाद दोनों अंगूठों और दोनों उँगलियोंसे दबाकर ठोड़ीको बन्द कर दो।

(७) अर्दित चिकित्साके नं० १५में लिखा "कपिकच्छ्वादि क्वाथ" नाक द्वारा पीनेसे हनुग्रह रोगको नाश कर देता है।

(८) दशमूलका काढ़ा पीनेसे हनुग्रह रोग नाश हो जाता है।

(९) कालीमिर्च और पीपरका स्वरस पीनेसे मन्यास्तम्भ और हनुग्रह रोग नाश हो जाते हैं।

क्रोष्टुकशीर्ष-चिकित्सा।

वायु और खूनसे, घुटनोंके बीचमें, गीदड़के मस्तकके समान, बहुत बड़ी, मोटी और अत्यन्त पीड़ावाली सूजन होती है, उसीको "क्रोष्टुक शीर्ष" कहते हैं।

क्रोष्टुक शीर्ष नाशक नुसखे ।

(१) गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आमला—प्रत्येक दवा चार-चार तोले लेकर, ६४ तोले जलमें काढ़ा बनाओ। जब आठ तोले जल रह जाय, उतार कर छानलो। फिर एक तोले "शुद्ध गूगल" खाकर, ऊपरसे यही गरमागर्म काढ़ा पीनेसे "क्रोष्टुकशीर्षक" रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) गूगल ३ माशे, गिलोय ३ माशे, हरड़के बकले ३ माशे, बहेड़ेके छिलके ३ माशे और गुठली-हीन आमले ३ माशे—इन सबको पीस-कूट कर छान लो। इस दवाको एक तोले "रण्डीके तेल"में मिला कर खानेसे क्रोष्टुशीर्षक रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) ३ माशे शुद्ध गूगल खाकर ऊपरसे "तीतरका मांस-रस" पीनेसे अथवा दोनों मिला कर पीनेसे "क्रोष्टुकशीर्ष" रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) चार तोले गायके दूधके साथ "अरण्डीका तेल" १ तोला पीनेसे "क्रोष्टुकशीर्ष" रोग नाश हो जाता है।

(५) क्रोष्टुकशीर्ष रोगकी चिकित्सा "वात-रक्त" रोगकी तरह करनी चाहिये।

(६) विधायरेका चूर्ण दूधके साथ पीनेसे क्रोष्टुकशीर्ष रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७) जानुगत क्रोष्टुकशीर्षमें खून निकालना—फस्त खोलना और वात नाशक दवा देना—सबसे अच्छा इलाज है।

क्रोष्टुकशीर्ष रोगी—पृष्ठ—३३०

इस रोगीके घुटनोंके बीचमें—वात और रक्तसे—गीदड़के माथेके समान बड़ी और मोटी सूजन पैदा हो गई है। रोगी चिकित्सकको अपने घुटने दिखा रहा है।

मन्यास्तम्भ-चिकित्सा।

जब गर्दनकी सारी या पिछली नसें जकड़ जाती हैं, तब मनुष्य अपनी गर्दनको हिला फिरा नहीं सकता। इसी रोगको "मन्यास्तम्भ" रोग कहते हैं।

मन्यास्तम्भ नाशक नुसखे।

(१) गर्दन पर घी या तेल मल कर, "आक या अरण्डके पत्ते" गरम करके बाँध दो और बारम्बार सेक करो। इस उपायसे मन्यास्तम्भ—गर्दनका ठहर जाना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) मुर्गीके अण्डेके रसमें घी और सेंधानोन पीस कर मिला दो और गरम करके, गरमागर्म ही गर्दन पर बाँध दो। मन्यास्तम्भ या गर्दनका जकड़ जाना आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(३) दशमूल या पंचमूलके काढ़ेकी नस्य देनेसे मन्यास्तम्भ रोग नष्ट हो जाता है।

(४) असगन्धकी जड़का लेप करनेसे और सरसोंका तेल मलनेसे मन्यास्तम्भ रोग नाश हो जाता है।

(५) उड़द, खिरेंटी, कौंचकी जड़, गन्धतृण, रास्ना, अरण्डीकी जड़ और असगन्ध—इनको कुल दो तोले लेकर, ३२ तोले पानीमें काढ़ा बनालो। जब ४ तोले जल रह जाय, मल कर छानलो। इसमें दो माशे हींग, दो माशे ज़ीरा और दो माशे सेंधानोन मिला दो। इस काढ़ेको नाक द्वारा, सात दिन तक, पीनेसे मन्यास्तम्भ, पक्षाघात, कर्णनाद, दुर्जय अर्दित रोग एवं अन्य वात रोग नाश हो जाते हैं। इसका नाम "माषादि नस्य" है।

(६) "प्रसारिणी तेल"की मालिश करने और नस्यादि देनेसे मन्यास्तम्भ रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। इस तेलकी विधि "हनुग्रह चिकित्सा"मे देखिये ।

(७) खिरेंटीकी जड़के काढ़ेमें "सेंधानोन" मिला कर पीनेसे बाहुशोष और मन्यास्तम्भ रोग नाश हो जाते हैं ।

(८) अर्दित चिकित्सामें लिखा हुआ "कपिकच्छ्वादि क्वाथ" दारुण मन्यास्तम्भको नाश कर देता है। परीक्षित है ।

(९) दशमूलका काढ़ा पीनेसे मन्यस्तम्भ नाश हो जाता है ।

चारों आक्षेपकोंकी चिकित्सा ।

वायु नसोंके भीतर घुसकर आक्षेप करता है, इसीसे "आक्षेपक रोग" कहते हैं। जब कुपित वायु धमनियों या नाड़ियोंमें घुसता है, तब मनुष्य उसी तरह हिला करता है, जिस तरह हाथीपर बैठा हुआ आदमी हिला करता है ।

आक्षेपक रोग नाशक नुसखे ।

(१) महाबला तेलके इस्तेमाल करनेसे अनेक वात रोग, विशेषकर आक्षेपक रोग, नाश हो जाते हैं ।

महाबला तेल ।

महाबला तेलके लिए नीचे लिखी चीजें तैयार करो :—

(१) काले तिलोंका तेल ... ८ सेर ।

(२) खिरैंटीका काढ़ा ८ सेर।
(३) दशमूलका काढ़ा ८ सेर।
(४) जौ, बेर और कुलथीका काढ़ा ८ सेर।
(५) गायका दूध ८ सेर।

(६) जीवनीयगणकी दवाएँ, सैंधानोन, अगर, राल, सरलधूप, देवदारु, मँजीठ, लालचन्दन, कूट, इलायची, वालछड़, तगर, भूरिछरीला, तेजपात, काली सारिवा, गोरी सारिवा, वच, शतावर, असगन्ध, सौंफ और पुनर्नवा—इन सब दवाओंको बराबर-बराबर और कुल मिलाकर दो सेर लेलो और सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर छहों नम्बरोंकी चीजोंको क़लईदार कड़ाहीमें डालकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छानलो और सोने, चाँदी या मिट्टीके बर्तनोंमें रख दो।

इस तेलके काममें लेनेसे सब तरहकी वातव्याधि, ख़ासकर आक्षेपक रोग नष्ट हो जाते हैं। इनके सिवा हिचकी, श्वास, अधिमन्थ, गोला और भयङ्कर खाँसी भी आराम हो जाती है। छ महीने तक प्रयोग करनेसे अन्त्रवृद्धिका भी नाश हो जाता है। प्रसूत रोगमें इसकी बलाबलानुसार मात्रा देनी चाहिये। जो स्त्रियाँ गर्भ चाहती हैं और जो पुरुष क्षीणवीर्य हैं, उनके लिए यह तेल परम हित है। क्षीण वातपर, मर्महत और अभिघातपर, टूटे हुए पर और मिहनतकी थकानमें इसे इस्तेमाल करनेसे लाभ होता है। राजा, राजमान्य, सुखी और धनियोंको यह तेल अवश्य पास रखना चाहिये।

(२) शुद्ध कुचला दो रत्ती पानमे रखकर खानेसे आक्षेप और दण्डाक्षेप रोग नाश हो जाते हैं।

(३) शुद्ध अफीम, शुद्ध कुचला और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर बँगला पानोंके रसके साथ खूब खरल करो और रत्ती-रत्तीभर की गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंको "समीर गज केसरी वटी" कहते

हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे पानका बीड़ा खानेसे सब तरहकी वातव्याधियाँ नाश होती हैं। खासकर, दण्डा-पतानक, मृगी, सूजन और हैज़ेमें तो रामबाण हैं। परीक्षित हैं।

अपतानक-चिकित्सा।

जब वायु कुपित होकर, मनुष्यके देखनेकी शक्ति और सञ्ज्ञाको नष्ट कर देता है और रोगी कूँजता है, तब कहते हैं कि "अपतानक" रोग हुआ है। जब वायु मोह से घिरे हुए हृदयको छोड़ देता है, तब रोगीको सञ्ज्ञा हो जाती है—होश आ जाता है। खुलासा यह है कि, इस रोगमें देखनेकी शक्ति जाती रहती है, रोगी आँखोंसे देखता है, पर किसीको पहचान नहीं सकता। मुँहसे बोलता है, पर बोलते ही बेहोश हो जाता है।

अपतानक रोग नाशक नुसखे।

(१) अपतानक रोगीकी आँखोंसे पानी बहता हो, कँप-कँपी न आती हो और वह खाट पर न पडा हो—इससे पहले ही चिकित्सा करनी चाहिये—चिकित्सामें देर न करनी चाहिये।

(२) अपतानक रोगीको दशमूलके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" डाल कर पिलाओ। जब यह काढ़ा पच जाय, उसे मांस-रस-मिला भात खिलाओ; तेलकी मालिश करो। तेज़ दस्तावर दवा देकर दस्त कराओ; इसके बाद घी पिलाओ। घी पिलानेसे स्रोत साफ़ हो जायेंगे।

(३) कालीमिर्च १ तोले लेकर महीन पीस लो और छानलो। इस चूर्णको खट्टे दही या एक नीबूके रसके साथ खिलादो; पर

इस दवाको भोजनसे पहले ही खिलाओ। इस उपायसे "अपतानक" नष्ट हो जाता है।
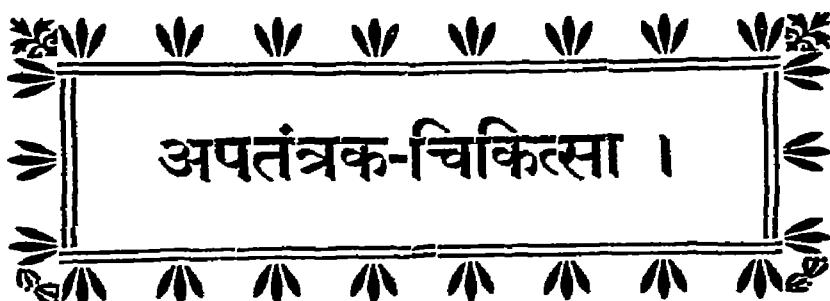
(४) गुदामें, घी या तेल प्रभृति चिकने पदार्थोंकी पिचकारी देनेसे भी अपतानक रोग नष्ट हो जाता है।

(५) गायके पाव-भर दूधमें चार या पाँच तोले "साफ अरण्डीका तेल" मिला कर पिलानेसे दस्त लगते हैं और अपतानक रोग चला जाता है।

नोट—अपतानक रोगमें तेज दस्तावर दवा देकर दस्त करानेकी शास्त्राज्ञा है। ऊपरका जुलाब सब तरहके रोगियोंको मुफीद है। अगर रोगीका कोठा बहुत ही कड़ा हो, इस तेलसे दस्त न होते हों, तो इसमें दस बूँद "तारपीनका तेल" भी मिला दो; फिर तो दस्त होंगे ही होंगे।

(६) छोटी पीपरोंका नौ माशे चूर्ण कबूतरके मांस-रसमें मिलाकर खिलानेसे अपतानक रोग नाश हो जाता है।

नोट—बच्चा जननेवाली जच्चाका बहुत सा खून निकल जानेसे पैदा हुआ और अभिघात या चोट लगनेसे उत्पन्न हुआ अपतानक रोग आराम नहीं होता।

अपतंत्रक-चिकित्सा।

जब कुपित हुई वायु पक्वाशयसे ऊपर चढ़कर हृदयमें वेदना पैदा करती है, फिर और ऊपर चढ़कर मस्तक और कनपटियोंमें पीड़ा करती है, शरीरको कमानकी तरह झुकाकर कँपाती है और चित्तमें मोह पैदा कर देती है, तब वह आदमी बड़ी मुश्किलसे ऊँचे श्वास लेता है, आँखें खोल देता या बन्द कर लेता है, कबूतर की तरह कूजता या बोलता है और उसे शरीरका होश नहीं रहता। इसी रोगको "अपतन्त्रक" कहते हैं।

अपतन्त्रक नाशक नुसखे।

(१) अपतन्त्रक रोगीकी तृप्तिके विरुद्ध क्रिया मत करो। किसी हालतमें भी, निरुह वस्ति और वमनका सेवन न कराना चाहिये। परन्तु कफ और वातसे घिरी हुई श्वासवाहिनी नाड़ियोंको, तीक्ष्ण प्रधमन नस्य (फूँकनी द्वारा तेज पिसे हुए चूर्णकी नस्य) देकर, खोल देना चाहिये, क्योंकि नाड़ियोंके खुल जानेसे रोगीको होश हो जाता है। मतलब यह है, कि निरूह वस्ति और वमनकी तो मनाही है, पर तेज़ प्रधमन नस्य देनेकी जोरसे राय दी गई है, क्योंकि नस्य-से रोगी होशमें आजाता है। आगे लिखी हुई "मरिचादि नस्य" इस मौक़े पर अच्छा काम देती है।

(२) कालीमिर्च, सहँजनेके बीज, वायविडङ्ग और मरुआ—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो और कपड़ेमें छानकर रख लो। यही "मरिचादि नस्य" है। समयपर इसे काग़ज आदिकी नलीमें रखकर नाकमें फूँकनेसे सिरकी मलामत निकल जाती और रोगी होशमें आजाता है। परीक्षित है।

नोट—मरुवेके पौधे बागोंमें बहुत होते हैं। पत्ते लम्बे-लम्बे अगुलीके समान होते हैं। उनमें खुशबू बहुत होती है। मरुवेमें तुलसीके जैसी बहुतसी बाले निकलती हैं। मरुवे काले और सफेद दो तरहके होते हैं। दवाके काममें सफेद मरुवा आता है। मात्रा १ माशेकी। मरुवा न होनेसे, कोई-कोई वैद्य तुलसीके छोटे-छोटे पत्ते भी ले लेते हैं।

(३) हरड़, वच, रास्ना, सेंधानमक और अम्लवेत—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट कर छानलो। फिर इस चूर्णको "घी और अदरखके रस"में मिला कर चाटो। इसके चाटनेसे अपतन्त्रक रोग नाश हो जाता है। इसका नाम "हरीतक्यादि अवलेह" है।

(४) शुद्ध कुचला २ रत्ती और काले धतूरेके शुद्ध बीज २ रत्ती—पानमें धर कर खानेसे अपतन्त्रक रोग नाश हो जाता है।

धनुस्तम्भ चिकित्सा।
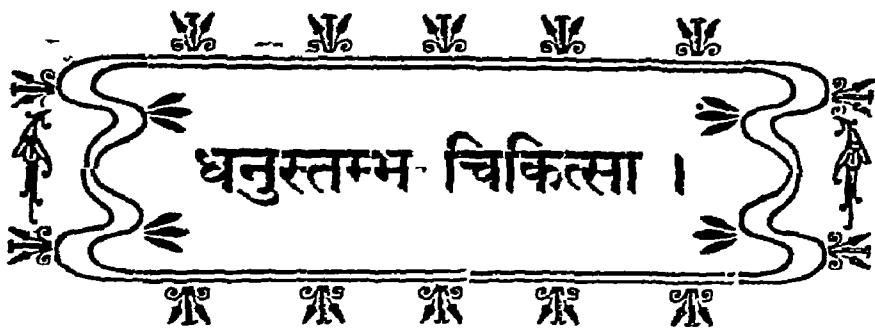
धनुस्तम्भ रोगमें आदमी कमानकी तरह झुक जाता है, सारे अङ्ग ढीले हो जाते हैं, पसीने बहुत आते हैं और बुद्धि बिलकुल भ्रष्ट हो जाती है। ऐसा रोगी दस दिनसे अधिक जी नहीं सकता।

धनुर्वात नाशक नुसखे।

(१) धनुस्तम्भ, कुब्जक, अन्तरायाम और बाह्यायाम रोगोंके होने पर, नीचे लिखे वात नाशक उपाय अवश्य करने चाहिएं :—

(१) मीठे, खट्टे, खारी, चिकने, गरम और भारी पदार्थोंका खाना।

(२) नस्य लेना।

(३) वस्ति कर्म या पिचकारी वगैरः लगाना।

(४) स्वेदन कर्म यानी बफारे आदिसे पसीने निकालना।

(५) तर्पण करना।

(६) दागना।

(७) पानी छिड़कना।

(८) क्रोध करना।

(९) घी-तैलादि चिकनी चीज़ोंकी मालिश करना।

(१०) बदनकी मलाई करना।

ये सब "वातव्याधिकी सामान्य चिकित्सा" है, अर्थात् सभी तरहके वात रोगोंमें इससे लाभ होता है।

(२) "प्रसारिणी तेल" का व्यवहार धनुर्वात, कुब्जक और अन्तरायाम-वाह्यायाम रोगोंमें अत्यन्त उपकारी है। इसे कभी न भूलना चाहिये। इस तेलकी विधि पृष्ठ ३०८ में लिखी है। परीक्षित है।

(३) पानके भीतर दो रत्ती "अफीम" रख कर खानेसे धनुस्तम्भ रोगमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(४) सज्जीका तेल मलने और दशमूलका काढ़ा पिलाने और इसी काढ़ेकी नस्य देनेसे धनुस्तम्भ रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) दशमूलका काढ़ा पिलाने और सरसोंका तेल मलनेसे धनुस्तम्भ रोग चला जाता है।

अन्तरायाम रोग होनेसे रोगीकी आँखें पथरा जाती हैं, ठोडी जकड़ जाती है, पसली टूटी हुईके समान हो जाती है, कफकी वमन होती है और रोगी पेट या छातीकी तरफसे कमानकी तरह झुक जाता है।

जब रोगी पीठकी तरफ कमानकी तरह झुक जाता है, तब वाह्यायाम कहते हैं। यह रोग असाध्य है। अगर इस रोगमें छाती, कमर और साथलोंमें मदनकी जैसी पीड़ा होती हो, तो अत्यन्त असाध्य है।

चिकित्सा।

(१) अन्तरायाम और वाह्यायामकी चिकित्सा "अर्दित रोगकी तरह" करनी चाहिये।

(२) एक तोले लहसनको दो तोले कड़वे तेलमें भूँज कर खानेसे दोनों रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) कबूतरके मांसमें लहसन मिला कर खानेसे दोनों रोग नष्ट हो जाते हैं।

(४) "प्रसारिणी तेल"की मालिश करने एवं अर्दित—लकवेमें लिखो हुई चिकित्सा करनेसे अन्तरायाम और वाह्यायाम नाश हो जाते हैं।

(५) डाक्टरीमें तार-विजली लगाना, तर-गरम मेवे खिलाना अथवा लहसन और अदरख सेवन कराना,—इस रोगमें हितकारी कहा है।

उर्द्ध्वात-चिकित्सा।

(बहुत डकारें आना)

नीचेकी तरफ वायुके रुकनेसे जो बरम्बार डकारे आती हैं, उसे ही उर्द्ध्वात कहते हैं।

उर्द्ध्वात नाशक नुसखे।

(१) सोंठ १० तोले, विधारा १० तोले, हरड़ ३ तोले, भुनी हींग ४ तोले, सेंधानमक १ तोले और चीतेकी छाल १ तोले—इन सबको पीस-छान कर रख लो। इस चूर्णसे उर्द्ध्वात रोग नष्ट हो जाता है।

(२) निशोथकी जड़ दूधमें पीसकर, उसमें 'अडूसेका रस" मिलाकर पीओ। इससे उर्द्ध्वात शान्त हो जाता है।

वाताष्ठीला-चिकित्सा।

(नाभिके नीचेकी गाँठ)

नाभिके नीचे गोल, पत्थरीके समान कठोर, भारी, ऊँची, ऊपरको तरफ लम्बी, स्थिर या चञ्चल जो गांठ होती है, उसे "वाताष्ठीला" कहते हैं। यह गांठ लिंग, योनि और गुदाकी राहोंको रोक देती है, इसलिये मल, मूत्र और हवाका अवरोध या रुकाव हो जाता है। यह गांठ पित्त और कफसे नहीं होती।

वाताष्ठीला नाशक नुसख़े।

(१) वाताष्ठीलाका इलाज "गुल्म रोग"की तरह करना चाहिये।

(२) हींग, कूट, धनिया, हरड़, निशोथ, कालानोन, सेंधानोन जवाखार और सोंठ—इन सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर घीमें भूंजकर रख लो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। अनुपान—जौका काढ़ा। इससे गुल्म रोग, वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला रोग नाश हो जाते हैं।

(३) सज्जीखार ३ माशे और पुराना गुड़ ३ माशे मिलाकर सवेरे-शाम खानेसे वाताष्ठीला और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं।

हिंग्वादि चूर्ण।

(४) भुनी हींग, पीपरामूल, धनिया, सफेद ज़ीरा, वच, चव्य, चीता, पाढ, कचूर, चिपांबिल, सेंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, जवाखार, सज्जीखार, अनारदाने, हरड़, पोहकरमूल, अम्लवेत और हाऊबेर—इन २३ दवाओंको समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। फिर इस चूर्णको एक-एक दिन "अदरखके रस" और "बिजौरे नीबूके रस"में खरल करके सुखा लो। यही "हिंग्वादि चूर्ण" है। इस चूर्णके सेवन करनेसे वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला रोग नाश हो जाते हैं।

(५) दशमूलके काढ़ेमें "शिलाजीत और मिश्री" मिलाकर पीनेसे वाताष्ठीला, वातकुण्डलिका और वातवस्ति आदि रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

प्रत्यष्ठीला नाशक नुसखे।

नोट—वेदना सहित, मल, मूत्र और हवाको रोकने वाली जो गाँठ पेटमें होती है, उसे "प्रत्यष्ठीला" कहते है।

(१) वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीलाका एक ही इलाज है। अतः वाताष्ठीला या गुल्म रोगमें लिखी हुई दवाएं इस रोगमें देनी चाहियें।

(२) वाताष्ठीला-चिकित्सामें लिखा हुआ "हिंग्वादि चूर्ण" इस रोगमें भी उपकारी है।

आध्मान-चिकित्सा।

(पेट फूलना)

जिस रोगमें पीड़ाके साथ गुड़गुड़ाहट होती है और पेट मशककी तरह फूल जाता है, उसे "आध्मान" कहते हैं।

आध्मान नाशक नुसखे।

(१) आध्मान या पेट फूलनेके रोगमें पहले लंघन कराओ। फिर अग्निदीपक और पाचक औषधि गुदामें दो, पिचकारी लगाओ और संशोधन (कय और दस्त) भी कराओ।

नारायण चूर्ण।

(२) छोटी पीपर ६ तोले, निशोथ ४ तोले और चीनी चार तोले

—इनको पीस-कूट और छान कर रख लो। इस चूर्णमेंसे आधा तोला चूर्ण "शहद"में मिला कर चाटनेसे आध्मान रोग तत्काल नाश हो जाता है। इस चूर्णका नाम "नारायण चूर्ण" है। परीक्षित है।

दारुषट्क लेप ।

(३) देवदारु, बच, कूट, सोया—सौंफ, हींग और सेंधानोन—इनको समान-समान लेकर "माठा या नीबूके रस"में पीसकर और गरम करके पेट पर लेप करनेसे, पेटका दर्द और आध्मान रोग नष्ट हो जाता है। इसका नाम "दारुषट्क लेप" है।

महानाराच रस ।

(४) अमलताशका गूदा, आमले, शुद्ध जमालगोटा, कुटकी, थूहर, निशोथ और नागरमोथा—हरेकको चार-चार तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर कुटी दवाओंको सवा छै सेर पानीमें डाल कर पकाओ। जब पकते-पकते आठवाँ भाग यानी १२॥ छटाँक पानी रह जाय, तब नये जमालगोटेके छिलके-रहित शुद्ध बीज कुछ लेकर एक पोटलीमें बाँध लो और उस पोटलीको उसी बर्तनमें डाल दो। आगको मन्दी रखो। जब यह काढ़ा गाढ़ा हो जाय, उतार कर खरलमें डाल दो और पोटलीको निकल कर अलग फेंक दो।

फिर आठ भाग शुद्ध जमालगोटेके बीज, तीन भाग सोंठ, दो भाग कालीमिर्च, दो भाग शुद्ध पारा और दो भाग शुद्ध गन्धक उसी खरलमें डालकर, एक पहर या ३ घण्टे तक घोटो। बस "महानाराच रस" तैयार हो जायगा।

इस रसको शीतल जलके साथ सेवन करनेसे आध्मान, शूल, आनाह, प्रत्याध्मान, उदावर्त्त, गोला और पेटके सारे रोग नाश हो जाते हैं। रोगका ज़ोर मिटने पर, रोगीको दही और मिश्री तथा सेंधे नमकके साथ कुछ दही भात खिलाना चाहिये।

परीक्षित नाराच रस ।

(५) शुद्ध पारा १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, भुना सुहागा

१ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, सोंठ २ तोले और शुद्ध जमालगोटा ६ तोले—इनको सबको पीस कर चूर्ण कर लो। इसीका नाम "नाराच रस" है।

इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। अनुपान—आध्मान और शूलादि रोगोंमें गरम-जल या तुलसीका रस अथवा शहद और अदरखका रस। दस्त बन्द करनेके लिये इसके ऊपर "शीतल जल" दिया जाता है।

इसकी १ मात्रा गरम जलके साथ लेनेसे दस्त होते हैं और शीतल जल पीते ही दस्त बन्द हो जाते हैं। यह रस आध्मान—पेट फूलना, शूल रोग और मलावरोध या दस्तक़ब्ज़में खूब काम देता है। परीक्षित है।

नोट—पहले गन्धक और पारेकी निश्चन्द्र कज्जली कर लेनी चाहिये। फिर शेष दवाओंको कूट कर उसमें मिला देना और ३।४ घन्टे तक घोटना चाहिये। मात्रा बलाबल देख कर देनी चाहिये। बाज़-बाज़ रोगियोंको १ या आधी रत्ती रस ही काफी होता है।

(६) दशमूलके काढेमें अरण्डीका तेल, हींग और कालानोन मिला कर पीनेसे पेटका फूलना और पेटका दर्द आराम हो जाता है।

(७) हींग, अम्लबेत, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, वच, पीपर, पीपरामूल, चव्य, सोंठ, चीता, कालीमिर्च, कचूर, आमले, अजवायन, सफेद आक, पाढ, कालाज़ीरा, सफेद ज़ीरा, असगन्ध, जवाखार, वज्रखार, पीपरामूल, हाऊबेर और सज्जीखार—इन पच्चीस चीज़ोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट कर छान लो। इस चूर्णकी मात्रा दो से चार माशे तक है। इसके सेवन करनेसे हिचकी, आध्मान—पेट फूलना, दस्त रुक जाना, शूल, गोला, गलेका रोग, हृदयका रोग, पथरी और पाण्डु रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस नुसख़ेमें कालीमिर्च और पीपरामूल आदि दो-दो बार लिखे गये हैं। इसको गलती न समझ कर, जितनी बार लिखे हैं उतनी ही बार लो।

प्रत्याध्मान-चिकित्सा ।

नोट—पक्काशयमें हवा रुकनेसे, पेट फूलने, दर्द होने और गुड़गुड़ आवाज़ होनेको "आध्मान" कहते हैं। वही दर्द पक्काशयमें न होकर, आमाशयसे उठे और पेट या पसवाड़ोंको छोड़ दे, तो उसे "प्रत्याध्मान" कहते हैं।

प्रत्याध्मान नाशक नुसख़े ।

प्रत्याध्मान रोगके उठते ही पहले वमन और लंघन कराओ, फिर दीपन और पाचन दवाएँ सेवन कराओ और पिचकारी लगाओ।

विश्वाची-चिकित्सा ।

विश्वाची रोग होनेसे मनुष्य एक या दोनों बाहोंको न तो फैला सकता है और न सुकेड़ सकता है।

विश्वाची नाशक नुसख़े ।

(१) सन्ध्याके भोजनके बाद—दशमूल, खिरेंटी और उड़द—इनके काढ़ेमें तेल और घी मिलाकर नास लेनेसे विश्वाची और अपबाहुक रोग नाश हो जाते हैं।

(२) उड़द, सेंधानोन, खिरेंटी, रास्ना, दशमूल, हींग, वच, बालछड़, शतावर और सोंठ इन दवाओंको दो-दो तोले लेकर, पानीके

साथ सिलपर पीसकर लुगदी बनालो । फिर इन्हीं दवाओंको दो-दो तोले लेकर, ३२ गुने पानीमें औटाओ । जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो । फिर आधसेर काली तिलीका तेल, दो सेर काढ़ा और आध पाव कल्क—इन सबको मिलाकर तेल पकाओ । जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो । इस तेलके, भोजनके बाद, सेवन करनेसे अपबाहुक, पक्षाघात, अर्दित या लकवा तथा भयङ्कर विश्वाची रोग नाश हो जाते हैं ।

नोट—इस रोगमें जीभ स्तब्ध हो जाती है । इस रोग वाला खा, पी और बोल नहीं सकता ।

(१) इस रोगमें, अवस्थादिका विचार करके, वातव्याधिकी दवाएँ सेवन कराओ । अर्दित रोगमें जो "सामान्य चिकित्सा" लिखी है, वह भी इस रोगमें हितकारी है ।

(२) "प्रसारिणी तेल"के इस्तेमाल करनेसे जिह्वास्तम्भ रोग नाश हो जाता है । ३२७-२८

(१) सरसोंका तेल मलनेसे, मधुर भोजन खानेसे और पान चबानेसे जंभाई रोग नाश हो जाता है ।

(२) जँभाई आते ही, मनुष्यको सुन्दर पलँग पर सुला देनेसे जँभाई आना बन्द हो जाता है।

(३) सोंठ, छोटी पीपर, कालीमिर्च, अजवायन और सेंधानोन—इन पाँचोंको अलग-अलग या बराबर-बराबर मिलाकर खानेसे जँभाई आना तत्काल आराम हो जाता है।

गद्गदत्व, मिन्मिनत्व और मूकताकी चिकित्सा।

(तोतले, गिनगिने और गूंगेका इलाज)

बोलते समय, पदों और व्यञ्जनोंके लोप हो जानेको "गद्गदत्व" कहते हैं; अक्षरोंके नाकमें बोलनेको "मिनमिनाना" कहते हैं और "गूँगेपनको" मूकता कहते हैं।

सारस्वत घृत।

(१) सहँजना, वच, सेंधानमक, धायके फूल, लोध और पाढ़—इनको चार-चार तोले लेकर, सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। इस लुगदीको, ६४ तोले घीको और २५६ तोले बकरीके दूधको, क़लई-दार कड़ाहीमें डालकर, मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इसका नाम "सारस्वत घृत" है। इस घीके सेवन करनेसे जड़ता, गूंगापन और मिनमिनापन आदि क्षण-भरमें नष्ट होकर, बोली साफ हो जाती है और स्मृति, मति, मेधा-शक्ति और तर्कशक्तिकी प्राप्ति होती है।

(२) हल्दी, वच, कूट, छोटी पीपर, सोंठ, सफेद ज़ीरा, अजमोद, मुलेठी और सेंधानमक—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस छान लो। इस चूर्णको, घीमें मिलाकर, चाटनेसे २१ दिनमें मनुष्यकी याद रखनेकी ताक़त खूब बढ़ जाती है और उसकी आवाज कोयलके जैसी हो जाती है।

प्रलाप-चिकित्सा ।

(बड़बड़ाने का इलाज)

नोट—अहकी-बहकी और व्यर्थकी बातोंको "प्रलाप" कहते हैं। सन्निपात-ज्वरमें मनुष्य आनतान बका करता है। लोग कहते हैं—बादीसे बकता है। वैद्यकमें उसे ही "प्रलाप करना" कहते हैं।

(१) तगर, पित्तपापडा, अमलताश, नागरमोथा, कुटकी, सुगन्ध-वाला, असगन्ध, ब्राह्मी, दाख, चन्दन, दशमूल और शंखाहूली इनको दो-दो माशे लेकर, ३२ तोले जलमें काढा बनाओ। जब ४ तोले पानी रह जाय, मल-छानकर पीलो। इस काढ़ेसे प्रलाप या आनतान बकना बन्द हो जाता है।

रसाज्ञान-चिकित्सा ।

भोजन करते समय, जिस मनुष्यकी जीभको मीठे, खट्टे और खारी आदि रसों का ज्ञान न हो, उसे "रसाज्ञान" रोग है।

(१) सेंधानमक, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और अम्ल-बेत—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको जीभ पर घिसनेसे "रसाज्ञान" रोग नाश हो जाता है।

नोट—अगर "अम्लबेत" न मिले, तो "चूका ले सकते हो।

किरातादि कल्क ।

(२) चिरायता, कुटकी, इन्द्रजौ, बच, ब्राह्मी, ढाकके बीज, सज्जीखार, काला जीरा, छोटी पीपर, पीपरामूल, चीता, सोंठ और

कालीमिर्च—इन तेरह दवाओंको "अदरखके रस"में पीस कर, जीभ पर बारम्बार घिसनेसे "रसाज्ञान" रोग नाश होकर, जीभको रसोंका ज्ञान होने लगता है। इसका नाम "किराताद् कल्क" है।

वातकण्टक-चिकित्सा।

(पाँवमें मोच आना)

ऊँचा-नीचा पाँव पड़ने अथवा मिहनतके कारणसे टखने या पिंडलियोंमें पीड़ा होनेको "वातकण्टक" कहते हैं।

(१) दिनमें तीन चार बार, एक-एक तोले अरण्डीका तेल पीनेसे "वातकण्टक" रोग नाश हो जाता है।

(२) "वातकण्टक" रोगमें बारम्बार खून निकलवाना या सुइयोंसे दागना हितकारी है।

खल्ली-चिकित्सा।

(बाइँटे या तशन्नुज)

जिस रोगमें रोगी पैर, जाँघ, पिंडली और हाथकी जड़को घुमाया या मोड़ा करता है अथवा जिस वातसे पैर, जांघ, पिंडली और हाथकी जड़ें ठिरा जाती हैं,—बाइँटे आते हैं, उसे "खल्ली वात" कहते हैं।

(१) कूट ६ माशे, सेंधानोन ६ माशे, तेल ५ तोले और चूका ६ माशे—इन सबको पीसकर और ज़रा गरम करके मालिश करनेसे खल्ली वात नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—कूट ६ माशे, सेंधानोन ६ माशे और चूका ६ माशे—इनको एक छटाँक पानीमें पीसकर और ३ माशे घी मिलाकर खानेसे २१ दिनमें खल्ली रोग आराम हो जाता है।

कलायखंज-चिकित्सा।

(कँपकँपी सहित लँगड़ापन)

जो लँगड़ाकर चलता है या काँखता है और जिसके सब सन्धि-बन्धन ढीले हो जाते है, उसे "कलायखज" रोगी कहते है। कलाय खंज रोगी चलनेके आरम्भमें काँपता और लँगड़ाकर चलता है। लँगड़ा चलते समय नहीं काँपता, यही भेद है।

(१) इस रोगका इलाज "खंजता और पंगुताकी तरह" ही किया जाता है। इतनी बात अधिक है कि, इस रोगमें स्नेह-क्रिया विशेषकी जाती है।

(२) इस रोगमें भी "प्रसारिणी तल" और "त्रयोदशाङ्ग गूगल" तथा "पथ्यादि गूगल" हितकारी हैं।

खञ्जता और पंगुताकी चिकित्सा।

(लंगड़े और लूलेपनका इलाज)

(१) अगर खंजता और पंगुता यानी लँगड़ापन और लूलापन थोड़े दिनोंके हों, तो नीचे लिखे हुए उपायोंसे चिकित्सा करो :—

(१) विरेचन या जुलाव दो।

(२) निरूह वस्ति करो।

(३) स्वेदन करो ; वफारे आदिसे पसीने निकालो।

(४) गूगल सेवन कराओ।

(५) स्नेह वस्ति करो।

(२) "पथ्यादि गूगल" सेवन करनेसे नवीन खंजता यानी थोड़े दिनोंका लँगड़ापन दूर हो जाता है।

(३) "त्रयोदशांग गूगल" सेवन करनेसे भी खंजता या लँगड़ापन आराम हो जाता है।

(४) "प्रसारिणी तेल" के सेवन करनेसे भी खंजता और पंगुता आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

बाहुशोष-चिकित्सा।

(बाँह सूखना।)

कन्धों या खवोंके बन्धनोंके सूख जानेसे अत्यन्त वेदना वाला बाहुशोष रोग होता है। यह रोगी अपने उस हाथसे खा पी सकता है।

(१) भोजनके बाद, "महा कल्याण घृत" पीनेसे बाहुशोष रोग नाश हो जाता है।

(२) खिरैंटीकी जड़के काढ़ेमें "सेंधानोन" मिला कर पीनेसे बाहुशोष और मन्यास्तम्भ रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—खिरैंटीकी जड़ २ तोले लेकर पाव-भर पानीमें औटाओ, जब १ छटाँक पानी रह जाय, उतार कर छान लो और ? माशे "सेंधानोन" डालकर पीलो।

(३) सरिवनके साथ दूध औटा कर पीनेसे बाहुशोष नाश हो जाता है।

(४) उड़दोंका रस पिलानेसे बाहुशोष रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पाददाह-चिकित्सा।

(पैरोंमें जलन होना)

जब पित्त और खून सहित कुपित वायु पैरोंमें दाह या जलन करती है अथवा चलते समय पैरोंमें जलन होती है, तब कहते हैं "पाददाह रोग" है।

(१) मसूरकी दाल और थोड़ासा कपूर पानीके साथ सिल

पर पीस कर पैरोंमें लेप करनेसे "पाद्दाह" या पैरोकी जलन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) दोनों पैरोंमें मक्खनकी मालिश करके, आग पर पैर सेकनेसे पाद्दाह रोग नाश हो जाता है। कहते हैं, इस उपायसे पुरानी और अत्युग्र पैरोंकी जलन भी शान्त हो जाती है।

(३) औटाये हुए जलको शीतल करके, उस पानीमें मसूरकी दाल पीस कर पाँवों पर लेप करनेसे, पाद्दाह—पैरोंकी जलन नाश हो जाती है।

(४) पाद्दाहमें विशेष करके "वात-रक्तकी चिकित्सा" करनी चाहिये।

(५) पाद्दाहमें केवल लूनी घीकी मालिश करनेसे फायदा हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—याद रखो, पित्त और खूनसे मिला हुआ 'वायु' पाद्दाह करता है।

तूनी-प्रतितूनी-चिकित्सा।

गुदा, लिंग और योनिकी पीड़ा।

विष्ठाके स्थान और मूत्राशयसे एक तरहकी पीड़ा उठती है, वह गुदा, लिङ्ग और योनिमें भेदने या तोड़नेकीसी पीड़ा करती है। जो वेदना नीचेकी तरफ जाती है, उसे "तूनी" कहते हैं।

जो वेदना गुदा और लिङ्ग अथवा योनिसे उठकर उल्टी दौड़ती और वेग-पूर्वक शान्त होकर पक्वाशयमें जाती है, उसे "प्रतितूनी" कहते हैं।

(१) स्नेह यानी घी-तेलकी पिचकारी लगाओ। तेलमें सेंधा-नोन डालकर पीओ। अथवा हींग और जवाखारको गरम जलके साथ पीओ। अथवा अच्छी तरहसे घी पीओ।

(२) घीके साथ "हिंगाष्टक चूर्ण"को गुदा पर रखनेसे तूनी और प्रतितूनी रोग चले जाते हैं।

(६) धतूरेके बीजोंका तेल मलनेसे अपबाहुक रोग नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(१०) रातके समय अरण्डीका तेल और सज्जीका तेल मलनेसे अपबाहुक रोग नाश होता है । परीक्षित है ।

(११) अरण्डीके तेलकी नास देने और उसी तेलकी मालिश करनेसे अपबाहुक रोग चला जाता है । परीक्षित है ।

मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रह-चिकित्सा ।

। बारम्बार पेशाब होना और रुक जाना ।

जब तक वायु दूषित नहीं होता, तब तक मूत्राशयमें मूत्र अच्छी तरह आता रहता है, किन्तु जब वायु दुष्ट हो जाता है, तब मुहुर्मूत्र या—बारम्बार मूतना और मूत्र निग्रह—पेशाब रुकना आदि रोग खड़े हो जाते हैं । इन दोनोंको "वस्तिवात" भी कहते हैं ।

मुहुर्मूत्र और मूत्र-निग्रह नाशक नुसखे ।

(१) खिरेंटी, चुरनहार और दालचीनी—इनको समान-समान लेकर पीस लो और "मिश्री" मिला कर रख दो । इसमेंसे १ तोले चूर्ण, १६ तोले दूधके साथ खानेसे, मुहुर्मूत्रण या बारम्बार पेशाब होना आराम होता है ।

(२) त्रिफलेका चूर्ण और लोहभस्म "शहद"में मिलाकर चाटनेसे बारम्बार पेशाब होना आराम हो जाता है

(३) जवाखारका चूर्ण ६ माशे और चीनी ६ माशे मिला कर खानेसे पेशाबका रुकना नाश हो जाता है ।

(४) पेठेके बीज और खीरेके बीज दोनों, सिल पर पानीके साथ पीस कर, पेड़ू पर रखनेसे पेशाबका रुकना नाश होकर, पेशाब साफ होने लगता है।

(५) आमलोंको पानीके साथ सिल पर पीस कर पेड़ू पर रखने से, पेशाब रुकना तत्काल नाश होता है; यानी पेशाब साफ होने लगता है।

(६) लिङ्ग या योनिके मुँहमें धीरे-धीरे "कपूरकी बत्ती" चढ़ानेसे मूत्रकी रुकावट नाश होकर फौरन पेशाब होता है।

(७) चूहेकी मैंगनी १ तोले और कलमीशोरा ६ माशे—पानीके साथ पीस कर पेड़ू पर रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(८) टेसूके फूल और कलमीशोरा पानीके साथ सिल पर पीस कर, पेड़ू पर रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(९) राई १ माशे, कलमीशोरा १ माशे और शकर २ माशे मिलाकर, दो बारमें, खानेसे पेशाब हो जाता है।

(१०) केवल चूहेकी मैंगनी, पानीके साथ पीस कर, नाभिके नीचे रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(११) कलमी शोरा पानीमें पीस और घोलकर, उसमें कपड़ा भिगोकर, नाभिके नीचे रखनेसे पेशाब खुल जाता है।

(१२) काले तिल और शक्कर मिलाकर खानेसे बहुत पेशाब आना आराम हो जाता है।

(१२) सूखी बबूलकी फली कूट-पीस-छान कर "घीमें भून लो और चीनी मिलाकर रख लो। इसमेंसे ६ माशे नित्य खानेसे बहुत पेशाब होना आराम हो जाता है।

त्रिकशूल-चिकित्सा ।

(कूले और पीठके बाँसेकी सन्धिका दर्द)

कूलेकी दो हड्डियाँ और पीठके बाँसेकी दो हड्डियाँ जहाँ मिली हैं, उस जगहको "त्रिक स्थान" कहते हैं। त्रिकस्थानमें वायुसे जो दर्द होता है, उसे "त्रिक शूल" कहते हैं ।

त्रिक शूल नाशक नुसखे ।

त्रिकशूल वालेको "वालुका स्वेद" दो अथवा उसकी चारपाईके नीचे, वनके कण्डोंकी आग रख कर सेक लगने दो ।

नोट—पाव-भर बालू कपड़ेमें बाँध कर आग पर तपाओ और उसीसे त्रिक-स्थानको बारम्बार सेको । यही "वालुका स्वेद" है ।

त्रयोदशांग गूगल ।

(२) बबूर, असगन्ध, हाऊबेर, गिलोय, शतावर, गोखरू, रास्ना, निशोथ, सौंफ, कचूर, अजवायन और सोंठ—इनको समान-समान लेकर चूर्ण करलो । फिर इस चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लो और गूगलसे आधा "घी" लो । फिर सबको मिलाकर खूब कूटो । बस यही "त्रयोदशांग गूगल" है। इसमें गूगल समेत तेरह चीजें पड़ती हैं ।

खुलासा—बबूर आदि १२ दवाएँ एक-एक तोले, गूगल १२ तोले और घी ६ तोले लेकर खूब कूटो । जितनी कुटाई होगी, दवा उतनी ही अच्छी बनेगी ।

इसकी मात्रा ६ माशेकी है । अनुपान-गरम दूध या गरम पानी है । इस गूगलके सवेरेही सेवन करनेसे, त्रिकशूल, जानुस्तम्भ, हनुग्रह, भुजागत वायु, पादगत वायु, सन्धिगत वायु, अस्थिगत वायु, मज्जागत

वायु, स्नायुगत वायु, कोष्ठगत वायु, वात-कफके समस्त रोग, वायुके रोग, छातीका स्तम्भ, भग्नास्थि या टूटी हड्डीसे हुए रोग, योनि-दोष, खंजता, गृध्रसी और पक्षाघात रोग आराम हो जाते हैं। प्राचीन वैद्य इस "त्रयोदशांग गूगल"को वात रोगों पर अत्युत्तम कहते हैं।

(३) असगन्धका चूर्ण "मिश्री और घी" मिलाकर खानेसे कमर का दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) छाती, कन्धे और त्रिकस्थानकी वात "वमन और नस्य"से शान्त होती है।

(५) सर्व्वाङ्ग वात और अर्दित वात-चिकित्सामें लिखा हुआ "लशुनादि चूर्ण" खानेसे कमर और पीठकी वात नाश हो जाती है।

(६) दशमूलका काढ़ा बनाकर, सवेरे ही पीनेसे पीठका दर्द, कमरका दर्द और हृदयका दर्द आराम हो जाता है। काढ़ा छानने से जो फोक बचे, उसीको फिर औटा कर शामको पीना चाहिये। परीक्षित है।

(७ लघुपंचमूल दो तोले लाकर कुचल लो। फिर १६ तोले दूध और ६४ तोले पानी उसमें मिलाकर औटाओ। जब दूधमात्र रह जाय, छान कर रोगीको पिलाओ। इस "पंचमूली क्षीर"से जीर्ण-ज्वर, पीटका दर्द, सिर दर्द, जुकाम, खाँसी और श्वास आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कमरके दर्द पर यूनानी नुसखे।

(१) सोंठ १० तोले, रेंडीकी गरी १० तोले, घी २० तोले, मिश्री २० तोले और गायका दूध आध सेर इतनी चीज़ें तैयार कर लो।

पहले रेंडीकी गरी सिलपर महीन पीस लो। फिर उस पीठीको दूधमें मिलाकर पकाओ ; जब गाढ़ासा होने पर आवे, उसमें "सोंठ, घी और मिश्री" डालकर हलवा बना लो। इस हलवेके बलाबल और स्वभावानुसार खानेसे कमरका दर्द आराम हो जाता है।

(२) करीलकी लकड़ी लाकर आगमें जला लो, जब राख हो जाय छानकर रख लो। इसमेंसे ७ माशे राख, ६ माशे घीमें मिलाकर नित्य खानेसे कमरका दर्द आराम हो जाता है।

(३) अञ्जीरकी जड़की छाल, सोंठ और धनिया बराबर-बराबर लेकर, जौकुट करके रख लो। इसमेंसे पाँच तोले दवा लेकर आध सेर पानीमें औटाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, मल-छानकर रोगीको पिला दो। इसके पीनेसे कमरका दर्द चला जाता है।

नोट—"इलाजुल गुर्बा"में दश दाम यानी १६ तोले ८ माशे दवा—४८ तोले ४॥ माशे पानीमें भिगोने और औटानेकी बात लिखी है।

(४) धनिया ४ माशे और मिश्री १ तोले मिलाकर सवेरे ही फाँकनेसे गरमीसे पैदा हुई कमर और जोड़ोंकी पीड़ा नाश हो जाती है।

(५) मालकाँगनी, पँवारके बीज, बाबची और हालों—इनको बराबर-बराबर लेकर रख लो। इसमेंसे ३ माशे दवा, सवेरे ही, पानी के साथ निगल जानेसे सर्दीसे पैदा हुआ कमर और जोड़ोंका दर्द आराम हो जाता है। इस दवासे सफेद दाग भी जाते रहते हैं।

(६) शकर और खोपरा खानेसे कमरकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(७) रेंडी १ तोला, लाहौरी नोन १ तोला, मैदा लकड़ी १ तोला, हींग ६ माशे और गेहूँका आटा आध पाव—इन सबको एक साथ पीसकर रोटीसी बनालो और पकाओ। जब रोटी पक जावे, उसे कमरमें, दर्दकी जगह, बाँध दो। इससे कमरकी पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८) इस्पन्द १३ तोले ४ माशे और सोंठ ३ तोले ४ माशे लेकर कुचल लो और रातके समय एक सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उस पानीमें आध सेर मीठा तेल मिला दो और मन्दाग्निसे औटाओ। जब पानी और दवा जल जायँ, तेल मात्र रह जाँय, उतार कर छान लो। इस तेलके लगानेसे कमर, पहलू और पिंडलीकी पीडा तथा चूतड़से पाँवकी उँगलियो तककी पीड़ा, रींगनवायु या इरकुन्निसा रोग आराम हो जाते हैं।

(९) हुलहुलकी छाल लाकर, उसके ऊपरकी स्याही दूर करो और भीतरी छालको छायामें सुखाकर कूट लो। इसमें बराबरकी "शक्कर" मिलाकर खानेसे कमरका दर्द नाश हो जाता है।

सर्व्वाङ्गवात-चिकित्सा।

सारे अंगोंमें,वायुका कोप होनेसे शरीरकी शिरायें—नसें काँपने लगती हैं, अंग टूटने लगते है और दर्दके मारे सन्धि या जोड़ फटने लगते हैं। इसी रोगको "सर्व्वाङ्ग वात" कहते हैं।

खुलासा यह, कि वातके कोपसे आँख, कान, नाक, भौंह, सिर, होठ, छाती, बाँह और कन्धे आदि अंग फड़कने लगते हैं। इसीको "सर्व्वाङ्ग वात" कहते हैं।

सर्व्वाङ्ग वात नाशक नुसखे।

(१) एक पाव गेहूँकी चोकरमें दो तोले सेंधानोन पीसकर मिला दो और पानी मिलाकर आगपर पका लो। इस लूपडीसे उन स्थानोंको सेको जो फड़कते हैं; अवश्य आराम होगा।

(२) अजवायन, कालीमिर्च और अफीम—तीनोंको तीन-तीन माशे लेकर, आधा पाव काली तिलीके तेलमें खरल करो। जब

एक दिल हो जायँ, सारे बदनमें इस तेलकी मालिश करो। इस तेलसे सर्वाङ्ग वात नष्ट हो जाती है।

(३) तेलका अवगाहन एकांग वात और सर्वांङ्गवातको निश्चय ही नाश कर देता है —कहा है —

सर्वांङ्गगतमेकाङ्गगतञ्चापि समीरणम् ।
तैलावगाहन हन्ति तोयवेगमिवाचलम् ॥

तेलके अवगाहन—यानी तेलमें ग़ोता लगानेसे सर्वांङ्ग वात और और एकांगवात—अर्द्धाङ्ग या पक्षाघात इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह जलके जोरसे पहाड़ नाश हो जाते हैं।

(४) सर्वांङ्गवात शिरामोक्षण करने यानी फस्द खोलनेसे आराम होती है, किन्तु एकांगवात सींगी लगानेसे आराम होती है। कहा है— सर्वांङ्गजं शिरामोक्षैः शृंगैरेकाङ्गजं जयेत् ।

(५) चार तोले लहसनको महीन पीस कर, उसमें सेंधानोन, जीरा, त्रिकुटा, संचरनोन और हींग-- प्रत्येक चार-चार माशे पीस कर मिला दो। इसमेंसे एक माशे चूर्ण, सवेरे ही "अरण्डीकी जड़के काढ़ेके साथ", एक महीना तक, पीनेसे सर्वांङ्गवात, अर्द्दित वात, कमर और पीठकी वात नाश हो जाती है। इसका नाम "लशुनादि चूर्ण" है। परीक्षित है।

त्वचाशून्य-चिकित्सा ।

(सुन्नबहरी का इलाज)
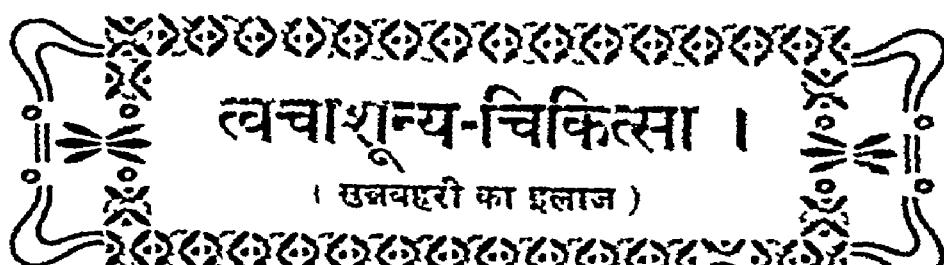
चमड़ेका सूनापन नाश करनेवाले नुसखे ।

(१) बारम्बार खून निकलाओ, फस्द खुलवाओ एव आग पर तेल और सधानोन डाल-डालकर सूनी चमड़ीमें धूनी दो।

(२) नाखूना और कड़वा सुरंजान—दोनोंको समान-समान लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर, आग पर गरम करो और सूने स्थान पर सुहाता-सुहाता लेपकर दो। परीक्षित है।

(३) जवासेका स्वरस २० तोले और सरसोंका तेल १० तोले—दोनोको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रहजाय, उतार कर छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे चमड़ेका सूनापन जाता रहता है। परीक्षित है।

(४) हरी भटकटैया—कटेरीका रस १ तोले, अदरखका रस १ तोले और शहद १ तोले—इनको मिलाकर गरम करो। इसमेंसे चार-चार माशे दवा, दिनके समय, हर तीन-तीन घण्टेमें, चटानेसे त्वकशून्यता—सुन्नवहरी और फालिज रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—गन्धकका चोआ ४ माशे और तारपीनका तेल अढ़ाई तोले—दोनोंको एकमें मिला लो और थोड़ा-थोड़ा रोगकी जगह लगाओ। इससे भी सुन्नवहरी आराम हो जाती है।

कोष्ठगत वायुकी चिकित्सा।

(कोठेकी दूषित वायुका इलाज)

नोट—आमाशय, अग्न्याशय, पक्वाशय, मुत्राशय, रुधिराशय, पीठ और फेंफड़ा—इन सबको मिलाकर "कोठा" कहते हैं। यद्यपि कोष्ठ या कोठा शब्द सब आशयोंके लिए इस्तेमाल किया जाता है; तथापि विशेष जानकारीके लिए, आमाशयादिमें रहनेवाली वायुके लक्षण और चिकित्सा अलग-अलग लिखी जाती है।

जब दुष्ट वायु कोठेमें ठहर जाती है, तब पेशाब और पाखाना रुक जाता है तथा वायु-गोला, हृदय-रोग, वद, बवासीर और पसलियोंमें दर्द—ये रोग होते हैं।

(१) अगर कोठेमें वायु हो तो पाचन करने वाले रस दो। दूध पिलाओ या और-और उपायोंसे मलको पकाओ।

(२) मूँगफलीका तेल ६ माशे और शहद १ तोले—दोनोंको मिलाकर, दिनमे दो चार, पीनेसे कोष्ठगत वायु यानी पेटकी खराब हवा दूर होकर दस्त साफ होता है।

आमाशयगत वायुकी चिकित्सा।

। मेदेकी दूषित वायुका इलाज।

नोट—"चरक"के मतानुसार नाभि और स्तनोंके बीचका जो भाग है, उसे "आमाशय" कहते हैं।

जब आमाशयमें वायु रहती है, तब हृदय, पसली, पेट और नाभिमें दर्द होता है, प्यास लगती है, डकार आती है, हैज़ा, खाँसी, गला सूखना और श्वास रोग होते हैं।

(१) पहले लंघन कराओ; दीपन-पाचन औषधि दो; अथवा कय कराओ और तेज जुल्लाब दो। जौ, पुराने चाँवल और पुराने मूँगका पथ्य दो।

नोट—दो तोले सेंधानोन आध सेर पानीमें औटाकर पिला दो और कय कराओ। एक या दो तोले सनाय पाव-भर दूधमें औटाकर पिला दो। इससे दस्त हो जायँगे। इसके बाद ६ माशे हरड़ और ३ माशे सेंधानोन, रोज, गरम पानीके साथ खिलाओ। इससे आराम हो जायगा।

(२) रोहिष नामक सुगन्धित घास, हरड, कचूर और पोहकर-मूल—इनको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले पानीमें काढ़ा बनाओ; चार तोले पानी रहने पर उतार कर छान लो और रोगीको पिला दो। इस काढ़ेसे आमाशयगत वात शान्त हो जाती है।

(३) आकके फूल ३ माशे और साँभरनोन १ माशे—दोनोंको मिलाकर गरम पानीके साथ खानेसे आमाशयगत वायु ५।७ दिनमें आराम हो जाती है।

(४) बेलगिरी, गिलोय, देवदारु और सोंठ—इनको कुल २ तोले

लेकर और ३२ तोले पानीमें काढ़ा बना-छान कर पीनेसे,आमाशयगत वात नाश हो जाती है।

(५) वच, अतीस, छोटी पीपर और विरिया संचरनोन इन सबको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले पानीमे काढ़ा बना-छानकर पीनेसे, आमाशयगत वायु शान्त हो जाती है।

(६) चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, अतीस और हरड़—इनको तीन-तीन माशे लेकर पीस-कूट कर कपड़-छन कर लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण, नित्य, गरम पानीके साथ खानेसे, ६ दिनमें, आमाशय-गत वात शान्त हो जाती है। इस दवासे छै दिनमें आराम होता है, इसीसे इस योगको "षड् धरण योग" कहते हैं।

(६) पहले दिन नमकके औटाये हुए पानीसे कय कराओ। दूसरे दिन चीतेका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। तीसरे दिन इन्द्रजौका तीन माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। चौथे दिन पाढ़का ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। पाँचव दिन कुटकीका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। छठे दिन अतीसका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। सातवें दिन हरड़का ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। इस तरह करनेसे भी आमाशयगत वायु नष्ट हो जाती है।

पक्काशगयत वायुकी चिकित्सा।

(भोजन पचनेकी थैलीकी वायुका इलाज)

जब दुष्ट वायु पक्वाशयमें रुक जाती है, तब पेटकी आंते गुड़गुड़ाहट करती हैं, शूल चलते हैं, वायु कुपित होती है, मल और मूत्र थोड़े-थोड़े उतरते हैं, पेट पर अफारा आजाता है और 'त्रिकस्थान' (जहाँ पीठमे तीन हड्डियाँ मिलती हैं) में दर्द होता है।

(१) पक्वाशयगत वायु हो, तो तैलादि चिकनी चीज मिला हुआ

जुलाब दो और जठराग्नि बढ़ाने वाली दवाएँ दो। इस रोगमें "उदावर्त्त"कीसी चिकित्सा करनी चाहिये।

नोट—गायके पाव-भर दूधमें चार तोले कास्टर आयल—अंडीका तेल मिलाकर पिलाओ। इस जुलाबके दो दिन तक देनेसे पक्वाशयकी वात निकल जाती है। इसके बाद बड़ी हरड़के छिलकोंका पिसा छना चूर्ण ६ माशेसे १ तोले तक, शहदमें मिलाकर, लगातार, आराम न होने तक चटाओ।

उदरवात-चिकित्सा।

(पेटकी दूषित वायुका इलाज।)

जब दुष्ट वायु उदर या पेटमें घुस जाती है, तब पेटमें यकायक तेज़ दर्द उठता है।

(१) पेटमें वायु होनेसे क्षार और चूर्ण आदि दीपन औषधियाँ देनी चाहियें।

(२) साँभरनोन दो तोले महीन पीस कर फाँक लो और ऊपरसे जल न पीओ। इससे अवश्य पेटका दर्द मिट जायगा।

(३) सोंठ, छोटी हरड़ और कालानमक तीनों छै-छै माशे लेकर, पानीके साथ सिल पर काजलकी तरह महीन करलो। फिर उसे दो तीन तोले पानीमें घोल कर, आग पर ज़रा गरम करलो और सुहाता-सुहाता पीलो। इस दवासे १ घन्टेके भीतर पेटका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) अगर कूखमें वायु हो, तो सोंठ, इन्द्रजौ और चीता—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण, कुछ गरम पानीके साथ, फाँकनेसे कूखका दर्द आराम हो जाता है।

गुदागत वायुकी चिकित्सा ।

(गुदामें रुकी हुई हवाका इलाज)

जब गुदामें वायु रुक जाती है , तब मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं, दर्द होता है, पेट पर अफारा आजाता है, पथरी और शर्करा रोग हो जाते हैं। पिंडली, सांथल, कमर, पसली, कन्धे और पीठमें पीड़ा होती है।

(१) इस रोगमें भी "उदावर्त्त रोगमें लिखी चिकित्सा" करनी चाहिये।

(२) एक तोले रेंडीके तेलमें ६ माशे साबुनको पीस या घिस लो। फिर उसे अंगुलीसे गुदामें भीतर तक पहुँचा दो। इस कामके करते ही अधोवायु खुलेगी और चन्द मिनटोंमें एक दस्त हो जायगा। रोगीकी सारी पीड़ाएं दूर हो जायँगी।

(३) एक तोले निशोथ महीन पीसकर एक तोले "शहद"में मिला लो और खा लो। इससे भी फौरन ही उपकार होगा।

(४) वस्ति—पेडू, कूख और गुदाकी वायु "अरण्डीका" तेल पीनेसे आराम हो जाती है। परीक्षित है।

यहृद्गत वायुकी चिकित्सा ।

जब हृदयमें दर्द हो और श्वास उठे तब समझना चाहिये, कि हृदयमें वायु रुका हुआ है।

(१) सवेरे ही काली मिर्च ३ माशे और गिलोय ३ माशे—इन दोनोंको पीस कर गरम जलके साथ पीनेसे हृदयकी पीड़ा आदि उपद्रव शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) असगन्ध ६ माशे और बहेड़ेके वक्कल ६ माशे लेकर महीन पीस लो। फिर १ तोले गुड़में मिलाकर खालो और ऊपरसे एक कटोरी गरम पानी पीलो। इससे हृदयकी वायु शान्त हो जायगी।

(३) देवदारु ६ माशे और सोंठ ६ माशे,—इन दोनोंको एकत्र पीस-छान कर, गरम जलके साथ, फाँकनेसे हृदयगत वायुको पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

कानादि इन्द्रियोंमें घुसी हुई वायुकी चिकित्सा।

कान वगैर: इन्द्रियोंमें जब वायु घुस जाती है, तब उनकी शक्तिका नाश कर देती है। अगर कानमें वायु घुस जाती है, तो कानमें अनेक तरहकी आवाजें होती हैं, कानोंमें दर्द होता है और वह बहने लगते हैं। इसी तरह और इन्द्रियोंके सम्बन्धमें समझ लो।

(१) वातनाशक चिकित्सा करो। तेल वग़ैर: चिकनी चीज़ोंकी मालिश करो। तेल आदि चिकने पदार्थोंकी कोठी या हौज़में रोगीको ग़ोते लगवाओ। शरीर पर स्नेह यानी तैल आदि चिकने पदार्थोंका लेप करो या लगाओ।

(२) एक तोले सरसोंके तेलमें ६ माशे लहसन डालकर जला लो। फिर शीतल होने पर, उसी तेलको कानमें छोड़ो।

(३) दो रत्ती अफीम, ६ माशे सरसोंके तेलमें घोल कर कानमें डालो। इससे कानका दर्द, कान बहना या तरह-तरहकी आवाज़ें सुनाई देना आराम हो जाता है।

(४) वृहत्पञ्चमूल आठ अङ्गुल लम्बी लेकर ऊपरसे रुई लपेट दो और उसे तिलके तेलमें तर कर लो। फिर उसे दियासलाईसे जलाकर

नीचेकी तरफ कर दो। ऊपरसे हाथमें पकड़े रहो। नीचे एक प्याला रख दो। उस बत्तीसे तेल टपकेगा। उस तेलको गुनगुना करके कानमें डालनेसे कानका दर्द तत्काल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

सप्तधातुगत वात-चिकित्सा।

अगर रसमें वायु घुस जाता है, तो चमड़ा काला और फटासा तथा रूखा, पतला और जड़ हो जाता है। उसमें सूई चुभनेका सा दर्द होता है।

अगर वायु खूनमें प्रवेश कर जाता है, तो बड़ा दर्द होता है, सन्ताप होता है, शरीर दुबला हो जाता है, उसका रङ्ग बिगड़ जाता है, भोजन पर अरुचि हो जाती है और वह पचता भी नहीं।

अगर वायु मांसमें घुस जाता है, तो शरीर भारी हो जाता है, लकड़ी या घूँसा मारनेके जैसा दर्द होता है। शरीर स्तब्ध और अत्यन्त निश्चल हो जाता है।

अगर वायु मेदमें घुस जाता है, तो सब लक्षण माँसगत वायुके समान होते हैं। इतना ही ज़ियादा होता है कि, शरीरमें कम दर्द करनेवाले फोड़े और गाँठे सी हो जाती हैं।

अगर वायु हड्डियोंमें घुस जाता है, तो जोड़ोंमें दर्द होता है, मांस और बल कम हो जाते हैं, नींद नहीं आती और पीड़ा जोरसे होती है।

अगर वायु मज्जामें घुस जाता है, तो हड्डियोंमें घुसी हुई वायुके जैसे सब लक्षण होते हैं। इतनी ही विशेषता होती है कि, मज्जागत वायुकी पीड़ा कभी भी शान्त नहीं होती।

अगर वायु वीर्यमें घुस जाता है, तो वीर्य ख़राब हो जाता है, वीर्य जल्दी ही स्खलित हो जाता है और ऐसे वीर्यसे रहा हुआ गर्भ कच्चा ही गिर जाता है।

(१) रसगत वायु हो, तो तेल आदिकी मालिश करो और स्वेदन क्रिया करो; यानी बफारे आदिसे पसीने निकालो।

(२) चमड़ेमे वायु हो, तो सरसोंके तेलमें अफीम मिलाकर मालिश करो और रूईसे सेक करो ।

(३) खूनमें वायु हो, तो शीतल लेप करो, जुलाब दो और फस्त वगैरःसे खून निकलवाओ । खसको पानीमें पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है ।

(४) मांसमे वायुहो तो जुलाब दो और निरूह वस्ति करो; यानी गुदामे क्राथ की पिचकारी दो ।

नोट—१ तोले सनाय पावभर दूधमें औटाकर पीनेसे दस्त हो जाते हैं। यह जुलाब अच्छा है ।

(५) मेदमें वायु हो, तो मांसगत वायुके समान उपाय करो; यानी जुलाब दो और निरूह वस्ति करो ।

(६) अगर वायु हड्डी और मज्जामें हो, तो बाहर और भीतर स्नेह की योजना करो; यानी शरीरके ऊपर तेल वगैरः चिकनी चीजें लगाओ और उन्हें ही खाओ भी । नीचेका नोट देखिये : -

नोट—लहसन २ तोले लेकर आध पाव तेलमें जला लो। फिर उस तेलको शरीर पर मलो और उसे ही १ तोलेके प्रमाणसे पी भी लो। अथवा "केतक्यादि तेल"को लगाओ और पीओ। यह तेल केवड़ा, गंगेरन और कघीके बहुतसे स्वरस और बहुतसे तुषोदकके साथ पकाया जाता है। खुलासा—केतकी या केवड़ेकी जड़ ५ तोले, गंगेरन यानी गुलसकरी ५ तोले और कघीकी जड़ ५ तोले लेकर, ३ सेर पानीमें औटाओ। जब तीन पाव पानी रह जाय, इसमे पावभर चाँवलोंका धोवन और आधपाव काली तिलीका तेल भी डाल दो और फिर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इसमेंसे एक-एक तोले तेल सवेरे-शाम पीओ और इसी तेलको बदनपर खूब लगवाओ।

(७) अगर वीर्यमें वायु हो, तो स्त्री आदिसे हर्ष उपजाओ। वीर्य बढ़ानेवाले भोजन और खाने-पीनेके पदार्थ खिलाओ। दवाके तौर पर घीमे मिलाकर लहसुन खिलाओ। १ छटाँक काले तिल नित्य खिलाओ और नित्य काले तिलोंके तेलकी ही मालिश कराओ।

(८) घी १ भाग और दूध ४ भाग लेकर पकाओ, जब घी मात्र

रह जाय उतार लो । इस घीमें असगन्धका चूर्ण मिलाकर पीनेसे असाध्य वात और शुक्र या वीर्य-धातुकी क्षीणता नाश हो जाती है । परीक्षित है ।

स्नायुगत वात-चिकित्सा ।

नोट—स्नायुगत वातसे शूल, आक्षेपक और स्तम्भ होता है । खुलासा यह है, कि स्नायुओंमें दूषित वायुके रुक जानेसे शूलसे चलते हैं, दर्द होता है, शरीरको झटके से लगते हैं' वाँइटे आते हैं और जिस अंगके स्नायुओंमें वायु रुक जाता है, वह अंग अपने कर्त्तव्य-कर्मसे हीन हो जाता है, यानी अपना काम करने लायक नहीं रहता ।

(१) कूपित वायु जब स्नायुओंमें प्रवेश कर जाय, तब पसीने निकालने चाहियें, दागना चाहिये, सख़्त बन्धन बाँधना चाहिये और तेल आदि चिकनी चीज़ें चुपड़नी और मलनी चाहिये ।

शिरागतवायु-चिकित्सा ।

नोट—शिरागत वायु, शिराओंमें शूलकी पीड़ा, शिराओंका संकोच, शिराओंकी स्थूलता, अन्तरायाम, बाह्यायाम, खल्ली और कुब्ज या कुबड़ापन करती है ।

(१) शिरागत वायु हो, तो स्नेहका अभ्यंग करो । स्नेहसहित बफारा लो । स्नेहकी मालिश करो । स्नेहका लेप करो और खून निकलवाओ ।

नोट—तैल, घी आदि चिकनी चीजोंको "स्नेह" कहते हैं ।

सन्धिगतवात-चिकित्सा ।

(जोड़ोंके दर्दका इलाज)

नोट—सन्धियों या जोड़ोंमें रहनेवाली वायु सन्धियोंको तोड़ देती और शूल तथा सूजन पैदा करती है ।

सन्धि-वात और क्रोष्टुकशीर्ष वातमें जो भेद है, उसे न भूलना चाहिये। सन्धिवात होनेसे घुटने, टखने, कोहनी और कन्धे प्रभृति जोड़ोंमें दर्द होता है और सूजन भी आती है, क्रोष्टुकशीर्ष रोग होनेसे केवल जानु या घुटनेमें ही सूजन आती और पीड़ा होती है और किसी जगह दर्द वगैर नहीं होता। एक बात और है, क्रोष्टुकशीर्षकी सूजन स्यारके माथेके जैसी मोटी और चिकनी होती है, वैसी सूजन सन्धिवातमें नहीं होती ।

(१) सन्धियोंमें वायुके प्रवेश करने पर दाग देना चाहिये, पसीने निकालने चाहिए तथा इन्द्रायणकी जड़ और पीपरोंको पीस कर और गुड़में मिला कर १ तोले रोज खाना चाहिये ।

नोट—इन्द्रायणकी जड़ ६ माशे, पीपर ६ माशे और गुड़ १ तोले मिलाकर खाना चाहिये। इससे सन्धिवात नष्ट हो जाती है। इस दवासे नित्य ३।४ दस्त होते हैं और दस्तोंकी राहसे ही वात नाश हो जाती है।

(२) सोंठ ६ माशे, शुद्ध गूगल ६ माशे और घी १ तोले—इन तीनोंको मिलाकर और खूब कूट-पीस कर खानेसे सन्धियों या जोड़ोंकी वायु नाश हो जाती है।

(३) पहले दिन अरण्डीके बीजकी गरी नग १ सवेरे ही खानी चाहिये, दूसरे दिन २ गरी, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार, पाँचवे दिन पाँच, छठे दिन छै और सातवें दिन सात गरी खानी चाहिये।

फिर आठवें दिनसे ७ गरी (छिला हुआ बीज) रोज, २१ दिन तक, खानेसे सन्धिवात या जोड़ोका दर्द नाश हो जाता है।

(४) कालीमिर्च, शुद्ध अफीम और शुद्ध कुचला—बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, पानोंके रसमें दिन-भर खरल करो। घुट जाने पर आध-आध रत्तीकी गोलियाँ बना कर छायामें सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली पानमें रख कर खाने या ताज़ा पानीके साथ खानेसे अकड़वात, दण्डेकी तरह शरीर रह जाना, पेट फूलना, आमके दस्त होना, पेटमें मरोडी होना, जुकाम, सर्दीके विकार, वात-विकार और पुराने वात रोग नाश हो जाते हैं। एक बार एक गठियासे जकड़े हुए रोगीको हमने ये गोलियाँ दीं। आनन-फानन आराम हो गया। रोगीको दो आदमी उठा-उठा कर कहीं ले जाते थे। बुरा हाल था। इन गोलियोंका नाम "समीरगज-केसरी वटी" है। पुराने वात रोगों पर रामवाण है। नये वात रोगोंमे भी अनेक बार अपूर्व फल देखा है। परीक्षित हैं।

(५) अर्दित चिकित्सामें लिखा हुआ "कपिकच्छ्वादि कषाय" सन्धिगत वातको नष्ट कर देता है।

(६) अरण्डीके बीज १ माशे और कालीमिर्च २ माशे—सिल पर पानीके साथ पीस कर और पाव-भर पानीमें छान कर पीनेसे गठिया और सूजन नाश हो जाती हैं।

(७) अरण्डीके बीजोंकी गरी १० तोले, बादामकी गरी ५ तोले, लौंग ६ माशे, केशर ६ माशे, छोटी पीपर ६ माशे और छोटी इलायची ६ माशे—इन सबको महीन पीस कर एक सेर दूधमें औटाओ। जब दूध जल कर खोआ हो जाय, तीन पाव मिश्रीकी चाशनी बनाओ। उसी चाशनीमें इस खोयेको डाल दो और उतार लो। फिर एक साफ चिकने मिट्टीके बासनमें उस दवाको भर कर मुँह बन्द कर दो और जौओंके ढेरमे, चालीस दिन तक, दाब रखो। इसके बाद निकाल लो।

इसकी मात्रा आरम्भमें ३ माशेकी है। जाड़ेके मौसममें, इसके खानेसे गठिया रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। कई बार परीक्षाकी है।

नोट—इसकी मात्रा धीरे-धीरे बढानी चाहिये, बशर्ते कि रोगी सहता चला जाय। अगर १ तोलेकी मात्रा खा ली जाय, तब तो कहना ही क्या? इसे खाकर ४० दिन तक परहेज करना चाहिये। फिर कोई ताक्तवर पाक या बादामका हलवा आदि खाना चाहिये। फिर कहते हैं, यह गठिया पर रामबाण दवा है।

(८) मूँगफलीके तेलमें कपूर डालकर और गरम करके शरीरपर मलनेसे सब तरहकी वायु और विशेष कर सन्धिगत वायुकी पीडा दूर होती है।

(९) कुचला १ तोले, कालीमिर्च ६ माशे, केशर ३ माशे और कस्तूरी १ माशे इनको "नागर पानो"के रसमें घोटकर आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम या जरूरतके समय, एक-एक गोली खाने और ऊपरसे जल या दूध पीनेसे वातविकार, जोड़ोंका दर्द, पेटका दर्द, प्रसूति-विकार और आँतोंके विकार नाश हो जाते हैं।

(१०) शुद्ध कुचलेके तीन चार चाँवल नित्य खानेसे और रेंडीकी जड़ और सोंठको पानीमें पीसकर दर्द स्थान पर लेप करनेसे सन्धिवात, गठिया और जोड़ोंका दर्द जाता रहता है।

(११) "योगराज गूगल" अथवा "अरण्ड पाक' खानेसे सन्धिवात—जोड़ोंका दर्द या गठिया रोग नाश हो जाता है।

(१२) एक रत्ती कुचलेका सत—स्ट्रिकेनिया ४० दिनमें खाने (यानी एक रत्तीके चालीस भाग करके, एक भाग नित्य खावे। इस तरह १ मात्रा १ चाँवलके पाँचवें भागके बराबर होगी) और कारबोनेट आफ पुटासमें कपड़ा भिगोकर, जोडोंपर रखनेसे गठिया रोग आराम हो जाता है।

जोड़ोंकी पीड़ापर यूनानी नुसखे।

(१) शुद्ध गूगल १ तोले और पुराना गुड २ तोले—खूब-कूट-पीस कर मिला लो और जंगली बेरके सामान गोलियाँ बनालो। इनमेंसे एक गोली नित्य, थोड़े घीके साथ, निगल जानेसे जोड़ोंका दर्द, घुटने और पीठकी पीड़ा आराम हो जाती है। पर इस दवाको जुलावके बाद सेवन करना चाहिये।

(२) काली मूसली २० माशे, सफेद मूसली २० माशे, छोटी पीपर २० माशे, अजवायन २० माशे, पीपरामूल २० माशे, शतावर ८ माशे, विधारा ८ माशे, सोंठ ८ माशे और असगन्ध ८ माशे, इनको कूट-पीसकर छान लो और पुराने गुडमें मिलाकर जंगली बेरके समान गोलियाँ बनालो। अपने बलाबल अनुसार गोली खानेसे जोडोंक दर्द तथा कमर और पीठकी वेदना नष्ट हो जाती है। यह दवा भी जुलाब लेनेके बाद खाई जाती है।

(३) शुद्ध शिंगरफ, हल्दी, अजमोद, अकरकरा, नीमके पत्ते, अजवायन, सँभालूके पत्ते, इन्द्रायणकी जड, सरफोंका, असगन्ध, पाढ़ी, काली मिर्च, बकायनकी जड़, मदारकी जड़ और शुद्ध भिलावे—इन सबको समान-समान लेकर कूट-छान लो और सबके बराबर पुराना गुड़ मिलाकर, दो-दो माशेकी गोलियाँ बना लो। बलाबल-अनुसार एक या दो गोली नित्य खानेसे, जोडोंकी पीडा, गठिया और आतशक या उपदंश रोग नाश हो जाते हैं। इनको "शिंगरफकी गोलियाँ" कहते हैं।

नोट—शिङ्गरफ या पारेकी गोली खानेवालेको खटाई, बादी पदार्थ, मांस और नमकसे परहेज रखना चाहिये। चाँवल और दूध, अथवा गेहूँकी अलोनी रोटी बहुतसा "घी" डालकर खानी चाहिये।

(४) हालों, अजवायन, कलौंजी और मेथी-दाने—ये चारों दाने

बराबर-बराबर लेकर रखलो। सवेरे ही एक चुटकी-भर लेकर फांकने और दो घूंट ताजा पानी पीनेसे जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(५) मालकाँगनी लाकर साफ कर लो। पहले दिन १ दाना निगलो, दूसरे दिन २ दाने और तीसरे दिन ३ दाने—इस तरह हर दिन एक-एक दाना बढ़ाते हुए १०० दानों तक पहुँचो। जब १०० दानों पर पहुँच जाओ, एक-एक दाना रोज़ घटाया करो। इस घटा-बढ़ीके समयमें, जोड़ोंका दर्द, वात-पीड़ा और कफके विकार नाश हो जायँगे। शरीर सब तरहसे निरोग हो जायगा और भूख बढ़ेगी।

नोट—अगर दाने बढ़ानेके दिनोंमें गरमी मालूम हो, दवा गरमी करे, तो जिस दिन गरमीका अनुभव हो, उसी दिनसे दाने घटाने शुरु कर दो—बढ़ाओ मत; चाहे १० दानों पर पहुँचो और चाहे २० या ५० पर।

(६) पोस्तके डोड़े रोज़ भिगो दो और मल-छानकर इतना रस पीओ, कि नशा न हो। इस तरह कुछ दिनोंमें जोड़ोंका दर्द आराम हो जायगा।

(७) महुएके बीजोंका तेल कोल्हूमें निकलवा लो। यह तेल घीकी तरह पीला होता है। इस तेलके जोड़ों पर मलनेसे जोड़ोंका दर्द और वात-पीड़ा आदि शीतके रोग नाश हो जाते हैं।

(८) सम्हालूके पत्ते कूटकर रस निचोड़ लो। जितना रस हो, उतना ही मीठा तेल मिला लो। फिर आगपर मन्दाग्निसे औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलको गुनगुना लेकर दर्दकी जगह मलो और सम्हालूके पत्ते सेक-सेककर उस जगह बाँध दो। इस उपायसे जोड़ोंकी पीड़ा नाश हो जायगी।

(९) रेंडीकी जड़ दो सेर लेकर आठ सेर पानीमें मिला दो और औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो और आध सेर रेंडीके तेलमें मिलाकर, मन्दाग्निसे औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, छान लो। इस तेलके मलनेसे जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१०) काले धतूरेके पत्ते, फल और जड़को कूटकर स्वरस निचोड़ लो। यह स्वरस डेढ़ सेर हो। इसमें आध पाव तिलीका तेल, आधपाव अलसीका तेल और आध पाव सरसोंका तेल मिला दो। फिर इस तेल-मिले स्वरसको मन्दाग्निसे पकाओ ; जब रस जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलको जोड़ोंपर मलनेसे और ऊपरसे अरण्ड या मदारके पत्ते बाँधनेसे जोड़ोंका दर्द मिट जायगा।

(११) मदारकी जड़ आध पावको कुचलकर, पावभर कडवे तेल में मिला दो और आगपर पकाओ। जब जड़ जलकर नीचे बैठ जाय, तेलको छान लो। इस तेलके जोड़ों या घुटनों पर मलने और मदार के पत्ते सेककर बाँधनेसे, जोड़ोंका दर्द मिट जाता और वात शान्त हो जाती है।

(१२) आध पाव छिला हुआ लहसन और चार आने भिलावे लेकर, पावभर मीठे तेलमें डाल दो और आग पर रख कर पकाओ। जब दवाओंकी राखसी हो जाय, तेलको छान लो। इस तेलको मालिशसे जोड़ोंकी पीड़ा और फालिज या पक्षाघात रोग नाश हो जाते हैं। यह तेल वात नाश करनेमें परमोत्तम है। हवासे बचना परमावश्यक है।

(१३) रातके समय,आध सेर तम्बाकू दो सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मल कर पानी छान लो। इस तम्बाकूके पानीमें पाव-भर तिलीका तेल मिलाकर आगपर औटाओ। जब पानी जलकर तेलमात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस "तम्बाकूके तेल" के मलनेसे जोड़ोंका दर्द आराम हो जाता है।

(१४) नाजबोंकी पत्तियोंका स्वरस आध सेर और मीठा तेल पावभर मिलाकर औटाओ। जब तेलमात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके मलनेसे भी जोड़ोंका दर्द शान्त हो जाता हैं।

(१५) एक बड़ा और मोटा चमगीदड़ लेकर आन्दाज़के मीठे तेल

में डुबोकर औटनेको रख दो। जब चमगीदड़ जल जाय, तेलको उतार कर छान लो। इस तेलके लगानेसे जोड़ोंका दर्द, बदनकी ऐंठनी, फालिज और काँपनी—ये सब नष्ट हो जाते हैं। इस तेलको लिङ्गके छेदमें टपकानेसे बन्द हुआ पेशाब जारी हो जाता है।

(१६) महँदीके पत्ते, सम्हालूके पत्ते, नाजबोके पत्ते, धतूरेके पत्ते, मदारके पत्ते, अरण्डके पत्ते और मकोयके पत्तोंका आध-आध पाव रस तैयार कर लो और सबको मिला लो। इस मिले हुए रसमें आध सेर मीठा तेल मिलाकर पकाओ। जब तेल पकने लगे, उसमे सोयेके बीज १ तोले और अजवायन ६ माशे मिलादो। जब दवा और रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। फिर; पहले अफीम २ माशे मिला दो और फिर कडवी सोरंजान १ तोले मिला दो और तेलको काममें लाओ। इस तेलसे जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है। यह हमारा नहीं—"इलाजुल गुर्बा"के लेखकका परीक्षित नुसख़ा है।

(१७) अदरखका स्वरस १ सेर और मीठा तेल आध पाव मिला कर औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलको गुनगुना-गुनगुना लगानेसे जोड़ोंका दर्द नाश हो जाता है और वायु पच जाती है।

(१८) कुछ केवड़ेके फूल मीठे तेलमें डुबोकर, ४० दिन तक, धूपमे रखो। इसके बाद काममे लाओ। इस तेलके मलनेसे जोड़ोंकी और पीठकी पीड़ा शान्त हो जाती और ढीले जोड़ कड़े हो जाते हैं।

(१९) तितलीके हरे पत्ते १ तोले लेकर ४ तोले मीठे तेलमें डाल कर औटाओ। जब तेलमात्र रह जाय, उतार कर रख लो। फिर आध पाव सूखी तितली एक सेर पानीमे पकाओ। जब आधसेर पानी रह जाय, छान लो। इस पानीमें वही ऊपरका पका हुआ मीठा तेल २ तोले, ३ माशे, चार रत्ती मिलाकर औटालो। जब पानी जल-कर तेल मात्र रह जाय, छानकर रख लो। यही मशहूर "तितलीका तेल" है। यह तेल बदनके झोले और पट्ठोंके लिये अत्युत्तम है। इस

के मलनेसे पीठ और जोड़ोंका दर्द निश्चय ही आराम हो जाता है। लकवे और फालिज—अर्दित और पक्षाघात में भी यह तेल गुणकारी है।

(२०) करंजुआ पानी में औटाकर रोगी को वफारा दो। इस वफारेसे कन्धोकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२१) सिरसके पत्ते, सम्हालू के पत्ते और सहँजने के पत्ते—आध-आध पाव लेकर, दो सेर पानी में औटाओ और वफारा दो। फिर पत्तों को पानीमे से निकालकर रोगी के जोड़ोंपर बाँध दो और उसे हवा से बिल्कुल बचाये रहो। जिसको सर्दी पकड़ लेती है, उसे यह वफारा अच्छा है।

(२२) सम्भालू की पत्ती, सोये के बीज और इस्पन्द—इनको पानी में औटाकर वफारा देनेसे जोड़ोंकी गाँठे खुल जातीं और उनका दर्द मिट जाता है, पर हवासे बचना ज़रूरी हैं।

(२३) धतूरे के पत्ते गरम करके जोडो पर बाँधने से जोड़ों का दर्द मिट जाता है।

(२४) मैदा लकड़ो चन्दनकी तरह पीसकर और गुनगुनी करके बाँधने से पीठ और घुटनों की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२५) नीमकी कोंपल और नीमकी भीतरी छाल पानीमें पीसकर थोड़ेसे पानीमें घोल लो जिससे पतली न हो जाय। फिर उसे निवायी करके घुटने पर लेप कर दो। इससे घुटने की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२६) नरमेकी पत्तियाँ मीठे तेल में पीसकर लगाने से जोड़ों का दर्द तथा घुटने और पैरोंकी उंगुलियों की पीड़ा मिट जाती है।

(२७) बिनौले कूटकर थोड़े से पानी में औटाओ। जब बिनौले गल जायँ, उन्हें पीसकर टिकियासी बना लो और निवायी करके दिनमें दो बार जोड़ या पीठपर बाँधो। इससे कमर, घुटने और जोड़ों का दर्द जाता रहता है।

(२८) गायका ताज़ा गोवर सिरके में मिलाकर पकाओ और दर्द-स्थान तथा सूजनपर बाँध दो। इससे जोड़ोंका दर्द शान्त हो जाता है।

(२६) कनेरकी पत्तियाँ पानी में औटाकर कूट लो और मीठे तेलमें मिलाकर लगाओ। इससे जोड़ों या घुटनोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३०) बकरीकी मेंगनी आध पाव और जौका आटा १ छटाँक इनको सिरके और अरण्डी के तेल में मिलाकर जोड़ोंपर लेप कर दो। इससे घुटनों या जोड़ोंका दर्द शान्त हो जायगा।

(३१) सहँजनेके बीज पानीके साथ पीसकर गरम कर लो। इसका निवाया निवाया लेप करने से घुटनों की पुरानी पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(३२) काँटेदार थूहरको चीरकर, जोड़ों या घुटनोंपर तीन-चार घण्टे बाँधे रहो और नित्य की नित्य ताजा बदल दिया करो। इससे भी घुटनों की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३३) छिले हुए तिल १ तोले, बाबूना १ तोले और रेंड़ीकी गरी ६ माशे—इन तीनोंको पानीमे पीस कर लगानेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिट जाती है।

(३४) सरकण्डे या नरकुल की जड़ और सोंठ—इनको मीठे तेल में पीसकर गुन-गुनी कर लो और निवायी-निवायी दर्द-स्थान पर मलो। इससे भी जोड़ों की पीडा शान्त हो जाती है।

(३५) साबुन और मेंहदीका पत्ती पानीमें पीसकर लेप करनेसे घुटनोंकी पीडा और चूतड़से पैरकी उँगली तकका दर्द आराम हो जाता है।

नोट कोई कोई इनमें इन्द्रायण की जड़ भी मिलाते हैं।

३६) मेंहदीकी पत्ती और अरण्डोकी पत्ती पीसकर और गुन-गुनी करके बाँधनेसे घुटनेकी पीड़ा मिट जाती है।

(३७) सोंठ, कायफल और असगन्ध समान समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके मलनेसे जोड़ोंकी पीड़ा, अगर सर्दीसे होती है, आराम हो जाती है।

(३६) सहँजनेकी पत्तियाँ पानीमें पीसकर और गरम करके निवायी-निवायी लेप करनेसे वात पीड़ा मिट जाती है।

(३६) अजवायन कूट छानकर और शहद मे मिलाकर लेप करने से वात पीड़ा और सूजन नाश हो जाती है।

(४०) मसूर को सिरके मे पीसकर, उसका गुनागुना-गुनगुना लेप करने से एड़ी और तलवे की पीड़ा मिट जाती है।

स्नायु-मण्डल का वर्णन।

पेशियों से शरीर अथवा शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्ग अपना-अपना काम करते हैं और पेशियाँ अपना काम स्नायुओं की सहायता से करती हैं। मतलब यह कि पेशियाँ शरीर को चलाती हैं और पेशियों को यह शक्ति स्नायुओं (Nerves) से मिलती है। हमारा चलना, फिरना, उठना, बैठना, काम करना एवं भूख, प्यास, काम, क्रोध आदि वृत्ति और प्रवृत्ति आदि सब स्नायु-समूह के काम हैं। आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा—ये पाँचों इन्द्रियाँ भी अपने-अपने काम स्नायु-शक्ति से करती हैं। रूपदर्शन, शब्दश्रवण, गन्ध ग्रहण, रसास्वादन और स्पर्शज्ञान आदि सभी कार्य स्नायुओ से होते हैं। आप देखते हैं कि, एक मतवाले हाथी के जैसा बलवान पुरुष अभी-अभी कूद फाँद रहा है, लेकिन उसके सिर मे चोट लगते ही वह मिट्टी के ढेले की तरह ज़मीन पर गिर पड़ता है। उसकी ऐसी हालत क्यो होती है? सिर्फ स्नायु-मण्डल में चोट लगने से। अगर चोट हल्की होती है, तो कुछ देर में उसे होश आ जाता है, पर यदि चोट भारी होती है तो वह बेहोश होकर मर जाता है। इससे साफ मालूम होता है कि, स्नायु-मण्डल ही जीव की चेष्टा और चैतन्यता का मूल आधार है।

स्नायु, सूत्रों की तरह सूक्ष्म, और सफेद रङ्ग के पदार्थ है। ये सारे शरीर में जाल की तरह फैले हुए हैं। एक तिलभर जगह इनसे ख़ाली

नहीं है। आप छोटी अँगुली के पोरवे मे सूई चुभोइये, फौरन दर्द होगा और मस्तिष्क में इसकी ख़बर पहुँचेगी, क्योंकि उस अंगुली से मस्तिष्क तक स्नायु-सूत्रों का सम्बन्ध चला गया है। इसमें सन्देह नहीं कि, सचेतन प्राणियो के चैतन्य सम्पादन के कारण स्वरूप ये स्नायु ही हैं। सुखदुःख, ज्ञान, कार्य में प्रवृत्ति और निवृत्ति के हेतुभूत ये ही हैं।

ये स्नायु मस्तिष्क और पृष्ठवंशीय मज्जा या कशेरुक मज्जा से पैदा होकर समस्त शरीर में फैले हुए हैं। मस्तिष्क से पैदा हुए स्नायु शिरो-मण्डल में फैले हुए हैं और पृष्ठवंशीय मज्जा से पैदा हुए स्नायु हाथ, पाँव और पेट प्रभृत्ति अङ्गों में फैले हुए हैं। दर्शन श्रवण आदि नाना प्रकार के भावों के देह में प्राप्त होने से, उन-उन स्थानों के स्नायु कम्पित होकर, उसी समय तत्काल मस्तिष्क को विकम्पित करते हैं। मस्तिष्क के विकम्पन-भेद से दर्शन और श्रवण आदि भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान का उदय होता है, अतएव मस्तिष्क ही ज्ञान का एकमात्र हेतु है।

आँखों में रूपविशिष्ट पदार्थ का प्रतिबिम्ब या अक्स पड़ने पर, आँख के स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्क को कँपाते हैं, तब दर्शन होता है। यो समझिये कि, जब हम किसी पदार्थ को देखते हैं, तब उसका असर एक नाड़ी द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचता है, तभी हमें रूप का ज्ञान होता है। उसी तरह गन्धविशिष्ट पदार्थ के गन्धाणु जब हमारी नाक से मिलते हैं, तब वहाँ का स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्क को कम्पित करता है, यानी नाक के स्नायुद्वारा उस गन्ध की ख़बर मस्तिष्क को पहुँचती है, तब हमें गन्ध का ज्ञान होता है। इसी तरह रसविशिष्ट द्रव्यके अणु जब रसना या जीभ से मिलते हैं, तब वहाँ का स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्क को कँपाता है, तब हमें स्वाद का हाल मालूम होता है। इसी तरह सर्दी और गरमी प्रभृत्ति गुण युक्त पदार्थों के चमडे से छू जाने पर स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्क को विकम्पित करते हैं, तब स्पर्शज्ञान होता है; यानी मालूम होता है कि यह पदार्थ गरम है या ठण्डा। इसी तरह चीज़ों के आपस में टक्कर खाने से वायु की लहरे उठती हैं। उन लहरों की चोट

कान के चमडे पर पड़ने से, उस स्थान के स्नायु विकम्पित होकर मस्तिष्क को कँपाते हैं, तब हमें शब्दज्ञान होता है ; अतएव इन्द्रियजन्य ज्ञान के हेतु स्नायु ही हैं। इतना ही नहीं, कर्मेन्द्रियों के सञ्चालन कर्त्ता भी स्नायु ही हैं, यानी चलने फिरने आदि कामों के प्रधान कारण भी स्नायु ही हैं। बहुत कहना व्यर्थ है, जीवोंका जीवन ही स्नायुओं से है। जिस अङ्ग के स्नायु का नाश हो जाता है वह मृतकल्प हो जाता है। इसी तरह पक्षाघात आदि असाध्य रोग भी कारण विशेष से हो जाते हैं।

जिस स्नायु मण्डल (Nervous system) पर प्राणी का जीवन-मरण निर्भर है, जिस स्नायु मण्डल की सहायता से मनुष्य देखते, सुनते, चखते और सूंघते हैं, जिस स्नायु मण्डल में विकार हो जाने या किसी नाड़ी के कट जाने से स्तम्भ (Paralysis), पक्षाघात (Hemiplegia), अर्द्धांग (Paraplegia), उरुस्तंभ (Locomotor Ataxy), धनुष्टंकार (Tetanus), अपस्मार मृगी (Epilepsy), योषापस्मार (Hysteria), उन्माद (Delirium), बुद्धिभ्रंश (Insanity), कम्पवात (Chorea), गृध्रसी (Sciatica), मज्जारज्जुदाह (Infantile Paralysis) तन्द्रा (Lethargy or Coma), अर्दित या लकवा (Facial Paralysis), स्नायुशूल (Neuralgia) मस्तिष्कावरण प्रदाह (Cerebral Meningitis) और शिरःपीड़ा या सिरदर्द (Headache) वगेरः भयानक और दुस्साध्य या असाध्य रोग हो जाते हैं, उस स्नायुमण्डल के सम्बन्ध में चिकित्सक को अवश्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। इस एक विषय पर अँगरेज़ी में हज़ार-हज़ार पेज के पोथे लिखे हुए हैं। उतने बिना इसका अच्छाज्ञान हो नहीं सकता और बहुत थोड़ा-सा लिखकर यह अमूल्य विषय समझाना कम-से-कम हमारे लिए अतीव कठिन काम है। स्थानाभाव से इस ग्रन्थ में इस विषय को पूर्णरूप से लिख नहीं सकते। अतः कुछ इधर उधर की जानने योग्य बातें लिख कर ही सन्तोष करगे।

डाक्टर गन साहब लिखते हैं,—"The nervous system consists of the brain, the spinal cord and the nerves" अर्थात् स्नायुमण्डल, वातसंस्थान या नाड़ीमण्डलमें मस्तिष्क, सुषुम्ना और स्नायु शामिल हैं; अतः हम इन्हीं तीनो के सम्बन्ध में संक्षेप से लिखेंगे।

मस्तिष्क-वर्णन।

कोई लिखते हैं, करोटि गह्वर की हड्डी की कठिन दीवार के भीतर "मस्तिष्क" रहता है। कोई लिखते हैं, आठ हड्डियों से बना हुआ कपाल नामक कोठा है, उस कोठे के भीतर "मस्तिष्क" रहता है। यह किसी क़द्र अण्डे की शकल का होता है। इसके भीतर का हिस्सा ठीक अख़रोट के गूदे के जैसा दीखता है। इसका पीछे का भाग अगले भाग की अपेक्षा ज़ियादा चौड़ा और मोटा होता है। सामने से पीछे तक, इसकी लम्बाई साढ़े छै इञ्च, एक कान से दूसरे कान तक की चौड़ाई साढ़े पाँच इञ्च और मुटाई ऊपर से नीचे तक पाँच इञ्च होती है। इसका वज़न जवान आदमियों में—पन्द्रह से लेकर उनचास वर्ष की उम्र तक—प्रायः डेढ़ सेर होता है। औरतों का मस्तिष्क मर्दों की अपेक्षा प्रायः अढ़ाई छटाँक कम होता है।

कोई समझने के सुभीते के लिये मस्तिष्क के चार प्रधान भाग मानते हैं :—

(१) वृहत् मस्तिष्क।
(२) लघु मस्तिष्क।
(३) सीता
(४) मातृका मूलाधार

कोई कहते हैं, वृहत् मस्तिष्क, क्षुद्र मस्तिष्क और चतुष्कोण मज्जा—इन तीन विभागो से ही समझने में सुभीता होता है।

वृहत् मस्तिष्क।

मस्तिष्क के सब भागों में वृहत् मस्तिष्क ही सबसे बड़ा है। इस का वज़न ४६ से ५३ औन्स यानी तेईस छटाँक या २६ छटाँक के क़रीब माना जाता है। यह स्नायुमय पिण्ड पदार्थ अण्डे के जैसा होता है। वृहत् मस्तिष्क का रङ्ग धूसर होता है। इसकी पीठ पर घाइयाँ पड़ी रहती हैं, जिनकी वजह से इसमें कहीं गहराई और कहीं उभार होता है। जिस तरह खेत में हल चलाने से नालियाँ सी बन जाती हैं और नालियों के बीच में मिट्टी की मेंड़ें होती हैं; उसी तरह वृहत् मस्तिष्क में बहुत सी गहराइयाँ या नालियाँ होती हैं और इन नालियों के बीच में मस्तिष्क के हिस्से उभरे हुए से रहते हैं। मस्तिष्क की घाइयों को "सीता" कहते हैं और दो सीताओं के बीच के उभरे हुए भागों को "काकाङ्ग" कहते हैं। मस्तिष्क के भार का तो बुद्धि से सम्बन्ध नहीं है, पर इन सीताओं की गहराई का बुद्धि से सम्बन्ध है। बुद्धिमानों के मस्तिष्कों में सीताएं मूर्खों के मस्तिष्कों की अपेक्षा अधिक गहरी होती हैं।

वृहत् मस्तिष्क के दो टुकड़े होते हैं। इन दोनों टुकड़ों के बीच में एक दरार या फाँक होती है। इस दरार के इधर-उधर के भागों को गोलार्द्ध (Hemispheres) कहते हैं। एक को दाहिना और दूसरे को बायाँ गोलार्द्ध कहते हैं। हरएक गोलार्द्ध भीतर से पोपला होता है। मतलब यह, कि वृहत् मस्तिष्क में दो कोठे होते हैं। एक दाहिना और दूसरा बायाँ। ये कोठे टेढ़े तिरछे होते हैं। दोनों कोठों में ज़रासा तरल रहता है। कुछ रोगों मे यह तरल अधिक बनता है। अधिक तरल के दबाव से कोठे फैलकर बडे हो जाते हैं। इस तरल से मस्तिष्क भी बड़ा हो जाता है, परन्तु उसको भारी हानि पहुँचाती है। ऐसे रोगी महा मूढ़ होते या हो जाते हैं।

वृहत् मस्तिष्क को सम्मुख मस्तिष्क भी कहते हैं। यह मस्तिष्क ही मनुष्य के ज्ञान, बुद्धि और धर्माधर्म का प्रधान पथ है। केवल जीवन-रक्षा के लिये ही इसकी दरकार नहीं है, क्योंकि अनेकों छोटे जीव ऐसे

देखने में आते हैं, जिनके मस्तिष्क नहीं है, पर वे जीते रहते हैं। जिन प्राणियों के मस्तिष्क है वे सभी बुद्धिमान हैं और जिनका जैसा मस्तिष्क है, वैसी ही उनकी बुद्धि भी है। मस्तिष्क से बुद्धि की कमी-बेशी देखी जाती है। मत्स्य और साँप बिच्छू प्रभृत्ति प्राणियों में बहुत थोड़ी स्वाभाविक बुद्धि होती है; पर वे अपनी उतनी ही सहज बुद्धि से अपनी रक्षा करते, अपने रहने के स्थान बनाते और अपनी जीविका उपार्ज्जन कर लेते हैं। सहज बुद्धि का प्रधान लक्षण यह है, कि जन्म लेने के समय जिस जाति के जीवों में जितनी बुद्धि होती है, उसी के अनुसार उस जाति के जीव सब एक ही तरह का काम करते हैं। मधुमक्खियों के छत्तों और पखेरुओं के घोंसलों की रचनाशैली प्राचीन काल से या सदा से एक ही तरह की देखी जाती है; किन्तु ऊँचे दर्जे के पक्षियों की बुद्धि इनकी अपेक्षा मार्जित होती है। वे विशेष खोजसे अच्छे-अच्छे स्थानो मे उत्तम पदार्थों के द्वारा अपने रहने के स्थान या घोंसले बनाते हैं। इनसे भी ऊँचे दर्जे के पक्षियों की स्मरणशक्ति का यथेष्ट परिचय मिलता है। तोता, मैना और काकातुआ प्रभृत्ति मनुष्यों के मुँह से निकले हुए वाक्यों और शब्दों को सुनकर याद रखते और उनको वैसे-का-वैसा उच्चारण करते हैं। स्तन पीनेवाले जीव औरभी अधिक बुद्धिमान होते हैं। घर में पाली हुई गाय भैंस आदि की स्मरण शक्ति और अपने पालनेवाले के प्रति स्नेह के बहुत से प्रमाण मिलते हैं। हाथी, घोड़ा और कुत्ता ये तीन प्राणी अतिशय बुद्धिमान होते हैं। इन तीनों जीवों की प्रभुभक्ति उपस्थित-बुद्धि, स्मरणशक्ति, स्नेह, दया, ममता और तर्क-शक्ति आदि गुणों की प्रशंसा में संसार में अनेक किम्बदन्तियाँ सुनी जाती हैं। बन्दर और बनमानुष ये दोनों प्राणी मनुष्य को छोड़कर और सभी प्राणियों से अधिक बुद्धिशाली हैं। इसी से हर्बर्ट स्पैन्सर महाशय मनुष्य को बन्दर की औलाद कह गये हैं। इनमे से अन्त के कई प्राणियों का मस्तिष्क बड़ा और सुगठित होता है।

सभी प्राणियों में मनुष्य का मस्तिष्क जैसा उन्नत देखा जाता है वैसा और किसी भी प्राणी का नहीं । मनुष्य मस्तिष्क के द्वारा स्पर्श का ज्ञान अनुभव करते हैं । देखने, सुनने और सूँघने आदि के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसे याद रखते हैं और आगे चलकर, समय आने पर, उसे प्रकाशित भी करते हैं । मस्तिष्क के द्वारा ही मनुष्य तर्क या विचार करते हैं और अपने काम सिद्ध करने के लिये नये नये उपाय करते हैं । मस्तिष्क के द्वारा ही वे दया, स्नेह, भक्ति और आत्मज्ञान प्रभृत्ति की प्राप्ति कर सकते हैं ।

मस्तिष्क की उन्नति के साथ ही बुद्धि की वृद्धि होती है ; यानी ज्यों-ज्यों मस्तिष्क बढ़ता है त्यों-त्यों बुद्धि बढ़ती है । बचपन में मनुष्य का मस्तिष्क छोटा होता है, अतः उसकी बुद्धि भी अल्प होती है । फिर ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है त्यों-त्यों मस्तिष्क बढ़ता है । उसके साथ ही ज्ञान और बुद्धि प्रभृत्ति भी बढ़ने लगते हैं । अधिक उम्र में भी जिनका मस्तिष्क छोटा होता है, वे नितान्त मूर्ख होते हैं ; किन्तु छोटी उम्र में ही जिनका मस्तिष्क बड़ा होता है, वे उस समय ही बुद्धिमान होते हैं । संसार मे जितने मनुष्य अधिक बुद्धिमान और विद्वान् हुए हैं उन सबका मस्तिष्क बड़ा और वज़नी था ।

मस्तिष्क हमारे सभी कार्य्यों का आधार है, इसमें तो सन्देह नहीं ; पर मस्तिष्क द्वारा ये सब काम किस तरह सम्पन्न होते हैं, इसका अभीतक ठीक-ठीक निश्चय नहीं हो सका । मस्तिष्क के साथ मन का क्या सम्बन्ध है, यह बात भी अच्छी तरह से अभीतक जानी नहीं गई । पर इतना मालूम होता है कि, मस्तिष्क ही मन का आधार है ।

पहले लिख आये हैं कि, मतवाले हाथी के समान बलवान मनुष्य के सिर में अगर मामूली सी चोट लग जाती है, तो वह निर्जीव जड़ माँस-पिण्ड की तरह ज़मीन पर गिर पड़ता है । इस हालत में वह प्राणशून्य मुर्दे के समान मालूम होता है, पर सेवा-शुश्रूषा करने से वह फिर होश

मे आ जाता है। उत्कट मनोवेग या दुर्गन्ध से भी कोई-कोई स्नायुविक प्रकृतिवाले मनुष्य बेहोश होकर गिर पड़ते हैं। मनके साथ शरीर का कितना सम्बन्ध है, इससे यह बात जानी जा सकती है। इससे यह भी जान पड़ता है, कि शरीर अर्थात् पेशियाँ सब मनके अधीन हैं, पर थोड़ा ही विचार करने से यह बात ग़लत मालूम होगी।

मान लो किसी की पीठ या पीठ के बाँसे में किसीने छुरी मारी। इस से उस के मेरुदण्ड के दो टुकड़े हो गये, पर शरीर के बाक़ी यंत्र ज्योंके त्यो हैं; उसका मन भी जैसे का तैसा है। मेरु-दण्ड कट जाने से वह केवल सीधा खड़ा नहीं हो सकता। उसकी दोनों पैरो की अनुभव करने की शक्ति भी जाती रही, इसलिये वह अपनी इच्छा के अनुसार अपने नीचे के अंगो को चला नहीं सकता अथवा वहाँ की पेशियों को सुकेड़ और फैला नहीं सकता। इस से जान पड़ता है, कि इस अवस्था मे नीचे के अंगोपर उसके मनकी क्षमता नहीं रही। विचारकर देखोगे, तो मालूम होगा कि मस्तिष्क ही सब तरह की अनुभूति शक्ति और मानसिक कार्यों का आधार है और इच्छानुसार काम करनेवाली पेशियाँ सब तरह से मस्तिष्क के अधीन हैं, सुतरां मस्तिष्क ही मनका आधार है।
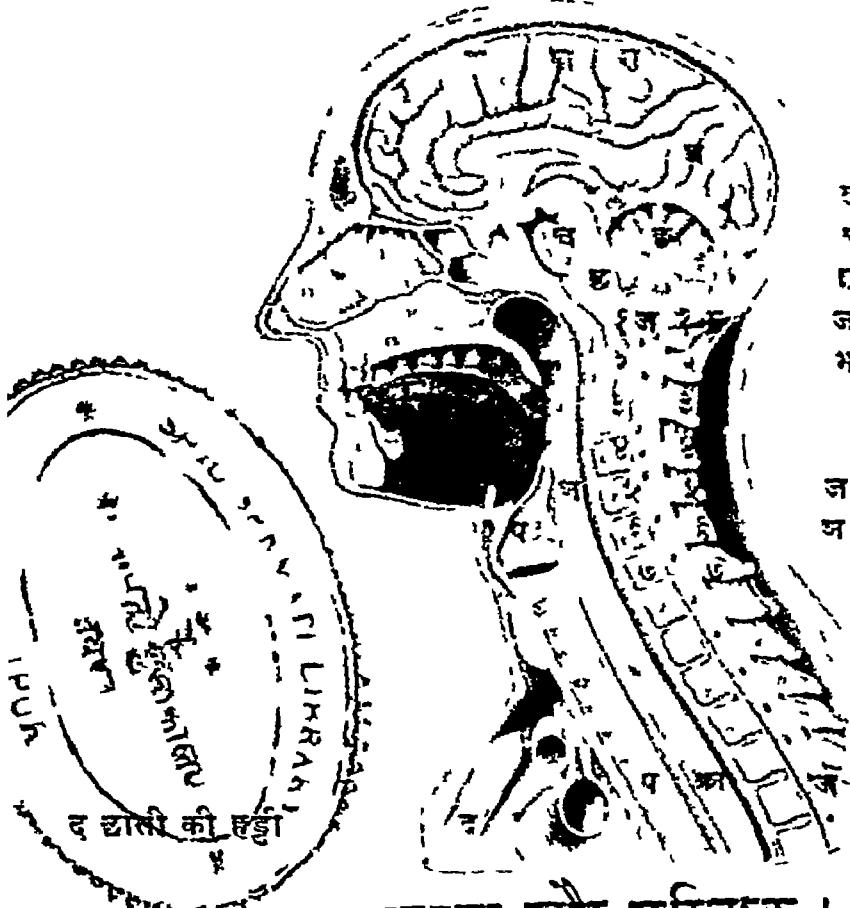
मस्तिष्क के भिन्न-भिन्न अंशों के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। स्मरणशक्ति, विचारशक्ति, धर्मप्रवृत्ति आदि प्रत्येक मानसिक वृत्ति का मस्तिष्क में निर्दिष्ट स्थान है। सभी मनुष्योंकी जन्म से भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं। प्रायः देखा जाता है, कि स्कूल में कोई बालक अंक गणित में मन लगाता है, कोई कविता में, कोई संगीत मे और कोई बचपन से ही बुरे कर्मों में लग जाता है। कोई छोटी उम्र से ही सुकर्म की ओर प्रवृत्त हो जाता है। मतलब यह है, कि मनुष्य में साधुता, दुर्जनता, नम्रता, उद्धतता, दयालुता, निर्दयता, मूर्खता और प्राज्ञता आदि गुण-अवगुण जो इस जीवन में आते हैं, वे सब मस्तिष्क के स्थान विशेष पर निर्भर हैं। जिस के मस्तिष्क का जौनसा

अंश बड़ा होता है, उसी स्थान के गुण से वह विशेष गुणी होता है और जिस के मस्तिष्क का जौनसा अंश क्षीण या छोटा होता है, उसी स्थान के गुण से वह रहित या हीन हो जाता है। कौनसी वृत्ति का कोनसा स्थान है, यह अभीतक ठीक तरह से निश्चय नहीं हो सका। अब तक इतना ही निश्चय हो सका है, कि मनोवृत्तियाँ मस्तिष्क के भिन्न-भिन्न स्थानो से उत्पन्न होती हैं।

लघु मस्तिष्क।

लघु मस्तिष्क वृहत् मस्तिष्क से बहुत छोटा होता है। यह मस्तिष्क के पीछे का भाग है, इसेलिये इसे "पश्चात् मस्तिष्क" भी कहते हैं। असल में यह वृहत् मस्तिष्क के नीचे रहता है। यह एक साधारण मीटे नीबू के समान होता है। इसकी पीठपर भी खाइयाँ होती हैं, पर इसकी खाइयाँ वृहत् मस्तिष्क की खाइयो से भिन्न प्रकार की होती हैं। ये वृहत्मस्तिष्क की खाइयों—सीताओं से अधिक गहरी, पास-पास और अधिक समांतर होती हैं। इस में भी वृहत्मस्तिष्क की तरह बाहर का भाग धूसर वर्ण और भीतर का सफेद होता है। धूसर भाग सेलो से और सफेद भाग सूत्रों से बनता है। इस मस्तिष्क के द्वारा समस्त वेगोत्पादक स्नायुओ का कार्य आरम्भ होता है। यहाँ से केन्द्र-विमुख आज्ञाएं बाहर होकर, वेगोत्पादक स्नायुओं के भीतर जाकर, हाथ पाँव चलानेका काम करती हैं। इसके सिवा किस पदार्थ के उठाने में कितनी ताक़त लगेगी, यह भी इसी भाग के द्वारा स्थिर होता है। कोई-कोई पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं, कि इस लघु मस्तिष्क से ही काम-प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। जिन प्राणियों का लघु मस्तिष्क बड़ा होता है, वे अतिशय कामी होते हैं। कह नहीं सकते, यह बात कहाँ-तक ठीक है।

क ख ग घ बृहत्मस्तिष्क।
ङ लघु मस्तिष्क।
च सेतु।
छ सुषुम्नाशीर्षक।
ज कशेरुक नली। भीतर सुषुम्ना।
झ जिन स्थानों पर दोनों तरफ
१ से ७ प्रभृति अंक लिखे
हैं, उन्हें कशेरु कपाटक कहते हैं
ज कशेरुक नली है।
ञ भोजन की नली, इसमें होकर
खाना जाता है।

प साँसनली।

सुषुम्ना और मस्तिष्क।

इस चित्रमें मस्तिष्क, मेरुदण्ड, कशेरुक नली, नाक, दाँत, खाने और साँस लेने की नली वगैर. दिखाई गई है। ये सब अंग सिर और गर्दन को लम्बाई की ओर से, यानी लम्बा-लम्बी, चीरकर दिखाये गये हैं।

क ख ग घ जिस स्थान पर लिखे हैं, उसे 'बृहत्मस्तिष्क" कहते हैं। जहाँ ङ लिखा है, उसे 'लघु मस्तिष्क' कहते हैं। जहाँ च लिखा है, उस जगह को 'सेतु या पुल' कहते हैं, यहीं दाहनी ओर के स्नायु (Nerves) बाईं तरफ और बाईं तरफ के दाहनी तरफ जाते हैं। जहाँ छ लिखा है, उस जगह को "सुषुम्ना शीर्षक" (Medulla Oblongata) कहते हैं। इस जगह से ही सुषुम्ना (Spinal Cord) का आरंभ होता है। खोपडी की तली के पिछले भाग में एक महा छिद्र होता है, कशेरुक नली इसी जगह खोपड़ी के कोठे से मिली रहती है। जिस जगह ज लिखा है, वहाँ से कशेरुक नली (Spinal canal) आरंभ होती है। इसी नलीके भीतर 'सुषुम्ना' रहती है। यह भी याद रखो, सुषुम्ना शीर्षक मस्तिष्क और सुषुम्ना को जोड़ता है। इसी जगह साँस और हृतपिण्ड चलाने की कल है। इस में ज़रा सी भी चोट लगने से हार्ट फेल हो जाता (Heart fail) और नाड़ी तथा साँस बन्द हो जाते हैं।

(पृष्ठ ३८३)

चतुष्कोण मज्जा।

मस्तिष्क से मिला हुआ, नीचे की तरफ, एक चतुष्कोण अंश है, यह मेरुदण्डीय मज्जा के ठीक ऊपर अवस्थित है। इसी का नाम "चतुष्कोण मज्जा" है। मेरुदण्डीय मज्जा की तरह, इसके भीतर होकर स्पर्श-बोधक भाव बाहर से भीतर और भीतर से बाहर जाते हैं। इस विषय में मेरुदण्डीय मज्जा सीढ़ी स्वरूप है। मस्तिष्क ऊपर के घर की तरह है और चतुष्कोण मज्जा सीढ़ी लगाकर उस घर में चढ़ने का सबसे ऊंचा स्थान है। जिस क्रियाके द्वारा हम सदैव साँस लेते हैं, उसका प्रधान स्थान चतुष्कोण मज्जा ही है। चतुष्कोण मज्जा में से एक स्नायु बाहर निकलकर फुफ्फुस में गया है। जब प्रश्वासको छोड़-कर फिर से निश्वास लेना आरम्भ किया जाता है, तब वायु के अभाव से जो उत्तेजना होती है, वह चतुष्कोण मज्जा में प्रतिफलित होकर, उक्त स्नायु के भीतर जाकर फुफ्फुस में गमन करती है और तब निःश्वास खींचने की इच्छा होती है। इसलिये चतुष्कोण मज्जाके जिस अंश मे यह स्नायु प्रकट हुआ है, वहाँ एक सूई से छिद् जाने पर भी तत्काल प्राणोंका संहार हो सकता है। इसी कारण प्रकृतिने इस स्थानको ऐसा सुरक्षित बनाया है, कि जिस से सहसा इस में कष्ट न हो।

सुषुम्ना।

यह वात संस्थान या नाड़ी मण्डल का वह भाग है, जो कपाल के महा छिद्र से शुरु होता और कशेरुक नली में, पहले कटी कशेरुका के गात्र के नीचे के किनारे तक या दूसरे कटी कशेरुका के गात्र के ऊपर के किनारे तक रहता है।

सुषुम्ना की लम्बाई मर्दों में १८ इञ्च के क़रीब और औरतोंमें कोई १७॥ इंच होती है। सुषुम्ना ;कुछ कुछ बेलन के से आकार की और

रस्सी के जैसी होती है। दो स्थानों में शेष स्थानों की अपेक्षा यह अधिक मोटी होती है :—

(१) गर्दन में। गर्दन के तीसरे कशेरुक से वक्ष या छाती के पहले कशेरु तक। यहाँ उसकी परिधि डेढ़ इंच और व्यास आधे इंच के क़रीब होता है; इस भाग से ऊर्ध्व शाखा-सम्बन्धी नाड़ियाँ निकलती हैं।

(२) छाती के नौवे कशेरुक से बारहवें कशेरुक के सामने। यहाँ उस की परिधि सवा इंच और व्यास आध इंच से कम होता है। यहाँसे अधो शाखा की नाड़ियाँ निकलती हैं। वक्ष के १२ वें कशेरुका के नीचे सुषुम्ना पतली और शंकाकार हो जाती है। शंकु की चोटी कटि के पहले या दूसरे कशेरु के सामने रहती है। यह सुषुम्ना का अन्तिम भाग है।

सुषुम्ना का रंग बाहर से सफेद होता है, जबकि मस्तिष्क का बाहर से धूसर और भीतर से सफेद होता है। मतलब यह है, कि सुषुम्ना में मस्तिष्क का उलटा होता है, यानी सफेद पदार्थ बाहर और धूसर उसके भीतर रहता है। धूसर भाग में सेलें और सफेद में सूत्र होते हैं।

इस सुषुम्ना से नाडियो के ३१ जोडे निकलते हैं और मस्तिष्क से १२ जोड़ें निकलते हैं। मस्तिष्क से जो २४ नाडियाँ निकलती हैं, वे शिरोमण्डल में जातीं और अपने काम करती हैं। इसी तरह सुषुम्ना से जो ६२ नाडियाँ निकलती हैं, वे सारे शरीर में फैलकर अपना काम करती हैं।

मस्तिष्क से जो बारह जोड़े नाड़ियो के लगे रहते हैं, उनमें से पहले जोड़े की नाड़ियो का घ्राण से सम्बन्ध है, दूसरे जोडे की नाड़ियों का दृष्टि से, तीसरे जोड़े की नाड़ियों का नेत्रों को चलानेवाली शक्ति से, चौथे जोडे की नाड़ियों का नेत्र गति से सम्बन्ध है और पाँचवें जोड़े की नाड़ियाँ मस्तिष्क नाड़ियों में सबसे बडी होती हैं। छठे

जोड़े की नाड़ियों का नेत्र गति से सम्बन्ध है। सातवें जोड़े की नाड़ियों का चेहरे की पेशियों की गति से सम्बन्ध है। आठवें जोड़े की नाड़ियो का सुनने से सम्बन्ध है। नवें जोड़े की नाड़ियों का जीभ और कंठ से सम्बन्ध है। दसवें जोड़े की नाड़ियों का स्वरयन्त्र, फुफ्फुस, हृदय, आमाशय, आँतों और यकृत आदि से सम्बन्ध है। ग्यारहवें जोड़े की नाड़ियाँ जीभ की पेशियों में जाती हैं। बारहवें जोड़े की नाड़ियाँ जीभ के नीचे रहती हैं। कदाचित ये साँस को सम्हालती हैं।

दो तरह की नाड़ियाँ।

जिन नाड़ियों का पेशियों की गति से सम्बन्ध है, वे गति-सम्बन्धी या चालक नाड़ी हैं। जैसे—जिन नाड़ियों द्वारा आँखों की पेशियों को गति करने की आज्ञा मिलती है वे चालक नाड़ियाँ हैं। जब हम आँख को इधर-उधर घुमाते हैं, इनका काम पड़ता है।

जिनका चेतना या संवेदना से सम्बन्ध है, वे सावेदनिक नाड़ी हैं। जब हम कोई चीज़ देखते हैं, तब जिस नाड़ी द्वारा प्रकाश का असर मस्तिष्क को पहुँचता है, उसे साँवेदनिक नाड़ी कहते हैं।

इन दोनों तरह की नाड़ियो में से कुछ तो केवल सावेदनिक (Sympathetic) हैं। उनका गतिसे कोई सम्बन्ध नहीं है। जैसे,—घ्राण नाड़ी, दृष्टि नाड़ी और सुनने की नाड़ी। कुछ केवल गति से सम्बन्ध रखती हैं यानी चलाती हैं। जैसे—तीसरी, चौथी, छठीं, ग्यारहवीं और बारहवीं नाड़ी। बाक़ी चार मिश्रित हैं, यानी सावेदनिक भी हैं और चालनी भी।

खुलासा यह है कि मस्तिष्क में जो नाड़ियो के बारह जोड़े हैं, उनमें से कुछ नाड़ियाँ सांवेदनिक और कुछ चालनी कहलाती हैं। जिन नाड़यों से पेशियो को गति करने या चलने की आज्ञा होती है, वे चालनी

या मोटर (Motor) नाड़ियाँ हैं और जिनमें रूप और गन्ध प्रभृति का ज्ञान होता है, वे सावेदनिक या सिम्पैथैटिक (Sympathetic) हैं।

जिस तरह मस्तिष्क से बारह जोड़े नाड़ियों के लगे हुए हैं; उसी तरह सुषुम्ना से इकत्तीस जोड़े लगे हुए हैं। इन सभी का सम्बन्ध आपस में लगा हुआ है। आप इन नाड़ियों को बिजली के तार समझें और मस्तिष्क को मुख्य तार-स्टेशन समझें, अथवा मस्तिष्क को शरीर का राजा समझें और इन नाड़ीरूपी तारों को मस्तिष्कराज के दूत समझे। मस्तिष्कराज अगर शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों को कोई आज्ञा भेजते हैं, तब इन्हीं नाड़ीतारों द्वारा भेजते हैं और अगर शरीर के अङ्ग मस्तिष्कराज तक कोई खबर भेजते हैं या कोई बात पूछना चाहते हैं, तो वे भी इन्हीं नाड़ीतारों से काम लेते हैं। मतलब यह है कि अंगरेज़ महाराज का काम जिस तरह बिजली के तारों से चलता है; उसी तरह शरीर के राजा मस्तिष्क का काम भी इन्हीं नाड़ीतारों से चलता है। जिस तरह देहलीवाले बड़े लाट साहब को कोई नया ज़रूरी हुकम अपने नीचे के प्रान्तीय लाटों को देना होता है, तो वे बिजली के तारों से भेजते हैं और छोटे लाटों को कोई आज्ञा या सलाह लेनी होती है, तो वे भी इन्हीं बिजली के तारों से बात करते और पूछ लेते हैं।

भारतवर्ष के राज्य का सैन्टर या केन्द्र इस समय देहली है। वहाँ से जो तार भिन्न-भिन्न स्थानों को चलते हैं, उन्हें केन्द्रत्यागी (Centrifugal) कहते हैं और जो तार भिन्न-भिन्न स्थानों से दिल्ली केन्द्र को बड़े लाट के पास जाते हैं, उन्हें केन्द्रगामी (Centripetal) कहते हैं। मतलब यह है, कि दो तरह के तार होते हैं :—(१) बड़े लाट के पास से चलनेवाले, और (२) बड़े लाट के पास पहुँचनेवाले। बड़े लाट का स्थान सैन्टर या केन्द्र है, इसलिये वहाँ से नीचे के अफसरों के पास जानेवाले तार केन्द्रत्यागी कहलाते हैं और अफसरों के पास से बड़े लाट के पास पहुँचनेवाले केन्द्रगामी कहलाते हैं। ठीक यही बात इस मानव शरीर में है। इसमें भी दो तरह के तार हैं—(१) एक वह जिनके

द्वारा मस्तिष्क की आज्ञाएँ शरीर के दूसरे अङ्गों में पहुँचती हैं, और (२) दूसरे वह जिनके द्वारा शरीर के अङ्गो की ख़बरें मस्तिष्क तक पहुँचती हैं। सब जगह को तार मस्तिष्क से चलते और सब जगहों के तार मस्तिष्क को आते हैं, इसलिये मस्तिष्क शरीर का केन्द्र या सैन्टर है। मस्तिष्क से चलनेवाले तार "केन्द्रत्यागी" और यहाँ आने-वाले तार "केन्द्रगामी" कहलाते हैं।

जो तार मस्तिष्क और सुषुम्ना से आरम्भ होकर शरीर के दूसरे अङ्गों को जाते हैं, वे "केन्द्रत्यागी" होते हैं। ये ही मस्तिष्क की आज्ञाओं को शरीर के अन्यान्य अङ्गों में पहुँचाते हैं। ये तार गति उत्पादक होते हैं ; यानी इनसे इष्टगति उत्पन्न होती है। हम पहले लिख आये हैं कि दो तरह की नाड़ियाँ होती है :—(१) संविदनिक (Sympathetic), और (२) चालनी या गति उत्पादक (Motor)। उनमें से इन केन्द्रत्यागी (मस्तिष्क से चलनेवाले) तारों को ही मोटर नर्भ (Motor nerve) या गति उत्पादक नाड़ी-तार समझना चाहिये।

ये केन्द्रत्यागी तार मांस और ग्रन्थियों में जाते हैं। जब नाड़ी तार मांस मे पहुँचता है, तब उसके तार अलग-अलग हो जाते हैं। प्रत्येक माँस-सेल को एक सूक्ष्म तार जाता है। जब हम हाथ उठाना चाहते हैं, तब हमारा मस्तिष्क नाड़ियोंद्वारा हाथ की विशेष पेशियों को—जिनका उस गति से सम्बन्ध होता है—सुकड़ने और फैलने की आज्ञा देता है। तारों की सूक्ष्म शाखाओंद्वारा यह आज्ञा प्रत्येक सेल को मिलती है। सब सेलें उस आज्ञा के अनुसार सिकुड़ती और फैलती है और इस तरह चाही हुई गति पैदा होती है।

शरीर में गति भी दो तरह की होती हैं। एक हमारी इच्छा से सम्बन्ध रखती है और दूसरी से हमारी इच्छा का कोई सम्बन्ध नहीं। एक का सम्बन्ध ऐच्छिक मांस पेशियो से हैं और दूसरी का अनैच्छिक—हृदय-धमनी वगैरः से है। अनैच्छिक मांस की गति अपने-आप होती रहती है। ज़रूरत के माफ़िक़ मस्तिष्क से आज्ञाएं आती रहती हैं और वह अपना

काम सुचारु रूप से करना रहता है। सर्दी से रोंगटे खड़े होना, दिल का धड़कना और धमनी का फड़कना वगैरः अनैच्छिक गतियाँ हैं।

यहाँ तक हमने केन्द्रत्यागी यानी मस्तिष्क से शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्गों में जानेवाले तारों के सम्बन्ध में कहा : अब केन्द्रगामी या मस्तिष्क में आनेवाले तारों की बात भी सुनिये। इन तारों द्वारा शरीर के विविध भागों से सूचनाएं मस्तिष्क तक पहुँचती हैं। जब आप के हाथ में काँटा चुभता है या आप को बिच्छू काटता है, तब इन बातों की खबर मस्तिष्क तक इन्हीं केन्द्रगामी तारों द्वारा पहुँचती है। इसी तरह जब प्रकाश की किरणें आँख के भीतरी पर्दे पर पड़ती हैं, तब इन किरणों से इस पर्दे पर प्रभाव पड़ना या भावान्तर होता है। उसकी सूचना मस्तिष्क को इन्हीं तारों द्वारा पहुँचती है। जिस तरह बिजली के तार के खराब हो जाने या कट जाने से एक जगह की खबरें दूसरी जगह नहीं पहुँचतीं, उसी तरह जब किसी अङ्ग के केन्द्रगामी तारों में कोई विकार हो जाता है या वे कट जाते हैं, तब उस अंग से मस्तिष्क तक सूचना नहीं पहुँचती। ऐसा बहुधा उपदंश या कोढ़ में होता है।

डाक्टर गन महाशय कहते हैं, कि समस्त स्नायविक शक्तियाँ मस्तिष्क से पैदा होतीं और उसीमें रहती हैं। मस्तिष्क स्नायुमय पिण्ड पदार्थ है। यह स्नायुसमूह से बना हुआ है। मस्तिष्क मानसिक या दिमागी कार्य्यों का स्थान और मन का आश्रयस्थल है। स्नायु मस्तिष्क से निकलते और उसकी आज्ञाओं को शरीर के हर भाग में पहुँचाते हैं। टेलिग्राफ के तारों की तरह, मस्तिष्क से स्नायुओं की शाखा-प्रशाखाएं निकलकर शरीर के हर भाग को स्नायविक शक्ति पहुँचाती हैं। जिन्दगी क़ायम रखने के लिये, इस स्नायविक शक्ति का शरीर के अंगों से लाज़िम मलज़ूम या शीरोशकर का सा-रिश्ता या सम्बन्ध है। मस्तिष्क के समस्त अंग जीवन-सम्बन्धी बड़े-बड़े काम करते हैं।

मस्तिष्क और पृष्ठवंशीय मज्जा या सुषुम्ना से स्नायुओं के जोड़े

के जोड़े निकल निकलकर शरीर के प्रत्येक भाग में जाते हैं। स्नायुओं का एक-एक जोड़ा कशेरुक मज्जा के एक एक अंश में शामिल है ; इस जोड़े में से एक दर्शन श्रवण प्रभृत्ति इन्द्रिय-सम्बन्धी ज्ञान में सहायता देता और दूसरा हरकत करने में मदद देता है ; अर्थात् एक से हमें इन्द्रियों के विषयों का ज्ञान होता और दूसरे से हम चल फिर सकते और अपने अङ्गों को हिलाडुला सकते हैं। एक इल्म-ए-हिस्स या इन्द्रियजन्य ज्ञान का ज़रिया है और दूसरा हरकत या गति का। एक मस्तिष्क के विचारों को शरीर के अन्यान्य भागों में ले जाता और उन भागों के समाचार मस्तिष्क तक पहुँचाता है। दूसरा मांसपेशियों या पट्ठों को हरकत करने की आज्ञा और शक्ति प्रदान करता है। बदन के हर हिस्से के दर्म्यान ये स्नायु ही मिडियम या कारिन्दे हैं ; यानी इनके ज़रिये से ही बदन का हर हिस्सा हर दूसरे हिस्से से राहोरस्म या मुबादला-ए-ख़यालात रखता है। इनके द्वारा ही मस्तिष्क शरीर के दूसरे भागों की ख़बरें पाता, उनपर शासन करता और उन्हें अपने अधीन रखता है। टेलिग्राफी और नरवस सिस्टम (स्नायु मण्डल) का मुकाबला करने से ऐसा जान पड़ता है, मानों शरीर में फैले हुए स्नायु 'तार' हैं और मस्तिष्क 'तार-घर' है। जीवन-कार्य चलने के समय में, इस तार घर से सिस्टम के समस्त भागों को संवेदना और गति या हरकत-सम्बन्धी आज्ञायें लगातार जाती रहती हैं। जब कि चोट लग जाती है या और कोई कारण उपस्थित हो जाता है, तब स्नायु बहुधा अपना जिस्म को सहारा देनेवाला बरक़ी या वैद्युतिक अर्क—जो उन्हें मस्तिष्करूपी बिजली के बैटरी से मिलता है—पहुँचाना बन्द कर देते हैं। उस समय मस्तिष्क, या इच्छा, मस्तिष्क की मार्फ़त शासन कार नहीं कर सकता। ऐसे मौक़े पर चेतनाशक्ति और गति नष्ट हो जाती है। खुलासा यह है, कि स्नायु मण्डल को शरीर के सञ्चालन करने की ताक़त मस्तिष्क से मिलती है। मस्तिष्क उस ताक़त का भाण्डार है। अगर किसी नस के कट जाने या चोट खा जाने से उस नस का सम्बन्ध मस्तिष्क

से नहीं रहता, तो इस दशा में उस नस को और नसों—स्नायुओं—द्वारा मस्तिष्क की वह ताक़त नहीं मिलती। उस ताक़त के बिना वह स्थान चेतना-विहीन सूना हो जाता है। वह न तो हिलता-डोलता है और न वहाँ छूने या चुटकी भरने प्रभृति से कुछ मालूम होता है। आप की भुजा या टाँग जब कभी सो जाती है, तब यह अवस्था होती है। यह अवस्था इसलिये होती है, कि शरीर के उस भाग की स्नायु (Nerve) पर दवाव पड़ता है। दवाव के कारण राह रुक जाती है। राह रुक जाने से उसमें स्नायविक शक्ति का आना बन्द हो जाता है। पर ज्योंही आप उस अङ्ग से दवाव को हटा देते हैं, त्योंही स्नायविक शक्ति फिर नसो में वहने लगती है। उस शक्ति के उस स्थान की स्नायु में आने से चेतना और गतिशक्ति आहिस्ता-आहिस्ता वापस आ जाती हैं; यानी वह अंग फिर गति या हरकत करने लगता है तथा उसे सुख-दुःख और गरमी सर्दी आदि का अनुभव होने लगता है।

मस्तिष्क की इस वरक़ी या विजली की ताक़त के शरीर में चक्कर खाने या चारों तरफ सञ्चार करने से सवेदना-चेतना और इच्छानुसार गति ये ही काम नहीं होते, वल्कि वे सब काम भी होते हैं, जिनसे हमारी इच्छा का कोई सम्बन्ध नहीं है। पेट का हाज़मा और दिल की धड़कन—ये दोनों काम भी स्नायविक शक्ति से होते हैं। आप पेट से तअल्लुक रखनेवाली स्नायु को काट दीजिये, हाज़मा या पाचन-क्रिया वन्द हो जायगी; विजली की वैटरी लगा दीजिये, फिर पाचनकार्य या हाज़मा होने लगेगा।

दिल और रक्तवाहक नाड़ियों में होकर खून सारे शरीर में चक्कर लगाया करता है। खून का यह दौरा भी स्नायविक शक्ति के प्रवाहों की खींचने और दुर करनेवाली शक्तियों के वल से होता रहता है। निश्चय ही खून का दौरा जारी रखनेवाली यही शक्ति है। नेचर ने रक्तसंचालन या खून के दौरे करने के लिए जो कल-पुरज़े वनाये हैं, वे सभी स्नायविक शक्ति से चलते हैं। मसलन्; लकवा या फ़ालिज मारे हुए

अंगों मे पैदा हुए जख्म या घाव शरीर के और भागो की अपेक्षा बहुत देर में और बड़ी मुश्किल से आराम होते हैं। स्नायविक शक्ति के बिना ठीक रहे, ज़िन्दगी का कोई भी काम अच्छी तरह से नहीं चल सकता।

इस विषय का ज्ञान होनेपर, प्रत्येक विचारवान का धर्म और कर्त्तव्य है, कि वह अपने स्नायुमण्डल (Nervous System) को सदा निरोग और दुरुस्त रखे। इस सिस्टम के निरोग रखने के लिये उन तमाम आदतों से किनारा कर लेना चाहिये, जो शारीरिक और मानसिक शक्तियों के बल को क्षीण करती हैं। केवल शारीरिक शक्तियों की रक्षा से ही काम नहीं चल सकता, मानसिक शक्तियो की रक्षा की उससे कम ज़रूरत नहीं है। क्योंकि शरीर और मनका बडा गहरा सम्बन्ध है। शरीर और मन के दर्म्यान हमदर्दी या सवेदना का सम्बन्ध स्नायु-मण्डल ने स्थापित कर रखा है। अतः मादक और उत्तेजक पदार्थों का हानिकारक असर स्नायुओं पर अवश्य होता है।

काफी, चाय, अफीम और शराब की आदत से स्नायुमण्डल या नर-वस सिस्टम को बड़ी हानि पहुँचती है। तमाखू को लोग मामूली चीज़ समझते हैं, पर वह भी इन से कम हानिकारक नहीं है। उससे भी अनेक दुस्साध्य और चिरस्थायी रोग पैदा होते हैं। इन चीज़ों के चाहनेवाले इनके बुरे नतीज़ो को नहीं समझते। इन पदार्थों के सेवन से एक प्रकार की प्रसन्नता और ज़िन्दादिली पैदा होती है, वही इनके चाहनेवालों को अन्धा कर देती है। उसी की वजह से वे इन बुरे नतीज़ों का ख़याल तक नहीं करते। इन चीज़ो ने करोड़ो स्त्री-पुरुषों को निकम्मा बना दिया। लाखों पुरुष पुंसत्व खोकर क्लीब हो गये। लाखों की बुद्धि और स्मरणशक्ति नाश हो गई। होते होते अन्त में वे उन्माद रोग की शिकार हो गये।

शराब, अफीम, चाय और तमाखू प्रभृति हानिकारक होनेपर भी शीघ्र ही अपना बुरा असर नहीं दिखाते, इसलिये जो लोग इन्हें बुरा मानते हैं, वे भी इन्हें नहीं छोड़ते। पापी जिस तरह जल्दी ही सज़ा न पाने से

पाप किये जाता है ; उसी तरह इनके सेवक भी इनके सेवन करने के पाप किये जाते हैं। पापी जिस तरह एक न एक दिन सजा पाता ही है ; उसी तरह उन्हें भी क़ानून कुदरत तोड़ने की सजा मिलती ही है। एक न एक दिन उन्हें भयंकर रोग के पञ्जे में फँस कर, असमय में मौत के गाल मे समाना ही पडता है।

अनेक निर्बुद्धि और विचारहीन मनुष्य समझते हैं कि, दवा खाने से सारे रोग नाश हो जायँगे। जब जरूरत समझेंगे, वैद्य जी या हकीम जी का दरवाजा जा खटखटावेंगे। पर जो ऐसा समझते हैं, वे भयानक भूल करते हैं। जब इन विषो का असर स्नायु मण्डल पर हो जाता है, तब शरीर टूट जाता हैं और अकाल मृत्यु से मरना पड़ता है। उस समय स्वयं धन्वन्तरि और लुकमान हकीम भी कुछ नहीं कर सकते। अतः बीमारी का इलाज करने से उसे रोकना कई दर्जे अच्छा है। उन्हें अंगरेजी की पुरानी कहावत याद रखनी चाहिये —An ounce of prevention is worth more than a pound of cure.

मान लो, दवा करने से इन से पैदा हुए रोग आराम भी हो जायं, पर बिना कारण को त्याग किये किसी हालत में भी आराम हो नहीं सकते। असल कारण के नाश होने से नब्बे फी सदी केसों में सफलता होती है। उस दशा में नेचर या प्रकृति बिना दवा के ही रोग को दूर कर देती है। रोग का कारण दूर किये बिना, दवा का नुसख़ा लिखना भद्दी-से-भद्दी नीम हकीमी या ऊँटवैद्यपना है। सारांश यह है, कि जो रोगी अपना इलाज कराना चाहें, पहले अपनी ख़राब आदतों को सुधारें यानी शराब, अफीम, चाय, काफी और तमाखू से मोह छोड़ें।

दिल और रक्तवाहिनी धमनी नाड़ियो में खूनका जल्दी और देरसे दौड़ना—अवस्था, परिश्रम और उत्तेजना के ऊपर निर्भर है। गर्भगत बालक की नाड़ी एक मिनट में १३५ से १७५ बार तक फड़कती है। बालक के जन्म लेनेके बाद वह १०० से १२० बार तक फड़कती है। जवान की नाड़ी ७० से ७५ बार तक फड़कती है। ज्यों-ज्यों उम्र

बढ़ती है, नाड़ी का स्पन्दन मन्दा होता जाता है। ६० से ७० साल की उम्र में नाड़ी १ मिनट में ६० बार फड़कती है। चलने फिरने और सख्त मिहनत या ज़ोर आज़माई करने से नाड़ी की चाल तेज हो जाती है। लेटने की अपेक्षा खड़े होने से नाड़ी का स्पन्दन बढ़ जाता है। मानसिक जोश से नाड़ी की गति बहुत ही तेज़ हो जाती है। चाय, काफी प्रभृति उत्तेजक पदार्थों से स्नायु मण्डल में बुरा जोश पैदा हो जाता है और उससे दिल और रक्तवाहिनी नाड़ियों का काम बढ़ जाता है। एक प्याला चाय, एक घूंट शराब, एक सुल्फ़ा तम्बाकू ये सब नाड़ी की गतिको तेज़ कर देते और इस तरह रोग-पर-रोग पैदा करते हैं। हिसाब लगाकर देखा गया है, कि मामूली आदमी का खून ३५ पौण्ड या साढ़े सत्रह सेर के क़रीब होता है। सारा खून अढ़ाई मिनट में सारे शरीर का चक्कर लगा लेता हैं।

दूसरी बुरी आदत, जो इन सब की भी नानी है—"हस्त मैथुन" है। इस को अंगरेजी में सेल्फ इण्डलजेन्स या मास्टर बेशन (Self-indulgence or Masterbation) कहते हैं। इस पोशीदा गुनाह या गुप्त पातक ने मानव जाति की भयंकर हानि की है। यह बला बचपन मे ही पीछे लगती है और उस समय तक पीछा नहीं छोड़ती, जब तक मनुष्य बिल्कुल नपुंसक और निर्वीर्य्य नही हो जाता। इस से तो स्नायुमण्डल या नरवस सिस्टम की रेढ़ ही हो जाती है। अति स्त्री-प्रसंग से भी स्नायु दूषित और रोगी हो जाते हैं। अत्यन्त दिमागी परिश्रम भी अत्यन्त हानिकारक है।

भाइयो! यदि आप स्नायुमण्डल को नीरोग रखकर संसार-भरके रोगों से बचना चाहते हो, तो क़ानून कुदरत को मानो, प्रकृति की आज्ञाओं का पालन करो। पालन ही न करो, क़ानून कुदरत के ख़िलाफ़ कोई काम मत करो। उस की आज्ञाओं को मानना अपना प्रधान कर्त्तव्य-धर्म समझो। लेकिन यह तभी हो सकता है, जबकि लोग क़ानून कुदरत या स्वास्थ्यरक्षा-विषयक बातों को जानें। इन बातो का ज्ञान लोगों को

आयुर्वेदीय ग्रन्थ पढ़नेसे ही हो सकता है। मनुष्य-जन्म लेकर मनुष्यको पहले सदा आरोग्य लाभ करने और इस जगत् में अधिक-से-अधिक दिनोंतक रह सकने की विद्या उपार्जन करनी चाहिये। निरोग और दीर्घ-जीवी हुए विना मनुष्य इस जगत् में कौनसा अच्छा काम कर सकता है? अतः इस विद्या का अध्ययन न करना पाप है।

न्यूरेलजिया या स्नायुगत वात।

न्यूरेलजिया को हिन्दी मे "स्नायु-वेदना" और उर्दू में "दर्द शक़ीक़ा" कहते हैं। संस्कृत मे इसका अर्थ "स्नायुगत वात" हो सकता है। इस रोग का सम्बन्ध स्नायु-समूह से है, इसीलिये इसकी गणना नरवस डिज़ीज़ैज़ अर्थात् स्नायु मण्डल के रोगोंमें की जाती है।

अनेक केसों मे एकमात्र दर्द या वेदना ही इस रोग का लक्षण है। क्यों कि इस रोग में न तो शरीर के किसी भाग पर सूजन ही आती है और न सोजिश या जलन ही होती है। जब वह रोग होता है, तब एक प्रकार की पीडा होती है। उसमें झटके से लगते और खिंचावट होती है। पर यह दर्द हर समय नहीं रहता, बीच बीच में कुछ समय के लिए बन्द हो जाता या कम हो जाता है।

बहुत करके न्यूरेलजिया (Neuralgia) चेहरे और सिर में होता है। कभी-कभी यह छाती, टाँग और पैर में भी होता है। अनेक बार यह शरीर के और-और भागों में भी होता है, पर यह बात स्नायु-मण्डल या स्नायुसमूह की अवस्था पर विशेष निर्भर है। जब यह रोग चेहरे में होता है, तब इसे ट्राइ फेशियल न्यूरेलजिया कहते हैं। उस समय मुँह से आँखोंतक, बहुधा कान तक एवं गाल, तालू, दाँत और जावड़ों में दर्द के तीर से छूटते हैं। रोग होने की जगह की मांस-पेशियों या पट्ठों में चिलक सी मारती हैं और वे खिंचते या ऐंठते हैं। यह दर्द किसी ख़ास स्नायु से सम्बन्ध रखता है। एक सेकण्ड में ही हमल-ए-शदीद या ज़ोर का दौरा होता है और मृत्युकाल की सी यन्त्रणा या वेदना बढ़

जाता है। अनेक बार यह दर्द यकायक उठता है। उस समय असह्य वेदना होती है। अनेक बार इसके साथ साथ कोई और स्थानीय रोग भी प्रकट हो जाता है। न्यूरेलजिया के लक्षण और कारण प्रभृति ठीक तौर से समझ में नहीं आते, पर इतना निश्चय है कि इसके बहुत से कष्ट-साध्य या असाध्य केस मौरूसी कारणों से होते हैं, यानी अत्यन्त कष्ट-साध्य या असाध्य न्यूरेलजिया माता-पिता के दोषों से होता है।

सर्द मौसम, सील और मलेरिया अथवा अकेली सील और मलेरिया न्यूरेलजिया के पैदा करनेवालों में से हैं। जो लोग गरमी से घबराये हुए या थके हुए होने पर सर्द हवा के झोंकों के सामने बैठ जाते हैं या किसी तरह शीतल हवा सेवन करते हैं, उन्हें न्यूरेलजिया जरूर होता है। रेल की यात्रा ने तो इसका पैदायश बहुत ही बढ़ा दी है। अगर मनुष्य का शरीर कमज़ोर होता है, तब तो इस रोग की और भी बन आती है। मतलब यह है कि निर्बलों पर न्यूरेलजिया का कोप बहुत जल्दी होता है। न्यूरेलजिया ही क्यों, निर्बलों को सभी रोग जल्दी घेरते हैं।

उपरोक्त कारणों के अलावः, अत्यधिक मानसिक परिश्रम और घोर चिन्ता भी इस रोग के पैदा करनेवालों में मुख्य हैं। मानसिक परिश्रम और चिन्ता—ये दोनों ही मन से सम्बन्ध रखते हैं। मन की इन्द्रिय मस्तिष्क है। जिस तरह हम आँखों से देखते है, कानों से सुनते हैं, नाक से सूँघते हैं, जीभ से चखते हैं और चमड़े से छूते हैं; उसी तरह हमारी सारी मानसिक क्रियायें मन से होती हैं। मस्तिष्क बिना मन का अस्तित्व ही असम्भव है। मस्तिष्क को प्रत्येक अवस्था के साथ मन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। मस्तिष्क में खून की कमी होने से या और किसी तरह मस्तिष्क की पुष्टि में विघ्न-बाधा होने से मानसिक शक्ति कमज़ोर हो जाती है। जिस तरह शरीर की पुष्टि में किसी तरह की बाधा होनेसे नेत्र, कान, आँख वगैरः इन्द्रियों की क्रियाओं में व्यतिक्रम होता है; उसी तरह मस्तिष्क की क्रिया में भी व्यतिक्रम होता है। अतः मन को स्वस्थ रखने के लिए, शरीरको स्वस्थ रखना परमावश्यक है। जिस तरह

मन को निरोग रखने के लिए शरीर को स्वस्थ रखने की ज़रूरत है; उसी तरह शरीर को स्वस्थ रखने के लिये मन को स्वस्थ रखने की ज़रूरत है। देखते हैं, अत्यन्त भय या मनमें किसी तरह की विशेष उत्कण्ठा होने से भूख मारी जाती है और संक्रामक रोगों के आक्रमण करने के लिए राह खुल जाती है। जो लोग रात-दिन चिन्ता में चूर रहा करते हैं, उन्हें अजीर्ण या बदहज़मी की शिकायत बनी ही रहती है। मन के दुःख से तन्दुरुस्ती फौरन बिगड़ती है। मन के खुश रहने से रोग आसानी से हमला नहीं कर सकता। तत्वदर्शी विद्वानों का निश्चय है, कि मन के साथ स्वास्थ्य का अति निकट सम्बन्ध है।

मन के साथ जब स्वास्थ्य का इतना निकट सम्बन्ध है, तब शरीर के आरोग्य रखने के लिए मन को हर हालत में स्वस्थ रखना चाहिये। जो लोग अत्यधिक मानसिक परिश्रम और चिन्ता करते हैं, उनका मन रोगी हो जाता है। मनके रोगी होने से शरीर भी रोगी हो जाता है। आजकल के पढ़े-लिखे लोग आयुर्वेद के न जानने से अतीव मानसिक परिश्रम करते हैं। जो लोग परिमित रूप से मानसिक परिश्रम करते हैं, उन्हें कोई हानि नहीं होती। विश्राम के समय मानसिक खिन्नता दूर हो जाती और मन में नई शक्ति और स्फूर्ति का सञ्चार होता है, किन्तु जो बहुत ही ज़ियादा मानसिक परिश्रम या दिमाग़ी मिहनत करते हैं, उन्हें विश्राम से भी चैन नहीं मिलता। नींद से भी उनकी मानसिक खिन्नता दूर नहीं होती। इससे स्नायु कमजोर होते और तरह तरह की बीमारियाँ घेरती हैं। अत्यन्त परिश्रम से आदमी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और उसकी स्मरणशक्ति कम हो जाती है। ऐसे लोगों को कोई बात याद नहीं रहती, नींद नहीं आती, सिर में दर्द होता, शरीर में जगह-जगह पीड़ा होती, सिर घूमता, चक्कर आते और खाना हज़म नहीं होता। आजकल जिन-जिन कारणों से बदहज़मी-रोग फैल रहा है, उनमें स्नायुओं की अवसन्नता एक प्रधान कारण है। जिस तरह अत्यन्त मानसिक परिश्रम से

स्नायविक शक्ति दुर्बल होती है, उसी तरह दुःख शोक, चिन्ता और क्रोधादि मानसिक कष्टों से भी स्नायुओं में दुर्बलता होती है। आजकल पैदा होने के कुछ समय बाद ही, जबकि शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्ग पूरे भी नहीं होते, चिन्ता-राक्षसी पीछे लग जाती है। यहाँ तक कि अधिकांश लोगों की चिन्ता रात को सोते समय भी दूर नहीं होती। उस समय भी घाटे नफे या गृहस्थी के पालन-पोषण की चिन्ता सिर पर सवार रहती है। घोर या रातदिन की चिन्ता का तो कहनाही क्या? मामूली चिन्तासे भी कुछ न कुछ मानसिक हानि होती ही है। क्योंकि चिन्ता का असर स्नायुसमूह पर बहुत जल्दी होता है। आजकल लोगों में अत्यधिक मानसिक परिश्रम और चिन्ता की बहुतायत है, इसी से स्नायु-सम्बन्धी रोग न्यूरेलजिया प्रभृति बहुतायत से होते हैं। जिन्हें इन स्नायविक रोगों से बचना हो, उन्हें परिमित मानसिक श्रम करना चाहिये और यथाशक्ति चिन्ता से भी बचना चाहिये। यद्यपि मन एक-दम से चिन्ताशून्य किया जा सकता है या नहीं—इसमें सन्देह ही है।

मानसिक शक्ति का अभाव होने से मनुष्य अफीम, शराब और गाँजा आदि नाना प्रकार की कुत्सित नशीली चीज़ों का दास बन जाता है। स्नायुओं की ख़राबी की हालत में तेज़ शराब और अफीम वगैरः ज़हरीली और उत्तेजना पैदा करनेवाली चीज़ों से चन्दरोज़ा आराम मिलता है। सेवन करते-करते रोगियों का विश्वास इन चीज़ों में अत्यधिक या हदसे ज़ियादा बढ़ जाता है। फिर तो वे इनके आदी या गुलाम हो जाते हैं। इनके बिना उन्हें संसार में कुछ भी आनन्द नहीं मिलता, ज़िन्दगी भार बोध होती है। परन्तु इस नशेबाज़ी का नतीजा बहुत ही बुरा होता है। अनेक प्राणी बिना मौत मरते हैं। इन ज़हरीले पदार्थों ने लाखों को तबाह कर दिया। लाखों गृहस्थियाँ मिट्टी में मिल गईं।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को स्नायु मण्डल के रोग यानी नरवस डिज़ीज़ अधिक होते हैं। ये रोग बाहरी कारण—सर्द मौसम, सील और मलेरिया—विषैली हवा आदि से तो होते ही हैं, पर मानसिक

कारणों से भी होते हैं। मनोवृत्ति की उत्तेजनाएं, जैसे ग़ुशी और रञ्ज वगैर, चाहे कल्पित हों चाहे वास्तविक, शरीरके अङ्ग प्रत्यङ्गों और उनके कर्त्तव्य-कर्मों पर अपना असर बहुत ज़ियादा डालती हैं। इनके असर से दिल धडकने लगता है, हाथ काँपता है और ज़रा सी उत्तेजना से चेहरा तमतमा आता है। जो लोग निर्बल हैं, जिनके शरीर की गठन या बनावट ठीक नहीं है, जिन लोगोंने बदपरहेज़ी या शराबग़ोरी की आदतों से अपनी तन्दुरुस्ती बिगाड़ ली है, वे ही इस रोग के शिकार होते हैं।

इस लाभदायक विषय को शेष करने से पहले हमें एक बात अवश्य कहनी है, उसके कहे बिना हम रह नहीं सकते। वह यह कि मानव जीवन के शत्रुओं—बदपरहेजी, ज़ियादा शराबख़ोरी और ऐयाशी—का आजकल बड़ा दौरदौरा है। उनकी तूती बोल रही है। वे बेतरह बढ़ गये हैं। शाइस्तगी की क़द्र, ऐशो-इशरत, खुश-ग़ुराकी, नफ़सानियत, ललाफ़त या बनाव-शृङ्गार और क़ुदरत से मुनहरिफ़ हो जाना एव क़ुदरत के क़ानूनों को न मानना मानवजीवन के लिए सत्यानाश की निशानी और नरवस डिज़ीज़ेज या स्नायुमण्डल के रोगो की जननी है। जाँच करने से पता चला है कि, बहुत से माँ बाप अपनी औलाद को विरासत मे अनेक प्रकार की मानसिक और शारीरिक व्याधियाँ छोड़ जाते हैं, जो तीन-तीन और चार-चार पीढ़ियों तक पीछा नहीं छोड़तीं। जो संसार में सुखसे जीवन बिताना चाहें, वे स्नायु-मण्डल में कोई ख़राबी न होने दें। ऐसा तभी हो सकता है, जबकि लोग ऊपर लिखे हुए मानव जीवन के शत्रुओं से दूर रहे।

अनेक तरह के स्नायु-सम्बन्धी रोगो का पेशख़ीमा या उनकी पहले से ख़बर देनेवाला "क़ब्ज़" है; यानी अनेक स्नायविक रोग होने से पहले दस्तक़ब्ज़ होता है। जैसे—न्यूरेलजिया—स्नायुगत वात, सिर का दर्द, मृगी, हिस्टीरिया के दौरे, दमा, दिल धड़कना, बदहज़मी—अजीर्ण और हाथ पाँव आदि शाखा अङ्गों की शीतलता। इसलिए चिकित्सक को आँतों की हालत पर ध्यान देने की बड़ी ज़रूरत है।

जिनका स्वभाव चिन्ताशील हो, जो चिन्ता के फेर में जियादा पड़े रहते हों, जिन्हें न्यूरेलजिया या कोई स्नायु-सम्बन्धी रोग हो, उन्हें आकाशीय तब्दीलियों, ख़ासकर तेज़ हवा वगैरः से बचना चाहिये, क्योंकि हवा की तब्दीली, सरदी-गरमी और हवा का घनत्व कुछ स्नायु रोगों में अपना असर फौरन ही दिखाता है। हमने दमेके ऐसे बहुत से रोगी देखे हैं, जो हवा की हालत, सरदी-गरमी और हवा के घनत्वमें कुछ भी फेर-फार न होने और उनके इसी हालत में बहुत दिनों से चले आने पर भी, पहले से ही कह देते हैं, कि मौसम बदलनेवाला है और उनकी भविष्य-द्वाणी अक्षर-अक्षर ठीक मिलती है। एक भले आदमीको श्वास का रोग था। जब बादल या वर्षा होती थी, उनका दमा ज़ोर कर आता था। एक दिन आकाश साफ़ और निर्मल था, बादलों का नाम भी कहीं नहीं था, धूप निकल रही थी; उन्होंने कहा कि वर्षा होगी और ज़ियादा-से-ज़ियादा तीन दिन के भीतर होगी। तीसरे दिन बादल आये और पानी बरसा। उन्होंने कहा कि जब हमें दमा ज़ियादा सताने लगता है, तब बादल नज़र न आने पर भी हम जान जाते हैं, कि मौसम बदलनेवाला है। पाठक! आप इस उदाहरण से समझ सकते हैं कि, बाहरी पञ्च तत्वों का शरीर के पञ्च तत्वो से कैसा सम्बन्ध है। उनका असर शरीर पर कैसा पड़ता है। इसी तरह जिनका कोई अंग भंग हो जाता है, वे अपने पट्ठों के खिंचावको देखकर पहले ही कह देते हैं, कि मौसम तब्दील होनेवाला है। क्योंकि मौसम की मुख़ालिफ़ तब्दीली का असर उनके उस अंग पर पड़ता है और इस कारणसे अपनी जगहसे अलग हुए या ज़ख्मी हुए पट्ठे खिचने और हरकत करने लगते हैं; और उनका खिंचना और हरकत करना नेत्रों से साफ़ दीखता है। पट्ठों के अनिच्छापूर्व्वक खिंचने या हिलने-जुलने से साबित होता है कि, मौसम की तब्दीलियाँ स्नायुओं के काम में खलल डालकर स्नायुमण्डल और मास-पेशी-समूह के काम को रोक देती हैं। न्यूरेलजिया या स्नायुगत-वात-रोगियो और कच्चे दिल के आदमियों पर मानसिक उथल-पुथल का जैसा असर होता है, उस पर टीका-टिप्पणी

की दरकार नहीं। इसलिये स्नायु-मण्डल के रोगियों का कर्त्तव्य है कि, वे अपनी शारीरिक गठन के सम्बन्ध में मुख्य-मुख्य बातें जान लें और अपने शरीर को सुखी रखने के उपयुक्त उपाय चुन लें, क्योंकि बाज़-बाज़ आदमियों को इन रोगों से निजात पाने में औरोंकी अपेक्षा अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

स्नायविक रोगों को रोकने, उनकी पीड़ा घटाने और स्नायुओं की पुष्टि करने के लिए नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

स्नायविक रोगों के रोकने के उपाय।

(१) अगर आप स्नायविक रोगों से बचना चाहते हैं, तो वातकारक आहार विहारों से परहेज़ रखो ; देरमें हज़म होनेवाले सख्त पदार्थ कभी मत खाओ। कोई भी पीने का पदार्थ गर्मागर्म भाफ निकलता हुआ मत पीओ। काफी—कहवा, चाय या हरी चाय और तमाखू से बचो। इन पदार्थों को लगातार व्यवहार करना—विष सेवन करना है। यद्यपि ये पदार्थ अपना हानिकारक असर धीरे धीरे दिखाते हैं, पर अन्त में एक न एक दिन अपना ज़हरी काम किये बिना नहीं रहते। ये आमाशय के स्नायुओं तथा दिल और जनरल सिस्टम को ढीला करते और निर्बल अङ्गों में नाना प्रकार के रोग पैदा करते हैं।

(२) नींद आने पर नींद को मत रोको। जो लोग रात-दिन घोर परिश्रम करते, यथेष्ट नींद नहीं लेते, विश्राम या आराम नहीं करते, वे अपने जीवन को ख़तरे में डालते, उग्र काम करते और रोगों को बुलाते हैं।

(३) ऋतु के परिवर्त्तन या मौसम के बदलने के समय पूरी तरह से सावधान रहो। पैर गीले मत रखो। क्योंकि गीले पैर रखने और ऋतु बदलने के समय आहार विहार में गड़बड़ी करने से ज्वर और खाँसी

प्रभृति अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। इनके सिवा, स्नायविक या नरवस रोगों की तो इफ़रात ही हो जाती है।

(४) दिमाग़ी परिश्रम वहुत ही ज़ियादा करने और दिल को एक ही ओर ज़ियादा लगाये रहने से स्नायुमण्डल या नरवस सिष्टम का दिवाला निकल जाता और दिमाग़ की कमज़ोरी की नींव पड़ जाती है। शेष में दिमाग़ वेकाम होकर, स्मरणशक्ति घट जाती ओर अपस्मार या उन्माद रोग की जड़ जमती है।

(५) सादा भोजन सदा अच्छा है। इसमें ज़रा भी शक नहीं, कि दो तिहाई स्नायविक या नरवस रोग मज़ेदार, लज़ीज़ और शौक़ीनी चीज़े खाने और शराव प्रभृति उत्तेजक पदार्थ सेवन करने से होते हैं।

(६) शीतल जल का स्नान नरवस रोग नाश करने में वहुत ही उत्तम है। डाक्टर गन कहते हैं,—मेरा तजरुवा है, कि शीतल जल का स्नान टॉनिक या वलवर्द्धक है। वहुत से कष्टसाध्य रोगी मैंने केवल शीतल जल के स्नान से आराम होते देखे हैं।

(७) जिनकी नर्व (Nerve) या स्नायु दुर्वल हैं, उन्हें वडे सवेरे उठना चाहिये और कलेवे से पहले कुछ कसरत करनी चाहिये। वहुत देर तक सवेरे सोते रहने से कमज़ोरी आती और शरीर ढीला होता है। स्नायविक रोगों में कसरत या वरज़िश यदि दवा से वढ़कर नहीं है, तो कम भी नहीं है। इस प्रकार के रोगो में चित्त को वहलाना, दिल को खुश करना, उसे और तरफ फेरना या लगाना, नयी-नयी जगह और नवीन-नवीन चीज़ें देखना—वहुत ही मुफ़ीद है। डाक्टर गन कहते है, कि देश-देशान्तर की यात्रा या सफर करना, अजीव-अजीव देश और नगर देखना, चित्ताकर्षक दृश्य या सीनेरी के अवलोकन से नेत्र और मन को प्रसन्न करना, घोडे पर, खुली गाड़ी में और कभी-कभी पैदल ही सैर करना वहुत लाभदायक है।

(८) याद रखो, नरवस सिष्टम और उसकी शक्तियों का आमाशय या हाज़मे के यन्त्रों से वड़ा निकट सम्वन्ध है। आमाशय सिष्टम की

माँ है। न्यूमोगैष्ट्रिक नर्व या स्नायु का आमाशय से सम्बन्ध है। उस पर अस्वाभाविक ज़ोर डालने से हम मन्दाग्नि, पेट में हवा भर जाने के रोग और स्नायविक रोगोंको बुलाते हैं। पेट भरकर भोजन करनेके बाद, शारीरिक और मानसिक कोई भी काम करना—बड़ा बुरा मालूम होता है। डाक्टर ई० बी० कुक महाशय अपनी "फिलॉसोफी आव् हैल्थ" (Philosophy of Health) नाम्नी पुस्तक में लिखते हैं :—घोड़ा या बैल जब पेटभर चराई कर लेते हैं, तब उनको इच्छा किसी भी काम को करने की नहीं रहती। उनके मालिको को भी चाहिये, कि खाना खाये घण्टा भर न हो जाय तबतक, उनसे कोई बड़ा काम न लें। शेर और चीते वगैरः खूंख्वार दरिन्दे जब पेटभर भोजन कर लेते हैं, तब कुछ समय के लिए अपनी खूंख्वारी छोड़ देते हैं और अपेक्षाकृत हानि न करनेवाले या ग़ैर मुज़िर अथवा ग़रीब हो जाते हैं। यही हाल आदमियों का है। अगर किसी बदमिज़ाज भयंकर आदमी से अपनी भलाई का काम लेना हो, तो उससे उस समय मिलो, जबकि वह भोजन करके उठा हो। अगर किसी कजूस-मक्खीचूस से कुछ दान या ख़ैरात लेनी हो, तो उसके पास उस वक्त जाओ, जबकि वह भोजन करके उठा हो। ऐसे मौके पर इन लोगों से बुराई नहीं होती और ये अपने याचक को कोरे हाथों टरका भी नहीं सकते।
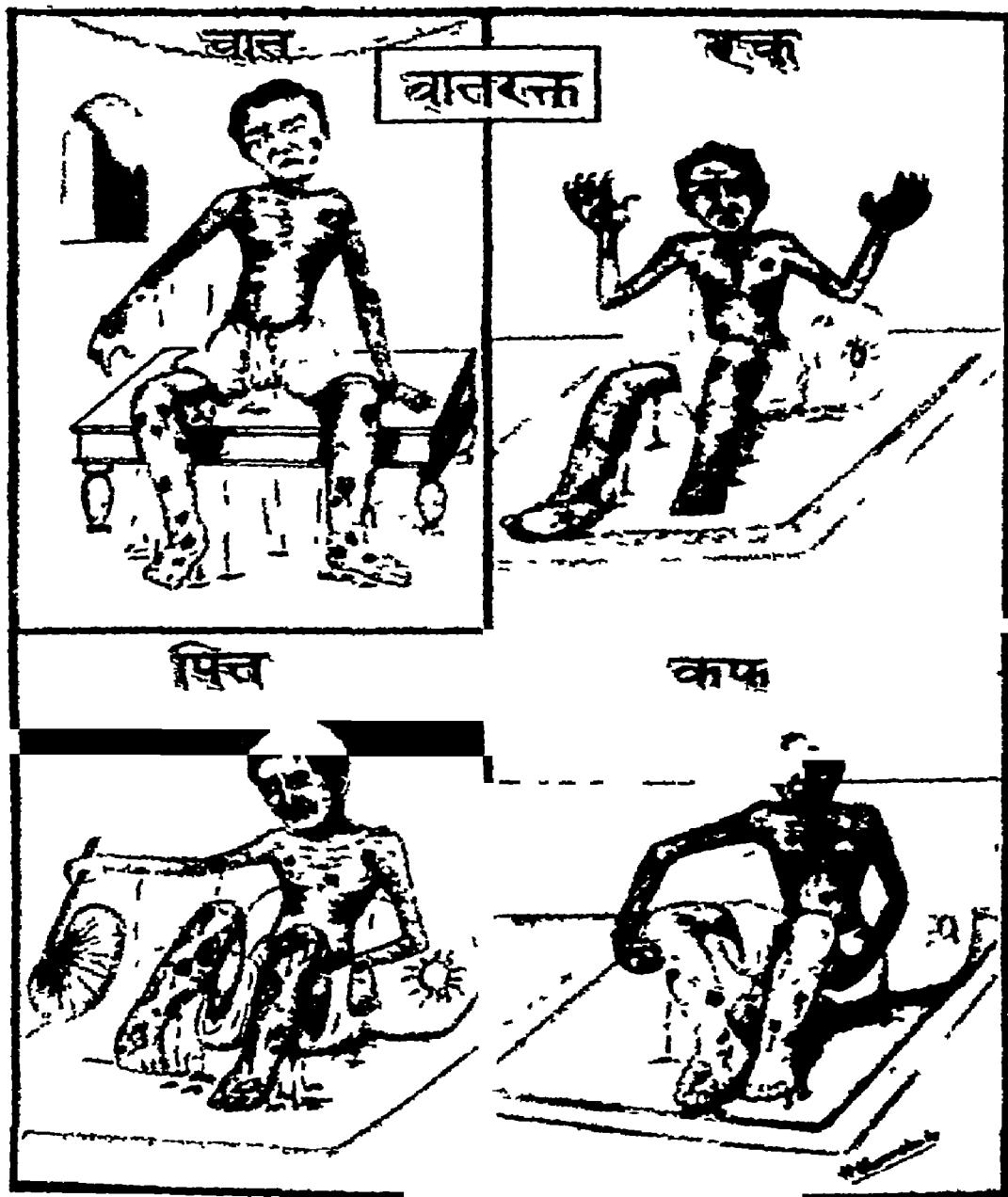
इस चित्रमें वातज पित्तज, कफज और रक्तज वातरक्तके लक्षण आसानीसे पहचाननेके लिये, चारों लक्षणोंवाले रोगियोंके चित्र अलग-अलग दिये है। पाठक प्रत्येक रोगीको बगौर देखें और इस चित्र तथा पुस्तक की मददसे लक्षणोंको हृदयङ्गम करे। पृष्ठ ४०६

वातरक्तके निदान-कारण।

वातरक्त रोगके कारण या उसके पैदा करनेवाले निम्नलिखित आहार-विहार हैं :—

(१) नमकीन पदार्थ। (२) खट्टे पदार्थ। (३) चरपरे पदार्थ।
(४) गरम पदार्थ। (५) चिकने पदार्थ। (६) खारी पदार्थ।
(७) सड़ा हुआ मांस। (८) सूखा हुआ मांस। (९) तिलोंकीखल।
(१०) कुल्थीकी दाल। (११) उड़दकी दाल। (१२) लोबिया।
(१३) पत्तोंके साग। (१४) बैंगन आदि साग। (१५) ईख।
(१६) दही। (१७) माठा। (१८) काँजी।
(१९) मछली। (२०) शराब। (२१) दिनमें सोना।
(२२) रातमें जागना। (२३) हाथी घोड़ेकी सवारी। (२४) बहुत राह चलना
(२५) अजीर्णमें खाना। (२६) विदग्धपाक पर खाना।

इन आहार-विहारोंके अत्यधिक सेवन करनेसे,—नाजुक-बदन, कोमल, दुबले-पतले, गद्दियोंमें तकियोंके सहारे पड़े रहने वाले, हाथी-घोड़ोंकी सवारी करने वाले और बहुत रास्ता चलने वाले मनुष्योंके "वात और रक्त" कुपित हो जाते हैं। इन कारणोंमेंसे किसीसे "वायु" कुपित होता है, किसीसे "खून" कुपित होता है और किसीसे "वात और रक्त" दोनों ही कुपित होते हैं।

वातरक्तकी सम्प्राप्ति ।

ऊपर लिखे कारणोंसे, शरीरका सारा खून बिगड़ जाता और यह बिगड़ा हुआ खून, नीचे जाकर, दोनों पाँवोंमें इकट्ठा हो जाता है। वहाँ यह खून "वायु"से मिल जाता है। इस रोगमें "वायु"की प्रबलता रहती है, इसलिये इसको "वातरक्त" कहते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है—बलवानके साथ कुश्ती लड़ने, अत्यन्त मिहनत करने, भारी और गरम भोजन करने और बारम्बार भोजन-पर-भोजन आदि कारणोंसे खून बिगड़कर, राहमें—धमनियोंके मार्गमें—ठहर कर, वायुसे मिल जाता है अथवा वायुकी राहको रोक देता है; तब राह रुक जानेसे, वायु वेदना पैदा कर देता है। इस रोगको "वातरक्त" कहते हैं। यह रोग पहले हाथ-पाँवोंमें होकर, फिर शरीरमें फैलता है।

नोट—"सुश्रुत"के वचनसे पहले खून बिगड़ता है, फिर इसे "रक्तवात" न कहकर "वातरक्त" क्यों कहते है, यह सवाल मनमे उठता है। इसका जवाब यह है, कि दोषोंके कारण, इस रोगमें "वायु"की प्रधानता या प्रबलता रहती है, इसीसे इसे "वातरक्त" कहते है। किसीने कहा है :—

दुष्टेवाते रक्तमाशु प्रदुष्येत्तत्र प्राबल्यादुच्यते वातरक्तम्।

घोड़े-हाथी आदिकी सवारी बहुत करनेसे, वायु दूषित होकर, रक्तको दूषित कर देता है। इसमें वायुका जोर जियादा रहता है, इस लिए इसे "वातरक्त" कहते हैं। कोई कहते हैं, हाथी घोड़े आदिकी सवारी वगैर कारणोंसे, खून गरम होकर वातमें मिला जाता है और "वातरक्त" रोग पैदा करता है।

वातरक्तके पूर्वरूप ।

जब "वातरक्त" होने वाला होता है, तब पसीने बहुत आते हैं अथवा ज़रा भी नहीं आते, शरीर दुबला हो जाता है, चमड़ेकी

छूनेकी ज्ञान-शक्ति नष्ट हो जाती है ; व्रण होते हैं, तो उनमें अत्यन्त वेदना होती है ; सन्धियों या जोड़ोंमें ढीलापन होता है, आलस्य आता है, अङ्ग जड़ हो जाते हैं, फोड़े फुन्सी निकलते हैं, घोंटू, जाँघ—उरु, कमर, हाथ, पाँव और शरीरके जोड़ोंमे हथियारसे छेदनेकीसी पीड़ा होती है, अंग फड़कते हैं, मेद बढ़ जाती है ; भारीपन, ग्लानि, खुजली, सन्धियों या जोड़ोंमें दर्द, अङ्ग फड़कना, बारम्बार दाह या जलन होकर शान्त हो जाना, चमड़ेकी कान्तिका नष्ट हो जाना और चकत्ते पड जाना—ये लक्षण होते हैं ।

"सुश्रुत"में लिखा है,"वातरक्त होने वालेके अङ्गोंमें दर्द, दाह,खाज, सूजन, जकड़ाव, खरदरापन , शिरा, स्नायु और धमनियोंमें फड़कन ; जाँघोंमें कमज़ोरी तथा हाथोंकी हथेली, पैरोंके तलवे, अङ्गुलियों, और टखने वग़ैरःमें अकस्मात् काले-काले चकत्ते हो जाते हैं। अगर इस हालतमें कोई इलाज नहीं कराता और कुपथ्य करता है, तो यह रोग प्रकाश्य रूपसे शरीर पर हो जाता है । अगर "वातरक्त"के प्रकट हो जाने पर भी, जो कोई इलाज वग़ैरः नही करता, उसके शरीरमें विकलता हो जाती है ।

"सुश्रुत"के निदान स्थानमें लिखा है,—अगर दोनों पैर शिथिल और शीतल हों तथा पसीने बहुत आते हों अथवा इसके विपरीत दोनों पैर गरम हो, पसीने न आवे, विवर्णता हो जाय, दर्द रहे, पैर सो जावें, पैरोंमें बहुत ही भारीपन और दाह हो, तो समझो कि "वात रक्त" होने वाला है ।

खुलासा यह है कि, वातरक्त होनेसे पहले खाज होती, वेदना होती, शरीरका रङ्ग बिगड़ जाता, चकत्ते होने लगते, चमड़ेका स्पर्श-ज्ञान चला जाता, फोड़े-फुन्सी होते, कहीं भी घाव हो जानेसे जल्दी आराम नहीं होता और शरीर पर चींटियाँसी चलती हुई जान पड़ती हैं । चतुर मनुष्यको, इस हालतमें, खबर्दार होकर उचित उपाय करने चाहिएँ ।

नोट—पूर्वरूपमें पसीने बहुत आना या बिलकुल न आना—यह रोगका प्रभाव है ।

वातरक्तके भेद ।

वातरक्त छै तरहका होता है :—

(१) वाताधिक्य वातरक्त । (२) पित्ताधिक्य वातरक्त ।
(३) रक्ताधिक्य वातरक्त । (४) कफाधिक्य वातरक्त ।
(५) द्विदोषाधिक्य वातरक्त । (६) त्रिदोषाधिक्य वातरक्त ।

वाताधिक्य वातरक्तके लक्षण ।

अगर वातरक्तमें "वायु" जियादा होती है, तो शूल बहुत चलते हैं, अङ्ग फड़कते हैं, पीड़ा होती है, सूजनमें रूखापन और कालापन होता है, सूजन बढ़ती-घटती है, नाड़ियों और अङ्गुलियोंके जोड़ सुकड़ जाते हैं, अङ्ग रह जाते हैं, अत्यन्त व्यथा होती है, शीतल चीजें छूनेमें बुरी लगती हैं, शरीर अकड़ जाता है, कम्प होता है और चमड़ेका स्पर्श-ज्ञान नष्ट हो जाता है ।

ध्यान रखो, शूल और फड़कन आदि उपद्रव पैरोंमें होते हैं, क्योंकि सुश्रुतने कहा है, वातरक्तमें दोनों पाँव उद्वेगको प्राप्त होते हैं और दोनों पाँवोंमें पीड़ा, फूटनी, सूजन और जड़ता होती है ।

वाताधिक्य वातरक्तकी सूजन रूखी और काली होती है तथा वह घटती-बढ़ती है, दर्द बहुत होता है, ठण्डी चीजें छूने या शरीरके लगनेसे बुरा मालूम होता है, पाँव सूने हो जाते हैं, उनमें पीड़ा और फूटनी होती हैं—ये मुख्य लक्षण हैं ।

रक्ताधिक्य वातरक्तके लक्षण ।

अगर वातरक्तमे "खून"की अधिकता होती है, तो लाल रङ्गकी या
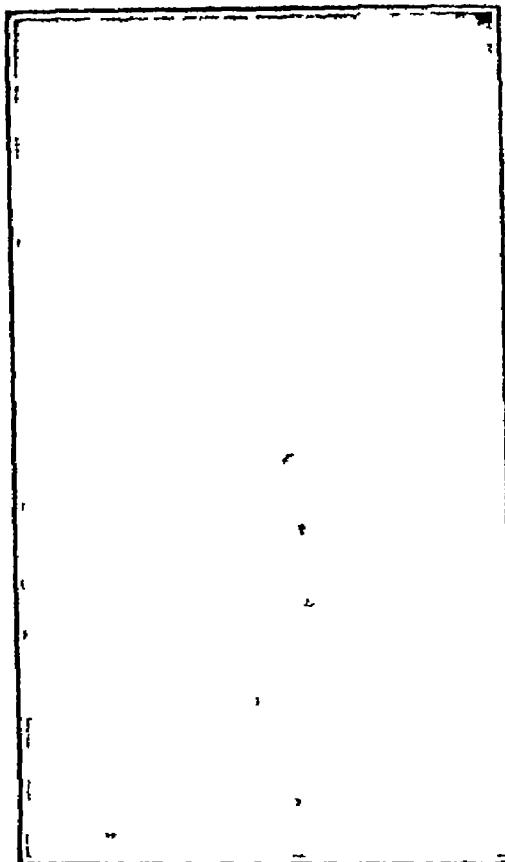
वातरक्त रोगीकी टाँग।

डाक्टरी में लिखा है, इस रोगके शुरूमें हाथ और पाँव का चमड़ा फूल जाता है, पीछे उस जगह फुन्सियाँ पैदा होती हैं और कुछ दिनों बाद घाव होजाते हैं। उन घावों से खून, पीप और नर्म मांस निकलता है। यह रोग औरतों की अपेक्षा पुरुषों को अधिक होता है। बहुत करके ३० सालकी उम्रके बाद होता है। इसका कारण रक्तका दूषित होना है। इसमें बहुत तरह के कीड़े होते हैं। इसे अँगरेजी में माइकोसिस फंगोइडिस (Mycosis Fungoides) कहते हैं।

पृष्ठ ४१३

ताम्बेके से रंगकी सूजन होती है। उस सूजनमें खुजली चलती और क्लेद या मवाद बहता है तथा उसमें तोडनेकीसी पीड़ा होती है। यह सूजन चिकने और रूखे पदार्थोंसे शान्त नहीं होती। यह सूजन भी पैरोंमें ही होती है।

नोट—इस रोगमें जिस रुधिरको अधिकता होती है, उसे वातरक्त पैदा करने वाले रुधिरसे अलग समझना चाहिये। क्योंकि रुधिर भी दूसरे रुधिरको दूषित करता है।

पित्ताधिक्य वातरक्तके लक्षण।

पित्ताधिक्य वातरक्तमें दाह, मोह, पसीने, मूर्च्छा, मद और प्यास ये लक्षण होते हैं। सूजनकी जगह छूनेसे दर्द होता है, सूजन लाल रंगकी होती है, उसमें दाह या जलन होती है, वह पक जाती है और उसमें बड़ी गरमी होती है। सूजन वग़ैरः उपद्रव दोनों पैरोंमें होते हैं, क्योंकि सुश्रुतने कहा है,—पित्त और खूनसे दोनों पैरोंमें अत्यन्त जलन होती है। वे अत्यन्त गरम, लाल और सूजे हुए तथा नर्म होते हैं।

खुलासा यह है, कि पित्ताधिक्य वातरक्तमे "मोह और दाह" ये लक्षण खासकर होते हैं।

कफाधिक्य वातरक्तके लक्षण।

कफकी अधिकता वाले वातरक्तमें शरीर गीले कपड़ेसे ढका हुआ सा जान पड़ता है, भारीपन, स्पर्श-शक्तिकी कमी, चिकनापन, स्पर्शमें शीतलता, खुजली और हलकी पीड़ा—ये लक्षण होते हैं। भारीपन और जड़ता या स्पर्श-शक्तिकी कमी आदि लक्षण पैरोंमें होते हैं, क्योंकि सुश्रुतने कहा है, जब खून कफसे दूषित होता है, तब पाँवोंमें

खुजली होती है, वे सफेद सूजनयुक्त, सघन, शीतल और स्निग्ध हो जाते हैं ;

खुलासा कफाधिक्य वातरक्तमे शरीरमें "खुजली और सूजन" होती है।

द्विदोषाधिक्य और त्रिदोषाधिक्य वातरक्तके लक्षण।

दो दोषोंकी अधिकता होनेसे दोनों दोषोंके और तीनों दोषोंकी अधिकता होनेसे तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं।

त्रिदोषाधिक्य वाला वातरक्त अक्सर दोनों पैरोंके तलवोंमें होता है। वहाँ सफेद मटरोंके समान हज़ारों छाले पड़ जाते हैं, पर कभी-कभी यह त्रिदोषवाला वातरक्त हाथोंमें भी हो जाता है। उस समय, दोनो हाथोंकी हथेलियोंमें सफेद मटर-जैसे सैकड़ों फफोले हो जाते हैं। उनमें जलन और खुजली भी होती है।

पैरोंके सिवा वातरक्तके और स्थान।

वातरक्त पैरोंकी जड़से पैदा होकर और कभी-कभी हाथोंकी जड़से उठ कर, सारे शरीरमें उसी तरह फैल जाता है, जिस तरह चूहेका विष धीरे-धीरे सारे शरीरमे फैल जाता है।

वातरक्तके उपद्रव।

नींद न आना, अरुचि, श्वास, मांस गल-गल कर गिरना, सिरमें पीड़ा, मूर्च्छा, कम दीखना, प्यास, ज्वर, मोह, कम्प, हिचकी, पंगुता,

विसर्प—चकत्ते होना, पकना, सूई चुभानेकीसी पीड़ा, भ्रम, क्लम, ग्लानि, अँगुलियोंका टेढ़ा हो जाना, फूटना, जलन होना, मर्म-स्थानोंमें दर्द होना और अर्बुद या गाँठ होना—ये सब वातरक्तके उपद्रव हैं।

साध्यासाध्यता ।

अगर वातरक्तमें ऊपर लिखे सब उपद्रव हों, तो उसे असाध्य समझो। अगर केवल एक "मोह" हो, तोभी असाध्य समझो। अगर इन उपद्रवोंमेंसे कुछ उपद्रव हों, तो याप्य समझो। अगर। उपद्रव न हों, तो साध्य समझो।

अगर वातरक्त एक दोष वाला और एक सालका हो, तो उसे साध्य समझो। दो दोषों वालेको याप्य समझो। तीनों दोषवाले और सब उपद्रव वालेको असाध्य समझो।

जो वातरक्त पाँवोंसे लेकर घुटनों तक फैला हो, उसे असाध्य समझो।

जिस वातरक्तमें चमड़ी फट जाय, उसे असाध्य समझो।

जिस वातरक्तमें बलक्षय और मांसक्षयके लक्षण हों, उसे असाध्य समझो।

कोई-कोई कहते हैं,—जिस वातरक्तको पैदा हुए एक साल हुआ हो, उसे याप्य समझो।

"सुश्रुत"मे लिखा है, जो वातरक्त घोंटुओं तक फूट निकला हो, फट गया हो, झिरने लगा हो यानी मवाद देने लगा हो, बल-मांसक्षय आदि उपद्रवों सहित हो और एक वर्षका हो, उसे असाध्य समझो।

वातरक्त चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें।

(१) वातरक्त पादमूल या हस्तमूल अर्थात् पैरों और हाथोंसे आरम्भ होता और जल्दी ही चिकित्सा न करनेसे सारे शरीरमें फैल जाता है, अतः इसके पूर्व्वरूप नजर आते ही, चिकित्सा करनी चाहिये। वातरक्त साधारण रोग नहीं है, इसीसे "सुश्रुत"ने इसकी गणना महावातव्याधियोंमें की है।

चरकादि कई आचार्य्योंने वातरक्तके दो भेद माने हैं:—
(१) उत्तान, और (२) गम्भीर। चमड़े और मांसमें रहनेवाला वायु उत्तान और भीतर रहनेवाला गम्भीर कहलाता है। पर अधिकांश आचार्य्योंने, "सुश्रुत"का मत मानकर, ये भेद नहीं माने हैं और कितनों ही ने माने हैं। "भावप्रकाश और वङ्गसेन" आदिने "सुश्रुत"का मत माना है, जबकि वृन्द आदिने चरकका मत माना है। "सुश्रुत"ने लिखा है:—

> द्विविधं वातशोणितमुत्तानमवगाढं-
> चेत्यके भाषन्तेतत्तु न सम्यक्।
> कुष्ठवदुत्तानं भूत्वा कालान्तरेणा-
> वगाढी भवति तस्मान्नद्विविधम्

कितने ही आचार्य्य कहते हैं, वातरक्त दो तरहका होता है:—
(१) एक तो शरीरके ऊपर उभरा हुआ, और (२) दूसरा शरीरके भीतर घुसा हुआ। परन्तु यह मत ठीक नहीं है। यह रोग, कोढ़की तरह, शरीरके ऊपर होकर, कालान्तरमें, शरीरके भीतर घुस जाता है; इस लिये यह दो तरहका नहीं हो सकता।

हमारी तुच्छ रायमें, उत्तान और गम्भीर इन दो भेदोंके माननेसे हानि कुछ भी नहीं। चिकित्सा दोनो तरह हो सकती है, इनको मानकर भी और न मानकर भी।

उत्तान या ऊपरके वातरक्तमे लेप लगाना, मालिश करना, तरड़े देना और स्नान करना हित है। गम्भीर या भीतरी वातरक्तमें आस्थापन वस्ति करना—गुदामें पिचकारी देना और स्नेहपान करना—तेल घी आदि चिकनी चीज़ें पीना हित है।

"पिंड तेल" आदि तेलोंकी मालिश कराना, लेप लगाना, तरड़े देना, नश्तर, जोंक या सींगी आदिसे खून निकालना, जुलाव आदिसे शरीर शुद्ध करना और पेटमे "तिक्तकादि घृत" पिलाना—ये उपाय दोनों ही वातरक्तोंमें हितकारी हैं।

गम्भीर या भीतरके वातरक्तमे, विशेषकर शास्त्रमे लिखे हुए "घी" पिलाना, जुलाब देना, फस्त खोलना और पथ्य तथा हल्का भोजन कराना अच्छा है।

वाताधिक्य उत्तान या ऊपरके वातरक्तमे, किसी "क़दर गरम किये हुए लेप" आदि लगाना हित है। क्योंकि शीतल लेपोंसे दाह, जलन, सूजन, खुजली और शूल रोग पैदा होते हैं; किन्तु पित्तरक्तकी अधिकता वाले वातरक्तमे "शीतल लेप" हितकारी हैं; गरम लेप करनेसे दाह, पीड़ा, पसीना और विदारण प्रभृति उपद्रव होते हैं। अतः अगर विशेष चिकित्सा करनी हो, तो वातरक्त "वाताधिक्य" है या "पित्ताधिक्य"—इसका पूरा पता लगा कर ही ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि वाताधिक्यमें शीतल लेप हानि करेगा और पित्ताधिक्यमें गरम लेप हानि करेगा। इसी तरह औरोंमें भी समझिये।

(३) वातरक्त रोगमें, घृतादि पिलाने, चमड़े पर तेल या लेप लगाने, दवाओंके पानी या काढ़ेके तरड़े देनेकी सभीने राय दी है।

गर खून निकालने और गुदामें पिचकारी देने पर, आचार्य्योंने बहुत ज़ोर दिया है। किन्तु खून निकालनेमें ज़रासी भूलसे बहुत भयङ्कर परिणाम हो सकता है, अतः यह काम खूब सोच-समझ कर करना चाहिये, ताकि उल्टे लेनेके देने न पड़ें।

"भावप्रकाश"में लिखा है,—पहले वातरक्त रोगीको स्नेहपान आदिसे स्निग्ध या चिकना करना चाहिए; यानी घी वग़ैरः पिलाकर कोठेको चिकना करना चाहिये। इसके पीछे दोषों और बलाबलका विचार करके, थोड़ा-थोड़ा खून निकलवाना चाहिये। परन्तु खून निकलवानेमें "वायुका बचाव" अवश्य करना चाहिये; अर्थात् खून निकलवानेसे वायु न बढ़े, इस रीतिसे खून निकलवाना चाहिये। क्योंकि खूनके निकलनेसे अगर वायु बढ़ता है, तो गम्भीर सूजन, अकड़न, नसोंमें दर्द, ग्लानि तथा वात-सम्बन्धी और रोग हो जाते हैं। अगर जितना चाहिये उतना खून बाक़ी नहीं रहता, तो खञ्जता आदि वातरोग हो जाते हैं और बहुधा रोगी मर भी जाता है। अतः आगा-पीछा देखकर, शरीरसे प्रमाण अनुसार, खून निकलवाना चाहिये। अँधाधुन्ध खून निकलवाना रोगीकी हत्या करना है।

अगर कोई कहे कि, खून निकलवानेमें जोखिम है, अतः हम खून निकालेंगे ही नहीं—तो यह भारी भूल है। जिस रोगका जो इलाज है वह करना ही चाहिये, क्योंकि बिना उसके रोग आराम न होगा और इस तरह भी रोगी मरेगा। रक्ताधिक्य वातरक्तमें या रक्तकी प्रधानता वाले वातरक्तमें खून निकलवाये बिना सफलता होना कठिन है। सुश्रुतने कहा है—

> शोणितमोक्षं चाभीक्ष्णा कुर्वीत। उच्छ्रित दोषे।
> च वमन विरेचनास्थापनानुवासनकर्म कर्त्तव्यम्॥

वातरक्तमें अच्छी तरह फस्त आदि खोल कर खून निकालना चाहिये। दोषोंकी अधिक उल्वणतामे वमन, विरेचन और आस्थापन-अनुवासन वस्तिकर्म—गुदामें पिचकारी ये सब करने चाहियें।

खुलासा यह है, कि खूनकी ज़ियादतीकी हालतमें फस्द, नश्तर, सींगी या जौंकसे खून निकालना चाहिये। कफकी प्रबलतामें वमन, पित्तकी प्रबलतामें विरेचन-जुलाब और वातकी प्रबलतामें वस्ति-कर्म या गुदामें पिचकारी लगाना हित है।

जिस रोगीके घोर दाह होता हो—जलन होती हो अथवा सूई चुभानेका सा दर्द होता हो, उसके जौंक लगवाकर खून निकालना चाहिये।

अगर चमचमाटी, खुजली, पीड़ा और कँप-कँपी—ये उपद्रव हों, तो सींगी लगवाकर खून निकालना चाहिये।

अगर वातरक्त शरीरके एक हिस्सेसे दूसरेमें जाता हो, तो पछने लगाकर या फस्त खोलकर खून निकालना चाहिये।

वातरक्तमें स्पर्श-शक्ति या चमड़ेकी ज्ञानशक्ति भी नाश हो जाती है, अतः जिस जगहकी ज्ञान-शक्ति नष्ट हो गई हो, वहाँका खून जौंक लगवाकर या नश्तर देकर निकालना चाहिये, लेकिन अगर अङ्ग सूख गया हो या वायुका कोप अधिक हो, तो खून न निकालना चाहिये।

अगर शरीरमें ग्लानि हो, तो खून न निकालना चाहिये। अगर निकालना ही हो, तो इस तरह निकालना चाहिये, जिससे वायु न बढ़े। वागभट्टने कहा है:—

> वातशोणित नो रक्त स्निग्धस्य बहुशो हरेत्।
> अल्पाल्प पालयन्वायु यथादोष यथाबलम्॥

चिकने तैल घी आदि पीये हुए वातरक्त-रोगीके दोष और बलका विचार करके, और वायुकी रक्षाका ख़याल रख कर, बारम्बार थोड़ा-थोड़ा खून निकालना चाहिये। मतलब यह है कि, रोगमें कौनसे दोषका कोप है, दोषका बल कितना है, रोगीमें कितना बल है, इन बातोंको समझ कर, बारम्बार थोड़ा-थोड़ा खून निकालना चाहिये; क्योंकि अंधाधुन्ध एक ही बारमें, आफ़त काटनेके लिए, बहुतसा

खून निकाल देनेसे वायुके कोपसे, अंग बात रोग होने और मरीजके मरनेका खतरा रहता है।

अब हम बस्तिकर्म या पिचकारी लगानेके सम्बन्धमें लिखते हैं, क्योंकि अनेक आचार्योंने, वातरक्त रोगमें, गुदामें पिचकारी लगाना सर्व्वोत्तम उपाय कहा है। वाग्भट्टने लिखा है :—

निर्हरेद्वा मलं तस्य सघृतैः क्षीरबस्तिभिः।
नहि बस्तिसमं किंचिद्वातरक्तचिकित्सितम्।
विशेषात्पायुपार्श्वोरुपर्वास्थिजठरार्तिषु॥

घी और दूधकी पिचकारियोंसे उस रोगीका मल निकालना चाहिये, क्योंकि बस्ति कर्म—गुदामें पिचकारी लगाकर मल निकालनेके समान, वातरक्तकी और चिकित्सा नहीं है। गुदा, पसली, जाँघ, सन्धि, हड्डी और पेट—इन अङ्गोंके दर्दमें "बस्ति-कर्म" या पिचकारी लगाना खास तौरसे मुफीद है।

किसीने कहा है, स्नेहयुक्त—तेल वगैरः चिकनी चीज़ मिली हुई—विरेचक या दस्तावर दवा खिलाना और स्नेह द्रव्य—तैल आदिकी पिचकारी लगाना वातरोगमें हित है। "भाव प्रकाश" में लिखा है,—वातरक्त वालेको पहले घी तैल आदि पिलाकर, उसका कोठा चिकना कर लेनेके बाद, तैलादि चिकनी चीज़ मिला हुआ जुलाब या नर्म दस्तावर दवा देकर मल निकालना चाहिये और गुदामें बारम्बार पिचकारी लगानी चाहिये।

किसीने लिखा है, घी तेल, चरबी और मज्जा पिलाकर, घी या तेलकी मालिश करके, गुदामें पिचकारी लगा कर और सुखोष्ण उपानह या सुहाता-सुहाता सेक करके वातरक्तको आराम करना चाहिये। सुश्रुतने भी कहा है :—

उपनाह परीषेक प्रदेहाभ्य जनानि च।
शरणान्य प्रवातानि मनोज्ञानि महान्ति च॥
मृदुगण्डोपधानानि शयनानि सुखानि च।
वातरक्ते प्रशस्यन्ते मृदु सवाहनानि च॥

वातरक्तमें, उपनाह, परिषेक, लेप, तैलादि चिकनी चीज़ोंकी मालिश, वायु-वर्जित विशाल और सजा हुआ घर, नर्म-नर्म तकिये और ओढ़ने-बिछानेके कपड़े एवं धीरे-धीरे हाथ पाँव दाबना—ये सब हित हैं।

खुलासा यह है कि, वातरक्तमे वैद्यको नीचे लिखे हुए काम करने चाहिय :—

(१) स्नेहपान कराना—घी तेल आदि पिलाना।
(२) तेल वगैरः चिकनी चीज मिला हुआ जुलाब देना।
(३) विचारके साथ शरीरका खून निकालना।
(४) दवाओंके काढेके तरडे देना।
(५) सुखोष्ण उपानह या सुहाता-सुहाता सेक करना।
(६) गुदामें घी दूध या तैलादिकी पिचकारी लगाना।
(७) उत्तम औषधि खिलाना।
(८) पथ्य सेवन कराना और अपथ्य छुड़ाना।
(९) लेप लगाना और मालिश कराना।
(१०) जरूरत हो तो दवाएँ रख कर बाँधना।

(४) लेप किस हालतमें गरम करके लगाना चाहिये और किस हालतमे शीतल लगाना चाहिये, इसका विचार किये बिना अँधाधुन्ध काम करना ठीक नही है। जैसे—शाली चाँवल, साँठी चाँवल, नल या नरकल, बेत, तालीस, सिंघाडा, गलोडा नामका पहाड़ी फल, हल्दी गेरु, सिवाल, पद्माख और कमलके पत्त—इन सबको "धान्याम्ल नामकी काँजी"मे पीस कर और "घी" मिलाकर पित्त-प्रबल वातरक्तमें लेप करना चाहिये। अगर यही लेप वात-प्रबल वातरक्तमें करना हो, तो कुछ गरम करके लगाना चाहिये और रक्त-प्रधान वातरक्तमें यही लेप, पित्त-प्रधान वातरक्तकी तरह, शीतल ही लगाना चाहिये।

(५) यों तो वातरक्तको अनेक दवा हैं, पर "गिलोय"के समान

और दवा नहीं है। सच पूछो तो वातरक्तमें "गिलोय" अमृत है। वातरक्तमें गिलोयका काढ़ा, गिलोयका स्वरस, गिलोयका चूर्ण अथवा कल्क सभी मुफीद हैं। अकेली गिलोयके सेवनसे वातरक्त नाश हो जाता है। वैद्य लोग इस रोगमें और दवा खिलाकर भी, अनुपान रूपसे, गिलोयका काढ़ा पिलाते हैं। "योगराज गूगल" खाकर, ऊपरसे गिलोयका काढ़ा पीनेसे वातरक्त शर्त्तिया चला जाता है। वाताधिक्य वातरक्तमें "पुराना घी" पिलाना अमृत है। गायके धारोष्ण दूधमें "गोमूत्र" मिलाकर पिलानेसे दोषोंका अनुलोमन होता है। पित्ताधिक्य वातरक्तमें, "दूध और रेंडीके तेलका जुलाब" अत्यन्त हित है। पित्ताधिक्य वातरक्तमें "सौ बार या हज़ार बारका धोया घी" लगाना अक्सीर है। रक्ताधिक्य वातरक्तमें, विचारपूर्व्वक, फस्त सींगी या जौंकसे "खून निकालना" सर्व्वोत्तम उपाय है। वातरक्त रोगीको, जलपानके समय भिगोये हुए चने खाना ख़ास तौरसे मुफीद है। सब तरहके वातरक्तोंमें मल मूत्र रोकना, गुस्सा करना, आग या धूपके सामने रहना, मैथुन करना, दिनमें सोना और कसरत करना महाअनर्थकारक है। ऐसी-ऐसी बातें वातरक्त-चिकित्सकको हर समय याद रखनी चाहियें।

(६) याद रखो, वातरक्त रोगमें निम्बादि चूर्ण, वृहत् मञ्जिष्ठादि क्वाथ, अमृतादि चूर्ण, योगसारामृत, अमृतादि गुग्गुल, सिंहनाद गुग्गुल, किशोर गूगल, गुड़ूची घृत और पिंड तैल आदि परीक्षित हैं। ये सब तरहके वातरक्तोंको निश्चय ही नाश करते हैं।

(७) विना पथ्य सेवन किये और अपथ्य त्यागे रोगी आराम हो नहीं सकता, अतः वैद्यको चाहिये कि, रोगीका पथ्य और अपथ्य पर खूब ध्यान दिला दे।

वातरक्त रोगमें—नये चाँवल, मांस, मछली, सेम, मटर, गुड, दही, तिल, उड़द, मूली, अधिक दूध, लाल कुम्हड़ा या काशीफल, आलू, प्याज़, लहसन, लाल मिर्च, खटाई, निमकीन पदार्थ, अभिष्यन्दी

पदार्थ, भारी पदार्थ, मलमूत्रका वेग रोकना, आगके पास बैठना. धूपमें फिरना, क्रोध करना, मैथुन करना, दिनमें सोना और मिहनत या कसरत करना ये सब हानिकारक हैं ।

पुराने चाँवल, पुराने जौ-गेहूँ, मूँग-चनेकी दाल, परवल, करेला, सफेद कुम्हड़ा, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, गेहूँकी रोटी, बथुआ, मकोयका साग, लवा, तीतर, बटेर और बतखका मांस—ये सब पथ्य हैं ।

वातरक्त नाशक योग ।

गुर्वादि क्वाथ ।

गिलोय, बावची, पँवारके बीज, नीमकी छाल, हरड, हल्दी, आमले, अड़ूसा, शतावर, सुगन्धवाला, बरियारेकी जड़, मुलेठी, महुआ, गोखरू, परवलके पत्ते, ख़सकी जड़, मँजीठ और लालचन्दन—इन १८ दवाओंको एक-एक माशे या डेढ़-डेढ़ माशे लेकर जौकुट कर लो और डेढ़ पाव पानीमें मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छानलो और शीतल होनेपर पीलो ।

इस काढ़ेके सवेरे-शाम दोनों समय, एक महीनेतक, पीनेसे वातरक्त, ख़ूनके विकार, सब तरहके वातरोग, सब तरहके कोढ़,

खाज, खुजली और चकत्ते वगैरः निश्चय ही नाश हो जाते हैं। यद्यपि यह काढ़ा शास्त्रोक्त है, पर हमारा अनेकबारका परीक्षित है। हमने इसे कभी फेल होते नहीं देखा। अगर आप वातरक्त और खूनके रोगोंपर दर्जनों शीशियाँ पीनेपर भी आराम्य न हो, इसे एक महीने-भर लगातार पीवें। हम प्रत्येक वैद्यसे इसे अपने रोगियोंको देनेकी ज़ोरसे सिफ़ारिश करते हैं। खूब परीक्षित है।

निम्बादि चूर्ण।

नीमकी छाल, गिलोय, बड़ी हरड़, आमले और बावची प्रत्येक चार-चार तोले लो, सोंठ, वायविडङ्ग, पँवारके बीज, छोटी पीपर, अजवायन, बच, सफेद जीरा, कुटकी, सफेद कत्था, सेंधानोन, जवाखार, हल्दी, दारूहल्दी, नागरमोथा, देवदारु और कूट ये सब एक-एक तोले लो। फिर सबको एक जगह मिलाकर-पीस कूटकर छान लो। यही "निम्बादि चूर्ण" है।

इस चूर्णकी मात्रा ३ या ४ माशेकी है। अनुपान—"गिलोयका काढ़ा" है। एक महीने तक, सवेरे-शाम, एक-एक मात्रा चूर्ण खा कर, ऊपरसे गुर्चका काढ़ा पीनेसे असाध्य वातरक्त, सफेद कोढ़, आमवातकी सूजन, तिल्ली, गोला, चमेंदल-कोढ़, सेंहुआ, दाद, चिचर्चिका, मण्डल, चकत्ते, जलोदर आदि उदर रोग, पाण्डु, कामला और सब तरहके फोडे फुन्सी आदि निश्चय ही नाश हो जाते हैं। खूनके रोग नाश करनेमें रामबाण है। खूब परीक्षित है।

नोट—कोई सफेद खैर और कोई खैरकी छाल लेते हैं।

अमृतादि चूर्ण।

गिलोयका सत्त आध पाव और शुद्ध गूगल आध पाव—दोनोको मिलाकर पीस लो। इसमेसे ३ माशे चूर्ण, सवेरे ही, पानीके साथ खानेसे घोर वातरक्त रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—तेल, खटाई, हींग और नमकसे वतई बचना जरूरी है।

सिंहनाद गुग्गुल।

आमले, हरड़, बहेड़ा, वायविड़ङ्ग, शुद्ध शिलाजीत, रास्ना, चीतेकी छाल, सोंठ, शतावर, जमालगोटेकी जड़, पीपरामूल, देवदारु, गिलोय, दारूहल्दी, पुनर्नवाकी जड़, छोटी इलायची और गजपीपर—इन सत्रह चीज़ोंको एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लेकर चूर्णमें मिला दो और "गायके घी"के साथ खूब घोटो। जब घुट जाय, चिकनी हाँडीमें रख दो।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान गरम जल या दूध है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खानेसे वातरक्त निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कैशोर गुग्गुल।

शुद्ध भैंसा गूगल १ सेर लेकर एक कपड़ेकी पोटलीमें ढीली बाँध लो। एक सेर त्रिफले और दो सेर गिलोयको कुचल लो। इन तीनोंको १ मन ८ सेर पानीमें औटाओ, बीच-बीचमे गूगलकी पोटलीको हिलाते रहो। जब आधा या २४ सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको लोहेकी कड़ाहीमें डालकर फिर आग पर रख दो। पोटलीकी गूगलमें "घी" मिलाकर, उसे भी उसी काढ़ेमें डाल दो। जब गाढ़ा होने पर आवे, उसमें—त्रिफलेका चूर्ण ६ तोले, त्रिकुटेका चूर्ण ६ तोले, वायविड़ङ्ग २ तोले, निशोथ १ तोले दन्तीकी जड़ १ तोले और गिलोय ४ तोले भी मिला दो और आध सेर "घी" भी मिला दो और खूब कूटो। फिर इसे चिकनी हाँडीमें रख दो।

इसकी मात्रा १ तोलेकी है। अनुपान—दूध अथवा गिलोयका काढ़ा अथवा चनोंका भिगोया पानी है। इसके लगातार सेवन करनेसे वातरक्त आदि अनेक रोग नाश हो जाते हैं।

दूसरा अमृतादि चूर्ण ।

गिलोय, अरण्डकी जड़, साँठीकी जड़, शतावर, छोटी पीपर, देवदारु, असगन्ध, चिरायता, कुलींजन, पीपरामूल और सोंठ—इनको समान-समान लेकर, पीस-छान कर चूर्ण कर लो। इसमेंसे चार या ६ माशे चूर्ण, तोले भर गायके घीमें मिला कर, सवेरे ही नित्य, एक महीने तक, खानेसे वातरक्त अवश्य आराम हो जाता है।

अमृतादि काढ़ा ।

गिलोय ८ माशे, सोंठ ८ माशे और धनिया ८ माशे—इन तीनोंको कुचल कर डेढ़ पाव पानीमें औटाओ ; जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छान कर पीलो। इस काढ़ेके १ महीने तक पीनेसे वातरक्त नाश हो जाता है।

वासादि काढ़ा ।

अडूसा, गिलोय और अमलताशका गूदा—इनको कुल २ तोले लेकर डेढ़ पाव पानीमे औटाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मलछानकर उसमें ६ माशे "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीलो। इसके लगातार कुछ दिन पीनेसे वातरक्त अवश्य आराम हो जाता है।

पटोलादि क्वाथ ।

परवलके पत्ते, कुटकी, शतावर, त्रिफला और गिलोय—इनको कुल दो तोले लेकर डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बनालो। चौथाई पानी रहने पर छानकर पीलो। इस काढ़ेसे वातरक्त और उसकी जलन अवश्य नाश हो जाती है।

रसाभ्र गुग्गुल ।

गिलोय २ सेर लेकर १६ सेर पानीमें औटाओ, जब चार सेर पानी रह जाय, काढ़ेको छान कर रख लो।

त्रिफला २ सेर लेकर १६ सेर पानीमें औटाओ ; जब चार सेर पानी शेष रहे, काढ़ेको उतार कर छान लो।

चार तोले शुद्ध पारे और चार तोले शुद्ध गन्धकको ८ घन्टे तक खरल करके कज्जली करलो।

लोह भस्म ४ तोले, अभ्रक भस्म ८ तोले और शुद्ध गूगल १ सेर अलग तैयार रखो।

त्रिकुटा, त्रिफला, दन्तीकी जड़, गिलोय, इन्द्रायणकी जड़, वायविड़ंड, नागकेशर और तेवड़ीकी जड़ यानी निशोथ—दो-दो तोले लेकर पीस-छान लो और रखद दो।

अब दोनों काढ़े, पारे-गन्धककी कजली, लोह भस्म, अभ्रक भस्म और गूगलको एकमें मिलाकर, आगपर औटाओ। जब गाढ़ा होजाय, उसमें त्रिकुटा प्रभृति दवाओंका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और खूब चलाओ। एक-दिल हो जानेपर उतारकर रख दो।

इस "रसाभ्र गूगल"से वातरक्त और और कोढ़ अवश्य आराम हो जाते हैं। सच पूछो, तो यह गूगल इन दोनों रोगोंकी परम औषधि है। मात्रा १ तोलेकी है। अनुपान—गिलोयका काढ़ा है ; यानी सवेरे ही १ मात्रा खाकर, ऊपरसे गिलोयका काढ़ा पीनेसे वातरक्त और कोढ़ आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

योगसारामृत।

उत्तम भैंसा गूगल २ सेर, त्रिफला १ सेर और गिलोय १२८ तोले—इनको ३२ सेर पानीमें मिलाकर औटाओ और कलछीसे बारम्बार चलाते रहो। जब आधा पानी रह जाय, उसे उतारकर छान लो। इस काढ़ेको फिर वर्तनमें डालकर आगपर औटाओ। जब पकते-पकते, ओलेके समान सफेद और गाढ़ा हो जाय, उतार लो।

शतावर, गंगेरन, विधारा, कौंच, पुनर्नवा, गिलोय, छोटी पीपर,

असगन्ध और गोखरू—इनको आध-आध सेर लेकर पीस-कूटकर छान लो। फिर इसमें चूर्णसे आधी—अन्दाज़न २। सेर—चीनी मिला दो और खूब मसलो। अब इस चूर्णको ऊपरके पकाये हुए मसालेमें मिला दो।

फिर इस मसालेको एक साफ बासनमें डालकर, ऊपरसे ६४ तोले शहद, ३२ तोले घी भी मिला दो। शेषमें दालचीनी, इलायची और तेजपातका पिसा-छना चूर्ण ४ तोले मिला दो।

इस योगसारामृतके बलाबल अनुसार सेवन करनेसे और पथ्य पालन करनेसे वात, पित्त, और कफसे पैदा हुए अनेक रोग तथा वातरक्त नाश हो जाते हैं। धीरे-धीरे इसके सेवन करनेसे सफेद बाल काले हो जाते और बल पुरुषार्थ बेतहशा बढ़ता है।

नोट—इस योगसारामृत और अगले योगसारामृतमें इतना ही भेद है कि इसमें "गूगल" डाली जाती है और उसमें "गूगल" नहीं डाली जाती। यह वृन्दका योग है और वह वङ्गसेन इत्यादिका।

दूसरा योग सारामृत।

शतावर, गँगेरन, बिधायरा, उटंगनके बीज, सोंठी, गिलोय, छोटी पीपर, असगन्ध और गोखरू—इनको आध-आध पाव लेकर पीस-छान लो।

मिश्री ४५ तोले, दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात तीनों कुल ४ तोले—इनको भी पीस-छान कर रख लो।

अब दोनों चूर्णोंको एकमें मिला दो। ऊपरसे शहद १६ तोले और घी ८ तोले मिला दो और एक दिल करके काँचके भाँडेमें रख दो।

इसमेंसे एक या दो तोले दवा रोज़ सवेरे ही खानेसे वातरक्त, कोढ़, राजरोग, खून-खराबीके रोग, वातपित्त पित्तरक्त और कफके रोग नाश होकर बल-पुरुषार्थ बढ़ता और शरीर कुन्दनकी तरह चमकने लगता है,। खूब परीक्षित है।

नोट—एक वद्यराज इसमें ३२ तोले चीनी, १७ तोले शहद और ८५ तोले घी तथा चार-चार तोले इलायची, तेजपात और दालचीनी डालनेकी बात कहते हैं। पर शास्त्रमें चीनी शहद और घी वगैरःकी तोल वही लिखी है, जो हमने लिखी है।

अमृतादि गुग्गुल।

हरड़, बहेड़े, आमले, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, बायविडंग, तज, गिलोय, निशोथ और जमालगोटेकी जड़ एक-एक तोले, गिलोय १५ तोले, शुद्ध गूगल ३३ तोले और त्रिफला ५१ तोले—इन सबको महीन पीस कर, लोहेकी कड़ाहीमें, लोहेके डण्डेसे, घी डाल-डाल कर, ६ घण्टे तक घोटो और चिकने बर्तनमें रख दो।

इस "अमृतादि गूगल"की मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम जल या दूध है। इसके सेवन करनेसे भयंकर वातरक्त, फोड़े-फुन्सी, घाव, भगन्दर, आमवात और सूजन आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह गूगल भी परीक्षित है।

वातरक्त गजाङ्कुश लेप।

फिटकरी, आमलासार गन्धक और राल ये तीनों चार-चार तोले और रसकपूर ६ माशे—इन सबको महीन पीस लो।

गायका लूनी घी काँसीकी थालीमें रख कर, पानीसे १०१ बार घोलो। इस घीमें ऊपरको पिसी-छनी दवाओंको मिला दो और मथकर एक-दिल कर लो।

यह लेप वातरक्तके चेप बहने और खुजली चलने आदि पर रामबाण है। आप इसे कमरसे पैरों तक फैले हुए वातरक्त पर लगा दीजिये। ३ या ४ दिनमे ही यह पीले-पीले पानी बहने, चेप लगाने और पीड़ा होने आदिको नष्ट कर देता है। फुन्सियाँ सूख-सूख कर झड़ जाती हैं। यह लेप हमारा कमसे कम १०० बारका आज़माया हुआ है। कभी फेल नहीं होता। वातरक्त पर तो यह अकसीर है ही, इससे विसर्प और उपदंशके ज़ख्म भी आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

अमृतादि घृत।

गिलोय, मुलेठी, मुनक्के, त्रिफला, सोंठ, खरियारा, अडूसा, अमलताशका गूदा, सफेद पुनर्नवा, देवदारु, गोखरु, कुटकी, शतावर, छोटी पीपर, गंभारीफल, रास्ना, तालमखाना, अरण्डकी जड़, विधायरा, नागरमोथा और नील कमलका पञ्चांग—इन सबको साढ़े तीन-तीन माशे लेकर, सिल पर पानीके साथ पीस कर एक सेर लुगदी तैयार करो।

फिर आमलोंका रस चार सेर, पानी १२ सेर और गायका घी ४ सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "अमृतादि घृत" है।

इसकी मात्रा ६ माशेसे ४ तोले तक है। इस घीको खानेके पदार्थोंके साथ खाने या पीनिसे वातरक्त नाश हो जाता है।

गुड्ची घृत।

पहले एक सेर गिलोयको लाकर, सिल पर पीसकर लुगदी बनालो।

फिर चार सेर गिलोयको कुचल कर, ६४ सेर जलमें औटाओ; जब १६ सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

अब गायका घी ४ सेर, गायका दूध ४ सेर, ऊपरकी लुगदी और १६ सेर काढ़ेको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उत्तारकर छान लो।

इस घीकीकी मात्रा ६ माशेसे ३ तोले तक है। इसके पीनेसे खून साफ होता और कोढ़ तथा दुर्निवार वायु नष्ट होता है। वातरक्त पर यह घी परमोत्तम और परीक्षित है।

शतावरी घृत।

एक सेर शतावरको सिल पर पीसकर लुगदी बनालो।

चार सेर शतावरको ६४ सेर जलमें औटा कर काढ़ा पकालो ; जब १६ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

फिर गायका घी चार सेर, गायका दूध १६ सेर, ऊपरका काढ़ा १६ सेर और लुगदी मिलाकर घी पकालो। जब घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर रख दो। यह घी भी वातरक्त नाश करनेमें उत्तम है। बलाबल अनुसार पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—इस घीकी विधिमें मत-भेद है। पर हमने अपनी परीक्षित विधि लिख दी है।

बला घृत।

खिरेंटी, कंघी, मेदा, कौंच, शतावर, काकोली, क्षीरकाकोली, रास्ना और दाख—इनको आठ-आठ तोले लेकर सिल पर पीसकर एक सेर लुगदी तैयार कर लो।

फिर गायका-घी चार सेर, दूध १६ सेर और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे घी पका लो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो।

इस घीके पीनेसे वातरक्त, हृदय रोग, पाण्डु रोग, विसर्प, कामला और दाह ये नष्ट हो जाते हैं।

पिण्ड तल।

शारिवा, राल, मुलेठी, मजीठ और मोम—ये सब एक-एक छटाँक लेकर, सिल पर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर सवा सेर तेल, पाँच सेर दूध और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे तेल पका लो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस तेलकी मालिश करने या लगानेसे वातरक्तकी पीड़ा आदि नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—लुगदी बनाते समय मोमको अलग रखो किन्तु तेल पकाते समय मोमको तेलमें मिला दो।

दूसरा पिण्ड तैल ।

मँजीठ, शारिवा, राल और मुलहटी—इनको चार-चार तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो ।

फिर ६४ तोले अरण्डीका तेल, २५६ तोले पानी और ऊपरकी लुगदी—इनको कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ । पकते समय चार तोले मोम भी डाल दो । जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो ।

इस तेल या मरहमके वातरक्त पर लगानेसे अवश्य आराम होता है । परीक्षित है ।

दशपाक बला तैल ।

खिरटी १ सेर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस कर लुगदी बना लो ।

खिरैंटी चार सेरको कुचल कर ६४ सेर जलमें पकाओ ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो ।

फिर चार सेर तेल, सोलह सेर दूध, सोलह सेर काढ़े और लुगदीको मिलाकर तेल पकालो । पक जाने पर छान कर रख लो ।

दूसरी बार इस पके हुए तेलको फिर, उतनी ही लुगदी, उतने ही दूध और उतने ही काढ़ेके साथ पकाओ । जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो ।

इसी तरह इस तेलको ऊपरकी तरकीबसे दस बार पकाओ । एक बार पके हुए तेलको बारम्बार नौ बार और पकानेसे "दशपाक बला तेल" तैयार हो जायगा ।

यह तेल वातरक्त और वातपित्त पर रामबाण है । यह वीर्य-दोष और योनि रोगोंको भी नाश करता और वीर्य बढाता है ।

शतपाक या सहस्रपाक बला तैल ।

ठीक ऊपरकी तरकीबसे सौ बार पकानेसे "शतपाक बला

तेल" और हज़ार वार पकानेसे "सहस्रपाक वला तेल" तैयार होता है।

कोई कहते हैं,—खिरेंटीकी लुगदी, खिरटीका काढ़ा, तेल और दूध—बराबर-बराबर लेकर सौ या हज़ार बार पकानेसे "शतपाक और सहस्र पाक वला तेल" तैयार हो जाता है। विधि दोनों ही अच्छी हैं, पर हमारी लिखी ऊपरकी विधि उत्तम है। उस विधिसे तैयार हुआ तेल ज़ियादा बलवान होता है। पाठक समझ सकते हैं, जब दश बार पके तेलमें इतने गुण हैं, तब हजार बार या सौ बारके पके तेलमें कितने गुण होंगे।

यह तेल इन्द्रियोंको चैतन्य करने वाला, प्राण रक्षा करने वाला, पुष्टि करने वाला एवं वीर्य और रुधिरके विकार नाश करने वाला है। यह सच्चा अमृत है, अगर कोई ख़र्च और मिहनत बर्दाश्त करे। हमने अपने जीवनमें सिर्फ दो बार यह बनाया और जो आनन्द उठाया उसे क़लमसे लिख कर बता नहीं सकते। अफसोस है, कि हम इसे सदा न रख सके। दशपाकी सहज है। हज़ारपाकी बड़ी तकलीफ़से तैयार होता है।

महातिक्तक घृत।

सतोना, अतीस, अमलतासका गूदा, कुटकी, पाढ़, नागरमोथा, ख़स, हरड़, बहेड़ा, आमला, पित्तपापड़ा, परवलके पत्ते, नीमकी छाल, मँजीठ, पीपर, पद्माख, कचूर, सफेद चन्दन, धमासा, इन्द्रायणकी जड़, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, काला सारिवा, सफेद सारिवा, मूर्वा, अड़ूसा, शतावर, त्रायमाण, इन्द्रजौ, मुलेठी और चिरायता—इन बत्तीस दवाओंको एक-एक तोले लेकर, सिल पर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

अगर लुगदी तोलमें ३२ तोले हो, तो घी चौगुना यानी १२८ तोले लो। घीसे दूना—२५६ तोले—आमलोंका रस या काढ़ा और अठगुना—१०२४ तोले (१२ सेर १३ छटाँक)—पानी लो।

लुगदी, घी, आमलोंका रस और पानी सबको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और बर्तनमें भर कर रख दो।

इस घीके सेवन करनेसे वातरक्त रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। इसके सिवा कोढ़, रक्तपित्त, खूनी बवासीर, पाण्डुरोग, हृदय-रोग, गोला, विसर्प, प्रदर रोग, गंडमाला, क्षुद्र रोग और ज्वर—ये सब भी नाश हो जाते हैं। वातरक्त पर यह घी भी परीक्षित है।

किशोर गुग्गुल।

गिलोय २ सेर, शुद्ध गूगल १ सेर और त्रिफला १ सेर—इन तीनोंको १६ सेर पानीमें डाल कर औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको फिर लोहेकी कड़ाहीमें डालकर और आग पर रख कर औटाओ और कलछीसे चलाते रहो। जब पकते-पकते गाढ़ा होने पर आवे, इसमें—

सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, बाय-विडंग २ तोले, हरड़ २ तोले, बहेडा २ तोले, आमले २ तोले, निशोथ १ तोले, दन्तीकी जड़ १ तोले और गिलोय ४ तोले—इनका चूर्ण मिला दो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनालो। यही "किशोर गूगल" है।

इससे सूजन, व्रण, गोला, कोढ़, उदर रोग, वातरक्त, खाँसी, मन्दाग्नि, पाण्डु रोग और प्रमेह रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित विधि है।

इसकी एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे "गरम जल, दूध" या "मंजिष्ठादि काढ़ा" पीनेसे वातरक्त या खून-खराबीके रोग आराम हो जाते हैं।

किशोर गुग्गुल।

हरड़, बहेड़े, आमले और गिलोय—एक-एक सेर लेकर जौकुट कर लो और १६ सेर पानीमें डाल कर औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

एक सेर शुद्ध गूगल लेकर कूट लो और ऊपरके काढ़ेमें मिला दो। फिर सबको लोहेकी कड़ाहीमें डालकर पकाओ और लोहेकी कलछी से चलाते रहो। जब पाक गुड़के पाक-जैसा गाढ़ा हो जाय,उसमें—

हरड़ २ तोले, बहेड़े २ तोले, आमले २ तोले, गिलोय २ तोले, सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, बायविडंग २ तोले, दन्तीकी जड़ १ तोले और निशोथ १ तोले—इनका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और नीचे उतार कर खूब ही कूटो। जब सब एकदिल हो जायँ, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो और घीकी चिकनी हाँडीमें रख दो।

इसकी एक-एक गोली "गरम जल, दूध या मंजिष्ठादि काढ़े"के साथ सेवन करो। इसको रोगीकी ताक़त और रोगका तारतम्य देखकर उचित अनुपानके साथ देनेसे सब तरहके कोढ़, त्रिदोषज वातरक्त, सब तरहके व्रण, गोला, प्रमेह, उदररोग, मन्दाग्नि, खाँसी, श्वास और पाण्डु रोग नाश हो जाते हैं। इसके सेवन करनेसे शरीर सोनेकी तरह दमकने लगता है।

नोट—"मन्जिष्ठादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे वातरक्तादि खून-खराबीके रोग नाश होते हैं। "खदिरादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे व्रण और कोढ़ नष्ट होते हैं। "वासकादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे नेत्र रोग और "वरुणादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे गुल्मादिक रोग नाश हो जाते हैं।

जो गूगल सेवन से लाभ उठाना चाहे, उसे खटाई, लालमिर्च, अजीर्ण, मैथुन, मिहनत, धूप, शराब और क्रोध—इनसे क़तई परहेज़ करना परमावश्यक है। जो अपथ्य त्याग कर गूगल सेवन करता है, उसे ही लाभ होता है अन्यथा उल्टी हानि होती है।

नोट—हमने किशोर गूगलकी तीन विधि लिखी हैं, जिनमें नाममात्रका फ़र्क है। तीनों विधियोंसे हमने यह गूगल बनाई है। यह विधि "शार्ङ्गधर" की है और सर्वोत्तम है।

योगराज गुटी ।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, कालीमिर्च, भुनी हींग, अजमोद, सिरस, सफेद ज़ीरा, कालाजीरा, रेणुकाके बीज, इन्द्रजौ, पाढ़, वायविड़ंग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगीकी जड़, वच, मरोड़-फली, तेजपात, देवदारु, छोटी पीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सेंधा-नोन, इलायची, गोखरू, हरड़, धनिया, बहेड़ा, आमले, दालचीनी, ख़सकी जड़, जवाखार और तिल—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस कर छान लो।

इस चूर्णके बराबर शुद्ध गूगल लेकर इसमें मिला दो और घी डाल-डालकर खूब कूटो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना कर चिकने बर्तनमें रख दो।

इस गूगलमें मैथुन और खाने-पीनेकी कोई रोक-टोक नहीं। यह गूगल बुढ़ापे और रोगोंको नाश करने वाली है। इससे वात रोग, आमवात, अपस्मार, मृगी, वातरक्त, कोढ़, दुष्ट व्रण, बवासीर, तिल्ली, गोला, उदर रोग, पेट फूलना, मन्दाग्नि श्वास, खाँसी, अरुचि, प्रमेह, नाभि-शूल, कृमि रोग, क्षय, हृदय-रोग, वीर्य-दोष, उदावर्त्त और भगन्दर नाश होते हैं।

यह गुटी तीन माशेसे शुरु करके, एक हफ्तेमें एक तोले तक बढ़ा देनी चाहिये। भिन्न-भिन्न रोगोंमें इसके अनुपान इस तरह हैं :—

वातरोगोंमें	रास्नाके काढ़ेके साथ।
मेह रोगमें	दारुहल्दीके काढ़ेके साथ।
वातरक्तमें . .	गिलोयके काढ़ेके साथ।
पाण्डुरोगमें . .	गोमूत्रके साथ।
मेदवृद्धिमें	शहदके साथ।

सफेद या काले कोढ़में	नीमके काढ़ेके साथ ।
शूल रोगोंमें .	मूलीके काढ़ेके साथ ।
चूहेके विषमें ..	पाढलकी जड़के काढ़ेकेसाथ ।
उग्र नेत्र रोगोंमें	त्रिफलेके काढ़ेके साथ ।
समस्त पेटके रोगोंमें	पुनर्नवादि काढ़ेके साथ ।

गोक्षुरादि गुग्गुल ।

११२ तोले गोखरू लेकर जौकुट करलो और छै गुने यानी ६७२ तोले (८ सेर ३२ तोले) पानीमें डालकर औटाओ। जब आधा यानी सवा चार सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

फिर इस काढ़ेमें २८ तोले गूगल पीस कर मिला दो और पाक आग पर चढ़ा कर गुड़कासा शीरा बना लो। जब शीरेके समान गाढ़ा हो जाय, इसमें—

सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, वहेड़ा, आमला और नागरमोथा—ये सात दवाएं चार-चार तोले लेकर और पीस-छान कर मिला दो और गोला वना लो। फिर उस गोलेसे छोटी-छोटी गोलियाँ बना लो।

इस गूगलसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर रोग, मूत्राघात, वातरक्त, वात-रोग, धातुरोग और पथरी ये सब नाश हो जाते हैं। शार्ङ्गधरने इसे प्रमेह आदि रोगों पर प्रधान कहा है, पर यह "वातरक्त"को भी नाश करती है, इसीसे हमने यहाँ लिखी है।

त्रिड़ गाद्य गुग्गुल ।

वायविड़ंग, हरड़, वहेड़ा, आमला, सोठ, मिर्च और पीपर—इनको वरावर-वरावर लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके वरावर "शुद्ध गूगल" मिलाकर, घी डाल-डाल कर खूब कूटो और गोलियाँ बना लो।

पथ्य सहित रहनेसे, इस गूगलसे वातरक्त, गोला, उदर रोग, पाण्डु और सूजन—ये सब नाश हो जाते हैं।

लघुमंजिष्ठादि क्वाथ।

मंजीठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, गिलोय और नीमकी छाल—इन नौ दवाओंको तीन-तीन माशे लेकर और डेढ़ पाव पानीमें औटाकर काढ़ा बना लो और चौथाई रहने पर छान कर पीलो।

इस काढ़ेसे वातरक्त, खाज, खुजली, खूनके विकार और कापालिक कोढ़ आदि रोग नाश हो जाते हैं। ग़रीबोंके लिए अच्छी चीज है; धीरे-धीरे फायदा करता है, पर फायदा जरूर करता है। परीक्षित है।

वृहत् मँजिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ, नागरमोथा, कुड़ेकी छाल या जड, गिलोय, कूट, सोंठ, भारंगी, कटेरीका पञ्चाङ्ग, बच, नीमकी छाल, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, बहेडा, आमला, परवलके पत्ते, कुटकी, मूर्वा, वायविड़ंग, विजैसार, चीतेकी छाल, शतावर, त्रायमाण, छोटी पीपर, इन्द्रजौ, अडूसेके पत्ते, भाँगरा, देवदारु, पाढ, खैरसार, लाल चन्दन, निशोथ, वरनाकी छाल, चिरायता, बावची, अमलताशका गूदा, सहोंड़ाकी छाल, वकायन, कंजा, अतीस, नेत्रवाला, इन्द्रायणकी जड़, घमासा, सारिवा और पित्तपापडा—इन ४५ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट कर रख लो। इसमेंसे २ तोले दवा लेकर डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बनाओ और चौथाई पानी रहने पर छान लो।

इस काढ़ेमें दो माशे "पीपरका चूर्ण और २ माशे शुद्ध गूगल" मिलाकर पीलो। इस तरह लगातार एक महीने तक पीनेसे वातरक्त, १८ प्रकारके कोढ़, उपदंश रोग—आतशक, श्लीपद—हाथीपाँव, अङ्गशून्यता, पक्षाघात, एकांगवात—फालिज, मेदरोग और नेत्ररोग नाश हो जाते हैं।

यदि इन दवाओंमे कचनारकी छाल, बबूलकी छाल, सालसेकी लकड़ी और सरफोंका—ये चार दवाएँ भी मिळाली जायँ, तब तो

कहना ही क्या ? अगर इसमें "शहद" या "शर्बत उन्नाव" छै-छै माशे मिला लिये जायँ, तो यह और भी जल्दी आराम करता है ।

हमने इसका अर्क खींच कर, इससे बहुत काम लिया है । २ तोले अर्क़में ६ माशे "शहद" या "शर्बत उन्नाव" मिलाकर पिलानेसे अनेक कष्टसाध्य और वैद्योंके त्यागे हुए रोगी हमने आराम किये हैं । कोई रोगी १५ दिनमें, कोई १ महीनेमें और कोई तीन महीनेमें इससे आराम हो गये । जिनके शरीर देखनेसे घृणा होती थी, जिन्हें कोई पास न बैठने देता था, वे सब सुवर्णकीसी कान्तिवाले हो गये । जिन्होंने रोगके बलका विचार किये बिना, जल्दी ही इसे छोड़ दिया, उन्हींको लाभ न हुआ ।

नोट—अगर अर्क खिचवाना या खींचना हो, तो सारी दवाएँ—उननचास दवाएँ छै-छे तोले लेकर जौकुट करलो और रातके समय, मिट्टीके या कलईदार बर्तनमें दस बारह सेर पानीमें भिगो दो और २४ घन्टे बाद अर्क खींच लो । अगर ५ बोतल अर्क निकालोगे, तो अर्क़ बढ़िया होगा । उसकी मात्रा १ तोलेकीही काफी होगी । अगर दस या १५ बोतल निकालोगे, तो मात्रा २ से ३ तोले तक होगी । १० बोतल अर्क़ अव्वल दर्जेका होगा । काढ़ा बदज़ायके होता है और बड़ी दिक्कतोंसे तैयार होता है, पर अर्क स्वादमें बुरा नहीं होता और रोगीको कष्ट नहीं होता । बोतलसे निकाल कर वह चट पी लेता है । पहले ज़मानेके रोगी काढ़ा वगैरः बना लेते थे । आजकल तो डाक्टरोंकी तरह तैयार माल चाहिये । अत: वैद्योंको "सुदर्शन चूर्ण" और "बृहत मजिष्ठादि क्वाथ"का अर्क तैयार रखना चाहिये । अगर वैद्य जल्दी लाभ चाहें, तो लालच त्याग कर दस बोतल अर्कसे जियादा न निकालें अथवा दो दर्जे कर दें । दस बोतलके बादका अर्क दूसरे दर्जेका समझा जाय ।

ब्राह्मी घृत ।

ब्राह्मीके पत्तोंका रस ४ सेर, घी ४ सेर और बच, कूट शंखाहूली इन तीनोंका चूर्ण मिलाकर आध सेर तैयार करो । फिर इनको मिलाकर घी पका लो । इस घीके खानेसे वातरक्त, उन्माद और अपस्मार आदि नाश हो जाते हैं । यह घी शरीर पर लगाया भी जाता है और लगानेसे कोढ़ आदिको दूर करता है । परीक्षित है ।

पंचनिम्ब चूर्ण।

कड़वे नीमकी जड, छाल, फल, पत्ते और फूल—इन पाँचोंको बारह-बारह तोले लेकर पीस कूट कर ६० तोले चूर्ण बना लो।

फिर इसमें लोहभस्म, छोटी हरड, पंवाडके बीज, त्रिफला, वायविडङ्ग, शक्कर, हल्दी, छोटी पीपर, कालीमिर्च, सोंठ, गोखरू, शुद्ध भिलावे, आमले, बावची और अमलताशका गूदा—इन पन्द्रह दवाओंको चार-चार तोले लेकर पीस-छान कर मिला दो।

शेषमें इस चूर्णमें भाँगरेके रस की एक पुट दो, यानी चूर्णको भाँगरेका रस डाल-डालकर खरल करो और सुखा लो।

फिर १ पाव खैरकी छालको चार सेर पानीमें औटाओ। जब आठवाँ भाग—आध सेर पानी रहे, उतारकर छानलो। अन्तमें ऊपरके चूर्णको इस काढ़ेके साथ खरल करो और सुखाकर छानलो और धर दो।

इसमेंसे १ तोले चूर्ण खैरकी छालके काढ़ेके साथ अथवा घीके साथ अथवा गायके दूधके साथ खानेसे एक महीनेमें वातरक्त और कोढ़ रोग आराम हो जाते हैं। कई कोढ़ी आराम हुए हैं। परीक्षित है।

वातरक्त नाशक ग़रीबी नुसखे।

लगानेकी दवाएँ।

(१) बकरीके घी या दूधमें गेहूँका आटा उबालकर, उसका लेप करनेसे वातरक्त शमन होता है।

(२) अरण्डीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे वातरक्त आराम होता है।

(१०) सौ वार धोये हुए घीकी मालिश करनेसे पित्ताधिक्य वातरक्तमें शान्ति आती है।

कफाधिक्य वातरक्त नाशक नुसख़े।

नोट—कफाधिक्य वातरक्तमें कड़वी दवाओंसे पकाया हुआ घी पिलाना, वारम्बार जुलाब देना, हल्की-हल्की कय कराना, लंघन कराना और वातरक्तके स्थानपर छहाते-छहाते गरम काढ़ोंके तरड़े देना लाभदायक है।

(१) आमले और हल्दीका काढ़ा "शहद" मिलाकर पिलाने अथवा त्रिफलेका काढा पिलाने अथवा मुलेठी, सोंठ, हरड़ और कुटकीका कल्क (लुगदी) खिलाने अथवा गोमूत्रमें "शहद" मिलाकर पिलाने अथवा पानीके साथ पुराना गुड़ और हरड़ खिलानेसे कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है। इन पाँचों नुसखोंमेंसे किसी एक नुसख़ेके कुछ दिन बरावर सेवन करनेसे कफाधिक्य वातरक्त अवश्य आराम हो जाता है।

(२) माठेके साथ अथवा पानीके साथ "हरड़का चूर्ण" खानेसे कफाधिक्य वातरक्त चला जाता है।

(३) गिलोय, कुटकी, मुलेठी और सोंठको सिल पर पानीके साथ पीसकर, उसमें "शहद और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे कफाधिक्य वातरक्त अवश्य चला जाता है। परीक्षित है।

(४) आमले, हल्दी और नागरमोथेका काढ़ा पीनेसे कफाधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(५) सत्तू, घी, जवाखार और कैथकी छाल,—इनको पानीके साथ पीस कर लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त शमन होता है।

(६) सरसों, नीमकी छाल, आककी छाल, वालछड़, जवाखार और तिल—इनको पानीके साथ सिल पर पीस कर लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(७) मसूरकी दाल और सहजनेके बीज "धान्याम्ल काँजी"में पीस कर लेप करने और एक घन्टा तक लेप रखने तथा ऊपरसे खट्टे रसोंके तरड़े देनेसे वात और कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(८) शालपर्णी, पृश्निपर्णी और दोनों कटेलियोंको दूधमें पीस कर और जौका सत्तू मिलाकर लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(९) सफेद सरसोंको पानीके साथ पीस कर रखलो ; तिल और असगन्धको पानीके साथ पीस कर रखलो ; चिरौंजी, ल्हिसौड़ेकी छाल और कैथकी छाल—इनको पानीके साथ पीसकर अलग रख लो ; मीठा सहँजना और साँठीको पानीके साथ पीसकर अलग रखलो तथा त्रिकुटा, कुटकी, पृश्निपर्णी और बड़ी कटेरी—इनको पानीके साथ पीस कर अलग रखलो। शेषमें, इन पाँचों लुगद्रियोंको क्षारके जलमे पीस कर, थोड़ा गरम करो और लेप कर दो। इससे कफाधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

शब्दार्थ ।

उरु शब्द संस्कृत है। हिन्दीमें उरुका अर्थ "जाँघ" है। स्तम्भ भी संस्कृत शब्द है। स्तम्भका अर्थ है, रुकना, ठहरना, अचल होना, बेहरकत होना, ज्ञानहीन होना, सूना होना इत्यादि। इन दोनों शब्दोंके अर्थसे साफ जान पड़ता है, कि जिस रोगमें मनुष्यकी जाँघ अचल, निर्जीव, सुन्न और ज्ञानहीन हो जाती हैं, उसे ही "उरुस्तम्भ" कहते हैं।

सामान्य लक्षण ।

उरुस्तम्भ रोग होनेसे आदमीकी जाँघें सूनी, निर्जीव और अत्यन्त भारी हो जाती हैं। रोगीको अपनी जाँघें दूसरेकी सी मालूम होती हैं। उसे हिलने, चलने और बैठनेमें बड़ी तकलीफ होती है। मतलब यह है कि, जिस रोगमें दोनों जाँघें रह जाती हैं या बेकाम हो जाती हैं, उसे "उरुस्तम्भ" कहते हैं।

निदान—कारण।

शीतल, गरम, सूखे, भारी, पतले और चिकने पदार्थ खानेसे, दिनमे सोनेसे, रातमें जागनेसे, बहुत मिहनत करनेसे, चित्तके क्षोभसे, भयसे और अजीर्णसे "उरुस्तम्भ" रोग होता है ; यानी जो नासमझ लोग ऊपर लिखे काम करते हैं, उन्हें "उरुस्तम्भ" या जाँघोंके रह जानेका रोग होता है।

सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे कफ, मेद और वायु दूषित हो जाते हैं। फिर वे आमसे मिलकर, पित्तको अपने अधीन करते और जाँघों-में घुस जाते हैं। जाँघोमें घुसकर, वे जाँघोंकी हड्डियोंको गीले कफसे भर देते हैं। तब दोनों जाँघे ठण्डी, निर्जीव और स्तब्ध या अचल हो जाती हैं। इस तरह "उरुस्तम्भ" रोगकी उत्पत्ति होती है।

पूर्वरूप।

उरुस्तम्भ रोग होनेसे पहले—अत्यन्त नीद, अत्यन्त ध्यान, क्रिया-हीनता, ज्वर, रोएं खड़े होना, अरुचि, वमन और पिंडलियों तथा जाँघोंमें दर्द—ये उपद्रव होते हैं। इन लक्षणोंके बाद "उरुस्तम्भ" साहब मय अपने लवाजमेके तशरीफ ले आते हैं।

लक्षण।

उरुस्तम्भ रोगमें दोनों जाँघें अकड जाती हैं, सूनी और अत्यन्त भारी हो जाती हैं। उस समय, वे रोगीको दूसरेकीसी मालूम होती हैं। इस रोगमें मूढ़ता, अंगोंका टूटना, तन्द्रा, वमन, अरुचि, ज्वर, पाँवोंकी ग्लानि, पाँवोंको मन्दता और जड़ता ये लक्षण भी देखनेमें आते हैं। इस रोगको "उरुस्तम्भ" कहते हैं। कोई-कोई इसे "आढ्यवात" भी कहते हैं। सुश्रुतने इस रोगको महावातव्याधियों-में लिखा है।

उरुस्तम्भके स्पष्ट रूप ।

"भावप्रकाश"में लिखा है, पाँवोंके सोने और उनके अचेतन एवं क्रियारहित होनेसे मनुष्य प्रायः समझता है, कि मुझे "वात रोग" हुआ है। "वात रोग" समझकर, वह वात रोगोंकी तरह वातनाशक तेल वग़ैरःकी मालिश करता या कराता है, लेकिन इन उपायोंसे लाभके वदले हानि होती है; यानी वातनाशक तेल वग़ैरः लगानेसे पीडा डवल हो जाती है।

इस रोगमें पैरोंमें दर्द होता है। वे पत्थर और लकड़ीकी तरह जड़ या निर्जीव हो जाते हैं। पैरोको उठाने और धरनेमें घोर वेदना होती है। पैरोकी पिंडलियों और जाँघोंमें ग्लानि होती है। चलने-फिरनेकी सामर्थ्य नहीं रहती। किसी कदर जलनके साथ ज़ोरसे पीड़ा होती है। पैरोको उठाने और फैलानेके समय विशेष पीडा होती है। शीतल पदार्थोंका स्पर्श मालूम नहीं होता, यानी जाँघों पर बर्फ आदि रखनेसे उनका ठण्डापन मालूम नहीं होता। रोगी बैठने, और उन्हें दवाने या हिलाने-चलानेमें असमर्थ हो जाता है। रोगीको पैर और जाँघ टूटे हुएसे मालूम होते हैं। उसके पाँव दूसरोंके उठानेसे उठते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है,—कफ और मेदसे मिला हुआ वायु जब जाँघोंमें पहुँचता है, तब अङ्ग टूटते हैं—अङ्गड़ाइयाँ आती हैं, शरीर शिथिल हो जाता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, दर्द होता और ज्वर चढ़ता है। इन उपद्रवोंके सिवा दोनों जाँघें नींदमें सोयी हुई सी, अकड़ी हुई, चैतन्यता-रहित—निर्जीव, भारी और नर्म हो जाती हैं। उनकी स्पर्श-ज्ञानशक्ति नाश हो जाती है—वे सूनी हो जाती हैं, इस लिए रोगीको यह नहीं मालूम होता कि ये मेरी अपनी जाँघें हैं अर्थात् वह अपनी जाँघोंको पराईसी समझने लगता है।

खुलासा यह है कि, उरुस्तम्भ रोग होनेसे, मनुष्यकी जाँघें स्तब्ध, शीतल, अचेतन, निर्जीव, भारसे दवी हुईसी हो जाती हैं। उनमे वड़ा दर्द होता है। रोगीको जाँघोंका उठाना या चलना-

फिरना कठिन हो जाता है। पैर अवसन्न हो जाते हैं और स्पर्श-शक्ति नहीं रहती। "उरुस्तम्भ" के ये ही मुख्य लक्षण हैं। अत्यन्त चिन्ता, तन्द्रा और वमन आदि तो लवाज़मे हैं।

अरिष्ट लक्षण।

जिस उरुस्तम्भ-रोगमें दाह, पीड़ा, सूई चुभानेकासा दर्द हो और रोगी काँपता हो वह उरुस्तम्भ रोगीको मार देता है। अगर दाह आदि उपद्रव न हों और रोग तत्कालका पैदा हुआ हो, तो आराम हो सकता है। ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता है, त्यों-त्यों वह कष्टसाध्य होता है।

चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

(१) उरुस्तम्भ रोगमें तेल वग़ैर: लगाना, खून निकालना—फस्द खोलना, वमन कराना, वस्तिकर्म करना—गुदामें पिचकारी लगाना और जुलाब देना—ये सब काम हानिकारक हैं, क्योंकि इन सबसे "उरुस्तम्भ रोग" बढ़ता है।

(२) उरुस्तम्भमे वही क्रिया करनी चाहिये, जिससे कफ शान्त हो और वायु कुपित न हो। इसमें सारी रूखी कियाएँ करनी चाहियें; तथापि पहले कफ नाशक और फिर वात नाशक उपाय करने चाहिएँ। अगर रूखी क्रिया करनेसे नींदका नाश हो जाय और पीड़ा सहित वायुका कोप हो, तो स्नेहन और स्वेदन क्रिया करनी चाहिये। शरीरके बल और अग्निकी रक्षा करके, जिस उपायसे कफ सूख कर 'उरुस्तम्भ' नाश हो, वही चिकित्सा करनी चाहिये। क्षार और मूत्र मिले हुए पदार्थोंसे स्वेदन करना चाहिये और रूखे पदार्थ जाँघों पर मलने चाहिएँ।

खुलासा यों समझिये कि उरुस्तम्भ रोग कफ, आमवात और

मेदकी अधिकतासे होता है, अतः उसमें कफ, आमवात और मेद-नाशक उपाय करने चाहिये; अथवा रूखे पदार्थ इस्तेमाल करने चाहिये। अगर रूखे उपायोंसे नींद आना बन्द हो जाय, तो समझना चाहिये कि वायुका कोप हुआ। उस दशामें, स्नेह और स्वेद यानी तेल वगैरःकी मालिश कराके और पसीने दिलाकर वायुको अनुकूल करना चाहिये। इस रोगमें विद्वान् वैद्यको आँखें बन्द करके एकमात्र रूखी क्रिया ही न करनी चाहिये। समय पर वातनाशक क्रियाएँ भी करनी चाहिएँ। समय-समय पर, सहने योग्य मिहनत भी करानी चाहिये। रोगीको शीतल जलकी नदीमें तैराना चाहिये; निर्मल जलके थाहवाले सरोवरमें डुबकी लगवानी चाहिये; पुष्ट और उन्नत स्तनों-वाली प्रौढ़ा स्त्रियोंका शक्तिपूर्व्वक संशीलन कराना चाहिये एवं सुन्दर-सुन्दर स्थानोंमें उसे घुमाना चाहिये। इस तरह मिहनत और उपचार करनेसे, कफ और मेदके नष्ट होने पर, स्नेह आदिका उपचार करना चाहिये यानी वातनाशक तेल वग़ैरः लगवाने चाहिए।

(३) उरुस्तम्भ रोगमें रूखे पदार्थ, पसीने निकालना, लंघन, पुराने चाँवल, सामक, कोदों, लिहसौड़े, मूंग, जंगली जीवोंका मांस, मूली, बैंगन, बथुआ, मूलीके पत्ते, बिना घीका जंगली जीवोंका मांस और बिना नमकका हितकारी साग,—ये पथ्य सब हैं।

(४) उरुस्तम्भ रोगमें भल्लातक आदि काढ़ा, अष्टकट्वरतेल, कुष्ठाद्य तेल और महासैंधवादि तेल प्रभृति श्रेष्ठ हैं। नदीके शीतल जल या तालावके जलमें तैरना और सूरजकी धूपसे तपी हुई गरम बालूमें दौड़ना भी हितकारी है।

उरुस्तम्भ नाशक नुसखे।

(१) करंजुएके फल और सरसोंको "गोमूत्रमें" पीसकर लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) असगन्ध, आककी जड़ और नीमकी जड़को "गोमूत्र"में पीसकर जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग जाता रहता है ।

(३) दन्ती, मूसाकानी, रास्ना और सरसोंको "गोमूत्र"में पीसकर जाँघोपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग रहता जाता है ।

(४) जयन्ती, रास्ना, सहँजनेकी छाल, वच, कुड़ा और नीमकी छाल—इनको "गोमूत्र"में पीसकर जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है ।

(५) सरसोंको शहदमें पीसकर और गरम करके जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है ।

(६) सरसोंके चूर्णको धतूरेके पत्तोंके रसमें पीसकर और गरम करके जाँघोपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है ।

(७) काले धतूरेकी जड़, पोस्तके डोड़े, लहसन, कालीमिर्च, कालाज़ीरा, जयन्तीके पत्ते, सहँजनेकी छाल और सरसों—ये सब चीजे "गोमूत्र"में पीसकर और गरम करके लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है ।

(८) पीपरामूल, भिलावा और पीपरोंका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(९) त्रिफला, पीपर, मोथा, चव्य और कुटकी—इनका चूर्ण ६ माशे "शहद" मिलाकर चाटनेसे उरुस्तम्भ आराम हो जाता है ।

(१०) हरड़, बहेड़ा, आमला और कुटकी—इनका चूर्ण ६ माशे "शहद" मिलाकर चाटनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है ।

(११) विद्वानोंका कहना है कि, भिलावे, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हरड़, पुनर्नवा और दशमूल—इनके सेवन करनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है ।

(१२) पीपर, पीपरामूल और भिलावे—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर और "शहद" मिलाकर चाटनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(१३) चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, अतीस, कुटकी और हरड़—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इसका नाम "षड्धरण योग" है। इसमेंसे चार या छै माशे चूर्ण, सुहाते-सुहाते गरम जलके साथ, खानेसे उरुस्तम्भ और वातके समस्त रोग नाश हो जाते हैं। इसके खानेसे भूख बहुत बढ़ती और २।३ दस्त रोज़ होते हैं। परीक्षित है।

(१४) जिस तरफ़से नदीकी धारा आती हो उस तरफ़को, नदीके जलमें एक या दो मील चलनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है।

(१५) करञ्ज, त्रिफला और सरसों—इनको गोमूत्रमें पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है।

(१६) सर्पकी वाम्बीकी मिट्टी और सरसों,—इन दोनोंको महीन पीसकर और "शहद"में मिलाकर, आगपर निवाया करके, गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) सुश्रुतने गूगलकी बड़ी तारीफ की है। आपका कहना है, सवेरे ही शुद्ध गूगल—"त्रिफला, दारुहल्दी, परवल और कुशाके पानीमें" घोल कर पीने अथवा "गोमूत्र या गरम जल"के साथ, लगातार एक महीना तक, पीनेसे गोला, प्रमेह, उदावर्त्त, उदर रोग, भगन्दर, कृमि, खाज, अरुचि, सफेद कोढ़, अर्बुद या रसौली, गाँठें, नाड़ी रोग, आढ्यवात या उरुस्तम्भ, सूजन, कोढ़, बिगड़े हुए घाव, कोठेकी वायु, सन्धियोंकी वायु और हड्डियोंकी वायु—इन सबको "गूगल" इस तरह नष्ट करता है, जिस तरह इन्द्रका वज्र वृक्षको नष्ट करता है। इसकी मात्रा १ से ३ माशे तक है।

नोट—गूगल शोध कर सेवन करनी चाहिये। शोधनेकी विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथे भाग"के पृष्ठ ७५में लिखी है।

(१८) वातरोग चिकित्साके पृष्ठ २६१ में लिखी हुई "योगराज गूगल" सेवन करनेसे भी उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है। जब

अकेली शुद्ध गूगलसे उरुस्तम्भ नाश होनेकी बात "सुश्रुत"में लिखी है, तब उस "योगराज गूगल"से नाश होनेमें क्या सन्देह ?

नोट—नया गूगल वृंहण अर्थात् शरीरकी धातु वगैरःको बढ़ानेवाला और पुराना अति कर्षण यानी धातुओंको सुखानेवाला और मनुष्यको दुबला करनेवाला होता है। यह तीक्ष्ण और गरम होनेके कारण, कफ और वायुको शान्त करता है। सर होनेसे, मल और पित्तको नाश करता है। सुगन्धित होनेसे, कोठे की बदबूको नाश करता है। सूक्ष्म होनेसे, जठराग्निको दीपन करता है। हमारी रायमें, उरुस्तम्भ रोगीको पहले "पुराना गूगल" ही सेवन कराना चाहिये, क्योंकि पहले कफ और मेद घटानेकी जरूरत रहती है। सुश्रुतने कहा है, जब बिना घीके मांस-रस और अलौने सागोंके साथ पुराने शालि चाँवल एवं पुराना सामक अनाज आदि खिलानेसे कफ और मेद क्षीण हो जायँ, तब स्नेह आदि कर्म करावे; यानी घी, तेल आदि पिलावे और उनकी मालिश करावे।

(१६) "चिकित्साचन्द्रोदय" इसी भागके पृष्ठ ४६१ और २८०में लिखे हुए "सैंधवादि तेल"के मलने और "वातगजकेशरी अर्क"के पीनेसे उरुस्तम्भ रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। जो वातरोग और उरुस्तम्भ रोग किसी भी दवाके लगाने और खानेसे आराम नहीं होते, वे इन दोनोंसे आराम हो जाते हैं। दोनों दवाएँ अनेक बारकी परीक्षित हैं।

(२०) उरुस्तम्भ रोगीको, नदी-किनारेकी सूरजकी धूपसे तपती हुई बालूमें, बड़े ज़ोरसे दौडानेसे उरुस्तम्भ रोग अवश्य आराम हो जाता है।

(२१) रास्ना, सारिवा, हरड, कालीमिर्च, सोग्रा—सौंफ, हल्दी, बायबिड़ंग, कचूर, असगन्ध, जवासा, गिलोय, अजमोद, वनतुलसी, अतीस, विधारा, कटेरी, कटाई, सोंठ, कुटकी, अजवायन, कटसरैया, चव्य, अरण्डकी जड़, दारुहल्दी और साल—इन २५ दवाओंको कुल दो या ३ तोले लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बना लो। जब छटाँक या डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छान कर पिला दो। इसका नाम "रास्नादि क्वाथ" है। इसके सेवन करनेसे उरुस्तम्भ, आम-

वात, कफके रोग, वातके रोग और दण्डकाक्षेप रोग तत्काल नाश हो जाते हैं।

(२२) शहद या गुड़के साथ "वर्द्धमान पीपर" सेवन करनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है।

(२३) गोमूत्रके साथ अथवा दशमूलके रसके साथ "शिलाजीत, गूगल, पीपर और सोंठ" पीनेसे उरुस्तम्भ रोगकी पीड़ा नाश हो जाती है।

(२४) अगर उरुस्तम्भ रोगमें कफकी अधिकता हो, तो सौरेश्वर घृत अथवा वैश्वानर चूर्ण अथवा शुंठी घृत और सैंधवाद्य तैल अथवा अमृता गुग्गुल देना हितकारी है।

(२५) अकेली आककी जड़ "गोमूत्र"में पीसकर लेप करनेसे उरुस्तम्भ नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) असगन्ध और देवदारुको "गोमूत्र"मे पीसकर लेप करनेसे उरुस्तम्भ जाता रहता है। परीक्षित है।

(२७) क्षार मिले हुए गोमूत्रका तरड़ा उरुस्तम्भ पर देनेसे लाभ होता है। परीक्षित है।

(२८) बाम्बीकी मिट्टी, सरसों, शहद और नीमके पत्ते—इनको पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) निर्गुण्डीके पत्तोंका काढा "पीपरोंका चूर्ण" डालकर पीनेसे उरुस्तम्भ रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—याद रखो, कफ नाशक दवाएँ उरुस्तम्भको नाश करती हैं।

(३०) शुद्ध गूगल खाकर, ऊपरसे "गोमूत्र" पीनेसे उरुस्तम्भ आराम हो जाता है। परीक्षित है। "वैद्यजीवन"में लिखा है :—

पुनर्नवानागरदारु पथ्याभल्लातकच्छिन्नरुहाकषायः।
दशाङ्घ्रिमिश्रः परिपेय उरुस्तम्भेऽथवा मूत्रपुरप्रयोगः॥

पुनर्नवा—सांठी, सोंठ, देवदारु, हरड़, भिलावे, गिलोय और दशमूलका काढ़ा पीनेसे अथवा शुद्ध गूगल खाकर गोमूत्र पीनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है। इस "पुनर्नवादि योग"की "भावप्रकाश" और "चक्रदत्त" आदि अनेक ग्रन्थोंमें प्रशंसा लिखी है। "गूगल" सेवन करनेकी राय सुश्रुतने भी ज़ोरसे दी है।

(३१) शुद्ध गूगल और हरड "गोमूत्र"के साथ खानेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है।

(३२) त्रिकुटा, चीतेकी छाल, नागरमोथा, त्रिफला और वायविडंग एक-एक तोले और इन सबके बराबर ५ तोले "शुद्ध गूगल" ले लो। सबको कूट पीस और मिलाकर रख लो। इसमेंसे १ से ६ माशे तक चूर्ण नित्य खानेसे कफ, मेद और आमवातसे पैदा हुए उरुस्तम्भ आदि सभी रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—उरुस्तम्भ रोगमें कफ, आमवात और मेद—ये तीनों ज़ियादा रहते हैं, अतः इनको नाश करनेवाले उपचारोंसे ही यह रोग आराम होता है।

(३३) शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गूगल, छोटी पीपर और सोंठ—इनको "गोमूत्र" या "दशमूलके काढ़े"के साथ सेवन करनेसे उरुस्तम्भ नाश हो जाता है।

उत्तमोत्तम नुसखे।

कुष्ठाद्य तैल।

कूट, लोवान, सुगन्धवाला, सरल धूप, देवदारु, नागकेशर, वनतुलसी और असगन्ध—इनके कल्कसे पकाया हुआ सरसोंका तेल, शहदके साथ, यथामात्रानुसार, पीनेसे उरुस्तम्भ रोग नष्ट हो जाता है।

बनानेकी विधि—ऊपर लिखी हुई हरेक दवा आध-आध पाव लेकर, पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर चार सेर सरसोंका

तेल और सोलह सेर पानी तथा ऊपरकी लुगदी मिलाकर कड़ाहीमें औटाओ। जब पानी जल कर, तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और बोतलोंमें रख दो। इस तेलकी एक-एक मात्रा "शहद"में मिलाकर पीनेसे उरुस्तम्भ रोग नाश हो जाता है।

अष्टकट्वर तैल।

पीपरामूल ८ तोले और सोंठ ८ तोले लेकर, सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। फिर मलाईदार खट्टे दहीकी छाछ ६४ तोले, दही ६४ तोले और सरसोंका तेल ६४ तोले—इन सबको कड़ाहीमें डालकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे उरुस्तम्भ और गृध्रसी रोग आराम हो जाते हैं।

महासैंधवाद्य तेल।

सेंधानोन, कूट, छोटी शतावर, वच, भारङ्गी, मुलेठी, प्रश्नपर्णा, जायफल, देवदारु, सोंठ, कचूर, धनिया, पीपर, कायफल पोह-करमूल, अजवायन, अतीस, अरण्डकी जड, नीलका वृक्ष और नील-कमल—इन २० दवाओंको कुल मिलाकर एक सेर लेलो। फिर सबको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। इसके बाद चार सेर काली तिलीका तेल और सोलह सेर काँजी तथा लुगदीको एकत्र मिलाकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके पीने, नस्य लेने और मालिश करनेसे उरुस्तम्भ, आमवात, पक्षाघात, सन्धिवात, फोतोका रोग, वातस्तम्भ, गोला, कृमि, सिरका दर्द, तिल्ली, उदर रोग और मन्दाग्नि आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

सैंधवाद्य तैल।

सेंधानोन ८ तोले, सोंठ २० तोले, पीपरामूल ८ तोले, चीतेकी

जड़ ८ तोले और भिलावे नग २०—इनको सिलपर पानीके साथ पीस लो । फिर काली तिलीका तेल चार सेर और काँजी ३२ सेर तथा ऊपरकी लुगदी—इन तीनोंको कड़ाहीमें डालकर आगपर पकाओ । जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो । यह तेल गृध्रसी वात, उरुस्तम्भ और समस्त वातरोगोंपर रामबाण है । परीक्षित है ।

नोट—अगर तिलीके तेलके बजाय "अरण्डीका तेल" लिया जाय, तो और भी अच्छा हो ।

भल्लातकादि क्वाथ ।

शुद्ध भिलावे, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हरड़, पुनर्नवा और दशमूल—इनको चार-चार माशे लेकर डेढ़ पाव जलमें औटाकर काढ़ा कर लो। जब छटाँक-डेढ़-छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर रोगीको पिला दो । उरुस्तम्भ नाश करनेमें यह काढ़ा बहुत ही उत्तम है ।

आढ्यवातान्तक रस ।

पहले, ६ माशे शुद्ध पारे और ३ तोले शुद्ध गन्धकको खरलमें डालकर ५।६ घन्टे तक घोटो ; जब चमकहीन कज्जली हो जाय, उसमें १॥ तोले सफेद चिरमिटी और ३ माशे शुद्ध जमालगोटेके बीज भी मिला दो और २ घन्टे-तक घोटो । फिर एक दिन-भर इसमें "जयन्तीके पत्तोंका रस" डाल-डालकर खरल करो । दूसरे दिन इसमें "जम्भीरी नीबूका रस" देदेकर खरल करो । तीसरे दिन "धतूरेके पत्तोंका रस" दे-देकर खरल करो और चौथे दिन "काकमाचीके रस"के साथ खरल करो । जब सूख जाय, इसमें "घी" डालकर खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । मात्रा १ से २ गोलीतक । अनुपान—हींग, सेंधानोन और शहद । इस रससे उरुस्तम्भ रोग निश्चय ही नाश हो जाता है ।

अमृतागुग्गुल ।

३२ तोले गिलोय, १६ तोले शुद्ध गूगल, १६ तोले हरड़के छिलके, १६ तोले आमलेके छिलके और १६ तोले बहेडेके बक्कल—इनको ३२ सेर पानीमें पकाओ, जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर रस निकाल लो। इस रसको उस समयतक फिर पकाओ, जबतक कि गाढ़ा न हो जाय। गाढ़ा हो जानेपर, इसमें ३ तोले "त्रिफलेका चूर्ण" मिला दो। यही "अमृता गुग्गुल" है। इसमेंसे बलाबल-अनुसार खानेसे वातरक्त, कोढ़, बवासीर, मन्दाग्नि, प्रमेह, आमवात, भगन्दर और उरुस्तम्भ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—रसके गाढ़े होनेपर, कोई-कोई इसमें "त्रिफलेका चूर्ण" मिलाते हैं और कोई "दन्ती, त्रिकुटा, वायविड़ङ्ग, गिलोय, त्रिफला और दालचीनी"—इन सबका चूर्ण मिलाते हैं।

दूसरी अमृतागुग्गुल ।

६४ तोले हरड, १६ तोले आमले और १६ तोले पुनर्नवा—इनको कूटकर ३२ सेर पानीमें पकाओ। जब ८ सेर पानी रह जाय, मलकर रस निकाल लो। फिर उस रसको तबतक पकाओ, जबतक कि गाढ़ा न हो जाय। गाढ़ा होनेपर, उसमें दन्ती, चीतेकी जड, पीपर, सोंठ, त्रिफला, गिलोय, दालचीनी और वायविडङ्ग—ये दो-दो तोले और निशोथ १ तोले पीसकर मिला दो। यह भी "अमृतागूगल" है। इसको प्राचीन कालमें, अश्विनीकुमारोंने निकाला था। इसके सेवन करनेसे वातरक्त, कोढ़, बवासीर, मन्दाग्नि, दुष्टव्रण, प्रमेह, आमवात, भगन्दर, नाडीवात, आढ्यवात—उरुस्तम्भ, सूजन और अन्यान्य वात-रोग नाश हो जाते हैं।

आमका स्वरूप ।

भोजन किये हुए अन्नके न पकनेसे जो अपक्व या कच्चा रस बनता है, वह क्रम-क्रमसे इकट्ठा हो जाता है। उसे ही "आम" कहते हैं। वह "आम" सिर और शरीरमें वेदना करता है।

खुलासा यह है कि. आम और वात—इन दोनों पदोंके मिलानेसे "आमवात" शब्द बनता है। जठराग्निकी कमज़ोरीसे, भोजनका सार—रस—जब ख़ूनमें परिणत नहीं होता, यानी रसका ख़ून नहीं बनता, तब वह "रस" आमाशय आदि स्थानोंमें जमा हो जाता है। उस संचित हुए पदार्थको ही 'आम' कहते हैं। जो शरीरके भीतर विचरण करता है, जिसकी ताकतसे शरीरकी सारी शक्तियाँ अपना-अपना काम करती हैं और जो इन्द्रियों और अतीन्द्रीके द्वारा जाना जाता है, उसे ही "वायु" कहते हैं।

आमवातके सामान्य लक्षण।

कुपित हुए आम और वात दोनों ही, त्रिकस्थानकी सन्धियोंमें

प्रवेश करके, पीड़ा करते हुए शरीरको जकड़ देते हैं, तब कहते हैं कि "आमवात" रोग हुआ है ।

शरीर टूटना, अरुचि, प्यास, आलस्य, भारीपन, ज्वर, अन्नका न पकना और अङ्गोंका सूनापन या सूजन—ये आमवातके सामान्य लक्षण हैं ।

नोट—दुष्ट वायुके द्वारा आमाशय प्रभृतिमें जमा हुआ आम रस चलायमान होकर—कफ-पित्तके साथ मिलकर—विदग्ध या खट्टा हो जाता है । फिर वही खट्टा रस शरीरकी सन्धियों या जोड़ों प्रभृतिमें अवस्थित होकर, ज्वर और तोड़नेकीसी पीड़ा आदि लक्षणों वाले जिस रोगको पैदा करता है, उसीको "आमवात" कहते हैं । उसे हिन्दीमें "गठिया या ग्रन्थिवात" कहते हैं ।

निदान-पूर्व्वक सम्प्राप्ति ।

दूध-मछली आदि संयोग-विरुद्ध भोजन करने, विरुद्ध चेष्टा करने, कसरत न करने, अग्नि मन्द रहने, भोजनमें लम्पटता करने और चिकना भोजन करके कसरत करनेसे "आम" या खाये हुए पदार्थोंका कच्चा रस, वायु द्वारा, आमाशय और सन्धिस्थल प्रभृति कफके स्थानोंमें एकत्र और दूषित होकर "आमवात" रोग पैदा करता है ।

"वैद्य विनोद"में लिखा है, विरुद्ध आहार-विहार करने वाले और मन्दाग्नि वाले मनुष्यके अत्यन्त चिकने पदार्थ खानेसे "आम" दूषित होकर, वायुकी प्रेरणासे, धमनियोंमें घुसकर, सन्धियोंमे दौड़ता है ।

खुलासा निदान लक्षणादि ।

प्रकृति-विरुद्ध, समय-विरुद्ध और संयोग-विरुद्ध आहार, विरुद्ध चेष्टा, असुखकारक कर्म, मिहनत न करना, चिकने अन्न-पान सेवन करनेके बाद तत्काल ही घोर परिश्रम करना, गीले-भीगे या सीलके घरमें रहना, गरमी या धूपसे तपे हुए शरीरमें शीतल जलसे नहाना अथवा शीतल जल पीना, शीतल हवामें रातके समय विना कपड़े

ओढ़े खुले अङ्ग सोना, एक साथ आते हुए पसीनोंको रोकना, अग्निका मन्दापन और आम एवं वायुको कुपित करने वाले देश तथा आमवातकी अनुकूलता वाली प्रकृति आदि आमवातके सन्निकृष्ट कारण हैं। इन समस्त कारणोंसे आम रसका सञ्चार होना और वायुका कोप होता है। इनके साथ ही कफ और पित्त भी कुपित हो जाते हैं।

कुपित हुआ वायु—कफ और पित्तको अपने मददगारोंकी तरह साथ लेकर, और आम रसको उसके स्थानसे रस बहानेवाले स्रोतों या छेदोंमें ले जाकर, उससे उनको बन्द कर देता है। जब वे छेद बन्द हो जाते हैं, तब शरीरमें कमज़ोरी, हृदयमें भारीपन, काममें दिल न लगना, शरीरके अनेक स्थानोंमें अनवस्थित—अस्थिर वेदना और भोजनपर अनिच्छा आदि लक्षण आमवातके पहले होते हैं। इसके बाद, आम रस खट्टा होकर, शरीरकी सन्धियों या जोड़ों वगैरःमें ठहर कर, स्पष्ट लक्षण वाली पीड़ा करता है। हाथ, पाँव, सिर, गुल्फ त्रिक, जानु और घुटनोंकी सन्धियोंमें पीड़ायुक्त सूजन और ज्वर पैदा होते हैं। यही आमवातके विशेष लक्षण हैं।

कुपित आमवातके उपद्रव।

"कुपित हुआ आम" मन्या, कमर, पीठ, हाथ, कन्धे और गुल्फ एवं उनकी सन्धियोंको सङ्कुचित करके सूजन पैदा करता है, जिसमें विच्छूके काटनेके जैसा दर्द होता है। इसीको वैद्य "आमवात" कहते हैं।

नोट—"भावप्रकाश"में लिखा है, आमवात सब रोगोंसे अधिक दुःखदायी है। जब यह अत्यन्त कुपित होता है, तब हाथ, पाँव, मस्तक, गुल्फ, त्रिक, घुटने, जाँघ और घुटनोंके जोड़ोंमें पीड़ा सहित सूजन पैदा करता है। दूषित आम शरीरके जिस हिस्सेमें जाता है, शरीरके उसी भागमें विच्छूके काटनेकी जैसी

घोर वेदना होती है। आमवातसे जठराग्नि मन्दी हो जाती है, मुँहमें थूक आता है अथवा मुँह और नाकसे पानी गिरता है, अरुचि होती है, शरीरमें भारीपन होता है, उत्साह नाश होता है, मुँहका स्वाद बिगड़ जाता है, दाह या जलन होती है, पेशाब ज़ियादा आता है, पेट कड़ा हो जाता है, शूल चलता है, नींद नहीं आती, प्यास लगती है, वमन होती हैं, बेहोशी आती है, हृदयमें जड़ता होती है, मल रुक जाता है, शरीर जड़ हो जाता है, आँतें कूजती हैं, पेटपर अफारा आ जाता है तथा कब्जियत आदि दूसरे दुखदायी रोग हो जाते हैं, यानी बहुत बढ़ जानेपर सन्धियोंमें सकोच, लूलापन, टेढ़ापन, स्वरभङ्ग और पैरोंमें सूजन आदि उपद्रव हो जाते हैं।

दोष-भेदसे आमवातके विशेष लक्षण ।

अधिक शूल चलनेसे वायुका आमवात समझना चाहिये। शरीरमें दाह और लाली होनेसे पित्तका आमवात समझना चाहिये। शरीर गीले कपड़ेसे लिपटा हुआसा हो तथा खुजली चलती हो, तो कफका आमवात समझना चाहिये। दो या तीन दोषोंके लक्षण मिले हुए पाये जानेसे उन-उन दोषोंका आमवात समझना चाहिये।

नोट—पित्तकी अधिकता होनेसे, सूजनसे फूला हुआ शरीर एक दमसे लाल हो जाता है और उस में बड़ी जलन होती है। वातकी अधिकतामें, सूजन बहुत नहीं बढ़ती, पर तोड़ने-फोड़नेकीसी घोर पीड़ा होती है। कफ प्रधान आमवातमें, सूजन गीली, भारी और खुजलीयुक्त होती है।

साध्यसाध्य ।

एक दोष का आमवात साध्य, दो दोषोंका याप्य और तीन दोषोंका असाध्य जानना चाहिये। तीन दोषोंके आमवातमें सारे शरीरमें सूजन होती है। ऐसा आमवात आराम नहीं होता।

चिकित्सामें देर होनेसे कठिनाई ।

आमवात रोग होते ही फौरन इलाज करना चाहिये, क्योंकि देर होनेसे रोग कष्टसाध्य हो जाता है।

आमवात-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ।

लंघन, स्वेदन और विरेचन—आमवातकी प्रधान चिकित्सा है; यानी लंघन कराने, पसीने निकालने और दस्त करानेसे आमवात रोग आसानीसे आराम हो जाता है ।

"भावप्रकाश"में लिखा है, आमवात रोगमें पहले लंघन कराओ, सेक करो; तिक्त, अग्निदीपक और तीक्ष्ण पदार्थ सेवन कराओ, जुलाब दो. स्नेहन कर्म करो और पिचकारी लगाओ, क्योंकि ये उपचार इस रोगमें हितकारी हैं ।

(२) अगर आमवातमें दर्द हो, तो दर्दकी शान्तिके लिए एक कपड़ेकी पोटलीमें बालू भर कर, उसे आग पर तपाओ और दर्दकी जगह सेक करो । इसे "बालूकी पोटलीका रूखा स्वेद" कहते हैं ।

अथवा ।

कपासके बिनौले, कुलथी, तिल, जौ, लाल अरण्डकी जड़, मर्सीना, पुनर्नवा और सनके बीज—ये सब चीज़ें या इनमेंसे जो-जो मिलें उन्हें कूट कर काँजीमें तर करलो और एक कपड़ेमें बाँधकर पोटली बनालो । फिर एक हाँडीमें काँजी भर कर, उस पर अनेकों छेद वाला शकोरा रखकर ढक दो । हाँड़ी और ढकनेकी सन्धियोंको मिट्टीसे बन्द कर दो, ताकि सन्धियोंमें होकर भाफ न निकले । फिर उस हाँडीको आग पर रख दो । उस पोटलीको ढकने पर रखो, जब वह गरम हो जाय, तब उससे आमवातको सेको । बारम्बार सेक करनेसे दर्द अवश्य दूर हो जायगा । इसे "शङ्कर स्वेद" कहते हैं ।

(३) उरुस्तम्भ रोग और आमवातके पथ्यापथ्य एक समान हैं ।

आमवातमें स्नान करना मना है। यहाँ तक कि गरम पानीसे नहाना निषेध है। अगर आमवातमें ज्वर हो, तो रोटी, दाल, भात आदि न देकर, साबूदाना आदि हलके भोजन देने चाहिएँ। दर्दकी जगहोंको रूईसे बाँधना चाहिये। दही आदि अभिष्यन्दी, भारी और पिच्छिल पदार्थ आमवात रोगीको भूल कर भी न खाने चाहिएँ। दही अपथ्य है।

आमवात नाशक नुसखे।

योगराज गुग्गुल।

चीता, त्रिकुटा, वायविडङ्ग, सेंधानोन, नागरमोथा, तज, तालीस-पत्र, चव्य, इलायची, देवदारु, कूट, लहसन, खस, अजवायन, खुरासानी अजवायन, रास्ना, गोखरू, धनिया, सफेद जीरा, जवाखार, अजमोद, शतावरकी जड़, सौंफ और काश—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, सबके बराबर "शुद्ध गूगल" लो। फिर सबको मिलाकर, घीके साथ खरल करके, चिकने बर्तनमें रख दो। इसमेंसे १ तोले रोज़ सेवन करने और यथेष्ट आहार-विहार करनेसे आमवात रोग जोरसे आराम हो जाता है। यह "योगराज गुग्गुल" दुनियामें मशहूर है। इससे बवासीर, गोला, उदररोग, आमवात, तिल्ली, मन्दाग्नि और व्रण भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—"काश" संस्कृत नाम है। हिन्दीमें इसे "कास" और बँगलामें "केशे-घास" कहते हैं। यह नदी किनारेकी कीचड़में पैदा होती है।

पुनर्नवादि चूर्ण।

सोंठ, गिलोय, शतावर, गोरख-मुण्डी, कचूर, सोंठ और देवदारु—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "काँजी"के

साथ खानेसे आमवात और पुराना गृध्रसी रोग ये दोनों नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखेमें कोई देवदारु और कोई विधारा लेते हैं।

रसोनदशक।

लहसन, हींग, त्रिकुटा, सेंधानोन, सफेद ज़ीरा, संचरनोन, विड् नोन और कचियानोन—इन दसोंको चार-चार तोले लेकर बारीक पीस लो। फिर तेलमें मिलाकर एक-एक तोले नित्य सवेरे ही खाओ। इससे आमवात रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

हरीतकी योग।

हरडका चूर्ण "अरण्डीके तेल"में मिलाकर खानेसे आमवात रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

हिंगवाद्य चूर्ण।

हींग १ तोले, चव्य २ तोले, विरियासंचर नोन ४ तोले, सोंठ ८ तोले, कलौंजी १६ तोले और अरण्डकी जड़ ३२ तोले इन सबको कूट-पीसकर चूर्ण बनालो। इस चूर्ण से आमवात की शान्ति हो जाती है।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, पीपरामूल, सेंधानोन, कालाजीरा, चव्य, चीतेकी छाल, तालीसपत्र और नागकेशर—इनमेंसे हरेक दवा आठ-आठ तोले लो। कालानोन ५ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, सफेद जीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, दाडिमीसार १६ तोले और अम्लवेत ८ तोले लो। इन सबको कूट-पीस कर छान लो। इसका नाम "पिप्पल्यादि चूर्ण" है। इसकी एक-एक मात्रा "शहद" अथवा "गरम पानी"के साथ पीनेसे नष्ट हुई जठराग्नि दीप्त होती है। यह ग्रहणी, गोला, बवासीर, भगन्दर, उदररोग, कृमि रोग, खुजली और अरुचिको नाश करता है। आमवातकी तो इससे उत्तम दवा ही और नही है।

पथ्याद्य चूर्ण ।

हरड़, सोंठ और अजवायन—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "माठा, गरम जल अथवा काँजी"के साथ पीनेसे आमवात, सूजन, मन्दाग्नि, पीनस, खाँसी, हृदयका दर्द, स्वर-भेद और अरुचि रोग नाश हो जाते हैं।

रसोनादि कषाय ।

लहसन, सोंठ और निर्गुण्डी—इनको कुल मिलाकर २ तोले ले लो और काढ़ा बनाकर पीओ। यह काढ़ा आमवात पर रामवाण है। सच पूछो तो इससे बढ़कर आमवातकी और दवा ही नहीं है।

रास्ना पञ्चक क्वाथ ।

रास्ना, गिलोय, अरण्डकी जड़, देवदारु और सोंठ—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। इस काढ़ेसे आमवात, सर्व्वाङ्गवात, सन्धिगत वात, अस्थिगत वात और मज्जागत वात नाश हो जाती हैं।

रास्ना सप्तक ।

रास्ना, देवदारु, अमलतासका गूदा, गोखरू, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़ और गिलोय—इन सातोंके काढ़ेमें "सोंठका चूर्ण या कल्क" मिलाकर पीनेसे आमवात शीघ्रही नाश हो जाता है। इसके सिवा क़मरका दर्द, पीठका दर्द, पिंडलियोंका दर्द, पसलियोंका दर्द और जाँघोंका दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पिप्पल्यादि क्वाथ ।

पीपर, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे आमवात रोग नष्ट हो जाता है।

शठ्यादि कल्क ।

कचूर और सोंठ—इन दोनोंको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर, "पुनर्नवेके साथ" सात दिन पीनेसे आमवात नाश हो जाता है।

चित्रकादि चूर्ण ।

चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, अतीस और हरड़—इनको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको निवाये जलके साथ खानेसे आमाशयकी वायु दूर हो जाती है; यानी आमवात नष्ट हो जाती है।

नागर चूर्ण ।

सोंठका चूर्ण १ तोले-भर लेकर "काँजीके साथ" नित्य पीनेसे आमवात नष्ट हो जाती है। यह दवा कफ और वात नाशक है।

पञ्चकोल चूर्ण ।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचोंको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको गरम पानीके साथ पीनेसे मन्दाग्नि, शूल, गोला, आम, कफ, अरुचि अथवा आमवात ये सब नाश हो जाते हैं।

एरण्ड तैल योग ।

शरीर रूपी वनमें मतवाले हाथीके समान घूमनेवाले आमवात रूपी हाथीको अकेला "अरण्डीका तेल" रूपी सिंह मार भगाता है; यानी केवल "अरण्डीका तेल" पीनेसे आमवात रोग नाश हो जाता है।

नोट—अगर अरण्डीके तेलमें "हरड़का चूर्ण" भी मिला लिया जाय, तब तो कहना ही क्या? "भावप्रकाश"में लिखा है, आमवात, गृध्रसी और अर्दित वात—लकवावाले रोगियोंको, अरण्डीके तेलके साथ हरड़का चूर्ण अवश्य सेवन करना चाहिये। परीक्षित है।

आरग्वध पत्र ।

सन्ध्या समय, सरसोंके तेलमें अमलताशके पत्ते भूनकर खाने और पीछे भोजन करनेसे आमकी पीड़ा नष्ट हो जाती है।

अमृताद्य चूर्ण ।

गिलोय, सोंठ, गोखरू, गोरखमुण्डी और वरना—इनको समान-

समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको दहीके तोड़ या काँजीके साथ पीनेसे आमवात नाश हो जाती है।

नोट—गिलोयका दूसरा नाम अमृता है। जिसने यह नाम रखा है, बहुत ठीक रखा है। गिलोय छाछकी तरह इस भूलोक का दूसरा अमृत है। यह वातरक्तकी दुश्मन है, इसलिये इसे "वातरक्तारि" भी कहते हैं। आमवातमें भी यह खब काम करती है। ज्वरनाश करनेमें तो यह प्रसिद्ध ही है। प्रमेह नाश करनेमें भी इसकी बड़ी सुख्याति है। और चीजोंके साथ मिलकर, यह कई रोगोंमें किसी भी तेज़-से-तेज अगरेजी दवासे अच्छा काम करती है। हम चन्द परीक्षित प्रयोग नीचे लिखते हैं —

(१) दो तोले गिलोयका स्वरस, ६ माशे शहद और १ माशे हल्दीका चूर्ण मिलाकर खानेसे सब तरहके प्रमेह आराम हो जाते हैं।

(२) गिलोय, उशबा और जलनीमके पत्ते—चार-चार माशे लेकर सिलपर पीसकर, छटाँक-भर शीतल जलमें छानकर पीनेसे कुछ दिनोंमें भयकर-से-भयंकर खून-विकारके रोग नाश हो जाते हैं। फिर "जलनीम"के साथ मिलकर तो गिलोयकी ताक़त सैकड़ों गुनी बढ़ जाती है; क्योंकि "जलनीम" स्वयं खून साफ करनेमें अद्वितीय दवा है। केवल जलनीमके ३ माशे पत्ते और ११ कालीमिर्चे पीस-छान कर पीनेसे अनेक चर्मरोग नाश हो जाते हैं।

(३) गिलोय और दाखोंको रातके समय भिगोकर और सवेरे ही मल-छानकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(४) गिलोयका सत्त, दाख और चाँदीके वर्क "शहद"में मिलाकर खानेसे भयानक क्षय रोग नाश हो जाता है।

गिलोय—शरीरकी रक्त आदि धातुओंको शोधनेवाली, आमको पचानेवाली, शीतल, पेशाब लानेवाली, वातादि दोषोंको *शमन करनेवाली और* पुष्टिकारक है। इसलिए इसके स्वरस और काढ़े आदिकी विधि याद रखनी चाहिये।

स्वरस—गिलोयकी बेलको छीलकर सिलपर खूब कूटो और बहुत थोड़ा-थोड़ा पानी मिलाते जाओ। शेषमें उसे कपड़ेमें निचोड़ो। जो रस टपके वही "स्वरस" है। इसकी मात्रा १ तोलेसे २ तोले तक है।

हिम—गिलोयको कुचलकर छः गुने पानीमें, मिट्टीकी हाँडीमें, भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर रस निकाल लो। यही गिलोयका "हिम" है। इसकी मात्रा दो तोले की है।

काढ़ा—चार तोले गिलोयको कुचलकर ६४ तोले जलमें पकाओ। जब ८ तोले पानी रह जाय, मल-छान लो। यही "काढ़ा" है। मात्रा—दोसे चार तोले तक।

अलम्बुषादि चूर्ण।

गोरखमुण्डी १ तोले, गोखरू २ तोले, त्रिफला ३ तोले, सोंठ ४ तोले, गिलोय ५ तोले और निशोथ १५ तोले—इन सबको पीस-छानकर रखलो। इस चूर्णको दहीके तोड़के साथ अथवा शराबके साथ अथवा काँजी या गरम पानीके साथ खानेसे आमवात, सूजन-सहित वातरक्त; त्रिकस्थान, घुटने, जाँघ और सन्धिस्थानसे हुआ ज्वर और अरुचि ये सब नाश हो जाते हैं। यह चूर्ण अनेक रोगोंको नाश करनेवाला है।

दूसरा अलम्बुषादि चूर्ण।

गोरखमुंडी, गोखरू, वरनाकी जड, गिलोय और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण नित्य काँजीके साथ खानेसे बढ़ा हुआ आमवात नष्ट हो जाता है। यह चूर्ण आमवात पर अमृत है।

तीसरा अलम्बुषादि चूर्ण।

गोरखमुंडी, गोखरू, गिलोय, विधाराके बीज, पीपर, निशोथ, नागरमोथा, वरनाकी जड़, पुनर्नवा, त्रिफला और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी ३ माशेकी मात्रा "दहीके पानी, माठा, दूध अथवा मांस रस"के साथ पीनेसे आमवात तत्काल नष्ट हो जाती है तथा सन्धियों या जोड़ोंमें आई हुई सूजन दूर हो जाती है।

वैश्वानर चूर्ण।

सेंधानोन २ तोले, अजवायन २ तोले, अजमोद ३ तोले, सोंठ ४ तोले और हरड़ १२ तोले—इन सबको पीस-छान कर रख लो। इस

चूर्णको दहीके तोड़के साथ, काँजीके साथ, माठेके साथ, गरम जलके साथ या घीके साथ पीनेसे आमवात, गोला, हृदयकी पीड़ा, मूत्राशयकी पीड़ा, तिल्ली, गाँठ, शूल, अफारा, बवासीर, दस्तक़ब्ज़, उदर रोग, कमरके रोग और मूत्राशयके रोग नाश हो जाते हैं। यह "वैश्वानर चूर्ण" वायुको उचित राहमें चलानेवाला है। परीक्षित है।

असीतक चूर्ण ।

विष्णुक्रान्ता, पीपल, गिलोय, निशोथ, वाराहीकन्द, अरण्डीकी जड़ और सोंठ,—सबको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ, मांड़के साथ, यूषके साथ, माठेके साथ, मांस-रसके साथ, शराबके साथ अथवा दही*के साथ सेवन करने और इच्छानुसार आहार-विहार करनेसे आमवात, गृध्रसी, खंज, विश्वाची, तूनी, प्रतितूनी, अर्दित वात—लकवा, वातरक्त, कटिग्रह—कमरकी जकडन, गोला, बवासीर, क्रोष्टुकशीर्ष, पाण्डुरोग, विष, उग्र सूजन और प्रबल वेगवाला ज़बर्दस्त उरुस्तम्भ रोग—ये नष्ट हो जाते हैं।

शुण्ठीधान्यक घृत ।

सोंठ २४ तोले और धनिया ८ तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो। फिर ६४ तोले घी और २५६ तोले पानी तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यह घी अग्निको दीपन करता, बल बढ़ाता, वर्ण या रंगको सुन्दर करता तथा वायु-सम्बन्धी रोग, कफ-सम्बन्धी रोग, बवासीर, श्वास और खाँसी इन सबको दूर करता है।

---

* आमवात, शीतवात और कफवातमें "दही" नुक़सानमन्द है, पर जिसतरह अकेला दही रक्तपित्तको बढ़ाता है, किन्तु "घी"के साथ मिलकर उलटा रक्तपित्तको आराम करता है। वही बात यहाँ भी समझनी चाहिये।

शुंठी घृत ।

सोंठकी सिल पर पानीके साथ पिसी हुई लुगदी १६ तोले, घी ६४ तोले और सोंठका काढ़ा २५६ तोले—इनको मिलाकर घी पकाओ, जब काढ़ा जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यह घी वायु और कफको शान्त करता, अग्निको दीपन करता और आमको नष्ट करता है।

कांजिकाद्य घृत ।

हींग, सोंठ, काली मिर्च, पीपर, चव्य और सेंधानोन—इन सबको एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर ६४ तोले घी, २५६ तोले काँजी और ऊपरकी लुगदीको कड़ाहीमें डालकर आगपर पकाओ। जब काँजी जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यह घी मन्दाग्निको दीपन करनेमें परमोत्तम है। इसके सेवन करनेसे आमवात, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, ग्रहणी-दोष, अफारा, शूल, उदर रोग और मलबन्ध या दस्तक़ब्ज़ रोग नाश हो जाते हैं।

शृंगवेराद्य घृत ।

अदरख, जवाखार, पीपरामूल और पीपर—चार-चार तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसलो। फिर ६४ तोले घी और २५६ तोले आरनाल काँजी और ऊपरकी लुगदीको कड़ाहीमें डालकर घी पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छानलो। इस घीको "शृङ्गवेराद्य घृत" कहते हैं। यह घी अग्निको अच्छी तरहसे दीपन करता और आमवात, अफारा, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, ग्रहणी-दोष और शूल रोग नाश करता है।

प्रसारणी लेह ।

प्रसारिणीका रस २५६ तोले और गुड़का रस ६४ तोले—इन

दोनोंको मिलाकर पकाओ, जब अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय, उतार लो। इसमें पीपर, पीपरामूल, सोंठ, चीता और चव्य— इन चारोंका चूर्ण डालकर चाटनेसे आमवात रोग नाश हो जाता है।

रसोनपिण्ड।

लहसन ४०० तोले, सफेद तिल १६ तोले, हींग ४ तोले, सोंठ ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, पीपर ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जी ४ तोले, पंचलवण ४ तोले, सोंफ ४ तोले, हल्दी ४ तोले, कूट ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, चीता ४ तोले, अजमोद ४ तोले, अजवायन ४ तोले और धनिया ४ तोले—इन सबको कूट-पीसकर छानलो और घीकी चिकनी हाँड़ीमें भर दो। ऊपरसे ३२ तोले तिलीका तेल और ३२ तोले काँजी भी डाल दो और सोलह दिनतक "धानके ढेरमें" रखा रहने दो। इसके बाद इसमेंसे नित्य आधा तोले दवा खाकर, ऊपरसे गरम जल पीनेसे आमवात, वातरक्त, सर्वाङ्गवात, एकाङ्गवात, अपस्मार—मिरगी, मन्दाग्नि, खाँसी, श्वास, विष, उन्माद, शूल और कृमि—ये सब नाश हो जाते हैं।

प्रसारणी तैल।

१ सेर अरण्डीका तेल और चार सेर प्रसारणीका रस मिलाकर पकाओ। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके पीनेसे आमवात और खासकर कफके रोग नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ६ माशेकी। दूधमें मिलाकर पीना चाहिये।

द्विपञ्चमूलाद्य तैल।

दशमूल, गोंद और जायफल—ये तीनों पाँच-पाँच तोले लेकर सिल पर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर एक सेर तेल, एक सेर दही और चार सेर खट्टी काँजी, इन सबको और ऊपरकी लुग-

दीको मिलाकर तेल पकालो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। गुदामे इस तेलकी पिचकारी लगानेसे कमरका दर्द, पसलियोंका शूल, कफके रोग और वात रोग—इन सबका नाश होता और अग्नि-बल बढ़ता है।

बृहत्सैंधवाद्य तैल।

सेंधानोन, हरड़, रास्ना, सोया, अजवायन, सज्जी, कालीमिर्च, कूट, सोंठ, कालानोन, विरिया संचरनोन, बच, अजमोद, सफेद, ज़ीरा, अरण्डकी जड़, मुलेठी और पीपर—इन सत्रह चीजोंको दो-दो तोले लेकर सिल पर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर ६४ तोले रेंडीका तेल, ६४ तोले सोयेका काढ़ा, १२८ तोले काँजी, और १२८ तोले दहीका तोड़—और ऊपरकी लुगदी सबको कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "बृहत्सैंधवाद्य तैल" है। यह तेल पीने, मालिश करने और गुदामें पिचकारी लगानेके काम आता है। इससे आम-वात रोग नष्ट हो जाता है। यह तेल अग्निबलको खूब बढ़ाता है। यह प्रायः समस्त वातव्याधियों पर परीक्षित है।

अजमोदादि वटक।

अजमोद, कालीमिर्च, पीपर, वायविड़ंग, देवदारू, चीता, सोया, सेंधानोन और पीपरामूल—ये सब चार-चार तोले, सोंठ ४० तोले, विधारा ४० तोले और हरड २० तोले—इन सबको पीस कूट कर छान लो। फिर सबके बराबर १३६ तोले गुड़ लेकर, उसमें पानी डालो और आग पर चाशनी करलो। जब चाशनी हो जाय, उसमें ऊपरका पिसा-छना चूर्ण मिलाकर, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। गरम जलके साथ सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे वात-सम्बन्धी रोग इस तरह नाश होते हैं, जिस तरह सूर्यके प्रकाशसे अन्धकारका नाश होता है। यह नुसख़ा आमवातको तो आराम

करता ही है, पर ८० तरहके वातरोग और कोढ़ोंको भी नाश करता है।

नोट—इन गोलियोंको "महाराश्नादि क्वाथ"के साथ खानेसे आमवात रोग और भी जल्दी आराम होता है। "महाराश्नादि क्वाथ" नीचे लिखा है। अज-मोदादि वटक परीक्षित हैं।

मध्यम रास्नादि काथ ।

रास्ना, अरण्डकी जड़, शतावर, कटसरैया, जवासा, अड़ूसा, गिलोय, देवदारु, अतीस, हरड, नागरमोथा, कचूर और सोंठ—इन तेरह दवाओंको दो-दो माशे लेकर काढ़ा बना लो। जब काढ़ा पक जाय, छानकर उसमें "अरण्डोका तेल" मिला लो और पीजाओ। इस काढेसे आम और शूल समेत वायु, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, पीठ-की पीड़ा, पीठका रह जाना, कोठेकी पीड़ा, उदरकी पीड़ा, जो कि आमसे होती हैं, आराम हो जाती हैं।

महारास्नादि काथ ।

रास्ना, अरण्डकी जड, अड़ूसा, जवासा, कचूर, खिरैंटी, नागर-मोथा, अतीस, हरड, गोखरू, अमलताश, सौंफ, धनिया, पुनर्नवा, असगन्ध, गिलोय, पीपर, विधारा, शतावार, बच, कटसरैया, चव्य, कटेरी और कटाई—इन २४ दवाओंमेंसे रास्ना २ भाग और बाक़ी २३ एक-एक भाग लो यानी रास्ना २ माशे और सब एक-एक माशे लेकर अष्टावशेष काढ़ा पकाओ, अर्थात् सब दवाओंको जौकुट करके आध सेर पानीमें, मिट्टीकी हाँड़ीमें पकाओ, जब आठवाँ भाग या छटाँक भर पानी रह जाय, उतारकर छानलो। फिर दोष और व्याधिके अनुसार, शुंठी चूर्ण, अलम्बुषादि चूर्ण अथवा अजमोदादि चूर्ण डालकर पीलो।

इस काढ़ेके पीनेसे समस्त वात रोग, सन्धिवात, मज्जागतवात, सब तरहका आनाह, सब अङ्गोंका काँपना, कुब्जक वात, वामन वात,

पक्षाघात, अर्दित वात, जानुगत वायु, जंघागत वायु, अस्थिगत वात, गृध्रसी वात, वातरक्त, उरुस्तम्भ, बवासीर, विश्वाची, गुल्म, हृदय-रोग, विशूचिका, क्रोष्टुकशीर्ष, अन्त्रवृद्धि, श्लीपद रोग, योनिरोग, शुक्ररोग, लिङ्गगत रोग और स्त्रियोंके वन्ध्या रोग नष्ट होते हैं। स्त्रियोंको गर्भ देने वाली इससे अच्छी दवा और नहीं है। सब तरहके काढ़ोंमें यह उत्तम पाचन है। "महारास्नादि क्वाथ" स्वयं प्रजापतिने कहा है। परीक्षित है।

नोट—अलम्बुषादि चूर्ण और अजमदोदादि वटक खिलाकर, ऊपरसे इस काढ़ेको पिलानेसे बहुत लाभ होता है।

रास्ना दशमूल क्वाथ।

रास्ना, सोंठ, वायविडंग, अरण्डकी जड़, त्रिफला, दशमूल और निशोथ—इनका काढ़ा पीनेसे वात-सम्बन्धी रोग, आधा शीशी, उरुस्तम्भ, अर्दित, खंज, नेत्रोंके सारे रोग, मस्तक-शूल, ज्वर, अपस्मार मिरगी और अनेक मन सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं।

आमवात गजकेशरी रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, लोह भस्म १ तोले, ताम्बा भस्म १ तोले, सीसा भस्म १ तोले, भुना सुहागा १ तोले शुद्ध मीठा विष १ तोले, अदरख १ तोले, सेंधानोन १ तोले, लौंग १ तोले, भुनी हींग १ तोले, जायफल १ तोले, दालचीनी ६ माशे, तेजपात ६ माशे, बड़ी इलायचीके बीज ६ माशे, त्रिफला ६ माशे और सफेद ज़ीरा ६ माशे लेकर रख लो।

पहले गन्धक और पारेकी खूब घुटाई करो, जब बिना चमककी कजली हो जाय, उसमें लोहा, ताम्बा, सीसा, सुहागा और विष मिला दो और खरल करो। बाक़ीकी दवाओंको अलग कूट-पीस कर इसी खरलमें डाल दो और फिर "घीग्वारका रस" डाल-डाल कर खरल करो। जब खरल हो जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो।

इस रसकी मात्रा एकसे १॥ गोली तक है। उचित अनुपानके साथ देनेसे आमवात और अन्यान्य वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। हम इसे खिलाकर, ऊपरसे "रास्नादि क्वाथ" पिलाया करते हैं।

आमवातारि गुटिका।

सौंफ १ तोला, सुहागा १ तोला, लौंग १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, निशोथ १ तोला, त्रिफला १ तोला, जवाखार १ तोला, छोटी पीपर १ तोला, धनिया २ तोला, सफेद जीरा २ तोला, अजवायन ८ तोला और सोंठ १६ तोला,—इन सबको कूट-पीस कर छान लो।

कचूर ६ माशे, छोटी इलायचीके बीज ६ माशे, तेजपात ६ माशे और दालचीनी ६ माशे—इनको भी पीस-छान कर रखलो। १४४ तोला (१ सेर १२ छटाँक ४ तोले) मिश्री और ५ तोला शहद भी तैयार रखो।

पहले मिश्रीमें पानी मिलाकर आग पर चाशनी करो; जब वह लड्डुओंके लायक़ हो जाय, उसे नीचे उतारकर उसमे दोनों तरहके पिसे-छने चूर्ण और "शहद" मिलाकर तोले-तोले-भर करके लड्डू बनालो।

हर दिन, सवेरे ही, एक-एक लड्डू खानेसे असाध्य आमवात भी नाश हो जाता है। यह नुसख़ा अम्लपित्त और रक्तपित्त पर भी अच्छा है। आमवात पर यह कभी फेल नहीं होता। इसका जैसा नाम है, वैसा ही है। परीक्षित है।

विजय भैरव तैल।

पारा २ तोले, गन्धक २ तोले, नीमकी छाल २ तोले और हरताल २ तोले—इनको सिल पर "काँजीके साथ" महीन पीस कर, एक कपड़ेकी वत्ती पर ल्हेस दो और खूब सुखालो।

जब सूख जाय, उस वत्तीको तिलीके तेलमें भिगो लो। फिर

ज़मीनपर एक चौड़ासा चीनीका प्याला रखलो। बत्तीका पिछला सिरा चिमटेसे पकड़ कर, बत्तीके अगले भागमें दियासलाई दिखा दो। बत्तीसे तेल टपक-टपक कर प्यालेमें गिरना चाहिये। हाँ, बत्तीके जलते-रहनेतक, उस पर थोड़ा-थोड़ा तेल ऊपरसे डालते रहना। जब मसाला जल जाय, तब यह काम बन्द कर देना। प्यालेमें जो तेल इकट्ठा हो, उसे शीशीमें रख देना। यही "विजय भैरव तैल" है। इस तेलकी मालिशसे सब तरहके वातरोग और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—अगर "महा विजय भैरव तेल" बनाना हो, तो पारे, गन्धक, नीमकी छाल और हरतालके साथ बराबरकी यानी २ तोले अफीम भी मिला लेना। फिर उसी तरह तेल टपका लेना। वात रोगों पर यह तेल रामबाण है। परीक्षित है।

वातगजकेसरी गूगल।

शुद्ध आमलासार गन्धक ५ तोले, शुद्ध गूगल ५ तोले और त्रिफला ५ तोले—इनको महीन पीस-छानकर ५ तोले "अरण्डीके तेल"में मिलाओ। इसमेंसे १ तोला दवा नित्य सवेरे ही खाकर, ऊपरसे गरम पानी पीनेसे, २१ या ४० दिनमें, अत्यन्त कष्टसाध्य और असाध्य आमवात भी आराम हो जाता है। जब आमवात रोग किसी दवासे आराम न हो, तब एक बार इसे सेवन कीजिये। जिनका आज़माया हुआ है, उन्होंने इसकी भूरिभूरि प्रशंसा की है।

आमवातारि वटिका।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध तूतिया १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, सेंधानोन १ तोले, लोहभस्म १ तोले और ताम्बा भस्म १ तोले, सबका दूना १४ तोले "शुद्ध गूगल" और चौथाई यानी पौने दो तोले "निशोथका चूर्ण" और "चीतेकी जड़का चूर्ण"—इन सबको मिलाकर "घी"में खरल करो। तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनालो। एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे "त्रिफलेका भिगोया हुआ

पानी" पीना चाहिये। यह दवा पाचक और दस्तावर है। इससे आमवात नष्ट हो जाती है।

मृत्युञ्जय रस।

शुद्ध सिंगरफ २ तोले, शुद्ध वत्सनाभ विष १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, पीपर १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले और शुद्ध सुहागा १ तोले—इन छहोंको तैयार कर लो।

शुद्ध वत्सनाभ विषको पहले जितने पानीमें वह डूब जाय, बारह घण्टों तक भिगो रखो। शुद्ध गन्धक और शुद्ध सिंगरफको खरलमें अलग-अलग पीस लो।

अब पानीमें १२ घण्टे भींगे हुए विषको अच्छी तरह खरल करो। फिर इसमें गन्धक, सिंगरफ, सुहागा, मिर्च और पीपर मिलाकर खरल करो। सूखने पर पानीके छींटे भी देते रहो। खरल करते-करते जब मसाला मक्खनके जैसा नर्म हो जाय, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। यही "मृत्युञ्जय रस" है।

यह "मृत्युञ्जय रस" नवीन ज्वरकी मशहूर दवा है, पर यह आमवात रोगमें अत्यन्त दाह होने पर खूब काम देता है, इसीसे हमने इसे यहाँ लिखा है। इस रससे कितने ही रोग नाश होते हैं। हम उनके नाश करनेकी विधि नीचे लिखते हैं :—

(१) आमवात रोगमे अत्यन्त दाह हो, तो "मृत्युञ्जय रस"को बेलपत्रके स्वरस और शहदके साथ सेवन कराओ।

(२) निमोनिया यानी फुफ्फुस प्रदाह या फुफ्फुसके शोथ वाले ज्वरमें बंसलोचन और शहदके साथ सेवन कराओ। खूब फायदा होता है। अगर खाँसी बहुत जोरसे हो, तो कटेरीके रस और शहदके साथ दो।

(३) यकायक पैदा हुए पक्षाघात-एकांग वात या अर्द्धाङ्गवात अथवा फालिजकी आरम्भिक अवस्थामें, बेलपत्रके स्वरस और मधुके साथ देनेसे अपूर्व चमत्कार नज़र आता है।

(४) अजीर्ण ज्वरमें अगर आँतोंमें दाह और उत्तेजना हो, तो कागज़ी नीबूके रसके साथ या ईसबगोल भीजे पानीके साथ सेवन करानेसे परम लाभ होता है।

(५) पुराना ज्वर बढ़कर भयंकर रूपमें परिणत हो जाय, तो पानोंके रस और शहदके साथ दो।

(६) साधारण ज्वरमें शहदके साथ ; वातज्वरमें दहीके तोड़के साथ अथवा त्रिफलेके पानीके साथ अथवा शोरा भिगोये पानीके साथ ; पित्तज्वरमें पटोल पत्रके रस या काढ़ेके साथ अथवा मधुके साथ , दाह प्यास और क्षयके उपद्रव हों, तो पटोलपत्रके रस और मिश्रीके साथ मिलाकर ; कफ ज्वरमें अदरख या तुलसीके पत्तोंके रस और शहदके साथ ; और वातश्लेष्म ज्वरमें अदरखके रस और सेंधेनोनके साथ सेवन कराओ।

नोट—जिस ज्वरमें मुँह और नेत्र लाल-लाल हों, हृदयकी धड़कन बहुत हो, अत्यन्त ताप हो, दाह प्यास और बेचैनी आदि उपद्रव हों—उस ज्वरमें "मृत्युञ्जय रस" दे सकते हैं। अगर ज्वरमें दस्तक़ब्ज हो, तो "चिकित्साचन्द्रोदय दूसरे भाग"के पृष्ठ १४६ में लिखा "आरग्वधादि पाचन" या और कोई नर्म दस्तावर दवा देकर मृत्युञ्जयरस देनेसे ही जल्दी लाभ होगा, अन्यथा नहीं।

सूचना—बहुत वैद्य सिंगरफकी जगह पारे और गन्धककी कजली ही डालते हैं। यह मृत्युञ्जय रस काला होता है। काला मृत्युञ्जय रस पुराने ज्वरमें और लाल नवीन ज्वरमें हित है।

आमवात नाशक ग़रीबी नुसख़े।

(१) कचूर और सोंठको सिल पर पानीके साथ पीस लो। उधर "पुनर्नवेकी जड़"का काढ़ा पकालो। ऊपरकी लुगदी खाकर यही काढ़ा पीनेसे आमवात—गठिया आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) सोंठ, कालीमिर्च, वायविडंग और सेंधानोन—इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे अग्निको बढ़ाता है; अतः आमवातको आराम करता है। परीक्षित है।

नोट—यही चूर्ण "दहीके तोड़"के साथ लेनेसे खूब अग्नि बढ़ती है।

(३) एक तोले सोंठका चूर्ण काँजीके साथ पीनेसे आमवात—गठियाको नाश करता है। परीक्षित है।

(४) सोंठ और गोखरूका काढ़ा सवेरे ही पीनेसे कमरका दर्द, आमवात—गठिया आराम हो जाती है। यह काढ़ा पाचक और रोगनाशक है। परीक्षित है।

(५) रास्ना, गिलोय, अरण्डकी जड़, देवदारू और सोंठ—इनका काढ़ा सर्वाङ्गगत वायु, गठिया वात, सन्धिवात और मज्जागत वातको नाश करता है। आमवात पर परीक्षित है।

(६) अगर आमवात-रोगीको प्यास बहुत हो ; तो पीपर, पीपरा-मूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनसे पकाया हुआ पानी देना चाहिये।

(७) सोया, वच, सोंठ, गोखरू, वरनाकी छाल, पुनर्नवा, देवदारू, कचूर और गोरखमुंडी—इन सबको समान-समान लेकर सेवन करनेसे आमवात रोग नाश हो जाता है।

(८) प्रसारिणी, अरणी और मैनफल—इनको सिरकेकी काँजीमें पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करनेसे आमवात नाश हो जाती है।

(९) चीता, कुटकी, पाढ़, इन्द्रजौ, अतीस, गिलोय, देवदारु, वच, नागरमोथा, सोंठ, अतीस और हरड़—इनको एकत्र पीस कर नित्य पीनेसे आमवात रोग नाश हो जाता है।

(१०) कचूर, सोंठ, हरड़, बच, देवदारु, अतीस और गिलोय—इनका काढ़ा पीने और रूखा भोजन करनेसे आमवात नाश हो जाती है।

(११) पुनर्नवा, कटाई, अरण्डकी जड़, मरुआ, मूर्वा और सह-जनेका पंचाङ्ग—इनका काढ़ा आमवात रोगीको पिलानेसे आमवात नष्ट हो जाती है।

(१२) पीपरका चूर्ण डाल कर "दशमूलका काढ़ा" पीनेसे आमवात नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(१३) सोंठ और हरड़का चूर्ण खानेसे आमवात चली जाती है।

(१४) गिलोय और सोंठका चूर्ण खानेसे आमवात चली जाती है।

(१५) अरण्डीके तेलमें "जवाखार" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाता है। अरण्डीके अढ़ाई तोले या कम तेलमें "दशमूलका काढ़ा" मिलाकर पीनेसे कमरका दर्द नाश हो जाता है। अरण्डीके २॥ तोले या कम तेलमें "सोंठका काढ़ा" मिलाकर पीनेसे कमरका दर्द जाता रहता है। ये नुसखे दस्तावर हैं।

(१६) सोंठ और गिलोयके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" डालकर पीनेसे आम, कोठेकी पीडा और कमरकी जकडन तथा सूजन ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) सोंठ और गोखरूका काढ़ा नित्य सवेरे ही पीनेसे आमसहित वात रोगीकी कमरका दर्द आराम हो जाता और आम पचता है।

नोट—कमरमें रहने वाली शुद्ध या आम-सहित वायु व्यथा उत्पन्न करती है, उसे "कटिग्रह" कहते हैं। अगर दोनो साथलों या जांघोंमें विकार होता है, तो "पगुरोग" कहते हैं।

(१८) अरण्डीकीके बीजोंके छिलके उतार कर और पीस कर दूधमें पकाकर दूध पीनेसे कटिग्रह—कमर जकड़ना और गृध्रसी वात ये रोग आराम हो जाते हैं। कटिग्रह और गृध्रसी पर यह बहुत ही अच्छा नुसखा है।

(१९) घी, तेल, गुड़, शुक्त नामक काँजी और सोंठ—इनको एकत्र मिलाकर पीनेसे तत्काल तृप्ति होती और कटिग्रह नाश हो जाती है।

(२०) तीन काँटोंवाले सेंहुड़का दूध "नमक" मिलाकर दर्दकी जगह लगानेसे आमवातकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२१) जिस तरह रेंडीके तेलमें "सोंठका काढ़ा" पीनेसे दस्त होते हैं, उसी तरह गरम दूधमें "रेंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे दस्त होकर आमवात रोग नाश हो जाता है।

(२२) त्रिवृत्तकी जड़ या निशोथका चूर्ण १ तोले, सेंधानोन १ तोले और सोंठ २ माशे मिलाकर पीस-छान लो। इसमें से ३ से ६ माशे तक चूर्ण "काँजीके साथ" सेवन करनेसे दस्त होकर आमवात नाश हो जाती है।

(२३) त्रिफला, अमलताशका गूदा, गठिवन, कुटकी, रास्ना, और गिलोय—इनका काढ़ा पीनेसे आमवात और शिरःकम्पन वात दोनों नाश हो जाती हैं।

(२४) रातको पावभर खजूर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मल कर रस निचोड लो और पीलो। इससे आमवात रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(२५) ३ माशे चिरायता दो तोले पानीमें रातको भिगो दो। सवेरे ही मल-छान कर इसमें ६ माशे शहद, २ रत्ती कपूर और २ रत्ती शुद्ध शिलाजीत मिलाकर पीओ। इस नुसख़ेसे आमवात, जीर्णज्वर और सब तरहके गरमीके रोग नाश हो जाते हैं। एक दो बार आमवात पर और अनेकवार जीर्णज्वर पर इसको रामबाण पाया है। परीक्षित है।

(२६) मुण्डी और सोंठको समान-समान लेकर पीस छान लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ खानेसे आमवात रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

शूल किसे कहते हैं ?

जब पेटमें शूल गड़ानेकी तरह दर्द होता है, तब कहते हैं कि "शूल" रोग हुआ है। "सुश्रुत उत्तरतंत्र"में लिखा है, जब शरीरमें काँटा या काँटेकी नोक चुभकर टूटजानेकी सी वेदना होती है अथवा शरीर में त्रिशूलकी चोट लगनेकी सी भयानक पीड़ा होती है, तब कहते हैं, कि "शूल रोग" हुआ है।

शूल रोगकी उत्पत्ति ।

हारीत मुनि कहते हैं,जब कामदेव शिवजीको अपने क़ाबूमें करनेके लिए उनके पास गया, तब उन्होने उसपर अपना त्रिशूल चलाया। सामनेसे त्रिशूलको आते देखकर, वह अपनी जीवनरक्षाके लिए, विष्णु भगवान्‌के शरीरमें घुस गया। जब त्रिशूल उसके पीछे-पीछे

वहाँ भी पहुँचा, तब विष्णुने "हूँ" ऐसा कहा। उनकी हुकारसे बेहोश होकर वह पृथ्वीपर गिर पड़ा और यहाँ शूल नामसे प्रसिद्ध होकर देहधारियोंको पीड़ा देने लगा। यह ज्वरकी तरह शूलकी पौराणिक उत्पत्ति है।

शूलके सन्निकृष्ट निदान।

शूलके सन्निकृष्ट निदान या कारण ये हैं :—

(१) वात, (२) पित्त,
(३) कफ, (४) त्रिदोष,
(५) आम, (६) वातपित्त,
(७) वातकफ, (८) पित्तकफ।

इस तरह आठ तरहके शूल होते हैं। इन सबमें "वायु"की प्रबलता रहती है।

शूलरोगोंकी संख्या।

शास्त्रमें शूल रोग आठ तरहके लिखे हैं :—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) त्रिदोषज,
(५) वातपित्तज, (६) वातकफज,
(७) पित्तकफज, (८) आमज।

नोट—इन आठ शूलोंके अलावः "परिणाम शूल" और "अन्नद्रव" शूल, ये दो शूल और भी होते हैं।

आठों शूलोंके निदान-लक्षण।

वातजशूलके निदान।

वातज शूलके विप्रकृष्ट निदान या कारण ये हैं :—

(१) कसरत करना, (२) रथ या घोड़े हाथी आदिकी सवारी करना, (३) अत्यन्त मैथुन करना, (४) रातमें बहुत जागना, (५) शीतल जल अधिक पीना, (६) मटर, मूँग, अरहर और कोदों ज़ियादा खाना, (७) रूखे पदार्थ ज़ियादा खाना, (८) भोजन-पर-भोजन करना, (९) ईंट पत्थर या लाठी वग़ैरःकी चोट लगना, (१०) कसैले और कड़वे रस जियादा सेवन करना, (११) अंकुर निकले हुए अन्न खाना, (१२) दूध मछली आदि विरुद्ध पदार्थ खाना, (१३) सूखा हुआ मांस खाना, (१४) भिंडी ग्वार आदि सूखे साग खाना, (१५) मल, मूत्र, अधोवायु और वीर्य रोकना, (१६) अत्यन्त शोक या रञ्ज करना, (१७) बहुत ही ज़ियादा उपवास करना, (१८) बहुत हँसना, और (१९) बहुत जियादा बोलना—इन कारणोंसे "वायु" कुपित होकर "वातज शूल" उत्पन्न करता है।

नोट—हारीतने लिखा है, मल रोकनेवाले सूखे भोजनों ; जौ, उड़द, कोदों, मटर, मूंग, चौला, मसूर और गेहूँ आदि कफकारक पदार्थों ; जलपान और मलमूत्र रोकनेसे वायु नीचेके मूलमार्गको रोककर "वातशूल" पैदा करता है।

"सुश्रुत"में लिखा है, अधोवायु और मलमूत्र रोकने, भूखके समय भोजन न करके पानी पीने और पिट्ठीके पदार्थ अधिक खाने आदि कारणोंसे "वायु" कुपित होकर दारुण शूल पैदा करता है। शूल रोग ऐसा भयानक है कि, इसकी पीड़ासे व्याकुलहोकर मनुष्य श्वास भी नहीं ले सकता अथवा शूल रोगके मारे मनुष्य अच्छी तरह सांस भी नहीं लेने पाता।

वातजशूलके लक्षण।

"भावप्रकाश"में लिखा है:—वातशूल होनेसे हृदय, पसलियों, पीठ, कमर, पेडू या वस्ति अथवा मूत्राशयमें सूई चुभनेका सा दर्द होता है।

यह शूल वारम्वार उठता और वारम्वार शान्त होता है। मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं—पाखाना-पेशाव नहीं होता, गुदाकी हवा नहीं निकलती और अंगोंमें भेदनेकीसी पीड़ा होती है। यह दर्द भोजन पच जाने पर, सन्ध्या कालमें, वरसात और सर्दी के समय ज़ियादा वढ़ता है।

यह दर्द सेकादि स्वेदन कर्म करने यानी गरम वालू या गरम जलकी वोतल आदिका सेक करने, वातनाशक तेलोंकी मालिश करने तथा चिकने और गरमागर्म पदार्थ खानेसे शान्त हो जाता है।

"सुश्रुत"में लिखा है:—

निराहारस्य यस्यैव तीव्र शूलमुदीर्यते।
प्रस्तब्ध गात्रो भवति कृच्छ्रेणोच्छ्वसितीवच॥
वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेण कुरुते नर.।
एतैर्लिंगैर्विजानीयाच्छूल वातसमुद्भवम्॥

भोजन किये पहले—निराहार रहनेकी हालतमें—दर्द तेज़ हो, शरीर कड़ा हो गया हो, साँस लेनेमें तकलीफ होती हो, गुदाकी हवा और पाखाना-पेशाव तकलीफसे होते हों या वहुत कम होते हों, तो समझो कि "वायुका शूल" है। "वैद्यविनोद"में लिखा है:—

हृत्पार्श्वपृष्ठोदरवस्तिकुक्षौ मुहुर्मुहु. शान्तिमुपैति कोपम्॥

हृदय, पसवाड़े, पीठ, पेट, पेड़ू और कूखोंमें वारम्वार दर्द चल-चलकर शान्त हो जाय, उसे "वातशूल" कहते हैं।

हारीत कहते हैं, "वात-शूल"में वायु पेटके भीतर आगके समान

जलन करता है, कोठेमें प्रबल होकर शूल चलाता है और गुदाकी राहको बन्द कर देता है। शरीरमें चमके चलना, ग्लानि, मलीनता और दीनता—ये वातशूलके उपद्रव हैं।

हृदय-शूलादिके लक्षण।

हृदयमें रहनेवाले "वायु"के रससे बढ़ने और कफ-पित्तसे रुकनेके कारण, साँस रुकता और शूल पैदा होता है। रस और वायुके कोपसे, हृदयमें पैदा हुए इस शूलको "हृदय-शूल" कहते हैं।

"कफ" वायुको साथ लेकर, पसलियोंमें सुई चुभानेकीसी पीड़ा और साथ ही पेट पर अफारा करता है। इस दशामें, मनुष्य मुँहसे ऊँचे-ऊँचे साँस लेता है, अन्न खाना नहीं चाहता और उसे नींद नहीं आती। ऐसे शूलको "पसलियोंका शूल" कहते हैं।

मल, मूत्र और अधोवायुके रोकनेसे "वायु" कुपित होकर, बस्ति—पेड़ू या मूत्राशय और वंक्षणमें भर जाती है और उनकी राहकी नसोंमें शूल या दर्द चलाती है। इस दशामें मल, मूत्र और वायु—ये रुक जाते हैं; अर्थात् पाखाना पेशाब नहीं होता और गुदाकी हवा भीतर रुकी रहती है। इसको "बस्तिशूल" कहते हैं।

नोट—हृदयशूल, पार्श्वशूल और बस्तिशूल—वातज शूलके अन्तर्गत हैं, इसीसे हमने, छोटे टाईपमें, उनके कारण लक्षण अलग-अलग भी लिख दिये हैं।

उपयोगी प्रश्नोत्तर।

प्रश्न—वातशूल किन स्थानोंमें होता है?

उत्तर—हृदय, पीठ, पसली, त्रिकस्थान, पेड़ू, पेट और कूखमें।

प्रश्न—वातशूलकी ख़ास पहचान क्या है?

उत्तर—मल, मूत्र और गुदाकी हवा रुकना और उपरोक्त स्थानोंमें शूल चलना।

प्रश्न—वातशूलकी और पहचान क्या हैं।

उत्तर—अगर सेकने, तेल मलने और चिकने-गर्म भोजनसे शूल दबे, तो वायुका शूल समझो।

नोट—भावमिश्रने वात-शूलके स्थानोंमें "पेट और कूखों"का ज़िक्र नहीं किया है, पर औरोंने किया है।

पित्तजशूलके निदान।

पित्तज शूलके विप्रकृष्ट निदान या कारण ये हैं :—

(१) क्षार या खारी पदार्थ खाना; (२) बहुत गरम, तीक्ष्ण और दाहकारक पदार्थ लाल मिर्च आदि ज़ियादा खाना, (३) तेल, चौला, खल और कुल्थी या उड़दका यूष खाना, (४) शराब पीना, (५) क्रोध करना, (६) आगकी तपत लगना, (७) सूरजकी धूपमें रहना, (८) मिहनत करना, और (९) जियादा मैथुन करना, इन कारणों से "पित्त" कुपित होकर "पित्तज शूल" पैदा करता है।

हारीत कहते हैं—क्रोध करने, धूप और आगके सामने रहने, शोक करने, डरने, चलने-दौड़ने, पसीने लेने, खारे, खट्टे, चरपरे, विदाही और कुछ गर्म पदार्थ खाने; रूखे-सूखे पदार्थ खाने, काँजी, मांस, राई और लेखन पदार्थ सेवन करनेसे "वायु" कुपित होकर "पित्त"को कुपित करता है। फिर वह "कुपित पित्त" मनुष्यके पेटमे दारुण "पित्तज शूल" पैदा करता है।

पित्तज शूलके लक्षण।

ऊपर लिखे कारणोसे, पित्त कुपित होकर "नाभिमें" शूल उत्पन्न करता है। उस समय प्यास, मोह, जलन, बेहोशी, भ्रम और शोष ये उपद्रव भी होते हैं।

यह शूल मध्याह्नकाल, आधीरात, गरमीके मौसम और शरद् ऋतु—कारकातिकमें ज़ियादा जोर करता है।

शीतकाल या जाड़ेमें, शीतल हवा आदि लगने तथा शीतल और अत्यन्त मीठे भोजनोंसे यह दर्द शान्त हो जाता है।

हारीत कहते हैं :—पित्तं शूलं करोति जठरे मनुजस्य तीव्रं।

अर्थात् पित्त आदमीके पेटमें तेज़ दर्द करता है। उससे अङ्गोंमें दाह—जलन, ग्लानि, पसीने, प्यास और बेहोशी ये उपद्रव होते हैं। नाभिके पास दाह और शोष होता तथा चेहरा पीला हो जाता है।

सुश्रुत कहते हैं, प्यास बहुत लगती है, जलन होती है, मद या नशासा बना रहता है, बेहोशी रहती है, दर्द तेज़ीसे चलता है, रोगी शीतल आहार-विहार चाहता और शीतकाल तथा शीतल पदार्थोंसे दर्द शान्त होता है। ये पित्तजशूलके लक्षण हैं।

नोट—अगरेज़ीमें पित्त शूलको "ग्यास ट्राइटस" कहते हैं। इसमें मेटेके मुँहपर बहुत दर्द होता है, साँस लेते समय दर्द बहुत होता है, बार-बार कय होती हैं और उनमें स्नेहसदार पानी सा आता है, कभी-कभी खूनकी धारियाँ भी दिखाई देती हैं। और दारुण प्यास लगती है। कभी दस्त बन्द रहता है और कभी दस्त लगते हैं। इसमें बेहोशी, भ्रम और हिचकी—ये उपद्रव बुरे हैं। यह रोग तीक्ष्ण गरमी, शराब पीने, गरम जल पीने, बहुत लघन करने और विष वगैर: खानेसे होता है। इसमें शीतल और पाचन चीजें मुफीद होती है।

प्रश्नोत्तर।

प्रश्न—पित्तका शूल कहाँ होता है?

उत्तर—नाभिमें।

प्रश्न—पित्त-शूल किस समय बढता है?

उत्तर—दिनको दोपहरके समय, आधी रातके समय, ग्रीष्म और शरद् ऋतुमें।

प्रश्न—पित्त-शूल किस ऋतुमें शान्त होता है?

उत्तर—शीतकाल या जाड़ेमें।

प्रश्न—पित्त-शूल किन चीजोंसे शान्त होता है?

उत्तर—शीतल हवा, शीतल जल और अत्यन्त शीतल और मीठे पदार्थोंसे।

प्रश्न—पित्त शूलके उपद्रव क्या हैं?

उत्तर—दाह, मोह, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास और पसीने आना।

कफज शूलके निदान ।

कफज शूलके विप्रकृष्ट निदान या कारण ये हैं :—

(१) जल-जीव मछली आदिका मांस खाना, (२) जलके पास पैदा हुए पक्षियोंका मांस खाना, (३) फटा हुआ दूध या फटे हुए दूधके क्षीर मोहन आदि पदार्थ खाना, (४) ईखका रस खाना, (५) उड़द आदिका पिसा अन्न खाना, (६) खिचड़ी, (७) तिल, (८) पूरी-कचौड़ी, (९) दही-वड़े आदि कफकारक पदार्थोंसे कुपित हुआ "कफ" आमाशयमें शूल पैदा करता है ।

हारीत कहते हैं :—कसरत या मिहनत न करने, ज़ियादा सोने, ईखका रस, चीनी, गुड़, तेल, दूध, दही, उड़द, मछली और शीतल पदार्थोंके सेवन करनेसे "कफ" कुपित होकर जठराग्निको शान्त करता और शूल चलाता है ।

कफजशूलके लक्षण ।

ऊपर लिखे हुए कारणसे कफ कुपित होकर "आमाशय"में शूल पैदा करता है । इस शूलमें सूखी ओकारी आती हैं, खाँसी चलती है, ग्लानि होती है, अन्न पर रुचि नहीं चलती, मुँहसे लार गिरती है, पेट और सिर भारी रहते हैं ।

यह शूल सदा भोजन करनेके वाद ज़ोरसे चलता है । दिनके पहले भागमें—सवेरे ६ से ९ वजे तक, शिशिर ऋतु—जाड़ा, वसन्त ऋतु—फागुन और चैतमें भी यह शूल वहुत तकलीफ देता है, क्योंकि ये कफके सञ्चय और वृद्धिके समय हैं ।

सुश्रुतने कहा है—इस शूलमें ओकारी वहुत आती हैं, पेट भरा सा रहता है, शरीर और पेट भारी जान पड़ते हैं और वेदना मन्दी-मन्दी रहती है ।

हारीत कहते हैं :—कोठेमें अत्युग्र विकार होता है। ओकारी खाँसी, वमन, जड़ता, सिरका भारीपन, गोलापन, शरीरका शीतल होना, अरुचि, भोजन करनेके बाद थूक आना, मुँहका मीठा रहना, आलस्य और चेहरेका चिकनापन—ये सब उपद्रव कफके शूलमें होते हैं।

नोट—"वायु-शूल" भोजन पचनेके बाद बढ़ता है, पर "कफ शूल" भोजन कर चुकते ही बढ़ता है।

दो दोषों और तीन दोषोंके शूलके लक्षण ।

अपने-अपने कारणोंसे वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके एक साथ कुपित होनेसे "त्रिदोष शूल" होता है और किन्हीं दो दोषोंके एक साथ कुपित होनेसे "द्वन्द्वज शूल" होता है। दो दोषोंवाले शूलमें दो दोषोंके और तीन दोषवाले शूलमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं।

आमशूलके लक्षण ।

जिस शूलमें अफारा, उबकाई, वमन, शरीरमें भारीपन, मन्दता और मुँहसे कफ गिरना, ये उपद्रव हों तथा कफज शूलके समान लक्षण हों, उसे "आमशूल" कहते हैं।

इस आमशूलके पैदा होने पर, उससे दोषोंका सम्बन्ध हो जाता है, इसलिये "आमशूल"को आठवाँ शूल कहते हैं। यह शूल पहले "आमाशयमें" होता है, पीछे इससे जिस दोषका सम्बन्ध होता है, उस दोषके अनुसार यह वस्ति, नाभि, कूख, हृदय, पसलियो और पेटमें होता है।

नोट—आमशूल पहले आमाशयमें होता है। पीछे अगर उसका सम्बन्ध "वायु"से होता है, तो वह "वस्ति, कूख, हृदय या पसलियों"में हो जाता है। अगर पित्तसे सम्बन्ध होता है तो "नाभि"में होता है।

वैद्यविनोदमें लिखा है :—दस्तका न होना, पेटमें गुड़गुड़ होना, ओकी आना, शरीर गीला सा रहना, वमन होना, शरीर भारी रहना और कफज शूलके लक्षण ये सब आम शूलमें होते हैं।

दोषोंके भेदसे आमशूलके स्थान ।

अगर आमशूल "वायु"के सम्बन्धसे होता है, तो वस्ति या मूत्राशयमें होता है ।

अगर आम शूल "पित्त"के सम्बन्धसे होता है, तो नाभिमें होता है ।

अगर आमशूल "कफ"के सम्बन्धसे होता है, तो हृदयमें, पसलियोंमें और पेटमें होता है ।

अगर आमशूल "तीनों दोषों"के सम्बन्धसे होता है, तो सब स्थानोंमें होता है ।

अगर आमशूल "कफ और वायु"के सम्बन्धसे होता है, तो मूत्राशय, हृदय, कमर और पसलियोंमें होता है ।

अगर आमशूल "कफ और पित्त"के सम्बन्धसे होता है, तो पेट, हृदय और नाभिके बीचमें होता है ।

अगर आमशूल "वात और पित्त"के सम्बन्धसे होता है, तो ज्वर और दाह पैदा करता है । यह अत्यन्त भयदायक होता है । इसे वात-पित्तका शूल कहते हैं ।

शूलका भेद—परिणाम शूल ।

अपने कारणोंसे कुपित हुआ वायु, जब कफ और पित्तको दूषित करता है, तब शूल पैदा होता है । यह शूल भोजन पचनेके समय होता है । इसे "परिणाम शूल" कहते हैं ।

अगर पेट फूल जाय, गुडगुड शब्द हो, मलमूत्र रुक जायँ, मन न लगे और कँपकँपी आवें तो "वाताधिक्य परिणाम शूल" समझो । यह शूल चिकने और गरम पदार्थोंसे शान्त होता है ।

अगर प्यास, जलन, मन न लगना और पसीने आना—ये लक्षण

हों, तीक्ष्ण खट्टे और खारी पदार्थ खानेसे शूल पैदा हुआ हो और शीतल पदार्थों से शान्त होता हो,तो उसे "पित्ताधिक्य परिणाम शूल" समझो।

अगर वमन, ओकी, मोह और मन्दी पीड़ा हो, शूल बहुत दिनों-तक रहे और तीक्ष्ण तथा कडवे पदार्थों से शान्त होता हो, उसे "कफाधिक्य परिणाम शूल" समझो।

जिसमें ऊपर लिखे हुए दो दोषोंके लक्षण मिलते हों, वह द्वन्द्वज और जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हों, उसे त्रिदोषज समझो।

जिस त्रिदोषज परिणाम शूल रोगीके मांस, बल और अग्नि क्षीण हो गये हों, उसको असाध्य समझो।

नोट—"परिणाम शूल"की खास पहचान, इस शूल या दर्दका भोजन पचनेके समय होना है। अँगरेज़ीमें इसे "अलसर आव् दी स्टमक" कहते हैं। ज्यों-ज्यों भोजन पचता जाता है, त्यों-त्यों दर्द कम होता जाता है। यह दर्द मेदेकी कमज़ोरीसे होता है।

अन्नद्रव शूलके लक्षण।

खाया हुआ भोजन पचनेपर या पचनेके समय अथवा अपक्व अवस्थामें जो अनिर्दिष्ट शूल उत्पन्न होता है, उसे "अन्नद्रव शूल" कहते हैं। यह पथ्य-अपथ्य, भोजन-अभोजन किसीसे शान्त नहीं होता। हाँ, कय करानेसे कुछ आराम मिलता है। इसको असाध्य नहीं समझना चाहिये, क्योंकि शास्त्रोंमें इसकी चिकित्सा लिखी है।

दर्द कुलञ्ज।

यह दर्द सुद्दोंके बढ़ जानेसे आँतों और कूलोंमें होता है। इसमें मल और अधोवायु बड़ी कठिनतासे तकलीफके साथ निकलते हैं। इसमें ऐंठनी बहुत होती है और कभी-कभी अफारा भी हो जाता है।

यह बिना पका खाना खाने, पेटमें कीड़े पड़ जाने, आँतोंमें

खुद या अयोग्य मल जमा हो जाने, संखिया आदि विष खाने अथवा सर्दीसे आँतोंके सुकड़ जानेसे होता है। यह पाचक और दस्तावर दवासे जाता है।

नोट—इस दर्द कुलंजके लक्षण हमारे वातज शूल (कुक्षिशूल) से मिलते हैं। इसे अँगरेज़ीमें कॉलिक पेन (colic pain) कहते हैं।

शूलके उपद्रव।

वेदना—पीड़ा, अत्यन्त प्यास, मूर्च्छा, मलवन्ध—मल रुकना, भारीपन, अरुचि, खाँसी, श्वास, वमन और हिचकी—ये शूलके दश उपद्रव हैं।

साध्यासाध्य लक्षण।

एक दोषवाला शूल साध्य होता है, दो दोषवाला कष्टसाध्य और तीन दोषवाला तथा उपद्रव-सहित असाध्य और भयङ्कर होता है।

शूलके अरिष्ट लक्षण।

वेदना, अत्यन्त प्यास, वेहोशी, अफारा, भारीपन, ज्वर, भ्रम, अरुचि, कमज़ोरी और वलकी हानि—इन दश उपद्रवों सहित शूल हो, तो रोगी हरगिज़ नहीं वच सकता।

शूल-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) शूल रोगकी चिकित्सामें देर करना ख़तरनाक है। शूल रोगके उठते ही इलाज करनेसे आराम होनेकी उम्मीदकी जा सकती है, पर देर करने या पुराना होनेसे आरामकी आशा नहीं रहती।

(२) सव शूलोंमें "वायु" ही शीघ्र शूल चलता है, अतः उसे वहुत

जल्दी शान्त करना चाहिये। शूल रोग नीचे लिखे उपायोंसे शान्त होता है। वैद्योंको इन उपायोंको भूलना न चाहिये।:—

(१) वमन कराना।

(२) लंघन या उपवास कराना।

(३) पाचन औषधि देना।

(४) स्वेदन करना यानी सेकादिसे पसीने दिलाना।

(५) गुदामें दवाओंकी बत्ती-बत्ती चढ़ाना।

(६) क्षार, चूर्ण या गोली सेवन कराना।

नोट—मृत्तिका स्वेद अथवा कापांस-अस्थि स्वेद या बिनौले प्रभृतिकी पोटलियों द्वारा शूल-स्थानको सेकनेसे दर्द शान्त हो जाता है। तिलोंकी गोली पेट पर फेरनेसे, गरम पानीको भरी बोतल पेटपर फेरनेसे अथवा मैनफलको काँजीमें पीसकर नाभि के ऊपर लेप करनेसे शूल फौरन जाता रहता है। सोंठ और रेंडीकी जड़के काढ़ेमें "भुनी हींग और कालानोन" मिलाकर पिलानेसे शूल तुरन्त ही भाग जाता है।

जिस शूलमें पाखाना न होता हो और पाखाना हुए बिना आराम हो न सकता हो, वहाँ दवाओंकी बत्ती बत्तीको घी या तेलमें चुपड़ कर गुदामें घुसानेसे ५ मिनटमें पाखाना हो जाता है। ये सभी उपाय वैद्यको याद रखने चाहिएँ। फिर भी, जहाँ सेक आदिकी जरूरत हो वहाँ सेक और जहाँ वमन, विरेचन और लंघन की जरूरत हो वहाँ ये कराने चाहियें। ये शूलकी सामान्य चिकित्सा है।

वायु शूलपर हिदायतें।

(१) अगर वायु-शूल हो, तो थोड़ीसी मिट्टीको एक हाँडीमें डालकर, ऊपरसे पानी भर दो और आगपर औटाओ। जब मिट्टी गाढ़ी हो जाय, उसे एक कपड़ेमें रखकर पोटली बनालो और उस पोटलीसे शूल-स्थानको बारम्बार सेको। इसीका नाम "मृत्तिका स्वेद" है। इससे "वायुका शूल" शान्त हो जाता है।

अगर इससे लाभ न हो, तो बिनौले, कुल्थी, तिल, जौ, अरण्डी-की जड़, अलसी, सोंठ और सनके बीजोंको पीसकर चूर्ण बनालो। इस चूर्णको सिलपर डालकर, ऊपरसे "काँजी" दे-देकर महीन पीसो। फिर उस लुगदीको आगपर गरम करो और कपड़ेमें रखकर पोटली

बना लो। इस पोटलीसे दर्द-स्थानको सेको। इसीको "कार्पा-सास्थ्यादि स्वेद" कहते हैं। बिनौलेको संस्कृतमें कार्पास-अस्थि या कपासकी हड्डी कहते हैं। इसीसे यह नाम पड़ा है। इस पोटली-के सेकसे पहुँचे—कलाई, पेट, पैर, घुटने, कूले, कमर, एड़ी, कन्धे, सिर और उँगलियोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है। इतना ही नहीं, इससे वात-सम्बन्धी और पीड़ायें भी शान्त हो जाती हैं।

सुश्रुतने दूधके मावे, तिल चाँवलकी खिचड़ीके गोले और तेल या घी मिले हुए मैंडक आदिके मांससे सेकना भी, वायु शूलमें, हित-कर कहा है और इन सेकोंसे वातशूल निश्चय ही शान्त हो जाता है।

बालूको आग पर गरम करके और कपड़ेमें बाँध कर, पोटलीसी बनाकर, शूल-स्थानको सेकनेसे सभी दर्द मिट जाते हैं।

एक बड़ी बोतलमें गरम पानी भर कर, उसका मुँह मजबूत कागसे बन्द करके, पेट पर फेरनेसे भी शूल शान्त हो जाता है, पर बोतलसे सेकते समय, पेट पर एक कपड़ा फैला कर सेक करनेसे पेटके चमड़ेके जलनेका डर नहीं रहता। यह डाक्टरी क्रिया है। इसे "फोमेन्टेशन" (Fomentation) कहते हैं।

बेलकी जड़, अरण्डकी जड और तिलोंको बराबर-बराबर लेकर "काँजी"के साथ सिल पर महीन पीस कर और फिर आग पर गरम करके और गोलासा बनाकर पेट पर फेरनेसे "वायु शूल" तत्काल मिट जाता है।

तिलोंको काँजीके साथ महीन पीस कर और बड़ासा गोला बनाकर पेट पर फेरनेसे भयंकर शूल भी आराम हो जाता है।

मैनफलको काँजीके साथ सिल पर, चन्दनकी तरह, महीन घिस कर और ज़रा गरम करके, नाभि या सूंडी पर लेप करनेसे सब तरह के शूल शान्त हो जाते हैं।

सुश्रुतने लिखा है, भूखे रहनेसे हुए शूल रोगमें, रोगीको हल्का तृप्तिकारक भोजन गरम दूधके साथ देना अथवा चिकने मांस-रसके

साथ यवागू देना हितकर है। अगर वात शूल रोगी रूखा हो, तो उसे चिकने पदार्थ देने चाहिएँ । वातशूलमें दही, उदश्वित—आधा पानी मिला माठा अथवा दहीका तोड़,—इनमेंसे कोई एक "काला नमक" मिलाकर पिलाना भी लाभदायक है।

ये चन्द बाहर और भीतरके उपाय हमने बतौर मिसालोंके बता दिये हैं। ये सभी परीक्षित हैं। ऊपरके उपाय भी करने चाहियें और पेटमें खानेकी दवा भी देनी चाहिये, तभी जल्दी लाभ होगा।

पित्तज शूल पर हिदायतें ।

(४) पित्तज शूल वालेके लिये गुड़, शालि चाँवलोंका भात, जवाखार, घी पीना, पित्त नाशक जुलाब, जंगली या जांगल देशके पशु-पक्षियोंका मास, खरगोश और लवेका मांस रस—शोरवा, चाँदी या ताम्बेके बर्तनोंमें पानी भर कर शूल-स्थान पर रखना—ये सब हितकारी हैं।

हारीतने लिखा है—जीवन्ती आदि औषधियोंके साथ पकाया हुआ घी या दूध और मिश्री पीना और जुलाब लेना ये पित्तज शूलमें परम हित हैं। सरोवरके शीतल जलसे स्नान करना, चन्दन लगाना, काँसी, चाँदी और सोनेके शीतल जलसे भरे हुए बर्तनोंसे अथवा कमलोंसे शीतलता पहुँचाना—ये सब भी पित्तज शूल-नाशक हैं। सफेद साँठी चाँवलोंकी खील, मिश्री और शहद मिला हुआ दूध पीनेसे पित्तज शूल, दाह, और पित्तज्वर नाश होते हैं। घी, दूध और शहद पित्तशूल रोगीको परम हितकर हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

सद्यः छर्दि यित्वा तु पीत्वा शीतोदकं नरः ।
शीतलानि च सेवेत सर्वाण्युष्णानि वर्जयेत ॥

पित्तशूल-रोगीको शीतल जल पिलाकर वमन करानी चाहिये। शीतल पदार्थ खाने पीनेको देने चाहिये और सब तरहके गर्म आहार-विहारोंसे परहेज रखाना चाहिये।

मणि, चाँदी और ताम्बेके वासनोंको शीतल जलसे भर कर शूल-स्थान या दर्दकी जगहपर रखना चाहिये। गुड़, चाँवल और जौ खाने चाहियें। घी पीना और जुलाब लेना चाहिये। पित्त-कारक आहार-विहार छोड देने चाहियें।

वृन्दने कहा है—दूधमें अथवा जलमें अथवा ईखके रसमें "कड़वे परवलके पत्तों या नीमके पत्तोंका सिल पर पिसा हुआ कल्क" मिला कर पित्त-शूल-रोगीको पिलाना चाहिये, ताकि कय हो जावें; क्योंकि कय होनेसे पित्तशूलमें लाभ होता है।

अगर पेटमें मल रुका हो, तो मुलेठीके काढ़ेमें "रेंडीका तेल" मिला कर पिलाना चाहिये, ताकि दस्त होकर पित्त निकल जावे। अथवा त्रिफला और अमलताशके गूदेका काढ़ा, घी और चीनी मिला कर, पिलाना चाहिये। इससे भी दस्त होकर शूल, दाह और रक्तपित्त आराम हो जाते हैं।

खुलासा यह है कि, पित्तशूलमें वमन, विरेचन और शीतल आहार-विहारोंका सेवन हितकर है। इसीसे हमने वमन विरेचनके परीक्षित और पित्तमें हितकर नुसखे यहाँ लिख दिये हैं। इनके सिवा, पित्तशूल-रोगीको, उसके दाह और शूलकी शान्तिके लिए, कोई पित्तनाशक औषधि भी पिलानी चाहिये। जैसे, सवेरे ही शता-वरके रसमें "शहद" मिलाकर पिलाना अथवा आमलोंके स्वरसमें "मिश्री" मिलाकर पिलाना अथवा आमलोंका चूर्ण "शहद" मिला कर चटाना। ये तीनों नुसखे पित्तशूलकी शान्तिके लिए परमो-त्तम हैं।

कफज शूलपर हिदायतें।

(५) कफके शूलमें लंघन और वमन हितकारी हैं। इनके बाद कफनाशक, कड़वे और गरम पदार्थ देने चाहियें। "सुश्रुत"में रूखा स्वेद भी हितकारी लिखा है। "सुश्रुत"में लिखा है :—

अशने भुक्तमात्रेतु प्रकोपः श्लैष्मिकस्य च।
वमन कारयेत्तत्र पिप्पलीवारिणा भिषक्॥
रुक्षः स्वेदः प्रयोज्यः स्यादन्याश्चोष्णा क्रिया हितः।

कफका शूल भोजन करते ही उठता है, इसलिए, इसके उठते ही, वैद्यको पीपलोंका काढ़ा पिला कर कय करा देनी चाहिये, रूखा सेक और गर्म चिकित्सा करनी चाहिये। पीपर और अदरख मिला कर खिलानेसे "कफ शूल" शान्त हो जाता है।

अगर आमदोष हो, तो वच, कुटकी, नागरमोथा, हरड़ और मूर्वाकी जड़—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूट-छान कर, तीन-तीन माशे चूर्ण "गोमूत्र"के साथ पिलाना चाहिये।

हारीतने कहा है, कफ-शूल रोगीको लंघन कराना, कय कराना और पाचन औषधि देना हितकर है। इस रोग वालेको कड़े और मीठे पदार्थ न देने चाहिये और सोने न देना चाहिये।

कफ शूलमें, रोग होते ही, पहले,तत्काल "पीपलका काढ़ा" पिला कर वमन करा देनी चाहिये। वमनके बाद उपवास या लंघन कराना चाहिये। कहा है:—

कफे प्रवाम्य शूलार्त्तमवश्यमुपवासयेत्।
लवणं त्रितयं हिंगु पञ्चकोलयुत पिबेत॥

कफज शूल रोगीको वमन कराकर, उपवास अवश्य कराना चाहिये और सेंधानोन, संचरनोन, विड़नोन और हींगका चूर्ण मिला कर "पञ्च कोल"का काढ़ा पिलाना चाहिये।

नोट—पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचोंको "पञ्च कोल" कहते हैं।

आम शूल।

(६) आमशूलकी चिकित्सा "कफशूलकी तरह" करनी चाहिये। कहा है:—

आमशूले च कर्त्तव्य कफशूल विनाशन।

आम शूलमें वही दवा देनी चाहिये, जिससे मन्दाग्नि और अजीर्ण में आमदोष पकता और अग्नि बढ़ती है।

परिणाम शूल पर हिदायतें।

(७) परिणाम शूलकी शान्तिके लिए पहले लङ्घन, फिर वमन और विरेचन कराने चाहियें। परिणाम शूल पित्तसे हुआ हो, तो तुरन्त ही वमन करा देनी चाहिये। अगर कफसे हुआ हो, तो जुलाब दे देना चाहिये।

परिणाम शूलवालेको वमन करानी हो, तो मैनफलके काढ़ेमें "दूध" मिलाकर उसे कंठतक पिला देना चाहिये। अथवा काले गन्नेका रस, साधारण ईखका रस, "नीमका काढ़ा या कड़वी तूम्बीका काढ़ा" मिलाकर गले तक पिलाना चाहिये और विधिपूर्वक कय करानी चाहिये।

अगर जुलाब देना हो, तो रैंडीका तेल दूधमें मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा अरण्डीकी जड़, बेलकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बड़े नीबूकी जड़, गोखरूकी जड़ और पत्थरचूरका काढ़ा बनाकर, उसमें "जवाखार, हींग, सेंधानोन और रैंडीका तेल" मिलाकर पिलाना चाहिये। इन जुलाबोंसे परिणाम शूल खड़ा नहीं रहता।

"वैद्यविनोद"में लिखा है :—

भुक्ते जीर्यति यच्छूल तदेव परिणामजं।
आकंठं पाययेन्मद्य क्षीरमिक्षुरसं रस॥
मदनारिष्टजं क्वाथं सम्पक्व्यश्चाच्च वामयेत्।
ऐरंडजेन तैलेन रेचनं पक्तिशूलनुत्॥

जो शूल या दर्द खाना खानेके बाद—खाना पचनेके वक्त होता है, उसे "परिणामशूल" कहते हैं। इस दर्द में—शराब, दूध, ऊखका रस और मांसरस,—इनमेंसे कोई एक, कंठतक पेट भरकर, पिलाना चाहिये। फिर मैनफल और नीमका काढ़ा पिलाकर वमन करा

देनी चाहिये। कय कराकर, रेंडीका तेल पिलाना चाहिये। इन उपायोंसे "परिणामशूल" तत्काल नष्ट हो जाता है। ये उपाय परीक्षित हैं। इन उपायोंके बाद नारिकेल क्षार, पथ्यादि लोह अथवा विडंगादि मोदक आदि औषधियाँ सेवन करानी चाहियें। गरम जलके साथ "शंख-भस्म" खिलाना भी अच्छा है।

परिणाम शूलमें, अनुवासन और निरूहण वस्ति करने यानी गुदामें पिचकारी लगानेकी भी सलाह दी गई है। कहा है :—

लंघन वमन शस्तं विरेकश्चाऽनुवासनम्।
निरूह कर्म चैतानि शस्तानि परिणामजे॥

लंघन, वमन, विरेचन, अनुवासन और निरूह वस्ति—ये सब परिणाम शूलमें हित हैं।

अन्नद्रव शूल पर हिदायतें।

अन्नद्रवशूलकी वही चिकित्सा है, जो "अम्लपित्त" रोगकी है। कहा है :—

अन्नद्रवेतुतत्कार्य्यं जरत्पित्ते यदीरितम्।
आमपक्वाशये शुद्धे गच्छेदन्नभवं शमम्॥

जरत्पित्तमें जो क्रिया कही है, वही अन्नद्रवशूलमें भी करनी चाहिये। विशेष करके, जब आमाशय और पक्वाशय शुद्ध हो जाते हैं, तब अन्नद्रव रोग शान्त हो जाता है; यानी आमाशय और पक्वाशयके साफ होनेसे अन्नद्रव शूल नहीं रहता।

"भावप्रकाश"में लिखा है :—

अन्नद्रवो दुश्चिकित्स्यो दुर्विज्ञेयो महागदः।
तस्मात्तस्य प्रशमने परं यत्नं समाचरेत॥
अन्नद्रवे जरत्पित्ते वह्निमन्दो भवेद्यतः।
तस्मादत्रान्नपानानि मात्राहीनानि कारयेत॥

अन्नद्रव रोग महा भयङ्कर और कठिनसे आराम होनेवाला है, इसलिए इसकी शान्तिके लिए खूब चेष्टा करनी चाहिये।

अन्नद्रवशूल और जरत्पित्त रोगमें जठराग्नि मन्दी हो जाती है, इसलिए इन रोगोंमें अन्न और जलकी मात्रा कम कर देनी चाहिये।

जबतक तीक्ष्ण, गरम और पित्त-मिले खट्टे अन्नको रोगी कयसे निकाल नहीं देता, तबतक अन्नद्रवशूल शान्त नहीं होता। अतः वैद्यको चाहिये, कि रोगीको वमनकारक दवा पिलाकर, रोगकारक पदार्थोंको पेटसे निकाल दे।

इस रोगमें सामाँ, कोदों या काँगनीकी दूधमें बनी हुई और चीनी मिली हुई खीर, गुड़के बने पदार्थ, सूरनकन्द, पेठा, मटर, जौका सत्तू, खीलोंका सत्तू—दहीके साथ, गेंहूकी मांडक, घी, गुड़, चीनी और दूधमें मिली हुई—ये सब पदार्थ पथ्य हैं। मटर, जौ, गेंहूं, सामा, कोदों, उड़द, कुल्थी, काँगनी, शालि चाँवल, दही मिला दूध, गाय या भैंसका घी, बथुआ, करेले, ककोड़े; मोर, हिरन और तीतरका मांस और रोहू आदि मछली ये सब भी अन्नद्रव शूलमे पथ्य हैं।

पसलीके दर्द पर हिदायतें।

(९) जब कोख और पसवाड़ोंमें ठहरा हुआ "कफ" वायुको रोक देता है, तब पसलीका दर्द होता है। चूंकि यह रोग "कफ और वायु"से पैदा होता है, इसलिए इसमें कफ-वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। "सुश्रुत"में लिखा है, इस रोगमें "अरण्डीका तेल"—शराब, मस्तु, दूध या मांस-रसमें मिला कर पिलाना चाहिये। दवा के पच जाने पर, दूध या जंगली जानवरोंके मांस-रसके साथ भोजन कराना चाहिये। पानी गर्म करके शीतल किया हुआ पिलाना चाहिये। पसलीके दर्दमें शीतल जल हानिकारक है।

कुक्षिशूल पर हिदायतें।

(१०) कुक्षिशूल या कोखका दर्द वायु और आम, यानी बिना पचे भोजनसे होता है। इस रोग वालेका भोजन पचता नहीं—

ज्यों-का-त्यों रखा रहता है, श्वास भर जाता है, कच्चे अन्नके दस्त आते हैं, वारम्बर शूल चलते हैं तथा लेटे बैठे और खड़े—किसी तरह कल नहीं पड़ती ।

इस रोगमें वमन करानी चाहियें और बलके अनुसार लङ्घन कराने चाहियें तथा खट्टा रस और अग्निदीपक चीजें मिलाकर देनी चाहियें, जिससे आम पच जावे। रोगीका बलाबल और दोष देखकर जुलाब भी देना चाहिये। स्नेह वस्ति और निरूह वस्ति भी देनी चाहियें, क्योंकि ये दोषोंको नष्ट करती हैं। गरम-गरम लेप करना, भुरता आदि बाँधना, चिकनी चीजोंसे सेकना और धान्याम्ल काँजी सींचना हितकारी हैं।

(११) रूखा आहार करनेसे मनुष्यके कोठेमें "वायु" कुपित होता है। यह कुपित "वायु" कोठेके मलको रोक देता है, अग्निको मन्दी कर देता है, स्रोतोंको रोक कर तीव्र शूल पैदा करता और दाहनी या बाईं कूखमें ठहर जाता है अथवा सारे पेटमें फैल कर शूल चलाता है। यह आवाज करता हुआ बढ़ता है। इस दर्दमें तेज प्यास, भ्रम और मूर्च्छा ये उपद्रव भी होते हैं। दस्त होने और पेशाब आनेसे भी यह दर्द शान्त नहीं होता। इसे दारुण "विट्शूल" कहते हैं। असलमें, यह दर्द कोठेमें मलके बढ़ जाने और कोठेके रूखेपनसे होता है।

यह शूल, दाहनी या बाईं कूखसे उठ कर, सारे पेटमें फिरता है और साधारण उपायोंसे शान्त नहीं होता। यही इसकी सीधी पहचान है।

"सुश्रुत"में लिखा है, इसमें शीघ्र ही दोष हरने वाली क्रिया करनी चाहिये। स्वेदन करना—सेक कर पसीने निकालना एवं निरूहण वस्ति और स्नेहन वस्ति करना इसमें हितकारी हैं। कोठा शुद्ध करने वाली दवाएँ पिलाना भी अच्छा है। "उदावर्त्त रोगकी चिकित्सा" इस रोगमें सुखदायी है।

मिश्रित।

(११) याद रखो, वातज शूलमे निरूह वस्ति, पित्तज शूलमें जुलाव और दूध, तथा कफज शूलमें वमन और कटु तिक्त पदार्थ हित हैं। रक्तज शूलमें फस्त खुलवाना और कृमिजनित या कीड़ोंसे पैदा हुए शूलमें कृमि रोग नाशक दवा खाना हित है। अगर इन उपायोंसे शूल रोग न मिटे, तो सींगी लगवाना और गुदामें "नारायण तेल"की पिचकारी देना हितकारी है। ये आख़िरी उपाय हैं।

पथ्यापथ्य।

(१३) पथ्यापथ्य पर भी खूब ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि उत्तमसे उत्तम दवा सेवन करने और साथ ही अपथ्य पदार्थ सेवन करनेसे रोग आराम हो नहीं सकता। शूल रोगीको भारी और देरमें पचने वाले भोजन, अधिक खाना, सब तरहकी दाल, साग-तरकारी, दही, रूखी-कसैली और शीतल चीजें, खट्टी चीज़ें, लालमिर्चे, तेज़ शराब, धूप, मिहनत, मैथुन, शोक, क्रोध, मलमूत्रादिके वेग रोकना और रातमें जागना ये सब हानिकारक हैं। वैद्यको चाहिये, रोगीको ये बातें बारम्बार बताता रहे।

जिस समय रोगका जोर हो, रोगीको रोटी और भात आदि न देने चाहियें। दिनमे दूध-बारली या दूध-साबूदाना और रातको दूध और धानकी खीलें—ये पथ्य पदार्थ देने चाहियें। अगर पित्तका शूल हो और उसमें जी मिचलाता हो, प्यास बहुत लगती हो, अत्यन्त जलन— दाह और बुख़ार हो, तो शहदमें मिलाकर जौकी लपसी देनी चाहिये।

रोग मिटने पर, दिनमें, पुराने चाँवलोंका भात, परवल, बैंगन, गूलर, पुराना सफेद कुम्हड़ा, करेला, केलेका फूल, आमले, कसेरू पका पपीता, दाख, नारियल, बेलका फल, गरम दूध, कच्चे नारियलका पानी, हींग और सेंधानोन आदि हितकर हैं। रातके समय दूध-साबूदाना, दूध-बारली, दूध-धानकी खील और जौकी लपसी—ये

हित हैं। इस रोगमें, खानेको खाकर उसी समय जल न पीना चाहिये। भोजनके दो घण्टे बाद जल पीनेसे उपकार होता है और भोजनके साथ या अन्तमें पानी पीनेसे हानि होती है। अगर स्नान करना हो, तो शीतल या गरम जैसा पानी माफ़िक़ हो वैसे ही स्नान करना चाहिये।

अगर सवेरे-शामके भोजनके बीचमे या सवेरे ही खानेके टाइमसे पहले भूख लगे, तो पेठेका मुरब्बा, आमलोंका मुरब्बा और गरीकी बरफी खानी चाहिये। किसीने कहा है :—

शूले हिंग्वशनं शस्तं वमनं रेचनं तथा।
अद्विदलं हितं चान्नं रक्तजेरक्तमोक्षणम्॥
कृमिशूले कृमिघ्नानि भेषजानि समाहरेत।
यदि शूलं न गच्छेत धरणीं चालयेत्ततः॥

शूल रोगमें हींग खिलानी चाहिये। वमन और विरेचन कराना चाहिये। दो दलवाले मूँग, उडद आदि अन्न न खिलाने चाहियें। रक्तजशूलमें फस्द खुलवानी चाहिये। कृमिजनित शूलमें कृमिनाशक दवा देनी चाहिये। अगर इन उपायोंसे शूलरोग न आराम हो, तो "धरणी नस"को दवाना चाहिये।

शूलकी सामान्य-चिकित्सा।

(१) काले तिलोंको, काँजीके साथ, खूब महीन पीस कर एक बड़ा गोला बना लो। इस गोलेको शूलस्थान पर फेरनेसे सब तरहके शूल—ख़ासकर वातज शूल—आराम हो जाते हैं।

(२) मैनफलको काँजीके साथ, सिलपर चन्दनकी तरह, घिसकर और गरम करके, नाभि पर लेप करनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं।

(३) देवदारु, कूट, शतावर, हींग, सेंधानोन और चोक—सत्यानाशी कटेरीकी जड़—इन सबको समान-समान लेकर, काँजी या गन्नेके सिरकेमें पीसकर और आग पर जरा गरम करके, पेट पर गाढा गाढ़ा लेप करनेसे सब तरहके दर्द मिट जाते हैं।

नोट—चोकको संस्कृतमें "हैमवीरी" और बोलचालकी जबानमें "सत्यानाशी कटेरीकी जड़" कहते हैं।

(४) अरण्डकी जड़, वेलकी जड़, चीतेकी जड, सोंठ और हींग—इनको समान-समान लेकर, पानीके साथ महीन पीस कर और आग पर गरम करके, निवाया-निवाया लेप करनेसे सब तरहके शूल मिट जाते हैं।

(५) धतूरेके फल और कुड़ेकी छाल,—इनको समान-समान लेकर, काँजी या सिरकेमें पीस कर और गरम करके, नाभि पर और नाभिके ओरपास लेप करनेसे घोर शूल आराम हो जाते हैं।

(६) पीपर, कुटकी, चिरायता, हरड़ और एलुआ—इन सबको समान-समान लेकर पानीके साथ महीन पीस कर और आग पर गरम करके, सारे पेट पर, गाढा-गाढ़ा लेप करनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। इस लेपमें यह खूबी है, कि मलको पतला करता और दो तीन दस्त भी लगाता है।

(७) एक तोले हींग और एक तोले सेंधेनोनको पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर ८ तोले तेल और ३२ तोले गोमूत्र तथा लुगदीको मिला कर तेल पकालो। इस तेलको नाभि पर लगानेसे दुर्जय शूल आराम हो जाता है। ख़ासकर वातकफज शूल।

(८) धानकी भूसीके पानीके साथ तिलोंको पीस कर गरम करलो और पोटली बनाकर गरम-गरम रहते सेक करो। इस सेकसे पेटका शूल आराम हो जाता है। ख़ासकर वात-कफका शूल।

(९) तुम्बुरु, हींग, सेंधानोन, संचर नोन, विड़नोन, जवाखार,

अजमोद, हरड़, वायबिडंग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और पोहकर-मूल—ये सब बराबर-बराबर लो और इन सबके वज़नका तीसरा भाग "निशोथ"लो। फिर इन सबको पीस-कूट कर छान लो। इस चूर्णको फाँककर, ऊपरसे गरम जल पीनेसे सब तरहके शूल, गुल्मोदर, अफारा, अजीर्ण, विबन्ध, आमवात और आनाह रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) हरड़, बहेडा, आमला और राई—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेकी है। एक-एक मात्रा "ना-बराबर घी और शहद"में मिला कर खानेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) पिसी हुई हरड ६ माशे, घी ६ माशे और गुड़ २ तोले मिलाकर खानेसे शूल नाश हो जाता है।

(१२) सोंठ, हरड और काला नमक—तीनोंको तीन-तीन माशे लेकर और पत्थर पर पानीके साथ, चन्दनकी तरह, घिस कर एक कटोरीमें पोंछलो। फिर उसमें आधी छटाँक पानी मिलाकर आग पर गरम करो। इसके पीनेसे सब तरहके शूल, दो दस्त होकर, नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३) धनिया, हरड, हींग, पोहकरमूल, कालानोन, सेंधानोन और कचियानोन—इन सबको पीस-छान कर चूर्ण बना लो। इसमेंसे ६।६ माशे चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। शूलके सिवा, वायु-गोला और अपतन्त्रक वातको भी यह चूर्ण नाश करता है।

(१४) अम्लवेत २ तोले, सफेद ज़ीरा ४ तोले, कालानोन १ तोले और कालीमिर्च ८ तोले—इनको पीस-छान कर "बिजौरे नीबूके रस" में घोट कर चने-समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंसे शूल रोग नाश हो जाता है।

(१५) अजमोद, सेंधानोन, हरड़ और सोंठ—इनको समान-

समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, गरम जलके साथ, खानेसे शूल नाश हो जाता है।

(१६) शंख, कालानोन, भुनी हींग, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—सबको समान-समान लेकर पीस-छानलो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, गरम पानीके साथ, खानेसे घोर शूल नाश हो जाता है।

(१७) तिल, सोंठ, हरड़ और शखकी भस्म बराबर-बराबर लेकर, सबके वज़नसे दूना "गुड़" ले लो। फिर कूट-पीस और मिलाकर एक-एक माशेकी गोलियाँ बनालो। सवेरे ही नित्य, एक गोली खाकर, ऊपरसे शीतल जल पीने और दूधका भोजन करनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं।

(१८) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, जवाखार, कूट और सेंधानोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण-मेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण, बिजौरे नीबूके रसके साथ, खानेसे तिल्ली और शूल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९) छोटी हरड़, सोंठ, मिर्च, पीपर, शुद्ध कुचला, शुद्ध गन्धक, हींग और सेंधानमक—इन आठोंको समान-समान लेकर कूट-पीस कर खरलमें डालो और पानीके साथ घोट कर छोटे बेरके समान गोलियाँ बनालो। सवेरे ही एक-एक गोली सेवन करनेसे वायु-गोला और शूल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

(२०) त्रिफलेके चूर्णमें "मिश्रीका चूर्ण" मिलाकर खानेसे सब तरहके शूल आराम हो जाते हैं।

(२१) रोगीसे, कम्बल उढ़ाकर, प्राणायाम-क्रिया कराओ और सत्तूको कड़वे तेलमें मिलाकर धूनी दो। इस उपायसे तत्काल शूल आराम हो जाता है।

(२२) हरड़ोंको "गोमूत्र"में पकाकर सुखालो और पीस-छान लो। फिर इसमें बराबरको "शुद्ध मंडूर-भस्म" मिला दो। इस चूर्णको "गुड"के साथ खानेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं।

शूल रोग पर उत्तमोत्तम नुसख़े।

एरण्डाद्य घृत।

अरण्डीकी जड़, कटाई, गोखरू, पुनर्नवा, गोखरूकी जड़, शतावर, हंसपदी, खिरटी, माषपर्णी, विदारीकन्द, बेलकी जड़, कमलकी नाल, चीता, कटेरी, जीवन्ती, ऋषभक, सरपता, कुशा, सहदेवी और देव-दारू—इन सबको एक-एक तोले लेकर सिल पर पीस कर लुगदी बनालो।

फिर इन्हीं दवाओंको चार-चार तोले लेकर जौकुट करलो और सोलह सेर पानीमें काढ़ा बनालो। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

फिर बिजौरे नीबूका रस चार सेर तैयार करके अलग रख दो और गायका घी एक सेर ले आओ।

अब एक कड़ाहीमें लुगदी, काढ़े, नीबूके रस और घीको मिलाकर आग पर चढ़ा दो और मन्दाग्निसे घी पकालो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो।

यह घी परिणाम शूल और अन्नद्रव शूलको छोड़ कर और सब तरहके शूलोंको नाश करता है। जब शूल रोग किसी दवासे आराम न हो, इस घीको रोगीको पिलाओ। इससे अवश्य आराम होगा। परीक्षित है।

शूल घृत।

• वायविडङ्ग, सैंधानोन, जवाखार, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, अजवायन और पाढ़की जड—हरेक दवा दो-दो तोले लेकर सिल पर पीस कर लुगदी बनालो।

घी १ सेर, बिजौरे नीबका रस ४ सेर, सूखी मूली और खट्टे बेरोंका काढ़ा ४ सेर, अनारका रस ४ सेर और लुगदी—इनको आग पर चढ़ाकर, मन्दाग्निसे घी पकालें। घी मात्र रहने पर, उतार कर छान लो।

इस घीके सेवन करनेसे हृदय शूल, पसलीका शूल, श्वास, खाँसी, गुल्म, तिल्ली, सब तरहके शूल और वात-विकार नाश हो जाते हैं।

शूल गजकेशरी वटिका।

पहले शुद्ध पारा चार तोले और शुद्ध गन्धक चार तोले—इनको खरल करो; जब कजली हो जाय, इसमें "लोहभस्म" चार तोले मिला दो।

भुना सुहागा, भुनी हींग, सोंठ, त्रिकुटा, त्रिफला, कचूर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, तालीसपत्र, जायफल, लौंग, अजवायन, ज़ीरा और धनिया—हरेक एक-एक तोले लेकर कूट-पीस छान लो।

इस चूर्णको और ऊपरके चूर्णको खरलमें डाल कर "बकरीका दूध" दे-दे कर खरल करो। जब घुट जाय, चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बनालो।

मात्रा—एक से दो गोली तक। अनुपान—बकरीका दूध या ताज़ा पानी। गोली खाकर, ऊपरसे दूध या पानी पीनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। गोली खाते समय गोलीके दाँत न लगना चाहिये। ये गोलियाँ खूब आज़मूदा या सुपरीक्षित हैं।

निम्बुक द्राव।

काग़ज़ी नीबुओंका रस पाव भर, आग पर फुलाया हुआ सुहागा २ तोले और आठ पीली कौड़ियोंकी भस्म—इन सबको एक मज़बूत काँच या चीनीके बासनमें भर कर, मज़बूतीसे उसका मुँह बन्द कर दो, ताकि हवाके जानेको साँस न रहे। फिर उस बर्तनको भूसेके

ढेर या अनाजके ढेरमें, आठ दिनोंतक, दबा कर रखा रहने दो। आठ दिनों बाद निकाल कर काममें लाओ।

इस द्रावकी मात्रा ३ माशेसे १ तोले तक है। सवेरे-शाम या भोजनके बाद, १ मात्रा द्राव एक या दो औन्स पानीमें मिलाकर, काँच, पत्थर या मिट्टीके बर्तनमें पीनेसे शूल रोग, बदहजमी और तिल्ली रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अगर यह द्राव जाड़ेमें बनाओ, तो दवाके बर्तनको २१ दिन तक भूसे वगैरःमें गड़ा रहने दो, क्योंकि शीतकालमें गरमी देरमें पहुँचती है और इसीसे पाक होनेमें देर लगती है।

शूलान्तक तैल।

अजवायन, धनिया, पीपर, बच, सेंधानोन और बेरके पत्ते—हरेक आठ-आठ तोले लेकर, पानीके साथ सिल पर पीस कर लुगदी बनालो।

अरण्डकी जड़ पाव-भर और दशमूलकी दसों चीजें पाव-पाव भर—इनको कुचल कर, एक मन पन्द्रह सेर पानीमें औटाओ; जब पौने चौदह सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छानलो।

आठ सेर जौ कुचल कर, चौसठ सेर पानीमें औटाओ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतार कर छानलो।

अब तिलोंका तेल आठ सेर, गायका दूध १६ सेर, अरण्डी और दशमूलका काढ़ा, जौका काढ़ा और लुगदी—इन सबको मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते तेल मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। इस तेलकी मालिशसे सब तरहके शूल शान्त हो जाते हैं। बड़ा उत्तम तेल है। परीक्षित है।

बृहत् शतावरी मण्डूर।

त्रिफलेके काढ़ेमें शोधा हुआ मंडूर ३२ तोले, दूध ३२ तोले, आमलोंका रस ३२ तोले और घी १६ तोले—इन सबको मिलाकर,

मन्दाग्निसे पकाओ। जब पक कर गोलीसी बँधने लगे, उसमें ज़ीरा, धनिया, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, पीपर और बड़ी हरड़ इन सबका तीन-तीन माशे चूर्ण मिला दो और साफ बर्तनमें रख दो।

इसको भोजनके पहले, भोजनके बीच और अन्तमें—छै-छै रत्ती खानेसे सब तरहके शूल और अम्लपित्त आराम हो जाते हैं।

सामुद्राद्य चूर्ण।

यह चूर्ण सब तरहके शूलोंको निस्सन्देह आराम करता है। हर गृहस्थ और वैद्यको तैयार रखना चाहिये। बनानेकी विधि परिणाम शूल-चिकित्साके पृष्ठ ५३४ में लिखी है।

शंखद्राव।

आक, थूहर, चीता, इमली, अपामार्ग और अमलताश—इन सातोंके खार आध-आध पाव ; फूला हुआ सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, कलमीशोरा, समन्दरफेन और कशीश—ये छहों साढ़े छै-छै छटाँक तथा सेंधानमक, संचरनोन, बिड़नोन, समन्दरनोन और कचियानोन—ये पाँचो नमक छै-छै छटाँक और दो-दो तोले—इन सब को कूटपीसकर काग़ज़ी नीबुओंके दो सेर रसमें मिला दो और आठ दिन तक भीगने दो। नवें दिन, मिट्टीके वारूणी यंत्रसे अर्क़ चुआ लो। फिर उसे मज़बूत काँचकी बोतलोंमें भरकर रख दो। यह बड़ा तेज़ तेज़ाब है। इसमें से ५से २५ बूंद तक अर्क़, छटाँक भर पानीमें मिलाकर, काँच या पत्थरके बर्तनमें—सवेरे-शाम या ज़रूरतके समय पीनेसे पेटका शूल, वायु-गोला, तिल्ली और बदहज़मी रोग नाश हो जाते हैं। अनेक बारका परीक्षित है।

सूचना—यह अर्क़ बहुत तेज है। हाथ पाँव या कपड़े पर गिरनेसे, गन्धकके तेज़ाबकी तरह, उन्हे जला देता है, अतः सावधानीसे निकालकर पीना चाहिये।

नोट—खार बनानेकी तरकीब इसी भागमें देखिये।

ज़रूरी सूचना ।

अगर इन उपायोंसे शूल रोग नाश न हो, तो गुदामें "नारायण तेल" या "प्रसारिणी तेल"की पिचकारी मारनी चाहिये । बस्ति-विधि या गुदामें पिचकारी लगाना ही आखिरी उपाय है और इन उपायोंसे लाभ भी होता है। नारायण तेल और प्रसारिणी तेल बनानेकी विधि इसी भागके पृष्ठ २६८ और २७३ में लिखी है ।

वातजशूल नाशक नुसखे ।

—०००—

नोट—स्नेह-विधि, स्वेद-विधि और वृंहण पदार्थोंसे वातज शूलकी चिकित्सा करनी चाहिये । वातज शूलवालेको स्वेदन करना, यानी सेक कर पसीने निकालना अत्यन्त हित है । कहा है :—शूलाभिपन्नस्य स्वेद एव सुखावह । शूल रोगीको पसीने देना ही सुखदायी है ।

(१) तिल चाँवलकी खिचड़ीके गोले अथवा मेंडक आदिके चिकने मांस द्वारा सेक करनेसे वातशूल नाश हो जाता है ।

(२) तिलोंको पीसकर और बड़ासा गोला बना कर पेट पर फेरनेसे शूल आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(३) मैनफलको काँजीमें चन्दनकी तरह पीस कर, नाभि पर लेप करनेसे शूल रोग आराम हो जाता है ।

(४) जीवन्तीकी जड़को पीस कर और तेलमें मिलाकर लेप करनेसे पसलीका शूल आराम हो जाता है ।

(५) बेलपत्र, अरण्डके पत्ते और तिल—इनको काँजीके साथ

पीसकर, गरम करके और पोटली बना कर सेकनेसे शूल नाश हो जाता है।

(६) धानकी भूसीके पानीके साथ "काले तिल" पीसकर और गरम करके पोटली बनाने और उससे सेक करनेसे पेटका शूल नाश हो जाता है।

(७) इसी भागके पृष्ठ ५००।५०१ में लिखे हुए मृत्तिका स्वेद या कार्पासास्थि-स्वेदसे भी वात शूल नाश हो जाता है।

(८) देवदारु, सफेद वच, कुडेकी छाल, सोया, हींग और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर, काँजीमें पीसकर और गरम करके पेटपर लेप करनेसे वायु-शूल नाश हो जाता है।

(९) बेलकी जड़, अरण्डीकी जड़, चीतेकी जड, सोंठ, हींग और सेंधानोन—इनको समान-समान लेकर, पानीके साथ एकत्र पीसकर, पेट पर शीतल ही लेप करनेसे वातशूल नाश हो जाता है।

(१०) लवा पक्षीका मांस और कुल्थीका काढ़ा बनाओ। उस काढ़ेमें थोडासा सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपर, संचर नोन और अनार दानेका रस मिलाकर वायुशूलवालेको पिलाओ। शीघ्र ही आराम होगा।

(११) खिरेटी, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़, छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी—इनके काढ़ेमें "हींग और सेंधानोन" डालकर पीनेसे वातज-शूल नष्ट हो जाता है।

(१२) तुम्बरु, हरड़, हींग, पोहकरमूल, संचर नोन, सेंधानोन और विड़नोन—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ६ माशे चूर्ण, गरम पानीके साथ खानेसे वायुशूल वायुगोला और अपतंत्रक वात नाश हो जाते है।

(१३) अजवायन, हींग, सेंधानोन, सज्जीखार, जवाखार, सञ्चर नोन और हरड़—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस

चूर्णमेंसे ६ माशे चूर्ण शराब या मांडके साथ पीनेसे वातशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) संचरनमक २ तोले, इमली ४ तोले, काला जीरा ८ तोले और काली मिर्च १६ तोले—इन सबको "बिजौरे नीबूके रसमें" खरल करके सुपारी-समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंसे वायुशूल नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) बिजौरेकी जड़ दो तोलेको पीस-कूटकर छान लो और घीमे मिलाकर पीओ। इससे भी वातशूल नष्ट हो जाता है।

(१६) "सुश्रुत"में लिखा है, वारुणी मदिरा पीनेसे वायु-शूल-रोगी सुखी होता है।

(१७) वायविडंग, सहँजना, कमेला, हरड़, निशोथ, अम्लवेत, अश्वकर्ण—शालका भेद और कालानोन,—इनको समान समान लेकर, पीस-छान कर, मदिराके साथ खानेसे वायुशूल नाश हो जाता है।

(१८) वरियारा, पुनर्नवा, अरण्डकी जड, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी और गोखरू—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ और "हींग तथा सेंधानोन" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेसे वात शूल नाश हो जाता है।

(१९) सोंठ और अरण्डकी जड—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। पीछे "हींग और संचर नमक" मिलाकर पीओ। इससे वायु शूल नाश हो जाता है।

(२०) हींग, थैकल, सोंठ, पीपर, संचरनोन, अजवायन, जवाखार, हरड़ और सेंधानोन—सबको समान-समान लेकर पीस कूटकर छानलो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण "ताडीके साथ" पीनेसे वातज शूल आराम हो जाता है।

(२१) हींग, थैकल, सोंठ, पीपर, कालीमिर्च, अजवायन, सेंधानोन, संचरनोन और कालानोन—समान-समान लेकर पीस-छान

लो। फिर बिजौरे नीबूके रसमें खरल करके रख लो। इसमेंसे दो या तीन माशे चूर्ण खानेसे वायु शूल शान्त हो जाता है।

(२२) लवेके मांस-रसमें हींग, सोंठ, मिर्च, पीपर, सेंधानोन, संचरनोन और अनारका रस मिला कर पीनेसे वायु-शूल तत्काल नाश हो जाता है।

नोट—लवेके मांसका शोरबा तैयार करके, उसमें हींग आदिका चूर्ण और अनारका रस मिला कर पीना चाहिये।

(२३) सौंठ, अरण्डकी जड़ और जौ,—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। काढ़ेमें "हींग और संचरनोन" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेसे वायु-शूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) हींग और पोहकरमूलका चूर्ण पीनेसे वात-शूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) सौंठ, अरण्डकी जड़ और इन्द्रजौके काढ़ेमें "हींग और कालानोन मिलाकर पीनेसे वायु-शूल नाश हो जाता है।

(२६) हिंगुपत्री, अतीस, त्रिकुटा, बच, कालानोन, हरड़, खिरेंटी, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, हींग और सैंधा नमक,—इनको समान-समान लेकर पीस-कूट कर छान लो। इस चूर्णमें से ३ या ४ माशे चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे वात-शूल तत्काल नष्ट हो जाता है।

"हिंगुपत्री"को हिन्दीमें भी "हिंगुपत्री" ही कहते हैं। इसके पत्तोंके गुण और नाम हींगके पत्तोंसे मिलते है। इसके गुण हींगके समान हैं। यह गरम, पाचक, वातनाशक और गोला, बवासीर, वस्तिरोग और विबन्ध आदि नाशक है।

(२७) करंजुआ, कालानोन, सोंठ और हींग, बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे वायु-शूल नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

पित्तज शूल नाशक नुसखे।

नोट—पित्तज शूलमें, पहले लिखी हुई रीतिसे परवलके पत्ते और ईखादिका रस मिलाकर वमन कराना तथा निशोथ और मिश्रीका जुलाब देना अथवा पीछे लिखे हुए नुसखोंसे दस्त कराकर पित्त निकाल देना हित है। देखो पृष्ठ ५०२—५०३

(१) काँसी या चाँदीके बर्तनमें शीतल पानी भर कर शूल-स्थान पर रखने और पानीमें स्नान करानेसे पित्त-शूल शान्त हो जाता है।

(२) त्रिफला और अमलतासका गूदा दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। फिर उसमें घी और चीनी मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसखेसे पित्त-शूल, दाह और रक्तपित्त,—ये रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) सवेरे ही शतावरके स्वरसमें "शहद" मिला कर पिलानेसे पित्त शूल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) आमलोंका स्वरस "चीनी" मिलाकर चाटनेसे पित्त-शूल आराम हो जाता है।

(५) आमलोंके चूर्णमें "शहद" मिलाकर चाटनेसे पित्तज शूल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) शतावर, मुलेठी, बरियारा, कुशाकी जड़ और गोखरू—कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनालो। इस काढ़ेको शीतल करके, "गुड़, चीनी और शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तशूल,—दाह और पीड़ा समेत आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७) बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, अरण्डकी जड़, कुश,

कास और तालमखाना—इनको कुल दो तोले लेकर, काढ़ा बनाने और पीनेसे भयानक पित्त शूल भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) आमले, विदारीकन्द, त्रायमाण या दाख—इनमेंसे किसी एकके रसमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्त-शूल तत्काल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(६) हरड़का पिसा-छना ३ माशे चूर्ण "गुड़ और घी" मिलाकर चाटनेसे पित्त शूल शान्त हो जाता है।

कफशूल नाशक नुसखे।

नोट—कफशूल रोगीको वमन या कय करोकर लंघन कराने चाहियें। देखो पृष्ट ५०३-५०४।

(१) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनालो। फिर उसमें सेंधानोन, संचरनोन, विड़नोन और हींग मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस काढ़ेसे कफशूल अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, सेंधानोन, संचरनोन, कालानोन और हींग—इनको पीस-कूटकर चूर्ण बनालो। इसमें से दो या तीन माशे चूर्ण गरम पानीके साथ फाँकनेसे कफशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—ये दोनों नुसखे एक ही हैं। इच्छा हो काढ़ा बनाकर पीओ, इच्छा हो चूर्ण बनाकर सेवन करो।

(३) वच, नागरमोथा, चीतेकी जड़की छाल, हरड और कुटकी—समान-समान लेकर पीस-छानलो। इसमें से ३ माशे चूर्ण "गोमूत्रके साथ" खानेसे कफशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) बेलकी जड, अरण्डकी जड, चीता, सोंठ, सेंधानोन और हींग—इनका चूर्ण खानेसे कफशूल शान्त हो जाता है ।

त्रिदोषशूलकी चिकित्सा ।

(१) शंखभस्म १ माशे, सेंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर का चूर्ण चार-चार रत्ती और हींग २ रत्ती—इन सबको मिलाकर, गरम पानीके साथ, खानेसे त्रिदोषशूल नाश हो जाता है । कहा है :—

> शङ्खचूर्णं सलवणं सहिङ्गुव्योषसंयुतम् ।
> उष्णोदकेन तत्पीतं शूलं हन्तित्रिदोषजम् ॥

नोट—यह नुसखा शूल नाश करनेमें परमोत्तम और <u>परीक्षित है</u> ।

(२) विदारीकन्दका रस दो तोले, पके अनारका रस दो तोले, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सेंधेनोनका चूर्ण तीन-तीन रत्ती और शहद १॥ माशे,—इन सबको मिलाकर पीनेसे तीनों दोषोंसे हुआ शूल आराम हो जाता है। <u>परीक्षित है</u> ।

नोट—कोई-कोई इस तरह भी सेवन कराते हैं—विदारीकन्दका रस १ तोले, पके अनारका रस १ तोले, सोंठ ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे, पीपर ३ माशे और शहद ४ माशे—इनको मिलाकर चटाते हैं । <u>इस तरह भी हमने परीक्षा की है</u> ।

(३) सोंठ, मिर्च, पीपर, अनारदाना और सेंधानोन—इनका चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे त्रिदोषज शूल नाश हो जाता है ।

अथवा एक अनारके रसमें, त्रिकुटा और सेंधेनोनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज शूल नाश हो जाता है । <u>परीक्षित है</u> ।

(४) त्रिफलेके चूर्ण और शुद्ध मंडूरको मिलाकर रख लो । इस चूर्णको "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे त्रिदोष शूल नाश हो जाता है । <u>परीक्षित है</u> ।

(५) त्रिकुटा १ तोले, निशोथ १ तोले, नागरमोथा १ तोले, त्रिफला १ तोले, चीता १ तोले, शुद्ध पारा ६ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे, अभ्रक भस्म २ तोले, गोमूत्र द्वारा शुद्ध किया मंडूर २ तोले और वायविडंग २ तोले तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धकको ५।६ घन्टे खरल करो। फिर उसी खरलमें त्रिकुटा आदि दवाओंको कूट-पीस-छान कर मिला दो। अन्तमें त्रिफलेका काढ़ा डाल-डाल कर खूब घोटो। घुट जाने पर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बनालो।

इन गोलियोंके सवेरे ही उठ कर खानेसे त्रिदोष शूल, अम्लपित्त, वमन, हृदय-शूल, पसलीका दर्द, कोखका शूल, पेड़ूका दर्द और गुदाका शूल नष्ट हो जाता है।

नोट—यह नुसखा हमारा परीक्षित नहीं, पर उत्तम होनेमें शक भी नहीं, क्योंकि वृन्दका है। पर उसमें १ कर्ष या १ तोलेकी मात्रा लिखी है। हमारी समझ में वह मात्रा आज-कलके कमजोरोंके लिए उचित नहीं है, इसीसे हमने एक-एक तोलेकी जगह एक-एक माशेकी गोलियाँ लिखी हैं। रोगी और रोगका बल देखकर, एक बारमें २।३ गोली तक दी जा सकती हैं।

आमशूल नाशक नुसखे।

नोट—आमशूलकी चिकित्सा "कफशूलकी चिकित्साकी तरह" करनी चाहिये। इस रोगमें आमको पचानेवाली और अग्निको बढ़ानेवाली दवाएँ देनी चाहिये।

(१) अजवायन, सेंधानोन, हरड़ और सोंठ,—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण ताज़ा पानीके साथ लेनेसे आम पचकर आमशूल नाश होता है। परीक्षित है।

(२) हरड़, बहेड़ा, आमला और राई—इनको समान-समान

लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। एक मात्रा चूर्ण "नावराबर घी और शहद"में मिलाकर खानेसे आम-शूल और सब तरहके शूल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) देवदारु, सफेद वच, कूट, सोया, हींग और सेंधानोन—इनको समान-समान लेकर "नीबूके रस"में पीस लो और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करो। इससे पेटका दर्द जड़से नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) बेलकी जड़, चीता, अरण्डीकी जड़ और सोंठ—समान-समान लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णको "हींग और सेंधेनोनके साथ खानेसे शूल तत्काल नाश हो जाता है।

(५) चीता, पीपरामूल, अरण्डकी जड़, सोंठ और धनिया—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बनालो। इस काढ़ेसे आमशूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६) अरण्डकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बिजौरेकी जड़, पाषाण भेद, गोखरूकी जड़ और बेलकी जड़—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा पकाओ। फिर इस काढ़ेमें "रेंडीका तेल, हींग, सेंधानोन और जवाखार" मिलाकर रोगीको पिलादो। इससे आमशूल और परिणामशूल दोनो ही फौरन नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) पेठेके छोटे-छोटे टुकड़े करके धूपमें सुखा लो। सूखे हुए टुकड़ोंको हाँडीमें भरकर, हाड़ीका मुँह बन्द कर दो और हाँड़ीको आगपर रखकर पकाओ; परन्तु आग ऐसी लगाओ, जिससे टुकड़े जल न जायँ, किन्तु सख्त अङ्गारोंके जैसे हो जायँ। आग शीतल होने पर उनको निकालकर पीस लो। इसका नाम "कुष्माण्ड क्षार" है।

बारह रत्ती इस क्षारमें, बारह ही रत्ती सोंठका चूर्ण मिलाकर, रोगीको पानीके साथ फँका दो। इस क्षारसे असाध्य शूल भी शान्त हो जाता है। शूलसे निहायत घबराये हुए रोगियोंके लिए यह उपाय अवश्य करना चाहिये।

(८) अरण्डकी जड़, सोंठ, कंटकारी, कटेरी, बिजौरा नीबूकी जड़, पाषाणभेद और त्रिकुटेकी जड़ें—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बना लो। फिर उसमें "जवाखार, हींग, सेंधानोन और रेंडीका तेल" मिलाकर पिला दो। इस काढ़ेसे आमशूल, कमरका शूल, लिंग-शूल, हृदय-शूल और स्तनशूल आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(९) हींग, धनिया, त्रिकुटा, अजवायन, चीता और हरड़—इनके चूर्णमें "जवाखार और सेंधानोन" मिलाकर निवाये पानीके साथ खानेसे विष्ठा-शूल, मूत्र-शूल और वायु-शूल नष्ट हो जाते हैं। यह चूर्ण पाचक और अग्निवर्द्धक है।

(१०) चीता, गठिवन, अरण्डकी जड़, सोंठ और धनिया—इनके काढ़ेमें "हींग, विड्नोन और सेंधानोन" मिलाकर पीनेसे शूल, आनाह और विवन्धरोग नाश हो जाते हैं।

परिणाम शूल नाशक नुसखे।

नोट—परिणाम शूल भोजन पचनेके समय होता है। इसमें पहले लंघन, फिर वमन और विरेचन कराना चाहिये। इन सबकी विधि पृष्ठ ५०५—५०६ मे देखिये।

(१) पीपर, हरड़ और शुद्ध मंडूर—इनको समान-समान लेकर और महीन पीस कर, "शहद और चीनी"में मिलाकर चाटनेसे दारुण परिणाम शूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। <u>परीक्षित है</u>।

नोट—कोई-कोई इसे "घी और शहद"में मिलाकर भी चटाते हैं।

(२) सोंठ, पीपर और गुड़को समान-समान लेकर, सिल पर पीसकर, लुगदी बनालो और दूधमें पकाकर सात या इक्कीस दिन तक खाओ। इससे कष्टसाध्य परिणाम शूल भी नाश हो जाता है। <u>परीक्षित है</u>।

अरण्डकी जड़, चीता, शखभस्म, पुननवा और गोखरू—इनको समान-समान लेकर आगमें भस्म करलो। इस भस्मको गरम पानीके साथ खानेसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता है।

(४) शंखकी भस्म गरम जलके साथ खानेसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता है। परीक्षित है। कहा है :—

शम्बूकभस्म पीत वा जलेनोष्णेन तत्क्षणात् ।
पक्तिजं विनिहन्त्येतच्छूल विष्णुरिवाऽसुरान् ॥

अकेली जलसोपी या शखकी भस्म गरम जलके साथ पीनेसे परिणाम शूल इस तरह नाश हो जाता है; जिस तरह विष्णुसे राक्षसोंका नाश हुआ था।

(५) अरण्डोकी जड, वेलकी जड़, बडी कटेरी, छोटी कटेरी, विजौरेकी जड़, पाषाणभेद और गोखरूकी जड—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा पकाओ। काढेमें "हींग, जवाखार, सेंधानोन और अरण्डीका तेल" मिलाकर पिला दो। इससे परिणाम शूल और अन्य स्थानोंका दर्द भी शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(७) जो मनुष्य केवल सत्तू को मटरके यूपके साथ सात रात तक पीता है, वह बहुत पुराने परिणाम शूलको भी जीत लेता है—नया तो कोई चीज़ ही नहीं है।

(७) खिरेंटी और मण्डूर भस्मको समान-समान लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णको "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटने-से भयानक परिणाम शूल भी आराम हो जाता है।

(८) सोंठ, हरड और शुद्ध मण्डूरको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "ना बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे त्रिदोषसे पैदा हुआ परिणाम शूल भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

विडङ्गादि मोदक।

वायविडङ्ग, चाँवल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, निशोथ, दन्ती और

और चीतेकी छाल—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "गुड़"में मिलाकर लड्डू बनालो। इन लड्डूओंको गरम पानीके साथ खानेसे तीनों दोषोंसे पैदा हुआ परिणाम शूल भी नष्ट हो जाता है।

शुंठ्यादि कल्क।

सोंठ, तिल और गुड़—इन तीनोंको महीन पीस कर, दूधके साथ सिल पर पीसो। इसके चाटनेसे उग्र परिणाम शूल, तीन दिनमें, नष्ट हो जाता है।

पथ्यादि लोह।

लोह भस्म, हरड़, पीपर और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। इसको "ना-बराबर घी और शहद"के साथ चाटनेसे परिणाम शूल अवश्य नाश हो जाता है।

नारिकेल क्षार।

पानी भरे हुए हरे नारियलके पेटमें छेद करके, उसमें अच्छी तरहसे "सेंधानमक" भर दो। पीछे छेद बन्द करके कपड़मिट्टी करो और धूपमें सुखालो। सूखने पर, उसे आरने उपलोंकी आगमें रखकर पकाओ और नमककी राख करलो।

कपड़मिट्टी उखाड़ कर, नारियलके भीतरसे नमक या गूदेको निकाल लो। फिर उसमें बराबरका "पीपलोंका चूर्ण" मिलाकर महीन कर लो और रख दो। इस क्षारकी मात्रा ६ रत्तीसे एक माशे तक है। एक मात्रा खाकर, ऊपरसे ताज़ा जल पीनेसे वातज, पित्तज, कफज, और त्रिदोषज परिणाम शूल आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

शम्बुकादि वटिका।

घोंघेकी भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपर, कालानोन, सेंधानोन, साँभर नोन, खारीनोन और जवाखार—इन सबको बराबर-बराबर लेकर,

"कदम्ब अथवा सिरसके रस"में घोटकर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखालो। सवेरे ही या भोजनके समय, एक-एक गोली खाने और गरम जल पीनेसे परिणाम शूल फौरन ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—घोंघेकी भस्म शंखकी भस्मको कहते हैं। घोंघ छोटे छोटे लेने चाहियें।

शूल गजकेसरी रस।

जवाखार, कौड़ीकी भस्म, शुद्ध बच्छनाभ विष, सेंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसलो। फिर इस चूर्णको पानोंके रसके साथ ६ घन्टे तक खरल करके, रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बनालो। एक-एक गोली खानेसे परिणाम शूल, वातविकार और आमशूल नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

शूलगजकेसरी वटी।

१ वच, सोंठ, जीरा, कालीमिर्च, चीता, हींग, शुद्ध विष और दालचीनी—इनको समान-समान लेकर पीसलो। फिर खरलमें डाल कर, ऊपरसे भाँगरेका रस दे-देकर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे सब तरहके शूल और वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नारिकेलामृत।

पके हुए नारियलकी गरीको सिल पर पीस-पीस कर मोटे कपडेमें होकर गूदा निकालो। यह गूदा १ सेर होना चाहिये।

गायका घी १ सेर, कच्चे नारियलका पानी ८ सेर, गायका दूध ८ सेर, आमलोंका रस १ सेर, चीनी तीन सेर आधपाव और सोंठका पिसा-छना चूर्ण आध सेर—ये सब तैयार रखो।

सोंठ, कालीमिर्च,पीपर, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची और नागकेशर एक-एक तोले ; आमले, सफेद जीरा, कालाजीरा, धनिया, वंसलोचन और नागरमोथा डेढ़-डेढ तोले लेकर पीस-कूट-छान लो।

बनानेकी तरकीब—नारियलके गूदेको घीमें भूनलो। फिर इसमें नारियलका पानी, दूध, आमलोंका रस, चीनी और सोंठका चूर्ण मिलाकर सबको एक साथ पकाओ। जब पककर गाढ़ा हो जाय, उसमें सोंठ, कालीमिर्च आदिका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और फौरन उतार लो। शीतल होने पर, इसमें आधपाव "शहद" मिला दो और किसी साफ बर्तनमें रख दो। यह परिणाम शूलकी सबसे अच्छी दवा है। मात्रा बलाबल अनुसार।

शूलान्तक वटी।

सोंठका चूर्ण ५ तोले, कालानोन २॥ तोले, सुहागेकी खील १। तोले और भुनी हुई मुलतानी हींग ८ माशे,—इन सबको तैयार कर लो।

पहले मुलतानी हींगको गायके घीमें भूँज लो। फिर उस हींगको सहँजनेकी जड़के रसके साथ खरल करो। इसके बाद, उसमें आग पर फुलाया हुआ सुहागा डालकर खरल करो। इसके बाद सोंठका पिसा-छना चूर्ण डालकर खरल करो और शेषमें कालानोन डालकर खरल करो। जब मसाला घुटते-घुटते गोली बनाने योग्य हो जाय, कुल मसालेकी चौवन गोलियाँ बनाकर छायामें सुखालो।

सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम जलके साथ नित्य २७ दिन तक खानेसे शूल रोग शान्त हो जाता है। यह गोलियाँ शूल रोगको फौरन आराम करती हैं। नये पुराने दोनों तरहके शूल रोगों पर ये चलती हैं। हर गृहस्थको ऐसी रामबाण और सहजमें बनने वाली दवा पास रखनी चाहिये। स्वनामधन्य स्वर्गीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशयने इन गोलियोंसे अनेक शूल रोगी आराम किये थे। श्रीयुत सतीशचन्द्र सेन कविरञ्जन राजवैद्य महाशय—लखनौने भी अनेक बार परीक्षा करके इन्हें "वैद्य" मुरादाबादमें लिखा है।

धात्री लौह।

आमलोंका पिसा-छना चूर्ण ३२ तोले, लोहभस्म १६ तोले और

मुलेठीका पिसा-छना चर्ण ८ तोले—इन तीनों चूर्णोंको मिलाकर, "आमलोंके स्वरस"की सात भावनायें दो ; यानी सात दिन तक लगातार आमलोंका रस दे देकर खरल करो और फिर तेज़ घाममें सुखालो। सूख जाने पर, फिर पीस लो और बोतलमें भरकर रख दो।

इसकी मात्रा ३ माशे की है। प्रत्येक मात्रा "ना-बराबर घी और शहद"में चाटी जाती है। चाटनेका समय—भोजनका आदि, मध्य और अन्त है। इस लौहसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता और उसके क्लेश उठाने नहीं पड़ते। भोजनके आदिमें चाटनेसे वातपित्त नष्ट होते, बीचमें चाटनेसे विष्टब्धता और जलन नहीं होती। परीक्षित है।

नोट—वृन्दमें लिखा है—"अमृताकाथेनैतद्द्रव्य भाव्यन्तु मनाग्म्।" अनुवादकने "अमृता"का अर्थ "गिलोय" किया है। अमृता "गिलोय"को भी कहते हैं और "आमलेको" भी। चूंकि इस नुसख़ेका नाम ही "धात्री लौह" है। इस लिए अमृताका अर्थ "आमला" ही करना चाहिये। क्योंकि "धात्री"का अर्थ भी "आमला" ही है।

शतावरी मण्डूर ।

शुद्ध मंडूर ३२ तोले, शतावरका स्वरस या रस ३२ तोले, दही ३२ तोले, दूध ३२ तोले और घी १६ तोले—इन सबको मिलाकर, एक बासनमें औटाओ। जबतक गाढ़ा या गोलेके माफ़िक़ न हो जाय औटाते रहो। जब गोलासा बंधने लगे उतार लो और किसी बासन मे रख दो।

भोजनके पहले, भोजनके बीचमें और भोजनके अन्तमें—इसमेंसे छै-छै रत्ती खानेसे वातज और पित्तज परिणाम शूल नष्ट हो जाता है। कोई-कोई इस मंडूरसे सभी तरहके शूलोंका नष्ट हो जाना लिखते हैं। इसमें शक नहीं, कि यह मंडूर शूल रोग पर प्रसिद्ध है। परीक्षित है।

तारा मंडूर गुड़ ।

वायबिडंग १ तोले, चीता १ तोले, चव्य १ तोले, त्रिफला ३ तोले, त्रिकुटा ३ तोले, शुद्ध मंडूर ६ तोले, गोमूत्र ३६ तोले और गुड़

१८ तोले—इन सबको पीस-कूट और मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब गोली बंधने लगे, उतारकर चिकने बासनमें रख दो।

इस मंडूरकी मात्रा १ तोलेकी है। भोजनके पहले, भोजनके बीचमें और अन्तमें खानेसे दारुण परिणाम शूल, कामला, पाण्डुरोग, सूजन, मन्दाग्नि, बवासीर, ग्रहणी रोग, कृमिरोग और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं। इनके सिवा स्थूलता—मोटापन और अम्लपित्त भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अपथ्य—इस मंडूरको सेवन करते समय रोगीको सूखे साग, विदाही—दाह करनेवाले, खट्टे और चरपरे पदार्थ त्याग देने चाहियें।

नोट—इसके बनानेकी क्रियामें मत-भेद है। किसीने लिखा है—गोमूत्रं द्विगुणं दत्वा मूत्राद्द्विगुणितं गुडम्। यानी वायविडंग आदि नौ दवाएँ नौ तोले, अकेला मंडूर नौ तोले, गोमूत्र सबसे दूना—१८ तोले, और गोमूत्रसे दूना—३६ तोले गुड़ लो। किसीने लिखा है—गोमूत्र द्विगुणं दत्वा मूत्रार्द्धिक गुड़ तथा। सबका दूना—३६ तोले गोमूत्र और मूत्रसे आधा—१८ तोले गुड़ लो। एक महाशयने नौ तोले मंडूर, मंडूरका दूना १८ तोले मूत्र और मूत्रका आधा ९ तोले गुड़ लिखा है।

त्रिफला मंडूर।

त्रिफलेके काढ़े या स्वरसमें पकाया हुआ मंडूर गुड़के साथ खाने से परिणाम शूल और त्रिदोषज शूल नष्ट हो जाते हैं।

भीमवटक मंडूर।

जवाखार, पीपल, सोंठ, चव्य, पीपरामूल और चीता—प्रत्येक दवा चार-चार तोले लेकर पीस-कूट लो। फिर शुद्ध मंडूर ६४ तोले, ऊपरका चूर्ण २४ तोले और गोमूत्र ७०४ तोले—सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब गोलीसी बंधने लगे, उतार कर एक-एक तोलेकी गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंके बलाबल अनुसार भोजनके पहले, भोजनके बीच और अन्तमें खानेसे अम्लपित्त, परिणाम शूल

और सब तरहके शूल सात दिनमें ही नष्ट हो जाते हैं। यह "भीमवटक" सब योगों—नुसख़ोंका राजा है। इसपर घी, दूध और घी-दूध-मिला जंगली जीवोंका मांसरस या शोरबा खाना चाहिये।

सामुद्राद्य चूर्ण।

समन्दर नोन, सेंधानोन, जवाखार, कालानोन, सांभरनोन, विरिया संचर नोन, दन्ती—जमालगोटेकी जड़, शुद्ध मंडूर-भस्म, निशोथ और जमीकन्द,—इन सबको समान-समान लेकर पीस-कूट छान लो। फिर इस चूर्णको चूर्णसे चौगुने दही, चौगुने गोमूत्र और चौगुने गायके दूधके साथ मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते सूख जाय, उतार कर फिर पीस-छान लो और किसी बासनमें रख दो।

इस चूर्णकी मात्रा डेढ़से तीन माशे तक की है। इसे खाकर ऊपरसे गरम जल पीना चाहिये। मात्रा—बलाबल अनुसार कम-जियादा भी हो सकती है। इस चूर्णके पच जानेपर, मांसके पदार्थ घीमें पकाकर खाने चाहियें। इसके सेवन करनेसे नाभिशूल, यकृत या कलेजेका दर्द, गुल्मशूल, प्लीहाशूल, विद्रधि, अष्ठीला, कफवात का शूल, अन्नद्रवशूल, अजीर्ण, ग्रहणी और खासकर परिणामशूल नाश हो जाते हैं। कहा है—शूलानामपि सर्वेषामौषधं नास्त्यतः परम्। अर्थात् शूल रोगकी इससे उत्तम दवा और नहीं है। जो मांसाहारी नहीं हैं, उनको मांस खानेकी कैद नहीं है। परीक्षित है।

पिप्पली घृत।

आध पाव छोटी पीपरोंको पानीके साथ सिलपर पीस कर लुगदी बना लो।

आध सेर पीपरोंको कुचल कर आठ सेर पानीमें डालकर औटाओ, जब दो सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

अब गायका घी आध सेर, ऊपरकी लुगदी और काढ़ेको मिला-कर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर घीको छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। इस घीमें घीसे आधा "शहद" मिलाकर खाओ और ऊपरसे दूध पीओ। इस घीसे अत्यन्त बढ़ा हुआ घोर परिणाम शूल भी आराम हो जाता है।

अपराजिता कल्क।

अपराजिताकी जड़को पानीके साथ सिल पर पीस लो। इसको घी और चीनीमें मिलाकर खाओ और ऊपरसे दूध पीओ। इस कल्कसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता है।

भक्तवारि गुटिका।

निशोथ २ तोले, चीता २ तोले, नागरमोथा २ तोले, हरड़ २ तोले, बहेडा २ तोले, आमले २ तोले, सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, पारेकी भस्म—रससिन्दूर १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले शुद्ध लोह भस्म ६ तोले और वंगभस्म ४ तोले—तैयार करो। पहले निशोथसे पीपर तककी नौ दवाओंको कूट-पीस कर कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्ण और पारेकी भस्म आदिको मिलाकर खरलमें डालो और "त्रिफलेका काढ़ा" डाल-डालकर खरल करो और रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो।

हर दिन बलाबल-अनुसार, गोली खाकर ऊपरसे "भातका मांड़" पीओ। इन भक्तवारि वटिकाओंसे त्रिदोष-जनित परिणामशूल, अम्लपित्त, वमन, ज्वर, हृदयशूल, पसलीका दर्द, पेडूका दर्द, कोखका दर्द, गुदाका दर्द, खाँसी, श्वास, कोढ़, संग्रहणी, यकृत, प्लीहा, उदररोग और राजयक्ष्मा आदि नाश होते हैं।

नोट—अगर "रससिन्दूर" न हो, तो शुद्ध पारे और शुद्ध गन्धककी निश्चन्द्र कज्जली डालनेसे भी काम चल सकता है। पारेकी भस्म जहाँ लिखी हो, वहाँ "रससिन्दूर" लेना चाहिये।

नारिकेल लवण।

नारियलका पानी और सधानोन मिलाकर आगपर पकाओ। जब पानी जलकर नमक रह जाय, रख लो। इस नमकसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज परिणाम शूल नाश हो जाता है।

नोट—नारिकेल क्षार और नारिकेल लवणकी क्रियामें थोड़ा ही फर्क है। यह सहज है, वह कुछ कठिन है, लेकिन वह ज़ियादा मशहूर है। जिनसे वह न बने, इसे ही बनाले। यह भी काम देगा।

आमलक खण्ड।

पेठेको छीलकर, उसके भीतरके बीजोंके घर और बीज निकाल दो। फिर उसे पानीमें पकालो। पक जानेपर, पेठेको निकालकर मोटे कपड़ेमें निचोड़ लो। यह निचोड़ा हुआ पेठा अढ़ाई सेर अलग रख दो। इस पेठेको ६४ तोले घीमें डालकर कड़ाहीमें भून लो।

अब आमलोंका रस या स्वरस ३२ तोले, पेठेका रस या स्वरस ६४ तोले और सफेद बूरा ३२ तोले भी तैयार करलो और एकमें मिलाकर छान लो।

पीपर, जीरा, सोंठ और काली मिर्च हरेक ८ तोले, तालीस पत्र ४ तोले, धनिया ४ तोले, दालचीनी १ तोले, नागकेशर १ तोले, इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले और नागरमोथा १ तोले—इन सबको कूट-पीसकर छान लो।

बनानेकी विधि—आमले आदिके छने हुए रसमें घीमें भुंजा पेठा मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते इतना गाढ़ा हो जाय कि, कलछीके लगने लगे, उसमें पीपर आदिका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और फौरन उतार लो। जब यह शीतल होजाय, इसमें ३२ तोले "शहद" मिला दो और साफ चिकने बर्तनमें रख दो।

यह "आमलक खण्ड" त्रिदोषज परिणाम शूल, वमन, मूर्च्छा, खाँसी, श्वास, अरुचि, हृदयशूल, रक्तपित्त और पीठके दर्दको नष्ट करता है। यह उत्तम रसायन है। परीक्षित है।

अन्नद्रव शूल नाशक नुसखे।

नोट—भोजनके पचने पर अथवा भोजन पचते समय अथवा भोजनकी अजीर्णावस्थामे जो शूल उठता है, उसे "अन्नद्रवशूल" कहते हैं। जबतक रोगी चरपरे, खट्टे और कड़वे पित्तोंको कयके द्वारा नहीं गिराता, तबतक यह दर्द शान्त नहीं होता। केवल वमन या कय करानेसे ही यह शूल शान्त हो जाता है। जबतक पित्त गिरता रहे, तबतक वमन करानी चाहिये और जबतक कफ गिरता रहे, दस्त कराने चाहिये। आमाशय और पक्वाशयके साफ हो जाने पर, अन्नद्रव शूल अपने-आप शान्त हो जाता है।

(१) उडदकी दालकी पिट्ठीकी बड़ी बनाकर तेलमें पकाओ। फिर उनको "शहद"में डालकर "घी"के साथ खाओ। इस उपायसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(२) आमलोंके चूर्णमें शुद्ध मंडूर मिलाकर "शहद"के साथ चाटनेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(३) मुलेठीके चूर्णमें शुद्ध लोहचूर्ण या मण्डूर मिलाकर "शहद"के साथ चाटनेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(४) दूधमें सामां, कोदों और काँगनीकी खीर बनाकर और बूरा डालकर खानेसे अन्नद्रव शूल मिट जाता है।

(५) भुने हुए चनोंके बड़े बनाकर खानेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(६) चनोंका सत्तू परवलके यूषके साथ खानेसे अन्नद्रव शूल नाश हो जाता है।

(७) निराहार रहनेकी दशामें, केवल मटर खाने और प्यास लगनेपर दूध पीनेसे अन्नद्रव शूल नाश हो जाता है।

गुड मंडूर।

पुराना गुड़ ४ तोले, आमलोंका चूर्ण ४ तोले और शुद्ध मंडूर भस्म १२ तोले—इनको "शहद और घी"म मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले-भर दवा भोजनके पहले, भोजनके बीच और अन्तमें खानेसे महादारुण अन्नद्रव शूल, एक सालका परिणाम शूल और जरत्पित्त—ये आराम हो जाते हैं।

कलाय चूर्ण गूटिका।

मटरका चूर्ण २ तोले और शुद्ध मंडूर भस्म १ तोले—इनको खरलमें डालकर, "ढाकके रस"के साथ खरल करो और तोले-तोले-भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको खाकर, ऊपरसे "माँड़" पीनेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

हृदय-शूल नाशक नुसखे।

(१) हिरनके सींगको लोहेकी रेतीसे रितवाकर चूरा करलो। फिर उसे एक मिट्टीके कुल्हड़ेमें भरकर, उसपर ढक्कन रख दो और सारे कुल्हड़े पर चार पाँच तह कपड़मिट्टी करके धूपमे सुखालो। फिर उसे दस सेर जंगली कंड़ोंमें रखकर फूँक दो अथवा हलवाईकी भट्टीमें ३ घन्टेतक डाल रखो। आगसे निकालकर, कुल्हड़ेमेंसे भस्मको निकाल लो और शीशीमें रख दो। यह बडी उत्तम दवा है। इसमेंसे एक माशे भस्म "गायके ३ माशे गरम घी"मे मिलाकर खानेसे हृदयका शूल फौरन आराम होता है। अनेक बार इससे सब तरहके शूल भी आराम होते देखे हैं, पर हृदय और चूतड़के दर्दकी तो यह ख़ास दवा है। परीक्षित है।

(२) पोहकरमूलका चूर्ण "शहद"में मिलाकर खानेसे हृदयका शूल,

श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और हिचकी आदि रोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) दशमूलके काढ़ेमे जवाखार और सेंधानोन मिलाकर सेवन करनेसे हृदय-रोग, वायुगोला, शूल, श्वास और खाँसी आदि रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

(४) अर्जुन वृक्षकी छालका स्वरस चार सेर और गायका घी एक सेर मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घीके पीनेसे हृदयशूल और हृदयके सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—ये चारों नुसखे अच्छे हैं। इनमें भी हिरनके सींग वाला पहला नुसखा सर्व्वोत्तम है। वह कभी फेल नहीं होता। और नुसखे "हृदय रोग"में लिखेंगे।

बस्तिशूल, कुक्षिशूल, विट्शूलादि नाशक नुसखे

(१) हींग, कालानोन, हरड, विरिया सँचरनोन, सेंधानोन, तुम्बरु और पोहकरमूल समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। इस चूर्णको "दशमूलके काढ़े या जौके काढ़े"के साथ खानेसे पसलीका दर्द, हृदयका दर्द, कमरका दर्द, पीठका दर्द, तन्द्रा, अपतानक वायु-रोग और गलेका रोग आराम हो जाता है।

(२) कालानोन, हींग और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "जौके काढे"के साथ खानेसे हृदयशूल, पसलीका शूल, पीठका शूल, पेटका रोग, हैज़ा और मल रुकनेका रोग ये सब आराम होते हैं।

(३) बिजौरे नीबूका रस, घी, हींग और सेंधानोन—इनको एकत्र मिलाकर और गरम करके, सुहाता-सुहाता पीनेसे रुका हुआ

मल नीचे जाता और कोखका दर्द, पसलीका दर्द और हृदयका दर्द आराम हो जाता है।

(४) हींग, कालानोन, पाढ, जवाखार, सज्जीखार, सैंधानोन, कालानोन और विरिया संचर नोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "लहसनके रस"में सान कर वड़े बना लो। इन बड़ोंके सेवन करनेसे हृदयशूल, पसलीका शूल, कूख का शूल और दारुण मन्यास्तम्भ—गर्दनका रह जाना—ये रोग आराम हो जाते हैं।

(५) पाँचों नमक, समन्दर-फेन, सुहागा, सज्जी, शंख, सीप और कौड़ी—इनको एकत्र पीसकर, १ दिन भर "आकके दूध"में खरल करो। फिर लुगदी बनाकर, ऊपरसे आकके पत्ते लपेट कर डोरा बाँध दो और ऊपरसे कपड़मिट्टी करके सुखा लो। फिर, उसे आरने उपलोंमें रखकर फूँक दो। लाल होनेपर आगसे निकाल लो। फिर मिट्टी वगैरः हटा-कर दवाको निकाल लो और पीस लो। इसमेंसे एक-एक रत्ती दवा दिनमें २।३ वार खानेसे पसलीका दर्द, सर्दी, कफ, खाँसी और श्वास राग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—आकका दूध न मिले, तो आकके पत्तोंका स्वरस काममें लाओ। यह नुसख़ा पुरानी खाँसी और श्वास पर भी रामबाण है।

दशवाँ अध्याय

उदावर्त्तके सामान्य लक्षण ।

जिस रोगमें 'वायु'का आवर्त्त या चक्कर ऊपरकी ओर जाता है, उसे वैद्य "उदावर्त्त" कहते हैं ।

नोट—यहाँ वायु शब्दसे अधोवायु—गुदाकी हवा समझनी चाहिये । तन्दुरुस्ती की हालतमें, अधोवायु सदा नीचेकी तरफ जाती है । उसकी चालके नीचेकी तरफ रहनेसे ही मल-मूत्रादि ठीक निकलते हैं, क्योंकि इन सबको निकालनेवाली अधोवायु ही है । जब यह अधोवायु—नीचेकी हवा नीचेकी तरफ न जाकर, ऊपरकी ओर चढ़ती है, मल-मूत्रादिको भी अपने साथ ऊपरकी ओर ही ले जाती है, उस समय मनुष्यको बड़ी तकलीफ होती है । जिस रोगमें हवा ऊपरकी तरफ चढ़ती है, उसे "उदावर्त्त" कहते हैं । डल्लनाचार्यने अपनी "सुश्रुत"की टीकामें कहा है :—"उर्द्ध वातविण्मुत्रादीनां आवर्त्तो भ्रमणं यस्मिन स उदावर्त्त. । वातोत्र अधः प्राप्तो अपानवायु. ।"

उदावर्त्तके निदान-कारण ।

अधोवायु—गुदाकी हवा, पाखाना, पेशाब, जँभाई, आँसू, छींक,

डकार, वमन—कय, वीर्य, भूख, प्यास, श्वास और नींद—इन तेरह वेगोंके रोकनेसे "उदावर्त्त" रोग होता है।

खुलासा—जो अज्ञानी, शर्म या लाजके मारे, गुदासे निकलती हुई अधोवायुको रोक लेता है, किसी काममें फँसे रहनेके कारण, पाखानेकी हाजत होने पर, पाखाने नहीं जाता, पेशाबकी हाजत होने पर पेशाब नहीं करता, इन्हें रोक कर बैठा रहता या काममें लगा रहता है, जो आती हुई जँभाइयोंको रोक लेता है, आँखोंसे निकलनेवाले आँसुओंको रोक लेता है, छींक आने पर छींकता नहीं—उसे नाकमें ही रोक लेता है, डकार आनेपर डकारको रोक लेता है, जी मिचलाने या कय आने पर कयको भीतर ही रोक लेता है—बाहर नहीं आने देता, स्त्री-प्रसङ्गके समय, अधिक आनन्दके लिए, वीर्यको रोक लेता है, उसे अपने बलसे निकलने नहीं देता, भूखके समय भूखको और प्यास लगने पर प्यासको रोक लेता है, थक जाने पर लम्बे-लम्बे श्वासोंको आने नहीं देता और नींद आने पर नींदको रोकता है यानी सोता नहीं—उसे इन वेगोंके रोकनेसे "उदावर्त्त" रोग हो जाता है। इन तेरह वेगोंके रोकनेसे तेरह तरहके "उदावर्त्त" रोग होते हैं।

यह भी याद रखो, कि वेग दो तरहके होते हैं —(१) शारीरिक, और (२) मानसिक। ऊपर लिखे हुए तेरह वेग शारीरिक वेग हैं अर्थात् इनका सम्बन्ध शरीरसे है। काम-क्रोध, मद, मोह, लोभ, ईर्षा-द्वेषादि मानसिक वेग हैं। इनका सम्बन्ध मनसे है। मल मूत्रादि शारीरिक वेगोंके रोकनेसे रोग होते हैं, पर काम-क्रोधादि मानसिक वेगोंके रोकनेसे शरीर स्वस्थ या तन्दुरुस्त रहता है। इसलिये चतुर व्यक्तियोंको मानसिक वेग रोकनेकी सदा कोशिश करनी चाहिये, परन्तु शारीरिक वेगोंको भूल कर भी न रोकना चाहिये। धन्वन्तरि भगवान् कहते हैं —

> अधश्चोर्द्ध्वं च भावानां प्रवृत्तानां स्वभावत।
> न वेगान्धारयेत्प्राज्ञो वातादीनां जिजीविषु॥

जीवनकी इच्छा रखनेवाले बुद्धिमानोंको चाहिये, कि वे स्वभावसे ही नीचेकी ओर और ऊपरकी ओर प्रवृत्त होनेवाले वातादिके वेगोंको न रोकें। क्योंकि अधोवायु और मल मूत्रादि नीचेकी तरफ जानेवाले और छीक, डकार आदि ऊपरके वेगोंको रोकनेसे "उदावर्त्त रोग" हो जाता है; जो बहुधा आप ही अथवा दूसरा रोग पैदा करके मनुष्यकी जिन्दगीका ख़ातमा कर देता है।

उदावर्त्तकी संख्या ।

अधोवायु आदि तेरह वेगोंके रोकनेसे तेरह प्रकारके उदावर्त्त रोग होते हैं। इन तेरहके अलावः, एक और चौदहवाँ उदावर्त्त "अपथ्य भोजन"से भी होता है।

अपानवायुके उदावर्त्तके लक्षण ।

"अधोवायु"के रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती है :—

(१) गुदाकी हवा रुक जाती है।

(२) पाखाना नहीं होता—टट्टी बन्द हो जाती है।

(३) पेशाब नहीं होता यानो बन्द हो जाता है।

(४) पेट फूल जाता है।

(५) अनायास ही थकानसी होती है।

(६) सारे शरीरमें दर्द तथा वायुकी और-और पीड़ायें होती हैं।

नोट—"सुश्रुत"में—पेटका अफरना, शूल चलना, हृदयका रुकना, सिरमें दर्द, श्वास, हिचकी, खाँसी जुकाम, गला रुकना, कफ और पित्तका घोर उद्रेक, अपानवायु द्वारा मलका रुकना अथवा मुँहकी राहसे पाखाना निकलना—ये लक्षण अपान वायुके उदार्वत्तके लिखे है।

मल रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"मल या पाखानेकी हाजत रोकने"से नीचे लिखी हुई शिकायत होती हैं :—

(१) पेटमें गुड़-गुड़ शब्द होता है।

(२) पकाशयमें शूल या दर्द होता है।

(३) गुदामें कतरनेके जैसा दर्द होता है।

(४) मल नहीं उतरता यानी टट्टी नहीं होती ।

(५) खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं ।

(६) कभी-कभी मुँहकी राहसे मल निकलता है ।

मूत्र रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"मूत्रका वेग या पेशाबकी हाजत" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायत होती हैं :—

(१) मूत्राशय-पेशाबकी थैली और लिङ्गमें दर्द होता है ।

(२) पेशाब तकलीफके साथ होता है ।

(३) सिरमें दर्द होता है ।

(४) पीड़ाके मारे शरीर सीधा नहीं होता—शरीर बेक़ाबू हो जाता है ।

(५) पेड़ूमें अफारा होता है अथवा दोनों वंक्षणों या पट्ठोंमें खिंचावकासा दर्द होता है ।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है—तकलीफके साथ थोड़ा-थोड़ा पेशाब आता है ; लिङ्ग, गुदा, नलों, फोतों और नाभिमें तेज दर्द होता है , सिरमें तीव्र वेदना होती है और पेड़ू फूल जाता है । इन अङ्गोंमें शूलोंसे छेदनेकीसी पीड़ा होती है ।

जँभाई रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"आती हुई जँभाई" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—

(१) मन्यास्तम्भ, गलस्तम्भ और शिरोरोग होते हैं ।

(२) आँख, नाक, कान और मुँहमें तीव्र पीड़ा होती है ।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, जँभाई रोकनेसे मन्यास्तम्भ और गलस्तम्भ होता है ; यानी गर्दनके पीछेकी 'मन्या' नामकी नस रह जाती है, उससे गर्दन नहीं घूमती, गला रह जाता है, बादीसे सिरमें घोर दर्द होता है तथा आँख, नाक, कान और मुखमें रोग हो जाते हैं । मतलब यह है, कि 'वात रोग" हो जाते हैं ।

आँसू रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"आनन्द या शोकसे आते हुए आँसू" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—

(१) सिर भारी हो जाता है ।
(२) नेत्रोंमें पीड़ा होती है ।
(३) प्रबल पीनस रोग हो जाता है ।

छींक रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"आती हुई छींक" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें हो जाती हैं :—

(१) गर्दनके पीछेकी "मन्या" नामकी नस रह जाती है ।
(२) शिरमें शूल चलते हैं । आधासीसी हो जाती है ।
(३) अर्दित वात या लकवा हो जाता है; यानी आधा चेहरा टेढ़ा हो जाता है ।
(४) सारी इन्द्रियाँ कमज़ोर हो जाती हैं ।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, छींक रोकनेसे सिर, आँख, नाक और कानोंमें भारी रोग हो जाते हैं, कंठ और मुह भरे हुए से मालूम होते हैं; पीड़ा भी होती है और वायुकी आवाज़ या प्रवृत्ति होती है ।

डकार रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"आती हुई डकारों"के रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायत होती हैं :—

(१) कंठ कौरसे रुका हुआ मालूम होता है ।

(२) हृदय और आमाशयमें सूई चुभानेकीसी पीड़ा होती है

(३) पेटमें हवा गूंजती है ।

(४) मुंहसे अस्पष्ट वाक्य निकलते हैं; यानी साफ समझमें आने वाली बात नहीं निकलती ।

वमन रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

"आती हुई वमन या कय"को रोक लेनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—

(१) शरीरमें खुजली, चकत्ते और झाईं ये उपद्रव होते है।

(२) शरीरमें दाह या जलन होती है।

(३) भोजन पर अरुचि या अनिच्छा होती है।

(४) सूजन, कोढ़, पाण्डु, ज्वर, हुल्लास और विसर्प रोग होते हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, वमनके रोकनेसे कोढ हो जाता है तथा अन्नविदग्ध हो जाता है।" हुल्लासका अर्थ जीमिचलाना या सूखी उबाकियाँ आना है ।

वीर्य रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ।

स्त्री-प्रसङ्गके समय गिरते हुए "वीर्य"को रोकनेकेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें हो जाती हैं :—

(१) पेड़ू, गुदा और फोतोंमें सूजन और पीड़ा होती है।

(२) पेशाब रुक जाता है।

(३) वीर्यकी पथरी हो जाती है।

(४) वीर्य जाता है और नाना प्रकारके कष्टसाध्य मूत्राघात रोग हो जाते हैं।

नोट—आजकलके सोजाकोंमेंसे एक प्रकारका सोजाक इस उदावर्त्तसे—वीर्यके उदावर्त्तसे मिलता है। निकलता हुआ वीर्य, रोकनेसे, मूत्रमार्गमें घाव कर देता है। इसलिये पेशावमें बड़ी जलन होती है और घावसे मवाद आने लगता है। सब तरहके सोजाक रोगोंके कारण, लक्षण और चिकित्सा "चिकित्साचन्द्रोदय तीसरे भाग"में देखिये।
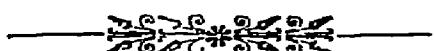
भूख रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"भूख" रोकने यानी भूख लगने पर भोजन न करनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—

(१) तन्द्रा आती है।

(२) अङ्ग टूटते हैं।

(३) अरुचि होती है।

(४) थकान मालूम होती है।

(५) नजर कम हो जाती है।

प्यास रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

प्यास रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—

(१) गला और मुँह सूखते हैं।

(२) कानोंसे कम सुनाई देता है।

(३) हृदय या छातीमे दर्द होता है।

श्वास रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

मिहनत करके थके हुए आदमीके "साँस" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—

(१) हृदयमें पीडा होती है।

(२) मोह—मूर्च्छा या वेहोशी होती है।
(३) पेटमें गुल्म या गोला पैदा हो जाता है।

नींद रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"नींद आनेपर न सोनेसे" नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं :—
(१) जम्हुआई आती हैं।
(२) अंग टूटते हैं।
(३) सिर, शरीर और आँखे भारी हो जाती हैं।
(४) तन्द्रा या ऊँघ आती है।

अपथ्य भोजनके उदावर्त्तके लक्षण।

रूखा, कसैला, कड़वा और चरपरा भोजन करनेसे "कोठेकी वायु" कुपित हो जाती है। वह कुपित हुई "वायु"—मल, मूत्र, आँसू, कफ और मेद वहानेवाली नाड़ियोंकी राह रोक कर—मलको सुखा देती है, तब नीचे लिखी हुई पीड़ायें होती हैं :—
(१) हृदय और पेटमें वेकली करनेवाला दर्द होता है।
(२) जी मिचलाता है।
(३) अधोवायु और मल-मूत्र वड़ी तकलीफसे और थोड़े-थोड़े उतरते हैं।
(४) श्वास, खाँसी, ज़ुकाम, दाह, मोह, प्यास, ज्वर, वमन, हिचकी और सिरमें दर्द आदि वातविकार होते हैं।
(५) मनमें भ्रम होता है और सुननेमें भी भ्रम होता है, अर्थात् मनमें वहम उठते हैं और कुछ-का-कुछ सुनाई देता है।

नोट—कभी तो यह रोग बहुतसे दस्त आ-आकर बढ़ता है और कभी दस्त, पेशाब और अधोवायु रुककर बढ़ता है।

उदावर्त्तके संक्षिप्त निदान और लक्षण।

रूखे, कसैले, कड़वे, चरचरे और शीतल पदार्थोंके खाने और वातादि तेरह वेगोंके रोकनेसे कोठेमें रहने वाला "वायु" अत्यन्त बढ़कर या कुपित होकर, मूत्र, खून, मेद, कफ और विष्ठा वहाने वाली नाड़ियोंकी राह रोककर "मलको" ऊर्ध्ववाही कर देता है यानी उसका रूख ऊपरकी ओर फेर देता है, बस इसी लिये इस रोगको "उदावर्त्त" कहते हैं। इस रोगमें, रोगीके हृदय और पेड़ूमें घोर वेदना होती है तथा मल, मूत्र और अधोवायु बड़े कष्ट से निकलते हैं।

सब तरहके उदावर्त्तोंमें मुख्य दोष कौनसा है?

सब तरहके उदावर्त्तोंमें "वायु" मुख्य है. अर्थात् उदावर्त्त रोग के कारणोंमे "वायु" प्रधान कारण है।

उदावर्त्तके असाध्य लक्षण।

अगर उदावर्त्त रोगमें नीचे लिखे हुए उपद्रव हों, तो रोगीको असाध्य समझ कर इलाज मत करो :—

(१) अत्यन्त प्यास लगती हो।

(२) कय-पर-कय होती हों।

(३) रोगीका शरीर क्षीण हो गया हो।

(४) शूल चलते हों।

(५) विष्ठाकी वमन होती हों।

उदावर्त्त रोगकी चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें

(१) सब तरहके उदावर्त्तोंमें "वायु" मुख्य है। इसलिए अगर सभी तरहके उदावर्त्तोंकी एक ही चिकित्सा करनी हो, तो ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये, जिससे "वायुका अनुलोमन हो" —वायुका रुख नीचेकी तरफ हो जाय। जिस क्रियासे वायुका अपनी-अपनी राहोंमें ठीक सञ्चार हो अथवा वायुका अनुलोमन हो, वही उदावर्त्त की "सामान्य चिकित्सा" है।

नोट—सभी तरहके उदावर्त्तोंकी एक ही चिकित्सा—"उदावर्त्तोंकी सामान्य चिकित्सा" है। इसी तरह भिन्न भिन्न प्रकारके उदावर्त्तोंकी जुदी जुदी चिकित्सा—"उदावर्त्तोंकी विशेष चिकित्सा" है।

(२) अधोवायु रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएं हितकारी हैं :—

(१) स्नेहपान कराना- घी तेलादि पिलाना।

(२) स्वेदकर्म करना बफारे वगैर.से पसीने निकालना।

(३) गुदामें पिचकारी लगाना।

(४) गुदामें फलवर्त्ति या बत्ती चढ़ाना।

नोट—"सुश्रुत"में स्नेहपान कराकर—घी तेलादि चिकने चीज़ें पिलाकर पसीने दिलाना और आस्थापन बस्ति करना हितकारी लिखा है।

(३) मल रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएं हितकारी हैं :—

(१) दस्तावर अन्न देना।

(२) दस्तावर दवा देना।

(३) गुदामें बत्ती चढ़ाना।

(४) तेल आदिकी मालिश कराना।

(५) अवगाहन कराना यानी जल वा तेलमें बैठाना।

(६) सेक वगैर. करके पसीने दिलाना।

(७) वस्तिकर्म करना यानी गुदामें पिचकारी लगाना।

(४) मूत्र-वेग रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखे उपाय हित-कारी हैं :—

(१) इस रोगमें मूत्रकृच्छ्र और पथरीकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(५) जभाई रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियें।

(१) स्नेहन अथवा स्वेदन क्रिया करनी चाहिये।

(२) वातनाशक उपाय करने चाहिये।

(६) आँसुओंके रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएं करनी चाहियें :—

(१) अच्छी तरह रोकर आँसू निकाल देने चाहियें।

(२) इसके बाद रोगीको सुखसे सुलाना चाहिये।

(३) मनोरञ्जक बातें कहनी चाहिएँ।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है—स्निग्ध या चिकना स्वेदन करके आँसू निकाल देने चाहिएँ। किसी-किसीने लिखा है, रोगीकी आँखोंमें तेज अंजन लगाकर आँसू निकाल देने चाहियें और उसे खुश रखना चाहिये।

(७) छींक रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियें :—

(१) मिर्च और राई वगैरः तेज़ चीज़ें सूँघनी चाहियें।

(२) सूरजकी तरफ देखकर छींक लेनी चाहियें।

(३) नाकमें कपड़े वगैर.की बत्ती डालकर छींक लेनी चाहियें।

(४) स्नेहन और स्वेदन कर्म भी करने चाहिएँ।

नोट—"सुश्रुत"में तीक्ष्ण अंजन आंजने तथा अवपीड़ नस्य और प्रधमन नस्यसे काम लेनेकी राय दी गई है।

(८) डकार रोकनेके उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएं करनी चाहियें :—

(१) चिकनाई मिले हुए पदार्थोंका धूआँ पीना चाहिये। (देखो पृ० ५५६)

(२) शराबमें कालानोन और बिजौरेका रस मिलाकर पीना चाहिये।

(९) वमनका वेग रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएं करनी चाहिय :—

(१) वमन करानी चाहियें।

(२) लंघन कराने चाहियें

(३) दस्त कराने चाहियें।

(४) तेलकी मालिश करानी चाहिये।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, इस रोगमें दोषानुसार स्नेहन कर्म करना चाहिये तथा जवाखार और नमक मिले तेल वगैर की मालिश करनी चाहिये।

(१०) वीर्य रोकनेके वेगसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियें :—

(१) प्यारी नारीके साथ संभोग करना चाहिये।

(२) तेलकी मालिश करानी चाहिये।

(३) जलमें अवगाहन करना चाहिये ; यानी ग़ोता मारना चाहिये।

(४) शराब पीनी चाहिये।

(५) मुर्ग़ेका मास, शालि चाँवल और दूध खाना चाहिये।

(६) निरूह वस्ति करनी चाहिये।

(७) मूत्राशयको शुद्ध करनेवाले द्रव्य गोखरू वग़ैरः और चौगुना पानी डालकर "दूध" औटाना चाहिये। जब पानी जलकर

दूध मात्र रह जाय, उसमें "मिश्री" मिलाकर रोगीको पेट भरकर पिलाना चाहिये और प्यारी स्त्रियोंसे रमण कराना चाहिये।

(११) भूख रोकनेके उदावर्त्त रोगमें नीचे लिखी हुई क्रियाएं करनी चाहियें :—

(१) चिकने, गरम, रुचिकारी और मन-चाहे पदार्थ थोड़े-थोड़े खाने चाहियें ; यानी कम खाने चाहिय।

(२) इत्र और फूल वग़ैरः ख़ुशबूदार चीजें सूंघनी चाहियें।

(१२) प्यास रोकनेके उदावर्त्तमें नीचे लिखी हुई क्रियाएं करनी चाहियें :—

(१) इस रोगमें सभी शीतल क्रियाएँ करनी चाहिय।

(२) कपूर-मिला या कमलसे सुवासित किया हुआ पानी बारम्बार और थोड़ा-थोड़ा पीना चाहिये।

(३) "सुश्रुत"में मन्थ और शीतल यवागू पिलाना भी हितकर लिखा है।

(१३) थकानमें साँस रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी हुई क्रियाएं करनी चाहियें :—

(१) मांसरसके साथ भोजन करना चाहिये।

(२) आराम करना चाहिये।

(१४) नींदका वेग रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी हुई क्रियाएँ करनी चाहियें :—

(१) मिश्री-मिला गरम दूध पीना चाहिये।

(२) हाथ पैरोंको दबवाते हुए सुखदायी पलँग पर सोना चाहिये।

(३) मनोरंजक क़िस्से-कहानी सुनते हुए इच्छानुसार सोना चाहिये।

उदावर्त्त की विशेष चिकित्सा।

अधोवायुजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१) मैनफल, पीपर, कूट, बच और सफेद सरसों बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर महीन पीस-छानलो। फिर पाँच तोले "गुड़"को पानीमें घोलकर आगपर चढ़ा दो। जब दूध औट जाय, उसमें थोडासा दूध और ऊपरका चूर्ण मिला दो और चलाते रहो। जब चाशनीकी गोली बँधने लगे, चूल्हेसे उतार लो और छोटी अँगुलीके समान वत्तियाँ बना लो। वत्तियोंके सिरे, बालकोंके गिल्ली-डंडा खेलनेकी गिल्लीकी तरह, पतले रखो और बीच कुछ मोटा रखो। इस वत्तीको जरासा घी या तेल लगाकर गुदामें घुसानेसे अधोवायु और मल रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्त आराम हो जाते हैं। शास्त्रमें इस फलवर्त्तिसे अपथ्य जनित एवं औरभी सब तरहके उदावर्त्त आराम होनेकी बात लिखी है। पर जिन उदावर्त्तोंमें मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं, उनमें यह वत्ती खास तौरसे जियादा काम देती है। इसका नाम "मदनफल आदि वर्त्ति" है।

नोट—विचारपूर्वक स्नेह, स्वेद और गुदाकी पिचकारीकी क्रिया भी करनी चाहिये। देखो पृष्ठ ५४६ नोट नं० २

मलजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(२) हींग, शहद और सेंधानोन—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर और एकत्र पीसकर "मदन फलादिवर्त्तीकी तरह" बत्ती बना

लो। इस वत्तीको घीमें तर करके गुदामें घुसानेसे मल रुकनेका उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(३) निशोथ २ तोले, पीपर ४ तोले, हरीतकी ५ तोले और गुड़ ११ तोले लेकर रख लो। दवाओंको पीस-छान कर एकमें मिला लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इस चूर्णके खानेसे मल रोकनेका उदावर्त्त और आनाह रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस उदावर्त्तमें दस्तावर दवा, फलवर्त्ति, तेलकी मालिश, स्वेद-कर्म और गुदामें पिचकारी लगाना आदि क्रियाएँ हित हैं। देखो पृष्ठ ५४६ नोट नं० ३ ।

मूत्रजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा ।

(४) शराबमें कालानोन मिलाकर पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नाश हो जाता है।

(५) इलायचीको शराबके साथ अथवा दूधके साथ अथवा पानीके साथ सेवन करानेसे यह उदावर्त्त आराम हो जाता है।

(६) ककड़ीके बीज पानीके साथ सिल पर पीस कर, पानीमें घोलकर और थोड़ा नमक मिलाकर पीनेसे यह मूत्रजनित उदावर्त्त जाता रहता है।

(७) वचका चूर्ण खाकर, ऊपरसे जल-मिला दूध पीनेसे मूत्र-जनित उदावर्त्त नाश हो जाता है।

(८) जवासेका काढ़ा बनाकर पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(९) अर्जुन वृक्षकी छालका काढ़ा पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(१०) कटेरीका स्वरस पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(११) मिश्री, ईखका रस, दूध, दाख और मुलेठीका रस पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

नोट—अगर इन उपायोंसे लाभ न हो, तो मूत्रकृच्छ्र या पथरी रोग नाशक कोई दवा देनी चाहिये।

डकार जन्य उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१२) गिलोय, विदारीकन्द, असगन्ध, अनन्तमूल, शतावर दो-दो माशे और माषपर्णी, जीवन्ती तथा मुलेठी एक-एक माशे लेकर महीन पीसलो। इस चूर्णको घी या मोममें मिलाकर वत्तीसी बनालो और सिगरटकी तरह सिलगाकर धूआँ पीओ। इससे डकार रोकनेसे हुआ उदावर्त्त नाश हो जाता है।

नोट—यही चिकनाई मिला हुआ धूआं पीना है, जिसके सम्बन्धमें हम पृष्ठ ५५२ नोट नं० ८ में लिख आये हैं।

(१३) शराबमें कालानोन और बिजौरे नीबूका रस मिलाकर पीना चाहिये।

छींक जन्य उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१४) नकछिकनीके पत्तोंको सुखा-पीसकर और नाकसे सूँघकर छींकें लेनी चाहियें।

नोट—इस रोगमें गर्दन पर मालिश कराना, पसीने निकालना और धूआं पीना—ये भी हित हैं। (देखो पृष्ठ ५५१ नोट नं० ७)।

वमन जनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१५) जवाखार और सेंधानोन बराबर-बराबर लेकर महीन पीसो और तेलमें मिलाकर मालिश करो। इस उपायसे अवश्य लाभ होता है।

(१६) एक भाग दूध और चार भाग जल मिलाकर औटाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, प्रसन्नतापूर्व्वक पीलो।

नोट—इस रोगमें वमन, लङ्घन, विरेचन और तेलकी मालिश भी हितकारी हैं। देखो पृष्ठ ५५२ नोट नं० ९।

वीर्य जनित उदावर्त्तकी चिकित्सा ।

(१७) पंच तृणमूलको सिल पर पानीके साथ पीसकर एक भाग दूध और चार भाग पानीमें मिलाकर औटाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान कर और मिश्री मिलाकर पीलो। इससे वीर्य-जनित उदावर्त्त नाश हो जाता है।

नोट—इस रोगमें तेलकी मालिश, ग़ोता मारकर नहाना, शराब पीना, मुर्गोंका मांस खाना, निरूह वस्ति और मैथुन—ये भी हित हैं। देखो पृष्ठ ५५२ नोट नं० १०

रूक्षादि अपथ्य पदार्थजनित उदावर्त्त ।

(१२) हींग, शहद और सैंधानोन—एकत्र पीसकर बत्ती बना लो और फिर बत्तीको घीमें तरकरके गुदामें घुसा लो। इससे दस्त होकर उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

नोट—पृष्ठ ५५४ के नं० १ में लिखी हुई "मदनफलादि बत्ती" भी इस रोगमें काम देती है।

नाराच चूर्ण ।

निशोथ १ तोले, पीपर २ तोले और मिश्री चार तोले—इनको पीस-छान कर रखलो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण "शहद"में मिलाकर, भोजनके पहले, खानेसे मल निकलकर उदावर्त्त नाश होता और दिल खुश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—यह चूर्ण उस उदावर्त्तमें अच्छा काम देता है, जिसमें मल सूख कर कड़ा हो जाता है। यह चूर्ण धनियों और राजाओंके योग्य है। कोई-कोई निशोथ और पीपर एक-एक तोले और चीनी ४ तोले लेते हैं। हम ऊपरकी विधिसे बनाते हैं।

गुड़ाष्टक ।

सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, पीपलामूल, निशोथ, दन्ती—जमा-लगोटेकी जड़ और चीतेकी जड़की छाल—ये सब बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पीस-कूट कर छान लो। फिर सब चूर्णके वज़नके बराबर—सात तोले—गुड चूर्णमें मिलाकर रखदो। इस चूर्णकी मात्रा ६ माशेकी है। सवेरे ही एक मात्रा खाकर, ऊपरसे पानी पीनेसे बल और अग्निकी वृद्धि होती है और उदावर्त्त, गोला, तिल्ली, सूजन और पाण्डु रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अगर चूर्णको गुड़में न मिलावें, तो एक मात्रा चूर्ण बराबरके गुड़में समय पर मिला कर खा सकते हैं। अगर रोगका जोर हो और रोगी बलवान हो, तो ६ माशे चूर्ण ६ माशे गुड़में मिलाकर खाया जा सकता है। गुड़ मिलाकर इसकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है। साधारण लोग ६ माशे ही सेवन करें।

शुष्क मूलाद्य घृत ।

सूखी मूली, अदरख, पुनर्नवा, लघु या वृहत पञ्चमूल और अमल-ताशका गूदा—इनको तीन-तीन छटाँक लेकर जौकुट करलो और आठ सेर पानीमें डालकर काढ़ा पकाओ। जब दो सेर पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

फिर इस काढ़ेमें आध सेर घी मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब काढ़ा जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छानलो और रख दो।

इसमेंसे एक तोला घी रोज़ खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे उदावर्त्त रोग फौरन नाश हो जाता है। परीक्षित है।

स्थिराद्य घृत ।

लघु पञ्चमूल, पुनर्नवा, अमलताशका गूदा, दुर्गन्ध करंज और करंज आठ-आठ तोले लेकर जौकुट कर लो। फिर इनको ३२ सेर

पानीमें डालकर काढ़ा पकालो। जब ८ सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

इस काढ़ेमें दो सेर गायका घी मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसमेंसे एक तोले घी पीकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे उदावर्त्त रोग आराम हो जाता है। यह घी वायुकी वृद्धि दूर करनेमें एक ही है। परीक्षित है।

वृहत् इच्छा भेदी रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध सुहागा १ तोले, काली मिर्च १ तोले, निशोथ १ तोले, अतीस २ तोले और शुद्ध जमालगोटेके बीज ६ तोले—सबको तैयार रक्खो।

पहले पारे और गन्धकको ६ घन्टेतक खरल करो। जब चमक न रहे, उसमे सुहागा प्रभृति सब दवाओंको पीस-छानकर मिला दो और "मदारके पत्तोंका स्वरस" डाल-डालकर खरल करो। अन्तमें हल्की आगपर गरम करके रत्ती-रत्तीभरकी गोलियाँ बना लो।

इसमेंसे एक गोली निगलाकर शीतल जल पिलादो। इससे दस्त होंगे। जब दस्त बन्द करने हों, गरम जल पिला दो। गरम जल पीते ही दस्त बन्द हो जायँगे। इसपर दही और भात खाना पथ्य है।

त्रिवृत्त वटिका।

निशोथ १ तोले और हरड़ १ तोले लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको खरलमें डालकर ऊपरसे "सेंहुड़का दूध" डालकर खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इसमेंसे एक गोली सवेरे ही खाकर, ऊपरसे गरम दूध या गरम जल पीनेसे आनाह रोग —दस्त न होना और उदावर्त्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

तैल विरेचन।

डेढ़ पाव गरम दूधमें तीन या चार तोले "रेंडीका साफ तेल"

मिलाकर, सवेरे ही, पीनेसे दस्त होकर आनाह—पेटका अफारा और उदावर्त्त रोग नष्ट हो जाते हैं। दस्तकी रुकावटमें इस जुलावसे बड़ा लाभ होता है। यह जुलाव औरत-मर्द सबके लिए मुफीद है।

नोट—अगर किसीका कोठा बहुत ही क्रूर या कड़ा हो, किसी दवासे दस्त न होते हों, तो रेंडीके तेलमें दस बूँद तारपीनका तेल भी मिलादो और दूधमें मिलाकर पिलादो। दस्त होंगे ही होंगे। बालकोंको एक या दो बूंद दे सकते हो।

चन्द परीक्षित फुटकर नुसखे।

(१) जवाखार, हींग, चीता और अम्लवेत समान-समान लेकर पीसछान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३से ६ माशे तक है। इसकी एक मात्रा खाकर गरम जल पीनेसे मलका भेदन होता है; यानी सूखा हुआ मल फूट-फूट कर निकल जाता है। लाख रुपयेका नुसखा है। परीक्षित है।

(२) करंजकी छाल, करंजका फल, करंजकी जड़, बांबीकी मिट्टी और राई—इनको गोमूत्रमें पीस कर और जरा गरमके पेट पर लेप करनेसे उदावर्त्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) हरड़, मरोड़फली, जवाखार, और निशोथ इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छानलो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। एक-एक मात्रा चूर्ण "घीमें" मिलाकर चाटने या पीनेसे वायु-गोला और आनाह सहित उदावर्त्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) हरड़, निशोथ, जवाखार और पीलू—समान-समान लेकर पीस-छानलो। इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण "घी"में मिलाकर चटानेसे उदावर्त्त रोग फौरन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) शंख भस्म "गुड़"में मिलाकर खानेसे उदावर्त्त रोग नष्ट हो जाता है।

(६) माठा, हींग, सोंठ, गुड़ और भुना हुआ सुहागा—इनके सेवन करनेसे उदावर्त्त नाश हो जाता है। वास्तवमें ये सब चीज़ें उदावर्त्तमें रामवाणका काम करती हैं। हींग आदिका चूर्ण खाकर माठा पीना चाहिये अथवा इनको माठेमें मिलाकर पीना चाहिये। कहा है :—

उन्मीलिनी उदावर्त्ते सतक्र हिंगुनागरम्।
सगुडं टङ्कणं भ्रष्टं सगुडं शंखभस्मकम्॥

उदावर्त्त रोगमें उन्मीलिनी चिकित्सा करनी चाहिये। माठा, हींग, सोंठ, गुड़ और आग पर फुलाया हुआ सुहागा सेवन करना चाहिये अथवा गुडमें मिलाकर शंखकी भस्म खानी चाहिये।

आनाह रोग वर्णन ।

ग्यारहवाँ अध्याय

सामान्य लक्षण ।

जिस रोगमें आम या मल क्रमसे जमा होकर, दूषित वायुसे सूख जाते और अपनी राहसे नहीं निकलते, उसे "आनाह" कहते हैं।

नोट—इस रोगमें आम या मल सूख जाता है और गुदासे नहीं निकलता, इसलिये पेट फूल जाता है। अगर यह रोग आम यानी भोजनके कच्चे रससे होता है, तो आमाशयमें दर्द होता, हृदय जकड़ जाता और शरीर भारी हो जाता है। अगर यह रोग पक्वाशयसे अथवा मलके जमा हो जानेसे होता है, तो श्वास, बेहोशी और विष्ठाकी कय होती है।

आमके आनाहके लक्षण ।

अगर आम या आहारके कच्चे रससे "आनाह" होता है ; तो प्यास, जुकाम, सिरमें जलन, आमाशयमें शूल, शरीरमें भारीपन, हृदयका जकड़ना और डकार न आना ये लक्षण होते हैं।

मलके आनाहके लक्षण ।

अगर मल या पाखाना जमा हो जानेसे "आनाह" होता है, तो

कमर और पीठ रह जाती हैं, दस्त और पेशाब रुक जाते हैं, दर्द चलता है, बेहोशी होती है, विष्ठा-मिली हुई वमन होती है तथा अलसक, अफारा और वायुका विघात आदि लक्षण होते हैं।

आनाह-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) उदावर्त्त और आनाह रोगी अगर विष्ठाको कय करते हों, तो आप उनका इलाज हाथमें न लो, क्योंकि ऐसे रोगी आराम नहीं होते।

(५) आनाह रोगमें दीपन-पाचन औषधियाँ और वस्तिकर्म यानी गुदामें पिचकारी देना हित है। इस रोगमें भी, उदावर्त्त की तरह, वायुको अनुलोमन करने वाली दवाएँ, गुदामें बत्ती चढ़ाना और वात शान्तिकारक आहार देना पथ्य है।

उदावर्त्त-चिकित्सामें लिखे हुए नाराच चूर्ण, गुडाकष्टक, शुष्क मूलाद्य घृत और स्थिराद्य घृत प्रभृति "आनाह रोग"मे भी देने चाहिये।

आनाह नाशक नुसखे।

त्रिवृत्तादि चूर्ण।

निशोथ २ तोले, पीपर ४ तोले और हरड़ ५ तोले—इनको पीसकूट कर छानलो। फिर सबकी बराबर—११ तोले—गुड़ मिलाकर और खूब मसल कर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनालो। इसमेंसे एक दो गोली खानेसे आनाह रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

हिंग्वादि चूर्ण।

हींग, वच, विडनोन, सोंठ, जीरा, हरड, पोहकरमूल और कूट—इनको क्रमसे एक-एक भाग बढ़ाकर ले लो और महीन पीस छान कर रखलो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ४ माशे तक है। इस चूर्णसे आनाह, गोला, पेटके रोग और विशूचिका रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—हींग एक तोले, वच २ तोले, विडनोन ३ तोले, सोंठ ४ तोले, जीरा ५ तोले, हरड़ ६ तोले, पोहकरमूल ७ तोले और कूट ८ तोले—इस तरह दवाएँ लेनी चाहियें।

वचाद्य चूर्ण।

वच, हरीतकी, चीतेकी जडकी छाल, जवाखार, पीपर, अतीस और कूट—इन सातोंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तक है। इस चूर्णसे आनाह रोग और मूढ़वात निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह चूर्ण खाकर "निवाया जल" पीना चाहिये। चूर्ण पचने पर मांस रसके साथ भात खाना चाहिये।

त्रिवृत्ताद्य वटिका।

निशोथ १ तोले, हरड़, १ तोले और पीपर १ तोले—इनको पीस-छान कर "थूहरके दूध"में पीसलो और चने-समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियाँको सवेरे ही "गोमूत्र"के साथ खानेसे आनाह और उदावर्त्त नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

फल वर्त्ति।

मैनफल, पीपर, कूट, वच और सफेद सरसों इनको समान-समान लेकर महीन पीसलो। फिर इस चूर्णको "गुड़ और दूध"के साथ सिल पर पीसकर छोटी अंगुलीके समान वत्तियाँ बनालो अथवा इस मसालेको कपड़ेके टुकड़े पर लपेट कर वत्ती बनलो। वत्ती ऐसी कड़ी बनानी चाहिये, जो बिना मुड़े गुदामें घुस सके। इस वत्तीको गुदामें

घुसानेसे आनाह रोग—दस्त न होनेसे पेट फूलना, कूखका दर्द, गुदाका दर्द और उदावर्त्त रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

रामठाद्य वर्त्ति।

हींग, घरका धुआँसा, विरिया संचरनोन, सोंठ, गोलमिर्च, पीपर और गुड़—सबको समान-समान लेकर पीस लो और "गोमूत्र"में मिलाकर आग पर पकाओ, जब पकते-पकते मसाला गाढ़ा हो जाय, उतार कर अंगूठेके समान बत्ती बनालो। इन बत्तियोंको गुदामें चढ़ानेसे आनाह और शूल रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर बत्ती गुदामें न घुसे तो उसे घीसे तर करलो। फिर वह शीघ्र ही गुदामें घुस जायगी।

त्रिकुटाद्य वर्त्ति।

सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, सेंधानोन, सफेद सरसों, घरका धूआँसा, मैनफल और कूट—इन सबको कूट-पीस कर छानलो। फिर इस चूर्ण को "शहद या गुड़"में मिलाकर आग पर पकालो। जब मसाला बत्ती बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय, अँगूठे-समान बत्तियाँ बनालो। इनको घीमें तर करके, गुदामें चढ़ानेसे आनाह, उदावर्त्त, गुल्म रोग और उदर रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—गुड़में "पानी" मिलाकर आग पर पकाओ और जब वह गाढ़ा होने पर आवे, उसमें दवाओंका चूर्ण डाल दो और चलाते रहो। जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, उतार कर बत्तियाँ बनालो। पानी मिलानेकी बात इसलिये लिखी है, कि गुड़ पतला हो जाय और उसमें दवाओंका चूर्ण मिल जाय।

द्विरुत्तरा हिंग्वाद्य चूर्ण।

हींग १ तोले, वच ३ तोले, कूट ५ तोले, सज्जीखार ७ तोले और बायबिड़ंग ८ तोले इनको पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। अनुपान—निवाया जल है। इससे आनाह, हृदय रोग, उर्ध्ववात, वायु-गोला और विशूचिका रोग नाश हो जाते हैं।
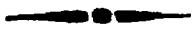
गुल्म किसे कहते हैं ?

"गुल्म" शब्द संस्कृत है। हिन्दीमें गुल्मका अर्थ गोला या गोली है। हृदय और नाभिके दर्म्यान, वातादि दोषोंसे, एक गोल गाँठसी हो जाती है, उसे ही "गुल्म" कहते हैं।

गुल्मके निदान-कारण ।

संक्षेपमें, गुल्म रोगके सन्निकृष्ट कारण "मिथ्या आहार और मिथ्या विहार" हैं। विप्रकृष्ट कारण "दूषित वात, पित्त, कफ और रुधिर" हैं।

अब यों समझिये कि, भोजन पर भोजन करने, संयोग-विरुद्ध भोजन करने, समय-बे-समय खाने प्रभृति मिथ्या आहारों और जबर्दस्तके साथ लड़ने प्रभृति मिथ्या विहारोंसे वात, पित्त, कफ और खून ये अत्यन्त दूषित या कुपित हो जाते हैं। कुपित हुए वात आदि

दोष कोठेमें—हृदयसे मूत्राशय तकके भागमें—गाँठके समान या गोलीके समान "गुल्म" पैदा करते हैं।

गुल्मके पाँच भेद।

गुल्म पाँच तरहका होता है:—

(१) वातसे, (२) पित्तसे,
(३) कफसे, (४) त्रिदोषसे,
(५) रुधिरसे।

"भावप्रकाश"मे लिखा है:—

स व्यस्तैर्जायते दोषैः समस्तैरपि चोच्छ्रितैः।
पुरुषाणां तथा स्त्रीणां रक्तज चोपजायते॥

गुल्म रोग पुरुषोंके और स्त्रियोंके कुपित हुए वात, पित्त, कफ और त्रिदोषसे तथा रक्तसे भी होता है।

"सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में लिखा है:—

यथोक्तैः कोपनैर्दोषा कुपिता कोष्ठमागताः।
जनयन्ति नृणां गुल्मं स पचविध उच्यते॥

जब सूत्रस्थानमें लिखे हुए कारणोंसे, कुपित हुए वातादि दोष कोठे यानी पेटमें स्थित हो जाते हैं, तब वे मनुष्योंके पेटमें गुल्म—गोला पैदा करते हैं। वह गुल्म पाँच तरहका होता है।

इस तरह गुल्म रोगकी संख्या कोई पाँच लिखता है और कोई लिखता है, कि चार तरहके गुल्म पुरुषोंके होते हैं और पाँचवाँ रक्त या रजके दोषसे औरतोंके होता है। कहा है:—

स व्यस्तैर्जायते दोषैः समस्तैरपि चोच्छ्रितैः।
पुरुषाणां तथा स्त्रीणां ज्ञेयो रक्तेन चापरः॥

वातसे एक, पित्तसे एक, कफसे एक और त्रिदोषसे एक—इस

तरह चार तरहके गुल्म मर्दोंके होते हैं, परन्तु रक्त (रज)के दोषसे स्त्रियोंके एक प्रकारका गुल्म और होता है।

यहाँ जो "रक्तेन चापर:" लिखा है, इसके चकारसे डल्लन आचार्य यह अर्थ निकालते हैं, कि रक्त धातुसे भी गोला होता है और वह पुरुष तथा स्त्री दोनोंके होता है।

और भी कहा है: —

> दुष्टैर्दोषैरेकश: सर्वशश्च गुल्मः।
> स्त्रीणां पञ्चमो रक्तजः स्यात्॥

दूषित वातादि तीनों दोषोंसे ३ और त्रिदोषसे १, इस तरह गुल्म चार तरहका होता है, और स्त्रियोंके दूषित आर्त्तव-रुधिरसे पैदा हुआ पाँचवाँ—रक्तज गुल्म औ होना है।

एक और आचार्य कहते हैं :—

> आर्त्तवादपि गुल्मः स्यात्स तु स्त्रीणां प्रजायते।
> अन्यस्त्वसृग्भवः पुंसा तथा स्त्रीणां प्रजायते॥

आर्त्तव या रजसे भी गुल्म होता है, परन्तु वह गुल्म औरतोंको ही होता है। खूनसे होनेवाले और गुल्म—पुरुषोंके भी होते हैं और स्त्रियोंके भी।

वृद्ध वाग्भट्टजी लिखते हैं :—

> गुल्मोऽष्टधा पृथग्दोषैः संसृष्टैर्निचयं गतैः।
> आर्त्तवस्य च दोषेण नारीणां जायतेऽष्टम॥

वातसे, पित्तसे, कफसे, वातपित्तसे, वातकफसे, कफपित्तसे, त्रिदोषसे—इस तरह सात गुल्म होते हैं और आर्त्तव-दोषसे आठवाँ गुल्म औरतोंको होता है।

मतलब यह, कि गुल्म रोगकी पाँच क़िस्मोंका निश्चित फैसला अभी तक नहीं हुआ है। बहुतोंका कहना है, कि गुल्म चार ही तरहके सबके होते हैं। पाँचवाँ गुल्म तो केवल स्त्रियोंके होता है; अतः गुल्म

चार ही तरहके मानने चाहियें। इस तरह पाँच प्रकारके गुल्मों पर पहलेसे मतभेद चला आता है। शास्त्रार्थ भी हो चुके हैं। जिन्हें यह शास्त्रार्थ और मतभेद देखना हो, वे "मधुकोशी" और "आतङ्क दर्पण" टीकाएं देखें। हम अपने नौ-सिखिये पाठकोंका दिमाग़ इस परेशानीसे ख़राब करना उचित नहीं समझते। इसीसे हमने दोनों मतोंके दो-चार श्लोक देकर इस विषयको यहीं शेष कर दिया—आगे नहीं बढ़ाया।

अब निश्चित मत यह समझिये, कि गुल्म रोग चार तरहका होता है। "रक्तगुल्म" केवल औरतोंके होता है। हाँ, कभी-कभी शारीरिक रक्त धातुसे यानी ख़ूनसे पुरुषोंके भी रक्तगुल्म या ख़ूनका गोला हो जाता है।

नोट—स्त्रियोंका मासिक धर्म खुल कर न होने—मासिक धर्मका ख़ून बच रहने अथवा बच्चा जननेके समयका ख़ून रह जानेसे स्त्रियोंको "रक्त गुल्म" होता है।

"रक्तपित्त रोग"में गिरते हुए उल्वण रुधिरको, आरम्भमें ही, रोक देनेसे पाण्डु रोग आदि रोग हो जाते है। अगर वह ख़ून कहीं पेटमें इकट्ठा हो जाता है, तो पुरुषोंके भी रक्तगुल्म पैदा हो जाता है। पुरुषोंके रक्त गुल्म होनेके जितने कारण हैं, उनमेंसे एक कारण यह भी है। हमने मिसालके तौर पर इसे पेश कर दिया है।

गुल्मके स्थान।

गुल्म नीचे लिखे हुए पाँच स्थानोंमें होता या रहता है :—

(१) दाहना पसवाड़ा। (२) बायाँ पसवाड़ा।
(३) हृदय (कौड़ीके पास)। (४) नाभि (नाभिके पास)।
(५) मूत्राशय या पेड़ू।

नोट (१)—कितने ही वैद्य कहते है, कि मूत्राशय या पेड़ूमें तो "विद्रधि" होती है—गुल्म नही होता। जो ऐसा कहते हैं, वे गलती पर है, क्योंकि चरकने साफ़ कह दिया है :—

पञ्चस्थानानि गुल्मस्य पार्श्वहृन्नाभिबस्तय ।

अर्थात् गुल्म दोनों ओरकी पसलियों, हृदय, नाभि और बस्ति यानी पेड़ूमें रहता है।" यद्यपि गुल्म एक जगह भी रहता है और विचरने भी लगता है—अपने स्थानसे आगे टहलनेको भी चला जाता है, पर उसके खास स्थान ये ही हैं।

नोट (२)—कितने ही सवाल करते हैं, कि गुल्म अन्तर्विद्रधिकी तरह पकता क्यों नहीं? इसका जवाब "सुश्रुत"में यह लिखा है —

स यस्मादात्मनिचय गच्छत्यम्भिस बुद्बुद ।
अन्त सरति यस्माच्च न पाकमुपयात्यत ॥

जिस तरह जलका बुलबुला अपने समान जलमें ही बनता है और जब वह फूटता है, तब उसीमें मिल जाता है, उसी तरह गुल्म भी अपने समान व्यक्तियोंसे संचित होता है और पकता नहीं। खुलासा यों समझिये, कि गुल्ममें विशेष भाग वात और कफका होता है, जो उसके स्थानके व्यक्तिके प्राय समान ही व्यक्ति है, इसीसे वह नहीं पकता। किन्तु अन्तर्विद्रधि अपने असमान दोषों—पित्तरक्तादि—से होती है, इसीसे वह शीघ्र ही पक जाती है। इसी तरह, अगर इसमें भी दूषित पित्त और रक्त आदिका मादा जियादा होता है, तो यह भी पक जाता है। कहा है :—

अन्त अन्तरे सरति भ्रमति एवं भूत प्रायेण वातिको भवति स च न पच्यते।
इतरेच वदन्ति गुल्मो यदा रक्तादिस्थानमधिष्ठायावतिष्ठते तदा कदाचित पचेत।

भीतर घूमनेवाला प्राय वातज गुल्म होता है, वह नहीं पकता। किन्तु गुल्म अगर रक्त वगैर.के स्थानको पकड़ कर बैठ जाता है, तो पक जाता है।

गुल्मके सामान्य लक्षण।

हृदय और नाभिके बीचमें रहनेवाला, अथवा घूमनेवाला, कभी बढ़नेवाला और कभी कम हो जानेवाला जो गोला होता है, उसे "गुल्म" कहते हैं।
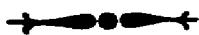
अथवा यों समझिये, कि हृदय और पेड़ूके बीचकी जगहमें चलनेवाली या अचल रूपसे रहनेवाली तथा घटने और बढ़नेवाली जो गाँठ होती है, उसे "गुल्म" कहते हैं।

नोट (१)—मल मूत्र और अधोवायुका कठिनतासे होना, अफारा, अन्नमें

अरुचि, उर्ध्ववात, अन्नका न पचना, प्यास और आँतोंमें गुड़-गुड़ शब्द होना— ये भी गुल्मके सामान्य लक्षणोंमें हैं, अर्थात् ये लक्षण सब गुल्मोंमें होते हैं।

नोट (२)—यहाँ "नाभि" शब्दसे "वस्ति या पेड़ू" समझना चाहिये।

गुल्मके पूर्वरूप।

जिनको गुल्म रोग होनेवाला होता है, उन्हें गुल्मके प्रकट होनेसे पहले ये शिकायत होती हैं :—

(१) डकारोंका बहुतायतसे आना।

(२) मलबन्ध अर्थात् दस्त साफ न होना।

(३) तृप्तिका होना (भोजन करने पर पेटका फटना)।

(४) सामर्थ्यका नाश होना।

(५) आँतोंका गुड़-गुड़ शब्द करना।

(६) अफारा होना या पेटका फूलना।

(७) अन्न न पचनेके कारण पेटमें दर्द होना।

नोट—दिशा-पेशावका तकलीफसे होना, गुदाकी हवाका कष्टसे निकलना, भोजनसे अरुचि, आँतो में आवाज होना, अफारा होना और वायुका उर्ध्वगत होना—डकारोंका बहुतायतसे आना—ये लक्षण सभी तरहके गुल्मोंमें होते हैं।

वातज गुल्मके निदान-कारण।
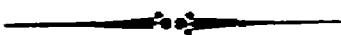
रूखे पदार्थ खाने, कम-ज़ियादा खाने, बहुत ही ज़ियादा खाने, मल मूत्रादि वेगोंके रोकने, बलवानके साथ लडने आदि विरुद्ध चेष्टा करने, हृदयमें शोक होने और चोट लगने, जुलाब आदिसे ज़ियादा मल निकल जाने और उपवास करनेसे वातज गुल्म पैदा होता है।

वातज गुल्मके लक्षण ।

वातज गुल्ममें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) जगह-जगह दर्द होता है ।

(२) दस्त और अधोवायु रुकते हैं ।

(३) गला और मुँह सूखते हैं ।

(४) शरीरका रंग नीला और लाल हो जाता है ।

(५) शीतज्वर होता है ।

(६) हृदय, कोख, पसली, कन्धे और सिरमें पीड़ा होती है ।

(७) भोजन पचनेके समय गोलेका जोर बढ़ जाता है ।

(८) भोजन करनेपर गोला नर्म हो जाता है ; यानी शान्ति रहती है—पीड़ा बन्द हो जाती है ।

नोट (१)—इस वातज गुल्म रोगमें रूखे, कड़वे, कसैले और चरपरे पदार्थ हानि करते हैं ।

नोट (२)—भोजन पचने पर रोगका कोप बढ़ना और भोजन करने पर कुछ देर तक शान्ति रहना—गोलेकी पीड़ा न होना—वातज गुल्मकी खास पहचान है ।

पित्तज गुल्मके निदान-कारण ।

चरपरे, खट्टे तीक्ष्ण, गरम, विदाही और रूखे पदार्थ खाने-पीने, क्रोध करने, शराब पीने, धूपमें बहुत रहने, आगके सामने अधिक बैठने, विदग्ध अजीर्ण होने, लकडी प्रभृतिकी चोट लगने और खून बिगडनेसे पित्त-गुल्म पैदा होता है ।

पित्तज गुल्मके लक्षण ।

पित्तसे पैदा हुए गुलममें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) ज्वर चढता है ।

(२) प्यास जोरसे लगती है ।

(३) ग्लानि होती है ।

(४) शरीरका और चेहरेका रंग लाल हो जाता है ।

(५) भोजन पचनेके समय घोर शूल चलते हैं ।

(६) पसीने आते हैं ।

(७) भोजनके पीछे दाह या जलन होती है । जली-जली सी डकारें आती हैं ।

(८) गुल्म व्रणकी तरह स्पर्शको सह नहीं सकता , अर्थात् गोलेको छूनेसे ऐसी वेदना होती है कि सहा नहीं जाता ।

कफज गुल्मके निदान ।

शीतल, भारी और चिकने पदार्थ खाने-पीने, कसरत या मिहनत न करने और दिनमें सोनेसे कफका गुल्म पैदा होता है ।

कफज गुल्मके लक्षण ।

कफज गुल्ममें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) शरीर गीला सा रहता है ।

(२) शीतज्वर होता है ।

(३) ग्लानि रहती है ।

(४) जी मिचलाता या उबकाइयाँ आती हैं ।

(५) खाँसी चलती है ।

(६) भोजनसे अरुचि रहती है ।

(७) शरीर भारी रहता है ।

(८) हल्का-हल्का दर्द होता है।
(९) अग्नि मन्दी हो जाती है।

दो दोषोंके गुल्मकी कल्पना।

अगर दो दोषोंके मिले हुए लक्षण दीखते हों, तो औषधिकी कल्पनाके लिये, वातसे और पित्तसे हुए, वात और कफसे हुए तथा पित्त और कफसे हुए—तीन तरहके गुल्मोंकी कल्पना कर लो।

नोट—जिस रोगीमें वात और पित्तके लक्षण मिलते हों, उसे वातपित्तज गुल्म समझो। इसी तरह बाकी दो को भी समझलो।

त्रिदोषज गुल्मके लक्षण।

अगर तीनों दोषोंसे गुल्म पैदा होता है, तो बड़े ज़ोरकी पीड़ा होती है, जलन होती है, गोला पत्थरके समान घन और ऊपरको उठा हुआ होता है, तत्काल विदग्धाजीर्ण पैदा करता है, मनको भ्रमित करता, शरीरको कमजोर करता, जठराग्निके बलको नाश करता और प्राणोंका संहार करता है। त्रिदोषज गुल्म असाध्य होता है।

रक्तगुल्मके निदान।

नवप्रसूता स्त्री अथवा गर्भ गिरानेवाली स्त्री अथवा रजस्वला स्त्री अगर अहितकारी आहार-विहार करती है, तो उस स्त्रीका "वायु" रक्तको ग्रहण करके, गर्भाशयमें, गोलेके समान गुल्म पैदा करता है। खुलासा यह है, कि इन स्त्रियोंके अहितकारी या

नुक़सान पहुँचानेवाले आहार-विहारोंसे "वायु" कुपित हो जाता है। वह कुपित वायु इनके गिरनेवाले खूनको रोक कर, गर्भाशयमें, खूनका गोला बना देता है।

नोट—बच्चा जननेवाली स्त्रीकी योनिकी राहसे, बच्चा होनेके बाद भी, ख़राब रहा हुआ खून निकलता रहता है। उस खूनका निकल जाना ही जच्चाके हक़में भला है। अगर वह खून किसी तरह रुक जाता है, तो स्त्रीके गर्भाशयमें खूनका गोला हो जाता है। उस गोलेके होनेसे, पीड़ा और दाह वगैर शिकायतें होती हैं। यह गोला क्यों होता है? वायुके कुपित होनेसे। वायु क्यों कुपित होता है? स्त्रीके अहित-कारी पदार्थ खाने-पीने और पुरुष-सग आदि मिथ्या विहार-करनेसे वायु कुपित होता है।

जिस तरह बच्चा जननेवाली प्रसूता या ज़च्चाका खून योनिकी राहसे निकल जाना जरूरी है, उसी तरह गर्भ गिराने वाली और रजस्वला स्त्रीका भी ख़राब खून निकल जाना जरूरी है। अगर ये भी अहितकारी आहार विहार करती हैं, तो इनके भी गर्भाशयोंमें "रक्त गुल्म" खूनका गोला हो जाता है। "चरक"में कहा है :—

> ऋतावनाहारतया भयेन विरूक्षणैर्वेगविनिग्रहैश्च।
> सस्तम्भनोल्लेखनयोनिदोषैर्गुल्म स्त्रियारक्तभवोऽभ्युपैति॥

रजोधर्मके समय उपवास करने, डरने, रूखे पदार्थ सेवन करने, मूत्रादि वेगोंके रोकने, स्तभन क्रिया करने, उल्लेखन (वमन) और योनिसम्बन्धी दोषोंसे स्त्रीके रुधिरजन्य गुल्म यानी रक्त गुल्म होता है।

रक्तधातुसे पैदा हुए गुल्मके निदान।

धातु रूपी रुधिरसे पैदा हुए गुल्मके विप्रकृष्ट निदान और लक्षण पित्तगुल्मके समान ही होते हैं, परन्तु अभिघातादि निदात विशेष करके होते हैं।

खुलासा यह है कि चरपरे, खट्टे, गरम, विदाही और रूखे पदार्थ सेवन करने, क्रोध करने, शराब पीने, धूपमें रहने, आगके पास ज़ियादा बैठने और अभिघात या चोट वगेर. लगने आदि कारणोंसे पित्तका गुल्म होता है। बस, इन्हीं कारणोंसे

स्त्री-पुरुषोंके रक्तधातुका गुल्म होता है। रक्तधातुके गुल्मके निदानोंमें अभिघात यानी चोट लगने आदिकी विशेषता रहती है। बस, निदानोंमें तो इतना ही फर्क़ है।

रक्त धातुसे हुए गुल्मके लक्षण।

रक्तधातुसे हुए गुल्मके लक्षण वही हैं, जो पित्तसे हुए गुल्मके हैं ; यानी ज्वर, प्यास, ग्लानि, शरीर और चेहरेका लाल होना, भोजन पचनेके समयमें दर्द ज़ियादा होना, पसीने आना, जलन होना और गुल्मका स्पर्श न सह सकना आदि जो लक्षण पित्तज गुल्ममें देखे जाते हैं, वही सब इसमें भी देखे जाते हैं।

आर्त्तव या रजके गुल्मके लक्षण।

लिख आये हैं, कि हालकी जच्चा—नवप्रसूता, गर्भ गिरानेवाली और रजस्वला स्त्रियोंके अहितकारी आहार-विहारोंसे—उनके गर्भाशयमें, गोला पैदा हो जाता है। उस गुल्मके होनेसे शूल, दर्द, दाह—जलन और पित्तज गुल्मके ज्वर, प्यास, ग्लानि, भोजन पचनेके समय दर्दका बढ़ जाना आदि लक्षण होते हैं। ये इस गुल्मके साधारण लक्षण हैं। इस रजोगुल्ममें कुछ विशेष लक्षण भी होते हैं और उन्हींसे इस गुल्मकी ठीक पहचान होती है। उन्हें भी सुनिये :—

रजोधर्मके समयमें यानी रजोधर्मकी तिथि आने पर, जिस तरह गर्भवतियोंका रज नहीं दिखाई देता ; उसी तरह इस गुल्मवालीका रज नहीं दीखता। जिस तरह गर्भवतीकी चूचियोंके अगले भाग यानी वींठनियाँ काली हो जाती हैं, जिस तरह गर्भवतीका चेहरा पीला-पड़ जाता है , उसी तरह इस गुल्मवालीकी चूचियोंकी वींठनी काली पड़ जाती हैं और चेहरा पीला पड़ जाता है। जिस तरह गर्भवतीको खाना नहीं भाता और वमन होती हैं ; उसी तरह इस

गुल्मवालीको भी भोजन नहीं भाता और कय होती हैं। इनके सिवा स्तनोंसे दूध निकलता है, तरह-तरहके भोजनोंपर मन चलता है, मुखसे पानी गिरता है और आलस्य रहता है। मतलब यह है, कि गर्भके सारे चिह्न इस गुल्ममें नजर आते हैं। जिस तरह, व्याधि या रोगके प्रभावसे, क्षय-रोगीका मन स्त्री-प्रसंग पर चलता है; उसी तरह व्याधिके प्रभावसे, रजोगुल्म होने पर, स्त्रीमें गर्भके सारे चिह्न दीखते हैं। गर्भवतीके पेटमें गर्भ हाथ पाँव आदि अंगोको चलाता हुआ घूमा करता है, पर रक्तगुल्मवालीके पेटमें हाथ-पाँव आदि अंग नहीं फड़कते, केवल पिंडके आकारकी कोई चीज फड़कती मालूम होती है और शूल चलते हैं। स्त्रियोंके ही होनेवाले गुल्मके विशेष लक्षण यही हैं।

अब यह सवाल पैदा होता है, कि जब रक्तगुल्मवाली स्त्रीमें गर्भके समस्त चिह्न नज़र आते हैं, तब इस बातका निश्चय कैसे हो सकता है, कि स्त्रीके गर्भाशयमें रक्तगुल्म—खूनका गोला है या गर्भ है। क्योंकि अगर गर्भ हो और रक्तगुल्म समझ लिया जाय, तो चिकित्सा करनेसे गर्भाशय और गर्भको नुक़सान पहुँच सकता है। इसी तरह अगर गुल्म हो और गर्भके चिह्न देख कर गर्भ समझ लिया जाय, तो चिकित्सा न करनेसे रोगिणीको हानि पहुँचना संभव है।

इसका समाधान या उत्तर यह है :—अगर पेटमें गर्भ होता है, तो हाथ पाँव आदि शाखा अंग फड़कते हुए मालूम होते हैं और शूल या दर्द नहीं होता; परन्तु गुल्म होनेसे हाथ पाँव आदि अंग नहीं चलते, गर्भका सा फड़कना मालूम नहीं देता; केवल कोई गोल पिंडाकार चीज़ फड़कती मालूम होती है और साथ ही शूल चलते हैं—दर्द होता है।

खुलासा यह है, कि गर्भके फड़कनेसे किसी भी तरहकी पीड़ा नहीं होती, पर रक्तगुल्मके समस्त पिण्डमें दर्द होता है। गर्भजात बालकके सारे अंग एक ही

समय नहीं फड़कते, यानी हाथ पैर आदि कोई एक अंग फड़कता है; पर रक्त-गुल्मका सारा पिण्ड फड़कता है और देरतक फड़कता रहता है।

शास्त्रमें, इस रक्तगुल्मकी चिकित्सा दस महीने बाद करनेकी आज्ञा है। इस पर कोई-कोई कहते हैं, कि नवें और दसवें महीनेमें बच्चा पैदा हो जाता है, इसीलिये आचार्य्योंने दस महीने व्यतीत होनेपर इलाज करनेकी राय दी है, ताकि गर्भ होनेका सन्देह दूर हो जाय। अगर दसवें महीनेके शेषमें भी बच्चा न हो, तो रक्तगुल्म समझा जाय।

जो ऐसी बात कहते हैं, वे ग़लती करते हैं; क्योंकि गर्भ तो हाथ-पाँव आदि अंगोंसे निरन्तर और बिना शूलके ही फड़कता है और गुल्म बिना हाथ पाँव चलाये पिंडाकार फड़कता है और शूल चलते हैं,—इस कथनसे शास्त्रकारोंने गर्भके संशयको दूर कर दिया है। फिर नव-दसवें महीनेमें ही बच्चा होनेका कोई पक्का नियम नहीं है। दस महीनेके ऊपर, बहुतसा समय जानेपर भी, बच्चे: होते हैं। "चरक"में लिखा है :—

तं स्त्री प्रसूते सुचिरेण गर्भं पुष्ट यदा वर्षगणैरपि स्यात्।

स्त्री गर्भ रहनेके बहुत समय बाद यानी कई वर्ष बाद भी बच्चा जनती है और ऐसा पैदा हुआ बालक खूब हृष्टपुष्ट होता है।

गुल्म और गर्भके फिरने-फडकनेमें जो भेद है वह तो है ही, इसके सिवाय एक और भेद है, उसे हम लिखना भूल गये। वह यह है, कि गर्भ रहनेसे जिस तरह पेट बढ़ता है; गुल्म होनेसे उस तरह नहीं बढ़ता। यद्यपि गुल्म होनेसे भी वमन आदि लक्षण गर्भिणीकी तरह ही होते हैं। "सुश्रुत"में लिखा है —

न स्पन्दते नोदरमेति वृद्धिं भवन्ति लिंगानिच गर्भिणीनाम्।
त गर्भकालातिगमे चिकित्स्यमसृग्भवं गुल्ममुशन्ति तज्ज्ञाः॥

रक्तगुल्म गर्भकी तरह नहीं फड़कता और पेट भी गर्भकी तरह

नहीं बढ़ता, परन्तु और लक्षण गर्भिणीके जैसे ही होते हैं। इसे वैद्य "रक्तगुल्म" कहते हैं। इसकी चिकित्सा गर्भकाल बीतने पर यानी दस महीने बाद करनी चाहिये।

"सुश्रुत"ने गर्भकाल बीतने पर रक्तगुल्मकी चिकित्साकी स्पष्ट राय दी है। चरकके मतमें गर्भकालका कोई ठिकाना ही नहीं है। यहाँ बड़ा मतभेद है। परन्तु भावमिश्रजी कहते हैं, गर्भकाल या दस महीने बीतने पर जो चिकित्सा करनेकी बात कही है, वह गर्भका संशय दूर करनेके लिये नहीं कही है, वरन इसलिये कही है, कि दसवें महीनेमें या इसके बाद रक्तगुल्मकी चिकित्सा आसानीसे हो सकती है। क्योंकि पुराना रक्तगुल्म सुखसाध्य समझा जाता है। जैसे,—

रक्तगुल्म पुराणत्व सुखसाध्यस्य लक्षणम्।

रक्तगुल्मका पुरानापन—सुखसाध्य होनेका लक्षण है और दस महीने बाद ही रक्तगुल्म पुराना समझा भी जाता है। जैज्जट आचार्य्य भी कहते हैं :—

दशमासोपरि पिण्डिते गुल्मे स्नेहादिना उपस्कृत देहाय न गर्भाशयक्षति-मादधातिरक्तभेदनमिति॥

दसवाँ महीना बीतनेके बाद गुल्मकी स्थिति होती है, तब तेल आदिसे स्त्रीके शरीरको संस्कार देकर, रुधिर-भेदन करनेसे गर्भाशयको नुक़सान नहीं पहुँचता।

खुलासा यह है कि, रक्तगुल्मके पुराना होनेपर चिकित्सा करनी चाहिये, नये की चिकित्सा न करनी चाहिये। रक्तगुल्म दस महीने बाद पुराना माना जाता है, अतः ग्यारह महीने बाद उसकी चिकित्सा करनी चाहिये, ताकि वह सुखसे आराम हो जाय और स्त्रीके गर्भाशयको किसी तरहकी हानि न हो।

गुल्मके असाध्य लक्षण।

जो गुल्म अत्यन्त पीड़ा और दाह करता है, जो पत्थरकी तरह घन और ऊपरको उठा हुआ रहता है, जो तत्काल विदग्धाजीर्ण पैदा

करता, मनको भ्रमाता, शरीरको दुर्बल और जठराग्निको बलहीन करता है, वह त्रिदोषज गुल्म असाध्य होता है ।

जो गुल्म क्रम-क्रम करके बहुत ही जियादा बढ़ गया हो, जिसने सारा पेट घेर लिया हो और रस रक्त आदि धातुओंका आश्रय ले लिया हो, जो दर्द चलाता हो, जो शिराओंसे बँधकर कछुएकी तरह ऊँचा हो गया हो ; जिसके साथ कमज़ोरी, अरुचि, जी मिचलाना, खाँसी, वमन, अत्यन्त ज्वर, प्यास, तन्द्रा और जुकाम ये उपद्रव हों—वह असाध्य है ।

जिस गुल्म-रोगीको ज्वर, श्वास, अतिसार और वमन हों तथा जिसके हृदय, नाभि, हाथ और पैरोंमें सूजन हो, वह गुल्म-रोगी मर जायगा ।

जिस गुल्म-रोगीको श्वास, शूल, प्यास और अरुचि हो, जिसका गुल्म यकायक ग़ायब हो जाय तथा कमज़ोरी हो, वह रोगी मर जायगा ।

(१) गुल्म रोगमें पहले "वायु"की शान्तिके उपाय करने चाहियें ; क्योंकि गुल्म रोगकी जड़ "वायु" है ।

(२) जहाँ दोष विशेषके लक्षण साफ प्रकट न होनेके कारण, निश्चय रूपसे यह न मालूम होता हो, कि अमुक दोषज गुल्म है, वहाँ भी वात शान्तिकारक औषधि आदि देनी चाहियें, क्योंकि वायुको शान्त करनेसे और दोष सहजमें शान्त हो जाते हैं ।

(३) वातज गुल्म रोगीको स्निग्ध—चिकने पदार्थोंसे स्वेदन करके—पसीने दिलाकर, विरेचन या जुलाब देना चाहिये । समया-

नुसार निरूहण और अनुवासन वस्ती भी करनी चाहिये। इस गुल्म-वालेको "दूध, हरड़ और रेंडीका तेल" मिलाकर पिलाना हित है। यह उत्तम जुलाब है।

(४) पित्तज गुल्ममें विरेचन या जुलाब अत्यन्त हितकारी है। पुराने गुड़के साथ हरड़का चूर्ण देनेसे अथवा त्रिफलेके काढ़ेके साथ निशोथका चूर्ण देनेसे दस्त होते और रोग शान्त हो जाता है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, पित्तज गुल्म वालेको काकोल्यादि घृतसे स्नेहन करना चाहिये, मधुर द्रव्योंका जुलाब देना चाहिये और इसी तरह निरूहण वस्ति करनी चाहिये।

(५) अगर पित्तज गुल्म रोगमें दाह, शूलकासा दर्द, नींद न आना, अस्थिरता और ज्वर—ये लक्षण हों; तो समझो कि गुल्म पकने वाला है। इस दशामें व्रण पकानेके लिए कोई मुनासिब दवा देनी चाहिये और जब वह पक जाय, तब "अन्तर्विद्रधि"की तरह इलाज करना चाहिये।

(५) कफज गुल्ममें वमन, उपवास—लंघन और स्वेद कर्म कराना—पसीने दिलाना हितकारी है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, कफज गुल्म-रोगीको पिप्पल्यादि घृतसे स्नेहन करना चाहिये, तेज जुलाब देना चाहिये और निरूहण वस्ति करनी चाहिये।

(६) भावमिश्रीजी कहते हैं, कफज गुल्म-रोगीको वातज गुल्म और कफज गुल्म—दोनों होकी दवा दी जा सकती हैं।

(७) कफज गुल्ममें—तिल, रेंडीके बीज और सरसों इन तीनोंको पीसकर और गरम करके, गुल्म पर गरम लेप करना चाहिये और लोहेके बर्तनसे उसे सेकना चाहिये। इससे बड़ा उपकार होता है।

(८) रक्त गुल्म वाली स्त्रीका इलाज ११ महीने बाद करना चाहिये। पहले स्नेह पान, स्वेदन और विरेचन करना चाहिये। भाव मिश्र लिखते हैं,—शरीरका स्वेदन और स्नेहन संस्कार करके, स्नेह

युक्त—चिकनाई मिला हुआ जुलाब देना चाहिये। इसके बाद और दवा देनी चाहिये।

(९) "सुश्रुत"में लिखा है :—रक्त गुल्मके भेदनके लिये, ढाकके क्षार या खारके साथ पकाया हुआ घी स्त्रीको पिलाना चाहिये। यह घी रक्त गुल्मको फौरन नाश करता है। उन्होंने और भी लिखा है, कि गरम पदार्थोंसे रक्तगुल्मको भेदन करके यानी फोड़कर, "प्रदर रोग"की तरह इलाज करना चाहिये।

(१०) गुल्म रोगमें पेट साफ रखनेसे बहुत उपकार होता है, अतः वैद्यको इस बात पर ध्यान रखना चाहिये। वैद्यको चाहिये, गुल्म-रोगीको वायु कुपित करने वाले—अधिक मिहनत, राह चलना, धूपमें घूमना और मैथुनादि कर्म्मों और वैसे ही आहारोंसे बचावे। रोगी और रोगीके घरवालोंको ये बातें बताता रहे। वायुकी शान्ति करनेवाले आहार-विहारादि गुल्म रोगके साधारण पथ्य हैं, अतः ये भी बता देने चाहियें। यहाँ तक, कि पित्त और कफके गुल्म वालेको भी वही चीज़ें दिलानी चाहियें, जो पित्त और कफको कुपित न करती हों तथा वायुको शान्त करती हों।

(११) "सुश्रुत"में लिखा है, जिस गुल्ममें दर्द हो, जो ऊपरकी ओर यानी बाहरको तरफ उठा हुआ हो, चलायमान न हो—स्थिर हो, जिसमें जलन होती हो—अगर वह गुल्म पकाव पर आगया हो या पक गया हो और उसमें दर्द भी हो—तो ऐसे गुल्ममें जोंकें लगाकर खून निकाल देना चाहिये अथवा फस्द खोल देनी चाहिये।

(१२) जिन गुल्म वालोंको दस्त न होता हो और अधोवायु भी न खुलती हो, अथवा ज़रा-ज़रा दस्त होता हो और गुदाकी हवा थोड़ी-थोड़ी या रुक-रुक कर खुलती हो, उन्हें दूधके साथ अदरख पिलानी चाहिये। साथ ही घड़ा, बोतल या ईंटसे सेक करना चाहिये।

(१३) प्रायः सभी गुल्म रोगी दुर्विरेच्य होते हैं, यानी उन्हें दस्तावर दवाओंसे भी दस्त नहीं आते या बडी मुश्किलसे आते हैं,

इसलिए ऐसे रोगियोंको पसीने दिलाकर किरमाला आदि औषधियों-से दस्त कराने चाहियें। लेप लगाना, मालिश करना, आगसे दाग देना और उपानह स्वेद करना तथा गुदामें वत्ती चढ़ाना ये सब उपाय करने चाहियें। वत्ती चढ़ानेका काम उस समय करना चाहिये, जबकि दस्त और अधोवायु रुक जावें। समन्दरनोन, अदरख, सरसों और कालीमिर्चको महीन पीसकर और कपड़े पर लगाकर वत्ती बना लेनी चाहिए। इस वत्तीको घीमें तर करके गुदामें घुसानेसे दस्त होता और हवा खुलती है। उदावर्त्त रोगमें लिखी हुई "फलवर्त्ति" भी काम दे सकती है। ताम्बेकी कटोरीमें "गुड़" रखकर आग पर चढ़ा दो। जब वह कुछ पतला हो जाय, उसमें "सेंधानोन" मिलाकर वत्ती बना लो। इस वत्तीको गुदामें चलानेसे भी दस्त हो जाता है। उदावर्त्त और गुल्म दोनोंमें ही यह काम देती है।

गुल्मकी विशेष चिकित्सा।

वातज गुल्मकी चिकित्सा।

नोट (१)—वातज गुल्मवालेको पहले घी वगैर से स्निग्ध करके पसीने निकालने चाहियें। इसके बाद स्निग्ध विरेचन, निरूह वस्ति और अनुवासन बस्ति देकर, समय और मात्राका विचार करके औषधि देनी चाहिये।

नोट (२)—रूखे पदार्थ सेवन करने और परिश्रम करनेसे पैदा हुए तेज पीड़ा वाले वातज गुल्ममें दस्त न होता हो और हवा न खुलती हो, तो रोगीको पहले स्नेह पान कराओ तथा स्निग्ध भोजन, अभ्यंग, स्निग्ध पान, निरूह और अनुवासन योगसे स्निग्ध करके गुल्म शान्तिके लिए स्वेदन प्रयोग करो। गुल्म रोगीके स्निग्ध होनेके बाद स्वेद ग्रहण करनेसे छेद या स्रोत नर्म हो जाते हैं और उल्वण वायुका दमन हो जाता है। वायुके शान्त होनेसे गुल्म नाश हो जाता है।

नोट (२)—गुल्ममें, विशेषकर नाभिके ऊपरके गुल्ममें, स्नेह पान हित है। पक्वाशयगत गुल्ममें वस्ति कर्म हित है। पेटमें फैले हुए गुल्ममें स्नेह पान और वस्ती कर्म दोनों ही हित है। वातज गुल्ममें दस्त और अधोवायुकी रुकावट होनेसे, वृंहण और गरम-चिकना अन्नपान तथा बारम्बार स्नेहपान करना हितकारी है।

(१) बड़ा हरड़का चूर्ण और रेंडीका तेल "गरम दूध"में मिलाकर पिलानेसे दस्त होते और वातज गुल्म नाश हो जाता है।

नोट—अगर कोठा रूखा हो और दस्त न होता हो, तो विनौलेकी गरीको फाँक कर दूध पीनेसे मल फूल जाता है और कोठेका रूखापन मिट जाता है। फिर दस्त खुलासा हो जाता है।

(२) सज्जीखार दो माशे, कूट दो माशे और केनकोकी जटाओं-का खार चार माशे पीस-कूट कर "अरण्डीके तेल"में मिलाकर पिलाओ—इस नुसखेसे वातज गुल्ममें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३) सोंठ चार तोले, सफेद तिल सोलह तोले और पुराना गुड़ आठ तोले—इन तीनोंको मिलाकर पीस लो और रखलो। इसकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है। एक मात्रा खाकर ऊपरसे गरम दूध पीनेसे वातज गुल्म, उदावर्त्त और योनिशूल—ये आराम हो जाते है।

(४) सोंठ २ तोले, चीतेकी छाल ८ तोले, तिल ४ तोले और पुराना गुड ४ तोले—इनको महीन पीसकर, निवाये-निवाये दूधके साथ पीनेसे गुल्म, उदावर्त्त और योनिशूल नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ३ से ६ माशे तक। परीक्षित है।

नोट—नं० ३ और ४ नुसख़ोंमें सिर्फ चीतेकी छालका फर्क है।

(५) अरण्डीके तेलमें "दूध" मिलाकर पीनेसे वातज गुल्म आराम हो जाता है।

(६) पञ्चमूलके काढ़ेमे जवाखार और शिलाजीत डालकर पीने-से वातज गुल्म आराम हो जाता है।

नोट—अगर इस तरह चिकित्सा करनेसे "कफ" कुपित हो जाय, तो लेखन और कफनाशक चर्या देने चाहियें। अगर "पित्त" कुपित हो जाय, तो जुलाव देना चाहिये। अगर दवा देनेसे दोष शान्त न हों—रोग बढता ही जावे या न घटे, तो रुधिर मोक्षण कराना चाहिये यानी फस्त खोलनी चाहिये।

(७) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, त्रिफला, आमले, वायविडंग और चीता—इन सातोंको दो-दो तोले लेकर सिलपर पीसलो और लुगदी बनालो। फिर तीन पाव उत्तम घी और तीन सेर गायका दूध तथा ऊपरकी लुगदीको कड़ाहीमें डालकर पकाओ। घी मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इसका नाम "त्र्यूषणाद्य घृत" है। इस घीके पीनेसे वातज गुल्म नाश हो जाता है।

(८) हाऊवेर, त्रिकुटा, इलायची, चव्य, चीता, सेंधानोन, जीरा, पीपरामूल और अजमोद हरेक दवाको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बनालो।

वेरका काढ़ा ४ सेर, मूलीका रस ४ सेर, दूध ४ सेर, दही ४ सेर, अनारका रस ४ सेर, गायका घी ४ सेर और लुगदी—इनको एकत्र मिलाकर घी पका लो। घी मात्र रहनेपर उतार लो। इस घीसे वातगुल्म, शूल, आनाह, ववासीर, श्वास, खाँसी, अरुचि, ज्वर, पसलीका दर्द, हृदयका दर्द और पेडूका दर्द ये आराम हो जाते हैं। इसका नाम "हपुषाद्य घृत" है।

(९) चीता, त्रिकुटा, सैंधानोन, इलायची, चव्य, अनार, अजमोद, पीपरामूल, ज़ीरा, हाऊवेर और धनिया—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

दही २ सेर, काँजी २ सेर, वेरीका काढ़ा २ सेर, मूलीका स्वरस २ सेर, गायका घी १ सेर और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छानलो। इसका नाम "चित्रकाद्य घृत" है। इसके सेवन करनेसे वात गुल्म, मन्दाग्नि, आटोप और शूल नाश हो जाते हैं।

पित्तगुल्म नाशक नुसखे।

नोट—पित्तगुल्म रोगीको काकोल्यादि घृत या महातिक्त घृत पिलाकर स्निग्ध करो। इसके बाद जुलाब दो और जुलाबके बाद बस्तिकर्म करो। अगर कुछ भी न करो, तो जुलाब जरूर दो। पित्तके गुल्म रोगमें जुलाब विशेष उपकारी है।

नोट—लिख आये हैं कि गुल्म रोगमें दाह, शूलकी तरह दर्द, स्तब्धता, निद्रा न आना, अस्थिरता और ज्वर—ये लक्षण हों, तो समझना चाहिये कि गुल्म पकने पर है। अगर पका न हो, पकने पर हो तो पकानेकी दवा देनी चाहिये और पक जाने पर "अन्तर्विद्रधिकी तरह" इलाज करना चाहिये। "वगसेन"मे लिखा है, ऐसा गुल्म हो तो उपानह स्वेद आदि करना चाहिये।

अगर गुल्म भारी, सख्त, अच्छी तरहसे स्थित, गूढ, मांसमें घुसा हुआ, बुरे रंगका और स्थिर हो, तो उसे पका हुआ समझो।

पके हुए गुल्मको व्रणकी तरह चीरना, शोधन करना और भरना—रोपन करना चाहिये।

अगर दोष अपने-आप ही ऊपर और नीचे प्राप्त हो, तो और उपद्रवोंकी रक्षा करते हुए बारह दिन तक उपेक्षा करनी चाहिये। इसके बाद शोधन करनेवाले घी देने चाहियें और इसके भी बाद तिक्त औषधियों के साथ शहद देना चाहिये।

(१) त्रिफलेके काढ़ेके साथ निशोथका चूर्ण खिलानेसे दस्त होकर पित्त-गुल्म आराम हो जाता है।

(२) हरड़का चूर्ण गुड़में मिलाकर देनेसे भी दस्त होकर पित्त-गुल्म शान्त हो जाता है।

(३) दाख और हरडके काढ़ेमें "गुड" मिलाकर सेवन करनेसे दस्त होकर पित्तगुल्म शान्त हो जाता है।

(४) कबीलेका चूर्ण "शहद या मिश्री" मिलाकर खानेसे दस्त होकर पित्तगुल्म शान्त हो जाता है ।

नोट—ये चारों नुसख़े दस्तावर हैं, पहले यही देने चाहियें, क्योंकि जुलाव देना जरूरी है । इनके बाद और दवा दे सकते हो ।

(५) मुलेठी, चन्दन और दाख—इनका चूर्ण "दूध"के साथ सेवन करनेसे पित्तगुल्म आराम हो जाता है ।

(६) मुलेठीका चूर्ण "शहद"में मिलाकर खाने और ऊपरसे चाँवलोंका धोवन पीनेसे पित्तज गुल्म आराम हो जाता है ।

(७) सोलह तोले त्रायमाणको १६० तोले या दो सेर पानीमें पकाओ ; जब ३२ तोले जल रह जाय, उतार कर छान लो ।

फिर आमलोंका स्वरस ३२ तोले, गायका दूध ३२ तोले और गायका घी ३२ तोले तैयार रखो ।

रोहिणी, कुटकी, नागरमोथा, त्रायमाण, धमासा, दाख, भुईं-आमला, जीवन्ती, लाल चन्दन और नील कमल—इन सबको एक-एक तोले लेकर, सिल पर पानीके साथ महीन पीस कर लुगदी बना लो ।

अब लुगदी, घी, दूध और आमलोंके रस तथा त्रायमाणके काढ़ेको मिलाकर कड़ाहीमें डाल दो और मन्दाग्निसे घी पका लो । इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १॥ तोले तक है । इसके सेवन करनेसे पित्तगुल्म, रक्तगुल्म, विसर्प, पित्तज्वर, हृदयरोग, कामला और कोढ़ नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—शालिचाँवलोंका भात, गाय और बकरीका दूध, परवल, घी, दाख, फालसे, आमले, खजूर, अनार, मिश्री और खिरेंटीका तेल—ये सब पदार्थ पित्त-गुल्ममें पथ्य है ।

कफज गुल्म नाशक नुसख़े।

नोट—कफज गुल्ममें स्नेह कर्म, उपनाह स्वेद, तेज जुलाब, वस्ति कर्म, वमन और उपवास—हित हैं। अगर अग्नि मन्द हो, पेट भारी हो, कोठा भारी मालूम होता हो, शरीर गीले कपड़ेसे ढका हुआ सा मालूम होता हो, जी मिचलाता हो तथा अरुचि आदि उपद्रव हों, तो "वमन" करानी चाहिये।

(१) तिल, रेंडीके बीज, अलसी और सफेद सरसों समान-समान लेकर, पानीके साथ, सिल पर पीस लो। फिर इनको एक लोहेके बासन पर लीप दो। फिर उस बासनको आगपर तपा-तपा कर उसीसे "कफ गुल्म"को सेको। इसीको स्वेदन करना या पसीना दिलाना कहते हैं। परीक्षित है।

(२) पुरानी वारुणी मदिरा या पुरानी शराबमें "वृहत्पंचमूलका काढ़ा" मिलाकर पीनेसे कफज गुल्म शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बेलकी जड़, स्योनाककी जड़, गम्भारीकी जड़, पाढ़लकी जड़ और गनियारीकी जड़—इनका काढ़ा पीनेसे कफज गुल्म आराम हो जाता है। यही "वृहत्पंचमूल" है। जो काढ़ेको शराबमें मिलाकर न पी सकें, वे केवल काढ़ेको ही पीवें।

(३) माठेमें अजवायनका चूर्ण और थोड़ासा विरिया सञ्चरनोन मिलाकर पीनेसे अग्निदीपन होती तथा वायु, मूत्र और मलका अनुलोमन होता है। कफज गुल्मवालेको—मल, मूत्र और अधोवायु रुकने पर—यही छाछ देनी चाहिये। इससे हवा खुलती और मल-मूत्र उतरते हैं। परीक्षित है।

द्वन्द्वज गुल्म नाशक नुसखे।

(१) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, पाढ़, हाऊवेर, हरड़, कचूर, अजमोद, वनतुलसी, विषाविल (त्तित्तिड़ी), अम्लवेत, अनार, पोहकर-मूल, धनिया, ज़ीरा, चीता, वच, जवाखार, सज्जीखार, पाँचों नोन और चव्य—इन सब दवाओं को समान-समान लेकर कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णका नाम "हिंग्वादि चूर्ण" है। इसकी मात्रा २ माशे से ४ माशे तक है। इसको सवेरे ही गरम जल या शराबके साथ खाना चाहिये। अथवा भोजनके साथ नित्य खाना चाहिये। इससे "वातकफ जनित" गुल्म, पसलीका दर्द, हृदयका दर्द, आनाह, मूत्र-कृच्छ्र, गुदाका शूल, योनिशूल, बवासीर, संग्रहणी, तिल्ली, पाण्डुरोग अरुचि, हिचकी, खाँसी, श्वास और गलग्रहरोग आराम हो जाते हैं।

नोट—गोलियाँ अधिक दिन ठहरती है, इसलिये गोली बनानी हों, तो बिजौरे नीबूके रसमें चूर्णको खरल करके तीन-तीन माशे की गोलियाँ बनालो।

(२) हींग, पीपरामूल, धनिया, जीरा, वच, चव्य, चीता, पाढ़, कचूर, विषांविल, कालानमक, सेंधानोन, विरिया संचर नोन; सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, जवाखार, सज्जीखार अनार दाना, हरड़, पोहकर-मूल, अम्लवेत, हाऊवेर और काला ज़ीरा—इन सब दवाओंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको एक दिन बिजौरे नीबूके रसमें खरल करके सुखालो। इसके बाद, इसे अदरखके रसमें खरल करलो और सुखा कर बोतलमें भर कर रख दो। इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण गरम जलके साथ खानेसे, गुल्म, अफारा, बवासीर, ग्रहणी, उदावर्त्त, प्रत्याध्मान, विष, उदर रोग, पथरी, दोनों तरहकी

तूनी, अरुचि, उरुस्तम्भ, मनका अत्यन्त भ्रम, वहरापन, अष्ठीलिका और प्रत्यष्ठीलिका रोग फौरन आराम होते हैं। अश्विनी कुमारोंकी संहितामें लिखा हुआ यह चूर्ण हृदय, कोख, वंक्षण, कमर पेट, पेड़ू, स्तन और पसलियोंमे "वायु और कफ"से हुए शूलोंको नाश करता है।

त्रिदोपज गुल्म नाशक नुसखे।

(रक्तगुल्मके सिवा, सब तरहके गुल्मोका इलाज)

(१) सन्निपात गुल्मको असाध्य जानकर इलाज करना चाहिये और उसमें त्रिदोष नाशक औषधि देनी चाहियें।

(२) लंघन, अग्निदीपक, गरम, चिकने, वातानुलोमक और मच तरके पुष्टि-कारक अन्नपान गुल्म रोगमें हितकारी है।

(३) सब तरहके गुल्मोंमें, पहले अनेक उपायोंसे वातको शमन करना चाहिये, क्योंकि वातके शान्त होने पर और दोष आपसे आप शान्त हो जाते हैं।

(४) गुल्म रोगमें स्वेदकर्मकी बड़ी जरूरत रहती है। कुम्भी स्वेद, पिण्ड स्वेद, इष्टका स्वेद तथा सुखोष्ण लेप और उपानह स्वेद आदि द्वारा गुल्म रोगको शमन करना चाहिये। घड़ेमें वातनाशक क्वाथोंको अथवा कांजी आदिको भर कर स्वेद देते हैं। इसको "कुम्भी स्वेद" कहते हैं। पकाये हुए मांसादिके पिण्डसे जो स्वेद दिया जाता है, उसे पिण्ड स्वेद कहते हैं। ईंटके चूर्णको गरम कांजीमें भिगोकर जो स्वेद दिया जाता है, उसे इष्टका स्वेद कहते हैं।

(५) गुल्मके स्थानमें तथा जिस तरफ गुल्म हो उस तरफको बाहुकी सन्धिकी नीचे वाली शिरामेंसे रक्तमोक्षण कराना चाहिये और स्वेद तथा वातानुलोमक क्रियाएँ करनी चाहियें। इन उपायोंसे गुल्म रोग चला जाता है।

(६) गुल्म रोगमें स्वेद देनेसे स्रोत शुद्ध होते है, बलवान वायु शमन होती है और मल मूत्रादिकी रुकावट दूर होकर गुल्मका विवन्ध नष्ट हो जाता है।

सूखा मांस, मछली, मूली, आलू, रतालू सब तरहकी दाल और मोठे फलोंसे गुल्म-रोगीको परहेज़ कराना चाहिये। दालोंमें उड़द और कुल्थीको मनाही नहीं है।

गुल्म रोगमें अगर उर्ध्ववात हो, तो निरूहण करना चाहिये ।

अगर गुल्म-रोगमें मल और अधोवात रुके हों, तो समन्दरनोन, अदरख, आक, सरसों और कालीमिर्च इनको एकत्र पानीके साथ पीसकर, कपड़ेपर लगाकर, बत्ती बनानी और घी चुपड़कर गुदामें रखनी चाहिये।

(१) हींग, कूट, धनिया, हरीतकी—हरड, निशोथकी जड, काला नोन, सेंधानोन, जवाखार और सोंठ—इन सबको समान-समान लेकर पीस-कूट लो। फिर "घी"में भूंजकर महीन कर लो और छानकर रख दो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। अनुपान— जौका काढ़ा है; यानी चूर्ण खाकर ऊपरसे जौका काढ़ा पीनेसे गुल्म और उसके उपद्रव दूर हो जाते हैं।

(२) तीन माशे सज्जीखार और तीन माशे पुराना गुड मिलाकर सेवन करनेसे गुल्म रोग शान्त हो जाता है।

(३) वच, हरड़, हींग, सेंधानोन, अम्लवेत, जवाखार और अजवायन—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान—गरम जल है। इससे सात दिनमें शूल सहित गुल्म जडसे नष्ट हो जाता है।

(४) चार माशे शोरा और चार माशे अदरख इनको मिलाकर खानेसे गुल्म नाश हो जाता है।

(५) छे माशे घीग्वारके गूदेमें "घी" मिलाकर, उसपर सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हरड और सैंधेनोनका बारीक चूर्ण बुरक-बुरक कर खानेसे गुल्म नष्ट हो जाता है।

(६) हींग, अम्लवेत, वच, छोटी हरड, अजवायन, जवाखार, सेंधानोन और विड़नोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। इसको गरम पानीके साथ खानेसे सब तरहके गुल्म, शूल, मन्दाग्नि और अरुचि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) सज्जीखार ४ तोले, गुड़ ८ तोले और अजगन्ध—हुलहुल

४ तोले—इनको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको पानीके साथ खानेसे सब तरहके गुल्म और शूल नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) बच २ तोले, हरड़ ३ तोले, वायविडंग ६ तोले, सोंठ ४ तोले, हींग १ तोले, पीपर ८ तोले, चीता ५ तोले और अजवायन ७ तोले—इनको पीस-छान कर रखलो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। अनुपान—गरम जल या शराब। इससे गुल्म रोग नाश हो जाता है।

रक्त गुल्म नाशक नुसख़े।

नोट—रक्तगुल्मवाले रोगीको, स्वेदन* और स्नेहन† भरपूर कराके, स्नेहयुक्त विरेचन‡ देना चाहिये। इसके बाद और दवा करनी चाहिये। रक्त गुल्मको गरम दवाओंसे भेदन करना चाहिये। जब भेदन हो जाय, प्रदर नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। अगर गुल्मके फूटनेसे बहुत खून गिरने लगे, तो तत्काल "रक्तपित्त नाशक दवा" देनी चाहिये। अगर वायुकी पीड़ा हो, तो "वातनाशक" उपाय करना चाहिये। इस रोगमें भारी और अभिष्यन्दी अन्नपानोंसे अग्नि और बलकी रक्षा करनी चाहिये।

(क) इस गुल्ममें प्रायः दस्त कब्जकी शिकायत रहती ही है, अतः दो या तीन तोले साफ रेंडीका तेल पाव भर गरम दूधमें मिलाकर पिलानेसे विरेचन—जुलाब हो जाता है। यही स्नेहयुक्त विरेचन है और हर किसीको अच्छा है। इससे दो चार दस्त हो जाते हैं।

(ख) सनाय, हरड़के छिलके, दाख और मिश्री इन चारोंका काढ़ा पिलानेसे भी दस्त हो जाते हैं।

(ग) गुल्म-स्थान पर "नारायण तेल"की मालिश करके कुछ-कुछ गरम कांजीका स्वेद देना चाहिये अथवा अरण्डीके पत्तोंको उबालकर उनका बफारा गुल्मको देना

---

* स्वेदन=बफारा देकर या सेक कर पसीने कराना। † स्नेहन=घी तेल आदि चिकनी चीज पिलाकर सूखे कोठेको चिकना करना। ‡ स्नेहयुक्त विरेचन=घी तेल आदि चिकनी चीज़ मिला हुआ जुलाब। जैसे किसी दस्तावर काढ़े या दूधमें "रेंडीका तेल" मिलाना।

चाहिये। अथवा उड़दके आटेकी रोटी बनाकर और उसे "नारायण तेल"से चुपड़ कर गुल्मपर रखकर बाँधनी चाहिये। इन क्रियाओंके बाद नीचेकी दवाएँ सेवन करानी चाहियें।

(१) शतावर कंजाकी छाल, देवदारु, भारंगी और पीपर— इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। इस चूर्णको दो तोले "काले तिलोंके काढ़ेके साथ" खानेसे रक्त गुल्म नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई शतावरकी जगह सौंफ भी लेते हैं।

(२) भारंगी, सोंठ, मिर्च और पीपर,—समान-समान लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णको २ तोले "काले तिलोंके काढ़े"में मिलाकर पीनेसे जवानीके बाद बन्द हुआ आर्त्तव भी जारी हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पुराना गुड़, भारंगी और पीपल—इनको समान-समान लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णको "काले तिलोंके काढ़ेके साथ" लेनेसे रक्त गुल्म नाश हो जाता है।

(४) गुड़, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, घी और भारंगी—इनके चूर्णको "तिलके काढ़े"में मिलाकर पीनेसे, रज नष्ट होनेसे—मासिक धर्म बन्द होनेसे या योनिके खूनसे होने वाला रक्त गुल्म नष्ट हो जाता है।

(५) हर सवेरे, दो तोले आमलोंके रसमें ३ माशे कालीमिर्च मिलाकर पीनेसे रक्तगुल्म नष्ट हो जाता है।

(६) गोरख-मुण्डी और वंसलोचन—इनको समान-समान लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णको "मिश्री और शहद"में मिलाकर खानेसे रुधिरसम्बन्धी गुल्मवाली स्त्रीके दोष स्वच्छ हो जाते हैं।

(७) निर्मली, गन्धक, पीपर, हरड़ और अमलताशके फलका गूदा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीसलो। फिर इस चूर्णको "थूहरके दूध"के साथ खरल करो और रखलो। इसमेंसे एक माशे चूर्ण "शहद"के साथ चाटनेसे स्त्रीका जलोदर रोग नाश हो जाता है।

"दही-भात" इस पर पथ्य है। इस पर इमलीके फलका शीतल रस पीना चाहिये। परीक्षित है।

(८) ढाकके खारके पानीके साथ पकाया हुआ "घी" पीनेसे स्त्रियोंका रक्तगुल्म फौरन नाश हो जाता है। इसकी विधि पृष्ठ ५६६-६००में देखिये। परीक्षित है।

(९) जवाखार, सोंठ, कालीमिर्च, और पीपर समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण ज़रासे "घी"में मिलाकर पीनेसे रुधिर-स्राव होकर स्त्रियोंका रक्त गुल्म नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) घीग्वारका अर्क़ या घीग्वारका आसव—"कुमार्य्यासव" भी इस रोगमें विशेष हितकर है।

(११) घीग्वारके रसमें ज़रासा "नमक, सोंठ, पीपर और काली-मिर्चोंका चूर्ण" मिलाकर हर दिन नियमके साथ खानेसे रक्त गुल्ममें बहुत लाभ होता है।

(१२) अकेली मुण्डीका काढ़ा या चूर्ण अथवा आसव बनाकर सेवन करनेसे रक्त गुल्म आराम हो जाता है।

हिंग्वादि चूर्ण ।

हींग, पीपरामूल, धनिया, ज़ीरा, बच, चव्य, चीता, पाढ़, कचूर, तिंतडीक, सेंधानोन, संचरनोन, विड़नोन, सोंठ, कालीमिर्चें, पीपर, जवाखार, सज्जीखार, दाड़िम, हरड़, पोहकरमूल, अम्लवेत, हाऊबेर, और ज़ीरा—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस छानलो। फिर इस चूर्णको एक दिन "अदरखके रस"में खरल करके सुखालो। सूखने

पर फिर "बिजौरे नीबूके रस"में खरल करके सुखालो। इसीका नाम "हिंग्वादि चूर्ण" है।

यह चूर्ण "अश्विनी कुमार संहिता"में लिखा है। इसकी मात्रा ३ माशेकी है और अनुपान "गरम जल" है। इसके सेवन करनेसे गुल्म, अफारा, ववासीर, ग्रहणी, उदावर्त्त, प्रत्याध्मान, विप, उदर रोग, पथरी, दोनों तूनी, अरुचि, उरुस्तम्भ, मनका अत्यन्त भ्रम, वहरापन अष्ठीलिका, प्रत्यष्ठीलिका तथा हृदय, कोख वंक्षण, कमर, पेट, पेड़, स्तन और पसलियोंके वायु और कफसे हुए दर्द नाश हो जाते हैं।

दूसरा हिंग्वादि चूर्ण।

हींग १ तोले, बच २ तोले, कालानोन ३ तोले, सोंठ ४ तोले, ज़ीरा ५ तोले, हरड़ ६ तोले और कूट १५ तोले—इनको पीस-कूटकर छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण "गरम जल"के साथ खानेसे गुल्म नाश हो जाते हैं।

वज्रक्षार चूर्ण।

समन्दर नोन, सेंधानोन, कचियानोन, जवाखार, शोरा, सुहागेकी खील और सज्जीखार—इनको समान-समान लेकर पहले तीन दिन तक "थूहरके दूध"में खरल करो और धूपमें सुखा लो। फिर तीन दिन तक "आकके दूध"में खरल करो और धूपमें सुखा लो। इसके बाद इसका गोलासा बनाकर उसे "आकके पत्तों"में लपेटो और एक हाँडीमें रखकर, हाँडीपर ढक्कन लगाकर मुँह बन्द कर दो। फिर हाँडीको चूल्हे पर रखकर पकाओ और पकनेपर उतार लो।

इसके बाद सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजवायन, ज़ीरा और चीतेकी छाल—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो।

अब ऊपरका समन्दरनोन आदिका क्षार जितना लो, उतना ही

सोंठ, मिर्च आदिका चूर्ण लो और दोनोंको मिलाकर शीशीमें रखलो। मतलब यह है, अगर पाँच तोले क्षार लो तो पाँच ही तोले सोंठ आदिका पिसा-छना चूर्ण लो।

इसकी मात्रा १॥ माशेसे ४ माशे तक है। वातज गुल्म रोगमें इसे गरम जलके साथ लो; पित्तजमें घीके साथ; कफजमें गोमूत्रके साथ; त्रिदोषजमें काँजीके साथ तथा उदावर्त्त, तिल्ली, मन्दाग्नि और सूजन वग़ैरः में शीतल जलके साथ लो। इसे ब्रह्माने कहा था। इसके सेवन करनेसे अजीर्ण और अजीर्ण-सम्बन्धी सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

काकायन गुटिका।

कचूर, पोहकरमूल, दन्तीकी जड, चीतेकी जड़, अडहर, अदरख, वच और निशोथ प्रत्येक दवा चार-चार तोले; हींग ३ तोले, सेंधा-नोन ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सोंठ ८ तोले, अम्लबेत ८ तोले, अजवायन २ तोले, सफेद जीरा २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, धनिया २ तोले, कोइल २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, अजमोद २ तोले, हरड़ ८ तोले, वायविडंग ८ तोले और सूखा अनारदाना ८ तोले—इन सबको एकत्र मिलाकर कूट-पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "बिजौरे नीबुओंके रस"में खरल करके छै-छै माशेकी गोलियाँ बनालो।

ये गोलियाँ काकायन ऋषिकी ईजादकी हुई हैं। इनमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम और दोपहरको गरम जलके साथ खानेसे गुल्म फूट कर आराम हो जाता है तथा बवासीर, हृदय-रोग, संग्रहणी और कृमि रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

साधारण अनुपान "गरम पानी" है। वातज गुल्ममें काँजीके साथ; पित्तज गुल्ममें दूधके साथ; कफज गुल्ममें गोमूत्रके साथ; रक्त गुल्ममें गरम दूधके साथ; पुराने गुल्ममें गोमूत्रके साथ, कफ-वातज गुल्ममें शराबके साथ, सन्निपातज गुल्ममें त्रिफलेके काढ़े और

गोमूत्रके साथ और स्त्रियोंके रक्तगुल्ममें ऊँटनीके दूध या साधारण गरम दूधके साथ सेवन करना चाहिये।

भार्ङ्गीषट्पल घृत।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, सोंठ, चीता और जवाखार—इनको चार-चार तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीसलो। यही कल्क है। दशमूलका काढ़ा २५६ तोले, अरण्डकी जड़का काढ़ा २५६ तोले, भार्ङ्गीका काढ़ा २५६ तोले, गायका दूध २५६ तोले और दही २५६ तोले तैयार करलो।

अब एक क़लईदार कड़ाहीमें ६४ तोले गायका घी, कल्क या लुगदी और ऊपरके तीनों काढ़े और दूध-दहीको मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो।

इस घीके सेवन करनेसे गुल्म, उदर रोग, अरुचि, भगन्दर, मन्दाग्नि, खाँसी, ज्वर, क्षय, सिरके रोग, संग्रहणी, कफवातसे पैदा हुए समस्त रोग और घोर मन्दाग्नि नाश हो जाती है। मात्रा—बला-बल अनुसार ६ माशेसे २ तोले तक।

दन्ती हरीतकी।

एक ढीली पोटलीमें २५ हरड़ बाँधलो। दन्तीकी जड़ १०० तोले और चीतेकी जड़ १०० तोले तथा ऊपर की पोटली—इन तीनोंको चौंसठ सेर जलमें औटाओ। जब आठ सेर काढ़ा रह जाय, उतारकर "हरड़" अलग निकालकर रखलो और काढ़ा कपड़ेमें छानलो।

अब इस काढेमें निकाली हुई २५ हरड़ और १०० तोले पुराना गुड़ डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते कलछीके लगने लगे, इसमें निशोथका पिसा-छना चूर्ण १६ तोले, तिलका तेल १६ तोले, पीपरका चूर्ण १६ तोले और सोंठका चूर्ण १६ तोले मिला दो और नीचे उतार लो।

जब यह शीतल हो जाय, इसमें पुराना शहद १६ तोले, दाल-

चीनीका चूर्ण ५ तोले, तेजपातका चूर्ण २ तोले, इलायचीका चूर्ण २ तोले और नागकेशरका चूर्ण २ तोले मिलादो। यही "दन्ती हरीतकी" है।

इसमेंसे एक हरड़ और ६ माशे गुड़ नित्य खानेसे दस्त होकर गुल्म, तिल्ली, सूजन, बवासीर और हृदय रोग आदि अनेक रोग आराम हो जाते हैं।

नाराच घृत ।

चीतेकी छाल, त्रिफला, दन्तीकी जड़, निशोथकी जड़, कण्टकारी, सीजका दूध और वायविड़ंग—प्रत्येक दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। फिर एक सेर घी, लुगदी और चार सेर पानी मिलाकर कडाहीमें डाल कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे डेढ़ तोले तक है। इसको गरम पानी या जङ्गली जानवरोंके मांस-रसके साथ सेवन करनेसे वात गुल्म और उदावर्त्त रोग नाश हो जाते हैं।

वृहत् कालानल रस ।

अभ्रक भस्म, लोहभस्म, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सुहागा, कुटकी, वच, जवाखार, सज्जीखार, सैंधानोन, कूट, त्रिकुटा, देवदारु, तेजपात, इलायची, दालचीनी और खैर—इन सत्रह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर रखो। पहले पारे और गन्धककी घुटाई करके कज्जली बनालो। फिर उसमें अभ्रक भस्म, लोहभस्म और सुहागा मिलाकर खरल करो। पीछे कुटकी आदिको अलग पीस-छान कर इसीमें मिलादो। पीछे इस चूर्णको एक दिन "जयन्तीके रस"में खरल करके सुखालो। फिर एक दिन "चीतेके काढ़े"में खरल करके सुखालो और अन्तमें "धतूरेके पत्तोंके रस"में खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखालो। इसकी मात्रा १ से २ गोली तक है। अनुपान—दूध या जल है।

सवेरे-शाम, बलाबल अनुसार, एक-एक या दो-दो गोली दूध या जलके साथ निगलनेसे पाँचों तरहके गुल्म, तिल्ली, यकृत, ग्रहणी, पीलिया, सूजन, हलीमक, कामला, रक्तपित्त, जीर्ण ज्वर और विराम ज्वर नाश हो जाते हैं।

पञ्चानन रस ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तूतिया, शुद्ध जमालगोटेके बीज, छोटी पीपर और अमलताशका गूदा—इनको एक-एक तोले ले लो। पहले गन्धक, और पारेको खरल करके कजली करलो। फिर बाकी चीजें पीस-छान कर उस कजलीमें मिलादो। शेषमें, इस चूर्णको सोजके दूधमें खरल करके मटर-समान गोलियाँ बनाकर छायामें सुखालो। एक-एक गोली आमलोंके रसके साथ निगलनेसे रक्तगुल्म आराम हो जाता है।

पलाशक्षार घृत ।

पलाश या ढाकका वृक्ष लाकर सुखा लो। फिर उसे जलाकर राख कर लो। उस राखको एक बासनमें दूना पानी डालकर घोल दो। ६ घन्टे बाद, इस बर्तनका नितरा हुआ पानी दूसरे बर्तनमें धीरेसे छान लो और राखको फैंक दो। फिर एक घन्टे बाद, इस पानीको नितारकर कड़ाहीमें धीरेसे छान लो। फिर कड़ाहोको आग-पर चढ़ाकर धीरेसे पकाओ। जब सब पानी जल जाय, एक बूँद भी न रहे, तब कड़ाहीको उतार लो। उसकी पैंदीमें जो पदार्थ लगा हो उसे चाकूसे छुड़ा लो। बस यही "पलाश या ढाक का खार" है।

ढाकका क्षार १ छटाँक, गायका घी १ छटाँक और पानी पाव-भर लेकर आगपर पकाओ, जब पकते-पकते फटे हुएके समान झाग आ जायँ अथवा पानी जल जाय, तब घीको पका हुआ समझो। इस घीके पीनेसे रक्तगुल्म निश्चय ही स्रव-स्रवकर नष्ट हो जाता है; यानी इस घीके सेवन करनेसे खूनका स्राव होकर—खून गिरकर अत्यन्त

पीड़ावाला रक्त गुल्म भी आराम हो जाता है। इस घीमेंसे १ तोला घी सवेरे और १ तोला शामको "मिश्री" मिलाकर खाना चाहिये।

नोट (१)—अगर इस घीसे या अन्य दवाओंसे अधिक खून गिरने लगे और खून गिरनेकी वजहसे कमजोरी मालूम हो, तो तत्काल, बिना विलम्ब किये, नीचे लिखी हुई तरकीबोंसे कामलो। इस मौके पर रक्तपित्त या रक्तातिसारकी चिकित्सा काम देती है, क्योंकि ऐसी चिकित्सासे खून बन्द हो जाता है :—

(१)—कमलकी जड़, कसेरू या सिंघाड़े इनमेंसे किसी एकका चूर्ण बनाकर और उसमें थोड़ीसी "मिश्री" मिलाकर, शीतल पानी या कच्चे दूधके साथ खानेसे खूनका गिरना फौरन बन्द हो जाता है।

(२)—जरासी रसौत "दहीमें मिलाकर" खानेसे खून गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

(३)—कमल-केशर और नागकेशर दोनों समान-समान लेकर पीस-छानलो। इस चूर्णको "मिश्री और मक्खन" मिलाकर खानेसे रुधिरका गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

नोट (२)—अगर वायुकी वृद्धि मालूम दे, तो वातनाशक "दशमूलादि" दवाओंके साथ "दूध" पकाकर रोगिणीको पिलाना चाहिये। "द्राक्षासव" और "पिप्पल्यासव" भी लाभदायक हैं।

सूचना—यह रोग बड़ी-बड़ी मुश्किलोंसे आराम होता है। अगर इसमें ज़रा सी भी भूल हो जाती है, तो यह बढ़ जाता और असाध्य हो जाता है ; अतः खूब सोच-समझ कर इलाज करना चाहिये।

तेरहवाँ अध्याय

संस्कृतमें प्लीहा, अंगरेज़ीमें स्प्लीन और बोलचालकी ज़बानमें तिल्ली कहते हैं।

तिल्ली या प्लीहा एक बड़ा शारीरिक यन्त्र है। यह यन्त्र पेटमें, बाईं तरफ, ऊपरकी ओर रहता है। मामूली हालतमें प्लीहा हाथसे मालूम नहीं होती, किन्तु बढ़नेपर, हाथ लगाते ही, कूखके बाईं तरफ मालूम होती है। इसका आकार सदा एकसा नहीं रहता ; खूनकी कमी-बेशीसे इसका आकार घटता-बढ़ता रहता है। साधारणतः इसकी लम्बाई ५ इञ्च, चौड़ाई १ या २ इञ्च, मुटाई ११॥ इञ्च और वज़न तीन या साढ़े तीन छटाँकके क़रीब होता है। बुढ़ापेमें इसकी लम्बाई-चौड़ाई-मुटाई और तोल घट जाती है।

सविराम या कम्पज्वरमें यह बहुत बढ जाती है। कभी-कभी यह कई पौन्डतक हो जाती है। ज्वरके बहुत दिन बने रहनेसे, मलेरिया ज्वर आनेसे अथवा मलेरियाके स्थानमें रहनेसे यह बढ़कर बड़ा कष्ट देती है। प्लीहाके बहुत ही जियादा बढ़ जानेसे रोग कष्टसाध्य और असाध्य हो जाता है।

सभी मनुष्योंके एक तिल्ली रहती है, परन्तु कितनी ही बार एकसे अधिक प्लीहा भी हो जाती हैं। ये प्लीहा छोटी होती हैं और असल

प्लीहाके नीचे लगी रहती हैं। इनका आकार मटरसे लेकर अखरोटके बराबर तक होता है।

खाया हुआ अन्न जैसे-जैसे पचता है, वैसे-वैसे प्लीहा बढ़ती रहती है और थोड़ी देरके बाद यह फिर घटने लगती है। जब भोजन का अण्डलाल नामका पदार्थ तिल्लीमें जमा होता है, तब यह बढ़ती है; किन्तु जब वह खूनमें जा मिलता है, तब वह घट जाती है। खूनके सफेद और लाल कण इसी प्लीहासे पैदा होते हैं। आयुर्वेदमें लिखा है :—

शोणिताज्जायते प्लीहा वामतो हृदयादधः।
रक्तवाहि शिराणां स मूलं ख्यातो महर्षिभिः॥

बाँई तरफ, हृदयसे नीचे, प्लीहा पैदा होती है। महर्षियोंने कहा है, कि यह खून बहानेवाली नसोंकी मूल है।

प्लीहा वृद्धिके साधारण लक्षण।

यह प्लीहा बाँई पसलीमें बढ़ती है। इसकी वजहसे रोगी अत्यन्त दुःखी रहता है, मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है, अग्नि मन्द हो जाती है, पीड़ामें कफ और पित्तके चिह्न नजर आते हैं, बल घट जाता है, शरीर पीला पड़ जाता है।

मतलब यह है, कि तिल्ली बढ़नेसे हल्का-हल्का ज्वर सदा-बना रहता है। हर दिन किसी न किसी समय ज्वर चढ़ता है अथवा एक दिन बीचमें छोड़कर जाड़ेका ज्वर आता है। तिल्लीकी जगहपर दर्द होता है, जलन होती है, दस्तकब्ज * रहता है, पेशाब लाल या थोड़ा-थोड़ा उतरता है। श्वास, खाँसी, मन्दाग्नि, प्यास, वमन, कमजोरी आदि उपद्रव होते हैं, मुँहका स्वाद खराब रहता है, आँखें

* तिल्लीके बढ़नेसे आँतों पर उसका दबाव पड़ता है, इससे दस्तकब्ज या कोष्ठबद्धता रहती है।

और हाथोंकी उँगलियाँ पीली पड़ जाती हैं। आँखोंके सामने अँधेरा आता है और बेहोशी प्रभृति उपद्रव भी होते हैं।

जब प्लीहा बहुत बढ़ जाती है, तब नाक और दाँतोंसे खून गिरता है, खूनकी कय होती है, दाँतोंकी जड़ोंमें घाव हो जाते हैं ; पैर, आँख और सारे शरीरमें सूजन आ जाती है, खूनके दस्त लगते हैं तथा पाण्डु, कामला और उदरामय प्रभृतिके लक्षण होते हैं।

(१) प्लीहा और यकृत-रोगीको दो तरहका ज्वर होता है :— (१) वह जो छोड़-छोड़कर आता है। उसमें किसी रोगीको कम्प होता है और किसीको नहीं होता ; (२) दूसरा वह जो दिन-रात चढ़ा रहता है। कभी उसका वेग कम हो जाता है और कभी बढ़ जाता है। प्रायः सवेरेके समय ज्वर कुछ कम हो जाता है। किसी-किसीको दिन-रात एकसा ज्वर चढ़ा रहता है। इस तरह ज्वरको भोगते-भोगते, रोगी क्रमशः रक्तहीन होता जाता है। रोग अधिक पुराना होने पर और अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। किसी-किसीको खाँसी हो जाती है। यद्यपि इस खाँसीसे फेंफड़ेमें किसी तरहकी ख़राबी नहीं होती, तथापि यकृत पर प्लीहाका दबाव पड़नेसे फेंफड़ेमें खूनकी अधिकता होती है। किसी-किसी मनुष्यका, अन्तमें, सारा [illegible]र सूज जाता है। किसी-किसीको रक्तातिसार और प्रवाहिकादि [illegible]ामाशय-सम्बन्धी रोग हो जाते हैं। किन्तु इस रोगका सबसे [illegible]कर उपसर्ग मुँहमें घाव होना है। मुँहमें घाव होनेसे रोगी प्रायः दुश्चिकित्स्य हो जाता है।

(२) प्लीहा रोग आराम होनेके बाद भी, अनेक लोगोंके मुँहमें घाव देखे जाते हैं। किसी-किसीके, तिल्ली आराम होनेके बाद, एक साल तक, मुखमें घाव रहते हैं। बहुत लोगोंके तिल्ली और यकृत [illegible]न्हों महीने बढ़े रहते हैं ; किन्तु उनको ज्वरादि उपद्रव कुछ भी [illegible]हीं होते ; पर ऐसे रोगियोंका पेट बहुत बढ़ जाता है। ऐसा [illegible] रोग तराई, जलाशयोंके पासके स्थानों और मलेरियाके स्थानमें

होता है। बहुतसे लोग तिल्ली और यकृतके बढ़ने पर भी हर तरहसे तन्दुरुस्त रहते हैं। उनका पाचन-सम्बन्धी भी कोई शिकायत नहीं रहती। हमारे देशके छोटे-छोटे बालकोंकी तिल्ली बहुत बढ़ जाती है—तूम्बासा पेट निकल आता है। इसका कारण—उनको ठूँस-ठूँस कर दूध और मीठा खिलाना है।

निदान और सम्प्राप्ति।

कुल्थी, उडद और सरसोंका साग आदि विदाही पदार्थ और भैंसका दही आदि अभिष्यन्दी पदार्थोंके सेवनसे मनुष्यके "रुधिर और कफ" दूषित हो जाते हैं। रुधिर और कफ अत्यन्त दूषित होकर स्वयं बढ़ते और तिल्लीको बढ़ाते हैं।

डाक्टरीमें लिखा है, ज्वरके अधिक दिनों तक शरीरमें बने रहनेसे, मलेरिया ज्वर आनेसे, मलेरियासे दूषित स्थानमें रहनेसे अथवा मीठे और चिकने भोजनोंसे "खून" बढ़कर तिल्ली बढ़ती है। इसके सिवा, बहुत खाकर तेज सवारी पर चढ़ने और कसरत आदि मिहनतके काम करनेसे भी तिल्ली अपनी जगहसे हटकर बढ़ती है।

मलेरिया आदि ज्वरोंमें शरीरमे, कम्प होनेसे, प्लीहाकी वृद्धि होती है। कहते हैं, शरीरमें बारम्बार कम्प होनेसे, बाहरका खून शरीरके भीतर जाकर, शरीरके सारे यन्त्रमें जमा हो जाता है। उसी खूनसे यकृत और तिल्लीकी वृद्धि होती है। कम्पज्वरमें, शरीरका चमड़ा और बाहरी शिरायें संकुचित हो जाती हैं। इसलिये उनके ऊपर की तरफका खून भीतरकी तरफ दौड़ता है और प्लीहा और यकृतमें इकट्ठा होकर उनको बढ़ाता है। किन्तु और जिन-जिन यन्त्रोंमें खून जाकर इकट्ठा होता है, उनसे अपने-आप जल्दी ही निकल जाता है, इसलिये उनकी वृद्धि नहीं होती। यकृत और तिल्लीकी शिराओंमें रुधिर

वारम्वार सञ्चालित होकर उनके वढ़नेमें मदद करता है, इसलिये वे दोनों यन्त्र स्थायीरूपसे वढ़ते हैं।

कम्प ज्वरमें ही तिल्ली वढ़ती है, यह वात नहीं है। मलेरियामें, कम्पन होनेपर भी तिल्ली वढ़ती है। मलेरियाके स्थानोंमें रहनेसे भी तिल्ली वढ़ जाती है। ज्वरके कुछ समयतक शरीरमें ठहर जानेसे और नवीन ज्वरमें, चिकित्सा और पथ्यके दोषसे भी, तिल्ली और यकृत वढ़ जाते हैं। अधिक कुनैनके सेवनसे भी यकृत और प्लीहा ख़राव हो जाते हैं और उनके साथ ज्वर पुराना पड़ जाता है। तरुण ज्वरमें पथ्य देना महाहानिकारक है। इसीसे वैद्य लोग पहले दो चार लङ्घन कराते हैं, परन्तु डाक्टर लोग ज्वरके आरम्भमे ही पथ्य-पर पथ्य देते हैं। नये ज्वरमें पथ्य देना, प्लीहा और यकृतकी वृद्धिका प्रधान कारण है। अत्यन्त कुनैनके सेवन करनेसे जो तिल्लीकी वृद्धि होती है, उसके साथ एक प्रकारका विच्छेदी ज्वर होता है, जिसे लोग "कुनैनका ज्वर" कहते हैं।

रुधिरसे हुई प्लीहाके लक्षण।

ग्लानि, भ्रम, दाह, शरीरके रंगका वदल जाना, शरीरमें भारीपन, मोह और रक्तोदर होना ये रुधिर की प्लीहाके लक्षण हैं।

नोट—रक्ताधिक्य प्लीहामें पित्ताधिक्य प्लीहाके ही लक्षण होते हैं। फ़र्क़ इतना ही है, कि इसमें प्यास उसकी अपेक्षा अधिक लगती है।

पित्तसे हुई प्लीहाके लक्षण।

ज्वर, प्यास, दाह, मोह और विशेषकरके शरीरका पीला हो जाना—ये लक्षण पित्तकी प्लीहामे होते हैं।

कफसे हुई प्लीहाके लक्षण ।

अगर प्लीहामें पीडा कम हो ; वह मोटी, कडी और भारी हो तथा अरुचि समेत हो, तो कफकी प्लीहा समझो ।

वायुसे हुई प्लीहाके लक्षण ।

अगर प्लीहा वायुसे होती है, तो कोठा जकडा रहता है , नित्य "उदावर्त्त रोग"की सी पीड़ा रहती है और चारों तरफ वेदना होती है ।

नोट—वाताधिक्य प्लीहा होनेसे दस्तकी कब्ज़ियत ज़ियादा रहती है, वायु ऊपरको चढ़ती है और दर्द अधिक रहता है ।

असाध्य लक्षण ।

जिस प्लीहा रोगमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हों, उसे असाध्य समझो ।

नोट—आधुनिक ग्रन्थोंमें लिखा है, नाक और दांतोंसे खून गिरे, खूनकी कय हों, गुदासे खून गिरे, खून-मिले दस्त हों, दांतोंकी जड़ोंमें घाव हो, पैर आँख और सारे शरीरमें सूजन हो, पाण्डु और कामलाके लक्षण हों—तो आराम होनेकी आशा नहीं करनी चाहिये ।

प्लीहा नाशक नुसखे ।

नोट—प्लीहा-चिकित्सामें रोगीका पेट साफ रखना चिकित्सकका मुख्य कर्त्तव्य है, अतः पहले यही उपाय करना चाहिये । नयी तिल्ली वालेको दस्तावर दवा दे सकते हो, पर पुरानी तिल्लीमें दस्तावर दवा या जुलाब देना बुरा है । इस भूलसे बहुधा

"उदरामय रोग" हो जाता है, जिसका आराम करना कठिन है। अगर भूलसे उदरामय हो ही जाय, तो कोई विषम ज्वर नाशक ग्राही औषधि देनी चाहिए।

नोट—(२)—अगर तिल्ली रोगके साथ रक्तातिसार,सूजन या पाण्डु-कामला आदि रोग हों, तो उनकी भी दवा तिल्लीकी दवाके साथ देनी चाहिये। अगर तिल्ली रोगके साथ संग्रहणी रोग हो, तो रोगीके आराम होनेकी आशा नहीं के समान है।

नोट (३)—अगर तिल्ली वालेको ज्वरका ज़ोर हो, तो ऐसी दवा दो, जो तिल्ली और ज्वर दोनोंमें उपकारी हो। अगर ज्वरका बहुत ही ज़ोर हो, तो तिल्लीकी दवा बन्द करके पहले ज्वरकी दवा देनी चाहिये। जब ज्वरका जोर घट जाय, तब फिर तिल्लीकी दवा जारी कर देनी चाहिये।

नोट (४)—अगर तिल्लीमें दर्द बहुत हो, तो दर्द नाश करनेका उपाय ऊपरसे करते रहो। जैसे—गरम जलसे सेक करो अथवा पेट पर कस कर फलालेन बाँध दो।

नोट (५) अगर मुँहमें छाले हों, तो "कत्था" पीसकर लगाओ। अथवा कोई काढ़ा बनाकर उसके कुल्ले कराओ। चमेलीके पत्ते, गिलोय, जवासा, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा और आमला इन दवाओंको कुल १ छटाँक भर लेकर १ सेर पानीमें औटाओ, जब आधा सेर पानी रह जाय, छानकर शीतल करलो और एक छटाँक "शहद" मिलाकर कुल्ले या गरगरे कराओ।

(१) पुराना गुड़ और बड़ी हरड़का चूर्ण समान-समान मिलाकर, बलाबल अनुसार, गरम जलके साथ, फाँकनेसे प्लीहा और यकृत दोनों आराम हो जाते हैं।

(२) पीपरोंका चूर्ण दूधके साथ खानेसे अथवा गुड़ और पीपरोंका चूर्ण मिलाकर खानेसे अथवा ३।४ पीपर पानीमें पीस कर पीनेसे प्लीहा रोग नाश हो जाता है। "पीपर" प्लीहा रोगकी अक्सीर दवा है।

(३) बड़ी हरड़ और कालानोन समान-समान मिला कर खाने और गरम पानी पीनेसे प्लीहा नाश हो जाती है।

(४) समन्दरकी सीपीकी भस्म दूधके साथ खानेसे तिल्ली रोग नाश हो जाता है।

(५) सेंधानोन पानीके साथ महीन पीसकर "आकके पीले-पीले पत्तों पर" लेस दो और उन्हें छायामें सुखालो। फिर सूखे हुए

पत्तोंको एक हाँडीमें भर कर, हाँडीका मुँह ढकनेसे बन्द कर दो और सन्धों तथा सारी हाँडी पर मजबूत कपरौटी कर दो। कपरौटी चार पाँचसे कम न करना। जब हाँडी सूख जाय, उसे गज-भर गहरे और उतने ही चौड़े-लम्बे गढ़ेमें रखकर, आरने कण्डोंमें फूँक दो। जब आग शीतल हो जाय, हाँडीको निकाल लो और कपरौटी खोल कर भीतरसे दवा निकाल कर किसी शीशीमें भर दो। इनमेंसे एक या दो माशे दवा "शहद"में मिलाकर चाटनेसे अथवा दहीके पानी या तोडमें घोल कर पीनेसे सब तरहका प्लीहा रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) आध पाव "पीपर" किसी काँचके बासनमें रख दो। ऊपरसे ढाकके खारका पानी इतना भर दो, कि पीपर डूब जावें। फिर उस बर्तनको छायामें रखा रहने दो। जब वह पानी सूख जाय, उसमें फिर ढाकके* खारका पानी भर दो और सूखने दो। इस तरह सात बार करो, जब सातवीं बारका भी पानी सूख जाय, पीपरोंको पीस छान कर रख दो। इसमेंसे एक या दो माशे पीपरोंका यही चू[illegible] गरम पानीके साथ खानेसे प्लीहा, मन्दाग्नि और गुल्म रोग निश्चय [illegible] नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) शंखकी नाभिकी भस्म चार या ६ माशे—दो तोले बिज[illegible] नीबूके रसके साथ, नित्य, खानेसे कछुएके आकारकी भयङ्कर [illegible] भी कट जाती है। परीक्षित है।

शरफोंकेकी जड़ ४ माशेसे ६ माशे तक, खूब महीन पीस कर गायकी छाछमें मिलाकर, ३१ दिन तक, पीनेसे बड़ी-से-बड़ी, [illegible] और वैद्योंसे त्यागी हुई प्लीहा भी नाश हो जाती है। आत्रेयजी [illegible] हैं, जिस तरह पानी पर पत्थर तैरना असम्भव है, उसी त[illegible] दवासे तिल्लीका आराम न होना असम्भव है। परीक्षित है।

*ढाकके खारकी विधिके लिए इसी भागके पृष्ठ ५९९—६०० देखो। खार पानीमें घोल देनेसे खारका पानी बन जाता है।

(८) खूब पके हुए आमोंका रस "शहद"में मिलाकर पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है, इसमें ज़रा भी शक नहीं ।

(९) सेमलके पेड़के फूल रातमें उबाल कर रख देने और सवेरे ही उन्हें "राईके चूर्ण"के साथ खानेसे तिल्ली आराम हो जाती है ।

(१०) अजवायन, चीतेकी जड़, जवाखार, पीपरामूल, दन्ती और पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण, गरम जल या शराबके साथ, खानेसे तिल्ली रोग नष्ट हो जाता है ।

(११) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, कूट, जवाखार और सेंधानोन—समान-समान लेकर पीस-छान लो । इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण, बिजौरे नीबूके रसके साथ, खानेसे तिल्ली रोग नष्ट हो जाता है ।

(१२) सत्यानाशी कटेरी लाकर सिलपर पीसो और कपड़ेमें निचोड़कर स्वरस निकाल लो । यह स्वरस १ तोले और शहद १ तोले, दोनोंको मिलाकर मथो और नित्य पीओ । इससे घोर प्लीहा रोग भी नष्ट हो जाता है । यह नुसख़ा फेल नहीं होता । कम-से-कम १४ रोज़ तक तो पी देखो । परीक्षित है ।

(१३) चीतेकी जड़को पानीमें पीसकर रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंमेंसे २।३ गोली "पके हुए केलेकी गहर"में भरकर खानेसे तिल्ली रोग चला जाता है

(१४) समन्दरफेन और मिश्री—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । इसमेंसे एक तोले चूर्ण सवेरे ही कोरे-कलेजे खाकर ऊपरसे "पानी" पीनेसे तिल्ली रोग निश्चय ही नाश हो जाता है ।

(१५) आकके पत्तोंका चूर्ण "पुराने गुड़"में मिलाकर खानेसे तिल्ली रोग नष्ट हो जाता है ।

(१६) बथुएके ५ तोले स्वरसमें "साँभर नमक" १ माशे पीसकर मिला दो । पहले ग्यारह भुने हुए चने मुँहमें रख कर और होठ बन्द

करके खूब चबाओ—खाओ मत। इन चनोंकी सोंधी-सोंधी गन्धसे लरक अपना मुँह खोल देती है। आप चनोंको थूककर, बिना एक पल की भी देर किये, वहीं तैयार रखा हुआ बथुएका स्वरस पीलो। अगर चने थूक कर देरसे रस पीओगे, तो लरक मुँह बन्द कर लेगी और आपका बथुएका रस पीना बेकार होजायगा। इस उपायसे तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है, पर फुर्तीकी ज़रूरत है।

(१७) लहसन, पीपरामूल और हरड़ खाकर "गोमूत्र" पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(१८) सेमरके फूलोंको रातमें भिगोकर, सवेरे ही "कुटकीका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे तिल्ली रोग नाश हो जाता है।

(१९) चव्यके काढ़ेमें "चित्रकका चूर्ण" मिलाकर सवेरे ही पीनेसे, सम्पूर्ण उदर रोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं।

(२०) पाँचों नमक लेकर पीस लो। फिर नमकोंके चूर्णको "थूहरके दूध"में सात दिन तक और "आकके दूध"में सात दिन तक खरल करो और हर दिन सुखाओ। इसके बाद उस सूखे हुए चूर्णको थूहरके पोले डण्डेमें भरकर, पुटपाककी विधिसे, ६ घण्टे तक पकाओ। आग शीतल होने पर, निकाल कर रख लो। इसमेंसे १ तोले चूर्ण हर दिन सवेरे ही खानेसे आठ तरहके उदर रोग, पाँच तरहके गुल्म, शूल, हैजा, सूजन और प्रतूनी नामक वात रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—खरल करते समय, हर दिन थूहर और आकका दूध ताजा देना और चूर्णको छायामें सुखाना। थूहरके डण्डेमें चूर्ण भर कर, ऊपरसे बड़ या जामुनके पत्ते लपेटो और ऊपरसे एक अंगुल मोटा मिट्टीका लेप करो। फिर उसे धूपमें सुखाकर, जंगली कण्डोंकी आगमें पकाओ, जब वह अंगारके समान लाल हो जाय, ६ घण्टे तक पकले, निकाल लो। यही पुटपाक-विधि है।

(२१) बाँझ ककोड़ेकी सूखी जड़ ६ माशे, शहद १ तोला और कालीमिर्च पाँच नग—इनको पीसकर मिला लो। यह १ मात्रा

है। इसको दिनमें एक वार नित्य पानीके साथ खानेसे तिल्ली और खून-विकार १ हफ्ते में आराम हो जाते हैं।

(२२) नौसादर ३ रत्तीसे ५ रत्ती तक "पके हुए पपीते"में मिलाकर खानेसे तिल्ली गल जाती है।

(२३) शंखकी भस्म ४ रत्ती और मंडूर भस्म १ रत्ती—दोनोंको मिलाकर "नीबूके रस"के साथ सेवन करनेसे प्लीहा और यकृत-पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—कौड़ीकी भस्म या मोतीको सीपकी भस्म चार रत्ती और मडूर भस्म १ रत्ती मिलाकर नीबूके रसके साथ खानेसे भी तिल्ली गल जाती है।

(२४) एक छटाँक छोटी पीपर आध सेर गायके दूधमे सात दिन तक भिगोओ और फिर छायामें सुखा लो। हर दिन पहलेका दूध निकाल फैंको और ताज़ा दूध भर दो। जब सातवें दिन दूध डाल चुको; आठवें दिन पीपरोंको सुखा दो। पीछे इनको पीस-छान कर रख लो। इसमेंसे एक-एक माशे चूर्ण सवेरे ही और दोपहरके भोजनके वाद, छै-छै माशे "शहद"मे मिलाकर चाटनेसे तिल्लीको सख्ती और उसका बढ़ना आराम हो जाता है। साधारण तिल्लीमें यह नुसखा अच्छा काम देता है। परीक्षित है।

(२५) शङ्खभस्म २ रत्ती, कौड़ोकी भस्म १ रत्ती और मोतीकी सीपकी भस्म १ रत्ती,—इन तीनोंको मिलाकर, सवेरे-शाम, गायके थोड़ेसे "गरम दूध"के साथ खानेसे वढ़ी हुई तिल्ली घटने लगती है। परीक्षित है।

(२६) मूलीका खार, वैंगनका खार, जवाखार और सज्जीखार—इन सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ रत्ती सवेरे और ६ रत्ती शामको, एक-एक तोले "मूलीके रस"में मिलाकर, खानेसे प्लीहाका वढ़ना रुक जाता है। परीक्षित है।

(२७) आकके पत्तोंको हाँडीमें रखकर, उनपर थोड़ा सेंधानोन विछा दो और ऊपरसे फिर आकके पत्ते विछा दो। हाँडीका मुख

बन्द करके, हाँडीको आगमें पकाओ। पीछे पत्तोंको निकालकर पीस लो। इसमेंसे ४ रत्ती सवेरे और ४ रत्ती शामको "दहीके तोड़"के साथ खानेसे तिल्ली रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(२८) दो तोले सहँजनेकी जड़की छालको डेढ़ पाव पानीमें पकाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतारकर छान लो। इस काढ़ेमें २ रत्ती पीपलका चूर्ण, २ रत्ती चीतेकी जड़का चूर्ण और १ माशे सेंधानोन मिला दो। इसमेंसे आधा सवेरे और आधा शामको पी लो। इससे तिल्लीकी सख्ती और बढ़ना आराम होता है। तिल्लीके नरम होते ही दवाको छोड़ दो—फिर मत खाओ। अत्युत्तम नुसख़ा है।

(२९) दारूहल्दी १ तोला, कुटकी ४ माशे, गिलोय ४ माशे और सफेद पुनर्नवा ४ माशे लेकर, डेढ़ पाव पानीमें औटाओ। जब डेढ़ छटाँक जल रह जाय, उतारकर छान लो और शीतल हो जाने पर ६ माशे "शहद" डालकर पीलो। इस तरह सवेरे-शाम, दोनों समय, इस काढेके पीनेसे ऐसे रोगी आराम हो गये हैं, जिनकी तिल्ली बहुत ही बढ गई थी, पेट ढोल हो गया था, हाथ पैरों वग़ैर. अङ्गोंमें सूजन आ गई थी अथवा सारा शरीर सूज गया था, शरीर पीला हो गया था, भूख एक दम मारी गई थी, दस्त साफ न होता था—हरदम क़ब्ज बना रहता था, शरीरमें ज्वर सूक्ष्म रूपसे आठ पहर बना रहता था अथवा समयपर उतर जाता था और फिर बड़े ज़ोरसे चढ़ता था और जिन्होंने कुनैन-मिश्रित ज्वर नाशक उग्र औषधियाँ सेवन कर ली थी। हमने इस नुसखेको धीरज दिला- दिलाकर जिन्हें भी पिलाया, उन्हें ही पूरा लाभ हुआ। लेकिन उन्हें लाभ न हुआ, जो चट रोटी पट दाल चाहते थे और जिनको दवाएं शीघ्र-शीघ्र बदलनेकी आदत सी हो गई थी। इसमें शक नहीं, कि जो इस काढेको धीरज और विश्वासके साथ खाते हैं उनकी जान बच जाती है। सुपरीक्षित है।

नोट—इस नुसख़ेकी जान "दारुहल्दी" है। वह शीत ज्वर और तिल्ली वढ़नेमें अपूर्व काम करती है। वह तिल्ली और आँतोको सकुचित करती है यानी तिल्लीको वढ़ने नहीं देती। कुनैनमें दोष हैं। उससे आदमी वहरा हो जाता है, कम सुनता है, कानोंमें सनसनाहट होती और सिर घूमता है। इसी तरह और भी उपद्रव होते हैं। उसके वहुत दिनों तक सेवन करनेसे पुरुष नपु सक हो जाता है। वह चढ़े ज्वरमें दी नहीं जा सकती। उसका आमाशय, पक्वाशय और दिमाग पर बुरा असर होता है, पर दारुहल्दी चढे ज्वरमें वेखटके दी जा सकती है। इसके सेवन करनेसे ज्वरका जोर घट जाता है। ज्वरके उतर जाने पर, अगले दिन, हल्की मात्रामें, दिनमें ४।५ वार दारुहल्दी देनेसे ज्वर कतई रुक जाता है। इससे कुनैनकी तरह कोई ख़रावी नहीं होती, अत वैद्यों और गृहस्थोंको, कम-से-कम गरीवोंके उपकारार्थ, शीतज्वर और तिल्लीके मार भगानेके लिए, दारुहल्दी या दारुहल्दीके मेलसे वने हुए नुसख़े काममें लाने चाहियें। दारुहल्दीसे पुराना प्रमेह, व्रण, कामला, नेत्र, पीड़ा, मासिक धर्मके समयकी पीड़ा, गर्भाशय-सम्वन्धी विकार आराम हो जाते हैं और विगड़ा हुआ खून साफ होता है। दारुहल्दी और त्रिफला तोले-तोले भर लेकर, काढा वनाने और ४ माशे "शहद" डाल कर पीनेसे प्रमेह—ख़ास कर पुराना प्रमेह आराम हो जाता है।

(३०) सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर अरौ सहँजनेकी छाल—इनको दो-दो माशे लेकर आठ तोले जलमें पकाओ। जव दो तोले पानी रह जाय, इसमे आधा माशे "सेंधानोन" डालकर पीलो। इस काढ़ेके कुछ दिन पीनेसे तिल्ली गलने लगती है।

(३१) अजवायन, चीतेकी जड़की छाल, वायविडंग और वच—वरावर-वरावर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ४ माशे चूर्ण सवेरे और ४ माशे शामको "माठे"के साथ पीनेसे तिल्लीकी सख्ती दूर हो जाती है।

(३२) शरफोके और मुण्डीके रसमें या काढ़ेमें ज़रासा "शहद" मिलाकर पिलानेसे वालकोंकी तिल्ली घट जाती है।

(३३) हल्दी २० तोले, सेंधानोन २० तोले और घीग्वारका रस अस्सी तोले—इन सवको मिलाकर एक मिट्टीकी हाँडीमें रख दो। इसमें से ६ माशे दोपहरके भोजनके वाद और ६ माशे रातके

भोजनके बाद खानेसे अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी ठीक हो जाती है।

(३४) शंखका चूर्ण ४ तोला, सीपका चूर्ण ४ तोला, शुद्ध आमलासार गन्धकका चूर्ण ४ तोला, शुद्ध मण्डूर ४ तोला, सुहागा भुना ४ तोला, नौसादर ४ तोला, साँभरनोन ४ तोला, सोंठका चूर्ण ४ तोला, पीपरोंका चूर्ण ४ तोला, चीतेका चूर्ण ४ तोला और अजवायनका चूर्ण ४ तोला—इन सबको एकत्र पीसकर, एक सेर "जम्भीरी नीबूके रस"में मिलाकर मज़बूत बोतलोंमें भर दो और उन बोतलोंको जमीनमें गाड़दो। १४ दिन बाद निकालकर रख लो। इसमेंसे चार-चार माशे दवा भोजनके बाद, दिनमें २ या ३ दफा, खानेसे तिल्ली, गोला, शूल और अजीर्ण आदि रोग नाश हो जाते हैं। बड़ी अच्छी चीज है। वैद्योंके सिवा हर गृहस्थको भी बनाकर रखनी चाहिये। परीक्षित है।

(३५) छोटी पीपर गुलाबके अर्क या सौंफके अर्कमें अथवा शीतल जलमें घिसकर पिलानेसे बच्चोंकी तिल्ली गल जाती है।

(३६) पीपरको दूधमें पकाकर, वही दूध बालकको पिलानेसे तिल्ली रोग जाता रहता है।

(३७) रविवारके दिन बाँझ ककोड़ेकी गाँठ लाकर, रोगीके पास, चूल्हे पर बाँध दो। ज्यों-ज्यों गाँठ सूखती जायगी, त्यों त्यों तिल्ली घटती जायगी। यह नुसखा परमोत्तम है।

(३८) ६ रत्ती चीतेका क्षार ६ माशे "शहद"में मिलाकर चाटनेसे यकृत और प्लीहोदर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

प्लीहा नाशक उत्तमोत्तम योग।

वज्र क्षार चूर्ण।

संचरनोन, जवाखार, समुद्रनोन, कचलोन, सधानोन, सुहागा, और सज्जी—इन सवको वरावर-वरावर दो-दो तोले लेकर पीस-कूट लो।

इस चूर्णको मन्दारके दूधमें तीन दिन तक खरल करो। हर दिन खरल करके धूपमें सुखाते रहो। जव तीन दिन तक मदारके दूधमें खरल हो ले, फिर तीन दिन तक सेंहुड़के दूधमें खरल करो और नित्य धूपमें सुखाओ। अव इस चूर्णको तोलो। जितना यह चूर्ण हो, उतने ही आक या मदारके पत्ते ले लो। एक हाँडीमें नीचे कुछ आकके पत्ते रखो। पत्तों पर ऊपरका चूर्ण रखो। चूर्ण पर फिर पत्ते रखो, पत्तों पर फिर चूर्ण। इस तरह तह जमा कर, हाँडी पर ढक्कन देकर, तीन कपरौटी करो और हाँडीको सुखालो। जव हाँडी सूख जाय, उसे गज़-भर गहरे-लम्वे-चौड़े गढ़ेमें, जंगली कण्डोंके बीचमें रख कर फूँक दो। जव आग शीतल हो जाय, हाँडीको निकाल लो। इसके वाद कपरौटी खोलकर, भीतरसे दवाको निकाल लो।

अव जितनी दवा हाँडीसे निकले, उतनी ही नीचेकी दवाएँ वरावर-वरावर लेकर पीसो-छानो और उसमें मिला दो। वे दवाएं ये हैं—सोंठ, कालीमिर्च, पीपर वायविड़ंग, राई, हरड़, आमले, वहेड़े, चव्य और भुनी हींग। मतलव यह कि हाँड़ीका क्षार १५ तोले हो तो ये दसों दवाएँ डेढ़-डेढ़ तोले लेकर १५ तोले कर लो और सवको मिला लो। यही "वज्र क्षार चूर्ण" है।

इस चूर्णको माठेके साथ पीनेसे सब तरहके उदर रोग, गुल्म, अष्ठीला, मन्दाग्नि,अरुचि, तिल्ली और यकृत आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

हिंग्वादि चूर्ण।

भुनी हीग, सोंठ, मिर्च, पीपर, कूट, जवाखार और सैंधानोन—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमें से ३ या ४ माशे चूर्ण "बिजौरे नीबूके रस"के साथ खानेसे पुरानी तिल्ली और शूल रोग नाश हो जाते हैं; पर यह चूर्ण कुछ दिन लगातार खाना चाहिये। परीक्षित है।

अभया लवण।

नीमकी छाल, ढाककी छाल, कुडाकी छाल, आक, थूहर, चिरचिरा, चीता, बरना, अरणी, बथुआ, गोखरू, कटेरी, कटाई, दुर्गन्ध करंज, कोइली—हाफरमाली, कड़वी तोरई और पुनर्नवा—इन सब वृक्षोंका पञ्चाग लेकर ओखलीमें कूट लो और एक हाँडीमें रखकर ढकना बन्द कर दो। फिर हाँडीको चूल्हे पर रखकर, नीचे तिलकी लकड़ियाँ जलाओ। जब राख हो जाय, उतार लो और भीतरसे राखको निकाल लो।

इसमें से एक सेर राख लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ; जब आठ सेर पानी रह जाय, उतार कर, क्रमश: २१ बार छान लो।

इस क्षार जलको फिर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। इसे पकनेको रखते ही इसमें सेंधानोन १ सेर, बडी हरडका चूर्ण आध सेर और गोमूत्र ८ सेर मिला दो और पकने दो। जब यह गाढ़ा होनेपर आवे, इसम काला जीरा २ तोले, त्रिकुटा २ तोले, हींग २ तोले, अजवायन २ तोले, कूट २ तोले और कचूर २ तोले—पीस-छान कर मिलादो।

इसमेंसे ६ माशे लवण गरम जलके साथ खिलानेसे तिल्ली, गुल्म, आनाह, अष्ठीला और मन्दाग्नि, प्रति तूनी और शर्करा समेत पथरी रोग नाश हो जाते हैं।

गुड़ पिप्पली।

वायविडंग, त्रिकुटा, कूट, हींग, पाँचों नमक, जवाखार, सज्जी-खार, भुना सुहागा, समन्दरफेन, चीतेकी जड़की छाल, गज पीपर, काला ज़ीरा, ताड़की जटाकी भस्म, कुम्हड़ेकी डालीकी भस्म, चिर-चिरेकी भस्म और इमलीकी छालकी भस्म—ये सब बराबर-बराबर एक-एक तोले लो और सबके वज़नकी बराबर—१६ तोले—पीपरोंका चूर्ण लो। इनको कूट-पीसकर छान लो। इस सारे चूर्णकी तोलकी बराबर—३२ तोले—पुराना गुड़ लो। फिर सबको एकत्र मिला लो। यही "गुड़ पिप्पली" है। इसकी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम पानी है। इसके सेवन करनेसे तिल्ली रोगमें अवश्य लाभ होता है। बड़ी अच्छी औषधि है।

दूसरा वज्रक्षार।

समन्दर नोन, सेंधानोन, साँभरनोन, सौवर्च्चलनोन, सुहागा, जवाखार और सज्जीखार बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर इस चूर्णको ३ दिनतक "आकके दूध"में खरल करो। हर दिन खरल करो और सुखा लो; सूखनेपर फिर खरल करो। इसी तरह तीन दिन-तक "थूहरके दूध"में खरल करो और सुखाओ।

शेषमें, खरल किये हुए चूर्णको ताम्बेके बर्तनमें रखकर और मुँह बन्द करके फूँक लो। फिर जितना यह फुँका हुआ चूर्ण हो, उस-से दूना त्रिकुटा, ज़ीरा, हल्दी और चीतेकी छालका पिसा-छना चूर्ण इसमें मिलादो। यही "वज्रक्षार" है। इसकी मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक है। अनुपान—गरमजल या गोमूत्र है। इसके सेवन करनेसे यकृत और तिल्ली रोग नाश हो जाते हैं।

वृहत् लोकनाथ रस।

शुद्ध पारा २ तोले और शुद्ध गन्धक ४ तोलेको मिलाकर ६ घन्टे तक खरल करो। जब कज्जली काजल सी हो जाय और चमक न

रहे,उसमें दो तोले "निश्चन्द्र अभ्रक भस्म" मिला दो और "घीग्वारका रस" डालकर खरल करो। इसके बाद, उसमें ताम्बा भस्म ४ तोले, लोहाभस्म ४ तोले और कौडीकी भस्म १८ तोले भी मिला दो और "काकमाचीका रस" डाल-डालकर खरल करो। फिर एक गोलासा बनाकर सुखालो। फिर उसे एक सराचेमें रखकर ऊपरसे दूसरा सरावा ढक दो। फिर कपरौटी करके सुखालो। इसके बाद, सरावोको गजभर गहरे-लम्बे-चौढे गढेमें, आरने कण्डोंके बीचमें, रखकर फूंक दो। आग शीतल होनेपर, रसको निकालकर शीशीमें रख दो। इस रसके सेवन करनेसे तिल्ली और यकृत रोग आराम हो जाते हैं। मात्रा २ रत्ती की है। अनुपान—शहद है। मतलब यह है, कि २ रत्ती रस ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे तिल्ली वगैर रोग आराम हो जाते हैं।

पथ्यादि काढ़ा।

जंगी हरड और रक्त रोहिडाकी छाल—इन दोनोंको एक-एक तोले लेकर, डेढ पाव जलमे औटाओ, जब डेढ छटाँक पानी रह जाय, उतारकर छान लो। फिर उसमें १ माशे पीपरका चूर्ण और १ माशे जवाखार मिलाकर सवेरे ही पीनेसे यकृत और प्लीहा तथा गुल्मोदर रोग आराम हो जाते हैं। "शार्ङ्गधर"का यह काढ़ा बहुत ही उत्तम है, इसीसे लिखा है। परीक्षित है।

लवणत्रितयादि चूर्ण।

सेंधानोन, संचरनोन, विड़नोन, सज्जीखार, जवाखार, सौंफ, कलौंजी, बच, अजमोद, बनतुलसी, हाऊबेर, सफेद जीरा, काला जीरा, काली मिर्च, पीपरामूल, पीपर, गजपीपर, भुनी हींग, हिंगुपत्री, कचूर, पाढ़, छोटी इलायची, सौंठ, चव्य, चीतेकी छाल, वायविडङ्ग, अम्लवेत, अनारदाना, तंतडीक, निशोथ, दन्ती, शतावर, इन्द्रायणका गूदा, भारङ्गी, देवदारु, अजवायन, धनिया, चिरफल,

पोहकरमूल, वेर और छोटी हरड़—इन ४१ दवाओंको एक-एक तोले वरावर-वरावर लेकर पीस-कूटकर छान लो। फिर इस चूर्णको एक दिनतक "अद्रखके रस"में खरल करो और सुखा लो। इसके वाद एक दिन तक "विजौरे नीबूके रस"में खरल करो और सुखालो।

इस चूर्णको पुरानी शराव, गरम जल, वेरके काढ़े, गायके माठे, ऊँटनीके दूध या दहीके पानीके साथ खानेसे तापतिल्ली, कलेजेका रोग, कमरका दर्द, गुदाके रोग, कूखका दर्द, हृदय रोग, ववासीर, मलकी रुकावट, मन्दाग्नि, गोला, अष्ठीला, उदर रोग, हिचकी, अफारा, श्वास और खाँसी रोग नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ६ माशेकी है।

नोट—इस चूर्णकी दवाओंका काढा वनाकर,काढ़ेके साथ घी पकालेनेसे जो घी तैयार होता है, उसके खानेसे भी ऊपरके सव रोग नाश हो जाते हैं। एक-एक तोले दवा लेकर जौकुट करलो। फिर आठ सेर पानीमें डालकर औटाओ ; जव दो सेर पानी रह जाय, काढ़ा छानलो। फिर आध सेर गायका घी और दो सेर काढ़ा मिलाकर क़लईदार कड़ाहीमें पकाओ। घी मात्र रह जाने पर उतार कर छानलो। अगर यह घी और चूर्ण दोनों ही साथ-साथ सेवन किये जायें, तो वहुत जल्दी तिल्ली वगैरः नष्ट हो जायें। हमने दोनों ही देकर परीक्षाकी है। हम चूर्ण सवेरे शाम और घी भोजनके साथ खिलाते थे।

चित्रकाद्य घृत।

अढ़ाई सेर चीतेकी छालको जौकुट करके २० सेर पानीमें औटाओ। जव पाँच सेर पानी रह जाय, उतार कर छानलो।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, तालीस पत्र, जवाखार, सज्जीखार, सेंधानोन, अजवायन, ज़ीरा, कालाजीरा और कालीमिर्च—इनको एक-एक तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी वनालो।

गायका घी १ सेर, चीतेका काढ़ा ५ सेर, काँजी २॥ सेर, दहीका

तोड़ ५ सेर और ऊपरकी लुगदी सबको मिलाकर, घीको मन्दाग्निसे पकालो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १॥ तोले तक है। इस घीसे प्लीहा, यकृत, पाण्डु रोग, अरुचि और शूल रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस घीके बनानेकी विधिमें मतभेद है। हम जिस तरह बनाते हैं, उस तरह लिख दिया है। यह तरकीब आज़मूदा है।

यवान्यादि चूर्ण।

अजवायन, चीता, जवाखार, बच, दन्ती और पीपर—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसको गरम जल, दहीके तोड़, पुरानी मदिरा या आसवके साथ खानेसे तिल्ली गल जाती है।

विडंगादि चूर्ण।

बायविडंग १ तोले, चीता १ तोले और देवदारू २ तोले—इन सबको पीस-छानकर रखलो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसे "गोमूत्र"के साथ खानेसे अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी नाश हो जाती है।

अभया वटक।

बड़ी हरड़ और त्रिफला १२ तोले, त्रिकुटा ४ तोले, अजवायन २ तोले, चव्य २ तोले, चीता २ तोले, बायविडंग २ तोले, विपांबिल २ तोले, सेंधानोन २ तोले, बच २ तोले, दालचीनी १ तोले, छोटी इलायची १ तोले और तेजपात १ तोले—इन सबको पीसकर छानलो। फिर इस चूर्णमें १२० तोले उत्तम "पुराना गुड़" मिलाकर एक-एक तोलेके बड़े या गोले बनालो। यही "अभया वटक" हैं। इनके सेवन करनेसे तिल्ली, बवासीर, गुल्म, उदर रोग, पाण्डुरोग, कामला और मन्दाग्नि—ये रोग नाश हो जाते हैं।

अग्निमुख लवण।

चीता २ तोले, निशोथ २ तोले, दन्ती २ तोले, त्रिफला २ तोले,

पोहकरमूल २ तोले और सैंधानोन सबकी बराबर १० तोले लेकर पीसलो। इस चूर्णको एक दिन "थूहरके दूध"में खरल करके सुखालो।

फिर एक थूहरका मोटा डंडा लेकर उसे पोला करलो। उस पोलमें चूर्णको भर कर उसका मुख बन्द करदो और ऊपरसे बड़के पत्ते लपेटकर मिट्टीसे ल्हेस दो। मिट्टीका लेप दो-दो अंगुलसे कम मोटा न रहे। इसके बाद इसे सुखालो और जंगली कण्डोंके बीचमें रखकर फूंक दो। जब डण्डा अंगारके समान लाल हो जाय, आगसे निकाल लो। फिर शीतल होनेपर,डंडेके भीतरसे चूर्णको निकाल लो।

इस "अग्नि मुख लवण"से अग्नि दीपन होती है तथा यकृत, प्लीहा, तिल्ली, उदररोग, अफारा, गुल्म, पाण्डुरोग और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तक है। बलाबलका विचार करके कम-ज़ियादा भी दे सकते हो। इन रोगोंपर यह लवण रामबाण है।

माणादि वटिका।

मानकन्द, चिरचिरेकी जड़की राख, गिलोय,अड़ूसेकी जड़, शाल-पर्णी, चीता, सेंधानोन, सोंठ और ताड़की जटाका क्षार ये सब तीन-तीन तोले लो ; विरिया संचरनोन, कालानोन, जवाखार, सज्जीखार, और पीपल—ये सब एक-एक तोले लो। फिर सबको मिलाकर पीस-छानलो। इस चूर्णको १६ सेर गोमूत्रमें मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब काढ़ा गाढ़ा होने पर आवे और गोली बनाने लायक़ हो जाय, उतार कर शीतल करलो। शीतल होने पर, इसमें १२ तोले "शहद" डालकर गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंसे तिल्ली, यकृत, उदर रोग, गुल्म, बवासीर और संग्रहणी रोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम पानी है।

नोट—मानकन्द एक सालका पुराना लेना चाहिये।

वृहत् माणादि गुटिका।

एक सालका पुराना मानकन्द, चिरचिरेका क्षार, शालपर्णि, चीता, थूहरकी जड़, सोंठ, सेंधानोन, नाटकी जटाका क्षार, वाय-विडंग, हाऊवेर, चव्य, वच, कालानोन, सोंचर्चलनोन, जवाखार, पीपर, शरफोका, जीरा और पालिधामदारकी जड़—ये सब चार-चार तोले लेकर जौकुट कर लो और १६ सेर गोमूत्रमें मिलाकर पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय, इसमें "त्रिकुटा, हींग, अजवायन, कूट, कचूर, निशोथ, दन्तीकी जड़ और इन्द्रायणकी जडमेंसे हरेकका दो-दो तोले पिसा-छना चूर्ण मिला दो और उतार लो। जब शीतल हो जाय, इसमें चौबीस तोले "शहद" मिला दो और छै-छै माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको सवेरे-शाम गरम पानीके साथ खानेसे तिल्ली, यकृत, गुल्म और पेटके रोग नाश हो जाते हैं।

तिल्ली रोग पर हकीमी नुसख़े।

(१) दाहने हाथकी रग असलीम पर, कपडेकी बत्ती जलाकर दाग देने और कुछ समय तक वहाँसे मवाद बहने देनेसे तिल्ली रोगमें लाभ होता है।

(२) एलुआ, हींग, सुहागा, नौसादर, सफेद सज्जी,—बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर, "घीग्वारके लुआब"में खरल करके, जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक गोली नित्य सवेरे ही खाते रहनेसे तिल्ली नाश हो जाती है।

(३) कालीमिर्च, छोटी पीपर, भुनी फिटकरी, नौसादर, भुना सुहागा, अजवायन, कटाई, खारीनोन, लाहौरीनोन, आँवाहल्दी और

जवाखार—वरावर वरावर लेकर, कूट-छान कर, पानीके साथ खरल करो और जंगली वेर-समान गोलियाँ वना लो।

(४) पीले हरड़की छाल, एलुआ, भुना सुहागा और कालीमिर्च वरावर-वरावर लेकर, घीग्वारके रसमें १२ घण्टे तक खरल करो और जंगली वेर-समान गोलियाँ वना कर रख लो। इसमेंसे चार-चार माशेकी गोली सवेरे-शाम खानेसे तिल्ली रोग आराम हो जाता है।

(५) कलमी शोरा, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी, संचरनोन, सेंधानोन, पीली हरडकी छाल, आँवाहल्दी और सादा अजवायन—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस लो। फिर तीन दिन तक "अदरखके रस"में खरल करो। इसके वाद तीन दिन तक "नीवूके रस"में खरल करो और जंगली वेर-समान गोलियाँ वना लो। इसमेंसे सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे तिल्ली रोग नष्ट हो जाता है। एक हकीम साहव इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं। वे कहते हैं, इससे देर भले ही लगे, पर तिल्ली ठीक हो जाती है।

(६) सोंठ, भुना सुहागा, सेंधानोन और भुनी हींग—वरावर-वरावर लेकर, "सहँजनेकी जड़के रस"में घोटकर जंगली वेर-समान गोलियाँ वना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे कुछ दिनोंमें तिल्ली कट जाती है और चौथैया तथा वायु-गोला भी आराम हो जाते हैं।

(७) तिल्ली वालेको लोहेका वुझाया हुआ पानी वहुत मुफीद है। एक हाँडीमें पानी भरकर, उसमें आगमें तपाकर लाल किया हुआ लोहा वुझा दो। यही "लोहा-वुझाया" पानी कहलाता है। यह पानी सचमुच ही वहुत गुणकारी है।

(८) झाऊकी लकड़ीके प्याले वनवाकर, उन्हीं प्यालोंमें लोहा वुझाया हुआ या सादा पानी पीनेसे तिल्ली रोग नष्ट हो जाता है।

(६) आमका अचार खानेसे तिल्ली रोगमें अवश्य लाभ होता है,

पर अगर तिल्लीके साथ ही खाँसी भी हो, तो आमका अचार न खाना चाहिये।

(१०) हालो ३ माशे और कलौंजी १॥ माशेको ६ माशे शहदमें मिलाकर, सिकंजबीनके साथ नित्य सवेरे ही खानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(११) सरसोंका तेल निवाया करके तिल्लीपर मलनेसे उसकी सख़्ती जाती रहती है और जोर घट जाता है।

(१२) पुरानी तापतिल्ली होनेसे, अरण्डकी जड़का काढ़ा पिलाना चाहिये। इस काढ़ेसे दस्त होकर तिल्ली आराम हो जाती है। दो तोले अरण्डकी जड़ डेढ़ पाव पानीमें औटाकर, चौथाई पानी रहनेपर, मल-छानकर पिलानी चाहिये।

(१३) अगर तिल्ली और जिगर या दोनोंमेंसे एक इतने बढ़ गये हों कि, सारे पेटको घेर लिया हो, सारा पेट पत्थरकी तरह सख्त हो गया हो और तिल्ली या जिगरका आकार न मालूम होता हो, तो आप अरण्डीके पत्तोंपर "रेंडीका तेल" चुपड़कर उन्हें गरम करो और पेटपरबाँध दो। इन पत्तोंके इस तरह कई दिन बाँधनेसे पेट नर्म हो जायगा और तिल्ली साफ मालूम होगी, क्योंकि तिल्ली या जिगर का स्थान ही सख्त रहेगा।

(१४) जितनी अजवायन मनुष्य खा सके, उतनी रोज़ सवेरे-शाम खावे, तो तिल्ली नष्ट हो जावे।

(१५) नीबूका रस २० माशे और प्याजका रस २० माशे—दोनोंको मिलाकर नित्य १४ दिनतक, सवेरे हो, पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है, मगर इसके साथ खिचड़ी या दाल चाँवल आदि नर्म पदार्थोंके सिवा और चीजें न खानी चाहियें।

(१६) सवा दो माशे नौसादर मूलीके स्वरसमें मिलाकर नित्य सवेरे ही पीने और मूली तथा तिल बराबर-बराबर पीसकर तिल्लीपर बाँधनेसे तिल्ली अवश्य कट जाती है।

(१७) कलीका चूना और शहद मिलाकर तिल्लीपर २० मिनट-तक धीरे-धीरे मलो और ऊपरसे "अञ्जीरके पत्ते" बाँध दो। इस तरह करनेसे तिल्ली रोग आराम हो जाता है। कोई-कोई "अरण्डका पत्ता" भी बाँधते हैं।

(१८) शैतरज सिरकेमें पीसकर तिल्लीपर लगानेसे तिल्लीकी सूजन उतर जाती है।

(१९) मूलीके बीज पीसकर सिरके या सिकंजबीनमें मिलाकर खानेसे तिल्ली गल जाती है।

(२०) करीलकी सूखी कोंपल ३॥ माशे और कालीमिर्च १॥ माशे—दोनोंको पानीमें पीस-छानकर हर दिन सवेरे ही पीनेसे तिल्लीकी सख्ती दूर हो जाती है।

(२१) गेंहूँकी भूसी और छिले हुए लहसनको जलाकर राख कर लो। इस राखको सिरकेमें मिलाकर और गुन-गुना करके तिल्ली पर लगानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(२२) तिल्ली वालेके गलेमें प्याज़ लटकानेसे तिल्ली जल्दी गल जाती है।

(२३) अपना या लड़केका तीन चुल्लू पेशाब सवेरे ही नित्य कुछ दिन तक पीनेसे तिल्ली रोग जाता रहता है।

(२४) अगर तिल्लीके साथ ज्वर न हो, तो जवान आदमी ६ माशे सज्जी उतने ही गुडमें मिलाकर २१ दिन खावे, तो तिल्ली गल जावे। बालकको दो माशे सज्जी और उतना ही गुड़ मिलाकर खाना चाहिये।

(२५) झाऊकी पत्तियाँ लाकर सुखालो और पीस-छानलो। फिर बराबरकी "शक्कर" मिलाकर रख दो। इसमेंसे ४ माशे दवा नित्य खानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(२६) झाऊकी पत्तियाँ कूट कर कपड़ेमें रस निचोड़ लो। इसमेंसे २८ माशे रस लेकर ४० माशे सिकंजबीनमें मिलाकर पीलो। इस नुसख़ेसे कुछ दिनोंमें तिल्ली कट जाती है।

(२७) ऊँटनीका दूध और पेशाब पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(२८) नमदेका टुकडा "सिरकेमें भिगोकर" तिल्ली पर बाँधनेसे तिल्ली रोग आराम हो जाता है।

(२९) झाऊके पत्तोंका अर्क पीनेसे तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है।

(३०) सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, आमाहल्दी, जवाखार-चीना, और कमीला—सबको बराबर-बराबर पीस कर, "ग्वारपाठेके रस"में खरल करके, जंगली बेरके समान गोलियाँ बनालो। सवेरे ही, कोरे कलेजे, एक गोली नित्य खानेसे तापतिल्ली कट जाती है।

(३१) भुना हुआ सुहागा १ भाग और राई ३ भाग मिलाकर और पीस कर थोड़ा-थोडा खानेसे तिल्ली कट जाती है।

(३२) अञ्जीर चार अदद सिरकेमें तर किये हुए, हर सवेरे खानेसे तिल्ली कट जाती है। लेकिन अंजीर खाते समय, अँगूठेसे तिल्लीको इस तरह मलते जाना चाहिये, कि जिससे थोड़ा-थोड़ा दर्द होवे।

(३३) नौ माशे ज़मीकन्दके तीन चार टुकड़े करो और हर टुकड़ेको घीमें तर करके निगल जाओ। १४ दिन तक यह दवा खाने और बादी तथा खट्टे पदार्थोंसे परहेज करनेसे पुरानी तापतिल्ली गल जाती है।

(३४) लहसनको कूट कर कपडेमें होकर स्वरस निकाल लो। यह स्वरस ६ तोले हो। फिर ६ तोले घी, ४॥ तोले गुड़ और अन्दाजका गेहूँका आटा—इन तीनोंको मिलाकर हरीरा बना लो। पहले लहसनका रस पीलो और ऊपरसे हरीरा खालो। इस दवासे एक दिनमें ही तिल्ली आराम हो जाती है।

(३५) भुना हुआ सुहागा और एलुआ बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो और "गुड़"में मिलाकर गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंके २० या ३० दिन तक खानेसे तिल्ली गल जाती है। हर रोज़ ३ या ४

दस्त आते हैं। इससे पेटके सारे रोग आराम हो जाते हैं। यह गोली खाना खानाके आध घन्टे बाद खानी चाहिये और उसके पीछे कोई चीज़ न खानी चाहिये। गोली खाकर थोड़ासा "अर्क़ गुलाव" पीना चाहिये। खटाई और वादी चीज़ोंसे परहेज करना चाहिये। जिनसे रोज़ यह दवा न खाई जाय, वे एक या दो दिन बीचमें छोड़कर खा सकते हैं।

(३६) नौसादर, सुहागा, कलमीशोरा और कालीमिर्च—सबको बराबर-बराबर लेकर, "घीग्वारके रस"में मिलाकर तिल्ली वालेको खिलाओ। दूसरे दिन घीग्वारका गूदा जियादा लो और तीसरे दिन उससे भी ज़ियादा लो। इस तरह सात दिन तक घीग्वारका गूदा बढ़ा-बढ़ा कर लो। इस दवासे तिल्ली आराम हो जायगी।

यकृत पर आयुर्वेद ।

"भाव प्रकाश"में लिखा है, प्लीहा रोगके जो निदान सम्प्राप्ति और लक्षण हैं, वे ही सब यकृत रोगके भी हैं। भेद इतना ही है, कि प्लीहा की स्थिति बाँईं पसलीमें है और यकृतकी दाहनी पसलीमें है। चिकित्साके सम्बन्धमें भी लिखा है, कि जो चिकित्सा प्लीहाकी है, वही यकृतकी है। दाहनी बाँहकी नस खुलवाकर, खून निकलवानेकी राय विशेष दी है।

बङ्गसेनमें कुछ अधिक लिखा है। उसमें लिखा है, यकृतके दूषित होनेसे "यकृदाल्युदर" होता है। इसमें उदावर्त्त, शूल, अफारा, इनसे वायुका कोप; मोह, प्यास और ज्वर इनसे पित्तका कोप तथा शरीरका भारीपन, अरुचि और सख्ती इनसे कफका कोप प्रकट होता है। चिकित्साके सम्बन्धमें वंगसेनने भी वही लिखा है जो भावमिश्रने लिखा है। हम आधुनिक ग्रन्थोंसे यकृत रोगके निदान-लक्षणादि लिखते हैं, क्योंकि इतनेसे चिकित्सकको काफी ज्ञान नहीं हो सकता।

यकृतका स्थान और आकारादि ।

यकृत एक गाँठदार यन्त्र है। यह यंत्र पेटके यन्त्रोंमें सबसे बड़ा है। इसने दाहनी तरफके पेटका बहुतसा भाग घेर रखा है। यकृत दो ना-बराबर खण्डोंमें बँटा हुआ है। एकको बायाँ खण्ड और दूसरेको दाहिना खण्ड कहते हैं। ये दोनों खूब सटे हुए हैं। इसका आकार १०।१२ इंच होता है। सबसे बड़े अंशका वज़न १॥ सेरसे २ सेर तक होता है। इसका असल काम पित्तको निकालना है।

यकृतके काम ।

यकृत या लिवरमें किसी तरहकी ख़राबी होनेसे कोष्ठबद्ध या दस्तक़ब्ज़ होना स्वाभाविक है। यकृतमें से जो पित्त निकलता है, वही मुख्यतया रेचन और पाचनका काम करता है। यकृतमें विकार होनेसे पित्त कम निकलता है और उसके कम निकलनेसे कोष्ठबद्ध या क़ब्ज़ हो जाता है।

जिस तरह किसी-किसी पेड़ से गोंद निकलता रहता है, उसी तरह यकृतमेंसे थोड़ा-थोड़ा पित्त बराबर गिरता रहता है। पित्त यकृतके सब स्थानोंसे निकलकर, यकृत-नलीमें होकर, छोटी आँतकी नलीमें गिरता है। वहाँ खाद्य पदार्थोंसे मिलकर, उनके पचनेमें सहायता करता है। मनुष्य दिनरात खाना नहीं खाते, इसलिये पाचन-क्रिया भी सर्वदा नहीं होती; लेकिन पित्त तो दिन-रात निकला ही करता है। यहाँतक कि १५ से २० छटाँक तक पित्त निकलता है। जब इसे खाना नहीं मिलता, तब यह एक थैलीमें जमा होता रहता है, पर जब थैली भर जाती

है, तब यह बाहर निकलकर आँतोंमें जलन और वमन आदि करता है। जो लोग कई-कई दिनतक नहीं खाते, उनका यह हाल होता है। पित्तके द्वारा ही हमारा भोजन पचता है और पित्तके द्वारा ही हमें मल त्यागनेमें विशेष सहायता मिलती है। अगर पित्त न निकले, तो हमें मल त्यागनेमें बड़ा कष्ट हो। जिनके यकृतसे ठीक पित्त नहीं निकलता, उन्हींको दस्तक़ब्ज़की शिकायत होती है।

शरीरका खून साफ करनेको जिस तरह फुफ्फुस यन्त्र हर समय तैयार रहता है; उसी तरह यकृत भी तैयार रहता है। श्वास छोड़ते समय, जिस तरह खूनका मैल फेंफड़ेमें होकर वायुके साथ बाहर निकल जाता है; उसी तरह कई तरहके मैल यकृतमेंसे पित्तका रूप धर कर निकलते हैं। जिस तरह श्वास न लेनेसे मनुष्य मर जा सकता है; उसी तरह यकृतमेंसे पित्तके न निकलनेसे, यानी खूनमें ही मिले रहनेसे मृत्यु हो सकती है। प्लीहा बिना काम चल सकता है, पर यकृत बिना शरीरका काम नहीं चल सकता। यकृत प्लीहासे आकारमें बहुत बड़ा है; उसी तरह उसका काम भी बहुत बड़ा है। जो पित्त शरीरमें स्वाभाविक गरमी पैदा करके शरीरकी रक्षा करता है, जो पित्त रस धातुको रंगकर रुधिर बनाता है, उसका घर यकृतके एक कोनेमें है। इसलिये यकृत बड़े कामका यन्त्र है। प्लीहा इसके मुकाबलेमें कुछ भी नहीं है।

यकृतकी विकृतिके कारण।

प्लीहा रोगके जो कारण लिखे हैं, उनके सिवाय शराब पीने और बवासीर आदि रोगोंका खून बहना बन्द हो जाने वग़ैर कारणोंसे भी यकृत बढ़ता या सुकड़ता है। यही यकृतकी विकृति है। बढ़ने पर यकृत हाथ लगानेसे मालूम होता है, किन्तु अपनी असली हालतमें हाथ लगानेसे मालूम नहीं होता।

यकृतकी विकृति के लक्षण ।

जब यकृत बढ़ जाता है या सुकड़ जाता है, तब उसमें दर्द होता है, मल रुक जाता है या कीच-जैसा थोड़ासा मल निकलता है, और सारा शरीर विशेषकर दोनों आँखें पीली हो जाती हैं। खाँसी आती है। दाहनी तरफके पसवाड़ेके नीचेका भाग सख्त मालूम होता है, सूई चुभानेका सा दर्द होता है, दाहनी ओरके सभी अंगोंमें दर्द मालूम होता है, मुँहका स्वाद तीता रहता है, जी मिचलाता या कय होती हैं, नाडी कठिन चलती हैं, हर समय ज्वर बना रहता है तथा तिल्लीके भी सब लक्षण मिलते हैं। यकृतकी ख़राबीवाला दाहनी करवट सो नहीं सकता। दाहनी करवट सोनेसे अगर रोगीको खाँसी चैन न लेने दे, तो यकृतमें निश्चय ही ख़राबी समझनी चाहिये। तपेदिक या राजयक्ष्मामें बहुधा यकृत बढ़ जाता अथवा विकृत हो जाता है। बहुत दिनोंतक यकृतका इलाज न करनेसे पाण्डु, कामला और सूजन आदि भयानक रोग पैदा हो जाते हैं। जब यह बहुत ही बढ़ कर पेटको घेर लेता है तब "यकृदुदर" रोग कहते हैं।

प्लीहाका बढ़ना और सख्त होना—येही दो विकार प्लीहाके देखे जाते हैं। कभी-कभी प्लीहाका फूल जाना, लाल होना और उसमें पीड़ाका होना भी देखा जाता है। कभी-कभी प्लीहा अपने मामूली आकारसे सूखकर छोटी भी हो जाती है। प्लीहाके तो इतने ही विकार हैं, पर यकृतके तो सैकडों विकार हैं। पहले इस देशमें यकृतके इतने विकार न होते थे, परन्तु अब तो यकृत-सम्बन्धी अनेक रोग होते हैं। जैसे-यकृतका बढ़ना, सख्त होना, सूख जाना, स्वाभाविक अवस्थासे छोटा हो जाना, पित्त-सम्बन्धी नाना प्रकारके रोगोंका होना, आँतोंका दाह, खूनका गरम होना, पित्तकी पथरी और यकृत-शूल वग़ैरः-वग़ैरः।

जब पित्तकी अधिकतासे यकृतकी सूजन लाल रंगकी और पीड़ा युक्त होती है; तब उस रोगको "यकृत-विद्रधि" या "जिगरका पकना" या "जिगरका फोड़ा" कहते हैं। यकृत-विद्रधिकी उपेक्षा करनेसे वह पक जाती है और उसमें पीप पड़ जाता है। प्लीहामें भी कभी-कभी विद्रधि हो जाया करती है।

वालकोंके शरीरमें यकृत रोग भयङ्कर रूपसे प्रकट होता है। वालकके आहार-विहारमें जरासा गोलमाल हो जानेसे यकृत ख़राब हो जाता है और फिर उसका आराम होना मुश्किल हो जाता है।

इस रोगमें भी तिल्लीकी तरह पेट साफ कर लेना चाहिये। इतना ही नहीं, सदा पेट साफ रखना ज़रूरी है। जो दवाएँ प्लीहा रोगमें लिख आये हैं, वे ही सब इस रोगमें भी काममें लानी चाहियें। फिर भी हम चन्द नुसख़े लिखते हैं :—

यकृत-चिकित्सा।

(१) अगर यकृतमें दर्द हो, तो तारपीनके तेलकी मालिश करके "गरम जल"से सेकना चाहिये अथवा आगपर गरम किया हुआ गोमूत्र बोतलमें भरकर उस बोतलसे सेक करना चाहिये अथवा फलालैनका टुकड़ा गरम गोमूत्रमें या गरम पानीमें भिगो-भिगोकर सेक करना चाहिये।

(२) राईका लेप करनेसे भी यकृत में उपकार होता है।

(३) दो रत्ती नौसादर और एक रत्ती लोहभस्म ६ माशे पीपरोंके काढ़ेमें मिलाकर, दिनमें दो बार, सेवन करानेसे यकृतका शोथ या सूजन आराम हो जाती है।

(४) चार रत्ती समन्दरफेनका चूर्ण और चार रत्ती विरिया संचरनोनका चूर्ण, दो तोले रोहिड़ेकी जड़के काढे में मिलाकर, सवेरे-शाम पीनेसे यकृतका बढ़ना बन्द हो जाता है।

(५) चार रत्ती घीग्वारके रसमें दो रत्ती हल्दीका चूर्ण और दो रत्ती सेंधेनोनका चूर्ण मिलाकर सवेरे-शाम खानेसे यकृतका बढ़ना बन्द हो जाता है।

(६) सोंठ १ माशे, पीपर १ माशे, चव्य १ माशे और केशर १ रत्ती—इन सबको एकत्र पीसकर ६ माशे "शहद"में मिलाकर चाटनेसे यकृतका शोथ नाश हो जाता है।

(७) कौड़ीकी भस्म दो रत्ती, मण्डूरकी भस्म १रत्ती और पीपल-का चूर्ण ४ रत्ती—इन सबको मिलाकर शहदके साथ सेवन करनेसे यकृतकी सूजन नाश हो जाती है।

(८) पीपरका काढ़ा आध सेर, जलमें पिसी हुई पीपरोंकी लुगदी २ तोले, गायका दूध आध सेर और गायका घी आध पाव —इन सबको मिलाकर, कड़ाहीमें आग पर पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इसमेंसे एक-एक तोले घी सवेरे-शाम पीनेसे यकृतकी सूजन और पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—जब यकृतमें पित्तकी अधिकताके कारण जलन वगैरः उपद्रव होने लगें, तब तीक्ष्ण और पित्तकारक क्षारादि पदार्थ न देने चाहियें। क्योंकि इस हालत में ऐसी दवाओंसे यकृतमें और भी गरमी बढ़ जाती है। अगर ऐसा हो, तो नीचेका नं० ९ या १० नुसख़ा सेवन कराओ :—

(९) दो तोले त्रिफला बारह तोले जलमें पकाओ, जब तीन तोले पानी रह जाय, उतार कर छानलो। शीतल होने पर, इसमें ६ माशे "शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तकी अधिकताके कारणसे पैदा हुई यकृतकी जलन शान्त हो जाती है।

(१०) दो तोले मूलीका रस और दो तोले मकोयका रस मिला

...ज़न, जलन, पित्तकी कर दिनमें २।३ बार सेवन करनेसे यकृतकी सू.,
बाधा और कामला आदि रोग नाश हो जाते हैं । ...दूर १ तोला और

(११) बोल १ तोला, लाख १ तोला, नागकेश...में से तीन-तीन सोंठ १ तोला—इनको पीस-छान कर रखलो । इस... यकृतकी माशे चूर्ण "शहद"में मिलाकर दिनमें दो-तीन बार, चाट... हो... पीडा और पेट फूलना आराम हो जाता है ।

...कृतमें से ६

(१२) बायबिड़ंग और पीपरकी भस्म करलो । इ... सवेरे ही रत्ती भस्म "करंजकी जडके रस या काढ़े"के साथ, नित्य से...त्रानुसा खानेसे यकृत और प्लीहा रोग शान्त हो जाते हैं । बलाबल दे... मात्रा बढ़ा भी सकते हो ।

...लिक

(१३) पीपर, बायबिडंग और जवाखार बराबर-बराबर ... कूट-पीस और छान लो । इस चूर्णकी मात्रा ४ से ६ माशे ... है । एक मात्रा चूर्ण "करंजके पत्तोंके स्वरस"में मिलाकर पीने... यकृत और प्लीहा दोनों आराम हो जाते हैं ।

(१४) अगर यकृतकी खराबीसे पित्त बहुत ही बढ गया हो, नेत्र, मुख, मल और मूत्र पीले पड गये हों ; तो आमले, गिलोय और हरडके २ तोले काढ़ेमें २ रत्ती "मण्डूर भस्म" डालकर पीओ । अथवा कासनी और मकोयके दो तोले स्वरसमें जरासा "शहद" मिलाकर पीओ ।

(१५) अगर यकृतकी सूजन बढकर आमाशयकी तरफ जाने लगे, तो दो तोला गुलबनफ़शाको आध सेर दूध और आध सेर पानीमें पकाओ । जब दूध मात्र रह जाय, नीचे उतार लो । फिर शीतल होनेपर उसमें थोड़ा-थोड़ा "शहद" डालकर दिनमें चार बार पीओ । इससे यकृतकी अत्यन्त बढ़ी हुई सूजन भी नाश हो जाती है । यह नुसख़ा विद्रधिमें भी अति उपयोगी है । परीक्षित है ।

(१६) यदि यकृतके अत्यन्त बढ़ जानेसे उसमें पीड़ा मालूम हो, तो उस पर बारम्बार "अलसीका पुल्टिस" बाँधो ।

यकृत और प्लीहाकी एक दवा।

(१७) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनको चार-चार माशे लेकर आठ तोले जलमें पकाओ ; जब दो तोले पानी रह जाय छान लो। फिर इसमें जरासा "जवाखार" डालकर पीओ। इससे यकृत और प्लीहा समेत ज्वर चला जाता है।

(१८) गूमाकी जड़का चूर्ण १ तोले और पीपरोंका चूर्ण ३ माशे—दोनोंको मिलाकर पीस लो। इसमेंसे दो-दो रत्ती चूर्ण दिनमें २।३ बार खानेसे शीतज्वर तथा यकृत और प्लीहाका विकार नाश हो जाता है।

(१९) नागरमोथा १ भाग, आमले १ भाग, अदरख १ भाग, हरड़ ३ भाग और सोंठ ४ भाग—इन सबको मिलाकर पीस-छान लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे प्लीहा और यकृत सहित ज्वर, अजीर्ण और अतिसार आराम हो जाते हैं।

(२०) यदि यकृत और प्लीहाके विकारके साथ शरीरमें सूजन सहित ज्वर हो ; तो पुनर्नवा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, दारुहल्दी और हरड़—समान-समान लेकर काढ़ा बनालो और चौथाई पानी रहने पर छान लो। इसमेंसे सवेरे-शाम दो-दो तोले काढ़ा सेवन करो। अवश्य लाभ होगा।

(२१) यकृत और प्लीहाकी सूजनपर मकोय और पुनर्नवेका स्वरस गरम करके लेप करो। अथवा तारपीनके तेलमें कपड़ा भिगो-कर सूजनपर रखो। इनमेंसे किसी एक उपायसे यकृत और तिल्ली की सूजन नाश हो जायगी।

(२२) करेलेके फल या पत्तोंके रसमें ज़रासा "शहद" मिलाकर पीनेसे यकृत और प्लीहाकी विकृति नष्ट हो जाती है।

(२३) चिरायतेका काढ़ा २ औन्स, करेलेका रस २ औन्स, पपीते या अरण्ड खरबूज़ेका रस १ ड्राम, कुनैन २० ग्रेन, एसिड नाइट्रो-मिडरिक डिल १॥ ड्राम और पानी २ औन्स—सबको मिलाकर

शीशीमें भरलो और उसपर आठ दाग़ लगा दो। सवेरे-शाम एक एक दाग़ दवा पीनेसे यकृत और प्लीहा संयुक्त ज्वर फौरन ही नाश हो जाता है। यह यकृत और प्लीहा ज्वरकी उत्तम दवा है। "चैद्य"।

नोट—हम करेलेके चन्द उत्तमोत्तम प्रयोग, पाठकोंके लाभार्थ, नीचे लिखते हैं :—

(१) करेलेके पत्तोंके रसमें हल्दीका चूर्ण मिलाकर खानेसे सब तरहकी चेचक और ज्वर नाश हो जाते हैं। इस नुसखेसे भीतर घुसी हुई चेचक भी निकल आती है। करेले और हल्दीको एक साथ पीसकर और पोटली बनाकर शरीरपर फेरनेसे भी भीतर छिपी हुई चेचक निकल आती है।

(२) करेलेके रसमें प्याज़का रस मिलाकर पीनेसे भयंकर अजीर्ण और हैज़ा नाश हो जाते हैं।

(३) करेलेके रसमें शहद मिलाकर खानेसे वातरक्त नाश हो जाता है।

(४) करेलेके पत्तोंको तत्काल पीसकर और उसमें थोड़ासा ताज़ा चूना मिलाकर लगानेसे शरीरके किसी स्थानसे भी ख़ूनका गिरना बन्द हो जाता है। हथियारके द्वारा घाव होनेपर ख़ून गिरता हो, तो करेलेका रस लगा दो; फौरन ख़ून बन्द हो जायगा।

(५) करेलेके पत्तोंके रसमें ज़रासा दही मिलाकर लेप करनेसे शीतपित्त या पित्ती आराम हो जाती है।

(६) करेलेके पत्तोंका रस आध पाव, नारियलका तेल १ छटांक, नीमके पत्ते १ छटांक और कुनैन २० ग्रेन मिलाकर खुजली पर लगानेसे जादूकासा चमत्कार नजर आता है।

नोट—(१) यकृतके दाह, आँतोंके रूखेपन, सूजन, पाण्डु और कामला आदिमें दही खाना रोग बढ़ाना है। अतः दही न खाना चाहिये।

नोट—(२) जो दवाइयाँ प्लीहा रोगमें लिखी हैं, वे सब यकृत रोगको भी नाश करती हैं।

हृदय रोगके निदान ।

अत्यन्त गर्म, भारी, खट्टे, कड़वे और कसैले पदार्थ लगातार सेवन करनेसे, बहुत मिहनत करनेसे, चोट लगनेसे, भोजन-पर भोजन करनेकी आदतसे, हर समय राजभयका ख़याल या फिक्र रहनेसे, और मल-मूत्र आदि वेगोंके रोकनेसे पाँच तरहका "हृदय रोग" होता है ।

सम्प्राप्ति पूर्वक लक्षण ।

दूषित वातादि दोष, हृदयमें रहकर, रसको दूषित करते हुए अनेक तरहकी पीडाएं पैदा करते हैं । हृदयकी पीड़ाको ही "हृदय-रोग" कहते हैं ।

खुलासा यह है कि, चिन्ता करने, बहुत परिश्रम करने, मल-मूत्रादिके वेग रोकने, डरने और चोट लगनेसे वात, पित्त और कफ दूषित हो जाते हैं । वे दूषित वातादि दोष हृदयमें तरह-तरहकी पीड़ाएं करते हैं । उस हृदयमें होने वाली पीड़ाको ही हृदय-रोग कहते हैं ।

हृदय रोगोंकी किस्में ।

हृदय रोग पाँच तरहके होते हैं :—
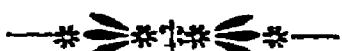
(१) वातज । (२) पित्तज ।
(३) कफज । (४) सन्निपातज ।
(५) कृमिज ।

सामान्य लक्षण ।

जिस रोगमें हृदय या छातीमें दर्द होता है और हृदय धकधक करता है, उसे "हृदय रोग" कहते हैं । मतलब यह है, कि छातीका धकधक करना और उसमें पीड़ा होना हृदय रोगके साधारण लक्षण हैं ।

वातज हृदय रोगके लक्षण ।

इस हृदय रोगके होनेसे सारे हृदयमें पीड़ा फल जाती है, सुई चुभानेके समान, मथनेके जैसी, चीरनेके समान, शस्त्र या कुल्हाड़ीसे काटने-चीरनेके समान अनेक तरहकी पीड़ाएँ होती हैं ।

पित्तज हृदय रोगके लक्षण ।

इस हृदय रोगके होनेसे—हृदयमें ग्लानि, प्यास, कुछ-कुछ दाह या जलन, शरीरमें चूसनेकी तरह दर्द, सन्ताप, कण्ठसे धूआँसा निकलता जान पड़ना, मूर्च्छा-बेहोशी, पसीने आना और मुँह सूखना ये लक्षण होते हैं ।

कफज हृदय रोगके लक्षण।

इस हृदय रोगमें—भारीपन, कफ निकलना, अरुचि, हृदयकी जकड़न, मन्दाग्नि और मुँहका मीठापन—ये लक्षण होते हैं।

त्रिदोषज हृदय रोगके लक्षण।

त्रिदोषज हृदय रोगके होनेसे वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके लक्षण मिले हुए रहते हैं।

कृमिज हृदय रोगके लक्षण।

त्रिदोषज हृदय रोग पैदा होने पर, अगर रोगी तिल, दूध, गुड़ प्रभृति कृमि-जनक यानी कीड़े पैदा करनेवाले पदार्थ खाता-पीता है; तो हृदयके किसी भागमें एक गाँठ पैदा हो जाती है, उस गाँठमेंसे क्लेद और रस निकलता है। उस क्लेद और रससे कीड़े पैदा हो जाते हैं और फिर "कृमिज हृदय रोग" हो जाता है।

इस रोगमें—नोचनेकी सी पीडा और खुजली होती है; छातीमें तेज दर्द, सूई चुभानेकी सी पीडा, अँधेरी आना, अरुचि, दोनों आँखोंका काला हो जाना और उन पर सूजन चढ़ आना—ये सब लक्षण होते हैं।

उपद्रव—इस "कृमिज हृदय रोग"के उपद्रव "कफज कृमिरोग"के समान होते हैं; यानी क्लान्ति मालूम होना, देहका अवसन्न रहना, भ्रम और शोष आदि उपद्रव होते हैं।

हृदय रोगके उपद्रव।

क्रोम था प्यास लगनेकी जगहमें ग्लानि, भ्रम और शोष—हृदय रोगके उपद्रव हैं।

हृदय रोगमें याद रखने योग्य बातें।

(१) हृदय रोगमें अग्नि वृद्धि करने वाली और खून पदा करने वाली दवाएं देनी चाहिये।

(२) वातज हृदय रोगमें—बलकारक पदार्थ, मांस, मांसरस, दूध, घी, शालि चाँवल और वातनाशक दवाओं द्वारा पकाये हुए तेल और बस्ति कर्म—य सब उपचार हित हैं। इस रोगमें दशमूलके काढ़ेमें तेल और सेंधानोन डालकर पिलाना और वमन कराना भी हितकर है।

(३) पित्तज हृदय रोगमें—कुम्भेरके फल और मुलेठीके काढ़ेमें शहद, चीनी और गुड़ डालकर वमन करानी चाहिये। वमन विरेचन आदिसे शरीरको शुद्ध करके दाख, चीनी, मधु और फालसे एवं पित्तनाशक अन्नपान देना चाहिये। मधुर पदार्थोंके साथ सिद्ध किया हुआ घी और काढ़ा सेवन कराना चाहिये और "पित्त ज्वरकी चिकित्सा" करनी चाहिये। चन्दनादिका शीतल लेप, शीतल जलका सींचना और दस्त कराना इस हृदय रोगमें हित हैं।

(४) कफज हृदय रोगमें—पहले पसीने निकालने चाहियें, वमन और लंघन कराने चाहियें और दोषोंका बलाबल विचार कर कफ नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोगमें वच और नीमके काढ़ेसे वमन कराना अच्छा है। फल, तेल बस्तिकर्म, कुल्थी

धनियेका यूष, जौ, तीक्ष्ण अन्नपान और मिश्री—ये सब पथ्य हैं ।

(५) त्रिदोषज हृदय रोगमें—पहले लंघन कराने चाहियें । त्रिदोष नाशक अन्नपान देना चाहिये और दोषोंकी प्रबलता, हीनता और समताका विचार करके चिकित्सा करनी चाहिये ।

(६) कृमिज हृदय रोगमें—पहले लंघन और पाचन कराने चाहियें, फिर कृमि रोगमें लिखी हुई "कृमि नाशक चिकित्सा" करनी चाहिये । इस रोगमें खानेके लिए "वायविडंगके साथ जौके पदार्थ" देने चाहियें ।

हृदय रोगकी विशेष-चिकित्सा ।

हृदय रोग नाशक नुसख़े ।

(१) कूट, बडे नीमकी जड, सोंठ, कचूर और हरीतकी—सबको समान-समान लेकर, एकत्र पीस लो । फिर इसमें "दूध, काँजी, घी और नमक" मिलाकर सेवन करो । इस नुसख़ेसे वायुजन्य हृदय रोग शान्त हो जाता है ।

(२) पोहकरमूल, बिजौरे नीबूकी जड़, सोंठ, कचूर और हरड़—इन सबको एकत्र पीस कर, सिल पर पानीके साथ फिर पीस कर कल्क या लुगदीसी बना लो । इसका नाम "पुष्करकल्क" है । इसको खार, काँजी, घी या सेंधेनोनके साथ मिलाकर खानेसे वातज हृदय रोग आराम हो जाता है ।

(३) पोहकरमूल, बिजौरा नीबू, ढाकके बीज, दुर्गन्ध करंज,

कचूर और देवदारु—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। फिर इस काढ़ेमें "सोंठ, ज़ीरा, वच, अजवायन, जवाखार और सेंधे-नोनका चूर्ण" मिलाकर पीओ। इससे वातज हृदय रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) हरीतकी, वच, रास्ना, पीपर, सोंठ, कचूर और कूट समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे १॥ से ३ माशे तक चूर्ण पानीके साथ खानेसे वातज हृदय रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) पुनर्नवा, देवदारु, पंचमूल, रास्ना, जौ, बेर, कैथ और बेलगिरी—इनको दो-दो तोले लेकर जौकुट करलो और २५६ तोले पानीमें मिलाकर काढ़ा बना लो। जब ६४ तोले पानी रह जाय, छानलो। फिर उस काढ़ेमें १६ तोले "काले तिलोंका तेल" मिलाकर औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छानलो। इसका नाम "पुनर्नवाद्य तैल" है। इसकी मालिश करने और पीनेसे वातज हृदय रोग नाश हो जाता है।

(६) पोहकरमूल, सोंठ, वच, अजवायन, ढाकके बीज, करंज, कचूर और देवादारु—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा पकाओ। पकनेपर उसे छानलो और उसमें "जीरा और नमक" डालकर पीओ। इस काढ़ेसे वातज हृदय रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पित्तज हृदय रोग नाशक नुसखे।

(१) शहद और मिश्री मिलाकर मुनक्के खानेसे पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(२) हरड़का चूर्ण और मिश्री मिलाकर खाने और ऊपरसे पानी पीनेसे पित्तज हृदय रोग आराम हो जाता है।

(३) कुटकी और मुलहटीका चूर्ण खाकर पानी पीनेसे पित्तज हृदय रोग आराम हो जाता है।

(४) मुलेठी और कुटकी जलमें पीसकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(५) मुलेठीको दूधमें पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज हृदय रोग रहता जाता है।

(६) अर्जुन वृक्षकी छालको दूधमें पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(७) पंचमूल या खिरैंटीको दूधमें पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज हृदय रोग, जीर्ण ज्वर और रक्तपित्त जाते रहते हैं।

नोट—ये सातों नुसख़े परीक्षित हैं।

(८) गुड़के शर्वतके साथ अर्जुन वृक्षकी छालका चूर्ण खानेसे पित्तज हृदय रोग आराम हो जाता है।

कफज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) पीपरामूल और छोटी इलायचीका चूर्ण "घी"के साथ चाटनेसे कफज हृदय रोग और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं। इस चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई पीपर और छोटी इलायचीका चूर्ण १॥ से ३ माशे तक ६ माशे "घी"में मिलाकर चटाते हैं।

(२) निशोथ, कचूर, खिरैंटी, रास्ना हरीतकी और कूट—

सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे दो या तीन माशे चूर्ण "गोमूत्र"के साथ पीनेसे कफज हृदय रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई निशोथकी जगह पाटल लेते हैं।

पीपर, वच, छोटी इलायची, हींग, जवाखार, सञ्चानोन, कालानोन, सोंठ और अजमोद,—इनको समान-समान ले-लो और पीस-छान कर रखलो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण त्रिफलाके काढे, कुल्थीके यूप, दही या शराबके साथ पीनेसे वातज हृदय रोग और कफज हृदय रोगमें वमन विरेचन—कय और दस्त होकर लाभ होता है।

त्रिदोषज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) हींग, वच, कालानोन, सोंठ, पीपर, हरड, चीता, जवाखार, संचरनोन और कुट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ रत्ती या १ माशे चूर्ण जौके काढ़ेके साथ खानेसे त्रिदोषज हृदय रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—हींग, वच, विड़नोन, सोंठ, जीरा, कूट, हरड़, चीता, जवाखार, सचर-नोन और पोहकरमूल—इन सबका चूर्ण भी त्रिदोषज हृदय रोग और शूल नाशक है। यह भी परीक्षित है। इसमें पीपरकी जगह जीरा है और पोहकरमूल अधिक है। बस और फर्क नहीं है।

कृमिज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) वायविडंग और कूट को समान-समान लाकर पीस-छान लो। इसमेंसे १॥ माशे चूर्ण "गोमूत्र"के साथ खानेसे कृमिज हृदय

रोग नाश हो जाता है। "वङ्गसेन"में लिखा है, इस नुसख़ेसे पेटके असाध्य कीड़े भी निकल जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस कृमिज हृदय रोगमें, विचार कर कृमि रोगकी और दवाएँ देनेसे भी लाभ होता है। कृमि रोगकी चिकित्सा हमने तीसरे भागमें लिखी है।

समस्त हृदय रोग नाशक नुसख़े।

शृंग रस।

(१) हिरनके सींगको रेतीसे रितवाकर, एक कुल्हड़ेमें भर दो और मुँह बन्द करके कपरौटी कर दो। फिर कुल्हड़ेको सुखाकर दस सेर जंगली कण्डोंमें फूंक दो। शीतल होने पर भस्मको निकाल कर शीशीमें रख दो। इसमें से १ माशे भस्म ३ माशे गायके गरम घीमें मिलाकर खानेसे घोर हृदयशूल या हृदय रोग, पीठका शूल और चूतड़का दर्द ये सब आराम हो जाते हैं। आराम तो इससे सभी शूल होते हैं, पर हृदय-शूलोंपर तो यह यह रामवाण दवा है। इस एक दवाके होते और दवाओंकी दरकार नहीं। अनेक बारकी परीक्षित है।

हृदय-रोगान्तक चूर्ण।

(२) अर्जुन वृक्ष या कोहकी छालका चूर्ण गुड़के शर्वत, पानी या घी अथवा दूधके साथ खानेसे सब तरहके हृदय रोग, जीर्णज्वर और रक्तपित्त आराम हो जाते हैं तथा उम्र बढ़ती है। मात्रा ६ माशेकी है। परीक्षित है।

नोट—घी या दूधके साथ बहुत फायदा करता है।

हृदय-रोग नाशक चूर्ण।

(३) हरड़, वच, रास्ना, पीपर, सोंठ, कचूर और पोहकरमूल

समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमें से २ या ३ माशे चूर्ण पानीके साथ खानेसे हृदय रोग नाश हो जाते हैं।

हृदय-रोगारि योग।

(४) गेंहू और अर्जुन वृक्षकी छालका चूर्ण बकरीके दूध और गायके घीमें पकाकर तथा "मिश्री और शहद" मिलाकर पीनेसे घोर हृदय रोग भी शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।

अर्जुन घृत।

(५) अर्जुन वृक्षकी चार तोले छालको पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर अर्जुनवृक्षकी पाव भर छालको कूट कर चार सेर पानीमें औटाओ। जब एक सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो। अब पाव भर गायका घी, ऊपरकी लुगदी और काढ़ेको मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय छान लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीके पीनेसे सब तरहके हृदय-रोग नाश हो जाते हैं।

क्षीर वल्लभ घृत।

(६) हरड ५० और कालानोन ८ तोलेको सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर ६४ तोले घी, २५६ तोले गायका दूध और ऊपरकी लुगदी मिलाकर पकाओ। घी मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इसका नाम "क्षीरवल्लभ" घृत है। इसमें से बलाबल अनुसार ६ माशेसे २ तोले तल घी पीनेसे सब तरहके हृदय रोग और अपतंत्रक रोग नाश हो जाते हैं।

बलाद्य घृत।

(६) खिरटी, गंगेरन—गुलसकरी और कोहकी छाल—तीनों मिलाकर तीन छटाँक ले लो। फिर जौकुट करके इसमें तीन सेर पानी डालकर औटाओ। जब तीन पाव काढ़ा रहजाय, उतार कर

छानलो। आधपाव मुलहटी सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। अब तीन छटाँक घी, लुगदी और काढ़े को मिलाकर पकालो। जब घी मात्र रहजाय, छानलो। इसमें से ६ माशे से २ तोले तक घी पीनेसे हृदय-शूल, शूल, घाव, रक्तपित्त, खाँसी और दारुण वातरक्त ये सब नाश हो जाते हैं।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

(८) पीपर, सोंठ, अनारदाना, कालानोन और भुनी हींग—बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर नीबूके रसमें खरल करके जंगली बेर-समान गोलियाँ बनालो और छायामें सुखालो। सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम पानीके साथ खानेसे असाध्य हृदय रोग दूर हो जाता है। परीक्षित है।

कुकुभादि चूर्ण।

(६) अर्जुनकी छाल, वच, रास्ना, खिरेंटी, गुलसकरी, हरड़, कचूर, कूट, पीपर और सोंठ—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण १ तोले गायके घीमें मिलाकर खानेसे हृदय रोग नाश हो जाते हैं। इसको "कुकुभादि चूर्ण" कहते हैं। परीक्षित है।

हृदय रोगकी अपूर्व दवा।

(१०) दाख ४ भाग, शहत ३ भाग और घी २ भाग मिलाकर कुछ दिन सेवन करनेसे हृदयकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

पुष्कर चूर्ण।

(११) पोहकरमूलका चूर्ण "शहद"के साथ चाटनेसे जी मिचलाना, खाँसी, श्वास और हृदय-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

कल्याण सुन्दर रस।

(१२) रस-सिन्दूर, अभ्रक-भस्म, चाँदी-भस्म ताम्बा-भस्म,

सुवर्ण-भस्म और शुद्ध हिंगुल बराबर-बराबर लेकर खरलमें डालो। ऊपरसे "चीतेका रस" दे-देकर दिन-भर खरल करो और सुखा दो। फिर सात दिन तक "हाथी शुंडा"के रसमें खरल करो और रात-भर सूखने दो। आठवें दिन रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम या ज़रूरतके समय, एक-एक गोली खिलाकर, ऊपरसे गरम दूध पिलाओ। इस रससे हृदयके सभी रोग नाश हो जाते हैं।

हृदयेश्वर रस।

शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध गन्धक १ तोले मिलाकर ४।५ घन्टे-तक खरल करो। फिर इसमें १ तोले "ताम्बा भस्म" मिला दो और त्रिफलेका काढ़ा-दे-देकर दिन-भर खरल करो और रातभर सुखने दो। दूसरे दिन "काकमाचीके रस"के साथ खरल करो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बनालो। एक-एक गोली "अर्जुनकी छालके रस या काढ़े"के साथ लेनेसे हृदय-रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

अपूर्व्व योग।

कलौंजीको पीसकर रखलो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण सवेरे-शाम १ छटाँक "गधीके दूध"के साथ खानेसे हृदयकी कमज़ोरी, हृदयकी धड़कन आदि शीघ्र ही कम होकर, हृदय बलवान होता और हृदयकी चाल ठीक हो जाती है। एक परमहंस बाबा वैद्य" लिखते हैं, कि इसको हमने सभी योगोंसे उत्तम पाया। इससे सब तरहके हृदय रोग नाश हो जाते हैं। पराया परीक्षित है हमारा नहीं।

अर्क़ नारंगी।

नारंगीके फूलोंका भभकेके द्वारा अर्क़ खींचलो। इस अर्क़के पीनेसे हृदय-रोग और रक्तपित्त आराम हो जाते तथा शरीरमें फुरती आती है।

नोट—जो अर्क़ न खींच सके वे नारंगीके फूलोंका काढा बनालें। नारंगी बड़ा उत्तम फल है। इसके सब अंग दवाके काममें आते हैं:—

(१) नारंगीके ऊपर जो लाल छिलका होता है, उसे सुखाकर पीस लो और "गुलाब जल"में मिलाकर शरीर पर लगाओ। इससे दाद, खाज, चकत्ते और अनेक तरहके ख़ून-विकारके रोग नाश हो जाते हैं।

(२) नारंगीका शर्वत, नारंगीका पाक या मुरब्बा खानेसे हृदय-रोगमें बड़ा फ़ायदा होता है।

उरोग्रह-वर्णन।

निदान और लक्षण।

अत्यन्त अभिष्यन्दी पदार्थ, भारी अन्न, सूखा और बदबूदार मांस खानेसे—मांस और ख़ूनके संयोगसे—यकृत और प्लीहा जिस समय बढ़ते हैं,उस समय कफ और वात,—कोखमें जाकर—"उरोग्रह रोग" करते हैं।

स्तम्भ, ज्वर, रूखापन, स्पर्शका न सह सकना, भारीपन, पेट-फूलना, अरुचि, हृदयमें सूजन, अधोवायुका रुकना, मल-मूत्र रुकना, तन्द्रा और शूल ये लक्षण उरोग्रहमें होते हैं।

चिकित्सा।

नोट—पहले युक्तिपूर्व्वक पसीने निकालो, लोह आदिकी शलाकासे दाग दो, फस्त खुलवाओ और तेज दवाओंसे निरूह वस्ति करो, यानी गुदामें पिचकारी दो, बलाबल अनुसार वमन विरेचन देकर शुद्ध करो और रोग रोकने वाला पथ्य दो।

(१) जियापोता, सहंजना, हुलहुल या खिरैंटी—इनमेंसे किसी एकका रस गरम करो। फिर उसमें हींग और पाँचों नमक डालकर पीलो। इससे उरोग्रह रोग शान्त हो जाता है।

(२) निशोथ और गुड़ मिलाकर और गोमूत्रके साथ पीसकर खानेसे उरोग्रह नाश हो जाता है।

(३) दही, अम्लवेत, जवाखार, हींग और चीता बराबर-बराबर लेकर तेल और काँजीके साथ पीनेसे उरोग्रह नाश हो जाता है।

सोलहवाँ अध्याय

मूत्रकृच्छ्र किसे कहते हैं ?

जिस रोगमें पेशाब बड़ी तकलीफके साथ होता है, उसे "मूत्र-कृच्छ्र" कहते हैं ।

मूत्रकृच्छ्रके सामान्य लक्षण ।

मूत्रकृच्छ्र रोग होनेसे पेशाब बड़ी तकलीफके साथ बूंद-बूंद अथवा कच्चे खूनके साथ थोड़ा-थोड़ा उतरता है। नाभि या सूंडीके नीचे, जाँघोंमें और मूत्रनलीमें बड़ी वेदना होती है। मूत्रकृच्छ्रके यही सामान्य लक्षण हैं ।

मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें भेद ।

मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात दोनों ही पेशावके रोग हैं; दोनो हीमें पेशाब करते समय तकलीफ होती है, फिर दोनोंमें फर्क़ क्या

है? मूत्रकृच्छ्रमें पेशावकी रुकावट थोड़ी देर तक रहती है और मूत्राघातमें पेशाबकी रुकावट बहुत ही ज़ियादा देर तक रहती है। मूत्रकृच्छ्रमें पेशाब करते समय बहुत ही ज़ियादा तकलीफ होती है, परन्तु मूत्राघातमें पेशाब करते समय बहुत ही कम तकलीफ होती है। मतलब यह है कि, मूत्रकृच्छ्रकी अपेक्षा मूत्राघातमें पेशाब करते समय दर्द कम होता है। मूत्राघातमें पेशाब रुक-रुक कर थोड़ा-थोड़ा होता है या बन्द ही हो जाता है; किन्तु मूत्रकृच्छ्रमें पेशाब इतनी देर नहीं रुकता।

मूत्रकृच्छ्रके निदान।

बहुत ही ज़ियादा कसरत करने, राई आदि तीक्ष्ण पदार्थ या तीक्ष्ण दवा खाने, रूखा अन्न खाने, रूखी शराब पीने, बहुत नाचने, घोड़ा आदिकी सवारी करने और उन्हें बहुत दौड़ाने, बरसातके पानीमें डूबे हुए स्थानोंके जानवरोंका मांस खाने अथवा अनूप देशकी मछलियोंका मांस खाने, भोजन पर भोजन करने, अजीर्ण होने और मल-मूत्रादिके वेग रोकनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग पैदा होता है। यह रोग आठ तरहका होता है।

मूत्रकृच्छ्रकी क़िस्में।

मूत्रकृच्छ्र रोग आठ तरहका होता है :—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) सन्निपातज।
(५) आगन्तुक। (६) पुरीषज।
(७) अश्मरीज। (८) शुक्रज।

वातज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

वातज मूत्रकृच्छ्र होनेसे दोनों वंक्षण या पट्ठों, पेडू या मूत्राशय

और लिंगमें अत्यन्त वेदना होती और वारम्वार थोड़ा-थोड़ा पेशाव होता है ।

पित्तज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

पित्तज मूत्रकृच्छ्रमें—दर्द और जलनके साथ वारम्वार पीला या लाल पेशाव आता है ।

नोट—"भावप्रकाश"में लिखा है, वारम्वार पीला, खून-मिला हुआ, वेदना और जलनके साथ पेशाव होता है ।

कफज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

कफजमूत्रकृच्छ्रमें—लिंग और पेड़ू में भार या बोझासा मालूम होता है, सूजन होती है और पेशाव चिकनासा या लिब-लिबासा होता है ।

सन्निपातज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्रमें—ऊपर लिखे हुए तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं ।

आगन्तुक मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

पेशाव बहानेवाली नलीमें काँटे वग़ैरः लगनेसे घाव हो जाने और मुट्ठी वग़ैरःकी चोट लगनेसे जो रोग होता है, उसे आगन्तुक या शल्यज मूत्रकृच्छ्र कहते हैं । इसमें मृत्युके समान घोर वेदना होती है । इस मूत्रकृच्छ्रके लक्षण वातज मूत्रकृच्छ्रके जैसे होते हैं ।

पुरीषज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

मलका वेग रोकनेसे दूषित हुआ वायु पेटमें अफारा करता है और पेशाव करते समय शूल चलते हैं ।

अश्मरीज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

पथरी होनेसे जो मूत्रकृच्छ्र होता है, उसे अश्मरीजन्यमूत्र-कृच्छ्र या पथरीका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं। छातीमें दर्द, कम्प, कोख-शूल, मन्दाग्नि, मूर्च्छा और दारुण मूत्रकृच्छ्र, ये पथरी या शर्कराके उपद्रव हैं।

नोट—सुश्रुतमें शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्र नवाँ लिखा है; लेकिन और आचार्योंने आठकी गिन्ती रखनेके लिए शर्कराके मूत्रकृच्छ्रको अलग नहीं लिखा। फिर पथरी और शर्करामें विशेष भेद भी नहीं है। पित्तसे पककर, वायुसे सूख कर और कफके संयोगसे पथरी बनती है। मूत्र, वीर्य और कफके समुदायको पथरी कहते हैं। जब वही पथरी कफके वियोगसे छूट कर, मूत्र-मार्गसे ककरोके रूपमें झरने लगती है, तब उसे शर्करा या ककरी कहते हैं।

शुक्रज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण ।

दूषित वीर्यके मूत्र-मार्गमें रहनेसे शुक्रज मूत्रकृच्छ्र होता है। इस रोगमें पेड़ू और लिंगमें शूलके समान दर्द होता और बड़े कष्ट से पेशाब होता है।

"भावप्रकाश"में लिखा है, वीर्यके दोषसे दूषित होकर मूत्र-मार्ग सुकड़ जाता है, तब पेशाब थोड़ा-थोड़ा होता है, मूत्रके साथ वीर्य निकलता है और मूत्राशय तथा लिङ्गमें दर्द होता है।
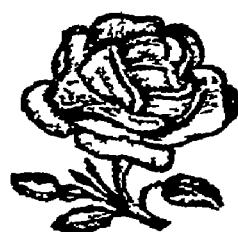
वातज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे।

नोट—वायुका मूत्रकृच्छ्र हो, तो वैद्यको चाहिये रोगीके शरीरमें तलादिकी मालिश करावे, स्नेह कर्म करे, निरूह और उत्तर वस्ति दे, अंगोंमें उचित दवा बँधवावे, घी वगैर. से सेक करावे तथा शालपर्णी आदि वातनाशक पदार्थोंमें पकाये हुए रस पिलावे।

(१) गिलोय, सोंठ, आमले, असगन्ध और गोखरूका काढ़ा "शहद" मिलाकर पिलानेसे वातज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

नोट—पित्तज मूत्रकृच्छ्र होनेसे—वैद्यको चाहिये, कि रोगीके अंगोंपर जल और चन्दन वगैरः शीतल पदार्थ छिड़के, शीतल जलमें घुसकर स्नान करावे; शीतल खस और चन्दनादिका लेप करावे, ग्रीष्म ऋतुके अनुसार उपचार करे; दाखका रस, विदारीकन्दका रस, ईखका रस तथा घी—इनकी पिचकारी लगावे तथा इन्हीं पदार्थोंको डालकर दूधके विकार खिलावे।

(१) शतावरके रसमें चीनी मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

(२) कुश, काँस, रामसर, दाभ और ईखकी जड़को "तृणपंच-मूल" कहते हैं। इस पञ्चमूलके सेवन करनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो

जाता है तथा बस्त्याशय या पेड़ू साफ हो जाता है। तृणपञ्चमूलको दूधमें औटाकर पीनेसे लिंगसे खूनका गिरना बन्द हो जाता है।

(३) शतावर, काँस, कुश, गोखरू, विदारीकन्द, शालि चाँवल, ईख और कसेरु—इनका काढ़ा पकाकर और शीतल करके, उसमें "शहद और घी" अथवा शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। "इसका नाम" शतावर्य्यादि क्वाथ है। परीक्षित है।

(४) खीरेके बीज, मुलेठी और दारुहल्दी—इनको चाँवलोंके जलमें पीसकर चाँवलोंके धोवनके साथ पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। इसे "एर्वारु बीजादि पान" कहते हैं। परीक्षित है।

(५) दारु हल्दीको पीसकर, उसमें "आमलोंका रस और शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

(६) हरड़, गोखरु, अमलताशका गूदा, पाषाणभेद और धमासा—इनका काढ़ा बनाकर और "शहत" मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र, दाह, विबन्ध और पीड़ा शान्त हो जाती है। इसका नाम "हरीतक्यादि क्वाथ" है।

नोट—पित्तज मूत्रकृच्छ्रमें नं० ३ शतावर्य्यादि क्वाथ और यह नं० ६ हरीतक्यादि क्वाथ बहुत अच्छे हैं।

कफज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे।

नोट—क्षार, गरम और तीक्ष्ण दवा, अन्नपान, स्वेदन, जौका भोजन, वमन, निरूहण बस्ति, तक्र और कड़वे पदार्थोंसे तथा गरम पदार्थोंसे पकाये हुए तेलकी मालिश करने और उसी तेलके पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्रमें लाभ होता है।

(१) सम्हालूके बीज माठेके साथ पीने अथवा मूँगेकी भस्म

चाँवलोंके धोवनके साथ पीने अथवा गोखरूका चूर्ण सोंठके काढेके साथ पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है ।

(२) छोटी इलायचीका चूर्ण गोमूत्रके साथ या केलेके स्वरसके साथ खानेसे अथवा केलेके स्वरसमें पीसकर और गोलियाँ बनाकर खानेसे कफज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे !

नोट—त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्रमें कफाधिक्य हो तो पहले वमन कराओ ; पित्त अधिक हो तो विरेचन कराओ और वाताधिक्य हो तो वस्ति प्रयोग करो ।

(१) बड़ी कटेरी, पृश्निपर्णी, पाढ़, मुलेठी और इन्द्रजौका काढ़ा पीनेसे त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाश होता है ।

(२) गुड़को दूधमें मिलाकर और ज़रा गरम करके पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र, शर्करा और वात रोग नष्ट हो जाते हैं ।

(३) ६ माशे जवाखार और ६ माशे गुड़ मिलाकर खानेसे त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

आगन्तुक मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे ।

नोट—चोट आदि लगने से जो मूत्रकृच्छ्र हो, उसमें वातज मूत्रकृच्छ्रके समान चिकित्सा करो ।

(१) पंचक्षीरी वृक्षोंकी छालको सिलपर पानीके साथ पीसकर, ज़रा गरम करो और मूत्राशय पर लेप करदो । इस से चोट लगने से हुआ मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है ।

(२) मूत्रकृच्छ्र में पेशावके साथ खून आता हो, तो आमलोंके रस और ईखके रसमें शहद मिलाकर पीओ। अथवा औटाया हुआ दूध शहद और आधा बूरा मिलाकर पीओ। अथवा शराबमें घी, मिश्री और शहद मिलाकर पीओ। ये तीनों नुसख़े उत्तम हैं।

पुरीषज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

गोखरूके बीजोंके काढेमें जवाखार मिलाकर पीनेसे पुरीषज या मल रोकनेसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

अश्मरीज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

(१) गोखरूके बीज, अमलताशका गूदा, कुश, काँस, जवासा, पाथरचूर और हरड़—इन सबका काढ़ा या चूर्ण शहदके साथ सेवन करनेसे पथरीका मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) अकेले पाथरचूरका रस या काढ़ा पीनेसे पथरीका मूत्र-कृच्छ्र नाश हो जाता है।

नोट—पाथरचूरको "पाषाणभेद" भी कहते हैं।

(३) एक तोले ककड़ीके बीज पीस कर और काँजी तथा संधानोन मिलाकर खानेसे पथरीका मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

(४) सतौना, अमलताशका गूदा, केतकी, इलायची, नीमकी छाल, करंज, कुडेकी छाल और गिलोय—इनके काढ़ेमें "शहद" मिला कर पीनेसे पथरीसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

शुक्रज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे।

(१) शुद्ध शिलाजीत "शहद" में मिलाकर चाटनेसे शुक्रके दोष से हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) इलायची, हींग और घी—इनको दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्र और हृदय शुद्ध हो जाते यथा वीर्यका दोष नष्ट हो जाता है।

सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे।

(१) ६ माशे जवाखारको ६ माशे मिश्रीमें मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं।

(२) दो तोले आमलोंके काढ़ेमें १ तोले "गुड़" मिलाकर पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। इस रोगसे थकान, खूनविकार, दाह, पित्त और शूल रोग नाश हो जाते हैं। यह वृष्य और तृप्तिकर है। परीक्षित है।

(३) हुलहुलके छै माशे बीज "वासी पानीमें" पीस-छानकर पीनेसे सब तरहके साध्य मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। (सूरजमुखीको ही हुलहुल कहते हैं।)

(४) ३ माशे जवाखार और एक तोले चीनी मिला हुआ सफेद कुम्हड़ेका रस पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५) माठेके साथ ४ माशे शुद्ध गन्धक खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(६) ६ माशे जवाखार और १ तोले शहद मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) खिरैंटीकी जडका काढ़ा पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(८) खीरेके बीज और तिल—एकत्र पीसकर घी और दूधके साथ पीनेसे समस्त मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(९) इलायची, पाषाणभेद, शुद्ध शिलाजीत, पीपर, खीरेके बीज, सधानोन और केसर,—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार या ६ माशे चूर्ण "चाँवलोंके धोवन"के साथ खानेसे मरता हुआ मूत्रकृच्छ्र-रोगी भी आराम हो जाता है।

नोट—इलायची, पाषाणभेद, शुद्ध शिलाजीत और पीपर इन सबका चूर्ण चाँवलोंके धोवनके साथ लेनेसे भी मरता हुआ मूत्रकृच्छ्र रोगी आराम हो जाता है।

(१०) लोहेकी भस्म महीन पीसकर और "शहद"में मिलाकर ३ दिन खानेसे मूत्रकृच्छ्र रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। इसमें ज़रा भी शक नहीं।

(११) कटेरीका सोलह तोले स्वरस "शहद" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होकर सुख होता है। परीक्षित है।

(१२) हरड़, बहेड़े और आमलेको पानीके साथ सिलपर पीसो। फिर इसमें बेरोंकी मींगी और सेंधानोन मिलाकर पी लो। इससे भी मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

(१३) जौ, अरण्ड, तृण-पञ्चमूल, पाषाणभेद, शतावर, गूगल और हरड—इनके काढ़ेमें "गुड" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

(१४) कुश, काँस, ईख, रामसर और नरसलकी जड़ पीसकर

पीनेसे मूत्राघात और पथरीसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। यह नुसख़ा रुधिर-विकारोंको भी दूर करता है। परीक्षित है।

(१५) दाख और मिश्री पीसकर "दहीके तोड़"के साथ खानेसे सब तरहके मूत्रकच्छ्र आराम हो जाते हैं।

(१६) विदारीकन्द, सारिवा, मेढ़ासिंगी, गिलोय, हल्दी, वायविडङ्ग और तृण-पंचमूल—इनको पीसकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र फौरन आराम होता है।

(१७) आमलोंके ६ माशे चूर्णमें १ तोले "गुड़" मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(१८) शुद्ध शिलाजीत, गोखरू, पाषाणभेद, इलायची, केशर, ककड़ीके बीज और सेंधानोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार या छे माशे चूर्ण चाँवलोंके धोवनके साथ खानेसे घोर असाध्य मूत्रकृच्छ्र भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—नं० ६ नुसख़े और इस नुसख़े में बहुत थोड़ा भेद है।

(१९) शुद्ध आमलासार गन्धक चार माशे, जवाखार चार माशे और मिश्री १ तोले मिलाकर पाव-भर माठेके साथ खानेसे असाध्य मूत्रकृच्छ्र भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) गायके आध सेर दूधमें तीन तोला "गुड़" मिलाकर औटाने और पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दो तोले गोखरूको पाव भर पानीमें औटाओ। जब एक छटाँक पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो। फिर उसमें चार माशे "जवाखार" मिला दो और पीलो। इससे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२२) आमले, मुनक्के, विदारीकन्द, मुलेठी और गोखरू—कुल दो तोले लेकर, जौकुट करके डेढ़ पाव जलमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, छानकर शीतल करो और दो तोले "मिश्री"

मिलाकर पीलो। इससे घोर मूत्रकृच्छ्र भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) अगर पेशावके साथ खून आता हो, तो दो तोले सफेद चन्दनका बुरादा मिट्टीकी हाँड़ीमें, रातके समय आध पाव पानी डालकर भिगो दो और सवेरे ही उसे मलकर छानलो। पहले चाकसू के २१ बीज चवाकर, ऊपरसे रक्खा हुआ चन्दनका पानी पीलो। इस नुसख़ेसे पेशावकी नलीसे खून आना अवश्य बन्द हो जाता है।

(२४) बबूलकी नर्म पत्ती १ तोले और गोखरू १ तोले—इन दोनोंको सिल पर पीसकर आध पाव पानीमें मिलाकर कपड़ेसे छानलो और २ तोला "मिश्री" मिला कर पीलो। इससे सोजाक और मूत्रकृच्छ्र अवश्य आराम हो जाते हैं।

(२५) गन्देबिरौज़ेका सत्त १ माशे और गुड़ १ माशे—दोनोंको मिला कर खाओ और ऊपरसे आध पाव दहीमें छटाँक भर पानी मिला कर पीलो। इस नुसख़ेसे सोज़ाक नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) भुनी फिटकरी २ माशे, गेरू २ माशे और मिश्री ६ माशे —इन तीनोंको पीस-छान लो। यह एक मात्रा है। इसे खाकर ऊपरसे गायका कच्चा धारोष्ण दूध पीनेसे १५।२० दिनमें सोजाक निश्चय ही जाता रहता है। परीक्षित है।

(२७) ६ माशे राल और ६ माशे मिश्री मिलाकर पानीके साथ नित्य खानेसे पेशावके साथ कच्चा खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२८) ६ माशे कलमी शोरा और ६ माशे बड़ी इलायचीके बीज पीसकर खाने और ऊपरसे लाल साँठी चाँवलोंका धोवन पीनेसे सोज़ाक अवश्य ही दूर हो जाता है।

(२९) ६ माशे जवाखार और ६ माशे मिश्री मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३०) दो तोले गोखरूके काढेमें २ माशे "जवाखारका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

(३१) छोटी इलायची, हींग और घी मिलाकर दूध पीनेसे पेशावका कष्टसे होना और वीर्य मिला हुआ पेशाव आना आराम हो जाता है।

(३२) लघु पंचमूलका काढ़ा पीनेसे मूत्र कृच्छ्र और मूत्राश्मरी —मूत्रकी पथरी ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) छोटी इलायची, गोखरू, भुँई आमला, मिश्री और गायके दूधके साथ १ या २ रत्ती "अभ्रक भस्म" खिलानेसे प्रमेह और मूत्र-कृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इलायची आदि चारों चीजोंका चूर्ण ४ माशे और अभ्रक भस्म २ रत्ती —इनको मिलाकर ऊपरसे गायका थन-दुहा धारोष्ण दूध पीना चाहिये। परीक्षित है।

(३४) सफेद कमलकी गाँठका चूर्ण ६ माशे, जीरेका चूर्ण ३ रत्ती, शक्कर ६ माशे और घी एक तोले मिलाकर सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और सोजाक रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३५) बाँझ ककोडेकी गाँठ १ तोले "शहद"में मिलाकर चाटनेसे श्वेत प्रदर और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३६) तरबूजके अन्दरका पानी पाव भर, ज़ीरा १ माशे और मिश्री ६ माशे मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) शीतल चीनी, छोटी इलायची, गिले अरमनी—लाल गेरू, हजरल यहूद और बिरोज़ेका सत्त—इन सबको दो-दो तोले लेकर पीस-छानलो। फिर चूर्णके बराबर "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसमेंसे चार-चार माशे चूर्ण सवेरे-शाम पानी-मिले कच्चे दूधके साथ खानेसे पेशावकी जलन, पेशावमें पीप आना वग़ैरः समेत

सोज़ाक रोग नाश हो जाता है। सोजाकके लिए उत्तम नुसखा है। परीक्षित है।

(३८) चन्दनका तेल, विरौज़ेका तेल और शीतलचीनीका तेल एक-एक तोले लेकर मिला लो और एक शीशीमें रख दो। इसमेंसे १०।१० या २०।२० बूंद तेल ६ माशे मिश्रीमें मिलाकर, दिनमें तीन या चार, बार खानेसे पेशाबकी जलन, पीप आना, खड़िया के जैसा पेशाब आना वग़ैरः सोज़ाककी शिकायतें मिट जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—सोजाकवालेको अगर नीचेका "शाही जुलाब" देकर दो चार दस्त करा दिये जायँ और फिर दवा दी जाय, तो बहुत जल्दी लाभ हो। रातके समय एक छटाँक मौसमी गुलाबके फूल लाकर एक मिट्टीकी कोरी हाँड़ीमें आध सेर पानी डालकर भिगो दो। सवेरे ही फूलोंको मसल कर पानीको छानलो। उस गुलाबके पानीमें एक छटाँक पुराने हसराज चाँवल डालकर पकाओ। जब चाँवल सीज जायँ, उनमें एक छटाँक-भर मिश्री पीस कर डालदो और पकने दो। जब खूब पक जायँ, उतार कर रोगीको खिलाओ। इससे चार पाँच दस्त आसानीसे साफ होंगे। अगर दस्त न हों, तो थोड़ासा गरम जल या सौंफका अर्क़ पिला दो। दस्त हो जाने पर, तीसरे पहर हल्का भोजन दो। यह बड़ा उत्तम बादशाही जुलाब है। अमीरी चीज़ है।

(३९) दो तोले पके फालसे आध पाव पानीमें एक घन्टे तक भिगो रखो। फिर उस पानीको मल-छान कर उसमें १ तोले मिश्री मिलाकर पीलो। इस उपायसे पेशाबकी जलन और पेशाबका कम होना आदि सारी सोजाककी शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित हैं।

नोट—जिस मौसममें फालसे न मिले, उसमें फालसेके पेड़की जड़ लाकर कूटलो और फिर भिगोदो। सवेरे ही मिश्री मिलाकर पीओ।

(४०) एक तोले शहदको ८ तोले पानीमें घोल कर शर्बत बना लो। उसमें आधी रत्ती "केशर" पानीमें पीस कर मिला दो। फिर उसे साफ पत्थर या काँचके बासनमें रात-भर रखा रहने दो

और सवेरे ही पीलो। इससे पेशाबका रुकना, पेशाबमें कष्ट होना वग़ैर. मूत्रकृच्छ और मूत्राघातकी शिकायत जाती रहती हैं। मूत्राघात पर हमने इसको परीक्षाकी है।

(४१) जिस पर फूल न आये हों ऐसे सेमलके पेडकी नयी मूसली खोदकर, उसका दो तोले स्वरस निकालो और पीओ। इस उपायके लगातार कुछ दिन करनेसे पेशाबकी पीडा, मूत्रकृच्छ, प्रमेह और सोज़ाक रोग आराम हो जाते हैं।

(४२) खिरौंजेका सत्त, सफेद कत्था, कलमी शोरा, भुनी फिटकरी, सफेद चन्दनका बुरादा, केवडेके अर्कमें घुटा हुआ मूँगा, रेवन्द-चीनी, गिले अरमनी—लाल गेरू, संग जराहत—सेल खड़ी, गेरू और हजरल यहूद—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। पीछे सबके-बराबर "मिश्री" मिला दो। इसमें से चार-चार माशे चूर्ण सवेरे-शाम गायके दूधकी लस्सीके साथ खानेसे सोज़ाक, पेशाबकी जलन और पीप आना वग़ैर. निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है। लाख दवाओंकी एक दवा है।

(४३) सफेद जीरा १ तोले, कलमी शोरा ६ माशे, रेवन्दचीनी ८ माशे, शीतलचीनी ६ माशे और खरबूजेके बीज १ तोले—इनको पाव-भर पानीमें पीस कर छान लो। फिर इसमें तीन तोले मिश्री मिला कर, दो तीन बारमें पीलो। इससे ७ दिनमें सोज़ाक और पेशाबकी जलन वग़ैरः आराम हो जाते हैं। जम्बूके पं० रघुनाथ शर्म्माजीका परीक्षित है।

(४४) भुनी फिटकरी ४ माशे, शीतलचीनी ६ माशे, सफेद कत्था ६ माशे, बडी इलायचीके बीज ६ माशे, सेलखड़ी ६ माशे और राल ६ माशे—सबको पीस-छान लो। इसमेंसे चार-चार माशे दवा गायके कच्चे दूधके साथ खानेसे पेशाबकी जलन, सोज़ाक और पेशाबके अन्य रोग नाश हो जाते हैं। चौबे ज्वालादत्तजी वैद्य ठाकुर द्वाराका परीक्षित नुसख़ा है।

नोट—आप कहते हैं,—हरड़ १ माशे, रसौत १ माशे और पपरिया कत्था १ माशे —इनको आध सेर पानीमें रातको भिगो दो ; सवेरे ही छान कर पिचकारी लगाओ । इससे पेशाव साफ आता है और जलन वग़ैरः उपद्रव फौरन शान्त होते हैं । ऊपरकी दवा खाने और यह पिचकारी लगानेसे शीघ्र ही सोजाक भाग जाता है ।

(४५) वंसलोचन ४ माशे, छोटी इलायचीके बीज ४ माशे, सफेद चन्दनका बुरादा ४ माशे, शीतल चीनी ३ माशे. रेवन्दचीनी ३ माशे, जवाखार ३ माशे और कलमी शोरा ३ माशे—सबको कूट-पीस कर छान लो । फिर सारे चूर्णके बराबर "मिश्री" पीस कर मिला दो । इसमेंसे छे-छे माशे चूर्ण, सवेरे-शाम, चाँवलोंके धोवनके साथ खानेसे नवीन सोज़ाक और पेशावकी जलन आदि नाश हो जाते हैं । यह नुसख़ा एक जगन्नाथ प्रसाद नामक सज्जनका आज़मूदा है ।

(४६) चाँवलोंके मांड़में "सफेद चीनी" मिलाकर पिलानेसे पेशावकी जलन और रुकावट मिट जाती है ।

(४७) सफेद ज़ीरा ६ माशे और मिश्री ६ माशे कूट-पीसकर दोनों समय फाँकने और ऊपरसे "बताशोंका शर्वत" पीनेसे पेशावकी जलन और कड़क मिट जाती है ।

(४८) बुहारीका ज़ीरा रातको भिगो देने और सवेरे ही मल-छान कर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पेशावकी जलन शान्त हो जाती है ।

(४९) दूबके स्वरसमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पेशावमें ख़ून आनेका रोग मिट जाता है ।

(५०) अगर पेशाव करते समय भयंकर पीड़ा होती हो और पेशावका रंग लाल हो ; तो मुण्डीका स्वरस पीओ और उसीकी मूत्र नलीमें पिचकारी लगाओ । इससे पेशाव साफ होगा और दाह, जलन, घावकी पीड़ा वग़ैरः शान्त हो जायँगी ।

नोट—इसी उपायसे औरतोंकी मूत्र नलीकी जलन, योनि-शूल, जरायु पीड़ा और योनिकी खुजली आदि आराम हो जाते हैं । मुण्डीका रस पीना चाहिये और

उसीकी पिचकारी लगानी चाहिये। स्त्री-पुरुषके जननेन्द्रिय-सम्बन्धी रोगोंमें मुण्डी अच्छा काम करती है। सोजाक होनेके बाद अकसर धातु दूषित हो जाती है। इसलियें, ऊपरके नुसख़ेसे सोजाक आराम होने पर मुण्डी, शतावर, असगन्ध, सोंठ, और भाँग—समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर घी और चीनी मिलाकर एक-एक तोलेके लड्डू बनालो। सवेरे-शाम एक-एक लड्डू गरम दूधके साथ खानेसे बल, वीय और रतिशक्तिकी वृद्धि होती है।

मूत्रकृच्छ्र नाशक उत्तमोत्तम योग।

मूत्रकृच्छ्रान्तक रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और जवाखार,—इन तीनोंको बराबर-बराबर ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके कज्जली बना लो। फिर "जवाखार" मिलाकर खरल करो और शीशीमें रख दो। इसमेंसे दो या तीन रत्ती रस "चीनी और छाछ"के साथ सेवन करनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

कृच्छ्रान्तक रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, वंगभस्म, अभ्रक-भस्म, जवासा, जवाखार, गोखरूके बीज और हरड़—बराबर-बराबर छै-छै माशे लो। पारे और गन्धकको ३।४ घन्टे खरल करके, उसमें लोह-भस्म, वङ्गभस्म और अभ्रक-भस्म मिला दो। इसके बाद जवासा, जवाखार, गोखरू और हरडको पीस-छानकर मिला दो। अब एक दिन भतुवेका पानी दे-देकर खरल करो और रातको सूखने दो। दूसरे दिन पञ्चमूलका काढ़ा दे-देकर खरल करो और रातको सूखने दो। तीसरे दिन गोखरूका काढ़ा दे-देकर खरल करो और रत्ती

रत्तीभरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "शहद और गूलरके बीजोंके १ माशे चूर्ण"के साथ सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग आराम होते है।

कुशावलेह।

कुश, काश, खस, काली ईख और सरकण्डेकी जड़ दस-दस तोले लेकर जौकुट कर लो। फिर इसको १६ सेर पानीमें मिलाकर औटाओ; जब २ सेर पानी रह जाय, छान लो।

फिर इस काढ़ेमें आध सेर "चीनी" मिलाकर औटाओ; जब चाशनी चाटने लायक़ गाढ़ी हो जाय, उतार लो और उसमें मुलेठी, ककड़ीके बीज, कुम्हड़ेके बीज, खीरेके बीज, वंसलोचन, आमले, तेजपात, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, वरनाकी छाल, गिलोय और प्रियङ्गू-फूल—का छै-छै माशे पिसा-छना चूर्ण मिला दो।

इस अवलेहकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। अनुपान—ताज़ा पानी है। इसके सेवन करनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र, पथरी, मूत्राघात और प्रमेह नाश हो जाते हैं।
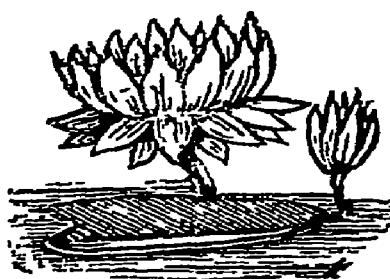
निदान-कारण ।

विशेष करके मूत्रादिक वेगोंके रोकनेसे वातादि दोष कुपित होते हैं। कुपित हुए दोष, वातकुण्डलिका आदि, तेरह तरहके "मूत्राघात" रोग पैदा करते हैं।

मूत्राघातके लक्षण ।

जिस रोगमें पेशाब रुक-रुक कर थोड़ा-थोड़ा होता है या पेशाब बन्द हो जाता है, उसे "मूत्राघात" कहते हैं। मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका निदान एक ही है। प्रमेहसे भी यह रोग होता देखा जाता है। मूत्रकृच्छ्र रोगकी अपेक्षा मूत्राघात रोगमें पेशाबमें कम तकलीफ होती है।

बूँद-बूँद पेशाब होना, पेशाबके साथ खून आना, मूत्राशयका फूलना, आध्मान—पेट फूलना, तेज़ दर्द होना, वस्ति या पेड़ूके मुँह पर पत्थरकी तरह सख्त गाँठ होना, गाढ़ा-गाढ़ा पेशाब होना, मलकीसी गन्धवाला या मल-मिला हुआ पेशाब होना वग़ैरः-वग़ैरः लक्षण

मूत्राघात रोगमें होते हैं। सभी तरहके मूत्राघात बहुत ही ज़ियादा तकलीफ करनेवाले और कठिनसे आराम होनेवाले होते हैं।

मूत्राघातके भेद।

मूत्राघात रोग तेरह तरहके होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) वातकुण्डलिका। (२) अष्ठीला।
(३) वात-वस्ति। (४) मूत्रातीत।
(५) मूत्रजठर। (६) मूत्रोत्संग।
(७) मूत्रक्षय। (८) मूत्रग्रन्थि।
(९) मूत्रशुक्र। (१०) उष्णवात।
(११) मूत्रसाद। (१२) विड्विघात।
(१३) वस्तिकुण्डल।

वातकुण्डलिकाके लक्षण।

शरीरके रूखेपनसे अथवा मूत्रादि वेगोंके रोकनेसे दूपित हुई वायु, कुण्डलाकार—गोलाकार होकर और पेशाबमें मिलकर, पीड़ा करती है। मूत्रमें मिली रहनेके कारण "वायु" मूत्राशयमें ही घूमती रहती है; इस वजहसे थोड़ा-थोड़ा पेशाब तकलीफके साथ होता है। इस तीव्र और महादारुण रोगको "वातकुण्डलिका" कहते हैं।

अष्ठीलाके लक्षण।

"वायु" मूत्र और मलको रोककर, मूत्राशय और गुदामें अफारा करके—चंचल, ऊँची, तेज़ पीड़वाली, मूत्र और मलकी राह रोकनेवाली पिण्डीके समान गोल गाँठ करती है। इसीको "अष्ठीला" कहते हैं।

वातवस्तिके लक्षण।

जो मूर्ख पेशाबकी हाजत रोकता है, उसके मूत्राशय—पेड़ में

रहने वाली "वायु" मूत्राशयके मुँहको बन्द कर देती है। मूत्राशयका मुँह बन्द हो जानेसे पेशाब रुक जाता है और बस्त्याशय तथा कूखमें पीड़ा होती है। इसी रोगको "वातबस्ति" कहते हैं। यह रोग कष्टसाध्य है।

नोट—बस्ति=मूत्राशय=पेड़ू। वायु बस्तिके मुखको बन्द करके पेशाबका रोग पैदा कर देती है, इसीलिये इसे "वातबस्ति" कहते हैं।

मूत्रातीतके लक्षण।

पेशाबको बहुत देरतक रोकनेसे पेशाब जल्दी नहीं उतरता अथवा थोडा-थोड़ा उतरता है। इस रोगको "मूत्रातीत" कहते हैं।

मूत्रजठरके लक्षण।

मूत्रका वेग रोकनेसे अपान वायु कुपित हो जाती है। कुपित हुई अपान वायु पेटको खूब भर देती है, तब नाभिके नीचे तेज़ दर्दके साथ आफारा होता है। इससे मूत्राशयके नीचेका भाग रुक जाता है। इस रोगको "मूत्र जठर" कहते हैं।

मूत्रोत्सगके लक्षण।

पेशाब करते समय बस्ति या लिंग या लिंगके अगले भागमें जब पेशाब रुक जाता है, तब मनुष्य हृदयके श्वासादिके ज़ोरसे पेशाब करता है। उस समय वायु मूत्राशयको फाड़कर, पीड़ाके साथ या बिना पीड़ाके, खून मिला हुआ थोड़ा-थोड़ा पेशाब धीरे-धीरे उतारती है। ऐसी दूषित वायुसे पैदा हुए रोगको "मूत्रोत्संग" रोग कहते हैं।

मूत्रक्षयके लक्षण।

रूखे और थके हुए मनुष्यके मूत्राशयमें रहने वाले "पित्त और वायु" मूत्रका क्षय कर देते हैं; इससे पीड़ा और दाह होता है। इसे "मूत्रक्षय" रोग कहते हैं।

मूत्रग्रन्थिके लक्षण ।

मूत्राशयके भीतर अकस्मात गोल आकार वाली, स्थिर, छोटे आमलेके समान गाँठ हो जाती है। उसमें पथरीके जैसी पीड़ा होती है। उसको "मूत्रग्रन्थि" कहते हैं।

नोट—मूत्रग्रन्थि और पथरीमें क्या फ़र्क़ है? पथरी क्रम-क्रमसे मूत्रादिका सञ्चय होकर होती है और यह गाँठ यकायक हो जाती है—यही फ़र्क़ है। दूसरा अन्तर यह है, कि पथरीमें पित्त जियादा होता है, पर इस मूत्रग्रन्थिमें खून जियादा होता है। कई ग्रन्थोंमें लिखा है—वायु और कफसे दूषित हुआ खून मूत्राशय—पेड़ूमें अत्यन्त दारुण गाँठ पैदा करता है, जिससे बड़ी तकलीफके साथ पेशाब होता और पेशाबके साथ खून आता है।

मूत्रशुक्रके लक्षण ।

जो पुरुष पेशाबकी हाजत होने पर भी, बिना पेशाब किये मैथुन करता है, उसका वीर्य—वायुसे भ्रष्ट होकर—मूतनेसे पहले या मूतनेसे पीछे राख मिले हुए पानीके समान गिरता है। इस रोगको "मूत्रशुक्र" कहते हैं।

उष्णवातके लक्षण ।

बहुत मिहनत या कसरत करने, बहुत राह चलने और विशेषकर धूपमें फिरनेसे "पित्त" कुपित होकर, वायुके साथ पेड़ूमें जाकर, पेड़ू, लिंग और गुदामें दाह या जलन करता है। उस समय मनुष्य हल्दीके रंगका या ज़रा लाली लिये हुए अथवा खून-मिला हुआ पेशाब कष्टके साथ बारम्बार करता है। इस रोगको "उष्णवात" कहते हैं।

मूत्रसादके लक्षण ।

पित्त या कफ अथवा पित्तकफ दोनोंही जब वायुसे दूषित हो जाते हैं; तब पीला, लाल, सफेद और गाढ़ा पेशाब कष्टके साथ होता है एवं पेशाब करते समय जलन होती है। वह पेशाब जब ज़मीनमें

सूख जाता है, तब उसका रंग गोरोचन या शंखके चूर्णके समान हो जाता है अथवा इन सब रंगोंके समान हो जाता है। उसे "मूत्रसाद" कहते हैं।

नोट—इस रोगके होनेसे बारम्बार लाल, पीला, सफेद, शंखकी भस्मके जैसा या इन सब रंगोंवाला गाढ़ा पेशाब जलनके साथ थोड़ा-थोड़ा होता है।

विड्विघातके लक्षण ।

रूखे शरीर वाले दुबले आदमीका वायुसे ऊपरको चढ़ा हुआ मल जब पेशाबकी राहमें चला जाता है, तब पाखानेकी सी बदबू वाला अथवा पाखाना-मिला हुआ पेशाब होता है। इसीको "विड्विघात" कहते हैं।

वस्तिकुण्डलके लक्षण ।

बहुत जल्दी दौड़ने या चलनेसे, लंघन करनेसे, अधिक मिहनत करनेसे, लकडी वग़ैरः की चोट लगनेसे या दबानेसे वस्ति—मूत्राशय—अपनी जगहसे हटकर, ऊपरकी ओर चला जाता है और स्थूल होकर गर्भके जैसा हो जाता है। उससे शूल चलते, जलन होती, कंपकंपी आती और एक-एक बूँद पेशाब होता है। जब मनुष्य वस्ति या पेड को ज़ोरसे दबाता है, तब बड़े ज़ोरसे पेशाबकी धारा गिरती, वस्तिमें सूजन आजाती और पेटमें दर्द होता है। इस रोगको "वस्तिकुण्डल" कहते हैं।

इस रोगमे प्रायः "वायु" प्रबल होती है। यह रोग थोड़ी बुद्धिवाले वैद्योंसे आराम नहीं हो सकता। अगर यह रोग पित्ताधिक्यसे होता है, तो इसमें दाह,शूल और पेशाबका रंग बुरा होता है। अगर कफाधिक्यसे होता है, तो भारीपन और सूजन होती है तथा पेशाब चिकना, गाढ़ा और सफेद होता है। जिस वस्तिका मुँह कफसे बन्द हो जाता और पित्तसे व्याप्त होता है, वह असाध्य होती है। जिसका मुँह खुला रहता है, वह साध्य होती है। अगर वस्ति कुण्डलीकृत नहीं

होती तोभी साध्य होती है। इस रोगके होनेसे प्यास, मोह और श्वास ये लक्षण होते हैं।

मूत्राघात-चिकित्सा।

नोट—पीड़ा वाले मूत्राघात रोगमें स्नेहन तथा स्वेदन क्रिया करके, स्नेहयुक्त पदार्थोंसे विरेचन देना चाहिये और उत्तर वस्ति भी करनी चाहिये।

जिसके अत्यन्त मैथुन करनेसे पेशाबमें खून आता हो, उससे मैथुन-कर्म बन्द कराकर, धातुवर्द्धक उपाय करने चाहियें। इसके बाद मुर्गोंकी चरबी और तेलसे उत्तर बस्ति देनी चाहिये।

(१) नरसल, कुशा, काँस और ईखकी जड़का काढ़ा "मिश्री" मिलाकर और शीतल करके सवेरे ही पीना चाहिये। इस काढ़ेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(२) काली मूसलीकी जड़का काढ़ा "घी, तेल और गायका दूध" मिलाकर पीनेसे बहुत पुराना मूत्राघात भी शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(३) पत्र, फूल, फल और जड़ समेत गोखरूका काढ़ा बनाकर, उसमें "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे मूत्राघात और कृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

(४) कपूरको पानीमें पीसकर, कपड़े पर लपेट कर बत्ती बना लो। इस बत्तीको लिङ्गके छेदमें रखनेसे बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

नोट—केवल कपूरका टुकड़ा लिङ्गके मुँहमें रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(५) कुम्भेर, पाषाणभेद, शतावर, चीता, कुटकी, तालमखाना, कमलगट्टा और बड़ा गोखरू—इनको समान-समान लेकर और एकत्र पीस कर, शराबके साथ पीनेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(६) मयूरशिखाकी जड़को चाँवलोंके धोवनके साथ पीसकर पीने और दूधके साथ भोजन करनेसे मूत्राघात रोग नाश हो जाता है।

(७) कटेरीका स्वरस माठेके साथ पीनेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(८) केशरको पानी में पीसकर और उसमें "शहद" मिलाकर रातको रखदो और सवेरे ही उठकर पीलो। इस उपायसे मूत्राघात रोग जाता रहता है।

(९) शराबमें "कालानोन" मिलाकर पीनेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(१०) गोखरू, अरण्डकी जड़ और शतावरको दूधमें औटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात आराम हो जाते हैं।

(११) तृणपंचमूलको दूधमें औटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र आदि पेशाबके सभी रोग नाश हो जाते हैं।

(१२) गुड़, घी और दूध—इनको मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र आदि समस्त मूत्र-सम्बन्धी रोग आराम हो जाते हैं।

(१३) सफेद चन्दनको चाँवलोंके जलमें घिसकर और "मिश्री" मिलाकर पीने और औटाये हुए दूधको शीतल करके उसके साथ भोजन करनेसे खून-समेत उष्णवात रोग नाश हो जाता है।

(१४) सफेद कुम्हड़ेके पानीमें "जवाखार और चीनी" मिलाकर पीनेसे मूत्ररोध नाश हो जाता है, यानी रुका हुआ पेशाब जारी हो जाता है।

(१५) चूहेकी मेंगनी "गरम काँजी"में पीसकर सेवन करनेसे मूत्रका अवरोध दूर होता है; यानी रुका हुआ पेशाब खुल जाता है।

नोट—चूहेकी मेंगनी ऊटनोके मूत्रमें पीसकर खानेसे भी बन्द पेशाब जारी हो जाता है।

(१६) गोधावतीकी जड़ (वटपत्री) का काढ़ा बनाकर, उसमें

"घी, दूध और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे बहुत दिनका रुका हुआ पेशाव भी खुल जाता है । परीक्षित है ।

(१७) ककड़ीके बीज एक तोले और सेंधानोन एक तोले, दोनोंको पीसकर और काँजीमें मिलाकर पीनेसे मूत्राघात रोग नष्ट हो जाता है । परीक्षित है ।

(१८) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा और शुद्ध गूगल—सबको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर "शहद और गोखरूके काढ़े"के साथ चूर्णको खरल करके, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंसे पेशावका तकलीफसे होना, मूत्राघात, प्रमेह और प्रदर आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है ।

(१९) मूत्राघात रोगमें तेल सींचना, रेंडीका तेल आदि स्नेह औषधियोंका विरेचन—जुलाब देना, जोंक लगाना और लिंगके छेदमें कपूर रखना हितकारी है ।

नोट—पेड़ू पर चिड़ेकी बीटका लेप करनेसे रुके हुए मल-मूत्र उतरने लगते हैं ।

(२०) जवाखार, इलायची और फिटकरीको समान-समान लेकर कूट-पीस लो । फिर इस चूर्णमें "शहद" मिला दो । इसमेंसे तीन माशे सवेरे ही खानेसे पेशाब खुलकर आता है और पेशावकी राहसे पीप और खून आना भी बन्द हो जाता है ।

(२१) एक मुट्ठीभर कीकरके फूल रातको कोरी मिट्टीकी हाँडीमें भिगो दो । सवेरे ही मल-छानकर और "शहद" मिलाकर पीलो । इससे सोज़ाक रोगमें अवश्य लाभ होता है ।

नोट—पाँच तोले पानीमें दो चाँवलभर "सलफेट आव् ज़िंक" मिलाकर पिचकारी देने अथवा पाँच तोले जलमें एक चाँवल-भर "सलफेट आफ कापर" मिलाकर पिचकारी देनेसे पेशावकी राहसे मवाद आना यानी सोज़ाक रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है ।

(२२) शुद्ध गन्दा-बिरौज़ा १ माशे, छोटी इलायची ४ रत्ती और

वंसलोचन ४ रत्ती मिलाकर दूधकी लस्सीके साथ खानेसे सब तरहका सोजाक आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सोजाककी वजहसे लिङ्ग सूज जाये, तो नीमके पत्ते औटाकर लिङ्गको बफारा दो और वही पानी सुहाता-सुहाता लिङ्गपर डालो। इससे सूजन आराम हो जायगी।

(२३) कलमी शोरा, रेवन्द चीनी, सफेद जीरा और जवाखार बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण गायके दूधकी लस्सीके साथ फाँकनेसे पेशाब खूब खुलकर आता है। परीक्षित है।

(२४) एक मुट्ठीभर केशूके फूल पानीमें उबालकर, सुहाते-सुहाते, नाभिके नीचे, पेड़ूपर बाँधनेसे बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

नोट—मूत्र बन्द हो जाने या रुक जानेको फारसीमें "बन्द शुदन बोल" कहते हैं। गुर्देमें पथरी होने, सर्दी-गरमीका कोप होने, गुर्दोंके कमज़ोर होने या मूत्राशयमें सरदी बैठनेसे पेशाब बन्द हो जाता है। वातादि दोषका निश्चय करके उपाय करना चाहिये।

(२५) मूलीके पत्तोंके आध सेर स्वरसमें ३ माशे "कलमी शोरा" मिलाकर पिलानेसे शीघ्र ही पेशाब होने लगता है।

(२६) रोगीको नाभितक गरम जलमें बैठानेसे पेशाब होने लगता है। अथवा पेड़ूपर गरम जलकी धारा डालनेसे पेशाब खुल जाता है।

(२७) सोडावाटर पिलानेसे भी बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

(२८) अगर पेशाब बूंद-बूंद होता हो, तो "अतरी-फल कबीर" देना चाहिये। इससे मूत्रका बूंद-बूंद आना आराम हो जाता है। जबतक लाभ न हो, दो तीन बार देना चाहिये।

नोट—बूंद-बूंद पेशाबके आनेको हिकमतमें "तक्तीरुल बौल" कहते हैं।

(२९) अगर पेशाब लोहूके समान होता हो, तो पिसा-छना "धनिया" चार माशे फँकाकर, ऊपरसे "शर्बत अनार" दो तोले या

"शर्बत ख़श-ख़ाश" दो तोले पिलाना चाहिये। साथ ही चन्दन, अकाकीया और गेरू चार-चार माशे लेकर, पानीके साथ पीस कर, गुर्दे पर २।३ बार लेप करना चाहिये; अवश्य लाभ होगा।

नोट—लोहूके समान पेशाब आनेको "बौल-उल-दम" कहते हैं। यह रोग अत्यन्त स्त्री-प्रसग करने या गुदे पर चोट लगनेसे अथवा लोहूके कोपसे भी होता है।

(२६) अगर पेशाब बारम्बार आता हो और साधारण रोग हो, तो खट्टे-मीठे अँगूरोंका शर्बत पिलाओ; अथवा तुर्श अनारका शर्बत पिलाओ। अगर वायु या कफसे पेशाब बूंद-बूंद होता हो, तो केशर, लौंग और जायफल समान-समान लेकर पीस-छान लो और "शहत"में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा दिनमें तीन बार चटाओ; अथवा आधा जायफल भूंजकर और "शहत"में मिलाकर चटाओ।

नोट—पेशाबके बार-बार होनेको हिकमतमें ज्याबीतुश और वैद्यकमें मूत्रकृच्छ्र कहते हैं। यह रोग गुर्देकी कमज़ोरीसे, बहुत पानी पीनेसे, गरमी या खुश्कीसे अथवा बहुत ही शराब या भाँग पीने और अत्यन्त मैथुन करनेसे होता है।

मूत्राघात नाशक उत्तमोत्तम योग।

शिलोद्भवादि तैल।

पाषाण-भेद, अरण्डकी जड़, शालपर्णी, पुनर्नवा और शतावर— इन सबके सोलह सेर काढ़ेमें चार सेर "तिलका तेल" पकालो; और तेल मात्र रहने पर छान लो। इस तेलकी मात्रा ६ माशेकी है। हरेक मात्रा गरम दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्रादि रोग शान्त हो जाते हैं।

नोट—आयुर्वेद ग्रन्थोंमें यही विधि लिखी है; पर इस विधिसे हमने कभी

नहीं बनाया। हम नीचेकी विधिसे बनाया करते हैं और इस विधिसे बनाया हुआ तेल भी पूरा गुण करता है।

अनुभूत विधि।

पाषाणभेद, अरण्डकी जड़ और शालपर्णी—इन तीनोंको अढ़ाई-अढ़ाई छटाँक लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। पुनर्नवा दो सेर और शतावर दो सेर—इन दोनोंका बत्तीस सेर पानीमें औटाओ; जब आठ सेर पानी रह जाय उतार लो। अब तिलोंका तेल दो सेर, ऊपरका काढ़ा और लुगदीको मिलाकर तेल पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान *"गरम दूध"* है; *यानी गरम दूधमें मिलाकर पीनेसे* यह तेल मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्रको आराम करता है।

धान्यगोक्षुरक घृत।

धनिया एक सेर और गोखरू एक सेर लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, मल-छान कर रख लो। फिर धनिया आध पाव और गोखरू आधपावको पानीके साथ सिल पर पीस लो। अब गायका घी एक सेर, ऊपरका काढ़ा और लुगदीको मिलाकर पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घीको मात्रा ६ माशेकी है। इसके सेवन करनेसे मूत्राघात आदि रोग नाश हो जाते हैं।

विदारी घृत।

विदारीकन्द, अड़ूसा, जूहीकी जड़, बिजौरा नीबू, गन्धतृण, पाषाणभेद, लता-कस्तूरी, साँभरनोन, समन्दरनोन, चीता, पुनर्नवा, वच, रास्ना, खिरेंटी, गंगेरन, कसेरू, भसींडे, सिंघाड़े, भुईं आमले, स्थिरादिगणकी दवाएँ, रामसर, ईखकी जड़, डाभ, कुश और काँस—इन पच्चीस दवाओंको आठ-आठ तोले लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय उतार लो।

मुलेठी, पीपर, दाख, गंभारी, फालसा, इलायची, जवासा, रेणुका, केशर, नागकेशर और जीवनीयगणकी आठों दवाएँ—इनमेंसे हरेक एक-एक तोले लेकर पानीके साथ:सिल पर पीसकर लुगदी कर लो ।

शतावरका स्वरस ६४ तोले और आमलोंका स्वरस ६४ तोले तैयार कर लो । अगर स्वरस-योग्य चीज़ें न मिलें, तो इतना-इतना काढ़ा बना लो । गायका दूध दो सेर और चीनी २४ तोले लाकर पास रख लो ।

अब काढ़ेको आगपर चढ़ाओ । उसमें शतावरका रस, आमलोंका रस, चीनी, लुगदी और दूध मिला दो और मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ़ बर्तनमें रख दो ।

यह घी पीने, खाने और नस्यके काममें आता है । यह घी स्मृति बढ़ानेवाला, उत्तम वाजीकरण, पुत्र देनेवाला, बल-वर्ण करने वाला, उत्तम रसायन और विशेषकर वात विनाशक है । इससे सब तरहके मूत्राघात, विशेष करके पित्तसे हुए मूत्राघात, शर्करा, पथरी, शूल, रुधिर-विकारसे हुए शूल, हृदय-रोग, पित्तज गुल्म, पित्तज वातरक्त, खाँसी, श्वास, क्षत, धनुष चढ़ाने और स्त्री-प्रसंगसे कर्षित हुए, तृषा, वमन, मनकी पीड़ा, कम्प, रुधिरकी वमन, क्षय, अपस्मार, उन्माद, शिरोग्रह, योनिदोष, रजके दोष, वीर्यके दोष और स्वरभंगादि रोग आराम होते हैं ।

चित्रकाद्य घृत ।

चीतेकी छाल, अनन्तमूल, वरियारा, तगर-पादुका, मुनक्का, इन्द्रवारुणी, पीपर, गुलसकरी, मुलेठी और आमले—प्रत्येक आधा-आधा तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो ।

अब गायका घी चार सेर, गायका दूध सोलह सेर और ऊपरकी

लुगदी मिलाकर औटाओ; जब घी मात्र रह जाय उतार लो और शीतल होने पर छान लो।

शेषमें; इसमें चीनी आध सेर और उत्तम नीली झाईका वंसलोचन आध सेर पीसकर मिला दो और किसी साफ बर्तनमें रख दो।

इसमेंसे छै-छै माशे घी नित्य खानेसे मूत्र-दोष, योनि दोष और रक्तदोष दूर होकर वीर्य और आयुकी वृद्धि होती है।

वरुणाद्य लौह।

वरुण-छाल ८ तोले, आमले ८ तोले, धायके फूल ४ तोले, हरड़ २ तोले, पिठवन १ तोले, लोह भस्म १ तोले और अभ्रक भस्म १ तोले—सबको कूट-पीस और छान कर एकत्र मिला लो। इसकी मात्रा ६ रत्तीकी है। इसको उपयुक्त अनुपानके साथ खानेसे मूत्रके सब दोष नष्ट होते, बल बढ़ता और पुष्टि होती है।
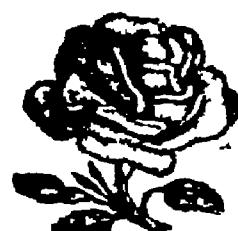
अश्मरी-पथरी-वर्णन।

पथरीकी संख्या और निदान।

पथरी चार तरहकी होती हैं :—

(१) वातसे।	(२) पित्तसे,।
(३) कफसे।	(४) शुक्रसे।

वीर्यसे हुई पथरीको छोड़ कर, शेष तीनो पथरी प्रायः कफके आश्रयसे होती हैं। वीर्यसे हुई पथरीमें वीर्य ही कारण होता है। कोई-कोई वैद्य तो वीर्यकी पथरीमें भी कफको कारण मानते हैं। सब तरहकी पथरी बिना चिकित्साके मृत्युकारक होती हैं।

पथरीकी सम्प्राप्ति।

जब वायु मूत्राशयमें आये हुए शुक्रके साथ मूत्रको और पित्तके साथ कफको सुखाती है, तब "पथरी" पैदा होती है। मतलब यह है, कि जब मूत्र और शुक्र अथवा पित्त और कफ वायुसे सूखकर पत्थरकी तरह कड़े हो जाते हैं, तब पथरी रोग होता है। जिस तरह गायके पित्तेमे गोरोचन बढ़ता है,-उसी तरह क्रम-क्रमसे पथरी बढ़ती है। वैद्यकमे इसे अश्मरी और बोलचालकी भाषामें पथरी कहते हैं।

खुलासा—वस्ति स्थान या पेड़ का "वायु" बिगड़ कर वहाँ रहने वाले वीर्य, मूत्र, पित्त और कफको सुखा करके पथरी पैदा कर देता है। इस रोगमें नाभि और पेड़ में दर्द होता और पेशाब भी बन्द हो जाता है।

पथरीके पूर्वरूप ।

पथरी रोग होनेसे पहले मूत्राशयमें अफारा आजाता है—वह फूल जाता है । मूत्राशयके चारों ओर अत्यन्त पीड़ा होती है अथवा वस्तिके पासके स्थानोंमें दर्द हो जाता है। पेशाबमें बकरेके पेशाबकीसी बदबू आती है, पेशाब कष्टसे होता है, ज्वर चढ़ता और भोजन पर रुचि नहीं होती ।

पथरीके साधारण लक्षण ।

पथरी होनेसे नाभिमें, फोतेके नीचे सींवनमें तथा नाभिसे नीचेकी जगह—मूत्राशय या वस्तिके मुँहमें दर्द होता है। पथरीसे मूत्र बहानेवाले मार्गोंके बन्द हो जानेसे मूत्रकी धार बीचमें ही फट जाती है ; यानी विच्छिन्न धारसे पेशाब आता है ; पेशाब करती वक्त पेशाबके लिये जोर करनेसे पीड़ा होती है ; किसी समय वायुसे पथरीके मूत्रमार्गसे हटकर और जगह चली जानेसे गोमेदके समान साफ पेशाब आरामसे होता है ; पथरीके सञ्चारसे मूत्रमार्ग घिस जानेसे खून-मिला या लाल रंगका पेशाब होता है और बड़े ज़ोरसे दर्द होता है। मतलब यह है कि, मूत्रमार्गमें पथरी द्वारा किसी तरहका घाव हो जानेसे पेशाबमें खून दिखाई देता है और पेशाब निकलते समय भयानक वेदना होती है ।

किसी वैद्यने पथरीके लक्षण संक्षेपमें इस तरह कहे हैं :—

निरुध्य मूत्रमार्गं या यातनांजनयेद्भृशम् ।
कटिवस्ति प्रदेशेषु साश्मरीति निगद्यते ॥

जो मूत्रमार्गको रोककर बहुत तकलीफ देती है, कमर और पेड़ूमें वेदना करती है, उसे "पथरी" कहते हैं ।

वातोल्वण पथरीके लक्षण ।

वाताधिक्य पथरी रोगमें ये लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) रोगी दाँत पीसता और काँपता है।

(२) तकलीफके मारे चिल्लाता है।

(३) लिङ्ग और नाभिको हाथोंसे दवाये रहता है।

(४) पेशाव करते समय काँखनेसे अधोवायुके साथ मल गिरता और टपक-टपककर पेशाव होता है।

(५) पथरीका रंग नीला या धूसर होता है और उस पर काँटे होते हैं।

पित्तोल्वण पथरीके लक्षण ।

पित्ताधिक्य पथरी रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) वस्ति या पेडूमें अत्यन्त जलन और आगपर पकानेके जैसी वेदना होती है।

(२) पथरी छूनेसे अत्यन्त गर्म मालूम होती हैं। उसकी आकृति भिलावेकी गुठलीके जैसी और रंग लाल, पीला या काला होता है।

कफोल्वण पथरीके लक्षण ।

कफाधिक्य पथरी रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) वस्तिमें नोचनेकी सी अथवा सूई गड़ानेकीसी पीड़ा होती है।

(२) पथरी छूनेमें शीतल भारी, चिकनी, शहदकी तरह पिङ्गल या सफेद रंगकी होती है

(३) यह पथरी वहुधा वालकोंके होती है, पर वालकोंके बढ़नेका आश्रय थोड़ा होता है ; इसलिए पथरी निकालनेमे आसानी रहती है।

वीर्यकी पथरीके निदान लक्षणादि ।

निदान-सम्प्राप्ति ।

वीर्यकी पथरी ज़ियादा उम्रवालोंके होती है; बच्चोंके नहीं होती। यद्यपि वीर्य बालकोंके भी होता है, पर वे मैथुन नहीं कर सकते, इसलिए उनके वीर्यकी पथरी भी नहीं हो सकती। जो लोग मैथुनके समय अधिक आनन्दके लिए स्थानच्युत वीर्यको या निकलते हुए वीर्यको रोक लेते हैं, उनका वीर्य भीतर ही रह जाता है, बाहर नहीं निकलता। उस रुके हुए वीर्यको "वायु" लिंग और फोतोंके बीचमें—मूत्राशयके मुँह पर लेजाकर सुखा देती है, तब वह वीर्य सूखकर पथरी हो जाता है।

लक्षण ।

वीर्यकी पथरी होनेसे वस्ति या पेड़ूमें शूल चुभानेके जैसा दर्द होता है, दोनों फोते सूज जाते और मूत्रकृच्छ्र रोगकी तरह पेशाब होता है।

शुक्राश्मरीके दो भेद ।

लिङ्ग और फोतोंके बीचका भाग दबानेसे यह पथरी भीतर लीन हो जाती है, तब उसी समय मूत्रमार्गसे दो रूपोंमें वीर्य निकलता है :—(१) शर्कराके रूपमें, और (२) सिकताके रूपमें।

जो पथरी अधिक दबानेसे क्षुद्र अंशोंमें विभक्त हो जाती है, उसे "शर्करा" और जो बहुत ही क्षुद्र अंशोंमें विभक्त हो जाती है, उसे "सिकता" कहते हैं। मतलब यह कि जो पथरी वायुसे अलग-अलग होकर शर्कराके समान हो जाती है, उसे "शर्करा" और जो बालू-रेतके समान हो जाती है, उसे "सिकता" कहते। वीर्यके कण अगर मोटे होते हैं, तो वह शर्कराके जैसा होता है और अगर छोटे होते हैं, तो वह सिकता—बालूके जैसा होता है। तात्पर्य यह है, कि

वीर्यकी पथरी ही जब शर्कराका रूप धारण कर लेती है ; तब शर्करा और जब सिकताका रूप धारण कर लेती है, तब सिकता कहाती है।

वायुके अनुलोम रहनेसे शर्करा और सिकता पेशाबके साथ निकल जाती हैं ; पर वायुके अनुलोम न रहनेसे वे दोनों रुक जाती हैं। अगर वे मूत्रमार्गमें आ जाती हैं, तो अनेक उपद्रव करती हैं। जैसे —दुर्बलता, अवसाद, कृशता, कुक्षिशूल, अरुचि, पाण्डुता, तृष्णा, हृदयमें पीड़ा और जी मिचलाना वग़ैरः।

खुलासा—वीर्यकी पथरी जब वायुसे बिखर जाती है, तब "शर्करा" कहलाती है। वायुसे बिखर-बिखर कर इसके टुकड़े, वायुके सीधी चाल पर चलनेसे, पेशाबके साथ निकल जाते हैं, पर वायुके उलटे चलनेसे रुक जाते और दुबलता आदि अनेक उपद्रव करते हैं।

पथरीके उपद्रव।

शर्करासे दुबलता, ग्लानि, कृशता, कूखमें पीड़ा, पाण्डुता, अरुचि, उष्णवात-मूत्राघात, तृषा, हृदयमें वेदना और वमन—ये सब पथरीके उपद्रव हैं।

सांघातिक लक्षण।
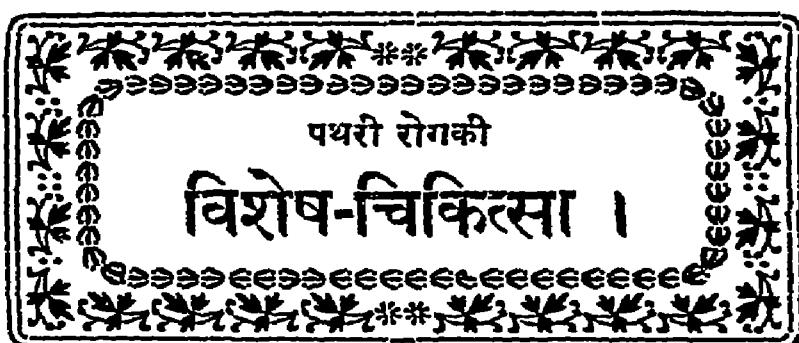
पथरी, शर्करा और सिकता रोगीकी नाभि और फोतोंमें सूजन, पेशाबका रुकना और शूलके समान वेदना ये लक्षण होनेसे रोगीकी मृत्यु होती है।

पथरी-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) पथरी रोग होते ही इलाज करना चाहिये। अगर थोड़े दिन भी पथरीका इलाज नहीं किया जाता, तो पथरी रोग दवाओंसे

आराम नहीं होता । उस दशामें, चीरफाड़ करके पथरी बाहर निकाली जा सकती है ।

(२) पथरी रोगके पूर्वरूपोंके प्रकाश होते ही स्नेह प्रयोग करना चाहिये ।

पथरी रोगकी

विशेष-चिकित्सा ।

वातोत्पन्न पथरीकी चिकित्सा ।

शुण्ठ्यादि क्वाथ ।

सोंठ, अरणी, पाषाणभेद, सहँजना, वरुना, गोखरू, हरड़ और अमलताश—इन सबको तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा बनाओ । पक जाने पर छान कर, इसमें "हींग, जवाखार और सेंधेनोनका चूर्ण" डालकर पीलो । इस काढेसे पथरी, मूत्रकृच्छ्र, कोठेकी वायु, कटिगत वात, उरुगत वात, गुदागत वात और लिङ्गाश्रित वात—ये सब नाश हो जाते हैं । यह काढ़ा दीपन और पाचक है ।

एलादि क्वाथ ।

इलायची, पीपर, मुलेठी, पाषाणभेद, रेणुका, गोखरू, अडूसा और रेंडीकी जड़—इनको तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा पकाओ और एक या दो माशे "शुद्ध शिलाजीत" मिलाकर पीओ । इस काढ़ेसे पथरी, शर्करा और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं ।

वरुणादि क्वाथ ।

वरनाकी छाल, सोंठ और गोखरू—इन तीनोंको आठ-आठ माशे

लेकर काढ़ा पका लो। फिर इसमें दो माशे "जवाखार" और दो माशे "पुराना गुड़" डालकर पीओ। इस काढ़ेसे पुरानी वातोल्वण पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

पाषाणभेदाद्य घृत ।

पाषाणभेद, आककी जड़, लाल चिरचिरा, कोविदार, शतावर, गोखरू, भटकटैया, कटेरी, ब्राह्मी, नीले फूलकी कटसरैया, कचनार, खस, गुन्द्र तृण, वन्दा, वरना, सागौनके फल, जौ, कुल्थी, बेर और निर्मलीके फल—इनमेंसे प्रत्येक दवाको पाव-पाव भर लेकर कुचल लो और चालीस सेर पानीमें पकाओ ; जब दस सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

ऊषकादिगणकी दवाएं अढ़ाई पाव लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर अढ़ाई सेर घी, यह लुगदी और ऊपरका काढ़ा मिलाकर पकाओ। घी मात्र रहने पर छान लो। इस घीके खानेसे वातोल्वण पथरी फौरन आराम हो जाती है।

वीरतरादिगण ।

वीर वृक्ष (कोह या कोट), अरनी, काँस, बाँदा, कुशा, मोरट (ईखकी जड़), नीले कमल, हुलहुल, गोखरू, टेंटू, आककी जड़, लाल चिरचिरा, डाभ, कटसरैया, पाषाणभेद, गुन्द्रतृण, नरसल, और कुरंट यह वीरतरादिगण कहलाता है। ये सब दवाएं पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और वात रोगोंको नाश करती हैं। अतः इनके साथ पकाये हुए क्षार, यवागू, पेया, काढ़े, दूध और भोजन पथरी आदि रोगोंको नाश करते हैं।

पित्तोल्वण पथरीकी चिकित्सा ।

कुशाद्य घृत ।

कुश, काँस, रामसर, गुन्द्रतृण, उत्कट (एक तरहकी घास),

मोरट (ईखकी जड़), डाभ, पाषाणभेद, विदारीकन्द, वाराहीकन्द, शालपर्णीकी जड़, गोखरू, भिलावे, पाढ़र, पाढ़, पचूर, कटसरैया, पुनर्नवा और सिरस—इनको पाव-पाव भर लेकर कूट लो और मन भर पानीमें काढ़ा बनाओ। जब दस सेर पानी रह जाय, इसमें अढ़ाई सेर "घी" डालकर पकाओ। पक जाने पर घीको छान लो। इस घीमे "शिलाजीत, मुलेठी, महुएके बीज और खीरे ककड़ीके बीजोंका चूर्ण" मिलाकर खानेसे पित्तज पथरी फौरन नाश हो जाती है।

पाषाणभेदके काढ़ेमे "शुद्ध शिलजीत और चीनी" मिलाकर पीनेसे पित्तकी पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

कफोल्बण पथरीकी चिकित्सा ।

वरुणादि घृत ।

वरुणादिगणकी औषधियोंके काढ़ेमें गूगल, इलायची, रेणुका, कूट, नीम, कालीमिर्च, चीता और देवदारु—इनका कल्क मिलाकर बकरीका घी पकालो। इस घीके खानेसे कफकी पथरी नष्ट हो जाती है।

नोट—वरुणादिगणकी औषधियाँ ये हैं :—वरना, भिंटी, सहँजना, जैती, करंज, ईखकी जड़, अरनी, बेल, कुरु, आककी जड़, चीता, कटसरैया, लाल-चिरचिरा, शहद, मेढासिंगी, शतावर, डाभ, भटकटैया और बड़ी भटकटैया।—ये दवाएं कफ और मेद तथा मस्तक शूल, गुल्म और भीतरकी विद्रधिको नाश करती है। कफको नष्ट करनेवाले इस वर्गमें क्षार, यवागू, पेया, कषाय, दूध और भोजन सिद्ध करके देनेसे कफके रोग नष्ट होते हैं।

शुक्रजाश्मरीकी चिकित्सा ।

(वीर्यकी पथरीका इलाज)

कुशाद्य तैल ।

कुशा, अरणी, कटसरैया, नल, दाभ, ईख, गोखरू, ब्राह्मी, आककी जड़, लाल चिरचिरा, कमल, रामसर, धायके फूल, टेंठ, चन्दा,

कणिका और पाषाणभेद—इनके काढ़े और कल्कके द्वारा तेल पकाओ। इस तेलको पाने, मालिश करने और बस्ति—उत्तर बस्तिमें प्रयोग करनेसे शर्करा, पथरी, दारुण मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, योनि-शूल और शुक्रदोष नाश हो जाते हैं। इससे बाँझके गर्भ रहता है।

तृणपञ्चमूलाद्य घृत।

तृण पंचमूल और गोखरूको आध-आध सेर लेकर १६ सेर जलमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, उसमें "गुड़ और गोखरूका पाव भर कल्क तथा एक सेर घी" डालकर पकाओ। इस घीको स्नेहन और भोजनमें सेवन करनेसे मूत्र-सम्बन्धी विकार, पथरी और शर्करा रोग नाश हो जाते हैं।

वरुण तैल।

छाल, पत्ते, फल और मूल समेत वरना और गोखरू आध-आध सेर लेकर सोलह सेर पानीमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, इसमें एक सेर तेल मिला कर पकाओ। जब तेल मात्र रह जायँ, उतार कर छान लो। इस तेलको निरुह बस्ति देनेसे पथरी, शर्करा शूल और मूत्रकृच्छ्र रोग आराम हो जाते हैं।

गरीबी नुसखें।

(१) सोंठ, वरना, गोखरू, पाखानभेद और ब्राह्मी—इनके काढ़ेमें दो माशे "जवाखार" और दो माशे "गुड़" मिलाकर पीनेसे सब तरहकी पथरी आराम हो जाती हैं। <u>परीक्षित है।</u>

(२) पेठेके रसमें "जवाखार और गुड़" मिलाकर पीनेसे मूत्रकी रुकावट, शर्करा और पथरी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) तिल, चिरचिरा, केला, ढाक, जौ और वेल—इनका काढ़ा "बकरी या भेड़का मूत्र" मिलाकर पीनेसे शर्करा और वीर्यकी पथरी रोग आराम हो जाते हैं।

(४) पाखानभेद, गोखरू, अरण्डकी जड़, कटेरी, बड़ी कटेरी और तालमखाना—इनको दूधमें पीस कर और "दही" मिलाकर खानेसे पथरी और सिकता नाश हो जाती हैं।

(५) पिसी हुई हल्दीको गुड़में मिलाकर, "तुषोदक"के साथ पीनेसे बहुत पुरानी शर्करा-पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

> यः पिबेद्रजनीं सम्यक सगुडां तुषवारिणा ।
> सध्याशुचिरगुढापि मात्यस्तंमेवुशर्करा ॥

जो गुड़ मिले हुए हल्दीके चूर्णको तुषके पानी यानी काँजीके साथ पीता है, उसकी पुरानी शर्करा पथरी भी चूर्ण होकर निकल जाती है।

(६) कुड़ेकी छाल पीसकर और "दही"में मिलाकर खाने और पथ्य भोजन करनेसे बहुत पुरानी पथरी आराम हो जाती है।

(७) खीरेके बीजोंको "दही"में पीस कर खाने अथवा नारियलके फूलोंको "दही"में पीसकर खानेसे मल-मूत्र और पथरीकी बाधासे पीड़ित मनुष्य बहुत जल्दी सुखी हो जाता है।

(८) गोखरू, वरना और सोंठका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे शर्करा, पथरी, शूल और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

(९) पेठेके रसमें "हींग और जवाखार" मिलाकर पीनेसे वस्ति शूल, मेढ्रशूल, शर्करा और पथरी रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) सुपारी, अंकोल, निर्मलीके फल, सागौनके फल, और कमलगट्टे—इनके काढ़ेमें "गुड़" मिलाकर पीनेसे शर्करा नष्ट हो जाती है।

(११) पुनर्नवा, लोहेकी भस्म, हल्दी, गोखरू, कठूमर, मूँग,

भस्म और डाभके फूल—इनको एकत्र पीसकर "दूध, काँजी, शराब और ईखका रस" इनके साथ पीनेसे शर्करा-पथरी नाश हो जाती है।

(१२) वरनाकी छाल, पाषाणभेद, सोंठ और गोखरू—इनके काढ़ेमें ४ माशे "जवाखार" डालकर पीनेसे शर्करा सहित पथरी आराम हो जाती है।

(१३) तीन माशे गोखरूके बीजोंका चूर्ण "शहद"में मिलाकर और "भेड़ीके दूध"में घोलकर सात दिन तक पीनेसे सब तरहकी पथरियाँ नाश हो जाती हैं।

(१४) नारियलका फूल चार माशे और जवाखार ४ माशे पानीमें पीसकर पीनेसे पथरी रोगमें विशेष उपकार होता है।

(१५) वरनाकी जड़के काढ़ेमें "वरनाकी जड़का ही कल्क" मिलाकर पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

(१६) सहँजनेकी जड़का काढ़ा सुहाता-सुहाता गरम पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

(१७) अदरख, जवाखार, हरड़ और दारुहल्दी—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। फिर इसे "दहीके मंड"के साथ पीओ। इससे भयंकर पथरी भी नाश हो जाती है।

(१८) पाषाणभेद, वरना, गोखरु और ब्राह्मी—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा करो। फिर इसमें "शुद्ध शिलाजीत और गुड़" तथा "खीरे और ककड़ीके बीजोंका कल्क" (सिल पर पिसी लुगदी) खूब मिलाओ और पीओ। इससे वह पथरी भी नष्ट हो जाती है, जो सैकड़ों दवाओंसे नष्ट नहीं होती। जिस तरह इन्द्रके वज्रसे पर्वतोंका नाश होता है; उसी तरह इस योगसे पथरियोंका नाश होता है।

(१९) अरणीके फलोंके बीजोंको बिना पानीके माठेमें पीसकर खाने अथवा इन बीजोंका साग खानेसे पथरीकी पीड़ा दूर हो जाती है।

(२०) गोखरु, अरण्डके बीज, सोंठ और वरनाकी छाल—इनको

कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाने और नित्य सवेरे ही पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

(२१) सूखे हुए कमलकी नाल, ताड़का फल, काँस, ईखकी जड़, बाली ईख और डाभ—इनको समान-समान लेकर और पानीके साथ सिल पर पीसकर तथा "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे पथरी वालेके पेशावमें खूनका आना बन्द हो जाता है, पर इसके साथ विदारीकन्द, ईख और खीरा खाना चाहिये।

(२२) वरनाकी छालका बत्तीस तोले खार, सोलह तोले जवाखार और आठ तोले गुड़—इनको मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले दवा खाकर ऊपरसे "गरम जल" पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोग नाश हो जाते हैं।

(२३) आमलेके नम-नर्म पत्तोंके स्वरसमें "तिलीका तेल" मिला कर पीनेसे भयानक पथरी भी नाश हो जाती है।

(२४) हींग, तेल और गायका घी—इनको मिलाकर पीनेसे वीर्यसे हुए मूत्रदोषोंका नाश होता है।

(२५) कटेरीका स्वरस "शहद" मिलाकर पीनेसे पथरी और भयंकर मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२६) डेढ़ तोले वरनाकी छालके काढ़ेमें दो तोले "गुड़" मिला कर पीनेसे पथरी और वस्ती-शूल—पेड़ूका दर्द ये नाश हो जाते हैं। बड़ीसे बड़ी पथरी ११ दिनमें गल जाती है। परीक्षित है।

नोट—पाव-भर पानीमें काढ़ा बनाओ और आधा रहने पर उतार कर छान लो।

(२७) पुराने घीमे केशर पीसकर खानेसे शर्करा-पथरी नष्ट हो जाती है। कहा है :—

पुराण सर्पिषा पीतं कुंकुमं हन्ति शर्करां।

(२८) गुड़ दो भाग और जवाखार एक भाग मिलाकर खानेसे पथरी और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(२९) गोखरू, अरण्डके पत्ते, पाषाणभेद, वरनाकी छाल और सोंठ—इनके काढ़ेमें "जवाखार" मिलाकर पीनेसे पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३०) पाषाणभेद, वरुनाकी छाल, गोखरू, अरण्डकी जड़ दोनो भटकटैया और तालमखाना—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण "दही"के साथ खानेसे पथरी रोग आराम हो जाता है। यह नुसख़ा शर्करा-पथरी पर खास तौरसे लाभदायक है। परीक्षित है।

(३१) जवाखार, सुहागा, और कलमी शोरा बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक-एक माशे दवा पानीके साथ दिनमें तीन चार वार पीनेसे पथरी गलकर बाहर आ जाती है।

नोट—दवा देनेसे पहले वमन करानी चाहिये।

हकीमी नुसखे

(३२) संग यहूदको कूट-पीस कर छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे खिलानेसे पथरी नष्ट हो जाती है।

(३३) दो माशे जवाखार और दो माशे कच्चा सुहागा पीस कर और दो तोले "गोखरूके रस"में मिलाकर पीनेसे पथरी गल कर निकल जाती है। परीक्षित है।

(३४) दारुहल्दी, सोंठ, हरड़ और जवाखारको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे छै-छै माशे दवा "गायके दही"में मिला कर खानेसे पथरी २४ घन्टेमें गलकर निकल जाती है। परीक्षित है।

(३५) दो माशे मूलीका खार "बासी पानी"के साथ खानेसे पथरी गल जाती है। परीक्षित है।

(३६) हकीम जकरियाने लिखा है :—दो तोले अंगूरके पत्तोंको पावभर पानीमें औटाओ ; जब आधा पानी रह जाय छानकर २ तोला "मिश्री" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेसे पथरी और मूत्रकृच्छ्र

प्रभृति पेशाबके सभी रोग नाश हो जाते हैं। गुर्देके सभी रोगोंपर उत्तम योग है। परीक्षित है।

(३७) दो माशे तिलके वृक्षका खार दो तोले गन्नेके सिरकेमें मिलाकर पीनेसे पथरी निश्चय ही गल जाती है।

(३८) नीमकी पत्तियोंका दो माशे खार "बासी पानी"के साथ पीनेसे ११ दिनमें पथरी गल जाती है। परीक्षित है।

(३९) अंगूरके वृक्षका दो माशे खार दो तोले गोखरूके स्वरसमें मिलाकर पीनेसे पथरी गल जाती है।

(४०) करंजके पत्तोंका दो माशे खार एक तोले "शहद"में मिलाकर पीनेसे पथरी गल जाती है। परीक्षित है।

(४१) हकीम जालीनूसका कहना है, कि, दाहने हाथकी बीच की अँगुलीमें लोहेकी अँगूठी या छल्ला पहने रहनेसे पथरीवालेकी पीड़ा कम हो जाती है।

(४२) वरनाकी छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ और गोखरू इन सबको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा करो। फिर उसमें चार माशे "जवाखार और एक तोले गुड़" मिलाकर पीओ। इस नुसखेसे पथरी रोग नाश हो जाता है।

(४३) सोंठ, अरणीकी जड़, पाखाणभेद, वरनाकी छाल, गोखरू और अमलताश इनके काढ़ेमें हींग, जवाखार, हरड़, बहेड़ा और आमलोंका चूर्ण तीन-तीन माशे मिलाकर पीनेसे पथरी और मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाते हैं।

(४४) चौलाईका साग खानेसे पथरी नाश हो जाती है।

(४५) तिलकी पत्तियाँ पानीमें औटाकर उस पानीमें पथरीवाले को बैठानेसे अवश्य लाभ होता है।

(४६) अजमोद तीन माशे फाँककर, ऊपरसे मूलीके पत्तोंका बीस माशे स्वरस पीनेसे पथरी और गुर्देका दर्द जाता रहता है।

(४७) पूयेकी पत्तियाँ महीन पीसकर पीनेसे पथरी और गुर्देका दर्द नाश हो जाते हैं।

(४८) झाड़ूकी सींकोंके फूल दो तोले लेकर पावभर पानीमें ६ घन्टेतक भिगो रखो ; फिर इस पानीको छान लो। फिर उसमें खीरे ककड़ीके बीज ६ माशे और भाँग १ माशे सिलपर पीसकर मिला दो और ऊपरसे दो तोले चीनी भी डाल दो और कपड़ेमें छान कर पीलो। इस दवासे पथरी या संगगुर्दा नाश होता और बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

(४९) पत्थरफोड़ी वृक्षकी २० माशे हरी पत्तियाँ सिलपर पानी के साथ पीसकर और चीनी मिलाकर पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

नोट—सूखी पत्तियाँ हरीकी अपेक्षा कम गुण करती हैं।

(५०) मुलहटी १ तोले, कुल्थी १ तोले और सौंफ ३ तोले ४ माशे—इन तीनोंको आध सेर पानीमें औटाओ; जब आध पाव पानी रह जाय, मल-छानकर उसमें ३ माशे "लाहौरी नोन" और २ माशे "घी" मिलाकर पीओ। इससे पथरी और मसानेके रोग आराम हो जाते हैं।

(५१) जंगली कबूतरकी आठ माशे बीट और आठ माशे ही शक्कर—दोनोंको मिलाकर पानीके साथ फाँकनेसे पथरी रोग जाता रहता है।

नोट—जिस कबूतरको अलसी खिलाई जाती हैं, उसकी बीट अच्छी होती है।

(५२) गुले दाऊदीकी पत्तियोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे पथरी गल जाती है। अगर काढ़ा न बनाना हो, तो इन पत्तियोंको कूट छानकर और बराबरकी चीनी मिलाकर खा सकते हो। वही लाभ होगा।

(५३) पथरी रोगमें शुद्ध "शिलाजीत" सेवन करना अत्यन्त लाभदायक है।

पथरी नाशक उत्तमोत्तम योग।

बृहत् वरुणादि क्वाथ।

बरनाकी छाल, सोंठ, गोखरूके बीज, तालमूली, कुलथी और तृण पञ्चमूल—इन सबको समान-समान चार-चार माशे लेकर काढ़ा बना लो। काढ़ेको छान कर उसमें तीन माशे "चीनी" और तीन माशे "जवाखार" मिलाकर पीनेसे पथरी, मूत्रकृच्छ्र और वस्ति शूल—पेडू का दर्द ये नाश हो जाते हैं।

कुलत्थाद्य घृत।

बरनाकी छाल चार सेर लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ, जब आठ सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

कुलथी, सधानोन, वायविडंग, चीनी, तगर-पादुका, जवाखार, कुम्हड़ेके बीज और गोखरूके बीज दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो।

अब गायके दो सेर घी, इस लुगदी और ऊपरके काढ़ेको मिला कर मन्दाग्निसे औटाओ; जब घी मात्र रह जाय, छान लो।

इसमेंसे एक-एक तोले घी "गरम दूध"में मिलाकर खानेसे सब तरहकी पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

वरुणादि चूर्ण।

बरनेकी छालका खार ३२ तोले, जवाखार १६ तोले, गुड़ ४ तोले और घी ४ तोले .सबको मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक

तोले रोज़ खानेसे और ऊपरसे गरम जल पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोग जाते रहते हैं।

पुनर्नवाद्य तैल।

पुनर्नवा, गिलोय, शतावर, जवाखार, तीनों नमक, कचूर, कूट, वच, नागरमोथा, रास्ना, कायफल, पोहकरमूल, अजवायन, दारुबेर, हींग, सौंफ, अजमोद, वायविड़ंग, अतीस, मुलेठी और पंचकोल—हरेक एक-एक तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो।

अब एक सेर तेल, दो सेर गोमूत्र और दो सेर काँजी तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ ; जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस तेलके पीने और इसीकी पिचकारी लगानेसे शर्करा, पथरी, शूल, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात, आमशूल और अन्त्रवृद्धि रोग नाश हो जाते हैं।

पाषाण भिन्न रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले और शुद्ध शिलाजीत १ तोले—सबको मिला कर एक दिन श्वेत पुनर्नवाके रसमे खरल करो ; फिर एकदिन अडूसेके रसमें खरल करो और एक दिन सफेद अपराजिताके रसमें खरल करो। जब सूख जाय, एक छोटी हाँडीमें रखकर उसका मुख बन्द कर दो। फिर एक बड़ी हांडीमें पानी भर कर, उसके बीचमें इस दवाकी हाँडी या कुल्हड़ेको लटका दो और इस बड़ी हाँडीको आग पर रख दो। कुछ देर पकने पर, छोटी हाँडीमेंसे दवाको निकाल लो। फिर उसे भुइँ आमलेके फलके रस, इन्द्रवारुणीकी जड़के काढ़े और दूधके साथ तीन-तीन घन्टे तक खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली "दूध या कुल्थीके काढ़े"के साथ खानेसे पथरी गलकर निकल जाती है।

पाषाण वज्र रस।

शुद्ध पारा ४ तोले और शुद्ध गन्धक ८ तोले दोनोंको मिलाकर एक दिन सफेद पुनर्नवाके रसमें खरल करो और एक हाँडीमें रख कर ऊपरसे दूसरी हाँडी औंधी मारदो। दोनो हाँडियोंकी सन्ध बन्द करके कपड-मिट्टी कर दो। फिर एक खड्डे में हाँडीको रख कर, ऊपरसे जङ्गली कण्डोंकी आग लगाओ। आग शीतल होने पर, हाँडीसे दवाको निकाल लो और "गुड़"के साथ खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

एक-एक मात्रा दवा "कुल्थीके काढ़े या इन्द्रायणकी जड़"के काढेके साथ खानेसे पथरी और बस्तिशूल नाश हो जाते हैं।

अंगूरके पत्तोंका शर्बत।

मुनक्के ५ तोले, गोखरू ४ तोले २ माशे, हंसराज २ तोले ४ माशे, अधकुचले ख़रबूजेके बीज १ तोले ८ माशे, अधकुचली सौंफ १ तोले और अंगूरके नरम पत्ते १२ तोले ४ माशे—इन सबको २४ घण्टों तक ५ सेर जलमें भिगो रखो; सवेरे ही औटाओ। जब सवा सेर पानी रहजाय, इसे मलकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें सवा सेर "चीनी" मिलाकर पकाओ। जब शर्बतकी सी चाशनी हो जाय, आगसे उतारकर छान लो। इस शर्बतके पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

हज़रल यहूदकी फंकी।

हजरल यहूद १ तोले, ख़रबूजेके बीजोंकी मींगी ८ माशे, खीरे-ककड़ीके बीज ८ माशे, गोखरू ८ माशे, कुल्थी ८ माशे, सौंफ ४ माशे, समग़ अरबी—बबूलका गोंद ४ माशे और अजमोद ४ माशे—कूट-छानकर रख लो। इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण "चनेके काढ़े"के साथ फाँकनेसे पथरी गल जाती है।

मेद रोग वर्णन ।

उन्नीसवाँ अध्याय

निदान-कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे मेद बढ़ती है :—

(१) मिहनत या कसरत न करनेसे ।

(२) दिनमें सोनेके अभ्याससे ।

(३) कफकारी आहार सेवन करनेसे ।

(४) मीठे पदार्थ खानेसे ।

(५) मधुर रसों और घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंसे ।

मेदवृद्धिकी सम्प्राप्ति ।

मेदसे रास्ते रुक जानेकी वजहसे—और धातुओंका पोषण नहीं होता, इसलिए मेद बढ़ती जाती है। मेद बढ़नेसे मनुष्य सब कामोंमें अशक्त हो जाता है।

नोट—हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है—यह रोग मर्दोंको कम होता है, पर औरतोंको ज़ियादा होता है। शरीरमें खूनके ज़ियादा होनेसे हो, तो फस्द खुलवानी चाहिये अन्यथा कफ नाशक मुसिल या जुलाब लेना चाहिये तथा शरीरको सुखाने और दुबला करनेवाली दवाए सेवन करनी चाहिये ।

मेद रोगके लक्षण ।

जिस मनुष्यकी मेद बढ़ जाती है, वह क्षुद्र श्वास, प्यास, मोह,

निद्रा, पीड़ा, ग्लानि, भूख, पसीना और बदबूका शिकार हो जाता है; अर्थात् उसमें ये सब शिकायतें रहती हैं। वह मैथुन बहुत ही कम कर सकता है और उसमें ताक़त नहीं रहती।

मेद सब प्राणियोंके पेटमें रहती है, इसलिए मेदवृद्धि वाले मनुष्यका पेट ज़ियादा बढ़ता है।

मेदसे वायुकी राहें रुकी रहती हैं, इसलिए वायु बहुत करके कोठोंमे ही घूमती रहती है। कोठोंमें ही घूमती रहनेकी वजहसे "वायु" अग्निको प्रदीप्त करती है और खाये हुए अन्नको सुखा भी डालती है, जिससे मेदवृद्धि वालेका आहार तत्काल पच जाता है, अतः वह फिर खाना चाहता है।

कुछ समयके बाद, इस मेदवृद्धि वालेके भयंकर विकार भी उत्पन्न होते हैं। "अग्नि और वायु" विशेष करके उपद्रव करते हैं। जिस तरह दावानल वनको भस्म कर देती है; उसी तरहसे "मेद" मोटे मनुष्यको जला देती है। मेदके अत्यन्त बढ़ने पर वायु आदि दोष, सहसा दारुण विकार उत्पन्न करके, तत्काल जीवनका नाश कर देते हैं।

मेद और मांसके अत्यन्त बढ़नेसे मनुष्यके कूले, पेट और स्तन हिला करते हैं। जिसकी मेद अयोग्य रीतिसे बढ़ती है, वह बहुत मोटा कहलाता है।

मोटे मनुष्यको कोढ़, विसर्प, भगन्दर, ज्वर, अतीसार, प्रमेह, बवासीर, श्लीपद, अपची और कामला—ये दुस्तर रोग हो जाते हैं। मेदसे पसीनोंमें बदबू होने पर, छोटे-छोटे जीव भी पैदा हो जाते हैं।

मेदवृद्धि या मुटाई नाशक ग़रीबी नुसख़े।

(मुटाई नाशक उपाय)।

(१) मेदवृद्धि वालेको पुराने चाँवल, मूँग, कुल्थी, वन-कुल्थी,

कोदों और लेखन वस्ति सदा हितकारी हैं। इस रोगीको धूमपान हुक्का वग़ैरः पीना, क्रोध करना और फस्त खुलवाना—ये भी लाभदायक हैं।

(२) उपवास या लङ्घन करने, सुखदायी न हो ऐसी खाट पर सोने, मनकी उदारता और नींद आदि तमोगुणको जीतनेसे मुटाई नाश हो जाती है।

(३) जिस मनुष्यका शरीर अत्यन्त तृप्तिकर दोषोंसे मोटा हुआ हो, उसे मिहनत, मैथुन, राह चलना, शराब पीना और रातमें जागना—इनसे प्रेम रखना चाहिये; चिन्तामग्न रहना चाहिये; जौ और समाँके पदार्थ खाने चाहिएं। इन उपायोंसे अत्यन्त मोटापन भी नाश हो जाता है।

(४) चव्य, ज़ीरा, त्रिकुटा, हींग, कालानोन और चीता—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "दहीके पानी"मे मिलाकर, इसके साथ "सत्तू" पीना चाहिये। इससे मेद नाश और अग्निदीप्त होती है।

(५) हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, सरसोंका तेल और सेंधानमक—इनको मिलाकर छे महीने तक खानेसे कफ, मेद और वायु नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—त्रिफले और त्रिकुटेका चूर्ण ६ माशे लेकर, नित्य सवेरे ही, सरसोंके तेल और सेंधेनोनमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(६) वायविडंग, सोंठ, जवाखार, कान्तिसार, जौ और आमले—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर खानेसे अत्यन्त बढ़ी हुई मुटाई भी नाश हो जाती है।

(७) मूलीका चूर्ण "शहद"मे मिलाकर शहद-मिले पानीके साथ खानेसे अथवा त्रिफलेका एक तोला चूर्ण "शहद"में मिलाकर शहद-मिले जलके साथ खानेसे अथवा बृहत् पञ्चमूलका चूर्ण "शहद"मे मिलाकर खानेसे, चालीस दिनमे, मुटाई अवश्य नाश हो जाती है।

(८) परवलके पत्ते और चीतेके काढ़ेमें "सौंफ और हींगका चूर्ण"

मिलाकर पीनेसे किसी भी कारणसे बढ़ा हुआ पेट हल्का हो जाता है, क्योंकि बढ़ी हुई मेद नाश हो जाती है।

(९) अरण्डके पत्तोंका खार "हींग" डालकर पीने और ऊपरसे माँड-समेत भात खानेसे मेदका बढ़ना रुक जाता है।

(१०) जौके सत्तू और त्रिफलेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे मेदवृद्धि दूर हो जाती है।

(११) गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आमलेके काढ़ेमें "लोहभस्म" मिलाकर पीनेसे मेदवृद्धि नष्ट हो जाती है।

(१२) गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आमलेके काढेमें "शुद्ध शिला-जीत या शुद्ध गूगल" पकाकर खानेसे मेदका बढ़ना रुक जाता है।

(१३) चार माशे चीतेकी जड़का चूर्ण एक तोले "शहद"में मिलाकर चाटने और हितकारी भोजन करनेसे पेटका बढ़ना रुक जाता है। परीक्षित है।

(१४) अरण्डकी जड़को रात-भर पानीमें भिगो रखो और सवेरे ही उसका रस "शहद" मिलाकर पीओ। इस उपायसे पेटका बढ़ना रुक जाता है।

(१५) सवेरे ही नित्य कोरे कलेजे, पावभर पानीमें दो तोले "शहद" मिलाकर पीनेसे ३ मासमें मोटापन नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१६) पकाये हुए भातका गरमागर्म माँड पीनेसे शरीरकी मुटाई जाती रहती है।

(१७) काँजीके द्वारा पकायी हुई पेयामें "बेरके पत्तोंका कल्क" मिलाकर पीनेसे मेदका बढ़ना नाश हो जाता है।

(१८) अरनीके काढ़ेमें दो माशे "शुद्ध शिलाजीत" मिलाकर पीनेसे मुटापा नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—एक तोले अरणीके स्वरसमें दो माशे शुद्ध शिलाजीत मिलाकर भी खा सकते हैं।

(१६) शुद्ध शिलाजीत, कूट, अगर, देवदारु, रेणुका नामक सुगन्धित द्रव्य, मोथा, श्रीवास—सफेद चन्दन, स्पृक्का, पिण्डशाक, ब्राह्मी और लौंग—इन सबको "धतूरोंके पत्तोंके रसके साथ" पीसकर शरीर पर खूब मलनेसे कुछ दिनमें मुटाई नाश हो जाती है।

नोट—कोई लिखते हैं—सफद चन्दन, शिलाजीत, देवदारु, रेणुका बीज, स्पृक्का, नागरमोथा, कूट, अगर, नागकेशर, दालचीनी, तेजपात, चमेलीके फूल और लौंग इनको धतूरेके स्वरसमें घोटकर शरीरपर गाढा-गाढ़ा लेप करनेसे मुटाई अवश्य नाश हो जाती है।

(२०) वायविड़ंग, आमले, सोंठ, जवाखार, जौ, लोहभस्म और मुलहठी—इनका चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे मेद बढ़ना और कृमि रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) चाँवलोंके माँडमें "अरण्डके पत्तोंका खार और हींग" मिलाकर पीनेसे मेद-वृद्धि रोग शीघ्र ही नाश हो जाता है।

नोट—इस नुसख़े और न० ६ नुसख़ेमें नाम मात्रका ही फ़र्क़ है।

(२२) धतूरेके पत्तोंका रस शरीरमें मलनेसे मोटा शरीर हलका हो जाता है। कहा है :—

"धत्तरपत्रस्वरसेन गात्रमुद्वर्त्तनं स्थौल्यहर प्रदिष्टम्।"

(२३) सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला और शुद्ध गूगल—सबको बराबर-बराबर लेकर, पहले गूगलको छोड़कर बाक़ी दवाओंको पीस-छान लो। पीछे चूर्णमें गूगलको मिलाकर खूब कूटो और जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंके नित्य खानेसे शरीरकी मुटाई नाश हो जाती है। <u>परीक्षित है।</u>

(२४) आधपाव गोमूत्रमें डेढ़ तोले "शहद" मिलाकर पीनेसे मेद रोग नाश हो जाता है—मोटा शरीर दुरुस्त हो जाता है। <u>परीक्षित है।</u>

(२५) सोंठ, मिर्च, पीपर, चव्य, सफ़ेद जीरा, हींग, कालानोन और चीता—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे

चूर्ण नित्य सवेरे ही गरम पानीके साथ खानेसे शरीरका मोटापन नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) राँगकी अँगूठी पहननेसे मोटा शरीर दुबला होता है।

(२७) कडवी और खट्टी चीजें खाने, गरम और खुश्क दवाएं सेवन करने, भूखे रहने, मोटे कपड़े पहनने, ज़मीन पर सोने और सर्दीमें नंगे बदन रहनेसे मोटा शरीर दुरुस्त हो जाता है। बबूलकी छायामें बैठने और सिरका, मसूर तथा जौकी रोटी खानेसे भी मुटाई कम हो जाती है।

(२८) एक माशे चन्द्रस, दो तोले सिकंजबीन और पानी मिलाकर पीनेसे मोटा शरीर दुबला हो जाता है।

अमृतादि गूगल।

गिलोय १ तोले, छोटी इलायची २ तोले, वायविड़ंग ३ तोले, इन्द्रजौ ४ तोले, बहेड़ा ५ तोले, हरड ६ तोले, आमला ७ तोले और शुद्ध गूगल ८ तोले लो। पहले गूगलको छोड़कर शेष दवाओंको पीस-छान लो। फिर चूर्णको "गूगल"में मिलाकर कूटो और रख लो। इसमेंसे ६ माशे दवा "शहद"में मिलाकर खानेसे मेद रोग—मुटापा और भगन्दर नाश हो जाते हैं।

दशांग गुग्गुल।

त्रिकुटा, चीतेकी जड़, त्रिफला, नागरमोथा, वायविड़ंग और शुद्ध गूगल ले लो। गूगलके सिवाय और दवाओंको पीस-छान कर गूगलमें मिला लो। इसमेंसे ६ मासे दवा रोज़ शहद या पानीके

साथ खानेसे मेद रोग, श्लेष्मा दोष और आमवात रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

त्र्यूषणादि लोह।

त्रिकुटा, भाँग, चव्य, चीता, कालानोन, औद्भिद नोन, सोमराजी, सैंधानोन और सौवर्चल नोन—सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर जितना चूर्ण हो उतनी ही "लोहाभस्म" मिला दो और रख दो। इसमें से चार रत्ती दवा "नाबराबर घी और शहद" के साथ खानेसे मेद रोग और प्रमेह वग़ैरः नाश हो जाते हैं।

त्रिफलाद्य तैल।

त्रिफला, अतीस, मूर्वा, अडूसेकी छाल, नीमकी छाल, अमलताशका गूदा, वच, छातिमकी छाल, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, निर्गुण्डी, पीपर, कूट, सरसों और सोंठ—इन सबको छटाँक-छटाँक भर लेकर, पानीके साथ, सिल पर पीस लो।

तुलसी या वनतुलसीका सोलह सेर स्वरस तैयार कर लो। फिर चार सेर तिलीके तेल, तुलसीके रस और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल पक जाय, उतार कर छान लो।

यह तेल पीने, मालिश करने, नस्य देने और पिचकारी लगानेके काममें आता है। इस तेलकी मालिशसे शरीरकी मुटाई और खुजली वगैरः रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

महासुगन्धि तेल।

चन्दन, केशर, खस, प्रियंगू, इलायची, गोरोचन, लोबान, अगर, कस्तूरी, कपूर, जावित्री, जायफल, कंकोल, सुपारी, लौंग, नली, जटामासी, कूट, रेणुका, तगर, नागरमोथा, नवीन नख, व्याघ्रस्पृक्का, बोल, दौना, स्थौणेयक, चोरक, शैलेय, एलुआ, सरल, सतवन, लाख, आमला, लामज्जक तृण, पद्माख, धायके फूल, पुण्डरीक, और कचूर

—इन अड़तीस दवाओंको तीन-तीन माशे लेकर सिलपर पीस-कूट लो ।

अब एक सेर तेल, चार सेर पानी और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ ; जब तेलमात्र रह जाय छान लो ।

इस तेलकी मालिश करनेसे पसीने, मैलसे हुई बदबू और कोढ़ रोग नष्ट हो जाते हैं । इस तेलके लगानेसे सत्तर वर्षका बूढ़ा जवान, खूब वीर्यवान, स्त्रियोंका प्यारा, भाग्यवान, सुन्दर और सौ औरतोंसे भोग करने योग्य हो जाता है । इसके लगानेसे नामर्द मर्द हो जाता और बाँझके गर्भ रहता है । इससे बेढंगा मोटा आदमी सुन्दर, सुडौल और देखने-योग्य हो जाता है तथा सौ बरसकी उम्र होती है ।

लोह रसायन ।

शुद्ध गूगल, मूसली, हरड़, बहेड़ा, आमले, खैर, अड़सेकी छाल, निशोथ, गोरख-मुण्डी, सोंठ, निर्गुण्डी और चीता—इनमेंसे प्रत्येक पदार्थ आध-आध सेर लेकर बीस सेर पानीमें काढ़ा करो । जब चौथाई यानी पाँच सेर पानी रह जाय, उसे उतार कर उसमें अड़तालीस तोले खूब चूर्ण किया हुआ "कान्त लोह, चौंसठ तोले पुराना घी और बत्तीस तोले चीनी" मिलाकर, ताम्बेके बासनमें डालकर, फिर पकाओ , और पक जाने पर उतार कर शीतल करो ।

फिर उसमें ३२ तोले शहद, आठ तोले शुद्ध शिलाजीत, २ तोले इलायची, २ तोले दालचीनी, १२ तोले वायविड़ंग, ८ तोले मिर्च, ८ तोले रसोन, ४ तोले पीपर और ८ तोले कशीश पीसकर मिला दो और खूब मथकर चिकने बर्तनमें रख दो । यही "लोह रसायन" है ।

वमन, विरेचनादिसे शुद्ध होकर, इसमेंसे १ तोलेभर रोज़ खाना चाहिये और ऊपरसे दूध और जङ्गली जानवरोंके मांसरसका भोजन करना चाहिये । यह रसायन मुटाई नाश करनेमे अव्वल दर्जेकी चीज़ है । बड़ा ढोलसा पेट भी पतला हो जाता है ।

इसके सेवन करनेसे वायु, कफ, कोढ़, प्रमेह, उदर रोग, कामला, पाण्डु, सूजन, भगन्दर, मूर्च्छा, मोह, विष, उन्माद, और विषम विष नष्ट हो जाते हैं। यह बलदायक, बुद्धिदाता, उत्तम वाजीकरण, लक्ष्मीदायक, पुत्रदाता और वली पलित नाशक है।

इस रसायनके सेवन करनेवाला केला, कुन्द, काँजी, करौंदे, करील और करेला इन छे ककारोंको त्याग दे।

शरीरकी दुर्गन्ध और पसीने नाशक नुसख़े।

(१) अड़ूसेके पत्तोंके रसमे "शंखका चूना" मिलाकर लेप करनेसे शरीरकी बदबू नाश हो जाती है।

(२) बेलपत्रोंका स्वरस लगानेसे शरीरकी दुर्गन्ध नाश हो जाती है।

(३) गोरख-मुण्डीको पीसकर काँजीके साथ पीनेसे मेदकी वजहसे पैदा हुई शरीरकी बदबू नाश हो जाती है।

(४) बेलके पत्ते और हरड़—इनको एकत्र पीस कर लेप करनेसे बग़लकी बदबू नाश हो जाती है।

(५) हल्दीको दूधमे पीस कर शरीर पर लगानेसे बहुत दिनोंकी दुर्गन्ध भी जाती रहती है।

(६) सिरस, लामज्जक, नागकेशर और लोधको पीसकर शरीर पर मलनेसे चमड़ेके दोष और पसीने नाश हो जाते हैं।

(७) बेलके पत्ते, सुगन्धवाला, काली अगर, खस और चन्दनको पीसकर शरीर पर लेप करनेसे शरीरकी दुर्गन्ध नाश हो जाती है।

(८) समन्दर-फेनको "ब्राह्मीके रस"में पीसकर शरीर पर लेप करनेसे शरीरकी भारी दुर्गन्ध भी तत्काल नाश हो जाती है।

(९) हरडोको शरीर पर मलकर स्नान करनेसे शरीरसे पसीना आना वन्द हो जाता है।

(१०) हरड, लोध, नीमके पत्ते, आमकी छाल और अनारकी छाल—इनको जलमे पीसकर शरीर पर मलनेसे स्त्री-पुरुषोंके शरीरकी वदवू नाश हो जाती हैं।

नोट—इन चीजोंको गायके दूधमे पीस कर लेप करनेसे शरीरका रग गोरा हो जाता है, जलमें पीस कर लेप करनेसे शरीरको दुर्गन्ध नाश होती है तथा हल्दी और दारुहल्दीके साथ पीसकर लेप करनेसे उत्तम वशीकरण होता है।

(११) जामुनके पत्ते पानीके साथ सिल पर पीसकर शरीर पर लेप करनेसे शरीरकी वदवू नाश हो जाती है।

(१२) पहले वबूलके पत्तोंको पानीमें पीसकर शरीर पर मलो; फिर हरड़को जलमे पीसकर शरीर पर मलो; इसके वाद स्नान करो। इस उपायसे अत्यधिक पसीनोका आना भी नाश हो जाता है।

(१३) स्नान करनेके वाद, हरड़, छोटी नखी, चन्दन, कूट, राल, अगर और खाँडकी वारम्वार धूप देनेसे शरीरमें सुगन्ध छा जाती है। यह धूप मनुष्यके चित्तको हरनेवाली है। इसका नाम "मलयानिल धूप" है।

(१४) दारुहल्दी, तिल, लोध, सिरसकी छाल, खस और केशर—इनको पीसकर शरीर पर मलनेसे ग्रीष्म ऋतुमें अधिक पसीने आना बन्द हो जाता है।

(१५) हरड़के चूर्णको "मद्य अथवा शहद"के साथ चाटनेसे अधिक पसीने आना दूर होकर अत्यन्त सुगन्ध आती है।

(१६) मोतियाके पत्ते, सुगन्धवाला और नागकेशरको पीसकर शरीर पर लेप करनेसे अधिक पसीने आना, विचर्चिका और दाह ये नाश हो जाते हैं।

(१७) मोतियाके पत्ते, हल्दी, जल-पीपलके पत्ते और दाख—

इनको पीसकर शरीर पर लेप करनेसे पसीने और विचर्चिका नाश हो जाते हैं।

(१८) अगर हाथ-पाँव पसीजते हों, तो गूगल और "पंचतिक्त" नामक घीको सेवन करो। इस घीके सेवन करनेसे शरीरमें शक्ति भी आती है।

नोट—हरड़, वहेड़ा, आमला, चीता और नागरमोथा—ये पचतिक्त हैं। इनको और गूगलको वरावर-वरावर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे भी उपरोक्त रोग नाश हो जाता है। इसको "पचतिक्त गुग्गुल" कहते हैं।

(१६) चूना पानीमें पीसकर वग़लमें लगानेसे वग़लकी वदबू नाश हो जाती है।

(२०) जामुनकी छाल और पत्तियाँ पानीमें औटाकर उससे वग़ल धोनेसे वग़लकी दुर्गन्ध चली जाती है।

(२१) मुर्दासंग पीस कर मलनेसे वग़लकी दुर्गन्ध जाती रहती है।

नोट—यहाँतक हमने मेदकी वजहसे अधिक पसीने आनेके उपाय लिखे हैं, पर आगे हम शीतके कारणसे जो हाथ-पाँवोंमें पसीने आते हैं, उनके वन्द करनेके उपाय भी लिखते हैं :—

शीतके पसीनोंके उपाय।

(१) मूँग जलाकर पीसो और रोगीके हाथ-पाँवों पर मलो। इससे पसीने आना वन्द हो जायगा।

(२) वैंगन और अधकुचला खस-खसका पोस्ता औटाकर, उस पानीसे हाथ-पाँच धोनेसे शीतके पसीने वन्द हो जाते हैं।

(३) कुल्थी और पीली कौड़ी अलग-अलग जलाकर पीसो और फिर मिलाकर हाथ-पाँवों पर मलो, इससे शीतके पसीने वन्द हो जाते हैं।

(४) काले धतूरेके वीज जलाकर महीन पीस लो। फिर एक

माशे रोज़ ८ दिनतक खाओ। इससे भी शीतके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(५) वेरकी पत्तियाँ पीसकर मलनेसे शीतके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(६) वबूलकी सूखी पत्तियाँ पीसकर हाथ पाँवों पर मलनेसे शीतकी वजहसे पसीने आना बन्द होता है।

(७) वालछड़ पीसकर मलनेसे हाथ-पाँवके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(८) ऊँटकटारेकी जड़ सुखा-पीसकर एक तोले भरकी मात्रासे थोड़ेसे "शहद"में मिलाकर, सात दिन तक, खानेसे शीतकी वजहसे पसीनोंका आना बन्द होता है।

(६) फिटकरी पानीमें हल करके मलनेसे पसीने आने बन्द हो जाते हैं।

(१०) पुहकरमूल पीसकर हथेली और तलवों पर मलनेसे पसीने वन्द हो जाते हैं।

कार्श्य-वर्णन ।

बीसवाँ अध्याय

कृशता या दुबलेपनके निदान ।

मनुष्यके कृश या दुबले होनेके नीचे लिखे कारण हैं :—

(१) वायु, (२) रूखा अन्नपान, (३) लंघन, (४) कम खाना, (५) वमन-विरेचनका अति योग, (६) शोक करना, (७) मूत्रादि वेग रोकना, (८) नींदको रोकना, (९) सदा रोगी रहना, (१०) नित्य मैथुन करना, (११) नित्य कसरत करना, (१२) थोड़ा भोजन मिलना, (१३) किसी तरहका डर रहना, और (१४) धन वग़ैरःकी चिन्ता रहना ।

कृश या दुबले आदमीके लक्षण ।

जिसके कूले, गर्दन और पेट सूखे हुए हों, शरीरमें नसोंका जाल दीखता हो, चमड़ी और हड्डियाँ ही शरीरमें शेष हों तथा मुँह मोटा हो, उसे अत्यन्त कृश या दुबला कहते हैं ।

अत्यन्त कृशता या दुबलेपनके रोग ।

अत्यन्त दुबले आदमीको तिल्ली, खाँसी, साँस, गोला, बवासीर, उदर रोग और ग्रहणी प्रभृति व्याधियाँ दौड़कर पकड़ती हैं । कोई-कोई कृश या दुबले आदमी अत्यन्त बलवान भी होते हैं ।

कृश होने पर भी बलवान होनेका कारण ।

गर्भाधानके समय अगर पिताके वीर्यका भाग अधिक होता है और मेद कम होती है, तो पैदा होनेवाला बालक दुबला होने पर भी बलवान होता है ।

मोटा होने पर भी बलहीनताका कारण ।

गर्भाधानके समय अगर पिताके वीर्यका भाग कम आता है और मेद जियादा आती है, तो पैदा होनेवाला बालक अच्छी तरह पुष्ट और मोटा होने पर भी बलहीन होता है ।

(१) जो मनुष्य रूखे अन्नपानोंसे दुबला हुआ हो, उसे बल-दायक, धातुओंको पुष्ट करनेवाली, मैथुनमें रुचिकरनेवाली और वाजीकर औषधियाँ देनी चाहियें । अथवा पन्द्रह दिन तक दूधके साथ, घीके साथ, तेलके साथ अथवा गरम जलके साथ "असगन्धका चूर्ण" पिलाना चाहिये । जिस तरह जलकी वृष्टिसे धान्योंकी पुष्टि होती है, उसी तरह इस नुसख़ेसे शरीरकी पुष्टि होती है ।

नोट—असगन्धको महीन पीस-छान कर, दूध, घी, तेल या गरम जल इनमेंसे किसी एकके साथ पीना चाहिये । दूध-घीके साथ असगन्ध खाना सबसे उत्तम है ।

अश्वगन्धा तैल ।

(२) पावभर असगन्धको पानीके साथ सिलपर पीसलो । फिर दो सेर असगन्धको सोलह सेर पानीमें औटाओ । जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो । अब एक सेर घी, लुगदी, काढ़े और चार

सेर गायके दूधको मिलाकर तेल पकाओ। तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इसका नाम "अश्वगन्धा तेल" है। इसकी मालिशसे शरीर पुष्ट होता है।

(३) असगन्ध, कालीमूसली और सफेद मूसली समान-समान लेकर गायके दूधमें पकाओ ; जब दूध सूख जावे, चूर्णसा हो जावे, उसे पीसकर उसमें बराबरकी "मिश्री" या चीनी मिला दो। इसमेंसे एक या दो तोले दवा गायके दूधके साथ खानेसे शरीर पुष्ट होता है। यह दवा औरतोंके लिए ज़ियादा मुफीद है।

(४) दूधके साथ रोटी खानेसे दुबला शरीर मोटा होता है।

(५) मीठे बादामोंकी गरी, निशास्ता, कतीरा और चीनी बराबर-बराबर मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले भर नित्य दूधके साथ खानेसे शरीर मोटा होता है।

(६) कालीमिर्च ३ तोले ४ माशे, सोंठ ३ तोले ४ माशे, पीपर १० तोले, छिले तिल १७ तोले और अखरोटकी मींगी १७ तोले— इनको पीस-छानकर रख लो। दो सेर चीनीकी चाशनी पकाओ। उस चाशनीमें दवाओंको डाल कर उतार लो। जब चाशनी शीतल हो जाय, उसमें पाव-भर "शहद" मिला दो और रख दो। इसमेंसे ४ माशे दवा नित्य खानेसे शरीर खूब तैयार होता है।

असाध्य कृशता।

जो मनुष्य स्वभावसे ही अत्यन्त दुबला हो, अल्प अग्नि वाला और कमज़ोर हो, उसका इलाज मत करो।

इक्कीसवाँ अध्याय

उदर रोगोंके निदान-कारण ।

प्राय: सब तरहके रोग मन्दाग्निसे होते हैं। जिसमें भी उदर रोग यानी पेटके रोग तो मन्दाग्निसे बहुत ही होते हैं। मन्दाग्निसे, अजीर्णकारक पदार्थोंके खाने-पीनेसे, दोषों और मलोंके बढ़ने या कोष्ठबद्धता—दस्तकी क़ब्जियतसे उदर रोग—पेटके रोग होते हैं।

खुलासा—प्रायः सभी रोगोंका जन्म मन्दाग्निसे होता है ; यानी अग्निके मन्दी रहनेसे अनेकानेक रोग होते हैं। इनमें भी पेटके रोग तो मन्दाग्निसे बहुत ही जियादा होते हैं। मन्दाग्निके सिवा, पेटके रोग अजीर्णसे, अत्यन्त हानिकारक खाने-पीनेके पदार्थोंसे और पेटमें मलके जमा हो जानेसे भी होते हैं। अतः आरोग्य चाहनेवाले मनुष्यको ऐसे उपाय करते रहना चाहिये, जिससे अग्नि कभी मन्द न हो, अजीर्ण न हो और दस्तकी कब्जियत न हो।

उदर रोगकी सम्प्राप्ति ।

संचित हुए दोष—पसीना और जलके बहाने वाली नाड़ियोंको रोक कर तथा जठराग्नि, प्राणवायु और अपानवायुको बिगाड़ कर, उदर रोग—पेटके रोग पैदा करते हैं।

खुलासा—जमा हुए वातादि दोष पसीना और जल वहानेवाले स्रोतोंको रोक देते हैं और जठराग्नि, प्राणवायु तथा अपानवायुको दूषित कर देते हैं। स्रोतोंके रुकने तथा जठराग्नि प्राण वायु और अपानवायुके दूषित होनेसे पेटमें रोग हो जाते हैं। असल बात यह है, कि पहले अग्नि मन्द होती है। मन्दाग्नि होनेकी वजहसे अजीर्ण हो जाता है। अजीर्णकी वजहसे शरीरमें मल इकट्ठा हो जाता है। मलके सञ्चय होनेसे दोष कुपित होकर, जठराग्निको सर्व्वथा नष्ट करके, उदर रोग करते हैं।

उदर रोगोंके सामान्य रूप ।

नीचे लिखे हुए लक्षण सब तरहके उदर रोगों—पेटके रोगोंमें देखे जाते हैं :—

(१) अफारा । (२) चलनेमें अशक्तता ।
(३) कमजोरी । (४) अग्निका मन्दापन ।
(५) सूजन । (६) अंगोंमें ग्लानि ।
(७) अपानवायुका न खुलना । (८) मलका रुकना ।
(९) दाह या जलन होना । (१०) तन्द्रा ।

नोट—अफारा, आलस्य, अशक्ति, अङ्गसाद, मल-रोध, प्यास और दाह—ये सब उदर रोगोंके पुर्वरूप हैं ; यानी उदर रोग होनेसे पहले ये होते हैं।

उदर रोगोंकी संख्या ।

उदर रोग आठ तरहके होते हैं :—

(१) वातसे ... . वातोदर ।
(२) पित्तसे .. . .. पित्तोदर ।
(३) कफसे ... . कफोदर ।
(४) सन्निपातसे . ... सन्निपातोदर ।
(५) प्लीहासे ... ... प्लीहोदर ।
(६) गुदाके अवरोधसे ... . बद्धोदर ।
(७) क्षतसे . क्षतोदर ।
(८) पेटमें पानी भर जानेसे । ... जलोदर ।

वातोदरके लक्षण।

वातोदर रोगमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) हाथ, पैर, नाभि और कुखमे सूजन होती है।

(२) कुख, पसली, पेट, कमर, पीठ और सन्धियोंमें दर्द होता है।

(३) सूखी खाँसी चलती है।

(४) शरीर टूटता हैं।

(५) नाभिसे नीचेके शरीरका आधा भाग भारी जान पड़ता है।

(६) मलरोध होता है; यानी दस्त नहीं होता।

(७) चमड़ा, आँख और पेशाब वग़ैरःका रंग धूसर या लाल होता है।

(८) अकस्मात उदरकी सूजन घट या चढ़ जाती है।

(९) पेटमें सूई गड़ानेकीसी वेदना होती है।

(१०) काले रंगकी सुक्ष्म नसें पेट पर छा जाती हैं।

(११) पेट पर अङ्गुली मारनेसे फूली हुई मशक कीसी आवाज़ होती है।

(१२) दर्द और आवाज़ करती हुई हवा इधर-उधर घूमती है।

नोट—वातोदर रोग होनेसे संक्षेपमें हाथ, पैर और नाभि पर सूजन, अग टटना, अरुचि और जड़ता ये लक्षण होते है।

पित्तोदरके लक्षण।

पित्तोदर होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

(१) ज्वर होता है, (२) मूर्च्छा होती है, (३) दाह या जलन होती है, (४) प्यास लगती हैं, (५) मुँहका स्वाद कड़वा रहता है, (६) भ्रम होता है, (७) अतिसार या दस्तोंका रोग होता है, (८) चमड़ा और आँख वग़ैरःका रंग पीला हो जाता है, (९) पेटका रंग हरा

हो जाता है, (१०) पेट पर पीली या ताम्बेके रंगकी नसें छायी रहती हैं। (११) पेट पर पसीने आते हैं। गरमीसे उसमें दाह होता है; भीतर गरमी और बाहर दाह होता है। (१२) आँतोंसे धूआँसा निकलता जान पड़ता है। (१३) छूनेसे पेट नर्म जान पड़ता है। उसमें पीड़ा होती है। (१४) पित्तोदर जल्दी पककर जलोदर हो जाता है।

नोट—संक्षेपमें, पित्तोदर होनेसे दाह, मद, अतिसार, भ्रम, ज्वर, प्यास और मुखमें कड़वापन—ये लक्षण होते हैं।

कफोदरके लक्षण।

कफोदर रोग होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) शरीरमें शिथिलता, (२) शून्यता—स्पर्शज्ञानका अभाव, (३) सूजन, (४) भारीपन, (५) नींद बहुत आना, (६) कय होनेकी इच्छा, (७) अरुचि, (८) श्वास, (९) खाँसी, (१०) चमड़े और नेत्र वग़ैरःका रंग सफेद होना, (११) पेट भीगासा, चिकना, सफेद, नसोंसे व्याप्त, मोटा, कठोर, छूनेमें शीतल, भारी अचल और बहुत देरमें बढ़नेवाला होता है; यानी कफोदर बहुत देरमें बढ़ता है।

नोट—संक्षेपमें, कफोदर होनेसे भारीपन, अंगसाद, श्वास, अरुचि, खाँसी पीनस और सूजन—ये लक्षण होते हैं।

सन्निपातोदर या दूष्योदरके लक्षण।

जिन मनुष्योंको दुष्टा स्त्रियाँ वशमें करनेके लिए नाखून, बाल, मूत्र, मल या आर्त्तव (रजोधर्मका खून) मिलाकर खाने-पीनेके पदार्थ खिला देती हैं, जिनको दुश्मन ज़हर खिला देते हैं, जो दूषित जल पीते हैं अथवा जो दूषी विष सेवन करते हैं, उनके रक्त और वातादि तीनों दोष कुपित होकर अत्यन्त भयानक सन्निपातोदर या दूष्योदर रोग पैदा करते हैं।

यह उदर रोग शीतकालमें, शीतल हवा चलनेके समय, अधिक

वादल घिरनेके दिन या वर्षाकी झडी लगनेके समय विशेष करके कुपित होता है। क्योंकि इन समयोंमें दूषित विषका प्रकोप होता है। मतलब यह है कि, ऐसे समयमें यह रोग बढ़ जाता और दाह होने लगता है।

इस उदर रोगीके शरीरमें दाह होता है। वह निरन्तर बेहोश रहता या वारबार बेहोश होता है। उसके शरीरका रंग पीला हो जाता है, देह कृश हो जाती है और प्यासके मारे गला सूखा करता है। इस सन्निपातोदर या त्रिदोषज उदर रोगको "दूष्योदर" भी कहते हैं।

नोट—परस्पर दूषित हुए दोष भी दूष्य कहाते हैं। इसलिये दूष्य द्वारा हुए उदर रोगको "दूष्योदर" कहते हैं। खुलासा यह है कि दुष्ट जल—सिवार, काई, पत्तोंसे खराब हुआ पानी पीनेसे, दूषी विष सेवनसे, मल-मूत्र रोकनेसे तथा विष खानेसे दुष्ट हुए वातादि दोष सन्निपातोदर रोग करते हैं।

प्लीहोदरके लक्षण।

दाहकारक और अभिष्यन्दी अथवा कफकारक और अम्लपाकी पदार्थ खाने-पीनेसे रुधिर और कफ अत्यन्त दूषित होकर, पेटके बाईं तरफ, प्लीहाको वढ़ाकर अत्यन्त वेदना उत्पन्न करते हैं। इसीको "प्लीहोदर" कहते हैं।

प्लीहा या यकृतके वढ़ते रहनेसे जब पेट बहुत बढ़ जाता है, तब सारे शरीरमें अवसन्नता, मन्द ज्वर, मन्दाग्नि, बलक्षीणता, देहकी पाण्डुवर्णता और कफपित्त-जनित अन्यान्य उपद्रव भी होते हैं। इस समय इन रोगोंको "प्लीहोदर या यकृदुदर" कहते हैं। प्लीहोदर होनेसे पेटका बायाँ भाग वढ़ता है और यकृदुदर होनेसे पेटका दाहना भाग वढ़ता है। क्योंकि प्लीहा पेटके बायें भागमें और यकृत दाहने भागमें है।

कफकी अधिकता होनेसे दर्द नहीं होता। शरीरका रंग सफेद होता है, प्लीहा अत्यन्त कठिन, मोटी, बहुत भारी और शान्त होती

है अथवा शरीर भारी रहता है, अरुचि होती और पेट बड़ा सख्त रहता है।

वायुका कोप ज़ियादा रहनेसे सदा दस्तकी क़ब्जियत, उदावर्त, आनाह और पेटमें ज़ोरका दर्द रहता है।

पित्तका कोप अधिक होनेसे ज्वर, प्यास, अधिक पसीने आना, तीव्र वेदना, दाह, मोह और शरीरका रंग पीला—ये लक्षण होते हैं।

रुधिरका कोप अधिक होनेसे ग्लानि, दाह, मोह, शरीरका रंग बदल जाना, शरीरमें भारीपन, उत्क्लेद, भ्रम और मूर्च्छा ये लक्षण होते हैं।

जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं, उसे त्रिदोषज प्लीहा रोग कहते हैं। यह असाध्य होता है।

नोट—ये लक्षण यकृदुदर और प्लीहोदर दोनोंमें हो पाये जाते हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि, अगर दाहनी तरफ रोग होता है तो यकृदुदर और बाईं तरफ होता है तो प्लीहोदर कहते हैं।

बद्धगुदोदरके लक्षण।

जब मनुष्यकी आँतें अन्न, शाक तथा कमलकन्द आदि चिपटने वाले पदार्थोंसे अथवा रेत, कंकरी या बाल आदिसे अत्यन्त ढक जाती हैं, उस समय वातादि दोषोंसे नित्य थोड़ा-थोड़ा मल आँतोंमें उसी तरह जमता जाता है, जिस तरह बुहारी देते समय थोड़ा-थोड़ा कूड़ा-कर्कट रह जाता है। ऐसा होनेसे जमा हुआ मल गुदाकी राहको रोककर, थोड़ा-थोड़ा मल बड़ी कठिनतासे बाहर निकलने देता है। इससे हृदय और नाभिके बीचमें पेट बढ़ जाता है। इसको "बद्धगुदोदर" कहते हैं।

खुलासा—इस रोगके होनेमे बड़ी तकलीफके साथ थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है और हृदय और नाभिके बीचमें पेट बढ़ जाता है।

क्षतोदरके लक्षण ।

अन्नके साथ अथवा और किसी तरहसे पेटमें रेता, तृण, लकडी या काँटे वगेरःके चले जानेसे आँतें छिद जाती हैं—उनमें घाव हो जाते हैं ; फिर उन घावोंसे पानी जैसा पतला स्राव होता है और वह गुदामें होकर बाहर बहता है। नाभिके नीचेका भाग बढ़ जाता है, पेटमें सूई छेदनेका सा दर्द होता है और ऐसा जान पड़ता है मानों कोई चीरता है। इसी रोगको "क्षतोदर" कहते हैं, क्योंकि इस रोगमें आँतोंमें क्षत या घाव हो जाते हैं। कितने ही ग्रन्थोंमें इसे "परिस्राव्युदर" भी लिखा है, क्योंकि इस रोगमें पानी सा स्राव होता रहता है।

खुलासा—शल्य, काँटा और सूई प्रभृतिके भोजनके साथ पेटमें जानेसे आँतें छिल या कट जाती हैं। फिर उन छिली हुई या कटीहुई आँतोंमेंसे होकर गुदा द्वारा पतला पानी सा स्राव होता है और नाभिके नीचेसे पेट बढ़ता है। इसे "क्षतोदर" कहते हैं। जँभाई आने या थोड़ा भोजन करनेसे काँटे वगेरः पेटमें छिदने लगते हैं,—यह भी क्षतोदरकी एक पहचान है।

जलोदरके लक्षण ।

जो मनुष्य स्नेहपान करके—घी तैलादि पीकर, अनुवासन बस्ति—चिकने पदार्थोंकी पिचकारी लेकर, वमन विरेचन करके अथवा निरूह बस्ति सेवन करके तत्काल शीतल जल पी लेता है, उसकी जलवाही नाड़ियाँ दूषित हो जाती हैं अथवा उनके चिकनाई लिपट जाती है। फिर उन्हीं दूषित नाड़ियोंसे पानी टपक-टपक कर पेटमें इकट्ठा होता है और इस तरह पेट बढ़ता है। इसको "उदकोदर" या "जलोदर" नामक जल-सञ्चयजनित उदर रोग कहते हैं।

इस रोगमें पेट चिकना, बड़ा और चारों तरफसे बहुत ऊँचा होता है। पेट तना हुआ सा मालूम होता है। पानीकी पोटसी भरी जान पड़ती है। जिस तरह पानीसे भरी हुई मशक झलर-

झलर हिलती है; उसी तरह पेट हिलता और आवाज़ होती है। इसकी वजहसे नाभिके चारों तरफ दर्द होता है।

खुलासा—पेट अत्यन्त ऊंचा और चिकना होता है। पानीकी पोटली भरी मालूम होती है। वह पानीसे भरी हुई पखालकी तरह हिलता है, गुड़ गुड़ शब्द और कम्प होता है। इसे "जलोदर या जलन्धर" कहते है। आत्रेय मुनि कहते हैं कि विषम आसन पर बैठनेसे, बहुत पानी पीनेसे, मिहनत और राह चलनेकी पीड़ासे एवं अत्यन्त कसरत करनेसे पेट पीला हो जाता है और जलोदर रोग हो जाता है। जिसको जलोदर हो जाता है, उसके पेटमें पानी मालूम होता है, पेट अत्यन्त बढ़ जाता है, आवाज होती है और पैरों पर सूजन होती है।

हिकमतमें जलन्धरके लक्षण।

हिकमतमें जलन्धरको "इस्तस्का" कहते है। इसके आरम्भको "सूउलकनियाँ" कहते हैं। बेकाम ठण्डे मलके सम्पूर्ण जोड़ोंमें आ जानेसे यह रोग होता है। इसके तीन भेद हैं:—(१) लह्मी, (२) ज़की, और (३) तब्ली।

"लह्मी" होनेसे सारे अंगोंमे सूजन होती है। उसका कारण कलेजेकी निर्बलता है।

"ज़की"में पेट बढ़ जाता है और चमड़ी भारी हो जाती है। मलनेसे पेट भरी हुई मशकके समान मालूम होता है।

"तब्ली"मे भी पेट बढ़ जाता है और नाभि निकल आती है। पेट पर हाथ मारनेसे तबले या ढोलकी सी आवाज़ आती है।

"लह्मी" ज़ियादा होता है और वह इस्तस्काके बुरे प्रकारोंमेंसे है।

उदर रोगोंकी साध्यासाध्यता।

बहुत करके सभी तरहके उदर रोग कष्टसाध्य होते हैं।

रोगी बलवान हो, पेटमें पानी पैदा न हुआ हो और रोग हालका पैदा हुआ हो, तो उपाय करनेसे नष्ट हो जाता है।

नोट—पेटमें पानी पैदा हुआ है या नहीं, इस बातका पता अच्छी तरह लगा लेना चाहिये। "चरक"में लिखा है :—अगर पेट बढ़ गया हो, क्षोभ पाने पर पानीसे

भरी हुई मशककी तरह आवाज़ करता हो, नम हो, बहुत मोटा होनेकी वजहसे अस्फुट शिरायें—नसें दीखती हों, तो समझो कि पेटमें पानी उत्पन्न हो गया। अगर आलस्य हो, मुँहका जायका ठीक न हो, पेशाब बहुत आता हो, पाखाना पतला हो, अग्नि मन्द हो और शरीरका रंग पीलासा हो—तोभी समझो, कि पेटमे पानी पैदा हो गया।

बद्ध गुदोदर नामक उदर रोग पन्द्रह दिनसे अधिक पुराना होनेसे मनुष्यको मार डालता है।

काँटे आदिसे आँतोंमे छेद हो गये हों; यानी क्षतोदर रोग हो गया हो, तो रोगीके बचनेकी आशा नहीं। बहुधा, क्षतोदर रोगी मर जाते हैं।

जिस उदर-रोगीकी आँख सूज गई हों, लिङ्ग टेढ़ा हो गया हो, चमड़ी पतली और गीली हो गई हो; बल, खून, मास और अग्नि ये क्षीण हो गये हों—उस रोगीका इलाज नहीं करना चाहिये।

जिस उदर रोगीकी पसलियाँ टूट सी गई हों, जिसकी अन्नमें अरुचि हो, सूजन हो, दस्त होते हों और जुलाब देने पर भी पेट फिर भर जाता हो, उसका इलाज नहीं करना चाहिये। किसीने कहा है :—

> पक्षादूर्ध्वं बद्धगुदं सब जातोदकं तथा।
> जन्मनैवोदरं सर्वं प्राय: कृच्छ्रतमं मतम्॥

पन्द्रह दिनके बाद बद्धगुदोदर, सब तरहके जलोदर और जन्मसे हुए उदर रोग,—ये सब असाध्य होते हैं।

सब तरहके उदर रोग कष्टसाध्य हैं, विशेष कर जलोदर और क्षतोदर रोग अतिशय कष्टसाध्य हैं। चीर-फाड़से ही ये आराम हों तो हो सकते हैं; दवादारूसे आराम होनेकी आशा बहुत कम है। रोग पुराना होने या रोगीका बल नाश हो जानेसे सभी उदर रोग असाध्य हो जाते हैं।

उदर रोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ।

(१) अगर रोगी बलवान हो, उसका बल नाश न हुआ हो, पेटमें पानी न आया हो, रोग नया हो, तो इलाज हाथमें लो। अगर रोगीमें बल न हो, पेटमें पानी भर गया हो, दस्त कराने पर भी पेट फिर भर जाता हो, रोग पुराना हो अथवा और असाध्य लक्षण हों तो उदर-रोगीकी चिकित्सा मत करो। यों तो सभी उदर रोग कष्टसाध्य होते हैं, पर जलोदर और क्षतोदर तो अत्यन्त कष्टसाध्य होते हैं; अतः उदर रोगीका इलाज हाथमें लेनेसे पहले खूब सोच-समझ लो।

(२) प्रायः सभी तरहके उदर रोगोंमें तीन दोष कुपित होते हैं; अतः पहले वातादि तीनों दोषोंकी शान्तिका उपाय करना चाहिये।

(३) इन रोगोंमें, अग्निवृद्धिके लिए अग्निवर्द्धक औषधियाँ देनी चाहियें और दस्त करानेके लिए थोड़ा गरम दूध और रेंडीका तेल या गोमूत्र और रेंडीका तेल मिलाकर पिलाना चाहिये।

(४) वातोदरमें पहले स्नेहन, स्वेदन, विरेचन और वस्तिकर्म— इनसे काम लेना चाहिये। इस रोगमें पहले पुराने घी आदि चिकने पदार्थोंकी मालिश करके सेक करना चाहिये; फिर दस्तावर दवासे दस्त कराकर, कपड़ेकी पट्टीसे पेटको बाँधे रखना चाहिये। वातोदर रोगीको पीपर और सैंधानोन मिलाकर "माठा" पिलाना चाहिये। इस माठेसे शरीरका भारीपन और अरुचि दूर होती है। दशमूलके काढ़ेमें "रेंडीका तेल" मिलाकर पिलाना भी अच्छा है। इससे वातोदर, सूजन और शूल नाश हो जाते हैं। ऊँटनीका दूध या बकरीका

दूध उदर रोगोंमें सबसे अच्छा है। अग्निदीपक हल्के अन्न—गेहूं, शालि चाँवल और साँठी चाँवल आदि भोजनको देने चाहिएँ।

(५) प्लीहोदर और यकृदुदरमें प्लीहा और यकृत रोगमें लिखा हुआ इलाज करना चाहिये।

(६) बद्धगुदोदरमें पहले स्वेद और फिर तेज जुलाब देना चाहिये।

(७) पित्तोदरमें पंचमूलके काढेके साथ पकाया हुआ दूध देना चाहिये।

(८) कफोदरमें अरण्डीके तेलमें "जवाखार" मिलाकर देना अच्छा है। सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण डालकर कुल्थीका रस अथवा दूध भोजनके लिए देना चाहिये।

(९) विरेचन, आस्थापन वस्ति और स्नेहन कर्म सभी तरहके उदर रोगोंमे हितकारी हैं।
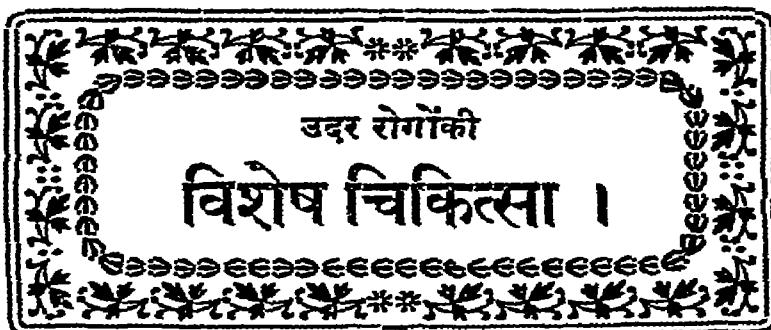
(१०) उदर रोगोंमे मलका सञ्चय बहुत होता है, इसलिये इनमें संशोधन कराना, यानी दस्त कराना विशेष हितकारी है। रेंडी का तेल—दूध, जल या गोमूत्रमे मिलाकर पीनेसे पेट साफ हो जाता है।

(११) मांस, शाक, तिल, पिट्ठीके पदार्थ, नमक, विदाही या जलन करनेवाले अन्न, भारी पदार्थ, कसरत, राह चलना, दिनमें सोना, नहाना और जल पीना—सभी उदर रोगोंमे अपथ्य हैं, अतः मना हैं।

नोट—हिकमतमें भी नहानेकी मनाही है। अगर नहाना ही हो, तो खारे पानीकी नदीमें नहाना चाहिये अथवा खारी नोन पीसकर और पानीमें मिलाकर वह पानी कई दिनोंतक धूपमें रखना चाहिये, फिर गरम करके, उसीसे नहाना चाहिये। हकीमोंने भी जलन्धर रोगमें पानी पीनेकी मनाही की है। पानीके बजाय "सौंफका अर्क" और "मकोयका अर्क" पिलानेकी राय दी है। अगर पानी बिना न सरे, तो गर्म जल शीतल करके थोड़ा-थोड़ा पिलानेकी आज्ञा दी है। हमारे यहाँ भी गरम पानी पीनेकी आज्ञा है।

(१२) रोगकी प्रबल अवस्थामे रोगीको मानमण्ड देना चाहिये। अगर वह न हो, तो केवल दूध या दूध-साबू देना चाहिये। अगर रोग का ज़ोर कम हो, तो दिनके समय पुराने चाँवलोंका भात, मूँगकी दालका जूस, परवल, बैंगन, गूलर, सूरण, छोटी मूली और अदरख वगैरःकी तरकारी थोड़ा नमक मिलाकर देनी चाहिये। रातके समय दूध-साबू देना चाहिये। अगर ज़ियादा भूख हो, तो दो एक पतली-पतली रोटियाँ दे सकते हैं।

नोट—हिकमतमें लिखा है कि, इस रोगवालेको गेहूँकी रोटीसे जौकी रोटी खाना जियादा मुफ़ीद है। अगर गेहूँ बिना मन न माने, तो गेहूँके आटेमें जौका आटा मिला लेना चाहिये।

वातोदर-चिकित्सा।

नोट—पहले वैद्य रोगीके बलाबल और कालका विचार करके "स्थिरादि घृत" पिलावे, स्नेह और स्वेद कम करे तथा विरेचन या जुलाब दे, रोगीकी नाभि पर कपड़ा लपेट कर शाल्वन और उपानहन स्वेद देवे; स्थिरादि औषधियोंके काढ़ेमें "रेंडीका तेल" मिलाकर निरूह और अनुवासन वस्ति दे; दूध, यष, मांसरस और अन्न इनका क्रमसे उपयोग करे, यानी पहले दूध दे, फिर यष, फिर मांसरस और शेषमें अन्न।

(१) पाव-भर गोमूत्रमें दो तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीनेसे वातोदर नाश हो जाता है।

(२) माठेमें "पीपरोंका चूर्ण और सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे वातोदर नाश हो जाता है।

(३) दशमूलके काढ़ेमें दो तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीनेसे वातोदर, सूजन और शूल ये नाश हो जाते हैं।

(४) त्रिफलेके काढेमें "गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे वातोदर नाश हो जाता है।

(५) वातोदर रोगमें पुराने घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंकी मालिश करके सेक करना चाहिये। फिर दस्त कराकर, कपड़ेकी पट्टीसे पेटको बाँध रखना चाहिये।

(६) दशमूलके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे भी वातोदर नाश हो जाता है। दशमूलके काढ़ेमें "दूध और शिलाजीत" मिला कर पीनेसे भी वातोदर नाश हो जाता है।

(७) केवल ऊँटनीका दूध पीनेसे ही वातोदर नाश हो जाता है। बकरीका दूध भी उदर रोगोंमें अच्छा लिखा है।

कुष्ठादि चूर्ण।

(८) कूट, दन्ती, जवाखार, त्रिकुटा, सैंधानोन, कालानोन, साँभर नोन, बच, जीरा, अजवायन, हींग, सज्जी, चव्य, चीता और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण नित्य गरम पानीके साथ खानेसे वातोदर नाश हो जाता है। इसका नाम "कुष्ठादि चूर्ण" है।

समुद्राद्य चूर्ण।

(९) समन्दर नोन, कालानोन, सेंधानोन, जवाखार, अजमोद, पीपर, चीता, अदरख, हींग, साँभरनोन और खारीनोन—सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार माशे चूर्ण ६ माशे या तोले-भर "घी"में मिलाकर, भोजनसे पहले, प्रथम ग्रासमें खानेसे वातोदर, गोला, संग्रहणी, बवासीर, पाण्डु और भगन्दर आदि रोग नाश हो जाते हैं। इसका नाम "समुद्राद्य चूर्ण" है। परीक्षित है।

लशुन तैल।

५ सेर उत्तम लहसनको २५ सेर पानीमें औटाओ ; जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

त्रिकुटा, त्रिफला, दन्ती, हींग, सैंधानोन, चीता, देवदारू, वच, कूट, लाल सहँजना, पुनर्नवा, कालानोन, वायविडंग, अजवायन और गजपीपर दो-दो तोले और निशोथ एक तोले लेकर, सिल पर ऊपरके काढेमेंसे थोड़ासा लेकर उसीके साथ पीस लो।

अब एक क़लईदार वर्तनमें ऊपरका काढ़ा, लुगदी और रैंडीका तेल ढेढ़ सेर मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ।

सवेरे ही उठ कर, इसमेंसे ६ माशेसे दो तोले तक तेल, अपनी अग्नि और बलके अनुसार, पीनेसे समस्त रोग नाश हो जाते हैं; ख़ासकर उदर रोग, मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त, अंत्रवृद्धि, गुदाके कीड़े, पसली और कूखका दर्द, आमशूल, अरुचि, यकृत, अष्ठीलिका, आनाह, प्लीहा और अङ्गकी पीड़ा। एक महीने तक इस तेलके पीनेसे ८० तरहके वात रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—वातोदर रोग पर जितने नुसख़े लिखे हैं, प्रायः सभी परीक्षित हैं।

पित्तोदर चिकित्सा।

नोट—अगर रोगी ताक़तवर हो, तो उसे जुलाब दे दो। अगर कमजोर हो, तो अनुवासन वस्ति देकर क्षीर वस्तिसे शुद्ध करो। शरीरमें अग्नि और बल होने पर स्निग्ध विरेचन दो। निशोथका कल्क या अरण्डीका काढ़ा दूधमें दो अथवा सातला, त्रायमाण या अमलतासके द्वारा पकाया हुआ घी दो। जब अच्छी तरहसे विरेचन हो जावे, उत्तम औषधि दो। आज कल वस्ति वगैरः कौन वैद्य करता और कौन रोगी कराता है? अतः बलवान रोगी होने पर, उपरोक्त उपायोंमेंसे किसीसे दस्त कराकर रोग नाशक दवा दे देनी चाहिये।

(१) स्थिरादि औषधियोंके साथ तेल या दूध पकाकर पिलानेसे पित्तोदरमें लाभ होता है।

(२) पंचमूलकी दवाओंके द्वारा दूध पकाकर पिलानेसे पित्तोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पृश्निपर्णी, खिरटी, कटेरी, लाख और सोंठ—इनके द्वारा दूध पकाकर पिलानेसे पित्तोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) चीनी और कालीमिर्च डालकर मीठा माठा पीनेसे पित्तोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कफोदर चिकित्सा।

नोट—पहले पीपरोंके कल्कसे पकाया हुआ घी पिलाओ। इसके बाद, थूहरके दूधके साथ पकाये हुए घीसे अनुलोमन कराओ। इसके बाद सोंठ, मिर्च, पीपर, गोमूत्र, रेंडीका तेल और नागरमोथेके काढ़ेसे स्थापन और अनुवासन वस्ति दो। लोहेका मैल, सरसों और आमलोंके बीज—इनको एकत्र पीस कर पेट पर लेप करो। कुल्थीके यूषमें त्रिकुटेका चूर्ण मिलाकर भोजनके साथ दो और गरम पानीसे पेटको बारम्बार सेको।

(१) कुल्थीके काढ़ेमें सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण मिलाकर पिलाओ। इससे कफोदर शान्त होता है। परीक्षित है।

(२) गरम दूधमें रेंडीका तेल मिलाकर पिलानेसे कफोदर शान्त होता है। परीक्षित है।

(३) अजवायन, सैंधानोन, ज़ीरा, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—इनका चूर्ण "छाछ"में मिलाकर पीनेसे कफोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) रेंडीके तेलमें "जवाखार" मिलाकर पीनेसे कफोदर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) त्रिकुटा, ज़ीरा, अजवायन, चीता और हाऊबेरका चूर्ण मिलाकर "माठा" पीनेसे कफोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

सन्निपातोदर-चिकित्सा।

(१) सोंठ, मिर्च, पीपर, जवाखार और सेंधानोन, इनका चूर्ण मिलाकर गाढ़ा-गाढ़ा माठा पीनेसे सन्निपातोदर रोग नाश हो जाता है।

(२) रोहेड़ा और हरड़,—इनको गोमूत्रमें पीसकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं। इनके सिवा प्लीहा, प्रमेह, ववासीर, कृमि और गुल्म रोग भी आराम हो जाते हैं।

(३) सातला और शंखपुष्पीके कल्कके साथ "घी" पकाकर पिलानेसे दस्त होते और सन्निपातोदर रोगमें लाभ होता है।

(४) शुद्ध शिलाजीत गोमूत्रमें मिलाकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

प्लीहोदर-चिकित्सा।

नोट—प्लीहा रोगीको पहले स्नेहन, स्वेदन और रेचन इत्यादि विधि करो। तिल्ली नाश करनेको, दही खिलाकर, बायें हाथकी शिरा बींधो और यकृत रोग नाश करनेको दाहने हाथकी शिरा वेधो। दुष्ट खूनकी शान्तिके लिए प्लीहाको अच्छी तरह मलो अथवा बायें हाथके पहुंचेके अगुठेकी शिराको दग्ध करो।

(१) वायबिड़ंग, सैंधानोन, सत्तू और वच—इनको पानीमें पीसकर, "दूधके साथ" पीनेसे प्लीहा, गुल्म और उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(२) सेंधानोन, पीपर और चीता—इनके चूर्णको "सहँजने, हरड़

और आमलोंके रस या काढ़ेके साथ" पीनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी आराम हो जाती है।

(३) तिल, रेंडीका खार, शुद्ध भिलावे और पीपर—बराबर-बराबर लो और सबकी तोलके बराबर "गुड़" लो। फिर सबको एकत्र मिलाकर, अपनी अग्नि और बलके अनुसार खाओ। इससे अत्यन्त उग्र प्लीहा, यकृत और गुल्म नष्ट हो जाते हैं।

(४) सहँजनेके काढेमे "अम्लबेत, सेंधानोन, कालीमिर्च और पीपरोंका चूर्ण" डालकर पीनेसे प्लीहोदर रोग नाश हो जाता है।

(५) कूट, बच, अदरख, चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, अजमोद और पीपर-—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको ६ माशे से एक तोले तक गरम जलके साथ खानेसे प्लीहोदर और उदावर्त्त नाश हो जाते हैं।

(६) समन्दरकी सीपका खार "दूधके साथ" खानेसे प्लीहोदर नाश हो जाता है।

(७) पीपरोंका चूर्ण "दूधके साथ" खानेसे प्लीहोदर शान्त हो जाता है।

(८) आकके पत्ते और सैंधानोन—दोनोंको हाँडीमें रखकर, हाँडीका मुख बन्द कर दो और कण्डोंमें फूक दो। इसमेंसे १ माशे चूर्ण काँजी, छाछ या दहीके पानीके साथ पीनेसे प्लीहोदर और वायु-गोला आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) सज्जीखार और जवाखार पीसकर रख लो। इस चूर्णके खानेसे भी प्लीहोदर आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) रुहेड़ेका फल और हरड़के बक्कलको पीस-छान लो। इस चूर्णको "गोमूत्र या जलके साथ" खानेसे सब तरहके पेटके रोग, तिल्ली, प्रमेह, बवासीर, वायुगोला और कृमिरोग नाश हो जाते हैं।

(११) हींग, त्रिकुटा, कूट, ज़वाखार और सैंधानोन, इनको पीस-

छान लो । इस चूर्णको "बिजौरे नीबूके रसके साथ" खानेसे प्लीहा और शूल नष्ट हो जाते हैं ।

(१२) ढाकके खारके जलमें पीपरोंको भावना देकर खानेसे गुल्म और प्लीहा रोग नाश हो जाते हैं ।

(१३) जम्बीरी नीबूके रसमें, दो माशे "शंखनाभिका चूर्ण" मिलाकर खानेसे सब तरहकी अत्यन्त बढ़ी हुई प्लीहा भी नाश हो जाती हैं । परीक्षित है ।

(१४) सरफोंकेकी जड़के एक तोले कल्कको माठेके साथ पीनेसे बहुत दिनोंकी पुरानी और अत्यन्त जमी हुई प्लीहा भी आराम हो जाती है । परीक्षित है ।

(१५) करञ्जका खार, विरिया संचर नोन और पीपर—इनकों मिलाकर, सवेरे ही, बलानुसार, खानेसे यकृत और प्लीहा रोग शान्त हो जाते हैं ।

(१६) सेमलके फूल उबालकर रातमें रख दो । सवेरे ही उसमें एक तोले "राईका चूर्ण" मिलाकर खाओ । इससे प्लीहा रोग जाता रहता है ।

नोट—कोई-कोई कुटकीका चर्ण भी मिलाते हैं ।

(१७) सैंधेनोनको थूहरके दूधमें पीसकर, आकके पत्तोंपर लेप करो । फिर उन्हें सुखाकर एक हाँडीमें रक्खो और हाँडीका मुख बन्द करके, हाँडीको आगपर रखकर पकाओ ; राख हो जायगी । उस राखको निकाल कर रख लो । उस राखको "मस्तु नामक माठे"में मिलाकर पीनेसे भयङ्कर प्लीहा भी नाश हो जाती है ।

(१८) चव्यके काढ़ेमें "चीतेका चूर्ण" मिलाकर सवेरे ही पीनेसे प्लीहोदर आदि समस्त उदर रोग नाश हो जाते हैं ।

(१९) ग्वारपाठेके रसमें "हल्दीका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे प्लीहा और अपची रोग नाश हो जाते हैं ।

(२०) पके हुए आमके रसमें शहद मिलाकर खानेसे प्लीहा नाश हो जाती है।

(२१) सवेरे-शाम या भोजनके पीछे एक या दो तोले "कुमार्यासव" जलके साथ खानेसे तापतिल्ली, यकृत-विकार और वायुगोला आदि रोग नाश हो जाते हैं। बनानेकी तरकीब पृष्ठ ७४३ में देखिये।

(२२) ६ माशे निम्बुक द्राव छटाँक भर पानीमें मिलाकर, काँच के बासनमें, सवेरे-शाम या भोजनके बाद, पीनेसे प्लीहा, यकृत और अजीर्ण आदि रोग नाश हो जाते हैं। बनानेकी तरकीब इसी भागके पृष्ठ ५१५में देखिये।

जलोदर, बद्धोदर और क्षतोदर-चिकित्सा।

नोट—बद्धोदरमें पहले स्वेद, फिर तेज जुलाब देना चाहिये। यथादोषानुसार गोमूत्र, तेल और नमककी निरूह और अनुवासन वस्ति देनी चाहिये। बद्धोदर, क्षतोदर और जलोदर रोगोंमें अगर चीरने फाड़नेकी दरकार हो, तो वैद्य रोगीके नातेदारोंसे, मित्रोंसे, स्त्रीसे, राजासे और गुरुसे आज्ञा लेकर काम शुरु करे। कह देना चाहिये, चीरनेसे या तो रोगी आराम हो जायगा या मर जायगा। अगर इस बातको सुनकर भी रोगी और रोगीके सम्बन्धी आज्ञा देदें, तो वैद्यको अपना काम करना चाहिये। ये रोग बिना चीर-फाड़के बहुत कम आराम होते हैं। आयुर्वेद ग्रन्थोंमें चीरने वगैरःकी तरकीबें लिखी हैं, इससे मालूम होता है, कि पहलेके वैद्य चीरफाड़का काम अच्छी तरह जानते थे। ये तरकीबें बिना देखे और गुरुके पास रहे नहीं आ सकतीं, इस लिए हम इन्हे नहीं लिखेंगे।

(१) बद्धोदर रोगी "अजवायन, सेंधानोन, ज़ीरा, चीता और हाऊबेरका चूर्ण" मिलाकर माठा पीवे तो लाभ हो सकता है।

(२) क्षतोदर रोगी "शहद और पीपर" मिलाकर माठा पीवे तो आराम हो सकता है।

(३) जलोदर रोगी "जवाखार, त्रिकुटा और सैंधानोन" मिलाकर माठा पीवे तो लाभ हो सकता है ।

(४) आरने ऊपलोंके क्षारको कपड़ेमें छान लो। फिर उसमें पीपरामूल, पाँचों नोन, पीपर, चीता, सोंठ, निशोथ, त्रिफला, वच, जवाखार, सज्जी, सातला, दन्ती, सत्यानाशी कटेरी (चोक) और मेढ़ासिंगी—एक-एक तोले पीस-छानकर मिला दो और खरल करके छै-छै माशेकी गोलियाँ बनालो। हर दिन एक गोली सौवीर नामक काँजीके साथ खानेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ जलोदर और मुखशोथ नाश हो जाता है। इन गोलियोंको "क्षारगुटिका" कहते हैं ।

(५) दशमूल, देवदारु, सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा और बड़ी हरड़—इनका काढ़ा पीनेसे जलोदर, सूजन, श्लीपद और वात रोग नाश हो जाते हैं ।

शोथोदर नाशक नुसखे ।

(१) हरड़, सोंठ, देवदारु, पुनर्नवा और गिलोय—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे शोफोदर रोग नाश हो जाता है ।

(२) पुननवा, नीमकी छाल, पटोल पत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, दारुहल्दी और हरड़—इनका काढ़ा पीनेसे सब तरहके उदर रोग, सर्व्वाङ्गगत सूजन, शोथोदर, खाँसी, शूल, श्वास और पाण्डु रोग दूर हो जाते हैं। परीक्षित है ।

(३) पुनर्नवा, दारुहल्दी, हरड़ और गिलोय—इनके काढ़ेमें "गोमूत्र और शुद्ध गूगल" मिलाकर पीनेसे चमड़ेके रोग, शोफोदर,

पाण्डु रोग, मोटापन, मुख और नाकसे पानी गिरना आदि रोग नाश हो जाते हैं ।

(३) लूनी घी, अदरखका कल्क और अदरखका स्वरस मिलाकर पकाओ । घी मात्र रहने पर छान लो । इस घीके पीनेसे शोथोदर, मन्दाग्नि और सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं । इसका नाम "आर्द्रक घृत" है ।

नोट—अदरखका कल्क या सिल पर पिसी लुगदी पाव भर, घी एक सेर और अदरखका स्वरस चार सेर लेकर एकत्र पकाओ । घी मात्र रहने पर छान लो । यही "आर्द्रक घृत" है ।

(५) पुराने मानकन्दको पीसकर और उसमें दूने चाँवल मिलाकर, जल और दूधमें खीर बनाओ । इस खीरसे वातोदर, सूजन, संग्रहणी और पाण्डु रोग नाश हो जाते हैं ।

(६) बेलगिरी, चीता, चव्य, अदरख और सोंठ—इनको एक-एक तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो । फिर यही पाँचों दवाएँ समान-समान डेढ़-डेढ़ छटाँक लेकर चार सेर पानीमें पकाओ ; जब एक सेर पानी रह जाय उतार कर छान लो । अब एक पाव घी, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर घी पकाओ । जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो । इसका नाम "बिल्वादि घृत" है । इसके पीनेसे सूजन, मन्दाग्नि और अरुचि रोग नाश हो जाते हैं ।

(७) ऊँटनी या बकरीका मूत्र पीनेसे शोथोदर नाश हो जाता है ।

(८) सात दिन तक अन्न-जल छोड़ कर, केवल "भैंसका मूत्र" दूधमें मिलाकर पीनेसे शोथोदर आराम हो जाता है ।

उदर रोगोंकी
सामान्य-चिकित्सा ।

समस्त उदर रोग नाशक नुसखें ।

(१) पुनर्नवा, देवदारु, गिलोय, अम्बष्ठा-पाढ़, वेलकी जड़, गोखरु, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, हल्दी, दारुहल्दी, पीपर, चीता और अडूसा —इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार या छ माशे चूर्ण "गोमूत्रके साथ" खानेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(२) रेंडीका तेल "गरम दूध या जल अथवा गोमूत्रमें" मिलाकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग आराम हो जाते हैं।

(३) मालकांगनीका तेल पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(४) कंकुष्ठका चूर्ण गरम जलके साथ सेवन करनेसे आठों तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(५) देवदारु, ढाक, आककी जड़, गज-पीपर, सहँजना और असगन्ध—इनको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) मुर्दाशंखका चूर्ण "नागरमोथेके काढ़ेमें" मिलाकर पीनेसे आठों तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(७) थूहरके दूधमें पीपलोंको भावना देकर, उनमेंसे अपनी

शक्ति-अनुसार एक से आरम्भ करके एक हज़ार तक खानेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(८) शुद्ध शिलाजीतको "गोमूत्र"में मिलाकर प नेसे अथवा शुद्ध गूगलको "त्रिफलेके काढे"में मिलाकर पीनेसे सब रहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(६) दुर्गन्ध करंजके बीज, मूलीके बीज, गरहेडुवेकी जड़ (गवादनी-मूल) और शंख भस्मको मिलाकर कांजीके साथ पीनेसे जलोदर तक आराम हो जाता है।

(१०) इन्द्रजौ ४ माशे, सुहागा ४ माशे, हींग ४ माशे, शंख-भस्म ४ माशे और पीपर ६ माशे—इनको "गोमूत्रके साथ" पीस कर पीनेसे सब तरहके उदर रोग, यहाँ तक कि पुराने उदर रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

(११) जो मनुष्य सवेरे ही उठकर, चव्य और चीतेके चूर्णको "ऊँटके मूत्रके साथ" पीता है, उसका असाध्य उदर रोग भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

(१२) इन्द्रायण, शंखपुष्पी, दन्ती, निशोत, नीलीवृक्ष, त्रिफला, हल्दी, वायविडङ्ग और कबीला—इनका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) चव्य, दन्ती, चीता, वायविडङ्ग और त्रिकुटा—इनका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१४) अदरख, देवदारु और चीतेका काढ़ा पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१५) चव्य और सोंठको "गोमुत्रके साथ" पीसकर पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१६) जवाखार, सज्जी, चीता, त्रिकुटा, नीली और पाँचों नोन—इनको पीसकर और घीमें मिलाकर खानेसे सब तरहके उदर रोग और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं।

(१७) इन्द्रायण, शंखाहूली, दन्ती और नीली—इनको "गोमूत्रके साथ पीस कर और गोमूत्रमें मिलाकर" खानेसे सब तरहके उदर रोग दूर हो जाते हैं।

(१८) देवदारु, सहँजना और त्रिजौरा नीवू—इनको "गोमूत्रमें पीसकर" पीनेसे अथवा असगन्धको "गोमूत्रमें पीस कर" पीनेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ उदर रोग, कृमि रोग तथा शोथ-संयुक्त त्रिदोषज उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१९) वर्द्धमान पीपलको यथाविधि सेवन करनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं। संसारमें उदर रोगकी इसके समान और दवा ही नहीं है। कहा है—

पिप्पली वर्द्धमानं वा कल्योद्दिष्टं प्रयोजयेत्।
जठराणां विनाशाय नास्ति तेन समं भुवि॥

(२०) आठों तरहके उदर रोगोंमें सब तरहके मूत्रोंका सींचना और पीना अथवा "दूधके साथ वर्द्धमान पीपर सेवन करना" अत्यन्त हितकारक है।

(२१) उत्तम बबूलकी छालको पानीमें पकाओ ; जब खूब पक जाय, उतार कर छान लो और दूसरे बर्तनमें डालकर फिर आग पर पकाओ। जब काढ़ा अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय उतार लो और शीतल होने पर उसमें "माठा" मिलाकर पीओ। इस दवाको सेवन करते समय माठेके साथ ही भोजन करो। इस उत्तम योगसे जलोदर तक नाश हो जाता है।

नोट—बबूलकी छालके काढेको दूसरी बार आग पर रख कर इतना पकाओ, कि वह गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय। फिर उसकी जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे माठा पीओ। इस तरह करनेसे रोज़ पकानेकी दिक्कत नहीं रहती। हम इसी तरह गोलियाँ बना लेते हैं। इस तरह बड़ा आराम है।

उदर रोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

नारायण चूर्ण।

अजवायन, हाऊबेर, धनिया, त्रिफला, कालाजीरा, सौंफ, पीपरा-मूल, वनतुलसी, कचूर, सोया, वच, जीरा, त्रिकुटा, चोक, चीता, जवाखार, सज्जो, पोहकरमूल, कूट, पाँचों नोन और वाय-विडंग एक-एक तोले ; दन्ती तीन तोले, निशोथ दो तोले, इन्द्रायन दो तोले और सातला चार तोले—इन पच्चोस दवाओंको पीस-कूट कर कपडेमें छान लो। यही "नारायण चूर्ण" है।

यह चूर्ण अनेकों रोगोंको नाश करता है। जिस तरह नारायण असुरोंका नाश करते हैं ; उसी तरह यह रोगोंको नाश करता है। उदर रोगोंकी यह परमोत्तम औषधि है। भिन्न-भिन्न अनुपानोंके साथ यह उदर रोग, गुल्म, वात रोग, मलभेद, परिकर्त्तिका, अजीर्ण, भगन्दर, पाण्डुरोग, खाँसी, श्वास, गलग्रह, हृदयरोग, संग्रहणी, कोढ, मन्दाग्नि, ज्वर, दंष्ट्राविष, मूलविष, खनिजविष, कृत्रिम विष और सब तरहके विषोंको नाश करता है।

इसकी मात्रा ३ माशेसे ४ माशेतक है। नीचे लिखे हुए रोगोंमें इसे नीचे लिखे हुए अनुपानोंके साथ सेवन करनेसे अवश्य लाभ होता है :—

(१) उदर रोगोमें		माठेके साथ।
(२) गुल्म रोगोंमें	.	बेरके काढ़ेके साथ।
(३) मलभेदमें	...	दहीके तोड़के साथ।
(४) वातरोगमें	...	प्रसन्ना मदिराके साथ।

(५) ववासीरमें	अनारके रसके साथ ।
(६) अजीर्णमें	गरम जलके साथ ।
(७) आनाहमें	गरम पानीके साथ ।
(८) पेट और गुदामें कतरनीसी चलनेमें	विषांविल नीबूके रसके साथ अथवा तिंतड़ीकके भिगोये पानीके साथ ।

नाराच घृत ।

थूहरका दूध, दन्ती, हरड़, वहेड़ा, आमला, वायविडंग, कटेरीकी जड़, निशोथ और चीतेकी जड़की छाल एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर कल्क या लुगदी वनालो ।

अब १६ तोले गायका घी, ऊपरकी लुगदी और ६४ तोले पानीको मिलाकर पकाओ ; जब घी मात्र रहजाय, उतार कर छानलो ।

विरेचन या जुलाबके लिए, एक या दो तोले घी पीकर, ऊपरसे गरम जल पीना चाहिए । दस्त हो जाने पर योग्य पेया या योग्य रस पीना चाहिये । जिस तरह तीर निशानेको तोड़ता है ; उसी तरह यह घी, ठीक विधिसे खानेपर, उदरके सब रोगोंको नाश करता है ।

नाराच रस ।

शुद्ध पारा १ तोले, सुहागा १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, शुद्ध गंधक २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, सोंठ २ तोले, शुद्ध जयपालके वीज ६ तोले ले लो । पहले गंधक और पारेको खूब खरल करो । जब चमक न रहे, उसीमें बाक़ीकी सब दवाएं पीस-छानकर मिलादो और पानी दे-देकर खरलमें घोटो । घुट जानेपर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । इनमेंसे एक-एक गोली चाँवलोंके धोवनके साथ निगलनेसे उदर रोग और गुल्म रोग आराम हो जाते हैं ।

इच्छाभेदी रस।

सोंठ १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, सुहागा १ तोला और शुद्ध जयपालके बीज ३ तोले लो। पहले पारे और गन्धकको खरल करो। फिर शेष दवाएँ पीस-छानकर मिला दो और पानी दे-देकर खरल करो। खरल हो जाने पर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। अनुपान—चीनीका शर्बत। गोली खाने बाद जितने चुल्लू चीनीके शर्बतके पीओगे, उतने ही दस्त होंगे। पथ्य—दहीका माठा और पुराने चाँवलोंका भात।

बिन्दुघृत।

आकका दूध ८ तोले, थूहरका दूध २४ तोले, निशोथ ४ तोले, हरड़ ४ तोले, कबीला ४ तोले, दन्ती ४ तोले, विष्णुक्रान्ता ४ तोले, चीता ४ तोले, पीपर ४ तोले, अमलताशका गूदा ४ तोले, शंखाहूली ४ तोले और नीलिनी ४ तोले—इन सबको सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी कर लो। फिर एक सेर घी, लुगदी और चार सेर पानी सबको मिलाकर घी पका लो। घी मात्र रहने पर, उतार कर छान लो। इस "बिन्दुघृत"को अत्यन्त दूषित कोठे, सूजनयुक्त पेट, आठों प्रकारके उदर रोग, भगन्दर और दुष्ट गुल्म—इन रोगोंमें प्रयोग करना चाहिये। इस घीकी मात्रा एक बूँद है। इस घीकी जितनी बूँदें पीयी जाती हैं, उतने ही दस्त होते हैं। कहते हैं, इस घीकी पेट पर मालिश करने या पेट पर लगानेसे भी दस्त होने लगते हैं। वैद्यक-शास्त्रमें यह घी अनेक जगह लिखा है, पर हमने इससे कभी काम नहीं लिया। पाठक आज़मा देखें।

चित्रक घृत।

चीता ४ तोले और जवाखार ४ तोलेको सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो।

अव दो सेर घी, आठ सेर पानी, चार सेर गोमूत्र और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घीको भी उचित मात्रामें सेवन करनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

पिप्पल्यादि लौह।

पीपरामूल, अभ्रक-भस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिजात और सैंधानोन एक-एक तोले लो और "लौह-भस्म" सबके बराबर ६ तोले लो। कूटने योग्य चीज़ोंको कूट-पीस और छान लो। फिर सबको मिला कर पानीके साथ खरल करो। खरल हो जाने पर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको उचित अनुपानके साथ खानेसे सब तरहके उदर रोग आराम हो जाते हैं।

शोथोदराग्नि लौह।

पुनर्नवा, गिलोय, चीतेकी जड़, गुलसकरी, मानकन्द, सहंजनेकी जड़, हुड़हुड़की जड़ और आककी जड़—हरेक आध-आध सेर लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ। जब आठ सेर पानी रह जाय, छान कर रख लो।

अव लोह-भस्म आध सेर, घी आध सेर, आकका दूध आध पाव, थूहरका दूध पाव-भर, शुद्ध गूगल आध पाव तथा दो तोले शुद्ध पारा और चार तोले शुद्ध गन्धककी कज्जली, एक तरफ तैयार करके रख दो।

दूसरी तरफ शुद्ध जयपालके बीज, ताम्बेकी भस्म, कंकुष्ठ, चीतेकी जड़, जंगली सूरन, शरपोंखा, ढाकके बीज, क्षीरई, तालमूली, त्रिफला, वायविडङ्ग, तेवड़ी मूल, दन्तीकी जड़, हुड़हुडकी जड़, गुलसकरीकी जड, पुननंवा और हड़जोड—इन सत्रह दवाओंको अढ़ाई-अढ़ाई तोले कुटी-पिसी-छनी तैयार रखो।

बनानेकी तरकीब—उस आठ सेर काढ़ेको क़लईदार बासनमे

डालकर फिर आग पर रखो, और उसमें लोहा भस्मसे लेकर कज्जली तककी सब चीज़ें मिला दो। नीचे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब पक चुके, उसमें जयपालके बीज आदि सत्रह दवाओंका चूर्ण मिला दो और किसी बासनमें रख दो। यही "शोथोदरारि लौह" है।

रोगीकी अवस्था और बलाबल आदिका विचार करके, उपयुक्त अनुपानके साथ, उचित मात्रामें, सेवन करानेसे यह लौह उदर रोग, पाण्डु रोग, शोथ, कामला, हलीमक, बवासीर, भगन्दर और गुल्म रोगको नाश करता है। नामी औषधि है।

पुनर्नवादि क्वाथ।

पुनर्नवाकी जड़, गिलोय, देवदारु, जंगी हरड़ और सोंठ—इन पाँच दवाओंके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे शोथोदर या सूजनवाला रोगी आराम हो जाता है। यह "शार्ङ्गधर" का योग है।

पथ्यादि क्वाथ।

जंगी हरड़ और रक्त रोहिडा—इन दोनोंके काढ़ेमें "पीपर और जवाखारका चूर्ण" मिलाकर सवेरे ही पीनेसे प्लीहोदर, यकृदुदर और गुल्मोदर आदि रोग नाश हो जाते हैं। तिल्ली पर परीक्षित है।

पुनर्नवादि क्वाथ।

पुनर्नवा, दारुहल्दी, कुटकी, परवलके पत्ते, हरड़, नीमकी छाल, मोथा, सोंठ और गिलोय—इन नौ दवाओंके काढ़ेमें "गोमूत्र और शुद्ध गूगल" मिलाकर, नित्य, सवेरे ही, पीनेसे सब तरहकी शरीरकी सूजन, उदर रोग, पाण्डु रोग, शूल रोग और श्वास आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

त्रिवृताद्य घृत।

दूध ८ सेर, घी १ सेर, थूहरका दूध ४ तोले और निशोथका कल्क (सिल पर पिसी लुगदी) २४ तोले—सबको मिलाकर पकाओ।

घी मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस घीसे सब तरहके उदर रोग और गुल्म नाश हो जाते हैं। यह घी दस्त लगाता है।

कुमार्यासव।

सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, लौंग, दालचीनी, तेजपात, इलायचीके बीज, नागकेशर, चीतेकी छाल, पीपरामूल, वायविडंग, गजपीपर, चव्य, हाऊ बेर, धनिया, सुपारी, कुटकी, नागरमोथा, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, मूर्वा, प्रसारिणी, दन्ती, पुहकर-मूल, खिरेंटी, नागबला, कौंचके बीज, गोखरू, सौंफ, हिंगुपत्री, अकरकरा, उटङ्गनके बीज, सफेद पुनर्नवा और सोंठ—इन ३८ दवाओंको अलग-अलग दो-दो तोले पिसी-छनी तैयार रखो।

धायके फूल पिसे-छने ३२ तोले, सोना मक्खीकी भस्म २ तोले, शुद्ध मंडूर या लोहाचूर १०० तोले, शहद १०० तोले और पुराने घी-ग्वारके पट्ठेका रस १६ सेर,—इनको और ऊपरकी ३८ दवाओंके चूर्णोंको एक चिकने बासनमें भर कर एक महीने या १५ दिन तक, मुँह बन्द करके रख दो। इसके बाद काममें लो।

इसमेंसे, बलाबल अनुसार, दो तोले या कम-जियादा नित्य पीनेसे बल-वर्ण और अग्नि बढ़ती है, शरीर पुष्ट होता है, सब तरहके उदर रोग, परिणाम शूल, क्षय, प्रमेह, उदावर्त, मृगी, मूत्रकृच्छ्र, वीर्य-दोष, पथरी, कृमि रोग और रक्तपित्त रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—यह योग "शार्ङ्गधरका" है और बहुत ही अच्छा है। हम गृहस्थोंके लिए एक बहुत ही आसान "कुमार्यासव" उधर और लिखते हैं। इसकी होड़ तो वह कर नहीं सकता, पर तिल्ली आदि पेटके कई रोगोंमें वह भी अच्छा है।

वज्र कल्क।

जङ्गली सूरनका एक तोले कल्क कर लो। इसको "दहीमें मिलाकर" नित्य पानीके साथ खाओ। इससे उदर रोग शान्त हो जाते हैं।

ब्रह्म घृत ।

शिलारस, सोंठ, नाड़ीका साग, कौआटोंटीकी जड़, कटेरी की जड़, पाँचों नमक, हींग और पीपर—सब एक-एक तोला लो। सबको गोमूत्रके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

गायका घी एक सेर, गोमूत्र चार सेर, दूध दो सेर और ऊपरकी लुगदी सबको मिलाकर पकाओ ; जब घी मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इस घीमेसे ६ माशे नित्य खानेसे प्लीहोदर और शोथोदर वग़ैरः सब उदर रोग नाश हो जाते हैं।

शंखद्राव ।

सज्जी, जवाखार, कसीस, सुहागा, शोरा, सेंधानोन, नौसादर और फिटकरी,—ये सब बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और एक हाँडीमें रखकर, नली लगाकर, तेज़ाब खींच लो। इसमेंसे एक बूँद तेजाब दाँत बचाकर खानेसे गुल्म, तिल्ली, आनाह, बवासीर, संग्रहणी, भगन्दर और सब तरहके उदर रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—एक और तरहके शखद्रावकी विधि इसी भागके पृष्ठ ५१७में लिखी है।

कुमार्यासव ।

ग्वारपाठेका रस चार सेर, पुराना गुड़ आध सेर, शुद्ध मंडूर ४ तोले, सुहागा फुलाया हुआ ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जी-खार ४ तोले, कालानोन ४ तोले, संधानोन ४ तोले, साँभरनोन, ४ तोले, समन्दरनोन ४ तोले, बिड़नोन ४ तोले और नौसादर ४ तोले —इन सब चीजोंको एक काँचके बर्तनमें भर कर मुँह बन्द कर दो और आठ दिन तक, नित्य धूपमें रखा करो। इसके बाद सेवन करो।

मात्रा १ या २ तोले। अनुपान—पानी। सवेरे-शाम या भोजनके बाद सेवन करनेसे प्लीहा रोग, यकृत रोग, वायुगोला और पेटका दर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

पेटके रोगों पर हकीमी नुसखे।

(१) सिरसकी छालका काढ़ा पीनेसे सूजन सहित जलन्धर आराम हो जाता है।

नोट—"अकबरनामे"में लिखा है, कि एक क़िलेमें रहनेवालोंने किसी वजहसे पुराना अनाज खाया, इससे उनको पेटके रोग हो गये और सूजन आगई। जिन्होंने "सिरसकी छाल" सेवन की, उन्हें आराम हो गया। इसलिये उस समय सिरसकी छालका दाम सोनेकी बराबर हो गया।

(२) हुक्केका बहुत ही गन्दा पानी पीनेसे इस्तस्का या जलन्धर आराम हो जाता है।

(३) गोबरकी राख १३ माशे हर दिन खानेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(४) गायका गोबर "नोन मिलाकर" पेट पर लगानेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(५) इन्द्रायणकी जड़ औटाकर पीनेसे दस्त होकर मल निकल जाता है।

(६) सवेरे ही साढ़े आठ तोले ऊँटके मूत्रमें ३ माशे "पीली हरड़की छाल" मिलाकर पीनेसे जलन्धरमें बहुत फायदा होता है। भोजन और जल त्याग कर अगर ऊँटका दूध ही पिया जाय, तो क़ाबिल तारीफ फायदा हो। यह अपूर्व्व उपाय है।

नोट—वैद्यकमें भी ऊँटका दूध अच्छा कहा है।

(७) मूलीके पत्तोंका स्वरस पीनेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(८) लाल बकरीके ६ तोले मूत्रमें २० माशे "बालछड़" मिला कर पीनेसे जलन्धरमें अत्यन्त लाभ होता है।

(९) जलन्धरकी शुरुआत या सूडल्कनियाँमें ताजा करेलोंका दो तोले स्वरस जरासा "शहद" मिलाकर पीनेसे दो तीन दस्त होकर मल निकल जाता है।

(१०) कुकरौंधेका रस पहले दिन एक तोले, दूसरे दिन दो तोले, तीसरे दिन तीन तोले, इस तरह दस दिन तक एक-एक तोले रोज बढ़ाकर पीनेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(११) शुद्ध गंधक, शुद्ध पारा, हरड़, बहेड़ा, आमले, सज्जी, जवाखार, कालानोन, लाहौरीनोन, सोंठ, कालीमिर्च और भुना हुआ सुहागा—एक-एक तोले तथा शुद्ध जमालगोटा दो तोले ले लो। पहले गंधक और पारेको खरल करलो, फिर बाक़ी दवाओंको पीस-छानकर इसी पारे और गंधककी कज्जलीमें मिला दो। फिर मसाले को नीबूके, रसकी २१ भावना देकर कालीमिर्च-समान गोलियाँ बनालो। एक-एक गोली नित्य ऊँटके दूधके साथ खानेसे इस्तस्क़ा या जलन्धर नाश हो जाता है।

(१२) सफेद जीरा अध-कुचला ३ भाग और कंघी अधकुचली नौ भाग मिलाकर रखलो। इसमेंसे एक तोले-भर नित्य रातको भिगोदो और सवेरे ही औटाओ, जब आधा पानी रहजाय, छानकर पीलो। इससे जलन्धर रोग जाता रहता है।

(१३) बकरीकी मैंगनी, गायका गोबर और गोखरू—सबको सिरकेमें मिलाकर पेटपर लगानेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(१४) नमक और बालछड—सिरकेमे मिलाकर पेटपर लगानेसे भी जलन्धरमें लाभ होता है।

(१५) मण्डवोका आटा, कचनालके पानीमें ख़मीर करके रोटी पकाओ और नमकके साथ खाओ। पानीके बदले कचनालकी पत्तियोंका औटाया हुआ पानी पीओ; अथवा अर्क़ निकालकर पीओ। मु ह धोने और नहानेके काममें भी इसी पानीको लो। एक हफ्तेमें इसका, नतीजा मालूम होता है। यह नुसखा "मुजर्ब्यात अकबरी"का है।

(१६) कंघीका चूर्ण पहले दिन १ माशे, दूसरे दिन २ माशे और तीसरे दिन ३ माशे—इस तरह चौथे दिनसे तीन माशे नित्य खाओ और मूंगकी खिचडीका भोजन करो। इस नुसख़ेसे जलन्धर आराम हो जायगा।

(१७) दो तोले शहद छटाँक-भर पानीमें मिलाकर नित्य सवेरे ही, कोरे कलेजे पीनेसे वढ़ा हुआ पेट ठीक हो जाता है। यह रोग वच्चोंको वहुत होता है। उन्हें कम करके यही नुसख़ा देना चाहिये।

(१८) मिर्च, पीपर, पीपरामूल, चव्य, शैतरज, अशना, नागरमोथा, वायविडंग, देवदारु, त्रिफला, किस्त-मुरमकी, सौंफ, गजपीपर और इन्द्रजौ चार-चार माशे तथा तुरबुद १ तोले—इनको कूट-छान कर, सब चूर्णके समान "पुराना गुड़" मिला दो और दो-दो माशेकी गोलियाँ वना लो। १५ दिन तक, सवेरे ही, एक-एक गोली खानेसे वच्चा जननेके पीछे जो स्त्रीका पेट वढ़ जाता है ठीक हो जाता है।

नोट—यह गोली खानी चाहिये और "इन्द्रायण" पानीमें पीसकर पेट पर लगानी चाहिये। इन दोनों उपायोंसे सन्तान होनेकी वजहसे वढ़ा हुआ पेट दुरुस्त हो जाता है।

(१९) लाख चार तोले, कासनीके वीज ३ तोले, ख़रवूज़ेके वीज ३ तोले, खीरे-ककड़ीके वीज ३ तोले, रेवन्द ३ तोले, मंजीठ २ तोले, सौंफ २ तोले, मकोय २ तोले, अजमोद २ तोले, वालछड़ २ तोले, तज २ तोले, अजवायन १ तोले और कत्था १ तोले—इन सवको पीस-छानकर पानीके साथ खरल करके टिकियाँ वना लो। इसमेंसे चार-चार माशे टिकिया शर्वत वजूरीके साथ खानेसे इस्तस्का या जलन्धर आराम हो जाता है।

शोथ रोग-वर्णन ।

बाइसवाँ अध्याय

शोथ रोगके निदान-कारण ।

"सुश्रुत-चिकित्सा स्थान"के तेईसवे' अध्यायमें लिखा है, कि बहुत खाकर रास्ता चलनेसे, मिट्टीके पदार्थ, हरे साग और नमक जियादा खानेसे, ज्वर या अतिसार आदि रोगोंसे दुर्बल होने पर अधिक खटाई खा लेनेसे, मिट्टीका पका हुआ ठीकरा खा लेनेसे, तिनके और धूल-रेत खा जानेसे, जलके किनारेके जलजीवोंका मांस खानेसे, अजीर्णमें मैथुन करनेसे, दूध-मछली आदि संयोग-विरुद्ध पदार्थ खानेसे ; हाथी, घोड़े, ऊँट आदिकी सवारी करने या बहुत पैदल चलनेसे—वातादिक दोष क्षुभित हो जाते हैं। वे क्षुभित हुए दोष शरीरकी धातुओंको दूषित करके सारे शरीरमें (या हाथ-पाँव-मुँह आदिमें) सूजन पैदा करते हैं।

"वङ्गसेन"में लिखा है, कि वमन-विरेचन आदिसे, पाण्डु रोगादि * से अथवा व्रत-उपवाससे दुबले या कमज़ोर हुए मनुष्य अगर खारी,

---

* वाग्भट्टमें लिखा है, कि श्वास, खाँसी, अतिसार, बवासीर, उदर रोग, प्रदर रोग, ज्वर, विशूचिका, अलसक, छर्दि, गर्भ, विसर्प और पाण्डुरोगमें मिथ्या

खट्टे, तीक्ष्ण, गरम, भारी पदार्थ, दही, कच्चे पदार्थ, मिट्टी, साग, विरुद्ध पदार्थ या दुष्ट और विष-मिले पदार्थ सेवन करते हैं, तो उनके सूजन आ जाती है। इनके सिवाय बवासीरसे, मिहनत न करनेसे, शोधनके योग्य अशुद्ध शरीरको वमन-विरेचन आदि द्वारा शुद्ध न करनेसे, मर्मस्थानोंमें चोट लगनेसे, असमयमें गर्भ गिरने या कच्चा गर्भ गिरनेसे और वमन-विरेचनादि पञ्च कर्मोंके बेक़ायदे किये जानेसे भी सूजन आ जाती है; यानी इन सब कारणोंसे सूजन आती है।

शोथ रोगोंकी सम्प्राप्ति ।

अपने कारणोंसे कुपित हुई "वायु"—दुष्ट हुए रक्त, पित्त और कफको बाहरकी नसोंमें लाकर—उनकी चालको रोक देती है। उनकी चालके रुकनेसे चमड़े और मांसमें सख्त और ऊँची सूजन पैदा हो जाती है। यह सूजन त्रिदोष-संग्रहसे होती है।

सामान्य लक्षण ।

शरीरका भारीपन, चित्तमें व्याकुलता, ऊची सूजन, दाह, नसोंका पतली होना, रोएं खड़े होना और शरीरके रंगका बदल जाना—ये सामान्य लक्षण हैं।

संख्या-भेद ।

यह शोथ रोग कारण-विशेष और रूप-भेदसे नौ तरहका होता है:—

(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज,

उपचार किये जानेसे दोष कुपित होकर सूजन करते हैं। अगर दोष आमाशयमें होते हैं तो शरीरके ऊर्द्ध भागमें, पक्वाशयमें रहनेसे मध्य भागमें और मलाशयमें रहनेसे नाभिसे नीचेके भागमें तथा सब देहमें स्थित रहनेसे सर्व देहमें फैलनेवाला शोथ करते हैं। खुलासा यह कि, अगर दोष छातीमें होते हैं तो नाभिसे ऊपर, और अगर बस्तीस्थान—पेड़ूमें होते हैं तो नीचेके अगोंमें सूजन करते हैं।

(४) वातपित्तज, (५) वातकफज, (६) पित्तकफज,
(७) सन्निपातज, (८) अभिघातज (६) विषज।

पूर्वरूप।

सूजन पैदा होनेसे पहले नेत्रादिकोंमें सन्ताप या गरमी होती है, नसें तनती हैं और जिस अंगमें सूजन पैदा होनेवाली होती हैं वह अङ्ग भारी हो जाता है।

वातज शोथके लक्षण।

वातज सूजन चंचल होती है—एक जगह स्थिर नहीं रहती, सूजनके ऊपरकी चमड़ी पतली और कठोर होती है, उसका रङ्ग लाल या काला होता है तथा उसमें स्पर्शशक्ति नहीं होती। सूजनमें भिनभिन-भिनभिन तीव्र वेदना होती है। सूजन कभी-कभी बिना कारण अपने आप शान्त हो जाती है; यानी आराम मालूम होता है और कभी बढ़ जाती है एवं रोमाञ्च हो आते हैं। यह सूजन दबानेसे नीचे बैठ जाती है और फिर ऊँची उठ आती है। दिनमें सूजनका ज़ोर रहता है और रातको ज़ोर घट जाता है।

खुलासा—

(१) वातज सूजन एक जगह स्थिर नहीं रहती।
(२) सूजनका चमड़ा पतला और सख्त होता है।
(३) उसमें स्पर्श-शक्ति नहीं होती।
(४) तीव्र वेदना होती है।
(५) सूजन कभी बिना कारण शान्त हो जाती और कभी बढ आती है।
(६) सूजन दबानेसे दब जाती है और फिर उठ आती है।
(७) इस सूजनका दिनमें जोर रहता है और रातको जोर घट जाता है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, वायुकी सूजन लाल या काली होती है एव नरम और चलायमान होती है। उसमें शूल यानी चमक आदि वेदना विशेष होती है।

पित्तज सूजनके लक्षण।

पित्तकी सूजन छूनेमें नर्म, गन्धयुक्त, लाल या पीले रंगकी,

उष्णता सहित, अत्यन्त दाहयुक्त, अतिशय पीड़ा करनेवाली एवं छूनेसे पीड़ा करनेवाली होती है। जब यह पकने लगती है, तब इसमें घोर जलन होती है। इस सूजनमें भ्रम, ज्वर, पसीना, प्यास, मद और दोनों आँखोंमें लाली—ये लक्षण होते हैं।

खुलासा—

(१) पित्तकी सूजन छूनेसे नर्म मालूम होती है।

(२) पित्तकी सूजनमें गन्ध आती है।

(३) सूजनका रङ्ग पीला या लाल होता है।

(४) सूजनमें गरमी होती है।

(५) सूजन घोर दाह और वेदना करके पक जाती है।

(६) इस सूजनके साथ भ्रम, ज्वर, पसीना, प्यास, मत्तता और दोनों नेत्रोंमें ललाई ये लक्षण होते हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, पित्तकी सूजन पीली या लाल तथा जल्दी फैलनेवाली होती है। इसमें जलन और चसनेकीसी वेदना विशेष होती है।

कफज सूजनके लक्षण।

कफज सूजन भारी, एक स्थानमें स्थिर रहनेवाली और पाण्डु-रङ्गकी होती है; बहुत दिनोंमें बढ़ती और बहुत दिनोंमें ही आराम होती है; दबानेसे दब जाती है, लेकिन छोड़ देनेसे फिर कुछ देर तक ऊँची नहीं उठती। रातको बढ़ जाती और दिनमें घट जाती है। इसमें अरुचि, मुँहसे जल गिरना, निद्रा, वमन और मन्दाग्नि—ये लक्षण होते हैं।

खुलासा—

(१) कफज सूजन भारी और स्थिर होती है।

(२) उसका रंग पाण्डु होता है।

(३) यह सूजन देरमें बढ़ती और देरमें आराम होती है।

(४) यह सूजन दबानेसे दबजाती और छोड़ देने पर कुछ देर नहीं उठती

(५) यह सूजन रातको बढ़ जाती है।

(६) इसके साथ अरुचि, मुँहसे जल-स्राव, नींद, वमन और मन्दाग्नि ये उपद्रव होते हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, कफज सूजन कुछ पीली सफेद, चिकनी, कड़ी, शीतल और धीरे-धीरे फैलनेवाली होती है। इसमें खुजली आदिकी वेदना विशेष होती है।

द्वन्द्वज और सन्निपातज सूजनके लक्षण।

जिस सूजनमें दो दोषोंके लक्षण हों, वह द्वन्द्वज सूजन और जिसमें वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके लक्षण हों, वह त्रिदोषज या सन्निपाज सूजन होती है।

अभिघातज सूजनके लक्षण।

लाठी और पत्थर आदिकी चोट लगनेसे, वाण आदिके घाव हो जानेसे, शीतल पवन या समुद्रकी हवा लगनेसे, भिलावेका धूआँ या तेल वग़ैरः लगने या कौंचकी फलीकी रगड़से जो सूजन पैदा होती है, उसे "अभिघातज सूजन" कहते हैं। ऐसी सूजन चारों तरफ फैलती है। इसमें दाह बहुत होता है। इसका रंग लाल होता है और इसमें विशेष करके पित्तके लक्षण मिलते हैं।

विषज सूजनके लक्षण।

शरीरके ऊपर विषैले जीवोंके फिरनेसे अथवा उनके पेशाबसे; जो विषैले नहीं हैं जैसे मनुष्य उनके दाढ़, दाँत या नाखूनोंके लगनेसे, विषैले जीवोंके मल-मूत्र और वीर्यसे सने हुए मलिन कपड़ोंके छूने या शरीरके लगनेसे, विषैले वृक्षकी हवाके लगनेसे या जिसमें संयोजक विषका योग हुआ हो उस चीज़के शरीरके लगनेसे जो सूजन होती है, उसे विषज सूजन कहते हैं। वह सूजन कोमल, चंचल,—एक जगह न रहनेवाली, भीतरको जानेवाली या लटकनेवाली, तत्काल उत्पन्न होनेवाली, जलन और अधिक पीड़ा करनेवाली होती है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, यह सूजन कोमल, शीघ्र ही उठनेवाली, जब तक विषका प्रभाव रहे तब तक रहनेवाली और चलायमान होती है। इसमें जलन बहुत होती है और यह पक भी जाती है।

किस स्थानमें रहा हुआ दोष कहाँ सूजन करता है ?

आमाशयमें रहने वाले दोष हृदयसे ऊपरके हिस्सेमें सूजन करते हैं; पित्ताशयमें रहने वाले दोष हृदय और पक्वाशयके बीचमें सूजन करते हैं; मलाशयमें रहने वाले दोष पक्वाशयके नीचेके भागमें सूजन करते हैं। सारे शरीरमें फैले हुए दोष सारे शरीरमें सूजन करते हैं।

सूजनके उपद्रव ।

वमन, श्वास, अरुचि, प्यास, ज्वर, अतिसार, अत्यन्त पाक और अत्यन्त निर्बलता—ये सूजनके उपद्रव हैं।

सूजनके कृच्छ्रादि भेद ।

जो सूजन शरीरके बीचके भाग—हृदय और पक्वाशयके मध्यमें हुई हो अथवा जो सारे शरीरमें उत्पन्न हुई हो (सान्निपातिक हो), वह कष्टसाध्य है। जो सूजन पुरुषके नीचेके भागमें पैदा होकर ऊपरकी तरफ चढ़े, वह अत्यन्त कष्टसाध्य है।

असाध्य लक्षण ।

जो सूजन अर्द्धनारीश्वरके आकारकी आधे शरीरमें * पैदा होती है, वह सूजन मनुष्यको मार डालती है।

पुरुषके पैदा हुई सूजन ज्यों-ज्यों ऊपरको चढ़ती है, त्यों त्यों मृत्युको खोजकर लाती है, यानी पुरुषके पैदा हुई सूजन अगर पाँवोंसे ऊपरकी ओर चढ़ती है, तो अवश्य मृत्यु होती है।

---

* दाहने-बायें या नीचे-ऊपरके विभाग-अनुसार, जिस-किसी आधे अंगमें पैदा हो।

स्त्रीके हुई सूजन अगर मुँहसे नीचेकी तरफ जावे, तो वह स्त्रीको अवश्य मार डालती है।

पुरुषके पांवोंमें हुई सूजन अगर मुख पर जावे और वह अतीसार, संग्रहणी एवं बवासीर आदि अन्य रोगोंके उपद्रव-स्वरूप न हुई हो, यानी अपने ही कारणोंसे पैदा हुई हो, तो पुरुषको मार डालती है।

इसी तरह स्त्रीके मुख पर हुई सूजन अगर पांवों पर जावे और वह अतीसार, ग्रहणी एवं बवासीर आदि अन्य रोगोंके उपद्रव रूप न हुई हो; यानी अपने कारणोंसे हुई हो, तो वह स्त्रीको मार डालती है।

नोट—जो सूजन नीचेके अंगोंसे पैदा होकर क्रमशः ऊपरकी तरफ फैलती जाय, वह शीघ्र ही प्राण नाश करती है। इसमें इस बातका ध्यान रखना चाहिये, कि ऐसी सूजन अगर अतीसार, संग्रहणी, बवासीर या पीलिया आदि रोगोंके उपद्रव रूप न हुई हो—अपने ही कारणोंसे पैदा हुई हो, तो मनुष्यको मारती है, पर अगर अतिसार, पाण्डु या अर्श रोग आदिके उपद्रव रूप पहले पैरोंमें होकर क्रमशः ऊपर को तरफ जावे, तो वह मारात्मक या प्राणनाशक नहीं।

जो सूजन मूत्राशयमें पैदा होती है, वह स्त्री और पुरुष दोनोंको मार डालती है, इसमें जरा भी संशय नहीं।

मूत्राशयमें पैदा हुई सूजन अन्य रोगोंके उपद्रव रूप न हुई हो यानी अपने ही कारणोंसे हुई हो, तो वह स्त्री और पुरुष दोनोंको मार डालती है।

जो सूजन अपने निदानसे यानी अपनेही कारणोंसे गुह्यस्थानमें अथवा वस्ती-स्थानमें पैदा होकर सारे शरीरमें फैल जाती है, वह स्त्री और पुरुष दोनोंको मार डालती है।

मध्य देह यानी शरीरके बीचके भाग, हृदय और गुदा प्रभृतिकी सूजन और सारे शरीरकी सूजन असाध्य होती है।

स्त्री या पुरुष इनमेंसे किसीके भी अगर पहले गुदामें सूजन पैदा होती है, तो वह प्राण नाश करती है।

कूख, पेट, गले और मर्मस्थानमें पैदा हुई सूजन असाध्य होती है।

जो सूजन बहुत ही मोटी और कठोर होती है अथवा जिस सूजनके साथ श्वास, प्यास, वमि, कमजोरी, ज्वर, हिचकी, अतिसार, खाँसी और अरुचि आदि उपद्रव होते हैं, वह असाध्य होती है।

बालक, बूढ़े और कमजोरकी सूजन असाध्य होती है।

"हारीत संहिता"मे लिखा है—दो तरहकी सूजन होती हैं—(१) शरीरके मध्य भागमें, और (२) सारे शरीरमें। इनमेंसे सारे शरीरकी सूजन, बूढ़े और बालकको सूजन, क्षत और क्षय रोगसे पैदा हुई सूजन तथा छर्दि और अतिसार-युक्त सूजन असाध्य होती हैं। श्रम और ज्वरसे क्षीण हुए शरीरमे पैदा हुई सूजन भी असाध्य होती है।

नोट—"सूजन-चिकित्सा"में, साध्यासाध्यका बड़ा झगड़ा है। जरासी भूलसे ग़लती हो जाती है, अत: खूब विचार कर साध्यासाध्यका निर्णय करना चाहिये। सूजनका आरम्भ कहाँसे हुआ है; यानी पहले सूजन कहाँ आई, सूजन किसी रोगके साथ उपद्रव स्वरूप है या अकेली पैदा हुई है, इन बातोंको विचार कर साध्यासाध्यका निश्चय करना चाहिये।

सूजन-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर किसी रोग-विशेषके साथ सूजन हो, तो उस रोगकी दवाओंके साथ सूजन नाश करनेवाली दवा भी देनी चाहिये।

(२) इस रोगमें मल मूत्र साफ रखनेकी विशेष चेष्टा रखनी चाहिये।

(३) पथ्यापथ्य तो हम अन्यत्र लिखेंगे, पर शोथ रोगमें जो आहार-विहार खास तौरसे अपथ्य या हानिकर हैं, उनसे रोगीको सावधान कर देना वैद्यको प्रधान कर्त्तव्य है। "सुश्रुतके चिकित्सा स्थान"में खटाई,नमक (खारी नोन), दही, गुड़, (नया गुड़), चरबी, दूध, तेल, घी, पिट्ठीके पदार्थ और भारी पदाथ शोथवालेको मना लिखे हैं।

अन्य ग्रन्थोंमें हवा खाना, बहुत जल पीना, मल मूत्रादि वेग रोकना, विरुद्ध पदार्थ खाना, मिट्टी खाना, सूखे साग, नया अन्न, खिचड़ी, बिना पानी मिली शराब, सूखा मांस, दिनमें सोना और सात रात तक स्त्री-प्रसंग,—ये सब अपथ्य लिखे हैं।

(४) शोथ रोगमें रोगीके बलाबल, समय और दोषोंको विचार कर, निदान और दोषोंके विपरीत चिकित्सा करनी चाहिये। जैसे आम संयुक्त शोथमें लंघन और पाचन प्रयोग करने चाहिएँ। अगर दोषोंकी उल्वणता हो, तो संशोधन करना चाहिए। शिरोगत शोथ हो, तो शिरोविरेचन करना चाहिये। रोगी शोधन योग्य हो, तो संशोधक औषधियोंके द्वारा संशोधन करना चाहिये। ऊर्ध्वगत शोथमें ऊर्ध्वशोधन और अधोगतमें अधोशोधन करना चाहिये। स्नेह-जनित शोथमें "रूखी चिकित्सा"; और रूखे पदार्थ सेवन करनेसे हुई सूजनमें "चिकनी चिकित्सा" करनी चाहिये।

(५) वातज शोथमें मल बद्ध हो—दस्त न होता हो, तो निरूहण वस्ती करनी चाहिये। वातपित्तज शोथमें तिक्त औषधियोंके साथ घी पकाकर सेवन कराना चाहिये। अगर शोथ रोगमें मूर्च्छा, अत्यन्त दाह और प्यास हो, तो दूध पिलाना चाहिये। अगर शोधन कराना हो, तो "गोमूत्र" पिलाकर शोधन कराना चाहिये। कफज सूजनमें क्षार, कटु और गरम पदार्थोंके साथ गोमूत्र, दूध और आसव आदि सेवन कराने चाहियें।

(६) वातज सूजनमें १ महीने तक निशोथ सेवन करनी चाहिये। अगर मलबन्ध हो तो "रेंडीका तेल" पीना चाहिये। औषधियोंके द्वारा कल्पित करके स्वेद कर्म, मालिश, सेक और लेप करने चाहियें। दूधके साथ भात और मांस-रस सेवन करना चाहिये।

(७) पित्तज सूजनमें अगर प्यास, मोह और पैरोंमें जलन हो; तो पाँवों पर शीतल पदार्थोंका लेप करना चाहिये। इस शोथमें

"न्यग्रोधादिगणकी औषधियों"के द्वारा घी पकाकर सेवन करना चाहिये। दूध पीने वालेको गिलोय और त्रिफलेका काढ़ा पीना चाहिये।

(८) कफज शोथमें "आरग्वधादि औषधियों"के द्वारा तेल पकाकर पीना चाहिये। अगर मन्दाग्नि, कोष्ठवद्ध—दस्तकब्ज़ और स्रोतोंका अवरोध हो ; तो क्षार, मूत्र, आसव, अरिष्ठ, चूर्ण और तक्र—माठा आदि पदार्थ प्रयोग करने चाहियें।

(६) द्वन्द्वज सूजनमें मिली हुई और त्रिदोषजमें त्रिदोष-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। विष-जनित सूजनमें विष-नाशक इलाज करना चाहिये।

शोथ या सूजन रोगकी विशेष चिकित्सा।

वातज सूजन नाशक नुसखे

(१) सोंठ, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़ और वृहत्पंचमूल—इनका काढ़ा पीने और भोजनमें भी इसी काढ़ेका व्यवहार करनेसे वातज शोथ शान्त हो जाता है।

(२) अगर वातज शोथमें कोष्ठवद्ध हो—दस्त न होता हो, तो गरम दूधमें "रेंडीका तेल" मिलाकर पीना चाहिये।

(३) दशमूलका काढ़ा वातज शोथमें विशेष उपकार करता है। हमारी रायमें इस सूजनकी यह लाजवाब दवा है। परीक्षित है।

(४) वातज सूजनमें १५ दिन तक निशोथका काढा पीना चाहिये।

नोट—वातज सूजनमें मालिश और पसीना लेना हित है।

पित्तज सूजन नाशक नुसखे

(५) एक तोला त्रिफलेका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" सेवन करनेसे पित्तज शोथ नाश होता है।

(६) डेढ़ माशे निशोथका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" सेवन करनेसे पित्तज सूजन नाश हो जाती है।

(७) निशोथकी जड़, त्रिफला और गिलोयका काढ़ा पीनेसे पित्तज सूजन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८) पित्तज शोथमें, दूध पीनेवालेको गिलोय और त्रिफलेका काढ़ा पीना लाभदायक है।

(९) परवलके पत्ते, त्रिफला, नीमकी छाल और दारुहल्दीके काढ़ेमें "डेढ़ माशे शुद्ध गूगल" मिलाकर पीनेसे प्यास और ज्वर समेत सूजन नाश हो जाती है। इस काढ़ेसे पित्तज और कफज दोनों सूजन नाश हो जाती हैं।

कफज सूजन नाशक नुसखे

(१०) पीपर, मिश्री, पुरानी खल, सहँजनेकी छाल और अलसी—एकत्र पीसकर लेप करनेसे कफकी सूजन आराम हो जाती है।

(११) कुल्थी और सोंठको "जल या गोमूत्रमें" पीसकर सींचनेसे कफकी सूजन आराम हो जाती है।

(१२) शिवलिंगी और अगरका लेप करनेसे कफकी सूजन उतर जाती है।

(१३) मोरके मांसरसको "सरसोंके तेलमें" मिलाकर पीनेसे कमलपत्रके समान उठी हुई सूजन भी नाश हो जाती है।

(१४) पुनर्नवा, सोंठ, निशोथ, गिलोय, अमलताशका गूदा, हरड़ और देवदारु—इन सबका कुल एक तोले कल्क (सिलपर पिसी लुगदी) "गोमूत्रके साथ" पीनेसे कफकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—इन्हीं दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे भी लाभ होता है।

(१५) त्रिकुटा, निशोथ, कूट और शुद्ध लोह-चून—इनको कूट-पीसकर त्रिफलेके काढेके साथ पीनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है।

(१६) हरड़का चूर्ण "गोमूत्रके साथ" पीनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है।

(१७) वायविडंग, अतीस, देवदारु, सौंठ, इन्द्रजौ, वच और चीता—इनको एकत्र पीसकर, इसमें से एक तोले चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे कफज सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) थूहरके दूधमें भावना दी हुई पीपर सेवन करनेसे कफकी सूजन नाश हो जाती है।

(१९) पुनर्नवा, सोंठ, निशोथकी जड, गिलोय, वड़ी हरड और देवदारुके काढेमें "गोमूत्र और दो माशे शुद्ध गूगल" मिलाकर पीनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

पुनर्नवादि लेह

(२०) पुनर्नवा, गिलोय, देवदारु और दशमूल—इनको आध-आध सेर लेकर कुचल लो और सोलह सेर जलमें मिलाकर औटाओ; जव चार सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

अव ऊपरका चार सेर काढ़ा, अदरखका स्वरस एक सेर और पुराना गुड़ पाँच सेर—सवको मिलाकर पकाओ; जव पक कर अव-लेहके समान हो जाय; उसमें त्रिकुटा, चव्य, इलायची, दालचीनी और तेजपातका चूर्ण एक-एक तोले मिला दो और शीतल करो। शीतल होने पर, उसमें १६ तोले "शहद" मिला दो। यह "पुनर्नवादि लेह" है। इसके सेवन करनेसे कफज शोथ, श्वास, खाँसी और अरुचिका नाश होकर वल, पुष्टि और जठराग्नि वढ़ती है।

त्रिदोषजन्य सूजन नाशक नुसखे।

(२१) पीपर, जीरा, गजपीपर, कटेरी, सोंठ, चीता, हल्दी,

पीपरामूल, पाढ़ और नागरमोथा,—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे तीन या चार माशे चूर्ण निवाये जलके साथ खानेसे त्रिदोषज और बहुत पुरानी सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) चिरायता और सोंठको सिल पर पानीके साथ पीसकर, गरम जलके साथ खानेसे त्रिदोषज सूजन आराम हो जाती है।

(२३) अदरख और सोंठका रस पीनेसे और पच जाने पर दूधके साथ भोजन करनेसे त्रिदोषज सूजन आराम हो जाती है।

(२४) शुद्ध शिलाजीत १ माशेको "त्रिफलेके काढ़ेके साथ" सेवन करनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई त्रिदोषज सूजन नाश हो जाती है।

(२५) अगर शरीरमें भारीपन हो और मल पतला आता हो—दस्त होते हों ; तो त्रिकुटा, कालानोन और शहद—इनको मिलाकर सेवन करो। अगर मल रुका हो—दस्त न होता हो, तो इन्हीं दवाओंको दूध या गरम रसोंके साथ सेवन करो और पहले "रेंडीका तेल" पीओ।

(२६) बेलके पत्तोंका रस निकाल कर और कपड़ेमें छानकर दो तोले नित्य पीनेसे त्रिदोषज सूजन नाश हो जाती है। यह नुसख़ा विडभंग, कामला और बवासीरमें भी हितकारी है। परीक्षित है।

(२७) बेलके पत्तोंके कपड़ेमें छाने हुए रसमें "सोंठ, कालीमिर्च और पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे सन्निपातज सूजन नष्ट हो जाती है।

(२८) गजपीपर, हल्दी, पाठा, कटेरी, सोंठ, नागरमोथा, त्रिकुटा, ज़ीरा, चीता और कुटकी—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके खानेसे त्रिदोष-जनित सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२९) सहँजनेकी छाल, पीपर, मोम, खली और अलसी—इनको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(३०) हल्दी, दारूहल्दी, सफेद चन्दन, लालचन्दन, लोध, पुनर्नवा, सुगन्धवाला, रसौत, मरोड़फली, छोटी हरड़, गेरू और पद्माख—इन सबका लेप त्रिदोषज सूजनमें हितकारी है। परीक्षित है।

आगन्तुक सूजन नाशक नुसखे।

(३१) तिल और काली मिट्टीको एकत्र पीसकर लेप करनेसे भिलावेकी सूजन आराम हो जाती है।

नोट—आगन्तुक सूजनमें शीतल सेक और लेप आदि प्रयोग करने चाहियें।

(३२) भैंसका लूनी घी लगानेसे भिलावेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३३) तिलोंको "दूधमें पीसकर" लेप करनेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(३४) मुलेठी, दूध और तिलोंको एकत्र पीसकर और "नौनी घीमें मिलाकर" लेप करनेसे भिलावेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३५) अर्जुनके पत्तोंको "दूधमें पीसकर" लेप करनेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(३६) तिलोंको "दूधमें पीसकर और नौनी घीमें मिलाकर" लगानेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।
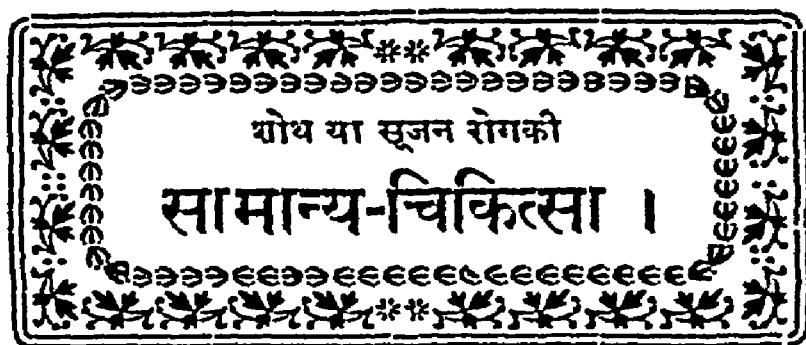
(३७) कालानोन और तिलके पेड़के नीचेकी मिट्टी—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बहुत पुरानी भिलावेकी सूजन भी जाती रहती है।

(३८) शालके पत्तोंका चूर्ण "पानीके साथ" पीनेसे भिलावेकी सूजन नाश हो जाती है।

(६) चाँवलके पत्तोंका लेप भी भिलावेकी सूजनको नाश करता है।

विषज सूजन नाशक नुसखे

विषसे हुई सूजन विष-नाशक उपाय करनेसे जाती है। स्थावर और जङ्गम सब तरहके विषोंकी चिकित्सा पाँचवें भागमें विस्तारसे लिखी है, अतः यहाँ लिखना व्यर्थ है।

(१) भैंसका मक्खन और भैंसका दूध—इनमें "तिल" पीसकर लेप करनेसे सूजन दूर हो जाती है।

(२) हरड़, हल्दी, भारंगी, गिलोय, चीता दारुहल्दी, पुनर्नवा, देवदारू और सोंठ—इनके काढ़ेको "पथ्यादि क्वाथ" कहते हैं। इस काढ़ेके पीनेसे पेटमें, हाथोंमे, पाँवोंमें और मुँहमें हुई सूजन तत्काल ज़बर्दस्ती आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—बंगसेनमें भी यह काढ़ा लिखा है, पर उसमें "हल्दी" नहीं है। इसमें ६ चीजें हैं और उसमें आठ हैं। "हल्दी"का होना जरूरी है।

(३) पुनर्नवा, मूली, सोंठ, देवदारु, गिलोय और चीतेकी जड़—इन औषधियोंके द्वारा रस, यवागू, दूध और यूष पकाकर खिलाने-पिलानेसे शोथ या सूजनमें बहुत लाभ होता है।

(४) सफेद पुनर्नवा, देवदारू और सोंठ—इनके काढ़ेके साथ पकाया हुआ दूध सूजनमें हितकारी है।

(५) दन्ती, निशोथ, सोंठ, मिर्च, पीपर और चीता,—इनके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "दूध" सूजनमें हितकारी है।

(६) हरड़, बहेड़ा और आमला—इनको "गोमूत्रमें मिलाकर" पीनेसे वात और कफ-सम्बन्धी फोतोंकी सूजन नाश हो जाती है।

(७) आकके पत्ते, पुनर्नवा और नीमकी छाल—इनका काढ़ा सूजन पर ढालने या सींचनेसे सूजन उतर जाती है। परीक्षित है।

(८) गोमूत्रको ज़रा गरम करके सूजन पर सींचनेसे सूजन उतर जाती है। परीक्षित है।

नोट—पुराने जौ और चाँवलोंका भोजन सूजन वालेको पथ्य है।

(९) पुनर्नवा, देवदारू, सोंठ, सहंजना और सरसों—इनको खट्टे रसमें पीस कर और ज़रा गरम करके सूजन पर लेप करनेसे सब तरहकी सूजन उतर जाती है।

(१०) गुड़ और अदरख ; गुड़ और सोंठ , गुड और हरड़ , गुड़ और निशोथ अथवा गुड़ और पीपर—इनमेंसे कोई एक नुसख़ा नित्य एक-एक तोला बढ़ाकर, बारह तोले तक, एक महीना या पन्द्रह दिन सेवन करनेसे सूजन, प्रतिश्याय, गलेके रोग, मुंहके रोग, श्वास, खाँसी, अरुचि, पीनस, जीर्ण ज्वर, बवासीर, संग्रहणी तथा वात और कफ-सम्बन्धी अन्य रोग भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) सोंठ और गुड़ बराबर-बराबर मिलाकर खाने और ऊपरसे "सफेद पुनर्नवेका स्वरस" पीनेसे सूजन उसी तरह नाश हो जाती हैं ; जिस तरह हवासे बादलोंका समूह नष्ट हो जाता है। एक दो दिनमें कुछ नहीं हो सकता, लगातार कुछ दिन तक इस नुसख़ेको सेवन करनेसे अवश्य लाभ होता है।

(१२) सोंठ और पीपरका चूर्ण "गुड़मे मिलाकर" खानेसे सूजन, आमाजीर्ण और शूल रोग नाश हो जाते और मूत्राशय साफ हो जाता है।

(१३) अरण्डकी जड़, करंज, आककी जड़, पुनर्नवा और नीमकी छालका काढ़ा सुहाता-सुहाता सूजन पर सींचनेसे सर्व्वांग शोथ यानी सारे शरीरकी सूजन नाश हो जाती है।

(१४) पुनर्नवा, देवदारू, सोंठ सरसों और सहंजनेकी छाल—इनको एकत्र "काँजीमें" पीस कर लेप करनेसे सब तरहकी सूजन दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(१५) बेलकी जड, त्रिकुटा, पीपर और चीता—इनको समान

समान लेकर और "दूधमें औटा कर" पीनेसे सब तरहकी सूजन दूर हो जाती है।

(१६) मूली और सोंठका यूष, चीता और पुनर्नवेका साग तथा मानकन्दकी यवागू सब तरहकी सूजनको नाश करते हैं।

(१७) बहेड़ेके फलोंकी मींगी पीसकर लेप करनेसे सूजनकी दाह और पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) मुलेठी, नागरमोथा, कैथके पत्ते और चन्दन—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे सूजन और सूजनकी फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं।

(१९) रास्ना, बांसा, आकको जड, त्रिफला, वायविड़ंग, सहँजनेकी छाल, आक, व्याघ्रनख, मूर्वा, सर्ज्ज कुटकी, मकोय, कटाई, पीपर, पुनर्नवा, सोंठ और चीता—इनको एकत्र "गोमूत्रमें पीस कर" उबटना करनेसे अथवा गोमूत्रमें पीस-घोल कर सींचनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती है।

(२०) त्रिकुटा, शुद्ध लोहचून, जवाखार और त्रिफला—इनका चूर्ण खानेसे सूजन नाश हो जाती है।

(२१) कुटकी, शुद्ध लोह चूर्ण, त्रिकुटा और निशोथ—इनको पीस-छान कर खानेसे सब तरहकी सूजन आराम हो जाती है।

(२२) ६ माशे शुद्ध गूगल को "गोमूत्रके साथ" सेवन करनेसे अथवा दूधके साथ पीपर सेवन करनेसे अथवा गुड़के साथ "हरड़ या सोंठ" सेवन करनेसे सब तरहकी सूजन आराम हो जाती हैं।

(२३) देवदारू, शुद्ध गूगल और सोंठको समान-समान लेकर "गोमूत्रमें" सिल पर पीसकर खानेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(२४) पुनर्नवा और अदरख—इनको समान-समान लेकर और "गोमूत्रके साथ" पीसकर खानेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(२५) केवल "गोमूत्र" पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(२६) पुराना मानकन्द लेकर पीस लो। फिर उसमें दूने चाँवल मिलाकर, उसे दूध और पानीमें डालकर पकाओ। इस खीरके खानेसे वातोदर, शोथ, संग्रहणी, पाण्डु रोग और विशेष कर सब तरहकी सूजन नष्ट हो जाती हैं।

(२७) वज्रकन्दको पीसकर और दूधमें पकाकर खीर बनाओ। इस खीरको "कोशाम्रके तेलमें" मिलाकर मालिश करनेसे बहुत दिनोंकी पुरानी अत्यन्त दुष्ट सूजन भी नाश हो जाती है।

(२८) अदरखको "गुड़में" मिलाकर और नित्य दो तोले बढ़ाकर सेवन करो। इस तरह २० तोले तक बढ़ाओ—आगे नहीं। इसके ऊपर मूंगका यूष, दूध और मांसरस खाओ। इस उपायसे सूजन, गुल्म, उदर रोग, खाँसी, श्वास, अरुचि, पीनस, पाण्डु रोग, बवासीर और हृदय रोग आराम हो जाते हैं।

(२९) अदरखके स्वरसमें "पुराना गुड़" मिलाकर पीने और ऊपरसे बकरीके दूधका भोजन करनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती है।

(३०) चिरायता और सोंठको पानीके साथ सिलपर पीसकर खाने और ऊपरसे "पुनर्नवेका काढ़ा" पीनेसे सर्वांगगत शोथ यानी सारे शरीरमें फैली हुई सूजन नाश हो जाती है।

(३१) सहुड़के पत्तोंका रस मालिश करनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(३२) कालीमिर्चके चूर्णके साथ "बेलके पत्तोंका रस, नीमके पत्तोंका रस और सफेद पुनर्नवाका रस" सेवन करनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(३३) सहँजनेकी छाल, करञ्ज, आक, दारुहल्दी और अमलताशकी जड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और "गोमूत्रमें" पीसकर लेप करनेसे सूजन नष्ट हो जाती है।

(३४) मोर या कबूतरके मांसका शोरवा "सरसोंके तेलमें" मिलाकर पीनेसे असाध्य सूजन भी नाश हो जाती है।

(३५) सफेद पुनर्नवेका स्वरस १ तोले रोज़ पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(३६) विष्णुकान्ताका स्वरस १ तोला रोज़ पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(३७) पुराने मानकन्दके चूर्णको "दूधमें पकाकर" खानेसे सब तरहकी सूजन, श्वास, खाँसी, ज़ुकाम, पीड़ा, आम, विबन्ध, मन्दाग्नि, अफारा, गुल्म, आनाह, उदावर्त और उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(३८) शोथ रोगमें पहले जुलाब देना चाहिये। इसके बाद "सोंठका चूर्ण" दूधके साथ सेवन करना चाहिये अथवा "गिलोयका चूर्ण" दूधके साथ खाना चाहिये। साथ ही दही और सेंधानोन मिलाकर लेप करना चाहिये अथवा आकके दूधका लेप करना चाहिये।

(३९) "चक्रदत्त" महोदय कहते हैं, कि असगन्धको "गोमूत्रके साथ पीस कर" लेप करनेसे सूजन रोग आराम हो जाता है।

(४०) शोथ रोगमें जब तक नमक और जल त्याग किये जावें, तब तक, "मुण्डीके पत्तोंका साग" खाना विशेष उपकारी है।

(४१) गोमूत्रकी भावना दिया हुआ "शुद्ध मण्डूर" शहदमें चाटनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(४२) सफेद फूलके पुनर्नवाका पञ्चाङ्ग आध सेर लेकर खूब कूट लो और मिट्टीके बर्तनमें डालकर, ऊपरसे चार सेर पानी मिला-कर पकाओ। जब एक सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो और दूसरे बासनमें रख दो। फिर उसमें १ सेर मिश्री और १ छटाँक शोरा पीसकर मिला दो। जब मिश्री और शोरा गल जायें, तब इसे फिर कपड़ेमें छानकर एक बोतलमें भर दो और काग लगा

दो। इसमेंसे सवेरे-शाम दो-दो तोले चाटनेसे ज्वर सहित शोथ और बिना ज्वरका शोथ निश्चयही आराम हो जाता है। जिस शोथ रोगीको पेशाब कम होता है, उसके लिए यह दवा ख़ास तौरसे उत्तम है। इतना ही नहीं और-और शोथोंमें भी यह दवा तत्काल फल दिखाती है। परीक्षित है।

सूजन रोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

गुड़ादि चूर्ण।

१२ तोले गुड़, १२ तोले सोंठ, १२ तोले पीपर, ४ तोले शुद्ध मण्डूर भस्म और चार तोले तिल—इन सबको पीस-छानकर रखलो। इस चूर्णको उपयुक्त मात्रामें सेवन करनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—वङ्गसेनके इसी नुसख़ेमें "तिल" नहीं है।

पुनर्नवाद्य चूर्ण।

पुननवा, दारुहल्दी, गिलोय, पाढ़, सोंठ, गोखरू, हल्दी, दारुहल्दी, कटेरी, कटाई, पीपर, चीता और अतीस—इन सबको समान भाग लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "गोमूत्रके साथ" पीनेसे अनेक तरहकी सूजन, सारे शरीरमें फैलने वाली सूजन, आठों तरहके उदर रोग और अत्यन्त बढ़े हुए व्रण नाश हो जाते हैं।

मानक घृत।

मानकन्दके काढ़ेमें मानकन्दका ही कल्क डाल कर एक सेर घी पका लो। इस घीके पीनेसे एक दोषज, दो दोषज और तीन दोषज सूजन नाश हो जाती है।

नोट—घीसे चौथाई कल्क और चौगुना काढ़ा तथा घीको मिलाकर पकालो।

शुष्क मूलक तेल।

सूखी मूली, पुनर्नवा, देवदारु, रास्ना और सोंठ—इन पाँचों दवाओंके कल्क द्वारा तेल पका लो। इस तेलके मलनेसे शूल समेत सूजन नाश हो जाती है।

नोट—इन पाँचोंको एक-एक छटाँक लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर इस कल्कसे चौगुना सवा सेर तेल और पाँच सेर पानी लेकर तेल पका लो। इस तेलको उस शोथमें जिसमें ज्वर न हो यानी खाली शोथ हो मालिश करानेसे अवश्य लाभ होता है। इसके साथ खानेकी दवामें ७७० सफेका "चित्रकाद्यघृत" देना चाहिये। ७७१ सफेका पुनर्नवाद्य तेल भी बिना ज्वरकी सूजनमें अच्छा काम देता है।

पुनर्नवाष्टक क्वाथ।

सफेद फूलका ताज़ा-हरा पुनर्नवा, नीमकी हरी छाल, परवलके हरे पत्ते, सोंठ, कुटकी, हरी गिलोय, देवदारु और बड़ी हरड़—इन आठो दवाओंको तीन-तीन माशे लेकर, सोलह तोले जलमें पकाओ, जब चार तोले पानी रह जाय, मल कर छान लो। शीतल होने पर, इसमें ६ माशे "शहद" मिलाकर हर दिन सवेरे पीओ।

यह काढ़ा हर तरहकी सूजनकी रामवाण दवा है। जब ज्वरमें वारम्वार कुनैन या और-और डाकृरी या देशी तेज और विष-घटित दवाएँ सेवन करनेसे अथवा आहार-विहारमें गड़बड़ होनेसे रोगीके पेट और हाथ-पाँव आदि अंगोंमे सूजन आ जाती है और उसके साथ ज्वर जड़ पकड़ लेता है, तब यह "पुनर्नवाष्टक क्वाथ" धन्वन्तरिके समान काम करता है। अगर उस समय रोगी इसको बाक़ायदे नित्य पीवे, स्नानादि अपथ्य आहार-विहारोंको छोड़ दे और बहुत ही हल्का पथ्य भोजन करे, तो निश्चय ही आराम हो जावे।

यह काढ़ा दो-तीन दिन तक पीनेसे कठिन मलको नर्म करके

पेटसे निकाल देता है—दस्त खुलासा लाता है। इससे ज्वर कम होने लगता और भूख लगने लगती है। यह काढ़ा पुराने शोथ ज्वर या सूजन-समेत ज्वरकी तो लाजवाब दवा है ही—पर इसके सिवा यह विषम ज्वरों और उन ज्वरोंमें भी जिनमें रोगीकी तिल्ली और जिगर अर्थात् स्प्लीन और लिवर एक-दमसे ख़राब होकर सारा शरीर सूजनसे भर जाता है—खूब चमत्कार दिखाता है।

इनके भी सिवा, जिस शोथ या सूजनका कारण मालूम नही होता, जिस शोथमें ज्वर भी नहीं होता और प्लीहा एवं यकृत-सम्बन्धी शिकायतें भी समझमें नहीं आतीं—उनमें भी यह अच्छा काम करता है। यहाँ तक कि, गर्भवती और प्रसूता स्त्रियोंके शोथमें भी यह अच्छा चमत्कार दिखाता है। छोटे-छोटे बालकोंके यकृत-शोथमें भी इसका अच्छा फल हो सकता है। यह काढ़ा ज्वर-सहित और बिना ज्वर सब तरहकी सूजनों पर तीरे हदफ़का काम करता है। परीक्षित है।

यह काढ़ा सर्व्वांग शोथ, उदर रोग, पसलीका दर्द, श्वास और पाण्डु रोगको नाश करता है।

सूचना—कोई-कोई इस काढ़ेमें "देवदारू"की जगह "दारूहल्दी" लेते हैं।

नोट—जो सूजन दिनमें बढ़ती और रातको कम हो जाती है, जो उंगली गाड़नेसे नीचेको बैठ जाती और अँगुलीके हटाते ही झटसे उठ आती है, जिसमें हृदयकी धड़कन बहुत जल्दी-जल्दी होती और शरीर एकदमसे रूखा हो जाता है, वह "वातज सूजन" कहलाती है। उस सूजनमें "दशमूलको काढ़ा" देना चाहिये। "दशमूलका काढ़ा" ही वातज सूजनकी सर्व्वश्रेष्ठ दवा है। परीक्षित है।

पुनर्नवा स्वरस।

सफेद पुनर्नवेका स्वरस दो तोले और शहद ६ माशे—दोनोंको मिलाकर, दिनमें दो तीन बार पीनेसे शोथ या सूजन नाश हो जाती है। अगर इस स्वरसको किसी ज्वर-नाशक दवाके साथ "अनुपान-रूपमें" देते हैं, तो विशेष लाभ होता है। परीक्षित है।

पथ्यादि क्वाथ।

हरड़, हल्दी, भारंगी, गिलोय, चीतेकी जड़, दारुहल्दी, पुनर्नवा, देवदारु और सोंठ—इस काढ़ेके पीनेसे सब तरहकी और सारे शरीरकी सूजन अवश्यमेव नाश हो जाती हैं। वैद्यक-शास्त्रमें लिखा है, कि यह काढ़ा सूजनको ज़ोरसे नाश कर देता है। यह बात वास्तवमें सच्ची है। परीक्षित है।

सिंहास्यादि क्वाथ।

अड़ूसेकी छाल, गिलोय और कटेरी—इन तीनोंके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे सूजन, श्वास, खाँसी, ज्वर और वमन ये सब नाश हो जाते हैं।

शोथारि चूर्ण।

सूखी मूली, चिरचिरा, त्रिकुटा, त्रिफला, दन्तीकी जड़, वायविडंग, चीतेकी जड़ और नागरमोथा—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण नित्य खाकर, ऊपरसे "बेलके पत्तोंका स्वरस" पीनेसे सब तरहकी सूजन और पाण्डु रोग नाश हो जाते हैं।

चित्रकाद्य घृत।

चीतेकी जड, धनिया, अजवायन, पाढ़, अजमोद, त्रिकुटा, अम्लवेत, सोंठ, कमल, अनारदाना, जवाखार, पीपरामूल और चव्य—इनको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी बना लो।

अब घी ४ सेर, पानी १६ सेर और ऊपरकी लुगदी मिलाकर घी पका लो। इसमेंसे छे-छे माशे घी खानेसे सूजन, गोला, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र आदि रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—जिस सूजनमें ज्वर न हो उसमें, इस घीको खिलाने और पृष्ठ ७६८ के "शुष्क मूलक तैल" या ७७१के "पुनर्नवाद्य तैल"की सूजन पर मालिश करानेसे

अच्छा लाभ होता है। इस घीकी क्रिया हमने नियम-विरुद्ध लिखी है, उसका वहम न करना। इच्छा हो, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी लेकर घी पका लेना।

पुनर्नवाद्य तैल।

त्रिकुटा, त्रिफला, काकड़ासिंगी, धनिया, कायफल, कचूर, दारुहल्दी, प्रियंगू फूल, पद्मकाष्ठ, रेणुका, कूट, पुनर्नवा, अजवायन, कालाज़ीरा, इलायची, दालचीनी, लोध, तेजपात, नागकेशर, वच, पीपरामूल, चव्य, चीतामूल, सोवा, सुगन्धवाला, मँजीठ, रास्ना और जवासा;—इन २८ दवाओंको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी बना लो।

सफेद पुनर्नवा साढ़े बारह सेर लेकर चौसठ सेर जलमें पकाओ, जब १६ सेर पानी रह जाय मल-छान लो।

फिर तिलीका तेल चार सेर, ऊपरकी लुगदी और काढ़ेको मिलाकर पकाओ। जब काढ़ा जलकर तेल मात्र रह जाय, छान कर रख दो। इस तेलकी मालिशसे सूजन, पाण्डु, कामला, हलीमक प्लीहा और उदर रोग आदि अनेक रोग आराम हो जाते हैं। सूजन नाश करनेमें यह तेल परमोत्तम है। परीक्षित है।

दुग्धवटी।

शुद्ध मीठा विष ३ माशे, शुद्ध अफीम ३ माशे, लोहभस्म १० रत्ती और अभ्रक भस्म १५ माशे—इन सबको खरलमें डालकर दूधके साथ खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "दूधके साथ खाने और दूध भातका ही भोजन करनेसे" सूजन, संग्रहणी, मन्दाग्नि और विषम ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—जब तक आराम न हो जाय, "नमक" भूल कर भी न खाना चाहिये और इसी तरह "पानी" भी न पीना चाहिये, केवल दूध पीकर रहना चाहिये। संग्रहणीमें सूजन होनेसे ये गोलियाँ रोगीके प्राण बचाती हैं।

नक्र मण्डूर।

धुली-पिसी भाँग २ तोले, शुद्ध मण्डूरभस्म २ तोले, बाँसकी जड़ १ तोले, काली अगर १ तोले, नीमकी छाल १ तोले, विषनारककी जड़ १ तोले, समुद्रफेन १ तोले, तेजपात ६ माशे, लौंग ६ माशे, इलायची ६ माशे, सोवा ६ माशे, सौंफ ६ माशे, कालीमिर्च ६ माशे, गिलोय ६ माशे, मुलेठी ६ माशे, जायफल ६ माशे, सोंठ ६ माशे और सेंधा-नोन ६ माशे—सबको पीस-कूटकर "सफेद पुनर्नवाके रसके साथ" दिन-भर खरल करो। जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, जङ्गली बेर-समान गोलियाँ बना लो। इनमेंसे बलाबल-अनुसार एक या आधी गोली माठेके साथ सेवन करनेसे सूजन—खासकर पाण्डुरोग की सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—इन गोलियोंके सेवन करनेवालेको भी माठा या माठा और भात पर्ही रहना होता है। नमक और जल कतई बन्द रहते हैं। प्यास लगने पर भी माठा ही पीना होता है।

पञ्चामृत रस

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, आगपर फुलाया हुआ सुहागा ३ तोले और कालीमिर्च ३ तोले—इनको खरलमें पीसकर पानीके साथ घोटो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली "अदरखके रस"के साथ खानेसे सूजन, जलोदर, सिरका दर्द, सूजन-समेत ज्वरातिसार और गलग्रह आदि अनेक कफके रोग शान्त हो जाते हैं।

त्रिकट्वादि लौह।

त्रिकुटा, त्रिफला, दन्ती, वायविडंग, कुटकी, चीता, देवदारु, निशोथ और गजपीपर सबको एक-एक तोले लो और सारे चूर्णसे दूनी अठारह तोले "लोह भस्म" लो। कूटने-पीसने योग्य दवाओंको पीस-छान कर चूर्णमें "लोह भस्म" मिला दो और खरलमें

डालकर "दूधके साथ" खरल करो। जब मसाला घुट जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खाने और ऊपरसे "दूध" पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

कंस हरीतकी।

दशमूलकी दसों दवाएँ मिलाकर चार सेर, पोटलीमें बँधी हुई हरड़ चार सेर और पानी ६४ सेर—सबको मिलाकर औटाओ, जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो। "हरड़ोंको" छाँटकर अलग रख दो।

अब इस काढेमें १२॥ सेर पुराना गुड़ और छाँटी हुई हरड़ मिला दो और मिट्टीके बासन या क़लईदार बर्तनमें पकाओ। जब काढ़ा पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, इसमें "पीपर, सोंठ, कालीमिर्च, दालचीनी, इलायची और तेजपात—इनमेंसे प्रत्येकका दस-दस तोले आठ-आठ माशे चूर्ण" मिला दो और शीतल कर लो। जब शीतल हो जाय, उसमें ६४ तोले "शहद" और एक तोले "जवाखारका चूर्ण" मिला दो।

सवेरे ही एक हरड और १ तोले अवलेह गरम पानीके साथ खानेसे सूजन, तिल्ली, गोला, श्वास, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, त्रिदोषज उदर रोग, पाण्डु रोग, कृशता, आमवात, रक्तपित्त, अम्लपित्त, विवर्णता, मूत्ररोग, वातरोग, और वीर्यदोष नाश हो जाते हैं।

शोथ या सूजन रोगपर हकीमी नुसख़े।

नोट—अंगके फूलने या मोटे होनेका नाम "सूजन" है। सूजन अङ्ग पर मल गिरने और चारों दोषों या वातसे होती है। विकारोंको रोकनेवाली, गलानेवाली, पकानेवाली और बहानेवाली चीज़ोंका सेवन करना ही इसका यत्न है।

(१) जदवार, रसौत, गेरु, ख़तमीके बीज, लालचन्दन, रेवन्द-चीनी, मकोय, सफेद कत्था और काली जीरी—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो और खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मकोयके हरे पत्तोंके रसमें, हरे धनियेके रसमें, सिरकेमें, गुलाब जलमें या पानीमें इनमेंसे किसी एकमें पीस कर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(२) हल्दी, गेरू, सोंठ और बिस्मार—बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीस कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मकोयके हरे पत्तोंके रसमें पीस कर लगानेसे सूजन उतर जाती है।

(३) अजवायन महीन कूट-छान कर और नीबूके रसमें मिला-पकाकर, सूजन पर गुनगुनी-गुनगुनी बाँधनेसे सूजन उतर जाती और पीड़ा शान्त हो जाती हैं।

नोट—नीबू न मिले तो सिरकेमें मिलाकर पका सकते हो।

(४) आमकी बिजली पानीमें पीसकर और आग पर पका कर गुनगुना-गुनगुना लेप लगानेसे सूजन उतर जाती है। "खैरुलतिजारब" में लिखा है, कि यह दवा सूजनके लगानेमें जदवारके बराबर है।

(५) अरण्डकी छाल, खिपखपरेकी छाल और सोंठ—इनको पानीमें पीसकर और गुनगुना करके सूजन पर लगानेसे सूजन पच जाती है।

(६) धतूरेके पत्ते गुनगुने-गुनगुने सूजन पर बाँधनेसे सूजन उतर जाती है।

(७) बकरीकी मैंगनी पानीमें पीस कर लेप करनेसे पुरानी सूजन भी गल जाती है।

(८) मिस्सीके पेड़की पत्तियाँ और अरण्डके पेड़की कौंपलें बराबर-बराबर लेकर और थोड़ासा "नमक" मिलाकर पीस लो और आग पर गुनगुना करके बग़ल या कानके नीचेकी सूजन पर बाँधो। इससे कानके नीचेकी और बगलकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—मिल्लीका पेड़ मशहूर है। इसे "चकसौनी" भी कहते हैं।

(९) कत्था, मुरदारसंग, तज, लालचन्दन, कवावचीनी और सब्ज़ तूतिया—इनको पानीके साथ पीस कर लेप करनेसे बग़लकी सूजन गल जाती है। इस दवाको "लालदारु" कहते हैं।

(१०) सिरसके पत्ते गरम करके हर दिन, दिनमें कई बार, बाँधनेसे पीड़ा और सूजन नष्ट हो जाती हैं।

(११) मूँग, जौ, मसूर और लोबियेका आटा बराबर-बराबर लेकर, सिरके और पानीमें घोलकर, लपटीसी पकाकर, लेप करनेसे सूजनका मल पक जाता और पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१२) बड़के पत्ते घीमें तर करके गुनगुने-गुनगुने बाँधनेसे सूजन और सख्ती जाती रहती है।

(१३) गूलरके पत्तोंका रस जौके आटेमें मिलाकर बाँधनेसे सख्त वरम या सूजन गल जाती है।

(१४) गायका गोबर सूजन पर बाँधनेसे लाभ होता है।

(१५) धनिया आदमीके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(१६) जायफल २० माशे, सौंठ ४० माशे और कंघी ४० माशे इनको सिरकेमें पीसकर और गरम करके लगानेसे सूजन नाश हो जाती है।

(१७) इन्द्रायणकी जड़ सिरकेमें पीसकर और गरम करके लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(१८) ईसबगोलको पीस कर और पानीमें घोलकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(१९) अब्बासीके पत्ते गरम करके बाँधनेसे सूजन आराम हो जाती है।

(२०) तेंदूकी लकड़ी पीसकर लगानेसे भिलावेके धूएँकी सूजन आराम हो जाती है।

(२१) चिरौंजी खानेसे भिलावेकी सूजन दूर हो जाती है।

(२२) गूलरकी छाल पानीमें पीसकर लेप करनेसे भिलावेके धूएँकी सूजन उतर जाती है।

(२३) मुर्दारसंग पीसकर लगानेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(२४) अड़ूसेके पत्ते पीसकर और "थोड़ा नोन" मिलाकर बाँधनेसे भगन्दरकी सूजन उतर जाती है।

(२५) करीलके पत्ते और अरण्डके पत्ते गरम करके बाँधनेसे भगन्दरकी सूजन आराम हो जाती है।

(२६) अकरकरा, कायफल, खुरासानी अजवायन, सोंठ और नरकचूर—समान-समान लेकर, तिल और रेंडीके तेलमें मिलाकर लेप करनेसे वातकी पीडा और सूजन नाश हो जाती है।

(२७) महुएके पत्तों पर रेंडीका या तिलीका तेल लगाकर और गरम करके गुनगुना-गुनगुना बाँधनेसे वातकी पीड़ा और सूजन नष्ट हो जाती है।

(२८) चाँवल पकाकर और घीमें मिलाकर, राह चलनेसे हुए पाँवके छालोंपर लेप करनेसे शीघ्र ही लाभ होता है।

(२९) सोंठ और रेंडीको पानीमें महीन पीसकर बग़लके फोड़ोंपर गुनगुना-गुनगुना लेप करनेसे आराम होता है।

अन्त्रवृद्धि या कोषवृद्धि-वर्णन ।

(फोते बढ़ना या आँत उतरना)

तेइसवाँ अध्याय

निदान और संख्या ।

वात, पित्त, कफ, रुधिर, मेद, मूत्र और आँत—इन भेदोंसे वृद्धि रोग सात प्रकारका होता है ।

सम्प्राप्ति ।

अपने कारणोंसे कुपित हुई वायु अण्डकोषो या फोतोंमें जाकर, अण्डकोषोंकी शिराओं—नसोंको रोककर अण्डोंकी और चमड़ोकी वृद्धि करती है ।

अथवा

"वायु" अपने दोषसे कुपित होकर पट्ठ से अण्डकोषमें जाती है और फिर पित्तादि दोष—दूष्यको कुपित करके, अण्डकोषोंको वर्द्धित, स्फोत और वेदनायुक्त करती है । इसी रोगको "वृद्धिरोग" या "फोतोंका बढ़ना" कहते हैं ।

अथवा

अपने कारणोंसे कुपित हुई "वायु" फल यानी फोतेकी गोली और उसके कोष यानी उसके रहनेके स्थानसे सम्बन्ध रखनेवाली

शिराओं—नसोंको रोककर तथा स्वयं उन्हीं नसोंमें रुककर फोतोंके धारण करनेवाली नसोंकी वृद्धि करती है ।

वातवृद्धिके लक्षण ।

अगर वृद्धि छूनेसे वायुसे भरी हुई मशकके समान मालूम हो, रूखी हो और विना वजहके या सामान्य कारणसे दुखने लगे, तो उसे "वातकी वृद्धि" समझनी चाहिये ।

पित्तवृद्धिके लक्षण ।

जो वृद्धि पके हुए गूलरके फलके समान लाल हो, जिसमें पित्तके लक्षण—दाह, जलन और पाक हों, उसे "पित्तकी अण्डवृद्धि" समझनी चाहिये । अथवा जो वढ़ा हुआ फोता पके हुए गूलरके फलके समान लाल हो, जिसमें जलन और गरमी हो तथा जो पकनेवाला हो, उसे "पित्तज वृद्धि" जानो । यह वहुत दिन रहनेसे पक जाती है ।

कफज वृद्धिके लक्षण ।

जो वृद्धि शीतल हो, भारी हो, चिकनी हो, जिसमें खुजली चलती हो, जो कठिन या सख्त हो और जिसमें थोड़ा दर्द होता हो, वह "कफकी वृद्धि" है ।

रुधिरकी वृद्धिके लक्षण ।

जो वृद्धि काले-काले फोड़ोंसे व्याप्त हो और जिसमें पित्तकी वृद्धिके सब लक्षण मिलते हों, वह "रुधिरकी वृद्धि" है ।

मेदकी वृद्धिके लक्षण ।

जो वृद्धि छूनेमें नर्म हो, जो ताड़फलके समान नीली और गोल हो अथवा जो आकारमें पके हुए ताड़फलकी जैसी हो और

जिसमें कफकी वृद्धिके सब लक्षण मिलते हों, उसे "मेदकी वृद्धि" समझो।

मूत्रकी वृद्धिके लक्षण।

जो मनुष्य आते हुए पेशाबको रोकते हैं, उनको "मूत्रज वृद्धि" होती है। वह "मूत्रज वृद्धि" चलते समय पानीकी भरी हुई मशककी तरह बोलती और छूनेमें नर्म होती है। उसमें दर्द और मूत्र-कृच्छ्रकीसी पीड़ा होती है। फल और कोष अथवा आँड इधर-उधर हिलते हैं।

अन्त्रवृद्धिके लक्षण।

वातकोपकारक आहार-विहार सेवन करनेसे, शीतल जलमें घुसकर नहानेसे, आये हुए मल मूत्र आदिके वेगको रोकनेसे, विना हाजत हुए ज़बर्दस्ती पाखाना-पेशाब करनेकी कोशिश करनेसे, भारी बोझ ढोनेसे, बहुत ज़ियादा राह चलनेसे, टेढ़े तिरछे होकर चलनेसे, बलवानके साथ लड़नेसे, कठिन धनुष आदि चढ़ानेसे अथवा ऐसे ही और भी वातकोपकारक आहार-विहार करनेसे "वायु" क्षुभित हो जाती है। क्षुभित वायु छोटी-छोटी आँतों के प्रदेशको दूषित करके, उनको उनकी जगहसे नीचे ले जाती है; यानी वायु द्वारा छोटी आँतोंका कुछ अंश, नीचेकी तरफ, वंक्षण-सन्धिमें आता है; इसके बाद, संकुचित होकर, उस सन्धि-स्थलमें गाँठके जैसी सूजन उत्पन्न कर देता है। इसीको "अन्त्रवृद्धि" कहते हैं।

इसकी उपेक्षाका फल।

(लापरवाहीका नतीजा)।

अगर इसका जल्दी ही इलाज नहीं किया जाता, तो यह अण्ड-कोषोंमें जाकर, पेटमें अफारा, शूल और मल मूत्रादिके वेगको रोक

कर "अण्डवृद्धि" करती है ; यानी अण्डकोष वर्द्धित, स्फीत, वेदना-युक्त और स्तम्भित हो जाते हैं। कोषको दबानेसे या कभी-कभी अपने-आप ही वायु आवाज़ करती हुई ऊपरकी तरफ उठती है और फिर कोषोंमें आकर उन्हें फुला देती है ; अथवा दबानेसे वृद्धि पेटमें घुस जाती है और छोड़ देनेसे फिर फोतोंको फुलाकर उनमें रह जाती है। अंत्रवृद्धि या आँत उतर आना असाध्य है।

अन्त्रवृद्धिके असाध्य लक्षण।

जिसमें छोटी आँतोंके कुछ हिस्से--कफ-वातके सञ्चयसे—फोतोंमें आजायँ और जिसमें वातकी वृद्धिके लक्षण मिलते हों, वह अंत्रवृद्धि असाध्य है।

एक शिरा और वातशिराके लक्षण।

अमावस्या या पूर्णमासी अथवा दशमी और एकादशी-तिथियोंमें कँपकँपी लगकर और जोड़ोंमें अथवा सारे शरीरमे दर्द होकर बड़े जोरसे बुख़ार आता है और उसके साथ फोते बढ़ जाते हैं। अगर एक कोष या एक तरफका फोता बढ़ता है, तो "एक शिरा" कहते हैं और अगर दोनों कोष या फोते बढ़ते हैं तो "वात शिरा" कहते हैं। यह रोग दो तीन दिनमें आप-से-आप आराम हो जाता है।

अण्डवृद्धि-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) सब तरहके वृद्धि रोग या फोते बढ़नेके रोगोंकी रोग उठते ही चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि देर करनेसे रोग कष्टसाध्य हो जाता है।

(२) अण्डवृद्धिवाले रोगीको मल-मूत्रादि वेग रोकना, हाथी

घोड़े आदिकी सवारी, दण्ड-कसरत-कुश्ती, मिहनत, स्त्री-प्रसंग, राह चलना, भारी पदार्थ खाना, उपवास करना और ज़ियादा खाना —इनसे परहेज़ करना चाहिये। इनके सिवा नये चाँवलोंका भात, दही, उड़द, पका केला, अधिक मीठा शीतल जल, दिनमें सोना, स्नान, अजीर्ण रहने पर भोजन और तेलकी मालिश आदि भी अण्ड वृद्धिवालेको हानिकारक हैं, अतः इनसे भी बचना जरूरी है।

अण्डवृद्धि रोगीको करेला ककोड़ा, ज़मीकन्द, आलू, मेथी, लहसन, प्याज़, जौ, गेहूँ, मूँग, अरहर, दूध, घी और तेल आदि पथ्य हैं। इस रोगीको गरम किया हुआ पानी शीतल करके पीना चाहिये और उसी जलसे स्नान करना चाहिये। इस रोगमें लङ्गोट हर समय बाँधे रहना चाहिये। दिनके समय बढ़िया महीन पुराने चाँवलोंका भात, मूँग, मसूर, चना और अरहरकी दाल, बैंगन, आलू, परवल, गाजर, करेला, अदरख, लहसन और प्याज़ आदिकी तरकारी थोड़ी-थोड़ी खानी चाहिये। इस रोगमें सब तरहके कड़वे और दस्तावर पदार्थ पथ्य होते हैं। रातके समय रोटी या पूरी और ऊपरकी तरकारियोंमेंसे कोई तरकारी खानी चाहिये। थोड़ा दूध भी रोगी पी सकता है।

(३) सभी तरहके अण्डवृद्धि रोगोंमें गरम दूधमें "रेंडीका तेल" मिलाकर पीना लाभदायक है। पावभर गरम दूधमें दो तोला "रेंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे १ महीनेमें अवश्य लाभ होता है। अतः इस रोगमें "रेंडीके तेल"को अवश्य काममें लाना चाहिये।

(४) मूत्रज अण्डवृद्धि रोगमें चीर-फाड़ कराकर पानी निकलवानेसे अच्छा लाभ होता है। इस रोगका उपाय ही जल निकलवाना है।

(५) अंत्रवृद्धि या आँत उतरनेके रोगमें जबतक आँतें फोतों तक नहीं उतरतीं, तभी तक चिकित्सासे लाभ हो सकता है। इस रोगका जोर होने पर "ट्रस" नामक यन्त्र लगाना उपकारी है।

अण्डवृद्धिकी चिकित्सा ।

वातवृद्धि नाशक नुसखे ।

(१) पाव-भर गरम दूधमें दो तोले "रेंडीका तेल" मिलाकर एक महीने तक पीनेसे अवश्य वात वृद्धि आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—पित्तज और कफज अण्डवृद्धि रोगमें दशमूलके काढ़ेमें "रेंडीका तेल" मिलाकर पीना चाहिये।

(२) शुद्ध गूगल ६ माशे, अण्डीका तेल १ तोले और गोमूत्र आधा पाव—इन तीनोंको मिलाकर, लगातार कुछ दिन पीनेसे बहुत पुरानी वातज अण्डवृद्धि भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) अन्त्रवृद्धि रोगमें अगर अग्नि दीप्त हो, तो वस्तीकर्म्म प्रयोग करना चाहिये तथा "नारायण तेल"को पीने, मालिश करने और गुदामें पिचकारी लगानेके काममें लेना चाहिये।

नोट—वातवृद्धिमें नारायण तेलकी मालिश ही करनेसे खूब फायदा होता है। अनेक बार परीक्षा कर चुके हैं।

पित्तज वृद्धि नाशक नुसखे ।

(४) जौंकें लगवाकर खून निकलवा देनेसे पित्त-सम्बन्धी वृद्धि नष्ट हो जाती है।

(२) लालचन्दन, मुलेठी, कमल, खस और नीले कमल—इनको

दूधमें पीस कर लेप करनेसे पित्तकी वृद्धिकी सूजन, दाह और पीड़ा —ये सब शिकायत रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

(६) पंचक्षीरी वृक्षोंकी जलमें पिसी हुई लुगदीको घीमें मिलाकर लेप करनेसे और इन्हीं पंचक्षीरी वृक्षोंकी छालोंको पानीमें औटाकर और शीतल करके उस क्वाथको सींचने या ढालनेसे पित्तकी वृद्धि और उसकी जलन, पीड़ा और सूजन शान्त हो जाती है।

नोट—बड़, पीपल, गूलर, बेत और पाखर—यही "पंचक्षीरी वृक्ष" हैं। इनकी छालोंको पीसकर और घीमें मिलाकर लगाने और इन्हीं छालोंका शीतकषाय यानी "हिम" बनाकर तरड़ा देनेसे "पित्तकी वृद्धि" मय, दाह, जलन, सूजन और पीड़ाके आराम हो जाती है। हमारी रायमें, औटाये हुए काढ़ेकी अपेक्षा भिगोकर बिना औटाये हुए बनाया शीत कषाय अच्छा है। कितनी ही बार परीक्षा की है, पर कई मौकों पर पित्तकी वृद्धिमें औटाकर शीतल किये हुए काढ़ेके तरड़े देना ही हितकर होता है। यह बात रोगकी अवस्था और वैद्यकी समझ पर निर्भर है।

विशेष सूचना—कोई-कोई बड़, पीपर, गूलर, बेलिया पीपर और पारिस पीपल—इन पाँचोंको क्षीर वृक्ष मानते हैं और कोई पारिस पीपलके स्थानमें सिरसकी छाल और कोई बेतकी छाल लेते हैं।

कफज वृद्धि नाशक नुसखे।

(७) देवदारूके काढ़ेको "गोमूत्रके साथ" पीनेसे कफकी वृद्धि शान्त होती है।

(८) त्रिफलेके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर, सवेरे ही पीने और पथ्य पालन करनेसे कफवातसे पदा हुई अण्डकोषोंकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—कफकी वृद्धिमें गोमूत्रमें पिसी हुई गरम औषधियोंका लेप करना चाहिये। कटु, गरम और तीक्ष्ण औषधियोंके लेप, रूखी दवाओंके द्वारा स्वेद, परिषेक और उपनाह कर्म ये सब उष्ण या गरम उपचार कफकी वृद्धिमें करने चाहिये। मतलब यह है, कि कफकी अण्डवृद्धिमें गरम लेप और गरम तरड़े हितकारी होते हैं। अगर कोई दवा बाँधनी होती है, तो वह भी गरम ही बाँधी जाती है। इसके विपरीत पित्तकी वृद्धिमें शीतल लेप आदि किये जाते हैं।

(९) वच और सरसोंको समान-समान लेकर, पानीमें पीसकर और गरम करके लेप करनेसे अण्डकोषोंकी कफकी सूजन शान्त हो जाती है।

(१०) सहँजनेकी छालको घीमें घिसकर और गरम करके लेप करनेसे अण्डकोषोंकी कफ-वातकी सूजन नाश हो जाती है।

(११) धूप, अगर, कूट, देवदारू और सोंठ—ये समान-समान लेकर, गोमूत्र और काँजीमें पीसकर लेप करनेसे कफ-वातकी वृद्धि या फोतोंकी सूजन आराम हो जाती है।

(१२) हरडको गोमूत्रमें पकाकर और फिर तेलमें भून कर एवं सैंधानोन मिलाकर, हर सवेरे, खानेसे कफवातकी अण्डवृद्धि या कफवातके और रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) त्रिकुटा और त्रिफलाके काढ़ेमें दो माशे "जवाखार" और दो माशे "सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे कफज और मेदज अथवा कफ-वातज अण्डवृद्धि आराम हो जाती है। यह इस रोगमें श्रेष्ठ विरेचन है। इस काढ़ेसे दस्त होकर रोग आराम हो जाता है।

रुधिरकी वृद्धि नाशक नुसखे।

(१४) खाँड और शहद मिलाकर विरेचन औषध पीनेसे रुधिरकी अण्डवृद्धि शान्त हो जाती है; पर बारम्बार जौंकें लगवाकर खून निकलवाना भी जरूरी है।

नोट—रुधिरकी अण्डवृद्धि कच्ची हो चाहे पक्की, उस पर शीतल लेप करना चाहिये, जौंके लगवा कर बारम्बार खून निकलवाना चाहिये और पित्तज अण्ड-वृद्धिका जो इलाज लिख आये हैं वही सब इसमें करना चाहिये। रक्तपित्तज अण्डवृद्धिमें सम्पूर्ण दाह-रहित चिकित्सा करनी चाहिये। इस बातका खूब ध्यान रखना चाहिये कि, पकाव न हो।

मेदज अण्डवृद्धि नाशक नुसखे।

(१५) मेदज अण्डवृद्धिके अण्डकोषोंको स्वेदित करके शानी

सेक वग़ैरः करके "सुरसादि गण"की दवाओंको एकत्र पीसकर उनका लेप करना चाहिये ; अथवा "शिरोविरेचन" औषधियोंको गोमूत्रमें पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करना चाहिये।

नोट—तुलसी, कसौंदी, वनतुलसी, सफेद वनतुलसी, भूतृण, निर्गुण्डी, काली तुलसी, मरुआ, कुलाहल-भुई कदम, रास्ना, खिरेटी, गूमा, कालमाल, वायविड़ंग, मकोय, कालीमिर्च, मूसाकानी और सुपर्णी—सूर्य्यफूल—इन सब औषधियोंके समुदायको "सुरसादिगण" कहते हैं।

लवा फिटकरी, नकछिकनी, कालीमिर्च पीपर, वायविड़ंग, सहँजनेके बीज, सरसों, श्वेत अपराजिता, अपामार्गके बीज और नील अपराजिता—ये नस्य-क्रियाकी औषधियाँ हैं।

इन "शिरो विरेचनीय" औषधियोंको गोमूत्रमें मिलाकर और ज़रा गरम करके सेक करनेसे मेदज और मूत्रज अण्डवृद्धिमे लाभ होता है। इन्हींको औटाकर बफारा भी दे सकते हैं।

मूत्रज अण्डवृद्धि नाशक नुसखे।

(१६) मूत्रज अण्डवृद्धिमें, पहले बफारा देकर कपड़ेकी पट्टी खूब बाँध देनी चाहिये। यदि अण्डवृद्धि गोली तक न पहुँची हो, तो इसपर वही उपचार करने चाहियें, जो वातज "अण्डवृद्धि"में लिख आये हैं।

सब तरहकी अण्डवृद्धि नाशक नुसखे।

(१७) खिरेंटीको सिलपर पीसकर उसके साथ "दूध" पकाओ। फिर इस दूधमें "रैंडीका तेल" १ तोले मिलाकर पीओ। इससे आध्मान—पेट फूलना और शूल समेत अंत्रवृद्धि आराम हो जाती है।

(१८) रास्ना, मुलेठी, गिलोय, अरण्डकी जड़, खिरेंटी और गोखरू—इनके काढ़ेमें एक तोले "रेंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे अंत्रवृद्धि रोग नाश हो जाता है। आँत उतरना बन्द करनेको यह नुसख़ा उत्तम है। परीक्षित है।

(१९) सोंठ, अरण्डीके फल, तिल और जौ—इनको काँजीमें पीस कर, गरम लेप करनेसे अण्डवृद्धि नाश हो जाती है।

(२०) इन्द्रायणकी जड़का चार माशे चूर्ण "आध पाव दूधमे"

पीस-छान कर और "एक तोले रैंडीका तेल" मिलाकर, सात दिन तक, पीनेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है। यह नुसख़ा निस्सन्देह उत्तम है, पर सबको सात ही दिनमें आराम नहीं हो जाता; हाँ आराम जरूर होता है। परीक्षित है।

(२१) रास्ना, मुलेठी, गिलोय, अरण्डकी जड़, कड़वे पटोलपत्र, रेणुका, खिरेंटी और अड़ूसा—इनके काढ़ेमे १ तोले "रैंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे सब तरहके अण्डवृद्धि रोग शान्त हो जाते हैं। इसका नाम "रास्नादि क्वाथ" है।

(२२) रासना, मुलेठी, गिलोय, अरण्डकी जड़, खिरेंटी, अमलताशका गूदा, गोखरू, कड़वे परवलके पत्ते और अड़ूसा—इनका काढ़ा बनाकर और छानकर उसमें एक तोले "रैंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे सब तरहके अण्डवृद्धि रोग नाश हो जाते हैं। इसका भी नाम "रास्नादि क्वाथ" है।

नोट—इस काढे और ऊपरके काढेमें केवल दो चीजोंका फर्क है। इसमे "अमलताशका गूदा और गोखरू" ये दो अधिक हैं और उसमें "रेणुका" है, बाकी सब समान हैं। न० २१से न० २२ अच्छा है और परीक्षित है।

(२३) बच और सरसों पानीमें पीसकर लेप करनेसे अथवा सहँजनेकी छाल और सरसों पानीमें पीसकर लेप करनेसे सब तरहकी अण्डवृद्धिकी सूजन शान्त हो जाती है।

कुरण्ड रोगके लक्षण।

अभिष्यन्दी, भारी और खट्टे पदार्थ खानेसे वातादि दोष कुपित होकर वंक्षण-सन्धियोंमें गाठके समान सूजन पैदा कर देते हैं, उसको "कुरण्ड रोग" कहते हैं।

नोट—कुरण्ड और बद या बाघी एक ही जगह होते हैं। भेद इतना ही है, कि कुरण्डमें दर्द या पीड़ा नहीं होती, पर बदमें पीड़ा होती है।

(१) भारंगीकी जड़ पानीमें पीस कर लेप करनेसे कुरण्ड, गण्डमाला और अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाते हैं।

(२) शम्बुक नामक शंखमें "गायका घी" भर कर सात दिन तक धूपमें रखो। फिर इसमें "सैंधानोन" घीसे चौथाई मिला-मिलाकर कुरण्ड पर लगाओ। इससे कुरण्ड तथा फोतेकी सूजन आराम हो जाती है।

(३) सैंधानोन और घी ताम्बेके वासनमें रखकर धूपमें मथो। इसके मथनेसे जो मैल निकले, उसे दिन-रातमें कई बार कुरण्ड पर लगाओ; इससे कुरण्ड या गिल्टियाँ आराम हो जाती हैं।

(४) लजवन्तीकी जड़ और गीधकी विष्ठा—दोनोंको पीस कर और गरम करके लेप करनेसे कुरण्ड या गिल्टी आराम हो जाती है।

(५) पारेको भस्मको "तैल और सैंधेनोन"में मिलाकर फोतोंपर लेप करनेसे ताड़फलके समान भी अण्डवृद्धि आराम हो जाती है।

नोट—पारेकी भस्मके बजाय "रससिन्दूर" लेना चाहिये।

अण्डवृद्धि नाशक उत्तमोत्तम योग।

वृद्धिवाधिका वटिका।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहाभस्म, वङ्गभस्म, ताम्बा-भस्म, काँसी भस्म, शुद्ध हरताल भस्म, शुद्ध तूतिया, शंख-भस्म, कौड़ीकी भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, चव्य, वायविड़ंग, विधाराके बीज, कचूर, पीपरामूल, पाढ़, गन्धपलाशी, बच, इलायचीके बीज, देवदारु और पाँचों नोन,—इनको बराबर-बराबर लेकर; जो पीसने-छानने योग्य हों उन्हें पीस-छान लो। फिर सबको मिलाकर

और खरलमें डालकर "हरडके काढेके साथ" खरल करो और एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक गोली नित्य पानीके साथ निगल जानेसे अंत्र सम्बन्धी असाध्य रोग भी तत्काल नाश हो जाते हैं। मतलब यह कि, ये गोलियाँ अण्डवृद्धि रोगपर बहुत ही उत्तम हैं। परीक्षित हैं।

नोट—हरड़-भिगोये पानीके साथ निगलनेसे ये गोलियाँ, केवल पानीकी अपेक्षा जल्दी लाभ दिखाती हैं। सैंधानोन, सचरनोन, विड़नोन, समन्दर नोन और कचिया नोन—ये पाँच नोन हैं।

अण्डवृद्धि नाशक महौषधि।

शुद्ध पारा २ माशे, शुद्ध गन्धक २ माशे, त्रिफला ३ माशे, चीतेकी जड़ ४ माशे और शुद्ध गूगल ५ माशे—इनमेंसे पहले "पारे और गन्धक"को खरल करके कज्जली कर लो। त्रिफले और चीतेको पीस कर छान लो। फिर गूगल समेत सबको खरलमें डालकर रेंडीका तेल दे-देकर खूब घोटो। घुट जानेपर, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे अंत्रवृद्धिमें निश्चय ही बहुत लाभ होता है। यह इस रोगकी परमोत्तम दवा है।

अपने बलाबल अनुसार एक या आधी अथवा दो गोली "अदरखके ६ माशे स्वरस"में मिलाकर चाट लो और ऊपरसे "सोंठका चूर्ण मिला हुआ अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पीलो। पीठपर "रेंडीका तेल या नारायण तेल" खूब मलवाओ। इस दवासे दस्त होने पर, घी-मिली गरमागर्म मूँग और पुराने चाँवलोंकी खिचड़ी खाओ। परीक्षित है।

सैंधवाद्य घृत।

घोंघेके भीतरका पैला-मैला निकाल कर, उसके भीतर "दो तोले गायका घी और ६ माशे सैंधानोन" पीसकर भर दो और सात दिन तक धूपमें रक्खा रहने दो, फिर काममें लो। इस घीकी मालिश

करनेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है। इतनाही नहीं, इस घीके लगानेसे कुरण्डरोग यानी वंक्षण-सन्धियोंमें होने वाली गाँठ या वद भी आराम हो जाती है।

नोट—भारगीकी जड़को पानीमें पीसकर लेप करनेसे कुरण्ड, वद, गण्डमाला, गिल्टी और अण्डवृद्धि ये सब आराम हो जाते हैं।

शतपुष्पाद्य घृत।

सौंफ, गिलोय, देवदारु, लाल चन्दन, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद ज़ीरा, कालाज़ीरा, वच, नागकेशर, त्रिफला, शुद्ध गूगल, दालचीनी, वालछड़, कूट, तेजपात, इलायची, रास्ना, काकड़ासिंगी, चीता, वायविड़ंग, असगन्ध, भूरिछरीला, कुटकी, सैंधानोन, तगर, कुड़ेकी छाल और अतीस—इन अट्ठाईस दवाओंको दो-दो तोले लेकर पानी-के साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

अब गायका घी चार सेर, अड़ूसेका काढ़ा चार सेर, अरण्डकी जड़का काढ़ा चार सेर, गोरखमुण्डीका काढ़ा चार सेर, नीमकी छालका काढ़ा चार सेर, कटेरीका रस या काढ़ा चार सेर और गायका दूध चार सेर,—सबको एक क़लईदार कड़ाहीमें डालकर और ऊपरकी लुगदी बीचमें रखकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते घी मात्र रहजाय, उतारकर छान लो।

इस घीके ६ माशेसे दो तोले तक खानेसे अंत्रवृद्धि, वातवृद्धि, पित्तवृद्धि, मेदवृद्धि, मूत्रवृद्धि, श्लीपद या फील पाँव, यकृत और तिल्ली रोग आराम हो जाते हैं। "वंगसेन"।

गन्धर्वहस्त तैल।

रैंडीकी जड़ ५ सेर, सोंठ ४ सेर और जौ ४ सेर—इनको कूटकर ६४ सेर जलमें औटाओ, जब सोलह सेर पानी रहजाय, मलकर छान लो।

फिर १६ सेर काढ़ा, १६ सेर दूध, रैंडीका तेल १ सेर, अरण्डकी

जड़का कल्क (पिसी हुई लुगदी) १६ तोले और अदरखका कल्क १२ तोले—इन सबको मिलाकर पकाओ ; जब तेल मात्र रहजाय, उतारकर छान लो।

इस तेलकी मात्रा २ तोलेकी है। अनुपान—गरम दूध है। पथ्य—दूध-भात है। इस तेलको "गरम दूधके साथ" पीनेसे अन्त्रवृद्धि रोग अवश्य नाश हो जाता है।

नारायण तेल।

इस तेलको पीने, पीठ और सारे शरीर तथा फोतोंपर मलने और पिचकारी द्वारा गुदामें पहुँचानेसे अंत्रवृद्धि या फोते चढ़नेका रोग आराम हो जाता है। बनानेकी विधि इसी भागके पृष्ठ २६८में लिखी है।

अण्डवृद्धि पर हकीमी नुसखे

(१) जो दाहिने अण्डमें सूजन हो, तो बायें हाथकी रग असलीमको दागो और यदि बायें अण्डमे सूजन हो तो दाहने हाथकी रग असलीमको दागो। इस उपायसे फोतोंकी सूजन और पीडा नाश हो जाती है।

नोट—रग असलीम एक नस है। यह नस छिगुन्या यानी सबसे छोटी अगुली और उसके पासकी अँगुलीके बीचमें है। इस नसको जलते हुए रेशमी कपड़ेसे दागते हैं। जो लोग अकसर दागनेका काम करते रहते हैं, दागनेकी विधि जानते हैं।

(२) ढाककी जड़की छाल छायामें सुखाकर और महीन पीस-छानकर, सात माशे रोज़, ताज़ा पानीके साथ फाँकनेसे फोतोंकी सूजन और नाभिकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(३) कुन्दर, बायबिडंग और पुरानी ईंट—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे अपने बलाबल अनुसार, ६ माशेसे १ तोले

तक "घी"में मिलाकर खानेसे एक दिनमें ही फोते ठीक अपनी हालत पर आ जाते हैं, बशर्त्तेकि, पहले दिन ही वमन हो जावे।

(४) २० माशे हब्बुल्लास दस तोले पानीमें औटाओ, जब चौथाई यानी अढ़ाई तोले पानी रह जाय, उसमें तीन तोले ४ माशे "घी" मिलाकर गुनगुना-गुनगुना खड़े होकर पीलो। इससे फोतेके रोगमें लाभ होता है।

(५) भुना हुआ सुहागा ६ रत्ती पीसकर और "पुराने गुड़"में मिलाकर तीन गोलियाँ बनालो। हर सवेरे एक गोली खाकर, ऊपरसे थोड़ा "घी" पीने और बिना नोनका मलीदा खानेसे अण्ड-वृद्धि रोग आराम हो जाता है।

(६) ऊँटकी मैंगनी और थोड़ीसी हल्दी पानीमें मिलाकर औटाओ; जब गाढ़ी हो जावे रख लो। इसको पीस-पीस कर और आगपर गरम करके फोतोंपर लगानेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है।

(७) बकरीकी मैंगनी जलाकर राख कर लो। राखके बराबर "खुरासानी अजवायन" ले लो। दोनोंको पानीमें पीस और गुनगुनी करके फोतोंपर लगाओ। इससे फोतोंकी सूजन और खुजली आराम हो जाती है।

(८) अरण्डकी जड़ सिरकेमें पीसकर और गुनगुनी करके लगा-नेसे फोतोंकी सूजन आराम हो जाती है।

(९) अरहर पानीमें पीसकर गुनगुनी-गुनगुनी लगानेसे बाल-कोंके फोते बढ़नेके रोग आराम हो जाते हैं।

(१०) अगर फोतेमें गरमीसे सूजन हो, तो "भाँग"को पानीमें भिगो लो और उस पानीमें फोतोंको जितनी देर रख सको, रखो। इस तरह दो बार करनेसे लाभ होता है।

(११) अगर फोतोंमें गरमीसे सूजन हो, तो छिले हुए मसूर और

अनारकी छाल बराबर-बराबर लेकर पानीमें पकाओ। जब गल जावें पीसकर फोतोंपर लगा दो।

(१२) अगर फोतोंमें सर्दीसे सूजन हो, तो रेंडीकी गरी पानीमें पीसकर गरम करो और नित्य २।३ बार फोतोंपर लगाओ। इससे फोतोंका बढ़ना आराम हो जावेगा।

(१३) अगर सर्दीसे सूजन हो, तो "माजूफल और असगन्ध" पानीमें पीसकर गरम करो और सुहाता-सुहाता लेप करो।

(१४) नरकचूर पानीमें पीसकर और गरम करके गुनगुना-गुनगुना लेप करनेसे सर्दीसे हुई फोतोंकी सूजन आराम हो जाती है।

(१५) अगर फोतोंमें चोट लग जावे, तो थोड़ीसी "हल्दी" पीसकर और "अण्डेकी जर्दी"में मिलाकर आग पर गरम करो और निवाया-निवाया लेप लगाओ।

(१६) अगर फोते सख्त हो जावें, तो "सफेदजीरा और काली-मिर्च" पानीमें पीसकर आगपर पकाओ और लेप करो; सख्ती कम हो जायगी।

(१७) अगर फोतोंमें खुजली हो, तो "सिरसकी छाल" पानीमें पीसकर फोतोंपर लेप करो।

(१८) अगर फोतोंमें सूजन हो, तो "नाजबो" पानीमें पीसकर फोतोंपर लेप करो।

(१९) अगर फोतोंमें घाव हो जायँ, तो "कीकरकी छाल" जौकुट करके पानीमें औटाओ और उसीसे ज़ख्मको धोया करो।

गलगण्डके लक्षण ।

मनुष्यके गले या ठोड़ीमें, बडी या छोटी, कड़ी और अचल, अण्डकोषके समान, जो सूजन लटकती है, उसे "गलगण्ड" कहते हैं बोलचालकी ज़बानमें उसे "घघा या थाती" कहते हैं ।

नोट—गलेमें ही नहीं—दाढ़ी, ठोड़ी और गर्दन इन तीनोंही स्थानोंमें "गलगण्ड" पैदा होता है । भोज कहता है—दाढ़ीमें अथवा ठोड़ीमें अथवा गर्दन या गलेमें जो बड़ी या छोटी अण्डकोषके समान सूजन लटकती है, उसे "गलगण्ड" कहते हैं । गलेमें सूजनके लटकनेकी बात कहना तो उपलक्षण मात्र कहना है ।

सम्प्राप्ति ।

गलेमें दूषित हुए वात, कफ और मेद—गलेकी मन्या नाड़ियोंका आश्रय लेकर—अपने-अपने लक्षणों वाले जो गोले पैदा करते हैं, उनको ही "गलगण्ड"—गलेके गोले कहते हैं । ये गलगण्ड रोग वात, कफ और मेदके भेदसे तीन तरहका होता है ।

खुलासा—दूषित हुए वात, कफ और मेद—गलेके बीचमें आकर, अनुक्रमसे, अपने-अपने लक्षणों वाली सूजन करते हैं, उस सूजनको

ही "गलगण्ड" कहते हैं। ध्यान रखना चाहिये, कि यह रोग अपने स्वभावसे ही पैत्तिक नहीं होता।

वातज गलगण्डके लक्षण।

जिस गलगण्डमें सूई चुभानेका सा दर्द होता है, जो काली-काली शिराओं या नसोंसे छाया रहता है, जिसका रंग काला या लाल होता है और जो छूनेसे खरदरा मालूम होता है, उसे "वातज गलगण्ड" कहते हैं। यह गलगण्ड बहुत दिनोंमें बढ़ता है, पकता नहीं है; किसी-किसी समय अपनी इच्छासे पक भी जाता है। इस गलगण्ड रोगीका मुँह नीरस रहता है एवं गला और तालू सूखा रहता है।

कफज गलगण्डके लक्षण।

जो गलगण्ड स्थिर या निश्चल होता है, जिस जगह पैदा होता है उसी जगहके रंगके समान रंग वाला होता है, जो भारी होता है, जिसमें थोडी-थोड़ी पीडा होती है, जिसमें खुजली बहुत चलती है, जो छूनेमें शीतल और बड़ा होता है, उसे "कफज गलगण्ड" कहते हैं। यह गलगण्ड बहुत दिनोंमें बढ़ता है, बहुत दिनोंमें ही किसी समय पक जाता है और पकनेके समयमें थोड़ी-थोड़ी वेदना करता है। इस गलगण्ड वाले रोगीके मुँहका स्वाद चिकना और मीठा होता है, गले और तालूमें कफ भरा रहता है अथवा ये दोनों कफसे लिहसे से रहते हैं।

मेदज गलगण्डके लक्षण।

जो गलगण्ड छूनेमें नर्म, पाण्डु वर्ण, बदबूदार और खुजलीयुक्त होता है, जिसमें पीड़ा नहीं होती, जो लौकी या तूम्बीकी तरह लटकता है, जो जडमें पतला और ऊपरसे मोटा होता है, जो शरीरके बढ़नेके साथ बढ़ता और शरीरके घटनेके साथ घटता है, उसे "मेद-सम्बन्धी

इस चित्रमें गलगण्डके चार रोगियोंके चित्र हैं। बाएँ हाथकी ओरसे पहले चित्रमें मेदज गलगण्ड है, जो लौकीकी तरह लटक रहा है। दाहने हाथकी ओर दूसरेमें वातज गलगण्ड है, जिसमें काली-काली नसें दीख रही हैं। नीचेके भागमें, बायें हाथकी ओरसे तीसरे चित्रमें कफज गलगण्ड है। यह गलगण्ड जड़में फैला हुआ और बड़ा है। दाहने हाथकी ओर चौथे चित्रमें भी वातज गलगण्ड ही दिखाया गया है।

गलगण्ड" कहते हैं। इस गलगण्ड वालेका मुंह तेलको तरह चिकना होता है तथा गलेसे हर समय घुरघुर-घुरघुर आवाज़ होती रहती है।

खुलासा—वातज गलगण्डका रंग काला, लाल या धूसर होता है। कफजका रंग अपने पैदा होनेकी जगहके रंगके जैसा होता है और मेदजका रंग पाण्डु या मटियासा होता है। वातज गलगण्डमें सूई चुभानेकीसी पीड़ा होती है, कफजमें कम पीड़ा होती है और मेदजमें पीड़ा होती ही नहीं। वातज गलगण्डमें खुजली नहीं चलती, पर कफज और मेदजमें खुजली चलती है। वातज गलगण्ड पर काली-काली नसें छायी रहती हैं और वह रूखा होता है, कफज भारी और शीतल होता है, तथा मेदज बदबूदार, लौकीके समान लटकने वाला, ऊपरसे मोटा और जड़मेंसे पतला होता है। वातज गलगण्ड पकता नहीं—कभी अपनी इच्छासे पक जाता है और देरमें बढ़ता है, कफज भी देरमें बढ़ता और किसी समय पक जाता है, पर मेदजमें यह खास बात होती है कि, वह शरीरके घटनेके साथ घटता और बढ़नेके साथ बढ़ता है। वातज गलगण्ड-रोगीका मुँह नीरस रहता है, उसका तालू और गला सूखता है। कफज गलगण्ड वालेका मुँह मीठा और चिकना रहता है एव तालू और गलेमें कफ भरा रहता है। मेदजवालेका मुँह तेलकी तरह चिकना रहता और गलेसे आवाज होती रहती है।

असाध्य गलगण्ड।

जो गलगण्ड-रोगी बड़ी तकलीफके साथ साँस लेता हो, जिसका सारा शरीर नरम हो गया हो, जिसे अरुचि और क्षीणता हो गई हो, जिसका गला बैठ गया हो तथा जिसके गलगण्डको पैदा हुए एक वर्ष बीत गया हो, ऐसे गलगण्डीका वैद्य इलाज न करे, क्योंकि ये असाध्य गलगण्डके लक्षण हैं।

गलगण्ड-चिकित्सा।

नोट—गलगण्ड रोगमें कफ नाशक चिकित्सा करना ख़ास तौरसे ज़रूरी है। वातज गलगण्डमें वैद्य पहले कमलकी नाल या अन्य वातनाशक औषधियोंके पत्तोंकी पिंडी बनाकर बांधे या स्वेद देवे, कफज गलगण्डमें कफनाशक स्वेद दे और उपनाह कर्म करे तथा रोगीको स्वेदित करके विस्रावण करावे। मेदजमें पहले स्निग्ध करके फिर शिरावेध करावे और लेप आदि करे। गलगण्डमें वमन कराना और खून निकलवाना हितकारी है। इस रोगमें जौ, मूंग, कड़वे परवल तथा तीक्ष्ण और रूखे पदार्थ खाने चाहिये।

(१) समन्दर फल, सहँजनेके बीज और दशमूलकी समस्त औषधियोंको पीसकर सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे वातज गलगण्ड आराम हो जाता है।

(२) देवदारू और इन्द्रायणको एकत्र पीसकर लेप करनेसे कफज गलगण्ड आराम हो जाता है।

नोट—कफज गलगण्डमें वमन, शिरोविरेचन और सब तरहका विरेचन भी हितकारी है।

(३) पीपर और थूहरका लेप करनेसे अथवा चूना, लोहेका मैल, दन्ती और रसौतका लेप करनेसे मेदज गलगण्ड नाश हो जाता है। अथवा सवेरे ही उठकर, सागौनके वृक्षके सारको "गोमूत्र"में पीसकर पीनेसे मेदज गलगण्ड आराम हो जाता है।

(४) सरसों, सहँजनेके बीज, सनके बीज, अलसी, जौ और मूलीके बीज,—इनको बराबर-बराबर लेकर, खट्टे माठे या खट्टे दहीमें सिल पर पीसकर, गलगण्ड पर लेप करनेसे नया गलगण्ड

आराम हो जाता है; इतना हमने परीक्षा करके देखा है। पर "वंगसेन"में इस नुसख़ेसे सब तरहके गलगण्ड, ग्रन्थि और दारुण गण्डमालाका आराम होना लिखा है।

(५) पुन्नाग और जल कुम्भीकी भस्मको सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करनेसे पुराना गलगण्ड भी आराम हो जाता है।

(६) सअरकी पूंछका अगला हिस्सा आगमें जला लो। फिर उसको "कड़वे तेल"में मिलाकर नास दो। इससे गलगण्ड निस्सन्देह आराम हो जाता है।

(७) हस्तिकर्ण पलाशकी जड़, चाँवलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(८) ६ माशे सफेद फूलवाली विष्णुक्रान्ताकी जड़को एक तोले "घी"में ख़ूब पीसकर, सवेरे ही कुछ दिन पीनेसे गलगण्ड नाश हो जाता है।

नोट—अपराजिताको विष्णुक्रान्ता भी कहते हैं। इसको बोलचालमें नीली कोयल और सफेद कोयल कहते हैं। सफेद कोयलको जलमें पीसकर सवेरे ही पीने और घीके साथ भोजन करनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(९) कडवी तूम्बी या लौकीके पके फलमें जल या शराब भर कर सात दिन तक रक्खी रहने दो, इसके बाद इसे पीओ। इस उपायसे गलगण्ड फौरन ही नाश हो जाता है।

(१०) गिलोय, नीम, जटामासी, तुन, पीपर, खिरेंटी, गंगेरन और देवदाली—इनको एक-एक तोले बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर, सबको क़लईदार कड़ाहीमें पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इसमेंसे १ तोले तेल नित्य पीनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(११) जलकुम्भी, सैंधानोन और पीपर बराबर-बराबर लेकर

पीस-छान लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण पानीके साथ पीनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(१२) एक तोले जलकुम्भीकी छालकी राख एक छटांक "गोमूत्र"में सानकर पीने और कोदोंके भातका भोजन करनेसे गलगण्ड निश्चय ही आराम हो जाता है।

(१३) लाल अरण्डकी जड़को चाँवलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे गलगण्ड शीघ्र ही आराम हो जाता है।

(१४) पुराने ककोडेके एक तोले स्वरसमें ३ माशे "कालानोन" और ४ माशे "सेंधानोन" मिलाकर नस्य लेनेसे भारीसे भारी गलगण्ड भी नाश हो जाता है।

(१५) नीले फूलके धमिराको पानीमें औटाकर वफारा लेनेसे गलगण्ड फौरन नाश हो जाता है।

(१६) कायफलको महीन पीस-छान कर गलगण्ड पर मलनेसे गलगण्ड शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(१७) गलगण्ड रोगमें पछने लगाकर, उस पर गण्डगोपाल नामक कीडेका लेप करनेसे गलगण्ड नष्ट हो जाता है। "भावप्रकाश"में लिखा है,कि इस नुसखेको अनेक आदमियोंने अनेक वार आज़माया है।

नोट—गण्डगोपाल यो गण्डगुयालि एक कीड़ा होता है। यह ग्रामके वगीचोंमें वहुत मिलता है।

(१८) वरनाकी जड़का काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे गलगण्ड आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१९) चाँवलोंके पानीमें "कचनारकी छाल" पीसकर और "सोंठका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे गलगण्ड और गण्डमाला रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०) अमलताशकी जड चाँवलोंके पानीमें महीन पीसकर गलगण्ड और गण्डमाला पर लेप करनेसे अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

गलगण्ड नाशक उत्तमोत्तम योग।

अमृतादि तैल।

गिलोय, नीमकी छाल, हिंस्रक वृक्ष, कुड़ेकी छाल, पीपल, बला, अतिबला और देवदारू—इनको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी कर लो।

फिर तिलका तेल चार सेर, पानी सोलह सेर और ऊपरकी लुगदीको पकाओ; तेल मात्र रहने पर छान लो। इसमेंसे छै माशे तेल नित्य पीनेसे गलगण्ड आराम हो जाता है। गलगण्ड पर यह "अमृतादि तैल" प्रसिद्ध है।

तुम्बी तैल।

वायविड़ंग, जवाखार, सैंधानोन, वच, रास्ना, चीता, त्रिकुटा और हींग—इनको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। सरसोंका तेल चार सेर और पकी तितलौकीका रस सोलह सेर तैयार कर लो।

फिर तेल, रस और लुगदीको मिलाकर पकाओ। तेल मात्र रहने पर छान लो। इस तेलकी नस्य लेनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

हिंस्राद्य तैल।

जटामासी, वच, गिलोय, त्रिफला, चीता, देवदारू और पीपल—इनको बराबर-बराबर आध-आध पाव लेकर पानीके साथ पीस लो।

फिर चार सेर तिलका तेल, सोलह सेर भांगरेका रस और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलको "शहद"में

मिलाकर लेप करने और नस्य देनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

शाखोटाद्य तैल।

फूल प्रियंगू, मुलेठी, कूट, पीपल चन्दन, नागरमोथा और नीमकी छाल—इनको आध-आध पाव लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर शाखोट यानी सिहोड़े या सहोरेके वृक्षकी छालका रस सोलह सेर निकाल लो। इसके बाद चार सेर तेल, रस और लुगदीको मिलाकर पकाओ तेल मात्र रहने पर उतार लो। इस तेलसे अत्यन्त बढा हुआ गलगण्ड भी नाश हो जाता है।

काञ्चनार गुग्गुल गुटिका।

कचनारके पेड़की छाल चालीस तोले, हरड़ ८ तोले, बहेड़ा ८ तोले, आमले ८ तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, बरनाकी छाल ४ तोले, इलायची १ तोले, दालचीनी १ तोले और तेजपात १ तोले,—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। फिर जितना यह चूर्ण हो उतना ही "शुद्ध गूगल" पीस-कूट कर इसी चूर्णमें मिला दो और फिर कूटो ; जब सब एक दिल हो जायँ, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। यही "कचनार गूगल" है।

इन गोलियोको सवेरे ही गोरखमुण्डीके काढ़े अथवा खैरसारके काढ़े अथवा हरडके काढ़े या गरम पानीके साथ खानेसे गलगण्ड, घोर गण्डमाला, अपची, अर्बुद, गाँठ, व्रण, कोढ़ और भगन्दर रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—यह "कचनार गूगल" बहुत करके गण्डमाला पर प्रसिद्ध है, पर इससे गलगण्डमें भी फायदा होता है, इसीसे हमने गलगण्डमें ही इसे लिख दिया है। गण्डमालाकी तो यह खास दवा ही है। यह नुसखा "शार्ङ्गधरका" है। "भावप्रकाश' के नुसख़ेसे इस नुसखेमें बरना, इलायची, तेजपात, और दालचीनी कुछ कम लिखे हैं और सब समान हैं। "भावप्रकाश"का नुसख़ा हम गण्डमालामें लिखेंगे।

पचीसवाँ अध्याय

गण्डमाला और अपचीके लक्षण

कोखमें, कन्धोंमें, गर्दनमें, नाड़के पीछे मन्या नाड़ीमें, गलेमे, वग़लमें, पेड़ू और जाँघोंकी सन्धियों यानी वंक्षणोंमें—मेद और कफसे—छोटे-बड़े वेर या आमलेकी समान बहुतसी गण्ड या गाँठें निकल आती हैं, उन्हींको "गण्डमाला" कहते हैं।

इस गण्डमालाका ही ऐक भेद "अपची" है। उपरोक्त गण्डमालाकी गाँठोंमेंसे कितनी ही पककर स्रवने लगती हैं, कितनी ही वैठ जाती हैं और कितनी ही नयी पैदा हो जाती हैं—इन गण्डोंकी ऐसी स्थिति बहुत दिनों तक बनी रहती है, इसीको "अपची" कहते हैं। मतलब यह है, कि गण्डमाला और अपची एक ही रोग है, स्थितिभेदसे दो नाम पड़ गये हैं।

साध्यासाध्य लक्षण।

विना उपद्रवकी अपची साध्य है; किन्तु जो पीनस, पसलीका दर्द, खाँसी, ज्वर और वमनयुक्त हो वह असाध्य है।

गराडमाला और अपची नाशक नुसखे

(१) सरसों, नीमके पत्ते और मिलावे—इन तीनोंको एकत्र जलाकर राख करलो। इस राखको बकरेके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अपची आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) पीपलकी छाल, जलवेंत, और गायका दांत,—इनको एकत्र जलाकर राख करलो। इस राखको "सूअरकी चरबीमें मिलाकर" लेप करनेसे अपचीके व्रण आराम हो जाते हैं।

(३) अलम्बुषा (लज्जावन्ती) के पत्तोंका रस दो-दो तोले नित्य पीनेसे अपची, गण्डमाला, गलगण्ड और कामला रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) चन्दन, वच, हरड, पीपलकी लाख, और कुटकी—इनके काढ़ेके साथ पकाया हुआ तेल पीनेसे अपची रोग समूल नष्ट हो जाता है।

(५) वरनाकी जड़का काढ़ा "ना-बराबर शहद और घी" मिलाकर पानेसे बहुत पुरानी गण्डमाला और अपची आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(६) दो तोले कचनारकी छालको चाँवलोंके जलमें पीसकर, दो तोले या चार तोलेकी मात्रामें पीनेसे गण्डमाला नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(७) आकका दूध, गुड़हरके फूल, तेल और क्षारोदक इनको समान भाग लेकर और मिलाकर सात दिन तक गण्डमाला पर लेप करनेसे गण्डमाला आराम हो जाती है।

(८) छछूंदरका तेल लगानेसे गण्डमाला नष्ट हो जाती है।
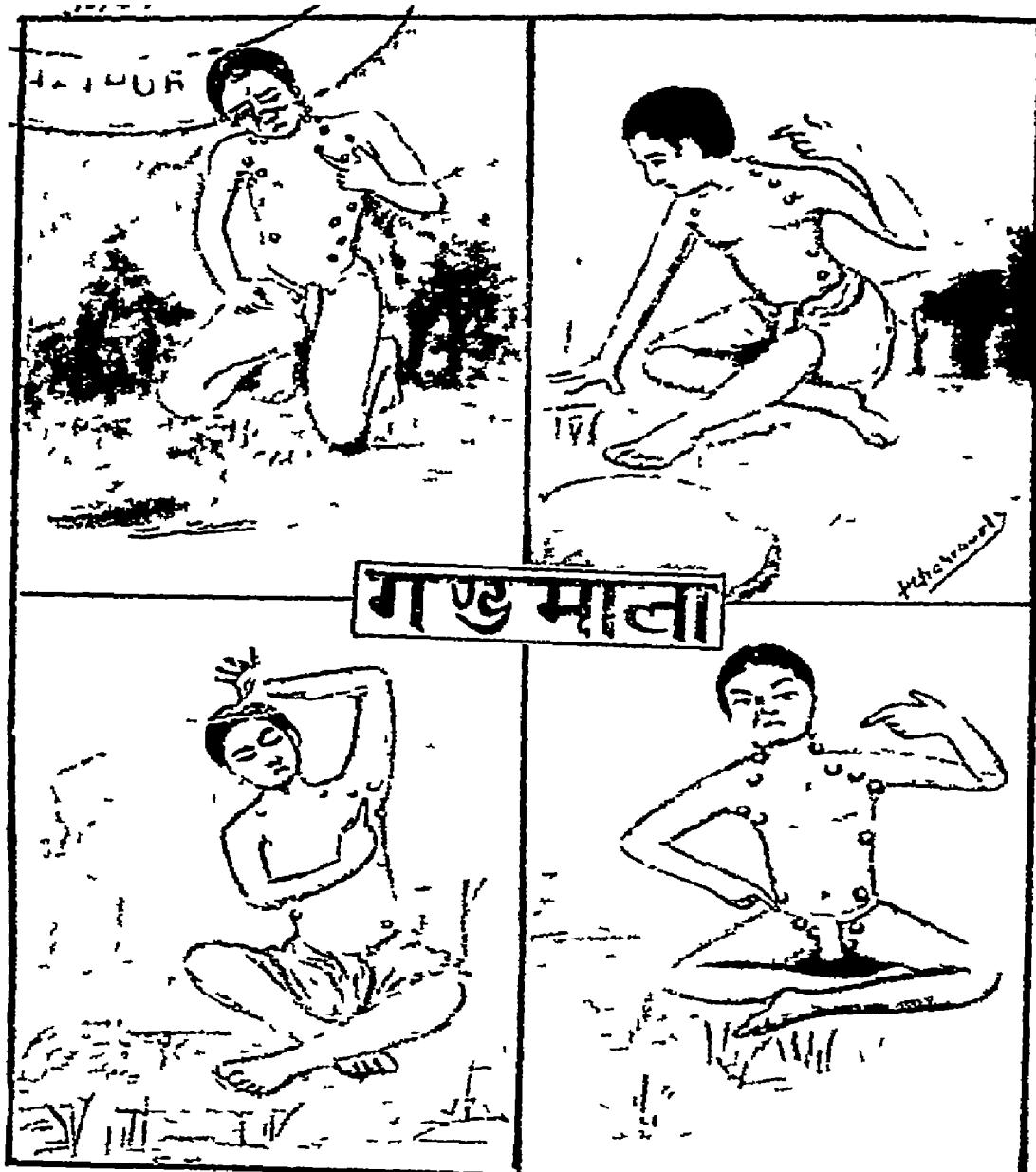
बायें हाथकी तरफसे पहले चित्रमें रोगी अपनी छाती, गले वक्षणाकी ग्रन्थियों-को दिखा रहा है। दूसरेमें रोगी अपनी गर्दनके पीछेकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है। नीचे उतरकर, बायीं तरफके तीसरे चित्रमें रोगी अपनी कांख या बगलकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है और चौथे चित्रमें रोगी अपने दोनों हाथोंकी अंगुलियों-से अपने गले और वक्षणाकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है। इस चित्रसे विद्यार्थी समझ सकेगा, कि गण्डमाला कहाँ-कहाँ होती है।

तिलका तेल १ सेर, छछूंदरका मांस पाव-भर, पानी ४ सेर और छछूंदरके मांसका काढ़ा १ सेर—इन सबको मिलाकर तेल पकाओ ; जब तेल मात्र रहजाय छानलो। इस तेलको मालिशसे गण्डमाला आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—एक सेर छछूदरका मांस चार सेर पानीमें पकाओ। जब एक सेर पानी रह जाय छान लो। यही छछूदरके मांसका काढ़ा है।

(९) कचनारकी छालके काढ़ेमें "सोंठ" मिलाकर पीनेसे गण्डमाला फौरन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—पाव-भर पानीमें २ तोले कचनारकी छाल पकाओ, जब आधी छटाँक पानी रह जाय छानकर उसमें ४ माशे "सोंठका चूर्ण" मिला दो।

(१०) वरनाकी जड़के काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे गण्ड-माला नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—ठीक ऊपरको यानी न० ९की विधिसे काढा बना-छानकर, शीतल होनेपर उसमें एक तोले "शहद" मिलाकर पीलो।

(११) सफेद अपराजिताकी जड़को "गोमूत्र"में पीस कर लेप करनेसे पुरानी गण्डमाला भी आराम हो जाती है।

(१२) सहंजनेकी छाल और देवदारू एकत्र काँजीमें पीसकर लेप करनेसे अपची नाश हो जाती है।

(१३) सरसों, सहंजनेके बीज, सनके बीज, अलसी, जौ और मूलीके बीज—इनको खट्टे माठेमें पीसकर लेप करनेसे गलगण्ड, ग्रन्थि और गण्डमाला आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१५) हाथके पहुंचेके ऊपर और अङ्गुलियोंके अन्तरितमें नश्तरसे तीन रेखा खींच देनेसे अपची नष्ट हो जाती है।

(१५) अमलताशकी जड़को चाँवलोंके पानीमें पीसकर लेप करने और नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(१६) निर्गुण्डीकी जडको पानीमें पीसकर नस्य लेनेसे गण्ड-माला नाश हो जाती है।

(१७) कड़वी तूम्बीके स्वरसकी नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(१८) नीमके तेलकी नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(१९) कडवी तूम्बीके स्वरसमे "पीपरका चूर्ण" मिलाकर नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(२०) पोपरका ६ माशे चूर्ण ६ माशे "शहद"में मिलाकर चाटने से गण्डमाला नाश हो जाती है।

(२१) २ तोले लजवन्तीका स्वरस पीनेसे गण्डमाला, गलगण्ड, अण्डवृद्धि और गाँठ—ये सब आराम हो जाते हैं।

(२२) दो तोले जंगली कपासकी जड चाँवलोंके पानीमें पीस कर पूरी बनाओ। इन पूरियोंके खानेसे अपची नाश हो जाती है।

(२३) सहँजनेकी छाल और देवदारू—बराबर-बराबर लेकर काँजीमें पीस और गरम करके लेप करनेसे घोर अपची भी नाश हो जाती है।

(२४) कमलकी जड या चिरचिरेकी जड़को विधि-पूर्व्वक न्योतकर और "पुष्य नक्षत्र"में लाकर, रेशमके धागेमें लपेट कर, गलेमें बाँधनेसे अपची नाश हो जाती है।

गण्डमाला नाशक उत्तमोत्तम योग।

चन्दनाद्य तैल।

लालचन्दन, हरड, लाख, वच और कुटकी—इनको समान-समान लेकर, सिल पर, पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको

मिलाकर तेल पका लो। इसमेंसे ६ माशे तेल नित्य पीनेसे अपची रोग नाश हो जाता है।

नोट—लुगदी एक सेर हो, तो तिलीका तेल चार सेर और पानी सोलह सेर लेकर तेल पकाओ। इसी हिसाबसे कम भी पका सकते हो।

गुंजाद्य तैल।

घुंघची या चिरमिटीकी जड़ और फलोंके काढ़ेमें "सरसोंका तेल" पकाकर, गण्डमाला पर मालिश करने और नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—एक सेर सफेद घुंघचीकी जड़ और फल लेकर आठ सेर पानीमें औटाओ; जब दो सेर पानी रह जाय छान लो। इस काढ़े और आध सेर तेलको मिलाकर तेल पका लो, जब तेल मात्र रह जाय छान लो। अथवा सफेद घुँघचीकी जड़ और फल पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो।

दूसरा गुञ्जाद्य तैल।

सफेद घुंघचीकी जड़, कनेरकी जड़, विधारेके बीज, आकका दूध और सरसों—इनको छटाँक-छटाँक भर लो। सरसोंका तेल सवा-सेर और गोमूत्र पाँच सेर लो। सबको मिलाकर तेल पकालो; जब तेल मात्र रह जाय छान लो। इस पके हुए तेलको, फिर इन्हीं सब चीज़ोंके साथ, क्रमशः, दश दफा पकाओ; तब उत्तम "गुञ्जाद्य तेल" तैयार होगा।

इस तेलकी मालिश करनेसे दारुण गण्डमाला, अपची और नाडी व्रण आदि नष्ट हो जाते हैं।

निर्गुण्डी तैल।

निर्गुण्डीका रस ४ सेर, कलिहारीकी जड़का कल्क पाव-भर

और तिलीका तेल एक सेर सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलकी नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। परीक्षित है।

चक्रमर्दादि सिन्दूर तैल।

चकवडकी जड़ आध सेर लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। कुकुर भाँगरेका रस १६ सेर तैयार कर लो। ४ सेर सरसोंका तेल भी पास रख लो।

अब तेल, रस और लुगदीको बहुत ही मन्दी आगसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उसमें आध सेर "सिन्दूर" मिलाकर नीचे उतार लो। इस तेलकी मालिश करनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। गण्डमाला पर यह तेल उत्तम है। परीक्षित है।

नोट—जब तेल पक जाय, तब उतारते समय, "सिन्दूर" मिलाना और झट उतार लेना चाहिये।

शाखोटक बिल्वाद्य तैल।

सिहोडेकी छाल, बेलगिरी, कनेर और निर्गुण्डी—इन चारोंको पाव-पाव भर लेकर सिल पर पीस लो। फिर चार सेर तेल सोलह सेर पानी और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। तेल मात्र रहने पर उतार लो। इस तेलको नस्यादि कर्म्मोंमें प्रयोग करनेसे गण्डमाला आराम हो जाती है।

काकादन्यादि तैल।

काकादनीकी जड पाव-भरको पानीके साथ सिल पर पीस लो। निर्गुण्डीका स्वरस ४ सेर निकाल लो। काँजी ४ सेर और कडवा तेल एक सेर पास रख लो। अब इन सबको मिलाकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलकी नस्यसे अपची नाश हो जाती है।

व्योषाद्य तैल।

त्रिकुटा, वायविड़ंग, मुलेठी, सैंधानोन और देवदारू—इनको छटाँक-छटाँक-भर लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। इस लुगदी, सवा सेर तेल और पाँच सेर पानीको मिलाकर तेल पका लो; जब तेल मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इस तेलकी नस्य देनेसे अत्यन्त कष्टसाध्य अपची भी चली जाती है।

काञ्चनार गुग्गुल।

कचनारकी छाल २० तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, मिर्च ४ तोले, हरड़ २ तोले, बहेड़े २ तोले, आमले २ तोले, बरनाकी छाल १ तोले, तेजपात ३ माशे, इलायची ३ माशे और दालचीनी ३ माशे—इन सबको पीस-छान लो। फिर इस चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लेकर इस चूर्णमें मिला दो और खूब कूटो एवं तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली नित्य सवेरे ही खानेसे महाउग्र गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, अर्बुद, ग्रन्थि, व्रण, गुल्म, कोढ़ और भगन्दर—ये रोग नष्ट हो जाते हैं। इन गोलियों पर ज़रा-ज़रा गरम गोरखमुण्डीका काढ़ा, खैरसारका काढ़ा या हरड़का काढ़ा अनुपानके रूपमें पीना चाहिये।

नोट—इस कांचनार गूगल और गलगण्ड रोगमें लिखी हुई कचनार गूगलमें कितना भेद है, पाठकोंको मिलानेसे मालूम हो जायगा। सिर्फ बरना, दालचीनी, इलायची और तेजपातकी तोलमें ही थोड़ा फर्क है। यह नुसखा "भावप्रकाश"का है और वह "शार्ङ्गधर"का।

ग्रन्थि और अर्बुद-वर्णन।

छब्बीसवाँ अध्याय

ग्रन्थिके लक्षण।

अत्यन्त दूषित हुए वातादि दोष मांस, रुधिर, मेद और नसोंको दूषित करके ऊँची, गोल और गाँठके जैसी सूजन उत्पन्न करते हैं, उसीको "ग्रन्थि रोग" कहते हैं। यह सूजन धीरे-धीरे पकती है।

वातज ग्रन्थिके लक्षण।

जो ग्रन्थि खिंचती और बढती मालूम हो, फटतीसी जान पडे, छेदने और उठाकर फेंकने जैसी मालूम हो, मथनेके समान मालूम हो, फोडने सरीखी पीडा हो ; ग्रन्थि काली, कोमल और मशककी समान भरीसी दीखे और तोड़नेसे साफ खून निकले, उसे "वातज ग्रन्थि" समझो।

पित्तज ग्रन्थिके लक्षण।

पित्तज ग्रन्थिमें जलन तथा सोखने, चसने, पकने और

जलनेके समान पीड़ा होती है। उसके फूटने पर, उसमेंसे पित्तरक्तके रंगकी समान राध और दुष्ट रुधिर निकलता है।

कफज ग्रन्थिके लक्षण।

कफज ग्रन्थि शीतल, शरीरके रंगके समान रंगवाली, ज़रा-ज़रा दर्द करनेवाली, अत्यन्त खुजली वाली, पत्थरके समान सख्त, बड़ी, बहुत देरमें बढ़ने और पकनेवाली होती है। फूटनेसे उसमेंसे सफेद और गाढ़ी राध निकलती है।

मेदज ग्रन्थिके लक्षण।

मेदज ग्रन्थि शरीरके बढ़नेके साथ बढ़ता और घटनेके साथ घटती है। यह चिकनी, बड़ी, खुजलीयुक्त और थोड़ी पीड़ा करनेवाली होती है। फूटने पर इसमेंसे खल और घीके जैसी मेद निकलती है।

शिराज ग्रन्थिके लक्षण।

कमज़ोर आदमी अगर अत्यन्त ज़ोर या मिहनतके काम करता है, तो उसकी "वायु" कुपित होकर, नसजालको सुकेड़ कर, इकट्ठा करके और सुखाकर, ऊँची और गोल गाँठ पैदा करती है।

साध्यासाध्य लक्षण।

शिराज ग्रन्थि पीड़ायुक्त और चंचल हो, तो कष्टसाध्य होती है। अगर वह पीड़ा-रहित, निश्चल, बड़ी और मर्मस्थलमें उत्पन्न हुई होती है, तो असाध्य होती है। इसलिये इसका इलाज न करना चाहिये।

और ग्रन्थियाँ भी अगर पीड़ा-रहित, अचल, बड़ी और मर्मस्थलमें पैदा हुई होती है, तो असाध्य होती हैं। भोजने भी कहा है, कि पाँच तरहकी ग्रन्थियोंमें जो गाँठ पीड़ा-रहित हो, मर्मस्थानमें

पैदा हुई हो और अचल हो, उसका इलाज न करना चाहिये। गाल, गर्दन और सन्धियोंमें पैदा हुई ग्रन्थियोंकी चिकित्सा करना बड़ा कठिन है।

अर्बुदके निदान-लक्षण ।

शरीरके किसी भागमें दूषित हुए वातादि दोष, मांस और रक्तको दूषित करके गोल, कोमल, अल्प पीड़ायुक्त, बड़ी, गहरी जड़वाली, देरमें बढ़ने और पकनेवाली गाँठ उत्पन्न करते हैं, उसीको "अर्बुद" कहते हैं। वात, पित्त, कफ, मांस, रक्त और मेद– इन भेदोंसे अर्बुद छै तरहका होता है। इसके लक्षण ग्रन्थिके समान होते हैं।

नोट—बहुत मांस खानेसे, खून और मांस बिगड़ कर, शरीरमें बड़ी, बड़ी, गोल और अचल गाँठ पैदा करते हैं। यह न तो पकती है और न इसमें कभी दर्द होता है। बोलचालमें इसे "बड़ो" कहते हैं।

रक्तार्बुदके लक्षण ।

अपने कारणोंसे दुष्ट हुए दोष शिरागत रुधिरको संकुचित और पीड़ित करके मांसका गोला पैदा करते हैं। यह ज़रा-ज़रा पकता और इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा मवाद निकलता है। यह मांसांकुरोंसे व्याप्त होता और बहुत जल्दी बढ़ता है। इसमेंसे रुधिर निकलता है। इसे "रक्तार्बुद" कहते हैं। यह असाध्य होता है। रक्तार्बुद रोगीके रुधिर-क्षयके उपद्रवोंकी वजहसे उसका शरीर पीला पड़ जाता है।

मांसार्बुदके लक्षण ।

घूंसे वग़ैरः की चोटसे शरीरमें जो दर्द हो जाता है, उस दर्दसे मांस दूषित होकर सूजन करता है। वह सूजन पीड़ा-रहित,

चिकनी और शरीरके रंगके समान होती है। वह पत्थरकी तरह स्थिर रहती है और पकती नहीं।

जिस मनुष्यका मांस दूषित हो जाता है अथवा जो मनुष्य सदैव मांस खाते हैं, उनको यह "मांसार्बुद रोग" होता है। यह मांसार्बुद असाध्य है; तथा साध्य अर्बुदोंमें भी नीचे लिखा हुआ अर्बुद त्याज्य है :—

जिसमेंसे मवाद बहता हो, जो मर्मस्थानोंमें पैदा हुआ हो अथवा नाकके छेदमें पैदा हुआ हो और जो अचल हो—ऐसा अर्बुद असाध्य होता है।

अध्यर्बुदके लक्षण ।

पहले जिस जगह अर्बुद पैदा हुआ हो, उसीके ऊपर दूसरा अर्बुद पैदा हो जाय; यानी एक रसौली पर दूसरी रसौली पैदा हो जाय, उसे "अध्यर्बुद" कहते हैं।

नोट—इस पर पृष्ठ ८१५ का नं० १७ नुसख़ा परमोत्तम है। उससे रसौली बैठ जाती है।

द्विरर्बुदके लक्षण ।

एक साथ दो अर्बुद अथवा एकके पीछे दूसरा अर्बुद क्रमसे पैदा हो, उसको "द्विरर्बुद" कहते हैं। यह भी असाध्य है।

अर्बुद न पकनेका कारण ।

कफकी अधिकतासे या विशेष करके मेदकी अधिकतासे एवं दोषोंकी स्थिरतासे अथवा दोषोंके ग्रन्थिरूप होनेसे सब तरहके अर्बुद नहीं पकते, यानी अर्बुदमें कफ और मेद ज़ियादा होते हैं, इसीलिये वे नहीं पकते।

ग्रन्थ्यर्वुद-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ।

(१) विना पकी ग्रन्थिमें पहले सूजन नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोगमें रोगीके बल की नित्य रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि बलकी रक्षा करनेसे व्याधिका बल घट जाता है।

(२) ग्रन्थि रोगमें स्वेद और उपनाह कर्म करना और सिद्ध प्रलेप प्रयोग करना उचित है।

(३) पकी हुई गाँठको चीर कर उसकी राध निकाल देनी चाहिये और किसी व्रण-शोधक काढ़ेसे घाव धोना चाहिये। फिर घाव भरनेवाला तेल आदि लगाना चाहिये। ये क्रिया वातज ग्रन्थिमें हितकारी है।

(४) पित्तज ग्रन्थिमें पहले जौंक लगवा देना हितकारी है। फिर उसपर दूध और जल मिलाकर तरड़ा देना चाहिये। काकोल्यादि वर्गकी शीतल दवाओंका काढ़ा "मिश्री" मिलाकर पीना चाहिये अथवा दाखके रस और ईखके रसमें "हरडका चूर्ण" मिलाकर पीना चाहिये।

(५) जो ग्रन्थि मर्मस्थानमें पैदा न हुई हों या पकी न हो, उनको छेदकर उस स्थानमें अग्निसे दग्ध करना चाहिये या क्षारादि कर्म करना चाहिये। बिना पकी ग्रन्थिको काटकर, आगसे दग्ध करना चाहिये। इसके बाद क्षारसे संशोधन करके, व्रणके समान इलाज करना चाहिये।

(६) एक शिराज ग्रन्थिको छोडकर, शेष सब ग्रन्थियोंकी यत्न-पूर्वक चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) अर्बुद रोगमे पहले विद्रधिके समान पछने आदि लगाने

चाहिये ; आग और क्षार द्वारा दग्ध करना चाहिये एवं अनेक तरहके लेप आदि लगाने चाहिये ।

(८) अर्बुद रोगमे बाक़ी रहे हुए भी दोष फिरसे अर्बुद पैदा कर देते हैं, इसलिये अर्बुदमें दोषोंको हरगिज बाक़ी न रखना चाहिये, क्योंकि वह शेष दोष, विष और अग्निके समान, मनुष्यको मार देते हैं।

(९) जो ग्रन्थि दवासे आराम न हो, उसे जर्राहसे चिरवाकर घावकी तरह उसका इलाज करना चाहिये । शिराज ग्रन्थिको छोड कर, बाक़ी सब ग्रन्थियोंकी शस्त्र-चिकित्सा कर सकते हैं ।

(१०) आचार्य कहते हैं, कि ग्रन्थि और अर्बुदके पैदा होनेके स्थानों, निदानों, आकारों, दोषों और दूष्योंमें कुछ भी अन्तर नहीं है। इस लिये जर्राही कर्म जाननेवालेको अर्बुद की चिकित्सा भी ग्रन्थिके समान करनी चाहिये ।

ग्रन्थि और अर्बुद रोगकी चिकित्सा।

(१) सज्जी, मूलीका खार और शंखका चूर्ण,—इनको पीसकर लेप करनेसे ग्रन्थि और अर्बुद नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) हल्दी, लोध, पतङ्ग, घरका धूआँसा और मैनसिलको "शहद" में मिलाकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे अर्बुद—ख़ासकर मेदज अर्बुद नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(३) मूलीकी भस्म, हल्दीकी भस्म और शंखका चूर्ण—इनको एकत्र पीस कर लेप करनेसे अर्बुद नष्ट हो जाता है। अर्बुदका यह सिद्ध उपाय है। परीक्षित है।

(४) बडका दूध,कूट और साँभर नोन,—इनको एकत्र मिलाकर

अर्बुद पर लेप करने और ऊपरसे वड़के पत्ते बाँधनेसे हड्डीके ऊपर पैदा हुआ भी अर्बुद नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सहँजनेके बीज, मूलीके बीज, सरसों, तुलसी और इन्द्रजौ—इनको भैंसके माठेमें पीसकर लेप करनेसे अर्बुद नष्ट हो जाता है।

(६) ग्रन्थिरोगमें दाख या ईखके रसके साथ "हरड़का चूर्ण" खाना हितकारी है।

(७) जामुनकी छाल, अर्जुनकी छाल और बेंतकी छाल पीस कर लेप करनेसे ग्रन्थि आराम हो जाती है।

(८) दन्तीकी जड़, चीतेकी जड़, थूहरका दूध, आकका दूध, गुड़, भिलावेके बीज और हीराकसीस—इन सबको पीस कर लेप करनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई गांठ भी पकती और उसमेंसे मवाद निकल कर वह आराम हो जाती है। गांठको पकाने और फोड़नेमें यह लेप रामवाण है। परीक्षित है।

(९) गूलरके पत्तेसे अर्बुदको रगड़ कर, उसके ऊपर राल, प्रियंगू, लालचन्दन, लोध, रसौत और मुलेठी—इनको एकत्र पीस कर और "शहद" मिलाकर लेप करना चाहिये। इस लेपसे सब तरहके अर्बुद नष्ट हो जाते हैं।

(१०) सहँजनेके बीज, मूलीके बीज, सरसों, तुलसीके बीज, जौ और कनेरकी जड़को माठेमें पीसकर लेप करनेसे अर्बुद रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(११) नमक या सीसेसे सेक करनेसे अर्बुद नष्ट हो जाता है। थूहरके डण्डेके सेकसे भी अर्बुदमें लाभ होता है।

(१२) अगर शरीरके किसी मर्मस्थान पर अर्बुद हुआ हो, तो पोईको काँजी और माठेमें पीसकर और "नमक" मिलाकर दिन-रातमें दोनों समय लेप करके पट्टी बाँधो। भगवान चाहे तो भला होगा। परीक्षित है।

(१३) गन्धक, मैंनसिल, सोंठ, वायविड़ंग और जौकी भस्म—इनको पीस-छान कर और "केंकड़ेके खून"में मिलाकर लेप करनेसे सब तरहके अर्बुद नष्ट हो जाते हैं।

(१४) पोईका स्वरस अर्बुद पर लेप करो और ऊपरसे पोईके ही पत्ते बाँध दो। इससे तत्काल अर्बुद नष्ट हो जाता है।

(१५) सफेद मिर्चें, सहंजना, सरसों, जौ और मूलीके बीज—इनका लेप करनेसे ग्रन्थि, अर्बुद और गण्डमाला रोग नाश हो जाते हैं।

(१६) लोबिया, खल और कुल्थी—इनकी सिलपर पिसी लुगदी-को मांस और दहीमें मिलाकर अच्छी तरह मलने और लेप करनेसे कीड़े और मक्खी वगैरः अपनी औलादोंको छोडकर भाग जाते हैं।

(१७) रसौली पर रसौली निकल आवे यानी अध्यर्बुद हो जाय, तो बडका दूध, कूट और साँभरनोन—तीनोंको एकत्र पीसकर लेप करो और वड़के पत्ते सिलपर पीसकर उनकी लुगदी करलो। फिर उस लुगदीको लेप पर रखकर बाँध दो। इस उपायसे बहुत लाभ होता है; यहाँ तक कि रसौली बैठ जाती है।

(१८) तुख्म बालंगाका फाया या पुल्टिस अर्बुद या रसौ-लीमें अच्छा उपकार करते हैं। मुख वगैरः नाज़ुक स्थानोंपर फोड़े या रसौली हो जानेसे लोग आपरेशन करानेसे डरते हैं, वहाँ "तुख्म बालंगा"को पानीमें भिगोकर और एक कपड़े पर रखकर रसौली आदि पर चिपका देनेसे वह चिपक जाता है; बाँधनेकी दरकार नहीं होती। अत्यन्त पीड़ायुक्त घाव पर लगा देनेसे वह तत्काल जलन और पीड़ाको नाश कर देता है।

नोट—तुख्मबालङ्गाका फाया रखनेसे बद या बाघी भी बैठ जाती है। घाव और दाहयुक्त स्थानमें इसकी पुल्टिस बाँधने या फाया रखनेसे घावकी पीड़ा और जलन शान्त हो जाती तथा सूजन, दाह और लाली शीघ्रही दूर होती है। इससे बिना पका फोड़ा बैठ जाता और पका हुआ बिना तकलीफके सहजमें फूट जाता है।

श्लीपदके निदान-कारण ।

जिस देशमे मेहका पानी बहुत दिनोतक भरा रहता है और सब मौसमोंमें जहाँ शीतलता रहती है, उस देशमें "श्लीपद" या "फीलपाँव" रोग विशेष कर होता है।

नोट—जहाँ सदा शीतलता रहती है और जहाँ पुराना पानी नहीं सूखता, वहाँ श्लीपद रोग जियादा होता है। वसे तो यह सभी देशोंमें होता है, पर बंगाल और उड़ीसामें हाथीपांवके रोगी जियादा मिलते हैं। इन देशोंमें वर्षाका जल सदा भरा ही रहता है।

सामान्य लक्षण ।

जो सूजन पहले वंक्षण यानी पेड़ और जाँघोंकी जड़मे पैदा होकर पैरोंमें आजावे और उसमें ज्वर भी हो, उसे "श्लीपद" कहते हैं। कितने ही आचार्य कहते हैं, कि यह हाथ, कान, नेत्र, लिंग, होठ और नाकमें भी होता है। यह रोग तीन तरहका होता है।

वातज श्लीपदके लक्षण ।

यह श्लीपद काला, रूखा, फटा हुआ, तीव्र पीड़ायुक्त और बिना कारण ही दूखने वाला होता है। इसमें ज्वर ज़ियादा होता है।
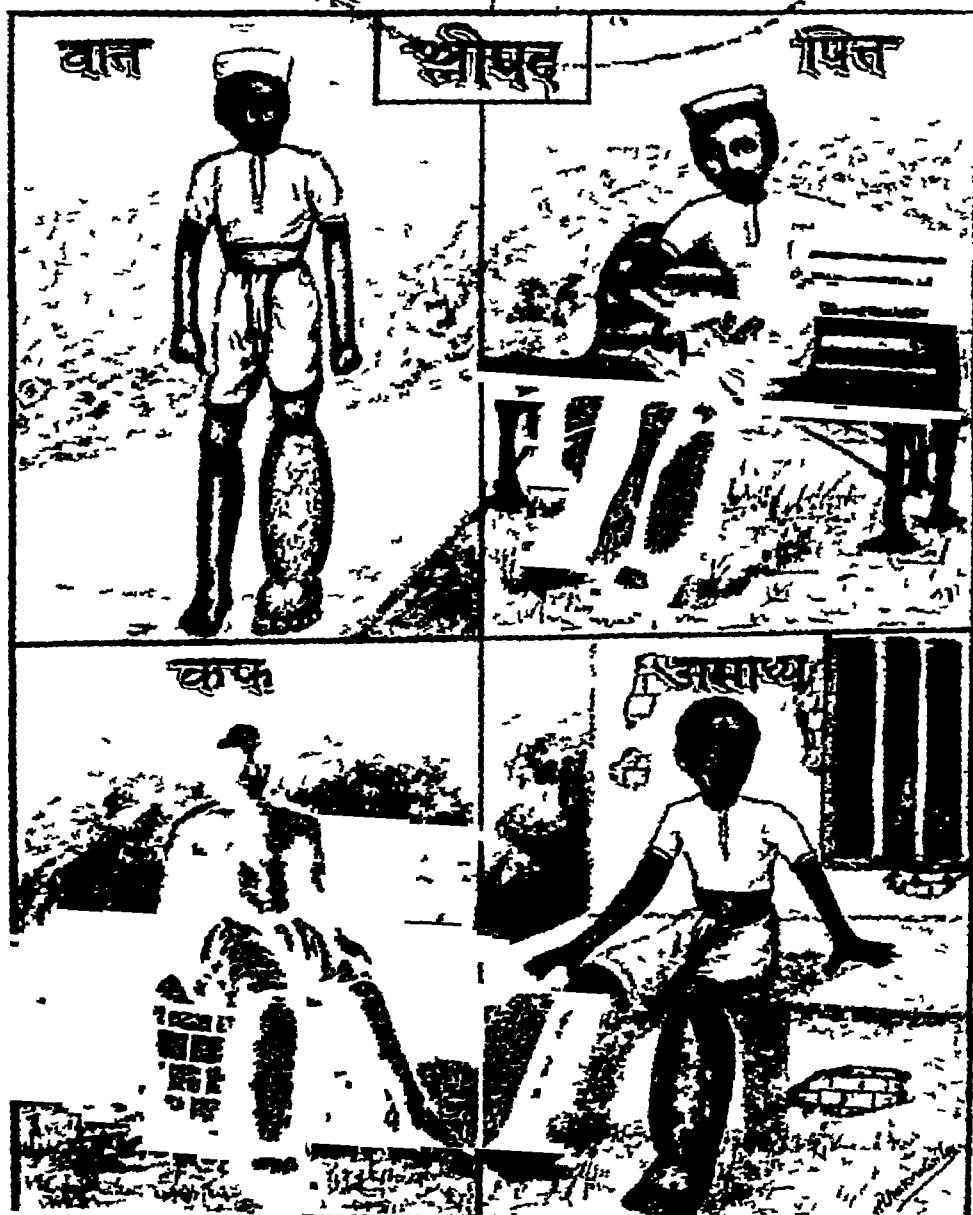
इस चित्रमें वातज, पित्तज, कफज और असाध्य श्लीपद—हाथी पाँव या फील-पाँवके लक्षण आसानीसे पहचाननेके लिए चारों लक्षणोंवाले रोगियोंके चित्र अलग-अलग दिये हैं। पाठक प्रत्येक रोगीको बगौरः देखें और इस चित्र तथा पुस्तककी सहायतासे लक्षणोंको दिल पर नक्श करें। पृष्ठ—८१६

पित्तज श्लीपदके लक्षण।

यह श्लीपद पीला, कोमल और दाह तथा ज्वर संयुक्त होता है।

कफज श्लीपदके लक्षण।

यह श्लीपद चिकना, सफेद, पीला, भारी और स्थिर होता है।

असाध्य लक्षण।

त्रिदोषज श्लीपद साँपकी बाम्बीके समान ऊँचा-नीचा और काँटेदार होता है। त्रिदोषज श्लीपद तथा जिसे पैदा हुए एक साल हो गया हो और जो बहुत बढ़ गया हो, उसे वैद्य त्याग दे—उसका इलाज न करे; क्योंकि ऐसे श्लीपद आराम नहीं होते।

तीनों तरहके श्लीपदोंमें कफकी अधिकता होती है; क्योंकि भारीपन और महत्ता कफके बिना नहीं होते।

जो श्लीपद कफकारक आहार विहारोंसे पैदा हो, और रोगीकी प्रकृति भी कफकी हो; जिस श्लीपदमेंसे पानी बहता हो, जो अत्यन्त ऊंचा और सब दोषोंके लक्षणोंसे युक्त हो और जिसमें खुजली बहुत चलती हो—वह श्लीपद असाध्य है।

श्लीपद या हाथीपाँव नाशक नुसखे।

नोट—पसीना निकालना, लंघन करना, जुलाब लेना, खून निकालना, कफनाशक उपाय करना और बफारे लेना—श्लीपद रोगमें हितकारी है। "बंगसेन"में लिखा है, कि लंघन, प्रलेप, स्वेद, रेचन, फस्त खुलवाना और कफ नाशक गरम क्रिया—ये सब श्लीपदमें हितकारी हैं।

(१) सोंठ, पुनर्नवा और राई—इनको समान-समान लेकर और "गोमूत्र"में पीसकर लेप करनेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

(२) धतूरा, अण्डकी जड़, सम्हालू, पुनर्नवा, सहंजनेकी छाल

और राई—इनको समान-समान लेकर, पानीमें पीसकर और गरम करके लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है ।

(३) सहदेवीकी जड़को ताड़फलके रसमें पीसकर लेप करनेसे सब तरहके असाध्य भी श्लीपद आराम हो जाते हैं ।

(४) थूहरके पत्तोंको पानीमें पीसकर और "नमक" मिलाकर दो तोले रोज खानेसे श्लीपद रोग आराम हो जाता है ।

(५) सहोराकी छालके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे श्लीपद नाश हो जाता है ।

(६) एक तोले हल्दीका चूर्ण दो तोले "गुड़"में मिलाकर, काँजीके साथ, नित्य पीनेसे एक सालका श्लीपद आराम हो जाता है । विशेष कर दाद और कोढ़ नाश हो जाते हैं ।

(७) पुनर्नवा, हरड़, बहेड़ा, आमले और पीपर बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो । इस चूर्णमेंसे एक तोले चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे श्लीपद रोग आराम हो जाता है ।

(८) रेंडीका तेल २ तोले, हरडका चूर्ण २ तोले और पाव-भर गोमूत्र—इनको मिलाकर पीनेसे श्लीपद अवश्य नाश हो जाता है । पर इस नुसख़ेको सात दिनसे ज़ियादा न पीना चाहिये ; क्योंकि इससे दस्त होते और कमज़ोरी आती है ।

नोट—कोई-कोई एक महीने तक रेंडीका तेल गोमूत्रमें मिलाकर पीनेकी राय देते हैं ।

(९) कसौंदीकी जटाको सिल पर पानीके साथ पीसकर और गायके "घी"मे मिलाकर पीनेसे श्लीपद रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

(१०) छोटी हरड़ अथवा गिलोयको "गोमूत्रके साथ" पीसकर पीनेसे श्लीपद नाश हो जाता है ।

नोट—बड़ी हरड़को रेंडीके तेलमें भूनकर गोमूत्रके साथ खानेसे श्लीपद आराम जाता है ।

(११) सोंठ, सरसों और पुनर्नवा—इनको "गोमूत्रमें" पीसकर लगानेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

(१२) सोंठ, सरसों, देवदारू और सहँजनेकी छाल—इनको "गोमूत्र"में पीसकर लगानेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१३) सात नागर पान सिल पर पीस कर गरम जलके साथ खानेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१४) सरसोंका तेल पीनेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

(१५) जौ, सरसोंका तेल और कछुएका मांस सेवन करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

नोट—अगर इन सभी उपायोंसे श्लीपद आराम न हो, तो आगसे दाग देना चाहिये।

(१७) सफेद आककी जड़ "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१८) मँजीठ, मुलेठी, रास्ना और पुनर्नवा—इनको "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे पित्तज श्लीपद आराम हो जाता है।

(१६) धतूरा, रैंडीकी जड़, सफेद पुनर्नवा, सहँजना और सफेद सरसो—इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(२०) चीता, देवदारु, सफेद सरसों या सहँजनेकी जड़की छाल,—इनको "गोमूत्र"में पीसकर और गरम करके लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

श्लीपद नाशक उत्तमोत्तम योग।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, हरड, वहेड़ा आमला, देवदारू, सोंठ और पुनर्नवा प्रत्येक दवा आठ-आठ तोले और विधारेके बीज ५६ तोले—इनको पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण नित्य काँजीके साथ खानेसे श्लीपद, वातरोग, तिल्ली और भस्मक रोग नाश हो जाते हैं तथा अग्नि दीप्त होती है। इसके पचने पर इच्छानुसार भोजन करना चाहिये।

श्लीपद गजकेशरी।

त्रिकुटा, शुद्ध वच्छनाग विष, अजवायन, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, चीतेकी जड़, शुद्ध मैनसिल, सुहागा और शुद्ध जयपाल—सबको समान-समान लेकर पहले पारे और गंधकको खरल करो। इसके बाद शेष चीजोंको कूट-पीसकर उसीमें मिला दो। फिर क्रमसे भीम-राज, गोखरू, जभीरी नीबू और अदरखके रसमे खरल करो। जब चारों चीज़ोमें मसाला घुट जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। अनुपान—गरम जल यानी एक-एक गोली निगलकर ऊपरसे गरम पानी पीनेसे श्लीपद या हाथीपाँव रोग आराम हो जाता है।

विड़ंगादि तैल।

वायविड़ंग, कालीमिर्च, आककी जड़, सोंठ, चीतेकी जड़, देवदारु, एलुआ और पाँचों नमक—इन सबको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो।

फिर तिलीका तेल चार सेर, पानी सोलह सेर और ऊपरकी

लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके पीने और सूजनकी जगह मालिश करनेसे श्लीपद या हाथीपाँव आराम हो जाता है।

नित्यानन्द रस।

हिंगुलसे निकाला हुआ पारा, शुद्ध गंधक, ताम्बा भस्म, काँसी-भस्म, वङ्गभस्म, हरताल भस्म, शुद्ध तूतिया, शंख-भस्म, कौडीकी भस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, लोहा-भस्म, वायविडंग, पाँचों नमक, चव्य, पीपरामूल, हाऊबेर, वच, कचूर, अम्वष्ठा, देवदारू, इलायची, विधारा, निशोथ, चीना और दन्ती—सबको बराबर-बराबर ले लो। जो दवाएं कूटने योग्य हैं, उन्हें कूट-छान लो। फिर गन्धक और पारेको अलग खरल करके, उसमें पिसा छना चूर्ण और ताम्बे, काँसी आदिकी भस्में मिला दो और ऊपरसे हरीतकीका काढ़ा डाल-डालकर खरल करो। जब मसाला घुट जाय, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली शीतल जल या हरड़-भिगोये पानीके साथ निगलनेसे श्लीपद, गलगण्ड और सब तरहके अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाते हैं।

मदनादि लेप।

मैनफल, नील कमल और समन्दरनोन—इन सबको पीसकर और "भैंसके मक्खन"में मिलाकर लेप करनेसे पित्तज श्लीपद या जलन वाला श्लीपद आराम हो जाता है।

सौरेश्वर घृत।

दशमूलका काढ़ा दो सेर लेकर सोलह सेर पानीमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय छान लो। काँजी ४ सेर, घी ४ सेर और दही ४ सेर इनको भी पास रख लो।

अब काली तुलसी, देवदारु, त्रिकुटा, त्रिफला, सेंधानोन, संचर

नोन, विड नोन, समन्दर नोन, काँच नोन, वायविड़ंग, चीता, चव्य, पीपरामूल, शुद्ध गूगल, हाऊबेर, वच, जवाखार, पाढ़, कचूर, इलायची और विधारा—इन सबको दो-दो तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो।

फिर काढा, काँजी, दही, लुगदी और घीको पकाकर छान लो। इससे श्लीपद, गण्डमाला, अपची, अण्डवृद्धि, कफवातोत्पन्न-श्लीपद, मांसरक्ताश्रित श्लीपद, सूजन, अर्बुद और संग्रहणी आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह "सौरेश्वर घृत" जीवक नाथ आचार्यने कहा है।

कृष्णाद्य मोदक।

पीपर १ तोले, चीता २ तोले, दन्ती ४ तोले, हरड़ २० तोले और गुड़ ८ तोले—इन सबको एक साथ पीस और मिलाकर "शहद"में लड्डू बना लो। इन मोदकोंके सेवन करने श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

दूसरा पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, सोंठ और पुनर्नवा—इनमेंसे प्रत्येक दवा ६४।६४ तोले लेकर पीस-छान लो। फिर सबकी बराबर ४४८ तोले "विधारेका चूर्ण" भी मिला दो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण काँजी या और किसी अनुपानके साथ खानेसे श्लीपद, गोला, शूल, तिल्ली, भस्मक रोग, उदावर्त्त, आमवात, अजीर्ण और विशेषकर श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

गोमूत्र हरीतकी।

हरड़को रेंडीके तेलमें भूँजकर, सात दिन तक, "गोमूत्रके साथ" पीनेसे श्लीपद रोग नाश हो जाता है।

विद्रधिके सामान्य लक्षण ।

असलमें विद्रधि एक तरहका फोड़ा है। वैद्य जिसे "विद्रधि" कहते हैं, साधारण लोग उसे ही "फोड़ा" कहते हैं। गूलरकी सी सूरत-शकलकी, दाह, वेदना और अन्तमें पाकयुक्त सूजनको विद्रधि कहते हैं। कोई कहते हैं, गोल, ऊँची, कठोर और पीड़ायुक्त सूजन ही विद्रधि कहलाती है। कोई सर्पकी बाम्बीके समान ऊँची उठी हुई सूजनको विद्रधि कहते हैं। मतलब यह है, कि विद्रधि एक तरहकी सूजन है, जिसमे जलन और वेदना होती है और अन्तमें वह पक कर फोड़ेकी तरह फूट जाती है। यह शरीरके भीतर भी होती है और बाहर भी। बाहरवाली यानी शरीरके ऊपर होनेवाली ६ तरहकी होती है और शरीरके अन्दर होनेवाली दस तरहकी होती है।

विद्रधिके निदान-कारण ।

अपने-अपने कारणोंसे कुपित हुए वातादि दोष अत्यन्त बढ़ कर, हड्डियोंमें स्थित होकर, चमड़ा, खून, मांस और मेदको दूषित करके,

धीरे-धीरे अत्यन्त दारुण और ऊपरको उठी हुई सूजन उत्पन्न करते हैं। यह सूजन गोल या फैली हुई होती है और इसमें बड़ी भारी वेदना होती है। इसी को "विद्रधि" कहते हैं।

विद्रधिके मुख्य दो भेद।

असलमें विद्रधि दो तरहकी होती है :—

(१) वाह्यविद्रधि, (२) अन्तर्विद्रधि।

वाह्य विद्रधि वाहरकी विद्रधिको कहते हैं। यह शरीरके ऊपर, शरीरके किसी भी भागमे, होती है। अन्तर्विद्रधि शरीरके अन्दर दस स्थानोंमें होती है। वाह्य विद्रधि छै तरहकी और अन्तर्विद्रधि दस तरहकी होनी है।

वाह्य विद्रधिके भेद।

वाह्य या शरीरके ऊपर होनेवाली विद्रधि छै तरहकी होती है · -

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) सन्निपातज,
(५) आगन्तुज, (६) रक्तज।

वातज विद्रधिके लक्षण।

वातज विद्रधि काली, लाल, कभी छोटी, कभी मोटी, घटने-बढ़नेवाली और अत्यन्त वेदना सहित होती है। यह अनेक तरहसे पैदा होती और अनेक तरहसे पकती है।

खुलासा—इस विद्रधिका रग काला या लाल होता है। इसमें अत्यन्त वेदना और ऊँचापन होता है।

पित्तज विद्रधिके लक्षण।

पित्तज विद्रधिका रंग पके हुए गूलरके जैसा या श्याम होता है। इसके साथ दाह और ज्वर होता है। यह जल्दी ही पैदा होती और जल्दी ही पकती है।

कफज विद्रधिके लक्षण।

कफज विद्रधि मिट्टीके शकोरेके समान बड़ी होती है। इसका रंग पाण्डु होता है। यह छूनेमें शीतल और चिकनी होती है। इसमे पीड़ा कम होती है और यह देरमें पैदा होती और देरमें ही पकती है।

राधके भेदसे पहचान।

वातज विद्रधिकी राध पतली, पित्तजकी पीली और कफजकी सफेद होती है। वातज अनेक तरहसे पकती है; पित्तज जल्दी पकती और कफज देरमें पकती है।

सन्निपातज विद्रधिके लक्षण।

सन्निपातज विद्रधि होनेसे अनेक तरहकी पीड़ाएं होती हैं। उससे अनेक तरहकी राध बहती है। उसका आकार घण्टेके जैसा ऊपरसे पतला और नीचेसे मोटा होता है। वह कभी घटती, कभी बढ़ती और रह-रह कर पकती है। वह विद्रधि असाध्य होती है।

आगन्तुक विद्रधिके लक्षण।

यह विद्रधि पत्थर, लाठी या हथियारकी चोट लगनेसे अथवा अन्य किसी प्रकारसे घाव होकर होती है। चोट या घावकी गरमीसे "वायु" विस्तृत होकर, रक्त और पित्तको कुपित करती है। इस विद्रधिमें ज्वर, प्यास और दाह ये लक्षण होते हैं। बहुत करके इस विद्रधिमें पित्तज विद्रधिके लक्षण होते हैं।

रक्तज विद्रधिके लक्षण।

यह विद्रधि काले फोड़ोंसे व्याप्त और काले रंगकी होती है।

इसमें तीव्र दाह, पीडा और ज्वर ये लक्षण होते हैं। इसमें पित्तज विद्रधिके लक्षण मिलते हैं।

नोट—इन छहों विद्रधियोंमें सन्निपातज विद्रधि असाध्य है, बाक़ी पांचों साध्य है।

अन्तर्विद्रधिके लक्षण ।

वातादि दोष अलग-अलग कुपित होकर या सब दोष एकत्र कुपित होकर, शरीरके भीतर, गोले और साँपकी बाम्बीके समान ऊँची अन्तर्विद्रधि उत्पन्न करते हैं।

अन्तर्विद्रधियोंके स्थान ।

शरीरके भीतर होनेवाली विद्रधियाँ शरीरके नीचे लिखे स्थानोंमें होती हैं :—

(१) गुदा।	(२) वस्तिमुख-पेड़ू।
(३) नाभि।	(४) कूख।
(५) वंक्षण-पट्ठे।	(६) वृक्क।
(७) प्लीहा।	(८) यकृत।
(९) हृदय।	(१०) क्लोम-प्यासका स्थान।

नोट—भीतरी विद्रधियाँ ऊपर लिखे दस स्थानोंमें होती हैं, इसीसे दस तरहकी कहलाती हैं।

अन्तर्विद्रधियोंके लक्षण ।

भीतरी विद्रधियोंके लक्षण, वातादि दोषोंके निमित्तसे, बाहरी विद्रधियोंके जैसे होते हैं; तोभी स्थानकी विशेषतासे विशेष लक्षण भी होते हैं। जैसे :—

(१) गुदामें विद्रधि होनेसे अधोवायु रुकती है।

(२) पेड़ूमें विद्रधि होनेसे बडी तकलीफसे ज़रा-ज़रा पेशाव होता है।

(३) नाभिमें विद्रधि होनेसे हिचकियाँ चलतीं और दर्दके साथ पेटमें गुड़गुड़ाहट होता है ।

(४) कोखमें विद्रधि होनेसे वायुका कोप होता है ।

(५) पट्ठोंमें विद्रधि होनेसे पीठ और कमर एकदमसे जकड़ जाती हैं ।

(६) वृकमें विद्रधि होनेसे पसलियाँ सुकड़ती हैं ।

(७) प्लीहामें विद्रधि होनेसे श्वास रुकता है ।

(८) हृदयमें विद्रधि होनेसे सारे अंग जकड़ जाते और खाँसी चलती है ।

(९) यकृतमें विद्रधि होनेसे श्वास और हिचकी के रोग होते हैं ।

(१०) क्लोम या प्यासकी जगहमें विद्रधि होनेसे प्यास बहुत लगती है ।

भीतरी विद्रधियोंकी राध निकलनेकी राहें ।

शरीरके भीतरकी विद्रधियाँ जब पकती हैं, तब उनकी राध नीचे लिखी राहोंसे निकलती है :—

(१) नाभिके ऊपर जो विद्रधि होती है, उसके पकनेसे राध मुँहकी राहसे निकलती है ।

(२) नाभिके नीचे जो विद्रधि होती है, उसके पक जाने पर राध गुदामार्गसे बहती है ।

(३) नाभिमें होने वाली विद्रधि जब पकती है, तब उसकी राध मुँह और गुदा—दोनों राहोंसे निकलती है ।

नोट—जिन विद्रधियोंका मवाद गुदाकी राहसे निकलता है, वे साध्य हैं और जिनका मवाद मुँहकी राहसे निकलता है, वे असाध्य हैं ।

स्तन-विद्रधिके लक्षण ।

वातसे विकृत हुई स्तनोंकी शिराय—प्रसूता और गर्भिणी स्त्रियोंके

स्तनोंमें—घन सूजन पैदा करती है, उस सूजनको ही "स्तनविद्रधि" कहते हैं। यह "स्तन-विद्रधि" दूध वाले स्तनोंमें होती है। इसके लक्षण वाह्य या वाहरी विद्रधिके समान होते हैं। यह विद्रधि कन्याओंके नहीं होती, क्योंकि उनके स्तनोंकी नाड़ियोंके मुँह सूक्ष्म होते हैं।

साध्यासाध्य लक्षण ।

हृदय, नाभि और पेड़ू—इन स्थानोंके सिवा और स्थानोंमें पैदा हुई विद्रधि यदि वाहरकी ओर फूटती है, तो कदाचित रोगी बच जाता है। यदि हृदय, नाभि और पेड़ूमें पैदा हुई विद्रधि बाहर फूटती है, तो रोगी निश्चय ही मर जाता है।

सन्निपातज विद्रधिके सिवा और पाँचों विद्रधियाँ साध्य हैं; किन्तु सन्निपातज असाध्य है।

जिस विद्रधि रोगमें पेट फूल जाता है, पेशाब रुक जाता है तथा हिचकी, वमन, प्यास, शूल और श्वास ये उपद्रव होते हैं, वह विद्रधि मनुष्यको मार डालती है।

मर्मस्थानमें पैदा हुई विद्रधि कच्ची हो चाहे पकी, छोटी हो चाहे बड़ी—हर हालतमें कष्टसाध्य है।

जो विद्रधि हृदय, नाभि और पेड़ूमें पैदा हुई हो और पक गई हो तथा जो त्रिदोषज हो और जिसमेंसे मुष्टि प्रमाण खून निकलता हो, वह विद्रधि असाध्य है।

गुल्म विद्रधिकी तरह क्यों नहीं पकता ?

गुल्म वातादि दोषोंमें रहता है, इसलिए नहीं पकता ; किन्तु विद्रधि मांस और खूनमें रहती है, इसीसे पक जाती है।

विद्रधि-चिकित्सा ।

(फोड़ोंका इलाज)

नोट—सब तरहकी विद्रधियोंमें पहले जौंकें लगवानी चाहिये तथा हल्का जुलाब और हल्का भोजन देना चाहिये। पित्तकी विद्रधिको छोड़कर औरोंमें स्वेद दे सकते हैं।

विद्रधि और व्रणशोथकी अपक्व अवस्थामें यानी उनके कच्चे होनेकी हालतमें खून निकालना चाहिये, हल्का जुलाब देना चाहिये तथा औषधि प्रयोग और स्वेद-क्रियासे यानी गरम बालू, गरम ईंट या गरम लोहेसे सेककर उनको बैठाना चाहिये। जैसे,—सहँजनेकी जड़का लेप करने और स्वेद देनेसे विद्रधि बैठ जाती है।

अगर विद्रधि या व्रण-शोथ लेप वगर. करनेसे न बैठे, तो उन्हें पकाकर खून और पीप या मवाद निकाल देना चाहिये, यानी पुल्टिस वगैर. बाँधकर उन्हें पकाना चाहिये। पक जानेपर, उन्हें पुल्टिस या लेपसे फोड़कर राध निकाल देनी चाहिये। राधके निकल जानेपर, उस जगह घावको भरनेवाली कोई मरहम लगा देनी चाहिये।

वातज विद्रधि नाशक नुसखे।

(१) वातनाशक औषधियोंकी जड़के कल्क द्वारा घी या तेल पकाकर, वातज विद्रधि पर सुहाता-सुहाता लेप करनेसे विद्रधि नष्ट हो जाती है। लाल अरण्डकी जड़को पानीके साथ सिल पर पीसकर, उसमें घी या तेल मिलाकर गरम करो; फिर उसका सुहाता-सुहाता लेप करो। इससे वातविद्रधि नष्ट हो जाती है।

(२) जौ, गेहूं और मूंग—इनको घीमें पीस कर लेप करनेसे नहीं पकी हुई—कच्ची विद्रधि क्षणमात्रमें लुप्त हो जाती है, यानी बैठ जाती है।

(३(जौ, सहँजनेकी जड़, गेहूँ और मूंग—इनको महीन पीस

कर, घीमें मिलाकर स्वेद देने या लेप करनेसे विद्रधि बैठ जाती है।

(४) केवल सहँजनेकी जडका लेप और स्वेद करनेसे वातज विद्रधि बैठ जाती है।

(५) पुनर्नवा, देवदारू, बेलगिरी और दशमूलकी सब दवाएं लेकर काढ़ा पकालो। उस काढ़ेमें "अरण्डीका" तेल या "शुद्ध गूगल" मिलाकर सेवन करनेसे वातकी विद्रधि नाश हो जाती है।

नोट—हम सांठ, सोंठ, देवदारू, हरड़ और दशमूलके काढ़ेमें "रेंडीका तेल" या "शुद्ध गूगल" मिलाकर पिलाते हैं। परीक्षित है।

पित्तज विद्रधि नाशक नुसखे।

(६) शारिवा, खस और मुलेठी—इनको दूधमें पीसकर और "मिश्री" मिलाकर लेप करनेसे पित्तज विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(७) मुलहटी, खस और चन्दन—इनको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तज विद्रधि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—कोई मुलहटीकी जगह क्षीर काकोली लेते हैं।

(८) सौ बारका धोया हुआ घी लगानेसे पित्त-विद्रधि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(९) त्रिफलेके काढ़ेमे एक तोले "निशोथका चूर्ण" या कल्क मिलाकर पीनेसे पित्तविद्रधि नष्ट हो जाती है।

(१०) गायके नवनीत-घीका लेप करनेसे पित्त-विद्रधि आराम हो जाती है।

(११) निशोथ और हरड़को एकत्र पीस-छान कर, उस चूर्णको "शहद" मिलाकर खानेसे पित्त विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(१२) पचक्षीरी वृक्षोंकी छाल पीसकर और घीमें मिलाकर लेप करनेसे पित्त विद्रधि नष्ट हो जाती है।

कफज विद्रधि नाशक नुसखे।

(१३) ईंट, रेता, लोह, गायका गोबर, भूसी और धूल—इनको

"गोमूत्र"में मिलाकर गरम करो और सुहाता-सुहाता सेक करो। इससे कफज विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(१४) दशमूलके काढ़ेमें "तेल या घी" मिलाकर सुहाता-सुहाता परिषेक करने यानी तरड़ा देनेसे कफज विद्रधि बैठ जाती है।

(१५) त्रिफला, सहँजना, बरनाकी छाल और दशमूल—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल या गोमूत्र" डालकर पीनेसे कफज विद्रधि नष्ट हो जाती है।

रक्तज और आगन्तुक विद्रधिकी चिकित्सा ।

इन दोनोंकी चिकित्सा पित्त-विद्रधिके समान करनी चाहिये।

अन्तार्विद्रधिकी चिकित्सा ।

(१६) हरड़ और सहँजनेका रस एकत्र मिलाकर पीनेसे अन्तविद्रधि आराम हो जाती है।

(१७) "नाराच घृत" पीनेसे अन्तर्विद्रधि नाश हो जाती है।

(१८) अरण्डीका तेल पीनेसे अन्तर्विद्रधि आराम हो जाती है।

(१९) कालाजीरा, इन्द्रायण और चिरचिरेके बीज—इन सबको जलमें पीसकर पीनेसे कोठेकी विद्रधि आराम हो जाती है।

(२०) सहँजनेकी जड़को पानीसे धोकर, पत्थरपर पीस कर, कपड़ेसे पानीमें छान लो। फिर इसमें "शहद" मिलाकर पीओ। इससे अन्तर्विद्रधि आराम हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(२१) सफेद पुनर्नवाकी जड़ और वरनाकी जड़ बराबर-बराबर लेकर पानीमें औटा लो। इस काढ़ेके पीनेसे अपक्व—कच्ची विद्रधि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) सहँजनेके काढ़ेमें "हींग और सैंधानोन" मिलाकर हर दिन सवेरे ही पीनेसे विद्रधि रोग बहुत जल्दी जाता रहता है। परीक्षित है।

(२३) हींग, सैंधानोन, कसीस और शुद्ध शिलाजीत—इनका

चूर्ण "वरनाकी छालके काढ़े"में मिलाकर पीनेसे अन्तर्विद्रधि, अपक्व विद्रधि, अत्यन्त बढ़ी हुई विद्रधि और सब तरहकी भयानक विद्रधि आराम हो जाती हैं। परीक्षित हैं।

(२४) हरड़, सेंधानोन और धायके फूल—इनका चूर्ण "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर खानेसे बहुत सूजनवाली अन्त-विद्रधि नाश हो जाती है।

सूचना—यहाँ तक जो चिकित्सा लिखी है वह बिना पकी—कच्ची विद्रधि-योंकी लिखी है। विद्रधिके पक जाने पर, व्रण या घावकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

पकाने फोड़ने और भरनेके उपाय।

नोट—अगर लेप वगैर. लगानेसे विद्रधि न बैठे, तो नीचे लिखे हुए उपायोंसे उसे पकाना, फोड़ना और घाव भरना चाहिये।

(२५) दन्ती, चीता, गोदन्त, कंजाकी छाल और कनेर—इनको "काँजी"में पीसकर सूजनयुक्त पकी हुई विद्रधि पर लेप करना चाहिये। इससे विद्रधि फूटकर मवाद निकल जाता है। परीक्षित है।

(२६) सनके बीज, मूलीके बीज, सहँजनेके बीज, तिल, सरसों, अलसी, जौ और गेहूँ—इनमेंसे जो मिले उसीकी पुल्टिस बनाकर विद्रधि पर बाँधनेसे विद्रधि पक जाती है।

(२७) करंज, भिलावा, दन्ती, चीता, कनेरकी जड़ और जङ्गली कबूतरकी बीट—इनको पीसकर लगानेसे विद्रधि फूटकर मवाद बहने लगता है।

(२८) परवलके पत्ते, नीमके पत्ते या बट वृक्ष आदिकी छालके काढ़ेसे घाव धोने चाहिएँ।

नोट—विद्रधि-चिकित्सा और व्रण-चिकित्सामें भेद नहीं है, इस लिए व्रण-चिकित्सामें लिखे हुए नुसखे बुद्धिमान विचार-पूर्वक यहाँ भी काममें ला सकता है।

विद्रधि नाशक उत्तमोत्तम योग।

प्रियंग्वाद्य तेल।

फूल प्रियंगू, धायके फूल, लोध, कायफल, हल्दी और दारु-हल्दी—इनको समान-समान लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, कल्क या लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना तिलीका "तेल' लो और तेलसे चौगुना ऊपरकी दवाओंका "काढ़ा" लो। फिर सबको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलका नाम "प्रियंग्वाद्य तेल" है। यह तेल विद्रधिके व्रणों या घावोंको भर देता है।

वरुणकाद्य घृत।

वरुण छाल, नील झाँटी, सहजना, लाल सहँजना, जयन्ती, मेढ़ा-श्रृंगी, डहर करञ्ज, करञ्ज, मूर्वा, गणियारी, सफेद झाँटी, पीली झाँटी, तेलाकूचा, अकवन, बड़ी पीपर, चीता, शतावर, वेलगिरी, काकड़ासिंगी, कुशमूल, वृहती और कण्टकारी,—इन सब दवाओंको समान-समान लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बनालो। फिर लुगदीसे चौगुना "घी" और घीसे चौगुना "दूध" लेकर घी पकालो। इस घीको ६ माशे सवेरे और ६ माशे शामको "गरम दूधमें" मिलाकर पीनेसे मन्दाग्नि, उत्कट सिरका दर्द, सब तरहकी विद्रधि, अन्तर्विद्रधि, उग्र-विद्रधि और पाँच तरहके गुल्म रोग नाश हो जाते है। इसपर बहुत-सा जल और अन्न भी पच जाता है।

नोट—वरुणादिगणकी औषधियोंसे मेदरोग, सिरका दर्द, गुल्म और अन्तर्विद्रधि—ये सब नाश होते हैं। इस घीसे भी वही सब रोग नाश होते हैं। अन्तर्विद्रधि पर यह घृत रामवाण है।

करञ्जघृत ।

करञ्जके पत्ते, वरुणके फल, चमेलीके पत्ते, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, मोम, मुलेठी, कुटकी, फूलप्रियंगू, कुशकी जड और जलबेंत—इनको समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना "घी" और घीसे चौगुना "पानी" लेकर घी पकालो। इस घीके लगानेसे दुष्टव्रण शमन होते, नाड़ी व्रण शुद्ध होते और तत्काल पदा हुए व्रण भर जाते हैं।

व्रणशोथका पूर्व्वरूप ।

व्रणको बोलचालकी भाषामें "घाव या क्षत" कहते हैं और शोथको "सूजन कहते हैं। जिस जगह व्रण होनेवाला होता है, वह जगह पहले फूलती है, इसीसे शरीरके किसी हिस्सेमें सूजन उत्पन्न होनेसे, उसे "व्रणका पूर्व्वरूप" कहते हैं।

वह सूजन वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज और आगन्तुज—इन भेदोंसे छे तरहकी होती है। इन छहोंके लक्षण पहले लिखे हुए शोथ रोगके समान होते हैं। चूंकि फोड़ेकी सूजन पहले कच्ची रहती है, फिर पकती और फूटती है, इसलिये पक्वापक्व यानी कच्ची-पक्की सूजनके लक्षण आगे लिखते हैं।

व्रण पाकके लक्षण ।

वातज व्रणशोथ या फोड़ा रुक-रुक कर पकता है ; पित्तज जल्दी पकता है ; कफज बहुत देरमें पकता है और रक्तज-आगन्तुक पित्तकी सूजनकी तरह बहुत जल्दी पकता है।

व्रण-शोथ या फोड़ा पकनेसे पहले थोड़ा गरम, कड़ा, और बदनकेसे रंगका होता है । उस समय उसमें वेदना भी कम होती है ।

पच्यमान व्रण-शोथके लक्षण ।

(पकनेके समयके लक्षण)

जिस समय फोड़ा पकता है उस समय उसमें आगसे जलाने, नश्तरसे चीरने, चूंटीसे काटने, डण्डे वगेरःसे मारने, सूई वग़ैरः चुभाने या गाड़ने, अंगुलीसे फाड़ने और दबानेकी तरह तकलीफ होती है । उस समय वह दाहसे व्याप्त और आगसे सन्तप्तके समान होता है । उसका रंग शरीरके चमड़े जैसा न रहकर दूसरा हो जाता है । वह वायु भरे हुए चमड़ेके पुटकी तरह फूल उठता है । रोगी बिच्छूके काटनेकी तरह छटपटाता है ; सोते, बैठते, उठते किसी तरह चैन नहीं पड़ता , हर समय घोर पीड़ा होती है ; कहीं कल नहीं पड़ती । रोगी ज्वर, प्यास और अरुचि आदिसे पीड़ित रहता है ।

खुलासा—जिस समय व्रण-शोथ या फोड़ा पकता है या पकावकी अवस्थामें होता है, उसका रग बदल जाता है, बड़ी जलन और वेदना होती है, रोगी मारे तकलीफके छटपटाता है , पीड़ाके मारे ज्वर चढ़ आता है, प्यास बहुत लगती है और खाना-पीना अच्छा नहीं लगता । अगर ऐसे लक्षण हों तो समझना चाहिये, कि फोड़ा पक रहा है ।

पक्व व्रण-शोथके लक्षण ।

(फोड़ा पक जानेके लक्षण)

व्रण-शोथके पक जाने पर नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं :—

(१) दाह या जलन वग़ैरः तकलीफें कम हो जाती हैं ।

(२) सूजनमें कुछ ललाई आ जाती है ।

(३) सूजनकी उंचाई कम हो जाती है ।

(४) सूजनमें सुकड़नसी पडती और चमड़ी फटीसी मालूम होती है।
(५) सूई चुभानेकासा दर्द होता है।
(६) बारम्बार खुजली चलती है।
(७) ज्वर आदि उपद्रव शान्त हो जाते हैं।
(८) उँगलीसे दबाते समय गढ़ा पड़ जाता है।
(९) पखालको अँगुलीसे दवाने पर, पखालका पानी जिस तरह एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है; उसी तरह सूजनको अँगुलीसे दबानेपर राध एक जगहसे दूसरी जगह चली जाती है।
(१०) भूख लगती है।

गभीर पाकके लक्षण ।

कफसे उत्पन्न हुई सूजनमें रुधिर गंभीर रूपसे पकता है, तोभी पक जानेके लक्षण स्पष्ट होते हैं। जिस समय सूजन पकने लगती है, उस समय लाली और दाह आदि पीड़ा होकर, सूजनमें पक जानेकी अवस्था हो जाती है; यानी शीतलता हो जाती है, सूजनका रंग चमड़ेके रंगके समान हो जाता है, दर्द थोड़ा होता है और छूनेसे पत्थरकी समान कठोरता बोध होती है। इस कारण वैद्य इसको निस्सन्देह रक्तपाक कहते हैं।

एक दोषसे पैदा हुई सूजनका भी पकनेके समय तीनो दोषोंसे सम्बन्ध ।

वायुके विना पीडा नहीं होती, पित्तके विना पकाव नहीं होता और कफके विना राध नहीं होती; इसलिये पकते समय, सब तरहके व्रण-शोथोंका तीनों दोषोंसे सम्बन्ध हो जाता है।

नोट—ऊपर लिखा जा चुका है, कि कफसे राध होती है, किन्तु कुछ विद्वान् कहते हैं, कि रुधिरसे राध होती है। उनका कहना है कि पित्त—वायु और कफको कम करके—ज़बर्दस्ती इनको पकाता है।

पके हुए फोड़ेसे राध न निकलनेका नतीजा।

जिस तरह सूखी घासमें पड़ी हुई आग, हवाकी मददसे, घासको जलाकर ख़ाककर देती है; उसी तरह पके हुए व्रण या फोड़ेमेसे राध न निकालनेसे वह मांस, शिरा और स्नायुओंको खा जाती है।

वैद्यके गुण दोष।

जो वैद्य अपक्व—कच्ची, पच्यमान—पकती हुई और अच्छी तरहसे पकी हुई सूजनको जानता है, वही पूर्ण वैद्य है। जो इन वातोंको नहीं जानते, वे चोर हैं, क्योंकि वे केवल धन हड़पना ही जानते हैं।

व्रणरोग-निदान।

(१) शारीर, और (२) आगन्तुक—इन भेदोंसे व्रण दो प्रकारका होता है। वातादि दोषोंके प्रकोपसे जो होता है, वह "शारीरिक" और शस्त्रादिकी चोटसे जो होता है, वह "आगन्तुक" कहलाता है।

व्रणोंके लक्षण।

वातज व्रण देखने और छूनेमें सख्त होता है। उसमेंसे मवाद थोड़ा निकलता है, पर पीड़ा वहुत होती है। उसमें सूई चुभानेका सा दर्द होता है। वह फड़कता है और उसका रंग ललाई मायल काला होता है।

पित्तज व्रणमें प्यास, मोह, ज्वर और दाह ये उपद्रव होते हैं। वह पकता, फूटता और मवाद देता है तथा उसमें वदवू आती है।

कफज व्रण अत्यन्त लिबलिबा, भारी, चिकना, निश्चल, मन्द पीड़ायुक्त, पाण्डुवर्ण, कम मवाद देनेवाला और बहुत दिनोंमें पकने वाला होता है।

रक्तज व्रण रुधिरसे पैदा होता और लाल रंगका होता है। उसमेंसे खून वहता है।

द्वन्द्वज व्रण एक दोष और रुधिरके सम्बन्धसे होता है एवं सन्निपातज दो दोष और रुधिरके सम्बन्धसे होता है।

दुष्ट व्रण वह होता है, जिसमेंसे वदवूदार मवाद और दूषित खून वहता है। यह ऊँचा, वहुत दिनोंका, अत्यन्त दुर्गन्धादि युक्त और शुद्ध व्रणके लक्षणोंके विपरीत लक्षणों वाला होता है। खुलासा यह है, कि दुष्ट व्रणसे खून और वदवूदार पीप वहती है, घाव सड़ता और वदवू आती है।

शुद्ध व्रण—जो व्रण जीभके नीचेके भागके समान मुलायम, साफ, चिकना, थोड़ी पीड़ावाला, उत्तम व्यवस्थायुक्त और स्राव-रहित होता है, उसे शुद्ध व्रण कहते हैं।

नोट—गन्ध होनेसे व्रण शुद्ध होता है, उससे उसमें नरमी होती है और फिर वह साफ होकर भरने लगता है, इसलिए व्रणमें गन्ध का होना अच्छा है।

भरने वाला व्रण—जिस व्रणका रंग कवूतरके रंगके समान हो, जिसमेंसे मवाद न निकले, जो स्थिर हो और जिसमे रवेसे मालूम हों, वह व्रण भरनेवाला है।

नोट—वातादि दोषोंके प्रकुपित होनेसे, कसरत वगैर. करनेसे, चोट वगैरः लगनेसे, अजीर्णसे, हर्ष, क्रोध और भयसे भरा हुआ व्रण भी फट जाता है।

साध्यासाध्य लक्षण।

जो व्रण चमड़े और मासमें पैदा हुआ हो, जो मर्मस्थानमे न पैदा हुआ हो, जो जवान और वुद्धिमान पुरुषके हुआ हो, जो नया हो तथा हेमन्त, शिशिर और वसन्त यानी शीतकाल और वसन्तमें हुआ हो, वह सुखसाध्य होता है।

जिस व्रणमें सुखसाध्य व्रणके कुछेक लक्षण होते हैं, वह कष्टसाध्य होता है और जिसमें सुखसाध्य व्रणके लक्षण क़तई नहीं होते, वह असाध्य होता है।

कोढ़ रोगी, विषरोगी, क्षयरोगी और मधुमेह रोगीके पैदा हुआ व्रण अत्यन्त कष्टसाध्य होता है।

जिस व्रणमेंसे चरवी, मेद, मज्जा और मस्तिष्क स्नेह बहते हैं अगर वह व्रण आगन्तुक होता है तो साध्य होता है और यदि वातादि दोषोंसे होता है, तो असाध्य होता है।

जिन व्रणोंमें शराव, अगर, घी, कमल, चम्पाके फूल और चन्दन आदिकीसी सुगन्ध और दिव्य गन्ध आती है, उनके रोगी मर जाते हैं; क्योंकि ऐसे व्रण मरने वालोंके ही होते हैं।

जो व्रण मर्मस्थानोंमें पैदा हुए हों और उनमें वेदना अधिक होती हो, जिन व्रणोंके भीतर जलन और ऊपर ठण्डक हो अथवा जिनमे बाहर जलन और भीतर ठण्डक हो—वे इलाज करने लायक़ नहीं।

जिस व्रणवालेका मास और बल क्षीण हो गया हो,.जो श्वास, खाँसी और अरुचिसे पीडित हो,—वह चिकित्सा करने योग्य नहीं।

जो व्रण मर्मस्थानोंमें पैदा हुए हों और जिनमेंसे राध-लोहू बहुत निकलते हों वे तथा जो अच्छे-से-अच्छा इलाज करने पर भी आराम न होते हों, वे व्रण वैद्यके त्याग देने योग्य हैं।

व्रण-चिकित्सा।

"सुश्रुत"में व्रण पर साठ उपक्रम लिखे हैं,:उन सबको लिखनेसे तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा; अतः हम मुख्य ग्यारह उपाय लिखते हैं:—

(क)	लेप करना ।	बैठानेके लिए।
(ख)	दवाओंके काढ़ोंके तरड़े देना ।	
(ग)	सेक करना ।	
(घ)	खून वग़ैरः निकालना ।	

(ङ) पकाना ।

(च) फोड़ना ।

(छ) मवाद् निकालना ।

(ज) घावको साफ करना ।

(झ) घावको आराम करना ।

(ञ) घावको सुखाना ।

(ट) घावकी जगहको शरीरके रंगसे मिला देना ।

सूजन नाशक लेप ।

जिस तरह जलते हुए मकानमें पानी डालनेसे आग शान्त हो जाती है, उसी तरह सूजन पर दवाओंका लेप करनेसे पीड़ा शान्त हो जाती है ।

वातज व्रण-शोथमें चिकना, खट्टा और नमक मिला लेप करना चाहिये । पित्तजमें चिकना, शीतल और दूध-मिला लेप करना चाहिये । कफजमें सुहाता गरम "क्षार और गोमूत्र" मिला लेप करना चाहिये ।

रातमें लेप नहीं करना चाहिये । अगर किया हुआ लेप गिर जाय, तो उसे उठाकर फिर नहीं करना चाहिये । अगर किया हुआ लेप सूख जाय, तो उसे तत्काल छुड़ा देना चाहिये एव बासी लेप नहीं करना चाहिये ।

अगर सूजन न पकी हो, गभीर हो तथा रुधिर और पित्तसे पैदा हुई हो, तो वैद्य उस पर रातमें भी लेप कर सकता है ।

(१) बिजौरेको जड़, बालछड़, देवदारू, सोंठ, रास्ना और अरणी—इनको मिलाकर लेप करनेसे वातकी सूजन नाश हो जाती है ।

(२) सिहोंड़ेकी छालको "काँजी"में पीसकर और "घी" मिलाकर लेप करनेसे वातज व्रण-शोथ नाश हो जाती है ।

(३) दूब, नरसलकी जड़, मुलेठी, चन्दन, पद्माख, खस,

सुगन्धवाला और कमल—इन सबका लेप करनेसे पित्तकी सूजन नष्ट हो जाती है।

(४) वड, गूलर, पाकर और बेत—इनकी छालोंको पीसकर और "घी" में मिलाकर लेप करनेसे पित्तज सूजन नाश हो जाती है।

(५) वड़, गूलर, पीपल, पाखर, बेंत, बेल, सफेद चन्दन, लालचन्दन, मंजीठ, मुलेठी, जमीकन्द और गेरू—इन सबको एकत्र पीसकर और "सौ बार धुले हुए घी"में मिलाकर लेप करनेसे रुधिरमें प्रसन्नता होती तथा जलन, पकाव, पीड़ा, मवाद जाना और सूजन ये सब दूर हो जाते हैं। यह लेप पित्तकी सूजन पर सर्वश्रेष्ठ है।

नोट—ऊपरके न ४ और नं० ५ लेप रक्तज और आगन्तुक सूजन पर भी हितकारी है

(६) मेढ़ासिंगी, वनतुलसी, मंजीठ, देवदारु, काली निशोथ और असगन्ध—इनका लेप कफकी सूजनको नाश करता है।

(७) पीपर, पुरानी खल, सहँजनेकी छाल, रेती और हरड़—इनको गोमूत्रमें पीसकर और ज़रा गरम करके लेप करनेसे कफकी सूजन नाश हो जाती है।

(८) पुनर्नवा, देवदारु, सहँजना, दशमूलकी दवाएँ और सोंठ—इनको पीसकर और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करनेसे कफवात जनित शोथ नाश होती है।

सूजन पर तरडे।

जिस तरह आगपर पानी डालनेसे आग शान्त होती है; उसी तरह व्रण-शोथको काढ़े वगरःसे सींचने या उनके तरड़े देनेसे दोष रूपी अग्नि तत्काल शान्त हो जाती है।

(१) वात नाशक काढ़े, तेल, मांस-रस, घी और काँजीको गरम करके वातज सूजन पर सींचना चाहिये।

(२) शीतल औषधियोंके रसों, दूध, घी, मध, खांड, ईख-रस

और पित्तनाशक काढ़ोंके तरडे देनेसे पित्तज, क्षतज और रक्तज सूजन नाश हो जाती है।

(३) कफनाशक औषधियोंके शीतल काढ़ों, तेल, क्षार-जल और मूत्रके तरड़े देनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है।

विम्लापन कर्म।

कठिन सूजन पर विम्लापन कर्म किया जाता है। "सुश्रुत"में लिखा है, कि वैद्य सूजन पर अभ्यंग करके, स्वेद देकर, धीरे-धीरे बाँसकी नली, हाथके तलवे या अंगूठेसे उसे घिसे।

उपनाह स्वेद।

अगर सूजन वेदनायुक्त, दारुण और कठिन हो, तो उसपर स्वेदन करना चाहिये। अगर सूजन कच्ची हो या पक गई हो, तो उस पर भी उपनाह स्वेद करना चाहिये। उपनाह स्वेदसे कच्ची सूजन शान्त हो जाती और पकनेवाली फौरन पक जाती है।

सब तरहके स्नेहपान, सब तरहके उपनाह स्वेद, प्रलेप और परिषेक या सेक—वातज व्रण-शोथमें प्रयोग करने चाहियें।

(१) सहँजना, पीपल, सैंधानोन, सोंठ, सनके बीज, कपासके बिनौले, अलसी, कुल्थी, तिल, जौ, सरसों, काली तुलसी, मूली और सोया—इनमेंसे सब या जितनी दवाएं मिल सकें लेकर, खट्टे रसके साथ सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। फिर उसे गरम करके धीरे-धीरे सूजन पर विधिपूर्व्वक स्वेद दो। इस तरह करनेसे वातज सूजन दूर हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं। इस उपनाह स्वेदको "शोभाञ्जनादि" कहते हैं।

(२) पुनर्नवा, देवदारू, सोंठ, सहँजना और सरसों—इनको खट्टे रसमें पीसकर सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे सब तरहकी सूजन दूर हो जाती है। इस लेपको "पुनर्नवादि लेप" कहते हैं।

रक्तमोक्षण—खून निकालना।

तत्काल पैदा हुई सूजनकी वेदना और पाक-शान्तिके लिए सूजनसे खून निकालना चाहिये। सारी क्रियाएँ एक ओर, और खून निकालना एक ओर है। सारी क्रियाएँ जितना काम करती हैं, उतना काम एक खून निकालनेसे हो जाता है। वेदनाकी जड खून है। खून न हो, तो वेदना ही न हो। विशेष करके सींगी लगवाकर, जौंक लगवाकर या पछने लगाकर खून निकालना चाहिये।

पकाना या पाचन करना।

जो सूजन लेप वगैरःसे शान्त न हो, उस पर पाचनीय पदार्थ बाँधने चाहिएँ।

सनके बीज, मूलीके बीज, सहँजनेके फल, तिल, सरसो, अलसी, सत्तू, सुराका बीज एवं और सब गरम पदार्थ पकानेके लिये प्रयोग करने चाहियें। इनमेंसे किसी भी चीज़को पानीके साथ सिल पर पीसकर टिकिया बाँधनेसे सूजन पक जाती है। जैसे,—अलसीको पीसकर और पानीमें घोलकर लेईकी तरह पकानेसे पुल्टिस बन जाती है। इसको सुहाती-सुहाती गरम बाँधनेसे फोड़ा वग़ैर. पक जाते हैं। गेहूंके आटेकी पुल्टिस बाँधनेसे भी फोड़ा पक जाता है।

भेदन करना या फोड़ना।

जिसमें भीतर राध भर रही हो, जिसका मुंह नहीं हुआ हो, जो भीतरसे ख़ाली हो, उसको और नाडीव्रणको नश्तर या दवाओंसे फोड़ना चाहिये।

जो व्रण शस्त्र या नश्तरसे चीरनेसे आराम होता दीखे, उसे स्थानानुसार शस्त्रसे चीरकर, उसमेंसे दोष निकाल देने चाहिएं।

बालक, बूढ़े, चीरफाड़ न सह सकनेवाले, क्षीण मनुष्य, डर-

पोक और स्त्री—अगर इनके मर्मस्थानोंमें व्रण पैदा हो, तो उसे दवाओंके लेपसे फोड़ना चाहिये—शस्त्रसे न चीरना चाहिये ।

(१) करंज, भिलावे, जमालगोटा, चीता, कनेर, कबूतरकी वीठ और गिद्धकी वीट—इनका लेप करनेसे व्रण फूट जाता है ।

(२) चिरचिरा, सज्जीखार या जवाखार आदि खारोंके लेपसे व्रण फूट जाता है ।

(३) हाँथीके दाँतको पानीमें वारीक पीसकर, बूंद-भर लगा-देनेसे अत्यन्त कठोर सूजन भी नष्ट हो जाती यानी फूट जाती है ।

पीड़न या दवाकर मवाद निकालना ।

चिकनी दवाओंकी छालों और जड़ोंको पीसकर लेप करनेसे सूजन दव जाती है । जौ, गेहूं और उड़दको पीसकर और लूपरी वनाकर लगानेसे सूजन दव जाती है ।

शोधन करना या साफ करना ।

व्रणमेंसे राध निकल जाने पर "परवल और नीमके पत्तोंका काढ़ा" बनाकर, उस काढ़ेसे व्रणको धोना चाहिये । इस तरह धोनेसे व्रण साफ हो जाता है ।

वातके व्रणको "दशमूलके काढे"से धोना चाहिये । पित्तके व्रणको "वड आदि दूध वाले वृक्षोंकी छालके काढ़े"से धोना चाहिये और कफज व्रणको "आरग्वधादि गणके काढ़े"से धोना चाहिये ।

(१) पीपर, गूलर, पिलखन, वड़ और वेंत इनकी छालोंके काढ़ेसे धोनेसे व्रणकी सूजन और उपदंशके घाव आराम हो जाते हैं ।

(२) तिल, सैंधानोन, मुलेठी, नीमके पत्ते, हल्दी, दारूहल्दी और निसोत—इनको पीसकर और "घी"में मिलाकर लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाता है ।

अगर खून निकालने, तरड़े देने, लेप करने और सेक करनेसे व्रण-शोथ न वैठे, तो उसे पकाकर पीप या राध निकालनी चाहिये। पकानेके लिए अलसी या गेंहू आदिकी पुल्टिस बनाकर व्रण पर बाँधनी चाहिये।

जब व्रण पुल्टिस वग़ैरः बाँधनेसे पक जाय, तब उसे नश्तरसे चीरना चाहिये अथवा करञ्ज, भिलावे, दन्तीमूल, चीतेकी जड़ और जङ्गली कबूतरकी बीट पीसकर उस पर लगानी चाहिये। अथवा गायका दाँत घिसकर लगाना चाहिये। इन तरकीबोंसे पका हुआ व्रण फूट जायगा। अगर व्रण-शोथ बहुत ही सख्त हो, तो हाँथीदाँत पानीमे घिस-घिस कर लगाना चाहिये।

जब व्रण फूट जाय, तब उसके भीतरका मवाद मुँह पर इकट्ठा करके निकाल देना चाहिये। इस कामके लिये जौ, गेंहूँ और उड़दके आटेका लेप करना चाहिये; पर लेप व्रण या फोड़ेके मुँह पर न करना चाहिये, क्योंकि मुँहसे ही मवाद बाहर निकलता है। ऊपर लिखा लेप लगानेसे सारा मवाद खिंचकर मुँहकी राहसे बाहर निकल जाता है।

मवाद निकल जानेपर, जब क्षत या घाव हो जाय, उसको साफ करना चाहिये। इस कामके लिये परवलके पत्तों और नीमके पत्तोंका काढ़ा उत्तम है। इस काढ़ेसे घावको धोनेसे घाव शुद्ध और साफ हो जाता है। इधर-उधर लगा हुआ ख़राब मवाद निकल जाता है। अगर कीड़े पड़ गये हों, तो कीडोंको नाश करनेवाली दवा काममें लानी चाहिये। (देखो पृष्ठ ८४७ के नं० ८ से ११ तक)

जब घाव साफ हो जाय, उसपर घावको भरनेवाली या आराम करनेवाली दवा लगानी चाहिये। हल्दी, दारुहल्दी, सैंधानोन, नीमके पत्ते, मुलहटी, निसोथ और काले तिल—इनको पीसकर और "घी"में मिलाकर लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाते और भर आते हैं। यह बड़ा उत्तम परीक्षित नुसख़ा है। अथवा अनन्तमूलका काढ़ा पीना

चाहिये और उसीका लेप भी करना चाहिये। फूटे हुए फोड़े या व्रण अथवा घावपर "अनन्तमूलका लेप" अपूर्व चमत्कार दिखाता है। अथवा नीमके पत्ते, काले तिल, जमालगोटेको जड, निशोथ, सैंधानोन और शहद बराबर-बराबर लेकर, पीसकूट और मिलाकर तथा उनकी टिकिया सी बनाकर व्रण पर बाँधनी चाहिये। यह नुसख़ा भी घाव भरनेमें रामबाण है। विषमारके पत्तोंकी टिकिया बाँधनेसे तो सड़े-से-सड़े फोड़े आराम हो जाते हैं। अथवा करञ्जघृत, व्रणराक्षस तेल या जात्याद्य घृत वग़ैरःसे काम लेना चाहिये। इनसे घाव जल्दी ही आराम होकर सूख जाते हैं। इनके बनानेकी विधि पृष्ठ ८५४ में लिखी हैं।

जब घाव आराम होकर सूख जाय, उस जगह ऐसी दवा लगानी चाहिये, जिससे व्रण-स्थानका चमडा शरीरके चमड़ेसे रंगमें मिल जाय।

पथ्यापथ्य ।

हाँ, केवल दवाए करने और पथ्यापथ्यका लिहाज न रखनेसे व्रण आराम नहीं हो सकते। जिस तरह और रोगोंमें पथ्य पालन और अपथ्य त्यागन की ज़रूरत है; उसी तरह व्रण रोगमें भी है। व्रण रोगकी हालतमें,—परिश्रम करना, रातमें जागना, दिनमें सोना और मैथुन करना अतीव हानिकारक हैं। परिश्रम करनेसे सूजन आती है, रातमें जागनेसे लाली बढ़ती और सूजन आती है, दिनमें सोनेसे सूजन, लाली और पीड़ा तीनों बढ़ती हैं तथा स्त्री-प्रसंग करनेसे सूजन, लाली, पीड़ा और मृत्यु ये चारों होती हैं। कितने ही व्रण-रोगी या फोडेवाले अच्छे-से-अच्छा-इलाज होने पर भी, अज्ञानवश, उस समय मैथुन करनेसे जानसे चले गये। अतः चिकित्सकको लाजिम है, कि ये बात अपने रोगीको बता दे। व्रण रोगीको

खट्टा दही, खट्टा साग, जलजीवोंका मांस, दूध और भारी अन्न भी हानिकारक हैं, अतः त्याज्य हैं।

जांगल देशके पशुओंका मांस-रस, चौलाई, बथुआ, कच्ची मूली बैंगन, परवल, करेले, अनार, आमले, मूंगका रस और चिकने, पतले और पुराने शालि चाँवलोंका किञ्चित गरम भात—ये सब पथ्य हैं। तरकारी घीमें भूँजकर और सेंधानोन डालकर खानी चाहिये। इन पदार्थोंसे व्रण नष्ट हो जाता है।

सद्योव्रण या आगन्तुक व्रणके लक्षण।

अनेक तरहकी धारवाले और अनेक तरहके मुँहवाले शस्त्रोंके अनेक स्थानोंमें लग जानेसे नाना प्रकारकी आकृतिवाले व्रण हो जाते हैं। वे छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित और घृष्ट,—इन नामोंसे छै तरहके होते हैं।

<u>छिन्नके लक्षण</u>—जो व्रण तिरछा, सीधा अथवा लम्बा हो और जिसमें शरीरका एक अंग कटकर गिर जाय या न भी गिरे, वह "छिन्न व्रण" है।

<u>भिन्नके लक्षण</u>—बर्छी, भाले, तीर, तलवार, दाँत या सींगसे कोठेके आमाशयादिक छिद जायँ और उसमेंसे कुछ खून भी निकले, उसको "भिन्न व्रण" कहते हैं।

नोट—आमाशय, अग्न्याशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रक्ताशय, यकृत, हृदय, तिल्ली और मलाशय प्रभृति स्थानोंको "कोठा" कहते हैं। इस कोठेमें हथियार लग जानेसे खून भर जाता है, तब ज्वर और दाह होता है तथा गुदा, मुँह और

नाकसे खून निकलता है । मूर्च्छा, श्वास, प्यास, अफारा, अरुचि, मल-मूत्र और अधोवायुकी रुकावट, पसीने अधिक आना, नेत्रोंमें लाली, मुँहमें लोहेकीसी गन्ध, हृदय और पसलियोंमें दर्द—ये सब लक्षण होते हैं। ये साधारण लक्षण हैं।

आमाशयमें खून भर जानेसे खूनकी कय होती है, पेट फूल जाता और भयानक शूल होता है। ये विशेष लक्षण हैं।

पक्वाशयमें खून भर जानेसे अत्यन्त पीड़ा और शरीरमें भारीपन होता है तथा कमरसे नीचेका शरीर शीतल हो जाता है। ये भी विशेष लक्षण है।

विद्धव्रणके लक्षण—आमाशयको छोड़कर और किसी अंगमें बारीक नोकवाले सूई और काँटे आदिके छिद जानेसे वह अंग ऊपरको ऊँचा आ जाता है। जब ये शल्य यानी सूई वग़ैरः निकल जाते हैं या ऊपरको आ जाते हैं, तब "विद्ध व्रण" कहते हैं।

नोट—जिस व्रणमें काँटा या सूई वगैर. गडी हुई चीज़ रह जाती है—नहीं निकलती है, उस व्रणका रंग कलाई माइल लाल होता है, सूजनके साथ बहुतसी छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती है, उनसे बारम्बार रुधिर बहता है तथा उस व्रणका मांस गरम और बबूलेकी तरह ऊपरको उठा हुआ होता है।

क्षतके लक्षण—जो व्रण न अत्यन्त छिदा हो और न अत्यन्त कटा हो एवं दोनों लक्षणों वाला हो तथा शरीरमें टेढ़ा-मेढ़ा हो, उसे "क्षत" कहते हैं।

पिच्चितके लक्षण—जो अंग हड्डी समेत—चोट लगनेसे अथवा ऊपर भारी बोझ पड़नेसे—पिच जाय तथा उसमें मज्जा और खून भरा हो, उसे "पिच्चित व्रण" कहते हैं।

घृष्टके लक्षण—घिसनेसे, रगड़से, चोटसे अथवा और कारणोंसे अगर किसी अंगका चमड़ा छिल जाय और उस छिले हुए अंगसे आगके समान गरम खून निकले, उसे "घृष्ट व्रण" कहते हैं।

नोट—इनके सिवाय मर्मस्थानोंमें चोट लगनेसे भी व्रण होते हैं। उनकी चिकित्सा बड़ी कठिन है और प्राय. रोगी डाक्टरोंके पास जाते है, इससे हम उनके लक्षण प्रभृति ग्रन्थ बढ़नेके भयसे नहीं लिखते।

सद्योव्रण चिकित्सा।

(१) वैद्यको "आगन्तुक" व्रण समझ कर, रक्तपित्त और दाहको नाश करनेवाली यानी खूनकी और पित्तकी गर्मीको नाश करने वाली "शीतल क्रिया" करनी चाहिये।

(२) तत्कालके व्रणके कुपित होने पर—रोगीके बलाबलका विचार करके—वमन, विरेचन, लङ्घन, भोजन और रक्तमोक्षण—ये सब उपचार करने चाहियें। किसीने कहा है :—

क्रुद्धे सद्योव्रणे युञ्ज्यादूर्द्ध्वं चाधश्च शोधनम् ॥

अर्थात् सद्योव्रण कुपित हो जाय, तो ऊर्ध्व और अधः शोधन करना चाहिये; यानी वमन आदिसे ऊपरकी और विरेचन आदिसे नीचेकी शुद्धि करनी चाहिये।

"वंगसेन"में लिखा है, घिसनेसे अथवा रगड़ खानेसे जो व्रण होता है, उसमेंसे रुधिर बहुत कम निकलता; है, इसलिये पित्तके कुपित होनेसे वह शीघ्र ही पक जाता है, अतः उसमें उपरोक्त चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) अंग छिन्न, भिन्न या विद्ध हो जाय और घावोंसे खून निकलने लगे, तो रुधिरके क्षय होनेसे "वायु" अत्यन्त पीड़ा करती है। मतलब यह है, कि खूनके बहुत बहनेसे "वायु" कुपित होकर अत्यन्त वेदना करती है। अगर ऐसा व्रण हो, तो रोगीको स्नेहपान कराना चाहिये और व्रण पर वातनाशक औषधियोंसे परिषेक, लेप, स्वेदन, —उपनाह स्वेद करना चाहिये और स्नेह वस्ति प्रदान करनी चाहिये। किन्तु सद्योव्रणमें ये क्रियाएँ सात दिन तक करनी चाहियें। सात दिन बाद शारीर व्रणके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(४) छिन्न, भिन्न और विद्ध व्रणको तत्काल रेशमसे बाँध देना चाहिये। इस तरह करनेसे रोगी सुखी होता है, उसे दुःख भोगना

नहीं पड़ता। अथवा "अजवाइन और नमक"की पोटली बनाकर, आग पर तवा रख कर, तवे पर पोटलीको तपा-तपा कर उससे व्रणको बारम्बार सेकना चाहिये। अथवा इकट्ठे हुए दूपित खूनको सींगी या तूम्बीसे निकलवा देना चाहिये।

(५) तत्काल पैदा हुए व्रणमें अगर शूल चलते हों, तो गुनगुने घीमे "मुलहटीका पिसा-छना चूर्ण" मिलाकर, उस घीको व्रण पर सींचना चाहिये ; यानी उस घीके तरड़े देने चाहिये तथा कसैली, मीठी और शीतल दवाओंसे चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) अगर व्रणका खून आमाशयमें रुका हो, तो वमन करानी चाहिये और अगर पक्काशयमें रुका हो तो निस्सन्देह विरेचन कराना चाहिये।

(६) वंसलोचन, अरण्डकी जड़, गोखरु और पाषाणभेदके काढ़ेमें "हींग और सैंधानोन" मिलाकर पिलानेसे कोठेमे रुका हुआ खून निकल जाता है।

(७) तलवार आदिसे हुए घावमें <u>तत्काल</u> "गंगेरनकी जड़का रस" भर देनेसे वेदना दूर हो जाती है।

(८) आगन्तुक व्रण रोगीको जौ, बेर और कुलथीका रस चिकनाई रहित भातके साथ खाना चाहिये अथवा "सैंधानोन" डाल कर यवागू पीनी चाहिये।

(८) हथियार वग़ैरः लगनेसे हुए घावपर खून बन्द करनेको, जलकी पट्टी या जलमें भीगा हुआ कपड़ा बाँध देनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है। अपामार्ग या चिरचिरेके पत्तोंका रस या दूबका रस सींचनेसे भी खून गिरना बन्द हो जाता है। "कपूर" मिला हुआ सौ बारका धोया घी घावमें भरकर पट्टी बाँध देनेसे घाव नहीं पकता और वेदना भी नहीं होती। इस घीसे घाव निश्चय ही भर जाता है। लाख रुपयेका नुसख़ा है। पर यह घी बिना पके घावमे ही लगाना चाहिये।

(९) कुत्तेकी जीभ सुखाकर पीस-छान लो। इस जीभके चूर्णको घाव पर बुरकनेसे घाव फौरन भरने लगता है।

(१०) क्षत और विद्ध व्रण आराम करनेके लिए "चूकेका तेल" अत्युत्तम है।

(११) मनुष्यके सिरकी खोपडीकी हड्डी "गोमूत्र"के साथ पीसकर घावपर लेप करनेसे वह घाव भी तत्काल भर जाता है, जो सैकडों दवाओंसे न भरा हो।

जात्यादि घृत।

चमेलाके पत्ते, नीमके पत्ते, परवलके पत्ते, कुटकी, दारुहल्दी, हल्दी, सारिवा, मँजीठ, हरड़, मोम, नीलाथोथा, मुलहटी और कंजाके वीज,—इनको वरावर-वरावर एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। अगर यह लुगदी एक पाव हो, तो एक सेर घी, चार सेर पानी और लुगदीको मिलाकर घी पका लो।

इस घीको घावपर लगानेसे छोटे मुँह वाले, मर्मस्थानमें होनेवाले, निरन्तर मवाद देनेवाले, गम्भीर, वेदनायुक्त और भीतरकी तरफ जानेवाले व्रण शुद्ध होते और भर जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—"भावप्रकाश"में घीके पक जानेके वाद "मोम" डालनेकी राय दी गई है। बहुतसे वैद्य इस घृतमें "हरड़"की जगह "खसकी जड़" लेते हैं।

जात्यादि तैल।

चमेलीके पत्ते, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, कंजाके पत्ते, कुटकी, हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, कंजाके वीज, हरड, पीपर, नील कमल, लोध,

पद्माख, गौरीसर, मंजीठ, कूट, मोम और नीलाथोथा—इन सबको एक-एक तोले लेकर जलके साथ सिलपर पीस लो। जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर और तीनोंको मिलाकर पकाओ ; जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस तेलके लगानेसे विषजनित व्रण, कच्छुकहारी, विसर्प, विषैले कीड़ेका काटा हुआ व्रण, तत्काल हथियारसे हुआ व्रण, जलकर हुआ घाव, विद्ध व्रण, नाखूनका घाव और दाँतका घाव—ये सब आराम हो जाते हैं। इस तेलसे दूषित मांस और पीप-राध निकलकर घाव भर जाता और सूख जाता है। यह तेल व्रण भरने और शोधनेके लिए परमोपयोगी है। परीक्षित है।

विपरीत मल्ल तैल।

सरफोंका, कलिहारी, चीता, हींग, लहसन, सम्हालू अतीस, कूट, सिन्दूर और मीठा विष—इन सबको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना "सरसोंका तेल" और तेलसे चौगुना पानी—तीनोंको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे दुष्टव्रण तथा अनेक दवाओंसे भी न आराम होनेवाले नाडीव्रण—नासूर आराम हो जाते हैं। यह तेल सभी तरहके व्रणोंपर लगाया जा सकता है।

दूर्वाद्य तैल।

कबीले या दारुहल्दीमेंसे किसी एककी सिल पर पिसी लुगदी पाव-भर, एक सेर तिलका तेल और चार सेर दूबका स्वरस इन तीनोंको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे घाव बहुत जल्दी भर जाते हैं।

तिक्ताद्य घृत।

कुटकी, मोम, हल्दी, मुलेठी, करंजके पत्ते और फल, परवलके

पत्ते, नीमके पत्ते और चमेलीके पत्ते—इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी तथा लुगदी इन चारोंको मिलाकर घी पका लो। इस घीसे व्रण बहुत जल्दी आराम हो जाते हैं।

व्रण राक्षस तैल।

पारा, गन्धक, हरताल, सिन्दूर, मैनसिल, लहसन, बच्छनाग विष और ताम्बेका बुरादा प्रत्येक दो-दो तोले तथा सरसोंका तेल एक पाव—इन सबको तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धकको खरल करके कज्जली बना लो। फिर, ताम्बेको छोडकर, हरताल वग़ैर. पाँच दवाओंको पीस लो। अब एक ताम्बेके बर्तनमें तेल और सब चीजें डालकर, उस बर्तनको छै दिन तक तेज धूपमें रखो। बस, व्रणराक्षस तेल तैयार हो जायगा।

इस तेलके लगानेसे कफ-विकारसे हुए दाद, खाज, चकत्ते, विचर्चिका, विस्फोट, मांसवृद्धि और नासूर वग़ैरः आराम हो जाते हैं। इन सभी रोगोंके लिए यह तेल रामबाण है। सुपरीक्षित है।

नोट—ताम्बेके बर्तन बनानेवालोंसे असल ताम्बेका बुरादा या छीलन ले आओ। पीसने कूटनेसे इसका चूर्ण हो नहीं सकता, अतः इसे बर्तनमें ऐसे ही बिना कूटे डाल दो और हरताल वगैरः पांच दवाओंको पीसकर डाल दो। धूप जितनी ही तेज होगी, तेल उतना ही अच्छा पकेगा।

अमृतागुग्गुल।

गिलोय, परवलकी जड, त्रिफला, त्रिकुटा और वायबिडंग—बराबर-बराबर लो तथा "शुद्ध गूगल" सबकी बराबर लो। पहले गिलोय आदिको पीस-छान लो। फिर चूर्णको शुद्ध गूगलमें मिलाकर खूब कूटो और ६।६ माशेकी गोलियाँ बना लो। हर दिन एक-एक गोली खानेसे सब तरहके व्रण, वातरक्त, गुल्म, उदर रोग और शोथ या सूजन वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं।

नूल तैल ।

खिरैंटी और चिरचिरेकी जडको एकत्र मिलाकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीं—इन सबको मिलाकर तेल पका लो। शारीरिक और आगन्तुक प्रायः सब तरहके व्रण भरनेके लिए यह तेल रामबाण है।

अग्निदग्ध व्रण-वर्णन ।

(आगसे जलेका इलाज)

अग्निदग्ध व्रणके निदान-कारण ।

आग चिकने और रूखे द्रव्योंके आश्रयसे शरीरके अंगोंको जलाती है। आगपर तपे हुए घी तेल आदि स्नेह पदार्थ सूक्ष्म-मार्गी होनेके कारण चमड़े वग़ैरःमें घुसकर शीघ्र ही उनको जलाते हैं, इसलिये स्नेह-दग्ध होने यानी गरम घी तेल आदिसे जलनेपर बड़ी भारी पीड़ा होती है।

अग्निदग्ध व्रण—आगसे जलकर हुआ घाव चार तरहका होता है :—

(१) प्लुष्ट। (२) दुर्दग्ध।
(३) सम्यग्दग्ध। (४) अतिदग्ध।

जिसमें चमड़ेका असली रंग बदलकर अत्यन्त दाह हो और फोड़ा ऊपरको न उठे, उसे "प्लुष्ट" कहते हैं।

जिसमें दारुण फफोले पड़ जायँ, चूसनेकी सी पीड़ा और जलन हो, चमड़ेका रंग लाल हो जाय, पक जाय, दर्द हो और बहुत दिनोंमें आराम हो, उसे "दुर्दग्ध" कहते हैं।

जिसमें जलनेकी जगह ऊपरको न उठी हो, ताड़फलके समान रंग हो, जली हुई जगहमें अत्यन्त ऊँचाई और निचाई आदि दोष न हों तथा चमड़ेमें जले हुएके लक्षण दीखते हों, उसे "सम्यग्दग्ध" कहते हैं।

जिसमें मांस जलकर लटक पड़े; शरीर फट जाय; शिरा, स्नायु, सन्धि और हड्डियोंमें अत्यन्त हड़फूटन, ज्वर, दाह प्यास और बेहोशी वग़ैरः उपद्रव हों, उसे "अतिदग्ध" कहते हैं।

अग्निदग्ध-चिकित्सा।

(१) प्लुष्ट दग्धमें जो अंग जल गया हो, उसे आगसे तपाओ और गरम दवाओंसे सेको। सिकनेसे खून पतला हो जाता है, अतः उसकी गरमी अच्छी तरहसे बाहर निकल जाती है और वायुका गमन भी सबल मार्गसे खुला रहता है। अगर प्लुष्ट दग्धके ऊपर पानी डाला जाय, तो पानी स्वाभाविक रीतिसे शीतल होनेके कारण खून को जमा देता है; इससे उसकी गरमी बाहर नहीं निकलती और वायुकी गति रुक जाती है। वायुकी गति रुकनेसे भयंकर वेदना होती है। इसलिये प्लुष्ट व्रण वालेको गरम उपचारोंसे सुख होता है और शीतलसे सुख नहीं होता।

(२) दुर्दग्धमें शीतल और गरम दोनों क्रियाएँ करनी चाहियें। पहले शीतल और फिर गरम क्रिया करनी चाहिये। किन्तु दुर्दग्ध पर अगर "घी" चुपड़ना हो, तो शीतल ही चुपड़ना चाहिये। इसी तरह लेप और परिषेक आदि भी शीतल ही करने चाहिएँ।

(३) अगर सम्यग्दग्ध व्रण हो, तो वंशलोचन, पाखर, लाल-चन्दन, पीला गेरू और गिलोय इनको पीसकर और घीमें मिलाकर लेप करना चाहिये।

(४) अगर अति दग्ध व्रण हो, तो गले हुए और लटकते हुए मांसको निकालकर शीतल क्रिया करनी चाहिये। शालि चाँवल और चन्दन पीसकर लगाना चाहिये अथवा तेंदूकी छाल पीसकर

और "घी"में मिलाकर लगानी चाहिये अथवा तेंदूके काढ़ेमें "घी" डाल कर लेप करना चाहिये।

(५) कुवेर यानी तुन वृक्षकी लकड़ी एक मटकेमें भर कर आग लगा दो और मटकेका मुंह बन्द कर दो। जब वह लकड़ी बिल्कुल जल जाय, उसमेंसे थोड़ासा कोयला निकाल कर पीसो और "घी"में मिलाकर जले हुए घाव पर लगा दो। इससे दग्ध व्रण आराम हो जाता है।

(६) पीपलकी सूखी छाल पीसकर जले हुए स्थान पर बुरकने से आराम हो जाता है।

(७) केंचुओंका तेल लगानेसे सब तरहके जले हुए व्रण आराम हो जाते हैं।

(८) सेमलकी जड़ पानीमें पीसकर लेप करनेसे दग्धव्रण आराम हो जाता है।

(९) एलुआ पानीमें पीसकर लेप करनेसे दग्धव्रण आराम हो जाता है।

(१०) जौकी राख और जवाखार—इनको "तेल"में मिलाकर लेप करनेसे आगसे जलनेसे हुआ घाव और उसकी जलन आराम हो जाती है।

(११) पुरानी थूहर जलाकर, उसकी राख पानीमें पीसकर लेप करनेसे तेलसे जलनेसे हुए फफोले आराम हो जाते हैं।

(१२) अगर आँखोंमें आक या थूहरका दूध गिर जाय, तो गायका घी आँखोंमें डालो।

(१३) बेलगिरी या लिसौढ़ेकी छाल, त्रिफला और दारुहल्दीके काढ़ेमें "गोरोचन" मिलाकर नेत्रोंमें डालनेसे नेत्रोंके व्रण—चाहे वे आक और थूहरके दूधसे हुए हों और चाहे आगसे—आराम हो जाते हैं। पहले इस काढ़ेको आँखोंमें सींचना चाहिये। इसके बाद गायका घी सींचना चाहिये।

(१४) मोम, मुलहटी, लोध्र, राल, मजीठ, चन्दन और मरोड़-फली—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। लुगदीसे चौगुना घी, घीसे चौगुना पानी और लुगदी—सबको मिलाकर घी पका लो। इस घीके लगानेसे सब तरहके अतिदग्ध व्रण आराम हो जाते हैं।

(१५) परवलके पत्तोंको पीसकर लुगदी कर लो और परवलके पत्तोंका ही काढ़ा पका लो। इस लुगदी और काढ़ेके साथ "कड़वा तेल" पका लो। इस तेलसे दग्ध व्रणकी पीड़ा, जलन, मवाद निकलना और फफोले ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—लुगदीसे चौगुना कड़वा तेल और तेलसे चौगुना काढ़ा लेना।

(१६) कबीला, वायविडंग, तज और दारुहल्दी—इन दवाओंको पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको आगपर चढ़ाकर तेल पकालो। इस तेलके लगानेसे व्रणग्रन्थि आराम हो जाती है।

नोट—"वात और रुधिर" व्रणको स्रावरहित दुष्ट सूजन युक्त, ग्रन्थि सहित, तथा दाह और खुजली सयुक्त कर देते हैं। ऐसे व्रणको "व्रण ग्रन्थि" कहते हैं, यानी जिस व्रणसे मवाद नहीं आता तथा जिसमें सूजन, गांठ, जलन और खुजली होती है, उसे "व्रणकी गांठ" कहते हैं।

(१७) मोम, कौंच, ज़ीरा, शहद और हरड़—इनको पीसकर और गायके "घी"में मिलाकर लगानेसे जला हुआ व्रण तत्काल आराम हो जाता है।

(१८) मोम, मुलेठी, लोध, राल, मजीठ, चन्दन और मूर्वा—इनको समान-समान लेकर एकत्र पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदी, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी इन सबको मिलाकर घी पका लो। इस "मधूच्छिष्टाद्य घृत"के लगानेसे व्रण तत्काल भर जाते हैं।

(१९) पुरानी फिटकरी या पुराना चूना पानीमें पीसकर और

"दही"में मिलाकर लेप करनेसे तेलसे जलकर हुए घाव और फफोले आदि आराम हो जाते हैं।

नोट—आगसे जलकर हुए घावोंमें पित्तज विद्रधि और विसर्प पर लिखे हुए लेपादि प्रयोगकर सकते हैं।

(२०) जौ जलाकर राखकर लो। फिर इस राखको "अलसीके तेल"में मिलाकर लेपकर दो। इससे आगका जला हुआ घाव आराम हो जाता है।

(२१) बेरीके पत्ते या छालको घीमें पीसकर लेप करनेसे जला हुआ घाव आराम हो जाता है।

घरेलू चीज़ोंसे आगसे जले हुओंकी चिकित्सा।

साधारण दग्धके परीक्षित उपाय।

नोट—साधारण दग्धमें यानी मामूली तौरपर जलनेसे जली हुई जगह प्रायः लाल रंगकी होकर फूल जाती है अथवा जली हुई जगहमें थोड़ी देर तक अत्यन्त जलन मालूम होती है। फिर तत्काल ही उस जगह फफोलेसे उठ आते हैं। अगर ऐसा हो तो नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) आलू जले हुए की बड़ी उत्तम दवा है। थोड़ेसे आलुओं-को पत्थर पर महीन पीसकर, जली हुई जगहपर लेप कर दो। लेप ऐसा करो, जिससे जली हुई जगह बिल्कुल ढक जावे, हवा न जाने पावे। आलूके लेपसे जली हुई जगहकी जलन फौरन शान्त हो जाती है और फफोले भी नहीं पड़ते। यदि यह उपाय जलते ही किया जाय, तो निश्चय ही बहुत आराम मिलता है। परीक्षित है।

(२) जली हुई जगहपर "शहद"का लेप कर देनेसे जलन फौरन बन्द हो जाती है; पर शहद असली होना चाहिये। परीक्षित है।

(३) एक तोले "सोडा" लेकर दो तोले जलमें घोल दो और

जली हुई जगहपर उसका लेप कर दो। इससे जली हुई जगहमें फफोले भी नहीं पड़ते और सूजन तथा जलन फौरन शान्त हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४) अगर "सोडा" समयपर न मिले, तो "नारियलका तेल" ही उस जगह लगा दो।

(५) नारियलके तेलमें चूनेका नितरा हुआ पानी मिलाकर लगानेसे भी जलन मिट जाती है। अनेक लोग इस उपायसे काम लेते हैं और फायदा भी ज़रूर होता है।

(६) गिलेसरिन (Glycerine) नामकी अँगरेज़ी दवा जली हुई जगह पर लगा देनेसे फौरन लाभ होता है।

(७) एक बारीक कपड़ा तिलीके तेलमें भिगोकर और कुछ गरम करके जली हुई जगह पर बाँध देनेसे अवश्य लाभ होता है। परन्तु जले हुए अङ्गकी शीतल जल और शीतल हवासे विशेष रक्षा करनी चाहिये।

(८) तारपीनके तेलमें एक कपड़ा तर करके जली हुई जगह पर लगा देनेसे बहुत लाभ होता है। इस तेलसे पहले कुछ पीड़ा उलटी बढ़ जाती है, पर थोड़ी देरमें वह क़तई मिट जाती है।

(९) बबूलका गोंद पानीके साथ पीस कर जली हुई जगह पर लगा देनेसे जलन एकदमसे शान्त हो जाती है और फफोले होनेका खटका नहीं रहता। यह उपाय भी जलते ही तत्काल करनेसे लाभ होता है।

(१०) केंचुएकी मिट्टीको तेलमें पकाकर जली हुई जगह पर लेप करनेसे जलन और पीड़ा फौरन नाश हो जाती हैं।

(११) अगर जली हुई जगह छोटी न हो—बड़ी हो, तो उस पर गेहूँकी मैदा छिड़क या बिछाकर थोड़ीसी रूई बाँध देनी चाहिये। इससे जली हुई जगहमें बाहरी हवा नहीं लगती और वेदना भी नहीं बढ़ती।

(१२) अगर शरीरके बहुतसे अङ्ग सामान्य रूपसे जल जायँ और शरीरके भीतर भयंकर दाह—जलन और पीड़ा हो, तो तत्काल —जलते ही—उन-उन अङ्गोंको गरम पानीसे आहिस्ते-आहिस्ते धोकर नरम कपड़ेसे पोंछ दो।

अथवा

जितना सहन हो सके उतने गरम पानीमें रोगीको घुसाकर स्नान कराओ। इस उपायसे जलन और पीडा बात-की-बातमें शान्त हो जाती हैं।

गरम जलसे शरीरको धोने और धीरे-धीरे कपडेसे पोंछनेके बाद गेहूँकी मैदा जली हुई जगहों पर छिड़क या बिछा दो, ताकि हवा न जा सके। फिर उन जली हुई जगहोंको कम्बल, अलवान या फलालेनसे ढक दो, क्योंकि बहुतसे जले हुए स्थानोंको रूईसे बाँधना कठिन है।

(१३) अगर छोटे-छोटे बालकोंके पेट और बग़ल प्रभृति अङ्ग जगह-जगहसे मामूली तौरसे जल जायँ और उस समय कोई उपाय न सूझे, तो केवल रूईको तेलमें तरकरके उन स्थानों पर बाँध दो। अगर उन जगहोंमें फफोले उठ आवें, तो उनको सूई वगैरःसे फोड कर उनके भीतरका पानी निकाल दो। इसके बाद उस जगह—

कत्था, जस्तका सफेदा और नौनी घी,—इन तीनोंको एकमें मिला कर लगा दो। अथवा।

सौ बारका धोया हुआ घी उस जगह पर लगा दो। अथवा।

नारियलका तेल लगाकर, ऊपरसे जली हुई इमलीकी छालकी महीन-महीन राख बुरक दो। अथवा।

एक तोले कत्था, आधा तोले कपूर और ३ माशे सिन्दूर— तीनोंको पीस छान कर सौबारके धुले हुए छटाँक भर घीमें मिलाकर खूब मथो और उस जगह लगा दो। यह मरहम हमारी कम-से-कम

हज़ार बारकी आज़मूदा है। अगर यह जलते ही तत्काल लगा दी जाती है, तो जलन और पीड़ा फौरन शान्त हो जाती है और फफोले नहीं होते। अगर फफोलों पर लगाई जाती है, तो वे फूटकर भर जाते हैं। अगर फूटने या फफोले फोड़नेके बाद लगाई जाती है, तो घाव भर कर पूरा आराम हो जाता है। सबसे बड़ी खूबी यह है कि, यह फौरन ठण्डक कर देती है। किसी तरहका घाव क्यों न हो, इससे अवश्य आराम हो जाता है।

गम्भीर दग्ध नाशक उपाय।

नोट—जब जली हुई जगहका थोड़ा या बहुत चमड़ा जलकर ख़राब हो जाता है, उसमें जगह-जगह, ऊपरकी तरफ, उभरे हुए नरम, मोट, धूसर या बादामी रंगके दाग या चकत्ते पड़ जाते हैं और उन चकत्तोंके चारों तरफ छोटे छोटे फफोले और लाली हो जाती है। ये ही धूसर रंगके दाग क्रमसे कुछ समयमें घाव बन जाते हैं और उनमेंसे बदबूदार पीप बहने लगती है, तब "गम्भीर दग्ध" कहते हैं। यह मामूली जलनेसे विशेष कष्टदायक और बुरा होता है।

(१) अगर गम्भीर दग्ध हो, तो सबसे पहले फफोलोंको अतीव सावधानीसे फोड कर, उनका जल बाहर निकाल दो, परन्तु फफोलोंको नोचो मत। जलनेसे जो चमडा ख़राब हो गया हो या अपनी जगहसे हट गया हो तो उसे भी उखाड़ो और तोडो नहीं। अगर जली हुई जगहका चमड़ा लटकता हो, तो उस पर सम्हाल कर मैदा वग़ैरःकी पुल्टिस बाँध दो। मवाद वग़ैर साफ होने पर, उस जगह ऊपर लिखी हुई कत्था और कपूरकी मरहम लगाओ। एक दमसे आराम हो जायगा।

(२) चूनेका नितरा हुआ पानी और नारियलका तेल समान-समान लेकर मिला लो और उस जली हुई जगह पर लगाओ। इस से अवश्यमेव लाभ होता है। <u>सुपरीक्षित है</u>।

(३) तारपीनका तेल १ भाग और अलसीका तेल ६ भाग

मिलाकर लगाओ। ऊपरसे केलेका नर्म पत्ता ढककर, रूई रक्खो और बाँध दो। इस उपायसे अवश्य लाभ होगा।

नोट—कारबोलिक तेल १ भाग और अलसीका तेल ६ भाग अथवा तारपीनका तेल १ भाग और नारियलका तेल ६ भाग अथवा कारबोलिक तेल १ भाग और नारियलका तेल ६ भाग मिलाकर ऊपरकी तरह लगाने और पत्ता वगैरः बाँधनेसे भी लाभ होता है। अगर केलेका पत्ता न मिले, तो एक पतले कपड़ेको तेलमें भिगोकर व्रण पर रखदो और ऊपरसे रूई रखकर बाँध दो। परीक्षित है।

(४) अगर बहुतसे स्थान तेल या घी वगैरः चिकने और पतले पदार्थोंसे जल गये हों, तो चूनेका पानी और अलसीका तेल दोनोंको बहुत देर तक एकत्र घोटकर उस जगह लगाओ। मतलब यह है कि अलसीके तेल और चूनेके पानीको मिलाकर खूब घोटो। घोटते-घोटते जब मरहमसी हो जाय, उसे जली हुई जगह पर लगाओ। सुपरीक्षित है।

(५) इमलीकी लकड़ीको जलाकर कोयले करो और उन कोयलोंको महीन पीसकर कपडेमें छान लो। फिर उस छने हुए चूर्णको "नारियलके तेल"में मिलाकर लगाओ। इससे गम्भीर दग्ध आराम हो जाता है।

(६) अगर ऊपरके पदार्थ न मिलें, तो केलेका गूदा निकाल कर हाथोंसे मसलो और कीचसा पतला करके जली हुई जगह पर रख कर फौरन बाँध दो। इसके बाँधनेसे भी हवा व्रण पर असर नहीं करती और जलन फौरन शान्त हो जाती है।

नोट—अगर हाथ या पाँवकी अँगुलियाँ इस तरह बाँधनी हों, तो वे अलग-अलग बाँधनी चाहिये। दो अँगुलियाँ एक साथ बाँधनेसे खोलते समय या उनको अलग करते समय बहुत तकलीफ होती है। जले हुए स्थानोंको २।३ दिन तक खोलना न चाहिये। खोलकर थोड़ी देरतक गरम जलमें भिगोनेसे उनकी पीड़ा कम हो जाती है। जब घाव साफ होकर लाल हो जाय, सूजन भी कम हो जाय, तब केवल एक कपड़े को गरम जलमें भिगोकर सुहाता-सुहाता व्रण स्थान पर लगा देना चाहिये और ऊपरसे पत्ता बाँध देना चाहिये।

(छ) अगर पैरोंमें मौज़े या हाथोंमें दस्ताने हों, तो उन्हें तेलमें खूब भिगोकर उतारो।

(ज) कपड़े उतार कर रोगीके शरीर पर कम्बल या लिहाफ अथवा और कोई भारी कपड़ा ढकदो, ताकि उसके शरीरकी गरमीकी रक्षा हो।

(झ) जलनेकी पीड़ासे रोगी बेहोश न हो जाय, इसके लिए उसे थोड़ा-थोडा गरम दूध, चा, काफी, द्राक्षासव या थोड़ी-थोड़ी ब्राण्डी दो।

(ञ) रोगीको शीतल पदार्थोंसे हर तरह बचाओ। भूलकर भी शीतल जल उसके पास मत रहने दो।

(ट) जब रोगीका चित्त शान्त हो जावे, जली हुई जगहके एक भागको पहले लिखे हुए अलसीके तेल और चूनेके पानी या नारियलके तेल और चूनेके पानीसे लेपित करो और बाँध दो। इसी तरह क्रमसे एक-एक अङ्ग पर दवा लगाकर बाँधो। दूसरे या तीसरे दिन व्रणोंको धोओ, पर सब जले हुए अङ्गोंको एक साथ कभी न धोओ। एक साथ सब अङ्गोंके धोनेसे शीत पहुँचकर भयानक रोग पैदा होनेकी सम्भवना है।

(ठ) इन उपायोंके सिवा, रोगीकी पीडाको शान्त करनेवाली दवाएं पहले लिखी विधिसे विचार कर दो।

नोट—अगर शरीर पर गरम मांड पड़ जावे, तो उस जगह फौरन ताज़ा गोवर लगा दो। थोड़ी देर बाद उसे धीरेसे छुड़ा लो और गरम पानीमें कपड़ा भिगो-भिगोकर उससे धोलो। इस तरह करनेसे कुछ समय बाद फफोले पड़ जायँगे। उन फफोलों पर "अलसीका तेल और कारवोलिक तेल" दोनों मिलाकर लगानेसे वे नष्ट हो जाते हैं। —"वैद्य"

अग्निदग्ध पर यूनानी नुसखे।

अगर कोई मनुष्य आगसे जल जावे, तो नीचे लिखे हुए उपायों-मेंसे भी कोई सा करोः—

(१) इमलीकी छाल पीसकर और गायके घीमें मिलाकर लगाओ।

(२) बड़की कोपलें गायके दहीमें पीसकर मलो।

(३) अरण्डके पत्तोंका स्वरस लगाओ।

(४) धायके फूल जलाकर और सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करो।

(५) अण्डेकी सफेदी मीठे तेलमें मिलाकर लगाओ।

(६) दवातकी देशी पुरानी चालकी माहूकारी स्याही लगाओ।

(७) अनारकी पत्तियाँ पीसकर लगाओ।

(८) सीपी घिसकर और अण्डेकी सफेदीमें मिलाकर लगाओ।

(९) पुराने छप्परकी घास सरसोंके तेलमें पीसकर लगाओ।

(१०) गेहूं या जौका आटा पानीमें घोलकर लगाओ।

(११) बेरकी कोंपल दहीमें मिलाकर कई दफा लगाओ।

(१२) हींग पानीमें घोलकर जले हुए पर लगानेसे बहुत जल्दी आराम होता है।

(१३) झड़बेरीकी पत्तियाँ मीठे तेलमें मिलाकर लगाओ।

(१४) महँदीकी पत्तियाँ पानीमें पीसकर लगाओ। अथवा मक्खनमें मिलाकर लगाओ।

सूचना—ऊपरकी चौदहों दवाइयाँ आगसे जली हुई जगह पर लगानी चाहियें।

(१५) अगर जलनेसे शरीर सफेद हो जाय, तो "त्रिफला" पानीमें पीसकर उस जगह लगाओ। इससे कुछ दिनमें असली रंग आ जायगा।

(१६) जल जानेके बाद अगर दाग रह जाय, तो "जामुनकी पत्तियाँ" पीसकर उस जगह लगाओ।

सूख जाय, उसी लेप पर फिर चन्द बूँदें लगा दो। इस तरह तीन चार बार करनेसे ही फोड़ा और बद फूट जाते हैं और उनके भीतरका मवाद बह जाता है। परीक्षित है।

(७) कायफलकी छालको पानीमें औटाकर काढ़ा कर लो। इस काढ़ेसे व्रण या घाव धोनेसे घाव शुद्ध हो जाता है। परीक्षित है।

(८) मरोड़फलीकी जड़ पानीमें पीसकर लगानेसे फोड़े और घाव आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) गंगावतीका पत्ता हाथमें लगाकर घाव पर जमा देनेसे घावसे खून गिरना तत्काल बन्द हो जाता और घाव भर जाता है। सद्योव्रणकी अच्छी दवा है।

(१०) पनड़ीके पत्तोंके रसमें बाग़की कपासकी जड़ घिस कर घाव पर लेप करनेसे घाव भर जाता है। अथवा बाग़की कपासके फल और पनड़ीके पत्ते महीन पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके घावपर जमा देनेसे घाव जल्दी ही भर आता है।

(११) सेमलकी रुई पानीके साथ पीसकर अग्निदग्ध या आगसे जले हुए स्थान पर लेप करनेसे अग्निदग्ध व्रण अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) व्रण रोगमें लगानेकी दवाके साथ-साथ अगर "योगराज गूगल, किशोर गूगल, रास्नादि गूगल, कचनार गूगल या विडंगाद्य गूगल"—इनमेंसे कोई गूगल खाई जावे तो भयङ्कर व्रण और नाड़ी व्रण-नासूर आराम हो जाते हैं।

(१३) सेमलकी छाल पानीके साथ पीसकर व्रण पर लेप करनेसे व्रण और स्फोटकादिकी जलन शान्त हो जाती है।

(१४) अगर व्रण फूटकर बहता हो, उससे ख़राब-ख़राब मवाद निकलता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते सिलपर पीसकर, लुगदीमें "शहद" मिला लो और मिलानेके लिए फिर पीस लो और व्रण पर

नोट—नीमके पत्तोंके रसमें "सोंठ और गेरू" पीसकर मिला दो। इसकी मालिश करनेसे पित्ती, चकत्ते, और खुजली वगैर. रोग आराम हो जाते हैं।

(२२) करिहरीकी गाँठको पानीमें घिसकर व्रण पर लेप करनेसे व्रण, कण्ठमाला, अदीठ और बद वगैरः नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) कांकड वृक्षकी छाल पानीमें पीसकर लगानेसे व्रण नष्ट हो जाता है।

(२४) काकजंघाके पत्ते जलाकर घी या तेलमें पीस लो। इसके लगानेसे व्रण आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२५) अगर घावमें दर्द होता हो, तो प्याजको चीरकर घीमें तलो और घाव पर बाँधो दर्द जाता रहेगा। परीक्षित है।

नोट—आगकी ज्वाला, लपट और लूसे बचना हो, तो एक प्याज पास रखो।

(२६) अगर आगकी लपट या लू लग गई हो, तो एक भुना हुआ प्याजका गट्ठा और एक कच्चा प्याज़का गट्ठा लेकर पीसो। फिर इसमें दो माशे सफेद जीरा और दो तोले मिश्री मिलाकर खाओ। अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(२७) अगर फोड़ेमें बहुत ही जलन होती हो, तो "काली अगर पानी"में पीसकर फोड़ेपर लेप कर दो। परीक्षित है।

(२८) शारिवाकी जड़ें पानीमें पीसकर व्रणपर बाँधनेसे व्रण शुद्ध होता है। परीक्षित है।

(२९) बडी इन्द्रायणकी जड और कडवे वृन्दावनकी जड़ पानीमें पीसकर बारम्बार लेप करनेसे अदीठ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३०) वेलके पेड़की लकड़ी पानीमें घिसकर फोड़ेपर लेप करनेसे फोड़ेकी जलन, लाली और सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३१) कपूर पानीमें पीस और घोलकर घाव धोनेसे घाव शुद्ध हो जाते हैं।

(४२) घिया तोरई की पत्ती पीसकर घाव पर बाँधनेसे घाव भर जाता है।

(४३) कंघीकी पत्ती पीसकर घाव पर बाँधनेसे घाव भर जाता है। कहते हैं, साबत पत्ती बाँधनेसे जल्दी लाभ होता है।

(४४) सरूकी पत्तियोंकी राख घाव पर छिड़कनेसे घाव भर जाता है।

(४५) हल्दीका पिसा-छना चूर्ण बुरकनेसे घाव सूख जाता है।

(४६) माजूफलकी राख घाव पर बुरकनेसे घाव सूख जाता है।

(४७) कुन्दर पीस-छानकर बुरकनेसे घाव आराम हो जाता है।

(४८) कमल और बडके पत्ते समान-समान लेकर जलाओ। फिर इस राखको तेलमें मिलाकर घाव पर टपकाओ। इससे फैलनेवाले घावमें बड़ा लाभ होता है।

(४९) कपूर ३ माशे, भुने हुए नाजबोंके बीज ६ माशे, प्याजका छिलका जला हुआ १ तोले और जले हुए बाल २ तोले—इन सबको पीस और मिलाकर छान लो। इस चूर्णसे घाव और फफोले बहुत जल्दी सूखते हैं। कहते हैं, इस काममें यह बुरका लासानी है।

अगर फोड़ा कच्चा हो, पका न हो, तो उसे पकाना चाहिये। कुछ आमलोंको कड़ाहीमें भूँज लो। फिर भुने हुए आमलों और गेरूको पानीमें पीस लो। पीसते समय जरासी सज्जी भी मिला दो। फिर इसे ऐसा पतला कर लो, कि लेप हो सके। इसका दो चार बार लेप करनेसे फोड़ा पक जाता अथवा बैठ जाता है।

नोट—आमले और गेरू बराबर-बराबर लेना और सज्जी कोई एकका आठवाँ भाग लेना।

अथवा।

गुड और काला सुहागा पानीमें पीसकर लगाना चाहिये। इससे भी फोड़ा पक जाता है।

अथवा।

अलसीको सिल पर पीसकर और दूध मिलाकर पकाओ, जब शीरासा

(६) मूंगा महीन पीसकर छिड़कनेसे खून बन्द हो जाता है।

(७) ताज़ा काईका लेप करनेसे घावसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(८) कुन्दर पीसकर घावपर बुरकनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(९) रूई जलाकर बुरकनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

समस्त व्रण नाशक यूनानी मरहमें।

(१) सफेद कत्था ६ माशे, आमलासार गन्धक ६ माशे, गन्दाबिरौज़ा १ तोले, फिटकरी ६ माशे, रस कपूर ३ माशे, गेरू ६ माशे, शीतलचीनी ६ माशे और सिन्दूर ६ माशे,—इन सबको पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो।

अब एक छटाँक घी और आधी छटाँक मोमको एक प्यालीमें रखकर आग पर पिघलाओ। जब वे पिघल जायँ, उनमें ऊपरका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और एक दिल कर लो।

इस मरहमके लगानेसे सब तरहके फोड़े-फुन्सी, घाव, चकत्ते, उपदंश या गरमीके घाव, फफोले और चेचकके घाव तथा विसर्प—ये सब नाश हो जाते हैं। अनेक बारकी परीक्षित है।

(२) राल ३॥ माशे, शिंगरफ १ माशे, मुर्दासंग १ माशे, छिले कौंचके बीज ३॥ माशे, सरसोंका तेल ३॥ तोले और नीमके पत्तोंकी सिल पर पिसी टिकिया—ये सब तैयार रखो।

पहले आग पर तेलको चढ़ाओ और उसमे "पिसे हुए कौंचके बीजों"को जलाओ। इसके बाद उसमें "नीमकी टिकिया" जलाओ। अब तेलको उतार कर छान लो और उसमें राल, सिंगरफ और मुर्दा-

उतार लो। इस मरहमसे आतशकके घाव और सब तरहके घाव आराम हो जाते हैं।

नोट—अगर इसको पुराने पीप वाले घाव पर लगाओ, तो इसमें थोड़ीसी "सुपारीकी राख" भी पीसकर मिला दो।

(८) भुनी फिटकरी २ माशे, सिन्दूर २ माशे, मुर्दासंग ४ माशे, तूतिया २ रत्ती, मोम २० माशे और घी ३॥ तोले तैयार रखो। पहले घी और मोमको आग पर गला लो और नीचे उतार कर उसमें फिटकरी आदि पीसकर मिला दो। इस मरहमसे सब तरहके घाव आराम हो जाते हैं।

(९) १० तोले पुरानी रूईकी राख, ५ तोले मोम, ५ तोले खुरासानी वच, गायका घी ८ तोले ४ माशे और तूतिया २ रत्ती-तैयार करो। पहले "घी और मोम"को एक बर्तनमें डाल कर गरम करो। फिर उसमें "रूईकी राख," इसके बाद "वच" और उसके भी बाद "तूतिया" भून कर डाल दो। जब सब एक-दिल हो जायं उतार लो। कहते हैं, यह मरहम घाव भरनेमें सर्व्वश्रेष्ठ है।

(१०) तूतिया १ माशे, मुर्दासिंग २ माशे, सफेद कत्था ४ माशे, राल ८ माशे, कमीला १६ माशे, मोम काफूरी ११ माशे और गायका घी ३२ माशे—मोम और घीको छोडकर, सब दवाएं पीस-छान लो। फिर घीको १०० बार पानीसे धो लो। अब मोमको आगपर पतला करके घीमें मिला दो और पिसी हुई दवाएं भी मिला दो। इनको हाथसे खूब मथो ; बस, मरहम तैयार हो जायगी। फोडेके जख्म भरनेको यह मरहम बड़ी अच्छी है।

(११) कपूर ३॥ माशे, सफेद मोम २० माशे, मीठा तेल २० माशे और सफेदा ४० माशे—तैयार करो। पहले तेलको गरम करो, फिर उसमें "मोम" मिला दो। जब मोम गल जाय, उसमें "कपूर और सफेदा" मिलाकर मीठी आँचसे पकाकर उतार लो। इस मरहमके लगानेसे घाव सूख जाते हैं।

(१७) तीन तोले चार माशे कौंचके छिले बीज सिल पर पानीके साथ पीसकर टिकिया बना लो। फिर उस टिकियाको आध पाव मीठे तेलमें डाल कर जलाओ; जब काली हो जाय, उतार कर छान लो। इस तेलसे घाव और नासूर आराम होते हैं।

(१८) कालीमिर्च ३॥ माशे, तूतिया एक चनेके बराबर, पाँच कुचलेके दाने, कड़वा तेल १० तोले, नीमकी पत्तियोंकी टिकियाँ १ तोले, अजवायन २० माशे, कमीला ३ तोले ४ माशे—तैयार रखो।

पहले तेलको कड़ाहीमें डाल कर आग पर रखो और नीमकी टिकिया डाल दो। जब टिकिया काली हो जाय, तेलको उतार कर छान लो। फिर तेलको आग पर चढ़ा दो और एक-एक चीज़ अलग-अलग डाल-डाल कर जलाओ। इसके बाद तेलको उतार कर छान लो और शीशीमें भर दो। इस तेलमें रूईका फाहा भिगो कर घाव या नासूरपर रखनेसे क़ाबिल तारीफ फ़ायदा होता है।

(१९) मीठा तेल पाव-भर आग पर चढ़ा दो। फिर उसमें साढ़े तीन-तीन तोले नीमकी कोंपल और अरण्डकी कोंपल डाल कर जलाओ। जब पत्तियाँ जलकर काली हो जायँ, तेलको उतार कर छान लो। फिर इस तेलमें राल ३॥ तोले और कमीला १ तोले ८ माशे पीस कर मिला दो। इस तेलके घाव पर टपकानेसे सब तरहके घाव यहाँ तक कि जानवरोंके घाव आराम हो जाते हैं।

नोट—अगर घावमें मरा हुआ मांस बहुत हो तो तेलमें एक माशे भर तूतिया महीन पीसकर मिला दो।

व्रणको "नाड़ी व्रण" कहते हैं। और भी खुलासा—जो फोड़ा आराम होकर एक सूराखसे मवाद बहाया करता है, उसे "नाड़ी व्रण या नासूर" कहते हैं।

नाड़ी व्रणकी संख्या।

नाड़ी व्रण पाँच तरहका होता है :—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) सन्निपातज, और
(५) शल्यज।

वातज नाड़ी व्रणके लक्षण।

वातज नाड़ी व्रण रूखा, छोटे मुँह वाला, शूल और झाग सहित होता है। यह रातमें बहुत बहता है।

पित्तज नाड़ी वृणके लक्षण।

पित्तज नाड़ी वृण होनेसे प्यास, ज्वर और दाह होता है। इसमेंसे गरम और पीली राध बहती है। यह दिनमें बहुत बहता है।

कफज नाड़ी वृणके लक्षण।

इस नाडी व्रणसे अत्यन्त गाढी, सफेद और चिकनी राध बहती है। यह कठोर और खुजलीयुक्त होता है और रातमें जियादा बहता है।

त्रिदोषज नाडी वृणके लक्षण।

जिसमें दाह, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, मुँह सूखना और पहले कहे हुए वातपित्तादिके सब लक्षण मिलते हैं; उसे "त्रिदोषज नाड़ी व्रण" कहते है। यह काल रात्रिके समान घोर और प्राणनाशक होता है।

(३) सैंधानोन, चीता, आक, कालीमिर्च, भाँगरा, नागकेशर, हल्दी और दारुहल्दी,—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे कफवातसे पैदा हुआ नाड़ी व्रण नाश हो जाता है। परीक्षित है।

पित्तज नाडीव्रणकी चिकित्सा ।

(१) पहले दूध और घीके साथ गेहूँके आटेकी लूपरी या पुल्टिस बना कर व्रणपर बाँधो। पीछे उसे चीरकर—तेल,जमालगोटे और मँजीठकी सिल पर पिसी लुगदी उसमें भर दो। इस व्रणको नित्य हल्दी, लालचन्दन और नीमकी छालके काढ़ेसे धोना चाहिये।

(२) काली निशोथ, निशोथ, त्रिफला, हल्दी और लोध—इनको समान-समान लेकर सिल पर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, छान लो। इस घीमें दूध मिलाकर पित्तज नाड़ीव्रण पर इसके तरडे दो। इससे राध बहना बन्द हो जाता है।

कफज नाडीव्रणकी चिकित्सा ।

(१) पहले कुलथी, सरसों, सत्तू और बेलगिरी मिलाकर पुल्टिस बनाओ और व्रण पर बाँधो। जब व्रण नरम हो जाय, उसे चीर दो। इसके बाद नीम, तिल, चीता, जमालगोटा, फिटकरी और सैंधेनोनको एकत्र पीसकर उसमें भर दो। इस व्रणको नित्य करञ्ज, नीम, चमेली, आक और पीलू—इनके स्वरसोंमेंसे किसी एकके स्वरससे धोया करो।

(२) सज्जी, सेंधानोन, दन्ती, चीता, सफेद आक, सिवार और चिरचिरेके बीज—इनको बराबर-बराबर लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना
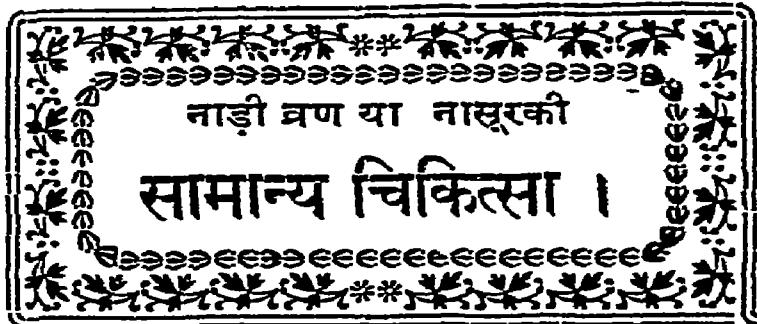
(१) थूहरका दूध, आकका दूध और दारूहल्दी—इन तीनोंकी वत्ती वना कर व्रणमें रखनेसे सब तरहके नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं।

(२) शहद और सेंधेनोनकी वत्ती वना कर व्रणमें रखनेसे नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—शहद और सेंधेनोनको मिलाकर सूतपर लपेटनेसे भी वत्ती बनती है।

(३) दो तोले सिन्दूरकी सिल पर पिसी लुगदी, लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना कचूरका रस या काढ़ा—इनको मिलाकर तेल पका लो। इस तेल द्वारा तर करनेसे नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण और विसर्प ये सब नाश हो जाते हैं।

(४) अमलताश, हल्दी और निशोथको "गोमूत्रके साथ" पीसकर और "शहद"में मिलाकर वत्ती वना लो। इस वत्तीको व्रणमें रखनेसे नाडी व्रण शुद्ध होकर आराम हो जाता है।

(५) चमेली, आक, अमलताश, करंज, जमालगोटा, सैंधानोन, कालानोन, जवाखार और चीता—इनको समान-समान लेकर, "थूहरके दूध"में पीसकर और वत्ती वनाकर व्रणमे रखनेसे नाड़ी व्रण तत्काल नाश हो जाता है।

(६) वहेड़े, आमकी गुठली, वड़के अंकुर, रेणुका, शंखाहूलीके वीज और सूअरकी विष्ठा—इनको जलाकर स्याही वनालो। इस

नासूर नाशक यूनानी नुसख़े ।

(१) पुराना कम्बल जलाकर राख कर लो और तूतिया पीसकर छान लो। फिर दोनोंको बराबर-बराबर मिलाकर नासूर पर छिड़को ; नासूर आराम हो जायगा ।

(२) साँपकी काँचलीकी राख बड़के दूधमें मिला लो। फिर उसमें रूईका फाहा भिगोकर नासूर पर रखो और दस दिन बाद उसे उठा लो ; अवश्य लाभ होगा ।

(३) पाव भर सरसोंके तेलमें एक छिपकली जला लो और नीचे उतारकर छान लो। फिर उस तेलमें एक तोले गायके सुमकी राख और एक तोले जूतीके तलेकी राख मिला दो ; जब एक दिल हो जायँ, तेलको रख दो। इस तेलकी चन्द बूँद रोज़ नासूर पर टपकानेसे नासूर आराम हो जाता है।

(४) गूलरके दूधमें फाहा तर करके नासूर पर लगातार कुछ दिनोंतक रखनेसे नासूर आराम हो जाता है। इससे भगन्दरमें भी लाभ होता है।

(५) समन्दरशोखकी राख नासूरमें भरनेसे नासूर आराम हो जाता है।

(६) मदारके दूधमें रूई भिगोकर छायामें सुखा लो। फिर उस रूईकी बत्ती बना कर एक दीपकमें रखो और सरसोंका तेल भर दो। बत्तीकी लौ पर दूसरा दीपक अधर रखो, जिससे उसमें काजल जमा हो जाय। इस काजलको नासूर पर लगानेसे नासूर आराम हो जाता है।

इकत्तीसवाँ अध्याय

भग्न रोगका निदान ।

पतन, पीडन, व्याल अथवा विषादिक प्रयोग और अग्निदग्ध इत्यादि तथा अनेक प्रकारके अभिघातोंसे विविध प्रकारका सन्धि और अस्थि भग्न होता है ।

खुलासा—पेड़ या मन्दिर अथवा मकान वग़ैरःसे गिरने, किसी चीज़के नीचे दब जाने, सर्प वग़ैरःके डसने, विष वग़ैरः प्रयोग करने और आगसे जलने वग़ैरः वग़ैरः कारणोंसे सन्धि और हड्डी टूट जाती हैं । इस लिए यह रोग दो तरहका होता है :—

(१) काण्डभग्न, और (२) सन्धिभग्न

काण्डभग्नके सामान्य लक्षण ।

काण्डभग्न हाड़के मुड़ जाने या टूट जाने आदिको कहते हैं । इस अवस्थामें रोगीको उठते, बैठते और खड़े होते किसी भी तरह चैन नहीं मिलता । भग्न या टूटे स्थानको दबानेसे आवाज होती है, शूल होता है और वहाँ हाथसे छुआ नहीं जाता ।

(५) अगर भग्न व्रण सहित हो, तो उस व्रणको "घी और शहद" मिले हुए काढ़ोंसे धोना चाहिये। इसके बाद सब क्रियाएँ भग्नकी समान करनी चाहिएँ। इस मौक़े पर वातरोगमें कहे हुए घी तेल आदि उपकारी हैं।

(६) जिसको सन्धिभग्न या काण्ड भग्न हुआ हो, उसे नमक, चरपरे पदार्थ, खारी पदार्थ, खट्टे पदार्थ, मैथुन, कसरत, दिनमें सोना, रातमें जागना, चिन्ता करना, धूपमें बैठना और रूखे अन्न खाना—ये सब छोड़ देने चाहिएँ।

इस रोगमें मांस-रस, चाँवल, गेहूँ, दूध, घी, मक्खन, बादाम और अंगूर आदि पदार्थ पथ्य हैं।

(७) जब अंगोंको फैलाते-पसारते समय ज़रा भी दर्द न हो, कोई अवयव छोटा न रह जाय, सूजन नामको भी न रहे और उठने-बैठते-चलते समय ज़रा भी दुःख न हो यानी ये सब काम सुखसे हों, तब समझो कि भग्न आराम हो गया—टूटा हुआ अंग ठीक हो गया।

भग्न रोग-चिकित्सा।

लगाने और बाँधनेकी दवाएँ।

(१) अगर हड्डी टूट गई हो, तो पहले शीतल जलके तरड़े दो, फिर कीचका लेप करो और कुशा रखकर पट्टी बाँध दो। अथवा गूलर, पीपल, ढाक, बाँस, कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और बेंत—इनकी छालों अथवा कुशाओंको रखकर मज़बूत पट्टी बाँध दो। जाड़ेके दिनोंमें सात-सात दिनमे पट्टी खोलो; गरमीमें तीन-तीन दिनमे पट्टी खोलो और साधारण समयमें पाँच-पाँच दिनमे बन्द खोलो।

(५) अगर भग्न स्थानमें दर्द हो, तो पंचमूलके काढ़ेमें दूध मिलाकर उससे भग्नको सींचो यानी दूध मिलाकर यह काढ़ा उस पर डालो । अथवा दूधमें "पंचमूलकी दवाएं" पका कर, उसके तरड़े दो ।

(६) अथवा विचार करके चूकेका तेल सुहाता-सुहाता सींचो । अथवा जो अन्न जलन नहीं करते उनकी पुल्टिस बाँधो ।

नोट—यहाँ जो लेप लिखे हैं, वे सब हड्डी मिल जाने और पट्टी खोलने पर करने चाहियें । पहला उपाय तख्ती वगैरः रख कर बाँधना और न्यग्रोधादि-गणकी दवाओंके काढे वगैरः से सींचना है । जब बन्धनसे हड्डी ठिकाने बैठ जाय, तब बन्धन खोलकर लेप लगाने चाहियें ।

(७) अगर भग्न रोग पुराना हो, आराम न होता हो, तो "नारायण तेल, माष तैल या कुब्ज प्रसारिणी तेल"की मालिश कराओ । इन तेलोंको विधि इसी भागके पृष्ठ २६८—३०० में लिखी है ।

(८) अम्बाड़ेकी जड़, इमलीके फल, इमलीके पत्ते, सहँजनेकी जड़, पुनर्नवाकी जड़, मानकन्द और सुपारीकी जड़—इनको कूट-पीस कर और माठे तथा काँजीमें पकाकर लेप करनेसे पीड़ा और सूजन दूर हो जाती एवं टूटी हुई हड्डियाँ जुड जाती हैं ।

(९) चाँवलोंके आटेमें नमक मिलाकर लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता हैं ।

(१०) इमली या आमके रसका लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है ।

(११) चमेलीकी जड़ पीसकर उसमें "शहद" मिलाओ और चोटकी जगह लेप करो । इससे टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है ।

(१२) भुना हुआ सुहागा पीसकर लगानेसे टूटी हुई हड्डीमें लाभ होता है ।]

खाने पीनेके दवाएँ ।

(१) लहसन, शहद, पीपरकी लाख, घी और मिश्री डेढ़-डेढ़

हारसिंगारका चूर्ण "घी"में मिलाकर खानेसे टूटा हाड जुड जाता है।

पीपरकी लाख, गेहूँकी मैदा और अर्जुनकी छाल—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण १ तोले-भर घीमें पीस कर खाने और ऊपरसे गायका दूध पीनेसे टूटा हाड जुड जाता है।

आभा गुग्गुल।

(५) बबूलकी.फली, त्रिफला और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णकी बराबर "शुद्ध गूगल" मिलाकर रख लो। इसमेंसे तीन-तीन या छै-छै माशे रोज़ खानेसे सन्धिभग्न रोग आराम हो जाता है। इसका नाम "आभा-गुग्गुल" है। परीक्षित है।

लाक्षाद्य गुग्गुल।

लाख, हड्संघारी, अर्जुनकी छाल, असगन्ध, शुद्ध गूगल और बड़ी खिरेंटी—इनको समान-समान लेकर पीस-कूट लो। इसके एक तोला रोज खानेसे टूटा हुआ हाड़ जुड़ कर वज्रके समान हो जाता है और पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

थोड़े भुने हुए गेहूंका आटा "शहद"के साथ खिलानेसे अस्थिभंग रोग आराम हो जाता है। कमर और जोड़ मुड़ जानेके लिए यह अच्छी दवा है। परीक्षित है।

नोट—जब कोई चीज किसी अंग पर गिर पड़ती है, तो उसे "जरब" कहते हैं। जब अंग आप ही किसी चीज पर गिर पड़ता है, तो उसे "सकता" कहते हैं। अगर इनकी वजहसे सूजन या ज्वर हो, तो पहले सूजन और ज्वरका उपाय फस्द, पछने और नर्म करनेवाली चीज़ोंसे करना चाहिये।

हुआ खून पिघलकर दर्द आराम हो जाता है। यह दवा मोमियाईसे भी उत्तम है।

लगानेकी दवाएं।

(६) वचियारकी लकड़ी पानीमें घिसकर और गुनगुनी करके लगानेसे चोट आराम हो जाती है।

(१०) सहँजनेकी पत्तियाँ और मीठा तेल बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीसो और चोटपर लेप करके धूपमें बैठो। इससे चोट आराम हो जाती है।

(११) रेंडीकी गरी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर अलग-अलग कूटो। फिर मीठे तेलमें दोनोंको मिलाकर चोटपर लेप करो। इससे चोट आराम होती और टूटा हुआ जोड़ अपनी असली हालतमें आ जाता है।

(१२) तिलकी खली कूटकर गरम पानीमें डाल दो। जब गल जावे, उसे महीन कपड़ेपर लहेसकर जोड़पर रख दो। इस उपायसे चोट और मोचमें अवश्य आराम मालूम होता है।

(१३) पुराने नारियलको मीठी गरी कूटकर,उसमें चौगुनी महीन हल्दी मिला दो और कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, पोटलीको आगपर गरम करो और उससे घण्टे सवा घण्टे तक चोटपर सेक करो। फिर चोट और वरम या सूजनकी जगहपर इसे बाँध दो। इस तरह दो तीन दिन करनेसे चोट आराम हो जायगी।

(१४) हल्दी पिसी हुई, मैदा लकड़ी पिसी हुई और गेंहूँकी मैदा—प्रत्येक आध-आध पाव ; लोटन सज्जी २० माशे और मीठा तेल पावभर—ये सब तैयार रखो।

पहले तेलको आगपर गरम करो। फिर उसमें "मैदा" डालकर भूनो। इसके बाद उसमें पिसी हुई "सज्जी" डाल दो। इसके भी बाद पिसी हुई "मैदा लकडी और अन्तमें हल्दी" भी डाल दो और थोड़ा पानी डालकर पकाओ। जब पानी जल जावे और लेई सी हो जावे,

भगन्दरके लक्षण ।

गुदाकी बाजूमें, दो अङ्गुल पर, एक फुन्सी होती है। उसमें बड़ी वेदना होती है। जब वह फूट जाती है, तब उसे "भगन्दर" कहते हैं।

"भावप्रकाश"में लिखा है, गुदाकी बग़लमें, दो अङ्गुलके बीचमें, पीड़ा करनेवाली और फटी हुई जो पिडिका या फुन्सी होती है, उसे "भगन्दर" कहते हैं।

भोज महाशय कहते हैं, चूंकि यह गुदाको और मूत्राशयको, चारों ओरसे योनिकी तरह फोड़ देता है, इसलिये इस रोगको भगन्दर कहते हैं।

कोई कहते हैं—गुदाके इर्द-गिर्द, दो-दो अंगुलकी दूरी पर, फुन्सियाँ और गाँठें होती हैं, वे दर्द करती हैं, पकती हैं, फूटती हैं और बहती हैं, इसी रोगको "भगन्दर" कहते हैं। यूनानी वाले इस रोगको "नवासीर" कहते हैं।

यह भगन्दर जब अपथ्य सेवन करनेसे बिगड़ जाता है, तब

गोमूत्र और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलका नाम "स्वर्जिकाद्य तेल" है। इस तेलके लगानेसे दुष्ट व्रण और कफ-सम्बन्धी नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं।

(३) सैंधानोन, बहेड़ा, कालीमिर्च, चीता, करेला, हल्दी और दारूहल्दी—सबको समान-समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे वायु-सम्बन्धी नाड़ी व्रण, चाहे जितनी दूर तक पहुँचा हो, आराम हो जाता है।

शल्यज नाडी वृण चिकित्सा।

(१) शल्यज वृणको नश्तरसे चीरकर काँटा निकालो, फिर उसकी राहको साफ करो। इसके बाद उस पर शहद और घीमें पिसे हुए नीमके पत्तोंका लेप कर दो अथवा तिल पीसकर लेप कर दो। इन उपायोंसे वृण सूख जायगा।

(२) जमालगोटा, खजूर, कैथ, बेलगिरी और बड़—इनके कच्चे फलोंका काढ़ा बनाओ। नागरमोथा, फूल प्रियंगू, धूप-सरल, रोहिष तृण, मोचरस, नागकेशर, लोध और धायके फूल इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना जमालगोटा आदिका काढ़ा और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलका नाम "कुम्भीकाद्य तेल" है। इससे शल्य-सम्बन्धी नाड़ी वृण तथा अन्यान्य सब तरहके वृण आराम हो जाते हैं।

---

(१) थूहरका दूध, आकका दूध और दारूहल्दी—इन तीनोंकी बत्ती बना कर व्रणमें रखनेसे सब तरहके नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं।

(२) शहद और सैंधेनोनकी बत्ती बना कर व्रणमें रखनेसे नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—शहद और सैंधेनोनको मिलाकर सूतपर लपेटनेसे भी बत्ती बनती है।

(३) दो तोले सिन्दूरकी सिल पर पिसी लुगदी, लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना कचूरका रस या काढ़ा—इनको मिलाकर तेल पका लो। इस तेल द्वारा तर करनेसे नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण और विसर्प ये सब नाश हो जाते हैं।

(४) अमलताश, हल्दी और निशोथको "गोमूत्रके साथ" पीसकर और "शहद"में मिलाकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको व्रणमें रखनेसे नाडी व्रण शुद्ध होकर आराम हो जाता है।

(५) चमेली, आक, अमलताश, करंज, जमालगोटा, सैंधानोन, कालानोन, जवाखार और चीता—इनको समान-समान लेकर, "थूहरके दूध"में पीसकर और बत्ती बनाकर व्रणमे रखनेसे नाड़ी व्रण तत्काल नाश हो जाता है।

(६) बहेड़े, आमकी गुठली, बड़के अंकुर, रेणुका, शंखाहूलीके बीज और सूअरकी विष्ठा—इनको जलाकर स्याही बनालो। इस

नासूर नाशक यूनानी नुसखे।

(१) पुराना कम्बल जलाकर राख कर लो और तूतिया पीसकर छान लो। फिर दोनोंको बराबर-बराबर मिलाकर नासूर पर छिड़को ; नासूर आराम हो जायगा।

(२) साँपकी काँचलीकी राख बड़के दूधमें मिला लो। फिर उसमें रूईका फाहा भिगोकर नासूर पर रखो और दस दिन बाद उसे उठा लो ; अवश्य लाभ होगा।

(३) पाव भर सरसोंके तेलमें एक छिपकली जला लो और नीचे उतारकर छान लो। फिर उस तेलमें एक तोले गायके सुमकी राख और एक तोले जूतीके तलेकी राख मिला दो ; जब एक दिल हो जायँ, तेलको रख दो। इस तेलकी चन्द बूँद रोज़ नासूर पर टपकानेसे नासूर आराम हो जाता है।

(४) गूलरके दूधमें फाहा तर करके नासूर पर लगातार कुछ दिनोंतक रखनेसे नासूर आराम हो जाता है। इससे भगन्दरमें भी लाभ होता है।

(५) समन्दरशोखकी राख नासूरमें भरनेसे नासूर आराम हो जाता है।

(६) मदारके दूधमें रूई भिगोकर छायामें सुखा लो। फिर उस रूईकी बत्ती बना कर एक दीपकमें रखो और सरसोंका तेल भर दो। बत्तीकी लो पर दूसरा दीपक अधर रखो, जिससे उसमें काजल जमा हो जाय। इस काजलको नासूर पर लगानेसे नासूर आराम हो जाता है।

भग्न रोगका निदान।

पतन, पीडन, व्याल अथवा विषादिक प्रयोग और अग्निदग्ध इत्यादि तथा अनेक प्रकारके अभिघातोंसे विविध प्रकारका सन्धि और अस्थि भग्न होता है।

खुलासा—पेड़ या मन्दिर अथवा मकान वग़ैरःसे गिरने, किसी चीज़के नीचे दब जाने, सर्प वग़ैरःके डसने, विष वग़ैरः प्रयोग करने और आगसे जलने वग़ैरः वग़ैरः कारणोंसे सन्धि और हड्डी टूट जाती हैं। इस लिए यह रोग दो तरहका होता है :—

(१) काण्डभग्न, और (२) सन्धिभग्न

काण्डभग्नके सामान्य लक्षण।

काण्डभग्न हाड़के मुड़ जाने या टूट जाने आदिको कहते हैं। इस अवस्थामें रोगीको उठते, बैठते और खडे होते किसी भी तरह चैन नहीं मिलता। भग्न या टूटे स्थानको दबानेसे आवाज होती है, शूल होता है और वहाँ हाथसे छुआ नहीं जाता।

(५) अगर भग्न व्रण सहित हो, तो उस व्रणको "घी और शहद" मिले हुए काढ़ोंसे धोना चाहिये। इसके बाद सब क्रियाएँ भग्नकी समान करनी चाहिएँ। इस मौके पर वातरोगमें कहे हुए घी तेल आदि उपकारी हैं।

(६) जिसको सन्धिभग्न या काण्ड भग्न हुआ हो, उसे नमक, चरपरे पदाथ, खारी पदाथ, खट्टे पदार्थ, मैथुन, कसरत, दिनमें सोना, रातमें जागना, चिन्ता करना, धूपमें बैठना और रूखे अन्न खाना—ये सब छोड़ देने चाहिएँ।

इस रोगमें मांस-रस, चाँवल, गेहूँ, दूध, घी, मक्खन, बादाम और अंगूर आदि पदार्थ पथ्य हैं।

(७) जब अंगोंको फैलाते-पसारते समय ज़रा भी दर्द न हो, कोई अवयव छोटा न रह जाय, सूजन नामको भी न रहे और उठने-बैठते-चलते समय ज़रा भी दुःख न हो यानी ये सब काम सुखसे हों, तब समझो कि भग्न आराम हो गया—टूटा हुआ अंग ठीक हो गया।

भग्न रोग-चिकित्सा।

लगाने और बाँधनेकी दवाएँ।

(१) अगर हड्डी टूट गई हो, तो पहले शीतल जलके तरड़े दो, फिर कीचका लेप करो और कुशा रखकर पट्टी बाँध दो। अथवा गूलर, पीपल, ढाक, बाँस, कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और बेत—इनकी छालों अथवा कुशाओंको रखकर मज़बूत पट्टी बाँध दो। जाड़ेके दिनोंमें सात-सात दिनमे पट्टी खोलो; गरमीमें तीन-तीन दिनमे पट्टी खोलो और साधारण समयमें पाँच-पाँच दिनमे बन्द खोलो।

(५) अगर भग्न स्थानमें दर्द हो, तो पंचमूलके काढ़ेमें दूध मिलाकर उससे भग्नको सींचो यानी दूध मिलाकर यह काढ़ा उस पर डालो। अथवा दूधमें "पंचमूलकी दवाएं" पका कर, उसके तरड़े दो।

(६) अथवा विचार करके चूकेका तेल सुहाता-सुहाता सींचो। अथवा जो अन्न जलन नहीं करते उनकी पुल्टिस बाँधो।

नोट—यहाँ जो लेप लिखे हैं, वे सब हड्डी मिल जाने और पट्टी खोलने पर करने चाहियें। पहला उपाय तख्ती वगैर: रख कर बाँधना और न्यग्रोधादि-गणकी दवाओंके काढे वगैरः से सींचना है। जब वन्धनसे हड्डी ठिकाने बैठ जाय, तब वन्धन खोलकर लेप लगाने चाहियें।

(७) अगर भग्न रोग पुराना हो, आराम न होता हो, तो "नारायण तेल, माष तैल या कुब्ज प्रसारिणी तेल"की मालिश कराओ। इन तेलोंको विधि इसी भागके पृष्ठ २६८—३०० में लिखी है।

(८) अम्बाड़ेकी जड़, इमलीके फल, इमलीके पत्ते, सहँजनेकी जड़, पुनर्नवाकी जड़, मानकन्द और सुपारीकी जड़—इनको कूट-पीस कर और माठे तथा काँजीमें पकाकर लेप करनेसे पीड़ा और सूजन दूर हो जाती एवं टूटी हुई हड्डियाँ जुड जाती हैं।

(९) चाँवलोंके आटेमें नमक मिलाकर लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़जाता हैं।

(१०) इमली या आमके रसका लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

(११) चमेलीकी जड़ पीसकर उसमें "शहद" मिलाओ और चोटकी जगह लेप करो। इससे टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है।

(१२) भुना हुआ सुहागा पीसकर लगानेसे टूटी हुई हड्डीमें लाभ होता है।]

खाने पीनेके दवाएँ।

(१) लहसन, शहद, पीपरकी लाख, घी और मिश्री डेढ़-डेढ़

हारसिंगारका चूर्ण "घी"में मिलाकर खानेसे टूटा हाड जुड जाता है।

पीपरकी लाख, गेहूँकी मैदा और अर्जुनकी छाल—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण १ तोले-भर घीमें पीस कर खाने और ऊपरसे गायका दूध पीनेसे टूटा हाड जुड जाता है।

आभा गुग्गुल।

(५) बबूलकी फली, त्रिफला और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णकी बराबर "शुद्ध गूगल" मिलाकर रख लो। इसमेंसे तीन-तीन या छै-छे माशे रोज़ खानेसे सन्धिभग्न रोग आराम हो जाता है। इसका नाम "आभा-गुग्गुल" है। परीक्षित है।

लाक्षाद्य गुग्गुल।

लाख, हड़संघारी, अर्जुनकी छाल, असगन्ध, शुद्ध गूगल और बड़ी खिरेंटी—इनको समान-समान लेकर पीस-कूट लो। इसके एक तोला रोज खानेसे टूटा हुआ हाड़ जुड़ कर वज्रके समान हो जाता है और पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

थोड़े भुने हुए गेहूंका आटा "शहद"के साथ खिलानेसे अस्थिभंग रोग आराम हो जाता है। कमर और जोड़ मुड़ जानेके लिए यह अच्छी दवा है। परीक्षित है।

चोट वग़ैरः पर हकीमी नुसख़े।

नोट—जब कोई चीज किसी अंग पर गिर पड़ती है, तो उसे "जरब" कहते हैं। जब अंग आप ही किसी चीज पर गिर पड़ता है, तो उसे "सकता" कहते हैं। अगर इनकी वजहसे सूजन या ज्वर हो, तो पहले सूजन और ज्वरका उपाय फस्द, पछने और नर्म करनेवाली चीज़ोंसे करना चाहिये।

हुआ खून पिघलकर दर्द आराम हो जाता है। यह दवा मोमियाईसे भी उत्तम है।

लगानेकी दवाएँ।

(९) बचियारकी लकड़ी पानीमें घिसकर और गुनगुनी करके लगानेसे चोट आराम हो जाती है।

(१०) सहँजनेकी पत्तियाँ और मीठा तेल बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीसो और चोटपर लेप करके धूपमें बैठो। इससे चोट आराम हो जाती है।

(११) रैंडीकी गरी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर अलग-अलग कूटो। फिर मीठे तेलमें दोनोंको मिलाकर चोटपर लेप करो। इससे चोट आराम होती और टूटा हुआ जोड़ अपनी असली हालतमें आ जाता है।

(१२) तिलकी खली कूटकर गरम पानीमें डाल दो। जब गल जावे, उसे महीन कपड़ेपर लहेसकर जोड़पर रख दो। इस उपायसे चोट और मोचमें अवश्य आराम मालूम होता है।

(१३) पुराने नारियलकी मीठी गरी कूटकर,उसमें चौगुनी महीन हल्दी मिला दो और कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, पोटलीको आगपर गरम करो और उससे घण्टे सवा घण्टे तक चोटपर सेक करो। फिर चोट और वरम या सूजनकी जगहपर इसे बाँध दो। इस तरह दो तीन दिन करनेसे चोट आराम हो जायगी।

(१४) हल्दी पिसी हुई, मैदा लकड़ी पिसी हुई और गेहूँकी मैदा—प्रत्येक आध-आध पाव ; लोटन सज्जी २० माशे और मीठा तेल पावभर—ये सब तैयार रखो।

पहले तेलको आगपर गरम करो। फिर उसमें "मैदा" डालकर भूनो। इसके बाद उसमें पिसी हुई "सज्जी" डाल दो। इसके भी बाद पिसी हुई "मैदा लकडी और अन्तमें हल्दी" भी डाल दो और थोड़ा पानी डालकर पकाओ। जब पानी जल जावे और लेई सी हो जावे,

भगन्दरके लक्षण।

गुदाकी बाज़ूमें, दो अङ्गुल पर, एक फुन्सी होती है। उसमें बड़ी वेदना होती है। जब वह फूट जाती है, तब उसे "भगन्दर" कहते हैं।

"भावप्रकाश"में लिखा है, गुदाकी बग़लमें, दो अङ्गुलके बीचमें, पीड़ा करनेवाली और फटी हुई जो पिडिका या फुन्सी होती है, उसे "भगन्दर" कहते हैं।

भोज महाशय कहते हैं, चूंकि यह गुदाको और मूत्राशयको, चारों ओरसे योनिकी तरह फोड़ देता है, इसलिये इस रोगको भगन्दर कहते हैं।

कोई कहते हैं—गुदाके इर्द-गिर्द, दो-दो अंगुलकी दूरी पर, फुन्सियाँ और गाँठें होती हैं, वे दर्द करती हैं, पकती हैं, फूटती हैं और बहती हैं, इसी रोगको "भगन्दर" कहते हैं। यूनानी वाले इस रोगको "नवासीर" कहते हैं।

यह भगन्दर जब अपथ्य सेवन करनेसे बिगड़ जाता है, तब

(५) अगर भग्न स्थानमें दर्द हो, तो पंचमूलके काढ़ेमें दूध मिलाकर उससे भग्नको सींचो यानी दूध मिलाकर यह काढ़ा उस पर डालो। अथवा दूधमें "पंचमूलकी दवाएं" पका कर, उसके तरड़े दो।

(६) अथवा विचार करके चूकेका तेल सुहाता-सुहाता सींचो। अथवा जो अन्न जलन नहीं करते उनकी पुल्टिस बाँधो।

नोट—यहाँ जो लेप लिखे हैं, वे सब हड्डी मिल जाने और पट्टी खोलने पर करने चाहियें। पहला उपाय तख्ती वगैरः रख कर बाँधना और न्यग्रोधादि-गणकी दवाओंके काढे वगैरः से सींचना है। जब बन्धनसे हड्डी ठिकाने बैठ जाय, तब बन्धन खोलकर लेप लगाने चाहियें।

(७) अगर भग्न रोग पुराना हो, आराम न होता हो, तो "नारायण तेल, माष तैल या कुब्ज प्रसारिणी तेल"की मालिश कराओ। इन तेलोंको विधि इसी भागके पृष्ठ २६८—३०० में लिखी है।

(८) अम्बाड़ेकी जड़, इमलीके फल, इमलीके पत्ते, सहँजनेकी जड़, पुनर्नवाकी जड़, मानकन्द और सुपारीकी जड़—इनको कूट-पीस कर और माठे तथा काँजीमें पकाकर लेप करनेसे पीड़ा और सूजन दूर हो जाती एवं टूटी हुई हड्डियाँ जुड जाती हैं।

(९) चाँवलोंके आटेमें नमक मिलाकर लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़जाता हैं।

(१०) इमली या आमके रसका लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

(११) चमेलीकी जड़ पीसकर उसमें "शहद" मिलाओ और चोटकी जगह लेप करो। इससे टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है।

(१२) भुना हुआ सुहागा पीसकर लगानेसे टूटी हुई हड्डीमें लाभ होता है।

खाने पीनेके दवाएँ।

(१) लहसन, शहद, पीपरकी लाख, घी और मिश्री डेढ़-डेढ़

हारसिंगारका चूर्ण "घी"में मिलाकर खानेसे टूटा हाड जुड जाता है।

पीपरकी लाख, गेहूँकी मैदा और अर्जुनकी छाल—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण १ तोले-भर घीमें पीस कर खाने और ऊपरसे गायका दूध पीनेसे टूटा हाड जुड जाता है।

आभा गुग्गुल।

(५) बबूलकी फली, त्रिफला और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णकी बराबर "शुद्ध गूगल" मिलाकर रख लो। इसमेंसे तीन-तीन या छै-छै माशे रोज़ खानेसे सन्धिभग्न रोग आराम हो जाता है। इसका नाम "आभा-गुग्गुल" है। परीक्षित है।

लाक्षाद्य गुग्गुल।

लाख, हड़संघारी, अर्जुनकी छाल, असगन्ध, शुद्ध गूगल और बड़ी खिरेंटी—इनको समान-समान लेकर पीस-कूट लो। इसके एक तोला रोज खानेसे टूटा हुआ हाड़ जुड़ कर वज्रके समान हो जाता है और पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

थोड़े भुने हुए गेहूंका आटा "शहद"के साथ खिलानेसे अस्थिभंग रोग आराम हो जाता है। कमर और जोड़ मुड़ जानेके लिए यह अच्छी दवा है। परीक्षित है।

नोट—जब कोई चीज किसी अग पर गिर पड़ती है, तो उसे "जरब" कहते हैं। जब अग आप ही किसी चीज पर गिर पड़ता है, तो उसे "सकता" कहते है। अगर इनकी वजहसे सूजन या ज्वर हो, तो पहले सूजन और ज्वरका उपाय फस्द, पछने और नर्म करनेवाली चीज़ोंसे करना चाहिये।

हुआ खून पिघलकर दर्द आराम हो जाता है। यह दवा मोमियाईसे भी उत्तम है।

लगानेकी दवाएँ ।

(९) बचियारकी लकड़ी पानीमें घिसकर और गुनगुनी करके लगानेसे चोट आराम हो जाती है।

(१०) सहँजनेकी पत्तियाँ और मीठा तेल बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीसो और चोटपर लेप करके धूपमें बैठो। इससे चोट आराम हो जाती है।

(११) रेंडीकी गरी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर अलग-अलग कूटो। फिर मीठे तेलमें दोनोंको मिलाकर चोटपर लेप करो। इससे चोट आराम होती और टूटा हुआ जोड़ अपनी असली हालतमें आ जाता है।

(१२) तिलकी खली कूटकर गरम पानीमें डाल दो। जब गल जावे, उसे महीन कपड़ेपर लहेसकर जोड़पर रख दो। इस उपायसे चोट और मोचमें अवश्य आराम मालूम होता है।

(१३) पुराने नारियलकी मीठी गरी कूटकर,उसमें चौगुनी महीन हल्दी मिला दो और कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, पोटलीको आगपर गरम करो और उससे घण्टे सवा घण्टे तक चोटपर सेक करो। फिर चोट और वरम या सूजनकी जगहपर इसे बाँध दो। इस तरह दो तीन दिन करनेसे चोट आराम हो जायगी।

(१४) हल्दी पिसी हुई, मैदा लकड़ी पिसी हुई और गेंहूँकी मैदा—प्रत्येक आध-आध पाव ; लोटन सज्जी २० माशे और मीठा तेल पावभर—ये सब तैयार रखो।

पहले तेलको आगपर गरम करो। फिर उसमें "मैदा" डालकर भूनो। इसके बाद उसमें पिसी हुई "सज्जी" डाल दो। इसके भो बाद पिसी हुई "मैदा लकडी और अन्तमें हल्दी" भी डाल दो और थोड़ा पानी डालकर पकाओ। जब पानी जल जावे और लेई सी हो जावे,

भगन्दरके लक्षण।

गुदाकी बाज़ूमें, दो अङ्गुल पर, एक फुन्सी होती है। उसमें बड़ी वेदना होती है। जब वह फूट जाती है, तब उसे "भगन्दर" कहते हैं।

"भावप्रकाश"में लिखा है, गुदाकी बग़लमें, दो अङ्गुलके बीचमें, पीड़ा करनेवाली और फटी हुई जो पिडिका या फुन्सी होती है, उसे "भगन्दर" कहते हैं।

भोज महाशय कहते हैं, चूंकि यह गुदाको और मूत्राशयको, चारों ओरसे योनिकी तरह फोड़ देता है, इसलिये इस रोगको भगन्दर कहते हैं।

कोई कहते हैं—गुदाके इर्द-गिर्द, दो-दो अंगुलकी दूरी पर, फुन्सियाँ और गाँठें होती हैं, वे दर्द करती हैं, पकती हैं, फूटती हैं और बहती हैं, इसी रोगको "भगन्दर" कहते हैं। यूनानी वाले इस रोगको "नवासीर" कहते हैं।

यह भगन्दर जब अपथ्य सेवन करनेसे बिगड़ जाता है, तब

हुआ खून टिघलकर दर्द आराम हो जाता है। यह दवा मोमियाईसे भी उत्तम है।

लगानेकी दवाएं।

(९) वचियारकी लकड़ी पानीमें घिसकर और गुनगुनी करके लगानेसे चोट आराम हो जाती है।

(१०) सहॅजनेकी पत्तियाँ और मीठा तेल बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीसो और चोटपर लेप करके धूपमें बैठो। इससे चोट आराम हो जाती है।

(११) रैंडीकी गरी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर अलग-अलग कूटो। फिर मीठे तेलमें दोनोंको मिलाकर चोटपर लेप करो। इससे चोट आराम होती और टूटा हुआ जोड़ अपनी असली हालतमें आ जाता है।

(१२) तिलकी खली कूटकर गरम पानीमें डाल दो। जब गल जावे, उसे महीन कपड़ेपर लहेसकर जोड़पर रख दो। इस उपायसे चोट और मोचमें अवश्य आराम मालूम होता है।

(१३) पुराने नारियलकी मीठी गरी कूटकर,उसमें चौगुनी महीन हल्दी मिला दो और कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, पोटलीको आगपर गरम करो और उससे घण्टे सवा घण्टे तक चोटपर सेक करो। फिर चोट और वरम या सूजनकी जगहपर इसे बाँध दो। इस तरह दो तीन दिन करनेसे चोट आराम हो जायगी।

(१४) हल्दी पिसी हुई, मैदा लकड़ी पिसी हुई और गेंहूँकी मैदा—प्रत्येक आध-आध पाव ; लोटन सज्जी २० माशे और मीठा तेल पावभर—ये सब तैयार रखो।

पहले तेलको आगपर गरम करो। फिर उसमें "मैदा" डालकर भूनो। इसके बाद उसमें पिसी हुई "सज्जी" डाल दो। इसके भी बाद पिसी हुई "मैदा लकडी और अन्तमें हल्दी" भी डाल दो और थोड़ा पानी डालकर पकाओ। जब पानी जल जावे और लेई सी हो जावे,

गरम-गरम लेकर सेक करो। इसे लिपड़ी कहते हैं। चोटके लिए यह सबसे अच्छी दवा है।

(१५) अगर मोच आगई हो, तो पहले जोड़को गुनगुने पानीसे धोओ। इसके बाद अण्डेकी ज़र्दी और गेरू दोनोंको मिलाकर और गुनगुना करके लेप करो। फिर जोड़को आगसे सेक दो, ताकि दवा सूख जावे। इस उपायसे मोच जल्दी आराम हो जाती है।

(१६) शिंगरफ १ भाग और फिटकरी २ भाग—दोनोंको कूट-पीस और मिलाकर तवेपर डालो। तवेके नीचे मन्दी आग जलाओ। जब नीचेकी दवाका हिस्सा भुनकर खिल जावे, तब उस टिकियाको उलट दो, ताकि इस तरफसे भी दवा भुन जावे। फिर इसको पीस कर रख लो। इसकी मात्रा १ रत्तीसे २ रत्ती तक है। यह दवा चोटका दर्द नाश करनेमें लासानी है। मोमियाईके बराबर काम देती है।

(१७) हल्दीकी डलियाँ यानी गांठें गायके घीमें आठ रोज़ तक भिगो रखो, इसके बाद उन्हें सुखाकर और निहायत बारीक पीस कर शीशीमें रख दो। लकड़ीकी छोटी-छोटी पतली-पतली तख्तियाँ या बाँसकी चौड़ी फड़चटें और कपड़ेकी पट्टियाँ तैयार रखो। ज़रूरतके समय पहले हड्डीको मुनासिब तरीक़ेसे जोड़ कर, ऊपरके हल्दीके चूर्णको घीमें पका कर चोट पर खूब गाढ़ा-गाढ़ा लेप करो। फिर लकड़ीकी तख्ती या बाँसकी फरचट लगाकर पट्टीसे बाँध दो। दो-चार दिन इसी तरह बांधते रहो। उसी हल्दीके चूर्णको घीमें पका कर तीन-तीन माशे रोज़ चटा दिया करो। खटाई और बादी पदार्थोंसे परहेज़ रखो। चाहें हड्डी टूट गई हो या चोटसे नाक वग़ैरः बैठ गई हो, इससे आराम हो जाता है। परीक्षित है।

भगन्दरके लक्षण।

गुदाकी बाज़ूमें, दो अङ्गुल पर, एक फुन्सी होती है। उसमें बड़ी वेदना होती है। जब वह फूट जाती है, तब उसे "भगन्दर" कहते हैं।

"भावप्रकाश"में लिखा है, गुदाकी बग़लमें, दो अङ्गुलके बीचमें, पीड़ा करनेवाली और फटी हुई जो पिडिका या फुन्सी होती है, उसे "भगन्दर" कहते हैं।

भोज महाशय कहते हैं, चूंकि यह गुदाको और मूत्राशयको, चारों ओरसे योनिकी तरह फोड़ देता है, इसलिये इस रोगको भगन्दर कहते हैं।

कोई कहते हैं—गुदाके इर्द-गिर्द, दो-दो अंगुलकी दूरी पर, फुन्सियाँ और गाँठें होती हैं, वे दर्द करती हैं, पकती हैं, फूटती हैं और बहती हैं, इसी रोगको "भगन्दर" कहते हैं। यूनानी वाले इस रोगको "नवासीर" कहते हैं।

यह भगन्दर जब अपथ्य सेवन करनेसे बिगड़ जाता है, तब

उस जगह सूराख़ हो जाता है, फिर उस भगन्दरसे कभी मल और कभी मूत्र निकला करता है।

गुदासे दो अंगुलकी दूरीकी जगहमें नासूरकी तरह एक प्रकार का घाव हो जाता है। कुपित वातादि दोषोंसे, पहले गुदासे दो अंगुलकी दूरी पर, व्रण-शोथ पैदा होता है। जब वह पक कर फैल जाता है, तब उसमेंसे लाल रंगके झाग और पीप वग़ैरः बहते हैं। घाव बढ़ जाने पर, उसमेंसे मल-मूत्रादि निकलते हैं। गुदा प्रदेशमें किसी तरहका फोड़ा होकर पकने पर, वह भी क्रमशः भगन्दर हो जाता है।

भगन्दरके पूर्व रूप।

जिसके भगन्दर होने वाला होता है, उसकी कमर और हड्डियोंमें सुई चुभानेकासा दर्द होता है तथा जलन, खुजली और वेदना वग़ैरः उपद्रव होते हैं।

वातज शतपोनक भगन्दरके लक्षण।

कसैले और रूखे पदार्थोंसे कुपित हुआ वायु, गुदा प्रदेशमें, एक फुन्सी पैदा करता है। उस फुन्सीकी उपेक्षा करनेसे या जल्दी इलाज न करनेसे वह फुन्सी पक जाती है। उसमें घोर वेदना होती है। उस फुन्सीके फूटनेसे लाल झागदार पीप बहती है। फिर उसमें अनेक छेद हो जाते हैं। उन छेदोंमें होकर मूत्र, मल और वीर्य बहने लगते हैं। इस भगन्दरमें चलनीके समान अनेक छेद हो जाते हैं, इसीलिये इसे "*शतपोनक भगन्दर*" कहते हैं।

नोट—संस्कृत भाषामें "शतपोनक" चलनीको कहते हैं। इस भगन्दरमें चलनीके समान छेद होते हैं, इसीलिए इसे "शतपोनक" कहते हैं।

पित्तज उष्ट्र ग्रीव भगन्दरके लक्षण।

अत्यन्त पित्तकारक पदार्थोंके सेवन करनेसे कुपित हुआ पित्त,

गुदा प्रदेशमें, लाल रंगकी फुन्सी पैदा करता है। वह फुन्सी शीघ्र ही पक जाती है। फूटने पर उसमेंसे गरम बदबूदार पीप बहने लगती है। यह भगन्दर ऊँटकीसी गर्दन वाला होता है, इस लिए इसे "उष्ट्र ग्रीव या शिरोधर" कहते हैं।

नोट—इस भगन्दरको फुन्सियोंका गला ऊँटकी गर्दनके समान होता है, इसीसे इसको "उष्ट्रग्रीव" कहते हैं।

श्लैष्मिक परिश्रावी भगन्दरके लक्षण ।

कफके संयोगसे सफेद रंगकी सख्त फुन्सी होती है। उसमें खुजली बहुत चलती है। फूटनेपर उस फुन्सीसे गाढ़ी-गाढ़ी राध निरन्तर बहुत बहती है। इस भगन्दरमें पीड़ा कम होती है। इसे "परिश्रावी" भगन्दर कहते हैं, क्योंकि इससे राध बराबर बहती रहती है।

नोट—परिश्रावीका अर्थ है मवाद बहाने वाला। कफज भगन्दर होनेसे राध रात-दिन बहा करती है, इसीसे इसे "परिश्रावी" कहते हैं।

त्रिदोषज शम्बूकावर्त भगन्दरके लक्षण ।

अनेक तरहके रंग, अनेक तरहकी पीड़ा और अनेक प्रकारके स्राववाली, गायके स्तनोंके समान फुन्सी पैदा होती है। उसका स्रावक मार्ग—मवाद बहानेकी राह शम्बूक या शंखके चक्करकी समान होती है, इसी लिए उसे "शम्बूकावर्त्त" भगन्दर कहते हैं।

नोट—शम्बूक शंखको कहते हैं और आवर्त्त चक्करको कहते हैं। जिस फुन्सी की मवाद निकालनेकी राह शंखके आवर्त्तके जैसी होती है, उसे "शम्बूकावर्त्त" कहते हैं।

शल्य सम्बन्धी उन्मार्गी भगन्दरके लक्षण ।

गुदाके पास काँटा वग़ैरः लगनेसे या नाखून वग़ैरःसे खुजानेसे फोड़ा पैदा हो जाता है। वह बढ़ता और फूटता है। उसकी उपेक्षा करनेसे—उसका जल्दी ही इलाज न करनेसे—उसमें कीड़े पड़ जाते हैं। वे कीड़े चमड़े और मांस प्रभृतिको विदीर्ण करके,

अनेक मुंहवाले अनेक व्रण उत्पन्न कर देते हैं। ऐसे भगन्दरको शल्य-सम्बन्धी "उन्मार्गी" भगन्दर कहते हैं।

नोट—इन व्रणोंकी तिरछी राहोंसे विष्ठा आदि निकला करते हैं, इसलिये इस भगन्दरको "उन्मार्गी" कहते हैं और शल्य-सम्बन्धी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह शल्य यानी काँटे वगैरः लगनेसे पैदा होता है।

साध्यासाध्यता।

सभी तरहके भगन्दर भयङ्कर और कष्टसाध्य हैं। इनमेंसे त्रिदोषज—शम्बूकावर्त और शल्यज—उन्मार्गी असाध्य हैं। जिस भगन्दर रोगीके भगन्दरसे वायु, मूत्र, विष्ठा, वीर्य और कीड़े निकलते हैं, वह तो मर ही जाता है।

भगन्दर-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) पकनेसे पहले ही भगन्दरका इलाज करना चाहिये, नहीं तो वह अत्यन्त कष्टसाध्य हो जाता है। वैद्यको चाहिये, कि उसकी गाँठ या फुन्सीको किसी हालतमें भी पकने न दे। ऐसा इलाज करे, जिससे वह बैठ जावे। फुन्सी या गाँठके कच्ची रहनेकी हालतमें "रक्तमोक्षण" यानी खून निकालना ही उसकी प्रधान चिकित्सा है।

(२) वमन, विरेचनादि, रक्तस्राव—खून निकालना, परिषेक—तरड़े और अनेक तरहके लेपोंसे इस रोगका इलाज फुन्सीके न पकनेकी हालतमें करना चाहिये। इन उपचारोंसे फुन्सी नहीं पकती।

(३) विद्रधि प्रभृतिके बैठानेके लिए जो उपाय लिखे गये हैं, वे सब भी इस मौक़े पर काम दे सकते हैं।

(४) अगर फुन्सी या गाँठके बैठनेकी उम्मीद न हो, तो उसे व्रण-शोथ-चिकित्सामें कहे हुए उपायोंसे पकाकर, उसका मवाद

निकाल देना चाहिये अथवा नश्तरसे चीरकर मवाद निकाल देना चाहिये। जब वहाँ घाव हो जाय, उसके नासूरकी तरह इलाज करना चाहिये। जैसे—सेंहुड़के दूध, आकके दूध और दारुहल्दीकी बत्ती बनाकर घावमें रखनी चाहिये, ताकि घाव भर जाय। नासूर रोगमें जो तेल लिखे हैं, वे इस हालतमें भी काम दे सकते हैं।

(५) अगर भगन्दरका व्रण सूख भी गया हो, तोभी भगन्दर वालेकों एक सालतक दण्ड, कसरत, मैथुन, युद्ध और घोड़े हाथी की सवारी वग़ैरः तथा भारी अन्नके भोजनसे बचना चाहिये।

भगन्दर-चिकित्सा।

(१) भगन्दरकी बिना पकी फुन्सी पर सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा, बड़के पत्ते और पानीके भीतरकी ईंट—इन सबको पीसकर लेप करनेसे भगन्दरकी फुन्सी बैठ जाती है। परीक्षित है।

(२) पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, मुलेठी और बेरीके पत्ते—बराबर-बराबर, लेकर महीन पीस कर और गरम करके गाँठ पर बाँधनेसे गाँठ बैठ जाती है। परीक्षित है।

(३) ६ माशे अफीम, ६ माशे एलुआ और २ माशे मुनक्का—इनको पानीके साथ सिल पर पीसकर और टिकिया बनाकर गाँठ पर बाँधनेसे भगन्दरकी गाँठ बैठ जाती है। परीक्षित है।

नोट—इन लेपोंको जहाँ तक भगन्दरकी फुन्सी हो, वहाँ ही तक करना चाहिये। अगर फुन्सी बैठे नहीं किन्तु पक जाय, तो पाटन, क्षार और अग्नि दाह इत्यादि कर्म करके यथा दोष और यथा बल व्रणके समान चिकित्सा करनी चाहिये। अब आगे फुन्सीके फूटनेके बादकी चिकित्सा लिखी जाती है।

(४) तिल, वच, लोध, घरका धूआँसा, नीमके पत्ते, हल्दी,

दारुहल्दी और हरड़,—इन सबको समान-समान लेकर और पानी के साथ महीन पीसकर लेप करनेसे भगन्दर शुद्ध होकर भर जाता है। परीक्षित है।

नोट—तिल, हरड़, दुगनी लोध, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, खिरेंटी और घरका धुआँसा—इनका लेप भी उत्तम है।

(५) त्रिफलेके काढ़े या पानीसे घावको रोज़ धोकर, उस जगह त्रिफलेके ही काढ़ेमें बिल्लीकी हड्डी घिसकर लेप करनेसे भगन्दर और दुष्ट व्रण नाश हो जाते हैं।

(६) थूहरका दूध, आकका दूध और दारुहल्दी—इन तीनोंको पीसकर बत्ती बना लो और व्रणकी नाड़ीके भीतर रखो। इससे भगन्दरकी सूजन, शूल और पीप आना सब आराम होते हैं। सारे शरीरमें स्थित नासूरको भी यह बत्ती आराम कर देती है। परीक्षित है।

(७) कूट, तिल, पीपल, सैंधानोन, दाँतोंणी, निशोथ, तूतिया, हरड़, बहेड़ा, आमला और हल्दी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और "शहद" मिलाकर लेप करो। इससे व्रण शुद्ध हो जाता है।

(८) गधेके खूनमें "अर्जुन वृक्षकी छाल" पका कर लेप करनेसे भगन्दर रोग आराम हो जाता है।

(९) अडूसेकी पत्तियोंकी टिकिया बना कर और उस पर सैंधानोन बुरक कर बाँधनेसे भगन्दर आराम हो जाता है।

(१०) त्रिफला ३ तोले, शुद्ध गूगल ५ तोले और पीपर १ तोले —इनको पीस-कूट कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे सूजन, वेदना, गुल्म, भगन्दर और बवासीर रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) चमेलीके पत्ते, बड़के पत्ते, गिलोय, सोंठ और सैंधानोन

—इनको गाढ़ी छाछमें पीसकर लेप करनेसे भगन्दर आराम हो जाता है।

(१२) निशोथ, तिल, जमालगोटा, मंजीठ और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर "घी और शहद"में मिलाकर लेप करो। इससे भगन्दर अवश्य नाश हो जाता है।

(१३) हरड़, वहेड़ा, आमला, शुद्ध भैंसा गूगल और वायविडंग—इनका काढा पीने और प्यास लगने पर "खैरका रस मिला जल" पीनेसे भगन्दर अवश्य नाश हो जाता है।

(१४) न्यग्रोधादि गणकी वृक्षोंको सिल पर पीसकर लुगदी वना लो। इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर तेल पका लो। यह तेल भगन्दरको नाश कर देता है।

नोट—इसी तरह घी भी पका सकते हो। "न्यग्रोधादि गण" की दवाएं व्रणको साफ करने वाली और भरने वाली हैं, अतः इनके साथ पकाये हुए तेल और घी भगन्दरके घावको शुद्ध करने और भरनेमें परमोत्तम हैं।

(१५) तिल, मालकाँगनी, कूट कलिहारी, कोहली, सोया, निशोथ और जमालगोटा—इनके काढ़े द्वारा धोनेसे भगन्दरका घाव शुद्ध हो जाता है।

(१६) वायविड़ंग, खैरसार, हरड़, वहेड़ा, आमला और दो भाग पीपर—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद और तेल"में मिलाकर चाटनेसे कोढ, प्रमेह, क्षय, भगन्दर और नाड़ीव्रण ये सब आराम हो जाते हैं।

(१७) पुराना गुड, नीला थोथा, गन्दा विरौज़ा, और सरेश,—वरावर-वरावर लेकर थोड़ेसे पानीमें घोटकर मरहम वना लो और उसे कपड़े पर लगाकर ज़ख्म भगन्दर पर रख दो। दो चार दफामें ही भगन्दर आराम हो जायगा। सुपरीक्षित है।

(१८) मुर्दासंग ३॥ माशे और कत्था ३॥ माशे दोनोंको

पानीमें पीसकर १५ गोली बनालो। एक गोली रविवारके दिन दक्खनकी तरफ मुंह करके नाकसे छूकर पीठके पीछे फेंक दो। बाक़ी चौदह गोलियोंमेंसे एक सवेरे और एक शाम ताज़ा पानीके साथ खाओ। खानेको मूँगकी खिचड़ी खूब घी डालकर खाओ। अगर कसर रह जाय, तो तीन हफ्तेके बाद फिर इस दवाको खा सकते हो। मूँगकी दाल, मसूरकी दाल, आलू, बैंगन और गुड़से परहेज़ रखो। इस दवासे भगन्दर, सोज़ाक, आतशक और नासूर आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

निस्पन्दन तैल।

चीता, आक, निशोथ, पाढ़, कठूमर, सफेद कनेर, थूहर, बच, कलिहारी, हरताल, सज्जी और मालकाँगनी,—इनको समान-समान लेकर, सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, छान लो। इस तेलसे भगन्दर साफ होता और भरता तथा उस स्थानका रंग शरीरके रंगके समान हो जाता है।

निशाद्य तैल।

हल्दी, आकका दूध, सैंधानोन, गूगल, कनेर और इन्द्रजौ—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे दूना तेल और तेलसे चौगुना पानी सबको मिलाकर पकाओ। तेल मात्र रहने पर छान लो। इस तेलकी मालिशसे भगन्दर नाश हो जाता है।

करवीराद्य तैल।

कनेर, हल्दी, जमालगोटा, कलिहारी, सैंधानोन, चीता, बिजौरा नीबू और इन्द्रजौ—इनको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल, तेलसे चौगुना पानी और

लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे भगन्दर आराम हो जाता है।

नव कार्षिक गूगल।

तीन तोले त्रिफला, पाँच तोले शुद्ध गूगल और एक तोले पीपर—इनको पीस-कूटकर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे भगन्दर, सूजन, गुल्म और बवासीर रोग आराम हो जाते हैं।

कोढ़ रोगी ।

इस रोगीकी पीठमें कोढके छोटे-छोटे दाने निकले हुए है। इस कोढका आरम्भ-काल कई महीने से एक सालतक समझा जाता है। उस समय पूरे लक्षण नहीं दीखते, कभी-कभी जाड़ा, ग्लानि, काम करने की अनिच्छा, ज्वर, दर्द कमज़ोरी और नाक से खून गिरना आदि लक्षण देखे जाते हैं। इसके बाद जहाँ कोढ़ होता है, वहाँ की स्पर्शशक्ति लुप्त हो जाती है। वहाँ सूई चुभानेसे भी पीडा नहीं होती। शेषमें छोटे-छोटे दाने या चकत्ते मिलकर बडे-बडे लाल-लाल चकत्ते हो जाते है।

कोढ़ के निदान-कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे कोढ़ रोग होता है :—

(१) दूध और मछली वगैरः परस्पर विरुद्ध भोजन करनेसे, ।

(२) दही और दूध वगैरः परस्पर विरुद्ध पदार्थ खाने-पीनेसे ।

(३) पतले चिकने और भारी पदार्थ ज़ियादा खानेसे ।

(४) आती हुई वमन या कयका वेग रोकनेसे ।

(५) मलमूत्रादिके वेग रोकनेसे ।

(६) बहुतसा खाकर दण्ड-कसरत वगैरः करनेसे ।

(७) बहुत खाकर धूप या आगके सामने रहनेसे ।

(८) सर्दी, गर्मी, लंघन और आहारको अनुचित रीतिसे सेवन करनेसे ।

(९) पसीनोंमें तत्काल नहाने और शीतल जल पीलेनेसे ।

(१०) मिहनत करके तत्काल नहाने और ठण्डा पानी पीनेसे ।

(११) भयभीत होनेपर तत्काल नहाने और शीतल जल पीनेसे ।

(१२) अजीर्णमें खाने या भोजन-पर-भोजन करनेसे ।

(१३) वमन विरेचनादि पञ्चकर्मके बिगड़नेसे ।

(१४) नया अन्न, दही, मछली और खारे खट्टे पदार्थ अधिक खानेसे।

(१५) उड़द, मूली, पक्वान्न, मिठाई और तिल ज़ियादा खानेसे।

(१६) दूध और गुड़ मिलाकर ज़ियादा खानेसे।

(१७) विदग्धादि अजीर्ण होनेपर मैथुन करनेसे।

(१८) दिनमें बहुत और बेक़ायदे सोनेसे।

(१९) गुरुजनों और ब्राह्मणोंका अपमान करनेसे।

कोढ होनेके विशेष कारण।

"भावप्रकाश"में कोढ़ होनेके वही कारण लिखे हैं, जो हम लिख आये हैं, पर कोढ़के और भी कारण हैं, जो वंगसेनने लिखे हैं :—

तिलतैल कुलित्थांश्च वल्मीक लिङ्गमेव च।
माहिष दधि वृन्ताक सप्तैते कुष्ठहेतव॥

तिल, तेल, कुल्थी, वल्मीक रोग, लिङ्ग रोग (उपदंश वग़ैरः), भैसका दही और बैंगन,—इन सात कारणोंसे भी कोढ़ होता है।

इन सबके सिवा, वातरक्त और पारेके विकारसे भी कोढ़ रोग होता है।

शास्त्र-विरुद्ध आहार विहार करने वालोंको आँखें खोलकर देखना चाहिये, कि उनकी मामूली ग़लतियाँसे, जिन्हें वे आयुर्वेद न पढ़नेके कारण ग़लती नहीं समझते, कैसा भयङ्कर रोग होता है; अतः वैद्यका धन्धा करने वालोंको ही नहीं, बल्कि मनुष्य मात्रको आयुर्वेद पढ़ना चाहिये। बिना आयुर्वेद पढ़े दीर्घायु और आरोग्यकी प्राप्ति हो नहीं सकती।

कोढकी सम्प्राप्ति और सख्या ।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित होते हैं। ये तीनों दोष कुपित होकर, रस, रुधिर, मांस और जलको दूषित करते या विगाड़ते हैं। रस और रुधिर वग़ैर.के विगड़नेसे "कोढ़" रोग होता है।

वात, पित्त और कफ—ये तीन दोष हैं और रस, रुधिर, मांस और लसीका—ये चार दूष्य हैं; यानी वात, पित्त और कफ दूषित करने वाले हैं और रस, रुधिर, मास और लसीका दूषित होने वाले हैं। मतलब यह कि वात, पित्त, कफ, रस, रुधिर, मांस और लसीका—इन सातोंके दूषित होने या ख़राब होनेसे कोढ़ रोग होता है। ऊपर लिखे हुए सातों पदार्थोंके समुदायसे सात तरहका तथा इनके सिवाय और ग्यारह तरहका कोढ़ होता है। कुल १८ तरहके कोढ़ होते हैं। इनमेंसे सात वड़े कोढ़ और ग्यारह क्षुद्र या छोटे कोढ़ होते हैं।

सात महाकुष्ठोंके नाम ।

सात महाकुष्ठों या वड़े कोढ़ोंके नाम ये हैं :—

(१) कपाल, (२) औदुम्बर,
(३) मण्डल, (४) सिध्म,
(५) काकणक, (६) पुंडरीक।
(७) ऋक्षजिह्वक।

नोट (१)—ये सातों कोढ़ उत्तरोत्तर धातुओंमें जल्दी-जल्दी घुसते हैं, उल्वण दोषसे पैदा होते हैं और इनकी चिकित्सा भी अनेक हैं।

नोट (२)—सुश्रुतने "सिध्म" कोढ़को क्षुद्र या छोटे कोढ़ोंमें गिना है, पर यहाँ यह महा या वड़े कोढ़ोंमें गिना गया है। इसकी यह वजह है, कि चरक ऋषिने सिध्मको वड़े कोढ़ोंमें गिना है। जो "सिध्म" धातुओंमें धस जाता है, वह महा कुष्ठ या बड़ा कोढ कहलाता है।

ग्यारह क्षुद्र कोढ़ोंके नाम।

ग्यारह क्षुद्र या छोटे कोढ़ोंके नाम ये हैं :—

(१) एक कुष्ठ। (२) गजचर्म।
(३) चर्मदल। (४) विचर्चिका।
(५) विपादिका। (६) पामा।
(७) कच्छू। (८) दद्रु या दाद।
(६) विस्फोट। (१०) किटिभ।
(११) आलसक। (१२) शतारु।

नोट—(१)—ऊपर क्षुद्र कुष्ठ "ग्यारह" लिखे हैं और दिखाये हैं "बारह", इसकी यह वजह है कि, विचर्चिका नामक कोढ जब पाँवमें होता है, तब उसेही "विपादिका" कहते हैं। अगर इन दोनों कोढोंको एक ही मानले, तो कोढ़ोंकी संख्या ग्यारह ही रह जाती है।

नोट—(२)—सुश्रुतने दद्रु या दादको बड़े कोढ़ोंमें माना है, पर चरकने छोटोंमें; इसीसे हमने भी दद्रुको छोटोंमें ही माना है। सुश्रुतने भी काले और मजबूत जड़ वाले दादको बड़े कोढ़ोंमें गिना है, अतः जो दद्रु कोढ़ काला और मजबूत जड़ वाला न हो, उसे छोटे कोढ़ोंमें ही समझना चाहिये।

कोढोके पूर्व रूप।

जिस जगह कोढ होने वाला होता है, वह जगह अत्यन्त चिकनी या खरदरी मालूम होती है, वहाँ पसीने बहुत आते हैं या क़तई नहीं आते। उस जगहके चमड़ेका रंग बदल जाता है एवं दाद और खुजली होते हैं। चमड़ेमें छूनेसे मालूम नहीं होता। सूई चुभानेकी सी पीड़ा होती है। ददौरे या चकत्ते होते हैं। व्रणमें अधिक वेदना होती है। शीघ्र ही व्रण पैदा होता और बहुत दिनों तक रहता है। व्रणके भरनेके समय रूखापन होता है। थोड़ेसे कारणोंसे ही व्रणका कोप हो जाता है। रोमाञ्च होते हैं, खून काला हो जाता है और बिना मिहनत किये थकान मालूम होती है। ये सब कोढ़के पूर्वरूप हैं।

गांठदार कोढ़ का रोगी।

यह कोढ़ भूरे रंगका होता है। पहले थोडी-थोडी छोटी-छोटी गाँठें निकलती हैं, पीछे वे बड़ी हो जाती हैं। यह भी बरसों तक धीरे-धीरे बढा करता है। यह कोढ़ तीन-तीन और चार-चार महीनों तक जिस हालत में होता है, उसी हालत में रहा आता है, इसके बाद फिर बढने लगता है। बढ़ते समय ज्वर और वेदना होती है। कभी-कभी इसकी गाँठे बैट जाती हैं, लेकिन बहुधा वे सख्त होजाया करती हैं। अँगरेजी में इसे लेपरोसी ट्यूबर क्यूलर वैराइटी Leprosy, Tubercular variety कहते है। पृष्ठ ६१४

नोट—जब दोष स्थिर हो जाते हैं, तब चमड़ा शिथिल हो जाता और चमड़ेका रंग बदल जाता है,—बस, इसे ही "कोढ़" कहते हैं।

किस दोषकी उल्वणतासे कौनसा कोढ उत्पन्न होता है?

(१) कपाल नामक कोढ़ वातकी उल्वणतासे होता है।

(२) औदुम्बर, मण्डल और विचर्चिका ये पित्तकी उल्वणतासे होते हैं।

(३) ऋक्षजिह्व कोढ़ वायु और कफकी उल्वणतासे होता है।

(४) गजचर्म, एक कुष्ठ, किटिभ, सिध्म, अलसक और विपादिका ये सब वायु और कफकी उल्वणतासे होते हैं।

(५) दद्रु, शतारु, पुंडरीक, विस्फोट, पामा, और चर्मदल कोढ़ पित्तकी और कफकी उल्वणतासे होते हैं।

(६) काकणक तीनों दोषोंकी उल्वणतासे होता और यही पकता है।

नकशा।

नाम कोढ़	नाम प्रधान दोष
कपाल	वायु
औदुम्बर, मण्डल, विचर्चिका	पित्त
ऋक्षजिह्व, गजचर्म,, एककुष्ठ, किटिभ सिध्म, अलसक और विपादिका	वायु और कफ
दद्रु, शतारु, पुंडरीक, विस्फोट, पामा और चर्मदल	पित्त और कफ
काकणक	वात, पित्त और कफ

कोढ़ोंके लक्षण।

कपाल कुष्ट।

कपाल कुष्टका रंग कुछ काला और कुछ लाल होता है। यह खीपड़ेके जैसा, रूखा, छूनेमें खरदरा एवं पतली चमड़ी वाला होता है। इसमें नोचने या सूई गड़ानेके समान पीड़ा होती है। यह विषम अर्थात् दुःसाध्य होता है।

नोट—यह कापालके समान होता है, इसीलिये इसे कापाल कहते हैं। कापालको हिन्दीमें "ठीकरा" कहते हैं।

औदुम्बरके लक्षण।

औदुम्बर कोढ़ गूलरके फलके रंगका होता है। व्याधिस्थानके रोएं पिङ्गल वर्ण या पीले होते हैं। इसमें पीड़ा, जलन, लाली और खुजली होती है।

नोट—औदुम्बर गूलरको कहते हैं। यह कोढ औदुम्बरके समान होता है, इसीसे इसका नाम "औदुम्बर" है।
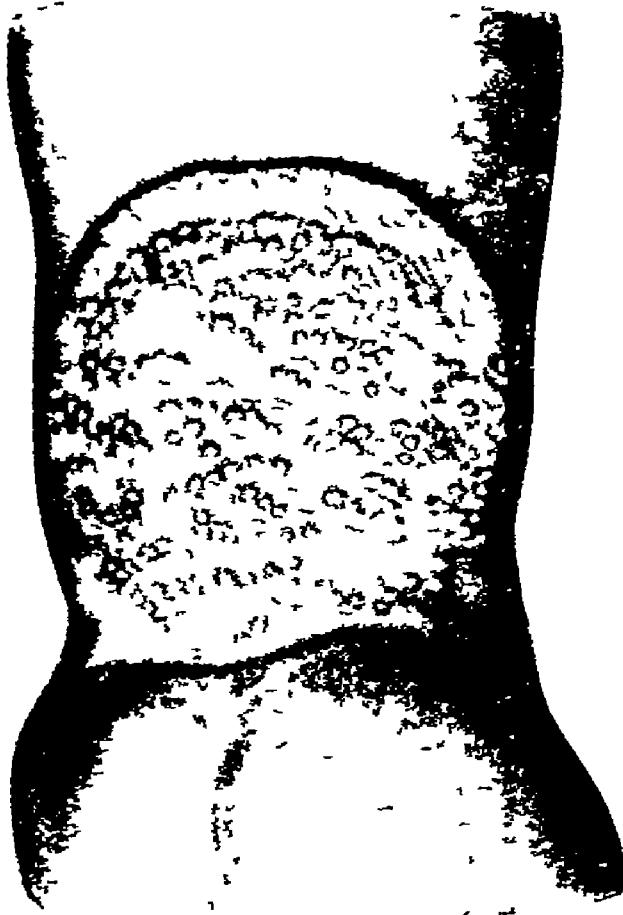
मण्डलके लक्षण।

मण्डल कोढ़ कुछ सफेद और कुछ लाल रंगका, चिकित्साके विना नाश न होने वाला, गीला, पसीनेयुक्त, मण्डलाकार और और आपसमें मिला हुआ होता है। यह कष्टसाध्य होता है।

नोट—यह कोढ़ मण्डलाकार होता है, इसीलिए इसका नाम "मण्डल" कोढ़ है।

सिध्मके लक्षण।

सिध्म कोढ़ देखनेमें लौकीके फूलके जैसा होता है। रंग इसका सफेदी माइल लाल होता है। इसका चमडा पतला होता है। इसको घिसने या रगड़नेसे इसमेंसे धूलके समान छोटे-

भैंसा दाद।

इस दाद में सूजन आती और दाने पड़ते हैं, पीछे दानों के भीतर पीप पड़ जाती है। यह दाद मण्डलाकार या गोल होता है, किनारों पर बढ़ता और बीच से कम होता है। खुजली खूब चलती है। खुजाने से पीप निकल कर जम जाती और छिलके से उतरते हैं। इस दाद में टिनिया सरकीनेटा (Tinea circinata) कीड़ा होता है। इसको नीम के गरम जल से खूब धोकर दवा लगानी चाहिये, अन्यथा दादकी जड़ तक दवा नहीं पहुँचती। पृष्ठ ६१७

छोटे परमाणु गिरते हैं। यह कोढ़ बहुत करके छातीमें होता है। किसी-किसी समय और जगह भी हो जाता है।

काकणकके लक्षण।

काकणक कोढ़ चिरमिटीकी तरह बीचमेंसे काला और ओर पाससे लाल होता है। यह पक जाता और इसमें तीव्र वेदना होती है तथा तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं। यह असाध्य होता है।

नोट—यह कोढ़ चिरमिटीके समान लाल और काले मुँह वाला होता है।

पुण्डरीकके लक्षण।

पुण्डरीक कोढ़ सफेद कमलके पत्तेके समान सफेद, अन्तमें अत्यन्त लाल, ऊँचा और कफ-प्रधान होता है।

नोट—पुण्डरीक सफेद कमलको कहते हैं, और यह कोढ सफेद कमलके पत्तेके समान होता है, इसीसे इसे "पुण्डरीक" कहते हैं। कोई कहते हैं, कि यह कोढ बीचमें लाल और किनारों पर सफेद होता है। इसमें शक नहीं कि, इसका रङ्ग सफेदी माइल लाल होता है।

ऋक्षजिह्वके लक्षण।

यह कोढ़ कर्कश होता है। यह किनारों पर लाल रंगका और बीचमें कलाई माइल लाल होता है। इसमें पीड़ा होती है और इसकी आकृति रीछकी जीभके समान होती है।

नोट—ऋक्षजिह्व=रीछकी जीभ। क्योंकि इस कोढ़की आकृति रीछकी जीभके जैसी होती है, इसीसे इसे "ऋक्षजिह्व" कहते हैं।

एककुष्ठके लक्षण।

जो कोढ़ पसीनोंसे रहित हो, बड़ा घेरदार और मछलीके चमड़ेके समान हो तथा चक्राकार और अभ्रकके पत्रोंके समान हो,—उसे

"एककुष्ठ" कहते हैं। यह कोढ़ क्षुद्र कोढ़ोंमें मुख्य होता है, इसीसे इसे "एक कुष्ठ" कहते हैं।

गजचर्मके लक्षण।

जो कोढ़ हाथीके चमड़ेके समान मोटा, कठोर, रूखा और काला होता है, उसे "गजचर्म" कहते हैं।

नोट—गजचर्मका अर्थ हिन्दीमें हाथीका चमड़ा है। जो कोढ़ हाथीके चमड़ेके समान होता है, उसे "गजचर्म" कहते हैं।

चर्मदलके लक्षण।

जिसका रंग लाल हो, जिसमें शूल चलते हों, खुजली और फोड़े फैलकर जिसका चमड़ा फटजाय और जो किसी भी पदार्थका स्पर्श न कह सके, उसे "चर्मदल" कहते हैं।

विचर्चिकाके लक्षण।

जिसमें खुजली समेत धूसर रंगकी स्राव-युक्त फुन्सियाँ हों, उसे "विचर्चिका" कहते हैं।

खुलासा—विचर्चिका रोगमें कालीसी या धूसर रंगकी छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती हैं। उनमेंसे मवाद बहुत बहता और खुजली चलती है।

नोट—भोज कहता है, रुखाईकी वजहसे हाथोंकी खाल फट जाती है, उसे "विचर्चिका" कहते हैं। अगर पाँवकी चमड़ी फट जाती है, तो "विपादिका" कहते हैं। विचर्चिका और विपादिकाके स्थानोंमें भेद है, मगर स्वरूपमें कुछ भेद नहीं। उसमें हाथोंकी खाल फटती है और इसमें पैरोंकी खाल फटती है।

विपादिकाके लक्षण।

हाथ पाँव फट जाँय और तीव्र वेदना हो, उसे "विपादिका" कहते हैं।

केशदद्रु रोगी।

इस रोगीकी दाढ़ी और गर्दन दाद से भर रही है। बाल ढीले हो होकर झड़ गये हैं। इस दाद में एक प्रकार का कीड़ा होता है, जिसे अँगरेज़ी में टिनिया साइकोसिस (Tinea Sycosis) कहते हैं। यह दाद चमड़ेके भीतर प्रवेश कर जाता है, यानी इसकी जड़ गहरी होती है। तीन महीने तक इसका जोर रहता है। पृष्ठ ६१७

पामाके लक्षण।

पामा एक तरहकी खुजली है। इसमें छोटी-छोटी बहुतसी फुन्सियाँ होती हैं। उनमेंसे मवाद निकलता, जलन होती और खुजली चलती है।

कच्छुके लक्षण।

अगर उसी पामाकी फुन्सियाँ बड़ी-बड़ी और तीव्र दाह सहित हों तथा हाथोंमे और विशेप करके कमर या कूलोंमें हों, तो उसे "कच्छू" कहते हैं।

दद्रु या दादके लक्षण।

जिसमें खुजली बहुत हो, लाल-लाल फुन्सियाँ हों, जो पैदा होते ही ऊँचा हो जाय और मण्डलके समान गोल हो, उसे "दाद" कहते हैं।

विस्फोटके लक्षण।

कलाई लिये, लाल और पतली चमड़ीवाले जो फोड़े होते हैं, उनको "विस्फोट" कहते हैं।

किटिभ कोढके लक्षण।

किटिभ कोढ़ काला, सूखा हुआ, व्रणके समान, छूनेमे खरदरा और रूखा होता है।

अलसकके लक्षण।

खुजली युक्त लाल रंगकी बड़ी-बडी फुन्सियोंसे व्याप्त कोढ़को "अलसक" कहते हैं।

खुलासा—अलसकमें खुजली बहुत चलती है और लाल रगके फोड़े होते हैं।

शतारुके लक्षण ।

जिसका रंग लाल और काला हो, जिसमे दाह और शूल हों तथा जिसमें बहुतसे फोड़े हों, उसे "शतारु" कहते हैं ।

सप्त धातुगत कोढ़ोंके लक्षण ।

रसगत कोढके लक्षण ।

अगर कोढ़ "रस"में चला जाता है, तो अंगोंमें विवर्णता और रूखापन होता है, चमड़ेका स्पर्शज्ञान नहीं रहता, रोमाञ्च हो आते हैं और पसीने बहुत आने लगते हैं ।

नोट—कितने ही वैद्य कहते है, कि चमड़े में स्पर्श ज्ञान न रहना, रोएँ खड़े हो जाना और बहुत पसीने आना—रुधिरमें पहुँचे हुए कोढ़के लक्षण हैं ।

रुधिरगत कोढ़के लक्षण ।

अगर कोढ़ "खून"में चला जाता है ; तो खुजली बहुत चलती और राध ज़ियादा होती है ।

मांसगत कोढके लक्षण ।

अगर कोढ़ "मांस"में चला जाता हैं, तो मांस पुष्ट दीखता है, मुँह सूखता है, शरीर कठोर हो जाता है, फुड़ियाँ निकलती हैं, सूई चुभानेकी सी पीड़ा होती है, बड़े-बड़े फोड़े होते और स्थिरता होती हैं ।

मेदगत कोढ़के लक्षण ।

अगर कोढ़ "मेद"मे घुस जाता है, तो मनुष्य लूला हो जाता है, चलने फिरनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, अंग भंग हो जाते हैं, घाव फैल जाते हैं और रुधिर तथा मांसमें गये हुए कोढ़ोंके जो लक्षण लिख आये हैं, वे सब होते हैं ।

अस्थि और मज्जागत कोढके लक्षण ।

अगर कोढ़ "हड्डियों और मज्जा"में चला जाता है, तो नाक बैठ जाती है, नेत्र लाल हो जाते हैं, घावोंमें कीड़े पड़ जाते हैं, गला बैठ जाता और पीड़ा होती है ।

शुक्रगत कोढके लक्षण ।

कोढ़की बाहुल्यतासे जिन स्त्री पुरुषोंका वीर्य दूषित हो जाता है, उन स्त्री पुरुषोंके समागमसे पैदा हुई सन्तान कोढ़ी होती है ।

नोट—जिस तरह शुद्ध वीर्यसे गर्भ रहता है, उसी तरह अशुद्ध वीर्यसे भी गर्भ रहता है। अगर अशुद्ध वीर्यसे गर्भ न रहता, तो बहरे, अन्धे, लँगड़े, लूले और नकटे कहाँसे पैदा होते ? मतलब यह है, कि अशुद्ध वीर्य और रजसे सन्तान पैदा होती है, पर वह निर्दोष नहीं होती—सदोष होती है। वीर्य और रजमें घुसा हुआ कोढ़ सन्तानको कोढ़ी करता है , यानी कोढ़ीकी औलाद कोढ़ी होती है ।

कोढमें वातादि दोषोंकी उल्वणताके चिन्ह ।

वातकी उल्वणतावाला कोढ़ खरदरा, श्याम अथवा लाल, रूखा और वेदनायुक्त होता है ।

पित्तकी उल्वणता वाला कोढ़ बदबूदार, अत्यन्त गीला, दाह, लाली और स्राव संयुक्त होता है ।

कफकी उल्वणता वाला कोढ़ गीला, पुष्ट, चिकना, खुजली युक्त, शीतल और भारी होता है ।

जिसमें ऊपर लिखे हुए लक्षणोंमेंसे दो प्रकारके लक्षण हों, उसे दो दोषोंकी उल्वणतावाला और जिसमें तीनों तरहके लक्षण हों, उसे तीनों दोषोंकी उल्वणतावाला समझो ।

साध्यासाध्य लक्षण ।

रस, रुधिर और मांसमें गया हुआ तथा वात और कफकी उल्वणता वाला कोढ़ साध्य है ।

मेदमें गया हुआ और दो दोषोंकी उल्वणतावाला कोढ़ याप्य है।

मज्जाओंमें और हड्डियोंमें घुसा हुआ, दाहयुक्त, मन्दाग्निवाला और त्रिदोषकी उल्वणतावाला कोढ़ असाध्य है।

कीड़े पैदा करनेवाला बाहरका कोढ़ भी असाध्य होता है।

मज्जा और वीर्यमें गया हुआ कोढ़ असाध्य होता है।

जिस कोढ़में कीडे पड़ जायँ, जिसमें वमन, श्वास और मन्दाग्नि आदि उपद्रव हों और जो तीन दोषोंसे पैदा हुआ हो, वह असाध्य है।

जो कोढ़ फूट कर बहता हो, रोगीके नेत्र लाल हो गये हों, स्वरभंग हो गया हो—आवाज मारी गई हो और वमन विरेचनादि पञ्च कर्मोंसे लाभ न होता हो, वह रोगी मर जाता है। यह कोढ़के अरिष्ट लक्षण हैं।

श्वित्र कुष्ठके लक्षण।

श्वित्र भी एक तरहका कोढ़ ही है, क्योंकि इसमें भी कोढ़की तरह चमड़ा बिगड जाता है: अतः श्वित्रके लक्षण नीचे लिखते हैं। जो निदान कारण कोढ़के हैं, वे ही सब श्वित्रके हैं।

श्वित्रके दो भेद हैं:—(१) किलास, और (२) अरुण। जब श्वित्र रुधिरके आश्रयसे रहता है "किलास" कहाता है और जब वह मांसके आश्रयसे रहता है, "अरुण" कहाता है।

कुष्ठ और श्वित्रमें भेद।

कोढ़ टपकता है, पर श्वित्र नहीं टपकता। कोढ़ वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके प्रकोपसे होता है; पर श्वित्र एक दोषसे होता है। कोढ़ रसादि समस्त धातुओंमें रहता है; पर श्वित्र रुधिर, मांस और मेदमें रहता है। बस, यही कोढ़ और श्वित्रमें भेद हैं।

श्वित्र या धवल कुष्ट रोगी।

इस कोढ़के आरम्भ में, छोटे-छोटे गोल-गोल सफेद धब्बे होते हैं। बहुत करके यह कोढ़ हाथ छाती और मुँह पर शुरू होता है। यह कोढ़ होनेसे चमड़े का असली रंग चला जाता है। यह कोढ दूधके समान सफेद होता है, अतः गोरों की अपेक्षा कालों में जल्दी दीखता है। किसी-किसी सफेद दागमें लाल आभा मारती है। यह कोढ गलता या चूता नहीं। अन्तमें इसके रोगीके बाल तक सफेद होजाते हैं, पर झडते नहीं।

दोष भेदसे लक्षण भेद।

"चरक"में कहा है,—वातसे पैदा हुआ श्वित्र किसी क़दर लाल होता है और रुधिरमें रहता है। पित्तसे पैदा हुआ श्वित्र अन्तमें लाल होता है और मांसमें रहता है। कफसे पैदा हुआ श्वित्र सफेद होता और मेदमें रहता है। वातजनित श्वित्रसे पित्तजनित और पित्तजनितसे कफजनित भारी होता है।

भोज कहता है,—श्वित्र दो तरहका होता है :--- (१) दोषसे पैदा होनेवाला, और (२) व्रणसे होने वाला।

"भावप्रकाश"में लिखा है, वातसे पैदा हुए श्वित्रमें रूखापन और लाली होती है तथा वह खूनमें रहता है। पित्तसे पैदा हुआ श्वित्र कमलके पत्तेकी तरह बीचमेंसे सफेद और अन्तमें लाल होता है। उसमें जलन होती है और वह रोमोंको नष्ट करता तथा मासमें रहता है। कफसे पैदा हुआ श्वित्र सफेद, पुष्ट और भारी होता है। उसमें खुजली चलती और वह मेदमे रहता है।

श्वित्र चाहे दोषसे पैदा हुआ हो और चाहे व्रणसे—दोषोंके भेदानुसार उसका रंग ऊपरके ही माफ़िक़ होता है।

श्वित्रकी साध्यासाध्यता।

जो श्वित्र काले रोमोंवाला, पतला, रुधिर शुष्क और तत्कालका —नया हो तथा आगसे जलाकर न हुआ हो, वह साध्य होता है। इसके सिवा और श्वित्र असाध्य होते हैं।

किसीने कहा है, निर्लोम स्थान—लिङ्ग, योनि, हाथ-पैरके तलवों और होठोंमें पैदा हुआ श्वित्र यदि नया हो तोभी इलाज करने लायक़ नहीं ; पुरानेका तो कहना ही क्या ?

कोढ़ संयोगसे भी होता है।

मथनादि संसर्गसे, शरीरसे शरीर लगनेसे, श्वासके मिलनेसे,

एक पलंगपर सोनेसे, एक साथ भोजन करनेसे, कोढ़ीके पहने हुए कपड़े या माला पहननेसे और उसके लगाये हुए चन्दनादिमें से चन्दनादि लगानेसे निरोगी भी कोढ़ी हो जाता है ।

खुलासा यह है कि अगर निरोगी पुरुष कोढ़ वालीसे मैथुन करता है तो कोढ़ी हो जाता है ; इसी तरह निरोग स्त्री कोढ़ीसे समागम करती है, तो कोढ़ी हो जाती है । कोढीके शरीरसे अगर निरोगका शरीर लग जाता है, तो निरोग कोढी हो जाता है । कोढीका श्वास निरोगीके मुँहमें चला जाता है तो वह कोढी हो जाता है । इसी तरह अगर निरोगी स्त्री पुरुष कोढ़ीके पलंग पर सोते हैं, उसके कपड़े या माला वग़ैर: पहनते हैं और एक साथ खाते हैं, तो कोढ़ी हो जाते हैं ।

चन्द छुतहे रोगोंके नाम ।
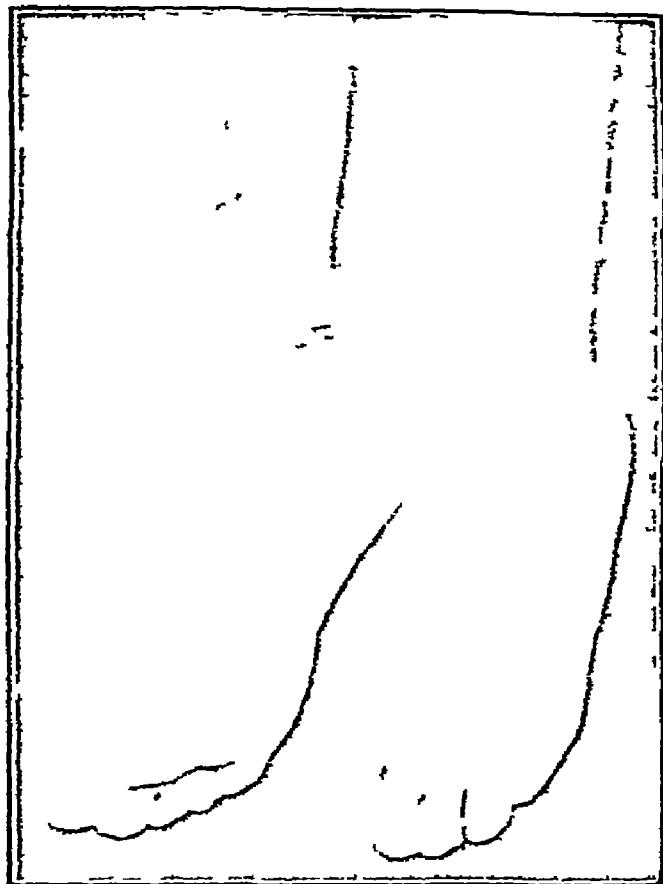
खुजली, कोढ़, उपदंश—आतशक, भूतोन्माद, व्रण, ज्वर, हैजा यक्ष्मा, आँख दुखना, चेचक, जुकाम और इनके समान अन्यान्य रोग भी एक मनुष्यसे दूसरेके शरीरमें घुस जाते हैं । अत: ऐसे रोगियोंसे सदा बचना चाहिये ।

जो मनुष्य कुष्ठ रोगमें मर जाता है, उसके दूसरे जन्ममें भी कोढ़ होता है, अतएव यह रोग बहुत ही बुरा है । इस रोगकी चिकित्सा खूब दिल लगाकर, बहुत समय तक करनी चाहिये, ताकि यह निर्मूल हो जाय । इसकी उपेक्षा भली नहीं ।

कोढ़की चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ।

(१) कोढ़के पूर्व रूप नज़र आते ही, इलाज करना चाहिये, क्योंकि जब इसके रूप पूरी तरहसे प्रकाशित हो जाते हैं, तब इलाज करना महा कठिन हो जाता है । उस समय यह प्राय: असाध्य ही हो जाता है ।

एक कोढ़ी के पाँव।

इस कोढ़ी के पैरोंका चमड़ा फट गया है। अगूठों में छोटे-छोटे घाव होगये हैं। एक्स्टेन्सर पेशियो का पक्षाघात हो गया है यानी उनमें हिलने-चलने की क्षमता नहीं रही है बेकाम हो गई है—और सूखती जाती है। आगे चलकर तमाम अगुलियाँ गिर जायँगी। रोगी चल फिर न सकेगा। यह कोढ़ हाथों, पैरो और मुंह पर जियादा होता है। अरसो चलता और बढ़ता है तथा मवाद देता है। ऐसे कोढ़ को अँगरेज़ी में Leprosy with Paralysis & atrophy of extensor muscles कहते हैं।

पृष्ठ ६२२

(२) यह रोग अतिशय संक्रामक या छुतहा है, अतः कोढ़ीके साथ एक बिछौनेपर सोना, बैठना, उसका निःश्वास अपने अन्दर आने देना, उसके कपड़े पहनना, उसके साथ खाना और मैथुन करना प्रभृतिसे हरेक निरोग स्त्री-पुरुषको बचना चाहिये। अतः कोढ़ीको सबसे अलग निराले स्थानमें रखकर इलाज करना चाहिये और स्वयं वैद्यको भी इलाज करते हुए सब तरहसे सावधान रहकर इलाज करना चाहिये।

(३) वाताधिक्य कोढ़ीको पहले घी पिलाना चाहिये। कफाधिक्य कोढ़ीको वमन करानी चाहिये और पित्ताधिक्य कोढ़ीको रक्तमोक्षण और विरेचन कराना चाहिये। महीनेमें दोबार वमन-विरेचन कराना, खून निकालना और घी पिलाना इस रोगमें परम हितकारी हैं।

हिकमतमे भी लिखा है—यह रोग सौदावी है, जब जड़ जमा लेता है आराम नहीं होता। आरम्भमें फस्द खोलना और मुसिल या जुलाब लेना हितकर है। हर महीने जुलाब लेना चाहिये और खेद, चिन्ता तथा रातमें जागनेसे परहेज़ करना चाहिये। कोढ़ीके लिए बकरीका दूध सर्वोत्तम पथ्य है।

(४) कोढ़ीको घी प्रभृति पिलाकर पहले चिकना करना चाहिये। इसके बाद पॅछने द्वारा, जौंक द्वारा, सींगी द्वारा, तोम्बी द्वारा या शिरा वेधकर—फस्द खोलकर खून निकालना चाहिये।

(५) कोढ़ रोगमें खून निकालने पर, दोषोंका हरण हो जानेपर, वायुका कोप होता है, इसलिए उस वायुको शमन करनेके लिए घी वग़ैरः चिकनी चीज़ें पिलानी और रसायनादि सेवन करानी चाहियें।

अवस्था भेदसे चिकित्सा।

सिध्मकोढ नाशक नुसखे।

(१) कूट, मूलीके बीज, फूलप्रियंगू, सरसों, हल्दी और नाग-केशर—इन छे चीजोंको बराबर-बराबर लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे "सिध्म" कोढ़ आराम हो जाता है। इसका नाम "केशरषट्क लेप" है।

नोट—सिध्म कोढ़ विशेषकर छातीमें होता है और उसको रगड़नेसे धूल सी झड़ती है। यह आकारमें लौकीके फूल जैसा और सफेदी माइल लाल रंगका होता है। यह महाकुष्ठोंमें है।

(२) मूलीके बीज "अपामार्गके रस"में पीसकर लगानेसे सिध्म कोढ़ आराम हो जाता है।

(३) मूलीके बीज दहीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ आराम हो जाता है।

(४) गन्धकका चूर्ण और जवाखारका चूर्ण सरसोंके तेलमें पीसकर लगानेसे सिध्म कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) अमलताशके पत्ते काँजीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म, दद्रु और किटिभ कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(६) दारुहल्दी, मूलीके बीज, हरताल, देवदारु और नागरबेलके पान—ये पदार्थ एक-एक तोले और शंखका चूर्ण ३ माशे—इन सब को मिलाकर, पानीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ नाश हो जाता है। यह लेप सिध्म पर बहुत उत्तम है।

गलित कोढ़ रोगी।

इस रोगी के चेहरे और नाक आदि पर कोढ हो गया है। हाथकी अँगुलियाँ गल रही हैं।

पृष्ठ ६२५

(७) कूट, चकवड़, सैंधानोन, वायबिडङ्ग और सरसों—इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे दाद, मण्डल कुष्ठ और सिध्म कोढ़ नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) केलेका खार और हल्दीको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(९) कसौंदीकी जड़को काँजीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म और दाद नाश हो जाते हैं।

(११) कूट, मूलीके बीज, फूल प्रियंगू, सरसों और धमासा—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बहुत पुराना सिध्म कोढ़ भी नाश हो जाता है।

(१२) कसौंदीके बीज, मूलीके बीज और गन्धक,—इन तीनोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ नाश हो जाता है।

(१३) मूलीके बीज, नीमके पत्ते, सफेद सरसों और घरका धूआँसा—इनको एकत्र जलमें पीस कर लेप करो। फिर साफ करके नौनी घी मलो और इसके बाद गरम जलसे धोओ। इस तरह ३ दिन करनेसे सिध्म कोढ़ नष्ट हो जाता है।

(१४) चिरचिरेके खारका पानी सात बार नितार कर, उसके साथ मालकाँगनीका तेल पकाओ। इस तेलकी मालिशसे सिध्म कोढ़ चला जाता है।

(१५) मूलीके बीज, सरसों, लाख, हल्दी, दारुहल्दी, चकवड़के बीज, सरल गोंद, त्रिकुटा, वायबिड़ंग और कूट—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे दाद, सिध्म, किटिभ, पामा, कपाल और सब तरहके दुःसाध्य कोढ़ नाश हो जाते हैं।

दाद नाशक नुसखे।

(१) सिंघाडे, काकड़ासिंगीकी जड़, हाऊवेर और भारंगीकी जड़—इनको एकत्र मिलाकर और पीसकर पीनेसे दाद अवश्य आराम हो जाते हैं।

(२) पमार, कूट, सैंधानोन, काँजी, सरसों और वायविडंग —इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे दद्रु मण्डल—दाद, सिध्म-कोढ़ और सब तरहके कोढ नाश हो जाते हैं।

(३) पमारके वीज, आमले, राल और थूहर—इनको "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे दाद शीघ्र ही नाश हो जाते हैं।

(४) चकवड और हरडको "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(५) चकवडके वीज "मूलीके रस"में पीस कर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(६) सहंजनेकी जड़की छाल पानीमें पीस कर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(७) चकवडके वीज और जीरा वरावर-वरावर लो और थोडीसी सुदर्शनकी जड़ लो। इन सवको मिलाकर और पीस कर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(८) दूव, हरड़, सैंधानोन, चकवड और वन तुलसी—इनको एकत्र "काँजी और माठे"मे पीस कर लेप करनेसे तीन दिन या तीन लेपमें दाद आराम हो जाते हैं।

(९) पूरव दिशाकी ओर उगे हुए ताड़के पत्ते सिल पर पीस कर दाद पर घिसनेसे अत्यन्त दारुण दाद भी नाश हो जाते हैं।

(१०) लाख, सरल गोंद, कूट, हल्दी, सफेद सरसों, त्रिकुटा, मूलीके बीज और पमारके बीज—इनको काँजीमें पीस कर उबटन करनेसे सिध्म, किटिभ, और विशेषकर दद्रु कुष्ठ—दाद आराम हो जाते हैं।

(११) अमलताशके पत्ते माठेमें पीस कर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१२) काकमाचीके पत्ते अथवा कनेरके पत्ते "माठामें" पीसकर लेप करनेसे दाद-खाज आराम हो जाते हैं।

कण्डू-पामा नाशक नुसख़े।

(१) गन्धकको सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करनेसे पामा नाश हो जाती है।

(२) आठ तोले गोमूत्रमें हल्दीका कल्क मिलाकर पीने और इच्छानुसार आहार-विहार करनेसे पामा नाश हो जाती है।

नोट—हल्दीको पानीमें सिल पर पीस लो और लुगदी बना लो। इस लुगदीको गोमूत्रमें मिलाकर पीओ।

(३) त्रिफला, गिलोय परवल, नीम, अडूसा और खैरसार—इनका काढ़ा सवेरे ही पीनेसे कण्डू, पामा, विसर्प और किटिभ कोढ़ दूर हो जाते हैं।

(४) छोटी इलायची, हल्दी, वायविडंग, शतावरी, दन्ती, कूट, रसौत, बला और चीता—इनका लेप करनेसे पामा, दाद, सफेद कोढ़ और विचर्चिका रोग नाश हो जाते हैं।

(५) हल्दी, हरड, बावची, करंजके बीज, वायविड़ंग, सैंधा-

नोन और सरसों—इन सबका लेप करनेसे पामा, दाद और सफेद कोढ़ वगैरः आराम हो जाते हैं।

(६) स्नान करने, खाने, पीने, लेप करने और उबटन करनेमें "खैरके कषाय"का प्रयोग करनेसे पामा आदि चर्म रोग नाश हो जाते हैं।

(७) सेंधानोन, गोबर और हल्दी—इनको शहदमें पीसकर लेप करनेसे कण्डू और पामा दोनों नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) सिन्दूर, गूगल, रसौत, मोम और नीलाथोथा—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। जितनी लुगदी हो उससे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी और लुगदीको मिलाकर पका लो और तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस तेलके एक बार लगानेसे ही कण्डू, स्रावयुक्त पिटिका अथवा सूखी पिटिका ज़बर्दस्ती आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(९) चार तोले जीरा पीसकर उसमें दो तोले सिन्दूर मिलाओ और पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी सबको मिलाकर पकालो। इस "जीरकाद्य तेल"से पामा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) दूब, हल्दी और दारुहल्दी पीस कर लेप करनेसे पामा-खुजली आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(११) स्वर्णक्षीरी, चकवड, वायविडंग, सिन्दूर पारा, गन्धक और कूट—इन सबमेंसे पहले "पारे और गन्धक"को मिलाकर खरल करो। फिर और दवाओंको पीस-छान कर इसमें मिला दो। अब इस चूर्णको पहले "धतूरेके पत्तों"के रसमें पीसो। इसके बाद "नीमके पत्तोंके रस"में पीसो और अन्तमें "पानोंके रस"में पीसो। अब यह दवा तैयार हुई। इसके लेप करनेसे कण्डूयुक्त पामा, दाद और विचर्चिका रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

दद्रु रोगी।

देखिये, इस लड़के के गाल, नाककी बग़ल में, कानके नीचे, ठोडी पर, गर्दन में और छाती में गोल-गोल दाद हो रहे हैं। ये दाद बालोंके नहीं हैं। ये बिना बालोंकी जगह में ही होते हैं। ये छल्लेकी तरह गोल होते हैं, दिखाई देनेके हफ्ते या दो हफ्ते बाद इनका व्यास आध इंच तक होता है। इनका भीतरी या बीच का भाग जर्दी माइल लाल होता है और बाहरी भाग किसी क़दर उभरा हुआ होता है। इस दाद में टिनिया सरकीनेटा (Tinea Cercinata) नामका कीडा होता है।

पृष्ठ ६२७

पामा या कच्छू ।

स्रावयुक्त—मवाद देनेवाली, भयंकर दाह या जलन करनेवाली, छोटी-छोटी और खुजली युक्त बाहर की फुन्सियों को "पामा या पाँव" कहते है। अगर वही पामा तीव्र दाहयुक्त फोड़ों से व्याप्त हो तथा वह हाथों और कूल्हों में पैदा हो, तो उसे "कच्छू" कहते हैं। अँगरेज़ी में इसी तरह की खुजली को "स्कैब" (Scab) कहते हैं। क्योंकि वह ऐकेरस स्केबियायी नामके कीड़ों की वजह से होती है। उसके लक्षण हमारी कच्छू से बहुत मिलते है। हमारे यहाँ कच्छू का होना हाथों और कूल्हों पर बताया गया है। डाक्टरीमें लिखा है,—यह खुजली पहले हाथों की अँगुलियों में होती है, उसके बाद कमर, पेडू, पैरों और लिंगेन्द्रिय वगैरः पर होती है। पहले-पहल हाथों पर, अँगुलियों के बीच में, छोटी-छोटी लाल-लाल फुन्सियाँ होती है। पीछे वे पक जाती हैं और पीप या रसी भर कर सफेद हो जाती हैं। रोग-पीड़ित स्थान का चमड़ा फूल उठता है, जैसा कि इस चित्र में दिखाया गया है। यह रोग सक्रामक, छुतहा या एक से उड़ कर दूसरे को लगनेवाला यानी कन्टेजियस (Contagious) है। ऐसी खुजलीवाले के बिस्तर पर बिना चादर बदले सोने से, उसका गमछा और तौलिया वगैर. काम मे लाने से यह रोग निरोगी को भी हो जाता है। हाथ मिलाने से भी यह रोग हो जाता है।

(१२) हल्दीको पानीके साथ सिल पर पीस लो। जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना सरसोंका तेल लो। तेलसे चौगुना "आकके पत्तोंका रस" लो ; अब लुगदी, तेल और रसको मिलाकर पकाओ। इस तेलके लगानेसे पामा, कण्डू और विचर्चिका रोग नाश हो जाते हैं। यह "रजन्यादि तैल" है। परीक्षित है।

(१३) महामरिच्यादि तेलके लगानेसे भी पामा और कण्डू आराम हो जाती हैं। परीक्षित है। विधि आगे पृष्ठमें लिखी है।

विपादिका-बिवाई नाशक नुसखे।

(१) शहद, मोम, सैंधानोन, गुड़, गूगल, गेरू, घी, आकका दूध और राल—इनका लेप करनेसे बहुत दिनोंकी बिवाई, और पैर फटना आराम होता है। परीक्षित है।

(२) राल, तिलीका तेल और शहद—इनको मिलाकर लेप करनेसे बिवाई नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३) चाँवलोंको नारियलके जलमें भिगो दो ; जब वे अच्छी तरह फूल जायँ और उनमें बदबू आने लगे, तब पीस लो। इस लेपसे बहुत दिनोंकी विपादिका या बिवाई नाश हो जाती है।

(४) धतूरेके बीज लाकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। लुगदीसे चौगुना कड़वा तेल लो और तेलसे चौगुना "मानकन्दके क्षारका पानी" लो। फिर सबको मिलाकर तेल पका लो। इसका नाम "धत्तूर तैल" है। इससे विपादिका अवश्य नाश हो जाती है।

(५) जायफल पीसकर लेप करनेसे बिवाई नाश हो जाती है। परीक्षित है।

चर्मदल कोढ़ नाशक नुसखे।

(१) राई, गुड़ और सैंधानोन—इनको अच्छी तरह पीसकर लेप करनेसे और ऊपरसे बिलावका चमड़ा बाँधनेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सफेद वचको पानीमें पीसकर लेप करनेसे चर्मदल कोढ आराम हो जाता है।

(३) इन्द्रजौ "गोमूत्र"में पीसकर लेप करनेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है।

(४) आमकी गुठलीको थोड़ेसे सेंधेनोनमें मिलाकर और ताम्बेके वर्तनमें घिस कर लगानेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है।

कच्छु कोढ़ नाशक नुसखे।

(१) बापची, कसौंदी, चकबड़, हल्दी, और सैंधानोन —इनको बराबर-बराबर लेकर "दहीके तोड़ और काँजी"में पीस कर लेप करनेसे कच्छु और अत्यन्त उग्र कण्डू नष्ट हो जाती है।

(२) अड़ूसेके नर्म पत्ते और हल्दीको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे तीन दिनमें कच्छु रोग चला जाता है।

(३) आठ तोले गोमूत्रमें हल्दीकी पिसी हुई लुगदी मिलाकर पीनेसे कच्छु और पामा आराम हो जाती हैं।

(४) गन्दाबिरौज़ा, राल, लोध, कबीला मैनशिल, अजवायन और

दाढ़ी का दाद।

इस रोगीकी दाढी में जो दाद है, उसकी जड़ गहरी है। इस दाद को पैदा हुए एक महीना हुआ है। यह गाँठदार या कई गुमड़ियों से बना हुआ दाद है। जहाँ यह हुआ है वहाँ के बाल ढीले होगये हैं और झड भी गये हैं, इसकी बाहरी शकल गोल छल्ले जैसी होती है, इसी से यह पहचाना जाता है। बाज़-बाज औकात यह भूल से फोडा यह मुहलिक फोड़ा समझ लिया जाता है, जिसे अँगरेजी में कारबंकिल और ऐब्सैस (Carbuncle और abscess) कहते हैं।

पृष्ठ ६२६

गन्धक—इनमेंसे हरेक चार-चार तोले लेकर पीस लो और सेर भर घीमें मिलाकर सूरजकी धूपमें पकाओ। इस घीकी मालिशसे कच्छु रोग चला जाता है।

(५) सिन्दूराद्य तेल और वृहत् सिन्दूराद्य तेलकी मालिश करनेसे कच्छु, पामा, कण्डू या सूखी-गीली खुजली आराम हो जाती हैं। बनानेकी विधि पृष्ठ ६३८ में लिखी है।

(६) गोबर, सैंधानोन, हल्दी और शहद—इनको एकत्र मिलाकर और महीन पीसकर लगानेसे कच्छू और पामा आराम हो जाती हैं।

(७) अर्कतेल या जीरकाद्य तेल लगानेसे कच्छु, पामा और विचर्चिका आदि रोग नाश हो जाते हैं। विधि ६२८ पृष्ठके नं० ६ में लिखी है।

विचर्चिका नाशक नुसखे।

(१) थूहरके कांडमें सरसोंकी पिसी लुगदी भर कर कोयले की आगमें पकाओ और फिर उसका लेप करो। इससे विचर्चिका रोग अवश्य नाश हो जाता है।

(२) थूहरके कांडमें घरका धूआँसा और सैंधानोन भरकर पुटपाक-विधिसे पकाओ। फिर उसमें तेल मिलाकर लेप करो। इससे विचर्चिका रोग नाश हो जाता है।

किटिभ कुष्ठ नाशक नुसखे।

(१) पीपल, दुर्गन्ध करंज, हरड़, कूट, गोपित्त और चीता—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे किटिभ कोढ़ नाश हो जाता है।

(२) चकवड़के बीजोंको थूहरके दूधमें भावना देकर गोमूत्रमें मिलाकर और कुछ देर धूपमें रखकर लेप करनेसे किटिभ कोढ़ आराम हो जाता है।

कोढ़ नाशक नुसखे।

(३) सोमराजीके बीज एक तोले भर—गरम जलके साथ पीने और दूध घीका भोजन करनेसे सब तरहके कोढ़ आराम होते हैं।

(४) गिलोयका रस सेवन करनेसे भी कोढ़ नाश हो जाता है।

(५) हरड़, करंज, सरसों, हल्दी, बावची, सैंधानोन और वायविड़ंग—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे कुष्ट रोग नष्ट हो जाता है।

(६) इलायची, कूट, वायविड़ंग, शतावर, चीता, बच, दन्ती और रसौत—इनको पीसकर लेप करनेसे कुष्ठ रोग आराम होता है।

(७) मैनसिल, इलायची, कालीमिर्च, तेल और आकका दूध—इनको एकत्र मिलाकर लेप करनेसे कुष्ठ रोग नाश होता है।
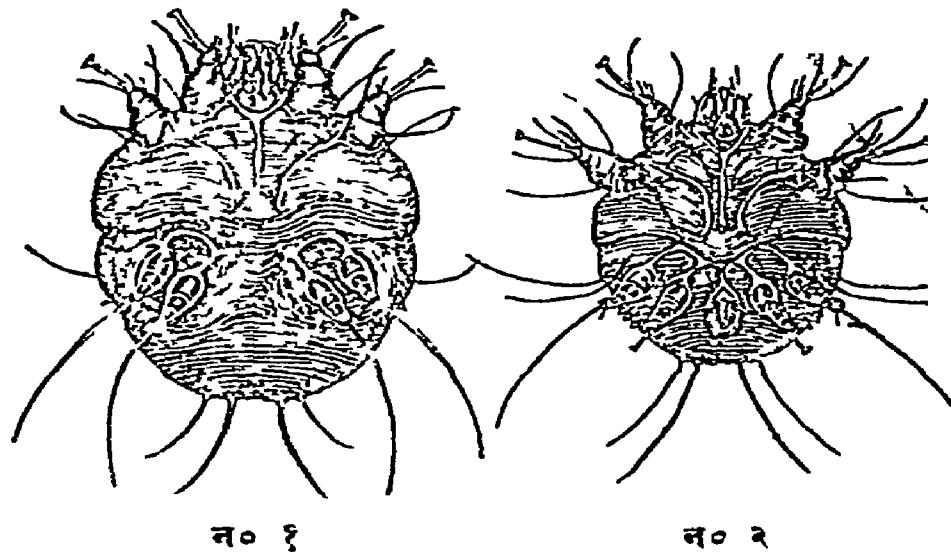
(८) करंजके बीज, चकवड़के बीज और कूट इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(९) आमले, थूहर, राल, और चकवड—इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे कच्छू, दाद, खुजली और कोढ आदि चमड़ेके सारे रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) अरण्डके पत्ते "माठे"से पीसकर मालिश करनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(११) पमार, कूट, सैंधानोन, काँजी, सरसों और वायविडंग—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे सिध्म, दाद और सब तरहके कोढ़ नाश होते हैं।

न० १ न० २

ऐकेरस स्कैबयायी ।

यही दोनों कीड़े स्कैब खुजली के कारण है। इन्हे ऐकेरस स्कैबियायी और मरकपटीज़ स्कैबियायी कहते है। ऊपर के चित्र म न० १ मादीन है और न० २ नर है। नर छोटा होता है और मादीन बडी। इनके धागेके जैसी लम्बी-लम्बी सूँडे होती है। मादीन चिचडी की किस्म का कीड़ा है, जो चमड़े या पोस्त पर हमला करता है। नर चमडे या जिल्द की बुनावट के भीतर नहीं पाया जाता, लेकिन चमड़े के खड्डों मे पाया जाता है और रोग के लक्षण पैदा करनेम ज़ाहिरा सीधा भाग नहीं लेता। हमने दोनोंकी ही सूरत-शकल ऊपर दिखाई है। मादीन की लम्बाई करीब-करीब $\frac{1}{60}$ इंच और चौड़ाई इस से तिहाई होती है। इनका शरीर बैज़ावी या बादामी होता है। ऊपरी सितह मुहद्दब और नीचे की चपटी होती है। इनके चार चंगुल आगे और चार पीछे होते है। आगे वाले हरेक चगुलमें गिरिफ्त का अज़ा और बाल होते है और पीछे वालों में कडे बाल होते है। नर में यही भेद है, कि उसके दो अन्दरूनी पिछले चगुलों में भी गिरिफ्त का अज़ा होता है।

इस प्रकार के कीडों की और भी जातियॉ होती हैं, जो चमडे में घुस जाती है, अण्डे रखती है और सूराख या बिल कर लेती है। ये घोडे, कुत्ते, भेड और सूअर आदि जानवरों के चिपटती है। इन जानवरो से मनुष्यों पर चढ जाती है और जहाँ यह घुसजाती है वहीं ऊपर लिखी स्कैब या कच्छू पामांकी सी फुन्सियाँ पैदा कर देती हैं। यद्यपि मनुष्य का चमडा इन कीड़ों के लिए उत्तम स्थान नहीं, तो भी मनुष्य के चमड़े में प्रवेश करने पर ये अपना काम करती है। इनसे हुआ रोग कोई तीन चार हफ्तो तक रहता है। इलाज दोनो प्रकार की खुजलियो का एक ही सा किया जाता है। पृष्ठ ६३०

(१२) पटोलपत्र, खैर, नीम, त्रिफला, कालावेंत, कुटकी और विजयसार—इनको समान-समान लेकर काढ़ा बनाकर पीनेसे कोढ़ रोग नाश हो जाता है।

(१३) कुड़ेकी छाल पीसकर "मिश्रीके शबत"के साथ पीनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(१४) विष, वरना, हल्दी, चीता, घरका धूआँसा, मैनफल, काली मिर्च, मूर्वा, आकका दूध और थूहरका दूध—सबको मिला और पीस कर लगानेसे सब तरहके कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(१५) भाँगके पत्ते शहद, घी और मिश्रीके साथ खानेसे सब तरहके कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(१६) तिल, घी, त्रिफला, शहद, त्रिकुटा, शुद्ध मिलावे और मिश्री—इन सातोंको मिलाकर खानेसे कोढ़ नाश होता, शरीर पुष्ट होता और अतीव कामेच्छा बढ़ती है।

नोट—दूध और घी कभी बराबर बराबर न लेने चाहियें। कम जियादा लेने चाहिये।

(१७) भूरिछरीला, कथीला, मुलेठी, सोरठकी मिट्टी, राल, कमल और मैनशिल—इनको पीसकर और नौनी घीमें मिलाकर लेप करनेसे अत्यन्त स्रवनेवाला या बहुतसा मवाद देनेवाला कोढ़ भी आराम हो जाता है।

(१८) बापचीका चूर्ण एक तोला खाकर गरम पानी पीने और ३ घण्टे तक धूपमें बैठनेसे सब तरहके कोढ़ १५, २१, ३१ या ४१ दिन में आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस दवाके सेवन करनेवालेको केवल दूध ही खाना-पीना चाहिये। दूधके सिवाय और सब पदार्थ त्याग देने चाहियें।

श्वित्र कुष्ठ नाशक नुसखे।

नोट—श्वित्र कुष्ठ रोगीका बारम्बार खून निकलवाकर दोष हरने चाहिएँ और खेरका काढा तथा जौका भोजन देना चाहिये। तृप्त होने पर कठुमारके रसमें गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिये और खानेको मठके साथ यवागू देनो चाहिये। श्वित्र कुष्ठमें अगर अशुद्ध स्फोट हो जायँ, और उनमें काँटे पैदा हो जायँ, तो उनको अनेक तरहके लेपादिसे फोड़ डालना चाहिये और क्षार तथा अग्निसे चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) कत्था और आमलोंके काढ़ोंमें एक तोले वापचीके बीजोंका चूर्ण डालकर नित्य पीनेसे शंख, चन्द्र और कुन्दकी समान सफेद श्वित्र कुष्ठ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कत्था और आमले दोनों एक-एक तोले लेकर काढ़ा पकाओ। पकने पर काढ़ेमें एक तोले वापचीके बीजोंका चूर्ण या शहद मिलाकर पीओ।

(२) वापचीके बीज १६ तोले, हरताल ४ तोले, मैनशिल ६ माशे, चौंटली ६ माशे और चीतेकी जड़ ६ माशे—इन सबको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे श्वित्र कोढ़ नाश होकर शरीरके रंगमें रंग मिल जाता है।

(३) काली कोइलीकी जड़ पीस कर लेप करनेसे एक हफता या कुछ ज़ियादा दिनोंमें श्वित्र कुष्ठ नाश हो जाता है।

(४) हाथीदाँतके साथ मालतीका खार पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कुष्ठ नाश हो जाता है।

(५) थूहर, आक, चमेली, दुर्गन्ध करंज और धतूरेके हरे पत्ते—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कोढ़, दाद और व्रण आराम हो जाते हैं।

(६) कुत्तेकी हड्डी, केलेकी भस्म और कव्वेकी विष्ठा—इन सबको एकत्र मिलाकर लेप करनेसे ४० दिनमें अत्यन्त उग्र श्वित्र कोढ़ भी आराम हो जाता है।

(७) चमेली, मैनशिल, बायविड़ंग, कसीस, गोरोचन, अमलताश और सैंधानोन—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कोढ़ आराम हो जाता है।

(८) लोहेका चून, काले तिल, रसौत, बापची और आमले—इन सबको भांगरेके रसमें पीसकर श्वित्र कोढ़पर घिसनेसे श्वित्र कोढ़ अवश्य आराम हो जाता है।

(९) नीले फूलका पियावाँसा, पीले फूलका पिया वाँसा, सफेद फूलका पिया वाँसा, हुलहुल, रसौत, चीता, और नीली—इन सबके फूलोंका स्वरस निकालकर, उसमें लोहेका चूर्ण और रसौत मिला दो और फिर उससे श्वित्र कोढ़को घिसो और अन्तमें इसीका लेप कर दो। इस उपायसे सफेद रोम या सफेद बाल शीघ्र ही नाश होकर काले रोम या बाल आ जाते हैं।

(१०) ब्राह्मी, लहसन, सैंधानोन और चीतेकी जड़—इन सबको एकत्र पीसकर और इन्हींके स्वरसमें मिलाकर लेप करनेसे रोम उत्पन्न हो जाते हैं।

(११), विष-तैलके लगानेसे श्वित्र कुष्ठ भी आराम हो जाता है। असलमें यह तेल कोढ़को आराम करता है।

(१२) सफेद फूल वाली अरणीकी जड़ रविवारको लाकर, दूधमें घिसकर एक तोले रोज़ पीनेसे सफेद कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) मैनसिल और चिरचिरेकी भस्म बराबर-बराबर लेकर और पानीमें पीसकर लेप करनेसे सफेद कोढ़ आराम हो जाता है।

कुष्ठ नाशक उत्तमोत्तम योग।

बृहन्मरिचादि तैल।

कालीमिर्च, निसोत, जमालगोटेकी जड, आकका दूध, गोवरका रस, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, जटामासी, कूट, चन्दन, इन्द्रायणकी जड़, कनेरकी जड, हरताल, मैनशिल, चीता, कलिहारी, लाख, नागरमोथा, वायविड़ंग, पमारके वीज, सिरसों, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, सतौना, थूहर, गिलोय, अमलतास, करंज, नागरमोथा, खैरसार, वाबची, वच, और माल कांगनी—ये सब चार-चार तोले और मीठा तेलिया विष आठ तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

अब २५६ तोले सरसोंका तेल और १०२४ तोले गोमूत्र तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मिट्टी या लोहेकी कड़ाहीमें मन्दाग्निसे तेल पकालो। जब तेल मात्र रह जाय, छान लो। इस तेलके लगानेसे कोढ़के व्रण नाश हो जाते हैं। यह तेल-पामा, विचर्चिका, कण्डू, दाद, विस्फोटक, वली पलित, छाया, नीलिका और व्यंग— इन सबको लगाने मात्रसे आराम कर देता है। जिन जवान स्त्रियोंको इस तेलकी नास दे दी जाती है, उनके स्तन बुढ़ापेमें भी ढीले नहीं होते। कहते हैं, इस तेलसे १८ प्रकारके कोढ़ और ८० तरहके वातरोग नाश हो जाते हैं। शरीर वायुके समान वेगवाला हो जाता है। इतना तो हम आज़मा नहीं सके, पर अनेक तरहके भयानक चर्म रोगों पर हमने इसकी परीक्षाकी और इसे ठीक पाया। कोढ़ी जगदीशका नाम लेकर इसे ज़रूर २।४ महीने लगातार
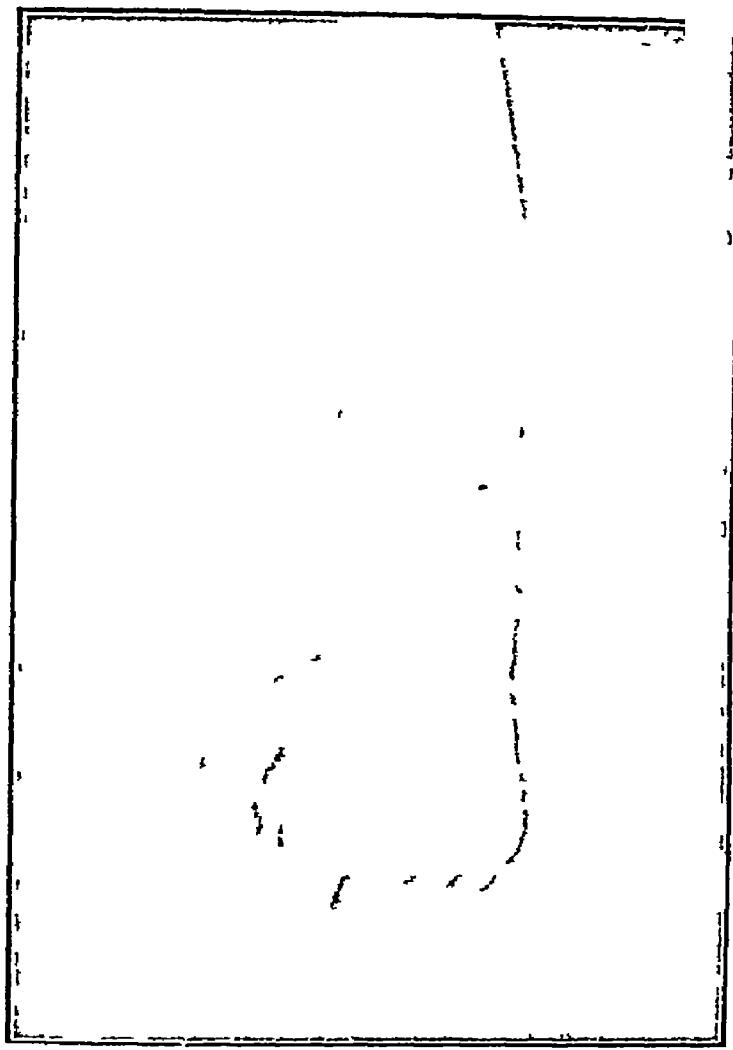
कोढ़ी का पञ्जा ।

इसमें पैरेलिसिस या लकवा हुआ है, यानी हिलने-चलने की क्षमता नहीं रही है। एक्सटैनसर या प्रसारणी पेशी का स्पर्शज्ञान जाता रहा है, और कुछ पट्ठे सूख गये हैं। पञ्जा जकड़ गया है। इसको लेपर क्लॉ (Leper Claw) कहते हैं। इसको काटने से भी कुछ मालूम नहीं होगा, क्योंकि स्पर्शज्ञान जाता रहा है। यह कोढ़ गलता नहीं।

पृष्ठ ६३३

मालिश करावें। परमात्माकी दयासे अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

मरिचादि तेल।

कालीमिर्च, हरताल, मैनसिल, मोथा, आकका दूध, कनेरकी जड़, निशोथ, गोबरका, रस इन्द्रायणकी जड, कूट, हल्दी, दारू-हल्दी, देवदारु और लालचन्दन—ये सब एक-एक तोले और मीठा तेलिया विष ४ तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर ६४ तोले कड़वा तेल, २५६ तोले गोमूत्र और ऊपरकी लुगदी—इन सबको लोहेकी कड़ाहीमें मन्दाग्निसे पकाओ ; जब तेल मात्र रह जाय छान लो। इस तेलकी मालिश करानेसे सब तरहके कोढ़ और दाद आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

सोमराजी तेल।

सोमराजीके बीज या बावची, हल्दी, दारूहल्दी, सफेद सरसों, अमलतासके पत्ते, कूट, डहर करंजके बीज और चकवड़के बीज या जड़—इन सबको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर एक सेर सरसोंका तेल, चार सेर पानी और लुगदीको मिलाकर तेल पकाओ, जब तेल मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इस तेलके लगानेसे नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण, अठारह तरहके कोढ़, नीलिका, पिड़िका, झाँई, गंभीर वातरक्त, कण्ड, न्यच्छ, कच्छू और पामादि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

विष तेल।

करंज, हल्दी, दारुहल्दी, आकका दूध, तगर, कनेर, बच, कूट, कोइली, लाल चन्दन, मालती, सतौना, मँजीठ और सिन्दुवार—इनको दो-दो तोले लो और मीठा विष चार तोले लो। सबको पीस कर लुगदी कर लो। फिर सरसोंका तेल ६४ तोले, गोमूत्र

२५६ तोले और इस लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब तेल मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इस तेलके लगानेसे श्वित्र कुष्ट, विस्फोटक, किटिभ, कृमि, लूता, विर्चर्चिका, कण्डू, कच्छू-विकार और विष- दूषित व्रण आराम हो जाते हैं। यह तेल सब तरहके व्रणोंका शुद्ध करता है।

श्वेतकरवीराद्य तेल।

सफेद कनेरकी जड़ और मीठा विष—इनको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल, तेलसे चौगुना गोमूत्र और इस लुगदीको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलसे चर्मदल कोढ़, सिध्म कोढ़, पामा, विस्फोट और किटिभ कोढ नष्ट हो जाते हैं।

सिन्दूराद्य तेल।

सिन्दूर, गूगल, रसौत, मोम और नीलाथोथा—समान-समान लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल, तेलसे चौगुना पानी और इस लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलसे कच्छु, पिड़िका और पामा आदि आराम हो जाते हैं। पामा पर यह तेल खास तौरसे लाभदायक है। परीक्षित है।

महासिन्दूराद्य तैल।

सिन्दूर, लालचन्दन, जटामांसी, वायबिडङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, फूलप्रियङ्गु, पद्माख, कूट, मँजीठ, खदिर काष्ठ, वच, चमेलीके पत्ते, आकके पत्ते, निसोथ, नीमकी छाल, डहर करञ्जके बीज, मीठा विष, क्षुरक, लोध और चकवड़के बीज—इन सबको तीन-तीन तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। अगर यह तैयार लुगदी एक सेर हो, तो चार सेर सरसोंका तेल, सोलह सेर पानी और
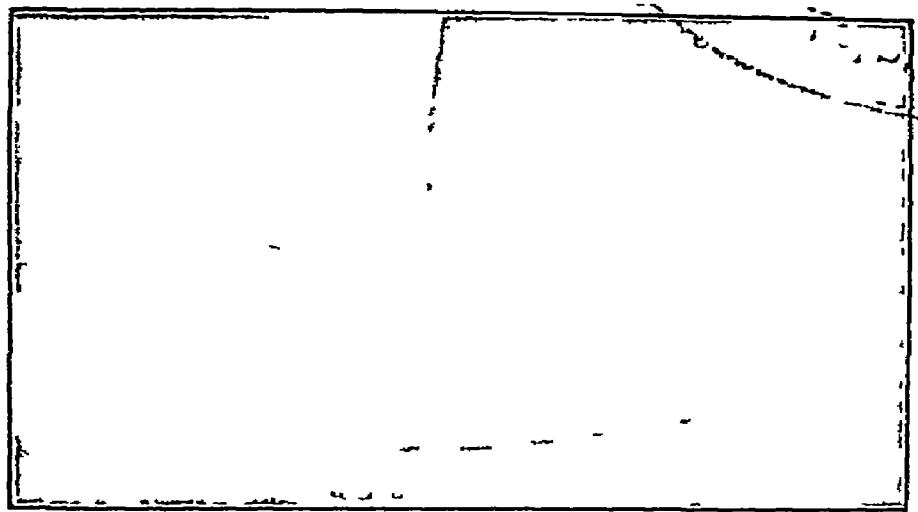
उकवत या ऐकज़ैमा का रोगी।

यह आदमी कोई पैंतीस बरस की उम्र का है। इसके पैरों में उकवत रोग हुआ है। यह उकवत कई सालों का पुराना है। इसका रंग गहरा भूरा है और इसमें अरगवानी रंग की आभा भी मारती है। कोई कहते हैं, रोग पीड़ित स्थान का रंग लाल होता है और उस पर छोटे-छोटे दाने होते हैं। इसके दानेदार चकत्तों को देखिये। इस रोग को हिन्दुस्तानी में उकवत और अंगरेजी में एकज़ेमा (Eczema) कहते हैं। यह भी एक प्रकार की खुजली ही है, इसीसे इसे पसारी की खुजली या Grocers'itch अथवा Eczema, नानबाई की खुजली या Bakers' itch अथवा Eczema और धोबन की खुजली या Washerwomen's itch अथवा Eczema कहते हैं। यह रोग संगतराश, ईंट पाथनेवालों, लेई लगाने वालों, जिल्दसाजों, छापनेवालों, रंगरेज़ों, अत्तारों और सरजनों या जर्राहों को होता रहता है। बहुत सर्दी विशेष कर सर्द हवा में रहने से यह रोग बढ़ता है और गरमी आते ही गायब हो जाता है। पर इसका अपवाद भी है, यानी गरमी के मौसम में भी यह बहुत ही बुरी तरह बढ़ता है। और भी——

इस रोगको अंगरेजीमें एकज़ेमा, बँगलामें काऊर, मारवाड़ीमें बीची कहते हैं। इसमें दाद की तरह गोल-गोल-चकत्ते नहीं होते, पर खुजली चलती है। यह सूखा और गीला दोनों तरह का होता है। सूखे ऐकज़ैमा में भूसी सी उड़ती है। यह रोग सारे शरीर में कहीं भी हो सकता है, पर बहुत करके हाथ, पाँव और मस्तक में होता है। सिरमें होनेसे बाल झड़जाते हैं। गीले एकज़ैमा से पीप निकलती है। अंगरेज़ीमें गीले एकज़ैमा को वीपिंग एकज़ेमा (Weeping Eczema) कहते हैं।

इस लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे औटाओ। तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस तेलकी मालिशसे सब तरहके कोढ़ नाश हो जाते हैं।

मञ्जिष्ठादि काथ ।

मँजीठ, सोमराजी, चकवड़के बीज, नीमकी छाल, हरड़, हल्दी, आमला, अड़सेके पत्ते, शतावर, बरियारा, गुलसकरी, मुलेठी, गोखरु, परवलके पत्ते, खसकी जड़, गिलोय और लाल चन्दन—इन १७ दवाओंको दो-दो माशे लेकर यथाविधि काढ़ा पकाओ। इस काढ़ेके पीनेसे कोढ़, वातरक्त, खुजली और मण्डल-चकत्ते आदि चर्म रोग नाश हो जाते हैं।

पञ्चनिम्ब ।

नीमके पत्ते, फल, फूल, जड़ और छाल,—इनको समान समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको दूध या गोमूत्रके साथ खानेसे कोढ़, विसर्प और बवासीर रोग आराम हो जाते हैं।

पञ्चनिम्बकावलेह ।

नीमके फल, फूल, छाल, पत्ते और जड़—दो-दो तोले लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें भाँगरेके रसकी सात भावनायें दो।

हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपर, ब्राह्मी, गोखरु, भिलावे, चीता, वायबिडङ्गका सार, वाराहीकन्द, लोहेका चूर्ण, हल्दी, दारुहल्दी, बापची, अमलताश, मिश्री, कूट, इन्द्रजौ और पाढ़—इन २१ दवाओंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें खैरसार, विजयसार और नीमके गाढ़े काढ़ेकी भावना दो और छायामें सुखाओ। इसके बाद क्रमानुसार भाँगरेके रसकी सात भावना दो।

अब हरड़ आदिके चूर्णका एक भाग और ऊपर कहे हुए पत्र-निम्बके चूर्णके दो भाग एकमें मिला दो और छान कर रख दो।

पहले कोढ़ीको वमन विरेचनसे शुद्ध कर लो। फिर यह चूर्ण शहद, पञ्चतिक्त घी, खैरसारका काढ़ा या गरम पानीके साथ खिलाओ। शुरुमें ६ माशेकी मात्रा दो, फिर धीरे-धीरे-बढ़ाकर चार तोले तककी मात्रा कर दो। इस अवलेहके पचनेपर चिकना हल्का और हितकारी भोजन दो।

इस अवलेहको स्वयं विधाता ब्रह्माने मार्कण्डेयादि मुनियोंसे कहा था। इसके सेवन करनेसे विचर्चिका, औदुम्बर, पुण्डरीक, कपाल, दद्रु, किटिभ, अलसक, शतारु, विस्फोटक, विसर्प, गण्डमाला, भगन्दर, तीन तरहका श्वित्र, श्लीपद, वातरक्त, जड़ता, अन्धता, नाडी व्रण, मस्तक-पीड़ा, सब तरहके प्रमेह, सब तरहके प्रदर एवं सब तरहके स्थावर और जङ्गम विष ये सब नाश हो जाते हैं।

इस अवलेहको शहदमें मिलाकर चाटनेसे बड़े-बड़े पेटवाले सिंहकी तरह पतले पेटवाले हो जाते हैं। इसके चाटनेवालेको अगर सर्प वग़ैरः काटें तो मर जावें। इसके सेवन करनेसे मनुष्य बहुत लम्बी उम्र तक जीता है। उसे रोग और बुढ़ापा नहीं सताता।

शास्त्रमें इतनी तारीफ लिखी है, सम्भव है, सच्ची हो। हम इतना कह सकते हैं, सब दवाएं छोड़कर इसे एक मात्र सेवन करने और बृहन्मरिचादि तेल लगाने एवं नीमके नीचे सोने आदिसे अनेक रोगी चार छै या बारह महीनेमें आराम हो गये। उनका शरीर निर्दोष हो गया। कदाचित् २।३ बरस खानेसे या सदा खानेसे शास्त्रमें लिखे सभी गुण हो सकें। चीज़ अमृत है, पर दस बीस दिनमें नहीं, २।३ महीनेमें बड़ा चमत्कार दिखाती है। साधारण कोढ़ इससे १ महीनेमें ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

कोढ़ रोगी ।
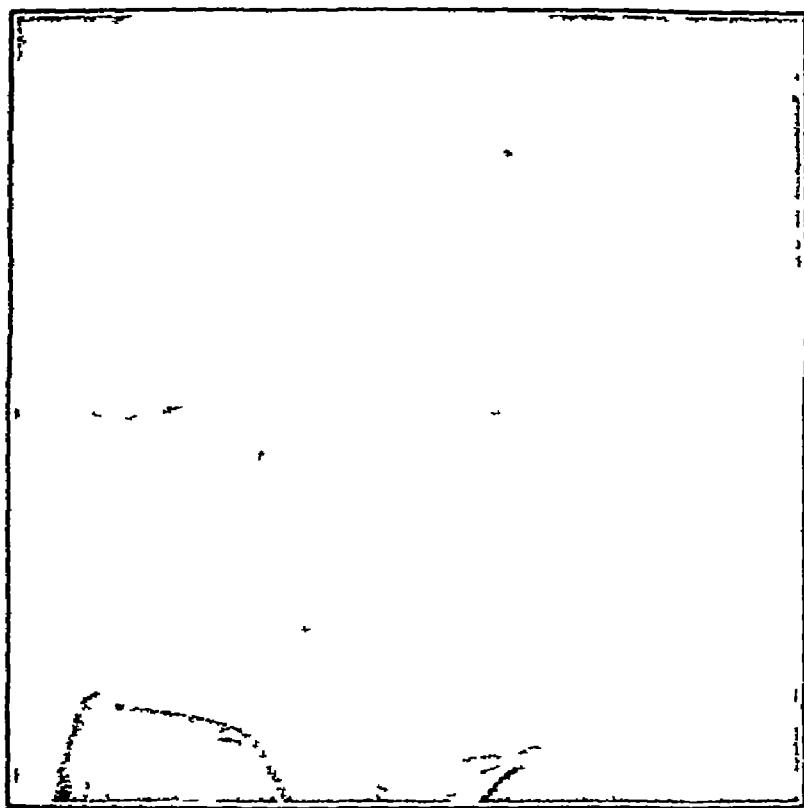
इस रोगी की पीठ में कोढ़ का चकत्ता है। यह एक चौदह साल का लड़का है। इस कोढ़ को अँगरेज़ी में Leprosy of the Maculo-Anesthetic type कहते हैं।

पृष्ठ १३५

सोमराज्युद्वर्त्तन ।

बावचीके चूर्णमें अदरखका रस मिलाकर शरीरमें उबटन करनेसे उग्र और जमा हुआ कोढ़ भी नाश हो जाता है। अच्छा नुसखा है।

पथ्यादि लेप ।

हरड़, करञ्ज, सरसों, हल्दी, बावची, सैंधानोन और वायबिडङ्ग —इनको गोमूत्रमें पीस कर लेप करनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

एकविंशतिक गुग्गुल ।

चीता, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, पीपर, ज़ीरा, कलौंजी, बच, सैंधानोन, अतीस, कूट, चव्य, इलायची, जवासा, बायबिडङ्ग, अजमोद, नागरमोथा और देवदारु—सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सब चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लेकर इसमें मिला दो और "घी" डाल-डालकर खूब कूटो। जब कुट जायँ, दो-दो माशेकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंको हर दिन सवेरे, भोजनके समय, अपने अग्निबलानुसार, गरम दूध या गरम जलके साथ खानेसे १८ तरहके कोढ़, कृमि, दुष्ट व्रण, संग्रहणी बवासीर; मुख पीड़ा, गलग्रह, गृध्रसी, भग्न और गुल्म ये सब नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह विष्णु असुरोंको जीतते हैं, उसी तरह यह गूगल ऊपर कहे हुए और कोठेमें घुसे हुए रोगोंको जीतता है।

लघुमंजिष्ठादि क्वाथ ।

मँजीठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुटकी, बच, देवदारु, हल्दी, कूट और नीम—इनका काढ़ा बनाकर नित्य पीनेसे सब तरहके कोढ़ नाश हो जाते हैं। इस काढ़ेका अभ्यास करनेसे वातरक्त, खुजली पामा, रक्तमण्डल, लाल चकत्ते, दाद, विसर्प और विस्फोटक—इन सबका नाश होता है।

बृहन्मजिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ कुड़ेकी छाल, गिलोय, नागरमोथा, वच, सोंठ, हल्दी, दारुहल्दी, कटेरीका पंचाङ्ग, नीम, परवल, कुटकी भारङ्गी, वायबिडङ्ग, चीता, चुरनहार, देवदारु, भाङ्गरा, पीपर, त्रायमाण, पाढ़, शतावर, खैर, हरड़, बहेड़ा, आमला, चिरायता, बकायन, विजयसार, अमलताश, फूलप्रियंगू, बावची, लाल चन्दन, वरुणा, जमालगोटा, सिंहोड़ा, पित्तपापड़ा, सारिवा, अतीस, धमासा, इन्द्रायण और सुगन्धवाला—इन सबका काढ़ा पीनेसे बहुत पुराने चर्मविकार, अठारह तरहके कोढ़, वातरक्त, विसर्प, त्वचाकी जड़ता और आँखोंके रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस काढ़ेके सम्बन्धमें हमने "वातरक्त रोग चिकित्सा"में बहुत कुछ लिखा है, उसे भी देख लीजिये।

पञ्चतिक्त घृत।

नीम, परवल, कटाई, गिलोय और अडूसा—इनको छटाँक-छटाँक भर लेकर, दो सेर पानीमें काढ़ा करो। जब आध सेर पानी रह जाय, उतार कर कड़ाहीमें छान लो। फिर उसमें आध सेर घी और आध सेर त्रिफलाकी सिलपर पिसी लुगदी मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, छान लो।

इसमेंसे एक या दो तोले घी पीनेसे ८० वातरोग, ४० पित्त रोग, २० कफ रोग और १८ कोढ़ आराम हो जाते हैं।

पंचतिक्त घृत गुग्गुल।

नीमकी छाल, गिलोय, अडूसेकी छाल, परवलके पत्ते और कंटकारी—आध-आध पाव और शुद्ध गूगल पोटलीमें बँधा हुआ ५ तोले—सबको सोलह सेर पानीमें डालकर औटाओ, जब चार सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो और गूगलको पोटलीको अलग रख लो।

पाढ़, वायविड़ंग, देवदारू, गजपीपर, जवाखार, सज्जीखार, सोंठ, हल्दी, सोवा, चव्य, कूट, लताफटकी, कालीमिर्च,इन्द्रजौ, जीरा, चीता, कुटकी, शुद्ध मिलावा, वच, पीपरामूल, मँजीठ, अतीस, त्रिफला, और अजमोद—प्रत्येक छै-छै माशे लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी कर लो।

अब एक सेर घी, ऊपरका काढ़ा,पोटलीकी गूगल, ऊपरकी लुगदी —सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ, और घी मात्र रहने पर उतार लो। इसमेंसे छ-छै माशे घी रोज खानेसे कोढ़, भगन्दर, नासूर और विष दोष आराम हो जाते हैं।

तालकेश्वर रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्बा भस्म, लोहा भस्म, शुद्ध गूगल, चीता, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध कुचला, हरड़, वहेड़ा और आमला—ये सब एक-एक माशे लो ; अभ्रक भस्म चार माशे और करंजके बीज चार माशे लो।

पहले पारे और गन्धकको ३।४ घन्टे खरल करके कज्जली कर लो। फिर उसमें पीसने कूटनेकी दवाएँ पीस-छान कर और भस्म योंही मिला दो। जब सब मिल जायँ, तब इसे पहले "शहद" और पीछे "घी" डालकर खरल करो और घीके चिकने वासनमें रख दो। यह "गलित कुष्ठादि रस" है। इसकी मात्रा १ माशेसे ३ माशे तक है। इस पर लाल शालि चाँवलोंका भात, दूध और शहदका पथ्य देना चाहिये। जिसके कान, अंगुली और नाक वग़ैरः गल गये हों, वह भी इससे कामदेवके समान शरीर वाला हो जाता है। इस पर मैथुन मना है। अगर कोढ़ने मजबूत जड़ करली हो, तो इस पर जल और भातका पथ्य देना चाहिये।

सोमराजी घृत।

बावची १६ तोले, खैरसार ४ तोले, परवलकी जड़ १ तोले, हरड़

१ तोले, बहेड़ा १ तोले, आमला १ तोले, त्रायमाण १ तोले, धमासा १ तोले और कुटकी १ तोले—इन सबको पानीके साथ महीन पीसकर इनमें ८ तोले "शुद्ध गूगल" मिला दो। फिर कल्कसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी तथा ऊपरकी लुगदी सबको मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय छान लो। इस घीसे श्वित्र कुष्ठ इस तरह नाश होता है, जिस तरह जलसे आग नष्ट होती है। यह अठारह प्रकारके कोढ़ोंकी उत्तम औषधि है। श्वित्र और कुष्ठ रोगियोंकी पीड़ा निवारण करनेके लिए प्राचीन समयमें ब्रह्माने इसे बनाया था।

कन्दर्पसार तेल।
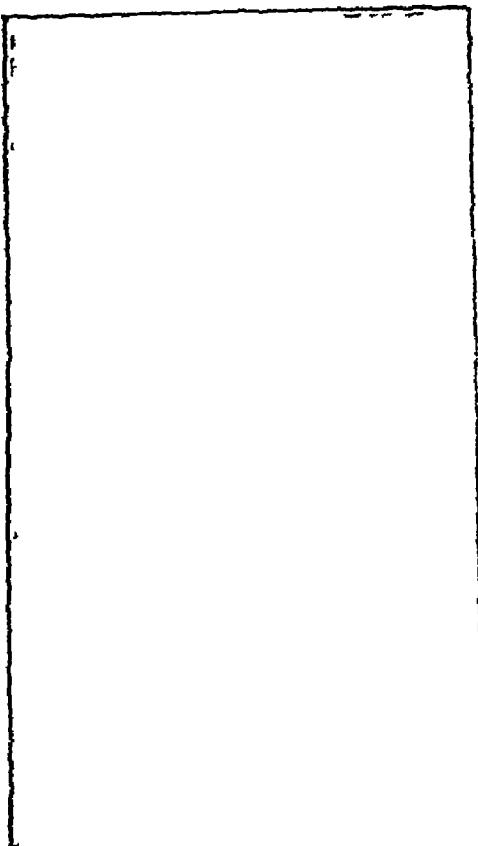
छतिवनकी छाल, सीसमकी छाल, गोखरू, गिलोय, नीमकी छाल, शीशमकी छाल, घोड़ नीम, जयन्तीके पत्ते, तितलौकी, इन्द्रायण और हल्दी—प्रत्येक आध-आध पाव लेकर जौकुट कर लो और १६ सेर पानीमें डालकर काढ़ा पका लो; जब ४ सेर पानी रह जाय छान लो। यह काढ़ा हुआ। इसके पास ही ४ सेर गोमूत्र, १ सेर सरसोंका तेल और १ सेर गोबरका रस रख दो।

अब अमलताशके पत्ते, भाँगरा, जयन्तीके पत्ते, धतूरेके पत्ते, हल्दी, भाँगकी पत्ती, चीतेके पत्ते, खजूरके पत्ते, आकके पत्ते और सेंहुड़के पत्ते—इन सबका एक-एक सेर रस तैयार करो।

माकाल, बच, ब्राह्मीके पत्ते, तितलौकी, चीता, घीग्वार, कुचला, परवलके पत्ते, हल्दी, नागरमोथा, पीपरामूल, अमलताशका गूदा, आकका दूध, कालकासुन्दाकी जड़, ईशमूल, आचमूल, मंजीठ, कड़वा परवल, इन्द्रायणकी जड़, बिछोटीके पत्ते, करंजमूल, हापरमाली, मूर्व्वामूल, छतिवनकी छाल, सीसोंकी छाल, कुड़ेकी छाल, नीमकी छाल, घोड़ नीमकी छाल, गिलोय, हाकुच बीज, सोमराजी (दोभाग), चकवड़के बीज, धनिया, भीमराज, मुलेठी, जंगली सूरन,

दद्रु रोगी की भुजा।

इस रोगी की बाँह पर दाद के गोल-गोल तीन चकत्ते हैं। रोगी साईस है। इस दाद में सोजिश होती है। इस में भी टिनिया सरकीनेटा कृमि होता है।

पृष्ठ ६४५

कुटकी, कचूर, दारुहल्दी, निसोथ, पद्माख, गंठेला, अगर, कूट, कपूर, कायफल, जटामासी, मूरामासी, इलायची, अडूसेकी छाल और खसकी जड़—ये सब छै-छै माशे लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

अब एक कड़ाहीमें १ सेर सरसोंका तेल, चार सेर काढ़ा, चार सेर गोमूत्र, एकसेर गोबरका रस और ऊपरकी लुगदीको डालकर मन्दाग्निसे पकाओ और तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। यह तेल लगानेसे सब तरहके कोढ, श्वित्र कुष्ठ और गण्डमाला प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं।

अमृत भल्लातक।

शुद्ध भिलावे दो सेर लेकर आठ सेर पानीमें औटाओ, जब दो सेर पानी रह जाय छान लो।

अब ऊपरके काढ़में दो सेर घी मिला कर औटाओ, जब घी पक जाय, उसमें एक सेर चीनी मिला दो और सात दिन उठाकर रख दो।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे कोढ़ वग़ैरः रोग नाश होकर बलवीर्य बढ़ते हैं।

दाद नाशक हकीमी नुसखे।

नोट—यह रोग सौदावी है, यह चमड़ पर फैलता और खूनसे पैदा होता है। जब तक माँसके भीतर न घुसा हो—यानी शुरूमें इसका इलाज आसानीसे हो सकता है। जबकि माँसके भीतर घस जाता है, तब जौंक और पँछने लगाने एव तेज दवाएँ सेवन करनेसे ही जाता है। यह भी कोढका एक भेद है, इस लिए इसके पैदा होनेपर लापरवाही करना भारी नादानी है।

(१) राल, गन्धक, सुहागा और खुरासानी अजवायन—इनको

कूट-पीसकर और पानीके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो। दाद-को खुजाकर, इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(२) मुर्दारसङ्ग, गन्धक, नौसादर, सुहागा, माजूफल, काली-मिर्च, सफेद कत्था, अफीम और चीनिया गोंद कूट-छानकर पानीके साथ गोलियाँ बना लो। लगानेके समय, गोलीको नीबूके रसमें घिसकर लगाओ। इस दवासे दाद अवश्य जाता रहता है।

(३) मदारके फूल और पँवारके बीज कूट-छानकर खट्टे दहीमें मिला लो और दादपर लगाओ। इससे दाद आराम हो जाता है।

(४) इमलीके बीज नीबूके रसमें पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(५) सूखा सिंघाड़ा नीबूके रसमें पीस कर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(६) हार सिंगारकी पत्तियाँ पीसकर दाद पर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(७) दादको खुजाकर, हर रोज़ दो बार, नीबूका रस मलनेसे दाद नाश हो जाते हैं।

(८) कलौंजी सिरकेमें पीसकर मलनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(९) कसौंधीकी जड़ नीबूके रसमें घिस कर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१०) पलासपापड़ा और कत्था पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(११) आमले, लाल चन्दन, चीनिया गोंद, राल, सुहागा और कत्था---समान-समान लेकर पानीमें पीस लो और दादको खुजाकर उसपर मलो। इससे दाद आराम हो जाते हैं। ग्रन्थकार इसे अपना आजमूदा नुसख़ा कहते हैं।

गंज दाद ।

इस रोगी की खोपड़ी में बड़े-छोटे दादों के छै सात चकत्ते है। ऐसे दाद को गंजदाद (Bald ringworm या Bald Tinea tonsurans) कहते है। ऐसे दादोंमें बहुधा दाद की जगह के अधिकॉश या सारे ही बाल झड़ जाते हैं और वहॉ सफेद गोल चकत्ता सा दीखने लगता है। जो बाल झड़ने से बचे रहते हैं, वे रूखे और सूखे से होते हैं एवं उनमें चमक नहीं होती। जहॉ यह दाद होता है, वहॉ का चमड़ा रूसी भूसीदार या बफ़ादार हो जाता है।

पृष्ठ ६४६

(१२) पँवारके बीज पानीमें भिगो दो। जब वे सड़ जावें, सिलपर पीसकर दाद या गीली-सूखी खुजलीपर लगाओ और गरम जलसे नहाओ। दाद और खुजली आराम हो जायँगे।

(१३) अमलताशकी पत्तियाँ पीसकर दाद्पर मलने या अमलताशकी कच्ची फलीकी गरी निकालकर और पानीमें पीसकर दाद्पर लगानेसे दाद् नाश हो जाते हैं।

(१४) मूलीके बीज नीबूके रसमें खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके लगानेसे दाद् आराम हो जाते हैं।

(१५) कुचला सिरकेमें पीसकर दाद् पर लगानेसे दाद नाश हो जाते हैं।

(१६) सौ बार धोये हुए सवा तीन तोले घीमें २० माशे सज्जी पीस-छान कर मिला दो। इसका लेप करनेसे दाद् आराम हो जाते हैं।

(१७) अंजीरका दूध मलनेसे दाद् आराम हो जाता है।

(१८) चन्दन, सुहागा और अफीम तीनों बराबर-बराबर लेकर, नीबूके रसमें पीस कर, दाद् पर मलनेसे दाद् आराम हो जाते हैं। दवा लगानेसे पहले दाद्को खुजा लेना ज़रूरी है।

(१९) मैनशिल पानीमें पीस कर लगानेसे दाद् जाता रहता है।

(२०) दाद् पर सरेश मलो। जब तक दाद् नाश न होगा, सरेश अपनी जगहसे न छुटेगी।

(२१) पारा सिरकेमें पीस कर लगानेसे दाद् नाश हो जाता है।

(२२) मह्ँदी सिरकेमें पीस कर लगानेसे दाद जाता रहता है।

(२३) नीमकी पत्तियाँ दहीमें पीस कर लगानेसे दाद् जाता रहता हैं।

(२४) सिन्दूर, गन्धक, हल्दी, सुहागा और कालीमिर्च—इनको समान-समान लेकर और घीमें मिलाकर दिनमें चार-पाँच बार लगानेसे दाद् चला जाता है।

(२५) पुँवारके बीज, आमले और कत्था—इनको दहीके पानीमें पीस कर दाद पर लगानेसे दाद नाश हो जाता है, पर दवा लगानेसे पहले दादको खुजा लेना ज़रूरी है।

तर और खुश्क-खुजली नाशक नुसखे।

नोट—खुजली चमड़ेके रोगोंमें गिनी जाती है। तर खुजली कफसे और सूखी वायुसे होती है। खुजली होने पर, बैंगन, लालमिर्च, कड़वे तेल और नमकीन चीजोंसे परहेज करना चाहिये।

(१) दो तोले नीमकी कोंपल पानीमें पीस-छान कर पन्द्रह दिन तक पीनेसे खुजली जाती रहती है।

नोट—इसी तरह पीस छान कर "सरफोंका" पीनेसे भी खुजली जाती रहती है।

(२) कड़वा चिरायता, शाहतरा और जङ्गी हरड़—तीनोंको मिलाकर तोले भर लो और रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही पीस-छान कर पीओ। इससे तर या गीली खुजली जाती रहती है।

(३) शुद्ध आमलासार गन्धक, आमा हल्दी और बावची—हरेक दस-दस माशे और शाहतरा २० माशे लेकर जौकुट करो और इसके तीन भाग कर लो। एक भाग रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उसका पानी छान कर पीलो। कपड़ेमें जो छानस या फोग रहे, उसे कड़वे तेलमें पीस कर बदन पर मलो और गरम पानीसे नहा डालो। इससे खुजली आराम हो जाती है।

(४) "मोजिज" नामक ग्रन्थमें लिखा है, कि सात छटाँक दूध और साढे-तीन छटाँक सिकञ्जवीन मिलाकर पीनेसे खुश्क खुजली आराम हो जाती है। शेखुल रईस भी इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं। एक हकीम साहब कहते हैं, कि इतनी ख़ूराक

गांठदार कोढ़ का रोगी ।
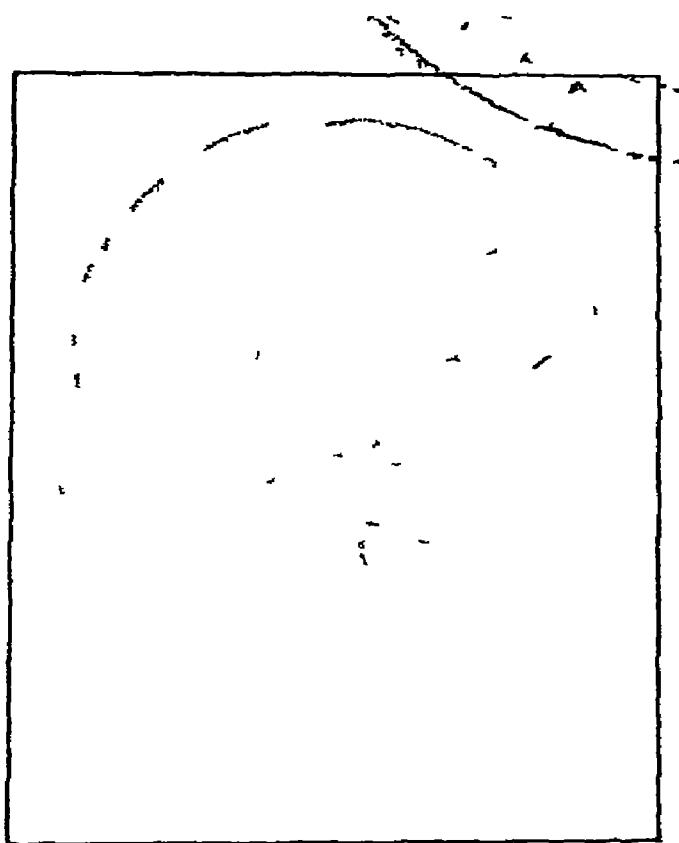
यह कोढ़ भी ग्रन्थिदार है। इस में स्पर्शज्ञान का लोप हो जाता है, इसलिये रोग पीड़ित स्थान पर आग लगाने, काटने या सूई घुमाने से भी कुछ मालूम नहीं होता। इस में बहुत सी ग्रन्थियों के पैदा होजाने और आपस में मिल जाने से सूरत बिल्कुल बिगड जाती है। अन्त में नाक और होठ गल जाते है। ऊपर के चित्रको गौर से देखिये। अँगरेजी में इसे Leprosy of the Tubercular Type कहते है। पृष्ठ ६४७

दिहातियोंके लिए उचित है। नाजुक-मिज़ाज अमीरोंकी तो भूख बन्द हो जायगी।

(५) सब्ज़ तूतिया ४ माशे, सूखी तम्बाकू ४ माशे, कमीला ८ माशे और सफेद चीनी १६ माशे—इनको पीस कर और कड़वे तेलमें मिलाकर लगानेसे तीन दिनमें खुजली आराम हो जाती है।

(६) पाव-भर कड़वा तेल खूब औटाओ। फिर उसमें एक-एक करके मदारके २१ पत्ते डाल दो; जब पत्ते जल कर ख़ाक हो जायँ, तेलको नीचे उतार लो और उसमें थोड़ासा "मैनशिल" पीस कर मिला दो। इस तेलको तीन-चार दिन खुजली पर मलनेसे खुजली नाश हो जाती है।

(७) तूतिया ३ माशे, पारा ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे, बन्दूककी बारूद १० माशे और घी ४० माशे सबको पीस और मिलाकर खुजली पर मलने और ३ घण्टे बाद बेसन मलकर गरम जलसे नहानेसे खुजली चली जाती है।

(८) सहँजनेकी जड़ कड़वे तेलमें डालकर आग पर जलाओ और तेलको छान कर मलो। इससे खुजली आराम हो जाती है।

(९) पीली हरतालका तेल दाद और खाजको नाश करता है। पीली हरताल एकभाग और मीठा तेल दो भाग ला रखो। पहले तेलको आग पर चढ़ा दो। जब तेल लाल हो जावे, उसमें थोड़ी-थोड़ी हरताल पीस कर डालो और लकड़ीके चिमटेसे हिलाते रहो। इस समय आगको मन्दी कर दो। जब तेलका रंग मोर जैसा हो जाय और उसमें आग लग जाय, डेगचीका मुँह बन्द कर दो, कि जिससे लगी हुई आग बुझ जावे। इस तरह पाँच बार आग लगने पर डेगचीको बन्द करो और खोलो। इसके बाद तेलको छान कर शीशीमे रख दो। इस तेलको खुजली पर लगाकर धूपमें बैठने और गरम पानीसे नहानेसे खुजली आराम हो जाती है।

(१०) कनेरकी बीस पत्तियां पाव-भर मीठे तेलमें जला कर, तेल मलनेसे तर और खुश्क दोनों खुजली नाश हो जाती हैं।

(११) जमीनमें पड़े हुए बडके सूखे पत्ते और सूखी ही थूहरकी लकडी तथा ख़शख़ाशके पोस्ते बराबर-बराबर लेकर आगमें जला लो। इनकी राखको कड़वे तेलमें मिलाकर मलने और थोडी देर धूपमें बैठ कर गरम जलसे नहानेसे खुजली नाश हो जाती है।

(१२) कलमी शोरा कड़वे तेलमें मिलाकर मलनेसे खुजली जाती रहती है।

(१३) महँदी और गुल रोगन सिरकेमें मिलाकर मलनेसे खुजली जाती रहती है।

(१४) साबुन पानीमें पीस कर शरीर पर लगाने और फिर नहानेसे खुजली जाती रहती है।

(१५) सुहागा, चमेलीका तेल, गुलाबके फूल और थोड़ासा कपूर—इनको नीबूके रसमें पीस कर शरीर पर मलनेसे खुजली चली जाती है।

(१६) छटाँक भर चमेलीके तेलमें एक तोला कपूर मिलाकर मालिश करनेसे सूखी खुजली चली जाती है।

(१६) हमारा "कृष्णविजय" तेल शरीर पर मलनेसे सूखी-गीली ख़ाज-खुजली, फोडे-फुन्सी, दाफड़-ददौरे आदि सारे खूनकी ख़राबीके रोग आराम हो जाते हैं। इससे आतशकके घाव और उसकी भयंकर सूजन भी आराम हो जाती है। "कपूरादि मरहम"के लगानेसे गीली खुजली, पकी हुई जलनेवाली फुन्सी, गरमीके घाव, मकड़ीका विष आदि सब तरहके घाव आराम होकर ठण्डक पड़ जाती है। तेलका दाम १) शीशी, मरहमका ॥) शीशी।

(१७) गन्धक ८ माशे, पारा २ माशे और भुना तूतिया २ माशे —इनको २१ बार धोये हुए गायके घीमे मिलाकर मलने और घण्टे भर बाद शीतल पानीसे नहानेसे खुजली चली जाती है।

(१६) अफीमको तिलीके तेलमें जलाकर मलनेसे खुजली आराम हो जाती है।

(२०) सिन्दूर, आमलासार गन्धक, मुर्दारसंग और तूतिया—सबको बीस-बीस माशे लेकर पीसे-छान लो। फिर पिसे-छने मसालेको चार तोले गायके घीमे मिलाकर मलनेसे खुजली आराम हो जाते हैं।

(२१) निवाये जलसे नित्य नहानेसे तर और खुश्क दोनों खुजली आराम हो जाती हैं।

(२१) सब्ज तूतिया १० माशे, आमलासार गन्धक १० माशे और कपूर १० माशे—इनको पीसकर, गायके १०० बार धुले हुए घीमें मिलाकर हर दिन मलने और एक घण्टे तक घाममें बैठकर नहानेसे खुजली आराम हो जाती है। यह नुसख़ा खुजली पर रामवाण और परीक्षित है।

नोट—नहानेसे पहले गायका गोवर मल लिया जावे तो और भी उत्तम हो। नहानेके बाद कपूर मिला हुआ असल चमेलीका तेल खूब मलनेसे बड़ा आराम मालूम होता और खुजली जल्दी आराम होती है।

(२२) तूतिया ४ माशे, आमलासार गन्धक ८ माशे, कपूर ८ माशे और खुरासानी अजवायन ८ माशे—सबको पीस-छानकर धुले हुए घीमें मिलाकर खुजलीपर मलने, घण्टेभर धूपमें बैठने और गायका ताजा गोवर मलकर नहाने तथा नहाने बाद "कपूर-मिला चमेलीका तेल" मलवानेसे भयंकर खुजली भी ३ दिनमें चली जाती हैं। परीक्षित है।

(२३) शुद्ध आमलासार गन्धक, शुद्ध पारा, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद जीरा, कालाज़ीरा, काली मिर्च, मैनसिल और सिन्दूर—हरेक ६।६ माशे और तूतिया २ माशे---इनमेंसे पारे और गंधकको पहले खरल करके कजली कर लो। फिर बाक़ी दवाएं पीस-छानकर उसी कज्जलीमें मिला दो और शीशीमें रख दो।

अगर एक कर फूटी और बिना फूटी हुई फुन्सियों पर दवा लगानी हो, तो अन्दाजसे लेकर १०० वार धोये हुए घीमें मिला लो और खुजलीकी जगह लेप कर दो। यदि सूखी खाज हो, तो इस दवाको सरसोंके तेलमें मिलाकर खूब मालिश कराओ। ३।४ घण्टे बाद गरम पानीसे नहा लो। अगर गीली खुजलीकी फुन्सियाँ कहीं-कहीं हों, तो नीमके काढ़ेसे उस जगहको धो-पोछकर, घीमें इस दवाको मिलाकर दिनमें चार छे वार गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दो। परीक्षित है।

(२४) नौसादर, सुहागा, शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासार गन्धक, कमीला, बावची, कालीमिर्च और कपूर—एक-एक तोले लो और नीला थोथा ३ माशे लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके कज्जली कर लो। फिर शेष दवाएँ पीस-छानकर उसमें मिलाओ। अब इस पिसी-छनी दवाको एक सौ आठ वार धोये हुए गायके घीमें मिलाकर मरहम बना लो। इस दवाको दिनमें दो वार लगाओ। फिर भैंसका गोबर मलकर नहा डालो। इस तरह तर और खुश्क दोनों तरहकी खुजली आराम हो जाती हैं। तीन चार दिन इस मरहमके लगाने और खारे-खट्टे चरपरे आदिसे परहेज करनेसे अवश्य लाभ होता है। सुपरीक्षित है।

(२५) काशगरी सफेदा ६ माशे, कपूर ६ माशे, सिन्दूर ६ माशे, कमीला ४ माशे और तूतिया भुना हुआ १ माशे—सबको पीस कर कपड़ेमें छान लो और छटाँक-भर घीमें मिला लो। इस मरहमको खुजली पर लगानेसे खुजली जाती रहती है। जब नहाना हो या दवा छुड़ानी हो, गरम पानी काममें लाओ। परीक्षित है।

(२६) नौसादर, नीला थोथा, गूगल और आमलासार गन्धक बराबर-बराबर लेकर नीबूके रसमें पीस लो। इसके लगानेसे गज-कर्ण, दाद और खुजली ये सब नाश हो जाते हैं।

नोट—खुश्क खुजलीमें केवल खुजली चलती है, पर तर खुजलीमें खुजानेसे पानीसा निकलता है। गजकर्ण रोगको "धधरी" भी कहते हैं। यह भी खुजलीसे पैदा होता है।
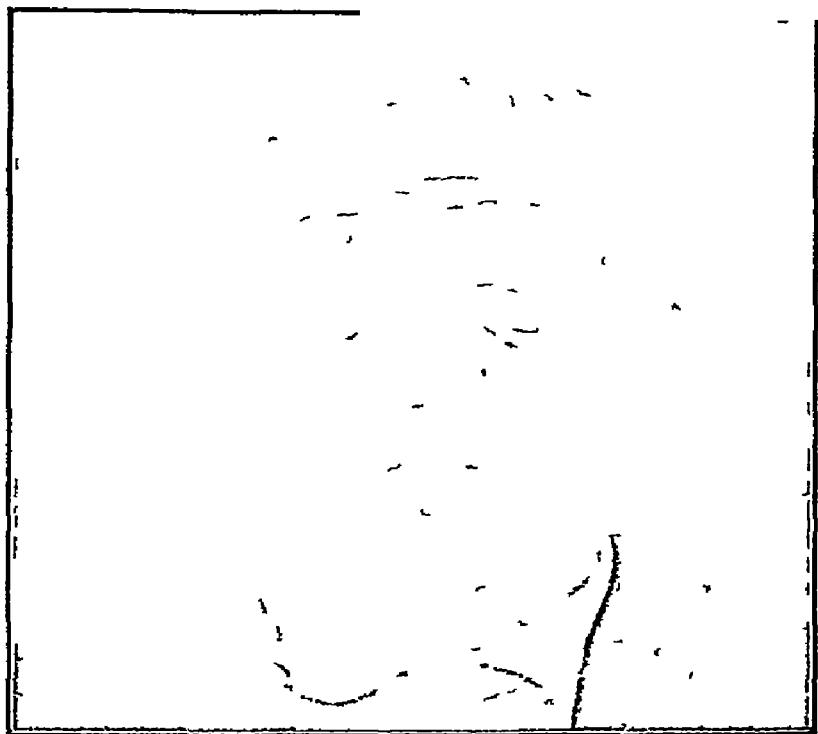
कोढ़ रोगी ।

यह कोढ़ बहुत करके कपाल, नाक और होठों पर होता है। इसमें चमडा बहुत ही कठोर और मोटा हो जाता है। दाने और गाँठें मिलकर कोढ का रूप धारण करती हैं। यह बरसों तक धीरे-धीरे बढ़ा करता है। इस में घाव नहीं होते और मवाद भी नहीं चूता।

पृष्ठ ६५१

कोढ़, दाद और खुजली प्रभृति पर

मिश्रित नुसखे ।

(१) काली हरड़ ४० माशे, चीता ४० माशे, कालीमिर्च २० माशे और शुद्ध बच्छनाग विष १० माशे—इन सबको कूट-छान कर गायके घीमे भून लो। फिर दवाके वज़नसे दूने "शहद"में मिलाकर माजून बना लो। मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक। इसके सेवन करनेसे कोढ़ नाश हो जाता है।

(२) हरतालका कुश्ता ४० दिन खानेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

नोट (१)—शुद्ध हरताल २० माशे, करंजुआ ४० माशे और फिटकरी ४० माशे तैयार करो। फिर एक शकोरेमें २० माशे करञ्जुएकी गिरी जौकुट करके बिछा दो। फिर उसपर २० माशे फिटकरी कूट कर बिछा दो। फिटकरी पर हरताल रख दो। हरतालके ऊपर पहलेकी बाकी करञ्जुएकी गिरी बिछा दो और उसके ऊपर फिटकरी बिछा दो। अब शकोरेपर दूसरा शकोरा रखकर और सात कपड़मिट्टी करके उसे सुखा लो। फिर शकोरोंको सात सेर जगली कण्डोंके बीचमें रखकर आग लगा दो। शीतल होने पर शकोरोंको निकाल कर खोलो और कुश्तेको शीशीमें रख दो। इसमेंसे एक, दो या चार चाँवल-भर कुश्ता पानमें रख कर खानेसे ४० या ५० दिनमें कोढ नाश हो जाता है।

नोट (२)—हमारे यहाँ रसमाणिक्य सेवन कराते हैं। यह भी हरतालसे तैयार होता और रगमें माणिककी तरह चमकता है। वर्कपत्र हरतालको "भतुवेके रस और खट्टे दही"की सात भावनाएं देकर, छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। फिर एक शकोरेमें हरतालको रख कर, ऊपरसे दूसरा शकोरा ढक दो। उन पर बेरके पत्तों और मिट्टोका लेप करके सुखा लो। फिर एक खाली हाँडी पर इन शकोरोंको रख कर, हाँडोको चल्हे पर चढ़ा दो और नीचेसे आग दो। जब हाँडी लाल-

सुर्ख हो जाय, उसे नीचे उतार लो। शकोरोंमेंसे माणिकके समान चमकदार रस निकलेगा। इस रसकी मात्रा २ रत्तीकी है। एक मात्रा नाबराबर "घी और शहद"में मिलाकर खानेसे कोढ़ और वातरक्त आदि नाश हो जाते हैं।

हरतालके कुश्तेकी और तरकीब—१० माशे हरतालको "अण्डे की सफेदी"में मिलाकर गोली बना लो। इस गोलीको एक शकोरेमें रखकर ऊपरसे दूसरा शकोरा ढक दो और कपड़मिट्टी करके सुखा लो। इसको १२ घन्टे तक कण्डोंमें पकानेसे उत्तम कुश्ता तैयार हो जाता है।

(३) पुराने नीमके फूल, पत्ते, छाल, फल और जड़ आध-आध सेर; कालीमिर्च, पीली हरड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमले और बावची पाव-पाव भर—इन सबको पीस-कूट कर छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक है। इसको "मंजीठके काढ़े"के साथ चार महीनेतक सेवन करने और नीमके नीचे सोनेसे कोढ़ निश्चय ही आराम हो जाता है। मांस, नोन और गरम चीजोंसे परहेज़ रखना ज़रूरी है।

(४) शुद्ध संखिया ४ माशे, कुन्दर २ तोले, रेवन्दचीनी १ तोले और बबूलका गोंद ८ माशे—इन सबको नीबूके रसमें खरल करो। फिर इसमें सात "बहेड़ेके पत्ते और ८माशे रससिन्दूर" मिला दो और घोटकर आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने और खटाईसे बचनेसे कोढ़ आराम हो जाता है। ग्रन्थकार इसे अपना आज़मूदा लिखता है। हमने नहीं आज़माया।

(५) चनेकी आध पाव भूसी सेर भर पानीमें रातको भिगो दो, और सवेरे ही मल-छानकर उनचास ४९ दिन तक पीओ। मांस या गुड़ शक्कर खाओ *। दूध, दही, चाँवल प्रभृति सफेद चीज़ोंसे परहेज करो। इस तरह करनेसे कोढ़ जाता रहेगा। अगर कुछ अंश बाक़ी रह जाय, तो इसे कुछ दिन और पीओ।

---

* कह नहीं सकते, हिकमतकी रूसे कोढ़में मांस वगैरः का खाना कहाँतक उचित है। आयुर्वेद में तो मांस कोढ़को पैदा करनेवाला माना गया है।

(६) नीमका मद शरीर पर मलनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(७) सरफोंकेका अर्क़ पीनेसे कोढ़ जाता रहता है।

(८) नीमके फूलोंका अर्क़ पीनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(९) विजयसारकी २० माशे लकड़ी कूटकर रातको पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मल-छानकर पीओ। ४० दिनमें कोढ़ आराम हो जायगा।

(१०) १० माशे मह्ँदीकी पत्तियाँ रातको पानीमें भिगोकर और सवेरे ही मल-छान और शकर मिलाकर ४० दिन पीनेसे कोढ़ चला जाता है।

(११) सिरसकी पत्तियाँ २० माशे और कालीमिर्च २ माशे—इन दोनोंको पानीमें पीसकर ४०दिनतक पीनेसे कोढ जाता रहता है।

(१२) वकुलकी छाल तीन तोले जौकुट करके पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मल छानकर पीओ। इससे कोढ़ चला जाता है।

(१३) नीमकी पत्तियोंका खार सेवन करनेसे कोढ़, दाद और खुजली चले जाते हैं।

(१४) कोढ़ उठते ही यानी शुरुमें, अफीम और पोस्ता खानेकी आदत डालनेसे कोढ़ रोग दवते देखा गया है।

(१५) झाऊकी जड़का काढ़ा पीनेसे कोढ़ अवश्य नाश हो जाता है। कहते हैं, इसमें लाल गन्धकके समान ताक़त है। साहब तज़किरे दाऊदी इस नुसख़ेको अपना आज़मूदा लिखते हैं।

(१६) नीमकी पत्ती १ तोले, काले तिल ६ माशे, लाहौरी नोन ६ माशे और पुराना गुड़ २ तोले मिलाकर रख लो। इसमेंसे वलावल अनुसार ६ माशेसे १॥ तोले तक खानेसे कोढ़ और सफेद दाग़ जाते रहते हैं।

(१७) कड़वे नीमके पत्तोंको पानीमें पीस-छान कर पीनेसे कोढ़ वमन और उबकी आना आराम होता है।

(१८) केतकीके पत्तोंका रस मलनेसे कण्डू-खुजली आराम

होती है ; पर इससे जलन होती है। अगर ज़ियादा जलन हो, तो गोबर लगाकर शीतल जलसे नहा डालो।

(१९) बिछवाकी जड़ तुलसीके पत्तोंके रसमें पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(२०) खैरके पञ्चाङ्गका काढ़ा स्नान, पीने, खाने, उबटने और लेपके काममें लानेसे कोढ़ आराम हो जाता है। कोढ़के ऊपर "कत्था" घिस कर लगाना चाहिये।

(२१) खैरकी छाल और आमलोंके काढ़ेमें "बावचीका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे सफेद कोढ़ आराम हो जाता है।

(२२) कसौंदीके पत्ते काँजीमें पीसकर केवल दाद पर लेप करनेसे अथवा कसौंदीकी जड़ घिस कर लगानेसे अथवा कसौंदी के पत्तोंका रस नीबूके रसमें मिलाकर लगानेसे दाद, कोढ़ और किटिभ कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(२३) कुड़ेकी छालका पुटपाक-विधिसे निकाला हुआ रस पीनेसे खुजली, क्षय और वातगुल्म आराम हो जाते हैं।

(२४) सूखी हुई बड़ी इन्द्रायण जलाकर काली राख कर लो। फिर उसे तेलमें मिलाकर लगाओ। इससे खुजली आराम हो जाती है।

(२५) कड़वी कवठके बीज "गोमूत्र"में पीसकर लगानेसे अथवा पुराने नीमकी लकड़ी पानीमें पीसकर लगानेसे अथवा कड़वे नीमके बीज पानीमें पीसकर लगानेसे अथवा कड़वे नीमके पत्ते पीसकर घी या आमलोंके साथ खाने और कालीमिर्च घीमें पीसकर शरीरपर लगानेसे अथवा कड़वे नीमकी अतर छालका काढ़ा पीनेसे खुजली, शीतपित्त, विस्फोट और रक्तपित्त नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२६) कड़वी कवठके बीजोंके तेलकी दस बूँद नित्य भोजनके बाद खाने और शरीर पर इसी तेलकी मालिश करनेसे ३ महीनेमें महाकुष्ठ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२७) आमलासार गंधक,रूमी शिंगरफ और सफेदा काशगरी— सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इसे गायके घीमें मिलाकर लगाओ। इससे दाद और खुजली आदि चमड़ेके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२८) तूतियेका कपड़ेमें छना हुआ चूर्ण एक रत्ती, माजूफल ३० रत्ती,मोम १॥ तोले और शहद १॥ तोले—इन सबको एकत्र करके मरहम बना लो। इस मरहमके लगानेसे पुराने-से-पुराना दाद आराम हो जाता है।

(२९) वायविडंग, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपरोंके चूर्ण-में एक या दो रत्ती"अभ्रक भस्म" मिलाकर खानेसे कोढ़,क्षय,पीलिया, संग्रहणी, शूल, श्वास, प्रमेह, खाँसी और मन्दाग्नि आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(३०) समन्दरफल या निर्गुण्डीके रसमें "वंग भस्म" खानेसे कोढ़ जाता रहता है। -

(३१) कपूर, सुहागा, गंधक और लोबानको "गुलाबजल"में घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लेप करनेसे चमड़ेके दोष नाश हो जाते हैं। खानेकी दवामें "गुलकन्द-गुलाब" खाना चाहिये और गुलाबके फूलोंका जुलाब लेना चाहिये। परीक्षित है।

(३२) बड़के पत्तोंकी राख "कड़वे तेल"में मिलाकर मलनेसे खुजली आराम हो जाती है।

(३३) नारियलका तेल पाँच तोले, कपूर ६ माशे और तूतिया १॥ माशे—इन सबको मिलाकर लगानेसे खुजली जाती रहती है। परीक्षित है।

(३४) राल, गन्धक, भुना हुआ सुहागा और फिटकरी पीसकर और घीमे मिलाकर लगानेसे पुराना दाद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३५) अरण्डोके बीजोंकी मींगीं पीसकर लगानेसे पैरोंकी बिवाई नाश हो जाती है।

(३६) कूट, मुलेठी, चन्दन और अरण्डके पत्तोंको दूधमें पीस कर लेप करनेसे दाद आराम हो जाता है।

(३७) नीमकी छाल और कड़वे परवलके पत्तोंका काढ़ा पीने और इसी काढ़ेसे नहानेसे कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३८) नीमकी छालका काढ़ा पीनेसे कोढ़में कीड़े पड गये हों, तो भी वह आराम हो जाता है।

नोट—नीमकी छालके काढ़ेकी मात्रा ५ तोलेसे ८ तोले तक है। पत्तोंके चूर्णकी मात्रा १ मासेसे ४ मासे तक है। पंचाङ्गके चूर्णकी मात्रा भी १ मासेसे ४ मासे तक है। पत्तोंके स्वरसकी मात्रा १ तोलेसे १॥ तोलेतक है। नीमकी छालके चूर्णकी मात्रा १ माशेसे ३ माशे तक है।

(३९) चीढ़की लकड़ीका पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकाल कर खुजलीके ऊपर दिनमें दो तीन बार लगानेसे खुजली जल्दी ही नाश हो जाती है। कोई परमानन्दजी वैश्य महोदय इसे अनेकों बारका अनुभूत कहते हैं।

(४०) आमलासार गन्धक १ तोला, जस्तका सफेदा १ तोला और मक्खन ७ तोला मिला-घोटकर लगानेसे खुजली जाती रहती है। परीक्षित है।

(४१) लोत्रिया गन्धक, सुहागा और पँवाड़के बीज—ये तीनों महीन पीसकर चूर्ण करलो। फिर इसमें चकवड़के ही रसकी भावना देकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। एक गोलीको नीबूके रसमें घोटकर दाद पर लगाओ और दो घण्टे धूपमें बैठकर ताप लगाओ। एक दिनका अन्तर देकर दवा लगानेसे ३ दिनमें दाद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

खोपड़ीका दाद।

(४२) मरक्यूरिक क्लोराइड २ ग्रेन और टिंकचर आयोडाईन

१ औंस दोनोंको मिलाकर, दिनमें दो बार, दाद पर चुपड़ो। दाद मिटनेके बाद भी, जिंक आँकसाईड़का मरहम या बारीक एसिडका मरहम (5 percent) लगाते रहो। टिंक्चर आयोडाइनसे चमड़ी लाल हो गई हो,तो लालिमा मिटने तक उक्त मरहम लगानी चाहिये।

(४३) गंधक १ तोला, सिन्दूर १ तोला, चौकिया सुहागा १ तोला और मुरदाशंख ३ माशे---इन सबको बारीक पीसकर, कपड़ेमें छानकर और धुले हुए घी या नौनी घीमें खूब मिलाकर मालिश करनेसे सूखी या गीली खुजली आराम हो जाती है।

(४४) फिटकरीकी भस्म ६ माशे लेकर, १ छटाँक तेलमें मिला लो। फिर उस तेलमें एक कपड़ा भिगोकर उसकी मोटी बत्ती बना लो। लोहेकी शलाकामें इस बत्तीको बाँधकर जलाओ। जलते समय इस बत्तीमेंसे जो तेल टपके उसको एक पात्रमें ग्रहण करते जाओ। जब तेलकी कुछ बूँदें इकट्ठी हो जायँ, तब उन्हें फिर इसी बत्ती पर डालते जाओ। तेलका गिरना बन्द हो जानेपर, जली हुई बत्तीको पीसकर और उसमें ४ माशे "तूतियेकी भस्म" मिलाकर तिलके तेलके साथ शरीर पर मालिश करनेसे सब प्रकारकी खुजली दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(४५) मोम, राल, गूगल, पुराना गुड और सैंधानमक—ये सब समान भाग और गायका घी सब औषधियोंसे दूना भाग, सबकी एकत्र मलहम बनाकर लगानेसे बिवाई या हाथ-पाँवका फटना आराम हो जाता है।

(४६) पमारके बीज दो तोला, कत्था दो तोला,सरसों दो तोला, बावची २ तोला, हल्दी १ तोला और आमलासार गन्धक १ तोला, इन सबको एकत्र नीबूके रसमें खरल करके दादके ऊपर लगानेसे पुराना दाद भी आराम हो जाता है।

(४७) हरताल तपकी, सम्बुल फ़ार सफेद, शुद्ध पारा, पीपलके पेडकी छाल हरेक एक तोला और मदारका दूध पाँच तोला तथा

काला साँप एक नग तैयार करो। साँपको छोडकर बाक़ी दवाओंको खरल करके जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। फिर साँपका पेट चीरकर उसमें इन गोलियोंको भर दो। फिर उस साँपको शकोरेमें रखकर ऊपरसे दूसरा शकोरा ढक कर, कपड़मिट्टी कर दो। इसको दो मन कण्डोंकी आगमें पकाओ पर आग मह फूज जागहमें हो। जब स्वांग शीतल हो जाय, दवाको निकाल कर रख लो। इसकी मात्रा १ चाँवल-भरकी है। इसको "गायके घी"में मिलाकर खानेसे फालिज, पक्षाघात, कोढ़ या जुज़ाम और आतशक,—उपदंश वग़ैरः रोग आराम हो जाते हैं। खानेको गेहूँकी रोटी या चनेकी रोटी बेनमककी देनी चाहिये।

(४८) एक छिपकली लेकर नित्य बकरीके गोश्त या खिचड़ीमें पकाओ और उसे निकालर फैंक दो। फिर वही गोश्त या खिचड़ी मरीजको खिलाओ। इसी तरह नित्य २१ दिनतक खिचड़ी या गोश्त पका-पकाकर खिलाते रहो; पर मरीज़को इसकी खबर न हो। इससे सफेद दाग और कंठमाला ये दोनों रोग आराम हो जाते हैं। कोढ़ या सफेद दाग़का तो यह शर्त्तिया इलाज है।

(४९) नीलाथोथा, सम्बुल फ़ार, सफेद, सुहागा, जरे नेख़— हरताल हरेक ६ माशे, तुख्म मूली---मूलीके बीज १ तोले और बावची १ तोले—इनको काग़ज़ी नीबूके अर्क़में दो दिन तक खरल करो और गोलियाँ बना लो। इनको हर दिन नीबूके अर्क या तेज़ सिर-केमें घिसकर सफेद दाग़ोंपर लगाओ। इससे बहुत जल्द कोढ़ आराम हो जाता है। मुजर्रिबुल मुजर्रिब है यानी सुपरीक्षित है।

शीतपित्त, उदर्द, कोठ और उत्कोठ।

निदान और सम्प्राप्ति।

शीतल हवाके लगनेसे बढ़े हुए कफ और वायु अपने कारणोंसे दूषित हुए पित्तके साथ मिलकर चमड़े और खून आदिमें फैलते हैं, उससे "शीतपित्त" आदि रोग होते हैं।

नोट—ठण्डी हवा लगनेसे, मच्छर काटनेके समान, शरीरमें लाल लाल चकत्ते पड़ जाते हैं, उनमें खुजली चलती है, उन्हें ही "शीतपित्त" और बोलचालमें "पित्ती उछलना" कहते हैं।

पूर्वरूप।

प्यास, अरुचि, उबकाई, शरीरमें ग्लानि, अंगोंमें भारीपन और नेत्रोंमें लाली ये शीतपित्त आदिके पूर्वरूप हैं।

शीतपित्तके लक्षण।

ततैयाके काटनेके समान, खुजली और बहुत पीडायुक्त, वमन, ज्वर और दाह सहित चमड़ेमें जो चकत्तेसे हो जाते हैं, उन्हें "शीत-पित्त" कहते हैं। इस रोगमें "वायु"की अत्यन्त अधिकता रहती है।

उदर्दके लक्षण।

बीचमेंसे नीचे, ललाई लिये, खुजली सहित जो चकत्ते शिशिर ऋतुमें होते हैं, उन्हें "उदर्द" कहते हैं। उदर्दमें "कफ"की अधिकता होती है।

कोठ और उत्कोठके लक्षण।

खुलकर कय न होने, पित्त और कफके बढ़ने और उछलकर

ऊपर आये हुए अन्नके रुकनेसे खुजली और लाली युक्त जो बहुतसे चकत्ते होते हैं, उन्हें "कोठ" कहते हैं। एक चकत्ता नष्ट होकर दूसरा चकत्ता उठता है, उसे "उत्कोठ" कहते हैं।

चिकित्सा ।

नोट—शीतपित्त होनेसे जुलाब लेना, कय करना, गर्मागर्म सरसोंका तेल मलवाना और गरम जलसे नहाना सुखदायी है। इस रोगमें दस्त साफ रखना परमावश्यक है।

अगर "कोठ" हो जाय, तो पहले स्नेहन और स्वेदन क्रिया करके जुलाब वगैर से शरीर साफ करना चाहिये। अगर "उत्कोठ" पैदा हो, तो विरेचन आदिसे शरीर शुद्ध करके कोढ़की तरह इलाज करना चाहिये। कोठ रोगमें—कुष्ठ रोग और अम्लपित्तमें लिखी हुई चिकित्सा लाभदायक है।

(१) कड़वे परवलके पत्ते, नीमकी छाल और अड़ूसेकी छाल—इनका काढ़ा पिलाकर वमन कराने और हरड़, बहेड़ा, आमला, शुद्ध गूगल और पीपर बराबर-बराबर लेकर और कूट पीसकर, छै-छै माशेकी मात्रामें खिलाकर विरेचन करानेसे शीतपित्तमें लाभ होता है।

(२) सरसोंके तेलकी मालिश करने और गरम जलसे नहानेसे शीतपित्त नाश हो जाता है।

(३) "शहद"में मिलाकर त्रिफला खानेसे शीतपित्त नाश हो जाता है।

(४) त्रिफला ३ भाग, शुद्ध गूगल ५ भाग और पीपर १ भाग —इनको मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "नवकार्षिक गूगल" कहते हैं। इनसे शीतपित्त, भगन्दर और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं।

(५) पुराने गुड़में मिलाकर "अदरखका रस" पीनेसे शीतपित्त जाता रहता और मन्दाग्नि आराम हो जाती है।

(६) दो तोले गायके घीमें १॥ माशे कालीमिर्चोंका चूर्ण मिलाकर नित्य सवेरे ही खानेसे शीतपित्त आराम हो जाता है।

(७) दूब और हल्दी एकत्र पीस कर लेप करनेसे शीतपित्त आराम हो जाता है।

(८) सफेद सरसों, हल्दी, चकवड़के बीज और काले तिल—एकत्र मिलाकर पीस लो और फिर सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करो। इससे शीतपित्त आराम हो जाता है।

(९) सोंठ, मिर्च और पीपरके साथ बराबरकी "मिश्री" खानेसे अथवा एक तोले गुड़के साथ एक तोले "आमलोंका चूर्ण" खानेसे अथवा सोंठ, मिर्च, पीपर और जवाखारके साथ "अजवायन" खानेसे शीतपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) गुड़के साथ अजवायन खाने और पथ्य भोजन करनेसे सारे शरीरमें फैला हुआ उदर्द आराम हो जाता है।

(११) महातिक्त नामक घी पीकर खून निकलवानेसे भी उदर्द आराम हो जाता है।

(१२) नीमके पत्ते और आमले एकत्र पीस कर और घीमें मिलाकर नित्य खानेसे विस्फोटक, खुजली, कृमि, शीतपित्त, उदर्द, कोढ़ और कफ ये रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) चिरौंजी और गेरू कड़वे तेलमें पीस कर मलनेसे पित्ती शान्त हो जाती है।

(१४) अजवायन और गेरूको सिरकेमें पीस कर लगानेसे पित्ती दूर हो जाती है।

(१५) घीमें सैंधानोन मिलाकर मालिश करनेसे शीतपित्त या पित्ती आराम हो जाती है।

(१६) रास्ना, देवदारू, त्रिफला, असगन्ध, शतावर, अजवायन और हींग—इनको एकत्र मिलाकर खानेसे उदर्द रोग जाता रहता है।

(१७) कुम्भेरके फल दूधमें पकाकर सेवन करने और हितकारी भोजन करनेसे कोढ़, दाद और शीतपित्तादि नष्ट हो जाते हैं।

(१८) कूट, हल्दी, तुलसी, परवलके पत्ते, नीमकी छाल, अस-

गन्ध, देवदारू, सरसों, तुम्बरू, धनिया और वच—ये सब बराबर-बराबर लेकर और बारीक पीसकर छान लो। पहले शरीरमें तेलकी मालिश करो। इसके बाद ऊपर का चूर्ण "माठेमें मिलाकर" शरीर पर मलो। इससे कण्डू, पिटिका, शोप, कोढ़ और शोथ रोग नाश हो जाते हैं।

आद्र क खण्ड।

अदरख ६४ तोले, गायका घी ३२ तोले, गायका दूध १२८ तोले और चीनी ६४ तोले लेकर रखो। पीपर, पीपरामूल, कालीमिर्च, सोंठ, चीता, वायविड़ंग, नागरमोथा, नागकेशर, दालचीनी, इलायची, तेजपात और कचूर—हरेक चार-चार तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर लुगदी कर लो।

अब सबको मिलाकर मन्दाग्निसे विधि-पूर्वक पकालो। यही "आद्र क खण्ड" है। इसकी मात्रा १ तोलेसे ४ तोले तक है। इसके खानेसे रक्तपित्त, श्वास, खाँसी, वातरक्त, गुल्म, उदावर्त्त, सूजन, दाद, खाज, पित्ती, कृमि और मन्दाग्नि आदि नाश होकर शरीरका बल बढ़ता, भूख लगती और बदन तयार होता है।

हरिद्राखण्ड।

हल्दी आठ तोले, घी ६ तोले, गायका दूध ४ सेर और चीनी १॥ सेर—इन सबको मिलाकर पकाओ। जब पाक हो जाय, नीचे उतार कर उसमें त्रिकुटा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, वायविड़ंग, निशोथ, त्रिफला, नागकेशर नागरमोथा और लोहाभस्म—इनका एक-एक तोले पिसा-छना चूर्ण मिला दो। इसकी मात्रा ६ माशे से दो तोले तक है। अनुपान गरम दूध है। इससे शीतपित्त, उदर्द, कोढ और पीलिया वग़ैरः नाश हो जाते हैं।

विसर्पका निदान।

खारी, खट्टे, तीखे और गरम आदि पदार्थोंके सेवन करनेसे दूषित हुए दोष—खून, मांस, चमड़ा, लसीका और धातुओंको दूषित करके, भयङ्कर विसर्प-रोग उत्पन्न करते हैं।

खुलासा—इस रोगमें ज्वरके साथ अनेक तरहकी फुन्सियाँ होती हैं, जिनमें पीड़ा, दाह, खुजली और चेप निकलता है और वे सारे शरीरमें शीघ्र ही फैल जाती हैं।

विसर्प नामका कारण।

यह रोग शरीरमें चारों ओर फैलता है, इस लिए इसे "विसर्प" कहते हैं।

विसर्पकी संख्या।

विसर्प रोग सात तरहका होता है :—

(१) वातज। (२) पित्तज। (३) कफज।
(४) वातपित्तज। (५) पित्तकफज। (६) वातकफज।
(७) सन्निपातज।

विसर्पके लक्षण ।

वातज विसर्पमें वातज्वरके सब लक्षण होकर सूजन उत्पन्न होती है ।

पित्तज विसपकी सूजन तत्काल फैल जाती है। इसमें पित्तज्वर-के सब लक्षण मिलते हैं और यह अत्यन्त लाल होती है ।

कफज विसर्पमें खुजली और चिकनाई सहित सूजन होती है तथा कफज्वरके समान पीड़ा होती है ।

सन्निपातज विसर्पमें ऊपर लिखे तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं ।

वातपित्तज आग्नेय विसर्प—इस विसर्पमें ज्वर, वमन, मूर्च्छा, अतिसार, प्यास, भ्रम, हड़फूटन, अग्निकी मन्दता, अँधेरा दीखना, और अरुचि ये लक्षण होते हैं तथा शरीर दहकते हुए अंगारोंके समान व्याप्त होता है। यह विसर्प शरीरके जिस-जिस भागमें फैलता है, वही-वही प्रदेश नीला या लाल अथवा बुझे हुए अंगारोंके समान हो जाता है। आगसे फूँकनेके समान फफोले हो जाते हैं। यह विसर्प शीघ्रगति वाला है और यह तत्काल हृदय और उदरमें गति करता है ; इस कारण इसे "वायुकी प्रबलता वाला" कहते हैं। यह विसर्प अंगको व्यथित करता, संज्ञाको नष्ट करता, निद्राकी प्रेरणा करता, श्वास और हिचकीको बढ़ाता है। इस हालत में मनुष्यको सोते-बैठते-लेटते किसी तरह चैन नहीं पड़ता। वह दिन-रात तड़पता है। मन और शरीरको क्लेश होनेसे उसे दुर्बोध नींद आती है और उसी नींद-से वह मर जाता है। इसे "आग्नेय विसर्प" कहते हैं ।

वातकफज ग्रन्थि विसर्प—इस विसर्पमें लम्बी, गोल, मोटी, लाल और खरदरी गाँठोंकी क़तार या माला पैदा होती है। इन गाँठोंके होनेसे तीव्र वेदना, ज्वर, श्वास, खाँसी, अतिसार, शोष, हिचकी, वमन, भ्रम, मोह, विवर्णता, मूर्च्छा, अंग टूटना और जठराग्निकी मन्दता होती है। यह विसर्प वात और कफके प्रकोपसे होता है ।

कफपित्तज कर्दमक विसर्प—इस विसर्पमें मांस कीचड़के समान होकर गलने लगता है ; इसीसे इसे "कर्दमक विसर्प" कहते हैं। इसके होनेसे ज्वर, जड़ता, निद्रा, तन्द्रा, सिर दर्द, हाथ-पाँव इधर उधर पटकना, हडन-फूटन, मन्दाग्नि और आम सहित दस्त आना वग़ैरः उपद्रव होते हैं। यह पीली, लोहित या पाण्डुवर्ण पिड़िकासे व्याप्त, चिकना, काला या रूखा, मलिन, शोथयुक्त, अतिशय उष्णस्पर्श, क्लिन्न, विदीर्ण, कीचकी तरह काले रंगका और मुर्देकी तरह बदबूदार होता है। फिर क्रमशः मांस गलकर गिर जानेसे शिरा और स्नायु दिखाई देते हैं तथा साथ ही ऊपर लिखे ज्वर आदि उपद्रव होते हैं।

क्षतज विसर्प—इसमें हथियार, नाख़ून और दाँत वग़ैरःसे किसी जगह घाव हो जानेसे कुल्थीकी तरह काली या लाल रंगकी फुड़िया पैदा होते देखी गई है। यह भी एक तरहका पित्तज विसर्प है।

विसर्पके उपद्रव ।

ज्वर, अतिसार, वमि, क्लान्ति, अरुचि, अपरिपाक और चमड़े तथा मांसका विदीर्ण होना—ये सब विसर्पके उपद्रव हैं।

साध्यासाध्य ।

वातज, पित्तज और कफज विसर्प साध्य हैं ; किन्तु मर्मस्थानोंमें होनेसे यह कष्ट साध्य हो जाता है। त्रिदोषज, क्षतज और वात-पित्तज—आग्नेय विसर्प असाध्य हैं।
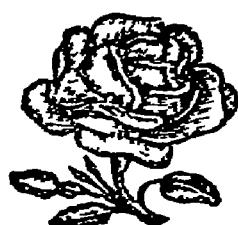
विसर्प-चिकित्सा।

नोट—सब तरहके विसर्पोंमें लंघन, फस्त, विरेचन, वमन, लेप और सेचन—इन उपचारोंसे चिकित्सा करनी चाहिये। कफाधिक्य होनेमें वमन और पित्तकी अधिकता होनेसे विरेचन देना चाहिये। परवलके पत्ते, नीम और इन्द्रजौ—इनके काढ़ेसे अथवा पीपल, मैनफल और इन्द्रजौके काढ़ेसे वमन करानी चाहिये। जुलाबके लिए त्रिफलाके काढ़ेमें २ माशे घी और ४ माशे निशोथका चूर्ण मिलाकर देना चाहिये। इससे ज्वर भी शान्त हो जाता है।

(१) वातज विसर्पमें रास्ना, नील कमल, देवदारु, लाल चन्दन, वच और मुलहटी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और घीमें पीसकर लेप करना चाहिये।

नोट—कोई मुलहटीकी जगह "वरियारा" लिखते हैं और घी-दूधमें पीसकर लेप करनेको कहते हैं।

(२) वातज विसर्पमें---गोबर, गोमूत्र और दूधको गरम करके लेप करनेसे लाभ हो जाता है।

(३) पित्तज विसर्पमें---मँजीठ, पद्माख, खसकी जड़, बड़, प्लक्ष, चन्दन मुलहटी और नील कमल---इनको दूधमें पीसकर लेप करना चाहिये।

(४) पित्तज विसर्पमें---सिरस, जटामांसी, नेत्रवाला, कूट, मुलहटी, हल्दी, दारुहल्दी, इलायची, तगर और चन्दन,---इन दस दवाओंको घीमें महीन पीसकर लेप करना चाहिये। इस लेपसे विसर्प, सूजन, दाह, ज्वर और कोढ़ ये रोग नाश होते हैं।

(५) कफज विसर्पमें---समंगा, त्रिफला, नेत्रवाला, खस, कनेरकी जड़ और अनन्तमूलका लेप करना चाहिये।

(६) कफज विसर्पमें---हरड, बहेड़ा, आमला, पद्माख, खस, लजवन्ती, कनेरकी जड़, नरसलकी जड़ और लाल जवासा---इन सबका लेप लाभदायक है।

(७) पित्तज विसर्पमें---कसेरु, सिंघाड़े, पद्माख, गुन्द्रवटेर, सिवार, कमल और कीच इनको पीसकर, घीमें मिलाकर, कपड़ेमें रखकर शीतल लेप करनेसे पित्तकी विसर्प नष्ट हो जाती है।

(८) आग्नेय नामक विसर्प—इस विसर्पमें वात और पित्तको शान्त करना चाहिये।

(९) ग्रन्थि नामक विसर्प—इस विसर्पमें वात और कफको शान्त करना उचित है।

(१०) कर्दमक नामक विसर्प—इस विसर्पमें पित्त और कफको शान्त करना चाहिये।

(११) सान्निपातिक विसर्प—इस विसर्पमें तीनों दोषोंको शान्त करना चाहिये।

सिरसकी छाल, मुलेठी, तगर, लाल चन्दन, इलायची, बालछड़, हल्दी, दारुहल्दी, कूट और सुगन्धवाला--इन दशोंको पीस कर और "घी"में मिलाकर लेप करनेसे विसर्प, कोढ़, ज्वर और सूजन ये सब रोग नाश हो जाते हैं। इसे "दशाङ्ग लेप" कहते हैं।

(१३) पञ्चवल्कलोंका अथवा चन्दनका अथवा पद्माख, खस और मुलेठी—इनका जल सींचनेसे और इन्हींका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे विसर्प नाश हो जाती है।

(१४) गायका मक्खन १०८ बार धोकर उसमें शुद्ध आमलासार गन्धक १ तोले, फिटकरी १ तोले और रसकपूर ६ माशे मिलाकर लगानेसे विसर्प आराम हो जाता है। विसर्प पर यह मरहम उत्तम और परीक्षित है।

अमृतादि क्वाथ।

गिलोय, अडूसेके पत्ते, परवल, नीमकी छाल, त्रिफला, खैरसार

और अमलताशका गूदा—इनको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा करो। फिर काढ़ेमें काढ़ेसे चौथाई ६ माशे "शुद्ध गूगल" मिलाकर पीओ। इससे विष, विसर्प और अठारह प्रकारके कोढ़ नाश हो जाते हैं; बशर्त्तेकि धीरजके साथ, आराम न हो जाने तक, लगातार यह काढ़ा पिया जाय। इसे "नवकषाय गुग्गुल" भी कहते हैं।

भूनिम्बादि कषाय।

चिरायता, अड़ूसा, कुटकी, परवल, त्रिफला, नीम और चन्दन—इन सातोंको समान-समान लेकर काढ़ा करो। इस काढेसे विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, खुजली, विस्फोटक, प्यास और वमन—ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

करञ्ज तैल।

डहर करंज, सतौना, कलिहारी, थूहरका दूध, आकका दूध, चीता, भाँगरा, हल्दी और वत्सनाभ विष—इनको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र और लुगदीको आग पर चढ़ाकर तेल पका लो। इस तेलकी मालिशसे विसर्प, विस्फोट और विचर्चिका रोग नष्ट हो जाते हैं।

अमृतादि कषाय।

गिलोय, अड़ूसेकी जड़की छाल, परवलके पत्ते, नागरमोथा, छितवनकी छाल (सतौना), खदिरकाष्ठ, कालेबैंतकी जड़, नीमका पत्ता, हल्दी और दारुहल्दी—इन दशों दवाओंका काढ़ा पीनेसे विसर्प, विषदोष, कोढ़, विस्फोट, कण्डू और मसूरिका रोग आराम हो जाते हैं।

पञ्चतिक्तक घृत।

परवलके पत्ते, छितवनकी छाल—सतौना, नीमकी छाल, अड़ूसेकी छाल और गिलोय—इन पाँचोंको मिलाकर एक सेर

लो और सोलह सेर पानीमें पकाओ ; जब चार सेर पानी रह जाय छान लो।

फिर त्रिफलेको सिल पर पीस कर पाव-भर कल्क या लुगदी तैयार कर लो। एक सेर घी, इस लुगदी और काढ़ेको मिलाकर पकाओ ; जब घी मात्र रह जाय, छान लो। इसमेंसे छे-छे माशे घी सेवन करनेसे विसर्प, विस्फोट और कण्डू प्रभृति रोग जाते रहते हैं।

विसर्पान्तक तैल।

अरण्डकी जड़, कड़वी तूम्बी, नीम, बावची, चक्रमर्द, कड़वी तोरईके बीज, अंकोल और अरण्डके बीज---इन सबको महीन पीसकर, गोमूत्र, दही, दूध, तिलका तेल और बकरीका मूत्र---इनकी अलग-अलग भावना दो। फिर पाताल यन्त्रसे तेल निकाल लो। यह तेल विसर्प और सफेद कोढ़को आराम करनेमें रामबाण है।

निदान—कारण ।

हाथ-पाँव आदि शाखाओंमें कोपको प्राप्त हुआ दोष विसर्पकी समान सूजन उत्पन्न करता है। फिर वह सूजन फूट कर घाव हो जाता है। उस घावमें कुपित हुए दोष मांसको सुखाकर, सूतके तारके समान "स्नायु" पैदा करते हैं, तब वह सूतके तारके समान पदार्थ धीरे-धीरे बाहर निकलता है। इसीको "स्नायुक" या "नहरुआ" कहते हैं।

ख़राब-जल पीने और ख़राब अन्न खानेसे वायु बिगड़कर, पैरोंमें फफोला फोड़ कर, उसके भीतर डोरा या तागा पैदा कर देता है। अगर दवासे वह धागा बाहर निकल आता है तब तो आराम हो जाता है; अगर टूट जाता है, तो मनुष्यको उस जगहसे लगड़ा कर देता है। यह रोग मारवाड़ और मध्यप्रदेशके कई ज़िलोंमें बहुत होता है।

भाव प्रकाशादिमें लिखा है, कि यह नहरुआ बिना पके ही यदि आधा टूट जाता है, तो बड़ा दुःख देता है। इसलिये इसे पकाकर बाहर निकालना चाहिये। इसके बाहर निकलकर गिर पड़नेसे सूजन शान्त हो जाती है। अगर यह थोड़ा भी बाक़ी रह जाता है, तो दूसरे स्थान पर फूट निकलता है।

इस रोगको "बाला" भी कहते हैं। इसकी चिकित्सा बिसर्पके समान करनी चाहिये। देश, काल, दोष और बलके अनुसार स्नेह स्वेद और लेप आदि करना उचित है।

हिकमतकी पुस्तकोंमें लिखा है, कि नारू होनेपर शरीरको मलसे साफ रखना चाहिये, नारूके गिर्द जोंकें लगवानी चाहियें और तेल औटाकर उस पर तरड़े देने चाहियें, ताकि वह सहजमें निकल आवे। उसका टूटना ख़राब है।

नहरुआ नाशक नुसखे।

(१) हींगको पीसकर शीतल जलके साथ पीनेसे स्नायु रोग शान्त हो जाता है।

(२) मेंडकको काँजीमें पकाकर उसका स्वेद या बफारा देनेसे नहरुएकी पीड़ा शान्त हो जाती है। मेंडकको काँजीमें पकाकर बाँधते भी हैं। परीक्षित है।

(३) बबूलके बीज पीसकर लेप करनेसे नहरुआ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) गायका घी पीनेसे नहरुआ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) निर्गुण्डीका रस तीन दिन तक पीनेसे नहरुआ आराम हो जाता है।

नोट—पहले तीन दिन घी पीकर फिर तीन दिन तक निर्गुण्डीका रस पीनेसे स्नायुकी घोर पीड़ा भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(६) कलौंजीकी जड़को शीतल जलमें पीसकर पीनेसे नहरुआ अवश्य नष्ट हो जाता है।

(७) असगन्धकी लुगदी या काढ़े अथवा दोनोंके साथ घी पकाकर पीनेसे व्रण सहित उग्र नहरुआ आराम हो जाता है।

(८) अतीस, नागर मोथा, भारंगी, सोंठ, पीपर और बहेड़ा इनका चूर्ण गुनगुने पानीके साथ पीनेसे नहरुआ शीघ्र ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(९) धतूरेका पत्ता बांधनेसे नहरुआ शीघ्र ही बाहर निकल आता है।

(१०) मरे हुए घोड़ेकी दाढ़ पानीमें घिस कर लेप करनेसे नरुएकी पीड़ा फौरन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(११) धतूरेके पत्ते पर घी चुपड कर और गरम करके बाँधनेसे नहरुआ अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) खिरेंटीके पत्ते सिल पर पीस कर उनकी लुगदी बाँधनेसे नहरुआ नष्ट हो जाता है।

(१३) सहँजनेकी जड़ और पत्ते—सैंधेनोनके साथ काँजीमें पीसकर लगानेसे नहरुआ अवश्य नष्ट हो जाता है।

(१४) हींसकी जड़ जलमें पीसकर लेप करनेसे नहरुआ निकल जाता है, इसमें संशय नहीं।

(१५) अरण्डकी जड़का रस गायके घीमें मिलाकर पीनेसे नहरुआ नष्ट हो जाता है।

(१६) बालछडकी जड़ पानीके साथ पत्थर पर घिस कर लेप करनेसे नहरुएका डोरा बाहर निकल आता है;

(१७) कबूतरकी बीट दो चाँवल-भर गुड़में मिलाकर खानेसे नहरुआ बाहर निकल आता है।

(१८) बकायनके ७ दाने रोज़ निगल जानेसे नहरुआ बाहर निकल आता है।

(१९) चौलाईकी जड़ पीसकर बाँधनेसे नहरुआ जल्दी आराम हो जाता है।

(२०) पहले दिन १ माशे, दूसरे दिन २ माशे, तीसरे दिन ३ माशे—इस तरह बढ़ा-बढ़ाकर सात दिन तक पलुआ खाने और पलुए का ही लेप करनेसे नहरुआ नष्ट हो जाता है।

नारू नाशक हकीमी नुसखे।

(२१) नारु और सूजन पर गुनगुना तेल मलकर, मदारके पत्तोंसे सेको और फिर गुनगुने पत्ते बाँध दो; अवश्य नारु आराम हो जायगा।

(२२) सफेद विसखपरेकी जड़को विसखपरेके पत्तोंके रसमें पोसकर नारु पर बाँधो; नारु नष्ट हो जायगा।

नोट—कोई कोई इसमें ज़रासी सोंठ भी मिलाते हैं।

(२३) जमालगोटा पानीमें पीसकर लेप करनेसे नारु आराम हो जाता है।

(२४) कलौंजी दहीमें पकाकर लेप करनेसे नारु नष्ट हो जाता है।

(२५) सूखा केंचुआ खानेसे नारु शीघ्र ही सूख जाता है।

(२६) १० माशे सुहागा गुल रौग़नमें पीसकर खाने और चिकना भोजन करनेसे नारु नाश हो जाता है।

(२७) प्याज़की एक गाँठ, लहसनकी एक गाँठ, थोड़ा साबुन, एक भिलावा और १० माशे राई—इनको कूट-छानकर टिकिया बना लो और २४ घण्टे इसे नारू पर बाँधो। इस तरह करनेसे ३ दिनमें तागा निकल आवेगा।

(२८) राल २० माशे साबुन ४ माशे, और अफीम १० माशे—इनको कूट-पीसकर सात तोले तिलीके तेलमे पकाकर, मरहमकी तरह पान पर लगाकर, बाँधने और सवेरे-शाम मरहम बदल देनेसे तीन दिनमें नारु नष्ट हो जाता है।

(२९) पलुआ खाने और लगानेसे नहरुआ नाश हो जाता है।

(३०) हरताल और नागरमोथा, घिसकर लगानेसे नहरुआ दूर होता है ।

(३१) कबूतरकी बीट और गुड़ दोनोको मिलाकर लगानेसे नहरुआ नाश हो जाता है ।

(३२) कड़वे नीमके पत्ते पीसकर लेप करनेसे नहरु नाश हो जाता है ।

(३३) कचनारकी छालका कल्क या लुगदी लगानेसे कफज नहरुआ नाश हो जाता है ।

कासगजकेसरी वटी ।

ये गोलियाँ तर व खुश्क यानी सूखी और गीली दोनों प्रकार की खाँसियोमें रामबाण का काम करती हैं। एक दिन-रात सेवन करने से ही भयंकर खाँसीमें लाभ नजर आने लगता है। इनके चूसनेसे मुँह के छाले भी आराम हो जाते हैं। १०० गोली की शीशी का दाम ॥≠)

शीतज्वरान्तक गोलियाँ ।

ये गोलियाँ बहुत तेज़ हैं। इनके २।३ पारी सेवन करनेसे सब तरहके शीतपूर्व्वक ज्वर यानी पहिले ठण्ड लग कर आने वाले बुखार निस्सन्देह उड़ जाते हैं। रोज़-रोज आनेवाले, दिनमें दो बार चढने उतरने वाले, इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि कष्टसाध्य ज्वरोंको अक्सर हमने इन्हीं "शीतज्वरान्तक गोलियों"से एक ही दो पारीमें उड़ा दिया है। सिये तापों या जूड़ी ज्वरो पर यह गोलियाँ कुनैन से हज़ार दरजे अच्छी हैं। दाम ४० गोलीकी शी० का १)

विस्फोटक-वर्णन।

(ज्वरमें फोड़े)

छत्तीसवाँ अध्याय

विस्फोटकके निदान-कारण ।

चरपरे, खट्टे, गरम, दाहकारक, रूखे और खारी पदार्थोंसे, अजीर्णसे, धूप सेवन करनेसे, ऋतुओंके फेरफारसे और उन ऋतुओं में आहार विहारकी विपरीततासे चमड़ेमें कुपित हुए वातादि दोष— रुधिर, मांस और हड्डियोंको दूषित करके—ज्वर सहित भयङ्कर फोड़े उत्पन्न करते हैं ।

नोट—पहले ज्वर आता है, फिर भयंकर फोड़े होते हैं। आगसे जले हुएके समान सब शरीरमें अथवा शरीरके किसी भागमें अनेक प्रकारके फफोले पड़ जाते हैं ; यानी वे फोड़े कभी शरीरके एक स्थानमें होते हैं और कभी सारे शरीरमें फैल जाते है। उनमें जलन बहुत होती है। कभी वे जल्दी पकते हैं और कभी देरमें।

विस्फोटकके सामान्य लक्षण ।

ज्वर समेत, रुधिर और पित्तसे पैदा हुआ, आगसे जलाये हुएके समान जो फोड़ा शरीरके किसी एक भागमें अथवा सारे शरीरमें होता है, उसे "विस्फोटक" कहते हैं ।

जिस तरह सब तरहकी पीड़ाओंमें "वायु"की प्रधानता होती है ; उसी तरह सब तरहके विस्फोटकोंमें "रुधिर और पित्त"की प्रधानता होती है ; पर रुधिर और पित्तसे वायुका सम्बन्ध भी होना है ।

दोषभेदसे विस्फोटकोंके लक्षण ।

वातज विस्फोट—मस्तकमें दर्द और फोड़ेमें सूई चुभानेकी सी भयङ्कर पीड़ा, ज्वर, प्यास, सन्धि टूटना और कालापन ये वातज विस्फोटके लक्षण हैं ।

पित्तज विस्फोट—ज्वर, दाह, वेदना, पकना, स्राव—राध निकलना, प्यास तथा पिलाई और ललाई ये पित्तज विस्फोटके लक्षण हैं ।

कफज विस्फोट—वमन, अरुचि, जड़ता, खुजली, कठिनता, पाण्डुवर्णता, पीड़ा न होना और बहुत देरमें पकना ये कफज विस्फोटके लक्षण है ।

कफ पित्तज विस्फोट—खुजली, ज्वर, दाह और वमन, ये कफ-पित्तके विस्फोटमें होते हैं ।

वात पित्तज विस्फोट—इसमे तीव्र वेदना होती है ।

वात कफज विस्फोट—इसमें खुजली, जड़ता और भारीपन ये होते हैं ।

त्रिदोषज विस्फोट—बीचमें नीचा,चारों ओर ऊँचा, कठिन, थोड़ा पकने वाला, दाह, लाली, प्यास, मोह, वमन, मूर्च्छा, वेदना, ज्वर, बकवाद, कम्प और अत्यन्त बेहोशो सहित होता है यानी ये त्रिदोषज विस्फोटके लक्षण हैं ।

रुधिर जन्य विस्फोट---खूनके कुपित होनेसे पैदा हुए फोड़े चिरमिटीके समान लाल, लाल मवाद देनेवाले और जलन करनेवाले होते हैं । ये विस्फोट सैकड़ों सिद्ध योगोंसे भी आराम नही होते ।

भीतरी विस्फोट---जिस तरह बाहर आठ तरहके विस्फोट होते हैं, उसी तरह एक भीतर भी होता हैं । यह नवां ह । इसके होनेसे

भीतर तेज़ दर्द और ज्वर भी होता है। इसका बाहर निकल आना अच्छा। वैद्यको समझबूझकर इसमें वात-सम्बन्धी विस्फोटके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

विस्फोटके उपद्रव।

प्यास, श्वास, माँसका सड़ना, दाह, हिचकी, मद, ज्वर, विसर्प और मर्मोंमें व्यथा---ये विस्फोटके उपद्रव हैं।

विस्फोटकोंके साध्यासाध्य लक्षण।

एक दोषज विस्फोट साध्य है; दो दोषज कष्टसाध्य है और सब दोषोंके लक्षणोंवाला अनेक उपद्रव सहित विस्फोट भयंकर और असाध्य है।

विस्फोट नाशक नुसख़े।

नोट—इस रोगमें विसर्पके समान क्रिया करनी चाहिये। इसमें लङ्घन, वमन, विरेचन और पथ्य भोजन हितकारी है। मूँग, अरहर या मसूरका रस, जौ, शालिचांवल, सोंठ, करेला और पित्तपापड़ा वग़ैरः पथ्य हैं।

(१) वृहत्पञ्चमूल, लघुपंचमूल, रास्ना, दारुहल्दी, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा—इनका काढ़ा पीनेसे वातज विसर्प नाश हो जाता है।

(२) दाख, कुम्भेर, खजूर, परवल, नीम, अडूसा, कुटकी, धानकी खील और धमासा—इनका काढ़ा "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज विस्फोट नाश हो जाता है।

(३) चिरायता, वच, अडूसा, हरड़, बहेड़ा, आमला, इन्द्रजौ, कुड़ा, नीम और कड़वे परवल—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे कफज विस्फोट आराम हो जाता है।

(४) चिरायता, नीम, मुलेठी, नागरमोथा, अडूसा, कड़वे परवल, पित्तपापड़ा, खस, हरड, बहेड़ा, आमला और इन्द्रजौ—इन १२ दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे सब तरहके विस्फोट आराम हो जाते हैं। इसे "द्वादशांग क्वाथ" कहते हैं।

(५) इन्द्रजौको चाँवलोंके पानीमें पीस कर लेप करनेसे विस्फोट आराम हो जाते हैं

(६) गिलोय, कड़वे परवल, चिरायता, अड़ूसा, नीम, पित्त-पापड़ा, खैर और नागरमोथा—इनका काढ़ा विस्फोट ज्वरको नाश करता है।

(७) लालचन्दन, नागकेशर, सारिवा, चौलाई, सिरसकी छाल और चमेली—इनका लेप विस्फोटकके दाहको नाश करता है।

(८) कमल, लाल चन्दन, लोध, खस और दोनों तरहके सारिवा, इनको पानीमें पीस-छान कर लेप करनेसे विस्फोटकी जलन शान्त हो जाती है। <u>परीक्षित है</u>।

(९) पतिजियाकी मींगी पानीमें पीसकर लेप करनेसे काले फोड़े, विषैले फोड़े और उनकी वेदना तत्काल शान्त हो जाती है।

(१०) जियापोताका लेप करनेसे कोखकी गाँठ, गलेकी गाँठ, कानकी गाँठ और लाल फोडे तत्काल शान्त हो जाते हैं।

(११) परवल, नीम, गिलोय, त्रिफला मूर्वा, हल्दी, कुटकी, जवासा, चन्दन, अडूसा, नागरमोथा और नीम—इनके काढ़ेसे चमड़ेके दोष, विस्फोटक, विसर्प, कण्डू, दाह, ज्वर और वमन ये रोग नाश हो जाते हैं।

विस्फोटकान्तक तैल।

कमल, मुलहटी, लोध, नागकेशर, वायविड़ंग, हल्दी, दारूहल्दी, तगर, कूट, इलायची, तेजपात, नीलाथोथा और राल—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर लुगदी

से चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी मिलाकर घी पकालो। इस घीके लगानेसे विस्फोटक और विसर्प रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

विस्फोटकारि तैल।

कत्रीला, बेलगिरी, नीम, मोथा, प्रियंगू फूल, लोध, त्रिफला, खिरेंटी, कुड़ेकी छाल, राल, अगर, खैरसार, धायके फूल और चन्दन—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी मिला कर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे विस्फोटक, गलगण्ड, कोढ़, विसर्प, नासूर और सांप, चूहे तथा अन्य ज़हरीले कीड़ोंके ज़हर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अकबरी चूर्ण।

यह अमृत-समान चूर्ण दिल्लीके बादशाह अकबरके लिये उस ज़मानेके हकीमोंने बनाया था। क़लममें ताक़त नहीं जो इस चूर्ण के पूरे गुण लिख सके। यह चूर्ण खानेमें दिल-खुश और सुस्वाद है, अग्निको जगाता और भोजनको पचाता है। कैसा ही अधिक खाना खा लीजिये, फिर पेट ख़ाली का ख़ाली हो जायगा। अजीर्ण (बदहजमी) को पेटमें जाते ही भस्म कर देता है। खट्टी डकारें आना, जी मिचलाना, उल्टी होना, पेट भारी रहना, पेट की हवा न खुलना, पेट या पेड़ का कड़ा रहना, पेटमें गोलासा बना रहना, पाखाना साफ न होना आदि पेटके सारे रोगोंके नाश करनेमें राम-वाण या विष्णु भगवान्का सुदर्शन चक्र है। दाम छोटी शीशीका ॥) बड़ीका १) है।

क्षयज शिरोरोगके लक्षण ।

सिरमें रहनेवाली चरबी, कफ और रक्तके अत्यन्त क्षय हो जानेसे क्षयज शिरोरोग होता है। सिरमें बहुत ज़ोरका दर्द हो, वह दर्द सेकनेसे, वमन करनेसे, धूआँ पीनेसे, नस्य लेनेसे और खून निकलवानेसे उलटा बढ़े तो समझना चाहिये कि यह दर्द सिरकी चरबी, कफ और खूनके अत्यन्त कम हो जानेसे हुआ है। यह शिरोरोग कष्टसाध्य होता है।

इस शिरोरोगके होनेसे शरीर घूमता है, सिरमें सूई चुभानेके जैसा दर्द होता है, नेत्रोंकी पुतलियाँ बारम्बार फिरती हैं, मूर्च्छा और अङ्गमें ग्लानि होती है।

कृमिज शिरोरोगके लक्षण ।

कृमिज शिरोरोग सिरमें कीड़े पदा होनेसे होता है। इस सिरके रोगमें सिरमें सूई चुभानेकी सी अत्यन्त वेदना होती है। कीड़ोंके मस्तकको भीतरसे खाकर खाली कर देनेकी वजहसे मस्तक भीतरसे फड़कता सा जान पड़ता है, नाकमेंसे राध मिला हुआ खून और कीड़े गिरते हैं। यह भयङ्कर शिरोरोग कीड़ोंसे होता है।

खुलासा—इस रोगमें ज़ोरसे सिर दर्द होता है, नाकसे पानी गिरता है और कभी-कभी खून मिला या केवल पतला कफ गिरता है।

सूर्य्यावर्त्त शिरोरोगके लक्षण ।

सूरज उदय होनेके साथ जिसकी आँखों और भौंओं तथा सिरमे मन्दी-मन्दी पीड़ा होने लगे ; ज्यों-ज्यों सूरज आकाशमें चढ़ता जाय, त्यों-त्यों पीड़ा भी बढ़ती जाय ; दोपहरके समय पीड़ा खूब बढ़ जाय ; फिर दोपहर बाद ज्यों-ज्यों सूरज पच्छिमकी तरफ उतरता जाय, पीड़ा भी वैसे-ही-वैसे कम होती जाय ; शामको जब सूरज छिप जाय, पीड़ा भी शान्त हो जाय ; मतलब यह है, कि सूरजके

निकलनेके समय पीड़ा आरम्भ हो, दोपहरको खूब बढ़ जाय और सन्ध्या-समय शान्त हो जाय, उसे "सूर्यावर्त्त" शिरोरोग कहते हैं। किसी समय इस रोगकी पीड़ा सर्दीसे और किसी समय गरमीसे शान्त होती है। यह रोग तीनों दोषोंके कोपसे होता और बड़ी कठिनाईसे आराम होता है।

खुलासा—जो सिर दर्द सूर्य्योदयके समय बढ़ने लगे, दोपहरको खब बढ़ जाय और सूर्यके पच्छिमकी तरफ ढलनेके समयसे घटते-घटते सूर्यके अस्त होनेके साथ शान्त हो जाय, उसे "सूर्यावर्त्त शिरोरोग" कहते हैं।

अनन्त वात शिरोरोगके लक्षण।

दूषित हुए वात पित्तादि तीनों दोष, गर्दनकी मन्या नाड़ीको अत्यन्त जकड़ कर, अपने-अपने स्वभावके अनुसार, पीड़ा, जलन और भारीपन आदि तीव्र वेदना उत्पन्न करते हैं। यह वेदना तत्काल ही आँखोंमें, भौंओंमें और कनपटियोंमें—विशेषकर गण्डस्थलोंमें—स्थित हो जाती है। वहाँ स्थित होकर यह कम्प, हनुग्रह और नेत्र-पीड़ा करती है। इसको "अनन्तवात शिररोग" कहते हैं।

खुलासा—इस रोगमें नेत्र, गर्दन और सिरकी रगोंमें दर्द होता है। वातादि दोष गर्दनकी "मन्या नाड़ी"को पकड़ कर रोग करते है, इसलिये पहले गर्दनके पीछे दर्द होता है; यानी वहाँसे दर्द शुरु होता है। फिर वह तत्काल ही ललाट, भौं और कनपटियोंमें आकर ठहर जाता है और कम्प, हनुग्रह एव नाना प्रकारके आँखोंके रोग करता है। ऐसे सिरके दर्दको "अनन्त वात शिरोरोग" कहते है।

शखक शिरोरोगके लक्षण।

पित्त, खून और वायु दूषित होकर, कनपटियोंमे अत्यन्त पीड़ा और भयङ्कर दाहयुक्त लाल सूजन पैदा करते हैं। यह सूजन विषके वेगकी तरह वहुत जल्दी वढ़ कर मस्तक और गलेको जकड़ लेती है। यह शंखक रोग तीन ही दिनमें मनुष्यको मार डालता है। कभी-कभी उत्तम वैद्यकी चिकित्सासे तीन ही दिनमें रोगी वच भी जाता है। वैद्यको खूब समझ-बूझ और कह-सुन कर इलाज करना चाहिये।

नोट—यद्यपि यहां कनपटीमें सूजन पैदा करनेवाले पित्त, रुधिर और वायु—ये तीन ही कहे हैं, लेकिन सुश्रुतने इनके साथ "कफ"को भी लिया है, अतः पित्त, खून, वायु और कफ चारोंको ही सूजन पैदा करनेवाला समझना चाहिये। कनपटीको संस्कृतमें "शङ्ख देश" कहते हैं और यह रोग शङ्खदेश यानी कनपटीमें ही होता है, इसलिये इसे "शङ्खक" कहते हैं। कनपटीमें तीव्र वेदना, तीव्र दाह और भयंकर लाल सूजन होना ही इस रोगकी साफ पहचान है। तीव्र पीड़ावाले रोगीका इलाज जल्दी न करना चाहिये। अगर करना ही तो तीन दिन निकल जानेपर करना चाहिये।

अर्द्धावभेदकके लक्षण।

(आधासीसी-अधकपारी)

रूखा भोजन आदि करनेसे, भोजन पर भोजन करनेसे, बर्फ वगैर शीतल चीजोंका सेवन करनेसे, पूर्वकी हवा सेवन करनेसे, मैथुन करनेसे, मल मूत्रादिके वेग रोकनेसे, बहुत चलनेसे बहुत बोझा ढोनेसे और दण्ड-कसरत करनेसे बलवान "वायु" कुपित हो जाती है। फिर वह अकेली ही अपने-आप अथवा कफकी मदद लेकर, मस्तकके आधे हिस्सेको पकड कर, गर्दन, भौं, कनपटी, कान, आँख और आधे कपालमे शस्त्राघात या वज्रपातके समान तीव्र वेदना करती है, इसीको "अर्द्धावभेदक" कहते हैं। इसीको बोलचालकी भाषामें "आधाशीशी" या "अधकपारी" कहते हैं। जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है, तब आँख या कानको नष्ट कर देता है। यह रोग बहुधा ज़ियादा उम्रवालोंको होता है, बालकोंको देखनेमें नहीं आता।

खुलासा—अपने कारणोंसे कुपित हुई "वायु" अथवा "कफ मिली वायु" मस्तकके आधे भागमें जाकर, एक तरफकी मन्या, भौं, कनपटी, कान, आंख और ललाटके आधे भागमें अथवा सारे सिरके आधे भागमें भयानक पीड़ा करती है। इसीको "आधासीसीका दर्द" कहते हैं।

और सिरके दर्दोंके लक्षण ।

ज्वरादि जनित शिरोरोगके लक्षण ।

ज्वर और कितने ही दूसरे रोगोंमें सिरमें दर्द अवश्य होता है। द्वन्द्वज ज्वरोंमे प्रायः सिरमे बड़े जोरका दर्द होता है। मलेरिया या विषम ज्वरमें तो सिरमें दर्द होना मामूली बात है। कभी-कभी मलेरियाका विष शरीरमें ठहर जानेसे सिरका दर्द भी स्थायी हो जाता है। पुराने ज्वरमें प्रायः सवेरे-शाम सिरमें दर्द हुआ करता है।

दस्तकब्ज और अजीर्णमे हुए सिर दर्दके लक्षण ।

दस्त साफ न होने और अजीर्णसे बहुधा सिरमे दर्द हो जाना है। इन दोनों रोगोंमें, आँतोंमें दूषित पदार्थ जमा होकर सिरमे दर्द करते हैं। अत्यन्त भारी और कठिनसे पचनेवाले भोजनसे भी कभी-कभी सिरमें बड़े ज़ोरका दर्द हो जाता है।

जुकामके सिर दर्दके लक्षण ।

जुकाम, खाँसी, सर्दी और क्षय वग़ैरः रोगोमें सिरका दर्द बहुतायतसे होना है। कभी-कभी नये जुकाममें, कफके गाढ़े हो जाने या सूख जानेसे, सिरमें भयङ्कर वेदना होती है और उससे अनेक रोग पैदा हो जाते हैं।

खाँसी और क्षयके सिर दर्दके लक्षण ।

खाँसीमें विशेष कर पुरानी खाँसीमें बड़े ज़ोरसे सिरमें दर्द होता है। क्षय रोगके शुरूमें, बहुत लोगोंको नियमित रूपसे सिर दर्द होता है। जब क्षय अपना पूर्णरूप धारण करता है, यह सिरका दर्द भी बढ़ जाता है। इसमे प्रायः सिर घूमता है, सिरमें सूई चुभानेका सा दर्द होता और पसीने बहुत आते हैं।

उपदंश आदिके सिरदर्दके लक्षण।

उपदंश और वातरक्त आदिका विष शरीरमें जमा हो जानेसे सिरमें दर्द बहुत समय तक बना रहता है। कभी-कभी उपदंशके सारे लक्षण दूर हो जाने पर भी, उपदंशका विष शरीरमें छिपा रहता है। उसकी वजहसे बहुत समय तक सिरमें दर्द बना रहता है।

स्नायुविक दुर्बलता जनित शिरदर्द।

स्नायुओंकी कमज़ोरीसे जो सिरमें दर्द होता है, वह मन्दा-मन्दा हुआ करता है और बहुत दिनोंतक बना रहता है।

नेत्रादि रोगोंसे हुए सिरके दर्दके लक्षण।

नेत्र, दाँत, कान और नाक आदिके रोगोंमें सिरका दुखना मामूली बात है। नजरकी कमज़ोरीसे कभी-कभी माथेमें ऐसा दर्द होता है, कि बहुत पता लगाने पर भी उसकी असली वजह मालूम नहीं होती। ऐसे शिरोरोगमें पहले दृष्टिकी परीक्षा करनी चाहिये।

मस्तिष्क-सम्बन्धी सिर दर्दके लक्षण।

मस्तिष्क-सम्बन्धी विकारोंमें सिरका दर्द भयंकर रूपसे प्रकट होता है। मस्तिष्कके भीतर अर्बुद—फोड़ा होनेसे सिरमें असह्य वेदना होती है। रोगीको कय होती हैं और धीरे-धीरे उसकी दृष्टि-शक्ति कम हो जाती है।

यकृत-दोषके सिर दर्दके लक्षण।

यकृत या लिवरके दोषसे यकृतका काम ठीक-ठीक नहीं होता तब सिरमें दर्द होता है। इसमें विशेषकर पित्तके लक्षण होते हैं।

गर्भाशय आदिके सिरदर्दके लक्षण ।

औरतोंके गर्भाशय या जरायुमें पीड़ा होनेसे सिर दर्द बहुधा होता है। बहुतसी औरतोंके ऋतुकालके समय घोर सिर दर्द होता है।

प्राकृतिक नियम भंगसे हुए सिर दर्दके लक्षण ।

अनेक बार प्राकृतिक नियम न पालनेसे सिरमें दर्द हो जाता है। बे-समय और बेक़ायदे खाने, सोने, अत्यन्त लिखने-पढ़ने, ज़ियादा मिहनत या कसरत करने, रातमें जागने, जियादा स्त्री-प्रसंग करने, जियादा गरमी या ज़ियादा सरदी खाने, रातमें दही वग़ैरः स्रोतोंको बन्द करने वाले पदार्थोंको खाने, शराब पीने, चाय काफी और तमाखू वग़ैरःको अत्यन्त ज़ियादा सेवन करने अथवा मैली और गन्दी हवामें रहने और किसी तरहकी मिहनत न करने वग़ैरः वग़ैरः अनेकों कारणोंसे सिरमें पीड़ा हो जाती है।

शिरोरोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य
नियम और चन्द परीक्षित नुसखे।

(१) वातज शिरोरोगमें स्नेहन, स्वेदन और नस्य कर्म करना चाहिये। वातनाशक खाने-पीनेके पदार्थ और उपनाह सेवन करना चाहिये। जांगल देशके जानवरोंके मांसके द्वारा पिण्डोपानाह और स्वेदादि प्रदान करना चाहिये। दशमूलादि वातनाशक दवाओंके साथ पकाया हुआ दूध सिर पर सींचना चाहिये। यथासमय चिकने पदार्थोंके द्वारा धूम्रपान कराना चाहिये। वातज शिरोरोगमें "शिरोवस्ति" अतीव लाभदायक है। मामूली तौरसे सिरको कपड़ेसे बाँधना, वातनाशक गरम और चिकने पदार्थों द्वारा सिरको स्वेद देना और ऐसे ही पदार्थोंका

सिर पर लेप करना, वातनाशक तेलोंकी मालिश कराना, पौष्टिक भोजन करना, गरम जल पीना और गरम जलसे नहाना वग़ैरः वग़ैर आहार-विहार लाभदायक हैं।

(२) पित्तज शिरोरोगमें स्निग्ध या चिकनी औषधियोंके द्वारा विरेचन कराना चाहिये। "सौ बार धोया हुआ घी" सिर पर मलना चाहिये। बारम्बार शीतल जलमें सिर डुबाकर नहाना चाहिये। इस रोगमें शीतल लेप और शीतल तरड़े अतीव गुणकारी हैं। जैसे —सिर पर शीतल जलकी धारा छोड़ना; खस, चन्दन और कपूर आदि शीतल पदार्थोंका लेप करना; सिर पर ताजा घी रखना और कच्चे दूधकी मालिश करना वग़ैरः।

(३) कफज शिरोरोगमें रूखा, गरम और पाचन औषधियोंका लेप और स्वेद देना चाहिये तथा तीक्ष्ण अवपीड़न, तीक्ष्ण धूम्र-पान और तीक्ष्ण कवलका प्रयोग करना चाहिये। गरम जल पीना, गरम पानीसे नहाना, पसीने निकलवाना, थोड़ीसी चाय या काफी पीना, अगर और केशरका लेप करना, त्रिकुटेका लेप करना; सोंठ, कूट या कायफलको पानीमें पीस कर और गरम करके सिर पर लेप करना अथवा गरम भुने हुए चने या मूंग सूंघना—ये सब कफज शिरो-रोगमें लाभदायक हैं। इस रोगमें तेलकी मालिश हानिकारक है।

(४) क्षयज शिरोरोगमें क्षयके नष्ट करनेको बृंहण विधि करनी चाहिये, यानी अधिक पौष्टिक और बलवर्द्धक पदार्थ सेवन करने चाहिएं। जैसे घी, दूध और दाखोंके रसको एकत्र पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे क्षय रोगसे हुआ सिरका दर्द जाता रहता है।

(५) कृमिजन्य शिरोरोगमें, यानी माथेके भीतर कीड़े होनेसे जो सिरका दर्द होता है उसमें, कृमि नाशक दवाएं लेनी चाहिएं। कृमिनाशक औषधियोंकी नस्य लेनी चाहिये और वैसी ही दवाएँ चिलममें रख कर तमाखूकी तरह पीनी चाहिएं। जैसे त्रिकुटा,

करंजके बीज और सहँजनेके बीज—इनको एकत्र बकरीके मूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे कृमि गर जाते हैं। केवल त्रिकुटेको महीन छान कर नस्य देनेसे अथवा वायविडंगको गोमूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे अथवा वायविड्ङ्गको चिलममें तमाखूकी जगह रखकर और ऊपरसे आग रखकर धूआँ पीनेसे कृमिज शिरोरोग नाश हो जाता है।

(६) सूर्यावर्त्त शिरोरोगमें नस्यादि कर्म लाभदायक हैं। जैसे—भांगरेका रस और बकरीका दूध बराबर बराबर लेकर एक पत्थरकी कूँड़ीमें भर कर धूपमें रख दो। जब वह गरम हो जाय, बारम्बार हिलाकर नस्य दो। गुड़ और घी आग पर गरम करके खाने अथवा गरम दूध और घी मिलाकर पीने अथवा घीसे तरान्तर घेवर या मालपूए वग़ैरः खानेसे सूर्यावर्त्त नाश हो जाता है। जंगली जीवोंके मांस द्वारा उपनाह कर्म करना भी सूर्यावर्त्तमें हितकारी है।

(७) अर्द्धावभेदक या आधासीसीके रोगमें पहले स्नेह और स्वेद प्रयोग करना चाहिये। फिर विरेचन-जुलाब, शरीर शुद्धि, धूम्रपान तथा चिकना और गरम भोजन देना चाहिये। इस रोगमें वायविड्ङ्ग और काले तिल दूधमें पीसकर लेप करना, अथवा इन्हीं दोनोंको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर नस्य लेना अथवा केशरको ज़रा घीमें भून कर और बराबरकी मिश्री मिलाकर बकरीके गरम दूधके साथ पीना—अथवा केशरको ज़रासे घीमें भूनकर बराबरकी मिश्री मिलाकर नस्य लेना—ये सब इस रोगमें परम हितकर हैं।

(८) शंखक शिरोरोग रोगमें वही सब काम करने चाहिएं जो सूर्यावर्त्तमें किये जाते हैं; केवल स्वेद कर्म न करना चाहिये। सूर्यावर्तमें स्वेद कर्म करना उचित है, पर शंखकमें अनुचित। सूर्यावर्त्तमें जो अवपीड़न नस्य लाभदायक हैं, वही सब शंखकमें भी लाभदायक हैं।

(९) अनन्तवात शिरोरोगमें भी सूर्यावर्त्तके जैसी चिकित्सा

करनी चाहिये। इस रोगमें अनन्तवातकी शान्तिके लिए शिरा-वेध भी करना चाहिये; यानी फस्द खोलकर खून निकालना चाहिए। इस रोगमें वात-पित्त नाशक आहार देना चाहिये। शहद मिले हुए गूंजे, बालूशाही और घेवर वग़ैर. भी पथ्य हैं।

(१०) शिरकेरोगोंमें विधिपूर्व्वक नस्य कर्म करना हितकारी है।

(११) अगर शिरोरोगमें कम्प और दाह होता हो, तो वात-नाशक उपाय करने चाहिए।

(१२) अगर सिर घूमता हो, तो इसी भागके पृष्ठमें लिखे हुए नुसख़ोंसे काम लीजिये। दो तोले लाल रंगके जवासेके काढ़ेमें दो या तीन तोले "घी" मिलाकर पीनेसे सिर घूमना आराम हो जाता है। तीन माशे अदरख और ६ माशे गुड़ मिलाकर सात दिनतक खानेसे सिर घूमना आराम हो जाता है।

(१३) अगर दस्तक़ब्ज या अजीर्णकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो साधारण दस्तावर दवा देकर दस्त कराने चाहियें अथवा "एनीमा" नामक अँगरेज़ी पिचकारीसे आँतें धोनी चाहियें अथवा गरम पानीके साथ ५।७ सूखे अँजीर खाने चाहियें। इस रोगमें फलोंका ज़ियादा व्यवहार हितकारी है। देरमें पचने वाले और भारी पदार्थ हानिकर हैं। हल्के और जल्दी पचनेवाले पदार्थ लाभदायक हैं।

नीचे हम चन्द क़ब्ज नाशक उपाय बतलाते हैं :—

(१) थोड़ासा गुलकन्द गुलाब या थोड़ीसी दाखे बीज निकालकर—गरम दूध या गरम पानीके साथ खानी चाहिये। इनसे कोठेकी सख्ती दूर हो जाती है।

(२) अमलताशका गूदा, इमलीका गूदा, दाख, आलू बुखारा, सूखे झाड़ीबेर, सनाय और सौंफ दो-दो तोले लेकर, डेढ़ सेर पानी डालकर, मिट्टीके बर्त्तनमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय मलकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें पाव भर "मिश्री" मिलाकर पकाओ, जब अवलेहके समान गाढ़ा होकर चिपकने लगे उतार कर रख लो। साधारण कब्जमें इसमेंसे ६ माशेसे २ तोले तक अव-लेह रातको सोते समय चाटनेसे सवेरे ही दस्त खुलासा हो जाता है।

(३) मुलेठी २ तोले, सनाय १ तोले, सौंफ ६ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ६ माशे और मिश्री ६ तोले—इन सबको पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे तक चूर्ण गरम जलके साथ खानेसे दस्त खुलासा हो जाता है। बवासीर रोगीको इस चूर्णसे विशेष लाभ होता है।

(१४) अगर जुकामकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो छठे भागमें जुकाम पर जो पसीने लानेवाले नुसख़े लिखे हैं, उनमें से कोई सेवन करना चाहिये। तुलसीकी पत्तियोंकी चाय बनाकर पीनेसे भी पसीने आकर जुकामसे हुआ दर्द सिर आराम हो जाता है। अगर सिरमें पानी बहुत हो, तो भाड़में भुने हुए गरमागर्म चने कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, उसी पोटलीसे सेक करनेसे पानी सूख जाता और बड़ा आनन्द मालूम होता है। अगर कफके गाढ़े हो जानेसे या सूख जानेसे सिरमें दर्द हो, तो मुनक्का, लिहसौड़े और गावजुवाँ आदि कफको पतला करनेवाली दवाएं देनी चाहियें। ऐसे नुसख़े छठे भागमें, जहाँ जुकामका इलाज लिखा है, बहुत हैं। अगर पुराने जुकामसे सिरमें दर्द हो, तो त्रिफलेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीना चाहिये। अगर खाँसीके ज़ोरके मारे सिरमें दर्द हो, तो अडूसेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीना चाहिये।

(१५) ज्वरादि दूसरे रोगोंमें जो सिरका दर्द होता है, वह मूल रोगके आराम होनेसे मिटता है। इसलिए ऐसी हालतमें असल रोगकी तरफ़ ज़ियादा ध्यान देना चाहिये।

अगर नये बुख़ारमें सिरमें दर्द हो, तो लाल चन्दनको पत्थर पर घिसो और ज़रासा कपूर मिलाकर सिर पर लगाओ। अथवा दाल-चीनी और सौंफको पानीमें पीसकर सिर पर लेप करो।

अगर द्वन्द्वज ज्वरकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो पिपुरमिन्टको ज़रासे घीमें मिलाकर सिर पर मलो अथवा इलायची या सौंफ पानीके साथ पीसकर सिर पर लेप करो।

अगर ज्वरकी तेज़ीके समय सिरमें भयंकर दर्द हो, दाह और

प्रलाप आदि उपद्रव हों, तो आईस बेग (रबडकी थैली) सर पर रखो, पर ध्यान रहे सिरमें पानी न ठहरने पावे।

मलेरिया जनित सिरके दर्दमें गिलोयका काढ़ा पीनेसे लाभ होता है। सफेद चन्दन, कपूर और नेत्रवाला गायके दूध या पानीमें पीसकर सिरपर लगानेसे भी लाभ होता है।

नोट—ज्वरमें सिर दद नाश करने वाले नुसखे चिकित्साचन्द्रोदय दूसरे भागके पृष्ठ ५३४—५३८ में देखिये।

(१६) उपदंश—आतशक या वातरक्तकी वजहसे जो सिरमें दर्द होता है, उसमें उपदंशके ज़हरको नाश करनेवाली और खूनको साफ करनेवाली दवाएं देनी चाहिएँ। अनन्तमूल और उशवा प्रभृति रक्तशोधक दवाओंके सेवनसे खूनमें से विष दूर होकर सिरकी पीड़ा मिट जाती है। डाक्टरी मतसे "पोटास आयोडाइज़ड" ऐसे सिरके रोगोंकी उत्तम औषधि है।

(१७) मूत्रपिण्ड-सम्बन्धी सिरके दर्दमें साधारण दस्तावर और पेशाब लानेवाली दवासे लाभ होता है।

(१८) यकृतके विकारसे हुए सिरके दर्दमें पाचक और दस्तावर दवाएँ लाभदायक हैं।

(१९) स्नायविक दुर्बलतासे हुए सिरके दर्दमें अधिक पुष्टिकारक पदार्थ खानेसे लाभ होता है। दो या तीन रत्ती शुद्ध शिलाजीत" बराबर कुछ दिनों तक दूधके साथ खानेसे ऐसे रोगमें अवश्य लाभ होता है। आठ दस बूंद "बड़का दूध" चीनीमें मिलाकर कुछ दिन खानेसे स्नायविक दुर्बलता नाश होकर दर्द सिर भी आराम हो जाता है और क़ब्ज नहीं होता।

(२०) नेत्र, कान और दाँत आदिमें रोग होनेसे जो सिरमें दर्द होता है, वह उन रोगोंमें लाभ होनेसे ही आराम होता है, अतः मुख्य रोगके इलाज पर ही विशेष ध्यान देना चाहिये। अगर दृष्टि-दोष या नजरकी कमजोरीसे सिरमें दर्द हो, तो चश्मा लगाना लाभदायक है।

(२१) हिस्टीरिया, मूर्च्छा या मृगी आदि मानसिक रोगोंकी वजहसे या और किसी तरह मनमे अत्यन्त दुःख होनेसे सिरमें दर्द हुआ हो, तो वह मानसिक चिकित्सासे ही अच्छा होगा ; दवाओंसे ऐसे दर्दसिरमें कोई फायदा नहीं होता।

(२२) अगर मस्तिष्कके विकारकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो मस्तिष्कके उस विकारका इलाज करना चाहिये। अगर मस्तिष्ककी कमज़ोरीसे सिरमें दर्द हो, तो मस्तिष्क-शक्तिको बढ़ानेवाले पदार्थ देने चाहिएं। अगर मस्तिष्कसे ज़ियादा काम लेने या दिमाग़ी मिहनत ज़ियादा करनेसे सिरमें दर्द हुआ हो, तो आराम करना चाहिये। अगर मस्तिष्कमें उपदंशकी वजहसे अर्बुद (फोड़ा या रसौली) पैदा हो जानेके कारण सिरमें दर्द हुआ हो, तो उपदंश नाशक दवाएं देनी चाहियें। अगर अर्बुद किसी और वजहसे हुआ हो, तो होशियार डाक्टरसे चीरफाड़ करानी चाहिये।

(२३) प्राकृतिक नियमोंके तोड़नेसे जो सिरमें दर्द होता है, वह नियम पालन करनेसे चला जाता है। अगर ज़ियादा मिहनत करने या रातमें जागनेसे सिरमें पीड़ा हो, तो आराम करना चाहिये। शीतल या निवाये जलसे सिरको धोना चाहिये। अगर सर्दीसे दर्द हो तो सर्दीको कम करना चाहिये और गरमीसे हो तो गरमीको कम करना चाहिये। सर्दीके सिर दर्दका वही इलाज है जो कफज शिरोरोगका है। गरमी वालेका इलाज ठीक पित्तज शिरोरोगके जैसा है।

(२४) अगर औरतोंको जरायु-सम्बन्धी सिर दर्द हो, तो उन्हें गरम जलमें बिठाना चाहिये या गरम जलमें पैर डुबाये रखना चाहिये।

(२५) बदबूदार हवामें रहने या दुर्गन्धित चीज़की गन्ध नाकमें जानेसे सिरमें दर्द हो जाय, तो साफ खुली हवामें दस बीस लम्बे साँस लेने चाहियें और उत्तम इत्र सूंघने चाहियें।

(२६) अगर आलस्यसे या बेकाम पड़े रहनेसे सिरमें दर्द हो जाय, तो मिहनत करनी चाहिये ।

(२७) बाजारू पेटेण्ट दवाएं सिरके दर्दको तत्काल आराम तो कर देती है, पर दिलको कमजोर कर देती हैं ; क्योंकि इनसे हृदय की चाल मन्दी पड़ जाती है , अतः ऐसी दवाओंसे बचना चाहिये ; क्योंकि इनसे एक रोग जाता है और चार आते हैं ।

वातज शिरोरोगकी चिकित्सा ।

(१) वातज शिरोरोगमें दशमूल आदि वातनाशक औषधियोंके साथ पकाया हुआ दूध सिर पर सींचना चाहिये,। रातके समय मूंग, उड़द और कुलथीको घीमे भून कर और मिर्चादि तीक्ष्णवस्तु मिलाकर खाना चाहिये। वातज शिरोरोगमे स्नेहन, स्वेदन और मस्तकमें तेलादि मलना हितकारी है। गरम दूध पीना चाहिये।

(२) कूट और अरण्डकी जड़ काँजीमें पीस कर सिर पर लेप करनेसे सिरका दर्द तत्काल नाश हो जाता है।

नोट—कूट, अरण्डकी जड़ और सौंठको माठेमें पीसकर और गरमकरके कपाल पर लगानेसे वातज शिरोरोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(३) मुचकुन्दके फूल काँजीमें पीसकर लेप करनेसे वातज सिर दर्द फौरन आराम हो जाता है।

(४) रोगीके मस्तकको निश्चल रखकर, उसको चमड़ेसे अच्छी तरह बाँध दो। फिर उसमें वात नाशक गरम तेल भर कर तीन या छे घन्टों तक रहने दो ; इसके बाद तेलको निकाल दो। इस

तरह करनेसे अनेक तरहके दर्द सिर आराम हो जाते हैं। इसे "शिरोवस्ति" कहते हैं। इसकी खुलासा तरकीब अच्छी तरह समझा कर हम नीचे लिखते हैं :—

सिरपर पूरा आजाय, ऐसा लम्बा और सोलह अङ्गुल ऊंचा चमडा लेकर, उससे मस्तकको बाँध दो और उसकी तथा मस्तककी सन्धोंमें उड़दका आटा पानीमें सानकर लगा दो, ताकि उसमें भरा हुआ तेल बहकर न निकल जाय। फिर रोगीको निश्चल बैठाकर, सुहाता-सुहाता गरम तेल, मस्तकके ऊपर, उस चमड़ेमें भर दो। फिर जब तक दर्द आराम न हो जाय तबतक, अथवा ६ घण्टेतक या दो तीन घण्टोंतक, रोगीको इसीतरह निश्चल—बिना हिले-डोले बैठा रहने दो। यही "शिरोवस्ति" है। इससे वातज शिरोरोग, हनुग्रह, मन्यास्तम्भ, नेत्रकी पीड़ा, कानकी पीडा, अर्दित—आधा चेहरा टेढ़ा हो जाना और सिर काँपना—ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

यह वस्ति भोजन करनेसे पहले ही रोगीको देनी चाहिये। पाँच दिन तक, सात दिनतक और जो अनुकूल हो—फायदा मालूम हो तो इनसे भी अधिक दिनोंतक यह क्रिया करनी चाहिये।

वेदना शान्त होनेपर, दर्द मिटनेपर अथवा ६ या २।३ घण्टेके बाद तेलको निकालकर वस्तिको खोल लेना चाहिये। फिर मस्तक कपाल, मुख, गर्दन और खवोंको खूब मलना चाहिये। पीछे सुहाते-सुहाते गरम जलसे शरीरको धोकर पथ्य भोजन खानेको देना चाहिये। जंगली जीवोंका मांसरस या घी मिला लाल शालि चाँवलोंका भात भी पथ्य है। रातके समय मूंग, उड़द, कुल्थी अथवा अकेली कुल्थी पकाकर, उसमें घी और तीक्ष्ण पदार्थ—मिर्च वग़ैरः मिलाकर खिलानी चाहिये और ऊपरसे गरम दूध पिलाना चाहिये।

(५) ककोड़ेकी गाँठ शहद्में घिसकर लेप करनेसे वातज सिर-दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) "श्वासकुठार रस"की नस्य देनेसे माथेका दर्द अवश्य

नाश हो जाता है। इस वातजन्य शिरोरोगपर यह नस्य रामबाण है, अतः इसे जरूर व्यवहारमे लाना चाहिये।

(७) देवदारु, तगर, कूट, बालछड़ और सोंठ इनको एकत्र काँजीमे पीसकर और तेलमें मिलाकर लेप करनेसे वातज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(८) सौंठ और केशर पीसकर लेप करने अथवा दालचीनीका लेप करनेसे वातज सिरदर्द आराम हो जाता है।

(९) लौंग नग ५, सोंठ २ रत्ती और केशर २ रत्ती—इनको पानीके साथ पीसकर दो तोले तेलमे मिलाकर पकाओ और गरम-गरम लेप करो। इससे वातज दर्द सिर आराम हो जाता है।

पित्तज शिरोरोगकी-चिकित्सा।

(१) पित्तजन्य शिरोरोगमें, रोगीको स्निग्ध करके उत्तम विरेचन या जुलाब देना चाहिये। घी या दूधमें उपयुक्त मात्रा "निशोथके चूर्ण" की सेवन करानेसे दस्त हो जाते हैं और दर्दमें शान्ति आती है।

(२) सिरको बारम्बार शीतल जलमें डुबानेसे पित्तज दर्द सिर आराम हो जाता है।

(३) चन्दन, कमल, कमलकेशर, मृणाल, कमलकन्द और पद्माख—इनको समान-समान लेकर और दूधमे पीसकर सिरपर लेप करनेसे अथवा इन दवाओंको पानीमें औटाकर सिरपर तरड़ा देनेसे पित्तज सिरदर्द शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(४) लाल चन्दन, खसकी जड़, मुलेठी, बरियारा, व्याघ्रनखी और नीलकमल—इनको समान-समान लेकर और दूधमें पीसकर सिरपर लगानेसे पित्तज सिरका दर्द आराम हो जाता है परीक्षित है।

(५) आमले और नील कमल पानीमे पीसकर सिर पर लगानेसे पित्तज दर्द सिर आराम हो जाता है।

(६) चन्दनके जलसे शीतल किये पंखेकी हवा करनेसे तथा लाल कमल और सफेद कमल धारण करनेसे अथवा शीतल हवा खानेसे पित्तज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(७) सौ बार धोया हुआ घी सिर पर लगानेसे पित्तज सिर दर्द आराम हो जाता है।

(८) ज़रासा श्वास कुठार रस, कपूर, नयी केशर, मिश्री और बकरी का दूध—इन सबको बारीक घिसकर और ऊपरसे सफेद चन्दनका जलमें घिसा हुआ रस ज़रासा मिलाकर नास देनेसे घोर पित्तजन्य शिरोरोग नाश हो जाता है। कहते हैं, इस नुसख़ेसे सभी तरहके सिरके दर्द आराम हो जाते हैं।

नोट—शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध वत्सनाभ १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध मैनसिल १ तोले और कालीमिर्च ८ तोले इन सबको कूट-पीस कर मिला लो। फिर इसमें दो तोले सौंठका पिसा-छना चूर्ण, दो तोले कालीमिर्चोंका पिसा-छना चूर्ण और दो तोले पीपरोंका पिसा-छना चूर्ण भी मिला दो। यह "श्वास कुठार रस" है। इसमेंसे १ या २ रत्ती रस पानमें रख कर खानेसे सब तरहके श्वास रोग नाश हो जाते हैं।

(९) कमलगट्टा, आमला, हरड़, दूब, खस, नागरमोथा और कपूर—सबको समान-समान लेकर और पानीमें पीसकर लेप करनेसे पित्तसे हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) चन्दन, धनिया और गुलाबके फूल,—इनको महीन पीस लो। फिर इसमें "ईसबगोलका लुआब" मिला दो। इसको सिरपर लगानेसे पित्तज सिरदर्द जाता रहता है।

(११) गुड और सौंठको एकत्र पीसकर नास देनेसे भी सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१२) चन्दन, खस, मुलेठी, खिरेंटी, नखी और कमल इनको एकत्र दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तज शिरोरोग आराम हो जाता है।

(१३) मिश्री, दाख और मुलेठी—इनको पीसकर नस्य देनेसे पित्तज सिरका रोग आराम हो जाता है ।

(१४) दालचीनी, तेजपात और मिश्री—इनको चाँवलोंके पानीमे पीसकर नस्य देनेसे पित्तज सिरका दर्द नाश हो जाता है ।

(१५) दूध और घी मिलाकर नास देनेसे पित्तज सिरदर्द नाश हो जाता है ।

रक्तज शिरोरोगकी चिकित्सा ।

इस शिरोरोगमें, भोजन,लेपन और सेचन वग़ैरः सारे काम पित्तज शिरोरोगकी तरह करने चाहियें । इसमें रक्तमोक्षण या फस्त खोलनेकी विशेष जरूरत है । विद्वान् लिखते हैं, कि इस रोगमें सभी काम पित्तज शिरोरोगके समान करने चाहियें । एकवार शीतल क्रिया करनी चाहिये और एकबार गरम क्रिया करनी चाहिये ; यानी शीतल और गरम मिले हुए कर्म करने चाहियें ; विशेषकरके खून निकालना चाहिये ।

कफज शिरोरोगकी चिकित्सा ।

नोट—अगर कफसे शिरोरोग हुआ हो तो लघन कराने चाहिये तथा गरमीसे पूर्ण, रूखे और गरम पदार्थोंसे स्वेदन करना चाहिये ।

(१) रेणुबीज, तगर, भूरिछरीला, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु, रास्ना, थौणेय—ग्रन्थिपर्णी और नेत्रवाला—इनको पीसकर और गरम करके अथवा ऐसीही रूखी और गरम औषधियोंका मस्तकपर लेप करना चाहिये ।

(२) कायफलकी नास लेनेसे कफज शिरोरोग नाश हो जाता है ।

(३) पीपर, सोंठ, नागरमोथा, मुलेठी, सोया, नीलकमल और कूट—इन सबको समान-समान लेकर और पानीमें पीसकर लेप करनेसे कफज सिरदर्द आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(४) धूपसरल, अगर, करंज, देवदारु, रोहिषतृण और सैंधा-नोन—इन सबको एकत्र दूधमें पीस कर और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करनेसे कफज सिरका दर्द नाश हो जाता है।

नोट—पीपर, मोथा, सोंठ, मुलेठी, शतावर, कमल और चीता—इनको पीस-कर लेप करनेसे सिरका दर्द फौरन आराम हो जाता है।

वातपित्तज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) लघु पंचमूल दूधमें औटाकर नास लेनेसे वातपैत्तिक सिरदर्द आराम हो जाता है।

वातकफज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) वृहत्पंचमूल दूधमें औटाकर नास लेनेसे वातकफज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

त्रिदोषज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) दोनों पंचमूल दूधमें औटाकर नास लेनेसे त्रिदोषज दर्द सिर आराम हो जाता है।

(२) त्रिकुटा, कूट, हल्दी, गिलोय और असगन्ध---इनका काढ़ा नाकके द्वारा पीनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(३) सोंठका पिसा-छना चूर्ण २ माशे और दूध ८ तोले मिला कर नास लेनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) त्रिकुटा, पोहकरमूल, देवदारु, रास्ना, हल्दी और असगन्ध—इनका काढ़ा नाकके द्वारा पीनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) वेलगिरी और सोंठको दूधके साथ महीन पीस कर नस्य लेनेसे त्रिदोषज सिरका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) सोंठ और गुड़को एकत्र पीस कर सूंघनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(७) सैंधानोन और पीपर एकत्र पीस कर नास देनेसे त्रिदोषज दर्द सिर आराम हो जाता है।

(८) "षड़विन्दु तैल" (विधि आगे लिखी है) की छै-छै बूँदें नाकमें टपकाने और उसको सूंघने-मलनेसे सब तरह का सिर का दर्द आराम हो जाता है।

(९) अनन्तमूल, सोंठ और सफेद अपराजिता—इनको एकत्र पीस कर सिर पर लेप करनेसे त्रिदोषजनित सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) अनारकी कलियोंको कूट कर, फिर उनमें उनसे आधी "चीनी" मिलाकर नास देनेसे तत्काल सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(११) करंज, सहँजनेके बीज, तेजपात, मिश्री और वच— इनको एकत्र पीस कर नस्य देनेसे तत्काल सब तरहके सिरके दर्द आराम हो जाते हैं।

कृमिज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) त्रिकुटा, करंजके बीज और सहँजनेके बीज,—इनको एकत्र पीस कर और बकरीके मूत्रमें मिलाकर नस्य देनेसे कृमिजन्य शिरोरोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इन चीजोंको गोमूत्रके साथ सिल पर पीसकर नास देनेसे भी कीड़ोंकी वजहसे हुआ सिरका रोग आराम हो जाता है।

(२) अपामार्ग तेलकी नास देनेसे भी कृमिज शिरोरोग आराम हो जाता है। बनानेकी विधि आगे लिखी है।

नोट—कर्ण रोगमें लिखा हुआ अपामार्ग तैल और यह अपामार्ग तल भिन्न-भिन्न है—एक नहीं। वह अपामार्गके क्षारसे बनता और यह अपमार्गके बीज,

त्रिकुटा, हल्दी, नकछिकनीके पत्ते, हींग और बायबिड़ गके कल्क, गोमूत्र और तिलीके तेलसे बनता है ।

(३) कृमिजन्य शिरोरोगमें खूनकी नास देनेसे सिरके कीड़े नाश हो जाते हैं, अतः कृमिजन्य शिरो रोग भी नष्ट हो जाता है ।

(४) तीक्ष्ण धूआँ और नस्यसे कीड़ोंको नाश करना चाहिये । बदबूदार मांसकी धूनी देनी चाहिये । अनेक तरहके कृमि नाशक खाने-पीनेके पदार्थ खाने-पीनेसे भी कृमि नष्ट होकर कृमिजन्य शिरो-रोग आराम हो जाता है ।

(५) छोटे सहजनेके बीज और नीलाथोथा—इनको गोमूत्रमें एकत्र पीस कर अवपीड़ नस्य देनेसे कृमिज शिरका रोग आराम हो जाता है ।

(६) "विड़ंग तैलकी" नास देनेसे कृमिज शिरोरोग आराम हो जाता है । बनानेकी तरकीब आगे लिखी है ।

(७) सोंठ, मिर्च, पीपर, बिजोरा और सहँजनेके बीज—इनको बकरीके दूधमें पीसकर नस्य देनेसे कीड़े मर जाते हैं ।

(८) बायबिड़ंग, सज्जी, दन्ती और हींग—इनको सिल पर पीसकर लुगदी कर लो । फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र—सबको मिलाकर तेल पका लो । इस तेलकी नस्य देनेसे कीड़े अवश्य ही मर जाते हैं । परीक्षित है ।

(९) पीनस रोगमें कीड़े पड़ जानेसे भयानक सिर दर्द होता है, दोनो भौं और कनपटी सूज जाती हैं, साँसके साथ सड़ी हुई सरसोंकी खलकीसी बदबू आती है । उस दशामें कीड़े निकाले बिना पीनस और उससे हुआ सिरका दर्द आराम नहीं होता । अतः बाँसके कोमल कल्लेका रस १ छटांक और तारपीनका तेल १ तोले—दोनोंको मिलाकर नस्य देनेसे सब कीड़े बाहर आ जाते हैं ।

(१०) रीठेको पानीमें पीसकर, दो चार बूँद नाकमें टपकानेसे माथेके कीड़े मर जाते हैं ।

सूर्यावर्त्तकी चिकित्सा।

(१) नास लेने, घी और गुड़को मिलाकर पीने अथवा घेवर खानेसे सूर्यावर्त्त शिरोरोग यानी सूरजके साथ बढ़ने-घटने-वाला दर्द सिर आराम हो जाता है।

(२) सूर्यावर्त्त रोगमें शिरावेध करने, फस्द खोलने, दूध और घी मिलाकर नस्य देने एवं दूध और घी ही मिलाकर पिलाने और इन्हीमें मिलाकर दस्तावर दवा देनेसे सूर्यावर्त्त नाश हो जाता है।

(३) अदरखका स्वरस, वच और पीपल—इनकी अवपीडन नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त शिरोरोग आराम हो जाता है।

(४) भांगरेका स्वरस और बकरीका दूध—इन दोनोंको समान भाग लेकर, एकत्र मिलाकर और "धूप"में गरम करके नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त नष्ट हो जाता है। यह नुसख़ा इस रोग पर उत्तम है। परीक्षित है।

(५) अमलताशके पत्तोंका रस, चिरचिरेकी जड़का कल्क और नौनी घी—इनको एकत्र मिलाकर नास देनेसे सूर्यावर्त्त रोग आराम हो जाता है।

(६) दूधमें तिल पीस कर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त रोग आराम हो जाता है।

(७) धनिया, चन्दन, कासनी और ईसबगोल,—इन सबको "पोस्तके पानी"में पीसकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त आराम हो जाता है।

(८) ईसबगोलका लुआब सिर पर मलनेसे सूर्यावर्त्त शिरोरोग आराम हो जाता है।

(९) गुल रौग़न और कपूर मिलाकर नाकमें दो तीन बूँद मलनेसे सूर्यावर्त्त आराम हो जाता है।

नोट—हिकमतमें इस रोगको "शसावा" कहते हैं। यह रोग सूरजके साथ शुरू होना और दोपहर पीछे घटते-घटते शामको शान्त हो जाता है। यह रोग गरमीसे होता है।

अर्द्धावभेदककी चिकित्सा।

(१) स्नेहन, स्वेदन, विरेचन, धूप और स्निग्ध तथा गरम भोजनसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द नाश हो जाता है।

(२) वायबिड़ंग और काले तिल—बराबर-बराबर लेकर, दूधमें पीसकर लेप करने और इसीकी नस्य लेनेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द नाश हो जाता है।

(३) नाकके द्वारा केवल दूध या मिश्री-मिला दूध पीने अथवा नारियलका पानी पीने अथवा शीतल जल पीने अथवा घी पीनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक नामक शिरोरोग आराम हो जाते हैं। लोलिम्बराज महाशय भी कहते हैं :—

शिरसिते यदि शूलमतीव च।
दुषसि दुग्धमतः पिवनासया॥
परम चिन्तनशक्ति कमादरा दतितरा।
मनु भूतमिदमया॥

"हे मनुष्य! अगर तेरे सिरमें बहुत ही जोरका दर्द है, तो सवेरे ही उठकर नाकके द्वारा दूध पी, इससे शूल शान्त होगा। इस दवाकी शक्तिका पता नहीं—अचिन्त्य है, अत. किसी तरहका सन्देह मत कर, बड़े आदरसे इसे सेवन कर, यह दवा मेरी परीक्षा की हुई है।" आधासीसी पर सचमुच ही यह प्रयोग उत्तम है।

(४) तिलकी खलका रस, तेल, शहद और सैंधानोन—इन सबको मिलाकर लेप करनेसे अर्द्धावभेदक—आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है।

(५) शालपर्णीके पत्तोंको जलमें पीसकर नास देनेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है।

(६) चकवड़के बीज काँजीमें पीसकर लेप करनेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसी आराम हो जाती है।

(७) जो सिरमें अत्यन्त घोर दर्द हो, तो सूरज निकलनेके

समय, नाकके द्वारा, बराबरकी चीनी मिलाकर दूध पीओ। इससे अचिन्त्य शक्ति उत्पन्न होती और सब तरहके दर्द सिर आराम होते हैं।

(८) शारिवा, कमल, मुलेठी और कूट—इनको एकत्र जलमें पीसकर सिर पर लेप करने अथवा घेवर खानेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक दोनों तरहके दर्द सिर आराम हो जाते हैं।

(९) दशमूलके काढ़ेमें घी और सेंधानोन मिलाकर नस्य देनेसे अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त तथा सिरकी और तरहकी पीड़ायें नाश हो जाती हैं।

(१०) केशरको ज़रासे घीमें भूनकर और उसमें बराबरकी मिश्री मिलाकर एवं बकरीके दूधमें पीसकर पीनेसे पित्तजन्य रोग, अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त और अन्य शिरकी पीड़ायें आराम हो जाती हैं।

(११) चिरचिरेके बीज, सोंठ, मिश्री और शहद—इन सबको एकत्र पीस और मिलाकर नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक सिरके दर्द आराम हो जाते हैं।

(१२) केशरको घीमें भूनकर और मिश्री मिलाकर नस्य देनेसे वातरक्तजन्य शिरोरोग तथा भौं, कनपटी—शंख, कान, नेत्र और सिरका दर्द, अर्द्धशूल, शंखक और अर्द्धावभेदक शिरोरोग नाश हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(१३) सिरसकी जड़ और सिरसके फल अथवा सिरसकी छाल और मूलीके बीज अथवा बच और पीपल—इनमेंसे किसी एककी अवपीडन नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक रोग आराम हो जाते हैं।

(१४) ख़रगोशके सिरके रसमें "कालीमिर्च का चूर्ण" मिलाकर, भोजनसे पहले, सात दिन तक, खानेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग आराम हो जाते हैं।

(१५) पीपर, मिर्च और हरड़—इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(१६) मुलेठी, सारिवा, वच और मिर्च इनको समान-समान लेकर और काँजीमें पीसकर लेप करनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(१७) घीमें सधानोन महीन पीसकर नास लेनेसे आधासीसी आराम हो जाती है। तीन दिन बराबर सूँघनेसे यह रोग फिर नहीं होता। परीक्षित है।

(१८) मिश्री, केशर और दाख समान-समान लो और मक्खन चौथाई लो, फिर सबको मिलाकर नस्य दो। इससे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग आराम हो जाते हैं। यह नस्य वातपित्त-जन्य सिरके रोगोंमें हितकारी है।

नोट—अर्द्धावभेदक रोगमें सूर्यावर्त्त नाशक विधि भी की जा सकती है।

(१९) अनन्तमूल, नीलकमल, कूट और मुलेठी—इनको काँजी में पीसकर और "घी" मिलाकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त, अर्द्धावभेदक और अनन्तवात शिरोरोग आराम हो जाते हैं।

(२०) हुलहुलके बीज हुलहुलके रसमें पीसकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग नाश हो जाते हैं।

(२१) वायविडंग और काले तिल एकत्र पीसकर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग नाश हो जाते हैं।

(२२) चूल्हेकी जली मिट्टी और गोल मिर्च बराबर-बराबर लेकर और पीसकर नास लेनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(२३) निर्मलीको पानीमें घिसकर, उसकी चार बूँद नाकमें टपकानेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है।

(२४) तिलके तेलमें कुछ "नमक" मिलाकर और गरम करके नस्य देनेसे आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

शंखक शिरोरोगकी चिकित्सा।

नोट—सूर्यावर्त्त रोगमें स्वेद को छोड़कर जो चिकित्सा लिखी है, वही सब शंखक रोगमें भी करनी चाहिये।

(१) दूध और घी मिलाकर मुंह या नाक द्वारा पीने और इन्हीं की नस्य लेनेसे शंखक रोगमें लाभ होता है।

नोट—शंखक रोगमें सेवन करते समय इस नुसख़ेमें "मिश्री" अवश्य मिला लेनी चाहिये।

(२) शतावर, काले तिल, मुलेठी, नीलकमल, दूब और पुनर्नवा—इनको एकत्र पीसकर तथा "घी और वच" मिलाकर नस्य देनेसे शंखक रोग नाश होता है।

(३) सफेद चन्दन, पुण्डरीक (पुण्डेरिया), मुलेठी, नीलकमल, पद्माख, वेंत, दूब, लामज्जक तृण, दारुहल्दी, हल्दी, मंजीठ, रीठा और खस—इन सबको एकत्र मिलाकर और पीसकर लेप करनेसे शंखक रोग आराम हो जाता है।

(४) सूर्यावर्त्त नाशक अव पीड़न भी इस रोगमें हितकारी हैं।

(५) दारुहल्दी, हल्दी, मंजीठ, नीमके पत्ते, खस की जड़ और पद्माख—इनको पानीमें पीसकर कनपटीपर लेप करनेसे शंखक रोग आराम होता है।

(६) मिश्री, दूध और जल इनको मिलाकर तरड़े देने अथवा केवल शीतल जलके तरड़े देने, शीतल दूध सेवन करने और दूध वाले वड़ आदि वृक्षोंका कल्क खानेसे शंखक आराम होता है।

(७) नाकसे घी पीने और मस्तकपर बकरीका दूध या शीतल जलका तरड़ा देनेसे शंखक रोग नाश होता है।

(८) केशर को घीमें भूंजकर और मिश्री मिलाकर, सूर्योदयके समय, नस्य देनेसे शंखक, अनन्तवात, सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक आराम होते हैं।

(१०) रूखे पदार्थ या प्रयोगोंके सेवन करनेसे वायु कुपित हो

कर शिर कम्प करतो है। उस दशामें गिलोय, खिरेंटी, रास्ना तथा अन्यान्य वातनाशक द्रव्य, तैल घृतादि और सुगन्धित द्रव्य प्रयोग करने तथा इन्हींके द्वारा स्नेह, स्वेद, नस्य और तर्पण देनेसे लाभ होता है।

नोट—कफज, कृमिज और त्रिदोषज शिरोरोगोंके सिवा और सभी शिरोरोगोंमें "वायु" प्रधान रहता है . अतः इस बातको ध्यानमें रखकर इलाज करना चाहिये। कम्प और दाहकी पीड़ामें वातव्याधिके समान चिकित्सा करनी चाहिये। शिरोरोगमें विधिपूर्व्वक नस्य देना हितकारी है।

अनन्तवात शिरोरोग की चिकित्सा ।

(१) अनन्तवात शिरोरोगमें सूर्य्यावर्त्तके समान इलाज करना चाहिये। अनन्तवात की शान्तिके लिये फस्द खोलना या नस वेधकर खून निकलवाना हितकारी है। रोगीको शहदमें लपेटे हुए घीसे तर गूंजे, बालूशाही, मालपूए और चूरमा आदि वातपित्त नाशक आहार पथ्य और रोगनाशक हैं।

(२) हरड, बहेड़ा, आमला, हल्दी, गिलोय, चिरायता और नीम —इनके काढ़ेमें "गुड़" मिलाकर नास देनेसे क्षणमात्रमें भौं, कनपटी, कान, आँख और आधे मस्तकका शूल ये सब नाश हो जाते हैं।

(३) केशरको घीमें भूनकर और मिश्री मिलाकर सूर्योदयके समय नस्य देनेसे वातरक्त जन्य शिरोरोग दूर होता है तथा भौं, कनपटी, कान, आँख और सिरका दर्द, अर्धशूल, शंखक और आधासीसी का दर्द ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित नुसखा है।

नोट—केशरको घीमें भूनकर, बकरीके दूधमें पकाकर और मिश्री मिलाकर पीनेसे सूर्य्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक आदि सिरके दर्द नाश हो जाते हैं। अगर ऊपर की विधिसे नस्य दी जावे और इस विधिसे पकाकर दूध पिलाया जावे—तो निश्चय ही लाभ हो। परीक्षित है।

समस्त शिरोरोग नाशक नुसखे।

(१) मुलेठी ६ रत्ती और मुलेठीसे चौथाई—डेढ़ रत्ती शुद्ध वत्स-नाभ—इनको काजलके समान महीन पीस कर, नाकमें एक सरसों के दाने बराबर डालनेसे सब तरहके दर्द सिर आराम हो जाते हैं। भावमिश्र महोदय कहते हैं, कि इस नुसखेकी अनेक बड़े-बड़े वैद्योंने परीक्षा की है और हमने स्वयं भी आज़माइशकी है।

(२) सीपका चूर्ण और नौसादरका चूर्ण एकत्र मिलाकर नास लेनेसे मस्तकका दर्द अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—इन दोनोंको थोड़े से पानीमें खूब महीन करके सूँघनेसे जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(३) सौ बार धोये हुए गायके घीकी मालिश करनेसे सिरका दर्द जाता रहता है।

(४) दालचीनीका तेल लगानेसे सिर दर्द, ख़ासकर बादीका सिर दर्द, आराम हो जाता है।

(५) चन्दनका बढ़िया तेल मलनेसे भी दर्द सिर आराम हो जाता है।

(६) आध पाव खोयेकी पट्टी मस्तक पर बाँधनेसे सब तरहके सिरके दर्द नाश हो जाते हैं।

(७) रोग़न गुल, रोग़न बादाम, चमेलीका तेल अथवा काहूका तेल—इनमेंसे कोई एक तेल सिर पर लगानेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(८) फस्द खुलवाने या लङ्घन करनेसे भी सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(९) वायविड़ंग और काले तिल वरावर-वरावर लेकर और पीसकर लेप करनेसे सिरका दर्द जाता रहता है।

(१०) जमालगोटा पानीमें घिस कर, सींकमें लगाकर, सिर पर लेप करने और एक ही मिनट वाद गीले कपड़ेसे पोंछ डालनेसे वीसियों सालका पुराना दर्द सिर एक ही वार लगानेसे अच्छा हो जाता है। एक वैद्यमित्र इसे अपना परीक्षित नुसख़ा कहते हैं।

नोट—इस दवाको सिरमें एक मिनटसे ज़ियादा मत रखना—नहीं तो आवला या फफोला हो जायगा। अगर भूलसे फफोला हो जाय, तो कोई मरहम लगा देना।

(११) महुआ, मुलेठी, वायविड़ंग, भांगरा और सोंठ—इनको समान-समान लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी लेकर सवको मिलाकर पका लो और जव घी मात्र रह जाय छान लो। इस घीकी नस्य देनेसे सव तरहके सिरके दर्द, वाल गिरना और दाँत टूटना आदि अनेक रोग नाश हो जाते हैं। इससे दाँत मजवूत होते, वल वढता और गरुड़कीसी दृष्टि हो जाती है। इसका नाम "षड़विन्दु घृत" है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई इस योगमें "महुआ" नहीं लेते, पर लेना अच्छा है।

(१२) कालाज़ीरा, नागरमोथा, सोंठ, मुलेठी, सौंफ, नील-कमल और असनपर्णी—इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे सिरका दर्द तत्काल आराम हो जाता है।

(१३) हरड वहेड़ा, आमला, हल्दी, गिलोय, चिरायता, नीमकी छाल और गुड़—इनका काढ़ा सव तरहके सिरके रोगोंको नाश करता है।

(१४) केशरको घीमें भूंजकर और मिश्री मिलाकर नाकमें सूंघनेसे सव तरहके सिरके दर्द नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) कायफल, मिर्च, अरण्डकी जड़ और कूट—इन सवको

बराबर-बराबर लेकर और सिलपर पानीके साथ पीसकर गरम कर लो और फिर सिर पर लेप करो। इससे सब तरहके सिर दर्द नाश हो जाते हैं।

(१६) नीचे लिखा हुआ छत्तीसका यन्त्र, सवेरे ही, भोजपत्र पर लिखकर और काले डोरेमें लपेट कर सिर पर बाँधनेसे अनेक तरहके शिरके रोग नाश हो जाते हैं :—

छत्तीसका यन्त्र

१५	८	१३
१०	१२	१४
११	१६	९

छत्तीसका यन्त्र।

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

नोट—चार खानेवाला यंत्र ज़ियादा विश्वास योग्य है। तीन खानेवालेको भी पाठक परीक्षा कर देखें। मूल ग्रंथकारने चार खानेवाला ही लिखा है।

शिरोरोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

चन्द्रकान्त रस।

रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, ताम्बा भस्म, लोहा भस्म और शुद्ध गन्धक—बराबर-बराबर ६।६ माशे लेकर, "थूहरके दूध"के साथ एक दिन खरल करो और तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली "शहद"के साथ सेवन करनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक आदि शिरोरोग रोग नाश हो जाते हैं।

विड़ंग तैल।

वायविडंग, सज्जी, दन्ती और हींग—इनको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर आध सेर सरसोंका तेल, दो सेर गोमूत्र और लुगदीको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलकी नस्यसे कृमिजन्य शिरोरोग (सिरमें कीड़े होनेकी वजहसे होनेवाला दर्द सिर) आराम हो जाता है।

हरिद्राद्य तैल।

हल्दी, दारुहल्दी, पीपर, धूप सरल, देवदारु, वायविडंग, चीता, बेलगिरी, रोहिषतृणके पत्ते, गन्धक, काला नोन, दाख, मंजीठ, मुलेठी, खिरेंटी, बेंतकी जड़, पद्माख, खस और चन्दन इनको चार-चार तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर एक सेर तिलीका तेल, यह लुगदी और दो सेर गायका दूध—सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलकी नस्य देनेसे कफज और त्रिदोषज शिरोरोग नष्ट हो जाते हैं। इनके सिवा उपजिह्वा, गण्डमाला, कंठशालूक, अर्बुद, विदारिका, मांसपाक, मुँह, सिर और गलेकी पीड़ा, दाँत चलना, हनुकम्प और अन्यान्य ऊर्द्ध जत्रु रोग नाश होते हैं।

नोट—इस तेलके बनाने में नियमसे काम नहीं लिया गया, मूल ग्रन्थकारने ही स्वय यह तोल लिखदी है। दूने दूधमें ही तेल पकानेको लिखा है।

कुमारी तैल।

घीग्वारका स्वरस ६४ तोले, धतूरेका स्वरस ६४ तोले, भांगरेका स्वरस १२८ तोले, गायका दूध २५६ तोले तथा तिलका तेल ६४ तोले तैयार रखो।

मुलेठी, सुगन्धवाला, मॅजीठ, नागरमोथा, नख, कपूर, भांगरा, इलायची, हरड़, पद्माख, कूट, काला भाँगरा, अड़ूसा, तालीसपत्र, राल, तेजपात, वायविड़ंग, सोया, असगन्ध, अरण्ड, वड़ और नारियल—इन सबका एक-एक तोले कल्क बनाकर रख लो।

अब लुगदी, तेल और ऊपरके सब स्वरसोंको मिलाकर तेल पकालो और खूब अच्छी तरह छानकर, किसी सुगन्धित किये हुए बर्तनमें भर दो और तीन दिन तक जमीनमें गाड़ रखो ।

इस तेलकी मालिश करने और सिरमें डालनेसे अर्दित, मन्या-स्तम्भ, शिरोरोग, तालुवेकी सूजन, नाककी सूजन, आँखोंकी सूजन, मूर्च्छा, हलीमक, हनुग्रह, बहरापन और कानका दर्द—ये सब रोग आराम होते हैं । यह तेल सर्यावर्त्त पर खास तौरसे चलता है ।

नोट—घीग्वारको "कुमारी" भी कहते हैं । इस तेलमें घीग्वार या कुमारी प्रधान है, इसीसे इस तेलका नाम "कुमारी तेल" रखा गया गया है ।

षड्विन्दु तेल ।

अरण्डकी जड़, तगर, सौंफ, जीवन्ती, रास्ना, सेंधानोन, जल-भाँगरा, वायबिडंग, मुलेठी और सोंठ—इन सबको दो-दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी या कल्क बनालो ।

अब काले तिलोंका तेल आध सेर, बकरीका दूध दो सेर और भाँगरेका रस दो सेर तथा ऊपरकी लुगदी को मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ । जब तेल मात्र रहजाय, उतार कर छानलो । इसका नाम "षड्विन्दु तैल" है ।

इस तेलकी नस्य देनेसे अथवा छै बूँद नाकमें डालनेसे सब तरहके सिरके रोग आराम हो जाते हैं । यह तेल गिरते हुए बाल, हिलते हुए दाँत और जिनकी जड उखड गई है उन दाँतोंको मजबूत करता है तथा गरुडके समान दृष्टि कर देता है । इससे नेत्र और बाहुओंके बलकी वृद्धि होती है । परीक्षित है ।

षड्विन्दु घृत ।

मुलेठी, वायबिडंग, भाँगरा और सोंठ—इनको अढ़ाई-अढाई तोले लेकर पानीके साथ पीस लो । फिर गायका घी आध सेर, लुगदी और दो सेर बकरीका दूध—सबको मिलाकर आगपर

पकाओ, जब घी मात्र रह जाय छान लो। इस घी की नस्य देनेसे सब तरहके सिरके रोग आराम हो जाते हैं। इनके सिवाय वे सब रोग भी आराम होते हैं, जो षट्बिन्दु तैलसे आराम होते हैं।

अपामार्ग तैल।

अपामार्गके बीज, त्रिकुटा, हल्दी, नकछिकनीके पत्ते, हींग और वायविड़ंग---इन सबको तीन-तीन तोले ले लो और पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। अब तिलीका तेल एक सेर और गोमूत्र चार सेर तथा ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलकी नास लेनेसे सिरके कीड़े नाश हो जाते हैं।

शिरशूलान्तक रस।

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक दो-दो तोले खरलमें डालो और घोटकर बिना चमककी कज्जली कर लो, फिर इसमें दो तोले "लोह-भस्म" भी मिला दो।

अब निशोथ दो तोले, शुद्ध गूगल ८ तोले, त्रिफलेका चूर्ण ४ तोले, कूट ६ माशे, मुलेठी ६ माशे, पीपर ६ माशे, सोंठ ६ माशे, गोखरू ६ माशे, वायविडंग ६ माशे और दशमूल ६ माशे—इन सबको पीस-छानकर उसी कज्जलीमें मिलादो और ऊपरसे "दशमूलका काढ़ा" डाल-डालकर दिनभर खरल करो और रातको सुखा दो। सवेरे ही उसे "घी"के साथ फिर खरल करो और चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक या दो गोली "शहद" या "पानी" अथवा "बकरीके दूध"के साथ खानेसे सब तरहके सिरके रोग आराम हो जाते हैं।

सब तरहके सिरदर्दोंपर हकीमी नुसख़े।

गरमी-सर्दीके दर्द सिर पर नुसख़े।

(१) खारीनोन तीन तोले चार माशे, गेंहूँकी भूसी दो मुट्ठी, बेरकी पत्ती आध पाव, खतमीकी पत्ती आधपाव, मकोयके पत्ते आधपाव और खतमीके बीज ७ तोले—इन सबको दो सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, सुहाने-सुहाते गरम पानीसे पैरोंको धोओ। इसे "पाशोया" कहते हैं। इससे माद्दी या साजिज सिरका दर्द ; यानी वातादि चारों दोषोंकी वजहसे हुआ या इनके बिना हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है।

नोट—अगर ऊपरकी चीजोंमेंसे सब चीज़े न मिलें तो गेहूँकी भूसी और खारी नोनको पानीमें औटाकर पाँव धोनेसे भी लाभ होगा। सिरके दर्दमें पाशोया करना यानी दवाके पानीसे पैर धोना लाभदायक है। सेनाके पुत्र शेख अबूअली साहब लिखते हैं, कि मैं बहुधा सिर दर्दवालेके हाथ पैरों पर गरम पानीके तरड़े उस समय तक दिलाता रहता था जब तक कि यह न मालूम होता कि कोई चीज सिरसे पाँवोंकी तरफ उतर रही है। इस तरह करनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(२) पाँव दबाना और तलवे सुहलाना गरमीकी और सर्दीकी दोनों शिर पीड़ाओंमें लाभदायक है। दवाओंके पानी या गरम पानीसे पाँव धोना और पैरके तलवोंपर झाँवे करना---जिस तरह सब तरहकी शिर पीड़ाओंमें लाभदायक है ; उसी तरह गरमीकी शिर पीड़ामें शीतल जलमें नहाना लाभदायक है। यह बात हकीम अबूमाहरने लिखी है। सब तरहके सिरके रोगोंमें आरामसे रहना चाहिये। खाने-पीनेमें

कमी करनी चाहिये। बहुत हिलना जुलना मुनासिब नहीं है। दस्त-क़ब्ज करने वाले हानिकर पदार्थ न खाने-पीने चाहिएं।

(३) एक तगारमें पानी भर कर अपने सामने रख लो और अपने तईं चादरसे छिपा लो। फिर कुछ मिट्टीके ढेले आगमें लाल करो। फिर उनमेंसे एक-एक ढेला उस पानीमें डालो और सिर झुकाकर उसकी भाफका बफारा लो। इस तरह बफारे लेनेसे सिरका दर्द आराम हो जायगा।

(४) काकजंघा या मिस्सीके छोटे-छोटे टुकड़े करके औटाओ और सिरको बफारा दो। इसके बाद चन्दन दो भाग और रैंडी एक भाग पानीमें पीसकर सिर पर लेप करो। इससे सर्दी और गरमी दोनों तरहका सिर दर्द आराम हो जाता है।

(५) भुने हुए और छिले हुए चने ३ तोले लेकर और महीन पीसकर ४ तोले बादामके तेलमें भूँज लो। फिर निशास्ता ३ तोले, सफेद खशखाशके बीज ३ तोले और मिश्री १६ माशे तथा बादामके तेलमें भूंजा हुआ चनोंका आटा—सबको मिलाकर गायके दूधमें डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ, जब हरीरासा बन जाय उतार लो। दूसरी कड़ाहीमें ३ तोले घी डालकर गरम करो; जब घी आजावे, उसमें पकाया हुआ हरीरा डालकर चलाओ, जब एक दिल हो जाय उतार लो। इस हरीरेके गरमागरम खानेसे सब तरहका सिर दर्द आराम होता और सिरमें खूब ताक़त आती है। कमज़ोर दिमाग़ वालोंको तो यह हरीरा अमृत ही है।

(६) सफेद चन्दन और तज बराबर-बराबर पानीमें घिसकर और कुछ गरमकरके लगानेसे गरमी और सर्दी दोनों तरहका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(७) तरबूज़के सफेद बीज और मुचकुन्दके फूल—दोनोंको पानीमें महीन पीस कर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे गर्मी और सर्दी की वजहसे हुआ दर्द सिर आराम हो जाता है।

नोट—अगर दोनों चीजें न मिलें तो किसी एकके लेपसे भी लाभ हो सकता है।

(८) दस, पन्द्रह या बीस ग्रेन ब्रोमाइड आफ पुटास आधी छटाँक पानीमें मिला लो और शीशी पर चार दाग़ लगा दो। एक-एक दाग़ दवा खानेसे सब तरहका सिर दर्द आराम हो जाता है। यह दवा बहुत ही उत्तम है।

केवल गरमीके सिरदर्द पर नुसख़े।

(१) धनिया ४ माशे और काहू ४ माशे—पानीमें पीस-छान कर और थोड़ी सी "चीनी" मिलाकर तथा १ तोला "ईसबगोल" छिड़ककर पीनेसे गरमीका सिर दर्द निश्चय ही आराम हो जाता है।

नोट—चीनीके बदले दो तोले शर्बत नीलोफर मिलाकर पीनेसे और भी जियादा लाभ होता है।

(२) कपूर और चन्दन—गुलाब जलमें पीसकर नाकमें टपकाने से पित्तका सरसाम और सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(३) कद्दू, काहू, हरा धनिया, हरी कासनी और मकोयकी पत्तियाँ—इन सबके रसोंकी ४।५ बूँद नाकमें टपकानेसे पैत्तिक सरसाम और गरमीसे हुआ दर्द सिर आराम हो जाता है।

नोट—इनमेंसे दोदो के रसकी या एक हीके रसकी बूँदे नाकमें टपकानेसे भी लाभ होता है।

(४) कपूर या चन्दन सूँघने अथवा दोनों मिलाकर सूँघने अथवा खीरा ककड़ी सूँघनेसे गरमीका सिर दर्द आराम हो जाता है।

(४) ईसबगोलका लुआब ख़तमीके फूलोंमें मिलाकर पतला-पतला लेप करने और इसी दवाके पीनेसे गरमीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(५) ककड़ीके टुकडे और कद्दूके ताज़ा छिलके सिरपर रखनेसे गरमीका दर्द सिर जाता रहता है।

(६) ख़तमीके बीज, धनिया और गेरू—इनको पानीमें पीसकर

सिर और माथे पर लेप करनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(७) मह्दीके फूल पानीमें पीसकर मलनेसे गरमीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(८) काहूके बीज पानीमें पीसकर माथे पर लगानेसे गरमीका सिर दर्द जाता रहता है।

(९) तिलके वृक्षकी पत्तियाँ पानी या सिरके में पीसकर सिरपर मलनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१०) खुरफेके पत्ते पानी या सिरकेमें प.सकर लगानेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(११) सफेद चन्दन पानीमें घिसकर सिर पर लगानेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है। अगर घिसती समय ज़रासा कपूर भी मिला लिया जाय तो और भी अच्छा।

(१२) तालाब या कूएंकी काई सिर पर मलनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१३) धनिया महीन पीसकर और अण्डेकी सफेदीमें मिलाकर मलनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१४) जौका आटा पानीमें घोलकर लगानेसे गरमीका सिर दर्द आराम हो जाता है।

(१५) लिसोढ़ेका लुआब सिर पर लगानेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१६) सालकी लकड़ी जिसे साज भी कहते हैं, पानीमें घिसकर लगानेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१७) गुल रौग़नमें अफीम पीसकर सिर पर मलनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१८) कासनीके बीज गुलाबजल या पानीमें पीसकर मलनेसे गरमीका सिर दर्द आराम हो जाता है।

(१६) मेंहदीकी पत्तियाँ पीसकर सिर और माथे पर लगानेसे गरमीकी शिर पीड़ा आराम हो जाती है ।

(२०) बकायनके पत्ते पीसकर सिर पर लगानेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(२१) शीतल चीनी अर्क़ गुलाबमें पीसकर सिर पर लगानेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(२२) अनार के पेड़की जड़ पानीमें पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(२३) दो तोले इमली पानीमें भिगोकर मल लो ; फिर उसमें चीनी मिलाकर पीलो । इससे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(२४) छिले हुए जौ, कद्दूके टुकड़े, काहूके बीज, ईसबगोल, बनफशा, खतमीके बीज और नीलोफर—इनको जलमें औटाकर सिरपर तरड़ा देनेसे गरमीका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

नोट—मुजिज देनेके बाद अगर यह तरड़ा दिया जाय, तो अतीव लाभ हो ।

(२५) बकरीका मक्खन सिर पर मलनेसे गरमी और खुश्की दोनोंमें से किसी कारणसे हुआ सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(२६) चूना घीमें मिलाकर मलनेसे गरमीका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(२७) बनफशा १ तोले, नीलोफर १ तोले, कासनी ६ माशे, गुलाबके फूल ६ माशे, खतमी खुब्बाजी २ तोले, लिसौढ़े ३ दाने और उन्नाब ३ दाने—इन सबको आध सेर पानीमें औटाओ, जब आधा पानी रह जाय छान लो और ३ तोले "तुरंजबीन" मिलाकर रोगीको पिला दो । तीन दिनमें विकार और सिरकी पीड़ा अवश्य जाती रहेगी और पेट भी नरम और साफ हो जायगा ।

सरदीके सिरदर्द पर हकीमी नुसखे ।

(१) कालीमिर्च, पीपल और लौंग—इन सबको या इनमें से

दो एक को "सौंफके अर्क़"में पीस कर नाकमें टपकानेसे सरदीका दर्द सिर और सब तरहके शीतके रोग नाश हो जाते हैं ।

(२) जूफेकी पत्तियोंका कपड़ेमें छाना हुआ स्वरस नाकमें टपकानेसे सदा और कफका सिर दर्द आराम हो जाता हैं ।

(३) कटहलकी जड़ उबाल कर, उसकी कुछ बूंदें नाकमे टपकानेसे सर्दीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(४) वायविड़ंग, सोंठ और गुड़—तीनोंको गरम जलमे पीस कर नाकमे टपकानेसे सरदीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(५) चमेलीके फूल गुल रौग़नमे मल कर नाकमें टपकानेसे सिरकी तरी निकल आती और ब्रह्माण्ड साफ हो जाता है ।

(६) सब तरहके गरम इत्र सूंघनेसे भेजेमें ताक़त आती है ।

(७) सोंठको रैंडोके तेलमें घिसकर और गरम करके सिर पर लगानेसे सरदीका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(८) सहँजनेके पत्ते पानीमें पीसकर और गरम करके लगानेसे सरदीका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(६) कलौंजी या काला जारा पानीमें पीस कर मलनेसे सरदीका सिर दर्द नाश हो जाता है ।

(१०) रैंडी, सोंठ और अजवायन—पानीमे पीस कर और गरम करके सिर पर लगानेसे सरदीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(११) नरकचूर पानीमे पीसकर—पैरोंके तलवों पर मह्दीको तरह लगानेसे सरदीका दर्द सिर आराम हो जाता है ।

(१२) निबौलियोंकी मींगी पीसकर सिर पर लगानेसे सरदीकी शिरपीड़ा शान्त हो जाती है ।

(१२) रेंडी और एलुआ पानीमे पीसकर और गुनगुने करके लेप करनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है ।

(१३) एक बादामकी मींगी सरसोंके तेलमें पीस कर सिरपर मलनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१४) पीररका महीन चूर्ण नाकमें फूँकनेसे सरदीकी शिर-पीडा आराम हो जाती है।

(१५) मोमयाईको रोग़न बनफशामें घोलकर नस्य देनेसे सरदीका मस्तक शूल आराम हो जाता है।

आधासीसी नाशक हकीमी नुसख़े।

(२५) सफेद कनेरकी पत्तियाँ छायामें सुखाकर महीन पीस-छान लो। जिस तरफ सिरमें दर्द हो उस तरफके नथनेमें, इसमें से दो चाँवल-भर दवा फूँकनेसे खूब छींकें आतीं, नाकसे बहुतसा पानी गिरता और सिरका दर्द आराम हो जाता है। यह नस्य सचमुच ही बड़ा अच्छा है।

(२६) लाहौरी साबुन थोड़ेसे पानीमें घिसकर दोनों आँखोंमें या जिस तरफ दर्द है उस तरफकी आँखमें, सुरमेंकी तरह, आँजनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(२७) एक तोले गुलक़न्द-बनफशा नित्य खानेसे सिरका दर्द, आधासीसी, हृदयके रोग और खाँसी ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—बनफशाके फूल १ भाग और कन्द या मिश्री २ भाग मिलाकर ममल-नेसे "गुलकन्द बनफशा" तैयार हो जाता है।

(२८) गाजरकी पत्तियोंके ऊपर-नीचे घी चुपड़कर उन्हें तवे पर गरम करो और उनका स्वरस निचोड़ लो। इसमेंसे कुछ बूँदें कानमें टपकाने और दो तीन बूँद नाकमें टपकानेसे बहुत छींक आतीं और आधासीसी आराम हो जाती है। यह नुसख़ा "मुजर्रबात अकबरी"का है; अतः हकीम साहब या शाहन्शाह अकबरका आज़मूदा है।

(२९) जमालगोटा पानीमें पीस लो। जिस तरफ सिरमें दर्द

न हो उस तरफ मलो। जब जलन होने लगे, थोड़ेसे गरम पानीसे धो डालो। इस तरह करनेसे आधे सिरका दर्द अवश्य आराम हो जायगा।

नोट—एक मिनट बाद या जलन होते ही दवाको गरम जलसे धो डालना ज़रूरी है, देर करनेसे फफोला होनेका भय है। कहते हैं, इस उपायसे बीस-बीस सालके पुराने दर्द सिर आराम हो गये।

(३०) जंगली कबूतरकी बीट और राई एक साथ पीसकर सिर पर लगानेसे पुरानी आधासीसी आराम हो जाती है।

(३१) मुर्ग़ीकी बीट और कालीमिर्चे बराबर-बराबर लेकर पीस लो। अगर दर्द सिरमें बायीं तरफ हो तो इस दवाको दाहनी तरफ लगाओ और यदि दर्द दाहनी ओर हो तो बायीं तरफ लगाओ।

(३२) हरड़के बीज गरम जलमें पीसकर लगानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(३३) गुल दुपहरियाके फूलकी पंखड़ियोंका स्वरस नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

नोट—यह मशहूर फूल है। दोपहरके समय खिलता है, इसीसे इसे गुल दोपहरिया कहते हैं।

(३४) नाजबोंके पत्तोंके स्वरसकी चन्द बूँदें अगर दाहनी ओर दर्द हो तो नाकके बायें नथनेमें और बायीं ओर दर्द हो तो दाहने नथनेमें टपकानेसे आधासीसी जाती रहती है।

(३५) एक नग कालीमिर्च और उसके बराबर मक्खीका गू —पुत्र वाली स्त्रीके दूधमें पीसकर नाकमें टपकाने और आँखोंमें भी आँजनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(३६) अरीठेके झाग गरम करके, अढ़ाई बूँदें दोनों नथनोंमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

नोट—अरीठेको पानीमें रगड़नेसे झाग आ जाते हैं। उन झागोंको आग पर गरम करके नाकके दोनों छेदोंमें टपकाओ।

(३७) सिरसके बीज पानीके साथ पीसकर, एक कपड़ेमें, लुगदीको रख लो। जिस तरफ सिरमें दर्द हो, उस तरफके नथनेमें उसी पोटलीसे अढ़ाई बूँदें टपकाओ; अवश्य आधासीसी आराम हो जायगी।

(३८) नौसादर दो रत्ती और कालादाना दो रत्ती—दोनोंको पानीमें पीसकर और गायके घीमें मिलाकर नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(३९) थोड़ीसी प्याज़, महुएके बीज, और चार कालीमिर्चें पानीके साथ पीस लो। अगर दाहनी तरफ दर्द हो तो नाकके बायें नथनेमें और जो बायीं तरफ पीड़ा हो, तो दाहने नथनेमें इस दवाकी चन्द बूँदें टपकाओ। इससे आधासीसी अवश्य आराम हो जायगी।

(४०) कालीमिर्च गायके घीमें पीसकर नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(४१) समन्दर फलकी मींगी स्त्रीके दूधमें पीसकर नाकके नथनेमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है। अगर दर्द दाहनी ओर हो तो नाकके बायें नथनेमें दवा टपकाओ और अगर बाईं तरफ दर्द हो तो दाहनी ओरके नथनेमें टपकाओ।

(४२) बन्दाल पानीमें भिगोकर और मल छानकर दो बूँद नाकमें टपकानेसे सिरकी मलामत बहकर निकल जाती है। सिरके रोगोंके लिए बन्दाल सर्वश्रेष्ठ दवा है। बादीसे होनेवाले आधा सीसीके दर्द पर भी यह नुसख़ा खूब काम करता है।

(४३) अगर अजीर्णसे आधा सीसीका दर्द हो, तो १० । १५ जंगी हरड़ कूट-छानकर अन्दाज़का "नमक" मिला दो। इस चूर्णको गरम या ताज़ा पानीके साथ फाँकनेसे पेट साफ़ होकर आधासीसी आराम हो जाती है। साथ ही सोंठ, अफीम और गोंदको पानीमें पीसकर सिर पर लेप भी करना चाहिये।

(४४) करंजके बीज गरम जलमें घिस कर थोड़ासा गुड़

मिलाओ और गरम करके नास लो। इस उपायसे आधासीसी जाती रहती है।

(४५) गङ्गावतीका रस दो तीन दिन सिर पर लगाकर धूपमें बैठनेसे आधासीसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४६) चिरमिटीकी जड़ पानीमे पीसकर नास लेनेसे आधासीसी तत्काल आराम हो जाती है।

(४७) कड़वी तोरईका थोड़ासा चूर्ण सावधानीसे नाकमें डालनेसे, पानी बहकर, आधासीसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४८) कागज़ी नीबूके रसकी २ बूँदें नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

शिरोरोग नाशक मिश्रित नुसखे।

(१) केवड़ेके अर्कमें सफेद चन्दन घिसकर, एक काँचकी शीशीमें रख कर, ऊपरसे बारीक कपड़ा बाँध दो। इस शीशीको बारम्बार हिलाहिला कर सूंघनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सफेद चिरमिटीकी जड़ धोकर पानीमें घिसो और एक कपड़ेमें रख कर सात दिन तक नाकमें रस टपकाओ। इससे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है। रस रोज ताजा तैयार करना चाहिये।

(३) केशर और बादामको गायके दूधमें पीसकर नास लेनेसे मस्तकके रोग आराम हो जाते हैं।

(४) कुलींजनका चूर्ण सूंघनेसे छींकें आतीं और मस्तक हल्का होकर सिरका दर्द मिट जाता है। परीक्षित है।

(५) कूट और अरण्डकी जड़ कांजीमें पीसकर लेप करनेसे मस्तक-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(६) गूगलको जलमें पीसकर सिरपर लगानेसे सिरका दर्द जाता रहता है।

(७) छुहारेकी गुठली पानीमें घिस कर सिर पर लगानेसे दर्द सिर जाता रहता है।

(८) कानों और आँखोंके बीचमें, कनपटी पर, चूनेकी कली लगा देनेसे सर्दीका दर्द सिर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(९) सोंठको दूधमें पकाकर सूँघनेसे किसी भी कारणसे पैदा हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) अफीमको गुले रौग़न या सिरकेमें घोलकर लेप करनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(११) चूनेको घीमें मिलाकर लेप करनेसे गरमीका दर्द सिर जाता रहता है।

(१२) मोमयाईको रोग़न बनफ़शामें घोलकर सूँघनेसे सर्दीका दर्द सिर चला जाता है।

(१३) अरीठा पानीमें पीसकर दो चार बूँदें नाकमें टपकानेसे माथेके कीड़े निकल जाते और उनकी वजहसे हुआ दर्द सिर आराम हो जाता है।

(१४) नीमकी छाल और आमलोंका काढ़ा पीनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१५) आमलोंका चूर्ण बराबर घी और शहदमें मिलाकर चाटनेसे सिरका दर्द चला जाता है।

(१६) दूध या जलमें सोंठ पकाकर सूँघने और इसीका लेप करनेसे सिरका दर्द ख़ासकर आधे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१७) कपूर और धनियाँ पानीमें पीस कर सिर पर लगानेसे

अथवा कपूर और धनिया जलमें भिगोकर सूँघनेसे सिरका दर्द तत्काल आराम हो जाता है।

(१८) महँदीके बीज ३ माशे महीन पीस-छानकर ६ माशे शहदमें मिलाकर सवेरे ही चाटनेसे दिमाग़की कमज़ोरी दूर होकर आँखों की रोशनी बढ़ती है।

(१९) अर्क़ कपूर सिर पर मलनेसे दर्दसिर आराम हो जाता है।

(२०) कायफलका चूर्ण सूँघनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(२१) बिनौलोंका तेल सिरमें लगानेसे मस्तकशूल आराम होकर माथा शान्त हो जाता है। इस तेलको तीन या एक दिन लगानेसे ही लाभ होता है।

(२२) सफेद प्याज़ कूटकर सूँघने और चन्दन-कपूर-पानीमें पीसकर लेप करनेसे गरमीका दर्द सिर आराम हो जाता है,

कानके भीतरकी चीज़ निकालनेके उपाय।

(१) गुनगुना तेल कानमें डालो और सिरको उसी तरफ झुकाकर, नकछिकनी और जुन्दबेदस्तर आदि छींक लाने वाली दवाओंको सूंघो। जब छींक आने लगे, नाक और मुँहको बन्द करलो; ताकि छींकका और भीतरका ज़ोर कानकी तरफ़ फिर जाय और कानकी चीज़ बाहर निकल आवे। जब कानमें गिरी हुई चीज बाहर निकल आवेगी, उसकी वजहसे हुआ कान और सिरका दर्द आराम हो जायगा।

(२) अगर कानमें डाँस या मच्छर घुस गया हो, तो कसौंदीके पत्तोंका रस कानमें डालो; जानवर मर कर निकल जायगा।

नेत्र-रोग वर्णन ।

(आँखोंके रोग)

अड़तीसवाँ अध्याय

नेत्र रोगोंके निदान-कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे नेत्र रोग होते हैं :—

(१) गरमी या धूपसे सन्तप्त होकर शीतल जलमें घुसनेसे ।

(२) दूरके पदार्थ देखनेसे ।

(३) नींद आने पर या समय पर न सोनेसे ।

(४) दिनमें सोने या रातमें जागनेसे ।

(५) अग्नि आदिके अधिक सेवन करनेसे ।

(६) नेत्रोंमें धूल या धूआँ जानेसे ।

(७) वमनका वेग रोकने या बहुत वमन करनेसे ।

(८) पतले पदार्थ ज़ियादा खानेसे ।

(९) खट्टे रसोंको ज़ियादा सेवन करनेसे ।

(१०) मलमूत्रादि और अधोवायुके वेगको रोकनेसे ।

(११) बहुत दिनोंतक रोनेसे ।

(१२) शोकजन्य सन्तापसे ।

(१३) मस्तकमें चोट वगैरः लगनेसे ।

(१४) अत्यन्त तेजीसे चलने वाली सवारी पर बैठनेसे ।

(१५) ऋतुचर्यामें लिखी विधियोंके विपरीत चलनेसे ।
(१६) काम क्रोधादिकी वजहसे पैदा हुई पीड़ासे ।
(१७) अत्यन्त मैथुन करनेसे ।
(१८) आँसुओंका वेग रोकनेसे, और
(१९) बहुत ही बारीक पदार्थ या आजकलके छापेके छोटे-छोटे अक्षर देखनेसे ।

नोट—ऊपर लिखे हुए कारणोंसे नेत्रोंमें तरह-तरहके रोग होते हैं। बिजलीकी रोशनी या किरासिन तेलकी रोशनीमें पढ़ने-लिखनेसे आजकल लोग बहुत ही जल्दी अन्धे हो जाते हैं। ज़रा-ज़रासे छोकरे चश्मेके बिना एक कदम चल नहीं सकते और एक छोटीसी चिट्ठी भी पढ़ नहीं सकते। मनुष्य-शरीरमें नेत्र सबसे उत्तम और मूल्यवान अंग हैं। नेत्र हैं तो जहान है, अतः नेत्रोंकी रक्षा करना मनुष्यका सबसे ज़रूरी कर्त्तव्य है।

नेत्र रोगकी सम्प्राप्ति ।

शिराओंमें रहनेवाले वातादि दोष बिगड़ कर और ऊँचे भागोंमें जाकर, नेत्रोंके अवयवोंमें दारुण रोग उत्पन्न करते हैं।

दृष्टि-रोगोंके लक्षण ।

दृष्टिके लक्षण ।

नेत्रके काले डेलेके बीचमें मसूर की दालके समान, क्षणमें पट-बीजनेके समान और क्षणमें अग्निके प्रकाशके समान चिरस्थायी तेजोंसे सिद्ध जो चीज़ है, उसे ही "दृष्टि" कहते हैं।

नेत्रमें चार पटल।

नेत्रोंमें चार पटल हैं। उनमेंसे सबसे ऊपर रहने वाला पहला पटल रुधिर और रसके आश्रयसे रहता है। दूसरा पटल मांसके, तीसरा मेदके और चौथा हड्डियोंके आश्रयसे रहता है।

पहले पटलमें दोष।

अगर पहले पटलमें दोष स्थित होता है, तो मनुष्य रूपोंको कुछ-कुछ अन्तरसे देखता है। अगर दोष थोड़ा होता है, तो किसी समय साफ भी देखता है।

नोट—पहले पटलको सबसे भीतरका पटल समझना चाहिये; बाहरका पटल नहीं। क्योंकि नेत्र पटलके भीतरके दोष, अनुक्रमसे, ऊपरके पटलमें आते हैं, यह विदेहका मत है।

दूसरे पटलमें दोष।

अगर दूसरे पटलमें दोष होते हैं तो मनुष्य अच्छी तरह नहीं देख सकता। उसे मक्खी, मच्छर और बाल वगैर मकड़ीके जालेके समान दीखते हैं। मण्डल, पताका और किरणें न होने पर भी दीखती हैं। प्रकाशमान् वस्तुएँ कुण्डलयत गोल और परछाई वगैर॰ ऊँची नीची या टेढ़ी प्रभृति अनेक तरहकी दीखती हैं। वर्षा और बादल न होने पर भी दीखते हैं। यह मनुष्य अनेक उपाय करने पर भी सूईके छेदको नहीं देख सकता।

तीसरे पटलमें दोष।

अगर तीसरे पटलमें दोष होते हैं, तो मनुष्य ऊँचेको देख सकता है, नीचेको नहीं देख सकता। ऊचेके पदार्थ अत्यन्त बड़े होने पर भी कपड़े से ढके हुए के समान दीखते हैं। यह मनुष्य नाक, कान आदि अवयवोंको विकृत देखता है। अगर दोष नेत्रोंके किसी हिस्सेमें होता है तो पासकी चीजें नहीं दीखतीं। अगर दोष ऊपरके हिस्सेमें होता है तो दूरकी चीज़ें नहीं दीखतीं। अगर दोष बग़लमें होता है तो बगलके पदार्थ नहीं दीखते। अगर दोष चारों तरफ होते हैं, तो ऊपर, नीचेके अगल-बगलके पदार्थ अलग-अलग होने पर भी मिले हुए दीखते हैं। अगर दोष दृष्टिके बीचमें होता है, तो बड़े पदार्थ छोटे दीखते हैं। अगर दोष टेढ़े होते हैं, तो एक पदार्थके दो पदार्थ दीखते हैं। अगर दोष दृष्टिके दो भागोंमें

होता है, तो एक चीज़की तीन चीज़ दीखती हैं। अगर दोष अनियमित रूपसे होते हैं, तो एक चीजकी अनेक चीजें दीखती हैं।

चौथे पटलमें दोष।

अगर दोष दृष्टिके चौथे पटलमें होता है, तो अन्धकार दीखता है, इस लिए इसे "तिमिर" कहते हैं। इससे चारों ओरकी दृष्टि रुक जाती है। इस रोगको "लिंगनाश" भी कहते हैं। अँधेरेके जैसा यह भयकर रोग अगर नया होता है, तो मनुष्यको आकाशमें चन्द्रमा, सूरज, बिजली और तारे आदि दीखते हैं। अगर पुराना हो जाता है, तो चन्द्रमा आदि प्रकाशित पदार्थ भी नहीं दीखते। इस तिमिर रोगको जिस तरह लिङ्गनाश कहते हैं; उसी तरह इसे "नीलिका" और "कांच" भी कहते हैं। लिङ्ग "दृष्टिके तेज"को कहते हैं। जो रोग दृष्टिके तेजको नाश करता है, उसे "लिङ्गनाश" कहते हैं।

दृष्टि रोगोंके नाम और गिन्ती।

दृष्टि-रोग बारह तरहके होते हैं। उनमेंसे ६ लिंगनाश कहलाते हैं और बाक़ी ६ और हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१)

(१) वातज लिङ्गनाश।	(२) पित्तज लिङ्गनाश।
(३) कफज लिङ्गनाश।	(४) रक्तजन्य लिङ्गनाश।
(५) सन्निपातज लिङ्गनाश।	(६) परिम्लायी लिङ्गनाश।

(२)

(१) पित्त-विदग्ध दृष्टि।	(२) कफ-विदग्ध दृष्टि।
(३) धूमदर्शी।	(४) ह्रस्वजात्य।
(५) नकुलान्ध्य।	(६) गम्भीरिका।

नोट—"चरक" में दृष्टिके १४ रोग लिखे हैं। उसमें लिङ्गनाश भी दो तरहके माने हैं—(१) सनिमित्तिक लिङ्गनाश, (२) अनिमित्तिक लिङ्गनाश।

वातज लिंगनाशके लक्षण।

इस रोगके होनेसे सब तरहके रूप भ्रमण करते हुए, मलिन, किसी क़दर लाल, गदले और विकृत तथा टेढ़े-तिरछे दीखते हैं।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग लाल हो जाता है तथा नेत्र-मण्डल लाल, चञ्चल और सख्त होता है।

पित्तज लिंगनाशके लक्षण।

अगर मनुष्यको सूरज, पटबीजना, इन्द्रधनुष, बिजली वग़ैरः मोर-की पूँछके समान विचित्र, नीले और काले रंगके दीखें तो जानना चाहिये, कि "पित्तजनित लिङ्गनाश" हुआ है।

नोट—इस दशामें नेत्र-मण्डल नीला, काँसीके समान अथवा सफ़ेद या पीला होता है। सफेद और पीलापन व्याधिके प्रभावसे होता है।

कफज लिंगनाशके लक्षण।

अगर मनुष्यको पदार्थ चिकने, सफेद, पानीमें डुबोकर निकाले हुएसे और जालको समान दीखें तो "कफजन्य लिङ्गनाश" समझो।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग सफेद होता है और नेत्र-मण्डल मोटा, चिकना तथा शंख, कुन्द और चन्द्रमाके समान सफेद होता है।

सन्निपातज लिंगनाशके लक्षण।

अगर मनुष्यको अनेक तरहके या दो तरहके या सब तरहके रूप दिखाई देवें अथवा अनेक रङ्गवाले, कम और जियादा अङ्गवाले या तेजोमय रूप दीखें तो "सन्निपातज लिङ्गनाश" समझो।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग विचित्र होता है और नेत्र मण्डल भी विचित्र होता है।

रक्तज लिंगनाशके लक्षण।

अगर अनेक तरहका अन्धकार दीखे और रूप लाल, हरे, काले या पीले दीखें तो "रक्तजन्य लिंगनाश" समझो।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग लाल होता है और मण्डल मूंगे या कमलकी पंखड़ीके समान होता है।

परिम्लायी लिंगनाशके लक्षण ।

अगर समस्त दिशायें पीली दीखती हों, सूर्य उदय होता सा दीखता हो और वृक्ष पटबीजनों या आगसे व्याप्त दीखते हों, तो "परिम्लायी लिङ्गनाश" समझो। रुधिरसे मूर्च्छित हुआ "पित्त" परिम्लायी लिङ्गनाश करता है।

नोट—पित्तजन्य परिम्लायी लिङ्गनाश होनेसे नेत्रोंका रंग नीला हो जाता है। नेत्र-मण्डल ग्लानिको प्राप्त हुआ अथवा नीला होता है और कालान्तरमें दोषोंका क्षय होनेसे किसी समय पहलेके समान उत्तम हो जाता है।

सूचना—सब तरहके लिङ्गनाशोंमें वातादि दोषोंके व्यथा, दाह और भारीपन प्रभृति अपने-अपने लक्षण भी ज़रूर होते हैं। यद्यपि हमने यहाँ उनका जिक्र नहीं किया है।

पित्त-विदग्ध दृष्टिके लक्षण ।

दुष्ट पित्तके दृष्टिके पहले और दूसरे पटलमें जानेसे अगर मनुष्य की दृष्टि पीली हो जाती है, तो वह मनुष्य सब रूपोंको पीला देखता है, इसे "पित्तविदग्ध दृष्टि" कहते हैं।

इसी तरह अगर दुष्ट पित्त तीसरे पटलमें चला जाता है, तो मनुष्यको दिनमें कुछ भी नहीं दीखता ; मगर रातके समय, शीतके कारण, दृष्टिके अनुकूल और पित्तविहीन होनेसे, सब पदार्थ दीखते हैं।

कफ-विदग्ध दृष्टिके लक्षण ।

अगर दुष्ट कफ दृष्टिके पहले और दूसरे पटलमें चला जाता है, तो मनुष्यको सब रूप सफेद दीखते हैं। इस रोगको "कफविदग्ध दृष्टि" कहते हैं।

अगर यही कफ दृष्टिके तीनों पटलोंमें चला जाता है, तो

"नक्तान्ध्य या रतौंधी" रोग करता है। दिनमें तो दृष्टि पर सूर्यकी कृपा होनेसे, 'कफका ज़ोर न रहनेसे, मनुष्यको सब पदार्थ दीखते हैं, पर रातको कफका जोर होनेसे कुछ नहीं दीखता।

धूमदर्शीके लक्षण।

शोक, ज्वर, मिहनत और सिरमें धूप आदि लगनेसे दृष्टिको हानि पहुचती है, तब सारे पदार्थ धुएँसे घिरे हुए दीखते हैं। इसी लिए इस रोगको "धूमदर्शी" कहते हैं, क्योंकि इसके होनेसे सर्वत्र धूआँही धूआँ दीखता है। यह रोग पित्तकी दुष्टता से होता है।

ह्रस्वजात्यके लक्षण।

जिस नेत्र रोगके होनेसे, दिनमें कम दीखता है और बड़ी-बड़ी चीज़ेंभी छोटी-छोटी दीखती हैं और रातके समय सारी चीज़ें जैसी-की तैसी दीखती हैं, उसे मुनि लोग "ह्रस्वजात्य" कहते हैं।

नकुलाध्यके लक्षण।

अगर दृष्टि नौलेकी दृष्टिके समान चमकती है और दिनमें रूप अजब ढंगके दीखते हैं, तो "नकुलाध्य रोग" कहते हैं।

गम्भीरिकाके लक्षण।

अगर वातसे उपहत दृष्टि विकृत हो जाती है, सुकड़ जाती है, भीतरकी तरफ चली जाती है और उसमें गंभीर पीड़ा होती है, तो उसे "गम्भीरिका" कहते हैं।

सनिमित्त और अनिमित्त लिंगनाशके लक्षणादि।

'सुश्रुतने दृष्टिके बारह रोग कहे हैं, पर चरकादि मुनियोंने सनिमित्त लिङ्गनाश और अनिमित्त लिङ्गनाश—ये दो रोग अधिक कहे हैं।

विषैले फूलोंकी गन्धवाली हवाके स्पर्शन रूप निमित्तसे मस्तकमें अभिताप होकर जो लिङ्गनाश होता है, उसे "सनिमित्तिक लिंगनाश" कहते हैं। गदाधर

वैद्यके मतसे यह रोग रक्ताभिष्यन्दके लक्षणोंसे और कार्त्तिक वैद्यके मतसे त्रिदोषज अभिष्यन्दके लक्षणोंसे जाना जाता है।

देव, ऋषि, गन्धर्व, बड़े सर्प और अन्यान्य प्रकाशमय पदार्थोंके देखनेसे दृष्टि उपहत हो जाती है। इसे "अनिमित्तिक लिङ्गनाश" कहते हैं। इस रोगके होनेसे नेत्र तेजवान दीखते हैं, दृष्टि श्याम और निर्मल होती है और उपघातके कारण फट जाती, सुकड़ जाती या कम हो जाती है।

कृष्ण मण्डलगत रोग।

(आँखके काले घेरेके रोग)

काले मण्डलके रोगोंके नाम।

आँखोंके काले मण्डलमें चार रोग होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) सव्रणशुक्र। (२) अव्रणशुक्र।

(३) पाकात्यय, (४) अजका।

सव्रण शुक्रके लक्षण।

अगर नेत्रके काले भागमें हुए शुक्र या फूलेमें गढ़ासा दीखे, वह सुईसे विधा हुआ मालूम हो, गोल और व्यथायुक्त हो तथा उससे निरन्तर गरम-गरम पानी बहता रहे—तो उसे "सव्रणशुक्र" कहते हैं।

नोट—जिसे संस्कृतमें "शुक्र" कहते हैं, उसे हिन्दीमें "फूला" कहते हैं। "सव्रण"का अर्थ है "घाव सहित" अतः सव्रण शुक्रका अर्थ है "घावसहित फूला"। अगर सव्रण शुक्र या फूला दृष्टिके पास नहीं होता, एक चमड़ीमें होता है, उससे मवाद या पानी नहीं बहता, पीड़ा नहीं होती और गिन्तीमें एक होता है, तो किसी समय साध्य होता है। किन्तु यदि वह दृष्टिके पास होता है, दूसरे चमड़ीमें होता है, उसमें दर्द होता है, उससे पानी बहता है और एक जगहसे युग्म रूप यानी जोड़लेके जैसा होता है तो हरगिज़ साध्य नहीं होता, यानी वह चिकित्सासे आराम नहीं होता।

अव्रण शुक्रके लक्षण।

अगर अभिष्यन्द या आँखें दुखनेसे पैदा हुआ फूला आकाशमें मेघकी समान थोड़ा-थोड़ा प्रकाशमान और शंख, चन्द्रमा या कुन्दके फूलके समान सफेद होता है, तो उसे "अव्रण शुक्र" कहते हैं। यह फूला अत्यन्त साध्य होता है।

नोट (१)—यद्यपि नेत्रोंके सारे रोग अभिष्यन्द—आँखें आनेसे होते हैं, पर यह अव्रण शुक्र—फूला तो अभिष्यन्दसे ही होता है, इसीलिये "अभिष्यन्दसे पैदा हुआ" यह विशेषण दिया है।

नोट (२)—अगर अव्रण शुक्र गंभीर होता है यानी दो तीन पटलोंमें घुसा हुआ होता है और बहुत पुराना होता है, तो कष्टसाध्य होता है। यद्यपि अव्रण शुक्र अत्यन्त साध्य होता है, तथापि अवस्था-भेदसे कष्टसाध्य भी हो जाता है।

जो अव्रण शुक्र मांस गिर जानेसे नीचा हो, ऊँचा हो, पतला हो, शिराओंसे पैदा हुआ हो, देखने न दे और दो पटलोंमें पहुँच गया हो, अन्तमें लाल हो और बहुत दिनोंका हो तो असाध्य है। उसका इलाज करना वृथा है।

अगर आँखोंसे गरम-गरम आँसू गिरते हों, फुन्सी पैदा हो गई हो और अव्रण शुक्र—फूला मूँगके से आकारका हो तो असाध्य है। अगर आँखका फूला तीतरके पंखके समान स्यामवर्ण हो गया हो, तो असाध्य है।

अक्षिपाकात्ययके लक्षण।

अगर दोषोंकी वजहसे, नेत्रोंके काले हिस्सेमें चारों ओर सफेदी फैल जावे, तो उसे "पाकात्यय" कहते हैं।

नोट—अगर यह पाकात्यय रोग तीनों दोषोंसे पैदा हुआ हो तो असाध्य है। इसमें पाक भी होता है, यानी यह पकता भी है, क्योंकि सुश्रुत कहते हैं— "शोकाश्रुपाकार्तियुते च नेत्रे।"

अजकाके लक्षण।

बकरीकी मैंगनीके समान, पीड़ा वाली, किसी क़दर कलाई माइल लाल और चिकने आँसू वाली जो ऊँचाई नेत्रके काले भागमें होती है, उसे "अजकाजात" कहते हैं।

नोट—यह ऊँचाई मेदसे होती है, क्योंकि विदेहने इस ऊँचाईकी पैदाइश तीसरे पटलमें कही है। तीसरा पटल मेदके आश्रय रहता ही है।

नेत्रके सफेद भागमें होनेवाले रोग।

सफेद भागमें होनेवाले रोगोंके नाम।

नेत्रोंके सफेद हिस्सेमें नीचे लिखे हुए ग्यारह रोग होते हैं :—

(१) प्रस्तार्यर्म। (२) शुक्लार्म।
(३) रक्तार्म। (४) अधिमांसार्म।
(५) स्नाय्वर्म। (६) शुक्ति।
(७) अर्जुन। (८) पिष्टक।
(९) शिराजाल। (१०) शिराज पिडिका।
(११) वलास ग्रथित।

प्रस्तार्यर्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें पतला, फैला हुआ, ललाई या सुर्खी माइल जो सफेद चिह्न होता है, उसे "प्रस्तार्यर्म" कहते हैं।

शुक्लार्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें, जो बहुत ही सफेद और नर्म चिह्न होता हैं, उसे "शुक्लार्म" कहते हैं।

रक्तार्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें, जो लाल और नर्म मांस बढ़ता है, उसे "रक्तार्म" कहते हैं।

अधिमांसार्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें विस्तीर्ण, नरम, गाढा और किसी क़दर कलाई लिये जो मांस बढ़ता है, उसे "अधिमांसाम" कहते हैं।

स्नायर्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें जो कठिन, फैलनेवाला और ग्रावरहित ऊँचा मास होता है, उसे "स्नाय्वर्म" कहते हैं।

शुक्तिके लक्षण।

नेत्रके सफेद भागमें जो काले रंगका मासकी समान बिन्दु होता है अथवा सीपसी होती है, उसे "शुक्ति" कहते हैं।

अर्जुनके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें खरगोशके खूनकी जैसी एक बूँद होती है, उसे "अर्जुन" कहते हैं।

पिष्टकके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें—कफ और वायुके प्रकोपसे—चूनेकी समान सफेद और मैलसे भरे हुए आईनेकी तरह जो ऊँचा मांस होता है, उसे "पिष्टक" कहते हैं।

शिराजालके लक्षण।

आंखके सफेद भागमें जालेकी समान, कठिन शिराओंसे व्याप्त जो लाल शिराओंका समूह होता है, उसको "शिराजाल" कहते हैं।

शिराज पिडकाके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें, काले भागके पास, शिराओंसे घिरी हुई जो सफेद फुन्सियाँ पैदा होती हैं, उन्हें "शिराज पिडका" कहते हैं।

बलास ग्रथितके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें—काँसीके समान सफेद, सख्त और जल की बूँदके समान किसी क़दर ऊँची जो बूँद होती है, उसे "बलास ग्रथित" कहते हैं।

वर्त्मज रोगोंका वर्णन।

(पलकोंमें होनेवाले रोग)

आँखमें दो पलक होते हैं, उनमें नीचे लिखे हुए इक्कीस रोग होते हैं :—

(१) उत्संगिनी।	(२) कुम्भिका।	(३) पोथकी।
(४) वर्त्मशर्करा।	(५) अर्शोवर्त्म।	(६) शुष्कार्श।
(७) अंजन नामिका।	(८) बहलवर्त्म।	(९) वर्त्मवन्धक।
(१०) क्लिष्टवर्त्म।	(११) वर्त्मकर्दम।	(१२) श्याव वर्त्म।
(१३) प्रक्लिन्नवर्त्म।	(१४) अक्लिन्नवर्त्म।	(१५) वातहतवर्त्म।
(१६) वर्त्मार्बुद।	(१७) निमेष।	(१८) शोणितार्श।
(१९) लगण।	(२०) विसवर्त्म।	(२१) कुञ्चन।

उत्संगिनीके लक्षण।

नेत्रके नीचेके कोयेमें भीतर मुंहवाली, वाहरसे लाल भीतरसे राधयुक्त, अपने-आप अनेक फुड़ियोंसे युक्त, स्थूल, और खुजलीयुक्त जो फुडिया खूनके कोपसे होती है, उसे "उत्संगिनी कहते हैं।

कुम्भिकाके लक्षण।

पलकके अन्तमें, कुम्भिका नामक लताके बीजके समान जो ऊंची फुन्सी सन्निपातसे होती और फूटती है तथा फूट-फूटकर मवाद देती है, उसे "कुम्भिका" कहते हैं।

नोट—कुम्भिका लता सख्त जमीनमें होती है और उसके फल अनारके समान होते है।

पोथकीके लक्षण ।

वहनेवाली, खुजली सहित, भारी, लाल-सरसोंके समान और पीड़ायुक्त जो फुन्सी नेत्रके कोयेमें होती है, उसे "पोथकी कहते हैं।

वर्त्मशर्कराके लक्षण ।

बहुत छोटी-छोटी सघन फुन्सियोंसे चारों ओरसे घिरी हुई, तीक्ष्ण और मोटी फुन्सी पलकमें होती है, उसे "वर्त्मशर्करा" कहते हैं।

अर्शोवर्त्मके लक्षण ।

पलकमें ककड़ीके बीजके समान, हलकी पीड़ावाली, चिकनी और तेज़ अनीवाली जो फुन्सी होती है, उसे "अर्शोवर्त्म" कहते हैं।

शुष्कार्शके लक्षण ।

पलकके भीतर खरखरे, जकड़े हुएसे और दारुण बड़े-बड़े अंकुर होते हैं, उन्हें "शुष्कार्श" कहते हैं।

अंजननामिकाके लक्षण ।

पलकमें जलन करनेवाली, भौंकने जैसी पीड़ा करनेवाली, लाल, नर्म और मन्दे-मन्दे दर्दवाली जो बारीक फुन्सियाँ होती हैं, उन्हें "अंजननामिका" कहते हैं।

बहल वर्त्मके लक्षण ।

पलकके से रंगकी सख़्त फुन्सी जो पलकके चारों ओर फैल जाती है, उसे "बहल वर्त्म" कहते हैं।

वर्त्मवधकके लक्षण।

जिस रोगसे आँखोंमें जल भरा रहता है, खुजली चलती है, सूई चुभानेका सा दर्द होता है, पलक सूज जाते हैं और आँखें ठीक नहीं मिचतीं—उसे "वर्त्मबन्धक" कहते हैं।

क्लिष्टवर्त्मके लक्षण।

जिस रोगसे नेत्रके दोनों कोये नर्म रहें, उनमें थोड़ा-थोड़ा दर्द हो, वे सर्वदा लाल रहें और अकस्मात् लाल मवाद देने लग जावें, उसे "क्लिष्टवर्त्म" कहते हैं।

वर्त्मकर्दमके लक्षण।

ऊपर लिखे हुए क्लिष्टवर्त्मके लक्षण हों, पित्तसे मिला हुआ रुधिर जलन करता हो और इस कारण पलक भीजे जाते हों, जिसमें ये लक्षण हों, उसे "वर्त्मकर्दम" कहते हैं।

श्याववर्त्मके लक्षण।

नेत्रोंके कोये बाहर भीतरसे काले हों, सूजन हो, वेदना हो, खुजली चलती हो और वे भीगे रहते हों, तो "श्याववर्त्म" रोग समझो।

प्रक्लिन्नवर्त्मके लक्षण।

कोयोंमें कुछ-कुछ दर्द होता हो, वे बाहरसे सूजे हुए और अधिकतर कीचड़ सहित भीगे हुए हों, तो "प्रक्लिन्नवर्त्म' समझो।

अक्लिन्नवर्त्मके लक्षण।

धोनेसे या न धोनेसे अगर नेत्रोंके पलक बारम्बार चिपककर मिल जावें और पकें नहीं, तो "अक्लिन्नवर्त्म" समझो।

वाताहतवर्त्मके लक्षण।

जिसके पलकोंकी सन्धियाँ अलग-अलग हो जावें, पलक मिचें

और खुलें नहीं तथा वेदना हो और न भी हो, तो "वाताहत वर्त्म" समझो।

वर्त्मार्बुदके लक्षण।

अगर पलकोंके भीतर विषम, थोड़ी पीड़ावाली, किसी क़दर लाल और जल्दी बढ़नेवाली सख्त गाँठ हो—तो "वर्त्मार्बुद" कहते हैं।

निमेषके लक्षण।

जिस रोगमें पलकोंमें रहनेवाली वायु पलकोंके खोलने और बन्द करनेवाली नसोंमें जाकर पलकोंको चलायमान कर देती है, उस रोगको "निमेष" कहते हैं।

शोणितार्शके लक्षण।

पलकोंमें नर्म अङ्कुर बढ़ते हैं और जितने ही काटे जाते हैं उतने ही अधिक बढ़ते हैं। यह रोग रुधिरसे होता है। इसे "शोणितार्श" कहते हैं।

लगणके लक्षण।

नहीं पकनेवाली, सख्त, मोटी, थोड़ी पीड़ावाली, खुजली सहित, चिकनी और बेरके समान जो गाँठ पलकमें होती है, उसे "लगण" कहते हैं।

विसवर्त्मके लक्षण।

तीनों दोष पलकोंमें बाहर की ओर सूजन करते हैं और भीतरकी तरफ छेद उत्पन्न करते हैं तथा उनमेंसे कमलकी नालकी तरह जलका स्राव होता है। जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "विसवर्त्म" कहते हैं।

कुंचनके लक्षण।

जिस रोगमें वातादि दोषोंसे पलक सुकड़ जाते हैं और इस वजहसे आदमी देख नहीं सकता, उस रोगको "कुंचन" कहते हैं।

पक्ष्म रोग-वर्णन।

(पलकोंके बालोंके रोग)

पलकोंके बालोंमे दो रोग होते हैं,—

(१) पक्ष्मकोप, और (२) पक्ष्मशात।

पक्ष्मकोपके लक्षण।

इस रोगके होनेसे, पलकोंके बाल आँखोंमें घुसते हैं, घुसकर नेत्रोंको वारम्वार घिसते हैं, घिस-घिसकर आँखोंके काले या सफेद भागमें सूजन पैदा करते हैं और जड़से उखड़-उखड़कर गिर जाते हैं। इस रोगको "पक्ष्मकोप" कहते हैं। यह रोग अतीव दारुण है।

पक्ष्मशातके लक्षण।

पक्ष्माशयमें रहने वाला पित्त पलकके बालोंको गिरा देता है तथा खुजली और दाह पैदा करता है। इस रोगको "पक्ष्मशात" कहते हैं।

सन्धिज रोग वर्णन।

(दृष्टि-सन्धियोंमें होनेवाले रोग)

सन्धिज रोगोंके नाम।

सन्धियोंमें नौ रोग होते हैं। उनके नाम ये हैं :—

(१) पूयालस, (२) उपनाह, (३) पित्तस्राव,

(४) कफस्राव, (५) सन्निपातस्राव, (६) रक्तस्राव, (७) पर्वणी, (८) अलजी, (९) जतुग्रन्थी।

पूयालसके लक्षण।

पूयालस रोग दृष्टिकी सन्धियोंमें होता है। सन्धियोंमें सूजन होती है और उसमें से बदबूदार और गाढ़ी राध बहती है।

उपनाहके लक्षण।

दृष्टिकी सन्धिमें बड़ी, कम पकनेवाली, बहुत खुजलीवाली, सख्त, लाल और थोड़े दर्दवाली जो गाँठ होती है, उसे "उपनाह" कहते हैं।

पित्तज स्रावके लक्षण।

सन्धिके बीचमें से लाल और पीला मिला हुआ अथवा केवल पीला और गरम जल बहता है, उसे "पित्तज स्राव" कहते हैं।

नोट—शेष सम्पूर्ण सन्धियोंमें जाकर, आँसुओंकी राहमें अपने-अपने लक्षणों वाला स्राव उत्पन्न करते हैं। कितने ही आचार्य इसे "नेत्रनाड़ी" भी कहते हैं। वायु सम्बन्धी स्राव नहीं होता, क्योंकि केवल वायुसे स्राव हो ही नहीं सकता।

कफज स्रावके लक्षण।

अगर सफेद, गाढ़ा और चिकना स्राव होता हो, तो "कफज स्राव" समझो।

सन्निपातज स्रावके लक्षण।

सन्धियोंमें पकनेवाली सूजन राध बहाती हो, तो "सन्निपातज स्राव" समझो।

रुधिरजन्य स्रावके लक्षण।

स्राव गरम हो और उसमें विशेष खून गिरता हो, तो "रुधिर-जन्य स्राव" समझो।

पर्वणी और अलजीके लक्षण ।

नेत्रोंके काले भाग और सफेद भागकी सन्धियोंमें गोल, सूजन वाली, लाल, बारीक, जलनेवाली और पकनेवाली जो फुन्सी पैदा होती है, उसे "पर्वणी कहते हैं ।

पहले प्रमेहमें लिखे अनुसार लाल, सफेद, फुन्सियोंसे व्याप्त दारुण फुन्सी काले और सफेद भागकी सन्धिमें पैदा होती है, उसे "अलजी" कहते हैं ।

जतुग्रन्थिके लक्षण ।

पलक और पलकके रोमोंकी सन्धियोंमें उत्पन्न होनेवाली, अनेक आकृतिवाली, कीड़े और खुजली उत्पन्न करनेवाली और नेत्रको बिगाड़-बिगाड़ कर पलक और सफेद भागकी सन्धियोंमें आनेवाली ग्रन्थिको "जतुग्रन्थि" कहते हैं ।

सारी आँखमें होनेवाले रोग ।

सारी आँखमें होनेवाले रोगोंके नाम ।

सारी आँखमें सत्रह रोग होते हैं :—

(१) वाताभिष्यन्द । (२) पित्ताभिष्यन्द ।
(३) कफाभिष्यन्द । (४) रक्ताभिष्यन्द ।
(५) वाताभिष्यन्दजन्य अधिमन्थ ।
(६) पित्ताभिष्यन्द जन्य अधिमन्थ ।
(७) कफाभिष्यन्द जन्य अधिमन्थ ।
(८) रक्ताभिष्यन्द जन्य अधिमन्थ ।
(९) सशोथ पाक । (१०) अशोथ पाक ।

(११) हताधिमन्थ । (१२) वात पर्यय ।
(१३) शुष्काक्षिपाक । (१४) अन्यतो वात ।
(१५) अम्लाध्युषित । (१६) शिरोत्पात ।
(१७) शिराहर्ष ।

वाताभिष्यन्दके लक्षण ।

तोड़ने या भौंकनेकी सी पीड़ा हो, जड़ना हो, रोमाञ्च हो, खुजली चले, नेत्रोंमें रूखापन हो, सिरमें दर्द हो, नेत्र न चिपकें और शीतल आँसू आवें, तो "वाताभिष्यन्द" समझो ।

पित्ताभिष्यन्दके लक्षण ।

दाह हो, पकाव हो, शीतल पदार्थोंकी इच्छा हो, नेत्रोंसे धूआँसा निकलता हो, आँसू आते हों और नेत्र पीले हों, तो "पित्ताभिष्यन्द" समझो ।

कफाभिष्यन्दके लक्षण ।

गरम पदार्थोंकी इच्छा हो, भारीपन हो, नेत्रोंमें सूजन हो, खुजली बहुत चले, कीचड़ ज़ियादा आवे, आँखें चिपकें, शीतलता बहुत हो और बारम्बार चिकना स्राव होता हो ; यानी चिकना-चिकना मवाद बहता हो तो "कफाभिष्यन्द" समझो ।

रक्ताभिष्यन्दके लक्षण ।

आँसुओंमें लाली हो, नेत्रोंमें लाली हो, चारों ओर अत्यन्त लाल रेखाएं हों और पित्ताभिष्यन्दके और लक्षण हों, तो समझो कि रुधिरके कोपसे अभिष्यन्द हुआ है ; यानी खूनके कोपसे आँखें दुखनी आई हैं ।

नोट—सारे नेत्रमें पीड़ा होने, आँख आने अथवा आँख दुखनी आनेको "अभिष्यन्द" कहते हैं ।

अधिमन्थके लक्षण ।

जो लोग अभिष्यन्द रोग होने पर—आँख दुखनी आनेपर उपचार या इलाज नहीं करते, उनका रोग बढ़कर,नेत्रोंमें तेज़ पीड़ा करनेवाला "अधिमन्थ" रोग हो जाता है। मतलब यह है, कि अभिष्यन्दसे ही अधिमन्थ होता है। अभिष्यन्द चार होते हैं, अतः अधिमन्थ भी चार ही होते हैं।

जो अधिमन्थ जिस अभिष्यन्दसे पैदा होता है,उसमें उसी अभिष्यन्दके सारे लक्षण पाये जाते हैं। इतनी ही विशेषता होती है कि, आधा माथा उखड़ा सा- मालूम होता है और अत्यन्त मथनेकी सी पीड़ा होती है। मतलब यह है कि, अधिमन्थोंमें अभिष्यन्दों के ही लक्षण होते हैं। माथेमें वेदना अधिक होती है और चारों अधिमन्थोंमें ही होती है। यह आधे सिरमें वेदना व्याधिके प्रभावसे होती है।

कफाभिष्यन्दसे पैदा होनेवाला अधिमन्थ सात रातके भीतर दृष्टिको नष्ट कर देता है। रक्ताभिष्यन्दसे होनेवाला पाँच रातके भीतर, वाताभिष्यन्दसे होने वाला छे रातके भीतर और पित्ताभिष्यन्दसे होनेवाला तत्काल ही तीन रातके भीतर दृष्टिको नष्ट कर देता है। मतलब यह है, कि अयोग्य उपचार आदि किये जानेसे अधिमन्थ दृष्टिको नाश कर देता है; उचित उपचार किये जानेसे नहीं। खुलासा :—

कफाभिष्यन्दी	अधिमन्थ	सात	रातमें	दृष्टिको नाश	करता है।
रक्ताभिष्यन्दी	"	पाँच	"	"	"
वाताभिष्यन्दी	"	छे	"	"	"
पित्ताभिष्यन्दी	"	तीन	"	"	"

सशोथपाक और अशोथपाकके लक्षण ।

अगर नेत्रोंमें खुजली चलती हो, वे चिपकते हों, आँसुओंसे भरे हुए हों, पके हुए गूलरके फलकी तरह लाल और सूजनयुक्त तथा पके हुए हों—तो "सशोथपाक" हुआ समझो।

ऊपर कहे हुए सशोथ पाकके सभो लक्षण हों—केवल सूजन न हो, तो "अशोथपाक" हुआ समझो।

हताधिमन्थके लक्षण।

जब वाताभिष्यन्दसे पैदा हुआ अधिमन्थ, योग्य उपचारकी उपेक्षासे, ठीक इलाज न होनेसे, उग्र वेदना करके, आँखको बलात्कारसे सुखाकर नष्ट कर देता है, तब उसे "हताधिमन्थ" कहते हैं।

वातपर्ययके लक्षण।

जब वायु किसी समय भौंओंमें और किसी समय नेत्रोंमें बार-म्बार घूमती और अनेक तरहकी वेदना करती है, तब "वातपर्यय" कहते हैं।

शुष्काक्षिपाकके लक्षण।

अगर नेत्रोंके पलक दारुण, सख्त और रूखे हो जावें, आँखें मिंची रहें, जलन हो, आँखोंसे साफ न दीखे और खोलते समय आँख अत्यन्त विकृत दीखे, तो "शुष्काक्षिपाक समझो।

अन्यतोवातके लक्षण।

जब घाटी, कान, सिर, ठोडी, मन्या नाड़ी और पीठके बाँस आदि स्थानोंकी "वायु" भौंओं और नेत्रोंमें घोर वेदना करती है, तब "अन्यतोवात रोग" कहते हैं।

नोट—एक स्थानमें रहनेवाली वायु दूसरे स्थानमें जाकर वेदना करती है, इसीसे इस रोगको "अन्यतोवात" कहते हैं।

अम्लाध्युषितके लक्षण।

खट्टे रस वग़ैरः खानेसे जब नेत्र काले, लाल, कोनेवाले, दाहयुक्त, सूजन और स्रावयुक्त होते हैं, तब "अम्लाध्युषित रोग" कहते हैं।

शिरोत्पातके लक्षण।

वेदना रहित या वेदना सहित नेत्रकी शिरा लाल हो जाय और वह बारम्बार अधिकाधिक विकृत वर्णकी हो जाय, तो "शिरोत्पात रोग" समझो।

शिराहर्षके लक्षण।

अगर मूर्खतासे शिरोत्पात रोगका इलाज नहीं किया जाता, उपेक्षा या लापरवाहीकी जाती है, तो वही "शिराहर्ष" हो जाता है। शिराहर्ष होनेसे आँखें लाल हो जाती हैं, अत्यन्त स्राव होता है— पानी और कीचड़ आदि बहते हैं तथा आँखोंसे दिखाई नहीं देता।

निराम और साम नेत्रोंके लक्षण।

अगर आँखोंमें वेदना होती हो, लाली जियादा हो, भौंकनेकी सी पीड़ा हो, शूल चलते हों और आँसू गिरते हों—तो नेत्रको साम अर्थात् आम सहित समझो।

नोट—नेत्रोंके आम सहित होनेकी हालतमें अंजन, घृतपान, काढ़ा, भारी भोजन और स्नान मना हैं। इस हालतमें यानी नेत्रोंकी सामताकी हालतमें लंघन आदि करने चाहियें; क्योंकि लंघन, मधुर भोजन, कड़वा रस और लेप या भाफका सेक ये नेत्र रोगके लिए सामान्य उपचार हैं।

अगर नेत्रोंमें वेदना मन्दी हो, उनमें खुजली कम चलती हो, सूजन घटी हो, आँसू कम आते हों और वर्ण या रंग निर्मल हो—तो निरामता समझो; यानी नेत्रोंको आम रहित समझो।

नोट—नेत्रोंके निराम होनेकी हालतमें अंजन, घृतपान, भारी भोजन, स्नान और काढ़ा वगैरः प्रयोग करनेमें हर्ज नहीं। अगर साम नेत्रोंमें अंजन आदि प्रयोग किये जायँ, तो हानिकी सम्भावना है।

आयुर्वेदके मतसे नेत्र रोग-
चिकित्सा और याद रखने योग्य बातें।

(१) पाँवकी दो मोटी नसें सिरमें गई हैं और बहुतसी नसें नेत्रोंमें पहुंची हैं, इसलिये पैरोंमें जो सेचन, लेपन और मर्दन किया जाता है, वह उन नसोंके द्वारा आँखोंमें पहुँच जाता है। मैलसे, गरमीसे,दुखनेसे अथवा ऐसे ही और कामोंसे वे नसें बिगड़ जाती हैं। इसलिए नेत्रोंकी आरोग्यता चाहने वालोंको पैर खूब धोकर साफ रखने चाहियें, पैरोंमें मालिश करानी चाहिये और सदा उत्तम सुखदायी जूते पहनने चाहिये।

(२) शालिचाँवल, मूंग, जौ, जांगल देशके पशुओंका मांस, पक्षियोंका मांस, बथुआ, चौलाई, परवल, ककोड़े, करेले और नये बैंगन—"घी"में पकाकर खानेसे नेत्रोंमें सुख होता है। मधुर और कड़वे रस भी नेत्रोंके लिए हितकारी हैं।

मनको एकाग्र करके पाँव धोना, आँखोंमें त्रिफलेके जलके छींटे मारना, पैरोंमें तेल लगाना, हरियाली देखना, पानीमें डुबकी लगाकर नेत्र खोलना, जूते पहनना, स्त्रीका दूध आँखोंमें डालना, हांडीका घी, मूंग, लाल चाँवल, जौ, वन कुलथीका यूष, नयी मूली, नया केला, सौंठ, भांगरा, मकोय, घीग्वारका पाठा, दाख, धनिया, सेंधानोन, लोध, त्रिफला और शहद आदि तथा हल्के पदार्थ ये सब पथ्य हैं। हिकमतके मतसे नीले थोथेका सुरमा लगाना तथा सौंफ और दौना-मरुआ पानीमें घिसकर लगाना अच्छा है।

चरपरे, खट्टे, भारी, तीक्ष्ण और गरम पदार्थ, उड़द, लोबिया, मैथुन, शराब, सूखा मांस, खल, मछली, अंकुर वाले अनाज और

जलन करने वाले खाने-पीनेके पदार्थ, क्रोध, शोक, रोना, मलमूत्रादि वेग रोकना, दॉतुन करना, नहाना, रातमें भोजन करना, धूपमें फिरना, धूआँमें रहना, बहुत बकना, बारम्बार पानी पीना, महुआ, दही, पत्तोंके साग, तरबूज, मांस और पान नेत्र रोगियोंके लिए हानिकारक हैं।

हिकमतके मतसे धूआँ, धूल, गर्म हवा, बहुत ठण्डी हवा, बहुत रोना, बहुत चमकीली चीजोंका देखना, चित्त लेटकर सोना, शराब पीना, शराबके अलावः अन्य मादक या नशीली चीज़ोंको सेवन करना, गरिष्ट चीज खाना, गन्दना, लहसन, प्याज वग़ैरः तेज़ और दिमाग़की तरफ भाफके परमाणु उठाने वाली चीजें खाना, अजीर्ण होना, बहुत नहाना, बहुत फस्द खोलना, बहुत पछने लगाना, बहुत सोना, दिनमें सोना, बहुत जागना, टकटकी लगाना, बहुत नमक खाना, भरे पेट पर रातको खाना, बहुत मैथुन करना, बुरी और गाढ़ी शराब पीना ; पहाड़ी तुलसी, सोया और पका हुआ जैतून काममें लेना, छोटे-छोटे नक़शे देखना और बारीक अक्षर पढ़ना ये सब नेत्रोंके लिए हानिकारक हैं।

नोट—सब नशे हानिकारक हैं, पर अफीम हानिकारक नहीं है।

(३) नीचे लिखे हुए उपचारोंसे नेत्र रोगोंकी चिकित्सा की जाती है :—

(१) सेक—पानी वगैरःकी बारीक धार नेत्रोंमें डालना।

(२) आश्चोतन—पोटली प्रभृतिसे आँखोंमें दवा डालना।

(३) पिण्डी—नेत्रों पर लूपडी वगैरः बाँधना।

(४) विडालक—बॉफनी बचाकर, आँखोंके बाहरी भागपर लेप करना।

(५) तर्पण—आँखोंमें दूध, घी या गरम जल भरना।

(६) पुटपाक—पकाया हुआ रस आँखोंमें डालना।

(७) अंजन—दोष पकनेके बाद, आँखोंमें अंजन आँजना।

सेककी विधि ।

(आँखोंमें दवाकी धार डालना)

रोगीकी आँखें बन्द कराकर, उनपर चार अंगुल ऊँचेसे, घी वगैरःकी पतली धार डालनी चाहिये । इसीको "सेक" कहते हैं ।

अगर वात सम्बन्धी रोग हो, तो घी वगैरः चिकने पदार्थोंकी पतली धार डालनी चाहिये । इसे "स्नेहन सेक" कहते हैं ।

अगर पित्त या खूनकी पीड़ा हो, तो हरड़ प्रभृतिके रसकी धार आँखोंमें डालनी चाहिये । इसे "रोपण सेक" कहते हैं ।

अगर कफकी पीड़ा हो, तो मलको उखाड़ने वाली सोंठ आदिके रसकी धार डालनी चाहिये । इसे "लेखन सेक" कहते हैं ।

स्नेहन सेक ६०० मात्रा तक, रोपण सेक ४०० मात्रा तक और लेखन सेक ३०० मात्रा तक करना चाहिये । मनुष्य जितने समय में आँखको मीचकर खोलता है, उतने समयको "एक मात्रा" कहते हैं ।

सेक दिनमें ही करना चाहिये । अगर बहुत ही दुःखदायी रोग हो, तो रातको भी कर सकते हैं ।

आश्चोतन-विधि ।

(आँखोंमें दवा टपकाना)

रोगीकी आँखोंको दो अंगुलियोंसे खोलकर उनमे काढ़े या शहद अथवा दूध घी वगैरःकी बूंदें डालनी चाहियें । ये बूंदें पोटलासे भी डाली जा सकती हैं और अन्य रीतिसे भी ।

मल उखाड़नेके लिए आठ बूंदें, रोपणके लिये दस बूंदें और स्नेहके लिए बारह बूंदे आँखोंमे डालनी चाहियें ।

जाड़ेके दिन हों तो बूंद ज़रा गरम करके डालनी चाहियें और अगर गरमीका मौसम हो तो शीतल बूंदें डालनी चाहियें ।

वायुका पीडा हो तो स्नेह यानी घी वग़ैर. चिकने पदार्थोंकी बूंदें

डालनी चाहियें; पित्तकी पीड़ा हो तो मीठी और शीतल बूँदें डालनी चाहियें; कफकी पीड़ा हो, तो तीक्ष्ण, गरम और रूखी बूँदें डालनी चाहियें।

किसी प्रकारके भी नेत्र दुखनेके रोगमें, आश्च्योतन कर्म यानी यह बूँद डालनेका काम रातके समय न करना चाहिये।

पिण्डी-विधि।

(आँखोंपर टिकिया बाँधना)

योग्य दवाओंका कल्क बनाकर यानी उन्हें पानीके साथ सिलपर पीसकर टिकिया बना लो। फिर उसे आँखोंपर रखकर पट्टी बाँध दो। इसीको "पिण्डी" कहते हैं।

वायुका अभिष्यन्द हो यानी वायुसे आँखें दुखती हों, तो चिकनी और गरम दवाओंकी टिकिया बाँधनी चाहिये। पित्तकी पीड़ा हो तो शीतल दवाँओंकी टिकिया बाँधनी चाहिये। कफकी पीड़ा हो, तो रूखी और गरम दवाओंकी टिकिया बाँधनी चाहिये।

बिडालक विधि।

(आँखोंपर लेप करना)

पलकोंके बाल बचाकर, आँखोंके बाहरी भाग पर लेप करना चाहिये। यही "बिडालक-विधि" है।

चौथाई अंगुल ऊँचा लेप कनिष्ठ मात्रा है, तिहाई अंगुल ऊँचा लेप मध्यम मात्रा है और आधा अंगुल ऊँचा लेप उत्तम मात्रा है।

जब तक कल्क या पिसी हुई दवा न सूखे, तभी तक लेप करना ठीक है; सूखने पर लेप गुणहीन या बेकाम हो जाता है और चमड़ेको भी ख़राब कर देता है।

तर्पण-विधि।

(आँखोंके भीतर दवा भरना)

जिस घरमें हवा, धूप और धूल न हो उस घरमें रोगीको चित्त लिटाकर, उसकी आँखोंके चारों तरफ, उड़दके सने हुए आटेके मण्डल या घेरे बनाओ। फिर रोगीकी दोनो आँखें बन्द कराकर, उस घेरेमें पतला घी अथवा मंड अथवा गरम जल अथवा सौ बार-का धोया हुआ घी अथवा दूधसे निकाला हुआ घी उस समय तक भरो जब तककि पलकोंके बाल न डूबें। जब वे घेरे भर जाँय, रोगी से धीरे-धीरे आँखें खुलवाओ। यही "तर्पण-विधि" है।

नेत्रोंके रूखे हो जाने, सूख जाने, कुटिल हो जाने, गदले हो जाने, पलकोंके बाल गिर जाने, शिरोत्पात, आँखोंके मुश्किलसे थोड़ी खुलने, तिमिर, अर्जुन, शुक्र, अभिष्यन्द, अधिमन्थ, शुष्काक्षिपाक, सूजन और वात-विपर्यय रोगमें तर्पण करना चाहिये।

तर्पण करनेके बाद आँखोंमें भरी हुई चिकनाईको बाहर करके, आँखोंको सेके हुए जौके आटेसे साफ करना चाहिये। पीछे बढ़े हुए कफको घीके योगसे धूम्रपान कराकर दूर करना चाहिये। एक, पाँच या सात दिन तक तर्पण-क्रिया करनी चाहिये।

ठीक तर्पण होनेसे नींद सुखसे आती है, सुखसे आदमी जागता है, नेत्र साफ होते हैं, नेत्रोंकी ताक़त बढ़ती है, रोग शान्त होता है तथा नेत्र खोलने और बन्द करनेमें हलकापन होता है।

अगर तर्पणका अतियोग या हीन योग होता है, तो तक-लीफें बढ़ जाती हैं। अति योग होनेसे नेत्र भारी और गदले रहते हैं, बहुत चिपकते हैं, आँसू भर-भर आते हैं, खुजली चलती है, कीचड़ आती है और सूई चुभानेकासा दर्द होता है। कम तर्पण होनेसे आँखोंसे पानी गिरता, सूजन और पीड़ा होती, रूखापन और सख्ती होती तथा कीचड़ बहुत आती है; अतः तर्पण खूब विचार कर क़ायदेसे करना चाहिये। अगर अतियोग हुआ हो तो

रूखा उपचार करना चाहिये और अगर हीन या कम योग हुआ हो, तो स्निग्ध या चिकना उपचार करना चाहिये।

नोट—पलकोंके रोगमें १०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितनी देरी लगे, उतनी देर तक तर्पण करना चाहिये। स्वस्थता, कफ और सन्धियोंके रोगोंमें ५०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक, पित्तकी पीड़ामें ६०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक, काले भागमें रोग हो तो ७०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक, दृष्टि रोगमें ८०० और अधिमन्थ तथा वातज रोगमें १००० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक तर्पण करना चाहिये। बादल हो रहे हों उस दिन, अत्यन्त गरमी या सरदीके समयमें तथा चिन्ता भ्रम और उपद्रवोंके शान्त होनेसे पहले नेत्रोंको तर्पण न करना चाहिये।

पुटपाक-विधि।

(पकायी हुई दवाका रस आँखोंमें भरना)

उत्तम चिकना मांस आठ तोले लेकर, उसमें और दवाएँ चार तोले और पतला पदार्थ सोलह तोले-भर डालकर सबको एकत्र पीसो और एक गोला बना लो। इस गोलेपर पत्ते लपेटकर डोरा बाँधो और मिट्टीसे लहेस कर सुखालो। फिर उसे पुटपाककी तरह आगमें पकाओ; जब गोला लाल हो जाय निकाल लो। गोलेको खोलकर उसमेंसे रस निचोड़ो और रोगीको चित्त सुलाकर उस रस को तर्पणकी विधिसे नित्य आँखोंमें डालो।

नोट—नेत्रोंका तर्पण करने या पुटपाक-विधिसे पकाया रस आँखोंमें भरनेके बाद रोगीको तेजस्वी पदार्थ, पवनका सञ्चार, आकाश और सूर्यकी धूप न दिखाओ।

अञ्जन विधि।

(आँखोंमें अञ्जन आँजना)

दोष पकनेके बाद नेत्रोंमें अञ्जन आँजना चाहिये। जो चीज नेत्रोंमें आँजी जाती है, उसे ही अञ्जन कहते हैं। गोली, रस और चूर्ण—इस तरह अञ्जन तीन तरहका होता है। गोली रूपी अञ्जनसे

रसरूपी अञ्जन कमजोर हैं और रसरूपीसे चूर्ण रूपी अञ्जन कमज़ोर है।

अञ्जनके स्नेहन, रोपण और लेखन—इन नामोंसे तीन भेद हैं। क्षार, कड़वे और खट्टे रसवाले अञ्जनको "लेखन अञ्जन" कहते हैं। कषैले और कड़वे रसवाले चिकनाई मिले अञ्जनको "रोपण अञ्जन" कहते हैं। मधुर रसवाले चिकनाई मिले अञ्जनको "स्नेहन अञ्जन" कहते हैं।

अंजन आँजनेकी सलाई दोनों मुहको ओरसे सकुची हुई, चिकनी, आठ अंगुल लम्बी, पत्थर या धातुकी होनी चाहिये। स्नेहन अञ्जनके लिए सोने या चाँदीकीकी सलाई होनी चाहिये। लेखन अञ्जनके लिये ताम्बे, लोहे या पत्थरकी सलाई होनी चाहिये। रोपण अञ्जन नर्म होता है, अतः उसके लगानेके लिए अंगुली ही काफी है।

काले भागके नीचे—आँखके कोये तक अंजन आँजना चाहिये। हेमन्त और शिशिर ऋतु यानी जाड़ेमें मध्याह्नके समय अञ्जन आँजना चाहिये। गरमी और शरद् ऋतुमें पूर्वाह्नके समय अथवा अपराह्नके समय अंजन आँजना चाहिये। बरसातके मौसममें, बादल न होने और गरमीका जोर न होनेके समय अंजन लगाना चाहिये। वसन्तमें किसी समय अथवा सवेरे-शाम दोनो समय अंजन कर सकते हैं।

थके हुए, बहुत रो चुकने वाले, डरे हुए, शराब पीये हुए, नये ज्वरवाले, अजीर्ण रोगी और जिसके मलमूत्र आदि रुके हों—उनको अंजन न लगाना चाहिये।

नेत्र रोग नाशक नुसखे।

सेक।

(१) अरण्डके पत्ते अरण्डकी जड़, और अरण्डकी छाल—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीके

साथ बकरीका दूध पकालो। दिनके समय इस दूधको सुहाता-सुहाता गरम, पतली धारसे,नेत्रोंमें डालनेसे वाताभिष्यन्द या वायुसे आँखें दुखना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) हरड़, बहेड़ा, आमला और पोस्तके डोडे,—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी कर लो। फिर उस लुगदीमें ज़रासा अफीमका रस मिलाओ और उसे एक बारीक कपड़ेमें रखकर पोटली बना लो। इस पोटलीको आँखोंके ऊपर रखनेसे सब तरहके अभिष्यन्द या आँखें दुखनेसे रोग तत्काल नष्ट हो जाते हैं। जगदुपकारार्थ दयालु मुनियोंने यह नुसख़ा कहा है।

नोट—भोजन करनेके बाद, दोनों हाथोंके गीले तलवे आपसमें रगड़ कर आँखोंपर फेरनेसे तिमिर रोग या अँधेरा दीखनेका रोग आराम हो जाता है। काले तिलोंको पीसकर सिर पर मलने और फिर स्नान करनेसे नेत्र उत्तम हो जाते हैं और वायुकी पीड़ा शान्त हो जाती है। नित्य आमले मलकर नहानेसे दृष्टिशक्ति या देखनेकी ताक़त बढ़ती है। त्रिफलेके काढ़े से आँखें धोनेसे नेत्र-रोग आराम हो जाते हैं।

आश्चोतन।

(३) बेल आदि पंचमूल, कटेरी, अरण्ड और सहँजना—इनका काढ़ा बनाकर सुहाती-सुहती बूँदें आँखोंमें डालनेसे वाताभिष्यन्द या वादीसे आँखें दुखनेका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बेलकी जड़, अरनीकी जड़,सोना पाठाकी जड़,गम्भारीकी जड़,पाटलाकी जड़, कटेरीकी जड़, अरण्डकी जड़ और सहँजनेकी जड़—इनका काढ़ा बनाना चाहिये।

(४) त्रिफलेके काढ़ेकी बूँदें आँखोंमें डालनेसे सब तरहके अभिष्यन्द यानी सब तरहकी नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५) औरतोंका दूध नेत्रोंमें टपकानेसे रक्तपित्त और वातकी नेत्र पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

पिण्डी ।

(६) अरण्डकी जड़, अरण्डके पत्ते और अरण्डकी छाल—इनको पानीके साथ पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको आँखों पर रखकर पट्टी बाँधनेसे वायुकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(७) आमलोंको पानीके साथ सिल पर पीसकर टिकिया बना लो और आँखों पर रख कर पट्टी बाँधो। इससे पित्तकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(८) सहँजनेके पत्ते सिल पर पीस कर टिकिया बना लो और आँखों पर रख कर पट्टी बाँधो। इससे कफकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(९) नीमके पत्तोंकी टिकिया आँखों पर रखकर पट्टी बाँधनेसे पित्त और कफकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) सोंठ और नीमके पत्ते पानीके साथ सिल पर पीसो और जरासा "नोन" मिला दो। फिर इसे गरम करके सुहाती-सुहाती आँखों पर रख कर पट्टी बाँधो। इस टिकियासे वायु और कफकी पीड़ा, सूजन, खुजली एवं और व्यथायें आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(११) त्रिफलाको पानीके साथ सिल पर पीस कर टिकिया बना लो और उसे आँखों पर रख कर पट्टी बाँध दो। इससे तीनों दोषों से उत्पन्न हुई नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१२) हरड़, बहेड़े, आमले और पोस्तके डोडे—इनको सिल पर पानीके साथ पीस कर, उसमें ज़रासा अफीमका रस मिला कर टिकिया बना लो और आँखों पर रखकर पट्टी बाँध दो। इससे सब तरहका अभिष्यन्द या आँख दुखना आराम हो जाता है।

(१३) लोधको काँजीमें पीस कर घीमें भूनो; फिर टिकिया

बना कर नेत्रों पर बाँधो। इससे रक्तज अभिष्यन्द या ख़ूनके कोपसे नेत्र-पीड़ा होना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

विडालक।

(१४) मुलेठी, पीला गेरू, सेंधानोन, दारुहल्दी और रसौत इनको समान समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। इसका नेत्रके बाहर लेप करनेसे नेत्रोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं, ख़ास कर नेत्र-पीड़ा और खुजली तो आराम हो ही जाती है। परीक्षित है।

(१५) रसौतका लेप करनेसे अथवा हरड़का लेप करनेसे अथवा बेलके पत्तोंका लेप करनेसे अथवा बच, हल्दी और सोंठका लेप करनेसे अथवा सोंठ और पीले गेरूका लेप करनेसे नेत्रके रोग नाश हो जाते हैं। लेप नेत्रोंके बाहर, पलकोंके बाल बचाकर करना चाहिये।

(१६) कालीमिर्चोंको भाँगरेके रसमें खरल करके लेप करनेसे अर्म रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) नीबूके रसको लोहेके बासनमें डालकर, लोहेके दस्तेसे घिसकर, नेत्रोंके बाहर किसी क़दर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे नेत्रोंकी पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) सैंधानोन और लोधको आगमें जलाकर, शहद और घीमें मिलाकर लेप करने अथवा अंजन करनेसे नेत्र-पीड़ा तत्काल आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) रसौत, हरड़ और सोंठको पानीमें पीस कर लेप करनेसे अथवा बच, हल्दी और सोंठको पानीमें पीसकर लेप करनेसे अथवा सोंठ और गेरूको पानीमें पीस कर लेप करनेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

तर्पण।

(२०) सौ बार धोये हुए घीको सुखोष्ण या सुहाते-सुहाते

गरम पानीमें मिलाकर, उसमें आँखोंके पलकोंको डुबावें और जब तक डुबाये रख सकें रक्खें, फिर धीरे-धीरे नेत्र खोलें। जब तक शान्ति न हो, ऐसा ही करें। तर्पणमें मात्राका नियम नहीं है। रोगके अनुसार चाहे १०० बार चाहे हजार बार तर्पण करें।

नोट—धुन्ध, तिमिर अर्जुन, शुक्र-फूला, अभिष्यन्द—आँखे दुखना तथा अधिमन्थ आदिमें तर्पण करना चाहिये।

दृष्टि प्रसादनी सलाई।

(२१) शुद्ध सीसेको आगमें बारम्बार तपा-तपा कर, त्रिफलेके रसमे, सोंठके रसमें, घीमें, भाँगरेके रसमें, गोमूत्रमें, शहदमें और बकरीके दूधमें बुझाओ और फिर सलाई बना लो। इस सलाईको आँखोंमे फेरनेसे नेत्र-सम्बन्धी सारे रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—त्रिफलादि सातों चीजोंमें सात-सात बार या इक्कीस-इक्कीस बार बुझानेसे उत्तम सीसा तैयार होता है। फिर इस सीसेको साँचेमें ढाल कर सलाई बना लेनी चाहिये। यह निश्चय ही बड़ी उत्तम सलाई है। परीक्षित है।

स्नेहनी वटिका।

(२२) हरड़ १ भाग और आमले चार भाग—इनको लेकर पानीके साथ सिल पर पीसकर गोलियाँ बना लो। हर दिन, दो मटर-समान गोली आँखोमें आँजनेसे नेत्रोंका स्राव या पानी बहना, वायु और खूनकी पीड़ा—ये सब शान्त हो जाते हैं।

नोट—नेत्रो के दोष पकने पर अञ्जन करना चाहिये। अञ्जन-सम्बन्धी नियम पढ़-समझ कर अञ्जन करना उचित है।

रोपणी वटी।

(२३) रसौत, हल्दी, दारुहल्दी, मालतीके पत्ते और नीमके पत्ते—समान-समान लेकर, गायके गोबरके रसमें पीसकर गोलियाँ बना लो। डेढ मटर-समान गोली आँखमें आँजनेसे रतौंधी या रातमें न दीखनेका रोग नष्ट हो जाता है।

लेखनी चन्द्रोदय वर्टिका ।

(२४) शंखकी नाभि, वहेड़ेकी मींगी, हरड़, शुद्ध मैनसिल, पीपर, कालीमिर्च, कूट और वच—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, बकरीके दूधमें पीस कर, जौके समान लम्बी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक मटर-समान गोली पानीमें घिस कर आँजनेसे तिमिर, मांस बढ़ना, काच, पटल, पलकके भीतरकी गाँठ, रतोंधी और एक सालका फूला—ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

पुष्पहरी वर्त्ति ।

(२५) करंजके बीजोंको ढाकके फूलोंके रसकी १०० भावना देकर पीसो और बत्ती बना लो। इन बत्तियोंको आँखोंमें आँजनेसे नेत्रोंकी फूली नाश हो जाती है।

स्नेहन रस क्रिया ।

(२६) निर्मलीके फलको "शहद"में घिस कर, उसमें ज़रासा "भीमसेनी कपूर" मिलाओ। इस रसको आँखोंमें डालनेसे नेत्र साफ हो जाते हैं। परीक्षित है।

रोपण रस क्रिया ।

(२७) रसौत, राल, चमेलीके फूल, मैनसिल, समन्दर फेन, सैंधानोन, पीला गेरू और कालीमिर्च—इन सबको समान-समान लेकर, शहदमें पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे प्रक्लिन्नवर्त्मका क्लेद तथा खुजली ये सब नष्ट हो जाते हैं।

लेखन रसक्रिया ।

(२८) भीमसेनी कपूरको बड़के दूधमें पीसकर आँजनेसे दो महीने तकका फूला तत्काल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२९) शहद और घोड़ेकी लारमें कालीमिर्च पीसकर आँजनेसे

बहुत नींदका आना उसी तरह नष्ट हो जाता है, जिस तरह सूरजके उदय होनेसे अँधेरेका नाश हो जाता है। परीक्षित है।

स्नेहन चूर्ण।

सफेद सुरमेको आगमें तपा-तपाकर सात बार त्रिफलेके काढ़ेमें और सात बार स्त्रीके दूधमें बुझाओ। फिर इसको महीन पीस-छान कर नित्य नेत्रोंमें आँजो। यह सुरमा नेत्रोंके लिए अतीव हितकारी है। इससे आँखोंके सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

रोपण चूर्ण।

थोड़ा सा खपरिया पीसकर पत्थरके खरलमें भिगो दो। फिर कुछ देर बाद उसका पानी नितारकर दूसरे बर्तनमें ले लो और नीचे जो खपरियाका मैल रह जाय, उसे फेंक दो।

फिर उस नितरे हुए जलको सुखा लो। सूखनेसे एक पपड़ी सी जम जायगी। उस पपड़ीको पीसकर, उसमें त्रिफलेके काढ़ेकी तीन भावना दो। फिर उसमें पपड़ीका दसवाँ भाग "भीमसेनी कपूर" मिला दो। इस चूर्णको आँखोंमें आँजने से सब तरहके नेत्र रोग नष्ट हो जाते हैं।

लेखन चूर्ण।

मुर्गेके अण्डेका छिलका, मैनशिल, कचिया नमक, शंखका पेंदा, चन्दन और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर खूब महीन पीसो और अतीव बारीक कपड़ेमें छानो। इस चूर्णको नित्य आँखोंमें आँजनेसे फूला जाला वग़ैरः नाश हो जाते हैं।

मुक्तादि महाञ्जन।

अबीध बढ़िया मोती, भीमसेनी कपूर, काँसीकी भस्म, सीसेकी भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध तूतिया, ताम्बेकी भस्म और लोहेकी भस्म —इनको छे-छे रत्ती लेकर एकत्र पीस छान लो।

कचिया नमक, मिर्चा, पीपर, सैंधानोन, एलुआ, कंकोल मिर्च, हल्दी, मैनशिल, शंख नाभि, मुर्गीके अण्डेका छिलका, वहेड़ा, केसर, हरड़, मुलेठी, रावटी पत्थर, चमेलीके फूल, तुलसीके नये फूल, सुफेद सहंजनेके वोज, दुर्गन्ध करंजके वीज, नीम, कोह, नागरमोथा और रसौत—इनको भी छै-छै रत्ती लेकर पीसो और वारीक कपड़ेमें छान लो।

फिर दोंनो तरहके छने हुए चूर्णोंको एकमें मिलाकर उत्तम असली शहदमें पीसो। यही "मुक्तादि महाञ्जन" है। इस अंजनके नेत्रोंमें आँजनेसे अत्यन्त वढ़े हुए नेत्र रोग भी आराम हो जाते हैं। यह अञ्जन सव तरहके नेत्रोंके रोगोंमें चलता है।

नयन शोणाञ्जन।

पीपर, सेंधा नमक, कालीमिर्च, रसौत, सुर्मा, समन्दरफेन, असली देशी मिश्री, सफेद पुनर्नवा, हल्दी, लाल चन्दन, मुलेठी, शुद्ध नीला थोथा, हरड़, शुद्ध मैनशिल, नीमके पत्ते, लोध, फिटकरी, शंखकी नाभि और भीमसेनी कपूर—इन उन्नीस चीज़ोंको समान-समान लेकर महीन पीसो और मोटे कपड़ेमें छानो। फिर इसे लोहे के वर्तनमें डालकर, ऊपरसे उत्तम शहद और दूध डालते जाओ और तास्वेके डण्डेसे ३ घन्टे तक खूव खरल करो। यही "नयन शोणाञ्जन" है। मुनियोंके कहे हुए इस अंजनसे नवीन तिमिर,पटल और फूला आराम हो जाते हैं।

चन्द्रोदय वटी।

हरड़, वच, कूट, पोपर, काली मिर्चा, वहेड़ेकी मींगी, शंखकी नाभि और शुद्ध मैनशिल—इन सवको वरावर-वरावर लेकर महीन पासो और छान लो। फिर छने हुए चूर्णको गायके दूधके साथ वारीक पीस कर गोलियाँ वना लो। यही "चन्द्रोदय वटी है। इन गोलियाके आंखोंमें आंजनेसे तोन सालका फूला भी एक महीनेमे

आराम हो जाता है । इतना ही नहीं, इनसे सब तरहकी मांसवृद्धि और रतौंधी भी महीने भरमें नष्ट हो जाती है ।

चन्द्रप्रभा वर्त्ती ।

हल्दी, नीमके पत्ते, पीपल, कालीमिर्च, वायविडंग, नागरमोथा और हरड़---इनको बकरीके मूत्रके साथ महीन पीस कर बत्तियाँ बनाओ और छायामें सुखा लो । साक्षात् सदाशिवकी बनाई यह चन्द्रप्रभावर्त्ती "शहद"में घिसकर लगानेसे पटल या धुंधले दीखनेको दूर करती है और औरतके दूधमें घिसकर लगानेसे फूलेका नाश करती है ।

कणा या मरिच प्रयोग ।

कालीमिर्च या छोटी पीपर अथवा सोंठको शहदमें पीसकर आँजनेसे रतौंधी बहुत जल्दी आराम हो जाती है ।

लोलिम्बराज महाशयने क्या खूब लिखा है :—

> निराकरोति नक्ताध्यं सगोमयरसाकणा ।
> यथा रतेन रमणी रमणस्य महाबलम् ॥

गोबरके रसमें पिसी हुई छोटी पीपर नेत्रोंमें आंजनेसे रतौंधीको इस तरह नष्ट करती है, जिस तरह स्त्री मैथुनसे पुरुषके महान्बलको नष्ट कर देती है ।

त्रिफलाद्य घृत ।

त्रिफलेका काढ़ा ६४ तोले, भांगरेका रस ६४ तोले, अडूसेका रस ६४ तोले, शतावरका रस ६४ तोले, गिलोयका रस ६४ तोले, आमलोंका रस ६४ तोले और बकरीका दूध ६४ तोले तैयार रखो ।

पीपर, मिश्री, दाख, हरड़, बहेड़ा, आमला, नीले कमल, दूनी मुलेठी, असगन्धकी जड़ और कटेरी—इनको एक-एक तोले और मुलेठीको दो तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीस लो । यह लुगदी प्रायः सोलह तोलेके होगी ।

अब गायका ताज़ा घी ६४ तोले, ऊपरकी लुगदी तथा सातों रस और दूधादिको मिलाकर मीठी-मीठी आगसे पकाओ ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "महा त्रिफलाद्यघृत" है ।

इसकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। भोजनके पहले, भोजनके बीचमें और भोजनके बाद इस घी के पीनेसे सब तरहके नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। यह घी खूनके बढ़ने, खूनके बिगड़ने, खूनके बहने, रतौंधी, तिमिर, काँच, नीलिका, पटल, अर्बुद, अभिष्यन्द —आँख दुखना, महा दारुण पक्ष्मकोप और त्रिदोषसे पैदा हुए समस्त नेत्र रोगोंमें अत्यन्त हितकारी हैं। परीक्षित है ।

दूसरा त्रिफलाद्य घृत ।

हरड़ १। सेर, बहेड़े २॥ सेर, आमले ५ सेर, अडूसा ५ सेर और भाँगरा ५ सेर—इन सबको चौगुने यानी १ मन ३५ सेर पानीमें औटाओ ; जब चौथाई यानी पौने उन्नीस सेर पानी रह जाय, मल-छानलो ।

सफेद चीनी, दूनी मुलेठी, दाख, कटेरी, दूनी असगन्धकी जड़, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागकेशर, पीपल, लालचन्दन, नागरमोथा, त्रायमाण और लाल कमल—इनमें से असगन्ध और मुलेठीको आध-आध पाव और बाक़ी दवाओंको छटाँक-छटाँक भर लेकर पानीके साथ सिल पर पीसलो ।

अब चार सेर घी, चार सेर दूध, ऊपरकी लुगदी और उस काढ़े को मिलाकर पकाओ ; जब घी मात्र रह जाय छान लो। इसकी मात्राभी ६ माशेसे २ तोले तक है। इस घीके पीनेसे तिमिर, काँच, रतौंधी, फूला, स्राव-पानी वगैरः-बहना, खुजली, सूजन, गदलापन, बिन्दु, अर्म्म, और पटल आदि नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। बहुत कहनेसे क्या ? इस घीसे सारे ही नेत्र रोग नष्ट हो जाते हैं।

सूरज और आगके सामने देखनेसे जिसकी नज़र मारी गई हो, उसके लिए यह घी अमृत है। जिस तरह कपड़ेसे पोंछनेसे आईना साफ़ हो जाता है; उसी तरह इस घीके पीनेसे नेत्र निर्मल हो जाते हैं।

नोट—शास्त्रमें और हमारी इस विधिमें फ़र्क़ और घीके बनानेके सम्बन्धमें बहुत थोड़ासा भेद है। हमने जिस तरह इसे बनाकर लाभ उठाया है, उसी तरह लिख दिया है। परीक्षित है।

वासकादि क्वाथ।

अडूसेकी छाल, सोंठ, गिलोय, दारुहल्दी, लालचन्दन, चीता, चिरायता, नीमकी छाल, कुटकी, कड़वे परवलके पत्ते, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, हल्दी, पीपर और इन्द्रजौ—इनको अढ़ाई-अढ़ाई या तीन-तीन माशे लेकर, दो सेर पानीमें काढ़ा बनाओ और जब आध पाव पानी रह जाय छान कर सवेरे ही पीओ। इस काढ़ेसे नेत्रके सब रोग, स्वरभंग, पीनस, श्वास और खाँसी वगैर रोग आराम हो जाते हैं।

नागार्जुनाञ्जन।

त्रिफला, त्रिकुटा, सैंधानोन, मुलेठी, शुद्ध तूतिया, रसौत, पुण्डरिया, वायविडंग, लोध और ताम्बा-भस्म—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर एक खरलमें डालकर, ओसके जलके साथ घोटो और वत्तियाँ बनालो। इन वत्तियोंको दूधमें घिसकर आँजनेसे तिमिर रोग और आँखोंके सामने अँधेरा देखना; सिरसके फूलमें घिस कर आँजनेसे आँखकी फूली और दूधमें घिसकर आँजनेसे माड़ा दूर होता है॥

त्रिफलादि घृत।

त्रिफला, त्रिकुटा और सैंधानोन समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस कर लुगदी बनालो। इस लुगदीसे चौगुना

गायका घी और घीसे चौगुना पानी सबको मिलाकर घी पकालो। यह घी नेत्रोंको हितकारी, भेदन कर्त्ता, हृदयको हित, दीपन और कफ नाशक है। यह घी भी पिया जाता है।

सुरमा आँख।

शुद्ध सीसा २ तोले, शुद्ध काला सुरमा २ तोले, शुद्ध पारा २ तोले, मिश्री २ तोले और समन्दर झाग २ तोले—तैयार रखो।

पहले शीशे और पारेको कज्जली करो। फिर उसमें सुरमा, मिश्री और समन्दर झाग मिलाकर चार दिनतक बराबर खरल करो। शेषमें, दो तोले भीमसेनी कपूर मिलाकर एक दिन-भर और खरल करो। बस, सुरमा तैयार हो गया। सवेरे-शाम इस सुरमेके आँखोंमें आँजनेसे आँखोंकी रोशनी बढ़ती और अनेक नेत्र रोग नाश हो जाते हैं। बहुत बढ़िया सुरमा है।

परमोत्तम सलाई।

एक सेर उत्तम सीसा लेकर आगपर तपाओ और गलागलाकर १०० बार त्रिफलेके काढेमें बुझाओ। ५० बार भाँगरेके रसमें बुझाओ। ५० बार सोंठके काढ़ेमें बुझाओ। ५० बार घीमें बुझाओ। २५ बार गोमूत्रमें बुझाओ। २५ बार शहदमें बुझाओ और २५ बार दूधमें बुझाओ। इस तरह त्रिफलाके काढ़े, सोंठके काढ़े, भाँगरेके रस, घी, गोमूत्र, शहद और दूध इन सात चीज़ोंमें ३२५ बार बुझाओ। फिर इस सीसेकी सलाइयाँ बनवा लो।

इस सलाईको दिन-रातमें चार बार नित्य आँखोंमें ख़ाली फेरनेसे आँखोंसे पानी आना बन्द हो जाता और कभी आँखें नहीं दुखती। जिसको कम दिखता है उसकी आँखोंकी रोशनी ठीक हो जाती है और बुढ़ापे तक कम नहीं होती।

हमने पहले एक दृष्टिप्रसादनी सलाई लिखी है, उससे भी यह सलाई उत्तम है। हर गृहस्थको बनाकर रखनी चाहिये। कम ख़र्च बाला नशीन है। याद रखो, आँख नहीं तो जहान नहीं।

लाजवाब अंजन।

लौंग ३ तोले, पीपर ३ तोले, कालीमिर्च ३ तोले, नीलाथोथा ३ तोले, आमाहल्दी ६ तोले, सिरसके बीज ६ तोले, फिटकरीके फूले ६ तोले, शुद्ध नौसादर ६ तोले, शोरा ६ तोले, समन्दर झाग ६ तोले, मूंजकी राख ६ तोले और सुरमा ६ तोले—तैयार करो।

सुरमेको महीन पीस और छानकर अलग रख लो। शोरेको महीन पीस-छान कर अलग रखलो। बाक़ी चीजोंको महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो और अलग रख लो। अब सबको एकत्र मिलाकर खरल करो और फिर छान कर शीशीमें रखदो। इसको रातके समय सलाईसे आँखोंमें लगानेसे जाला, धुन्ध और फूली वगैर: अनेक रोग आराम हो जाते हैं।

नेत्र रोगोंकी

विशेष चिकित्सा।

(हकीमी नुसखे)

रमद, अभिष्यन्द या नेत्र पीड़ा नाशक नुसखे।

(१) आँखें दूखनी आई हों, तो हल्दीमें रंगा हुआ पीला कपड़ा या नीला कपड़ा आँखोंके सामने रखो। ऐसे कपड़ोंसे दूखनी आँखों को बहुत लाभ होता है।

(२) भुनी हुई फिटकरी ४० माशे, कच्ची हल्दी ७ माशे और अफीम ५ माशे—इन सबको पीसकर एक लोहेकी कड़ाहीमें डालो। ऊपरसे काग़ज़ी नीबूका पावभर रस डालो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब गाढ़ा हो जाय उतार लो और खरलमें घोटो। जब गोलियाँ बनाने योग्य हो जाय, गोलियाँ बनाकर सुखा लो। इनमेंसे

एक गोलीको पानीके साथ रगड़ कर आँखोंके ऊपर पतला-पतला लेप करो और आँखोंके किनारोंकी तरफसे थोड़ा-थोड़ा भीतर भी लगाओ। कहते हैं, रमद या आंखें दुखनी आनेकी इससे अच्छी और दवा नहीं है।

(३) अगर आंखें दुखनी आवे तो सरेरूको फस्द लो और जौंकें लगवाओ; मिठाई और खटाईसे परहेज रखो। नेत्र दुखने आवें उसी समय; यानी यह रोग होते ही आँखों पर शीतल जल मत लगाओ।

(४) घीग्वारका गूदा १ माशे और अफीम १ रत्ती—दोनोंको महीन पीसकर घीग्वारके गूदेमें रखो। इसके बाद सबको कपड़ेमें रखकर पोटली बना लो। उस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखों पर फेरो और दो एक बूंद इसमेंसे आंखोंके भीतर भी टपकाया करो। इस पोटलीसे नेत्रपीड़ा या आंखें दुखनेका रोग आराम हो जाता है। कहते हैं, नेत्र दुखने पर यह लासानी दवा है।

(५) लोध १माशे, भुनी फिटकरी १ माशे, अफीम ४ रत्ती और इमलीको पत्तियाँ ४ माशे—इन सबको पीसकर एक कपड़ेमें रख लो और पोटली बनाकर, हर समय, आँखो पर फेरो। इस पोटलीसे नेत्रपीड़ा या आँखें दुखनेका रोग आराम हो जाता है। आज़मूदा है।

(६) इमलीकी पत्तियां, सिरसकी पत्तियाँ, हल्दी और फिटकरी —इन सबको दो-दो माशे लेकर कूट-पीस लो और पोटली बना लो। इस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखों पर फेरनेसे और कुछ आँखोंके अन्दर टपकानेसे नेत्रपीड़ा और समल वायु नाश हो जाती हैं।

(७) कपूर ३ भाग और पठानी लोध १ भाग—दोनोंको पीसकर और पोटली बना कर एक घण्टे तक जलमें भिगो रखो। फिर इस पोटलीको नेत्रोंपर बारम्बार फेरो। इससे नेत्रपीडा, रमद या अभिष्यन्द रोग आराम हो जाते हैं।

(८) पीली हरड़की छाल, काबुली हरड़की छाल, आमले, रसौत, गेरू, इमलीकी पत्तियाँ, अफीम, भुनी फिटकरी और सफेद ज़ीरा—इन सबको एक-एक माशे लेकर पीस लो और कपड़ेके टुकड़ेमें रखकर पोटली बना लो। इस पोटलीको गुलाब-जल या पानीमें भिगो-भिगोकर आँखों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा या रमद नाश हो जाती है।

(६) कालाज़ीरा, सफेद लोध और भुनी फिटकरी महीन पीस कर "घीग्वारके गूदे"में मिलाकर पोटली बना लो। इस पोटलीको पानी में भिगो-भिगोकर आँखों पर फेरनेसे नेत्रपीड़ा आराम हो जाती है।

(१०) अफीम १ माशे, भुनी फिटकरी २ माशे और इमलीकी पत्ती २० माशे—इन सबको महीन पीसकर पोटली बना लो। इस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरने और इसका ज़रासा पानी आँखोंके भीतर टपकानेसे नेत्रपीड़ा आराम हो जाती है।

(११) फिटकरी १ माशे और अलसी २ माशे—इन दोनोंको बिना पीसे—साबत—पोटलीमें रख कर और पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखों पर फेरनेसे आँखोंकी ललाई कम हो जाती है। यह पोटली ललाई काटनेमें उत्तम है।

(१२) जिस दिन आँखोंमें दर्द हो उसी दिन, धतूरेकी पत्तियों-को कुछ गरम करके रस निकाल लो। उस रसको कानमें टपकाओ। अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो तो बायें कानमें टपकाओ। अगर बायीं आँखमें दर्द हो तो दाहिने कानमें टपकाओ। इस उपाय से नेत्रोंकी लालीमें फायदा होता है।

(१३) नीमकी कोंपलें पीसकर रस निकालो और उस रसको कुछ गरम करो। अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो तो बायें कानमें और बायीं आँखमें दर्द हो तो दाहिने कानमें रस टपकाओ। अगर दोनों आँखोंमें पीड़ा हो तो दोनों कानोंमें टपकाओ। बालकोंके रमद या आँखें दुखनेमें ये नुसख़ा बड़ा मुफीद है।

(१४) केवल घीग्वारके गूदेका रस सोते समय आँखोंमें टपकाने से नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(१५), लोहेके खरलमें लोहेके दस्तेसे नीबूका रस घोटो; जब काला हो जाय, आँखोंके चारो तरफ लेप करो। इससे नेत्र पीड़ा नाश हो जाती है।

(१६) बड़का दूध आँखोंमें लगानेसे नेत्र-पीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

(१७) बाँसके पत्ते पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको तीन दिन तक आँखोंपर बाँधनेसे आँखोंकी सुर्ख़ी जाती रहती है।

(१८) अनारकी पत्तियाँ पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको सोते समय आँखोंपर बाँधनेसे नेत्रोंकी लाली कट जाती है।

(१९) आँख दुखनी आते ही—अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो तो बायें अँगूठेके नाखूनमें और अगर बायीं आँखमें दर्द हो तो दाहिने अँगूठेके नाखूनमें "मदारका दूध" भर दो। शुरूमें ही इस तरह करनेसे नेत्र-पीड़ासे बहुत तकलीफ उठानी नहीं पड़ती।

(२०) आमकी कैरी पीसकर आँखोंपर बाँधनेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(२१) कटाईके पत्ते पीसकर आँखोंपर बाँधने या उनका स्वरस आँखोंमें टपकानेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है, इसमें शक नहीं। लगाते समय दर्द तो कुछ होता है, पर आराम जादूकी तरह होता है। <u>परीक्षित है</u>।

(२२) छिली हुई मुलैठी पानीमें पीसकर, फिर उसमें रूईके फाहे भिगोकर आँखोंपर रखनेसे आँखोंकी सुर्ख़ी आराम हो जाती है।

(२३) त्रिफला जौकुट करके, रातके समय, पानीमें भिगो दो।

सवेरे ही उस जलसे आँखें धोनेसे नेत्रोंका बुखार, खुजली और सुर्खी ये नाश हो जाते हैं।

(२४) बीस मुण्डी निगल जानेसे एक साल तक और चालीस मुण्डी निगल जानेसे दो साल तक आँख दूखनेका भय नहीं रहता। मूल ग्रन्थकारका परीक्षित है।

(२५) बुधवारको, सूर्योदयके समय, अनारकी एक कली जो फूली न हो, वृक्षसे तोड़कर निगल जानेसे एक साल तक आँख दुखनेकी पीडा नहीं होती।

(२६) दारुहल्दी और रसौतको औरतके दूधमें पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे आँखोंकी खुजली और अभिष्यन्द—आँखें दुखनेका रोग ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२७) सरसोंका तेल काँसीके बासनमें डालकर, उस तेलमें सेंधेनोनकी डली घिसो और आँखोंमें आँजो। इससे दुखनी आई हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(२८) फिटकरी, सेंधानोन और रसौत—इन तीनोंको स्त्रीके दूधमें पीसकर आँखोंमें आँजनेसे दुखनी आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(२९) स्त्रीके दूधमें रसौत घिसकर आँखोंमें आँजनेसे आँखोंका दुखना आराम हो जाता है।

(३०) माठा, बकरीका दूध, सेंधानोन और कड़वा तेल—इनको काँसीकी थालीमें रखकर और थोडा सा "घी" मिलाकर घिसो। इसके आँजनेसे नेत्रोंकी घोर पीडा भी नाश हो जाती है।

(३१) अगर गरमीकी वजहसे आँखें दुखनी आई हों—पीड़ा होती हो और लाली बहुत हो, तो महँदीको पानीके साथ पीसकर गोली बना लो। उस गोलीको, रातको सोते समय, गुदापर बाँध दो। उससे गरमी शान्त होकर नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३२) अनारकी कोंपल पीसकर उनमें ज़रासी "फिटकरी" मिला

दो और फिर पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको आँखोंपर रखकर पट्टी बाँध देनेसे गरमीकी वजहसे आँखें दुखना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३३) अगर गरमीसे आँखें लाल हों, तो रसौतको गुलाब जलमें घिसकर नेत्रोंपर लगाओ। इस उपायसे आँखोंकी ललाई कट जाती है। परीक्षित है।

(३४) रसौत, कचूर, हरड़ और थोड़ीसी फिटकरी—इन सबको पानीमें महीन पीसकर आँखोंपर लेप करनेसे आँखें दुखना, सूजन और लाली वग़ैरः आराम हो जाते हैं।

(३५) भैंसके दूधमें रूईके फाहे भिगोकर आँखोंपर रखनेसे गरमीसे आँखें दुखना, लाली और सूजन वग़ैर· आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३६) अगर गरमीके कारण आँखोंपर सूजन, दर्द और ललाई हो या पानी बहता हो, तो इमलीके फल २ दाने और आलू बुखारा २ दाने पानीमें भिगोकर और मल-छानकर तथा ज़रा सी "मिश्री" मिला कर ७ दिन तक नित्य पिलाओ। इस दवासे नेत्र-पीडामें अवश्य लाभ हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) अगर कफ या बलग़मके कोपसे आँखें दुखनी आई हों, तो माजूफल, केसर और अफीम इन तीनोंको पानीमें घिसकर और गरम करके आँखोंपर लगाओ।

नोट—बलगमसे रोग होनेसे आँखोंसे पानी बहुत आता, तथा सूजन और लाली होती है।

(३८) अगर बलग़मके कोपसे आँखें सूज गयी हों, गीड़ आती हों, पानी बहता हो और ललाई हो, तो एक मुट्ठी "त्रिफला" जौकुट करके सेर-भर पानीमें औटालो। जब औट जाय छान लो और उसमें थोड़ीसी "फिटकरी" पीसकर मिला दो। इस गरमागरम काढ़े से दिनमें तीन चार बार आँखें धोनेसे ऊपरकी सारी शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३६) फिटकरी १ रत्ती, मिश्री १ माशे और अर्क़ गुलाब २ तोले—सबको एकत्र करके महीन पीसो और पतले कपड़ेमें रखकर दो बूँदें दुखती आँखोंमें नित्य टपकाओ। इससे आँखें अच्छी हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४०) रसौत, इमली और अनारदाना—तीनोंको दो-दो तोले लेकर रातके समय पानीमें भिगो दो। सवेरे ही छानकर, उसमें भुनी फिटकरी १ तोले और अफीम २ माशे मिलाकर लोहेके बर्तनमें डाल कर पकाओ। जब एक दिल हो जाय रख दो। इसमेंसे ३ माशे दवा लेकर पाँच तोले अर्क़ गुलाबमें मिलाओ और एक शीशीमें रखदो। इसमेंसे २।३ बूँद दवा सवेरे, दोपहर और शामको आँखोंमें टपकाओ। इससे आसोबचश्म—आँखें दुखना, आँखोंकी ललाई, आँखका ज़ख़्म और दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं। यह दवा बालक और जवान सबको उत्तम है। एक सज्जन इसकी बडी तारीफ करते और अपना आजमूदा नुसख़ा कहते हैं।

(४१) कपूर, तुख्मनील सैराई, शवेयमानी भुनी हुई, सुरमा अस्फहानी, कलमी शोरा, नौसादर, काला सुर्मा, बायबिडंग और कुश्ताजस्त—हरेक छै-छै माशे लो; फिलफिल दराज़—पीपर, सिरसके पत्ते छायामें सूखे हुए, नीमके पत्ते, छोटी काली हरड़ और साफ किया हुआ चाकसू हरेक एक-एक माशे लो। सबको पीसकर कपडेमे छान लो। फिर सात दिन तक अर्क़ गुलाब या अर्क़ सौंफमें खरल करो। इसके बाद शीशीमें रख दो और सील या सर्दीसे बचाओ।

रातको सोते समय इसको बड़े आदमीकी आँखमें सलाईसे लगाओ और बच्चेकी आँखमें अंगुलीसे लगाओ। ऊपरसे मलाई रखकर पट्टी बाँध दो। इस दवासे तीसरे दिन बच्चा आँखें खोल देता है। बड़ी उत्तम दवा है। खटाई, धूआँ, तेज़ रोशनी, तेल जलनेकी गन्ध और स्त्री-प्रसङ्गसे परहेज़ रखना ज़रूरी है। पराया

परीक्षित है। इससे आँखोंकी खारिश-खुजली, पड़वाल—आँखोंमें बाल घुसना, रमद्-आँखें दुखना, ललाई और दूध पीने वाले बालकके कॉंकड़े आराम हो जाते हैं। यह दवा सभी नेत्र-रोगोंपर मुफ़ीद है।

(४२) कुश्ता जस्त १ तोला, शबेयमानी बिरियान—भुनी हुई ३ माशे, रसौत २ माशे, करनफल १ माशे और कपूर १ माशे—इन सबको २ तोले अर्क़ वर्ग तमर हिन्दी सब्ज और दो तोले अर्क़ जंगली गोभीके पत्तों में खरल करके जौके आकारकी वत्तियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। ज़रूरतके समय, एक वत्तीको पानीमें घिस कर, जस्तेकी सलाईसे आँखोंमें लगाओ। इससे आँखें दुखनेका रोग फौरन आराम हो जाता है। पराया परीक्षित है।

(४३) शोरा कल्मी ४ तोले, फिटकरी कच्ची, फिटकरी भुनी हुई,—हरेक डेढ़-डेढ़ तोले और मुश्ककाफूरकी टिकिया ३ माशे—इन सबको कूट-पीसकर एक उमदा गुलाब-जलकी बोतलमें मिला दो और बोतलको पूरे १२ घन्टे धूपमें रक्खो। इस दवाकी एक या दो बूँद आँखोंमें रोज़ डालनेसे दो मिनटमें दर्द चश्म—आँखोंकी पीड़ा या आँखें दुखना आराम हो जाता है।

(४४) पीली हरड़का बक्कल, काबुली हरड़का बक्कल, स्याह हरड़का बक्कल, आमले, उस्तखुद्दूस, बिसफाइज और वर्ग सना मकी हरेक दो-दो तोले, मगज़कशनीज़ ५ तोले, मगज़ बादाम १६ तोले और मिश्री ४० तोले—इन सबको कूट-पीस कर छान लो और रख लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण नित्य खानेसे सब तरहके इमराज़ चश्म या नेत्रके रोग आराम हो जाते हैं। यह सबल नाखूना और रमदकोहना—पुराने आँखें दुखनेके रोग पर तो रामबाण ही है। पराया परीक्षित है।

(४५) लोध, फिटकरी, मुर्दासंग, हल्दी, ज़ीरा हरेक एक-एक रत्ती, अफीम चने-समान, कालीमिर्च ४ दाने और तूतिया उड़दके दाने बराबर लेकर एकत्र पीस लो। फिर पोस्तके चार डोडे लेकर

पानीमें भिगो दो। भीगने पर उनको मल-छान लो और पानीको आग पर पकाओ। जब पानी पकने लगे, ऊपरकी पिसी हुई दवाओंकी पोटली बना कर उसमें डाल दो। जब अर्क या पानी पोटलीमें जज़्ब हो जाय, पोटलीको निकालकर उसका धूआँ आँखों को लगाओ और सुहाती-सुहाती पोटलीसे आँखें सेको। इस तरह करनेसे जोश चश्म—नेत्र दुखना, आँखोंका दर्द, कडक, सोज़िश आँख और फूल जानेकी वजहसे आँखोंका न खुलना ये सब शिकायतें रफा हो जाती हैं। पराया परीक्षित है।

(४६) फिटकरी भुनी हुई एक भाग, रसौत एक भाग और अफीम आधा भाग,—इन सबको नीमके पत्तोंके पानीमें पीसकर आँखोंपर लेप करनेसे रमद या नेत्र दुखनेका रोग शीघ्र ही आराम हो जाता हैं। परीक्षित है।

नोट—नीमके पत्तोंका पानी जितना दरकार हो ले सक्ते हो; यानी जितने पानीमें लेप बन जाय उतना काफी है।

(४७) नीमके नर्म पत्ते और जस्तका सफेदा दोनों एकत्र काँसी-की थालीमें तीन दिन तक घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे आँखोंकी गरमी, लाली और पीड़ा वग़ैरः नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४८) केशर, हरड़, और रसौतको अर्क़ गुलाबमें घिसकर आँखों पर लेप करनेसे आँखोंकी पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४६) बेलके पत्ते पीसकर लुगदीसी बना लो और गरम करके नेत्रों पर बाँधो। इससे आँखें दुखना, लाली, कड़क और सूजन ये सब आराम हो जाते हैं।

(५०) आल, केशर और ज़रासा गोरोचन—इन तीनोंको एक काँच या पत्थरके साफ बर्तनमें शीतल जल डाल कर भिगो दो। जब पानीका रंग लाल हो जाय, उस जलको बारम्बार नेत्र बन्द

करके नेत्रोंके ऊपर लेप करो। इससे आँखें दुखना, लाली और पीड़ा वग़ैरः नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(५१) रसौत, लाल चन्दन, बड़ी हरड़, दारुहल्दी, फिटकरी और अफीम—इन सबको बारीक पीस कर, इमलीके पत्तोंके रसमें घोलकर; नेत्रोंके ऊपर पतला-पतला लेप करनेसे नेत्रोंका दुखना शीघ्र ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५२) कदमकी छालके रसमें अफीम और फिटकरी डालकर नीबूके रसमें घोटो और गरम करके नेत्रों पर लगाओ। इससे आँखोंका दुखना आराम हो जाता है।

(५३) सत्यानाशीके पत्ते या फूलका रस या चेप आँखोंमें लगानेसे आँख उठनेका रोग आराम हो जाता है।

(५४) प्याज़का रस आँखोंमें डालनेसे आँखोंका उठना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५५) आमलोंके पत्तोंके रसमें हरड़ और रसौत घिसकर लगानेसे नेत्र दुखना आराम हो जाता है।

(५६) बड़के पत्तोंमें घी चुपड़ कर नेत्रों पर बाँधनेसे नेत्रोंकी पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(५७) घीग्वारका गूदा ४ तोले, अफीम २ माशे और फिटकरी २-माशे—सबकी पोटली बना कर, दिन-रातमें कई बार आँखों पर फेरनेसे नेत्र-रोग आराम हो जाते है। परीक्षित है।

(५८) हरड़, गेरू, सैंधानोन, दारुहल्दी और रसौत समान-समान लेकर और पानीमें पीस कर नेत्रोंपर लेप करो। इससे अभिष्यन्द या नेत्र-पीड़ाका रोग आराम हो जाता है।

रतौंधी नाशक हकीमी नुसख़े।

(१) काली मिर्च, कमीला और पीपर-बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस-छान कर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(२) काली हरड़, सोंठ और काली मिर्च—समान-समान लेकर पीस-छान लो और पानीके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(३) प्याज़का स्वरस आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(४) सिरसके पत्तोंका स्वरस आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

(५) समन्दरफलका गूदा बकरीके मूत्रमें घिसकर नेत्रोंमें लगाने से रतौंधी आराम हो जाती है।

(६) लाहौरी नोन महीन पीसकर पानीके साथ खरलमें घोटो और सलाइयाँ बनाकर सुखालो। इन सलाइयोंके आँखोंमें फेरनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(७) दहीके तोड़में थूक मिलाकर आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(८) अदरखका स्वरस दो तीन बूँद रोज़ आँखोंमें टपकाने या सोंठ पानीमें घिस कर आँखोंमें टपकानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(९) काली मिर्च थूकमें घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

---

(१०) कसौंधीके फूलोंका पानी आँखोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(११) सहँजनेकी नरम डालीका स्वरस शहदमें मिलाकर आँखोंमें टपकानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(१२) सात तोले सिरसके बीज महीन पीसकर और आटेमें मिलाकर रोटी पकाओ। तीन दिनतक ऐसी रोटी खानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(१३) गधेका ताज़ा खून दो तीन दिन नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(१४) मनुष्यके कानका मैल और पीली हरड़की छाल बराबर-बराबर लेकर पीसो और गोलियाँ बना लो। शामके समय पानीमें गोलीको घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(१५) हुक्के के नेचे परका कीट आँखोमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(१६) उड़दकी दाल खाने, भेजेको तर रखने, शीतल जलमें ग़ोते लगाने और उसमें आँखें खुली रखनेसे दिनौंधी आराम हो जाती है।

(१७) कडवी तूम्बीका रस शहदमें मिलाकर आँजनेसे रतौंधी और फूला—ये दोनों नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) करेलेके पत्तोंके रसमें कालीमिर्चं घिसकर नेत्रोमें आँजने से ३ दिनमें रतौंधी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१९) अरीठेकी गुठली पानीमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२०) सफेद पुनर्नवाकी जड़ काँजीमें पीसकर नेत्रोमें आँजनेसे अथवा गायके गोबरके रसमें पुनर्नवाकी जड़ और पीपर घिसकर आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

(२१) काला सुर्मा, हल्दी, जावित्री, रसौत और चमेलीकी कली

—इनको समान-समान लेकर और महीन पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है ।

(२२) "शरह असबाब" नामक ग्रन्थमें लिखा है कि, पीपर और जंगली वच बकरीकी कलेजीमें गाड़कर भूनो । फिर उसमेंसे जो पानी सा निकले, उसे आँखोंमें आँजो । इस उपायसे रतौंधी आराम हो जाती है । इस अपूर्व उपायकी तारीफ नहीं की जा सकती ।

नोट—किसीने लिखा है,—बकरीकी कलेजीके चार भाग कर लो । एक भागमें पीपर महीन पीसकर बिछा दो । फिर उसे आग पर सेको । उसमें से पानी सा निकालेगा, उसे आंखोंमें डालो । इस नुसख़ेकी हिकमतके ग्रन्थोंमें बड़ी तारीफ है ।

(२३) साबुन १ माशे, पीपर नग ४ और काली मिर्च नग २—इनको महीन पीसकर सलाईसे आँखोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है ।

(२४) मर्दके कानके मैलमें "शहद" मिलाकर आँखोंमें लगानेसे रतौंधी आराम होजाती है ।

नोट—रतौंधीवालेको पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहियें ।

(२५) हल्दी, दारुहल्दी और अगस्तियाके पत्तोंका रस—इनको पीसकर अंजनकी तरह आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी नष्ट हो जाती है ।

(२६) डुद्धीका दूध आँखोंमें लगानेसे रतौंधी—रातमें न दीखना और दिनौंधी—दिनमें न दीखना आराम हो जाता है ।

(२७) ढाकके पेड़की ताज़ा छाल लेकर पीस-कूट लो और रस निचोड़ो । इस रसके लगानेसे रतौंधी जाती रहती है । <u>परीक्षित है ।</u>

नोट—रतौंधीको हिकमतमें "अशा" कहते हैं । जब दिनमें बादल होनेपर भी आदमीको नहीं दीखता, तब भी इस रोगको "अशा" कहते हैं ; रातके समय रतौंधी वालेकी आँखकी ज्योति बेकार हो जाती है । यहाँतक कि उसे तारे भी नहीं दीखते । ज्योंही सूरज अस्त होने लगता है, आँखकी ज्योति कमज़ोर होने

लगती है। बहुधा रतौंधीका रोग बड़ी-बड़ी और काली आँखोंवालोंको होता है।

(२८) कालीमिर्च, नकछिकनी, जुन्देबेदस्तर और एलुआ—इनको पीसकर नास लेनेसे छींक आती हैं। अगर दिमाग़को भाफके परमाणुओं और रतूवत या तरियोंसे साफ करना हो, तो इस नासको काममें लाना चाहिये। इससे छींकें आकर ख़राब माद्दा निकल जाता और रतौंधीमें लाभ होता है।

(२९) बकरीकी कलेजी, थोड़ीसी सौंफ और पीपर—इन सबको एक हाँडीमें रखकर ऊपरसे अन्दाज़का पानी भर दो और आगपर पकाओ। पक जानेपर, रोगी इस हाँडीपर अपना सिर झुकाकर बफारा लेवे, तो रतौंधीमें खूब जल्दी लाभ हो। उत्तम नुसख़ा है।

(३०) जंगली बकरीकी कलेजी आगपर रखकर उसपर काली-मिर्च और सौंफ कूटकर बिछा दो। कलेजीमें से जो रतूबत निकलेगी उसे दोनों दवाएं सोख लेंगी। आप उन दोनों दवाओंको कलेजीसे उतारकर सुखा लो और पीस-छानकर रख लो। इसे सुरमे की तरह आँखोंमें लगानेसे रतौंधी फौरन चली जाती है।

मोतियाबिन्द नाशक हकीमी नुसखे।

(१) वच, हींग, सोंठ और सौंफ—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और शहदमें मिला लो। इसमेंसे तीन या चार माशे नित्य खानेसे "मोतिया बिन्द" बढ़ने नहीं पाता और आराम हो जाता है। यह बचकी माजून मोतियाबिन्दु होते ही खानी चाहिये।

(२) रोगके आरम्भमें—निर्मली शहदमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्द नष्ट हो जाता है।

(३) नौसादरको खूब महीन पीसकर बारीक-से-बारीक कपड़ेमें

छान लो। इसको सुरमेकी तरह नेत्रोंमें लगानेसे मोतियाबिन्द आराम हो जाता है।

(४) सफेद चिरमिटीका स्वरस कागज़ी नीबूके रसमें मिलाकर सवेरे ही नेत्रोंमें लगानेसे मोतियाबिन्द आराम हो जाता है।

(५) इमलीके दस तोले पत्ते फूल काँसीके कटोरेमें रखकर, नीमकी लकडीके दस्तेसे, जिसकी पेंदीमें पुरानी चालका पैसा जमा हो, खूब घोटो। जब वे पत्ते घुट जायँ और लुगदी सी हो जाय, उसे पुत्र जननेवाली औरतके दूधमें दस दिनतक, सवेरेसे शामतक, खरल करो। इसके लगानेसे मोतियाबिन्द आराम हो जाता और बढ़ने नहीं पाता। इस रोगका यह आश्चर्यपूर्ण चमत्कारक इलाज है।

(६) सौंफका हरा पेड लाकर काँचके या चीनीके बासनमें रख दो। जब वह सूख जाय, पीस कर छान लो। इसको सुरमेकी तरह आँखमें लगानेसे मोतियाबिन्द नाश हो जाता है।

(७) लडके वाली औरतके दूधमें "भीमसेनी कपूर" पीस कर आँखोमें लगानेसे मोतियाबिन्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) हरडकी गुठलीका गूदा साफ जलके साथ नव्वे घण्टों तक खरल करके आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्द नाश हो जाता है, पर यह दवा रोगके उठने ही फायदा करती है।

(९) दो कागज़ी नीबुओंका रस और ४ तोले गायका मक्खन मिलाकर खरल करो। फिर उसमें थोडासा पानी डालकर दो रात-दिन रक्खा रहने दो। इसके बाद उस घीको पानीसे धोओ और दो नीबुओंका रस डालकर फिर खरल करो तथा पानी डालकर दो रात-दिन रक्खा रहने दो और फिर पहलेकी तरह पानीसे धोओ। यह दो बार हुआ। आप इसी तरह पच्चीस बार दो नीबुओंका रस मिला-मिलाकर खरल करो और घीमें पानी डाल-डाल कर दो रात-दिन रक्खा रहने दो। जब २५ बार यह क्रिया कर चुको, तब दवाको तयार समझो। इसमें से खसखसके दो दाने बराबर घी आँखों में नित्य

लगानेसे मोतिया बिन्द आराम हो जाता है; पर यह दवा भी रोग के उठते ही लगानेसे फायदा करती है। मूल ग्रन्थकारकी यह आज़मूदा है। उम्मीद है, अवश्य लाभ दिखावेगी। तकलीफ करने से ही अच्छी चीज बनती है।

(१०) नीमके बीज महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस चूर्णको सुरमेकी तरह लगानेसे पानी उतरनेमें अवश्य लाभ होता है।

(११) मनुष्यके कानका मैल और हींग बराबर-बराबर लेकर पीस लो और शहदमे मिलाकर लगाया करो। इस उपायसे मोतिया-बिन्द आराम हो जाता है।

नोट—मोतियाबिन्द वालेको दूध और मछली हानिकारक हैं।

नेत्रों और पलकोंकी खुजली नाशक नुसखे।

(१) माजूफल और जंगी हरड़ समान-समान लेकर पानीके साथ पीसकर आँखों के ऊपर लेप करनेसे आँखों और पलकों की खुजली आराम हो जाती है।

(२) मनुष्यके सिरके बालों को जलाकर राख कर लो। उस राखको महीन पीस-छान कर आँखोंमें लगानेसे आँखों और पलकों की खुजली आराम हो जाती है।

(३) अण्डेके छिलकेकी महीन पिसी-छनी राख आँखोंमें लगानेसे नेत्रों और पलकोंकी खुजली जाती रहती है।

(४) नीमके पत्ते एक कुल्हड़ेमें रख कर, उसका मुँह दीवलेसे बन्द कर दो और ऊपरसे कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। फिर इस कुल्हड़ेको आगके भीतर रख दो और चार घन्टे बाद निकाल लो। कुल्हड़ेके भीतर पत्तियोंकी राख मिलेगी। उस राखको नीबूके रसमें

खरल करके नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंको खुजली आराम हो जाती है। कहते हैं, यह दवा बडी गुणकारी है।

(५) सीसेके एक टुकड़ेको बाँसके चौंगले पर रगड़ो। रगड़नेसे जो स्याहीसी आवे, उसे उँगलीमें लेकर नेत्रोंमें लगानेसे आँखोंकी खुजली और जलन आराम हो जाती है। इसे "सीसेका मैल" कहते हैं।

नोट—नेत्ररोग चिकित्सामें जहाँ-जहाँ "सीसा" या "शीशा" शब्द आवे, उसे शीशा धातु समझो, कांच नहीं। इसे ही अँगरेज़ीमें लेड (Lead) कहते हैं।

नेत्र ज्योति बढ़ानेवाले नुसखे।

नोट—इस रोगके होनेके बहुत कारण हैं, पर बहुधा बुढ़ापेमें भेजेकी कमज़ोरी और अग्निके मन्द होनेसे नेत्र ज्योति कम हो जाती है। यद्यपि यह रोग असाध्य है, पर फिर भी इलाजसे न चूकना चाहिये, कि रोग बढ़ जावे।

(१) भेजे का मल शिरोविरेचन नस्य आदि सुंघाकर निकालने और भेजेको बलवान करने वाली दवाएँ भेजे पर लगाने और पेटमें खिलानेसे यह रोग घट जाता है।

(२) सिरमें कंघी करनेसे बूढ़ोंकी नेत्र ज्योति बनी रहती है; अतः दिनमें कई बार कंघी करनी चाहिये। शेख़ल रईस महाशय कहते हैं, कि साफ पानीमें तैरना और उसमें आँखें खोलना भी नेत्र-ज्योतिके लिए गुणकारी है। थोड़ी-थोड़ी कय करना, नीचेके अँगोंको दबाना और मलना भी लाभदायक है। बहुत रोना, गर्दनके पीछे पछने लगाना, बहुत भूखा रहना, बहुत मैथुन करना और सोया तथा मसूर आदि क़ब्ज़ करने वाले पदार्थ ज़ियादा खाना—ये सब नेत्र-ज्योतिके लिए हानिकारक हैं।

(३) मुण्डीका अर्क़ दो या तीन तोले रोज़ पीनेसे नेत्र-ज्योति क़ायम रहती और बढ़ती है।

(४) दो से चार तोले तक मुण्डीका शर्बत पीनेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती, दिमाग़में तरी आती और बुख़ारात निकल जाते हैं।

नोट—पाव-भर मुण्डीके फूल डेढ़ सेर जलमें रातके समय भिगो दो, सवेरे ही उन्हे औटाओ ; जब आध सेर पानी रह जाय छान लो। इस पानीमें तीन पाव "मिश्री" मिलाकर पकाओ। पकते समय शीतल दूध और पानी मिलाकर छटांक-छटांक भर चार-पांच दफा कोई दस-दस मिनटमें डालो। ऊपर जो मैलकी मलाई जमे उसे झरसे उतार-उतार कर फैंक दो। जब मैल न आवे और चाशनी शर्बतकीसी गाढ़ी हो जाय, उतार कर कपड़ेमें छान लो और शीतल होने पर बोतलमें भर कर काग लगा दो। यही "मुण्डीका शर्बत" है। यह निस्सन्देह नेत्र-ज्योतिके लिए लाख रुपयेकी दवा है।

(५) "तिब्ब दारा शिकोही" नामक ग्रन्थमें लिखा है—आधसेर सौंफको महीन कूट-पीसकर छान लो। फिर सौंफके चूर्णके बराबर ही "मिश्री" पीसकर उसमें मिला दो और किसी बर्तनमें रख दो। इसकी ख़ूराक ८ माशेसे १६ माशे तक है। रातको सोते समय एक ख़ूराक खाकर सो रहनेसे कुछ दिनोंमें नेत्र-ज्योति ख़ूब बढ़ जाती है। यह नुसख़ा आज़मूदा है, फेल नहीं होता, पर महीने दो महीने लगातार सेवन करना चाहिये।

(६) सौंफका अर्क़ खींचते समय अर्क़के ऊपर कुछ चिकना-चिकना पदार्थ आ जाता है, उसे उठाकर शीशीमें रख लो। इस सौंफके इत्रको आँखोंमें नित्य आँजने और ऊपरका नं० ५ सौंफका चूर्ण सोते समय खाकर सो जाने और सवेरे ही "त्रिफलाके भिगोये पानी" से नेत्र और मुंह धोनेसे नेत्र-ज्योति बाजी बदकर बढ़ जाती है।

(७) चमेलीके फूलोंकी डंडी तोड़कर तोलो, जितने वह फूल हों उतनी ही "मिश्री" मिला दो और खरल करो। इस दवाके आँखोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ जाती है।

(८) हरड़की गुठलीकी मींगी १२अदद, पीपर छोटी ५ अदद और कालीमिर्च ५ अदद, इन सबको "आमलोंके रस"के साथ ख़ूब घोटो, जब कालीसी लुगदी हो जाय, छोटी-छोटी गोलियाँ बना लो। एक-

एक गोली पानीमें रगड़ कर नित्य कुछ दिनोंतक आँखोंमें आँजनेसे नेत्र-ज्योति बढ़ जाती है । निस्सन्देह यह उत्तम दवा है ।

(९) रीठेके बीजोंकी मींगी निकालकर खरलमें डालो और नीबू के रसके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंको "थूक" में घिस-घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंके सारे दोष साफ हो जाते और ज्योति बढ़ती है ।

(१०) जङ्गी हरड़के छिलके और मिश्री समान-समान लेकर पानीके साथ पीसो और गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंको पानी में घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती और आँखोंकी लाली कम हो जाती है ।

(११) जो आदमी सूना उठकर, सवेरे ही नित्य, अपना थूक अपनी आँखोंमें आँजा करता है, उसकी आँखोंकी बीमारियाँ नाश हो जाती हैं और फिर नेत्रोंमें कोई रोग होने नहीं पाता ।

(१२) निर्मली "पानी"में घिसकर आँखोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती है । इसीको "शहद"में घिसकर आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्द कट जाता है ।

(१३) प्याज़का स्वरस "शहद"में मिलाकर आँखोंमें आँजनेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती और उठता हुआ नया मोतियाबिन्द नाश हो जाता है ।

(१४) सोलह कालीमिर्च, साठ पीपर, पचास चमेलीकी कली और अस्सी तिलके फूल—इन सबको मिलाकर खरल करो और कपड़ेमें छानकर रख लो । इस सुरमेके लगातार लगानेसे नेत्र-ज्योति अवश्य बढ़ जाती है ।

(१५) कालीमिर्च १ माशे, पीली हरडका छिलका २ माशे और छिली हुई हल्दी ३ माशे—इन सबको गुलाब-जल या पानीमें खरल करके सुरमेकी तरह आँखोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ जाती है ।

(१६) दो अख़रोट और तीन हरड़की मींगी लेकर जलालो। फिर इसमें चार काली मिर्चों मिलाकर खूब खरल करो और कपड़ेमें छान लो। इसको सुरमेकी तरह लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती है। यह "मोजिज़" नामक ग्रन्थका नुसख़ा है।

(१७) आँखोंमें सदा "रसौत" आँजना अतीव गुणकारी है।

(१८) नीमके फूल छायामें सुखाकर पीस लो। फिर इस चूर्णके बराबर "कलमी शोरा" लेकर इसमें मिला दो और खूब खरल करो। खरल हो जाने पर महीन कपडेमें छानो और शीशीमें रख दो। इसको रातके समय, सोनेसे पहले, आँखोमें आँजनेसे नेत्रज्योति खूब बढती है। इससे सबल और नाखूना भी आराम हो जाते हैं।

सबल---माड़ा, फूला, नाखूना और जाला वग़ैरः नाशक नुसख़े।

सबल एक पर्दा है, जो आँखोंके रोगोंमें मलके भर जानेसे पैदा होता है। उसे बोल चालमें माडा और फूला कहते हैं। नाखूना आँखके बड़े कोयेकी ओर पैदा होता है। आँखोंकी सफेदीको बोलचालकी भाषामें "जाला" कहते हैं। यह सफेदी वह है, जो आँखोंकी स्याही पर पैदा होती है। इस रोगमें माथेकी रग खोलना या फस्द सरेरू लेना मुफीद है। इसके बाद नेत्रोंको साफ करनेवाली दवाएँ सेवन करनी चाहियें।

(१) सिरसके बीजोंकी मींगी और खिरनीके बीज समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको खरलमें डाल कर, सिरसके पत्तोंके स्वरसके साथ खरल करो और गोलियाँ बना लो।

जब दरकार हो, गोलियोंको स्त्रीके दूधमें घिस कर नेत्रोंमें लगाओ। इससे सबल और आँखका गुल यानी फूला आराम हो जाता है।

(२) जंगी हरड, पलाशपापड़ा, लोहौरीनोन और लालचन्दन—बराबर-बराबर लेकर कूट-छान लो और पानीके साथ खूब घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लगानेसे आँखकी फूली नाश हो जाती है।

(३) समन्दरफल की मींगी, रीठेकी मींगी, खिरनीके बीज और काली हरडके बीज बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर नीबू के रसके साथ घोट कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमे घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे सबल-माडा और फूली तथा परवाल यानी पलकोंका मोटा होना, उनमें बाँल चुभना और बाँफनी गिरना—ये सब आराम होते हैं।

(४) एक तोले लाल चन्दन और एक तोले भुनी हुई फिटकरी को पीस-छान कर, घीग्वारके लुआबके साथ खरल करो और गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली घिस कर आँखोंमें लगानेसे माडा, फूली, जाला और नाखूना आराम हो जाते हैं।

(५) बकरीके पित्तेमें शहद मिलाकर नेत्रोंमें लगानेसे नाखूना आराम हो जाता है। यह नुसख़ा हकीम बूअली सेनाका आजमाया हुआ है।

(६) नमक और चीनीको जीभ पर लगाओ। जब इनसे जीभ खरदरीसी हो जाय, तब जीभसे आँखके जालेको चाटो। इस उपायसे आँखोंका जाला नष्ट हो जाता है। मूल ग्रन्थकारका आज़-मूदा नुसखा है—हमारा नहीं।

नोट—रोगी स्वय अपनी जीभसे जालेको नहीं चाट सकता, अतः दूसरे आदमीको नमक और चीनी जीभ पर लगाकर जालेको चाटना चाहिये।

(७) हल्दी २० माशे, आमाहल्दी २० माशे, दालचीनी २० माशे और नीमके पत्ते २ तोले—इनको कूट पीसकर छानो और ६ महीनेके बछड़ेके पेशाबमें पूरे छै घण्टे तक खरल करो और गोलियाँ बनाकर

छायामें सुखा लो। इन गोलियोंको गुलाब-जलमे घिसकर आँखोमे लगानेसे नाखूना आराम हो जाता है।

(८) बारहसिंघेके सींगको पहले पानीमें पीसो। फिर उसे काग़ज़ी नीबुओंके रसमें खूब खरल करो और कालीमिर्चके समान गोलियाँ बना लो। जरूरतके समय, इन गोलियों को घिसकर नेत्रों में लगानेसे आँखों का जाला शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(६) मिश्री २ तोले और लाहौरी नोन १ तोले—इन दोनोंको महीन पीसकर खूब बारीक कपड़ेमें छान लो। इस को सुरमेकी तरह आँखोंमें आँजनेसे आँखोंका जाला और मोतियाबिन्द आराम हो जाता है।

(१०) कबूतरकी या मुर्गीकी बीट काग़ज़ी नीबुओंके रसमे खरल करके—ताम्बेकी प्यालीमें ढककर रखदो। इसके आँखोंमें लगानेसे माड़ा और फूली या सबल रोग आराम हो जाता है।

(११) "तिब्ब फरीदी"का लेखक लिखता है, कि अबाबीलकी बीट शहद्में मिलाकर आँखोंमें लगानेसे आँखोका जाला दूर हो जाता, है। वह इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहता है।

(१२) बारहसिंगेका सींग दूधमें घिसकर आँखों मे लगानेसे आँखों का जाला कट जाता है।

(१३) लाहोरी नोनकी सलाई दिनमें कई बार आँखों मे फेरनेसे नाखूना और जाला नष्ट हो जाते हैं।

(१४) कबूतर या चिड़ियाकी बीट पीसकर आँखों में लगानेसे आँखों की फूली नष्ट हो जाती है।

(१५) मदारकी जड़ पानीमें घिसकर आँजनेसे नाखूना आराम-हो जाता है।

(१६) कटाईकी जड़ नीबूके रसमें घिसकर लगानेसे नेत्र-पीड़ा और जाला आराम हो जाते हैं।

(१७) अरहरके पुराने पेड़की जड़ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे फूली कट जाती है।

(१८) वड़के पेडका दूध आँखोंमें भरनेसे आँखोंकी सफेदी या जाला आराम हो जाता है।

(१९) बैंगनकी जड़ पानीमें घिस कर नेत्रमें लगानेसे फूली कट जाती है।

(२०) कडवी नोरईके बीजोंकी गिरी मीठे तेलमें पीस कर आँखमें लगानेसे फूली जाती रहती है।

(२१) समन्दरझाग पानीमें या बिनौलोंके तेलमें पीसकर आँखों म लगानेसे फूली कट जाती है।

(२२) लालेका फूल शहदमें पीसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी सफेदी या जाला नाश हो जाता है।

(२३) लडके वाली स्त्रीके दूधमें "मिश्री" घिसकर आँखोंमें आंजनेसे बालकोंकी फूली कट जाती है।

(२४) सोंठ, फिटकरी और लाहौरी नोन—समान-समान लेकर कूट छान लो और नेत्रमें लगाओ। इससे जाला नाश हो जाता है।

(२५) गधेका सुम जला कर और महीन पीस कर आँखोंमें लगानेसे जाला कट जाता है।

(२६) प्याजका लाल पानी कुछ दिन लगातार आँखोंमें लगानेसे नाखूना आराम हो जाता है।

(२७) तेजपात महीन पीस कर आँखोंमें लगानेसे आंखोंकी अंधेरी, नाखूना और मोतियाबिन्द ये सब आराम हो जाते हैं।

(२८) जङ्गार, समग़ अरबी—बबूलका गोंद और सफेदा काशगरी—बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको पानीके साथ घिस कर आंखोंमें लगानेसे सबल-माडा,

फूली, नाख़ूना और ख़ारिश या खुजली ये सब नेत्र रोग नाश हो जाते हैं।

(२६) ४० माशे आमले जौकुट करके दो घन्टे तक पानीमें औटाओ और छान लो। इस पानीको, दिनमें तीन बार, नित्य आँखोंमें टपकानेसे आँखकी फूली कट जाती है।

(३०) नौसादर और फिटकरी बराबर-बराबर लेकर पीसो और ख़ूब बारीक कपड़ेमें छान लो। इसे सुरमेकी तरह आँखोंमें आँजनेसे फूली, माड़ा, सबल और रतौंधी आराम होती, तरी, सूखती और ज्योति बढ़ती है।

(३१) आध सेर प्याज़को कूट कर उसका रस निकालो और उसमें एक कपड़ा तर करके छायामें सुखा लो। फिर उस कपड़ेकी बत्ती बना कर बड़े शकोरेमें रखो और उसमें पाव-भर मीठा तेल भर दो। बत्तीको जलाकर, उसकी लौ पर, लौ से ऊंचा, एक और कोरा शकोरा ईंटों पर औंधा रख दो। कोरे शकोरेमें जो काजल लगे, उसे उतार कर रख लो। इस काजलके आँजनेसे कुछ दिनोंमें फूली कट जाती है। कहते हैं, यह फूलेकी सर्व्वोत्तम दवा है।

(३२) पीली हरड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमले, नीमकी छाल, गिलोय, चिरायता, लाल चन्दन, शाहतरा, ख़स और मुण्डीके फूल—सबको एक-एक तोले लेकर काढ़ा बनाओ और शीतल होने पर २० माशे "शहद" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेके पन्द्रह दिन पीनेसे जाला-फूली आदिमें बड़ा उपकार होता है।

नोट—दसों चीजोंको तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा पकाओ और काढ़ेके शीतल होने पर ३।४ माशे शहद मिलाकर पीलो। हमारी रायमें इस तरह अच्छा होगा।

(३३) बैंगनकी जड़ लाकर उत्तम गुलाब जलमें खरल करो और बेर-समान गोलियाँ बना कर छायामें सुखा लो। ज़रूरतके समय

एक गोलीको अर्क़ गुलाब या पानीमें घिसकर आँजनेसे फूला कट जाता है। परीक्षित है।

(३४) पीली हर्डका छिलका, बहेड़ेका छिलका, आमलेका छिलका, काली हरड़, काबुली हरड़का छिलका, गुले नुर्र, गुले उस्तखुद्दूस—हरेक सात माशे लो। साफ धनिया ३ तोले, उमदा तुरंजबीन २॥ तोले, रोगन बादाम साफ ४ तोले, चीनी सफेद १५ तोले और उत्तम शहद १५ तोले—इन सबका इतरीफल बना लो। मात्रा ७ माशे से १ तोले तक। यह इतरीफल सिर और आँखोंके रोगोंपर बेनज़ीर है। पराया परीक्षित है।

(३५) पारा १ तोला, शुद्ध जस्त १ तोला, सिक्का १ तोला और शुद्ध राँगा १ तोला—इन चारोंको लोहेकी कड़ाहीमें डालकर, ऊपर-से ताजा नीमकी छाल पाव भर डाल दो। फिर इन सब पर एक मिट्टीका प्याला औंधा रक्खो, जिससे ये सब ढक जावें। प्याले और कड़ाही की सन्धोंको रूई-मिली मुलतानी मिट्टीसे बन्द कर दो। अब कड़ाहीको अँगीठी पर रखकर नीचेसे खूब कोयले जलाओ। थोड़ी देरमें छाल जलकर राख हो जायगी और पारा वग़ैर. चारों पदार्थ सुरमेके जैसे काले हो जायँगे। उस स्याह पदार्थको निकाल-कर, मेंहदीके पत्तोंके रस, अनारदानेके रस और खट्टी बूँटी यानी खटकलके रसमें ७ दिन तक घोटकर सुखा लो। फिर महीन मल-मलके कपड़ेमें छान कर रख लो। इसके लगानेसे नज़रकी कमज़ोरी और आँखोंकी खुजली निश्चय ही आराम हो जाती है। पराया परीक्षित है।

(३६) शुद्ध काला सुरमा ५ तोले लेकर सौंफके पत्तोंके एक सेर अर्कमें घोटो और सूख जाने पर रख लो। यह सुरमा आँखोंमें ताक़त लानेमें अद्वितीय या बेनज़ीर है। इसको "सुरमा बादियानी" कहते हैं। पराया परीक्षित है।

(३७) नीमकी कोंपल २६ माशे, बकायनकी कोंपल २६ माशे,

चूल्हेकी मिट्टी २ माशे, कलमी शोरा २ माशे, फिटकरी २ माशे, काली मिर्च ४ माशे और कपूर २ रत्ती—इनको शीशा धातुके वर्तनमें डालकर नीमके डण्डेसे २४ घन्टे तक खरल करो। सूखने पर छान कर रख लो। इसके लगानेसे जाला, फूला, नाखूना, मोतियाबिन्द और नजला उतरना—ये सब आराम होते हैं। इसका नाम "सुरमा सब्ज़" है। परीक्षा सुपरीक्षित है।

(३८) विलायती साबुन, काली हरड, काली मिर्च, सोना माखी, शबे यमानी, कलमी शोरा, कपूर, मोतीकी सीप, तुख्म खरीह, काला सुरमा, अनारकी बिना खिली कली, बालछड़ और दालचीनी—इनमेंसे हरेक छै-छै माशे लो, सफेद सुरमा १ तोले, अफीम ३ माशे, रसौत ३ माशे, पठानी लोध ३ माशे, गुले सुर्ख़ ३ माशे, केशर ३ माशे, और दारुहल्दी ३ माशे इन सबको तैयार रखो। इनमें जो पीसने लायक़ हों उन्हें पीसकूट लो। फिर सबको खरलमें डालकर नीचे लिखे हुए अर्क़ोंके साथ खरल करो और चिलगोज़े जैसी बत्तियाँ बना लो —

(१) बकायनके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(२) कासनीके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(३) चमेलीके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(४) मकोयके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(५) बबूलके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(६) भाँगरेके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(७) कुकरौंधेके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(८) सद बर्गका अर्क़—६ माशे।
(९) अनारके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(१०) नीमके फूलोंका अर्क़—६ माशे।
(११) चमेलीके फूलोंका अर्क़—६ माशे।
(१२) शीशमके फूलोंका अर्क़—६ माशे।

(१३) घीग्वारका अर्क—६ माशे।

(१४) अर्क गुलाब—२ तोले।

इनमेंसे एक गोली लेकर, एक बूँद पानीके साथ पत्थर पर घिसो और आँखोंमें आँज दो। इन गोलियोंसे आँखोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३६) सिरसकी ताजा पत्तियाँ लाकर खूब घोटो और कपड़ेमें रख कर रस निचोड़ लो। फिर उसे छानकर तीन दिन तक एक चीनी या काँचके बासनमें रख दो। इसके बाद उसमेंसे निकाल कर एक पुख्ता काँचकी शीशीमें रखो और इसमें चार या पाँच ग्रेन "एमोनिया क्लोराइड" (साफ की हुई नौसादर) डाल दो। यह आँखोंमें डालनेका "लोशन" है। इसमेंसे एक-एक बूँद सवेरे-शाम आँखोंमें डालो। अगर तकलीफ हो, तो सिर्फ एक समय ही डालो। अगर इतना भी न सहा जाय, तो एक दिन बीचमें देकर डालो। यह दवा आँखमें डाल कर तीन घन्टे बाद शीतल जलसे आँखें धोलो। इससे फूला, जाला, धुन्ध और सुर्खी आराम होती है। परीक्षित है।

(४०) देशी तूतिया ६ माशे, गायका घी ५ तोले, खट्टी बूटीका पानी ५ तोले और पीली कौड़ी नग १—इनको तैयार करो। पहले कौड़ी और तूतियाको जला लो, फिर सब दवाओंको जस्तकी खरलमें डाल कर खरल करो। जब मरहम बन जाय और घुटते-घुटते घी की चिकनाई न रहे, तब उसे जस्तकी सलाईसे आँखोंमें डालो। इस मरहमसे फूला नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४१) कूजेकी मिश्री १ तोले, कलमीशोरा १ तोले, रसौत १ तोले और शुद्ध नीलाथोथा २ माशे—इनको तैयार करो। पहले मिश्री और शोरेको खूब खरल करो। फिर इसमें नीलाथोथा मिला दो और खरल करो। अन्तमें रसौत भी मिला दो और इतना खरल करो, कि घुटते-घुटते सुरमा सा हो जाय, शेषमें पानी डालकर घोटो और गोलियाँ बना लो। जरूरतके वक्त एक गोलीको पानीके साथ

रगड कर सलाईसे आँखोमें आँजो। इन गोलियोंसे धुन्ध, फूला और जाला वग़ैरः आँखके रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४२) एकदमसे सफेद गधेका पेशाव आध-पाव और फिटकरी दो तोले को मिलाकर इतना खरल करो, कि पेशाव घुटते-घुटते सूख कर सुरमा सा हो जावे। इस सुरमेंके आँखोमें आँजनेसे पुराने-से-पुराना फूला आराम हो जाता है। इस सुरमेके लगाने-वालेको खटाईसे परहेज़ रखना चाहिये। दो तीन बार परीक्षा की है। दो-दो और तीन-तीन सालके फूले आराम हो गये। पाँचमे से चार केसोंमे सफलता हुई। परीक्षित है।

(४३) परबालको मोचनेसे उखाड़ कर वहाँ दो तीन दफा मैंडक का खून लगाइये। हमेशाको आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(४४) सुरमा अस्फहानी २॥ तोले, जुन्दुल हिजर १॥ माशे, कालीमिर्च आठ अदद, नीलवृक्षके बीज ३ माशे, शीतल चीनी ३ माशे, रसोत ३ माशे, चाकसू साफ किया हुआ ३ माशे, जस्तका सफेदा ३ माशे, शुद्ध पारा ३ माशे, सक्कः ३ माशे, आग पर फुलाई हुई फिटकरी १ माशे, त्रिफला भुना हुआ १ माशे, कपूर १ माशे, कलमीशोरा २ माशे, कच्ची हल्दी २ माशे, देशी अजवायन ३ माशे, सिरसके बीजोकी मींगी साफ को हुई ३ माशे, छोटी इलायची ३ माशे, अब्रीभ्रमोती ३ माशे, शुद्ध अफीम तीन माशे, ममीरा चीनी १॥ माशे, संग बसरी १॥ माशे, ताम्बेकी भस्म १॥ माशे, तुलसीके पत्तोका रस १ तोला और अर्क गुलाब पाव-भर—इन सबको तैयार करो।

पहले पारे और सिक्केको आग पर रख कर पिघला लो। रसौत और अफीमको थोडेसे गुलाब-जलमें घोटकर मिला लो। फिर बाकी दवाओंको पीस-छान कर एक खरलमें डालो। ऊपरसे आग पर पिघलाये हुए पारे और सिक्केको तथा हल की हुई रसौत और अफीम तथा तुलसीके पत्तोंके रसको डाल दो और खूब खरल

करो। जब घुटते-घुटते सूखा चूर्ण हो जाय, महीन कपड़ेमें छानकर शीशीमें भर दो। इसका नाम "मोतियोंका सुरमा" है। इसके आँखोंमें आँजनेसे आँखोंकी कमज़ोरी, फूला, जाला और नाखूना वग़ैर: प्राय: सभी नेत्र रोग आराम हो जाते हैं।

(४५) काला सुरमा १५ तोले, कफेदर्या, शत्रे यमानी गिरियाँ—भुनी हुई, कलमी शोरा, जस्तका कुश्ता या सफेदा हरेक ६।६ माशे; नमक लाहौरी, नमक साँभर, नमक चूड़ी, कपूर, छोटी इलायचीके बीज, फिलफिल दराज—छोटी पीपर, हरेक तीन-तीन माशे और फिलफिल स्याह १ माशे—लाकर रखो। पहले ३ दिन त्रिफलाके भिगोये पानीमें खरल करो और फिर एक दिन नीमके नर्म पत्तोंके रसमें खरल करके सुखालो। इसका नाम "काफूरी सुरमा" है। इस सुरमेके आँखोंमें लगानेसे जाला, धुन्ध, सुर्ख़ी, नजला उतरना वग़ैर: आँखोंके रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४६) जङ्गली कबूतरकी बीट साफ करके खरलमें डालो और घोटते-घोटते सुरमेकी तरह बारीक कर लो। इसको आँखोंमें आँजनेसे धुन्ध, जाला खारिश—खुजली, आँखोंसे पानी जाना आदि नेत्र रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(४७) काला सुरमा २ तोले, नीलवृक्षके बीज ६ माशे, फ़ेलोमल ६ माशे, काली मिर्च ३ माशे और केशर १ माशे—इनको पीस-छानकर महीन कपड़ेमें छान लो और शीशीमें रख दो। इसको आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी कमज़ोरी जाती रहती है।

ढलका नाशक नुसख़े।

नोट—बिना इच्छाके हर समय आँखोंसे जो पानी सा या आंसू बहा करते हैं, उसे "ढलका" कहते हैं। इस रोगमें पहले मुंजिज देकर जुलाब देना चाहिये और इसके बाद और दवाएँ सेवन करानी चाहियें।

(१) पीली हरड़के बीज २ भाग, बहेड़ेकी मींगी ३ भाग और आमलोंके बीजोंकी गरी १ भाग—इनको पीस-छान कर पानीके साथ गोलियाँ बना लो। जरूरतके समय, इन्हें पानीके साथ पीसकर नेत्रोंमें लगाओ। इनसे आँखोंकी खुजली और ढलका आराम हो जाता है।

(२) जङ्गली हरड़, माजूफल, बालछड और पीली हरडकी छाल—बराबर-बराबर लेकर जलमें महीन पीसो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीके साथ पीस कर आँखोंके अन्दर और आँखोंके इर्द-गिर्द लगानेसे ढलका बन्द हो जाता है।

(३) घोड़ेका ऊपरका दाँत, पानीमें रगड़ कर, आँखोंमें लगानेसे पानीका उतरना बन्द हो जाता है।

(४) आबनूसकी लकड़ी घिसकर आँखोंमें लगानेसे ढलका आराम हो जाता है।

(५) पीली हरड़की छाल और अंजरूत बराबर-बराबर लेकर और पीस कर नेत्रोंमें लगानेसे ढलका आराम हो जाता है।

(६) कुन्दरको जलाकर, गुलाब-जलमें मिला लो और उससे आँखें धोओ। इससे ढलका आराम हो जाता है।

कंजापन नाशक नुसखे।

(१) अगर जन्मसे कंजापन हो, तो उसका इलाज नहीं हो सकता। फिर भी अत्यन्त काली स्त्री या हबशिनका दूध बालक को पिलानेसे कंजापन नाश होते देखा गया है।

(२) शेखल रईसने अपनी "क़ानून" नामकी पुस्तकमें लिखा है, कि इन्द्रायणके हरे फलमें सलाई चुभाकर आँखोंमें फेरनेसे कंजापन आराम हो जाता है।

(३) गाजरका छिलका महीन पीसकर नेत्रोंमें लगानेसे कंजापन आराम हो जाता है।

अरब नामक आँखके नासूरकी चिकित्सा।

नोट—अरब एक नासूर है, जो नाककी तरफके आँखके कोयेमें होता है। उस जगह दबानेसे आलायश निकलती है।

(१) नासूरका मैल साफ करके मरहम लगानेसे आँखके कोये-का नासूर आराम हो जाता है।

(२) संग ज़राहत या सेलखड़ीके दो टुकड़ोंको रेंडीके तेलमें घिसो। जब गाढ़ा-गाढ़ा मसाला हो जावे, उसमे कपडेकी बत्ती खूब तर करके उस नासूरमें रखो ; अवश्य लाभ होगा।

(३) चिराग़की कीट कपडेमें लगाकर नासूर पर जमाओ, इससे आँखके कोयेका नासूर आराम हो जाता है।

(४) बथुएके पत्ते और तम्बाकूके फूल बराबर-बराबर लेकर, गायके घीमें खूब खरल करो। इस कज्जलीके आँखके नासूरमें लगानेसे नासूर भर जाता है।

(५) हुक्के के नेचेकी कीट और अफीम बराबर-बराबर लेकर पीसो और बत्ती बनाकर आँखके नासूरमें रखो ; अवश्य लाभ होगा।

(६) समन्दरशोख पानीके साथ पीस कर बत्ती बनाओ और उसे आँखके नासूरमें रखो ; अवश्य लाभ होगा।

(७) नीमके पत्ते और पेमन्दी बेरके पत्ते—महीन पीस कर और कपड़े पर लेप करके आँखके नासूर पर लगाओ, नासूर भर जायगा।

(८) कत्था और एलुआ बराबर-बराबर लेकर पीसो और आँखके नासूर पर लगाओ, इससे नासूर भर जायगा।

(६) कुत्तेकी जीभ जलाकर और थूकमें मिलाकर नासूर पर लेप करो। आँखका नासूर भर जायगा।

(१०) गिलोय और हल्दी समान-समान लेकर सिल पर पीसो। फिर लुगदीसे चौगुना मीठा तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर तेल पका लो और पक जाने पर छान लो। इस तेलको नाकमें टपकानेसे आँखके कोयेका नासूर आराम हो जाता है।

(११) साफ शहद आग पर रख कर औटाओ, जब गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें थोड़ासा "समन्दर झाग" पीस कर मिला दो और नीचे उतार लो। इसमें बत्ती डुबो-डुबोकर नासूरमें भरनेसे आँखका नासूर भर जाता है।

समस्त नेत्र रोगोंपर
आयुर्वेदीय और यूनानी नुसख़े।

(१) बबूलके पत्तोंका काढ़ा औटाकर खूब गाढ़ा करो और उसमें "शहद" मिलाकर आँजो। इससे ढलका या स्राव इस तरह दूर होता है, जिस तरह सूरजसे अँधेरा। परीक्षित है।

(२) पुनर्नवेकी जड़को "दूधमें" घिसकर आँजनेसे आँखोंकी खुजली जाती रहती है; "शहदमें" घिसकर आँजनेसे पानी बहना दूर होता है; "घीमें" घिसकर आँजनेसे फूला नाश होता है; "तेलमें" घिसकर आँजनेसे तिमिर या धुन्ध दूर होता है और "काँजीमें" घिसकर आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है। इस दवाको "देशी ममीरा" कहते हैं। इसके समान नेत्र रोग नाशक दवा बहुत कम हैं। परीक्षित है।

(३) रसौतको औरतके दूधमें घिस कर लगानेसे आँखोंके सब

रोग चले जाते हैं। यह दवा भी ममीरेका मुक़ाबला करती है; पर कुछ दिन लगातार सेवन करनेसे। परीक्षित है।

(४) आँखोंके भीतर घीकी दो बूँद या सरसोंके तेलकी दो बूँद या घीग्वारके स्वरसकी दो बूँद डालनेसे नेत्रोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं।

(५) काले तिल पीसकर सिरपर मलने, शरीरमें आमलोंका उबटन लगाने और कानोंमें तेल डालनेसे नेत्र-रोग नहीं होते और दृष्टि बढ़ती है।

(६) जो मनुष्य त्रिफलेके काढ़ेसे नित्य आँख धोता है, उसके पास नेत्र-रोग भूलकर भी नहीं आते।

(७) बहेड़ेकी गुठलीको औरतके दूधमें पीसकर, सन्ध्या समय नित्य आँजनेसे शुक्र या फूला नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(८) आँखोंमें औरतका दूध भरनेसे अभिघातज या चोट लगनेसे हुए नेत्र रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) भूआँवला, सेंधानोन, नागरमोथा और आमलोंका स्वरस—इनको समान-समान लेकर, ताम्बेके बासनमें, ताम्बेके डण्डे से घिसने और नेत्रोंपर लेप करनेसे सब तरहके नेत्र रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) फिटकरी, चन्दन, सोंठ, सोना-गेरू और बच इनको पानीके साथ पीसकर, नेत्रोंके बाहर लेप करनेसे नेत्र-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) पुराना घी आँखोंमें आँजनेसे नेत्र रोग नाश हो जाते हैं।

(१२) सहँजनेके पत्तोंके रसमें "शहद और सेंधानोन" मिलाकर आँखों पर तरड़े देनेसे नेत्रोंका नया कोप दूर होता है।

(१३) आमलोंके स्वरसको कपड़ेमें छान कर आँखोंमें भरनेसे नेत्रों का नवीन कोप निस्सन्देह दूर होता है।

(१४) त्रिफलेके चूर्ण अथवा कल्क अथवा कषायमें घी या

शहद मिलाकर सेवन करनेसे सब तरहके तिमिर या धुन्ध रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) साध्य अधिमन्थ रोगमें भौंके ऊपर आगसे दागना और शिरा वेधन करना हित है।

(१५) नेत्रपाक रोगमे जोंकेकं लगवाना और जुलाब देना हितकारी है।

(१६) हल्दीके रस या काढ़ेमे निर्मलीका फल घिस कर आँजनेसे नेत्र रोग आराम हो जाते हैं।

(१७) जस्तेकी भस्म, फिटकरी और निर्मलीका फल—इन तीनोंको एक साथ घिस कर या पीस कर आँजनेसे नेत्र रोग आराम हो जाते हैं।

(१८) चमेलीके पत्तोंके रसमें शुद्ध सुरमा, हल्दी और दारुहल्दी मिला कर आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है। इतना ही नहीं फूला, जाला और नेत्रोंका मैल भी दूर हो जाता है।

(१९) जिसकी आँखोंके पलकोंके बाल आँखोंमे घुस जाते हो या चुभते हों, उसे उनको सावधानीसे उखाड़ डालना चाहिये। इसके बाद कालीमिर्च, गुड़ और गेरू बराबर-बराबर लेकर उस जगह लेप करना चाहिये।

(२०) शुद्ध पारा, सीसेकी भस्म, खपरिया और मूंगा भस्म एक-एक माशे ; मोती आधा माशे और ऊंटका दाँत, कुल्थी, जंगली कुल्थी एक-एक माशे लो। सबको पीस-छान कर खरलमें डालो और "बकरीके दूध"के साथ बहत्तर घण्टे तक खरल करो। इस दवाके आँखोंमें आँजनेसे महाबलवान नेत्रवात रोग नाश हो जाता है।

(२१) कालीमिर्च, जस्त-भस्म, ताम्बा-भस्म, भुनी फिटकरी, अफीम और सीप-भस्म—सबको समान-समान लेकर, थोड़ासा "शुद्ध नीलाथोथा" भी मिला लो और सबको काँसीके बासनमें डाल

कर, गायके दूधके साथ ३ दिन तक घोटो। इस अंजनके आँजनेसे रतौंधी, जाला और काँच वग़ैरः नेत्र रोग आराम हो जाते हैं।

(२२) फिटकरी, बापची, हल्दी, लोध, अफीम, जीरा और रसौत—इनको समान-समान लेकर पीस लो और पोटली बना लो। फिर त्रिफलेके काढ़ेमें इस पोटलीको भिगो-भिगोकर नेत्रोंके ऊपर रस निचोड़ो। इस पोटलीसे सब तरहके नेत्र रोग नाश होकर नेत्र निर्मल हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—बावची, बायची, सोमराजी, शशिलेखा ये सब एक ही चीजके नाम हैं। बावचीके बीज ही दवाके काममें जियादा आते हैं।

(२३) काला सुरमा, सेंधानोन, शंखका पेंदा, अफीम, शुद्ध मैनशिल, मिश्री, सोंठ, पीपर, कालीमिर्च और निर्मलीका फल—सबको समान-समान लेकर पीसो और खूब बारीक कपड़ेमें छान लो। इस चूर्णको घी और दूधमें मिलाकर आँजनेसे धुन्ध-तिमिर, फूला, जाला, रतौंधी तथा और नेत्र-पीड़ाएँ आराम हो जाती हैं।

(२४) जो मनुष्य त्रिफलाका चूर्ण ना-बराबर शहद और घीमें मिलाकर शामको खाता है और पथ्यसे रहता है, उसके आँखोंके सभी रोग इस तरह विदा हो जाते हैं, जिस तरह धनहीनके नौकर-चाकर विदा हो जाते हैं। परीक्षित है। इसीपर लोलिम्बराज महाशयने क्या खूब कहा है :—

> इति निगदितमार्ये नेत्ररोगातुराणां
> निशि समधुघृताग्र्यासेव्यमाना सुखाय।
> अयि नवशिशुलीलालोलदृष्टे त्वमग्र्या
> जनयसि बत कस्माद्दुःपरीत्य परन्तु॥

हे आर्ये! वैद्य लोग कहते हैं, कि शहद और घी मिलाकर अग्र्या (त्रिफला) के रातमें खानेसे नेत्ररोगवालोंको सुख होता है, परन्तु हे नवीन बालकोंकी लीलाके समान चञ्चल दृष्टिवाली स्त्री! तू भी तो अग्र्या (मुख्या) ही है, फिर तुझसे नेत्ररोगियोंको दुःख क्यों होता है?

खुलासा—त्रिफला सेवन करनेसे नेत्ररोग वालोंको सुख होता है, पर स्त्री-सेवन करनेसे नेत्ररोगवालोंकी पीड़ा वढती है। "अग्यूा" शब्दका अर्थ "त्रिफला और स्त्री" दोनों दिखाकर कविने चमत्कार दिखाया है।

(२५) भोजनके वाद हाथ धोकर, दोनों हथेलियाँको आपसमें रगडकर, आँखोंके लगानेसे, थोड़े ही दिनमें वह आँखोंके लगा हुआ पानी तिमिर या धुन्धको नाश कर देता है। परीक्षित है।

(२६) शुद्ध सुरमा, सफेद मिर्च, पीपर, मुलहटी, वहेड़ेकी मींगी, शंखकी नाभि और शुद्ध मैनशिल—इन सवको वरावर-वरावर लेकर वकरीके दूधमें पीसकर गोलियाँ वना लो और छायामें सुखा लो। इन गोलियांके आँखोंमें लगानेसे सव तरहके नेत्र रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२७) त्रिफलेके काढ़ेसे नित्य आँखें धोनेसे सव तरहके नेत्र रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२८) शीशेको शुद्ध करके आगपर गला लो। फिर शीशेके वरावर शुद्ध पारा लेकर उस गले हुए शीशेमें मिला दो। फिर इन दोनोंके वरावर शुद्ध सुर्मा उनमें मिला दो और सवको महीन पीस लो। शेषमें, जितना यह चूर्ण हो, उसका दसवाँ हिस्सा "शुद्ध कपूर" या भीमसेनी कपूर मिला दो और शीशीमें रख दो। यह अंजन नेत्रोंके लिए अमृत है। इससे नेत्रोंके सभी विकार नाश हो जाते हैं।

(२९) वनकुल्थीको कपड़ेकी पोटलीमें वाँधकर "दोलायन्त्रकी विधि"से वकरीके मूत्रमें पकाओ। फिर उसके छिलके वगैरः निकाल कर उसे पीस लो। शेषमें, उसमें सैंधानोन, वोल—गन्धरस और हल्दी पीसकर मिला दो। इस अंजनको रातके समय लगानेसे तीन दिनमें ही नेत्रोंका रुधिर-विकार नाश हो जाता है।

(३०) समन्दर फेनमें "मिश्री" मिलाकर पीसलो। यह अंजन अर्जुन रोग यानी नेत्रोंकी सफेदीमें लाल लकीरको इस तरह दूर

करता है, जिस तरह नवीन विवाही छोटे-छोटे कुचोंवाली कामिनी अपनी छातियों परसे पतिके हाथको दूर करती है। कहा है :—

कुवलयनयनेर्जुनं कफोऽघे मा गिनया स्रनिराचरी करोति।
प्रियकरमिव कामिनी नवोढा लघुकुचयानितिति वक्षसि प्रयुक्तम्॥

(३१) सोनामक्खीको शहदमें घिस कर आँजनेसे फूला शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(३२) अपनी लार नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढ़ती है। सदैव चन्द्रमाको देखनेसे भी नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है।

(३३) आमले, बहेड़े और हरड़का अंजन बनाकर नेत्रोंमें लगा नेसे नेत्रोंसे पानी गिरना बन्द हो जाता है।

(३४) अगर नेत्रोंमें नासूर हो गया हो, तो जौंकें लगवानी चाहियें। अथवा नीमके पञ्चाङ्गका लेप करना चाहिये।

(३५) कचिया नोनमें शहद मिलाकर लगानेसे नाखूना और धुन्ध अवश्य नाश हो जाते हैं।

(३६) अगर नेत्रमें वमनिया या वाफ लगजावे, तो कपूर और घी एकत्र घिस कर लगाना चाहिये। अथवा फिटकरी और खपरिया घिस कर नेत्रोंमें लगाने चाहियें।

(३७) हरड़ और तगरका लेप करनेसे वर्त्म या कोयोंके रोग नाश हो जाते हैं।

(३८) कपूरको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे सब तरहके नेत्र रोग दूर हो जाते हैं।

(३९) विषसे शुद्ध किये हुए सीसेको रविवारके दिन खूब घिसो। इसका लेप करनेसे नेत्र रोग नाश हो जाते हैं।

(४०) बकायनके फलोंको पीस कर टिकिया बना लो। इस टिकियाको नेत्रों पर बाँधनेसे पित्त-दोष शान्त हो जाते हैं।

(४१) तिलोंको पानीमें पीसकर लगानेसे पलकोंकी उडी हुई बाँफनी जम जाती हैं।

(४२) रसौत, हल्दी, दारुहल्दी, चमेलीके पत्ते और नीमके पत्ते—इनको गोबरके रसमें पीस कर वत्ती बना लो। इस वत्तीके नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(४३) आकके दूधमें रूई भिगोकर सुखा लो और वत्ती बनालो। उस वत्तीको घीमें तर करके जलाओ और काजल पारो, इस काजल को नित्य आँखोंमें लगानेसे सब तरहके नेत्र रोग नाश हो जाते हैं।

(४४) रसौतको पानीमें घिसकर लगानेसे पलकोंकी सूजन दूर हो जाती है।

(४५) धनिया और सफेद चन्दनको सिरकेमें पीसकर माथे पर लगानेसे आँखोंके सामने अँधेरी आना दूर होता है।

(४६) नीमके पत्ते और मकोयका स्वरस मिलाकर आँखोंके ऊपर लगानेसे आँखोंकी सुर्खी जाती रहती है।

(४७) फिटकरीको गुलाब जलमें घिस कर आँखोंमें लगानेसे फूला और जाला नष्ट हो जाते हैं।

नोट—फिटकरीको महीन पीस कर सूँघनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(४८) छोटी हरड़ और सफेद मिश्री—इन दोनोंको स्त्रीके दूधमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे नजलेके कारणसे पैदा हुई नजरकी कमजोरीको लाभ होता है।

(४९) खपरिया और बडी हरडका वक्कल दोनोंको काँसीकी थालीमें रख कर, काँसीकी कटोरीसे महीन रगड़ कर आँखोंमें लगानेसे आंखोंका ढलका या पानी बहना आराम हो जाता है।

(५०) कुँदरु गोंदको गुलाब जलमें पीस कर आँखोंपर लेप करनेसे नाखूना आराम हो जाता है।

नोट—आँखोंके कोनोंमें, जहाँसे कीचड़ निकलती है, सुर्खीसी आ जाती है। वह सुर्खी जालेजैसी मालूम होती है। उसे फारसीमें "नाखून." कहते हैं।

(५१) अगर सबल रोगकी वजहसे आँखोंमें लाली हो : रोगी

धूपमें देख न सकता हो, किन्तु छायामें देख सकता हो; आँखोंमें पानी बहता हो या पलके पानीसे तर रहती हों; तो कीकरका गोंद ७ माशे, सफेदा ७ माशे, जङ्गार ६ माशे और चाँदीका मैल ७माशे इन सबको पोदीनेके रसमें खरल करके चार बत्तियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। इन बत्तियोंको स्त्रीके दूधमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे ऊपरकी शिकायतें रफा हो जाती हैं।

(५२) सूंचलनोन, फिटकरी, केशर, संगबसरी और थोडासा सुरमा—सबको पीस-छानकर आँखोंमें आँजनेसे धूपमें न दीखना, छायामें दीखना, पानी बहना और लाली रहना ये सब नं० ५१ में लिखी हुई शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं।

(५३) त्रिफला रातको पानीमें भिगोकर सवेरे ही छान लो। फिर उसमें थोडीसी "फिटकरी" पीस कर मिला दो। इस पानीके छींटे आँखोंमें मारकर आँख-मुँह धोनेसे आँखोंकी लाली कम हो जाती, पानी बहना बन्द हो जाता और धूपमें भी देखनेकी शक्ति हो जाती है। परीक्षित है।

(५४) तीन चार बूँद जिंक लोशन आँखोंमें डालनेसे आँखोंको लाली जाती रहती है। यह डाक्टरी नुसख़ा है। परीक्षित है।

(५५) अगर लालीके साथ पानी भी आँखोंसे आता हो और सूजन भी हो, तो सिलवर लोशन दो या तीन बूँद आँखोंमें डालना चाहिये। इससे लाली, पानी गिरना, पीडा और सूजन ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५६) शोरा, सोंठ, फिटकरी और सफेद सुर्मा बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस दवाको दिनमें दो बार रोज आँखमें लगानेसे फूला आराम हो जाता है।

(५७) मुर्गीके अण्डेके छिलकोंकी भस्म कर लो। इसे खूब पीसकर और "शहद"में मिलाकर आँखोंमें लगानेसे फूला आराम हो जाता है।

(५८) गुललालाके फूलोंका रस, स्त्रीके दूधमें मिलाकर आँखमें डालनेसे फूला आराम हो जाता है।

(५६) काशगरी सफेदा, कुन्दर गोंद और भिमड़ी—इन तीनोंको छै-छे माशे लो और साढ़े चार तोले गधीके दूधमें भिगो दो। जब दूध सूख जाय, दवाओंको खरल करो। खरल करते समय मुर्गीके चार अण्डोंकी सफेदी मिला दो। घोटते-घोटते जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, तब छोटे बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियाँको कन्या जननेवाली औरतके दूधमें घिस-घिस कर कुछ दिन लगातार आँखोंमें आँजनेसे लाली, घाव, धुन्ध, गुबार, जाला, फूला और खुजली आदि आँखोंके रोग आराम हो जाते हैं। एक हकीम साहब इस नुसख़ेकी बेहद तारीफ करते और अपना आजमूदा कहते हैं।

नोट—अगर फूला चेचकमें पैदा होता है, तो असाध्य होता है। पर गरमी या खुश्की वगैरः मे पैदा होता है तो साध्य होता है।

(६०) अगर आँखोंकी पलकोंके अन्दर बाल पैदा हो गये हो, उनकी वजहसे रोगी आँखें न खोल सकता हो, खोलते समय पीड़ा होती हो यानी "परवाल" हो गया हो, तो "फिटकरी" पानीमे घिस-घिसकर पड़वालोंके पैदा होनेकी जगह पर लगाओ। सात दिनमे आराम हो जायगा।

(६१) हरताल पानीमें पीसकर लगानेसे भी परवाल (जिसके लक्षण ऊपर नं० ६० लिखे हैं) आराम हो जाता है।

(६२) कुत्तेके दाहिने कानके चींचड़ (एक कीडे)का खन लेकर परवालकी जगह लगानेसे परवाल रोग नाश हो जाता है।

(६३) चमगीदड़का खून परवालकी जगह लगानेसे भी परवाल आराम हो जाता है।

(६४) गेरू १ तोले और शोरा चार तोले लेकर चार रोज़ तक खरल करो। फिर पाँचवें दिन, दिन-भर काँसीके बर्तनमें काँसीकी

कटोरीसे खरल करो। इस अञ्जनको सात दिन तक सलाईसे आँखोंमें लगाओ। आठवें दिनसे तीन दिन तक उत्तम शराबके फाये आँखों पर रखो। इसके बाद चौथे दिनसे बारह दिन तक अर्क़ गुलाबके फाये आँखों पर रखो। कोई चीज़ नज़र लगाकर मत देखो। इस दवाको जब करो, जाड़ेके मौसममें करो—गरमीमें नहीं। इस दवासे आँखोंसे पानी गिरना बन्द हो जाता है।

(६५) अगर जहर रोग हो यानी दिनमें न दिखता हो, पर रातको और बदलीके दिनोंमें दीखता हो, तो दिमाग़में भीतर और बाहर दोनों ओर से तरी पहुँचाओ। जैसे—लड़कीवाली स्त्रीका दूध या बनफ़शेका तेल अथवा कद्दू का तेल नाकमें टपकाओ। रीवास नामक घासका पानी या शर्बत नीलोफर अथवा शर्बत बनफ़शा पिलाओ। शीतल जलमें डुबकी लगाकर पानीके भीतर आँखें खोलना भी इस मर्जमें मुफीद है।

नोट—जहर रोग रतौंधीके विरुद्ध होता है। इस रोग वालेको दिनमें कुछ नहीं दीखता। रातको और बदली वाले दिन दीखता है। कहते हैं, आँखको देखने वाली रूह कम और पतली हो जाती है, सूरजकी गरमी उसे नष्ट कर देती है, इससे दिनमें आँखकी ज्योति अपना काम नहीं कर सक्ती, रातको या बदल होनेके समय, सर्दीकी वजहसे, रूह इकट्ठी होकर अपनी दशा पर आजाती है, तब दीखने लगता है। कोई हकीम कहते हैं, ज़हर एक तेज दोष है जो दिमागमें आजाता है और अपनी तेजीसे दिमागी रूहको बिगाड़ देता है। फिर दिनकी गरमी उसकी गरमीको और भी बढा देती है और इस तरह आँखकी देखनेकी शक्तिका काम नष्ट कर देती है। इस रोगमें दिमागके भीतर और बाहर तरी पहुंचानी चाहिये और रूहके गाढी करनेके लिए गाढ़ा खन पैदा करने वाले भोजन देने चाहिएँ। जैसे—तवेकी पकी हुई रोटी और हरीरा वगैर.।

(६६) मच्छरकी शकलका दो पर वाला जानवर, जो मच्छरसे भी छोटा होता है, अक्सर आंखमें चला जाता है। यह पुतली पर चिपट जाता है और आँखके डेलेको चूसता है। इससे आंखमें बडी तकलीफ और झल्लाहट होती है और आँख लाल हो जाती

है। अगर ऐसा मौक़ा हो, तो मुल्तानी मिट्टी खूब महीन पीस कर आँखमें भर दो और एक घण्टे तक पलक बन्द रखो, जिससे वह जानवर मिट्टीमें मिल जावे। फिर आँख खोलकर उसे कपड़े या रूईसे पोंछ-पोंछकर निकाल लो।

नोट—मुल्तानी मिट्टी तीन तरहकी होती है —(१) सफेद, (२) हरियाली लिये हुए, और (३) लाली लिये हुए। यह पिछली सबसे अच्छी होती है।

(६७) अगर चोटकी वजहसे आँखोंमें लाली या सूजन पैदा हो जाय, तो फस्द खोलो और हल्के-हल्के मेवोंके पानीसे कोठेको नर्म करो। जरूरत हो तो गुद्दीमें पंछने भी लगाओ। सफाईके बाद, दर्द रोकनेके लिए, पीलापन लिए हुए अण्डेकी सफेदी गुल रोग़नमें मिला कर आँखों पर लगाओ। जब दर्द थम जाय और माद्दा दूसरी तरफ चला जाय, किन्तु आँखमें नीलापन बाक़ी रह जाय ; तब धनिया, पोदीना, संगे फिलफिल और हरताल इनको पानीमें पीस कर लेप करो। इससे नीलापन जाता रहेगा।

(६८) अगर पहलेसे आँखमे कोई तकलीफ न हो, यकायक छिलनसी मालूम हो और आँसू आने लगे तो समझो कि आँखमें कुछ पड़ गया है। अगर ऐसा हो, तो आँखको गरम जलसे धोओ—हाथसे हरगिज़ न मलो। आँखमें स्त्रीका दूध डालो। अगर धूआँ या धूल गिरी होगी, तो इस उपायसे आराम हो जायगा। अगर इस तरह आराम न हो,तो पलकको उलट कर आँखके भीतर,दोनों पलकों-की जड़में ध्यानसे देखो। अगर कुछ दिखाई दे, तो सलाईके सिरेसे उसे उठा लो या एक रूईका फाहा आँखके भीतर रख दो और थोडी देर तक रहने दो,ताकि जो चीज़ भीतर हो उसमें लग जावे। फिर एक साथ उस फाहेको निकाल लो। अगर गिरनेवाली चीज़ बहुत ऊपर हो, पलकके भीतर न घुसी हो तो कपड़ेसे सहजमें निकल आवेगी। अगर बहुत भीतर घुस गई हो, इन उपायोंसे न निकले, तो निशास्तेको महीन पीसकर आँखमें डालो और थोड़ी देरतक उसे

वहीं रहने दो। इससे गिरनेवाली चीज अपनी जगहसे अलग होकर निशास्तेमें लग जायगी। उसे आप रूईसे पोंछकर निकाल सकते हैं। अगर काँच या गेंहूं वगैरःका तिनका घुस जाय और चिपट जाय, तो इस कामके लिए बने हुए औज़ारसे उसे निकालना चाहिये। गिरी हुई चीज निकाल कर, स्त्रीका दूध या अण्डेकी सफेदी आँखमें डालनी चाहिये, ताकि कोई हानि न हो।

(६९) सुरमा, सैंधानोन, शंखकी नाभिकी भस्म, शुद्ध मैनसिल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, निर्मलीके बीज, मिश्री और समन्दर फेन—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर उसे भेडके दूधमें घिसकर आँखोंमें लगाओ। इससे धुन्ध, जाला और फूला आराम हो जाते हैं।

(७०) अदरखके रसकी दो तीन बूँदें नेत्रोंमें टपकानेसे वात-कफकी नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(७१) सैंधानोन, पीपर, भीमसेनी कपूर और पुरानी इमलीके बीज बराबर-बराबर लेकर "गुलाब जल"में खरल करो। इसके आँजने से कम दीखना, धुन्ध और जाला वगैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७२) नीमके पत्ते और ज़रासी सोंठ थोड़ेसे पानीमें पीसकर और जरासा सैंधानोन मिलाकर गरम करो। फिर आँखें बन्द करके आँखो पर एक सफेद मलमलका कपड़ा बिछा दो और कपड़े पर इस दवाका लेप कर दो। इससे नेत्रोंकी जलन और खुजली जाती रहती है।

(७३) अफीम और केशर गुलाब जलमें घिसकर आँखोपर लेप करनेसे नेत्रोकी सुर्ख़ी चली जाती है। इन्हीं दोनोंको पानीमें घिसकर लेप करनेसे आँखोंके घाव आराम हो जाते हैं।

(७४) मुण्डीके पत्तोंको सैंधेनोन और घीके साथ पकाकर खानेसे आँखोंकी रोशनी बढ़ती है।

नोट—जो लोग नेत्र रोगोंसे सदा दुखी रहते हैं और छोटी उम्रमें ही जिनकी

आँखोंकी ज्योति कमजोर हो गई हो, उन्हे "मुण्डीका रस" नेत्रोंमें लगाना चाहिये और मुण्डी ही खानी चाहिये।

(७५) शहदमें मुण्डीका अवलेह बनाकर सेवन करनेसे कम दीखना और आँखोसे पानी जाना आराम हो जाता है।

(७६) मुण्डीके पञ्चाङ्गको छायामें सुखाकर पीस लो। फिर उसमे उस चूर्णके बराबर-बराबर मिश्री और घी मिला दो। इसको ६ माशे सवेरे और ६ माशे शामको गायके दूधके साथ सेवन करो। दूध भात आदि हल्के पदार्थ खाओ। इससे नेत्रोंकी दृष्टि तेज़ होती, दाँत मज़बूत होते और बाल सफेद नहीं होते।

(७७) शीशेकी भस्म, खपरिया, जस्तकी भस्म, शंख-नाभि, मूँगा, सीप और समन्दर फेन—प्रत्येक एक-एक तोले, सफेद मिर्च, कुलींजन, पीपर, अकरकरा, सिरसके बीज, चिरमिटी और पुनर्नवाकी जड़—प्रत्येक दो-दो तोले लो।

सबको एकत्र पीसकर, सात दिन तक, पुनर्नवेके रसमें खरल करो। फिर तीन दिन तक, घीग्वारके रसमें खरल करो और अन्तमे तीन दिन तक गोमूत्रमें खरल करो। यह अञ्जन आँखोंमें आँजनेसे तिमिर-धुन्ध, मोतियाबिन्द और जाले वग़ैरः को नाश करता है। यह नुसख़ा पं० शिवदयालजी वैद्य, परताब गढ़, का परीक्षित है।

(७८) एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म त्रिफलेके चूर्णमें अथवा ना-बराबर शहद और घीमें खानेसे नेत्र-रोग नष्ट हो जाते और धातुपुष्ट होती है। परीक्षित है।

(७९) खैरकी छालके काढ़ेमें एक या दो रत्ती वङ्गभस्म सेवन करनेसे चर्मपक्ष्म नामक पलकोंका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८०) चिरमिटीकी जड़ बकरेके पेशाबमें घिसकर आँखोंमें आँजनेसे तिमिर रोग आराम हो जाता है।

(८१) चिरमिटी पानीमें उबाल कर, उसका पानी पलकोंपर

लगानेसे आँखोकी जलन, सूजन, अभिष्यन्द और पलक पर होनेवाले पूय—ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

(८२) गुलाब जल आँखोंमें डालनेसे आँखोंकी जलन और उनकी कमजोरी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८३) सफेद पुनर्नवाकी जड़ घीमें पीसकर आँजनेसे आँखोंकी फूली कट जाती है। परीक्षित है।

(८४) २१ बार गुलाब जलकी भावना देकर सुर्मा आँजनेसे आँखोंकी गरमी जाती रहती है।

(८५) सफेद पुनर्नवाकी जड दूध या भाँगरेके रसमें घिसकर आँजनेसे आँखोंकी खुजली जाती है और शहदमें घिसकर आँजनेसे आँखोसे पानी आना या ढलका आराम होता है। परीक्षित है।

(८६) नित्य सोते समय, काली तिलीका ताज़ा तेल आँखोंमें डालनेसे नेत्र रोग नाश हो जाते हैं।

(८७) ब्राह्मीके पत्तोंका रस सिरमें लगानेसे आँखोंके सामने चक्कर आना मिटता है।

(८८) केशरको शहदमें घोट कर आँजनेसे आँखोंकी जलन आराम हो जाती है।

(८९) शुद्ध सुरमा एक छटाँक, वहेड़ेकी गिरी ६ माशे, वायविड़ंग ६ माशे, पीपरके चाँवल ६ माशे, सफेद मिर्च ४ माशे, सिरस के बीज ४ माशे, समन्दरफेन ४ माशे, साम्हरका नाखून ४ माशे, मोतीकी सीप ४ माशे, शुद्ध खपरिया ४ माशे और उड़ाया हुआ कपूर ४ माशे—सबको महीन पीस-छानकर, सात दिनतक त्रिफलेके काढ़ेमें; सात दिनतक मुण्डीके रसमें और सात दिनतक, अर्क़ गुलाबमें क्रमसे खरल करो। फिर शीशी में भर लो। इस सुरमेसे धुन्ध, जाला, फूला, मोतियाबिन्द आदि सब नेत्र रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस सुरमेको रमद, अभिष्यन्द या दुखनी आँखोंमें न लगाना चाहिये।

(६०) मरे हुए गधेका एक दाँत लाकर एक मिट्टीके प्यालेमें रखो। ऊपरसे नीबूका रस इतना भर दो, कि उस पर छे अङ्गुल ऊपर आ जावे। फिर इस प्याले पर ढक्कन देकर जोड़ वन्द कर दो और कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। इसके वाद इसको पाँच मन थेपडी-कण्डोंमें फूँक दो। जब आग शीतल हो जावे, निकालकर दवाको पीस-छान लो। इसको सुरमेकी तरह आँजनेसे जाला और फूला आराम हो जाता है।

अगर इसे और भी ताक़तवर वनाना हो, तो कुछ फिटकरीको घीग्वारके पत्तेमे रखकर भून लो। फिर ऊपरका सुरमा और यह फिटकरी वरावर-वरावर मिला लो और इनके वरावर मुर्ग़ीके अण्डेकी सफेदी और वडका दूध मिला दो और खरल करके शीशीमें रख लो।

(६१) वन्दूक़की गोली नग एकको घीमे डालकर पिघलाओ और ऊपरसे "आमलासार गंधक" पिसी हुई थोड़ी-थोडी उस समय तक डालते रहो, जवतक कि उसकी रंगत काले सुरमेकी सी न हो जावे। इसके वाद थोडी सी "कालीमिर्च" महीन पीस-छानकर उसमें मिला दो। इस सुरमेंको दिनमें कई दफ़ा, सलाईसे, लगानेसे आँखके सभी रोग आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(६२) अवीध मोती ४ रत्ती, केशर ४ रत्ती, संगवसरी ६ माशे, जस्तका कुश्ता ६ माशे, भुनी फिटकरी ६ माशे, पीपर नग १, काला सुरमा ६ तोले, वेख़ मिरजान १ माशे, सिरसके वीज १ माशे, रसौत २ माशे, छोटी इलायचीके वीज २ माशे, सोनेके वर्क़ दो नग और जिंक सलफास २ रत्ती—इन सवको दो दिन तक "त्रिफलाके भिगोये पानीमें" खरल करो। इसके वाद दो दिन "अर्क़ गुलाव"मे खरल करो। इस सुरमेसे धुन्ध, जाला, आँखकी खुजली, पानी वहना, नया मोतियाविन्द और आँखोंकी कमज़ोरी ये सव आराम हो जाते हैं। यह सुरमा आँखोंके रोगोंपर हदसे जियादा मुफ़ीद है। हमारे एक मित्रने हाल हीमें परीक्षा की है।

(६३) तूतिया ३ माशे, आमलेके छिलके १ तोले, कालीमिर्च १ माशे, नीमकी कोंपल ६ माशे, समन्दरफल ६ माशे और कपूर ६ माशे—इन सबको जम्भीरी नीबूके रसमें घोटकर गोलियाँ बना लो। गोली पानीमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं। असलमें धुन्ध, जाला और कमज़ोरी आँखपर यह नुसख़ा जियादा मुफीद है। पराया परीक्षित है।

(६४) छोटी हरड़, बहेडा, आमला, दालचीनी, हरेक दो-दो तोले ; कालीमिर्च, छोटी पीपर हरेक एक-एक तोले ; सैंधा नमक और साँभर नमक हरेक छै-छै माशे—इन सबको पीसकर कपडेमें छान लो। फिर एक दिन "कागज़ी नीबूके पत्तोंके रसमें" और एक रोज़ "काली मकोयके पत्तोंके रसमें" खरल करो। इसके बाद गोलियाँ बनाकर रख लो। इनको शहदमें घिसकर दोनों समय आँखोंमें आँजनेसे मामूली फूला—चाहे वह चेचककी वजहसे ही क्यों न हुआ हो—आराम हो जाता है। "अदरखके रसमें" घिसकर आँजनेसे धुन्ध और "बासी पानीमें" घिसकर आँजनेसे आँखोंकी कमज़ोरी आराम हो जाती है। पराया परीक्षित है।

(६५) किसी महीनेकी अँधेरी रातकी अष्टमीको, आधी रातके समय, कमलकी जडके अन्दरका गूदा लाकर पीस लो। इसे शामको माथे पर लगानेसे गहरी नींद आ जाती है।

(६६) बालोंकी राख १ माशे और हल्दी १ माशे "शहद"में मिलाकर आँखोंमें लगानेसे तारीकी चश्म या आँखोका तिमिर आराम हो जाता है।

(६७) इमलीके पत्तोंके रसमें सफेद मिर्च चार दिन तक घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोको पानीमें घिसकर लगानेसे तारीकी चश्म—आँखोंका अँधेरा आराम हो जाता है।

(६८) शोधा हुआ काला सुर्मा १ तोले, बेख़ मिरजान ६ माशे और सोनेका मैल १ माशे—सब दवाओंको सिमाक़ पत्थरकी

खरलमें "अर्क़ सौंफ सब्ज़" या "बरसाती पानी"के साथ खरल कर लो। यह सुरमा नेत्रोंकी कमजोरी, आँखोंसे पानी जाना, जाला और नजलेसे पानी उतरनेको मुफीद है। पराया परीक्षित है।

(६६) एक काले साँप और चार विच्छुओंको एक घड़े-भर गायके दूधमें डाल कर, घड़ेका मुँह बन्द कर दो और उसे २१ दिन तक ज़मीनमें गाड़े रहो। इसके बाद उस घड़ेके दूधको बिलोकर घी निकालो। उस घीको एक मुर्ग़ेको खिलाओ। तीसरे दिन मुर्ग़ा जो बीट करे उसे उठाकर पीस लो और शीशीमें रख दो। इस बीटको सलाईसे आँखोंमें लगानेसे अन्धा भी सूझता हो जाता है।

(१००) शुद्ध नीलाथोथा एक तोले लेकर चने-समान टुकड़े कर लो। एक हाँडीमें तीन चार पत्ते मकोयके बिछाकर, उन पर एक टुकडा नीलेथोथेका रख दो। इस पर पत्तोंकी तह लगाकर फिर नीलाथोथा रख दो। इस तरह तह-पर-तह लगाकर सारा नीला-थोथा रख दो। फिर हाँडीका मुंह बन्द करके उसे चूल्हे पर रख दो। हाँडीके नीचे चिराग़ जला दो। उस चिराग़में बत्ती एक अंगुल मोटी रखो और तेल पाव-भर भर दो। जब तेल जल जाय, हाँडीको उतार कर उसमेंसे नीलाथोथा निकाल लो। फिर उसे पीसकर रख दो। इसके आँखोंमे लगानेसे धुन्ध और जाला वग़ैरः आराम हो जाते हैं। पाराया परीक्षित है।

(१०१) कछुएकी खोपड़ीकी हड्डी "स्त्रीके दूधमें" घिसकर आँख में लगानेसे गुले चश्म—आँखका फला आराम हो जाता है।

(१०२) प्याज़के रसमें "मिश्री" मिलाकर रातके समय आँखोंमे लगानेसे या लाल चन्दन घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी गरमी नाश हो जाती है।

(१०३) केशर शीतल पानीमें घिस कर गुहेरी पर लगानेसे आँखकी गुहेरी नाश हो जाती है।

नोट—गुहेरी एक फुन्सी होती है ।

(१०४) कपूरका महीन चूर्ण "बड़के दूधमें" घिसकर आँखोंमें आँजनेसे बहुत उभरा हुआ फूला भी आराम हो जाता है ।

(१०५) छोटी हरड और सफेद मिश्री "स्त्रीके दूधमे" घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी कमजोरी जाती रहती है ।

(१०६) खपरिया और बडी हरडका बक्कल काँसीकी थालीमें काँसीकी कटोरीसे रगड कर लगानेसे ढलका बन्द हो जाता है ।

(१०७) फिटकरी और कपूरको "गुलाबजल"में घिसकर नेत्रोंमे डालनेसे नेत्रोंकी लाली, चमक और कडक आदि रोग नाश हो जाते हैं । कोई लाला बुलाकी दास इसे अपना परीक्षित नुसखा कहते हैं ।

(१०८) घीग्वारका गूदा ४ तोले, अफीम २ माशे और फिटकरी २ माशे—इन सबकी पोटली बनाकर, दिन-रातमें कई बार आँखोंमें फेरनेसे आँखोंकी लाली दूर हो जाती है ।

आँखका वर्णन ।

शरीरकी सभी इन्द्रियोंके अलग-अलग कार्य्य व प्रयोजन होते हैं; क्योंकि ये सब हमारे मस्तिष्कको, नाड़ियो द्वारा, अत्यन्त आवश्यकीय समाचार पहुचाती रहती हैं। मस्तिष्क उसके भले-बुरेका विचार करके सुख-दुःखका अनुभव करता है और किसी तरह-को विपत्ति सामने होनेपर विशेषरूपसे सावधान हो जाता है। इन

सब इन्द्रियोंको स्वस्थ और सबल रखकर कार्य्य करना ही हमारे जीवनके सुखका मूल आधार है।

यह किसीको बतलानेकी आवश्यकता नहीं, कि आँख अन्य सब इन्द्रियोंकी अपेक्षा अधिक मूल्यवान् व आवश्यकीय है। इसके सिवा-दूसरी किसी इन्द्रियके द्वारा हम अपने अथवा दूसरेके स्वास्थ्यके लिये किस बातका प्रयोजन है, क्या करना चाहिए और कहाँसे क्या मिल सकेगा इत्यादि नहीं बतला सकते। आँखोंको बन्द करनेसे हम वस्तुओंका अस्तित्त्व—शब्द, स्पर्श और गन्ध आदिके द्वारा नहीं जान सकने। आँखोंके खोलनेसे ही हमे उनके वास्तविक स्वरूपका ज्ञान होता है। सामने विपत्ति खडी देख हम लोग जल्दी उसके मिटानेके प्रयत्नमें लग जाते हैं। रेलगाड़ीका सञ्चालक वा जहाजका नाविक दूर हीसे लाल और हरी पताका देखकर संकेत समझ लेता है और उसीके अनुसार गाड़ी या जहाज़ चलाता है। देखनेकी शक्ति न होनेसे समय-समय पर कितनी ही विपत्तियां पैदा हो जाया करती हैं।

हमलोग जीवनके कितने ही सर्वोत्कृष्ट सुख आँखोंके द्वारा भोग सकते हैं। जिन लोगोंका शुभ चाहते हैं, उनके मुख और प्रसन्नता देखकर हम सुखी होते हैं। सीमारहित नीलवर्ण आकाश, प्रशान्त समुद्र और अन्य सैकड़ों प्राकृतिक मनोहर दृश्यावली देखकर अपने नयनोंको सार्थक कर सकते हैं। आँख न होनेसे प्राणी जीवनके कितने सुखोंसे वञ्चित रहते हैं, इसका बतलाना कठिन है।

हमलोग प्रकाशके द्वारा देख सकते हैं। चक्षु यन्त्र फोटोग्राफीके केमेरेकी भाँति है, परन्तु यह चौकोर न होकर वृत्ताकार होता है। केमेरेके सामने एक काँच लगा रहता है, उसे "लेन्स" (Lens) कहते हैं। जिस किसी भी चीज़की छाया इस काँचके अन्दर एक जगह गिरती है, वहाँ ही उसका चित्र खिंच जाता है।

प्रकाशके अधिक व न्यून होनेसे पदार्थका चित्र भी स्पष्ट व

अस्पष्ट हो सकता है। इसी लिये प्रकाशके न्यूनाधिक करनेका उपाय केमेरेके सामने रहता है। केमेरेके भीतर भी काला रंग लगा रहता है।

ये सब बातें हमारी आँखोंके भीतर भी ज्यों की त्यों हैं। सामने काँच या लेन्स, भीतर एक काले पर्देसे ढका है। काँचके सामने ही एक गोल पर्दा है, इसीको "आइरिस" (Iris) कहते हैं। प्रकाशके अधिक होनेसे यह पर्दा संकुचित हो जाता है और अन्धकार होनेसे फैल जाता है। हमारे देशवासियोंका यह पर्दा काला या धूसर वर्णका होता है, किन्तु यूरोपवालोंकी आँखोंका यह पर्दा प्रायः नीला होता है। जो कुछ भी हो, परन्तु इस पर्देके बीचमें एक काला छोटा गोल बिन्दु दीखता है। यही आँखका झरोका या कनीनिका है। आँखका अन्तर पटल काला होनेसे, यह झरोका काला दिखाई देता है। जैसे घरके भीतरके प्रगाढ़ अन्धकारको एक छोटेसे छिद्र द्वारा देखें तो काला नज़र आता है। दर्शन-शक्तिका वास्तविक यन्त्र आँखोके पिछले भागोंमे होता है। इसी पर्देके ऊपर देखी हुई वस्तुका प्रतिबिम्ब पड़ता है। इसी विचित्र यन्त्रके साथ सूक्ष्म-सूक्ष्म नाड़ियाँ लगी हैं, जो मस्तिष्क के साथ जुड़ी हुई हैं। आँखके सामने क्या वस्तु है, इसको इन्हीं नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क जान सकता है।

आँखें सिरके सामने न होकर शरीरके अन्य किसी स्थानमें होतीं तो देखनेमे इतनी सुविधा कभी न होती। दो आँखोंके होने हीसे वस्तुकी प्रकृत आकृति और परिमाण आदि अच्छी तरह देख सकते हैं।

सामनेके भागको छोड़कर आँख चारो तरफसे अस्थियों द्वारा रक्षित है। इसीको "चक्षुकोटर" कहते हैं। आँख चारो ओर एक चर्बीकेसे पदार्थसे ढकी होती है, जिससे उसे किसी प्रकारका आघात नहीं पहुँच सकता। नेत्रके चारों ओर छः मासपेशियाँ लगी हैं इन्हींके आकुञ्चन और प्रसारणसे हम मस्तक घुमाकर ऊपर नीचे

इधर-उधर जिधर चाहें देख सकते हैं। आँख बन्द करनेकी आवश्य-कता हो, तो हम लोग ऊपर नीचेके पलक बन्द कर सकते हैं। पलकोंके ऊपर जो सूक्ष्म-सूक्ष्म रोम हैं, उनसे आँखमें धूल मिट्टी आदि पदार्थ नहीं जा सकते। ऊपरके पलकके नीचे एक पानी निकलने का यन्त्र है। इसको अश्रुग्रन्थि (Tear gland टीयर ग्लाण्ड) कहते हैं। इससे थोड़ा-थोड़ा जल निकलकर, आँखका सन्मुख भाग साफ रहता है। इस यन्त्रसे नाकके भीतर तक एक छोटी नाली है। जब हमलोग दुःखी होते हैं या रुदन करते हैं, तब इस अश्रुग्रन्थि-यन्त्र से आँसू निकलते हैं, जिससे कुछ पानी नाकके भीतर भी आता है।

इस लेखमें आँखके विषयमे बहुत थोडा हाल लिखा गया है ; किन्तु जितना लिखा है, उतना सबको ध्यानमें रखना चाहिते। इस बहुत ही आवश्यकीय इन्द्रियमे किसी प्रकार अनिष्ट होने देना उचित नहीं। आवश्यकतासे अधिक प्रकाशमें व मन्द दीपकके उजालेमें पढ़ना अच्छा नहीं। पढ़नेके समय मस्तक ऊपरको उठाये रखना चाहिये। टेबुलपर झुककर पढ़ना कदापि उचित नहीं। इससे हमारी आँखोंको नुक़सान होता है। ज़रूरत होनेसे पुस्तकको सुविधाके अनुसार आँखोंके पास रख सकते हैं। बहुतोंको सोकर पढ़नेका अभ्यास होता है, किन्तु इससे भी आँखोंको हानि हो सकती हैं। समाचार-पत्र या महीन अक्षरोंकी पुस्तकोंके पढनेसे चक्षुओंपर अनावश्यक जोर पडकर क्रमशः नेत्रोंकी शक्ति घटती जाती है।

आँखें किसी कारणसे मसल जाँय या दुःखित हों, तो उन्हें न छूकर, जहाँतक बन सके ढके रखना चाहिये। इसी तरह जलन हो तो शुद्ध उष्णजलसे धोना उचित है। शीतल और अशुद्ध जलसे या दूधसे कभी न धोना चाहिए। अच्छे चिकित्सकके पाससे आँख धोनेकी दवा या व्यवस्था लेनी आवश्यक है। नेत्र बहुत अमूल्य अवयव हैं।

इनका किञ्चित् मात्र अनिष्ट होनेसे उसी समय उसके प्रतिकारका उद्योग करना चाहिए।

हमारे शिक्षित बालक-बालिकाओंमें बहुतोंके नेत्रोंमें शक्तिकी कमी देखनेमें आती है। किसी-किसीमें तो आजन्म दृष्टिशक्तिकी हीनता दीख पड़ती है। पढ़नेके समय पुस्तक आँखके बहुत नजदीक लाये बिना ठीक दिखाई नहीं देता, दूरकी चीज़ साफ-साफ नजर नहीं पड़ती, इसको मायोपिक (myopic) कहते हैं। किसी बालककी नेत्रशक्ति कम हो, तो उसके अभिभावकगणको उपेक्षा न करनी चाहिये। तत्काल डाक्टरको दिखानेसे, चश्मा आदिसे सहजमें आँख अच्छी हो सकती है। ध्यानमें रखना चाहिये, कि इन सब बातोंकी अवहेलना करनेसे, नेत्रोंका अस्वाभाविक परिचालन होनेसे, विशेष क्षति हो सकती है। आँखोंके बहुतसे संक्रामक रोग हैं। इस लिये घरमें एकको आँखमें दर्द हो, तो सबको सावधान रहना चाहिये। अशुद्ध हाथ कभी भी आँखोंमें न लगावें। दूसरे लोग जिस गमछेको काममें लावें या जिस जलपात्रसे मुंह धोवें, उसको अपने काममें लाना उचित नहीं है।

("स्वास्थ्य समाचार")

अतिसारगजकेशरी चूर्ण।

इस चूर्णके सेवन करनेसे आँव-खूनके दस्त, पतले दस्त यानी हर तरहका घोर अतिसार भी बातकी बातमें आराम हो जाता है। आजमूदा दवा है। हर गृहस्थको एक शीशी पास रखनी चाहिये, क्योंकि समय पर एक रुपयेमें वही काम हो सकता है, जो डाक्टरको बीस-पच्चीस रुपये देनेसे हो सकता है। दाम १ शीशीका १)।

कर्ण-रोग वर्णन ।

उनतालीसवाँ अध्याय

कर्णशूलके लक्षण ।

कुपित हुई "वायु" जब दोषोंसे घिर कर कानोंमें उल्टी चालसे घमती है, तब कानोंमें अत्यन्त शूल चलता है। उसे "कर्णशूल" कहते हैं। यह बड़ी मुश्किलसे आराम होता है।

नोट—कानकी हवाके चारों ओर कानमें घूमनेसे बड़े ज़ोरका दर्द होता है और उसके साथ जो दोष होता है, उसी दोषके लक्षण प्रकाशित होते हैं। कानकी इस पीड़ाको "कर्णशूल" कहते हैं।

कर्णनादके लक्षण ।

वायु कानके छेदमें स्थित होकर तरह-तरहकी भेरी, मृदंग और और शंख वग़ैरःकीसी आवाज़ें सुनाती है। इस रोगको "कर्णनाद" कहते हैं। मतलब यह है कि, जब कानमें भेरी, मृदंग और शंख वग़ैरःकीसी नाना प्रकारकी आवाज़ें सुनाई देती हैं, तब "कर्णनाद" होना कहते हैं।

बाधिर्य या बहरेपनके लक्षण ।

केवल "वायु" या "वायु और कफ" जब शब्द बहानेवाली नाड़ि-

योंको रोक देते हैं, तब "बाधिर्य या बहरापन" होता है। इस रोगके होनेसे मनुष्यकी सुननेकी शक्ति मारी जाती है—वह बहरा हो जाता है।

खुलासा—शब्द-वहा स्रोतों या नाड़ियोंमें जब "वायु या वायु और कफ" घुस जाते है और उनकी राहें रोक देते हैं, तब मनुष्य बहरा हो जाता है।

कर्णक्ष्वेणके लक्षण।

पित्त आदिके साथ वायु कानमें घुस कर बंसीकीसी आवाज़ पैदा करती है, उसे ही "कर्णक्ष्वेण" कहते हैं।

नोट—कानमें बांसुरीकीसी आवाज सुनाई देनेको "कर्णक्ष्वेण" कहते हैं।

कर्णस्रावके लक्षण।

सिरमें चोट लगनेसे या जलमें ग़ोता मार कर नहानेसे या कानमें विद्रधि-फोड़ेके पकनेसे—वायु कुपित होकर, कानोंसे राध, रसी या पानीसा बहाती है। इसे ही "कर्णस्राव" या कान बहना कहते हैं।

खुलासा—सिरमें चोट लगने, जलमें गोता मारने या कानमें फोड़ा पक जानेसे कानमें पीप, रसी या पानी बहने लगता है, इसीको "कर्णस्राव" कहते हैं।

कर्ण-कण्डूके लक्षण।

कफ-मिली वायु कानमें खुजली चलाती है। उस कानकी खुजली को "कर्ण-कण्डू" कहते हैं।

नोट—कर्णकण्डू रोग होनेसे कानमें सदा खुजली चला करती है।

कर्णगूथके लक्षण।

पित्तकी गरमीसे कानका कफ सूखकर, मैलके रूपमें बदल जाता है। इसे "कर्णगूथ" कहते हैं।

कर्ण प्रतिनाहके लक्षण।

वही कर्णगूथ या कानका मैल—तेल वगैरः चिकनी चीज़ कानमें डालनेसे—पतला होकर, मुँह या नाकसे निकलने लगता है, तब "कर्ण-प्रतिनाह" कहते हैं। यह अर्द्धावभेदक या आधासीसीका रोग पैदा करता है।

कृमिकर्णके लक्षण।

कानमें मांस और खून आदिके सड़नेसे और कानमें मक्खीके बैठनेसे कीड़े पड़ जाते हैं। कानमें कीड़े पड़नेके रोगको "कृमि कर्ण" कहते हैं।

पूतिकर्णके लक्षण।

चाहे जिस कारणसे, कानसे दुर्गन्ध और पीप आदि निकलनेको "पूतिकर्ण" कहते हैं। मतलब यह है, इस रोगके होनेसे कानसे बदबूदार राध बहने लगती है।

कर्णपाकके लक्षण।

पित्तके कुपित होनेसे या कानके पकनेसे या कानमें पानी भर-जानेसे "कर्णपाक" रोग होता है। इस रोगमें कान बहता और गीला रहता है।

कानमें पतंग आदि घुसनेके लक्षण।

पतंग, कनखजूरा, कनसलाई वग़ैरःके कानमें घुस जानेसे बेचैनी, बेकली और पीड़ा होती है। जब कानमें घुसनेवाला जीव कानके भीतर कुलमुलाता या चलता है, तब बड़ी भयानक पीड़ा होती है। जब वह चलनेसे रुक जाता है, तब पीड़ा भी कम हो जाती है।

द्विविध कर्ण-विद्रधिके लक्षण।

घाव हो जाने या चोट लग जानेसे कानमें विद्रधि—फोड़ा हो

जाता है; उसी तरह वातादि दोषोंसे दूसरी तरहकी विद्रधि हो जाती है, तब उसमेंसे लाल, पीला और नीला मवाद निकलता है। उसमें चीरने और चूसनेके जैसी पीड़ा होती है, धूआँसा निकलना और जलन होती है।

कर्णशोथ आदिके लक्षण।

कर्णशोथ, कर्ण-अर्बुद और कर्ण-अर्श—इनके लक्षण शोथ—सूजन, अर्बुद—गाँठ और अर्श—मस्सेके लक्षणोंके समान होते हैं।

वातज कर्णरोगके लक्षण।

चरकने चार तरहके कर्ण रोग कहे हैं। उनमेंसे वातज कर्णरोग में आवाज होती है, वेदना होती है, कानका मैल सूख जाता है, कान थोड़ा-थोड़ा बहता है और सुनाई नहीं देता।

पित्तज कर्णरोगके लक्षण।

पित्तज कर्ण रोगमें लाल सूजन होती है, जलन होती है, कान फटा सा हो जा ा है और उसमेंसे पीला मवाद निकलता है।

कफज कर्णरोगके लक्षण।

इस कर्ण रोगके होनेसे विपरीत सुनाई पड़ता है; यानी कहा कुछ जाता है और सुनाई कुछ देता है; कुछ-कुछ खुजली होती है; सख्त सूजन होती है; सफेद और चिकनी राध निकलती है एवं थोड़ी पीडा होती है।

सन्निपातज कर्णरोगके लक्षण।

त्रिदोषजमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं, सब तरहका मवाद बहता है अथवा जौनसा दोष जियादा होता है, उसी दोषके अनुसार उसी रंगका मवाद निकलता है

परिपोटकके लक्षण।

बहुत समय तक कानोंमें कोई भारी गहना पहने रहनेसे अथवा और कोई चीज़ कानमें डालकर ऐसे ही छोड़ देनेसे, कोमलताके कारण, उसमे यकायक अत्यन्त सूजन आ जाती है, दर्द होता है, और वह किंचित फटासा हो जाता है। कलाई लिए लाल और जकडी सी जो सूजन होती है, उसे "परिपोटक" कहते हैं। यह रोग "वायु"से होता है।

उत्पातके लक्षण।

कानोंमें भारी ज़ेवर पहननेसे या किसी तरहकी चोट लगनेसे अथवा कानके रगड खानेसे "रक्तपित्त" कुपित हो जाते हैं। वे कानकी पालीमे हरी, नीली या लाल रंगकी सूजन पैदा करते हैं। उसमे जलन और पीडा होती है। उसे ही "उत्पात" कहते हैं।

उन्मन्थके लक्षण।

कानको जबर्दस्ती बढ़ानेसे कानकी पालीमें "वायु"का कोप होता है। वह "वायु" कफकी मददसे स्तब्धतायुक्त, थोड़े दर्दवाली और खुजलीयुक्त सूजन पैदा करती है। उस सूजनको "उन्मन्थ" कहते हैं। उन्मन्थ रोग "कफ और वायु"के कोपसे होता है।

दुःखवर्द्धनके लक्षण।

बेक़ायदे छिदे हुए कानको बेक़ायदे बढ़ानेसे एक प्रकारकी सूजन आ जाती है। उसमें खुजली चलती है, जलन होती है, दर्द होता है और वह पक भी जाती है। उसे "दुःखवर्द्धन" कहते हैं। दुःखवर्द्धन तीनों दोषोंसे होता है।

परिलेहीके लक्षण।

कफ, रुधिर और कीड़े कुपित होकर फैलती हुई खुजली और दाहयुक्त सरसों-जैसी फुन्सियाँ पैदा करते हैं। यह रोग चारो

तरफ फैलता-फैलता कानके छेद और कानकी पाली या लोरका मांस-रहित कर डालता है। इसे "परिलेही" कहते हैं। यह रोग कफ, रुधिर और कृमि—इनके कोपसे होता है।

कर्णरोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) कर्णशूल, कर्णनाद, बाधिर्य्य-बहरापन और कर्णक्ष्वेण—इन चारों कर्णरोगोंकी एकसी ही औषधि करनी चाहिये।

(२) कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्ण—इन सबकी समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) कर्णविद्रधि रोगोंमें, विद्रधिमें कही हुई साधारण चिकित्सा करनी चाहिये।

(४) कर्णपाककी चिकित्सा क्षत और विसर्पके समान करनी चाहिये।

(५) कानकी पाली सूखी जाती हो, तो वातज रोगोंके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) बालक और बूढ़ेकी बहुत दिन की पैदा हुई बधिरता या बहरेपनका इलाज न करना चाहिये।

(७) कर्णकण्डू रोग या कानकी खुजलीमें स्नेह, स्वेद, वमन, धूमपान, शिरोविरेचन और समस्त कफनाशक विधि करनी चाहिये।

(८) कर्णगूथ रोग या कानमें मैल होनेकी हालतमें, पहले कानमे तेल डालना चाहिये। फिर शोधनेवाली दवा डालकर सलाईसे मैल निकाल देना चाहिये।

(९) कलिहारी, डुलडुल और त्रिकुटाको एकत्र पीसकर और

कपड़ेमे रस निचोड़ कर कानमे भरनेसे कानमें घुसी हुई जौंक, क्रमि, कीट, चींटी, कनसलाई, कनखजूरा और मस्तकके कीड़े गिर जाते हैं। यह उपाय इस कामके लिए सर्व्वोत्तम है। याद रखो।

(१०) क्रमि-कर्ण या कानके कीड़े नष्ट करनेको क्रमिनाशक चिकित्सा करनी चाहिये। बैंगनका धूआ कानमें पहुचाना या सरसोंका तेल कानमें डालना—इसमें परम हितकर है।

(११) कानमें तेल भरनेको "कर्ण पूरण" कहते हैं। कानमें तेल भर कर, कानको तब तक उसी तरह रखा रहने देना चाहिये जबतक दर्द आराम न हो जाय या १०० मात्रा काल न हो जाय। हाथको घुमाकर, दाहनी जाँघ पर फेर कर, चुटकी बजानेमें जितना समय लगता है अथवा आँख खोलकर बन्द करनेमें जितना समय लगता है, उतने समयको "एक मात्रा" कहते हैं।

(१२) वात रोगमें जो चिकित्सा कही है, वही इस कर्ण रोगमें भी करनी चाहिये। इस रोगमें शीतल जलसे नहाना, शीतल जल पीना और मैथुन कर्म करना त्याग देना चाहिये।

(१३) पित्तज कर्ण रोगमें मिश्री-मिले घी और चिकने पदार्थों का विरेचन देना चाहिये। दाख और मुलेठी दूधमें औटाकर दूध पिलाना चाहिये। रक्तज कर्ण रोगमें पित्तजके समान इलाज करना चाहिये तथा फस्द खुलवानी चाहिये। कफज कर्ण रोगमें पीपलोंके कल्कके साथ पकाये हुए घीको दूधमे मिलाकर गरगरे करने चाहियें, स्वेद देना चाहिये और कफनाशक धूप देनी चाहिये। कफज कर्ण रोगमें पहले वमनादिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये।

(१४) कानका बहरापन नाश करनेके लिए "विल्व तैल" और "अपामार्ग तैल" उत्तम हैं। कानका दर्द नाश करनेके लिए "एरण्डादि तैल" और "विष गर्भ तैल" उत्तम हैं। पूतिकर्ण या कानका बदबूदार मवाद दूर करनेमें "शम्बूक तैल" (घोंघेकातेल) और "गंधकाद्य तैल"

उत्तम हैं। कानकी पाली पुष्ट करनेके लिए शतावरी तेल उत्तम है।

(१५) नीचे हम चन्द उपाय कानोंकी रक्षाके सम्बन्धमें लिखते हैं, पाठकोंको उन पर ध्यान रखना चाहिये।

(क) दाँतका दर्द नाश करनेके लिए कानमें कोई दवा मत डालो।

(ख) कानमें पीप वग़ैरः बहती हो, तो रूई लगाकर कान बन्द मत करो।

(ग) कानकी भीतरी नलीमें कभी पुल्टिस मत बाँधो।

(घ) कानमें तेल पानी वगेरः कोई चीज़ बिना गरम किये मत डालो।

(ङ) कानकी पीप धोनेको सिवाय गरम जलके और कोई चीज़ मत डालो।

(च) बालकके कानपर कभी तमाचा मत मारो। इससे फौरन कानका पर्दा खराब हो जाता है।

(छ) अगर बहरापन हो, तो मस्तकके ऊपरके बाल मत कटाओ।

(ज) कानमें खुजली हो तो सिर्फ अङ्गुली डालकर कान खुजाओ; सींक, सलाई या तिनके से कान मत खुजाओ।

(झ) पाँवोंको कभी भीगे हुए या शीतल मत रखो, पीठके बाँसेको ठण्डी और खुली हवामें खोलकर न बैठो। इन कामोंसे सुननेकी ताक़त कम हो जाती है।

(ञ) कानमें कोई जीव गिर जाय, तो कानमें थोडा गरम पानी डालो। इससे कानका कीडा ऊपर आ जाता है; पीछे रूईकी फुरेरी से उसे निकाल दो। तम्बाकू पीकर उसका धूआँ कानमें फूंकनेसे भी जीव मर जाता है।

(ट) कानमें बटन या कौड़ी वग़ैरः चली जाय, तो किसी डाक्टरसे निकलवा दो, खुद कान ख़राब मत करो।

कर्णरोग-चिकित्सा।

नोट—कर्णशूल, कर्णनाद, बाधिर्य्य और कर्णक्ष्वेड़—इन चारों कानके रोगोंका इलाज एकसाही किया जाता है।

(१) कर्णशूल रोगीको चिकने और वातनाशक पदार्थोंके द्वारा जुलाब लेना चाहिये और भोजनके बाद घृत-पान और वस्तिकर्म करना चाहिये।

(२) सुहाते-सुहाते गरम दूधमें "घी" मिलाकर तीन दिन तक पीनेसे कर्णशूल—कानका दर्द नाश हो जाता है।

(३) पीपलके पत्तोंको सिलपर पीसकर और उस लुगदीमे तेल मिलाकर आगपर रखो। आग पर रखनेसे जो तेल निकले, उसे कान में डालनेसे कर्णशूल या कानका दर्द आराम हो जाता है।

(४) अदरख, मुलेठी, सेंधानोन और तेल—इनको एकत्र पकाओ और तेलको छान लो। इस तेलको सुहाता-सुहाता कानमें डालनेसे कर्णशूल या कानका दर्द आराम हो जाता है।

(५) कैथ, बिजौरा नीबू, काँजी और अदरख—इनका रस निकाल कर और ज़रा गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(६) लहसन, अदरख, लाल सहँजनेकी जड और केलेकी जड़—इन सबका स्वरस निकाल कर और जरा गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(७) काँजीको जरा गरम करके, उसमें समन्दर फैन या सीपका चूर्ण मिलाकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(८) आकके अकुरोंको काँजीके साथ पीस कर, उसमें तेल और सधानोन मिलाकर, सेंहुडके डण्डेके भीतर भरकर, कपरौटी करो और पुटपाककी रीतिसे पकाओ। पकजाने पर, उसमेंसे रस निचोड़कर सुहाता-सुहाता कानमे डालो। इससे कानका दर्द मिट जाता है।

(९) आकके पीले-पीले पत्तोंपर घी चुपड़कर, उनको दीपक की लौ या आगपर सेको। फिर उन्हें पीसकर रस निचोड़ लो। इस रसके सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालनेसे कानका दर्द आनन-फानन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) बृहत्पंचमूलकी आठ अगुल लम्बी लकडीको कपडेसे लपेटकर बत्तीसी बना लो। फिर इसे तेलमें तर करके चिरागसे जलाओ। नीचे एक प्याला रख दो। जलती बत्तीको चिमटेसे पकडे रहो। जो तेल टपक कर गिरे, उसे उठाकर रख लो। इस तेलको सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालनेसे कानका दर्द फौरनसे पहले आराम हो जाता है। इसको "दीपिका तेल" कहते हैं।

(११) देवदारु, कूट और धूप सरल—इन तीनोंको ऊपरकी तरहही कपडेसे लपेटकर बत्तीसी कर लो। फिर तेलमें भिगोकर दीपक से जलाओ। जो तेल टपके, उसे सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालो। इस तेलसे भी कानका दर्द फौरन आराम हो जाता है।

(१२) बकरीके दूधमें सैंधानोन मिलाकर और ज़रा गरम करके कानमें डालनेसे तत्काल घोर शूल भी आराम हो जाता है। इससे कानमें आवाज होना और मवाद बहना भी बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) रेंडीके पत्तोंको पुटपाककी विधिसे पका कर उनका रस निचोड़ लो। इस रसमें बराबरका "अदरखका रस और शहद" मिला दो। फिर इस मिले हुए मसालेको तेलमें मिलाकर पकाओ। इस तेलमें जरासा सैंधानोन पीसकर मिलादो और सुहाता-सुहाता कानमें डालो। इससे कानका दर्द फौरन आराम हो जाता है।

(१४) बाँसकी छाल सिलपर पीस लो। फिर इसमें लुगदी से चौगुना तेल और तेलसे चौगुना भेड़ या बकरीका पेशाव मिला दो और आग पर पकाओ। जव तेल मात्र रहजाय छान लो। इस तेलके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१५) अदरखका रस ६ माशे, शहत ३ माशे, सैंधानोन १ रत्ती और तिलका तेल ३ माशे—इन सबको मिलाकर कानमें भरनेसे कर्णमूल, कर्णनाद, वहरापन और कर्णक्ष्वेण—कानमें वासरीकी सी आवाज होना—ये रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६) लहसन, अदरख, सहँजनेकी छाल और करेला—इनमेंसे समय पर जो भी मिल जाय, उसी एकका रस निकाल कर और गरम करके, सुहाता-सुहाता कानमें डालनेसे कानका दर्द नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) कर्णनाद, कर्णक्ष्वेण और वहरेपनके रोगमें सरसोंका तेल या वात रोगोंमें लिखा हुआ "महामापादि तैल".या और कोई वात-नाशक तेल कानमें डालनेसे अवश्य लाभ होता है।

(१८) सोंठका काढ़ा बनाकर और उसमें "गुड़" मिलाकर नास लेनेसे कर्णनाद, कर्णक्ष्वेण और वहरेपनमें लाभ होता है। एक सालके भीतरके वहरेपन पर यह नुसख़ा खास तौरसे अच्छा है। परीक्षित है।

(१६) अदरखके रस या लहसनके रसमें सैंधानोन मिला कर कानमें डालनेसे कानका दर्द फौरन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) केलेका रस या काँजी इनमेंसे कोई एक गरम करके कान में डालनेसे कानका दर्द आदि कानके रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) गोमूत्र गरम करके कानमें भरनेसे कानका दर्द अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२२) राई, पीपल, हींग, सौंफ और मूलीको पानीके साथ

सिलपर पीस लो। लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुनी काँजी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलको कानमें डालनेसे बहरापन, कर्णनाद और कानका दर्द ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२४) सोंठ, शहद और सैंधानोन—इनको समान-समान एक-एक तोले लेकर पीस लो। फिर बारह तोले तेल और ४८ तोले पानी तथा इस लुगदीको मिलाकर पकाओ। तेलमात्र रहने पर छान लो। इस तेलको सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालनेसे कानकी घोर पीड़ा भी नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२५) काकजंघाका रस कानमें टपकानेसे कर्णनाद या बहरापन आराम होता है।

(२६) सफेद आककी जड़को सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर इस लुगदीको, इस लुगदीसे चौगुने तेलको और तेलसे चौगुने पानीको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलके कानमें डालनेसे घोर कानका दर्द भी मिट जाता है। परीक्षित है।

(२७) बेलगिरीको गोमूत्रमें पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना दूध और पानी मिलाकर तेल पकालो। इस तेलकी ५।६ बूँद रोज़ कानोंमें टपकानेसे बहरापन जाता रहता है।

(२८) हींग, सैंधानोन और सोंठको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीको और इससे चौगुने तेलको तथा तेलसे चौगुने पानीको मिलाकर आगपर पका लो। इस तेलको कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(२९) चिरचिरेकी भस्मके पानीमें चिरचिरेकी लुगदी और तेल मिलाकर पकालो। इस तेलसे थोड़े दिनोंका बहरापन और कर्णनाद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—चिरचिरेकी सिलपर पिसी लुगदी एक छटाँक, तेल पावभर और चिरचिरे

की भस्म घोला हुआ पानी एक सेर लो और तेल पकालो। इस तेलमें झाग बहुत आते हैं, अत चतुराईसे तेल पकाओ।

(३१) तुलसीके पत्ते और खट्टे नीबूको एक साथ पीसकर रस निकालो। फिर उसे गरम करके, उसमें ज़रासा "दूध" मिला दो और कानमें डालो। इससे कानका दर्द चला जाता है।

(३२) आमला १ भाग और हल्दी २ भाग, पानीमें पीसकर लेप करनेसे कर्ण शोथ या कानकी सूजन आराम हो जाती है।

(३३) बेलके फलका गूदा गोमूत्रके साथ पीस लो। फिर जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना तिलीका तेल, तेलसे चौगुना बकरीका मूत्र और उतना ही पानी तथा लुगदीको आगपर चढ़ाकर तेल पकालो। इस तेलका नाम "बिल्व तेल" है। इस तेलको कान में डालनेसे कानका बहरापन, कानमें आवाज होना और कानका दर्द तथा कानके कीड़े ये सब नष्ट हो जाते हैं। यह तेल ख़ास करके "बहरेपन"को आराम करता है।

(३४) बिजौरे नीबूके रसमें थोड़ासा "सज्जीका चूर्ण" मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द, कानकी जलन और कानका बहना फौरन ही आराम हो जाता है।

(३५) चोवाको रूईकी फुरेरीमें लगाकर कानमें फेरनेसे कानकी फुन्सी और घोर-से-घोर कानका दर्द फेरनेके साथ ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—सुदर्शनके पत्तेपर तेल लगाकर और कुछ गरम करके रस निचोड़ लो। इसमेंसे सुहाता सुहाता रस कानमें डालनेसे कानका दर्द मिट जाता है। यह हमारा नहीं और एक सज्जनका आज़मूदा नुसख़ा है।

(३६) सफेद कत्था कपड़ेमें छानकर और गरम पानीमें मिलाकर पिचकारी द्वारा कानमें डालने और पीछे कान धो लेनेसे कुछ दिनमें बहरापन जाता रहता है।

(३७) सम्हालूके पत्तोंका स्वरस जरा गरम कर लो। फिर

उसमें एक रत्ती "अफीम" मिलाकर कानमें टपकाओ। इससे कानकी पीड़ा तत्काल नाश हो जाती है।

(३८) कानमें गुले रौग़न डालनेसे कानकी खुश्की और दर्द आराम हो जाते हैं। परीक्षा परीक्षित है।

(३९) देवदारू,वच, सोंठ, सेंधानोन और सौंफ—इनको बराबर-बराबर लेकर बकरीके पेशाबमें पकाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द दवा डालते ही आराम हो जाता है। यह नुसखा वैद्य गोपाल-सिंह जी मिश्र महोदय सम्भलवालोंका परीक्षित है।

(४०) अदरखका रस गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(४१) न्यूयार्कके एक मशहूर डाक्टर लिखते हैं:—अगर कानका पर्दा फटा न हो, तो एण्ट्रोपाइन सल्फ चौथाई ग्रेन और कोकेन हाईड्रोक्लोर फिनोलिस ५ ग्रेन मिलाकर कानमें डालनेसे कानकी सब तरहकी पीड़ाएँ नाश हो जाती हैं।

(४२) तुलसीके पत्तोंको चिकदकर रस निकालो और उस रस की ५।७ बूँदें कानमें टपकाओ। इससे कानका दर्द आराम हो जायगा।

(४३) किंजल्कके पत्तोंके रसमें भैंसका घी और सेंधानोन मिला-कर दिनमें चार पाँच बार कानमें डालनेसे कर्णमूल आराम हो जाती है।

कर्णरोग नाशक उत्तमोत्तम योग ।

श्योनाक तेल ।

श्योनाककी जडको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। लुगदी से चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर यथाविधि तेल पकाओ। इस तेलको कानमें भरनेसे त्रिदोषज कान का दर्द भी आराम हो जाता है।

हिंग्वादि तैल ।

हींग, तुम्बरु, सोंठ और सरसों—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। इस लुगदीके वज़नसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर तेल पकालो। इस तेलके कानमें भरनेसे कानका दर्द मिट जाता है।

देवदार्वादि तैल ।

देवदारु, बच, सोंठ, शतावर कूट और सैंधानोन—बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र लेकर तथा लुगदीको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

एरण्डादि तैल ।

अरण्डीकी जड, सहंजना, वरना और मूली—इन सबका एक सेर स्वरस या काढ़ा तैयार कर लो। दो सेर दूध लो। मुलेठी और

क्षारको दो दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। एक पाव तेल ले लो। अब सबको मिलाकर तेल पकालो। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय छान लो। इस तेलको नस्य, मालिश और कर्णपूरणके काममें लेनेसे यानी कानमें भरनेसे कर्णनाद, बहरापन और कानका दर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

स्वर्जिका तैल।

सज्जी, सूखी मूली, हींग, पीपर, सोंठ और सौंफ—इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुनी शुक्त नामक काँजी तथा लुगदीको आगपर चढ़ा कर तेल पकालो। इस तेलको कानमें डालनेसे कर्णनाद, कानका दर्द, बहरापन और कानसे मवाद आना ये सब आराम हो जाते हैं।

बिल्व तैल।

इस तेलको कानमें डालनेसे बहरापन आराम हो जाता है। बनानेकी विधि पृष्ठ ११३३ में देखिये।

अपामार्गक्षार तैल।

इस तेलके कानमें डालनेसे कर्णनाद, कानका दर्द और थोड़े दिनका बहरापन नाश हो जाता है। विधि पृष्ठ ११३२ में देखिये। इस तेलकी हमने हजारों बार परीक्षाकी है।

नोट—पानका बीड़ा जिसमें सुपारी, कत्था, चूना और तमाखू भी हो, पानीके साथ सिलपर पीसकर और पानीमें घोलकर छान लो और आग पर पकाओ। फिर सुहाता-सुहाता कानमें भर दो। फिर एक दो मिनटमें ही निकाल कर कानको खूब पोंछ लो। इसके बाद ५ बूँद "अपामार्गक्षार तेल" कानमें डाल दो। रोगीको फौरन नींद आ जायगी और दर्द शान्त हो जायगा।

अगर कान बहता हो, रेसो आती हो, तो जरासी फिटकरी पानीमें घोलकर, पिचकारीमें भर कर कानमें पहुँचाओ। चार पाँच पिचकारी मार कर कानको

पोंछ लो और "अपामार्गक्षार तेल" ५ बूँद कानमें डाल दो। कुछ दिन इस तरह करनेसे कानका बहना मिट जायगा। अगर दश दिनमें इस तरह लाभ न दीखे, तो फिटकरीको आग पर फुला कर पीस लो। फिर उसे कागजकी भोंगलीमें भर कर बहनेवाले कानमें फूंको। परमात्मा चाहेगा तो पुराने-से-पुराना कान बहनेका रोग आराम हो जायगा। कान बहना बन्द होनेपर ५।६ दिन फिर केवल "अपामार्गक्षार तेल" पांच बूँद कानमें टपकाना। कान एकदम निर्दोष हो जायगा।

भैरव रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, मीठा विष, सुहागेकी खील, कौड़ीकी भस्म और गोल मिर्चोंका चूर्ण—सबको समान-समान ले लो। पहले गंधक और पारेको अलग खरल कर लो। फिर उस कज्जलीमें बाक़ी दवाएं मिला दो और अदरखका रस दे-देकर दिन-भर खरल करो। घुट जानेपर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली निगलकर, ऊपरसे अदरखका रस पीनेसे कर्णशूल, कर्णनाद, बहरापन और मन्दाग्नि रोग नाश हो जाते हैं।

विषगर्भ तैल।

हरताल ८ तोले, सैंधानोन ४ तोले और मीठा विष २ तोले—इनको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

आकके पत्तोंका स्वरस १सेर, सम्हालूके पत्तोंका स्वरस १ सेर, अमलताशादिका स्वरस १ सेर, सूर्यावर्त्तका रस १ सेर, चीतेका स्वरस १ सेर, थूहरका दूध १ सेर, हुलहुलका रस १ सेर और तिलका तेल १ सेर—इन सबको और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ, जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके कानमें डालनेसे घोर कर्णशूल यानी भयंकर कानका दर्द भी आराम हो जाता है।

कर्णस्राव पूतिकर्ण और कृमिकर्णादिकी चिकित्सा।

नोट—कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्णमें एक समान इलाज करना चाहिये। दोषोंका बलाबल विचारकर शिरो विरेचन, धूप, कर्णपूरण, प्रमार्जन और धावन—ये सब काम कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्णमें करने चाहियें। अमलतास वगैरःके जलसे अथवा तुलसी प्रभृतिके जलसे कानको धोना चाहिये। अथवा इन्हीं दवाओंको पीसकर कानमें भरना चाहिये।

(१) बिजौरे नीबूके रसमें "सज्जी खार" मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव—कान बहना, कानका दर्द और जलन—ये सब शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं, इसमें जरा भी शक नहीं। परीक्षित है।

(२) आमके, जामुनके, महुएके और बड़के छोटे-छोटे पत्तोंको समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी कर लो। अब इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी—इन सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण यानी कानसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

(३) चमेलीके पत्तोंका एक सेर स्वरस और पावभर तेल मिलाकर आगपर पकाओ। रस जलकर तेल मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तेलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण रोग यानी कानसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

(४) औरतके दूधमें रसौतको पीसकर उसमें "शहद" मिला दो और फिर कानमें डालो। इस उपायसे बहुत दिनोंसे बहता हुआ कान और पूतिकर्ण यानी कानमें फोडा वगैरः फूटनेसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

नोट—स्त्रीके दूध, घी और शहतमें "रसौत" पीसकर कानमें डालनेसे जल्दी लाभ होता है।

(६) सीपके जीवोंके मांसके साथ पकाया हुआ सरसोंका तेल कानमें डालनेसे कानका वहना तत्काल आराम हो जाता है।

(६) गंधक, मैनशिल और हल्दी—इन तीनोंको मिलाकर चार तोले लो और सिलपर पानीके साथ पीस लो। वत्तीस तोले धतूरेके पत्तोंका स्वरस और वत्तीस तोले सरसोंका तेल तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय; छान लो। इस तेलको कानमें डालनेसे बहुत दिनोंका बहता हुआ कान भी आराम हो जाता है।

(७) कानमें गूगलकी धूनी देनेसे कानकी दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है। इस कामके लिए गूगल सबसे उत्तम है।

(८) किंजल्कके नरम फल और छालका रस मिलाकर कानमें डालनेसे कान वहना आराम हो जाता है।

(६) कौरैयाकी छालका चूर्ण कपड़ेमें छानकर कानमें डालो और ऊपरसे "मख़मली" वनस्पतिके पत्तोंका रस कानमें निचोड़ो। इससे कान वहना आराम हो जाता है।

(१०) वड, गूलर, पाखर, पीपल और वेंतकी छालका चूर्ण, कैथका रस और शहद,—इन सबको मिलाकर कानमें डालनेसे पूतिकर्ण यानी कानसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

(११) वैंगनका धूआँ कानमें पहुंचानेसे कृमिकर्ण रोग यानी कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(१२) सरसोंका तेल कानमें डालनेसे भी कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(१३) गायके मूत्रमें पिसी हुई हरतालका रस कानमे डालनेसे कृमिकर्ण या कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

नोट—कृमिकर्ण रोग नाश करनेको कृमियोंका नाश करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये ।

(१२) हुलहुलके स्वरस, सम्हालूके स्वरस और कलिहारीकी जड़के रसमें "त्रिकुटेका चूर्ण" मिलाकर कानमें डालनेसे कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है ।

(१३) त्रिकुटेका चूर्ण कानमें डालनेसे कानके कीड़े मर जाते हैं ।

(१४) सिन्दुवारका रस कानमें भरनेसे कानके कीड़े मर जाते हैं ।

(१५) छै माशे रसौतको आधासेर गोमूत्र गर्मजलमें डालकर और घोलकर वस्त्रमें छान लो । इस जलसे पिचकारी द्वारा कानको धोओ । इससे पीप वगैर. धुलकर कान साफ हो जाता है ।

(१६) नीमके पत्तों को जलमें पका कर वस्त्रमें छान लो। फिर उस जलमें जरासा सेंधा नोन डाल कर, उसके द्वारा पिचकारी से कान धोनेसे विशेष फायदा होता है ।

(१७) खैर १ तोला, बबूल की छाल २ तोला और जामुनकी छाल २ तोला—एक सेर जलमें पकाओ, जब आध सेर जल बाक़ी रह जाय उतार कर छान लो। इसके द्वारा कान धोनेसे कानकी पीप दूर होती है ।

(१८) अगर कानमें व्रण हो तो धतूरेके पत्तोंका रस गरम करके कानके ऊपर लेप करो और नीमके पत्तोंका रस गरम करके कानके भीतर थोडा-थोडा २।३ बार डालो ।

(१९) पंचकषायके चूर्णमें "कैथका रस और शहद" मिलाकर कानमें भरनेसे कर्णस्राव—कान बहना बन्द हो जाता है ।

नोट—तेंदू, हरड, लोध, मजीठ और आमले इन पाचोंको "पञ्चकषाय" कहते । है

(२०) शाल वृक्षकी "छालका चूर्ण" बिजौरे नीबूके रसमें मिला

कर कानमें डालनेसे कर्णस्राव—कान बहना, कानका दर्द और कानकी जलन—ये सब आराम हो जाते हैं।

(२१) शाल वृक्षकी छालका चूर्ण "कपासके फलोंके" रसमें मिलाकर और ऊपरसे "शहद" डालकर कानमे छोड़नेसे कर्णस्राव रोग आराम हो जाता है।

(२२) हाथीको लीदसे पैदा हुए छत्रशाक (साँपकी छत्री) को पुटपाक-विधिसे पका कर और उसका रस निचोड़ कर, फिर उसमें "तेल और सैंधे नोनका चूर्ण" मिलाकर कानमें डालनेसे कर्ण-स्राव रोग आराम हो जाता है।

(२३) जामुन और आमके नये पत्ते, कैथ और कपासके ताज़ा फल—सबको समान-समान लेकर पीस-कूटकर रस निचोड़ लो। फिर उस रसमें "शहद" मिलाकर कानमें डालो। इससे कान बहना, कानमें कीड़े पड़ना वगैर. रोग आराम हो जाते हैं।

(२४) आगपर फुलाई हुई फिटकरीकी खीलोंको पीसकर और काग़ज़की भोंगलीमे भरकर कानमें फूंकनेसे पुराने-से-पुराना कर्ण-स्राव रोग नष्ट हो जाता है। कानका बहना बन्द करनेको यह सर्वोत्तम दवा है। तत्काल फायदा दिखाती है। परीक्षित है।

पूतिकर्णादि पर उत्तमोत्तम योग।

पञ्चवल्कल तैल।

बेलगिरी, गूलर, जामुन, कैथ और आम—इनकी छालोंको पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदी से चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर सबको मिलाकर आगपर पकाओ। इस

तेलके कानमें डालनेसे बहरापन, कर्णपाक—कानमें घाव होना या पकना और कर्णस्राव ये सब नाश हो जाते हैं ।

चतुष्पर्ण तैल ।

आम, जामुन, महुआ और बड़के नर्म-नर्म पत्ते बराबर-बराबर लेकर सिलपर पीस लो । फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर, सबको मिलाकर तेल पकालो । इस तेलको कानमें डालनेसे कर्णस्राव और कानकी बदबू नाश हो जाती है ।

चतुष्पल्लव तेल ।

बरनाकी छाल, कैथके पत्ते, आमके पत्ते और जामुनके पत्ते—इनको बराबर-बराबर लेकर सिलपर पीस लो । फिर लुगदीसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर और सबको मिलाकर तेल पकालो । इस तेलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण यानी कानसे बदबू आना बन्द हो जाता है ।

कुष्ठाद्य तैल ।

कूट, हींग, बच, देवदारु, सोवा, सोंठ और सैंधानोन—इनको तीन-तीन तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो । फिर तिलका तेल एक सेर और बकरीका मूत्र चार सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ । जब मूत्र जलकर तेल मात्र रह जाय, छान लो । इस तेलको कानमें डालनेसे पूति-कर्ण—कानसे बदबूदार मवाद निकलना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

शम्बूक तैल ।

घोंघेका मांस सरसोंके तेलमें औटाकर तेलको छानकर रखलो । इस तेलको कानमें डालने से कर्ण-नाड़ी शान्त हो जाती है ।

गन्धकाद्य तैल।

गन्धक, मैनसिल और हल्दी—तीनों मिलाकर चार तोले लो और सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर ३२ तोले सरसोंका तेल, ३२ तोले धतूरेका रस और ऊपरकी लुगदी सबको आगपर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, छान लो। यह तेल बहुत पुरानी कर्ण-नाड़ीको भी आराम करता है।

कानकी पालीके रोगोंकी चिकित्सा।

(१) कानकी पाली सूखी जाती हो, तो वातज रोगोंकी सी चिकित्सा करो। यत्नपूर्व्वक पाली को सेको और सेकनेके बाद "तिलका कल्क" लगाकर उसे बढ़ाओ।

(२) शतावर, असगन्ध, क्षीरकाकोली और रेंडीके बीज—इनको समान-समान लेकर सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी और लुगदी इन सबको मिलाकर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय उतार कर छान लो। इस तेलका नाम "शतावरी तैल" है। इस तेलको लगानेसे कानकी पाली सहजमें बढ़ जाती है।

(३) नयी मूसलीको पीसकर भैंसके नौनी घीमें मिला लो और सात दिन तक धानके ढेरमें गाढ़े रहो। फिर निकालकर पाली पर लगाओ। इसके लगानेसे पाली बढ़ जाती है।

(४) कलियारीकी लुगदी, शतावरकी लुगदी, गोहकी चरबी और कंकपक्षीकी चरबी—इनको समान-समान लेकर और इन सबके वज़नसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर सबको पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय छान लो। इस तेलके चुपड़नेसे

उन्मन्थ रोग यानी पालीकी खुजली, सूजन और पीड़ा आराम हो जाती है ।

(५) दुःखवर्द्धन रोग हुआ हो तो जामुनके, आमके और बेलके पत्तोंके काढ़ेसे उसे सींचो । फिर उसे अच्छी तरह तेलमें चिकना करो और जामुन, आम और बेलके पत्तोंका चूर्ण ही उस पर बुरको ।

(६) अगर परिलेही रोग हुआ हो यानी खुजली और जलन करनेवाली सरसोंके समान फुन्सियाँ हो गई हों, तो बारम्बार गोबर से सेक करो । फिर बकरीके मूत्रमें "कपूर" पीसकर लेप करो ।

नोट—कोई-कोई बकरीके मूत्र और दहीमें कपूरको पीसते हैं ।

(६) कालीसर, खिरेंटी, मुलेठी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, कमल, धान्याम्ल काँजी, मँजीठ और लोध—इनको बराबर-बराबर लेकर सिल पर पीस लो । फिर लुगदीसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो । इस तेलकी मालिशसे कर्ण उत्पात रोग नाश हो जाता है ।

कानके रोगोंपर हकीमी नुसखे ।

कानके घाव नाश करनेवाले नुसखे ।

(१) जब कानसे मैल निकलने लगे, जल्दी ही खुश्क औषधि सेवन न करनी चाहिये ; क्योंकि उससे पीड़ा बढ़ जाती है । सब से पहले किसी दवासे मैलको साफ करना चाहिये ; इसके बाद खुश्क दवा डालनी चाहिये । कानमें शहद टपकानेसे अथवा शहदमें भिगोई बत्ती कानमें रखनेसे कानका मैल निकल आता है और पीड़ा भी जाती रहती है ।

(२) नीमके पत्ते पानीमें औटाकर कानमें वफ़ारा लेनेसे भी कानका मैल निकल जाता है।

(३) प्याजका रस "मुर्ग़के अण्डेकी सफेदी"में मिलाकर कानमें टपकानेसे कानका घाव आराम हो जाता है।

(४) नीमके तेलमें "शहद" मिलाकर, फिर उसमें कपड़ेकी वत्ती तर करके कानमें रखनेसे कानके घाव आराम हो जाते हैं।

(५) वकरीका दूध कानमें टपकानेसे कानके घाव आराम हो जाते हैं।

(६) लड़केके पेशाबमें अनारकी छाल औटाक और छानकर कानमें टपकानेसे कानके घाव नष्ट हो जाते हैं।

(७) भुनी फिटकरी और मुरमकी वरावर-वरावर लेकर "शहद" में मिला लो। फिर उसमे वत्ती तर करके कानमें रखो। इससे भी कानके घाव मिट जाते हैं।

(८) समन्दरफेनका चूर्ण काग़ज़की भोंगली द्वारा कानमें फूँकनेसे कानके घाव आराम हो जाते हैं।

(९) घोडा वच पानीमें पीसकर, कुछ गरम रहते हुए कानमें टपकानेसे कानकी आलायश निकल जाती है।

(१०) कानका मैल साफ करके, पीली कौड़ीकी राख कानमें फूँको और ऊपरसे नींबूके रसकी कुछ वूँदें टपका दो। इससे कान का घाव आराम हो जायगा।

(११) लोध महीन पीसकर कानमें वुरकनेसे कानके घाव भर जाते हैं।

(१२) लाल सागका स्वरस कानमें टपकानेसे कानके कीडे नष्ट हो जाते और घाव भी भर जाता है।

(१३) एक जुगनू लाल रोग़नमें पीसकर कानमें टपकानेसे कानका घाव भर जाता है।

(१४) घोंघा लाकर सरसोंके तेलमें भून लो। फिर तेलको

छान लो। इस तेलके कानमें डालनेसे नासूर भी आराम हो जाता है।

(१५) अगर बालकके कानके पीछे घाव हो गया हो, तो तिलक लगानेकी रोलीको बालकके पेशाब या जलमें पीसकर घाव पर लगाओ, यद्यपि इससे कुछ जलन होगी, पर फायदा बहुत होगा।

(१६) पोदीनेके पत्तोंके अर्कमें शफ़नालू मिलाकर कानमें डालनेसे कानके कीड़े दूर हो जाते हैं।

कानकी सूजन नाश करनेवाले नुसखे।

नोट—कानके भीतरकी सूजन बहुत भयकर होती है। उस दशामें सरेरूकी फस्द खोलना उचित है।

(१) अगर कानके पीछे सूजन हो, तो मसी यानी चकसोनके पेड़की नई पत्तियां लाहौरी नमकके साथ पीस कर लेप करनेसे लाभ होता है।

(२) सुपारी, विषमारीकी जड़, करेलेके बीज, गेरू, काला ज़ीरा और कुचला पानीमें पीसकर और कुछ गरम करके लेप करनेसे कानके पीछेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३) लहसनकी जड़ पानीमें पीसकर और कुछ गरम करके कानके पीछेकी सूजनपर लगानेसे वह सूजन आराम हो जाती है।

(४) हुलहुलकी पत्तियाँ सिल पर पीस कर कपड़ेमें रस निचोड़ लो और कानमें चन्द बूँदें टपकाओ। इस तरह कई दिन तक हुलहुलकी पत्तियोंका रस कानमें डालनेसे सूजन अच्छी हो जाती और बह कर निकल जाती है।

(५) प्याज़का रस मेथी या अलसी या ईसबगोलके लुआबमें मिलाकर और आगपर पकाकर कानमें टपकानेसे कानकी सूजन बहकर निकल जाती और आराम हो जाता है।

(६) आमले १ भाग और हल्दी २ भाग पानीमें पीसकर लेप करनेसे कर्णशोथ या कानकी सूजन आराम हो जाती है।

कानके कीडे नाश करनेवाले नुसखे।

(१) एलुवा पानीमें पीसकर कानमें भर दो और देर तक भरा रहने दो। फिर कुछ देर बाद कानको इस तरह झुकाओ, कि पानी निकल जावे। इस तरह करनेसे गरमीकी वजहसे पैदा हुए कानके कीड़े मरकर निकल जाते हैं।

(२) मलीम नामक लकड़ीको महीन पीसकर कानमें डालनेसे कानके कोड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३) संभालूके पत्तोंका रस कानमें टपकानेसे कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४) हल्दीकी एक गाँठ,दस माशे शहद,चार तोले नीमके पत्तोंका रस और १ तोले सरसोंका तेल मिलाकर आग पर पकाओ। जब दवाएं जलकर तेल मात्र रह जाय, छान लो। इस तेलकी दो बूंद कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मर कर आनन्द हो जाता है।

(५) दो माशे तिलीका तेल कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मर जाते हैं और बाहरसे घुसा हुआ कीड़ा भी नष्ट हो जाता है।

(६) प्याजका रस कानमें टपकानेसे भी कानके कीड़े मर जाते हैं।

(७) तेज़ शराब कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता और मैल निकल जाता है।

(८) कानमें मच्छर वग़ैरः घुस जावे, तो कसौंदीके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ। परीक्षित है।

कानकी खुजली नाश करनेवाले नुसखे।

(१) तेल और सिरका मिलाकर औटाओ और छानकर क टपकाओ। इससे कानकी खुजली दूर हो जाती है।

(२) चमेलीके तेलमे थोड़ासा एलुआ खूब खरल करके और गरम करके कानमें टपकानेसे कानकी खुजली आराम हो जाती है ।

कानका पानी निकालनेके उपाय ।

(१) अगर कानमे पानी रह जावे, तो छींको और खाँसो और सिरको उस तरफ झुका रखो जिस तरफके कानमें पानी भरा हो अथवा तिलका तेल कुछ गरम करके कानमे टपकाओ या हथेली कानपर रखकर, एक पैरसे खड़े हो जाओ और जिस तरफके कानमें पानी हो उस तरफ सिरको झुका दो ।

ऊँचा सुननेके उपाय ।

नोट—अगर ऊंचा सुननेका रोग थोड़े दिनोंसे हो तो जुलाब दो । बहुत पुराना रोग नहीं जाता । जल्दी ही हुब्ब अयारजका जुलाब देकर अमाशयका मैल निकालो । इसके बाद कानमें दवा डालो ।

(१) मदारके पीले पत्ते जिनमें छेद न हों आगपर गरम करके रस निकालो और कानमे टपकाओ । इस तरह १५ दिन तक रस टपकानेसे कम सुननेमे लाभ होता है ।

(२) ऊँटका मूत्र गरम करके कानमें टपकानेसे बहरापन आराम हो जाता है ।

(३) काली कलोर गायका मूत्र सवा सेर मन्दी आगसे औटाओ, जब आठ या दस तोले रह जाय छानकर शीशीमें रख लो । इसमेंसे अढ़ाई बूँद रोज कानमें टपकानेसे बहरेपनमें लाभ हो जाता है ।

(४) प्याज़का रस कुछ गरम करके कानमें टपकानेसे ऊँचा सुनने, कान भिन-भिन करने, कानमें दर्द होने और कानके बहने वग़ैर:में अवश्य लाभ होता है ।

(५) हरी इन्द्रायणका फल तिलीके तेलमें औटाकर छान लो

और रख दो। इसमेंसे दो तीन बूँद तेल कानमे डालनेसे कानके बहरेपन और भरभराहटमें लाभ होता है।

(६) दो काली मिर्च पीसकर और कागज़की भोगलीमें रखकर हर दिन एक बार कानमें फूँको और चिल्लानेकी आवाज़ तथा नक्कारे नरसिंहे या तोपका शब्द कानमे पहुँचाओ। ये सब उपाय ऊँचा सुननेको श्रेष्ठ हैं।

(७) पपड़िया खैर सिरकेमें महीन पीसकर छान लो और कुछ गरम करके कानमे टपकाओ। इससे ऊँचे सुननेमें अवश्य लाभ होगा।

कानका दर्द नाश करनेवाले नुसखे।

नोट—जो शख्स कानके रोगोंमे बचा रहना चाहे, वह रातके समय सोते वक्त कानमें रूई रखकर सोवे। कानमें जो भी चीज टपकावे, गरम करके टपकावे।

(१) बकरीकी मैंगनी और अजवायन मनुष्यके मूत्रमें औटाकर बफारा लेनेसे सर्दीकी कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(२) नीमके पत्ते औटाकर कानमे बफारा लेनेसे कानका दर्द आराम हो जाता और घाव पीपसे साफ़ हो जाता है।

(३) मूलीके पत्तोंका स्वरस ३ भाग और तिलका तेल १ भाग मिलाकर औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय छान लो। इस तेल को कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुई कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(४) कूट, इस्पन्द, सौंठ बराबर-बराबर लेकर पीस लो और टिकिया बनाकर सरसोंके तेलमें पकाओ। जब टिकिया जल जाय तेलको छान लो। इस तेलकी चन्द बूंद कानमें टपकानेसे सर्दीकी वजहसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(५) कूट, चिरायता, वायविडंग, असगन्ध, विधारा, हल्दी, आमाहल्दी, संभालूके पत्ते, अंजीरकी जड़, इस्पन्द, सुहागा, सोंठ,

और कालीमिर्च—चार-चार माशे लेकर कूटो और रातको आध सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे दो सेर तेलमें मिलाकर औटाओ और छानकर रखलो। इस तेलके कानमें डालने और सिरपर लगानेसे सर्दीके कारणसे हुआ सिरका दर्द और कानका दर्द आराम हो जाता है।

(६) लहसनका स्वरस गरम करके सुहाता-सुहाता कानमें डालनेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द मिट जाता है।

(७) नीमकी पीली पत्ती अढ़ाई, अजवायन ४ रत्ती और हल्दी ४ रत्ती—इनको बालकके मूत्रमें पीसकर और जरा गरम करके दो-तीन बूंद कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(८) काला नोन गोमूत्रमें पीसकर और ज़रा गरम करके कान में टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द नाश हो जाता है।

(९) दूध पीते बालकका पेशाब ज़रा गरम करके कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) एक रत्ती अफीम आगपर जलाकर और गुल रोगनमें महीन पीसकर कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(११) पपड़िया खैरमें कुछ गरम पानी मिलाकर कानमें टपकानेसे घोर कानका दर्द नाश हो जाता है।

(१२) भाँगकी पत्तियोंका रस निचोड़कर छान लो। फिर कुछ गरम करके कानमें टपकाओ। इससे सर्दी और गरमी दोनों तरहकी कर्णपीड़ा नाश हो जाती है।

(१३) भांगको पीसकर मीठे तेलमें जलाओ और छानकर कानमें टपकाओ। इससे सर्दी-गरमी हर तरहसे हुई कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(१४) महावर रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही छानकर ज़रा

गरम करो और दो तीन बूंद कानमें टपका दो। इससे सरदी-गरमी हर तरहका कानका दर्द जाता रहता है।

(१५) सिरसकी या आमकी पत्तियोंका स्वरस कुछ गरम करके दो बूंदें कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१६) थोड़ीसी मक्खीकी विष्ठा जलमें महीन पीस और गरम करके कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१७) घीग्वारके पत्ते गरम करके, उनका रस दूसरे कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१८) खट्टे अनारका अर्क शहदमें मिलाकर कानमें डालनेसे पैत्तिक कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(१९) खुरफेके पत्तोंका रस तेल मिलाकर कानमें डालनेसे कानकी पैत्तिक पीड़ा आराम हो जाती है।

(२०) प्याजके रसमें अण्डेकी सफेदी मिलाकर कानमें टपकानेसे पैत्तिक कानकी पीडा आराम हो जाती है।

नाकके रोगोंका वर्णन।

चालीसवाँ अध्याय

नाम और संख्या।

मनुष्यकी नाकमें चौबीस तरहके रोग होते हैं, जैसे :—

(१) पीनस १

(२) पूतिनस्य १

(३) नासापाक १

(४) पूयशोणित १

(५) क्षवथू १

(६) भ्रंशथु १

(७) दीप्ति १

(८) प्रतीनाह १

(९) प्रतिस्राव १

(१०) नासाशोष १

(११) प्रतिश्याय ५

(१२)	अर्बुद	७
(१३)	अर्श	४
(१४)	सूजन	४
(१५)	रक्तपित्त	४
		३४

नोट—यों तो नाकमें १५ प्रकारके रोग होते हैं, पर उनके भेद लेकर उनकी गिन्ती ३४ हो जाती है।

पीनसके लक्षण।

पीनस रोग होनेसे नीचे लिखे हुए चिह्न देखनेमें आते हैं :—

(१) श्वासके कारण सूखे हुए कफसे नाकका रुक जाना।

(२) फिर नाकका गीली या तर हो जाना अथवा गर्म हो जाना।

(३) नाकके बन्द हो जानेसे, उसे खुशबू-बदबूका ज्ञान न होना।

(४) जीभका दूषित होकर खट्टे मीठे आदिको न जान सकना।

खुलासा—पीनस रोगमें प्रायः नाकमें घाव हो जाता है। लापरवाहीसे उसमें बहुत जल्दी कीड़े पड़ जाते हैं। फिर तो तत्कालके माँसके धोवनके समान निरन्तर एक तरहका रक्तस्राव होता रहता है। इससे दोनों भौं और कनपटियाँ सूज जाती हैं। सिरमें अत्यन्त पीड़ा होती है। जिस तरह सरसोंकी खल बहुत दिन तक भिगो रखनेसे एक तरहकी बदबू आती है, वैसी ही बदबू पीनसवालेके साँसमें आती है।

नोट—आयुर्वेदमें पीनसके यही लक्षण लिखे हैं, पर यह भी लिखा है कि वात-कफसे हुए पीनस रोगके और लक्षण, वात और कफसे हुए प्रतिश्यायके समान होते हैं। वातज प्रतिश्यायमें नाकसे पतला मवाद गिरता है, गला-तालु और होंठ सूख जाते हैं, कनपटियोंमें दर्द होता है, स्वर नष्ट हो जाता है,—येही सब लक्षण वातज पीनसमें भी होते हैं, और ऊपर लिखे हुए लक्षण—नाकको बदबू-खुशबूका ज्ञान न होना, जीभको खट्टे मीठे रसोंका ज्ञान न होना, नाकका रुकना, तर होना और गरम होना—वातज प्रतिश्यायमें अधिक होते हैं। अगर ये सब लक्षण हों तो वातज पीनस समझनी चाहिये।

इसी तरह कफज पीनसमें, पीनसके लक्षणोंके अलावः, कफज प्रतिश्यायके ये लक्षण भी होते हैं,—नाकसे सफेद शीतल और जियादा कफ निकलना, शरीरका रंग सफेद होना, नेत्रोंका छन्न होना, सिरका भारी हो जाना; गले, तालु, होठ और माथेमें खुजलीकी अत्यन्त वेदना होना।

पीनसके हकीमी लक्षण।

पीनस रोग होनेसे मनुष्य नाकमें बोलता है और अक्सर खाना-पीना भी नाकसे निकल आता है।

कच्चे पीनसके लक्षण।

अगर पीनस रोग कच्चा होता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) अरुचि। (२) सिरका भारीपन।
(३) स्वरक्षीणता। (४) बारम्बार थूकना।
(५) नाकसे पतला मवाद आना।

पके पीनसके लक्षण।

अगर पीनस रोग पक जाता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखने में आते हैं:—

(१) कफका गाढ़ा हो जाना।
(२) स्वरका शुद्ध होना या मुँहसे साफ़ आवाज निकलना।
(३) कफका रंग स्वाभाविक हो जाना।

पूतिनस्य रोगके लक्षण।

गले और तालूकी जड़में—दूषित पित्त, कफ और खूनसे—वायु दूषित हो जाता है, तब मुंह और नाकसे बदबूदार हवा निकलती है, इसको ही "पूतिनस्य" रोग कहते हैं।

नासापाकके लक्षण ।

जब नाकमें रहनेवाला "पित्त" घाव कर देता है, नाक पक जाती है, तर रहती है और उसमेंसे बदबू आती है, तब कहते हैं कि "नासापाक" रोग हुआ है यानी नाक पक गई है।

पूय शोणितके लक्षण ।

जब दोषोंके बिगड़नेसे अथवा ललाटमें किसी तरह चोट लगनेसे, नाकसे खून-मिली पीप या राध आती है, तब उस रोगको "पूयशोणित" कहते हैं।

क्षवथुके लक्षण ।

जब दूषित हुए कफ और वायुसे नाकसे अधिक छींकें आती हैं, तब "क्षवथु" रोग होना कहते हैं।

थोड़ी छींकोंका आना तन्दुरुस्तीकी निशानी है। मामूली तौर पर छींक आनेसे दिमाग़ साफ रहता है, पर बहुत छींकोंका आना ख़राब है। इस विषयमें हमने प्रतिश्याय रोग के बयानमें बहुत-कुछ लिखा है। देखो चिकित्साचन्द्रोदय छठा भाग पृष्ठ १४०—१४१ ।

भ्रंशथुके लक्षण ।

सिरके गरम होनेपर, जब नाकसे पहलेसे ही इकट्ठा हुआ दूषित, गाढ़ा और खारी कफ निकलता हैं, तब वैद्य लोग उसे "भ्रंशथू" रोग कहते हैं।

दीप्तिके लक्षण ।

जब नाकमें बहुत ही जियादा जलन होती है, धूएँके जैसी हवा निकलती है और आग जलनेके समान पीड़ा होती है, तब वैद्यलोग कहते है कि "दीप्ति" रोग हुआ है।

प्रतिनाहके लक्षण।

जब वायुके साथ मिलकर कफ श्वास लेनेकी राहको रोक देता है, तब "प्रतिनाह" रोग होना कहते हैं।

स्रावके लक्षण।

जब नाकमेंसे पीला, सफेद, गाढ़ा अथवा पतला दोष चूता है, तब कहते हैं कि "स्राव" रोग हुआ है।

नासाशोषके लक्षण।

जब नाकमें रहने वाला कफ—वायु और पित्तसे—अत्यन्त सूख जाता है, तब आदमी थोड़ा-थोड़ा ऊँचा-नीचा साँस लेता है। इसीको "नासा शोष" कहते हैं।

नाकके और रोगोंके लक्षण।

वातार्बुद, पित्तार्बुद, कफार्बुद, सन्निपातार्बुद, रक्तार्बुद, मांसार्बुद और मेदोर्बुद—इस तरह नाकमें सात तरहके अर्बुद होते हैं।

इसी तरह नाकमें वातशोथ, पित्तशोथ, कफशोथ और सन्निपात-शोथ चार तरहकी सूजन होती हैं।

इसी तरह वातार्श, पित्तार्श, कफार्श और सन्निपातार्श—चार तरहकी अर्श या मस्से होते हैं।

इसी तरह, वातका, पित्तका, कफका और सन्निपातका चार तरहका रक्तपित्त होता है।

अर्बुदके लक्षण अर्बुदके बयानमें, शोथके लक्षण शोथ रोगके बयानमे, अर्शके लक्षण अर्शके बयानमे और रक्तपित्तके लक्षण रक्तपित्तके बयानमे मिलेंगे।

नाकके रोगोंकी चिकित्सा।

(१) अगर आदमी पीनस रोगके उठते ही, तत्काल, गुड, दही और कालीमिर्च खाना शुरू कर दे, तो उसे किसी तरहकी भी पीनसका भय न रहे और सुख मिले। परीक्षित है।

(२) चव्य, अम्लवेत, सोंठ, छोटी पीपर, इमली, तालीसपत्र, चीता, नागकेशर, तेजपात और छोटी इलायची—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णका नाम "चव्यादि चूर्ण" है। इसको "जीरा और पुराना गुड़" मिलाकर खानेसे खाँसी और कच्ची पीनस नाश होकर रुचि होती और अग्नि दीप्त होती है। परीक्षित है।

(३) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, जवासा और अजवायन—इनको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णकी एक-एक मात्रा खाकर, ऊपरसे "अदरखका रस" पीनेसे पीनस, स्वरभेद, तमक श्वास, हलीमक, सन्निपात, कफ, खाँसी, ज्वर और श्वास रोग नाश हो जाते हैं। कफ-प्रकृतिवालोंको कफ या वातकफसे हुए रोगोंमे यह चूर्ण खूब काम देता है। परीक्षित है।

(४) सोंठ, छोटी पीपर, छोटी इलायचीके बीज चार-चार माशे और पुराना गुड़ ८ तोले लेकर, कूट-पीस और छान कर गोलियाँ बना लो। इसमें से दो माशेकी गोली रोज़ रातको खानेसे पीनस रोग जाता रहता है।

(५) सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, चीता, तालीसपत्र, इमली, अम्लवेत, चव्य और सफेद ज़ीरा—इनको एक-एक तोले लो और छोटी इलायची, तेजपात और दालचीनीको तीन-तीन माशे लो। इन सबको पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्णमें "पुराना गुड़" मिलाकर, खूब मसल लो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंका नाम "व्योषादि वटी" है। यह वैद्यककी मशहूर दवा है। इसके सेवनसे पीनस, श्वास और खाँसी नष्ट हो जाती है, रुचि होती है और स्वर उत्तम होता है। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर ऊपरसे "गरम पानी" पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—चव्यादि चूर्ण और व्योषादि वटीमें नाम मात्रका भेद है।

(६) कटेरीकी जड़, दन्ती, वच, सहँजना, तुलसी, सोंठ, काली-मिर्च, छोटी पीपर और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिल पर महीन पीस लो और लुगदी बना लो। इस तेलकी नास लेनेसे "पूति नस्य रोग" यानी नाक और मुँहसे बदबूदार हवा निकलना आराम होता है। इस तेलका नाम "व्याघ्री तैल" है। यह वैद्यकका मशहूर तेल है। अनेकों बारका परीक्षित है।

नोट—सहँजनेकी छाल लेनी चाहिये, दन्तीकी जड़ लेनी चाहिये। अगर लुगदी तोलमें तीन छटाँक या पाव भर हो तो सरसोंका तेल १ सेर लेना और साफ पानी चार सेर लेना। सबको मिलाकर कड़ाहीमें चढ़ा देना और तेलमात्र रहने पर उतारकर छान लेना।

(७) सहँजनेके बीज, कटेरीके बीज, दन्तीके बीज—जमालगोटा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर सिलपर महीन पीसकर लुगदी बना लो। फिर "बेलके पत्तोंका रस" निकाल लो। शेषमें तेल, लुगदी और बेलके पत्तोंका रस मिलाकर कड़ाहीमें चढ़ा दो और तेल पकालो। इस तेलका नाम "शिग्रुतैल"

है। इसकी नास देनेसे पूतिनस्य रोग यानी नाक और मुँहसे बद्-बूदार हवा आनेका रोग आराम हो जाता है।

नोट—दवाओंकी लुगदी १ पाव हो, तो तेल १ सेर और बेलपत्रका रस ४ सेर लेना। तेलमात्र रहने पर उतारकर छान लेना।

(८) दूब-घासको लाकर सिलपर पीसो और कपडेमें निचोड कर चार सेर रस निकाल लो। फिर १ सेर तेल और चार सेर रसको कड़ाहीमें औटाओ ; जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इसका नाम "दूर्वाद्य तेल" है। इस तेलकी नास लेनेसे नाक से खून गिरना एवं नाकके और रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) चीतेकी जड़, चव्य, अजवायन, कटेरी, करंजके बीज, सेंधानोन और आकका दूध—सबको समान-समान लेकर महीन पीसो और लुगदी बना लो। अगर यह लुगदी १ पाव हो, तो १ सेर तिलीका तेल लो और ४ सेर गोमूत्र लो। सबको मिलाकर आगपर पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "चित्रकादि तैल" हैं। इस तेलकी नास लेनेसे नासार्श यानी नाक की बवासीर या मस्से आराम हो जाते हैं।

(१०) लाल कनेरके फूल, जाती पुष्प, अशन पुष्प और मल्लिकाके फूल दो-दो तोले लेकर सिलपर पीस लो और लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर कड़ाही में डाल, आग पर चढ़ा दो। जब तैल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इसका नाम "करवीराद्य तैल" है। इसकी नास लेनेसे नासार्श रोग या नाकके मस्से आराम हो जाते हैं।

(११) घी, गूगल और मोमकी धूनी देनेसे क्षवथु और भ्रंशथु रोग—बहुत छींक आना और नाकसे गाढ़ा और खारी कफ निक-लना आराम होता हे। परीक्षित है।

(१२) सोंठ, कूट, पीपर, बेल और दाख—इनको समान-सम

लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बनालो। इन्हीं सब दवाओंका काढ़ा भी बनालो। फिर लुगदी, काढ़े और तेलको आगपर पकालो। जब तेल मात्र रह जाय उतार लो। इस तेलकी नास देनेसे जियादा छींक आनेका "क्षवथु" रोग नाश हो जाता है।

नोट—लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना काढ़ा लेना चाहिये।

(१३) नीम और रसौतकी नास देने और माथेपर थोडा सेक करने यानी दूध और जल सींचनेसे दीप्ति रोग—नाकमें जलन होना, धुएं की जैसी हवा निकलना और नाकमें आग सी जलना—आराम होता है। नास देनेके बाद,माथेपर दूध और जल सींचना चाहिये और मूंगके यूषके साथ भोजन कराना चाहिये।

(१४) नासास्राव रोग हो यानी नाकसे पीला, सफेद, गाढ़ा या पतला मवाद गिरता हो, तो चीतेकी छाल और देवदारुका तेज धूआँ चिलम वगैरःसे पिलाओ और बकरेका माँस खिलाओ।

(१५) घरके धूएं का धूमसा, पीपर, देवदारु, दूध, करंज, सेंधा-नोन और चिरचिरेके बीज—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदोसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर तेल पकालो। इस तेलकी नास लेनेसे नाकके मस्से आराम हो जाते हैं।

(१६) अगर नासापाक रोग हो—नाक पक गई हो तो शाल वृक्ष, अर्जुन वृक्ष, गूलर और कुड़ेकी छालका काढ़ा बनालो और इस काढ़ेसे नाकको धोओ। इन्हीं चारों दवाओंको समान-समान लेकर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो और इन्ही चारोका काढ़ा फिर बनालो। लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना काढ़ा कड़ाहीमें डालकर घी पकालो। इस घीके लगानेसे भी नासापाक रोगमे बहुत जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(१७) हरे धनियेकी पत्ती और सफेद चन्दनको पीसकर सूंघने छींकोंका रोग मिट जाता है।

(१८) कुलींजनको पोटलीमें बाँधकर सूँघनेसे छींकोंका रोग मिट जाता है।

(१९) अगर पीनसमें लापरवाही करनेसे कीड़े पड़ गये हों, तो बाँसके कोमल कल्लोंका रस १ छटाँक और तारपीनका तेल १ तोले दोनोंको मिलाकर नस्य देनेसे सब कीड़े बाहर निकल आते हैं।

नोट—पीनसके बहुत पुराने होनेपर फ़ीहा और मुँहमें घाव हो जाते हैं। इस अवस्थामें चिकनी छपारी ८ नग, सफेद कत्था २ तोले, अरण्डीकी जड़की छाल २ तोले, कपूर ३ माशे, जायफल १ माशे, जावित्री १ माशे, छोटी इलायची १ माशे और बड़ी इलायची १ माशे—इनको एकत्र पानीमें पीसकर मुँहमें लगानेसे मुँहके घाव आराम हो जाते हैं।

कामदेव चूर्ण।

इस चूर्णके लगातार २ महीने खानेसे धातुक्षीणता और नई नामर्दी आराम होती तथा स्त्री-प्रसङ्गमें अपूर्व आनन्द आता है। जिनकी स्त्री-इच्छा घट गई हो, स्त्री-प्रसङ्गको मन न चाहता हो, वे इस चूर्णको चुपचाप मन लगाकर २ मास तक खावें। इसके सेवन करनेसे उन्हें संसारका आनन्द फिरसे मिल जायगा। आजकल लोगोंने जो विज्ञापन दे रखे हैं, उनके धोखेमें न फँसिये। वह कोरी धोखेबाज़ी है। जिन्हें एक अक्षर भी वैद्यकका नहीं आता, उन्होंने भोले लोगोंको ठगनेके लिये खब चमकीले भड़कीले विज्ञापन दे दिये हैं और आदमीको शेरसे कुश्ती करता दिखा दिया है। उनसे कहिये कि पहले आप शेरसे लड़कर हमें तमाशा दिखा दें, तब हम आपकी दवाके १०० गुने दाम देंगे। हमें धर्मका भय है, अतः मिथ्या लिखना बुरा समझते हैं। कोई भी धातुपुष्टिकी दवा बिना ६० दिनके फायदा नहीं कर सकती, क्योंकि आजकी खाई दवाकी धातु ही ४० दिनमें बनती है। फिर दस पाँच दिनमें धातुरोग कैसे चला जायगा? आप इस चूर्णको मँगाकर प्रेमसे खाइये, मनोरथ पूरा होगा। दाम १ शीशी का ३॥) रु०

मुख-रोग-वर्णन ।

इकतालीसवाँ अध्याय

मुहके रोगोंके स्थान ।

एक मुंहमे पैंसठ रोग होते हैं। वे मुखके सात आयतनोंमें रहते हैं। नीचे ऊपरके दोनों ओठ, दाँत, दन्तवेष्ट—मसूढ़ा, तालू, कण्ठ और जीभ ये सात आयतन हैं। इन आयतनोंमें उपरोक्त रोग होते हैं।

खुलासा—दोनों होंठ, दांत, मसूढे, ताल, गला और जीभ—इन सबको मिलाकर "मुख" कहते है। इन सबमें जो रोग होते हैं, उन्हें "मुखरोग" कहते हैं।

वातजनित ओष्ठरोगके लक्षण ।

वातजन्य ओष्ठ रोग होनेसे दोनों होठ खरदरे, रूखे, कठोर और ऐंठेसे होते हैं तथा उनमें तेज़ दर्द होता है। ऐसा जान पड़ता है, मानों उनके दो टुकड़े हो जायँगे। वे ज़रा-ज़रा फट भी जाते हैं।

नोट—वातज ओष्ठ रोगमें होठोंका रंग श्याववर्ण हो जाता है और उनमें सूई चुभानेकी सी पीड़ा होती है।

पित्तज ओष्ठरोगके लक्षण ।

पित्तके कोपसे दोनो होठ पीले हो जाते हैं, चारो ओर फुन्सियाँ हो जाती हैं तथा उनमे पीड़ा, दाह और पाक होता है।

कफज ओष्ठरोगके लक्षण ।

कफज ओठ रोग होनेसे होठ शीतल, चिकने और भारी रहते हैं, उनमे खुजली चलती है और थोड़ा-थोडा दर्द होता है। उनपर शरीर के रंग जैसी फुन्सियाँ छा जाती हैं।

त्रिदोषज ओष्ठरोगके लक्षण ।

एक साथ तीनो दोषोंका कोप होनेसे होठ कभी काले, कभी पीले, कभी सफेद और अनेक फुन्सियोंसे युक्त होते हैं।

रक्तज ओष्ठरोगके लक्षण ।

खूनके कोपसे, दोनों होठ पके हुए खजूरके फलकी रङ्गकी फुन्सियों से व्याप्त होते हैं। उनमेंसे खून बहता है और होठोंका रंग खूनकी तरह लाल होता है।

मास-जनित ओष्ठरोगके लक्षण ।

मांसके दूषित होनेसे ओठ भारी, मोटे और मांसके गोलेकी तरह ऊँचे होते हैं। इस मांसज ओष्ठ रोगमें आदमीके दोनों गलफुओंमें कीड़े पड़ जाते हैं।

मेदज ओष्ठरोगके लक्षण ।

इस रोगके होनेसे दोनों होठ घी और मांडकी तरहके होते हैं। वे भारी होते हैं और उनमें खाज चलती हैं। उनमेंसे स्फटिक मणिके जैसा निर्मल मवाद बहता है। उनमें पैदा हुआ व्रण नरम होता है और भरता नहीं।

अभिघातज ओष्ठरोगके लक्षण ।

अगर किसी तरहकी चोट लगनेसे ओष्ट रोग होता है, तो दोनों होठ चिर या फट जाते हैं, उनमें पीड़ा होती है, गाँठ पड़ जाती हैं और खजली चलती है।

दन्तवेष्ट रोगोंकी संख्या और नाम ।

(मसूढ़ोंके रोगोंके नाम)

मसूढ़ोंमें सोलह तरहके रोग होते हैं । उनके नाम ये हैं :—

(१) शीताद । (२) दन्त पुप्पुट । (३) दन्तवेष्ट ।
(४) सौपिर । (५) महासौपिर । (६) परिदर ।
(७) उपकुश । (८) वैदर्भ । (९) खल्लिवर्द्धन ।
(१०) अधिमांस, (११) दन्तनाडी (पांच), और
(१६) दन्तविद्रधि ।

शीतादके लक्षण ।

शीताद रोग होनेसे अकस्मात् खून गिरकर, मसूढ़ोंका मांस क्रमशः सड़कर, काला, क्लेदयुक्त और कोमल होकर गलता और गिरता है। एक मसूढा पककर दूसरेको पकाता है । यह "रोग कफ और खून"के कोपसे होता है ।

दन्तपुप्पुटके लक्षण ।

जिसके दो या तीन दांतोंमे महासूजन हो, उसको "दन्त पुप्पुट" कहते हैं ।

दन्तवेष्टके लक्षण ।

जिस रोगमे मसूढ़ोंमें से खून या राध बहे और दाँत हिलें—उसे "दन्तवेष्ट" कहते हैं । यह रोग "दूपित खून"से होता है ।

शौपिरके लक्षण ।

कफरक्तके कुपित होनेसे दाँतोंकी जड़में पीडायुक्त सूजन होती है और उसमें से लार बहती है । उसे "शौपिर रोग" कहते हैं ।

महाशौषिरके लक्षण ।

जिस रोगमें दाँत मसूढ़ोंसे अलग होकर हिलने लगें और तालवा फट जाय, उस रोगको "महाशौषिर" कहते हैं। यह त्रिदोषज रोग है ।

नोट—इस रोगमें मसूढे पक जाते हैं और मुखमें अत्यन्त पीड़ा होती है। यह रोग आदमीको सात दिनमें मार देता है।

परिदरके लक्षण ।

जिस रोगमें मसूढ़ोंका मांस गल जाय और थूकते समय खून गिरे, उसे "परिदर" कहते हैं। यह रोग "पित्त, रुधिर और कफ"के कोपसे होता है ।

उपकुशके लक्षण ।

मसूढ़ोंमें जलन और पाक हो तथा दाँत हिलने लगें ; मसूढ़ोंमें अत्यन्त वेदना होनेसे खून गिरने लगे, खूनके गिरनेसे मसूढ़े तत्काल सूज जायँ और मूँहसे बदबू निकले—जिस रोगमें ये लक्षण हों, उसे "उपकुश" कहते हैं। यह रोग "पित्त और रुधिर"के कोपसे होता है ।

वैदर्भके लक्षण ।

जिस रोगमें मसूढ़ोंके घिसनेसे अत्यन्त सूजन हो और दाँत हिलने लगें, उसे "वैदर्भ" कहते हैं। यह रोग लकडी आदिकी चोट लगनेसे होता है ।

नोट—इस रोगमें दाह, पाक और वेदना ये लक्षण होते है।

खल्लिवर्द्धनके लक्षण ।

"वायु"के कुपित होनेसे दाँतके ऊपर दाँत जमे, जमती समय उसमे दर्द हो और जब जम जाय, पीड़ा भी शान्त हो जाय। जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "खल्लि वर्द्धन" कहते हैं।

नोट—वायुके प्रकोपसे, प्रबल यातनाके साथ, जो एक एक अधिक दाँत हनु-कुहरसे निकलता है और निकल आने पर दर्द नहीं रहता, उसे "वर्द्धिवर्द्धन" कहते हैं। यह दाँत अधिक उम्रमें निकलता है। इससे इसे "अक्लिकी दाँत" भी कहते हैं।

करालके लक्षण।

दाँतोंमें स्थित वायु शनैः-शनैः दाँतोंको ऊँचा, नीचा, टेढ़ा, तिरछा कर देती है। इस रोगको "कराल" कहते हैं। यह रोग असाध्य है।

अधिमांसके लक्षण।

जिस रोगमें पीछेकी दाढ़के नीचे महासूजन और घोर पीड़ा हो एवं ढेर-की-ढेर लार गिरे, उस रोगको "अधिमांस" कहते हैं। यह रोग "कफज" है।

पाँच तरहकी दन्त नाडियोंकी लक्षण।

जिस तरह नाड़ीव्रणमें वात, पित्त, कफ, सन्निपात और शल्यसे उत्पन्न हुई पाँच तरहकी नाड़ी कही हैं; उसी तरह पाँच नाडी दाँतोंके मसूढ़ोंमें होती हैं। उनके लक्षण नाडीव्रणके अनुसार समझने चाहिएँ।

दन्तरोगोंके लक्षण।

दालनके लक्षण।

जिसके दाँतोंमें चीरनेकी सी अत्यन्त पीड़ा हो, उसे "दालन" रोग कहते हैं। यह "वातज" रोग है।

क्रिमिदन्तके लक्षण ।

वायुके कोपसे दांतोंमे काले छेद हो जायें, दांत हिलने लगें, उनमेंसे स्राव हो—मवाद निकले, अत्यन्त पीड़ा हो, सूजन हो और विना कारण दर्द हो,—उस रोगको "कृमिदन्त" कहते हैं ।

खुलासा—दाँतमें काला छेद होता है, दन्तमूलमें बड़े दर्दके साथ सूजन होती है, उसमें से लार बहती है और अकस्मात दर्द बढ़ता है, उसे कृमिदन्त कहते हैं। यह "वातपित्तज रोग" है।

भञ्जनकके लक्षण ।

जिस रोगमें मुँह टेढ़ा हो जाय और दाँत टूट जाय,उसे "भञ्जनक" कहते हैं। यह "कफ-वातज"रोग है।

दन्तहर्षके लक्षण ।

जिस रोगमें दाँत सर्दी, रूखापन, खटाई और वातादिके स्पर्शको न सह सकें, उसे "दन्त हर्ष" कहते हैं। यह "पित्त और वात"के प्रकोप से होता है ।

दन्तविद्रधिके लक्षण ।

मसूढ़ोंके दूषित होनेसे, मुँहके भीतर और वाहर दाह और वेदना-युक्त महासूजन हो तथा उसके छेदनेसे राध और खून निकले, उसे "दन्तविद्रधि" कहते हैं।

दन्तशर्कराके लक्षण ।

जिस रोगमें कफ-वातसे दाँतोंमें मैल सूखकर रेतेके समान खरखर-स्पर्श मालूम हो—उस "दन्त शर्करा" कहते हैं।

कपालिकाके लक्षण ।

उसी दन्त शर्करा रोगमें, अगर मैल समेत दाँतका भी कुछ अंश टूट कर ठिकरेकी तरह गिरे, तो उसे "कपालिका" कहते हैं। इस रोगमे दाँत सदैव टूट-टूटकर मैलके साथ गिरते हैं।

श्यावदन्तके लक्षण।

दुष्ट रक्त और पित्तसे कोई दाँत जल जानेकी तरह काला या श्याम हो जाय, उसे "श्याव दन्त" कहते हैं।

नोट—इस रोगमें दाँत सर्वथा काले या नीले हो जाते हैं।

हनुमोक्षके लक्षण।

वातसे—हनुसन्धि यानी जावड़ेकी सन्धिमें चोट लगनेसे—दाँत हिलने लगे, इसको "हनुमोक्ष" कहते हैं। उसके लक्षण अर्दित या लकवेके समान होते हैं।

जिह्वाके लक्षण।

वातज जिह्वाके लक्षण।

वात रोग होनेसे जीभ कुछ फटीसी होती है, उसे खट्टे मीठे रस का ज्ञान नहीं होता और वह सागवानके पत्तेकी तरह खरदरी होती है।

पित्तज जिह्वाके लक्षण।

पित्तके कोपसे जीभ पीली होती है। उसमें जलन होती है और उसपर बड़े-बड़े लाल-लाल काँटे होते हैं।

कफज जिह्वाके लक्षण।

कफके प्रकोपसे जीभ भारी और मोटी होती है तथा उसमें सेमलके काँटोंके समान काँटे होते हैं।

अल्लासके लक्षण।

कफरक्तके कोपसे जीभके नीचे अत्यन्त कठोर सूजन होती है, उसको "अल्लास" कहते हैं। जब यह अधिक बढ़ जाती है, तब जीभ जकड़ जाती है और जड़में पकने लगती है।

उपजिह्वाके लक्षण।

दूषित कफ-रक्तसे, जीभके नीचे, जीभ की नोकके समान, सूजन उत्पन्न होती है, उसमें लार बहती, खुजली चलती और जलन होती है। इसे "उपजिह्वा" कहते हैं।

तालुरोग निदान।

तालुगत शुण्डीके लक्षण।

कफ और खूनके कोपसे, तालूकी जड़में, भरी हुई मशकके समान लम्बी एवं प्यास, खाँसी और श्वास पैदा करनेवाली जो सूजन उत्पन्न होती है, उसे वैद्य "गलशुण्डी" कहते हैं।

तुण्डिकेरीके लक्षण।

जिस रोगमें कफ और खूनके कोपसे, तालूमें, वन-कपासके फल की तरह मोटी सूजन हो जाती है, उसमे सूई चुभाने सरीखी पीड़ा होती तथा दाह और पाक होता है, उसे "तुण्डिकेरी" कहते हैं।

अध्रूषके लक्षण।

रुधिरके कोपसे, तालूमें मन्दी और लाल रंगकी सूजन हो जाती है, उसमें तीव्र पीडा होती और ज्वर चढ़ता है। जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "अध्रूष" कहते हैं।

कच्छपके लक्षण।

कफके प्रकोपसे, तालुवेमें, कछुएके समान बीचमें ऊँची और चारों ओरसे नीची तथा कम दर्दवाली सूजन तत्काल उत्पन्न होती है, उसे वैद्य "कच्छप" कहते हैं।

तात्वर्बुदके लक्षण ।

तालुएके बीचमे, रुधिरके प्रकोपसे, कमल की केसरके समान, लम्बे मांसके अंकुरोसे लिपटी हुई और पित्तके सम्पूर्ण लक्षणोंसे युक्त जो सूजन पैदा हो जाती है, उसे "तात्वर्बुद" कहते हैं ।

मांस संघातके लक्षण ।

कफके प्रकोपसे, तालुएके भीतर पीड़ा रहित जो दुष्ट मांस एकत्रित हो जाता है, उसे "मांससंघात" कहते हैं ।

तालुपुप्पुटके लक्षण ।

कफके प्रकोपसे, तालुमें पीड़ा रहित, स्थिर और मेदयुक्त वेरीके फल समान जो गाँठ पैदा होती है, उसे "तालु पुप्पुट" कहते हैं ।

तालुशोषके लक्षण ।

वायुके प्रकोपसे, तालुमे अत्यन्त शोष हो अथवा तालु फटने लगे और अत्यन्त उग्र श्वास हो, उसे "तालुशोष" कहते हैं ।

तालुपाकके लक्षण ।

पित्तके प्रकोपसे तालु अत्यन्त भयङ्कर रूपसे पक जावे, तो "तालुपाक" कहते हैं ।

गलरोग निदान ।

रोहिणीके लक्षण ।

गलेमें बढ़े हुए तीनों दोष दूषित होकर, मांस और खूनको दूषित करके, गलेमे मांसके अङ्कुर पैदा करते हैं । उन अङ्कुरोसे गला रुक जाता है । इस रोगको "रोहिणी" कहते है ।

वातजाके लक्षण।

जब जीभके चारों ओर अत्यन्त वेदनावाले और गलेको रोकनेवाले मांसके अङ्कुर होते हैं। उनके साथ वात-सम्बन्धी स्तब्धता आदि उपद्रव भी होते हैं, तब "वातजा रोहिणी" कहते हैं।

पित्तजाके लक्षण।

जब गलेमें माँसके अङ्कुर तत्काल उत्पन्न हो जायँ, उनमें तत्काल दाह और पाक हो एवं तीव्र ज्वर हो, तब "पित्तजा रोहिणी" समझो।

कफजाके लक्षण।

गलेकी शिराओंको रोककर गलेमें मांसके अङ्कुर पैदा होते हैं और वह धीरे-धीरे पकते हैं तथा भारी और स्थिर होते हैं, तब "कफजा रोहिणी" कहते हैं।

त्रिदोषजाके लक्षण।

जब गलेमें उपरोक्त तीनों लक्षणोवाले, गम्भीर रूपसे पकनेवाले और कठिनसे आराम होनेवाले मांसके अङ्कुर पैदा होते हैं, तब "त्रिदोषजा रोहिणी" कहते हैं।

रक्तजाके लक्षण।

रक्तजा रोहिणी छोटी-छोटी फुन्सियोंसे व्याप्त और पित्तजा रोहिणीके जैसे लक्षणोंवाली होती है। यह साध्य है।

रोहिणीके मारेनकी अवधि।

त्रिदोषजा रोहिणो तत्काल मार देती है, कफजा तीन दिनमें मार देती है; पित्तजा पाँच दिनमे मार देती है और वातजा सात दिनमें मार देती है।

कण्ठशालूकके लक्षण।

गलेमें काँटे की समान तथा धानकी अनीके समान वेदना उत्पन्न

करनेवाली, खरखरी, कठोर, बेरकी गुठलीके समान, शस्त्रासाध्य जो ग्रन्थि होती है उसे "कण्ठशाल्क" कहते हैं। यह गाँठ कफके प्रकोपसे होता है और शस्त्रके चीरनेसे साध्य है।

अधजिह्वके लक्षण।

जीभके ऊपर, जीभकी अनीके समान जो सूजन होती हैं, उसको "अधजिह्व" कहते हैं। अगर वह सूजन पक जाय तो उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये। यह रोग रुधिर-मिले कफके कोपसे होता है।

वलयके लक्षण।

"कुपित कफ" अन्नकी गतिको रोककर गलेमें लम्बी और ऊँची सूजन उत्पन्न करता है, उसे "वलय" कहते हैं। यह रोग किसी तरह भी आराम नहीं होता, अत. चिकित्सा करना वृथा है।

वलासके लक्षण।

बढे हुए कफ और वातसे, गलेमें श्वास और पीड़ा सहित, हृदयके मर्मस्थलको छेदनेवाली तथा व्यथा करने वाली सूजन पैदा होती है, उसे "वलास" कहते हैं। उसे वैद्य दुस्तर कहते हैं।

एकवृन्दके लक्षण।

कफ और रक्तके प्रकोपसे गलेमें गोल और ऊँचे किनारोंकी सूजन उत्पन्न होती है। उसमें दाह और खुजली होती है। वह कुछ-कुछ पकता है और कुछेक नर्म एवं भारी होती है। उस रोगको "एक वृन्द" कहते हैं।

वृन्दके लक्षण।

पित्तरक्तके प्रकोपसे, गलेमें ऊँची, गोल, दाह और तीव्रज्वर-युक्त सूजन होती है, उसे "वृन्द" कहते हैं। अगर उसमें शूल चले तो उसे "वातात्मक" समझो।

शतघ्नीके लक्षण ।

जब गलेमें वत्तीके समान लम्बी, घन और कंठको रोकनेवाली सूजन हो। उस सूजन पर माँसके अङ्कुर बहुत हों। उसमें दाह व्यथा आदि अनेक उपद्रव हो—तब "शतघ्नी" समझो। यह "शतघ्नी" तोपके समान प्राण नाशक होती है, इसीसे इसे "शतघ्नी" कहते हैं। यह त्रिदोषज है।

गिलायुके लक्षण ।

कफरक्तके प्रकोपसे, गलेमें आमलेकी गुठलीके समान स्थिर और अल्प पीड़ावाली गाँठ पैदा हो जाती है। उसकी वजहसे गलेमे ग्रास अटकता जान पड़ता है। वह शस्त्र या चीरफाड़से आराम हो सकती है। उसे "गिलायु" कहते हैं।

गलविद्रधिके लक्षण ।

तीनों दोषोंके कोपसे, सब गलेको घेरनेवाली और हर तरहकी पीड़ा करनेवाली सूजन पैदा होती है, उसे "कण्ठविद्रधि" कहते हैं। यह त्रिदोषज विद्रधिके समान होती है।

गलौघके लक्षण ।

कफ और खूनके कोपसे, गलेमें, अन्न और जलको रोकनेवाली, उदानवायुकी गतिको हरनेवाली और तेज़ बुख़ार करनेवाली बडी सूजन पैदा होती है। उसे "गलौघ" कहते हैं।

स्वरघ्नके लक्षण ।

जिस रोगमें वायु निकलनेके मार्ग कफसे भर जाते हैं, अतः रोगी निरन्तर बड़े कष्टसे साँस लेता है, आवाज़ मारी जाती है, कण्ठ सूखने लगता है, वह असमर्थ हो जाता हैं और तोडनेका सा दर्द होता है, उसे "स्वरघ्न" कहते हैं। यह वातज रोग है।

मांसतानके लक्षण।

जो सूजन गलेमें क्रमसे फैलकर अत्यन्त कष्टके साथ गलेको रोक दे, उसे "मांसतान" कहते हैं। यह त्रिदोषसे होनेवाला प्राण-नाशक रोग है।

विदारीके लक्षण।

पित्तके प्रकोपसे, गलेमे दाह और तीव्र पीडा करनेवाली अत्यन्त लाल और बदबूदार तथा मांसको फाड़नेवाली सूजन पैदा होती है, उसे "विदारी" कहते हैं। मनुष्य जिस करवट अधिक सोता है, उसी बगलमें यह रोग होता है।

सर्व मुखगत रोग-निदान।

वातज मुखपाकके लक्षण।

बादीके मुखपाकमें सारे मुँहमें छाले हो जाते हैं और उनमें नोचनेका सा दर्द होता है।

पित्तज मुखपाकके लक्षण।

पित्तके मुख पाकमें लाल और पीले छाले होते हैं। उनमे जलन होती है।

कफज मुखपाकके लक्षण।

कफका मुखपाक होनेसे पीडा रहित, खुजली सहित, चमडेकेसे रंगके छाले मुँहमे होते हैं। यह रोग सारे मुँहमे होता है, इसलिये इसे "सर्वसर" कहते हैं।

मुखके रोगोंमें असाध्य रोग।

होठके रोगोंमे—मांसजनित, रक्तजनित और त्रिदोषजनित असाध्य हैं।

दन्तमूल या मसूढ़ेके रोगोंमे—त्रिदोषज, नाड़ी व्रण और शौषिर असाध्य हैं।

दन्त रोगोंमें—श्याव, दालन और भंजनक असाध्य हैं।

जिह्वा या जीभके रोगोंमे—अलास असाध्य है।

तालुके रोगोंमें—अर्बुद असाध्य है।

गलेके रोगोंमें—स्वरघ्न, वलयोवृन्द, वलास, विदारी, गलौघ, मांसतान, शतघ्नो और रोहिणो असाध्य हैं।

नोट—ये उन्नोस मुँहके रोग असाध्य हैं। इलाज करनेसे पहले वैद्यको कह देना चाहिये कि ये असाध्य है, पर इनका असाध्य समझकर त्याग न देना चाहिये, क्योंकि दवा करनेसे कभी-कभी ये आराम हो भी जाते हैं।

होठके रोगोंकी चिकित्सा।

नोट—मुँहके रोग, मसूढ़ेके रोग और होठके रोगोंमें प्रायः कफ और खूनकी प्रधानता होती है, अतः इन रोगोंमें बारम्बार गरम और दुष्ट खून निकलवाना चाहिये।

वातज ओष्ठ रोगमें—गरम स्नेह, गरम सेक, गरम लेप, घी पीना, मांसरस खाना, अभ्यञ्जन, स्वेदन और लेपन इत्यादि उपचार हितकारी हैं। वात नाशक दवाओं द्वारा तेल पकाकर मस्तिष्कमें नास देना तथा स्नेह, स्वेद और अभ्यंग इस रोगमें रसायनके समान गुणकारी होते हैं।

पित्तज ओष्ठ रोगमें नस छेदकर खून निकलवाना, कय कराना, जुलाब देना, तिक्तक नामक घृत पिलाना अथवा तिक्त पदार्थ सेवन कराना, मांसरस खिलाना तथा शीतल लेप और शीतल सेचन यानी ठण्डे तरड़े—ये हित हैं।

रक्तजनित ओष्ठ रोगमें जौंक लगवाकर खून निकलवाना चाहिये और पित्त-विद्रधिके समान सारा इलाज करना चाहिये।

कफज ओष्ठ रोगमें—खून निकलवानेके बाद शिरोविरेचन—सिर साफ करनेवाली नस्य देनी चाहिये, धूमपान कराना चाहिये, स्वेदन करना चाहिये और मुँहमें कवल धारण कराना चाहिये।

मेदजन्य ओष्ठ रोगमें स्वेद, भेद, शोधन और अग्निका सन्ताप देना चाहिये और दूषित मांस निकाल देना चाहिये तथा लेप करना चाहिये।

वातज ओष्ठ रोगमें यानी होठमें घाव हो जाने पर पहले स्वेदन करके पीछे अच्छी तरहसे दबाना चाहिये और सौ बारका धोया हुआ घी लगाना चाहिये। अगर होठमें क्रिन्नव्रण हो जाय, तो सारी विधि छोड़कर व्रणके समान इलाज करना चाहिये।

(१) वातज ओष्ठरोगमें—तेल या घीमें "मोम" मिलाकर मलना चाहिये।

(२) लोबान, राल, गूगल, देवदारु और मुलेठी बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट और छान लो। इस चूर्णको धीरे-धीरे होठो पर घिसनेसे वातज ओष्ठरोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) तेल, घी, राल, मोम, रास्ना, गुड, सेंधानोन और गेरू—सबको बराबर-बराबर लेकर पकाओ। जब पक जाय रख लो। इसका होठों पर लेप करनेसे होठोका फटना और होठोंके घाव आराम हो जाते हैं।

(४) मोम, गुड और राल—इनको समान-समान लेकर तेल या घीमें पका लो। इसका लेप करनेसे होठका सूई चुभने समान दर्द, कठोरता और पीप-खून जाना बन्द हो जाता है।

(५) पित्तज ओष्ठरोगमे नस छेद कर खून निकलवाना, वमन-विरेचन कराना, तिक्तक घृत पिलाना, मांसरस खिलाना, शीतल लेप करना और शीतल तरड़े देना हितकारी है।

(६) रक्तज और पित्तज ओठरोगमे जौंक लगवाना और पित्तज विद्रधिकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) कफज ओष्ठ रोगमें शिरोविरेचन नस्य, धूमपान और मुखमें कवल रखना हितकारी है। इस रोगमे त्रिकुटा, सज्जीखार और

जवाखारको समान-समान लेकर पीस लो और शहतमें मिलाकर—इस दवासे होठोंको घिसो।

(८) मेदज ओष्ठ रोग होनेसे—आगके द्वारा होठोंको सेकना चाहिये तथा प्रियंगूफल, त्रिफला और लोधका चूर्ण शहदमें मिलाकर होठोंपर घिसना चाहिये। अथवा त्रिफलेका पिसा-छना चूर्ण शहदमें मिलाकर होठों पर लेप करना चाहिये।

(९) अगर होठोंपर घाव हों ; तो धनिया, राल, गेरू और मोम अथवा राल, गेरू, धनिया, तेल, घी सैंधानोन और मोम—इनको समान-समान लेकर और एकत्र मिलाकर घावपर लेप करनेसे होठ का घाव आराम हो जाता है। इन्हीं दवाओंके साथ तेल या घी पकाकर लगानेसे भी घाव आराम हो जाता है।

(१०) सौ वारका धुला हुआ घी लगानेसे भी होठके घाव आराम हो जाते हैं। अगर इस धुले घीमें "कपूर" भी मिला लिया जाय, तो होठके रोगोंकी इसके समान और दवा नहीं है। परीक्षित है।

(११) त्रिदोषज ओष्ठ रोगमें, जिस दोषका अधिक प्रकोप हो पहले उसीकी चिकित्सा करनी चाहिये, फिर दूसरे दोषोंकी चिकित्सा करनी चाहिये। अगर होठ पक जाय, तो व्रण रोगकी तरह इलाज करना चाहिये।

दन्तरक्षासे लाभ और उसके उपाय।

मनुष्य-शरीरमें दाँत कितने महत्वकी चीज़ है, इसे बहुत कम लोग जानते हैं। दांत मनुष्यकी अवस्था स्थिर रखनेके लिये स्तम्भ-स्वरूप हैं। उज्ज्वल दाँतोंकी क़तार मुंहमें कैसी सुन्दर लगती है! दाँतोंके विना मुंहकी सारी शोभा नष्ट हो जाती है। पोपला मुंह

बहुत ही भद्दा मालूम होता है। दन्तहीन मुँहसे शब्दोंका ठीक-ठीक उच्चारण नहीं हो सकता। भोजनके पचनेमें दाँत मुख्य रूपसे महायता करते हैं। जिनके दाँत नहीं हैं, उनका भोजन पेटमें साबत-का-साबत चला जाता है। दाँतोंका काम बेचारी आँत कर नहीं सकतीं, अतः अजीर्ण और बदहज़मी आदि नाना प्रकारके रोग हो जाते हैं।

कह आये हैं कि, भोजन पचानेके काममे दाँत खास तौरसे मदद करते हैं। भोजनके कडे पदार्थ, दाँतोंसे चबाये जाने पर, लारके साथ मिलकर पचने योग्य होते हैं। बचपनमें पाकस्थली और आँतोंकी क्रिया प्रायः प्रबल होती है, इसलिये उस समय जो चीज़ें कम भी चबाई जाती हैं, वे भी हजम हो जाती हैं। लेकिन ज्यों-ज्यों उम्र बढती है, त्यों-त्यों पाकस्थली और आँतोंकी ताक़त कम होती जाती है, इसलिये इस समय भोजनको जियादा चबानेकी जरूरत रहती है। भात, खीर, खिचडी, हलवा आदि नरम पदार्थ भी बिना थोडी देर चबाये न निगलने चाहिये। ये यद्यपि नर्म हैं; तोभी बिना चबाये और बिना लारसे मिले आसानीसे हजम नहीं हो सकते। फिर रोटी, पूरी, खिचडी और फल वगैरः तो बिना चबाये किसी हालतमें भी पच नही सकते। आजकल अनेक अनजान और अज्ञानी यह समझते हैं कि, जो जल्दी-जल्दी खा लेता है, वह प्रशंसा का पात्र है। यह उनकी भयङ्कर नादानी और परले सिरेकी बेवक़ूफी है। जो ऐसा करते हैं, उन्हें ही दस्त क़ब्ज रहता है, भूख नहीं लगती, पेट भारी रहता है, खट्टी-खट्टी डकारें आया करती हैं, गला और कण्ठ जलते हैं एवं ज्वर और अम्लपित्त प्रभृति रोग सदा उनपर हावी रहते हैं। ऐसे लोग तरह-तरहके हाजमेके चूर्ण खाते हैं; पर फल कुछ नहीं होता। अतः मनुष्य मात्रको दाँतोंसे चबाकर और खूब रौंथ कर भोजन पेटमें जाने देना चाहिये। गाय बैल आदि पशु कहलाते हैं, पर वे भी जल्दी-जल्दी और बिना चबाये रोटियोंके टुकड़े-के-टुकडे निगलनेवालोंसे अच्छी समझ रखते हैं। वे पहले भोजनको अपनी

थैलीमें रख लेते हैं। फिर आरामसे बैठकर जुगाली किया करते हैं यानी उस भोजनको उस थैलीसे निकाल-निकालकर फिरसे चबाते और रौंथते हैं, तब आँतोंके हवाले करते हैं, पर अफ़सोस है, मनुष्य कहलाने वाले पशुओंसे भी गये-बीते हैं, वे इस बातको नहीं समझते। वे दाँतोका काम आँतोसे लेना चाहते हैं। अगर सारे दाँत गिर जावें, तो भी मसूढ़ोंसे ही चबाकर खाना खाना चाहिये। जिनके सारे दाँत गिर जाते हैं, वे किसी न किसी तरह मसूढोंसे चबानेका काम कर भी सकते हैं। हाँ, जिनके कुछ दाँत गिर जाते हैं और कुछ रहजाते हैं, उन्हें भोजनके चबानेमें सचमुच ही बड़ी दिक्कत होती है।

दाँतोका मैला रहना ही दाँतोंके गिरनेका मुख्य कारण है। आज-कल लोग दाँतोकी सफाईकी तरफ कम ध्यान देते हैं, इसीसे आज-कल दन्त-रोगोंकी विशेष शिकायत सुनी जाती है। नीचे लिखे हुए कारणोंसे दन्तरोग होते हैं :—

(१) दाँत साफ न करनेकी आदत।
(२) नित्य नियमसे दाँतुन न करना।
(३) दाँत कुरेदनेकी आदत।
(४) भोजनके बाद दाँतोंको साफ न करना।
(५) गरमागर्म भोजन करना।
(६) गरमागर्म चाय या काफी पीना।
(७) गरम भोजन करके अत्यन्त शीतल जल पीना।
(८) खटाई ज़ियादा खाना।
(९) मीठे पदार्थ अधिक खाना।
(१०) दिन-भर बकरीकी तरह पान चबाना।
(११) तमाखू बारम्बार खाना।
(१२) दन्तरोग-पीड़ित मा-बापसे पैदा होना।
(१३) और भी मिथ्याहार विहार सेवन करना।

आजकल पहलेकी तरह दाँतुन करनेकी चाल नहीं रही । आज-कलके लोग दाँतुन करनेको फिजूल समय नष्ट करना समझते हैं । पहलेके लोग नीम या बबूल प्रभृतिकी दाँतुन किया करतेथे—सवेरे उठते ही पाखाने जाकर दाँतुन करतेथे, इसीसे उनके दाँत मोतीकी तरह चमकते और सत्तर अस्सी बरसकी उम्र तक जैसेके तैसे बने रहते थे । इस उम्रमें वे धड़ाके से चने चबा सकते थे । आजकल २५ या ३० बरसकी उम्रमें ही दाँत जवाब दे देते हैं । अनेकोंको इस उम्रमें पत्थर वग़ैरःके दाँत लगवाने पड़ते हैं । पर ये मनुष्यके बनाये दाँत क्या ईश्वरदत्त दाँतोंकी बराबरी कर सकते हैं ? हरगिज नहीं । जिन्हे संसारमें सुखसे जीना हो, सदा निरोग रहना हो, उन्हें हजार काम छोड़कर और आलस्य त्यागकर नित्य सवेरे ही नीम प्रभृतिकी दाँतुन करनी चाहिये और कोई उत्तम दन्तमञ्जन मलना चाहिये । दाँतुन और मञ्जनकी आदत डालनेसे दाँत सदा साफ रहेंगे, भोजन अच्छी तरह पचेगा, मुँहमें बदबू न पैदा होगी और पास बैठने-वाले आप पर नाक-भौं न सिकोड़ेंगे । याद रखो, दाँतों और जीभ पर जमा हुआ मैल ज़हरकी तासीर रखता है और खाने-पीनेके पदार्थोंके साथ पेटमें जाकर अनेक तरहके दुःखदायी रोग उत्पन्न करता है । बचपनमे ही माँ-बाप अगर दाँतुन करनेकी आदत डाल देते हैं, तो वही बच्चे बड़े होने पर भी इस अच्छी आदतको नहीं छोड़ते । लेकिन जिनके माँ बाप स्वयं दाँतुन नहीं करते और अपने बच्चोंको दाँतुन करना नहीं सिखाते, उनके बालक सदा दन्तपीड़ासे दुःखी होते और जल्दी ही पोपले होकर अपने माँ-बापकी त्रुटि पर नौ-नौ आँसू रोते हैं । हमारी खुदकी ऐसी ही दशा है । हमारे पिताने हमें दाँतुन करना नहीं सिखाया, इसलिए हमें इसकी आदत नहीं पड़ी । जब हमने पुस्तकोंमें दन्त-रक्षा-विषय देखा, यह आदत डालनी चाही, पर ठीक तौरसे आदत न पड़ी ; सदा समयके अभावका रोना रहा । और कामोंको हमें समय मिल जाता, पर इस परमावश्यक

कामके लिए समय नहीं मिलता । इसका बुरा नतीजा हम भोग रहे हैं । जिनकी हालत हमारी सी हो, उन्हें इन पंक्तियोंके पढ़ते ही दाँत साफ करनेकी आदत डालनी चाहिये और काम पड़े रहें, पर इस काममें ग़फ़लत न करनी चाहिये । पाठकोंपर असर पड़े, इसीलिए हमने अपनी मूर्खताकी बात निस्सङ्कोच भावसे पाठकोंके सामने रख दी है ।

दाँत साफ करनेसे ही काम न चलेगा, दाँत कुरेदनेकी आदत भी बुरी है । बारम्बार दाँत कुरेदनेसे दाँतोंकी जड़ें ढीली पड़ जाती हैं । जो लोग दियासलाईकी सींको या सोने-चाँदीकी कुरेदनियोंसे दाँत कुरेदा करते हैं ध्यान दें । भोजन कर चुकते ही कुरेदनीसे दाँतोंमें घुसा हुआ अन्न निकाल देनेमे बुराई नहीं—अगर दाँतोंमें अन्न का कण अटक जाय, ग्वारकी फली वग़ैरःका छिलका इलझ जाय, तो उसे सींक या दाँत कुरेदनीसे निकालकर कुल्ले कर डालने चाहियें । हर समय दाँत कुरेदना अच्छा नहीं । भोजन करके जो दाँतोंमें घुसे हुए अन्न या फलके टुकड़ोंको नहीं निकालते और ख़ूब अच्छी तरह कुल्ले करके दाँतोंको साफ नहीं करते, उनके दाढ़ दाँतों में खाये-पीये पदार्थ जमकर सड़ जाते हैं और फिर उनमे कीड़े पड़ जाते हैं । वे कीड़े दाँतोंको खा-खाकर पोले कर देते हैं और ऐसी तकलीफ देते हैं, कि बाज़-बाज़ औक़ात जान पर आ बनती है, मसूढ़े सूज जाते हैं, चपके चलते हैं और सिरमें वेदना होने लगती है ।

भोजन करके सुपारी, चूना, कत्था, लौंग, इलायची, दालचीनी, जायफल, जावित्री, धनियाँ, चिरमिटीकी पत्तियाँ और सौंफ आदि डालकर पान खाना बड़ा मुफ़ीद है । ऐसे पान खानेसे वातादिक दोष शान्त रहते हैं, जीभ साफ हो जाती है, रुचि होती है, मन प्रसन्न होता और कीड़े वग़ैरः तो स्वप्नमें भी नहीं पड सकते । हमारी बनाई "स्वास्थ्यरक्षा"में लिखी हुई विधिसे पान खाना सदा हित है । शास्त्रमें पान खानेके जो समय नियत हैं, उन्हीं पर पान चबाना

चाहिये, बकरीकी तरह हर दम पान चबाना अहितकर है। पान-पर-पान खानेसे उल्टा दाँतोंको नुक़सान पहुँचता है। बारम्बार तमाखू खानेसे भी दाँत नष्ट होते हैं; अतः या तो तमाखू खानी ही न चाहिये और यदि खाये बिना न सरे—चैन न पड़े—पेट दुखे तो, दिनमें एक दो बार ही तमाखू खाकर सन्तोष कर लेना चाहिये। तमाखूके तीक्ष्ण और गरम होनेकी वजहसे दाँतोंके बन्धन ढीले हो जाते हैं। आदत पड़ जानेसे मुखमें विरसता, भोजन न पचना और दस्त साफ न होना वग़ैरः शिकायतें पैदा हो जाती हैं। तमाखू पानमें रखकर खानेसे पित्त-रसके कारण पाखानेकी हाजत हो जाती है, पर तमाखूसे कोठेमें अत्यन्त खुश्की पहुँचनेकी वजहसे दस्त साफ नहीं होता। दाँतोंकी तकलीफोंसे बचनेके लिये बहुत लोग तमाखू खाने लगते हैं। दवाके तौर पर तमाखू खानेसे कभी-कभी लाभ हो सकता है पर आदत डाल लेनेसे वह प्रकृतिमें मिलकर कुछ भी लाभ नहीं करती. वरन् दाँतों और पेटको हानि करती है।

भोजन भी गरमागरम न करना चाहिये। गरम भोजनसे दाँतोंको तो नुक़सान पहुँचता ही है, इसके सिवा जठराग्नि पर भी बुरा असर होता है। जो लोग तवेसे उतरती गरम रोटियाँ खाते, चायके भाफ उठते हुए प्याले डकारते और गरम रोटी या भात वग़ैरः खाकर शीतल जल पीते हैं अथवा मौसम गरमामें सन्ध्या समय पूरी परा-मठे खाकर बर्फ़का ठण्डा पानी पीते हैं उनके दाँत निश्चय ही तकलीफ देते और अन्तमें असमयमें ही विदा हो जाते हैं। उनके साथी उनकी रक्षाकी ओरसे लापरवाही दिखाते हैं; अतः वे भी मोह त्याग कर अपने साथीको छोड़ देते हैं।

दन्तरक्षा-विधि।

अगर दाँतोंको सुरक्षित, निर्दोष और मजबूत रखना चाहते हो, तो नीचेकी हिदायतों पर अमल करो :—

(१) नित्य सवेरे नीम या बबूलकी दाँतुन करो।

(२) कोई मञ्जन मलकर कुल्ले करो।

(३) नित्य काली तिली या सरसोंके तेलके कुल्ले करो अथवा पिसा हुआ महीन सैंधानोन तेलमें मिलाकर, उससे दाँतोंको मलो। "चरक"में लिखा है, दाँतोंको निरोग और मजबूत रखनेवाली संसारमें जितनी औषधियाँ हैं, उनमें "तेलके कुल्ले" सर्वोपरि हैं।

(४) अगर कोई मञ्जन न हो, तो कोयलोंको महीन पीसकर कपडेमें छान लो और उसीसे दाँत मला करो। उससे दाँत खूब साफ रहते तथा सडन और पीला-पीला मैल दूर हो जाता है।

(५) खडियासे दाँत मलना भी लाभदायक है।

(६) नमक या वालूसे दाँत मलनेसे भी दाँत साफ रहते हैं।

दन्तरोग-चिकित्सा।

(दाँतोंकी बीमारियोंका इलाज)

(१) सोंठ, सरसों, हरड़, बहेड़ा और आमला—इनके काढ़ेके कुल्ले करनेसे शीताद रोग आराम हो जाता है।

(२) हीराकसीस, लोध, पीपर, मैनशिल, फलप्रयंगू और तेजबलको महीन पीसकर और "शहद"में मिलाकर लेप करनेसे शीताद से सडा हुआ मास निकल जाता है।

(३) फूलप्रियंगू, नागरमोथा और त्रिफला—इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे शीताद रोग नाश हो जाता है।

(४) पुण्डेरिया, मुलेठी, त्रिफला और कमल—इनको समान-

समान लेकर पानीके साथ पीस लो। फिर इस लुगदीके साथ तेल या घी पका लो। इस तेलके लगानेसे शीताद रोग आराम हो जाता है।

(५) वातनाशक औषधियोंके द्वारा पकाया हुआ तेल शीतादमें काम देता है।

नोट—शीताद रोग होनेसे अकस्मात मसूढ़ोंसे खून गिरने लगता है, फिर दन्तमांस क्रमशः सड़सड़कर, दुर्गन्धित, क्लेदयुक्त, काला और नम हो जाता और मसूढ़ा गिर पड़ता है।

(६) दन्तपुप्पुट रोग होनेसे तत्काल ही खून निकलवाना चाहिये तथा शिरोविरेचन नस्य देनी चाहिये और चिकना भोजन कराना चाहिये।

(७) तिल, चीता और सफेद सरसों—इनको एकत्र गरम जलमें पीसकर मुँहमें कवल धारण करना चाहिये। इससे दाँतोंकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—दो या तीन दाँतोंमें जो महासूजन होती है, उसे "दन्तपुप्पुट" कहते हैं।

(८) दन्तवेष्ट रोगमें, दाँतोंसे खून गिरता हो, तो लोध, पतङ्ग, मुलेठी और लाखको महीन पीस-छानकर "शहद"में मिला लो और ज़ख्म पर मलो।

(९) वटादि पञ्च क्षीरी वृक्षोंका काढ़ा बनाकर, उसमें शहद, घी और मिश्री मिलाओ और उस काढ़ेसे कुल्ले करो। दन्तवेष्ट रोग आराम हो जायगा।

(१०) मौलसरीकी छाल चबानेसे हिलते हुए दाँत जम जाते हैं।

(११) नागरमोथा, हरड़, त्रिकुटा, वायविडंग और नीमके पत्ते—इन सबको एकत्र गोमूत्रमें पीसकर गोली बनालो। इन गोलियोंको छायामें सुखाकर, रातको सोते समय, मुँहमें रखनेसे हिलते हुए दाँत स्थिर हो जाते हैं। हिलते हुए दाँतोंको जमानेवाली इससे

उत्तम और दवा नहीं है। इनसे दाँतोंके सब रोग आराम हो जाते हैं। इन गोलियोंको "भद्रमुस्तादि वटिका" कहते हैं। सुपरीक्षित है।

(१२) दशमूलके काढ़ेमे तेल या घी पकाकर और शहद मिलाकर दन्तधावनके लिए कवल धारण करना चाहिये। इससे भी दाँतोंके हिलने वगैरः में लाभ होता है।

नोट—जिस रोगके होनेसे मसूढ़ोंसे खून या राध बहती है और दाँत हिलते हैं, उसे "दन्तवेष्ट" कहते हैं।

(१३) अगर शौषिर रोग हो—दाँतोंकी जड़में पीड़ायुक्त सूजन हो और लार बहती हो, तो दाँतोंमे से खून निकलवाकर लोध, नागरमोथा और रसौतका चूर्ण "शहत"में मिलाकर लेप करो तथा पञ्चक्षीरी वृक्षोंके काढ़ेके कुल्ले करो।

नोट—शौषिर रोग होनेसे दाँतोंकी जड़में सूजन और पीड़ा होती है तथा लार बहती है।

(१४) शहद, पीपर और घी—इनको एकत्र मिलाकर, मुंहमें रखनेसे दाँतोंकी पीड़ा और उनका हिलना फौरन ही नाश हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(१५) हींग, कायफल, कशीश, सज्जी और कुटकी छाल—इनको पीसकर मुंह या दाँतोंके अन्दर रखनेसे दाँतोंका दर्द फौरन नाश हो जाता है।

(१६) शारिवा, कमल, मुलेठी अनन्तमूल, अगर और चन्दन—इनको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदी आध-पाव हो, तो आध सेर घी और पाँच सेर गायका दूध तथा लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, छान लो। इस घी की नास लेनेसे दाँतोंका दर्द अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—लुगदीसे चौगुना घी और घीसे दसगुना दूध लेनेका इस नुसखेमें विशेष नियम है।

(१७) अगर परिद्र रोग हो—मसूढ़ोंका मांस गल गया हो और थकते समय खून गिरता हो, तो वमन और विरेचन दो। परिद्र और उपकुशकी चिकित्सा "शीताद"की तरह करनी चाहिये।

(१८) कठूमरके पत्तोंसे घिसकर दाँतोंका खून निकालो तथा सधानोन, शहद और त्रिकुटेका चूर्ण मिलाकर धीरे-धीरे दाँतों पर घिसो। इस नुसख़ेसे परिद्र और उपकुश आराम हो जाते हैं।

(१९) पीपर, सफेद सरसों, फिटकरी और सोंठ—इनको पीसकर और गुनगुने पानीमें मिलाकर गरगरे या कुल्ले करनेसे उपकुश रोग आराम हो जाता है।

(२०) दोनों तरहकी पीपरोंको पीसकर और "शहद"में मिलाकर मुंहमें रखकर फिरानेसे परिद्र और उपकुश रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) पटोलपत्र, नीम और त्रिफला—इनके काढ़ेसे दाँत धोनेसे परिद्र और उपकुश आराम हो जाते हैं।

नोट—मसूढ़ोंका मांस गलने और थूकते समय खून गिरनेको "परिद्र" कहते हैं। मसूढोंमें जलन हो और वे पक जायें तथा दांत हिलने लगें और मसूढे सुज जायें तथा थोड़ा-थोड़ा दर्द हो, तो "उपकुश" कहते हैं।

(२२) दन्त नाड़ीव्रण हो तो नाड़ीव्रणकी तरह इलाज करना चाहिये। जिस दाँतमें वह नाडी हो, उस दाँतको उखाड डालना चाहिये। ऐसे दाँतके न उखाड़नेसे नाड़ीकी गति हड्डीमें हो जाती है; पर ऊपरका दाँत उखाडना उचित नहीं है। ऊपरका दाँत उखाडनेसे खून जियादा बहने लगता है। इससे घोर रोग हो जाते हैं अथवा रोगी उस ओर की आँखको खोकर काना हो जाता है; अतः ऊपरका हिलता हुआ दाँत भी न उखाड़ाना चाहिये।

(२०) जावित्री, माजूफल और कुटकी—इनका काढ़ा मुंहमें रखनेसे दन्त नाड़ी आराम हो जाती है।

(२१) लोध, खैर, मंजीठ और मुलेठी—इनको समान-समान

लेकर और सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चोगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर तेल पका लो। इस तेलके लगानेसे दन्त नाड़ी आराम हो जाती है।

(२२) चमेलीके पत्ते, मैनफल, गोखरु और खैर—इनके काढ़ेसे दाँत धोनेसे दन्त नाड़ी आराम हो जाती है।

(२३) चमेलीके पत्ते, मैनफल, कटेरी, गोखरु, लोध, खैर, मँजीठ और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर और नं० २१की तरह तेल पका कर लगानेसे दन्त नाड़ी आराम हो जाती है।

(२४) दन्तहर्ष रोगमें स्नैहिक धूम पान, स्नैहिक नस्य, पेया, रसदार यवागू, दूधकी मलाई, घी, शिरोवस्ति और वात नाशक क्रियाएँ हितकारी हैं।

(२५) वायुके कोपसे दाँतोंमें तोड़ने सरीखी पीड़ा और हर्ष हो, तो गरम तेल-घी, वातनाशक काढ़े और कवल—इनसे काम लो।

नोट—जिस रोगमें दाँत शीत, रुक्ष, खटाई और वात वग़ैरःके स्पर्शको न सह-सके वह "दन्त हर्ष" है।

(२६) अगर दन्त-शर्करा हो, तो दाँतोंकी जड़को न खोदो, किन्तु दन्त-शर्कराको नश्तरसे चीरकर निकाल डालो और फिर लाखका चूर्ण "शहद"में मिलाकर उस जगह घिसो।

नोट—दन्त हर्षमें जो इलाज लिख आये हैं, वही सब दन्त-शर्करामें भी कर सकते हो, देखो नं० २४।२५। कपालिका नामक दन्तरोग यद्यपि अत्यन्त कष्टसाध्य है, तथापि उसकी चिकित्सा भी "दन्त हर्ष"के ही समान करनी चाहिये।

(२७) कृमि दन्त रोगमें, हींग गरम करके लेप करो अथवा गरम हींगको दाँतके बीचमे या दाढ़के नीचे रखो। इससे दाँतका कीडा मर जायगा।

(२८) बड़ी कटेरी, भूमिकदम्ब, अरण्डकी जड़ और छोटी कटेरी का काढ़ा बना कर, उसमें तेल मिलाओ और फिर उससे कुल्ले

करो । इससे कृमि दन्तकी पीड़ा यानी दाँतोंमें कीड़ा होनेसे जो भयानक दर्द होता है, आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—भूमिकदम्ब=गोरखमुण्डी ।

(२६) द्रोणपुष्पीका स्वरस, समन्दरफेन, शहद और तेल—इनको एकत्र मिलाकर कानमें डालनेसे दाँतोंके कीड़े नाश हो जाते हैं ।

(३०) थूहरकी जड़ चबाकर दाँतके नीचे दबा रखनेसे कीड़ा गिर जाता है ।

(३१) बिजौरे नीबूकी जड़ और बावचीकी जड़ बराबर बराबर लेकर पानीके साथ पीस लो और बत्ती बना लो । इस बत्तीको दाँतोंमें रखने और दाँतोंसे चबानेसे तत्काल ही कृमि दन्त आराम हो जाता है ।

(३२) आक, थूहर अथवा सहुड़का दूध दाँतोंमें भरनेसे दाँतोंके कीड़े नष्ट हो जाते हैं ।

(३३) दन्ती, सत्यानाशी कटेरी, कशीश, बायबिड़ङ्ग और इन्द्रजौ—सबको बराबर-बराबर लेकर और पीस छान कर दाँतोंमें रखनेसे दाँतोंके कीड़े नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—इस चूर्णको थूहर और आकके दूधमें मिलाकर दाँतोंके छेदमें भरनेसे जल्दी ही लाभ हो जाता है ।

(३४) कैंकड़ेका पर पीस कर दाँतमें लेप करनेसे नींदमें दाँत घिसना बन्द हो जाता है ।

(३५) कैंकड़ेका पैर गायके दूधमें ओटाओ, जब वह खूब गाढ़ा हो जाय, उसे पैरमें लेप करके सोओ । इससे भी दाँत घिसना या सोतेमें दाँत कड़कड़ाना बन्द हो जाता है ।

(३६) हनुमोक्षके लक्षण अर्दित रोगके समान होते हैं और उसका इलाज भी अर्दितकी तरह ही होता है ।

(३७) मालकाँगनी, लोध, कूट, दारुहल्दी, पाठा, समंगा, कुटकी, तेजपात और पीपरामूल,—इनका चूर्ण घीमें मिलाकर दाँतोंमे

लगानेसे दाँतोंसे खून बहना, दाँतोंका दर्द, मांस गिरना या फटना वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३८) शहद या सरसोंका तेल अथवा काँजीके गरगरे—कुल्ले करनेसे मसूढ़ोंके सब रोग नाश हो जाते है। परीक्षित है।

(३९) दन्तवैदर्भ, अधिदन्त, अधिमांस और शौषिर रोग शस्त्र-साध्य हैं अर्थात् ये चीरफाड़से ही आराम हो सकते हैं— दवासे नहीं।

(४०) जाई या जाती अथवा चमेलीके पत्ते, पुनर्नवा, छोटी इलायची, कूट, वच, सोंठ, अजवायन और हरड़, इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको मुहमें रखनेसे वात, कीड़े, दाँतोंका दर्द, दुर्गन्धि दोष और दाँतोंका हिलना वग़ैरः सभी दाँतोंके रोग नाश होते हैं। यह नुसख़ा ख़ासकर दन्त नाड़ी पर अच्छा है।

(४१) विसोंटेकी जड़की छाल, खैरसार, लोध, मँजीठ, कूट और कुटकी—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको दाँतोंपर घिसनेसे दाँतोंका मैल, दाँतोंका दर्द, दाँतोंके कीड़े और मसूढ़े फूलना वग़ैरः दन्तरोग नाश हो जाते हैं। दाँतोंसे खून निकलने पर तो रामबाण ही है। परीक्षित है।

दाँतोंके रोगोंपर हकीमी नुसख़े।

नोट—अगर दाँतोंमें पीड़ा हो तो गरम पानीसे कुल्ले करो। अगर गरम पानीके कुल्लोंसे आराम मालूम हो, तो सर्दीसे पीड़ा समझो। अगर गरम पानीके कुल्लोंसे पीड़ा न घटे या उलटी बढ़े तो शीतल जलसे कुल्ले करो। अगर सर्द पानीके कुल्ले करनेसे आराम हो, तो गरमीसे दर्द समझो। दाँतोंमें गरमीसे दर्द है या सर्दीसे—इस बातके जाननेका यह सीधा और सच्चा उपाय है।

अगर दाँतोंके हिलनेसे दर्द हो, मगर दाँत कम हिलते हों और उखाड़ा न हो, तो उपाय करो । अगर दांत बहुत हिलते हों तो उन्हें उखाड़ डालो । जो मनुष्य सदा "नरकचूर" मुँहमें रखता है, उसको दाँतोंका रोग नहीं सताता , दांत मजबूत बने रहते हैं ।

(१) हल्दी महीन पीसकर, कपड़ेमें रखकर दुखनेवाले दाँतके नीचे रखने और हल्दीको ही दाँतोंपर मलनेसे दाँतका दर्द आराम हो जाता है ।

(२) अदरखके पतले कतलोंपर नमक लगाकर, पीड़ावाले दाँत के नीचे रखनेसे सरदीसे होनेवाला दर्द आराम हो जाता है ।

(३) काली मिर्च और तुलसीकी पत्तियाँ पीस कर गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंको दाँतके नीचे रखनेसे सरदीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है ।

(४) बिनौला गरम करके दाँतके नीचे दबा कर सो रहने से अथवा बिनौलेके काढ़ेके कुल्ले करनेसे सरदीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है ।

(५) मँजीठ लगानेसे सर्दीकी दन्त पीड़ा नाश हो जाती है ।

(६) अखरोटके दूधमें रूई भिगोकर दाँतों-तले दबानेसे दन्त-पीड़ा नष्ट हो जाती है ।

(७) ईसबगोल सिरकेमें भिगोकर दाँतों पर रखनेसे गरमीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है ।

(८) कपूरका टुकडा दाँतोंके नीचे रखनेसे पुराना दाँतोंका दर्द आराम हो जाता है अगर दाँतको कीड़े खा गये हों, तो कीड़े के किये हुए छेदमें कपूर रखदो । इससे कीड़े मर जायँगे और छेद न बढ़ेगा । यह कृमिदन्त रोग पर अकसीर है । परीक्षित है ।

(९) अकरकरा १ भाग, नौसादर ५ भाग और अफीम ५ भाग —इनको पीसकर कीड़ेके खाये हुए छेदमें रखो । इससे कीड़े मर जायँगे और पीडा आराम हो जायगी ।

(१०) अदरखको कूट कर शहद और सिरकेमें मिला लो और कीड़ेके खाये दाँतके छेदमें रख दो । अवश्य लाभ होगा ।

(११) मदारकी जडकी छाल एक माशे लेकर पानीमें भिगोकर दाँतोंमें रखनेसे दाँतोका दर्द मिट जाता है ।

(१२) ज्वारके दाने बराबर "नौसादर" रूईमें लपेट कर दाँतके नीचे रखनेसे लार बहेगी और पीड़ा आराम हो जायगी ।

(१३) ज़रासी गन्धक सिरकेमें मिला लो । फिर उसमें रूई भिगोकर कीड़े खाये हुए दाँतमें रख दो । अवश्य लाभ होगा ।

(१४) प्याज़ और कलौंजी—बराबर-बराबर लेकर, चिलममें रखकर, तमाखूकी जगह उसका धूआँ पीओ । इतना पीओ कि लार बहनेका तार न टूटे । ख़राब पानी निकल जानेसे दर्द और मसूढ़ोंकी सूजन आराम हो जायगी ।

(१५) अकरकरा और मस्तगी बराबर-बराबर लेकर थोड़ेसे मोममें मिला लो और एक चने-समान दाँतके नीचे रखो । इससे लार बहेगी और दन्तपीड़ा आराम हो जायगी ।

(१६) छोटी कटेरीका फल चिलममें रख कर ऊपरसे आग रखो और हुक्के पर धर कर तमाखूकी तरह पीओ । जो धूआँ मुँहमें जाय, उसे बने जहाँ तक मुँहमें रोको । इससे कीडेके कारणसे हुआ दाँतका दर्द आराम हो जाता है ।

(१७) सुहागा और मोम मिलाकर कीड़ेके खाये हुए दाँतके छेदमेंसे रखनेसे दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है ।

(१८) छोटे बालकका गिरा हुआ दूधका दाँत जन्तरमें मढ़वाकर पास रखनेसे दाँतका दर्द मिट जाता है ।

(१९) पीलूकी लकड़ीकी दाँतुन करनेसे दाँत पुष्ट होते हैं ।

(२०) नीमकी दाँतुन करनेसे दाँतोंमें कीडे नहीं पडते और गरमीसे दाँतोंमें दर्द नहीं होता ।

(२१) भुनी फिटकरी ४ माशे, भुने हुए करंजुए दो नग, भुना

तूतिया ४ माशे और कालीमिर्च नग १२ सबको पीस-छान लो। इस चूर्णके दाँतों पर मलनेसे दाँतोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२२) तम्बाकू दो भाग और कालीमिर्च एक भाग लेकर पीस-छान लो। इसके दाँतों पर मलनेसे सर्दीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(२३) करंजुवा जला कर राख कर लो और उसमें नमक मिला लो। इसके मलनेसे सब तरहकी दन्तपीड़ा आराम हो जाती है।

(२४) सज्जी और कालीमिर्च पीस कर मलनेसे सर्दीकी दन्त-पीड़ा आराम होती है।

(२५) अकरकरा और कपूर—दोनों समान-समान लेकर पीस लो। फिर इस चूर्णको दाँतों पर लो। इससे हर तरहकी दन्त-पीड़ा आराम होती है। गर्मी या सर्दीकी परीक्षा करनेकी दरकार नहीं। जब तक आराम न हो, घण्टे-घण्टे या दो-दो घण्टेमें मलो और मुँह नीचा कर दो-ताकि पानी निकल जाय। यह नुसख़ा बेशक दन्त-पीड़ा पर रामवाण है। सैकड़ों बार परीक्षाकी है।

(२६) भुनी फिटकरी १ माशे, कत्था १॥ माशे और भुना तूतिया २ रत्ती—इनको पीस-छान कर रख लो। इस मञ्जनके दाँतोंमें मलनेसे दाँत मजबूत हो जाते हैं।

(२७) सब्ज तूतिया घीमें जलाया हुआ १० माशे, नीमकी पत्तियोंकी राख १० माशे और संगज़राहत या सेल खड़ी २० माशे सबको मिलाकर पीस लो। इस मंजनको दाँतों पर मलनेसे दाँतोंके रोग नाश होकर दाँत मजबूत हो जाते हैं।

नोट—नीमकी पत्तियोंको एक कुल्हड़में भर कर फूँक लो।

(२८) कत्था सफेद १ तोले, सेवतीके सूखे फूल तीन माशे, गुलेनार ३ माशे, मस्तगी ४ रत्ती, बड़ी इलायची ६ माशे, मिस्सी १ तोले, भुनी सुपारी १॥ तोले और भुना धनिया ६ माशे—इन

सबको कुल्हड़ेमे रख कर आग पर भूनो, जब राख हो जाय पीस-छान लो। इस मंजनके लगानेसे दाँतोंके दर्द वग़ैरः सब शिकायतें रफ़ा होकर दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

(२६) रेवन्दचीनी पीस कर उसमें बराबरकी "मिस्सो" मिला लो और दाँतों पर मलो। इसके लगानेसे दन्त-पीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

(३०) भिलावे, सुपारी और माजूफल—तीनोंको एक कुल्हड़ेमे भर कर आग पर रख दो। जब राख हो जाय, पीस-छान लो। इस मंजनसे दाँत मज़बूत होते और लार बहकर दन्त-पीड़ा नाश हो जाती है।

(३१) फिटकरी ८ माशे और नमक ४ माशे पीस-छान कर दाँतों पर मलनेसे दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

(३२) तूतियेको तवे पर रख कर आग पर चढ़ा दो और लोहेके दस्तेसे पीसो। फिर आगसे उतार कर सिल पर पीस लो। इससे दाँतोंका दर्द और दाँतोंका कीड़ा नष्ट हो जाता है।

(३३) जामुनकी लकड़ीकी राख दाँतों पर मलनेसे दाँतोंसे ख़ून आना बन्द हो जाता है।

(३४) मौलसरीकी लकड़ीकी राख मलनेसे भी दाँतोंसे ख़ून आना बन्द हो जाता है।

(३५) संगज़राहत या सेलखड़ी पीस कर दाँतों पर मलनेसे दाँतोंसे ख़ून आना बन्द हो जाता है।

(३६) कचनारकी लकड़ीकी राख मलनेसे मसूढ़ोंसे ख़ून आना बन्द हो जाता है।

(३७) राईको पीस-छान कर दाँतों पर मलनेसे दन्त-पीड़ा नाश हो जाती है।

(३८) बारहसिंगेका सींग जलाकर पीस लो। इस राखके मलनेसे दाँत मज़बूत और ख़ूब साफ होते हैं।

नोट—सींगको रेतीसे रेतकर या छोटे-छोटे टुकड़े करके एक कुल्हड़में रखो और मुँह बन्द करके कपरौटी करो और कण्डोंमें रखकर आग लगा दो। पीछे निकाल कर पीस-छान लो। इस राखको दाँतोंपर मलनेसे दाँत साफ होते और एक माशे इसी राखको ३ माशे "गरम घी"में मिलाकर खानेसे हृदयका घोर शूल एवं पसलीका दर्द वगैरः प्रायः सभी शूल नाश हो जाते हैं।

(३९) मसूरको जलाकर पीस-छान लो। इस राखको मलनेसे दाँत खूब साफ हो जाते हैं।

(४०) सरूकी पत्तियोंकी राख मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं।

(४१) बड़की छाल पीसकर दाँतोंके नीचे रखनेसे दाँतोंका दर्द आराम हो जाता हैं।

(४२) सीपकी राख मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं।

(४३) बालछड़ पीस-छानकर मलनेसे मसूढ़े और दाँत मज़बूत होते और मुँहमें सुगन्धि आती है।

(४४) सिरसका गोंद और काली मिर्च पीसकर मलनेसे दाँतों-का दर्द मिटता और दाँत पुष्ट होते हैं।

(४५) चमेलीकी पत्ती १ मुट्ठी और इस्पन्द डेढ़ तोले लेकर सेर-भर पानीमें औटाओ। जब पाव-भर पानी रह जाय छानकर कुल्ले करो। इस काढ़ेके कुल्लोंसे दाँतोंके कीड़े मर जाते और उनकी वजहसे हुई दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(४६) पीपलकी छाल और बड़की छाल चार-चार तोले लेकर कुचल लो और सेर-भर पानीमें औटाओ। जब पाव-भर पानी रह जाय, छानकर कुल्ले करो। इस काढ़ेसे दन्त-पीड़ा तत्काल आराम हो जाती है।

(४७) फिटकरी १ तोले और मोचरस ६ माशे दोनोंको कूटकर आध सेर पानीमें औटाओ, जब पाव-भर पानी रह जाय मल-छान कर कुल्ले करो। इससे दाँतोंका दर्द फौरन आराम होता और दाँत मजबूत होते हैं।

(४८) मकोय, ख़शख़ाशका पोस्ता, इस्पन्द और मंजीठ—एक-एक तोले लेकर, सेर-भर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, मल-छान लो। गरमागर्म काढ़ेके कुल्ले करनेसे दाँतोंका वह दर्द आराम होता है जो नजले, वात, तरी एवं मसूड़ोंके ढीले होनेसे होता है।

(४९) मसूर,ख़शख़ाशके पोस्ते और अकरकरा,—इनको एक-एक तोले लेकर सेर-भर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय छान लो। इस काढ़ेके कुल्ले कई बार करनेसे दाँतोंका दर्द आराम हो जाता है।

(५०) फिटकरी और माजूफलको औटाकर कुल्ले करनेसे दाँतों से मैल या पीप आना बन्द हो जाता है।

(५१) काले चने भिगोकर औटालो और गरमा-गरम रहते कुल्ले करो। इससे मसूढ़ोंकी सूजन उतर जाती है।

(५२) कटाईका पेड़ मय डाल, फल और फूलके लाकर कूटो और स्वरस निकाल लो। इस स्वरसके कुल्ले करनेसे दाँतोंका दर्द और दाँतोंके कीड़े जादूकी तरह नष्ट होते हैं। अगर कीड़ोंने दाँत खा-खाकर पोले ही कर डाले हों, तो चार दिनतक कुल्ले करनेसे एक दम आराम हो जायगा।

नोट—अगर कटाईका पञ्चांग ताज़ा न मिले, तो सूखेको ही पानीमें औटा लो और चौथाई पानी रहनेपर छानकर कुल्ले करो।

(५२ क) सरेरूके फूल औटाकर कुल्ले करने; पियाबाँसेकी पत्तियाँ औटाकर कुल्ले करने; मौलसरीकी छाल औटाकर कुल्ले करने; कचनारकी छाल औटाकर कुल्ले करने; सिरसकी छाल औटाकर कल्ले करने अथवा रूसे या अडूसेकी पत्तियाँ औटाकर कुल्ले करनेसे कीड़ोंके खानेसे हुई घोर दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है। ये छै नुसख़े हैं। इनमेंसे किसी एकसे काम लेना चाहिये—छहोंसे नहीं। एकसे लाभ न हो, तब दूसरेसे काम ले सकते हो।

(५३) गरम पानीके कुल्ले करनेसे मसूढ़ोंका दर्द जाता रहता है।

(५४) माजूफल पीसकर मलनेसे दाँतोंसे खून आना बन्द होता और मसूढ़े मजबूत हो जाते हैं।

(५५) इस्पन्द पीसकर और कुछ गरम पानीमें मिलाकर; जहाँ दर्द हो, गालों पर लगाओ। इससे पीड़ामें शान्ति आती है।

(५६) खट्टी और कसैली चीज खानेसे दाँत खट्टे हो जाते हैं यानी आम जाते हैं। अगर ऐसा हो, तो गेहूँकी गरम रोटी दाँतोंके नीचे दवाओ; अवश्य लाभ होगा।

(५७) नारियलकी गरी, बादामकी गरी, पीला मोम और हींग—इनको बराबर-बराबर लेकर मिला लो और चबाओ। इससे दाँतोंका खट्टा होना या आमना मिट जाता है।

(५८) नमक पीसकर मलनेसे दाँतोंका खट्टापन फौरन मिटता है। दाँत आमनेमें "नमक"का मलना सबसे उत्तम है।

(५९) अगर दाँतोंमें छेद हो गये हों, तो नौसादर और अफीम कूटकर दाँतोंके छेदोंमें रखो अथवा मस्तगी पीसकर दाँतोंके छेदोंमें रखो और मस्तगीकोही पीसकर दाँतोंपर लगा दो।

(६०) पीली हरड़की छाल ८ माशे, मकोय ८ माशे, इस्पन्द ८ माशे, धनिया ८ माशे, ख़शख़ाशके पोस्ते नग दो और अजवायन ८ माशे—इन सबको आध सेर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, मल-छानकर कुल्ल करो। इस काढ़ेके कुल्ले करनेसे दाँतो में छेद होना, दाँतोंका दर्द और मसूढ़ोंकी सूजन या मसूढ़े फूलना—ये सब आराम होते हैं।

(६१) गुल रोग़न मकोयके पत्तोंके स्वरसमें मिलाकर बालकके मसूढ़ोंपर मलनेसे दाँत निकलनेकी पीड़ा कम हो जाती है और दाँत आसानीसे निकल आते हैं।

(६२) छछूंदरका होठ या संभालूकी जड़ बालकके गलेमें लटकानेसे दाँत ख़ूब आरामसे निकलते हैं।

(६३) कपूर और बङ्गभस्म मिलाकर पानमें खानेसे मुखकी बदबू जाती रहती है।

(६४) अकरकरा, तज और मस्तगी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसको मलनेसे गरमीकी दन्तपीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

नोट—सर्द पानी मुँहमें भरकर कुल्ले करो। अगर शीतल जलसे आराम मालूम हो, तो गरमीका दर्द समझो।

(६५) धनिया, गुलाबके फूल, चन्दन और कपूर समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसके मलनेसे भी गरमीकी दन्तपीड़ा और गरमीका सिर दर्द दोनों ही फौरन आराम होते हैं। सिर पर लगाना हो, तो पानीमें पीसकर लगाना चाहिये। परीक्षित है।

(६६) कौड़ी, फिटकरी, सज्जी, नमक और अफीम सबको पीसकर दाँतों पर मलनेसे सरदीको दन्तपीड़ा आराम हो जाती है।

(६७) हींग और वायविडंगको दाँतमें रखनेसे कीड़ोंके कारण से हुआ दाँतका दर्द आराम हो जाता है।

(६८) वायविडङ्गको चिलममें तमाखूकी जगह रखकर और ऊपरसे बिना धूएँ को आग रखकर चिलम पीनेसे मुँहसे लार बहती और दाँतका दर्द चाहे कीड़ोंको वजहसे हो और चाहे गरमी-सरदीसे हो आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६९) प्याजके बीज ३ माशे और अजवायन ६ माशे—इन दोनोंको तमाखूकी जगह चिलममें रखकर धूआँ पीनेसे दाँतके कीड़े मर जाते और दन्तपीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७०) कुचला और कालीमिर्च समान-समान लेकर आगपर सेक लो। फिर पीस-छान कर दाँतों पर मलो। इससे हर तरहकी

दन्तपीड़ा नाश हो जाती है। दाढमें कीड़ा लग जानेसे अक्सर मुंह सूज जाता है, इस से वह भी आराम हो जाता है।

(७१) दाँतोंमें दर्द शुरु होते हुई पहले थोड़ासा नोन चवाकर कुल्ले करो। फिर कटाई या मौलसरी या कीकर की दाँतुन करो। इन उपायोसे दाँत पत्थरकी तरह मजवूत हो जाते हैं।

(७२) वड़के अङ्कुरोंका या कालीमिर्चोंका या लौंगका काढ़ा बनाकर, उसको चन्द बूंदें कानमें टपकानेसे दाँत और दाढ़की पीड़ा तत्काल बिजलीकी तरह आराम हो जाती है।

(७३) कीड़ोंके खाये हुए खोखले दाँत या दाढ़के अन्दर नौसादर और कपूरकी टिकिया या पोटली रखनेसे पीडा तत्काल दूर हो जाती है।

(७४) अफीम, तमाखू और नीमके पत्ते—इनको एकत्र पीसकर मूंग-समान गोलियाँ बना लो। पोले दाढ़-दाँतमे गोली रखनेसे दाँत-दाढ़ोंके कीड़े मर जाते हैं।

नोट—जो तमाखूको पसन्द न करे, उसकी जगह हींग मिला सकते है।

(७५) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और नागकेशर—इनको पीस-छान लो। फिर ज़रासा "कालानोन" पीस-छान कर मिला दो और इससे दाँतोंको मलो। इस मञ्जनसे दाँतोंकी पीड़ा और कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(७६) थूहरकी जड या अकरकरा या अजवायन या नीलवृक्षकी जड—इनमें से किसी एकको पीसकर पोले दाँतोमें रखनेसे दाँतोंके कीड़े नाश होकर पीड़ा आराम हो जाती है।

(७७) क्रियाजूटके पानीमें रूईकी फुरेरी भिगो कर दाँतके भीतर रखो। इससे दाँतोंकी पीड़ा फौरन आराम होती है।

(७८) अजवायनका फूल, कपूर और पिपरमिन्टका सत्त—इन तीनोंको समान-समान लेकर एक शीशीमें रखकर काग लगा दो। जब ये गल कर मिल जाय, इसमें रूईकी फुरेरी भिगोकर दाँतमें रख

दो या लगा दो—दाँतोंकी पीडा, कीडेकी तकलीफ और मसूढ़े फूलनेकी पीडा ये सब तत्काल आराम होते हैं । यही "अमृतधारा" है । इस दवाके खानेसे पेटका दर्द, जी मिचलाना, कय होना और ख़राब डकारें आना वगैरः भी आराम होते हैं । इसके लगानेसे बिच्छू, बर्र, ततैया और मधुमक्खीका ज़हर भी उतर जाता है ।

(७६) वायविडङ्गको तमाखूकी जगह चिलममें रखकर, ऊपरसे विना धूएँका साफ अंगारा रखकर, तमाखूकी तरह पीनेसे ढेरों पानी निकल कर दन्तपीडा आराम हो जाती है ।

(८०) पाँचों नमक, भुना हुआ नीला थोथा, सोंठ, मिर्च, पीपर, पीपरामूल, हीराकसीस, माजूफल और वायविडङ्ग—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो । इस मञ्जनके लगानेसे सब तरहकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है । परीक्षित है ।

(८१) कवावचीनी, लौंग, छोटी इलायची और वडी इलायची—एक-एक माशे और कस्तूरी एक रत्ती ले लो । कस्तूरीको छोड़कर वाक़ी दवाओंको पीस-छान लो और फिर कस्तूरी मिला लो । इसमेंसे थोड़ी-थोडी दवा मुँहमें रखनेसे मुँहकी वदबू चली जाती और सुगन्ध हो जाती है ।

नोट—अगर मुँहमें बहुत ही वदबू आती हो, तो दस्त कराकर पेट साफ कर लो । इसके बाद ऊपरकी दवा मुँहमें रखाओ ।

(८२) माजूफल और कुलफेके बीजोंको पानीमें घोलकर कुल्ले करनेसे मसूढ़ोंसे खून जाना बन्द हो जाता है ।

(८३) पीले फूलकी कटसरैया और अकरकरा कूट कर दाढ़के नीचे रखनेसे दाढ़का दर्द आराम हो जाता है ।

(८४) कटसरैयाका रस "शहद" मिलाकर दाँतोंमें लगानेसे मसूढ़ोंसे खून जाना बन्द हो जाता है ।

(८५) कटसरैयाके पत्ते चवाकर दाँतोंके नीचे रखनेसे दाँतोंका दर्द मिट जाता है ।

(८६) खीरेतीकी लकडीकी दांतुन करनेसे दांत मजबूत हो जाते और पीडा नाश हो जाती है। खीरेंती मराठी नाम है।

(८७) कायफलकी छालको औटाकर कुल्ले करनेसे दांत मजबूत हो जाते हैं।

(८८) कडवी तोरईके चूर्णका धूआँ चुरटकी तरह पीनेसे दाँतों के कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८६) कपूर और अफीम मिलाकर दाढ़-दांतमें रखनेसे दन्त पीड़ा आराम हो जाती है।

(६०) कत्था २ तोले, माँया १ तोले, कपूर ३ माशे, चाक ४ तोले और बबूलकी छाल २ तोले इन सबको पीसकर दाँतों पर मलनेसे दाँतोंका दर्द जाता रहता है।

(६१) कडवे बादामकी मींगी और जायफल मिलाकर चबानेसे दाँतोंके रह जानेमें लाभ होता है।

(६२) सोंठ और कुंदरु गोंद महीन पीस कर नाकमें फूंकनेसे दाँतोंका रह जाना आराम हो जाता है।

(६३) नीमकी जडके काढ़ेमें जरासी फिटकरी डाल कर कुल्ले करनेसे दाँतोंका दर्द जाता रहता है।

(६४) अर्क कपूर फुरेरीसे दाँतोंमें लगानेसे दांतोंका दर्द मिट जाता है।

(६५) घी या तेलके कुल्ले करनेसे दाँत मजबूत हो जाते हैं। "चरक"में तेलके कुल्ले दाँतोके लिए सर्व्वश्रेष्ठ लिखे हैं।

बालकोंके दाँत निकलनेके समयकी तकलीफोंके उपाय

(१) सिरसके बीजोंमें सूईसे छेदकरो, फिर उनको धागेमें पिरोकर उनकी माला बच्चेके गलेमें इस तरह पहना दो, कि वह माला बालकके गलेको छूती रहे। इससे बालकोंके दाँत बड़ी आसानी से निकल आते हैं। जो विलायती बिजलीके फीते पर आशिक़ हैं, वे इस बिना कौडीकी दवाकी परीक्षा कर देखें। परीक्षित है।

(२) सीपियोंकी माला बालकके गलेमें पहनानेसे दाँत आसानी से निकलते हैं।

(३) कपूरकी चकतियोंकी माला बालकके गलेमें डालनेसे दाँत बड़ी आसानीसे निकलते हैं।

(४) कौड़ीकी भस्म "शहद"में मिलाकर मसूढ़ों पर मलनेसे दाँत आसानीसे निकल आते हैं।

(५) सुहागेको "शहद"के साथ पीसकर मसूढ़ों पर मलनेसे बालकोंके दाँत आसानीसे निकल आते हैं।

(६) धायके फूल और पीपलोंके चूर्णको "शहद"में मिलाकर मसूढ़ो पर मलनेसे दाँत बिना कष्टके सहजमें निकल आते हैं।

(७) केवल कच्चे आमले या कच्ची हल्दीके रसको मसूढ़ों पर मलनेसे दाँत सहजमें निकल आते हैं।

(८) तुम्बरूके बीज या कायफल बालकके गलेमें बाँधनेसे भी दाँत शीघ्र ही निकल आते हैं।

नोट—अगर ऊपरके उपायोंसे कुछ भी लाभ न हो, तो एक धानसे मसूढ़

को ज़रा चीर दे अथवा नश्तरसे ज़रा चिरवा दे। ऐसा करनेसे दाँत सहजमें निकल आयेंगे।

(६) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, अजवायन, अजमोद, हल्दी, मुलेठी, देवदारु, दारुहल्दी, वायबिडंग, इलायची, नागकेशर, नागरमोथा, कचूर, काकड़ासिंगी और खिरिया संचरनोन—इन अठारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें जितनी-जितनी दवाएं ली हों, उतनी-उतनी अभ्रकभस्म, शंखभस्म, लोहा भस्म और सोना माखी की भस्म मिला दो। फिर पानीके साथ खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। इसमेंसे एक-एक गोली जलके साथ घिस-घिस कर मसूढ़ोंपर दिनमें दो तीन बार नित्य लगाओ; सहजमें दाँत निकल आवेंगे।

दन्तरोगोंपर उत्तमोत्तम योग।

बकुलाद्य तैल।

मौलसरीके फल, लोध, वज्रवल्ली, पियावाँसा, अमलताशकी जड़, बबूलकी छाल, अश्वकर्ण, खैर और विजयसार—इनमेंसे प्रत्येकको साढ़े पाँच-पाँच छटाँक ले लो और सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, उतारकर छानलो।

ऊपरकी नौ दवाओंको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो और लुगदी बना लो। फिर तिलीका तेल एक सेर, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल मात्र रह जाय उतार कर छान लो।

इस तेलके मुँहमें धारण करने या गरगरे करने और नास लेनेसे हिलते हुए दाँत वज्रवत् मज़बूत हो जाते हैं।

सहचराद्य तैल।

नीलेफूलका पियावाँसा पाँच सेर लेकर पच्चीस सेर पानीमें औटाओ; जब पकते-पकते सवा छे सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

धमासा, खैर, दुर्गन्धित खैर, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, मुलेठी और कमल—हरेक चीज दो-दो तोले लेकर सिलपर पीस लो।

अब एक सेर तिलीका तेल, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलके मुँहमे रखनेसे दाँत तत्काल जम जाते हैं।

मुस्तादि वटिका।

नागरमोथा, हरड़, सोंठ, मिर्च, पीपर, वायविडङ्ग और नीमके पत्ते—इनको समान-समान लेकर गोमूत्रमें पीस लो और गोली बनाकर छायामें सुखा लो। यही "मुस्तादि वटिका" है। इन गोलियोंको मुँहमें रखकर सो जानेसे हिलते हुए दाँत स्थिर हो जाते हैं। हिलते हुए दाँतोंको जमानेवाली इससे बढ़कर दवा नहीं है।

नोट—अगर सवेरे ही बकुलाद्य तैल या सहचराद्य तैलके गरगरे किये जायँ और रातको मुस्तादि वटिका मुखमें रखी जायँ, तो निस्सन्देह हिलते हुए दाँत जम जायँगे।

जात्यादि तैल।

चमेलीके पत्ते, धतूरेके पत्ते, कटेरीकी जड़ और गोखरूका पञ्चाङ्ग—इनका काढ़ा पकालो।

खैर, मंजीठ, लोध और मुलेठी—इन चारोंका भी काढ़ा बनालो

फिर इन दोनों काढ़ोंमें तिलका तेल मिलाकर औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय छान लो। इस तेलसे दाँतका नासूर आराम हो जाता है।

लाक्षाद्य तैल ।

लाखका रस ६४ तोले, दूध ६४ तोले और तिलका तल ६४ तोले अलग रख दो।

लोध, कायफल, मजीठ, कमलकेशर पद्माख, लालचन्दनका चूरा, कमल और मुलेठी—इनमेंसे हरेकको आठ-आठ तोले लेकर, १०२४ तोले (यानी १२ सेर १३ छटाँक) पानीमें पकाओ, जब चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय छान लो।

अब लोध और कायफल वगैरः आठो दवाओंको चार-चार तोले लेकर, पानीके साथ सिल पर पीस लो।

शेषमें लाखका रस, दूध, काढ़ा लुगदी और तेलको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलको मुँहमें रखने या गरगरे-कुल्ले करनेसे दालन, दाँतोंका हिलना, दाँत गिरना कपालिका, शीताद, पूतिवक्त्र, अरुचि और मुखकी विरसता—ये रोग तत्काल नाश हो जाते हैं और दाँत भी जम जाते हैं। दाँतोंके रोगोंपर "लाक्षादि तैल" मशहूर है।

नोट—चिकित्साचन्द्रोदय दूसरे भागमें जहाँ जीर्णज्वरका लाक्षादि तेल लिखा है, वहाँ लाखका रस बनानेकी तरकीब लिखी है। उसी तरह लाखका रस तैयार कर लेना चाहिये। देखो चिकित्साचन्द्रोदय दूसरा भाग पृष्ठ ३६४—३६५

दन्तरोगान्तक चूर्ण ।

चमेलीके सूखे पत्ते, पुनर्नवा, तिल, पीपर, झांटीपत्र (कटसरैयाके पत्ते), नागरमोथा, वच, सोंठ, अजवायन और हरड़—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें घी मिलाकर मुखमें रखनेसे दाँतोंका दर्द और बदबू नाश हो जाती है। परीक्षित है।

दन्तरोग नाशक मञ्जन।

तमाखू, चिकनी सुपारी, पपरिया कत्था, तूतियाकी भस्म, काली मिर्च और बड़ी हरड़ इनको समान-समान लेकर खूब महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस मञ्जनके नित्य लगानेसे दाँतोंके सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अपूर्व अनुभूत दन्त मञ्जन।

शुद्ध भिलावे आधपाव और साँभर नोन १ तोला लेकर दोनोंको एक मिट्टीके सरावेमें रखकर, ऊपरसे दूसरा सरावा ढक दो। फिर उन दोनों सरावोंके जोड़ोंको रूई-मिली मुलतानी मिट्टीसे बन्द कर दो और चार पाँच कपरौटी करके सुखा लो। इसके बाद पाँच सेर जंगली कण्डोंकी आगमें सरावोंको रखकर आग लगा दो। जब आग स्वयं बुझ कर शीतल हो जाय, सरावोंको तोड़ डालो और भीतरसे भिलावोंको निकाल लो। भिलावोंमें जो नोन लग जावे, उसे छुड़ा कर फेंक दो। उन भिलावोंको महीन पीसकर नित्य दाँतोंको मला करो। अगर दाँत बहुत हिलते हों, तो मञ्जनको मलकर "बेरीकी जड़की छालके काढ़े"के कुल्ले करो अथवा गोंदनीकी छालके काढ़ेके कुल्ले करो। इस तरह दाँतोंका हिलना, खून आना और दाँतोंके समस्त रोग नाश हो जाते हैं। पराया परीक्षित है। हमने भी परीक्षा की है। वास्तवमें क़ाबिल तारीफ मञ्जन है।

दशनकान्ति चूर्ण

सोंठ, हरड़, नागरमोथा, कत्था, कपूर, सुपारीकी राख, काली-मिर्च, लौंग, और दालचीनी एक-एक तोले लो और सबके बराबर नौ तोले "सफेद खड़िया मिट्टी" लो। सबको पीस-छान कर रख लो। इस मञ्जनसे दाँत मलनेसे दाँतोंके और मुँहके अनेक रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

पथ्यापथ्य ।

दाँतके रोगीको खट्टे फल, शीतल जल, रूखा अन्न, दाँतुन करना और सख्त चीज़ खाना मना है ।

अपूर्व्व दन्त मञ्जन ।

वज्रदन्ती ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, जटामासी ४ तोले, मौल-सरीके फल ४ तोले, सोना गेरू ४ तोले, अनारकी छाल ४ तोले, अकरकरा २ तोले, माजूफल ४ तोले, लौहचूर्ण २ तोले, सेंधानोन २ तोले, भुनी हुई फिटकरी १ तोले, रूमी मस्तगी १ तोले, छोटी हरड़ १ तोले, खैरीका गोंद १ तोले, कसीस ६ माशे, टाटरी ६ माशे और भुना तूतिया ६ माशे,—इन सबको पीस-छान कर रख लो। इस मञ्जनके लगानेसे दाँत हिलना, मैल जमना, मुँहकी बदबू, दाँतोंका दर्द और लार गिरना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

दन्त वज्र मञ्जन ।

सुपारी १ तोला, हरे माजू १ तोला, भुनी फिटकरी १ तोला, सफेद कत्था १ तोला, नासपाल १ तोला सेलखड़ी ५ तोला, बड़ी इलायचीके बीज १ तोला, शीतल चीनी १ तोला, अकरकरा १ तोला, कपूर १ तोला और कालीमिर्च १ तोला,—लाकर रखो।

पहले कालीमिर्च पीस कर, उसमें कपूर पीस कर मिला दो। फिर इस चूर्णमें अकरकरा, शीतल मिर्च और इलायचीके बीज पीस कर मिला दो। इसके बाद बाक़ीकी दवाएँ पीस कर मिला दो और कपड़ेमें छान कर रख लो। जिनके दाँत हिलते हों, वे इसे रातमें मलकर ऊपरसे सरसोंका तेल मल क्रिया करें। दाँत पत्थर के समान हो जायँगे। यह मञ्जन दाँतोंके सभी रोगोंका शत्रु है। परीक्षित है।

जीभके रोगोंकी चिकित्सा।

(१) जीभके रोगोंमे पहले खून निकलवाना चाहिये ; फिर गिलोय, पीपर और नीम—इनका कवल तीखे पदार्थोंके साथ मुँहमें रखना चाहिये।

नोट—गिलोय, पीपर और नीमका काढ़ा मुँहमें भर कर गरारे करनेमे जीभक रोग नाश हो जाते है। परीक्षित है।

(२) शहदमें तेल मिलाकर मुँहमें कवल धारण करनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) परवलके पत्ते, कुटकी, त्रिकुटा, पाढ़, भारंगी और सैंधा-नोन—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो और शहदमें मिला कर जीभ पर लेप करो। इस लेपसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) वायविड़ंग, पीपर और रसौतका काढ़ा पकाकर, उसीसे जीभको धोनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। इन्हीं तीनोंका चूर्ण बनाकर जीभ पर लगाने और लार टपकानेसे लाभ होता है। परीक्षित है।

(५) वातज जिह्वा रोगमें वातज ओष्ठ रोगके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) पित्तज जिह्वा रोग हो, तो कर्कश पत्तेसे जीभ घिस कर खून निकालो। फिर शतावर, गिलोय, विदारीकन्द, सरिवन, पिठवन,

असगन्ध, काकड़ासिंगी, बंसलोचन, पद्मकाष्ठ, पुण्डरिया, बरियारा, पीला बरियारा, दाख, जीवन्ती और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णसे जीभ घिसनेसे पित्तज जिह्वारोग आराम हो जाता है। इन्हीं दवाओंका काढ़ा बनाकर मुँहमें रखनेसे और चूर्ण जीभ पर घिसनेसे खूब जल्दी लाभ होता है।

(७) कफज जिह्वारोग हो, तो कर्कश पत्तेसे जीभको घिसकर खून निकालो; फिर पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीतेकी जड़, सोंठ, गोलमिर्च, गजपीपर, सम्हालूके बीज, बड़ी इलायची, अजवायन, इन्द्रजौ, आककी जड़, सफेद जीरा, सरसों, घोड़नीमका फल, हींग, भारंगी, मूर्व्वामूल, अतीस, वच, वायबिडङ्ग और सैंधानोन—इनके काढ़ेके कुल्ले करो। अवश्य आराम होगा।

(८) बड़े नीबूकी केसरमें ज़रासा सेंहुड़का दूध मिलाकर चबाने से जीभकी जड़ता नाश हो जाती है।

(९) उपजिह्वा रोग हो तो कठोर पत्तेसे जीभको घिसकर खून निकालो। फिर उस पर जवाखार पीसकर घिसो। अथवा त्रिकुटा जवाखार, बड़ी हरड़ और चीतेको जड़—इन सबका चूर्ण बनाकर जीभ पर घिसो। इनसे "उपजिह्वा रोग" अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—त्रिकुटा, जवाखार, बड़ी हरड़ और चीतेकी छाल—इनको एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। फिर पाव-भर तेल, सेर भर पानी और इस लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल मात्र रह जाय छान लो। इस तेलक मुँहमें भरकर गरगरे या कुल्ले करनेसे "उपजिह्वा रोग" नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) अड़ूसेके काढ़ेमें—शहद, सैंधानोन, घरका धूआँसा, मालतीके पत्ते और कुल्थीका चूर्ण मिलाकर उससे जीभके काँटे घिसनेसे उपजिह्वा रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अड़ूसेके काढ़ेमें—शहद, घरका धूआँसा और मालतीके पत्तोंका चूर्ण मिलाकर जीभ भर मलनेसे भी वही लाभ होता है।

(११) पीपरोंको महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर, जीभपर मलने और लार गिरानेसे जीभके छाले वगैरः आराम हो जाते हैं।

(१२) हरा धनिया चबाने और थूकनेसे जीभके छाले वगैरः मिट जाते हैं।

(१३) पोदीनेकी पत्ती और मिश्री मिलाकर चबाने और थूकनेसे जीभके छाले मिट जाते हैं।

(१४) जीभके रोगोंमें खून निकालना सबसे अच्छा उपाय है।

(१५) सफेद सरसों और सेंधानोन—इनको पीसकर मुंहमें रखनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६) गायके दहीके साथ, सूर्य्योदयसे पहले, पका हुआ केला खानेसे जीभकी फुन्सी मिट जाती है। परीक्षित है।

जीभके रोगोंपर हकीमी नुसखे।

(१) राई, पीपर, सोंठ, नौसादर और अकरकरा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको सिरकेमें मिलाकर या विना सिरकेमें मिलाये जीभ पर मलो। इससे जीभका भारीपन आराम हो जाता है।

नोट—इनमेंसे किसी एक चीज़को पीसकर मलनेसे भी लाभ होता है। जहाँ तक मिले सभी दवाएँ लेनी चाहिएँ।

(२) अगर जीभ भारी हो गई हो और पित्तसे सूज गई हो, तो गुलाबके फूल और छिली हुई मसूर बराबर-बराबर लेकर पीस लो और मकोयकी पत्तियोंके रसमें मिलाकर जीभकी जड़ पर मलो। अवश्य लाभ होगा।

(३) अगर जीभमें जलन होती हो, तो दहीको पानीमें घोलकर

कुल्ले करो और सफेद कत्था पीस-छान कर जीभ पर बारम्बार लगाओ। इन दोनों उपायोंसे जीभका जलना बन्द हो जायगा।

(४) बकायनकी छाल पीस कर उसके बराबर सफेद कत्था पीस कर मिला दो। इस चूर्णको जीभ पर बारम्बार छिड़कनेसे जीभके दाने आराम हो जाते हैं। यह दवा जवान और बच्चोंके मुँह आने पर उत्तम है।

नोट—जीभके दानोंको मुँह आना भी कहते हैं। अगर खूनके दोषसे दाने होते हैं, तो उनका रंग लाल होता है, पित्तकी अधिकतासे पीला, कफकी अधिकतासे सफेद और सौदावी या वायुकी अधिकतासे काला रंग होता है। सौदावी या जले हुए दोषसे रोग हो तो बहुत बुरा है। अगर बालकोंको सौदासे यह रोग हो तो मृत्युका चिह्न है।

(५) जला हुआ काग़ज़, बड़ी इलायचीके बीज, सफेद कत्था और भुनी फिटकरी—बराबर-बराबर लेकर पीस लो और थोड़ा-थोड़ा जीभ पर छिड़को। इससे मुँह आने या जीभ पर दाने होनेमें अवश्य लाभ होगा।

(६) मसूर जलाकर और उसके बराबर सफ़ेद कत्था मिलाकर पीस लो। इसको जीभ पर छिड़कनेसे मुँह आने या जीभके दानोंका रोग आराम हो जाता है।

(७) जला हुआ गावज़ुबाँ और उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँहमें छिड़कनेसे मुँह आनेका रोग आराम हो जाता है।

(८) सफ़ेद कत्था और कलमीशोरा दोनों बराबर-बराबर लेकर और पीसकर मुँह या जीभ पर छिड़कनेसे जीभके दाने मिट जाते हैं।

(९) मिश्री पीसकर उसमें ज़रासा "कपूर" मिला लो। इसको जीभ पर छिड़कनेसे बालकोंकी जीभके दाने आराम हो जाते हैं।

(१०) भुनी हुई फिटकरी और माजूफल बराबर-बराबर लेकर

पीस लो। इसको जीभ पर छिडकनेसे जीभके दाने आराम हो जाते हैं।

(११) अगर कफसे लड़केका मुँह आया हो, तो बाज या जुँरा की बीट दो रत्ती पीसकर मुँहमें छिड़को। अथवा छिले हुए जौ जलाकर उनकी राखमें बराबरका "सफेद कत्था" पीस कर मिला दो और जीभ पर छिड़को।

(१२) अगर गरमीसे मुँह आया हो, तो गुलाबकी पत्ती और खुरफेकी पत्ती चबाओ; अथवा अमलताशकी पत्ती जीभ पर मलो; अथवा शहतूतकी पत्ती चबाओ अथवा गोंदीकी छालमें कत्था लगाकर चाबो।

(१३) बबूलकी कोंपल पीसकर जीभ पर मलने और बबूलकी कोंपल सिल पर पीसकर और पानीमें छानकर पीनेसे गरमी-सरदी हर तरहका मुँह आना या जीभ पर दाने हो जाना आराम होता है। यह नुसख़ा बहुत अच्छा है।

(१४) अगर गरमीसे मुँह आया हो, तो त्रिफला और सफेद कत्था पानीमें औटाकर कुल्ले करो। अथवा आमले पानीमें भिगो कर उस पानीसे कुल्ले करो।

(१५) अगर सौदा या दूषित दोष यानी वायुसे जीभ पर दाने हुए हों—मुँह आया हो, तो महँदीकी पत्तियाँ चबाओ। अथवा अनारकी छाल, गोंदीकी छाल और सफेद कत्था पानीमें औटाकर कुल्ले करो। अथवा बबूलकी छाल और झड़बेरीकी छालको पानीमें औटाकर कुल्ले करो। यह नुसख़ा सर्व्वश्रेष्ठ है। इससे पारे, शिंगरफ और रस कपूरसे आया हुआ मुँह भी आराम हो जाता है।

(१६) अगर सौदा या वायुसे मुँह आया हो, तो अरहरकी दाल भिगोकर उस पानीसे कुल्ले करो। अथवा अरहर और मसूरकी दाल औटाओ और छान लो। फिर ज़रासा "कपूर" मिलाकर कुल्ले करो। अथवा महँदीकी पत्ती भिगोकर उस पानीसे कुल्ले करो।

(१७) अगर पारा और रस कपूर खानेसे मुँह आया हो ; तो त्रिफला, मोचरस और खशखाशके पोस्ते औटाकर छान लो। फिर उस काढ़ेमें थोडासा रेंडीका तेल मिलाकर कुल्ले करो।

(१८) अगर जीभ फट गई हो, तो लसौढ़ा मुँहमें रखो। अथवा ईसबगोलके लुआबसे कुल्ले करो और कत्था मुँहमें हरदम रखो।

(१९) अगर खूनके दोषसे जीभ सूज गई हो ; तो गीदड़ दाखके पत्तोंके काढ़ेके कुल्ले बारम्बार करो। अगर बलग़मकी वजहसे जीभ पर सूजन हो, तो अकरकरा और सोंठ कूट-छान कर जीभ पर मलो। परीक्षित है।

(२०) अगर गरमीसे जीभ सूजी हो, तो बनफशा और नीलोफर भिगो दो। फिर उन्हें मल-छान कर और मिश्री मिलाकर पिलाओ। अथवा ईसबगोल भिगोकर उसके लुआबसे कुल्ले कराओ अथवा बीदानेके लुआबसे कुल्ले कराओ। अथवा शीतल चीनी, कपूर, और वंसलोचन एक-एक माशे कूट-पीस कर दिनमें चार छै बार जीभ पर छिडको। इन उपायोंसे सूजन जाती रहेगी। परीक्षित है।

(२१) अगर खून-विकारसे जीभ पर ज़ख्म हों, तो गीदड़ दाखके पानीसे कुल्ले कराओ अथवा गीदड़ दाख और पित्तपापड़ा—इनको पानीमें औटाकर कुल्ले कराओ।

तालुरोग चिकित्सा।

नोट—प्राय. सभी तालुरोग विना नश्तरके आराम नहीं होते।

(१) कूट, कालीमिर्च, वच, सैंधानोन, पीपर, पाढ़ और केवटी-मोथा—इनको पीस-छान कर रख लो। इस चूर्णको "शहद"में मिला-कर घिसनेसे तालुशुण्डी रोग नाश हो जाता है।

(२) गलशुण्डी रोगमें हारसिंगारकी जड़ चबानेसे लाभ होता है।

(३) वच, अतीस, पाढ रास्ना, कुटकी और नीमकी छाल—इनका काढ़ा बना कर कुल्ले करनेसे गलशुण्डी नाश हो जाती है।

(४) थूहरके दूधका लेप करनेसे गलशुण्डी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५) तालुपाक रोगमें पित्तनाशक क्रिया करनी चाहिये। तालु शोष रोगमे स्नेहन, स्वेदन तथा अन्यान्य वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) निर्गुण्डीका जड चबानेसे गलशुण्डी नाश हो जाती है।

(७) नीमके काढ़ेके कुल्ले - करनेसे गलशुण्डी आराम हो जाती है।

---

(१) मालकाँगनी, देवदारु, हल्दी, पाठा, रसौत जवाखार और पीपर—इनको पीसकर "शहद"में मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुखमें रखनेसे सब तरहके कण्ठ-रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) हरड़के काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे गलेके रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) कुटकी, अतीस, देवदारु, पाठा, मोथा और इन्द्रजौ—गोमूत्रमें इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे कण्ठके समस्त रोग आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(४) दारूहल्दी, नीमकी छाल, रसौत और इन्द्रजौका काढ़ा पीनेसे गलेके रोग आराम हो जाते हैं।

(५ दाख, कुटकी, त्रिकुटा, दारुहल्दी, त्रिफला, नागरमोथा, पाढ, रसौत, मूर्वा और तेजबल इनका चूर्ण बनाकर और "शहद"में मिलाकर सेवन करनेसे गलेके रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—ऊपरके नं० २, ३, ४ और ५ नुसखे वात, रुधिर दोष और कफको नष्ट करते हैं।

(६) केवड़ेकी बालके भीतरी फूल चिलममें धरकर धूआँ पीने से कंठके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) कड़वी तोरई चिलममें तमाखूकी तरह रखकर धूआँ पीनेसे लार टपकती है और गला खुल जाता है तथा गलेकी सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

उत्तमोत्तम योग।

कालकचूर्ण।

घरका धुआँसा, जवाखार, पाढ, त्रिकुटा, रसौत, तेजबल, त्रिफला, लोध और चीता, इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर मुँहमें रखनेसे सब तरहके गलरोग, दाँत और मुँहके रोग नष्ट हो जाते हैं।

यवाक्षारादि गुटिका।

जवाखार, तेजबल, पाढ़, रसौत, दारुहल्दी, हल्दी और पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर "शहद"में मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुँहमें रखनेसे सब तरहके गल रोग नष्ट हो जाते हैं।

क्षार गुटिका।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, तालीशपत्र, इलायची, मिर्च, दालचीनी, ढाकका खार, मोखेका खार और जवाखार—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णके वज़नसे दूना पुराना गुड़ लेकर, उसमें चूर्ण मिलाकर खरल करो और बेर-समान गोलियाँ बना लो। फिर सात दिनतक इन गोलियों को मोखेकी भस्ममें रखो; इसके बाद निकाल लो। इन गोलियों को मुंहमें रखनेसे सब तरहके कण्ठ रोग नाश हो जाते हैं।

सितादि घृत।

मिश्री १ भाग, मालपत्र १ भाग और काली मिर्च २ भाग—इनको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी लेकर घी पकालो। इस घीकी नास देनेसे गलग्रह रोग नष्ट होता है।

सर्वसर मुखरोग-चिकित्सा।

(१) चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, जवासा, दारुहल्दी और त्रिफला—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर गरगरे-कुल्ले करनेसे मुखपाक रोग या मुंहके छाले और घाव आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(२) कालाजीरा, कूट और इन्द्रजौ—इन तीनोंका चूर्ण मुंहमें रखनेसे मुंह पकना, मुंहसे बदबू आना, बड़े-बड़े छाले होना और कफ आना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) चमेलीके पत्ते सदैव चबाते रहनेसे मुँहके घाव, छाले और बदबू वग़ैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) जामुन, आम और चमेलीके पत्ते, हरड़, आमला, नीम और परवलके पत्ते—इनका काढ़ा मुँहमें धारण करनेसे मुँहके भीतरके सभी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

(५) जायफल, जावित्री, सफेद मरुआ, वनतुलसी, केशर और गुड़—इनको महीन पीसकर और गोली बनाकर मुँहमें रखनेसे मुँहकी बदबू जाती रहती है।

(६) कूट, एलुआ, मोथा, धनिया, इलायची और मुलेठी—इनको पीसकर मुँहमें रखने और फिरानेसे लहसन और शराबकी बदबू नाश हो जाती है।

(७) परवल, नीम जामुन, आम और चमेलीके पत्ते—इन पाँचों पत्तोंका काढ़ा मुँहमें रखनेसे मुँहके रोग नाश हो जाते हैं।

(८) दारुहल्दीको पानीमें पकाओ। जब यह पकते-पकते अत्यन्त गाढ़ी हो जाय, तब इसमें "शहद" मिलाकर मुँहमें रखनेसे मुख-रोग, खून-विकार और नाड़ी व्रण—नासूर ये आराम हो जाते हैं।

(९) पटोलपत्र, सोंठ, त्रिफला, इन्द्रायण, त्रायमाण, कुटकी, हल्दी, दारुहल्दी और गिलोय—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे सब तरहके मुख रोग नष्ट हो जाते हैं।

(१०) तिल, नीलकमल, घी, मिश्री, दूध और शहद—इन सबको मिलाकर मुँहमें रखनेसे झुलसा हुआ मुँह अच्छा हो जाता है।

(११) बिजौरे नीबूके फलका छिलका एक बार भी खानेसे मुखकी दुर्गन्ध और वातजनित मुखपाक दूर हो जाता है।

(१२) हल्दी, नीमके पत्ते, मुलेठी और नील कमल—इनकी लुगदीके द्वारा तेल पका कर मुँहमें रखनेसे मुखपाक रोग दूर हो जाता है।

(१३) अरहरके पत्ते और धनिया औटाकर कुल्ले करनेसे मुँहके छाले आराम हो जाते हैं।

(१४) कवावचीनी और मिश्री दाढ़के नीचे रखकर चूसनेसे मुँहके घाव और छाले आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) कवावचीनी और कालीमिर्च—चवाकर दाढ़के नीचे रखने और पीक थूकनेसे मुँहका मीठापन जाता रहता है। परीक्षित है।

(१६) जीभ पर थर जमती हो या लार गिरती हो, तो नित्य सोकर उठते ही कचूरका गीला कन्द चवाकर थूको और फिर मुँह धोओ। इससे लार टपकना वग़ैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) सफेद चिरमिटीके पत्ते, शीतल चीनी और मिश्री मुँहमें रखकर चूसनेसे अथवा सफेद चिरमिटीकी जड़ चवानेसे मुँहके घाव या फोड़े आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) पीली कटसरैयाके पत्ते, जामुनकी छाल और आमलोंका काढ़ा बनाकर कुल्ले करनेसे मुँहके छाले आराम हो जाते हैं। मुँह आने पर यह उत्तम नुसख़ा है।

(१९) एक तोले तूतिया तवे पर जलाकर उसे बहुतसे पानीमें घोल लो और कुल्ले करो। इससे किसी भी तरहसे हुए मुँहके छाले आराम हो जाते हैं। कुल्लोंसे अगर छालोंमें गरमी बहुत हो तो पहले ईसबगोलके लुआबसे कुल्ले करने चाहिये। उसके बाद तूतियाके पानीसे कुल्ले करने चाहियें।

समाप्त।

चिकित्सा चन्द्रोदय

सातवें भागका

शुद्धाशुद्ध पत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	कियाएँ	क्रियाएँ	५९	१०	चल	चला
२२	१९	देर जाय	देर हो जाय	५९	१८	नगर मोथा	नागर मोथा
२८	११	सधानोन	सेंधानोन	६२	२	उन्माग	उन्मार्ग
२८	२८	घमना	घूमना	७०	१६	चिला	चिल्ला
२९	१८	और और	और	७४	११	करता करता	करता
३२	४	चाहिय	चाहिये	७६	११	महाष	महर्षि
३२	९	हष	हर्ष	७९	८	तो तोले	दो तोले
४२	६	मदत्यय	मदात्यय	७९	११	पुरानी	पुराना
४४	१६	छेदोंका	छेदोंको	८४	२	धमपान	धूमपान
४७	९	धीमे	घीमे	८९	१०	महीनकर	महीन
४७	१३	नपृ	नष्ट	९१	३	विषर्प	विसप
४९	१२	सन्ध वन्द	सन्धि वन्द	९३	१४	उसेमें	उसीमें
५४	२२	छनेमें	छूनेमें	९३	१७	मात्री	मात्रा
५५	१५	खन	खून	९४	४	गोलियांके	गोलियोंके
५८	२१	कण्ठसे	कण्ठ	९७	६	पदा	पैदा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०२	२०	रोगाको	रोगीको	१७४	२४	जाताथा	जाता था
१०५	११	काणोंके	कणोंके	१७५	४	विपले	विपैले
११०	६	वेतमतलव	वेमतलव	१७५	२०	रुतुवते	रुतूवते
१११	१५	चालमें भा	चालमे भी	१७६	६	इलाजनन	इलाज
१२६	२	ख़फ़क़ान	ख़फ़क़ान	१७६	६	थोड़ासी	थोड़ीसी
१३१	७	ग्रवन्ध	प्रवन्ध	१७६	२५	वन्दक	वन्दूक़
१३४	२	खिलाअी	खिलाओ	१७७	७	वीरज	धीरज
१३७	५	पदा	पदा	१८१	१८	निकलना	निकालना
१४३	३	वीयके	वीर्यके	१८१	२३	कर	करना
१४३	१०	निवल	निर्वल	१८३	३	थोड़ासी	थोड़ीसी
१५०	१६	संप्रवात्	संप्लवात्	१८५	५	धीमें	घीमें
१५७	३	आग	झाग	१८६	७	पदार्थोंकी	पदार्थों की
१५८	१०	सदी	सर्दी	१८६	२२	वेहाशके	वेहोशके
१६०	१४	मृच्छा	मूर्च्छा	१८७	६	गोमूत्र	गोमूत्रमें
१६०	२२	रोज धर्म	रजो धर्म	१८८	३	सौर	और
१६३	६	ठहश	ठहर	१८९	२	खव	खूव
१६७	२४	तारीके	तरीके	१८९	१३	या	और
१६८	१६	सुफड़ने	सुकड़ने	१८९	१८	सिरसको	सिरसकी
१७०	१४	पुद्धि	वुद्धि	१९०	२४	उगलीमें	उँगलीमें
१७०	१७	ह	है	१९१	१७	सिकजंवीन	सिकंजवीन
१७२	३	रग	रगों	१९१	२३	शवत	शर्वत
१७२	२४	तिल्लीकी	झिल्लीकी	१९५	१५	शिगु तैल	शिग्रु तैल
१७३	१२	पेड़	पेडू	१९६	१३	धी पीओ	घी पीओ
१७४	२	आजा	आ-जा	२००	११	गेहूँके	गेहूँकी
१७४	५	मुदेंकी	मुर्देकी	२००	२२	पेड़	पेट
१७४	१७	लड़कोको	लड़केको	२००	२२	इर्द-गिदेके	इर्द-गिर्दके

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	२	शवत आलू	शर्वत आलू	२५०	२२	ही	हो
२०५	७	उपर	ऊपर	२५२	२	सातव	सातवें
२०६	४	मृर्गियोंकी	मृगियोंकी	२५५	२०	वर्फ	वर्फ
२०८	१८	वाल	वाले	२६५	१६	शार्ङ्गधरकी	शार्ङ्गधरकी
२०९	२३	सक	सकें	२६५	२६	लोभ	लाभ
२११	२५	जसी	जैसी	२६६	११	पिस-छना	पिसा-छना
२१२	१०	स्नायुविक	स्नायविक	२६७	१६	वज्रवत्	वज्रवत्
२१३	२०	चाहिय	चाहिये	२६९	२	काढ़ा-काढ़ा	काढ़ा
२१५	१६	वठनेसे	वैठनेसे	२७०	८	सधानोन	सेधानोन
२१६	२३	गगापन	गूँगापन	२७२	१	उड़ादादि	उड़दादि
२१७	७	आरोप	आटोप	२७३	१२	अदित	अर्दित
२१७	४	उर्द्ध वाहु	ऊर्ध्ववाहु	२७५	११	खिरटीका	खिरटीका
२२४	६	खन	खून	२७६	६	रसोन्कल्क	रसोनकल्क
२२५	३	शिरोग्रह	शिराग्रह	२८९	१	चतुमुख	चतुर्मुख
२३१	१७	काँखता है	काँपता है	२९०	२२	धत्तरेके	धतूरेके
२३६	८	कहसे हैं	कहते हैं	२९१	१७	पदीमें	पेंदीमें
२३६	२३	पिछल	पिछले	३००	१३	दद	दर्द
२४०	११	सूखा कर-	सुखाकर-	३००	१५	सनिपात	सन्निपात
२४१	१०	अदित	अर्दित	३००	२४	ही	हो
२४२	१४	वणन	वर्णन	३०१	१२	कम	कर्म
२४३	६	तरकके	तरफके	३०१	१२	चाहिय	चाहिये
२४३	२५	नहीं होता	होता	३०१	१४	उपानह	उपनाह
२४४	१	इन्द्रियों	इन्द्रियाँ	३०४	१५	कटि प्रोत	कटि प्रांत
२४७	१८	तरहफे	तरहके	३०४	२६	तल	तैल
२४९	१६	सिरकी	सिरका	३०७	६	ऐसा	ऐसे
२५०	१८	पहुँचसे	पहुँचनेसे	३०९	१३	१ एक माशे	१माशेसे २माशा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१०	१४	इस सबको	इन सबको	३६७	३	दद	दर्द
३१२	१५	विषगभ	विषगर्भ	३६७	२२	वीयसे	वीर्यसे
३१२	१७	लघुविषगभ	लघुविषगर्भ	३७०	८	दद	दर्द
३१४	३	चौदहव	चौदहवें	३७१	१	आठव	आठवें
३२२	३	यनानी	यूनानी	४०६	६	खट्ट	खट्टे
३३०	६	रडीके	रैंडीके	४१०	२१	मिला जाना	मिल जाता
३३२	५	वाहुगोप	वाहुशोप	४११	१२	अक्कमात्	अकस्मात्
३३२	८	मन्यस्तम्भ	मन्यास्तम्भ	४१७	६	खन	खून
३३३	५	सरल धप	सरल धूप	४२०	२३	उपानह	उपनाह
३४०	८	वातष्ठीला	वाताष्ठीला	४२१	११	उपानह	उपनाह
३४०	१४	सज्जीखाकर	सज्जीखार	४२१	२१	पत्त	पत्ते
३४२	१७	निकलकर	निकालकर	४२२	२७	लालमिच	लालमिर्च
३४३	१७	खिरटी	खिरेंटी	४३०	१३	पीनिसे	पीनेसे
३४५	१८	जँभाइयों	जँभाइयाँ	४३०	२२	घी कीकी	घीकी
३४६	७	पगुताको	पंगुताकी	४३१	१७	पिण्ड तल	पिण्ड तैल
३४६	१०	तल	तैल	४३६	१	फ़क	फ़र्क
३५२	३	पादहष	पादहर्ष	४३६	२१	शुरु	शुरू
३५३	१७	सधानोन	सेंधानोन	४३७	१५	छोटी छोटो	छोटी छोटी
३५३	२२	हो हो जाता	हो जाता	४३७	२१	विड़गाद्य	विडंगाद्य
३६०	२३	सधानोन	सेंधानोन	४३८	११	अक	अर्क
३६३	१४	पाँचव	पाँचवें	४३८	२०	औश	और
३६३	१६	पक्काशगयत	पक्काशयगत	४४२	६	धान्यामल	धान्याम्ल
३६४	१	दवाए	दवाएँ	४४४	१८	वघ्न	व्रध्न
३६५	४	दद	दर्द	४४७	१६	उपानह	उपनाह
३६५	१६	यहृदगत	हृदयगत	४४७	२१	उपानह	उपनाह
३६५	१७	दद	दर्द	४५४	१६	कियाएँ	क्रियाएँ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५६	४	रहता जाता है	जाता रहता है	५३८	३	घी" म	घी" में
४६१	१	२महासयवाद्य	महासैन्धवाद्य	५३८	१८	दव है	दवा है
४६१	१३	प्रश्नगर्णा	प्रश्नपर्णी	५३९	१०	अच्छ हैं	अच्छे हैं
४६२	१३	रोगीका	रोगीको	५४१	१०	और	ओर
४६७	२१	साध्यसाध्य	साध्यासाध्य	५४१	१६	छाक	छींक
४७२	२०	अदित	अर्दित	५४४	१७	उदावत्तके	उदावर्त्तके
४८०	८	अजमदोदादि	अजमोदादि	५५६	६	धआँ	धूआँ
४८६	२१	अरण्डीकीके	अरण्डीके	५५७	१८	चर्ण	चूर्ण
४८८	४	दद	दर्द	५५८	१	गुड़ाधृक	गुड़ाष्टक
४९२	१७	पार्श्वशल	पार्श्वशूल	५५८	१२	चर्ण	चूर्ण
४९९	२१	चलता है	चलाता है	५६०	१५	गरमके	गरम करके
५०६	६	परिणामशल	परिणामशूल	५६१	१९	आर	और
५०८	२	वारम्वर	वारम्वार	५६१	१९	इश स्तुति	ईश स्तुति
५०९	२७	सावदाना	सावूदाना	५६३	१२	गुड़ाकष्टक	गुड़ाष्टक
५१०	२१	शल	शूल	५६३	१५	त्रिवृत्तादि	त्रिवृतादि
५११	२७	सधानेन	सैंधानोन	५६५	२४	वाययिडंग	वायविड़ंग
५१८	८	वातजशल	वातजशूल			८ तोले	९ तोला
५२५	१९	ह्स रोगमें	इस रोगमें	५६७	७	(४)रुधिरसे	(५) रुधिरसे
५२६	१७	मिलाक	मिलाके	५६९	२२	हूदय	हृदय
५२८	१	पुननवा	पुनर्नवा	५७०	५	अन्तविद्रधि	अन्तर्विद्रधि
५२८	१७	शलको	शूलको	५७३	९	सहा	सही
५२८	२७	और और	और	५७३	१०	जाता	जाती
५३४	५	सधानोन	सेधानोन	५७७	२७	गभजात	गर्भजात
५३५	५	पणिाम	परिणाम	५७८	२६	रक्तगलम	रक्तगुलम
५३५	६	शल	शूल	५८१	८	सुश्रत	सुश्रुत
५३५	१८	रत्त-रत्ती	रत्ती-रत्ती	५८३	३	उपानह	उपनाह

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८४	१	नाभिके	नाभिसे	६४४	५	सधानोन	सेंधानोन
५८५	२	चर्ण	चूर्ण	६४४	१२	कुट	कूट
५८६	१०	उपानह	उपनाह	६४५	१३	यद यद	यद
५८८	२	उपानह	उपनाह	६४५	१७	ज्चिर	ज्वर
५६०	१०	सचतरके	सब तरहके	६४५	१८	हढती है	चढ़ती हैं
५६०	१५	उपानह	उपनाह	६४६	१६	इसमसे	इसमेंसे
५६०	२५	सुखा	सूखा	६४८	६	इच रससे	इस रससे
२६१	३	इनफो	इनको	६५१	१	आर	और
५६१	३	पीप्तकर	पोसकर	६५२	६	खन	खून
५६१	१६	धीग्वारके	घीग्वारके	६५६	१	चर्ण	चूर्ण
५६२	१६	विरत्तन	विरेचन	६५६	१०	पोनेसे	पीनेसे
५६७	१७	दत्तीकीको	दन्तीकी	६५६	१८	सधानोन	सेंधानोन
५६८	६	सीजका	सेहुडका	६६३	२२	जातो हैं	जाती हैं
६००	१०	खन	खून	६६४	२	वगरः	वगैरः
६०७	३	रक्ततिसार	रक्तातिसार	६६४	२	शिकायत	शिकायतें
६१६	२३	इसम	इसमे	६६७	१५	भर्तृहरी	भर्तृहरि
६१६	१७	चर्ण	चूर्ण	६७७	२३	आयुवद	आयुर्वेद
६२७	२	खानाखानाके	खानाखानेके	६८०	६	वीय	वीर्य
६२७	२१	सम्पादक	सम्पादन	६८०	१५	रातिसे	रीतिसे
६२७	२८	चमत्कारे	चमत्कार	६८०	१६	राकड़	रोकड़
६३३	१६	वगरः	वगैरः	६८१	१	रहनवाले	रहनेवाले
६३३	२२	कराआ	कराओ	६८१	३	पेड़मे	पेड़ूमें
६३८	१२	फल जातीहै	फैल जाती है	६८४	२४	शर्कराके	शर्कराकी
६४०	५	पदा	पैदा	६८४	२४	जेसा	जैसी
६४०	७	पदाथ	पदार्थ	६८४	२४	होताहै	होती है
६४३	८	रहताजाताहै	जाता रहताहै	६८४	२५	वालूके	वालूकी

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८४	२५	जैसा	जैसी
६८४	२५	होताहै	होतीहै
६८५	१२	दुवलता	दुर्वलता
६९२	२५	सविषा	सर्पिषा
६९६	११	सधानोन	सैंधानोन
७०३	१७	धत्तर	धत्तूर
७०५	११	छातिमका छाल	छातिमकी छाल
७१३	६	वीयका	वीर्यका
७२०	२४	तारों	चारों
७२२	१९	सर्वं	सर्व
७२४	२५	रागमें	रोगमे
७२४	२६	अक़	अर्क़
७२५	१५	कम	कर्म
७२५	१६	उपनहन	उपानाहन
७२७	१६	नुसख	नुसख़े
७२८	१२	चर्णं	चूर्ण
७३०	२३	फल	फूल
७३६	३	पोतेसे	पीनेसे
७४१	२४	पुननवा	पुनर्नवा
७४५	१८	ऊटका	ऊँटका
७४६	१२	नीवूके,	नीवूके
७४६	२५	मुह	मुँह
७४६	२६	हफते	हफ़्ते
७४८	१८	छदि	छर्दि
७४९	९	शोथरोगों	शोथरोग

पृ०	प०	अशुद्ध	शुद्ध
७४९	१५	ऊची	ऊँची
७३९	२६	पेड़	पेड़ू
७५१	१४	चसने	चूसने
७५२	१८	शरार	शरीर
७५६	१०	उर्ध्वगत	ऊर्ध्वगत
७५६	११	उर्ध्वशोधन	ऊर्ध्वशोधन
७६०	१६	कपड़ेम	कपडेमें
७६२	८	जवदस्ती	जवर्दस्ती
७६२	११	पुननवा	पुनर्नवा
७६५	२०	सहुड़	सेंहुड़
७६६	३	पुननवे	पुनर्नवे
७६७	१४	पुननवा	पुनर्नवा
७६९	४	विपमज्वर	विपमज्वरों
७८८	२६	धप	धूप
७८९	२३	रडी	रेंडी
७९३	६	घाघा	घैंघा
७९३	८	गदन	गर्दन
७९६	९	सहजने	सहँजने
७९७	६	सअर	सूअर
७९७	६	पुछ	पूँछ
७९७	१४	अपराजिताका	अपराजिताको
८०१	१६	दद	दर्द
८०२	५	जलवत	जलवत
८०५	९	एकसेर सफेदघुंघचीकी जड और फल	सफेद घुंघची की जड़ और फल एक सेर

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०८	१४	चसने	चूसने
८०९	९	शराग	शरीर
८०९	९	वढता	बढ़ती
८०९	१६	ओर	और
८०९	२०	इसलिय	इसलिये
८१०	१२	दद	दर्द
८११	८	पदा	पदा
८११	१७	अबुद	अर्बुद
८१३	३	अवुद	अर्बुद
८१३	१०	आचाय	आचार्य
८१३	१०	पदा	पैदा
८१४	२४	ममस्थान	मर्मस्थान
८१६	६	वसे	वैसे
८१५	१३	पेड़	पेडू
८१८	६	चून	चूर्ण
८१८	२७	आराम जाता	आराम हो जाता
८२०	१०	आर	और
८२४	८	अन्त विद्रधि	अन्तर्विद्रधि
८२७	२६	शिराय	शिरायें
८३१	१२	अन्तविद्रधि	अन्तर्विद्रधि
८३२	६	अन्तविद्रधि	अन्तर्विद्रधि
८३७	२७	खन	खून
८४५	७	बूद	बूँद
८४६	२१	शराव	शराव
८४७	२२	ता	तो
८५०	१७	वत्ती	वर्त्ती
८५२	१३	निकलना , है	निकलना है
८५४	१०	चमेना	चमेली
८५४	२१	कुटका	कुटकी
८५५	१	नीलाथाया	नीलाथोथा
८६०	८	पकाला	पकालो
८६१	१०	चौतीं	चौतो
८६२	६	चूनेका	चूनेका
८६३	१०	आव	आवें
८६३	२१	कामालूकी	कामालूकी
८७१	१०	आर	और
८७३	४	दवाए	दवाएं
८७४	१२	मूंजलो	भूंजलो
८७५	५	फट	फूट
८७५	७	फट	फूट
८७७	१२	तीले	तोले
८७९	१९	दद	दर्द
८८५	१५	कथ	कैथ
८८९	२०	मुह	मुँह
८८९	२९	घा	घी
८९०	९	सप	सर्प
८९१	७	अपूण	अपूर्ण
८९२	८	चाहिए	चाहिएं
९०४	२१	कम	कर्म
९०५	१८	अजुन	अर्जुन

६०७	२	मुह	मुँह
६१०	१३	भसका	भसका
६११	२५	घस	घुस
६१२	६	दद्र	दद्रु
६१२	१०	विचचिका	विचर्चिका
६१२	१३	दद्र	दद्रु
६१२	१५	काढ़	कोढ़
६१२	२५	खन	खून
६१३	१२	यहा	यही
६१५	२०	कोड़	कोढ़
६१६	४	जा काढ़	जो कोढ़
६१८	८	स्पर्शज्ञान	स्पर्शज्ञान
६१८	१७	होती हैं	होती है
६१९	२६	साध्य हैं	साध्य है
६२१	१६	जलाकर	जलकर
६२१	२५	मथनादि	मैथुनादि
६२२	८	पलग	पलँग
६२७	३	दद्र	दद्रु
६२८	२१	सिन्दूर	सिन्दूर,
६३०	३	।वलाव	विलाव
६३१	६	लिखो है	लिखी है
६३१	२२	कोड़	कोढ़
६३२	६	कोड़	कोढ़
६३३	११	मिलाचे	मिलावे
६३३	१२	कोढ़	कोढ़
६३४	३	कठूमार	कठूमर
६३४	१२	चर्ण	चूर्ण
६३५	१	कव्वे	कव्वे
६३५	७	चन	चून
६३७	५	गोवरका,रस	गोवरका रस
६३७	६	आर	और
६३७	१६	कराड	कण्डू
६३९	६	अड़से	अडूसे
६३९	२०	चूर्ण	चूर्ण
६४०	२०	शान्त्र	शास्त्र
६४२	१२	भा	भी
६४५	२	अड़से	अडूसे
६४५	१६	चमड़	चमड़े
६४५	१६	फलता	फैलता
६४५	१६	पदा	पैदा
६४५	२१	ग्रस	घुस
६५८	२१	चर्ण	चूर्ण
६६०	५	मह	मह-
६६०	२०	नीव	नीबू
६६३	१	शीताप्त	शीतपित्त
६६५	६	विसप	विसर्प
६६६	११	पैलता	फैलता
६७३	५	जौकें	जौंकें
६७६	५	नहुरु	नहुरूआ
६८४	२	सूर्यावत्त	सूर्यावर्त्त
६८५	६	खव	खूब
६८५	१८	दद	दर्द
६८६	७	करना ही	करना हो
६८७	२०	दद	दर्द
६८७	२२	दद	दर्द
६८९	२	गभर्भाशय	गर्भाशय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९८९	२	दद	दर्द	१०५२	२६	वायुका	वायुकी
९८९	१९	पानाह	पनाह	१०५२	२६	चँद्रँ	बुंदें
९९४	६	दद	दर्द	१०५५	११	यहले	पहले
९९७	४	कर देनी है	कर देती हैं	१०५६	८	मुह	मुँह
९९७	२७	दद	दर्द	१०५६	२१	हस	हस
९९८	७	सिर दद॰	सिर दर्द	१०५७	८	दुखनेसे	दुखनेसे
१०००	५	सिरदद	सिरदर्द	१०५७	१७	करटॅरी	कटेरी
१००१	१३	दद	दर्द	१०५७	२०	नाट	नोट
१००२	६	सूघने	सूँघने	१०५८	७	पट्टा	पट्टी
१००२	१२	दद	दर्द	१०५८	२३	पाना	पानी
१००२	१५	दद	दर्द	१०५९	४	सधानोन	सधानोन
१००३	९	सहजने	सहँजने	१०६०	५	अजुन	अर्जुन
१००५	६	दद॰	दर्द	१०६३	१३	मिश्रा	मिश्री
१००६	१९	दद	दर्द	१०६७	१	घा	घी
१००७	६	सधानोन	सधानोन	१०६७	१	घा	घी
१००७	२७	दद	दर्द	१०६७	१	घा	घी
१००८	१४	अवपोडन	अवपीड़न	१०६७	१	पकाला	पकालो
१००९	३	स्वेद्	स्वेद	१०६७	६	मिश्रा	मिश्री
१०१०	६	स्वयं	स्वयँ	१०६७	१४	सासा	सीसा
१०१४	१	स्वरसो	सरसों	१०६७	२६	खच	खर्च
१०१४	११	सोंधानोन	सैंधानोन	१०६८	२७	दखती	दुखती
१०१८	२०	सूघने	सूंघने	१०६९	१	पोना	पानी
१०२१	४	सदा	सर्दी	१०६९	१७	ओर	और
१०२३	१०	दद	दर्द	१०६९	१७	पाटली	पोटली
१०२३	१५	आधासीसा	आधासीसी	१०७०	१	पाली	पीली
१०२३	२७	अरीढ़े	अरीठे	१०७०	२१	हा	हो
१०२६	१३	चू `	चूने	१०७०	२४	दद	दर्द
१०३१	१९	ऊचे	ऊँचे	१०७१	१	घाग्वार	घीग्वार

१०७१	१	साते	सोते
१०७१	४	करा	करो
१०७१	२२	दद	दर्द
१०७२	९	दारुहल्दा	दारुहल्दी
१०७४	५	लेि	तोले
१०७७	२०	जाते है	जाते हैं
१०७८	२१	थक	थूक
१०८०	२७	कमजोंर	कमज़ोर
१०८२	१२	सुरमें	सुरमे
१०८४	१२	चकना	चूकना
१०८५	२२	मुह	मुँह
१०८६	१	गोला	गोली
१०८८	२३	स्वय	स्वयं
१०८९	४	आर	और
१०९०	१०	आखोंम	आँखोंमें
१०९१	८	तरी, सूखती	तरी सूखती
१०९२	१	पाना	पानी
१०९९	२	करा	करो
१०९९	१४	स्राव	स्राव
११००	३	घाकी	घीकी
११०१	५	जौंकेकें	जौंकें
११०१	९	निर्मली	निर्मेली
११०१	१६	चुमते	चुभते
११०२	११	कालीर्मि	कालीमिर्च
११०२	१३	फला	फूला
११०२	२४	वैद्य	वैद्य
११०५	१	आयुर्वदीय	आयुर्वेदीय
११०६	५	सखालो	सुखालो
११०७	२२	खन	खून
११०८	१७	वदल	बादल
११११	९	मजबत	मज़बूत
१११४	९	पोसकर	पीसकर
१११४	२२	फला	फूला
१११९	९	निकलते	निकलने
११२१	११	और और	और
११२२	४	वहा	वह
११२२	६	कर्णक्ष्त्रेण	कर्णक्ष्वेड़
११२२	८	कर्णक्ष्वेण	कर्णक्ष्वेड़
११२२	८	कर्णक्ष्वेण	कर्णक्ष्वेड़
११२४	१४	जा ा है	जाताहै
११२६	७	कण	कर्ण
११२७	२५	दद	दर्द
११२९	२	वाधिय्य	वाधिर्य्य
११२९	२	कार्णक्ष्वेण	कर्णक्ष्वेड़
११२९	५	वस्तिकम	वस्तिकर्म्म
११३०	२	सधानोन	सेंधानोन
११३३	२३	आजभूदा	आज़मूदा
११३६	१	क्षुरकाकोली	क्षीरकाकोली
११३६	१७	दद	दर्द
११३६	२०	तमाख	तमाखू
११३७	४	फँको	फूँको
११३७	९	चण	चूर्ण
११३८	४	वगरः	वगैरः
११३९	२२	कृमिकण	कृमिकर्ण
११३९	२२	कृमिकण	कृमिकर्ण
११४०	४	चूर्ण	चूर्ण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११४०	११	पिचकरी	पिचकारी
११४०	२५	तैंदू	तेंदू
११४१	८	सैंधेनोन	सेंधेनोन
११४२	११	पूतिकण	पूतिकर्ण
११४५	३	मुग!	मुर्गे
११४५	६	औटाक	औटाकर
११४७	२५	क	कानमें
११५०	२०	दर्द	दर्द
११५३	१४	जल्दो	जल्दी
११५३	२४	खट्ट	खट्टे
११५४	२०	मुह	मुँह
११५५	२१	वद्य	वैद्य
११५८	१८	सहजने	सहँजने
११५९	१२	ममान	समान
११६०	१६	वौगुना	चौगुना
११६०	२५	सूघने	सूंघने
११६१	१९	खच	खूब
११६५	२	ाजस	जिस
११६५	११	मसूड़ों	मसूढ़ों
११६५	१८	वैदम	वैदर्भ
११७०	१५	अकोप	प्रकोप
११७४	२२	त्रिदोपजनत	त्रिदोषजनित
११७५	७	शतव्री	शतघ्नी
११७७	२४	मुह	मुँह
११८०	२०	छाड़ते	छोड़ते
११८०	२२	दुःखा	दुःखी
११८१	२०	चपके	चमके
११८२	१९	गरमामे	गरमीमें
११८३	१६	प्रयंगू	प्रियंगु
११८५	६	लन	लूनं
११८६	२	थकते	थूकने
११८६	१५	ल्वन	लून
११८७	१५	रुक्ष	रूक्ष
११८८	८	न्विजौरे	बिजौरे
११८८	८	चावचाकी	चावचीकी
११८८	१२	सहुड़का	सेहुड़का
११८८	१७	चर्णाको	चूर्णका
११८९	२३	सद्द	सर्द
११८९	२३	दद्द	दर्द
११८९	२४	दद्द	दर्द
११९१	१०	तमाखकी	तमाखूकी
११९२	११	लो	मलो
११९४	५	चतड़का	चूतड़का
११९५	२४	फल्ले	कुल्ले
११९६	२२	कुल्ल	कुल्ले
११९८	३	हुई	ही
१२००	८	चाक	चोक
१२०१	२२	मसूढ़	मसूढ़े
१२०४	१५	पूतिवक्र	पूतित्रक
१२०६	३	माना है	मना है
१२०७	५	जीभक	जीभके
१२०७	१७	रगके	रोगके
१२११	३	जुरा	जुर्रा
१२१४	१९	यवाक्षारादि	यवक्षारादि
१२१५	१०	मालपत्र	तमालपत्र
१२१६	२१	नोवके	नीबूके